CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पु० नं० ८१२

ई.१२

CC-0, Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Durijaneswar Ausadhalay.
Charali (Jowsan)
D- Darrang

पु०सं० ८१२

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
वाराणसी
आगत क्रमांक ......६५२......
दिनांक ....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

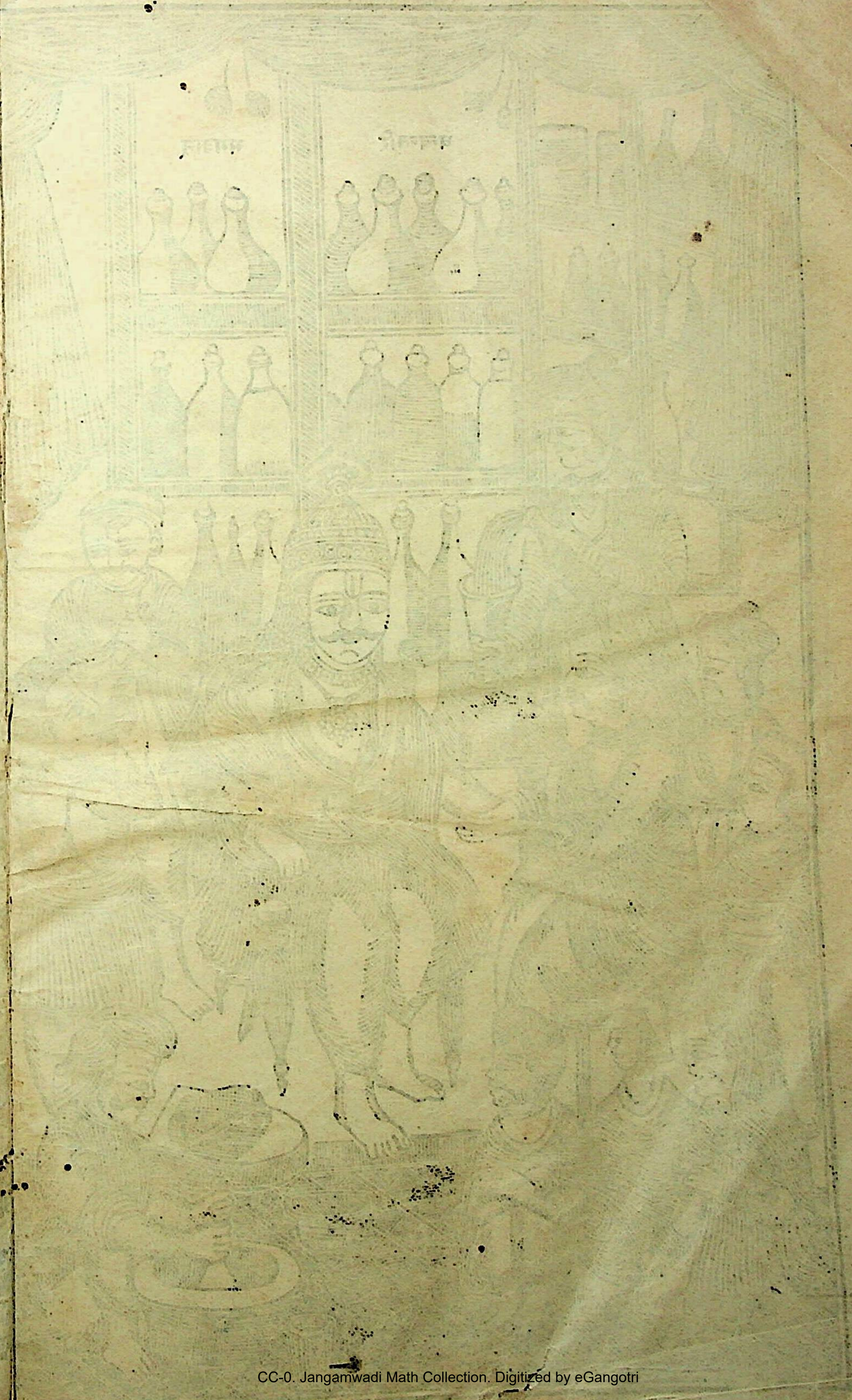

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धन्वन्तरि
भगवान्

क्रमांक...
दिनांक...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रजापति
अश्विनीकुमार
भरद्वाज
इन्द्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

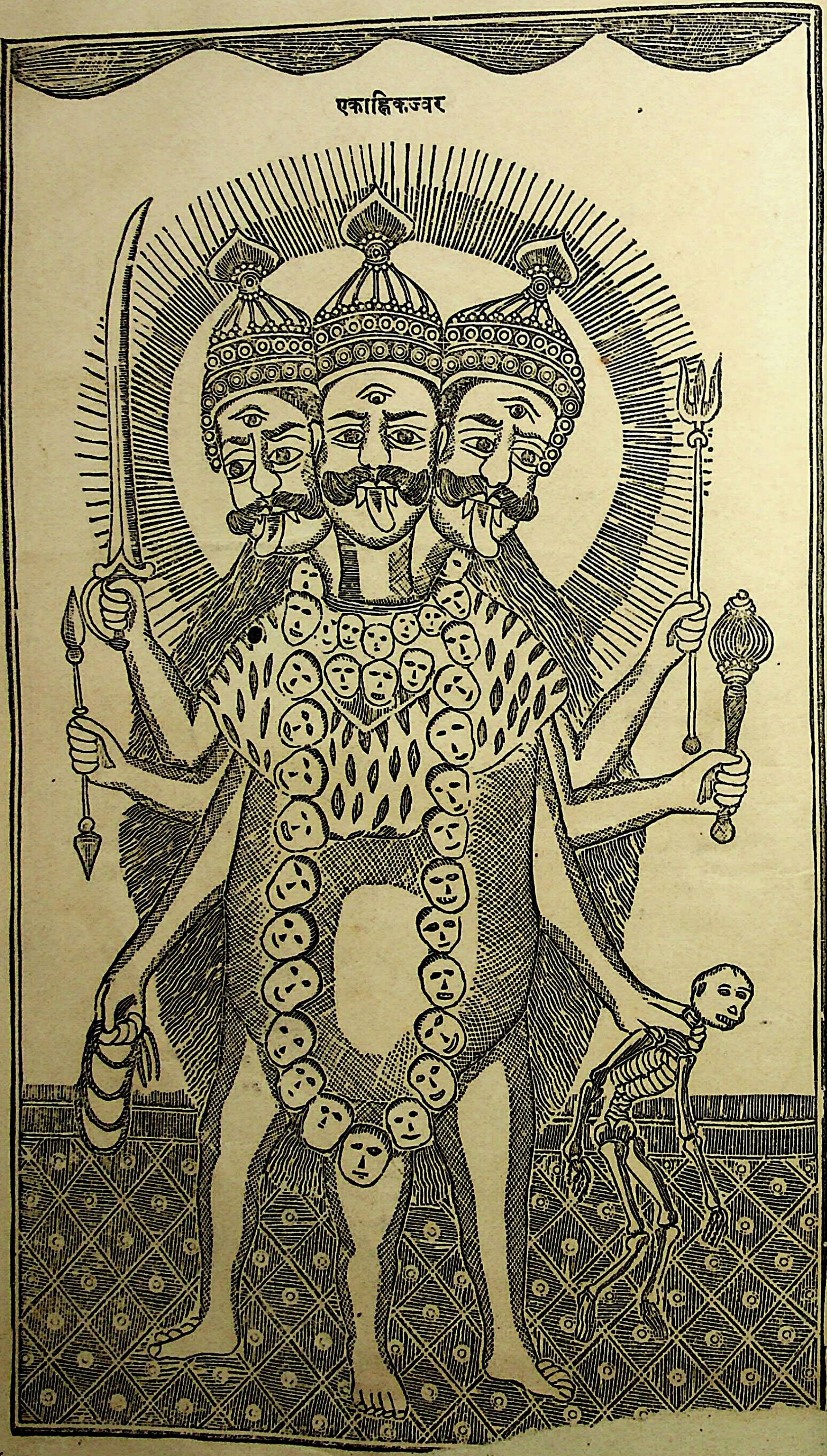

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिशिराज्वर.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

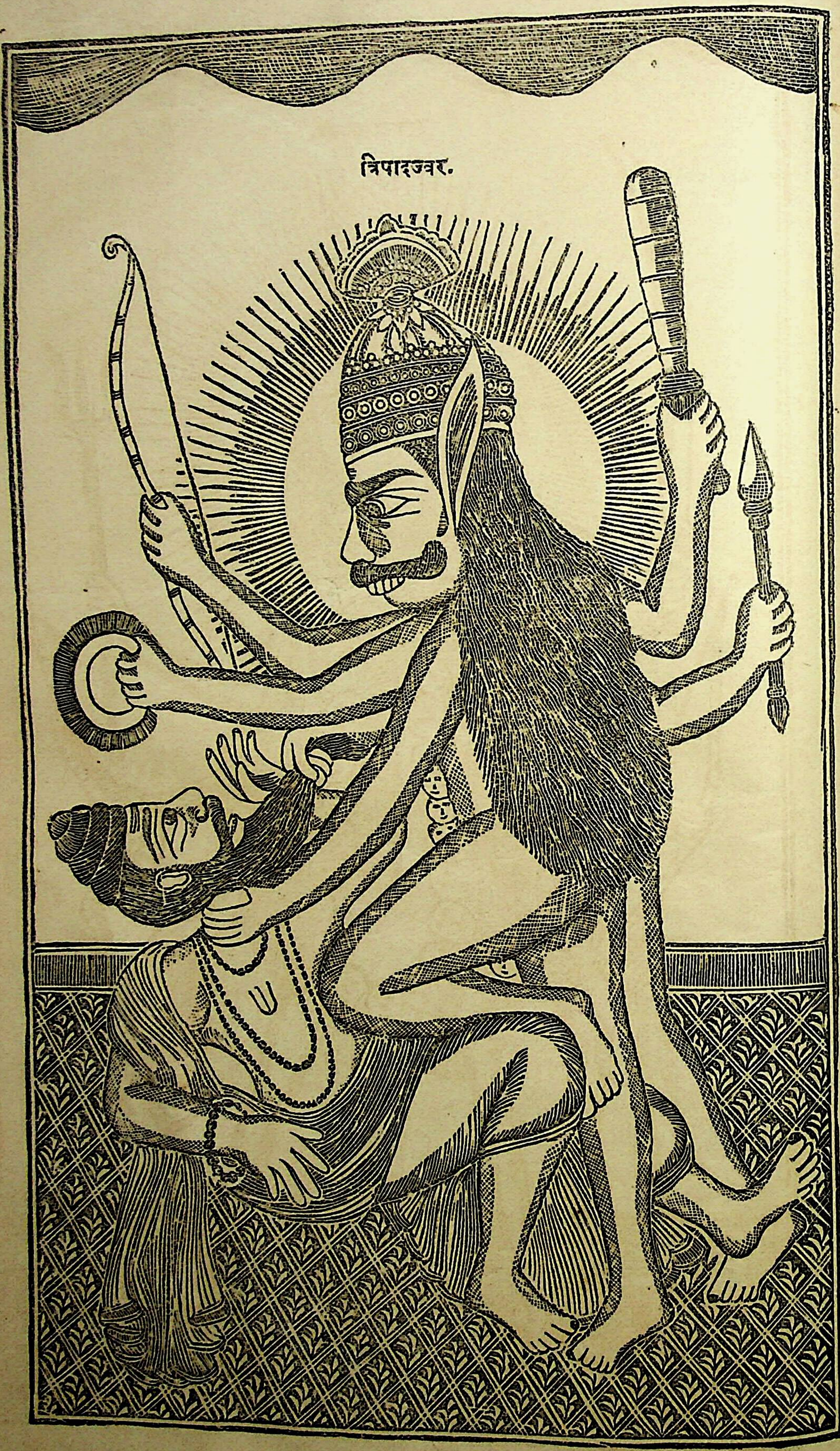

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्वलद्विप्रहज्वर.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

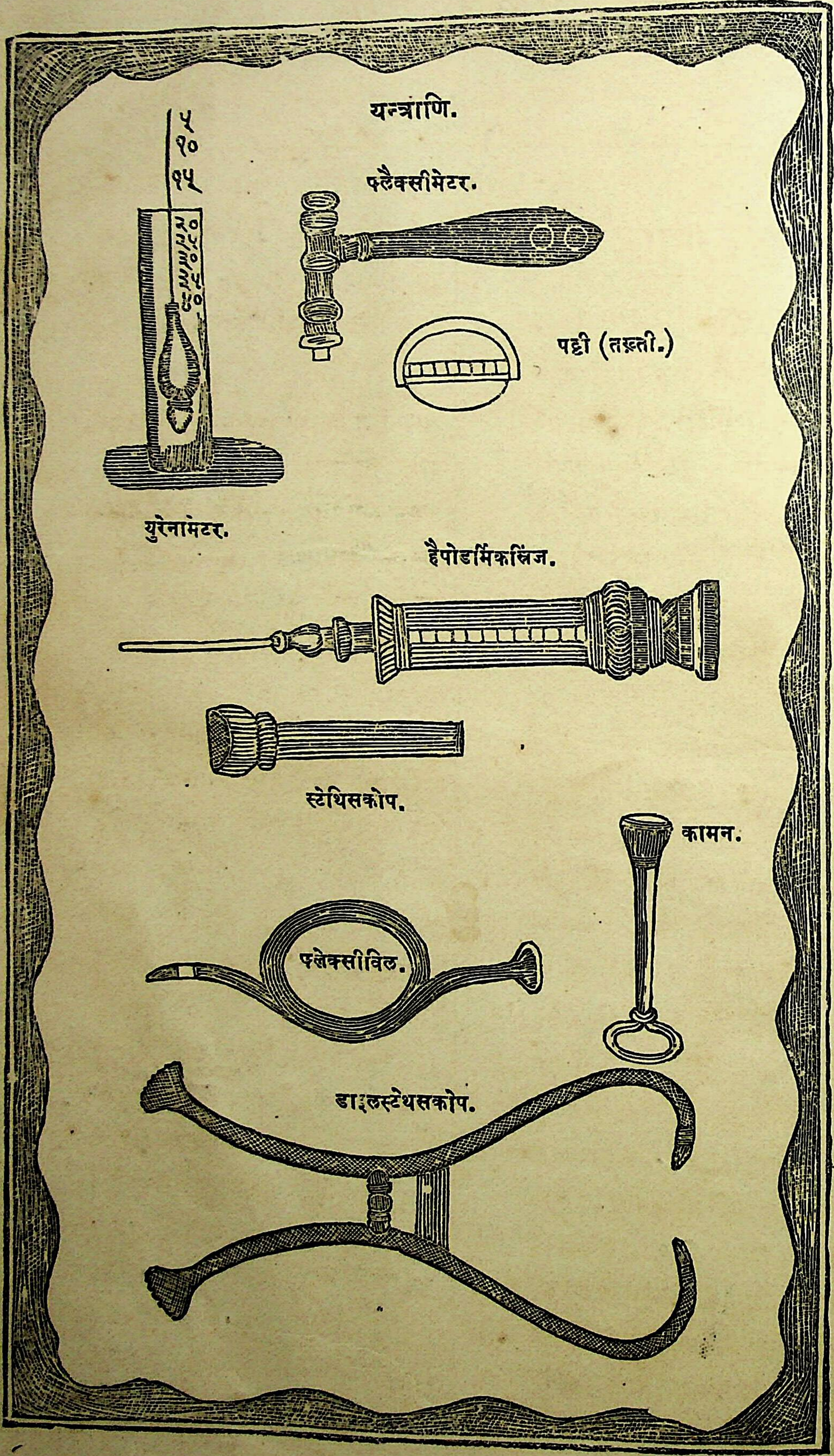

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चरकसंहिता सटीक प्रथम भाग का सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
सूत्र स्थान ॥	
पहला अध्याय ॥	
ब्रह्माजी के कहेहुए आयुर्वेद को पहले प्रजापति ने ग्रहण किया फिर प्रजापति से अश्विनीकुमार ने व अश्विनीकुमार से इन्द्रने और भगवान् इन्द्रसे लेने के लिये भरद्वाज का उनके पास जाना	१
अंगिरा आदि महर्षियों का तपस्या में विघ्न करनेवाले रोगों की उत्पत्ति देख कर प्राणियोंपर कृपाकरने के लिये हिमालय पर्वतपर एकत्रित होना और आरोग्य होने का परस्पर निर्णय करना	२
भरद्वाजऋषिका दीर्घायुकी इच्छा से इन्द्रके पासजाना	३
इन्द्र का भरद्वाज से आयुर्वेद का वर्णन करना जिसे जानकर भरद्वाजजी का दीर्घायु होके ऋषियों से उसका वर्णन करना	३
भगवान् आत्रेयजी का अपने अग्निवेश आदि छः शिष्यों को आयुर्वेद बतलाना	४
अग्निवेश आदिक छवों शिष्योंका अपने २ आयुर्वेद के ग्रन्थ रचकर गुरुजी को सुनाना और भगवान् आत्रेयजीका उन अपने शिष्यों के बनायेहुये आयुर्वेद ग्रंथों को सुनकर बहुत प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों का भी उसे सुनकर हर्षित होना	४
अग्निवेश आदि ऋषियों के हृदयमें बुद्धि आदि का प्रवेश होना जिससे उनके बनायेहुये ग्रन्थों का पृथ्वीतलमें प्रतिष्ठित होना	५
आयुर्वेद शब्द की निरुक्ति	"
आकाश आदिक पांचतत्त्व व गुण व समवायसम्बन्ध आदि का वर्णन	६
मिथ्यायोग, अयोग, अतियोग का कथन तथा मनके दोष व शारीरिकरोग व मानसिक रोग तथा उनकी शान्ति का वर्णन	७
द्रव्यों के गुण व कर्म तथा तीन प्रकार के भेद और जो काममें लाना चाहिये उनका वर्णन	८
चार प्रकारकी औद्भिद औषधियों का कथन तथा उनको काम में लानेका क्रम और महास्नेहों में चार प्रकार के तैल, पांच प्रकार के लवण, आठ प्रकार के मूत्र और आठ प्रकार के दूधका वर्णन	९
शुद्ध करने वाले छःप्रकार के द्रव्यों का वर्णन	"
मूलवाली १६ द्रव्यों को पृथक् २ वमन	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
शिरोविरेचन तथा विरेचन में काम लाने का क्रम और फलवाली १९ द्रव्यों को पृथक् २ वमन, आस्थापन, नस्य व विरेचन म प्रयोग करने का वर्णन	१०
पांच प्रकार के लवण जिन २ रोगों में प्रयोग करना चाहिये उनका सविस्तर वर्णन	११
आठ प्रकार के मुख्य मूत्रों का स्वाभाविक गुण व रोगों में व्यवहार करने का कथन	,,
भेड़ी के मूत्रका गुण	१२
बकरे के मूत्रका गुण	,,
गोमूत्र का गुण	,,
भैंसके मूत्रका गुण	,,
हाथीके मूत्र का गुण	,,
ऊँट के मूत्र का गुण	,,
घोड़े के मूत्र का गुण	,,
गधे के मूत्र का गुण	,,
आठ प्रकार के दुग्धों के गुणों व कर्मों का वर्णन	,,
भेड़ी के दुग्ध का गुण	,,
बकरी के दूध का गुण	,,
गौ के दूध का गुण	,,
भैंस के दूध का गुण	,,
उटनी के दूध का गुण	१३
हथिनी के दूधका गुण	,,
घोड़ी के दूधका गुण	,,
स्त्री के दूधका गुण	,,
इन सब दूधों के गुण अन्न पानाध्याय में वर्णित होंगे	,,
फलवाले और मूलवाले वृक्षों में से अन्य तीनवृक्षों का वर्णन	११
थूहर वृक्षके दूधका गुण	,,
बहेड़ा वृक्षके कर्मों का वर्णन	,,
मदारवृक्ष के दूध का गुण	,,
जिन वृक्षा की छाल हितहै उनका वर्णन	१४
करंजआ की छाल का गुण	,,
सहजन की छालका गुण	,,
लोधकी छाल का गुण	,,
इन छः वृक्षों का जानना	,,
मूत्र, दूध तथा दूधवाले वृक्ष और छालवाले वृक्षों का जानना	,,
औषधियों के नाम रूपों को जानकर योगज्ञ या तत्त्ववेत्ता का होना	,,
सर्वप्रकार से औषधियोंके जाननेवाले पुरुष के विशेष गुणोंका वर्णन	,,
हरएक पुरुषको देखकर औषधियोंका प्रयोग करना	,,
नाम, रूप और गुणों से औषधियों के ज्ञान का वर्णन	१५
जानीहुई औषधियोंको बुरीरीतिसे प्रयोग करनेपर अनर्थ का वर्णन	,,
उत्तम औषधि को अच्छेप्रकार नहीं व्यवहार करने से तीक्ष्णता या विषतुल्यता का होना	,,
जीवन तथा आरोग्यकी इच्छावाले पुरुष को अज्ञानी वैद्यका त्याग करना	,,
अज्ञानी वैद्यदत्त औषधिसे रोगीके दुःखादि भोगने का वर्णन	,,
अज्ञानी वैद्यके साथ संभाषण करनेसे	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
क्रूर रोगों की उत्पत्ति का वर्णन	,,
केवल स्नेह पान करनेसे तीनरात्र व सात रात्रमें शुद्धकोष्ठ व क्रूरकोष्ठ	१०९
गुड़ दाख आदि औषधियों के द्वारा कोमलकोष्ठ वाले जनोंके विरेचन	,,
क्रूरकोष्ठवाले पुरुषके विरेचनका निषेध व ग्रहणी में अधिक वायु होना	,,
अधिक पित्तवाली व न्यून कफ तथा वायुवाली ग्रहणी के होने पर कोमल कोष्ठ का वर्णन	१०९
स्नेहके विना पचे तृषा उत्पन्न होनेपर वैद्यको वमन कराने का वर्णन	१०९
शीतल जल पीकर अन्न खाकर वमन करने वाले पुरुषको घृत पीनेके [illegible] [illegible]नषेध	११०
अधिकमात्रासे सेवन [illegible] किये हुए पुरुष को मिथ्या [illegible]चारों से [illegible] रोगोंकी उत्पत्ति [illegible] का वर्णन	,,
क्लेशको न सहनेवाले व नित्य मद्यपान करने वाले मनुष्यों को स्नेहन में हितकारक लवादिकोंका वर्णन	११०
भोजनके पहले राबके साथ तिलों के भोजनों का वर्णन	१११
कुष्ठादि रोगियोंको स्नेह पीनेमें कर्त्तव्यताका वर्णन	११२
शीघ्रता से स्नेह पीने के अवगुण	११३
इति स्नेहाध्यायस्त्रयोदशः १३ ॥	,,

चौदहवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
स्वेदाध्याय का व्याख्यान	,,
स्वेदोपयोगियोंका कथन तथा उनकी स्वेदक्रियाओं का वर्णन	११४
प्यासे, भूखे, दुर्बल आदि मनुष्यों को स्वेदन कराने का निषेध	११५
अर्दित आदि रोगी पुरुषों को हितकारी स्वेदन का वर्णन	,,
कफजरोगों और वातजरोगों में रोगके अनुसार औषधियों का व्यवहारकरना	११६
देशकाल रोग तथा युक्तिके जानने वाले वैद्योंको वरुण शोभाञ्जन भूतृण आदि औषधियों के द्वारा नाड़ी स्वेद	,,
गेहूं के टुकड़े व यव के चून आदिकों का लेप व उसके स्थान में चमड़े रेशमी [illegible] आदिकों से बांधनेका वर्णन	११७
उर्द आदि यव आदिकोंकेद्वारा प्रस्तर स्वेदन का वर्णन	,,
नाडीस्वेदन परिषेकस्वेदन और अवगाहन स्वेदन का वर्णन	११८
जेन्ताक स्वेदकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंको भूमिकी परीक्षा पर पूर्वमुख या उत्तर मुख कूटागर व उसकी लम्बाई व चौड़ाई का वर्णन	११९
कूटागारमें पवित्र काष्ठोंको भरकर जलाकर व वातनाशक तैलादिकों को लगाकर प्रवेशकरने का वर्णन	,,
स्वेदन देनेके अनन्तर वातनाशककाष्ठोंसे तपाकर गर्म जल से साफ किये हुये शिलामें ऊनी वस्त्रबिछाकर रोगी के सुलाने का वर्णन	१२०
कर्षू स्वेदन व घनी दीवारसे कुटीबनाकर उसमें कूट आदि औषधियोंसे लेपन का वर्णन	१२१
कुटीस्वेद व कुम्भीस्वेद का वर्णन	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय पृष्ठ

होलाक स्वेद व स्वेदों के दो भेद १२२

अग्नि के विना दशप्रकार का स्वेद व तेरह प्रकार का स्वेदवे संक्षेप से छः प्रकार के स्वेदों का वर्णन १२३

इतिस्वेदाध्यायश्चतुर्दशः १४॥ ,,

पन्द्रहवां अध्याय॥ ,,

उपकल्पनीय नाम अध्याय का वर्णन ,,

औषधियों के कल्पनाके विषय में आत्रेयजी का तथा अग्निवेशका परस्पर प्रश्नोत्तर १२४

वास्तुविद्या के जाननेवाले मनुष्योंको गृह आदि बनवाने व उनके अनेक प्रकारों के सम्भारों की कर्त्तव्यता १२५

पहले कहीहुई विधिके अनुसार रोगी यथायोग्य स्वेदन तथा स्नेहनकराकर मैनफल के कषाय की मात्राके पानकी क्रिया तथा मात्रा के पानान्तरकी कर्त्तव्यताओं का वर्णन १२६

मैनफलके काढ़ेकी मात्रा तथा संशोधनकी मात्राओं के प्रमाणका वर्णन १२७

क्वाथ पानके अनन्तर रोगी को वमन कराने के लिये सौगन्धिककी दण्डीको गले में छुवाकर सुखपूर्वक वमन कराने व उससे निकलेहुये दोषों योगों अयोगों तथा अतियोगोंके लक्षण १२८

अतियोग व अयोग में अफरा आदि रोगों के उपद्रवोंका वर्णन १२९

अच्छे प्रकारसे वमन करायेहुये रोगी के हाथ पैर तथा मुख धुलाकर निर्वात स्थान में लेजाने की शिक्षाओंका व- ,,

फिर स्नेहन तथा स्वेदन करायेहुये सावधान चित्त रोगी को देखकर उसके लिये भोजनों का वर्णन १३०

अच्छे प्रकार भोजनों के पचजाने पर रोगी को शिरसे स्नानादि व यथेच्छ आहार विहारादि करने की आज्ञा १३१

इति उपकल्पनीयोऽध्यायःपंचदशः १५॥

सोलहवाँअध्याय॥

चिकित्सा प्रभृतीय नाम अध्याय का व्याख्यान १३२

सम्यक् विरेचनों के लक्षणोंका व- ,,

अच्छे प्रकार विरेचन न होनेके व अधिक विरेचन होने के लक्षण १३३

वमनके अतियोगमें ऊर्ध्वग वातरोग आदिकों की उत्पत्ति होने पर कुशल वैद्य की शरणमें जाकर चिकित्सा करनेका वर्णन .... ,,

अधिक दोषवाले मनुष्यों के लक्षणों व वमन विरेचनादिकों के लक्षण ,,

विशुद्ध कोष्ठवाले मनुष्यों के गुणागुण तथा संशोधन व पान के लक्षण १३४

औषधियों के द्वारा धातुओं के क्षीण होजाने पर घी मांसादि व पथ्य भोजनका वर्णन .... ,,

शरीरमें तैलादि मर्दन करवाके स्नान आदि व निरूह तथा अनुवासनवस्ति क्रियाओं का वर्णन .... ,,

स्नेहन स्वेदन वमनआदिकों में अनुचित व्यवहार के द्वारा रोगों की उत्पत्ति व औषधियों का वर्णन .... ,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
चिकित्साके विषयमें अग्निवेश तथा आत्रेयजी के परस्पर प्रश्नोत्तर	१३६
इति चिकित्साप्रभृतीयोनामषोड़शोऽध्यायः॥ १६ ॥	,,

सत्रहवाँअध्याय॥ १३७

विषय	पृष्ठ
कियन्तः शिरसीयनाम अध्याय का व्याख्यान	,,
शिर आदिरोगोंके विषयमें अग्निवेश व आत्रेयजी के परस्पर प्रश्नोत्तर	,,
दोषोंके परिमाणके विकल्पसे पांच व बासठि व अट्ठारह प्रकार के क्षयी रोगों व दोषों की तीन प्रकार की गतियों का वर्णन	,,
शोकादिकों के द्वारा हृदय में प्रविष्ट वायुके अवगुणों का वर्णन	१३८
शिर के रोगों के लक्षण व वायु से शूल भ्रम तथा त्रिदोषजोंके लक्षण	१३९
भोजन के पचजाने पर पीड़ा की अधिकता से वातज, पित्तज तथा कफज हृद्रोग के लक्षणों का वर्णन	१४०
वातादि तीनों दोषोंके हेतु तथा लक्षणों के मिलने से सन्निपातज हृद्रोग के लक्षणों का वर्णन	१४१
दो दोषों की अधिकतासे और तीन दोषों की अधिकता से सन्निपात के तेरह तथा पचीस प्रकारों का वर्णन	,,
वातादिकोंके क्षय तथा वृद्धिके द्वारा उत्पन्न उपद्रवों का वर्णन	१४२
पित्त के क्षीण होजानेपर मन्दाग्नि रोगोंकी उत्पत्तियों का वर्णन	१४३
कफ के क्षीण होजाने पर भ्रम ऐंठन आदि तथा ग्लानि व कम्प आदिक	,,
बल के अनुसार बढ़ेहुये दोषों तथा घटेहुये दोषों के लक्षणों के चिह्न	१४४
रस, रुधिर, मेदा, हड्डियों, मज्जा, वीर्य्य व मल आदिकों के क्षीण होजाने पर अनेक उपद्रवों के लक्षण	,,
मूत्र व अन्यमलों तथा ओज के क्षिण होजाने पर भय, दुर्बलता आदिकों के लक्षणों का वर्णन	१४५
ओजके नाश होनेपर क्षयके कारण	,,
रुकीहुई वायु के द्वारा बस्तिस्थान में प्रविष्ट ओज के होने पर कष्टदायक मधुप्रमेह की उत्पत्ति का वर्णन	,,
मधुप्रमेह में बारम्बार त्रिदोषों के लक्षण व उन के क्षयों का वर्णन	१४६
मांसल स्थानों में मधुप्रमेह की उपेक्षा करने से अत्यन्तकष्टदायक शराविका आदि सात पिडिकाओं की उत्पत्ति तथा उनके लक्षणों का वर्णन	,,
बाह्य और अभ्यन्तर भेदों से दो प्रकारकी विद्रधि व उनकी आकृति	१४७
ग्रन्थिके उत्पन्न होने पर लक्षण तथा उपद्रव व सब प्रकार की विद्रधि	१४७
विद्रधिके पकने के समय बिच्छुओंके काटने कीसी पीड़ा तथा वातज, पित्तज कफज और सन्निपातज विद्रधियों के लक्षण व उनकी साध्यासाध्य विशेषता का वर्णन	१४८
विद्रधिके पककर फूट जानेपर मुख स्राव व गुदस्रावोंका वर्णन	,,
विद्रधियों के उत्पन्न होनेपर स्नेहन स्वेदन तथा विरेचन के द्वारा गुल्म की	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
समान उस की चिकित्साका वर्णन	१४९
अधिक कफ तथा मेदावाले मनुष्यों के शराविका कच्छपिका आदि अत्यन्त दुःखदायी पिडिकाओंका वर्णन	,,
सुखसाध्य दुस्साध्य कोमल कठिन व अधिक पीड़ावाली पिडिकाओंका व०	,,
वातादि दोषोंके हेतु तथा लक्षणोंके द्वारा उपद्रवों को जानकर पहलेही से चिकित्सा करनेका वर्णन	१५०
तृषा आदि पिडिकाओं के उपद्रवोंमें तीन प्रकारकी गतियों का वर्णन	,,
वर्षाआदि षट्ऋतुओं में पित्तादिदोषोंका संचय व कोपादिकों का वर्णन	,,
प्राकृत वैकृतभेदों से दोषों की कालकृत गतियों का वर्णन	,,
शक्ति बल मल ओज व अनेक रोगों की उत्पत्ति का वर्णन	,,
आयुकी रक्षाकेलिये बुद्धिमान् मनुष्यों को सदैव शरीर के समीप आनेवाले रोगों की परीक्षाओंका वर्णन	१५१
इति कियन्तःशिरसीयोनामसप्तदशोऽध्यायः॥	,,

अट्ठारहवाँअध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
त्रिशोफीय नाम अध्यायका व्याख्यान	,,
वातज पित्तज और शोथज भेदों से तीन प्रकार के शोथोंका वर्णन	१५२
वमन विरेचनादिके उपरान्त आहार विहारादिकोंके बिगड़जाने पर छर्दि अजीर्ण आदि रोगों की उत्पत्ति	१५३
वातज पित्तज कफज तथा सम्पूर्ण लक्षणों के मिलने से सन्निपातज शोथ	१५४
शोथोंको पैरोंसे उत्पन्नहोकर सम्पूर्ण शरीर में फैलकर कष्टसाध्य अत्यन्त कष्टसाध्य व छर्दि श्वासआदि उपद्रव	१५५
कफके कोप करने पर जिह्वाके मूलमें शोथ से उत्पन्न हुये गलशुण्डिका	,,
पुनःकफके कुपित होनेपर तालुके मूल में स्थित शोथ से उत्पन्न गलगण्ड	,,
पुनः पित्तके कुपित होने पर कानों की मूल में दुर्ज्जय शोथ की उत्पत्ति	१५६
वायुके कुपित होनेपर तिल्लीकी वृद्धि	,,
शोथके संग्रह में सूजन की समानतासे अधिमांस तथा अर्बुद आदि रोगों की विशेषता का वर्णन	,,
त्रिदोषों के कुपित होने पर जिह्वा के मूल में सहादि व रोहिणी रोग	,,
मनुष्योंको रोहिणीरोगमें तीनिरात्रि जीने व रोग के नाश के लिये चिकित्सा करने का विधान	१५७
साध्य असाध्य भेदोंसे रोगोंके दोमकारों का तथा दारुण भेद से चार प्रकार व असंख्य प्रकारों का वर्णन	,,
सब रोगों की व्यवस्था व रोगों के नाम के न जानने से वैद्य को लज्जित न होने का वर्णन	,,
एक दोष के कोपित होनेपर कारणों की विशेषता से अनेक रोगों की उत्पत्ति तथा कारणों को जानकर चिकित्सा करने का वर्णन	१५८
त्रिदोषज रोगोंके सदैव रहनेमें विकारों के जानने की इच्छा	,,
उत्साह श्वास आदि विकाररहित	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
वायु के कर्मों का वर्णन	१५८
दर्शन परिपाक आदि विकाररहित पित्त के कार्यों का वर्णन	"
स्नेह सन्धि बन्धनआदि विकाररहित कफ के कार्यों का वर्णन	"
त्रिदोषों के क्षीण होने पर स्वाभाविक कार्य्यों की हानि व विरोधी कार्य्यों की वृद्धिता का वर्णन	"
त्रिदोषों के स्वाभाविक कार्य्यों की बढ़ती से वृद्धि समता तथा हानि	"
इति त्रिशोफीयोऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥	१६६

उन्नीसवां अध्याय ,,

विषय	पृष्ठ
अष्टौदरीय नामक अध्याय का व्याख्यान	,,
आठ उदरादिकोंका सविस्तर वर्णन व उनके अलग अलग स्पष्टता से लक्षणों का वर्णन	१६४
धातुओं की विषमता से शरीर में रोगों के उत्पन्न होनेपर आगन्तुजरोगों में विशेषता का वर्णन	"
आगन्तुज रोगों में अनुबन्ध तथा प्रकृतियोंको देखकर चिकित्सा करना	"
इति अष्टौदरीयोनामैकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥	"

बीसवां अध्याय ,,

विषय	पृष्ठ
महारोग नामक अध्याय का व्याख्यान	,,
चारप्रकार के आगन्तुज आदिकोंसे रोगोंका सविस्तर वर्णन तथा उनकी अलग अलग उपपत्तियों और अस्सी प्रकार वातज विकारों के लक्षण	१६७
अन्य वातरोगों में भी वायुके आत्मस्वरूप तथा सुलक्षण का अथवा चतुर्वैद्य को वातजरोगों का निश्चय करना	"
रूक्षता लघुताआदि वायुके आत्मरूप व वायु के कार्य्यों का वर्णन	१६८
वातजरोगोंमें मधुर अम्ल लवणआदि तथा उष्णवस्तुओंसे वातजरोगोंकी चिकित्साका वर्णन	"
वैद्य लोगों को सम्पूर्ण चिकित्साओं में अनुवासन तथा आस्थापनकी प्रधानता का वर्णन	"
चालीस प्रकारके पित्त रोगों व उनके निश्चयों का वर्णन	१६९
बीस प्रकारके कफजरोगों के लक्षण	१७२
इति रोगचतुष्के महारोगाध्यायोनामविंशः ॥ २० ॥	,,

इक्कीसवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
अष्टौनिन्दितीय नाम अध्यायका व्याख्यान	"
अतिदीर्घादि आठ निन्दित मनुष्यों के लक्षणों का वर्णन	१७३
अति मोटे पुरुषों के आठ दोष	"
अत्यन्त स्थूलताकी उत्पत्ति व लक्षण तथा उपद्रवों का वर्णन	"
भोजन के समय भोजन न मिलनेसे घोर विकारों के लक्षणों का वर्णन	१७४
अग्नि तथा वायुकी विशेषता से उपद्रवों का वर्णन	"
मेदस्वी पुरुषोंके दोषों कारणों तथा लक्षणों का वर्णन	"
क्रोधी मनुष्य और अत्यन्तकृशी मनुष्यों के लक्षणों का वर्णन	"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
बहुत दुबले मनुष्यों को अधिक भोजन आदिकों के करने का निषेध	१७५
स्थूल तथा कृश मनुष्योंको गुरु लघु तथा संतर्पणों का वर्णन	,,
क्षुधाआदि वेगोंके सहनेवाले पुरुषों को अग्निके अनुसार अन्नका परिपाक	,,
अति स्थूलताके होनेपर गिलोय आदि औषधियों के प्रयोगोंका वर्णन	१७६
अतिकृशता के होनेपर स्वपनादि प्रयोगों का वर्णन	,,
नवीन अन्न नवीनमद्य आदि ईख शालिधान आदि व स्निग्ध उवटन स्नानादिकों के समयके अनुसार वमनादि कार्य्यों का वर्णन	१७७
मनुष्यकी कृशतादिकोंके दूरकरनेपर रसायन तथा वृष्य योगादिक	,,
निद्रामें सुख दुःखादिकोंका अधीनत्व	,,
गान तथा अध्ययनादि सेवी मनुष्यों को दिनमें शयन करने का वर्णन	१७८
दिनमें शयनके कालों का वर्णन	,,
अधिक मेदावाले आदि मनुष्यों को दिनमें निद्रा का असेवन व दिनमें शयन करने के अवगुणों का वर्णन	,,
सम्पूर्ण रोगों के होनेपर दिनमें अनुचित शयन करने से पुरुषोंके हित व अहितों का वर्णन	१७९
रात्रिमें जागने से व दिनमें सोने से व बैठने तथा टहलने से रूक्षतादि रोग....	,,
शरीरके विषयमें शुभकारी निद्रादिक	,,
नष्टहुई निद्राके ले आनेवाले पदार्थ....	,,
तमोगुण आदिकोंसे हुई निद्राओंमेंसे भूतधात्रीं आदि व शेष निद्राओं की रोगोंमें गणनाओं का वर्णन	१८०
निद्राके भङ्ग करनेवाले पदार्थों व निद्रा के प्रकारों का वर्णन	,,
इतिअष्टौनिन्दितीयोनामएकविंशोध्यायः॥ २१ ॥	,,

बाईसवां अध्याय॥ ,,

विषय	पृष्ठ
लंघन बृंहणीय नाम अध्यायका व्याख्यान	,,
लंघन आदिकों के विषयमें अग्निवेशादि अपने छहों शिष्यों से भगवान् आत्रेयजी के परस्पर प्रश्नोत्तर	१८१
लंघन आदि छहों के योग अयोग तथा अतियोग के संक्षेप लक्षण	,,
अधिक कफ पित्त रुधिर मलवाले आदि पुरुषों को वमनादिकों के द्वारा लंघन कराने का वर्णन	१८२
कफादि रोगों में बुद्धिमान् वैद्यों को पाचन कराने का वर्णन	,,
पूर्वोक्त स्वल्प बलवान् रोगियों की तृषाके रोकने से व उपवासादिकों के द्वारा चिकित्सा करने का वर्णन	१८३
बृंहण और लाघवरसों को भिन्न भिन्न ऋतुओं में देनेकी क्रिया	,,
द्रवस्तम्भनादिकों के लक्षण	१८४
लंघनीय बृंहणीय रूक्षित तथा अति स्तंभितों के लक्षणों का वर्णन	१८५
इति लंघनबृंहणीयोनामद्वाविंशोध्यायः॥ २२ ॥	,,

तेईसवाँ अध्याय॥ ,,

विषय	पृष्ठ
संतर्पणीय नाम अध्याय का व्याख्यान	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
स्निग्धादिकों से संतर्पण करने के उपद्रवों का वर्णन	१८६
संतर्पण से पैदाहुये रोगों की चिकित्सा का वर्णन	,,
मूत्रकृच्छ्रादि रोगों के होनेपर कूटादि प्रयोगोंका वर्णन	१८७
प्रमेहादि रोगोंके होनेपर त्र्यूषण त्रिफलादि संतर्पणों का वर्णन	१८७
अपतर्पण आदिकों से पैदाहुये रोगों तथा उन की औषधादिकों का वर्णन	१८९
ज्वरादि रोगों के होनेपर हितकारी तर्पणों व शर्करादि मंथों का वर्णन	,,
मद्य विकारोंके होनेपर खर्जूरादि मंथोंका वर्णन	,,
इतिसंतर्पणीयोध्यायस्त्रयोविंशः ॥ २३ ॥	,,

चौबीसवां अध्याय ॥,,

विषय	पृष्ठ
विधि शोणतीयनाम अध्यायका व्याख्यान	१९०
देशकालादिकों के अनुसार शुद्ध रुधिरों के गुणों का वर्णन	,,
रुधिरके दूषित होनेपर मुखपाकादि रोगों का वर्णन	,,
कुलथी आदि तथा मद्य विशेषादिकों के सेवने से रुधिरके दूषित होनेपर अनेकप्रकार के रोगोंकी उत्पत्ति	१९१
वातादिकों से उत्पन्न रुधिरों तथा विशुद्ध रुधिरों के लक्षणों का वर्णन	१९२
शुद्धशोणित वाले पुरुषोंके तथा दूषित आहारकरनेवाले उपद्रवोंके लक्षणोंका वर्णन	,,
दुष्ट मलसे पैदाहुये मदादि रोगों के उपद्रवों का वर्णन	१९३
वातज मदरोगके होनेपर बहुतबकना व चञ्चलतादि रोगों के उपद्रव	,,
पित्तजमदरोग के होनेपर कठोरवचन कहना, पीटना, लड़ना आदि उपद्रवोंका वर्णन	,,
कफजमद के होनेपर धीरेसे वचन कहना तन्द्रा तथा आलस्यादि उपद्रव	१९३
सन्निपातज मदमें तीनों दोषोंके लक्षणों का वर्णन	,,
वात, पित्त तथा कफ के विना मद्यमद विषजमद तथा रक्तजमद के असंभवका वर्णन	,,
वातज मूर्च्छा तथा पित्तज मूर्च्छा में कम्प तृषा आदि लक्षणोंका वर्णन	१९४
कफज मूर्च्छा होने पर लारबहना आदि तथा सन्निपातज मूर्च्छामें तीनों दोषों से हाथ, पैर पटकना आदि लक्षणों का वर्णन	,,
वातादि दोषोंकी शान्ति होजाने पर मद तथा मूर्च्छादिकों की शान्ति व औषधियों के विना संन्यास रोग की अशान्ति का वर्णन	,,
बुद्धिमान् वैद्योंको संन्यास रोग में चिकित्सा का वर्णन	१९५
संन्यास रोगवाले पुरुषों के मुख में अनेक प्रकारकी तीक्ष्ण औषधियोंको बारम्बार छोड़ने का वर्णन	,,
पुनः संन्यास रोग में जम्भीरी नींबू आदि व हींग आदि औषधियों से उप-	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय पृष्ठ

चार व गीत तथा बांजा सुनाना १९५

मद तथा मूर्च्छादि रोगों में वमनादि पञ्चकर्म्मों व अट्ठाईस औषधियों तथा महाषट्पदों व दुग्ध आदिकों के प्रयोगों का वर्णन १९६

इति विधिशोणिताध्यायश्चतुर्विंशः ॥ २४ ॥ ,,

पच्चीसवां अध्याय ॥ ,,

यज्जःपुरुषीय नामक अध्याय का व्याख्यान १९७

धर्म्मदर्शी भगवान् आत्रेयजीके समीप बैठेहुये सम्पूर्ण महर्षियों का आत्मादि समूह तथा रोगों की उत्पत्ति के विषय में परस्पर प्रश्नोत्तर और महर्षि आत्रेयजी करके कियेहुये सब समाधान २००

हित तथा अहित आहारों के विषय में अग्निवेश से आत्रेयजी के सविस्तर प्रश्नोत्तरों का वर्णन २०८

विकारों की शान्ति के लिये एक सौ बावन श्रेष्ठपदार्थोंका वर्णन २१०

चौरासी आसवों के विषय में अग्निवेश से भगवान् आत्रेयजी के परस्पर सविस्तर प्रश्नोत्तरों का वर्णन २११

इति अन्नपानचतुष्के यज्जःपुरुषीयोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ,,

छब्बीसवां अध्याय ॥ ,,

आत्रेयभद्रकापीय नामक अध्याय का व्याख्यान .... ,,

रस और आहार के निर्णय के विषय में रमणीय चैत्ररथवन में उपस्थित हुये आत्रेय आदि महर्षियों के परस्पर प्रश्नोत्तरों का वर्णन २१३

मधुर आदि षट्रसों की योनि तथा अलग अलग गुणों व लक्षणोंका व० २१४

मधुर, लवण तथा कटु आदिकों को अमलादिकों के साथ युक्त करने से बीस द्रव्यों तथा तिरसठि प्रकारकी रसों की कल्पनाओं का वर्णन २१७

प्रधानरस तथा प्रधानरसोंकी कल्पनासे तिरसठि असंख्य का वर्णन ,,

चिकित्सा की सिद्धिके लिये परत्वादि दश गुण उपाय रूपों के लक्षण २१८

दोषों को देखकर देश कालादिकों के अनुसार औषधियों की कल्पनाओं का वर्णन व परत्वादि दश गुणों के लक्षणों का वर्णन .... ,,

पञ्चमहाभूतोंसे षट्रसोंकी उत्पत्ति २१९

इन षट्रसों में प्रत्येक रसके द्रव्याश्रित गुणों तथा कर्मों का वर्णन २२०

गुणों से युक्त होने पर केवल मधुर रसका ही अत्यन्त सेवन करनेसे स्थूलता आदि तथा अन्यकफज रोगों की उत्पत्ति का वर्णन २२०

रुचिकारक आदि गुणोंसे युक्त अम्लरस के अधिक सेवन करनेवाले पुरुषों के दन्तहर्ष आदि रोगों की उत्पत्ति का वर्णन २२१

पाचन, दीपन आदि गुणों से युक्त अधिक लवणरस के सेवन करनेवाले मनुष्य के तृषा आदि उपद्रवों का व० २२२

मुख की शुद्धता करनेवाले कटुरस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
के अतिसेवन करनेवाले मनुष्यों को अलसक उदर्दादि रोगों का वर्णन	२२२
रोचक आदि गुणों से युक्त तिक्त रसके अधिक सेवन करनेवाले मनुष्यों के शरीरों में दाहादिरोगों तथा वातज रोगों का वर्णन	२२३
मधुर आदि छः रसों के विभाग, उत्पत्ति व गुण तथा लक्षणों का वर्णन	२२६
विपाकों के लक्षण व गुणागुणों की विवेचनाओं का वर्णन	,,
विपाक, वीर्य्य तथा प्रभावका वर्णन	२२७
मधुर आदि षट्रसों के विज्ञान	२२८
विरोधी आहारों के विषय में सविस्तर प्रश्नोत्तरों का वर्णन	२३६
इति आत्रेयभद्रकापीयनाम षट्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥	,,

सत्ताईसवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
अन्नपानविधि नामक अध्याय का व्याख्यान	,,
चतुर्वैद्य लोगों के द्वारा प्राणियों के अन्न पानकी प्राणरूपता का वर्णन	२३६
हित तथा अहित को जाननेके लिये अग्निवेशसे आत्रेयजी को अन्न पान विधिका वर्णन करना	,,
स्वभावसे ही जलादिकोंमें क्लेदकारकता आदि व वर्गोंके क्रमसे आहार द्रव्यों का वर्णन	२३७
द्वादश शूक धान्यादि वर्गों के नाम तथा अलग अलग वर्गों का कथन	२३९
हरितवर्ग व मद्यवर्गका सविस्तर व.	२५८
मद्यवर्ग जलवर्ग दुग्धवर्ग और गोरसवर्ग इक्षुवर्ग व कृतान्न आहारयोग्य वर्गों का सविस्तर वर्णन	२७२
शूकधान्य शमीधान्यकी रूक्षता व नये नाजकी गुरुताका वर्णन	,,
मरेहुये कृश अति अपवित्र आदि पशुओं के मांसके त्याग का वर्णन	,,
बल तथा वर्णके चाहने वाले पुरुषों के लिये मांसका रस अमृत के समान गुणकारी होनेका वर्णन	,,
क्रिमि वायु तथा धूपसे दूषित व सूखे शाकों का त्याग करने का वर्णन	२७३
पुराना कच्चा और क्रिमि तथा सर्प्पादिकों से दूषित फलोंका त्याग	,,
योग्य अयोग्य जल के दो दो भेद तथा परीक्षाओं का वर्णन	,,
तृप्त्यादिकारक अनुपान के कर्मों व लक्षणों का वर्णन	२७६
भक्ष्य पदार्थों की गुरुता व लघुता	२७७
इत्यन्नपानचतुष्केअन्नपानविधिर्नाम सप्तविंशोध्यायः ॥ २७ ॥	,,

अट्ठाईसवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
विविधाशितपीतीय नाम अध्यायका व्याख्यान	,,
अशितादि हितकारी अन्नके लक्षणों व गुणागुणों आहार प्रसाद रसों व पित्तादिकों की उत्पत्तियोंका वर्णन	२७८
धातु प्रसाद के गुणों अगुणों के सविस्तर लक्षणों का वर्णन	,,
हित अहित पदार्थों के सेवनेसे पैदा हुये उपद्रवों के विषय में अग्निवेश से आत्रेयजी के सविस्तर प्रश्नोत्तर	२८०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय पृष्ठ

अत्यन्तस्थूल अत्यन्तकृश व दुर्बल स्वल्प आहारवाले रोगियों की असमर्थता का वर्णन २८०

कुपित रसोंसे पैदाहुये अश्रद्धा आदिरोगों का वर्णन २८१

मांस के दूषित होनेपर अधिमांस व अर्बुद आदि रोगों की उत्पत्ति .... „

हड्डियोंके कोपित होनेपर अतिदन्त आदि रोगोंकी उत्पत्तियोंकावर्णन.... „

मज्जा वीर्य्य तथा मलके दूषितहोनेपर भ्रम मूर्च्छादि उपद्रवों का वर्णन २८२

रोगोंकी उत्पत्ति होनेकी चाह न करनेवाले मनुष्यों को हितकारी आहारों के सेवनका वर्णन .... „

मांसज विकारोंमें शस्त्र क्षार तथा अग्नि के द्वारा संशोधन क्रिया .... „

सम्पूर्ण प्राणियोंके ज्ञान तथा अज्ञान की विशेषता से मार्ग व कुमार्ग में प्रवृत्तियोंका वर्णन २८४

परीक्षक लोगों के हित व अहित विचारों व धैर्य्यादि गुणोंका वर्णन „

पथ्य व अपथ्यों के गुण व अवगुण २८५

इतिविविधाशितपीतीयोनामाष्टविंशोध्यायः॥ २८ ॥ „

उन्तीसवां अध्याय ॥ „

दशप्राणायतनीय नाम अध्यायका व्याख्यान २८५

जिनमें प्राण रहते हैं उन स्थानोंका व प्राणाभिसर का वर्णन २८६

दोप्रकारके वैद्यों के विषयमें अग्निवेशसे आत्रेयजी के परस्पर प्रश्नोत्तर „

पैंतिसप्रकारकी मूल तथा फलवाली औषधि चार महास्नेह पांचलवण आठ मूत्र आठ दूध छः तथा त्वचावाले वृक्ष इत्यादिकों के वक्ताहोने का वर्णन २८८

दोप्रकारके वैद्य और प्राणोंके स्थान व त्यागने योग्य वैद्य का वर्णन २९०

इतिदशप्राणायतनीयोन त्रिंशोध्यायः ॥ २९ ॥ „

तीसवां अध्याय ॥ „

दशमूलीय नामक अध्यायका व्याख्यान „

दश महामूलों का सविस्तर वर्णन २९१

प्राणादिकों में उत्तमोंका वर्णन २९२

आयुर्वेद वेत्ताओंके लक्षण .... „

तंत्रादि वाक्यार्थ तथा आयुर्वेद के विषय अग्निवेश व आत्रेयजीके प्रश्नोत्तरों का वर्णन २९३

आयुके हित व अहितोंका लक्षण २९४

आयुके प्रमाण तथा अप्रमाण के लक्षणोंका वर्णन २९५

आयुर्वेद के शाश्वतादि गुण व आयुर्वेद के काय चिकित्सादि आठअंग व सम्पूर्ण धर्मादिकों की प्राप्तिके लिये आयुर्वेद पढ़नेकी प्रशंसाका वर्णन.... २९६

तन्त्रके श्लोक आदि आठस्थानों के अलग २ भेद व लक्षणोंका वर्णन २९७

१२० अध्यायों के अलग अलग नामों का कथन ३०१

ज्वरादि कल्पों व पंच कर्मादि सिद्धियों का वर्णन ३०२

तन्त्र शब्दकी उपपत्ति पालविक उपद्रव शास्त्र दूषक वैद्य की निन्दा व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
उत्तम वैद्यों के लक्षण तथा प्रशंसाओं का वर्णन	३०४
इति दशमहामूलीयोऽध्यायः ॥	,,
इति सूत्रस्थान ॥	
अथ निदानस्थानेप्रथमअध्याय ॥	
ज्वरनिदान का व्याख्यान	३०५
हेतुआदि निदानों के नाम तथा सविस्तर भेदोंका वर्णन	३०६
विकारों के आदिमें वातादि आठ प्रकारके ज्वरों की उत्पत्ति व उन के लिङ्ग व भेद तथा सविस्तर लक्षण	३१२
घृतके गुण व अवगुणों का वर्णन	३१३
इति ज्वरनिदानेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥	
द्वितीयाध्याय ॥	
रक्तपित्तनिदानका व्याख्यान	३१४
जब विशेष उद्दालक आदिकों के भोजन से लोहित पित्तकी उत्पत्ति	,,
रक्तपित्तके पूर्वरूप तथा उपद्रव और लक्षणों का वर्णन	३१५
रक्तपित्त की उत्पत्ति यत्न और उस के साध्यासाध्य लक्षणोंका वर्णन	३१८
इति रक्तपित्तनिदानेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥	,,
तृतीयअध्याय ॥	
गुल्म निदानका व्याख्यान ॥	
वात आदि पञ्चगुल्मों के विषय में अग्निवेश व आत्रेयजी के सविस्तर प्रश्नोत्तरोंका वर्णन	३१९
कुपित हुई वायु महानाड़ियों में प्रवेश होकर स्थिरता करने से गुल्म कथनका वर्णन	३२०
निदान में कहेहुए आहार विहारादिकों के अहित होने से पित्त गुल्म के लक्षणों का वर्णन	३२१
मल मूत्रादि वेगोंके रोंकने से और अधिक भोजन व जलपानसे तथा क्षोभ से देहके कफको वात के साथ कुपित होने से कफगुल्मके लक्षणोंका वर्णन	,,
कुशल वैद्यों के द्वारा सन्निपातज गुल्मों के लक्षणों का वर्णन	३२२
स्त्रियोंकेही गर्भाशय में ऋतु सम्बन्धी रुधिर के इकट्ठे होने से रक्तज गुल्मके लक्षणों का वर्णन	,,
मूढगर्भा के लक्षण व पञ्चगुल्मोंके पूर्वरूपों का वर्णन	३२३
उपद्रवों की गुरुता लघुताके विचार द्वारा उक्त गुल्मोंकी चिकित्सा	३२४
इति गुल्मनिदानेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥	
चौथाअध्याय ॥	
प्रमेह निदानका व्याख्यान	,,
वातआदि तीनों दोषों से पैदाहुए प्रमेहों के लक्षण व विघात आदि हेतुओंका वर्णन	३२५
प्रमेहों के निदान तथा दूष्य विशेषोंका वर्णन	३२६
सन्निपात में अधिक श्लेष्मासे पैदा हुए उपद्रव व शरीरागत क्लेद	,,
उदकमेहादि दश कफ प्रमेहोंकी उत्पत्ति तथा नामोंका वर्णन	३२७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
उदक मेहादि दश प्रमेहोंके अलग२ लक्षणोंका वर्णन	३२८
क्षार प्रमेहादि षट् पित्त प्रमेहों की उत्पत्ति, नाम तथा लक्षण	३२९
वसामेहादि चार असाध्य प्रमेहोंकी उत्पत्ति व नामों का वर्णन	३३१
इस प्रकार वात पित्त तथा कफ तीनों के कोप से होनेवाले वीस प्रमेहों का कथन	३३१
वसामेही मज्जामेही हस्तिमेही तथा मधुमेही इन्हों के लक्षण पूर्वरूप और उपद्रवों का वर्णन	३३२
इति प्रमेहनिदानेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥	,,

पांचवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
कुष्ठनिदान नामकअध्याय का व्याख्यान	३३३
कुष्ठों की सात द्रव्य व सात प्रकार व अठारह प्रकार तथा असंख्य प्रकार के कुष्ठों का वर्णन	३३३
कपाल कुष्ठादि सात प्रकारके असाध्य कुष्ठों की उत्पत्ति तथा नाम	३३४
संक्षेपसे सर्वकुष्ठोंके निदान	,,
सर्व कुष्ठोंके के पूर्वरूपों का वर्णन	३३५
कपाल उदुम्बर मण्डलाकार ऋष्य जिह्व पुण्डरीक सिध्म और काकणक इनके लक्षणों का वर्णन	३३७
उक्त कुष्ठोंमें अन्तिम (काकणक) कुष्ठकी असाध्यता का वर्णन	३३७
वातादि कुष्ठोंके अवगुणों तथा उपद्रवों का वर्णन	३३८
इति कुष्ठनिदानेपञ्चमोऽध्यायः ॥५ ॥	,,

छठा अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
शोष निदान का व्याख्यान	३३९
राजयक्ष्मा के साहस आदि चार निदानों का वर्णन	,,
साहस नामक राजयक्ष्मा की उत्पत्ति व लक्षणों का वर्णन	,,
सन्धारण नामक शोषकी उत्पत्ति व लक्षणों का वर्णन	३४०
क्षयनामक राजयक्ष्मा की उत्पत्ति व लक्षणों का वर्णन	३४२
विषमाशन शोषकी उत्पत्ति व लक्षणों का वर्णन	३४३
राजयक्ष्माके पूर्वरूपों और ग्यारहरूपों का वर्णन	३४५
राजयक्ष्माके साध्यासाध्य लक्षण	३४६
इति शोषनिदानेषष्ठोऽध्यायः ॥६ ॥	,,

सातवां अध्याय ॥ ,,

विषय	पृष्ठ
उन्माद निदानका व्याख्यान	३४६
वातादिपञ्च उन्मादों के नामों व उत्पत्तियों का वर्णन	,,
उन्मादों के पूर्वरूपों का वर्णन	३४७
वातज उन्मादोंके लक्षण	३४८
पित्तज उन्मादों के लक्षण	,,
कफज उन्मादों के लक्षण	३४९
वातज पित्तज तथा कफज इनतीनों उन्मादों की साध्यता व दोषके अनुसार भोजन तथा औषधों का वर्णन	३४९
आगन्तुज उन्मादों के लिंग	,,
प्रज्ञापराधों(बुद्धिदोषों)के अवगुण	,,
देवादि प्रकोपोन्माद के पूर्वरूप	३५०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
उन्मादकारक आघातों के समयों का निरूपण	३५१
साध्यासाध्य उन्मादोंके लक्षण	३५२
इत्युन्मादनिदानेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥	

आठवां अध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
अपस्मार निदानका व्याख्यान	३५३
वात आदि चारप्रकार अपस्मारों के नामों व उत्पत्तियों का वर्णन	३५४
अपस्मारों के पूर्वरूपों का वर्णन	,,
वातज अपस्मार के लक्षण	३५५
पित्तज अपस्मार के लक्षण	,,
कफज अपस्मार के लक्षण	,,
असाध्य सन्निपातज अपस्मार के लक्षणों का निरूपण	३५५
पुनः अपस्मारों की उत्पत्ति	३५६
ज्वर व राजयक्ष्माकी उत्पत्ति तथा संक्षेप से रोगोंके अलग२ निदान	३६०
इत्यपस्मारनिदानेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥	,,

निदानस्थानंसम्पूर्णम् ॥

(अथ विमानस्थानम्)

प्रथम अध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
रस विमाननामक अध्यायका व्याख्यान	,,
मधुरादि षट् रसोंके गुण, अगुण	,,
वातादि तीनों दोषोंके गुणागुण	३६१
द्रव्यादिकों के अलग २ प्रभावोंका सविस्तर वर्णन	३६२
पिप्पल्यादि द्रव्योंके अलग २ गुणों व अवगुणों का वर्णन	३६४
सात्म्य शब्दकी उपपत्तियोंका निरूपण	३६५
प्रकृत्यादि आठ आहार विधि विशेषों के आयतनों के नाम व अलग २ उपपत्तियों का वर्णन	,,
स्वाभाविक द्रव्यों के संस्कार तथा भोजन करनेका प्रकार व षट् रसों के उपदेशों का वर्णन	३७०
इति विमानस्थानेरसविमानंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥	,,

दूसराअध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
त्रिविध कुक्षीयविमानकाव्याख्यान	,,
तीन प्रकार के आहारों की मात्राओंका वर्णन	,,
मात्राके अनुसार कियेहुए भोजनों के लक्षणों का वर्णन	३७१
अमात्रा के अनुसार दोप्रकार के भोजन तथा वातज अस्सी प्रकार के रोगों का सविस्तर वर्णन	३७२
असाध्य अलसक रोगोंके लक्षण	३७३
साध्यासाध्य आम विष के लक्षण व क्रियाओंका वर्णन	,,
आम प्रदोष के अवगुणों व औषध क्रियाओं का वर्णन	३७४
अशितादि आहारोंके पचनेपर अग्निवेश व आत्रेयजी के प्रश्नोत्तर	,,
इति त्रिविधकुक्षीयविमाननामद्वितीयोध्यायः॥२॥	३७५

तीसराअध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
जनपदोध्वंसनीय नामक अध्याय का व्याख्यान	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय पृष्ठ

ऋतुओं के विभाग में औषधियोंका ग्रहण तथा जनपदों के उपध्वंसकारी चारभाव व उनके कारणों के विषयमें अग्निवेश व आत्रेयजी के सविस्तर प्रश्नोत्तरों का वर्णन ३७७

वाय्वादिकों के वैगुण्य के विषय में अग्निवेश व आत्रेयजी के प्रश्नोत्तर ,,

धर्म व अधर्म के लक्षणोंका वर्णन ३८२

आयु प्रमाण के विषयमें अग्निवेश व आत्रेयजी के प्रश्नोत्तरोंका वर्णन ३८४

कालाकालमृत्युके विषयमें अग्निवेश व आत्रेयजी के प्रश्नोत्तर ३८६

ज्वरवाले प्राणियों के लिये उष्ण जल देने और शीतल जल न देने के विषय में अग्निवेश व आत्रेय जी के प्रश्नोत्तरों का वर्णन ३८७

लंघनादि तीन अपतर्पणोंके लक्षण ३८८

अपयशीवैद्य व जाङ्गल व साधारण देश का वर्णन ३८९

इति जनपदोध्वंसनीयंविमानन्नामतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

त्रिविधरोग विशेष विज्ञानीय नाम अध्याय का व्याख्यान .... ,,

रोग विशेष के जाननेवाले तीनों आप्त उपदेशादिकों का वर्णन ३९०

आप्तलोगों के उपदेशों का वर्णन ,,

प्रत्यक्ष व अनुमान के लक्षण व प्रत्यक्षादिकों के द्वारा रोग तथा रस की परीक्षा का वर्णन ३९३

इति त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयन्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

विषय पृष्ठ

पांचवां अध्याय ॥

स्रोतोविमान नामक अध्याय का व्याख्यान .... ,,

स्रोत शब्द की उपपत्ति तथा लक्षण ३९४

प्रदुष्ट प्राणवाहक स्रोत के लक्षण ,,

प्रदुष्ट उदकवाही स्रोत के लक्षण ,,

प्रदुष्ट अन्न वाही व धातुस्रोतके लक्षण ,,

प्रदुष्ट मूत्रवाहक स्रोत के लक्षण ,,

प्रदुष्ट पुरीषवाहक स्रोत के लक्षण ,,

प्रदुष्ट स्वेदवाहक स्रोत के लक्षण ,,

प्राणवाहकादि स्रोतों के दूषित होने के कारण स्रोतों के लक्षण व आकृति तथा औषधियों के क्रमों का वर्णन ३९९

इति स्रोतोविमानन्नामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥ ४६३

छठा अध्याय ॥

रोगानीकविमान का व्याख्यान ,,

प्रभावादि भेदों से रोगों के समूह ,,

व्याधि और दोषों का प्रमाण ४०१

काम आदि मानसविकारों का व० ,,

ज्वरादि शरीरविकारों का कथन ,,

दोष और अनुबन्ध का वर्णन ४०२

तीक्ष्णादि चार प्रकारके विशेष .... ,,

वातादि प्रकृतियों का वर्णन ४०३

चार तथा तीन प्रकार के प्राणियों का वर्णन .... ,,

वातल पित्तल तथा श्लेष्मल पुरुषों के उपचारोंका वर्णन ४०६

इति रोगानीकविमानन्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
सातवां अध्याय ॥	
व्याधितरूपीय विमान का व्याख्यान	४०७
गुरु तथा लघु व्याधिवाले पुरुषों के लक्षणों व उपद्रवों का वर्णन	,,
पुरुषोंके संश्रय जो क्रमि उनकी उत्पत्त्यादिके विषयमें अग्निवेश व आत्रेयजी के प्रश्नोत्तरों का वर्णन	४०८
मलज क्रिमियों के दो भेदोंको कहकर उसके पूर्वरूप व चिकित्सा	४०९
रुधिरज क्रिमियों के निदानों को कहकर उनके उपचारों का वर्णन	,,
कफज क्रिमियोंके निदान व उनके अन्नाद उदराद आदि नामों को कह... लक्षण... के लक्षणों का वर्णन	४१०
पुनः ज... ...गों के निदान व उन... चिकित्साओंका वर्ण...	४११
हाथ से अथवा किसी औजारसे उन... ...की विधियों का वर्णन	,,
...कृति विघात	,,
...निदानोक्त वस्तुओ...	
जिनके कोठे... रोगियोंकी चिकित्साओ...	,,
इति व्याधितरूपीयविमानेसप्तमोऽध्यायः ॥	
आठवां अध्याय ॥	
रोग भिषग्जितीय नामक विमान का व्याख्यान	४१९
वैद्योंको अङ्गीकार करने के योग्य शास्त्रही की परीक्षा का वर्णन	,,
आचार्य की परीक्षा तथा शिष्य की अध्ययनादि तीन क्रियाओं का वर्णन	४२०
अध्ययन व अध्यापन विधियोंका व.	४२५
अध्ययन व अध्यापन विधियों के समान सम्भाषण करनेकी विधि	४२६
प्रतिवादियों के पर प्रवर और प्रत्यवर इन भेदों को कहकर सभाके दो प्रकारों का सविस्तर वर्णन	४२७
वैद्यवादकी मार्ग को जानने के लिये ज्ञातव्य वादादिकों का वर्णन	,,
वादमर्य्यादा के लक्षण व वाद शब्द की निरुक्ति का वर्णन	४३०
स्थापना व प्रतिष्ठापनाके लक्षण	४३१
हेतु, उत्तर, दृष्टान्त तथा सिद्धान्तके लक्षणों का वर्णन	४३२
सर्वतन्त्र सिद्धान्त प्रतितन्त्र सिद्धान्त अधिकरण सिद्धान्त और अभ्युपगम सिद्धान्तों के लक्षणों का वर्णन	४३३
दृष्टार्थ अदृष्टार्थ सत्य और अनृत इन भेदोंसे शब्द नाम के लक्षण	४३४
प्रत्यक्ष अनुमान उपमान ऐतिह्य संशय और प्रयोजनों का वर्णन	,,
सव्यभिचार, जिज्ञासा, व्यवसाय, ... संभव तथा अनुयोज्योंकाव.	४३५
...नुयोग प्रत्यनुयोग ... दोष तथा आधिक्यों के लक्ष... वर्णन	४३६
अनर्थक अपार्थक और विरुद्धवाक्य दोषोंके लक्षणों का वर्णन	४३७
वाक्यप्रशंसा, वाक्यछल हेतु तथा अहेतुओं का वर्णन	४३८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
संशयसम अहेतु, वर्ण्यसमअहेतु, अतीतकाल, उपालम्भ व परिहार	४३९	सात्म्य परीक्षा तथा सत्त्वपरीक्षा	४५६
प्रतिज्ञाहानि, अभ्यनुज्ञा, हेत्वन्तर, अर्थान्तर और निग्रह स्थानके लक्षण	४४०	आहारशक्ति, व्यायामशक्ति तथा अवस्था से परीक्षा का वर्णन	४५८
अननुयोज्यादिक वादमार्गोंके पद तथा वैद्यों की कर्तव्यताओं का वर्णन	,,	काल के प्रकारों का कथन तथा अलग २ अनेक प्रकार के विभागों से लक्षण समेत उपद्रवों व कर्मों का वर्णन	४६०
अभिमत फलके दाता करणादिकों के नाम व उनके अलग २ लक्षण	४४१	रोगियों की अवस्थाओं में भी कार्य्याकार्य्य के अनुसार काल तथा अकालसंज्ञाका वर्णन	४६१
कर्ता, कारण, करण, कार्य्ययोनि और कार्यके लक्षणोंका वर्णन	,,	चिकित्सा का प्रारम्भ वैद्यादिकोंकी समीचीनता आदि उपायके गुण व लक्षण तथा प्रतिपत्तिज्ञान का वर्णन	४६२
अनुबन्ध देश काल प्रवृत्ति और कर्णादिकों के उपायों का वर्णन	४४२	वमनादिकोंकी प्रवृत्ति तथा निवृत्ति के लक्षणों के मिलने पर वमनोपयोगि फलादि द्रव्यों का वर्णन	४६३
वैद्यकी परीक्षा करनेका प्रकार तथा परीक्षा शब्दकी निरुक्ति और लक्षण	,,	विरेचन के योग्य विरेचनकारक कालानिसोथ आदि औषधियों का संक्षेप वर्णन	४६४
करणादि दशप्रकार के परीक्ष्योंको वैद्यादिकों में फैलाकर वैद्यके गुण	४४६	आस्थापन में द्रव्यों की अनेक प्रकार की कल्पनाओं के होने पर रसके अनुसार उनका वर्णन	,,
औषध परिज्ञानकेलिये भूमि परीक्षा तथा आयुर्द्दाय जानने के लिये देश परीक्षा का वर्णन	४४७	आस्थापनोपयोगि जीवकादि मधुर स्कन्धों का वर्णन	४६५
बलवान्रोगी और बलीरोगकी परीक्षाकर वातल, पित्तल श्लेष्मल और संसृष्ट तथा समधातुवालों के लक्षण	४४८	वात विकारियोंके लिये आम्रादि अम्लस्कन्ध का वर्णन	४६६
विकारोंके लक्षण व त्वचादि आठ सारों के नाम तथा अलग २ लक्षण और गुणागुणों का वर्णन	,,	वात विकारियोंके लिये सैंधवादि लवणस्कन्ध का वर्णन	४६७
सम्पूर्ण सारों से युक्त मनुष्यों के गुण व अगुण तथा वैद्य को सारसे परीक्षा करने की शिक्षा व सुसंहतके लक्षणों का वर्णन	४५४	श्लेष्मविकारियों के लिये पिप्पल्यादि कटुकस्कन्ध का वर्णन	,,
अपने अंगुलप्रमाण के प्रमाण से शरीर की उच्चता, दर २।। तथा विस्तारता	४५५	कफ विकारी तथा पित्त विकारियों के लिये चन्दनादि तिक्त स्कन्ध	४६८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाक्रएटकारिकाग्निमन्थश्योणाक पिप्पल्यइतिदशेमानि शीतप्रशमनानिभवन्ति ॥ ६६ ॥

तगर, अगर, धनियां, सोंठ, अजवाइन, वच, भटकटैया, अरणी, सुनैया और पीपल यह दश शीतप्रशमन हैं॥ ६६ ॥

तिन्दुकपियालबदरखदिरकदरसप्तपर्णाश्वकर्णार्जुनासनारिमेदाइतिदशेमान्युदर्दप्रशमनानिभवन्ति६७॥

तैंदू, चिरोंजी, बेर, कत्था, पपड़ियाकत्था, छितवन, शाल, अर्जुन, विजयसार और दुर्गन्धित कत्था यह दश उदर्दप्रशमन हैं ॥ ६७ ॥

विदारिगन्धापृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकैरण्डकाकोलीचन्दनोशीरैलामधुकानीति दशेमान्यङ्गमर्दप्रशमनानिभवन्ति ॥ ६८ ॥

शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, अरंड, काकोली, चन्दन, खस, इलायची और मुलहठी यह दश अंगमर्दप्रशमन हैं॥ ६८ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृङ्गवेरमरिचाजमोदाजगन्धाजाजीगण्डीराणीतिदशेमानि शूलप्रशमनानिभवन्ति ॥ इतिपञ्चकःकषायवर्गः ॥ ६९ ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता सोंठ, मिर्च, अजमोद, अजवाइन, जीरा और गांडर, यह दश शूलप्रशमन हैं यह पांच कषायोंका वर्ग है ॥ ६९ ॥

मधुमधुकरुधिरमोचरसमृत्कपाललोध्रगैरिकप्रियंगुशर्करालाजाइतिदशेमानि शोणितस्थापनानिभवन्ति ॥ ७० ॥

सहत, मुलहठी, केसर, मोचरस, मट्टी के खपरे, लोध, गेरू, महदी, शर्करा और खील यह दश शोणित स्थापन हैं ॥ ७० ॥

शालकट्फलकदम्बपद्मकतुङ्गमोचरसशिरीषवंजुलैलावालुकाशोकाइतिदशेमानिवेदनास्थापनानिभवन्ति ॥ ७१ ॥

शाल, कायफल, कदंब, पद्माक, पुन्नाग, मोचरस, सिरस, वेत, एलुआ और अशोक यह दश वेदनास्थापन अर्थात् पीड़ा नहीं बढ़ने देते हैं ॥ ७१ ॥

हिंगुकैटर्य्यारिमेदवचाजीरकवयःस्थागोलोमीजटिलापलङ्कषाशोकरोहिण्यइति दशेमानि संज्ञास्थापनानिभवन्ति ॥ ७२ ॥

हींग, कायफल, दुर्गन्धित कत्था, वच, चोरक, ब्राह्मी, श्वेत दूब, जटामांसी, गोखुरू और कुटकी यह दश संज्ञास्थापन अर्थात् सावधानी रखनेवाले हैं॥ ७२ ॥

ऐन्द्रीब्राह्मीशतवीर्य्या सहस्रवीर्य्यामोघाव्यथाशिवारिष्टावाट्यपुष्पीविष्वक्सेनकान्ता इतिदशेमानि प्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जास्थापनानिभवन्ति ॥ ७३ ॥

इन्द्रायण, ब्राह्मी, दूब, श्वेतदूब, पाढर, आमला, हड़, रीठा, बरियारा और मालकाँगनी यह दश मजा (संतान) स्थापन हैं ॥ ७३ ॥

अमृताभया धात्रीमुक्ताश्वेताजीवन्त्यतिरसामण्डूकपर्णीस्थिरापुनर्नवाइतिदशेमानि वयस्थापनानिभवन्ति॥इतिपञ्चकःकषायवर्गः॥७४॥

गिलोय, हड़, आमला, रासना, श्वेतविष्णुक्रान्ता, जीवन्ती, सतावर, मजीठ, शालपर्णी और गदापूर्णा यह दश वयस्थापन हैं यह पांच कषायोंका वर्ग है ॥ ७४ ॥

इति पञ्चकषायशतान्यभिसमस्यपञ्चाशन्महाकषायाः महताञ्चकषायाणां लक्षणोदाहरणार्थं व्याख्याताभवन्ति ॥ ७५ ॥

इस प्रकार ५०० कषायों का संक्षेप करके ५० महाकषाय लक्षण और उदाहरणों के लिये व्याख्यान कियेगये ॥ ७५ ॥

नहिविस्तरस्यप्रमाणमस्तिनचाप्यतिसंक्षेपोऽल्पबुद्धीनांसामर्थ्यायोपकल्पते तस्मादनतिसंक्षेपेणानतिविस्तरेणचोद्दिष्टाः। एतावन्तोह्यल्पबुद्धीनांव्यवहाराय बुद्धिमताञ्चस्वालक्षण्यानुमानयुक्तिकुशलानामनुक्तार्थज्ञानायेति ॥ ७६ ॥

विस्तार का कोई प्रमाण नहीं है और बहुत संक्षेप स्वल्पबुद्धिवालों की समझनेकी सामर्थ्य से बाहर होता है इसलिये यह न बहुत संक्षेप से और न विस्तार से कहेगये हैं यह अल्पबुद्धिवालों के व्यवहार के लिये और लक्षण करके अनुमान तथा युक्ति में कुशल बुद्धिमानोंको नहीं कहेहुये भी विषयों के ज्ञानके लिये हैं ॥ ७६ ॥

एवंवादिनं भगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच। नैतानिभगवन्पञ्चकषायशतानिपूर्य्यन्ते। तानितानि ह्येवाङ्गानिसंप्लवन्ते तेषुतेषुमहाकषायेष्विति ॥ ७७ ॥

इस प्रकार कहतेहुए भगवान् आत्रेय जी से अग्निवेश ने कहा कि हे भगवन् यह ५०० कषाय तो नहीं पूरे होते हैं क्योंकि वह २ अंग जो ५०० कषायों में हैं महाकषायों में भी मिलते हैं ॥ ७७ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः। नैतदेवंबुद्धिमताद्रष्टव्यमग्निवेश। एकोऽपिह्यनेकांसंज्ञांलभते कार्य्यान्तराणिकुर्व्वन्। तद्यथापुरुषोबहूनांकर्मणांकरणेसमर्थोभवति। स यद्यत्कर्मकरोति तस्यतस्य कर्मणः कर्त्तृकरणकार्य्यसंप्रयुक्तं तत्तद्गौणंनामविशेषंप्राप्नोति। तद्वदौषधद्रव्यमपिद्रष्टव्यम्। यदिचैकमेव किञ्चिद्द्रव्यमासादयामस्तथागुणयुक्तं यत्सर्व्वकर्मणांकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णे समर्थस्यात् कस्ततोऽन्यदिच्छेदुपधारयितुमुपदेष्टुंवाशिष्येभ्य इति ॥ ७८ ॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेय जी ने अग्निवेश से कहा कि हे अग्निवेश बुद्धिमान् को ऐसा न देखना चाहिये क्योंकि एकही वस्तु अनेक कार्य्यों को करतीहुई अनेक नामोंको प्राप्त करती है जैसे एकपुरुष बहुतसे कामोंको कर सक्ता है और उसी २ कार्य्य के अनुसार उपनामों को प्राप्त होता है उसी प्रकार औषधिको भी जानना चाहिये यदि ऐसी कोई द्रव्य मिलै जोकि सम्पूर्ण कार्य्यों को कर सके तो कौन उसको छोड़कर अन्यद्रव्य को आप धारण करने की और शिष्यों के उपदेश करने की इच्छा करे ॥ ७८ ॥

तत्र श्लोकाः।

यातोयावन्तियैर्द्रव्यैर्विरेचनशतानिषट्। उक्तानिसंग्रहेणेहतथैवैषांपडाश्रयाः ॥ ७६ ॥

उसमें यह श्लोक हैं। जिन द्रव्यों से जितने विरेचन के योग होते हैं उन ६०० विरेचनयोगों का संक्षेपसे वर्णन कियागया इसी से ६ आश्रय हैं ॥ ७९ ॥

रसालवणवर्ज्याश्चकषायाइति संज्ञिताः। तस्मात्पञ्चविधायोनिःकषायाणामुदाहृता ॥ ८० ॥

लवणरसको छोड़के ५ रस कषायसंज्ञक और इसी से कषायों की पांच प्रकारकी योनि है ॥ ८० ॥

तथाकल्पनमप्येषामुक्तं पञ्चविधंपुनः। महताञ्चकषायाणांपञ्चाशत्परिकीर्तिताः ॥ ८१ ॥

उसी प्रकार ५ प्रकारकी कषायों की कल्पना कहीगई है और ५० महाकषाय हैं ॥ ८१ ॥

पञ्चचापिकषायाणांशतान्युक्तानि भागशः। लक्षणार्थप्रमाणंहिविस्तरस्यनविद्यते ॥ ८२ ॥

और उन्हीं के भागों से ५०० कषाय कहे गये हैं विस्तारके भयसे इनके लक्षण अलग२ नहीं कहेगये ॥ ८२ ॥

नचालमतिसंक्षेपः सामर्थ्यायोपकल्प्यते। अल्पबुद्धेरयंतस्मान्नातिसंक्षेपविस्तरः ॥ ८३ ॥

बहुत संक्षेप होने से अल्पबुद्धिवाले नहीं समझ सक्ते हैं इसलिये न बहुत संक्षेप किया गयाहै और न विस्तार कियाहै ॥ ८३ ॥

मन्दानांव्यवहाराय बुधानांबुद्धिवृद्धये। पञ्चाशत्कोह्ययंवर्गःकषायाणामुदाहृतः ॥ ८४ ॥

अल्पबुद्धियों के व्यवहार के लिये और पंडितोंकी बुद्धिके बढ़नेके लिये महाकषायों के यह ५० वर्ग कहेगये हैं ॥ ८४ ॥

तेषांकर्मसुबाह्येषु योगमाभ्यन्तरेषु च। संयोगंचवियोगञ्चयोवेदसभिषग्वरः ॥ ८५ ॥

भेषजचतुष्कषड्विरेचनशताश्रितीयोनाम चतुर्थोध्यायःसमाप्तः ॥ इतिभेषजचतुष्कः ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो वैद्य बाहर तथा भीतर इन ५० महाकषायों के प्रयोग संयोग और विभागों को जानताहै वही श्रेष्ठ वैद्यहै ॥ ८५ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंषड्विरेचनशताश्रितीयनामचतुर्थअध्यायसमाप्तहुआ ॥

चतुर्थअध्यायसमाप्त ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अथातोमात्राश्रितीयमध्यायंव्याख्यास्यामः ।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः ।

मात्राशीस्यात् । आहारमात्रापुनरग्निबलापेक्षिणी ॥ यावध्यस्याशनमशितमनुपहत्यप्रकृतिंयथाकालं जरांगच्छतितावदस्यमात्राप्रमाणं वेदितव्यंभवति ॥ तत्रशालिषष्टिकमुद्गलावकपिञ्जलैणशशशरभशम्बरादीन्याहारद्रव्याणि प्रकृतिलघून्यपिमात्रापेक्षीणिभवन्ति ॥ तथापिष्टेक्षुक्षीरविकृतिमाषानूपौदकपिशितादीन्याहारद्रव्याणि प्रकृतिगुरूण्यपिमात्रामेवापेक्षन्ते ॥ नचैवमुक्तेद्रव्येगुरुलाघवमकारणंमन्यते । लघूनिहिद्रव्याणिवाय्वग्निगुणबहुलानिभवन्ति । पृथिवीसोमगुणबहुलानीतराणि । तस्मात्स्वगुणादपि लघून्यग्निसन्धुक्षणस्वभावान्यल्पदोषाणिचोच्यन्तेअपिसौहित्योपयुक्तानिगुरूणि पुनर्नाग्निसन्धुक्षणस्वभावान्यसामान्यादतश्चातिमात्रंदोषवन्ति सौहित्योपयुक्तानि अन्यत्रव्यायामाग्निबलात् । सैषा भवत्यग्निबलापेक्षिणीमात्रा नचनापेक्षतेद्रव्यम् । द्रव्यापेक्षया च त्रिभागसौहित्यमर्द्धसौहित्यंवा गुरूणामुपदिश्यते । लघूनामपि च नातिसौहित्यमग्नेर्युक्त्यर्थम् । मात्रावध्यशनमशितमनुपहत्यप्रकृतिंबलवर्णसुखायुषायोजयत्युपयोक्तारमनुष्यमिति ॥ १ ॥

पञ्चमअध्याय ॥

इसके उपरान्त मात्राश्रितीय नाम अध्याय को व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

मनुष्य को मात्राशी होना चाहिये भोजन की मात्रा अग्नि और बलके अनुसार होती है जिसको जितना पदार्थ भोजन करने से क्लेश के बिना समय पर पचजाय वही उसके भोजन की मात्राहै यहाँ शालिधान्य, साठी, मूंग और लवा, श्वेत तीतर, कृष्णसार मृग, खरगोश, शरभ तथा संबर इन सब का मांस इत्यादिक भोजन की वस्तु स्वाभाविक हलकी होनेपर भी मात्राके अनुसार खानी चाहिये पीठी, ईख, दुग्धके विकार, उर्द और अनूप देश तथा जलके जीवोंका मांस इत्यादि भोजन की वस्तु स्वाभाविक भारी होनेपर भी मात्राके अनुसार खाना चाहिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन कहीहुई वस्तुओं में हलकापन और भारीपन निष्प्रयोजन नहीं है हल्की द्रव्यों में वायु तथा अग्नि के गुण अधिक होते हैं और भारी वस्तुओं में पृथ्वी तथा चन्द्रमा के गुण अधिक होते हैं इस कारण से हल्की वस्तु तृप्त होकर भोजन करने परभी अपने गुणों से अग्नि को दीप्त करनेवाली और थोड़े दोषवाली होती हैं– भारी वस्तु तृप्त होकर खाने से अग्नि को मन्द करनेवाली और व्यायाम तथा अग्निबलके विना बहुत दोष करनेवाली होती हैं क्योंकि इनमें हल्की वस्तुओं के विपरीत गुण होते हैं–भोजन की मात्रा अग्निबलके अनुसार और द्रव्य के अनुसार भी होती है–भारी वस्तु पौन भूख अथवा आधी भूख खाना चाहिये और हल्की वस्तुभी भूख से अधिक न खाना चाहिये क्योंकि अधिक भोजन से अग्नि नष्ट होजाती है मात्रा के अनुसार किया गया भोजन प्रकृति को नहीं बिगाड़ता है और बल वर्ण सुख तथा आयु को अवश्य बढ़ाता है ॥ १ ॥

भवन्तिचात्र ॥ गुरुपिष्टमयंतस्मात्तण्डुलान्पृथुकानपि । नजातुभुक्तवान्खादेन्मात्रां खादेद्बुभुक्षितः ॥ २ ॥

भोजन के उपरान्त पिष्टी और चिड़वे आदि भारी वस्तु कदापि न खाय और भूख लगने परभी मात्राही के अनुसार खाय ॥२॥

वल्लूरंशुष्कशाकानिशालूकानिबिसानिच । नाभ्यस्येद्गौरवान्मांसंकृशंनैवोपयोजयेत् ॥ ३ ॥

सूखा मांस, सूखा साग, कमल आदिका कन्द, कमल की डंडी इन वस्तुओं को भारी होने के कारण नित्य न खाय और न दुर्बल मनुष्य को दे ॥ ३ ॥

कूर्चिकांश्चकिलाटांश्चशौकरंगव्यमाहिषे । मत्स्यान्दधिचमाषांश्चयवकांश्चनशीलयेत् ॥ ४ ॥

दूधके विकार, मट्ठेके विकार, सूअर का मांस, गोमांस, भैसका मांस, मछली, दही, उर्द और शूकधान्य इनको नित्य न खाय॥४॥

षष्टिकान्शालिमुद्गांश्च सैन्धवामलकेयवान् । आन्तरिक्षंपयःसर्पिर्जाङ्गलंमधुचाभ्यसेत् ॥ ५ ॥

साठी, शालिधान्य, मूंग, सेंधानोन, आमला यव, वृष्टि का जल, दूध, घी, जांगल मांस और सहत इन सबका नित्य सेवन करे ॥ ५ ॥

तच्चनित्यंप्रयुञ्जीत स्वास्थ्यंयेनानुवर्त्तते । अजातानांविकाराणामनुत्पत्तिकरञ्चयत् ॥ ६ ॥

जिससे स्वस्थता बनी रहै और नवीन विकार उत्पन्न न होय ऐसे पदार्थ को नित्य खाय ॥ ६ ॥

अतऊर्द्ध्वंशरीरस्य कार्य्यमभ्यञ्जनादिकम् । स्वस्थवृत्तमभिप्रेत्य गुणतःसंप्रवक्ष्यते ॥ ७ ॥

इसके उपरान्त शरीर को स्वस्थ रखने के लिये अंजनादि सेवन करना चाहिये इससे उनके गुण कहते हैं ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सौवीरमञ्जनंनित्यंहितमक्ष्णोःप्रयो
जयेत्। पञ्चरात्रेऽष्टरात्रेवास्रावणा
र्थेरसाञ्जनम् ॥ ८ ॥

सौवीर (सुरमा) अंजन नित्य लगाने से नेत्रों को हित होता है पांचदिन अथवा आठदिन का अन्तर देकर नेत्रोंका जल निकालनेकेलिये रसांजन लगाना चाहिये ॥८॥

नहिनेत्रामयंतस्यविशेषात्श्लेष्म
तोभयम् । दिवातन्नप्रयोक्तव्यंनेत्र
योस्तीक्ष्णमञ्जनम् ॥ ९ ॥

इस्से नेत्रोंमें कोई रोग नहीं होताहै और विशेष करके कफका भय नहीं रहता-दिनमें तीक्ष्ण अंजन नहीं लगानाचाहिये ॥ ९ ॥

विरेकदुर्बलादृष्टिरादित्यंप्राप्यसीद
ति । तस्मात्स्राव्यंनिशायान्तुध्रु
वमञ्जनमिष्यते ॥ १० ॥

क्योंकि जलके बहने से दुर्बल दृष्टि धूपको नहीं सहसक्ती इस्से बहानेवाला अंजन रात्रि ही को लगाना चाहिये ॥ १० ॥

ततःश्लेष्महरंकर्म हितंदृष्टेःप्रसाद
नम् ॥ ११ ॥

इस के उपरान्त कफनाशक प्रसादनकर्म करना नेत्रों को हितकारी है ॥ ११ ॥

यथाहिकणकादीनां मलिनांविवि
धात्मनाम् । धौतानांनिर्मलाशु
द्धिस्तैलचैलकचादिभिः ॥ १२ ॥

जैसे कनकादिक और नाना प्रकारके रत्न तैल वस्तु तथा केशों के द्वारा शुद्ध करने से निर्मल होजाते हैं ॥ १२ ॥

एवंनेत्रेषुमर्त्यानामञ्जनाश्च्योतना
दिभिः । दृष्टिर्निराकुलाभातिनिर्म
लेनभसीन्दुवत् ॥ १३ ॥

उसी प्रकार मनुष्योंके नेत्रों में अंजन तथा आश्च्योतनादि के द्वारा शुद्धहुई दृष्टि निर्मल आकाश में चन्द्रमा के समान शोभित होतीहै ॥ १३ ॥

हरेणुकांप्रियंगुञ्चपृथ्वीकांकेशरंन
खम् । ह्रीवेरंचन्दनंपत्रंत्वगेलोशीर
पद्मकम् ॥ १४ ॥

रेणुका, ककुनी, जीरा, नागकेसर, नखी, सुगन्धवाला, चन्दन, तेजपात, दालचीनी, इलायची, खस, पद्माक ॥ १४ ॥

ध्यामकंमधुकंमांसींगुग्गुल्वगुरुश
र्करम् । न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्ल
क्षलोध्रत्वचःशुभाः ॥ १५ ॥

गंधतृण, मुलहठी, जटामांसी, गूगल, अगर, शक्कर, बर्गदकीछाल, गूलरकीछाल, पीपलकी छाल, पकरियाकी छाल, लोधकी छाल ॥ १५ ॥

वन्यंस्वर्जरसंमुस्तं शैलेयंकमलो
त्पले। श्रीवेष्टकंशल्लकींञ्चशुकबर्ह
मथापिच ॥ १६ ॥

बनकी खजूरका रस, मोथा, शैलेय, कमल, उत्पल, गन्धापिरोजा, शाल और तोते का पर ॥ १६ ॥

पिष्ट्वालिम्पेच्छिराषिकांतांवार्त्तीयव
सन्निभाम् । अंगुष्ठसंमितांकुर्य्या
दष्टांगुलसमांभिषक् ॥ १७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन सब औषधियों को पीसकर एक वा आठअंगुल लंबी शर्कएडेकी सलाई बनाकर उसपर यवाकार लेपकरे ॥ १७ ॥

शुष्काविगर्भातांवर्त्तिं धूमनेत्रार्पितांनरः। स्नेहाक्तामग्निसंप्लुष्टांपिबेत्प्रायोगिकींसुखाम् ॥ १८ ॥

फिर सूखजाने पर सलाई को निकाल कर उस बत्तीको हुक्कापीने की नली में लगाकर और उस में घी चुपड़कर एक ओर जलाकर दूसरी ओरसे पिये यहसुखदायी होतीहै॥ १८॥

वसाघृतमधूच्छिष्टैर्युक्तियुक्तैर्वरौषधैः। वर्त्तिंमधुरकैःकृत्वा स्नैहिकींधूममाचरेत् ॥ १९ ॥

चरबी, घी तथा मोम और युक्तिसे युक्त श्रेष्ठ औषधियों की बत्ती बनाकर व घृत मिलाकर धुवांपीवै ॥ १९ ॥

श्वेताज्योतिमतीचैव हरितालंमनःशिला। गन्धाश्चागुरुपत्राद्या धूमोमूर्द्धविरेचनम् ॥ २० ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ता, मालकांगनी, हरताल, मैनसिल, अगर तथा तेजपातादिक सुगन्धित वस्तु इसके द्वारा बनाईहुई बत्तीका धुआं पीने से शिरोविरेचन होताहै ॥ २० ॥

गौरवंशिरसःशूलंपीनसार्द्धावभेदकौ। कर्णाक्षिशूलंकासश्चहिक्काश्वासौगलग्रहः ॥ २१ ॥

शरीर का भारीपन, शिरकी पीड़ा, पीनस, आधासीसी, कान तथा नेत्र की पीड़ा, खांसी हिचकी, श्वास, गलग्रह ॥ २१ ॥

दन्तदौर्बल्यमास्रावः श्रोत्रघ्राणाक्षिदोषजः। पूतिघ्राणास्यगन्धश्चदन्तशूलमरोचकः ॥ २२ ॥

दांतोंकी दुर्बलता, कान, नाक तथा नेत्रोंका बहना, कान तथा मुख की दुर्गन्धि, दाँतोंकी पीड़ा, अरुचि ॥ २२ ॥

हनुमन्याग्रहःकण्डूः क्रिमयःपाण्डुतामुखे। श्लेष्मप्रसेकोवैस्वर्यंगलशुण्ड्युपजिह्विका ॥ २३ ॥

जावड़ेका जकड़ना, गलेके पीछे की नसका जकड़ना, खुजली, कृमि, मुख का पीलापन, कफ का मुखमें बहुत आना, स्वरभंग गलशुंडी, उपजिह्विका अर्थात् जिह्वाका जकड़ना ॥ २३ ॥

खालित्यंपिञ्जरत्वञ्चकेशानांपतनन्तथा। क्षवथुश्चातितन्द्राचबुद्धेर्मोहोऽतिनिद्रता ॥ २४ ॥

गंजापन बालोंका विरल होना तथा गिरना, छींक, तंद्रा, बुद्धि का मोह और बहु निद्रा ॥ २४ ॥

धूमपानात्प्रशाम्यन्ति बलंभवतिचाधिकम्। शिरोरुहकपालानामिन्द्रियाणांस्वरस्यच ॥ २५ ॥

यह संपूर्ण रोग धूम्रपान करने से दूर होते हैं बल अधिक होता है और केश, कपाल इन्द्रिय तथा स्वर इनका बल बढ़ता है ॥ २५ ॥

नचवातकफात्मानोबलिनोऽप्यूर्द्धजत्रुजाः। धूमरक्तकपाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्याधयःस्युःशिरोगताः ॥ २६ ॥

धूम्रपान करनेवाले के वात कफज हँसुएके ऊपर के बड़े रोग तथा शिरके रोग नहीं होते हैं ॥ २६ ॥

प्रयोगपानेतस्याष्टौ कालाःसम्परिकीर्त्तिताः । वातश्लेष्मसमुत्क्लेशःकालेष्वेषुहिलक्ष्यते ॥२७॥

धूम्रपान के आठसमय कहे गयेहैं क्योंकि इन्हीं समयों में वात कफ की वृद्धि होती है ॥ २७ ॥

स्नात्वाभुक्त्वासमुल्लिख्य क्षुत्वादन्तान्निघृष्यच । नावनाञ्जननिद्रान्तेचात्मवान्धूमपोभवेत् ॥ २८ ॥

स्नान करके भोजन करके लिख करके छींक करके दाँतों को रगड़के दौड़ कर अंजन लगाकर और सोकर धूम्रपान करना चाहिये ॥ २८ ॥

तथावातकफात्मानो नभवन्त्यूर्द्ध्वजत्रुजाः । रोगास्तस्यतुपेयाःस्युरापानास्त्रिस्त्रयस्त्रयः ॥ २९ ॥

और वात कफप्रकृतिवाले मनुष्यों के हँसुए के ऊपर के रोग नहीं होते हैं पीनेसे तीनों वस्ति पीने योग्य हैं ॥ २९ ॥

परंद्विकालपायीस्यादह्नः कालेषुबुद्धिमान् । प्रयोगेस्नैहिकेत्वेवंविरेच्यंत्रिश्चतुःपिबेत् ॥ ३० ॥

बुद्धिमान पुरुष दिनमें दोबार धूम्रपानकरे स्नेहन धूम्रपान एक बार करे और विरेचन धूम्रपान तीन चारवारकरे ॥ ३० ॥

हृत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिर्लघुत्वंशिरसःशमः । यथेरितानांदोषाणांसम्यक्पीतस्यलक्षणम् ॥ ३१ ॥

हृदय, कण्ठ तथा इन्द्रियों की शुद्धता शिरका हलकापन और दोषों की यथोचित शान्ति यह अच्छे प्रकार से कियेगये धूम्रपानके लक्षण हैं ॥ ३१ ॥

बाधिर्य्यमान्ध्यंमूकत्वं रक्तपित्तंशिरोभ्रमम् । अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्य्यादुपद्रवान् ॥ ३२ ॥

बधिरता, मन्दता, मूकता, रक्तपित्त और शिरका घूमना यह उपद्रव विना समय के अति धूम्रपान करने से होते हैं ॥ ३२ ॥

तत्रेष्टंसर्पिषःपानं नावनाञ्जनतर्पणम् । स्नैहिकंधूमजेदोषेवायुःपित्तानुगोयदि ॥ ३३ ॥

इन उपद्रवों के होनेपर घृतपान, नस्य, अंजन तथा तर्पण करना चाहिये, जो धूम्रपान से हुए दोषमें वायु पित्तके साथ होजाय तो स्नेह न करना चाहिये ॥ ३३ ॥

शीतन्तुरक्तपित्तेस्याच्छ्लेष्मपित्तेविरूक्षणम् । परन्त्वतःप्रवक्ष्यामिधूमोयेषांविगर्हितः ॥ ३४ ॥

रक्तपित्त में शीतल क्रिया करनी चाहिये और कफ पित्तज रोगमें रूखी क्रिया करनी चाहिये--इसके उपरान्त जिनको धूम्रपान वर्जितहै उनका वर्णन करते हैं ॥ ३४ ॥

नविरिक्तःपिबेद्धूमं नकृतेवस्तिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेणि । नरक्तीनविषेणार्त्तौनशो चीनचगर्भिणी ॥ ३५ ॥

विरेचन लिये हुए, वस्ति कर्मवाले, रक्तपित्तवाले, विषसे पीड़ित, शोकयुक्त, गर्भिणी ये धूम्रपान न करें ॥ ३५ ॥

नश्रमेनमदेनामेनपित्तेनप्रजागरे । नमूर्च्छाभ्रमतृष्णासु नक्षीणेनापि चक्षते ॥ ३६ ॥

थकेहुए, मतवाले, आमयुक्त, पित्तवाले, रात्रिके जगेहुए, मूर्च्छा रोगवाले, भ्रमयुक्त, प्यासे, दुर्बल, क्षतवाले ॥ ३६ ॥

नमद्यदुग्धेपीत्वाचनस्नेहंनचमाक्षिकम् । धूमंनभुक्त्वादध्नाचनरूक्षःक्रुद्धएवच ॥ ३७ ॥

मदिरा व दूध पीकर, घी व शहद को पीकर और दही से भोजन करके, रूक्षता, क्रोधयुक्त ॥ ३७ ॥

नतालुशोषेतिमिरेशिरस्यभिहतेन च । नशंखकेनरोहिण्यांनमेहेनम दात्यये ॥ ३८ ॥

तालुशोषवाले और तिमिर, शिर की चोट, शंखक, रोहिणी, प्रमेह तथा मदात्यय रोग में ॥ ३८ ॥

एषुधूममकालेषु मोहात्पिबतियोनरः । रोगास्तस्यप्रवर्द्धन्तेदारुणाधूमविभ्रमात् ॥ ३९ ॥

इन वर्जित समयों पर जो मनुष्य मोह से धूम्रपान करता है उसके धूम्रविभ्रम से दारुण रोग बढ़ते हैं ॥ ३९ ॥

धूमयोग्यःपिबेद्दोषेशिरोघ्राणाक्षिसंश्रये । घ्राणेनास्येनकण्ठस्थेमुखेन घ्राणपोवमेत् ॥ ४० ॥

धूम्रपान के योग्य पुरुष शिर, नासिका तथा नेत्रमें रोग होनेपर नासिकाके द्वारा धूम्रपान करे और गलेमें रोग होनेपर मुख से धूम्रपान करे नासिका से धुआँ पीके मुख से निकाले ॥ ४० ॥

आस्येनधूमकवलान्पिबन्घ्राणेननोद्वमेत् । प्रतिलोमंगतोह्याशुधूमो हिंस्याद्धिचक्षुषी ॥ ४१ ॥

मुख से धूम्रपान करके नासिका से न निकाले क्योंकि उलटा गयाहुआ धूम्र शीघ्रही नेत्रों को बिगाड़ताहै ॥ ४१ ॥

ऋज्वङ्गचक्षुस्तच्चैताः सूपपिष्टस्त्रिपर्य्ययम् । पिबेच्छिद्रंपिधायैकंनासयाधूममात्मवान् ॥ ४२ ॥

संपूर्ण अंग तथा नेत्रोंको सीधाकरके सुखपूर्व्वक बैठकर सावधान होके बुद्धिमान् पुरुष नासिका के एक छिद्रको बन्द करके दूसरे से तीनबार धूम्रपान करे ॥ ४२ ॥

चतुर्विंशातिकंनेत्रंस्वंगुलीभिर्विरेचने । द्वात्रिंशदंगुलंस्नेहेप्रयोगेऽध्यर्द्धमिष्यते ॥ ४३ ॥

शिरोविरेचन के लिये अपने अंगुलों से २४ अंगुल की नली स्नेहन में ३२ अंगुल की नली और सदैवके लिये १६ अंगुलकी नली बनानी चाहिये ॥ ४३ ॥

ऋजुत्रिकोषाफलितंकोलास्थ्यग्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माणितम् । वस्तिनेत्रसमद्रव्यंधूम नेत्रंप्रशस्यते ॥ ४४ ॥

सीधी तीन खंडवाली अग्रभाग में बेरकी गुठलीके समान छिद्रवाली और जिन चीजों से वस्तिकी नली बनतीहै उन्हीं चीजों से बनी हुई धूम्रपान की नली श्रेष्ठ होती है ॥ ४४ ॥

दूराद्विनिर्गतःपर्वच्छिन्नोनाडीतनूकृतः । नेन्द्रियंबाधतेधूमोमात्राकालनिषेवितः ॥ ४५ ॥

दूरसे आया हुआ नली के पोरुओंमें टूट कर मुड़ा हुआ और क्रम २ से नलीमें सूक्ष्म हुआ धूम्र मात्रा तथा समय के अनुसार सेवन करने से इन्द्रियों को बाधा नहीं करता है ॥ ४५ ॥

यदाचोरश्चकण्ठश्च शिरश्चलघुतांव्रजेत् । कफश्चतनुतांप्राप्तःसुपीतंधूममादिशेत् ॥ ४६ ॥

जब हृदय कंठ तथा शिर हलका होजाय और कफ कम होजाय तब अच्छे प्रकार से धूम्रपान हुआ समझना चाहिये ॥ ४६ ॥

अविशुद्धःस्वरोयस्य कण्ठश्चसकफोभवेत् । स्तिमितोमस्तकश्चैवमपीतंधूममादिशेत् ॥ ४७ ॥

जब स्वर शुद्ध न होय कंठ में कफ होय और मस्तक में गीलापन मालूम होय तो धूम्रपान अच्छे प्रकारसे नहीं हुआ जानना चाहिये ॥ ४७ ॥

तालुमूर्द्धाचकण्ठश्च शुष्यतेपरितप्यते । तृष्यतेमुह्यतेजन्तूरक्तंश्चस्रवतेऽधिकम् ॥ ४८ ॥

तालु मस्तक तथा कंठका सूखना व तापयुक्त होना और तृषा मोह अधिक रुधिरका गिरना ॥ ४८ ॥

शिरश्चभ्रमतेऽत्यर्थं मूर्च्छाचास्योपजायते । इन्द्रियाण्युपतप्यन्तेधूमेऽत्यर्थंनिषेविते ॥ ४९ ॥

शिरका अधिक घूमना मूर्च्छा और इन्द्रियों में सन्ताप यह रोग अधिक धूम्रपान करने से होते हैं ॥ ४९ ॥

वर्षेवर्षेऽणुतैलञ्च कालेषुत्रिषुनाचरेत् । प्रावृट्शरद्वसन्तेषुगतमेघेनभस्तले ॥ ५० ॥

रक्तस्रावके कारण प्राविट्, शरद और वसन्त ऋतु में अणु तैलका व्यवहार न करना चाहिये और जब आकाश में बादल न हों ॥ ५० ॥

नस्यकर्म्मयथाकालं योयथोक्तंनिषेवते । नतस्यचक्षुर्नघ्राणंनश्रोत्रमुपहन्यते ॥ ५१ ॥

उस समय जो मनुष्य यथोक्त रीतिसे नस्य लेता है उसके नेत्र नासिका तथा कान नष्ट नहीं होते ॥ ५१ ॥

नस्युःश्वेतानकपिलाः केशाःश्मश्रूणिवापुनः । नचकेशाःप्रलुठ्यन्तेवर्द्धन्तेचविशेषतः ॥ ५२ ॥

उसकी डाढ़ी तथा शिरके बाल श्वेत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा भूरे नहीं होते और न गिरते हैं किन्तु बढ़ते हैं॥ ५२॥

मन्यास्तम्भः शिरःशूलमर्दितंहनुसंग्रहः। पीनसार्द्धावभेदौचशिरःकम्पश्चशाम्यति॥ ५३॥

गलेके पीछे की नसका जकड़ना, शिर की पीड़ा, अर्दित, जावड़ोंका जकड़ना, पीनस, आधाशीशी तथा शिरका काँपना ये सब रोग शान्त होजाते हैं॥ ५३॥

शिराःशिरःकपालानांसन्धयःस्नायुकण्डराः। नावनप्रीणिताश्चास्यलभन्तेऽभ्यधिकंबलम्॥ ५४॥

शिरकी शिरा, कपालों की संधि, स्नायु और कण्डरा यह नस्यके सेवनसे अधिक बलयुक्त होजाते हैं॥ ५४॥

मुखंप्रसन्नोपचितं स्वरःस्निग्धःस्थिरोमहान्। सर्वेन्द्रियाणांवैमल्यं बलंभवतिचाधिकम्॥ ५५॥

मुख पूर्ण तथा प्रसन्न होजाता है स्वर स्निग्ध स्थिर तथा गंभीर होजाता है और संपूर्ण इन्द्रिय निर्मल तथा अधिक बलयुक्त होजाती हैं॥ ५५॥

नचास्यरोगाःसहसा प्रभवन्त्यूर्द्धजत्रुजाः। जीर्य्यतश्चोत्तमाङ्गेव जरानलभतेबलम्॥ ५६॥

हंसले के ऊपर होनेवाले रोग एकाएकी नहीं होनेपाते वृद्धावस्था में भी शिरमें बुढ़ापा नहीं मालूम होता॥ ५६॥

चन्दनागुरुणीपत्रंदार्वीत्वङ्मधुकंबलाम्। प्रपौण्डरीकंसूक्ष्मैलांविडङ्गंबिल्वमुत्पलम्॥ ५७॥

चन्दन, अगर, तेजपात, दारुहल्दी, दालचीनी, मुलहठी, खरियारा, स्थलकमल, छोटी इलायची, वायविडंग, बेल, उत्पल ५७॥

ह्रीवेरमभयंवन्यं त्वङ्मुस्तंसारिवांस्थिराम्। सुराह्वंपृश्निपर्णीञ्चजीवन्तीञ्चशतावरीम्॥ ५८॥

सुगन्धबाला, खस, कैवर्त्ती मोथा, भद्रमोथा, साई, शालिपर्णी, देवदारु, पृश्निपर्णी जीवन्ती, शतावर॥ ५८॥

हरेणुंबृहतींव्याघ्रीं सुरभींपद्मकेशरम्। विपाचयेच्छतगुणेमाहेन्द्रेविमलेऽम्भसि॥ ५९॥

संभालू के बीज, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, साल और कमल की केसर इन सब औषधियों को वर्षाके सौगुने निर्मल जल में औटावे॥ ५९॥

तैलाद्दशगुणंशेषं कषायमवतारयेत्। तेनतैलंकषायेणदशकृत्वोविपाचयेत्॥ ६०॥

जब तेलका दशगुना काढ़ा बाकी रहै तब उतार कर छानलेवे फिर इसके दश भागका के एक २ भागके साथ दश वार तेल को पकावे॥ ६०॥

अथास्यदशमेपाके समांशंछागलंपयः। दद्यादेषोनुतैलस्यनावनीयस्यसंविधिः॥ ६१॥

दशवींवार तेलके बराबर बकरीका दूध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी मिलावे यह नासलेने के लिये योग्य अणु तेलकी विधि है ॥ ६१ ॥

तस्यमात्रांप्रयुञ्जीततैलस्यार्द्धपलोन्मिताम् । स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्यपिचुनानावनैस्त्रिभिः ॥ ६२ ॥

इसकी मात्रा दो तोले की है (औषधियों की और तेलकी मात्रा विधिके अनुसार कल्पना करले) शिर में स्वेदन तथा स्नेहन करके तीनबार रुई के द्वारा नासलेनी चाहिये ॥ ६२ ॥

त्र्यहात्त्र्यहाच्चसप्ताहमेतत्कर्म्मसमाचरेत् । निवातोष्णसमाचारोहिताशीनियतेन्द्रियः ॥ ६३ ॥

तीसरे २ दिन सप्ताहभर वातरहित स्थान में पथ्याशी और जितेन्द्रिय मनुष्य नस्यका ग्रहणकरै ॥ ६३ ॥

तैलमेतत्त्रिदोषघ्नमिन्द्रियाणांबलप्रदम् । प्रयुञ्जानोयथाकालंयथोक्तानश्नुतेगुणान् ॥ ६४ ॥

यह तैल त्रिदोषनाशक और इन्द्रियों को बलदायक है समय के अनुसार इसके सेवनसे ऊपर कहेहुए सब गुण होते हैं॥६४॥

आपोत्थिताग्रंद्वीकालौ कषायंकटुतिक्तकम् । भक्षयेद्दन्तपवनंदन्तमांसान्यबाधयन् ॥ ६५ ॥

कषाय, कटु अथवा तिक्तकाष्ठ की दाँतनके मुखको कुचलकर दिन में दोबार दाँतों के मांसको बचाकर दंतवनकरे ॥ ६५ ॥

निहन्तिगन्धवैरस्यं जिह्वादन्तास्यजंमलम् । निष्कृष्यरुचिमाधत्ते सद्योदन्तविशोधनम् ॥ ६६ ॥

यह जिह्वा दाँत तथा मुख के दुर्गंधयुक्त मैलको निकालके नष्ट कर देतीहै तब दाँतशुद्ध होकर शीघ्रही रुचि उत्पन्न होती है ॥ ६६ ॥

सुवर्णरूप्यताम्राणि त्रपुरीतिमयानिच । जिह्वानिर्लेखनानिस्युस्तीक्ष्णान्यनृजूनिच ॥ ६७ ॥

सोना, चाँदी, ताँबा, रांगा अथवा पीतलकी तीक्ष्णतारहित टेढ़ी जीभी बनानी चाहिये ॥ ६७ ॥

जिह्वामूलगतंयच्च मलमुच्छ्वासरोधिच । सौगन्ध्यंभजतेतेनतस्माज्जिह्वांविनिर्लिखेत् ॥ ६८ ॥

जिह्वामूलका मैल तथा श्वासका रोकने वाला मैल निकल जाता है और मुख में सुगन्धि आने लगती है इसलिये जीभी करना चाहिये ॥ ६८ ॥

करञ्जकरवीरार्कमालतीककुभासनाः । शस्यन्तेदन्तपवनेयेचाप्येवंविधाद्रुमाः ॥ ६९ ॥

करंज, कनेर, आक, चमेली, अर्जुन तथा विजयसार यह सब और इनके समान अन्य वृक्षभी दँतौन के लिये श्रेष्ठ हैं॥ ६९ ॥

धार्य्याण्यास्येन वैशद्यरुचिसौगन्ध्यमिच्छता । जातीकटुकपूगानां लवङ्गस्यफलानिच ॥ ७० ॥

जो मनुष्य रुचि मुख में निर्मलता और सुगन्धिकी इच्छाकरे वह इनको मुखमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्खे जायफल, कस्तूरी, सुपारी, लौंग॥७०॥

कक्कोलकफलंपत्रं ताम्बूलस्यशुभं तथा। तथाकर्पूरनिर्य्यासःसूक्ष्मैलायाःफलानिच॥ ७१ ॥

कंकोल, तांबूल, कपूर और छोटी इलायची के बीज॥ ७१॥

हन्वोर्बलंस्वरबलंवदनोपचयःपरः। स्यात्परञ्चरसज्ञानमन्नेचरुचिरुत्तमा॥ ७२॥

जावड़ों में बल होता है स्वर उत्तम होजाता है मुख भरजाता है, रसोंका अच्छे प्रकार से ज्ञान होताहै अन्न में अधिक रुचि होती है॥ ७२॥

नचास्यकण्ठशोषःस्यान्नौष्ठयोःस्फुटनाद्भयम्। नचदन्ताःक्षयंयान्ति दृढमूलाभवन्तिच॥ ७३ ॥

गला नहीं सूखता, ओठ नहीं फटते, दांत नहीं गिरते बल्कि दृढ़ होजाते हैं॥७३॥

नशूलन्तेनचाम्लेनहृष्यन्तेभक्षयन्तिच॥ परानपिपरान्भक्ष्यान्तैलगण्डूषसेवनात्॥ ७४ ॥

तेलके कुल्लाकरने से दांत खटाई खाने से खट्टे नहीं होते वल्कि प्रसन्न रहते हैं और बहुत कठिन पदार्थों के खाने में भी समर्थ होते हैं॥ ७४॥

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलंनजायते। नखालित्यंनपालित्यंनकेशाःप्रपतन्तिच॥ ७५ ॥

शिर में नित्य तेल लगाने से शिरकी पीड़ा, गंजापन, बालोंकी श्वेतता, तथा बालोंका गिरना यह सब रोग नहीं होते हैं॥ ७५॥

बलंशिरःकपालानांविशेषेणाभिवर्द्धते। दृढमूलाश्चदीर्घाश्चकृष्णाःकेशाभवन्तिच॥ ७६ ॥

शिर तथा कपाल में अधिक बल होता है बालकी जड़ पुष्ट व लंबे तथा काले हो जाते हैं॥ ७६॥

इन्द्रियाणिप्रसीदन्ति सुत्वग्भवतिचामलम्। निद्रालाभःसुखंचस्यान्मूर्ध्नितैलनिषेवणात्॥ ७७॥

मस्तक में तेल लगाने से इन्द्रिय प्रसन्न होती हैं त्वचा सुन्दर निर्मल होजाती है और सुख से निद्रा आती है॥ ७७॥

नकर्णरोगावातोत्थाः नमन्याहनुसंग्रहः। नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंस्यान्नित्यंकर्णतर्पणात्॥ ७८ ॥

कानों में नित्य तेल छोड़ने से कानों के वातजरोग गले के पीछे की नस तथा जावड़े का जकड़ना, जोरसे सुनना और बधिरता यह सब रोग नष्ट होजाते हैं॥ ७८॥

स्नेहाभ्यङ्गाद्यथाकुम्भश्चर्मस्नेहविमर्दनात्। भवत्युपाङ्गादक्षश्चदृढःक्लेशसहोयथा॥ ७९ ॥

जैसे तेल लगाने से घड़ा, जैसे स्नेह मर्द्दनसे चमड़ा और जैसे तेल आदिके लगाने से पहिया दृढ़ क्लेश सहनेवाला और कार्य्य के योग्य होजाता है॥ ७९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथाशरीरमभ्यङ्गाद्दृढंसुत्वक्प्रजायते। प्रशान्तमारुताबाधंक्लेशव्यायामसंग्रहम् ॥ ८० ॥

इसी प्रकार शरीर में तेल लगाने से शरीर दृढ़ तथा सुन्दर होजाता है वातज पीड़ा नहीं होती क्लेश तथा व्यायाम सहने की सामर्थ्य होती है ॥ ८० ॥

स्पर्शनेचाधिकोवायुःस्पर्शनञ्चत्वगाश्रितम्। त्वच्यश्चपरमोभ्यङ्गस्तस्मात्तंशीलयेन्नरः ॥ ८१ ॥

वायु का कार्य्य स्पर्श है और स्पर्श का स्थान त्वचा है और तेल लगाने से त्वचा उत्तम होती है इसलिये नित्य तेल लगाना चाहिये ॥ ८१ ॥

नचाभिघाताभिहतंगात्रमभ्यङ्गसेविनः। विकारंभजतेऽत्यर्थंबलकर्मणिवाक्वचित् ॥ ८२ ॥

नित्य तेल लगानेवाले के शरीर में चोट लगने से कोई अधिक विकार नहीं होता और बलके काम करने में भी कोई पीड़ा नहीं होती ॥ ८२ ॥

सुस्पर्शोपचिताङ्गश्चबलवान्प्रियदर्शनः। भवत्यभ्यङ्गनित्यत्वान्नरोऽल्पोजरएवच ॥ ८३ ॥

शरीर कोमल होजाताहै बल तथा सुन्दरता होती है वृद्धावस्था बहुत कम होतीहै॥८३॥

खरत्वंशुष्कतारौक्ष्यंश्रमःसुप्तिश्चपादयोः। सद्यएवोपशाम्यन्तिपादाभ्यङ्गनिषेवणात् ॥ ८४ ॥

और त्वचा की कर्कशता रूक्षता शुष्कता श्रम तथा पैरों का सुन्न होजाना यह सब रोग पैरमें तेल लगाने से शीघ्रही नष्ट होजाते हैं ॥ ८४ ॥

जायतेसौकुमार्य्यञ्च बलंस्थैर्य्यञ्चपादयोः। दृष्टिःप्रसादंलभतेमारुतश्चोपशाम्यति ॥ ८५ ॥

पैरोंमें सुकुमारता, बल, स्थिरता, दृष्टिकी प्रसन्नता तथा वायुकी शान्ति होतीहै ॥८५॥

नचस्याद्गृध्रसीवाताः पादयोःस्फुटनंनच। नशिरास्नायुसङ्कोचःपादाभ्यङ्गेनपादयोः ॥ ८६ ॥

और गृध्रसी वात, पैरों का फटना और पैरोंकी शिरा तथा नसोंका सुकड़ना यह सब रोग पैरमें तेल लगाने से नहीं होतेहैं ॥८६॥

दौर्गन्ध्यंगौरवंतन्द्रां कण्डूमलमरोचकम्। स्वेदंबीभत्सतांहन्तिशरीरपरिमार्ज्जनम् ॥ ८७ ॥

शरीर के पोंछने से दुर्गन्धि, भारीपन, तन्द्रा, खुजली, मैल, अरुचि, स्वेद तथा बीभत्सता का नाश होताहै ॥ ८७ ॥

पवित्रंवृष्यमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्। शरीरबलसन्धानंस्नानमोजस्करंपरम् ॥ ८८ ॥

स्नान पवित्र, वीर्य्यवर्धक, आयु को हित, श्रम, स्वेद तथा मलनाशक, शरीरमें बलकारी और अत्यन्त ओजकारी होताहै॥८८॥

काम्यंयशस्यमायुष्यमलक्ष्मीघ्नंप्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हर्षणम् । श्रीमत्पारिषदंशस्तं निर्मलाम्बरधारणम् ॥ ८६ ॥

निर्मल वस्तुओं का धारण करना काम्य, यशकारी, आयु को हित, अलक्ष्मीनाशक, प्रसन्नता करनेवाला, शोभाकारी और सभा के योग्य होता है ॥ ८९ ॥

वृष्यंसौगन्ध्यमायुष्यं काम्यंपुष्टिबलप्रदम् । सौमनस्यमलक्ष्मीघ्नं गन्धमाल्यनिषेवणम् ॥ ६० ॥

सुगन्धित मालाओं का धारण करना कामियों को हित, सुगन्धि[illegible]री, आयु को हित, काम्य, पुष्टि तथा बलकारी, प्रसन्नताकारी और अलक्ष्मीनाशक होताहै ॥ ९० ॥

धन्यंमङ्गल्यमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् । हर्षणंकाम्यमोजस्यंरत्नाभरणधारणम् ॥ ६१ ॥

रत्नजटित आभूषणों का धारण करना धन्य, मंगलकारी, आयुकोहित, शोभाकारी, व्यसननाशक, प्रसन्नताकारक, काम्य और ओज को हित होताहै ॥ ९१ ॥

मेध्यम्पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकलिनाशनम् । पादयोर्मलमार्गाणांशौचाधानमभीक्ष्णशः ॥ ६२ ॥

पैर तथा मल निकलने के मार्गों का हरबार शौच बुद्धि को हित, पवित्र, आयुकोहित और,अलक्ष्मी तथा कलिका नाशक होता है ॥ ९२ ॥

पौष्टिकंवृष्यमायुष्यं शुचिरूपविराजनम् । केशश्मश्रुनखादीनांकल्पनंसंप्रसाधनम् ॥ ६३ ॥

केश, डाढ़ी तथा नखआदिकों का कटवाना और केशोंका धोना पौष्टिक, कामियों को हित, आयुकोहित, पवित्र और सुन्दरताकारक होताहै ॥ ९३ ॥

चक्षुष्यंस्पर्शनाहितं पादयोर्व्यसनापहम् । बल्यंपराक्रमसुखंवृष्यंपादत्रधारणम् ॥ ६४ ॥

जूते पहरना नेत्रों को हित, स्पर्श में हित, पैरों के व्यसन का नाशक, बलकारी, पराक्रम में सुखदायी और कामियों को हित होता है ॥ ९४ ॥

ईतेःप्रशमनंबल्यं गुप्त्यावरणशंकरम् । घर्मानिलरजोम्बुघ्नं छत्रधारणमुच्यते ॥ ६५ ॥

छतुरीलगाना उपद्रवोंका नाशक, बलकारी, पिशाचादि के भय का नाशक और धूप वायु धूल तथा जल से बचाने वाला होता है ॥ ९५ ॥

स्खलतःसंप्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्चनिषेधनम् । अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नंदण्डधारणम् ॥ ६६ ॥

दण्डधारण गिरते हुएको रोकनेवाला, शत्रुनाशक, सहारा देने वाला, आयुकोहित और भयनाशक होताहै ॥ ९६ ॥

नगरीनगरस्येव रथस्येवरथीसदा । स्वशरीरस्यमेधावी कृत्येस्ववहितो भवेदिति । भवतिचात्र । वृत्त्युपा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यान्निषेवेत येस्युर्द्धर्म्माविरोधिनः। शममध्ययनञ्चैव सुखमेवंसमश्नुते॥ ९७॥

जैसे राजा अपने नगरके कार्य्यों में सावधान रहता है और जैसे रथी रथके काममें सावधान रहताहै उसी प्रकार बुद्धिमान् पुरुष अपने शरीर के कामों में स्वरका हितैषी रहै इस विषय में यह श्लोकहै कि धर्मके अनुसार जीविका का उपाय करे शान्ति करे और स्वाध्यायकरे ऊपर कहीहुई इन सब रीतियों के ठीक २ करने से सुख होताहै॥ ९७॥

तत्रश्लोकाः। मात्राद्रव्याणिमात्राश्चसंश्रित्यगुरुलाघवम्। द्रव्याणांगर्हितोभ्यासो येषांयेषाञ्चशस्यते॥ ९८॥

तिसमें यह श्लोक हैं। मात्राके द्रव्य मात्राके अनुसार हलकापन तथा भारीपन और जिन द्रव्योंका अभ्यासवर्ज्जित है व जिन द्रव्योंका अभ्यास उचित है॥ ९८॥

अञ्जनंधूमवर्त्तिश्च त्रिविधावर्त्तिकल्पना। धूमपानगुणाःकालाःपानमानंचयस्ययत्॥ ९९॥

अंजन, धूमवर्त्ति, तीन प्रकार की बत्ती बनाना, धूम्रपान के गुण, धूम्रपान का समय व जिसका जो प्रमाण है॥ ९९॥

व्यापत्तिचिह्नंभैषज्यं धूमोयेषांविगर्हितः। पेयोयथायन्मयंच नेत्रंयस्यचयद्विधम्॥ १००॥

धूम्रपान से होने वाले रोगों के चिह्न उन की चिकित्सा जिनको धूम्रपान करना अनुचित है किस प्रकार से धूम्रपान करना चाहिये किस धूम्रपान के लिये कैसी नली बनानी चाहिये॥ १००॥

नस्यकर्म्मगुणानस्तः कार्य्यंयच्चयथायदा। भक्षयेदन्तपवनं यथायद्गुणञ्चयत्॥ १०१॥

नस्यकर्म के गुण जिस समय जिसप्रकार से नस्यका व्यवहार करना चाहिये दतौन करने की विधि उसके गुण॥ १०१॥

यदर्थंयानिचास्येन धार्य्याणिकवलग्रहे। तैलस्ययेगुणादृष्टाःशिरस्तैलगुणाश्चये॥ १०२॥

जिस लिये जौनसी वस्तु मुख में रखनी चाहिये तेलके गुण शिर में तेल लगाने के गुण॥ १०२॥

कर्णेतैलंतथाभ्यङ्गे पादाभ्यङ्गे च मार्जने। स्नानेवाससिशुद्धेचसौगन्ध्येरत्नधारणे॥ १०३॥

कानमें तेल डालनेके गुण, पैरों में तेल लगाने के गुण, शरीर में तेल लगाने के गुण, शरीर पोंछने के गुण, स्नानके गुण, शुद्ध वस्त्रों के गुण सुगन्धित मालाओं के गुण, रत्नजटित आभूषण पहरने के गुण॥ १०३॥

शौचेसंहरणेलोम्नां पादत्रछत्रधारणम्। गुणमात्राशितीयेऽस्मिन् यथोक्तादण्डधारणे॥ १०४॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृतेश्लोकस्थानेमात्राशितीयोनामपञ्चमोध्यायः५॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शौचके गुण, बालबनवाने के गुण, जूते पहरनेके गुण,छतुरी लगाने के गुण और दंड धारण के गुण यह संपूर्ण विषय इस मात्राशितीय अध्यायमें ठीक२कहे गयेहैं ॥१०४॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रेमात्राशितीयनामपंचमअध्यायसमाप्तहुआ ५ ॥

पंचमअध्यायसमाप्त ५ ॥

छठा अध्याय ॥

अथातः तस्याशितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

तस्याशितीयोऽध्याहारादबलंवर्ण श्चवर्द्धते । यत्तुसात्म्यंविदितं चेष्टाहारव्यपाश्रयम् ॥ १ ॥

अब इसकेवाद तस्याशितीयनाम अध्याय को व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा जिस ऋतुमें जैसा आहार विहार करना चाहिये उसे जानकर आहारादि करने से बल और वर्णकी वृद्धि होतीहै ॥ १ ॥

इहखलुषडङ्गमृतुविभागेनविद्यात् । तदादित्यस्योदगयनमादानंचत्री नृतूञ्शिशिरादीन् ग्रीष्मान्तान् व्यवस्येत् वर्षादीन्पुनर्हेमन्तान्ता न्दक्षिणायनंविसर्गञ्च ॥ २ ॥

एक वर्षमें ६ ऋतु होती हैं उनमें से शिशिर वसन्त तथा ग्रीष्म यह तीन आदान काल हैं इनमें सूर्य्य विषुवत्रेखा के उत्तर ओर गमन करता है (यह उत्तरायण होता है) वर्षा, शरद तथा हेमन्त यह विसर्गकाल हैं इनमें सूर्य्य विषुवत्रेखा के दक्षिण ओर को घूमता है (यह दाक्षिणायनहै) ॥ २ ॥

विसर्गेच पुनर्वायवोनातिरूक्षाःप्र वान्तीतरेपुनरादानेसोमश्चाव्याहत बलः । शिशिराभिर्भाभिरापूरयन् जगदाप्याययतिशश्वदतोविसर्गः सौम्यः ॥ ३ ॥

विसर्गकालमें बहुत रूखी वायु नहीं चलती परन्तु आदानकालमें रूखीही चलती है विसर्गकालमें सम्पूर्ण बलयुक्त चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से सब जगत् को आप्यायन (तर) करता है इसलिये विसर्गकाल को सौम्य कहते हैं ॥ ३ ॥

आदानंपुनराग्नेयंतावेतावर्कवायू सोमश्चकालस्वभावमार्गपरिगृहीताः कालर्तुरसदोषदेहबलनिर्वृत्तिप्रत्ययभूताःसमुपदिश्यन्ते ॥ ४ ॥

और आदानकाल आग्नेय (अधिक अग्निके गुणवाला है) सूर्य्य, वायु तथा चन्द्रमा यह तीनों समयपर अपने २ स्वभाव तथा मार्ग के अनुसार होकर समय ऋतु रस दोष देह तथा बलकी उत्पत्ति में, कारण कहे गये हैं ॥ ४ ॥

तत्ररविर्भाभिराददानोजगतःस्नेहं वायवस्तीव्ररूक्षाश्चोपशोषयन्तः शिशिरवसन्तग्रीष्मेषुयथाक्रमं रौक्ष्यमुत्पादयन्तो रूक्षान्रसांस्तिक्तकषायकटुकांश्चाभिवर्द्धयन्तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णांदौर्बल्यमावहन्ति ॥ ५ ॥

अपनी किरणों से जगत् के रस को खैंचतेहुए सूर्य और तीव्र तथा रूखी रस को सुखाती हुई वायु (यह दोनों) शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म ऋतुमें क्रमसे रूक्षता को उत्पन्न करके रूखे तिक्त कषाय तथा कटुरसों को बढ़ातेहुए मनुष्यों की दुर्बलता को उत्पन्न करते हैं ॥ ५ ॥

वर्षाशरद्धेमन्तेषुतु दक्षिणाभिमुखेऽर्ककालमार्गे मेघवातवर्षाभिहतप्रतापेशशिनिचाव्याहतबलेमाहेन्द्रसलिलप्रशान्तसन्तापे जगत्यरूक्षारसाः प्रवर्द्धन्तेऽम्ललवणमधुराययथाक्रमं तत्रबलमुपचीयन्ते नृणामिति ॥ ६ ॥

वर्षा, शरद तथा हेमन्त ऋतुमें दक्षिणाभिमुख सूर्यके समय मार्ग मेघ वायु तथा वर्षा के द्वारा प्रतापके कम होजाने पर चन्द्रमा के अव्याहत बलवाले होने पर और वर्षा के जल के द्वारा जगत्के सन्ताप के दूरहोजाने पर रूक्षतारहित अम्ल, लवण तथा मधुररस क्रमपूर्वक बढ़ते हैं और मनुष्यों का भी बल बढ़ता है॥ ६ ॥

भवतिचात्र ॥ आदावन्तेचदौर्बल्यंविसर्गादानयोर्नृणाम् । मध्येमध्यंवरन्त्वन्ते श्रेष्ठमग्रेचनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

इस में यह श्लोक है कि विसर्ग के आदि अर्थात् वर्षा ऋतु में आदान के अन्त अर्थात् ग्रीष्मऋतु में मनुष्य दुर्बल होते हैं मध्य अर्थात् शरद तथा वसन्त ऋतु में मनुष्य मध्य बल होतेहैं और अन्त अर्थात् हेमन्त तथा आदि अर्थात् शिशिर ऋतु में मनुष्य अधिकबलयुक्त होते हैं ॥ ७ ॥

शीते शीतानिलस्पर्शसंरुद्धोबलिनांवली । पक्ताभवतिहेमन्तेमात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ ८ ॥

शीतकालमें शीतल वायुके स्पर्श से शरीरके भीतर रुकीहुई अग्नि बलिष्ठ वस्तुओं का भी परिपाक करती है इसलिये हेमन्त ऋतु में भारी वस्तु अधिक मात्रासे भी पच जाती है ॥ ८ ॥

सयदानेन्धनंयुक्तंलभतेदेहजंतदा। रसंहिनस्त्यतोवायुःशीतःशीतेप्रकुप्यति ॥ ९ ॥

जब वह अग्नियोग्य इंधन नहीं पाती है तब शरीर में स्थित रसको नष्ट करती है इसलिये शीत कालमें शीतवायु कुपित होती है॥ ९ ॥

तस्मात्तुषारसमये स्निग्धाम्ललवणान्रसान् । औदकानूपमांसानांमेध्यानामुपयोजयेत् ॥ १० ॥

इसी कारण से शीतकाल में स्निग्ध अम्ल तथा लवणरसयुक्त पदार्थ अनूपदेश तथा जल के जीवों का मांस और मेधावर्धक वस्तु खानी चाहिये ॥ १० ॥

बिलेशयानांमांसानि प्रसहानांभृतानिच । भक्षयेन्मदिरांसीधुं मधु चानुपिबेन्नरः ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और बिलेशय (बिलमें रहनेवाले गोह और सर्पादिक) तथा प्रसहा (बरध आदिक) जीवों के मांसका भूंत (कबाब) खाना चाहिये भोजन के उपरान्त मद्य सीधु तथा मधु पीना चाहिये ॥ ११ ॥

गोरसानिक्षुविकृतीर्वसांतैलंनवौदनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्नहीयते ॥ १२ ॥

गोरस ईख के पदार्थ चरबी तेल नवीन अन्न तथा उष्ण जलका जो कोई हेमन्त ऋतु में सेवन करते हैं उनकी आयु क्षीण नहीं होती ॥ १२ ॥

अभ्यङ्गोत्सादनंमूर्ध्नि तैलंजैन्ताकमातपम् । भजेद्भूमिगृहञ्चोष्णमुष्णंगर्भगृहंतथा ॥ १३ ॥

हेमन्त ऋतुमें तैलमर्दन उवटन शिरमें तैल लगाना, जैन्ताक स्वेद (इसका विषय आगे कहेंगे) धूप, उष्णभूमिगृह, उष्णगर्भगृह ॥ १३ ॥

शीतेसुसंवृतंसेव्यं यानंशयनमासनम् । प्रावाराजिनकौषेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ १४ ॥

ढकी हुई सवारी, कंबल, अजिनचर्म्म, रेशमी वस्त्र, गद्देसमेत शय्या तथा बिछौना इनका सेवन शीतकाल में करे ॥ १४ ॥

गुरूष्णवासादिग्धाङ्गो गुरुणाऽगुरुणासदा । शयनेप्रमदांपीनां विशालोपचितस्तनीम् ॥ १५ ॥

भारी तथा गरम वस्त्र पहरे शयनके समय शरीर में अगर लगायेहुए बड़े स्तन वाली स्थूल स्त्री को ॥ १५ ॥

आलिङ्ग्याऽगुरुदिग्धाङ्गीं सुप्यात्समदमन्मथः । प्रकामञ्चनिषेवेत मैथुनंशिशिरागमे ॥ १६ ॥

आलिंगन करके कामसे उन्मत्त होकर सोवे और यथेच्छ मैथुनकरे शिशिर ऋतु के आगमन में ॥ १६ ॥

वर्जयेदन्नपानानिलघूनिवातलानि च । प्रवातंप्रमिताहारमुदमन्थंहिमागमे ॥ १७ ॥

हलके तथा बादी अन्नपानको त्यागकर दे हिमके आगमन में अधिक वायु स्वल्प भोजन तथा जलसे घोलेहुए सत्तू इनसब को त्याग देवे ॥ १७ ॥

हेमन्तशिशिरेतुल्येशिशिरेऽल्पंविशेषणम् । रौक्ष्यमादानजंशीतंमेघमारुतवर्षजम् ॥ १८ ॥

हेमन्त तथा शिशिर यह दोनों ऋतु समान हैं परन्तु शिशिर ऋतु में आदान कालसे हुई रूक्षता तथा मेघवायु और वृष्टिसे हुई शीतलता विशेष होती है इस लिये इस ऋतुमें थोड़ा भोजनकरे ॥ १८ ॥

तस्माद्धैमन्तिकःसर्वःशिशिरेविधिरिष्यते । निवातमुष्णमधिकंशिशिरेगृहमाश्रयेत् ॥ १९ ॥

और इसी हेतुसे हेमन्त ऋतुकी सब विधि करनेपर भी वायुरहित तथा उष्ण गृहका अधिक सेवन शिशिर में करना चाहिये ॥ १९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कटुतिक्तकषायाणिवातलानिलघूनिच । वर्जयेदन्नपानानिशिशिरे शीतलानिच ॥ २० ॥

और कटु तिक्त कषाय वादी हलके तथा शीतल अन्नपान त्यागदेवै ॥ २० ॥

हेमन्तेनिचितःश्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः । कायाग्निंबाधतेरोगांस्ततःप्रकुरुतेबहून् ॥ २१ ॥

हेमन्त ऋतुमें इकट्ठा हुआ कफ सूर्य्य की किरणों से उभरकर शरीर की अग्निको विगाड़कर अनेक प्रकारके रोगों को उत्पन्न करता है ॥ २१ ॥

तस्माद्वसन्तेकर्माणिं वमनादीनिकारयेत् । गुर्वम्लस्निग्धमधुरंदिवास्वप्नञ्चवर्जयेत् ॥ २२ ॥

इसलिये वसन्तऋतु में वमन आदि कर्म करने चाहिये भारी खट्टी स्निग्ध तथा मधुर वस्तु दिनमें सोना इन सब का त्याग करना चाहिये ॥ २२ ॥

व्यायामोद्धर्त्तनंधूमं कवलग्रहमञ्जनम् । सुखाम्बुनाशौचविधिंशीलयेत् कुसुमागमे ॥ २३ ॥

व्यायाम, उबटन, धूम्रपान, कवलग्रहण, अंजन, कुछ गरम जल से शौच इन सबका सेवन वसन्त में करे ॥ २३ ॥

चन्दनागुरुदिग्धाङ्गोयवगोधूमभोजनः शारभंशाशमैणेयंमार्गलावकपिञ्जलम् ॥ २४ ॥

अगर मिलेहुए चन्दन का लेप शरीर में लगावे जौ, गेहूं और शरभ मृग, खरगोश, एणमृग, लवा तथा कपिञ्जल पक्षी इन सब का मांस खाय ॥ २४ ॥

भक्षयेन्निगदंसीधुंपिबेन्माध्वीकमेव वा । वसन्तेनुपिबेत्स्त्रीणांकामिनीनाञ्चयौवनम् ॥ २५ ॥

नीरोग सीधु अथवा माध्वीक मदिराका पान करे और वसंन्त में सुन्दर युवतियों के यौवन का पानकरे ॥ २५ ॥

मयूखैर्जगतःसारं ग्रीष्मेपेपीयतेरविः । स्वादुशीतंद्रवंस्निग्धमन्नपानंतदाहितम् ॥ २६ ॥

ग्रीष्मऋतु में सूर्य्य अपनी किरणोंके द्वारा संसार के रसको सुखाते हैं इससे इस ऋतुमें मधुर, शीतल, द्रव तथा सचिक्कण अन्नपान हित है ॥ २६ ॥

शीतंसशर्करंमन्थं जाङ्गलान्मृगपक्षिणः । घृतंपयःसशाल्यन्नंभजन् ग्रीष्मेनसीदति ॥ २७ ॥

शर्करायुक्त शीतल मट्ठा जांगल मृग तथा पक्षियों का मांस घी और दूध भात इनके भोजनसे ग्रीष्मऋतुमें क्लेश नहीं होता॥२७॥

मद्यमल्पंनवोपयमथवासुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानिव्यायामञ्चात्रवर्जयेत् ॥ २८ ॥

इस ऋतुमें थोड़ी भी मद्य न पीनी चाहिये और जो अभ्यास होय तो बहुतसा जल मिलाकर पीनी चाहिये, लवण अम्ल कटु तथा उष्ण वस्तुओं का सेवन न करना चाहिये व्यायाम न करे ॥ २८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिवाशीतगृहेनिद्रां निशिचन्द्रांशु शीतले। भजेच्चन्दनदिग्धाङ्गःप्रवा तेहर्म्यमस्तके ॥ २९ ॥

दिनमें शीतल घरमें सोवे रात्रिमें चन्द्रमा की किरणों से शीतल मकान के ऊपर जहां पवन चलती हो शरीर में चन्दन लेप करके सोवे ॥ २९ ॥

व्यजनैः पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदक शीतलैः। सेव्यमानोभजेदास्यांमु क्तामणिविभूषितः ॥ ३० ॥

चन्दन के जल से सिंचेहुए दासादिकों के द्वारा हिलायेहुए पंखों की वायु से सेवन किया गया मनुष्य मुक्ता मणियों से विभूषित होके रात्रि में शयन करे ॥ ३० ॥

काननानिचशीतानिजलानिकुसु मानिच। ग्रीष्मकालेनिषेवेतमैथु नाद्विरतोनरः ॥ ३१ ॥

ग्रीष्मऋतु में वन शीतल जल तथा पुष्पों का सेवनकरे और मैथुन न करे ॥ ३१ ॥

आदानदुर्बलेदेहेपक्ताभवतिदुर्बलः। सवर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः ॥ ३२ ॥

आदानकाल में शरीर के दुर्बल होने से अग्निभी निर्बल होजाती है वह अग्नि वर्षा ऋतुमें दूषित वायुआदिके द्वारा फिर बाधित होती है ॥ ३२ ॥

भूबाष्पान्मेघनिस्यन्दात् पाकाद म्लाज्जलस्यच। वर्षास्वग्निबले क्षीणेकुप्यन्तिपवनादयः ॥ ३३ ॥

पृथ्वी के बाष्पसे वृष्टिसे और जल के खट्टे विपाक से वर्षा ऋतुमें अग्निके दुर्बल होजानेपर बातादिक कुपित होते हैं ॥ ३३ ॥

तस्मात्साधारणःसर्व्वोविधिर्वर्षासु वक्ष्यते। उदमन्थंदिवास्वप्नमवश्या यंनदीजलम् ॥ ३४ ॥

इसलिये वर्षाऋतु में संपूर्ण विधि साधारण कहेंगे जलका मन्थन, दिन में सोना, नदी का जल ॥ ३४ ॥

व्यायाममातपञ्चैव व्यवायञ्चात्र वर्जयेत्। पानभोजनसंस्कारान्प्रा यःक्षौद्रान्वितान्भजेत् ॥ ३५ ॥

व्यायाम, घामको इसऋतु में त्याग देवे और पान भोजनादिक शहदके साथ करे ॥ ३५ ॥

व्यक्ताम्ललवणस्नेहंवातवर्षाकुलेऽ हनि। विशेषशीतेभोक्तव्यंवर्षास्व निलशान्तये ॥ ३६ ॥

वायु तथा वर्षा से युक्त दिनमें बहुत शीत होनेपर अम्ल लवण तथा स्निग्ध आहारकरे इस्से वायु शान्त होती है ॥ ३६ ॥

अग्निसंरक्षणवतायवगोधूमशाल यः। पुराणाजाङ्गलैर्मांसैर्भोज्ययूषै श्चसंस्कृतः ॥ ३७ ॥

अग्निकी रक्षा करनेवाला मनुष्य पुराने यव गेहूं तथा शालिधान्यों के पदार्थोंको जांगल जीवों के मांसके यूषके साथ खाय ॥ ३७ ॥

पिबेत्क्षौद्रान्वितञ्चाल्पंमाध्वीकानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्टमम्बुवा । माहेन्द्रंतप्तशीतंवाकौपं सारसमेववा ॥ ३८ ॥

थोड़ी सी सहतयुक्त माध्वीक मदिरा पिये अथवा वर्षाका तालाबका या कुएंका जल गरमकर ठंढा करके पिये ॥ ३८ ॥

प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरोभवेत् । लघुशुद्धाम्बरःस्थानंभजेदक्लेदिवार्षिकम् ॥ ३९ ॥

वर्षाऋतु में शरीर का रगड़वाना, उबटन, स्नान, सुगन्धित मालाओंका पहरना, हलके तथा शुद्ध वस्त्रोंका पहरना और वर्षा तथा तरीसे रहित स्थान इनसबका सेवन करना हितकारी है ॥ ३९ ॥

वर्षाशीतोचिताङ्गानांसहसैवार्करश्मिभिः । तप्तानामाचितंपित्तंप्रायःशरदिकुप्यति ॥ ४० ॥

वर्षाऋतु में शीतयुक्त अंगों में इकट्ठा हुआ पित्त शरदऋतुमें सूर्य्यकी किरणों से एकाएकी तप्तहोकर प्रायः कुपित होता है ॥ ४० ॥

तत्रान्नपानंमधुरंलघुशीतंसतिक्तकम् । पित्तप्रशमनंसेव्यंमात्रयासुप्रकाङ्क्षितैः ॥ ४१ ॥

इस ऋतुमें पित्तनाशक मधुर हलका शीतल तथा तिक्त अन्न पानादि पदार्थ बहुत भूख लगनेपर सेवन करना चाहिये ॥ ४१ ॥

लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्राञ्शरभान्शशान् । शालीनयवगोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये ॥ ४२ ॥

लवा, कपिंजल, एणमृग, मेढ़ा, शरभ तथा खरगोश इनसबका मांस, शालिधान्य, यव और गेहूं यह शरदऋतु में सेवन के योग्य हैं ॥ ४२ ॥

तिक्तस्यसर्पिषःपानंविरेकोरक्तमोक्षणम् । धाराधरात्ययेकार्य्यमातपस्यचवर्जनम् ॥ ४३ ॥

तिक्त घृतकापान, विरेचन, रुधिरका निकलवाना और धूपका त्याग यह सब शरदऋतुमें करने चाहिये ॥ ४३ ॥

वसां तैलमवश्यायमौदकानूपमाभिषम् । क्षारंदधिदिवास्वप्नं प्राग्वातञ्चात्रवर्ज्जयेत् ॥ ४४ ॥

चरबी, तेल, बरफ, जल तथा अनूप देश के जीवोंका मांस, क्षार, दही, दिनमें सोना और पुरवाई हवा यह सब शरदऋतु में वर्जित हैं ॥ ४४ ॥

दिवासूर्य्यांशुसन्तप्तं निशिचन्द्रांशुशीतलम् । कालेनपक्वंनिर्दोषमगस्तेनाविषीकृतम् ॥ ४५ ॥

दिनमें सूर्यकी किरणों से तप्तहुआ रात्रि में चन्द्रमाकी किरणों से शीतल हुआ समय पर परिपक्वहुआ दोषरहित अगस्त के द्वारा निर्विष कियागया ॥ ४५ ॥

हंसोदकमितिख्यातं शारदंविमलंशुचि । स्नानपानावगाहेषु शस्यतेतद्यथामृतम् ॥ ४६ ॥

शरदऋतुका निर्म्मल जल हंसोदक कहलाता है यह स्नान पान तथा अवगा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हन आदिमें अमृत के समान श्रेष्ठ है ॥ ४६ ॥

शारदानिचमाल्यानि वासांसिविमलानिच । शरत्कालेप्रशस्यन्ते प्रदोषेचन्द्ररश्मयः ॥ ४७ ॥

शरदऋतुके पुष्पों की माला, निर्म्मल वस्त्र और सायंकाल के समय चन्द्रमा की किरणें शरदऋतु में श्रेष्ठ हैं ॥ ४७ ॥

इत्युक्तमृतुसात्म्यं यच्चेष्टाहारव्यपाश्रयम् । उपशेतेयदौचित्यादेकसात्म्यंतदुच्यते ॥ ४८ ॥

इस प्रकार जिस ऋतुमें जौनसा आहार विहार सात्म्य है वह कहागया जो उचित होने से सुखकारी होता है उसे एकसात्म्य कहते हैं ॥ ४८ ॥

दोषाणामामयानाञ्च विपरीतगुणं गुणैः । सात्म्यमिच्छन्तिसात्म्यज्ञाश्चेष्टितंचाद्यमेवच ॥ ४९ ॥

जौनसा आहार विहार दोष तथा रोगोंके विपरीत गुणवाला होता है उसे सात्म्य के जाननेवाले सात्म्य कहते हैं चेष्टित हो अथवा भोजनहो ॥ ४९ ॥

इतितत्रश्लोकाः । ऋतावृतौनृभिः सेव्यमसेव्यंयच्चकिञ्चन । तस्याशितीयेनिर्दिष्टं हेतुमत्सात्म्यमेव चेति ॥ ५० ॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते तस्याशितीयोऽध्यायः ॥ ६ ॥

उसमें यह श्लोक है । इस तस्याशितीय नाम अध्याय में जिस ऋतुमें जौनसी वस्तु सेवन करनी चाहिये तथा जो नहीं सेवन करनी चाहिये और जो हेतु सात्म्य हैं वह सब वर्णन कियागया ॥ ५० ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंतस्याशितीयनाम छठा अध्याय समाप्तहुआ ॥ ६ ॥

सातवाँ अध्याय ॥

अथातो नवेगान्धारणीयमध्यायंव्याख्यास्यामः ।

इति हस्माहभगवानात्रेयः ।

इसके उपरान्त नवेगान्धारणीय अध्याय का व्याख्यान करताहूं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा ॥

नवेगान्धारयेद्धीमान् जातान्मूत्रपुरीषयोः । नरेतसोनवातस्य नच्छर्द्याःक्षवथोर्नच ॥ १ ॥

बुद्धिमान् पुरुष मूत्र, मल, वीर्य्य, वायु, छर्दि, छींक इन सबके वेग को न रोके ॥ १ ॥

नोद्गारस्यनजृम्भाया नवेगान्क्षुत्पिपासयोः । नबाष्पस्यननिद्रायाःश्वासस्यश्रमेणच ॥ २ ॥

डकार, जम्हाई, क्षुधा, तृषा, बाष्प, निद्रा और श्रमसे हुए श्वासकेभी वेगको न रोके ॥ २ ॥

एतान्धारयतोजातान् वेगान्रोगा भवन्तिये । पृथक्पृथक्चिकित्सार्थं तन्मेनिगदतःशृणु ॥ ३ ॥

इनके रोकने से जो २ रोग उत्पन्न होते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनको चिकित्सा के लिये मैं पृथक् २ कहता हूं तुम सुनो ॥ ३ ॥

वस्तिमेहनयोःशूलं मूत्रकृच्छ्रंशिरो रुजा । विरामोवङ्क्षणानाहःस्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ ४ ॥

मूत्रके वेगके रोकने से वस्ति तथा लिंगमें पीड़ा, मूत्रकृच्छ्र, शिरमें पीड़ा, विराम और वंक्षण (जांघ और पेडू की संधि) में आनाह यह रोग होते हैं ॥ ४ ॥

स्वेदावगाहनाभ्यङ्गान् सर्पिषश्चावपीडकम् । मूत्रेप्रतिहतेकुर्य्यात्त्रिविधंवस्तिकर्मच ॥ ५ ॥

मूत्रके रोकने से हुए रोगों में स्वेद, अवगाहन, अभ्यंग, वायु को अनुलोम करने के लिये घृतमर्दन और तीन प्रकार का वस्तिकर्म करना चाहिये ॥ ५ ॥

पक्काशयशिरःशूलं वातवर्चोनिरोधनम् । पिण्डिकोद्वेष्टनाध्मानं पुरीषेस्याद्विधारिते ॥ ६ ॥

मलके रोकने से पक्काशय तथा शिर में पीड़ा वायु तथा मलका रुकना पिंडिलियों का भड़कना और अफरा यह सब रोग होते हैं ॥ ६ ॥

स्वेदाभ्यङ्गावगाहाश्च वर्त्तयोवस्तिकर्म्मच । हितंप्रतिहतेवर्चस्यन्नपानंप्रमाथिच ॥ ७ ॥

मलके रोकने से हुए रोगों में स्वेद, अभ्यंग, अवगाहन, वर्त्ति, वस्तिकर्म और वायु को ठीक २ करने वाले अन्नपान हितकारी हैं ॥ ७ ॥

मेढ्रेवृषणयोः शूलमङ्गमर्दोहृदिव्यथा । भवेत्प्रतिहतेशुक्रे विवद्धंमूत्रमेवच ॥ ८ ॥

वीर्य्य के रोकने से लिंग, अंडकोश, शरीर तथा हृदय में पीड़ा और मूत्रका अवरोध यह सब रोग होते हैं ॥ ८ ॥

तत्राभ्यङ्गावगाहाश्च मदिराचरणायुधाः । शालिःपयोनिरूहाश्चशस्तंमैथुनमेवच ॥ ९ ॥

वीर्य्य के रोकने से हुए रोगों में अभ्यंग, अवगाहन, मद्यपान, मुर्गे के मांस तथा शालिधान्यका भोजन, दूध की निरूहवस्ति और मैथुन यह सब हितकारी हैं ॥ ९ ॥

वातमूत्रपुरीषाणां सङ्गोध्मानंक्लमो रुजा । जठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥ १० ॥

वायुके रोकने से वायु मूत्र तथा मलका रुकना अफरा ग्लानि और उदर में पीड़ा तथा अन्य वातज रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥

स्नेहस्वेदविधिस्तत्रवर्त्तयोभोजनानिच । पानानिवस्तयश्चैवशस्तंवातानुलोमनम् ॥ ११ ॥

वायु के रोकने से हुए रोगों में स्नेहन, स्वेदन, वर्ति और वायुको अपने मार्ग के अनुसार करनेवाला आहार पान तथा वस्तिकर्म हितहै ॥ ११ ॥

कण्डूकोठाऽरुचिव्यङ्गशोथपाण्डु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मयज्वराः। कुष्ठहृल्लासवीसर्पाश्छ र्दिनिग्रहजागदाः॥ १२॥

छर्दिके रोकने से खुजली, चकत्ते, अरुचि, व्यंग, सूजन, पांडु, ज्वर, कुष्ठ, मचली और जहरबात यह सब रोग होते हैं॥ १२॥

भुक्त्वाप्रच्छर्दनंधूमोलंघनंरक्तमोक्ष णम्। रूक्षान्नपानंव्यायामोविरेक श्चात्रशस्यते॥ १३॥

छर्दिके रोकने से हुए रोगों में भोजन करके वमन करना, धूम्रपान, लंघन, रुधिर निकलवाना, रूखा अन्नपान, व्यायाम और विरेचन हित है॥ १३॥

मन्यास्तम्भः शिरःशूलमर्दितावर्द्धभेदकौ। इन्द्रियाणाञ्चदौर्बल्यं क्षवथोःस्याद्विधारणात्॥ १४॥

छींक के रोकने से गलेके पीछेकी नसका जकड़ना, शिरमें पीड़ा, अर्दित वायु, आधाशीशी और इन्द्रियोंकी दुर्बलता यह सब रोग होते हैं॥ १४॥

तत्रोर्द्धजत्रुकेऽभ्यङ्गः स्वेदोधूमःस नावनः। हितंवातघ्नमाद्यञ्चघृतञ्चो त्तरभक्तिकम्॥ १५॥

छींक के रोकने से हुए रोगों में हँसवे के ऊपर तैलादिमर्दन, स्वेदन, धूम्रपान, नस्य और वातघ्न घृतयुक्त भोजन हितहै॥ १५॥

हिक्काकासेऽरुचिःकम्पो विबन्धोहृ दयोरसोः। उद्गारनिग्रहात्तत्र हि कायास्तुल्यमौषधम्॥ १६॥

डकारके रोकने से हिचकी खाँसी अरुचि, कम्प और हृदय तथा छाती में विबन्ध (एक प्रकारकी कसक) यह सब रोग होतेहैं डकार के रोकने से हुए रोगों में हिचकी कीसी चिकित्सा करनी चाहिये॥ १६॥

विनामाक्षेपसङ्कोचाः सुप्तिःकम्पःप्र वेपनम्। जृम्भायानिग्रहात्तत्र सर्वं वातघ्नमौषधम्॥ १७॥

जँभाई के रोकने से विनाम, आक्षेप, संकोच स्पर्श का ज्ञान न होना और बहुत कम्प होता है इन रोगों में वातघ्न औषधि करनी चाहिये॥ १७॥

कार्श्यदौर्बल्यवैवर्ण्यमङ्गमर्दोऽरुचि र्भ्रमः। क्षुद्वेगनिग्रहात्तत्र स्निग्धो ष्णंलघुभोजनम्॥ १८॥

क्षुधा के वेगके रोकने से कृशता, दुर्बलता, विवर्णता, अंगों में पीड़ा, अरुचि और भ्रम होता है क्षुधाके रोकने से हुए रोगों में स्निग्ध उष्ण तथा हलका भोजन करना चाहिये॥ १८॥

कण्ठास्यशोषोबाधिर्य्यं श्रमःश्वा सोहृदिव्यथा। पिपासानिग्रहात्तत्र शीतंतर्पणमिष्यते॥ १९॥

तृषा के रोकने से कंठ तथा मुख का सूखना बधिरता, श्रम, श्वास और हृदय में पीड़ा यह सब रोग होतेहैं इन रोगों में शीतल तर्पण कराना चाहिये॥ १९॥

प्रतिश्यायोऽक्षिरोगश्च हृद्रोगश्चारु चिर्भ्रमः। बाष्पनिग्रहणात्तत्र स्वप्नोमद्यंप्रियाःकथाः॥ २०॥

आंसुओं के रोकने से जुकाम, नेत्ररोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय के रोग, अरुचि और भ्रम यह रोग होते हैं इन रोगों में निद्रा मद्य और प्रियकथा हितहै ॥ २० ॥

जृम्भाङ्गमर्दस्तन्द्राच शिरोरोगाक्षि गौरवम्। निद्राविधारणात्तत्रस्व प्नःसंवाहनानिच ॥ २१ ॥

निद्राके रोकने से जंभाई शरीर में पीड़ा तन्द्रा नेत्रोंका भारीपन और शिरके रोग होते हैं इनमें सोना और पैरोंका दबवाना हित है ॥ २१ ॥

गुल्महृद्रोगसंमोहाः श्रमनिश्वास धारणात्। जायन्तेतत्रविश्रामो वातघ्नाश्चक्रियाहिताः ॥ २२ ॥

श्रमसे हुए श्वास के रोकने से गोला, मोह और हृदय के रोग होते हैं इनमें विश्राम और वातघ्न क्रिया करनी चाहिये॥२२॥

वेगनिग्रहजारोगा यएतेपरिकीर्त्ति ताः। इच्छंस्तेषामनुत्पत्तिं वेगा नेतान्नधारयेत् ॥ २३ ॥

वेगों के रोकने से उत्पन्न होनेवाले यह रोग कहेगये हैं जो इनको उत्पन्न न होने देना चाहै वह इन वेगों को कभी न रोके ॥ २३ ॥

इमांस्तुधारयेद्वेगान् हितैषीप्रेत्यचे हच। साहसानामशस्तानां मनो वाक्कायकर्म्मणाम् ॥ २४ ॥

इसलोक और परलोक दोनों में हित चाहनेवाला अनुचित साहस अनुचित मानसिक वाचिक कायिक कर्म ॥ २४ ॥

लोभशोकभयक्रोधमानवेगान्नि धारयेत्। नैर्लज्जेर्ष्यातिरागाणा मभिध्यायाश्चबुद्धिमान् ॥ २५ ॥

लोभ, शोक, भय, क्रोध, मान, निर्लज्जता, ईर्ष्या, अतिराग इनके वेगोंको बुद्धिमान् पुरुष रोकै ॥ २५ ॥

परुषस्यातिमात्रस्यसूचकस्यानृत स्यच। वाक्यस्याकालयुक्तस्यधा रयेद्वेगमुत्थितम् ॥ २६ ॥

कठोर वाणी बोलना चुगली करना झूठ बोलना समयके अयोग्य वार्त्तालाप इनके वेगको रोके ॥ २६ ॥

देहप्रवृत्तिर्याकाचित् वर्त्ततेपरपीड या। स्त्रीभोगस्तेयहिंसाद्यास्तस्यावे गान्विधारयेत् ॥ २७ ॥

दूसरे को पीड़ा देने से जो कुछ देहकी प्रवृत्ति होती है मैथुन चोरी तथा हिंसा आदिक देहकी प्रवृत्ति के वेगको रोके ॥२७॥

पुण्यशब्दोविपापत्वान्मनोवाक्काय कर्म्मणाम्। धर्मार्थकामान्पुरुषःसु खोभुङ्क्तेचिनोतिच ॥ २८ ॥

जो पुरुष पापरहित मानसिक वाचिक तथा कायिक कर्म करता है वह पुण्यात्मा कहलाकर धर्म अर्थ तथा कामको सुखपूर्व्वक भोगता है और इकट्ठा करता है ॥ २८ ॥

शरीरचेष्टायाचेष्टास्थैर्य्यार्थाबलवर्द्धि नी। देहव्यायामसंख्यातामात्रया तांसमाचरेत् ॥ २९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो शरीर की चेष्टा इष्ट स्थिरता करनेवाली और बलकी बढ़ानेवाली होती है उसे देहव्यायाम कहते हैं इसका मात्राके अनुसार सेवनकरे ॥ २९ ॥

लाघवंकर्मसामर्थ्यंस्थैर्य्यंक्लेशसहिष्णुता। दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ ३० ॥

व्यायाम करने से शरीर का हलकापन, कार्य्य में सामर्थ्य, स्थिरता, क्लेश सहने की सामर्थ्य, दोषोंका नाश और अग्निकी वृद्धि होती है ॥ ३० ॥

श्रमःक्लमःक्षयस्तृष्णारक्तपित्तंप्रतामकः। अतिव्यायामतःकासोज्वरश्छर्दिश्चजायते ॥ ३१ ॥

बहुत व्यायाम करने से श्रम ग्लानि क्षय तृषा रक्तपित्त नेत्रों की ज्योतिका घटना खांसी ज्वर और छर्दि यह सब रोग होते हैं ॥ ३१ ॥

व्यायामहास्यभाष्याध्वग्राम्यधर्मप्रजागरान्। नोचितानपिसेवेतबुद्धिमानतिमात्रया ॥ ३२ ॥

बुद्धिमान पुरुष उचित होने परभी व्यायाम, हास्य, बोलना, मार्गगमन, मैथुन और जागरण इनका अत्यन्त सेवन न करे ॥ ३२ ॥

एतानेवंविधांश्चान्यान् योऽतिमात्रं नसेवते। गजःसिंहमिवाकर्षन्सहसासविनश्यति ॥ ३३ ॥

जो मनुष्य व्यायामादिकों का और इनके समान अन्य विषयों का अत्यन्त सेवन करता है वह सिंह को खैंचतेहुए हाथी के समान शीघ्र नष्ट होता है ॥ ३३ ॥

उचितादहिताद्धीमान्क्रमशोविरमेन्नरः। हितंक्रमेणसेवेतक्रमश्चात्रोपदिश्यते ॥ ३४ ॥

बुद्धिमान् पुरुष अभ्यास कियेहुए अहित पदार्थ को क्रमसे छोड़े और हितकारी वस्तु का क्रमसे सेवन करे वह क्रम यहहै ॥ ३४ ॥

प्रक्षेपापचयेताभ्यांक्रमःपादांशिकोभवेत्। एकान्तरंततश्चोर्द्ध्वंद्व्यन्तंत्र्यन्तरंतथा ॥ ३५ ॥

अहितवस्तु का चार भागों में से एकभाग घटाकर हितवस्तु का एक भाग सेवन करे फिर एक दिन के पीछे आधी अहित तथा आधी हितवस्तु सेवन करे फिर दो दिनका अन्तर देकर एकभाग अहितवस्तु तथा तीन भाग हितवस्तु का सेवन करे फिर तीन दिन का अन्तर देकर अहितवस्तु को त्यागकर चारोंभाग हितवस्तुकेहीखाय ॥ ३५ ॥

क्रमेणापचितादोषाः क्रमेणोपचितागुणाः। सन्तोयान्त्यपुनर्भावमप्रकम्प्याभवंतिच ॥ ३६ ॥

इस प्रकार के क्रमसे घटेहुए दोष फिर नहीं बढ़ते हैं और क्रमसे बढ़ेहुए गुण स्थिर होजाते हैं ॥ ३६ ॥

समपित्तानिलकफाः केचिद्गर्भादिमानवाः। दृश्यन्तेवातलाःकेचित्पित्तलाःश्लेष्मलास्तथा ॥ ३७ ॥

गर्भही से कोई मनुष्य समान पित्त वा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा वातवाले होते हैं कोई अधिक वातवाले कोई अधिक पित्तवाले और कोई अधिक कफवाले होते हैं ॥ ३७ ॥

तेषामनातुराःपूर्वेवातलाद्याःसदातुराः । दोषानुशयिताह्येषांदेहप्रकृतिरुच्यते ॥ ३८ ॥

इनमें से पहले अर्थात् जिनके वात पित्त तथा कफ समान होते हैं वह नीरोगी और अधिक वातादिवाले सदैव रोगी रहते हैं इन के शरीर की प्रकृति दोषों के अनुसार होती है जैसे समान तीनों दोषवाला सम प्रकृति अधिक वातवाला वातप्रकृति अधिक पित्तवाला पित्तप्रकृति और अधिक कफ वाला कफप्रकृति कहलाता है ॥ ३८ ॥

विपरीतगुणस्तेषां स्वस्थवृत्तेर्विधिर्हितः । समसर्वरसंसात्म्यंसमधातोःप्रशस्यते ॥ ३६ ॥

इन में से वातादि प्रकृतिवालों को दोषों के विपरीत गुणवाली वस्तु स्वस्थता की विधि में हितकारी है और प्रकृतिवाले को संपूर्ण रसों का समान व्यवहार सात्म्य है ॥ ३९ ॥

द्वेअधःसप्तशिरसि खानिस्वेदमुखानिच । मलायनानिबाध्यन्तेदुष्टैर्मात्राधिकैर्मलैः ॥ ४० ॥

शरीर के नीचे के भागके दो २ छिद्र शिरके सात ७ छिद्र और पसीने निकलने के संपूर्ण छिद्र यह सब मल निकलने के मार्ग हैं दूषित मलों के मात्रा से अधिक होजाने पर यह सब बाधित होते हैं। ४० ॥

मलवृद्धिंगुरुत्वेनलाघवान्मलसंक्षयम् । मलायनानांबुध्येतसङ्गोत्सर्गादतीवच ॥ ४१ ॥

मलमार्गों के भारी होने से तथा मल के अधिक निकलने से मलों की वृद्धि जाननी चाहिये और मलमार्गों के हलके होजाने से तथा मलके न निकलने से मलों का क्षय जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

तान्दोषलिङ्गैरादिश्यव्याधीन्साध्यानुपाचरेत् । व्याधिहेतुप्रतिद्वन्द्वैर्मात्राकालौविचारयेत् ॥ ४२ ॥

दोषों के चिह्नों से उनको जानकर हेतुविपरीत व्याधि विपरीत और हेतु तथा व्याधि इन दोनों से विपरीत औषधियों के द्वारा साध्य रोगों की चिकित्सा मात्रा और समय को विचारकर करे ॥ ४२ ॥

विषमस्वस्थवृत्तानामेते रोगास्तथापरे । जायन्तेनातुरस्तस्मात्स्वस्थवृत्तपरोभवेत् ॥ ४३ ॥

स्वस्थता में विषम आहार विहार करने से यह तथा अन्य रोगभी उत्पन्न होते हैं इस लिये नीरोग मनुष्य भी पथ्य का सेवन करे ॥ ४३ ॥

माधवप्रथमेमासि नभस्यप्रथमेपुनः । सहस्यप्रथमेचैवहारयेद्दोषसञ्चयम् ॥ ४४ ॥

चैत्र, श्रावण और अगहन महीने में संचित दोषों को वमन विरेचनादि के द्वारा निकाले ॥ ४४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्निग्धस्विन्नशरीराणामूर्द्ध्वञ्चाधश्च बुद्धिमान्। वस्तिकर्मततःकुर्य्यान्न स्तःकर्मचबुद्धिमान् ॥ ४५ ॥

स्वेदन तथा स्नेहन करके वमन विरेचन वस्तिकर्म और नस्यका प्रयोगकरे ॥ ४५ ॥

यथाक्रमंयथायोगमतऊर्द्ध्वंप्रयोजयेत्। रसायनानिसिद्धानिवृष्ययोगांश्चकालवित् ॥ ४६ ॥

इसके उपरान्त समयका ज्ञाता वैद्य क्रमपूर्वक यथायोग्य रसायन और वाजीकरण का प्रयोगकरे ॥ ४६ ॥

रोगास्तथानजायन्तेप्रकृतिस्थेषुधातुषु। धातवश्चाभिवर्द्धन्तेजराचान्त्यमुपैतिच ॥ ४७ ॥

इस प्रकार व्यवहार करने से धातुओं के स्वाभाविक होजाने पर रोग नहीं उत्पन्न होते हैं धातुओं की वृद्धि होती है और बुढ़ापा नहीं आता ॥ ४७ ॥

विधिरेषविकाराणामनुत्पत्तौनिदर्शितः। निजानामितरेषान्तुपृथगेवोपदिश्यते ॥ ४८ ॥

यह विधि दोषज विकारोंके न उत्पन्न होने की कहीगई अब आगन्तुज रोगोंके न उत्पन्न होने की विधि आगे कहते हैं ॥ ४८ ॥

येभूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसम्भवाः। नृणामागन्तवोरोगाःप्रज्ञातेष्वपराध्यति ॥ ४९ ॥

भूत, विष, वायु, अग्नि और प्रहारादिक केद्वारा जो आगन्तुज रोग उत्पन्न होते हैं उन में बुद्धिका दोष कारणहै ॥ ४९ ॥

ईर्ष्याशोकभयक्रोधमानद्वेषादयश्च ये। मनोविकारास्तेऽप्युक्ताःसर्वेप्रज्ञापराधजाः ॥ ५० ॥

ईर्ष्या, शोक, भय, क्रोध, मान और द्वेषादिक मनके सब विकारोंका भी बुद्धिदोष ही कारण है ॥ ५० ॥

त्यागःप्रज्ञापराधानामिन्द्रियोपशमःस्मृतिः। देशकालात्मविज्ञानंसद्वृत्तस्यानुवर्त्तनम् ॥ ५१ ॥

बुद्धिदोषों का त्याग, इन्द्रियों का रोकना, स्मृति देश तथा काल का जानना, आत्मज्ञान और सदाचार ॥ ५१ ॥

आगन्तूनामनुत्पत्तावेषमार्गोनिदर्शितः। प्राज्ञःप्रागेवतत्कुर्य्याद्धितंविद्यात्तदात्मनः ॥ ५२ ॥

यह आगन्तुज रोगों के न उत्पन्न होने के कारण हैं बुद्धिमान् पुरुष जिन कार्य्यों से अपना हित जाने उनको रोग उत्पन्न होने के प्रथमही करे ॥ ५२ ॥

आप्तोपदेशःप्राज्ञानांप्रतिपत्तिश्चकारणम्। विकाराणामनुत्पत्तावुत्पन्नानाञ्चशान्तये ॥ ५३ ॥

विकारों के नहीं उत्पन्न होने में और उत्पन्नहुए विकारोंकी शान्ति में आप्तोपदेश और बुद्धिसंभूत प्रतीति कारणहै ॥ ५३ ॥

पापवृत्तवचःसत्वाः सूचकाःकलह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रियाः। मर्मोपहासिनोलुब्धाःपरवृ द्धिद्विषःशठाः ॥ ५४ ॥

पापी मन तथा वचनवाले, चुगलखोर, कलहप्रिय, बुरे अवसरपर हंसनेवाले, लोभी, पराई वृद्धिसे द्वेष करनेवाले, शठ ॥ ५४ ॥

परापवादरतयः परनारीप्रवेशिनः। निर्घृणास्त्यक्तधर्माणःपरिवर्ज्यान राधमाः ॥ ५५ ॥

पराई निन्दा करनेवाले, परस्त्रीगमन करनेवाले, निर्दय और अधर्मी ऐसे अधम मनुष्यों का साथ न करना चाहिये ॥ ५५ ॥

बुद्धिविद्यावयःशीलधैर्य्यस्मृतिसमा धिभिः। वृद्धोपसेविनोवृद्धाःस्वभा भावज्ञागतव्यथाः ॥ ५६ ॥

बुद्धिमान्, विद्वान्, अधिक अवस्थावाले, सुशील, धीर, स्मृतिमान्, समाधि लगाने वाले, वृद्धोंकी सेवा करनेवाले, वृद्ध, स्वाभावके जाननेवाले, स्वस्थ ॥ ५६ ॥

सुमुखाःसर्वभूतानांप्रशान्ताःशंसि तव्रताः। सेव्याःसन्मार्गवक्तारःपु ण्यश्रवणदर्शनाः ॥ ५७ ॥

सुमुख, सब प्राणियोंपर दया करने वाले, श्रेष्ठ प्रतिज्ञा करनेवाले, अच्छा उपदेश करनेवाले, पुण्यश्रवण और पुण्यदर्शनवाले ऐसे पुरुषों का सेवन करना चहिये ॥ ५७ ॥

आहाराचारचेष्टासुसुखार्थीप्रेत्यचेह च। परंप्रयत्नमातिष्ठेद्बुद्धिमान्हि तसेवने ॥ ५८ ॥

इस लोक तथा परलोक में सुख चाहनेवाला पुरुष हितकारी आहार तथा आचार करने में अत्यन्त यत्नकरे ॥ ५८ ॥

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्क रम्। नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णंनाम लकैर्विना ॥ ५९ ॥

रात्रिके समय दही न खाय घी, शक्कर, मूंगकी दाल, सहत अथवा आमलों के विना दही न खाय और गरम दही न खाय ॥५९॥

अलक्ष्मीदोषयुक्तत्वान्नक्तन्तुदधिव र्जितम्। श्लेष्मणंस्यात् ससर्पि ष्कं दधिमारुतसूदनम् ॥ ६० ॥

रात्रि के समय दही खाने से अलक्ष्मी होती है इससे रात्रि के समय दही खाना वर्जित है घृतयुक्त दही कफकारक और वातनाशक होता है ॥ ६० ॥

नचसन्धुक्षयेत्पित्तमाहारञ्चविपा चयेत्। शर्करासंयुतंदद्यात्तृष्णा दाहनिवारणम् ॥ ६१ ॥

शर्करायुक्त दही पित्त का नहीं बिगाड़ने वाला भोजनका परिपाक करने वाला और तृषा तथा दाहनाशक होताहै ॥ ६१ ॥

मुद्गसूपेनसंयुक्तं दद्याद्रक्तानिलाप हम्। सुरसञ्चाल्पदोषञ्चक्षौद्रयु क्तंभवेद्दधि ॥ ६२ ॥

मूंगकी दालसमेत दही वातरक्त को नष्ट करता है सहतयुक्त दही स्वादिष्ट और स्वल्प दोषकारी होताहै ॥ ६२ ॥

उष्णंपित्तासृक्दोषान् धात्रीयुक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्तुनिर्हरेत्। ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्डुभ्रमयभ्रमान् ॥ प्राप्नुयात् कामलाञ्चोग्रां विधिंहित्वादधिप्रियइति ॥ ६३ ॥

गरम दही रक्तपित्तकारक होता है आमलों से युक्त दही दोषोंको निकालता है विधिके विना दही खानेवाले मनुष्य ज्वर, रक्तपित्त, जहरबात, कुष्ठ, पांडु और कामला इन रोगों को प्राप्त होते हैं ॥ ६३ ॥

अत्रश्लोकाः ॥

वेगावेगसमुत्थाश्चरोगास्तेषाञ्चभेषजम्। येषांवेगाविधार्य्याश्चमदर्थंयद्धिताहितम् ॥ ६४ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। मल मूत्रादिके वेग, वेगों के रोकने से होनेवाले रोग, इनकी औषधि, रोकने के योग्य वेग, जिनके लिये जो हित तथा अहित हैं ॥ ६४ ॥

उचितेचाहितेवर्ज्ये सेव्येचानुचिते क्रमः। यथाप्रकृतिचाहारोमलायन गदौषधम् ॥ ६५ ॥

अभ्यास के होनेपर भी अहितके त्यागने का तथा अनभ्यास होनेपर भी हितके सेवन का क्रम, प्रकृतिके अनुसार आहार, मल के मार्गके रोगोंकी औषधि ॥ ६५ ॥

भविष्यतामनुत्पत्तौरोगाणामौषधञ्चयत्। वर्ज्याःसेव्याश्चपुरुषाधीमतात्मसुखार्थिना ॥ ६६ ॥

होनेवाले रोगों के न उत्पन्न होनेकी औषधि, बुद्धिमान् तथा सुख चाहनेवाले पुरुष को त्याग तथा सेवन करने के योग्य पुरुष ॥ ६६ ॥

विधिनादधिसेव्यञ्चयेनयस्मात्तदत्रिजः। नवेगान्धारणेऽध्यायेसर्वमेवावदन्मुनिरिति ॥ ६७ ॥

इतिअग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते न वेगान्धारणीयोऽध्यायःसप्तमः ७ ॥

और जिसलिये जिस विधि से दहीका सेवन करना चाहिये यह सब बातें इस नवेगान्धारणीय अध्याय में पुनर्वसुजीने वर्णन किया ॥ ६७ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें नवेगान्धारणीयनामसातवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

अथातइन्द्रियोपक्रमणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

इहखलुपञ्चेन्द्रियाणिपञ्चेन्द्रियद्रव्याणि। पंचेन्द्रियाधिष्ठानानिपंचेन्द्रियार्थाः। पंचेन्द्रियबुद्धयोभवन्तीत्युक्तमिन्द्रियाधिकारेअतीन्द्रियं पुनःमनःसत्त्वसंज्ञकञ्चेत्याहुरेकेतदर्थात्मसम्पत्तदायत्तचेष्टम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त इन्द्रियोपक्रमणीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

इस संसारमें इन्द्रिय ५ इन्द्रियोंके द्रव्य

CC-0. Gangotri ... Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रियों के स्थान ५ इन्द्रियों के विषय ५ और इन्द्रियों की बुद्धि पांच होती हैं यह सब इन्द्रियाधिकार में कहागया है कोई यह कहते हैं कि मन अतीन्द्रिय (इन्द्रियों के विषय से रहित) है और कोई इसको सत्त्व कहते हैं कि आत्मा के प्रयत्नाधीन विचार आदि चेष्टा उसी के आधीन हैं ॥ १ ॥

चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम् । स्वार्थेन्द्रियार्थसङ्कल्पव्यभिचरणाच्चानेकमेकस्मिन्पुरुषेसत्त्वम् । रजस्तमःसत्त्वगुणयोगाच्च नचानेकत्वंनानेकं ह्येककालमनेकेषुप्रवर्त्तते ॥ २ ॥

कोई २ मनको इन्द्रियों के व्यापार का कारण कहते हैं स्वार्थ, इन्द्रियार्थ संकल्पोंके व्यभिचार से और सत्त्व रज तथा तमोगुण के योग से एक पुरुष में मन अनेक मालूम होते हैं अर्थात् पुरुष कभी सुखी कभी दुःखी होताहै कभी देखता है कभी सुनता है कभी श्वेतवर्ण कभी कृष्णवर्ण देखता है कभी सत्त्वगुण अवलंबी होताहै कभी रजोगुणका अवलंबन करता है और कभी तमोगुण के कार्य्य करता है इससे अनुमान किया जाता है कि एक पुरुषमें अनेक मन होते हैं परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि यदि अनेक मन होते तो एकही समय में अनेक कार्य्योंमें पुरुषकी प्रवृत्ति होती और ऐसा नहीं होताहै इससे मनकी एकता प्रतीत होती है ॥ २ ॥

तस्मान्नानेककालासर्वेन्द्रियप्रवृत्तिः । यद्गुणंश्चाभीक्ष्णंपुरुषमनुवर्त्ततेसत्त्वंतत्सत्त्वमेवोपदिशन्ति ऋषयोबाहुल्यानुशयात् ॥ ३ ॥

इसी से सम्पूर्ण इन्द्रियां एकही समय में अपने २ कार्य्य में प्रवृत्त नहीं होतीं जिस समय पुरुषमें जिस गुण की अधिकता होती है उस समय उसका मन उसी गुण से युक्त कहाजाता है ऋषिलोग सत्त्वगुण की अधिकता से सत्त्व कहते हैं ॥ ३ ॥

मनःपुरःसराणीन्द्रियाण्यर्थग्रहणसमर्थानिभवन्ति । तत्रचक्षुःश्रोत्रघ्राणंरसनंस्पर्शनमितिपञ्चेन्द्रियाणि ॥ ४ ॥

मनको अगाड़ी करके सम्पूर्ण इन्द्रियां अपने २ विषय को ग्रहण करती हैं तिनमें देखना सुनना सूंघना स्वाद लेना और स्पर्श करना यह पांच इन्द्रिय हैं ॥ ४ ॥

पञ्चेन्द्रियद्रव्याणिखंवायुर्ज्योतिरापोभूरिति । पञ्चेन्द्रियाधिष्ठानान्यक्षिणीकर्णौनासिकेजिह्वात्वक्चेति ॥ ५ ॥

आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी यह पांच इन्द्रियों के द्रव्य हैं नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा और त्वचा यह पांच इन्द्रियों के स्थान हैं ॥ ५ ॥

पञ्चेन्द्रियार्थाः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः ॥ पंचेन्द्रियबुद्धयश्चक्षुर्बुद्ध्यादिकास्ताः ॥ ६ ॥

शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध यह पांच इन्द्रियों के विषय हैं दर्शनबुद्धि, श्रवण-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धि घ्राणबुद्धि, स्वाद लेनेकी बुद्धि और स्पर्शबुद्धि यह पांच इन्द्रियबुद्धि हैं ॥ ६ ॥

पुनरिन्द्रियेन्द्रियार्थसत्त्वात्मसन्निकर्षजाः ॥ ७ ॥

यह बुद्धि इन्द्रिय इन्द्रियों के विषय मन और आत्मा इनके सम्बन्ध से उत्पन्न होती हैं ॥ ७ ॥

क्षणिकानिश्चयात्मिकाश्चेत्येतत्पञ्चपञ्चकम्। मनोमनोर्थोबुद्धिरात्माचेत्यध्यात्मद्रव्यगुणसंग्रहः शुभाशुभप्रवृत्तिनिवृत्तिहेतुश्च द्रव्याश्रितंकर्मयदुच्यते क्रियेति ॥ ८ ॥

यह क्षणिका और निश्चयात्मिका नाम दो प्रकार की होतीहैं यह इन्द्रिय आदि पांच का पंचक है मन, मनका विषय बुद्धि और आत्मा यह अध्यात्मगुण द्रव्य कहलाते हैं और यही शुभ तथा अशुभकी प्रवृत्ति तथा निवृत्ति के कारण हैं द्रव्यों के आश्रित कर्म को क्रिया कहते हैं ॥ ८ ॥

तत्रानुमानगन्धानां पञ्चमहाभूतविकारसमुदायात्मकानामपि सतामिन्द्रियाणांतेजश्चक्षुषिश्रोत्रेनभः घ्राणेक्षितिरापोरसनेस्पर्शनेऽनिलो विशेषेणोपदिश्यते ॥ ९ ॥

उसमें अनुमान से जानने के योग्य और पंचमहाभूतसंबंधी विकारों के समुदायरूप भी इन्द्रियोंके होने पर चक्षुरिन्द्रियमें तेज, श्रोत्र इन्द्रियमें आकाश घ्राणेन्द्रिय म पृथ्वी, रसनेन्द्रियमें जल और स्पर्शन इन्द्रियमें वायु विशेष करके पाई जाती है ॥ ९ ॥

तत्रयद्यदात्मकमिन्द्रियंविशेषात्तदात्मकमेवार्थमनुधावति। ततस्वभावाद्विभुत्वाच्च ॥ १० ॥

तिसमें जो इन्द्रिय जिस महाभूतकी है वह विशेष करके उसी के विषयको अनुसरण करती है इस में स्वभाव और विभुत्व कारण है ॥ १० ॥

तदर्थातियोगायोगमिथ्यायोगात् समनस्कमिन्द्रियं विकृतिमापद्यमानं यथास्वबुद्ध्युपघातायसम्पद्यते ॥ ११ ॥

इन्द्रियों का विषयों के साथ अधिक योग अयोग और अनुचित योग होने से मनसहित इन्द्रिय विकारको प्राप्त होकर अपनी २ बुद्धिको बिगाड़ती हैं ॥ ११ ॥

समयोगात्पुनःप्रकृतिमापद्यमानं यथास्वंबुद्धिमाप्याययति ॥ १२ ॥

और समान योग होने से प्रकृति को प्राप्त होकर अपनी २ बुद्धि को तृप्त करती हैं ॥ १२ ॥

मनसस्तुचिन्त्यमर्थः। तत्रमनसोबुद्धेश्चतएवसमानातिहीनमिथ्यायोगाःप्रकृतिविकृतिहेतवोभवन्ति ॥ १३ ॥

मन का विषय शोचना है मन और बुद्धि का विषयों केसाथ समयोग, अधिकयोग, हीनयोग और अनुचितयोगही प्रकृति और विकृति में कारण है ॥ १३ ॥

तत्रेन्द्रियाणांसमनस्कानामनुपत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थानामनुपतापायप्रकृतिभावेप्रयति तव्यमेभिर्हेतुभिः ॥ १४ ॥

तिसमें तापरहित इन्द्रिय और मनमें ताप न होने के लिये आगे कहेहुए हेतुओं से उनको स्वभाव में स्थित रखनेका यत्न करना चाहिये ॥ १४ ॥

तद्यथा सात्म्येन्द्रियार्थसंयोगेन बुद्ध्यासम्यगवेक्ष्यावेक्ष्य कर्मणांसम्यक्प्रतिपादनेनदेशकालात्मगुणविपरीतोपसेवनेनचेति ॥ तस्मादात्महितंचिकीर्षता सर्वेणसर्वसर्वदा स्मृतिमास्थायसद्वृत्तमनुष्ठेयम् । तद्ध्यनुष्ठानंयुगपत्सम्पादयत्यर्थद्वयमारोग्यमिन्द्रियविजयञ्चेति ॥१५॥

वह हेतु यह हैं जैसे कि इन्द्रिय और विषयों का सात्म्यसंयोग बुद्धिसे अच्छे प्रकार विचार कर कार्य्योंका अच्छी रीति से करना और देशकाल तथा आत्मा के विपरीत आचरण न करना इस्से भलाई चाहने वाले सब पुरुषों को सदैव ध्यान देके संपूर्ण सदाचार करना चाहिये सदाचार करने से एक साथही आरोग्यता तथा जितेन्द्रियता यह दोनों बातें सिद्ध होती हैं ॥ १५ ॥

तत् सद्वृत्तमखिलेनोपदेक्ष्यामः । तद्यथा ॥ देवगोब्राह्मणगुरुवृद्धसिद्धाचार्यानर्चयेत् । अग्निमनुचरेत् । औषधीःप्रशस्ताधारयेत् ॥ द्वौकालावुपस्पृशेत् ॥ मलायतनेष्वभीक्ष्णंपादयोश्चवैमल्यमादध्यात् । त्रिःपक्षास्यकेशश्मश्रुलोमनखान्संहारयेत् । नित्यमनुपहतवासाःसुमनाःसुगन्धिः स्यात् ॥ १६ ॥

उस संपूर्ण सदाचारको मैं वर्णन करताहूं देवता, गुरु, गौ, ब्राह्मण, वृद्ध, सिद्ध और आचार्य्यों का पूजनकरे अग्निहोत्रादि अग्निकार्य्य करे श्रेष्ठ औषधि धारणकरे प्रातःकाल और मध्याह्न में आचमनकरे मलों के स्थान तथा पैरोंको निरन्तर निर्मलरक्खे एक पक्ष में तीनबार क्षौरकरवावे सदैव निर्मल वस्त्र पहरे मनको प्रसन्न रक्खे और सुगन्धित द्रव्य धारणकरे ॥ १६ ॥

साधुवेशःप्रसाधितकेशोमूर्द्धश्रोत्रपादतैलनित्योधूमपः पूर्वाभिभाषी सुमुखः । दुर्गेष्वभ्युपपत्ताहोता यष्टादाताचतुष्पथानां नमस्कर्त्ता बलीनामुपहर्त्ताऽतिथीनांपूजकःपितॄणांपिण्डदः कालेहितमितमधुरार्थवादी । वश्यात्मधर्मात्माहेतुवीर्य्यःफलेनेर्षुः । निश्चिन्तोनिर्भीकोधीमान्ह्रीमान् महोत्साहः दक्षः क्षमावान्धार्मिकःआस्तिकः विनयबुद्धिविद्याभिजनवयोवृद्धसिद्धाचार्य्याणामुपासिता । छत्रीदण्डी मौनीसोपानत्कोयुगमात्रदृक्विचरेत् ॥ १७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधु वेषवाला, बाहेहुएकेशवाला, नित्य-ही शिर कान नासिका तथा पैरों में तेल लगानेवाला, धूम्रपान करनेवाला, पहले बोलनेवाला, सुमुख, विपत्ति में दयाकरनेवाला, हवन करनेवाला, यज्ञ करनेवाला, बदानी, चौराहों में नमस्कार करनेवाला, बलिदेनेवाला, अतिथियों का पूजक, पितरों को पिंडदेनेवाला, समयपर हितकारी, थोड़ी तथा मधुर बात कहनेवाला, इन्द्रियों को वश में रखनेवाला, स्वधर्मनिष्ठ, हेतुमें ईर्प्या करनेवाला, फल में नहीं ईर्प्या करनेवाला, चिन्तारहित, निर्भय, लज्जायुक्त, बुद्धिमान्, बड़े उत्साह वाला, चतुर, क्षमावान्, धर्मात्मा तथा आस्तिक विनय, बुद्धि, विद्या, कुल तथा अवस्थामें वृद्ध, सिद्ध और आचार्य्य इनकी सेवा करनेवाला, छत्र लगाकर लाठी लेकर मौनहोकर जूता पहनकर और चारहाथ आगे का मार्ग देखकर चले ॥१७॥

मङ्गलाचारशीलःकुचैलास्थिकण्टकामेध्यकेशतुषोत्करभस्मकपालस्नानबलिभूमीनांपरिहर्त्ता प्राक्श्रमाद्व्यायामवर्जीस्यात् । सर्वप्राणिषुबन्धुभूतःस्यात्क्रुद्धानामनुनेताभीतानामाश्वासयितादीनानामभ्युपपत्ता । सत्यसन्धः । सामप्रधानः । परपरुषवचनसहिष्णुःअमर्षघ्नः । प्रशमगुणदर्शी ॥ १८ ॥

मंगल आचार करे बुरे वस्त्र, हड्डी, काँटे, अपवित्र केश, भूसी का ढेर, भस्म तथा कपाल इनसे युक्त स्थान में स्नान के स्थान में और बलिके स्थानमें न जाय थकने से पहलेही व्यायाम छोड़देवे सब जीवों के साथ भाइयों कासा आचरण करे क्रुद्धों को मनावे, डरेहुओं को निर्भय करे, दीनोंपर दया करे, सच्ची प्रतिज्ञा करे, शान्तरहै, दूसरेके कठोर वचनों को सहे, क्रोधको रोके, उत्तम गुणों को देखे ॥ १८ ॥

रागद्वेषहेतूनांहन्ता ॥ नानृतंब्रूयात् ॥ नान्यस्वमादीत । नान्यस्त्रियमभिलषेत् । नान्यश्रियंनवैरंरोचयेत् । नकुर्यात् पापं नपापेऽपिपापीस्यात् ॥ नान्यदोषान्ब्रूयात् । नान्यरहस्यमागमयेत् ॥ १६ ॥

राग तथा द्वेषके कारणों का नाशकरे मिथ्या न बोले, दूसरे का धन न लेवे, दूसरे की स्त्री की इच्छा न करे, दूसरेकी लक्ष्मी की चाह न करे, किसी से वैर न करे, पाप न करे, पापी के साथभी पाप न करे और के दोषों को न कहै, किसी का भेद न खोले ॥ १९ ॥

नाधार्मिकैर्ननरेन्द्रद्विष्टैःसहासीत। नोन्मत्तैर्नपतितैर्नभ्रूणहन्तृभिर्नक्षुद्रैर्नदुष्टैः ॥ नदुष्टयानान्यारोहेत। नजानुसमंकठिनमासनमध्यासीत् ॥ २० ॥

पातकी, राजाके शत्रु ... भंगिरानेवाले, क्षुद्र तथा दु... खराब सवारी पर न चढ़े, उ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नानास्तीर्णमनुपहितमविशालम समंवाशयनंप्रपद्येत । नगिरिविषममस्तकेष्वनुचरेत् ॥ नद्रुममारुहेत् । न जलोग्रवेगमवगाहेत् । कुलच्छायांनोपासीत । नाग्न्युत्पातमभितश्चरेत् । नोच्चैर्हसेत् ॥ नशब्दवन्तंमारुतंमुञ्चेत् ॥ नासंवृतमुखोजृम्भांक्षवथुं हास्यंवा प्रवर्तयेत् । ननासिकांकुष्णीयात् । नदन्तान्विघट्टयेत् । ननखान्वादयेत् ॥ नास्थीन्यभिहन्यात् । नभूमिंविलिखेत् । नछिंद्यात्तृणम् ॥ नलोष्टंमृद्नीयात् ॥ २१ ॥

बिछौने तकिये से रहित ऊंचीनीची खटिया पर न सोवे, पर्वतों के विषम शिखरों पर न चढ़े, वृक्षपर न चढ़े, बड़े वेगवाले जलमें न उतरे, बेरीकी छायामें न बैठे, आगलगे हुए स्थानके इधर उधर न जाय, जोरसे न हसे जोर से अपशब्द (अधोवायु) न करे, विनामुख ढके जंभाई छींक और हास्य न करे, नाकको न मले, दाँतों को न किटकिटावे, नखों को न बजावे, हड्डियों को न चटकावे, ज़मीन में न लिखे, तिनके न तोड़े, कंकड़ न मले ॥ २१ ॥

नविगुणसङ्गैश्चेष्टेत् । ज्योतींष्यग्निञ्चामेध्यमशस्तञ्चनाभिवीक्षेत नहुंकुर्य्याच्छवम् । नचैत्यध्वजगुरुपूज्याशस्तच्छायामाक्रामेतन क्षपास्वमरसदनचैत्यचत्वरचतुष्पथोपवनश्मशानायतनान्यासेवेत् । नैकःशून्यगृहंनचाटवीमनुप्रविशेत् । नपापवृत्तान्स्त्रीयमित्रभृत्यान्भजेत् । नोत्तमैर्विरुध्येत्नावरानुपासीतनजिह्मंरोचयेत् । नाऽनार्य्यमाश्रयेत् । नभयमुत्पादयेत् । नसाहसातिस्वप्नप्रजागरस्नानपानाशनान्यासेवेत् । नोर्द्ध्वजानुश्चिरंतिष्ठेत् । नव्यालानुपसर्पेन्नदंष्ट्रिणःनविषाणिनः । पुरोवातातपावश्ययातिप्रवातान् जह्यात्कलिंनारभेत् । नानिभृतोऽग्निमुपासीत । नोच्छिष्टोनाधःकृत्वा प्रतापयेत् । नाविगतक्लमोनाना प्लुतवदनोननग्नउपस्पृशेत् । न स्नानशाट्यास्पृशेदुत्तमांगम् । न केशाग्राण्यभिहन्यात् । नोपस्पृशेतएववाससीविधृयात् । नास्पृष्ट्वा रत्नाज्यपूज्यमङ्गलसुमनसोऽभिनिष्क्रामेत् । नपूज्यमङ्गलान्यपसव्यं गच्छेत्नेतराण्यनुदक्षिणम् ॥ २२ ॥

ऐंड़ाई न लेवै, सूर्य्य आदि तेज और अपवित्र तथा अनिष्टकारी अग्नि को न देखे, शव को देखकर हुंकार न करे, भूतादियुक्त वृक्ष, ध्वजा, गुरु, पूज्य और अनिष्टकारी पदार्थों की छाया का उल्लंघन न करे, रात्रि के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय देवालय, चैत्य, चत्वर (भूतादिकोंसे युक्त चौतरा) चौराहा, बगीचा तथा श्मशानमें न रहे, सूनेघर में तथा वनमें अकेला न जाय, पापयुक्त स्त्री मित्र तथा सेवकों की शुश्रूषा न करे, अच्छे पुरुषों से विरोध न करे, नीचों का संग न करे, कपट न रक्खै, दुष्टका आश्रय न करे, किसी को न डरावे, साहस, अधिक, निद्रा, अधिक जागरण, अधिक स्नान, अधिक पान तथा अधिक भोजन न करे, ऊर्ध्वजानु होके बहुत देर न ठहरे, सर्प, डाढ़ वाले जीव तथा सींगवाले जीवों के पास न जाय, सम्मुखकी वायु, धूप, हिम और आँधी इनको त्यागे, कलह न करे, अविनीत होकर अग्नि का सेवन न करे, जूंठे मुख से और अग्निको नीचे रखकर न तापे, विना ग्लानि त्यागे विना मुख धोये और नंगा होकर आचमन न करे, जिस धोती को पहरकर स्नान करे उसे शिरमें न लगावे, बालों के अग्रभागों को न काटे और न स्पर्शकरे, दो वस्त्रोंको धारणकरे, रत्न, पूज्य, घृत, मंगलपदार्थ तथा पुष्पों का विना स्पर्श किये बाहर न निकले, पूज्य तथा मंगलकारी वस्तुओं को वाम करके न जाय, अपूज्य तथा अमंगलकारी वस्तुओं को दाहिनीओर करके न जाय ॥ २२ ॥

नारत्नपाणिर्नास्नातोनोपहतवासा नाऽजपित्वानाहुत्वादेवताभ्योऽनारूप्यपितृभ्योनाऽदत्त्वा ॥ गुरुभ्यो नातिथिभ्योनोपाश्रितेभ्योनापुण्यगन्धोनामालीनाप्रक्षालितपाणिपादवदनोनाऽशुद्धमुखोनोदङ्मुखोन विमनाभक्ताशिष्टाशुचिक्षुधितपरिचरोनापात्रीष्वमेध्यासु नादेशेनाऽकालेनाकीर्णेनाऽदत्त्वाग्रमग्नयेना प्रोक्षितंप्रोक्षणोदकैर्नमन्त्रैरनभिमन्त्रितंनकुत्सयन्नकुत्सितंनप्रतिकूलोपहितमन्नमाददीत । नपर्य्युषितमन्यत्रमांसहरितकशुष्कशाकफलभक्ष्येभ्यः ॥ २३ ॥

रत्नको विना हाथ में पहरे, विना स्नान किये, फटे कपड़े पहनकर, विना जप किये, विना हवन किये, देवताओं का नैवेद्य विना लगाये, पितर, गुरू, अतिथि तथा आश्रितों को विना दिये, सुगन्धिरहित होकर विना माला पहने, हाथ पैर तथा मुखको विना धोये, अशुद्धमुख होके, उत्तर मुख होके, उदासीन होके, अभक्त, असभ्य, अपवित्र तथा शूद्रे परिचारकों के साथ बैठकर तथा भोजन के प्रथम भागको विना अग्नि में डाले, अपवित्र पात्रों में, बुरे तथा भरेहुए स्थलमें, कुसमयमें, जलसे नहीं छिड़के गये, मंत्रों से नहीं आभिमंत्रित कियेगये, बुरे तथा शत्रुके निकट रक्खे हुए अन्नको निन्दा करके न खाय, मांस, अदरक, शुष्कशाक, तथा शुष्कफल इनके सिवाय अन्य कोई पदार्थ बासी न खाय॥२३॥

नाऽशेषभुक्स्यादन्यत्रदधिमधुलवणसक्तुसर्पिर्भ्यः ॥ ननक्तंदधिभुञ्जीत । नसक्तूनेकानश्नीयात् ॥ २४ ॥

दही, सहत, लवण, घी तथा सत्तुओं के सिवाय अन्य पदार्थों को सबन खाय कुछ छोड़दे ॥ २४ ॥

[illegible] Collection. Digitized by eGangotri

ननिशिनभुक्त्वानबहून्नद्विर्नोदकान्तरितान् ॥ २५ ॥

रात्रिको दही न खाय केवल सत्तू न खाय रात्रि के समय, भोजन के उपरान्त, बहुत, दोवार, दाँतों से काट २ कर और जल पी२ कर सत्तू न खाय ॥ २५ ॥

नछित्त्वाद्विजैर्भक्षयेत् ॥ नाऽनृजुः क्षुयान्नाद्यान्नशयीत । नवेगितोऽन्यकार्य्यःस्यात् । नवाय्वग्निसलिलसोमार्कद्विजगुरुप्रतिमुखं निष्ठीविकावातवर्च्चोमूत्राण्युत्सृजेत् ॥ नपन्थानमवमूत्रयेत् नजनवतिनान्नकाले । नजप्यहोमाध्ययनबलिमङ्गलक्रियासुश्लेष्मसिंघानकंमुञ्चेत् । नस्त्रियमवजानीत । नातिविश्रम्भयेत् । नगुह्यमनुश्रावयेन्नाधिकुर्य्यात् ॥ न रजस्वलांनातुरांनामेध्यांनाशस्तां नानिष्टरूपाचारोपचारां नादक्षिणांनाकामांनान्यकामां नान्यस्त्रियंनान्ययोनिं नायोनौनचैत्यचत्वरचतुष्पथपवनश्मशानायतनसलिलौषधिद्विजगुरुसुरालयेषु नसन्ध्ययोर्नातिननिषिद्धतिथिषुनाशुचिर्नजग्धभेषजोनाप्रणीतसङ्कल्पो नानुपस्थितप्रहर्षोनाभुक्तवान्नात्यशितोनविषमस्थोनमूत्रोच्चारपीडितोनश्रमव्यायामोपवासक्लमाभिहतोनाऽरहसिव्यवायंगच्छेत् ॥ २६ ॥

छींन कर ब्राह्मणों के साथ भोजन न करै टेढ़ेहोकर न छींके न खाय न सोवे मल मूत्रादि के वेग होने पर अन्य कार्य्य न करे सूर्य्य, अग्नि, वायु, जल, चन्द्रमा, गुरू तथा ब्राह्मण के सम्मुख थूक, अधोवायु, मल तथा मूत्र का त्याग न करे मार्ग में मूत्र का त्याग न करे बहुत से पुरुषोंमें, भोजन के समय, जपमें, हवन में, पढ़ने में, बलिकर्म में और मंगल कार्य्यों में न थूके और न नाक छिनके स्त्रीका अनादर तथा अत्यन्त विश्वास न करे स्त्रीसे गुप्त बात न कहे और उसको अधिकार न देवे रजस्वला रोगिणी अपवित्रा निन्दिता अनिष्टकारिणी रूप आचार तथा उपचार वाली चतुरतारहित कामरहित तथा अन्याभिलाषिणी स्त्री से प्रसंग न करे, परस्त्रीप्रसंग न करे, पशुयोनि तथा योनिभिन्न स्थान में गमन न करे, भूताधिष्ठित वृक्षके चौंतरे में, चौराहे में, उपवन में, यज्ञस्थान में, श्मशान में, जल में, औषधालय में, ब्राह्मण के घरमें, गुरुके स्थान में और देवालय में स्त्रीप्रसंग न करे, संध्याओं में तथा निषिद्ध तिथियों में स्त्रीगमन न करे, अपवित्र होकर, मनसूबा करके, विना हर्षके, विना भोजनकिये, बहुत भोजन करके, विषमता से स्थित होकर मूत्र तथा मलके वेगसे युक्त होकर और श्रम, व्यायाम, उपवास, तथा ग्लानिसे व्याकुल होकर स्त्रीप्रसंग न करे और विना एकान्तके भी स्त्रीप्रसंग न करे ॥ २६ ॥

नसतोनगुरून्परिवदेत् । नाशुचिरभिचारकर्मचैत्यपूज्यपूजाध्यय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नमभिनिवर्त्तयेत् । नविद्युतस्वनास्ववीषुनाभ्युदितासु दिक्षुनाग्निसंप्लवेनभूमिकम्पेनमहोत्सवेनोल्कापातेनमहाग्रहोपगमनेनष्टचन्द्रायां तिथौ नसन्ध्ययोर्नमुखादगुरोर्नावपतितंनातिमात्रं नतान्तंनविस्वरं नानवस्थितपदंनातिद्रुतंनविलंबितंनातिक्लीबंनात्युच्चैर्नातिनीचैः । स्वरैरध्ययनमध्यसेत् । नातिसमयं दुह्यात । ननियमंभिन्द्यात् ॥२७॥

सज्जन तथा गुरुओं की निन्दा न करे अपवित्र होकर मारणादिप्रयोग चैत्यपूजा पूज्यों की पूजा तथा अध्ययन न करे असमय में, बिजली कड़कने पर, दिशाओं के अभ्युदित होने पर, अग्नि लगने पर, भूकम्प में, महोत्सव में, बिजली गिरने में, महाग्रहों के संचार में, अमावास्याओं में, दोनों संध्याओंमें, विना गुरुके मुखसे, बहुत धीरे से, बहुत म्लानता से, विना स्वरके पदों को बिगाड़कर, बहुत जल्दी से, बहुत बिलंब से, बहुत क्लीवता से, ऊंचे स्वर से और बहुत नीचे स्वरसे अध्ययन न करे बहुत समय न खोवे नियम को न तोड़े ॥ २७ ॥

न नक्तंनादेशेचरेत ॥ नसन्ध्यास्वभ्यवहाराध्ययनस्त्रीस्वप्नसेवीस्यात् । नबालवृद्धलुब्धमूर्खक्लिष्टक्लीबैःसहसख्यंकुर्य्यात ॥ नमद्यद्यूतवेश्याप्रसङ्गरुचिःस्यात । न गुह्यंविवृणुयात ॥ नकश्चिदवजानीयात । नाहंमानीस्यात् । न दक्षोनादक्षिणोनासूयकोनदक्षिणान्परिवदेत् ॥ नगवांदण्डमुद्यच्छेत् ॥ नवृद्धान्नगुरून्नगणान् न नृपान्वाधिक्षिपेत् नचातिब्रूयात् ॥ नबान्धवानुरक्तकृच्छ्रद्वितीयगुह्यज्ञान्बहिःकुर्य्यात् ॥ २८ ॥

रात्रिमें तथा कुदेश में न चले, दोनों संध्याओं में भोजन, पठन, स्त्रीसंग और शयन न करे, बालक, वृद्ध, लोभी, मूर्ख, दुःखी तथा नपुंसकों के साथ मित्रता न करे, मद्य द्यूत और वेश्याप्रसंग में रुचि न करे, गुप्त बात न कहै, किसी का तिरस्कार न करे, अहंकार न करे, चतुरतारहित प्रतिकूल तथा निन्दक न होय, चतुरोंसे विवाद न करे, गौको डंडे से न मारे, वृद्ध, गुरु, ज्योतिषी तथा राजा पर आक्षेप न करे, बहुत न बोले भाई स्नेही विपत्तिमें सहायक तथा छिपीहुई बातके जानने वालोंको न निकाले ॥ २८ ॥

नाधीरोनात्युच्छ्रितसत्त्वःस्यात् । नाभृतभृत्योनविश्रब्धस्वजनोनैकःसुखी ॥ नदुःखशीलाचारोपचारोनसर्वविश्रम्भी । नसर्वाभिशङ्की ॥ नसर्वकालविचारी ॥ नकार्य्यकालमतिपातयेत् ॥ नापरीक्षितमभिनिविशेत् । नेन्द्रियवशगःस्यात् ॥ २९ ॥

धैर्यरहित तथा उदंड न होय, भृत्यों पोषण करे, अपने जनों का विश्वास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

होवे, अकेले सुख न करे, दुःख देनेवाले स्वभाव आचार तथा उपचारों को त्यागे, सबपर विश्वास न करे, सबपर सन्देह न करे, सदा विचार न करे, कार्य्य के समयको नष्ट न करे, विना परीक्षा कियेहुए स्थान में न रहै, इन्द्रियों के आधीन न होय ॥ २९ ॥

नचञ्चलंमनोभ्रामयेत्। नबुद्धीन्द्रियाणामतिभारमादध्यात् ॥ न चातिदीर्घसूत्रीस्यात् । नक्रोधहर्षावनुविदध्यात् । नशोकमनुवशेत् । नसिद्धावुत्सौक्यंगच्छेन्नासिद्धौदैन्यम् । प्रकृतिमभीक्ष्णं स्मरेत्। हेतुप्रभावनिश्चितःस्यात् ॥ हेत्वारंभनित्यश्च । नकृतमित्याश्वसेत् ॥ नवीर्यंजह्यात् । नापवादमनुस्मरेत् ॥ ३० ॥

चंचल मनकी चंचलता से भ्रम न जावे ज्ञानेन्द्रियों को बहुत क्लेशित न करे, एक कार्य्य में बहुत समय न बितावे, क्रोध हर्ष तथा शोकके वशीभूत न होय, कार्यकी सिद्धिमें उत्सुकता न करे, कार्य्य के सिद्ध न होने में दीन न होय, प्रकृतिका सदा ध्यान रक्खे, हेतुके प्रभावमें निश्चय रक्खे, हेतु और आरंभमें नित्य यत्नकरे, कार्य्य करचुके यह समझकर सावधान न होजाय, वीर्य्य को न खोवे, अपवाद का पश्चात् स्मरण न करे ॥ ३० ॥

नाशुचिरुत्तमाज्याक्षततिलकुशसर्षपैरग्निंजुहुयात् । आत्मानमाशीर्भिराशासानः ॥ अग्निर्मेनापगच्छेच्छरीरात् । वायुर्मेप्राणानादधातु । विष्णुर्मेबलमादधातु । इन्द्रोमेवीर्य्यं शिवामांप्रविशंस्त्वापः ॥ आपोहिष्ठेत्यपःस्पृशेत् ॥ द्विःपरिमृजेदोष्ठौपदौचाभ्युक्ष्यमूर्द्धिखानिचोपस्पृशेत् । अद्भिरात्मानंहृदयंशिरश्च ब्रह्मचर्यज्ञानदानमैत्रीकारुण्यहर्षोपेक्षाप्रशमपरश्चस्यादिति ॥ ३१ ॥

अपवित्र होकर उत्तम घृत अक्षत तिल कुश तथा सर्षपों से अग्निमें हवन न करे, अग्नि मेरे शरीर से न जावे, वायु मेरे प्राणों को पुष्ट करे, विष्णु मुझको बल देवैं, इन्द्र वीर्य देवैं, कल्याणरूपी जल मुझमें प्रवेशकरे इस मन्त्र से अपने को आशीर्वाद देवे; आपोहिष्ठा इत्यादि मन्त्र से आचमन करके दोवार ओष्ठों को शुद्ध करके दोनों पैरों को धोकर शिर तथा नेत्रादि छिद्रोंका जल से स्पर्शकरे और आत्मा हृदय तथा शिरमें जल से स्पर्श करे,ब्रह्मचर्य दान ज्ञान मैत्री करुणा हर्ष तथा कृत्याओं की शान्तिमें तत्परहोवे ॥ ३१ ॥

अत्र श्लोकाः।

पञ्चपंचकमुद्दिष्टंमनोहेतुचतुष्टयम् । इन्द्रियोपक्रमेऽध्यायेसद्वृत्तमखिलेनच ॥ ३२ ॥

इसमें यह श्लोक हैं कि। इस इन्द्रियोपक्रमणीय नाम अध्याय में इन्द्रियादि का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पंचपंचक मन चारों हेतु और सम्पूर्ण सदाचार वर्णन है ॥ ३२ ॥

स्वस्थवृत्तंयथोद्दिष्टं यःसम्यगनुतिष्ठति। ससमाःशतमव्याधिरायुषानवियुज्यते ॥ ३३ ॥

जो मनुष्य कहीहुई विधिके अनुसार सदाचार करते हैं वह सौ वर्ष तक नीरोग होकर जीते हैं ॥ ३३ ॥

नृलोकमापूरयते यशसासाधुसम्मतः। धर्मार्थौचेतिभूतानां बन्धतामुपगच्छति ॥ ३४ ॥

अच्छे लोगों से प्रशंसित होकर सम्पूर्ण संसार को अपने यशसे पूर्ण करते हैं इसीसे वह सब प्राणियोंके बन्धु कहलाते हैं ॥ ३४ ॥

परान्सुकृतिनोलोकान्पुण्यकर्मा प्रपद्यते। तस्माद्वृत्तमनुष्ठेयमिदंसर्वेणसर्वदा ॥ ३५ ॥

और अन्तमें वह पुण्यात्मा मनुष्य पुण्यात्माओं के श्रेष्ठ लोकों में प्राप्त होते हैं इस लिये यह सदाचार सदैव सबको करना चाहिये ॥ ३५ ॥

यच्चान्यदपिकिञ्चित्स्यादनुक्तमिहपूजितम्। वृत्तंतदपिचात्रेयःसदैवाभ्यनुमन्यते ॥ ३६ ॥

इति स्वस्थवृत्तचतुष्कः ॥ अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृतेइन्द्रियोपक्रमणीयोऽष्टमोध्यायः॥८॥

कहेहुए सदाचार के सिवाय और भी जो कुछ उत्तम आचार होय वह भी करना चाहिये यह आत्रेयजी की आज्ञाहै ॥ ३६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंइन्द्रियोपक्रमणीयनाम अष्टम अध्याय समाप्तहुआ ॥८॥

नवां अध्याय ॥

अथातःखुड्डाकचतुष्पादमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

इतिहस्माहभगवानात्रेयः ॥

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगीपादचतुष्टयम्। गुणवत्कारणंज्ञेयं विकारव्युपशान्तये ॥ १ ॥

इसके उपरान्त खुड्डाक चतुष्पादनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

रोगी, औषधि, परिचारक और वैद्य यह चारों गुणवान् होने से रोग की शान्ति के कारण होते हैं ॥ १ ॥

विकारोधातुवैषम्यं साम्यंप्रकृतिरुच्यते। सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारोदुःखमेवच ॥ २ ॥

धातुओं की विषमता को विकार और समता को प्रकृति कहते हैं आरोग्य को सुख और विकार को दुःख कहते हैं ॥ २ ॥

चतुर्णांभिषगादीनां शस्तानांधातुवैकृते। प्रवृत्तिर्धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धातुओं के विकारयुक्त होनेपर श्रेष्ठ वैद्य आदि चारोंकी धातुओं को सम करने के लिये जो चेष्टा है उसको चिकित्सा कहते हैं ॥ ३ ॥

श्रुतेपर्य्यवदातृत्वं बहुशोदृष्टकर्मता । दाक्ष्यंशौचमितिज्ञेयं वैद्येगुणचतुष्टयम् ॥ ४ ॥

शास्त्रज्ञ होना बहुदर्शिता (तजुरबेकारी) क्रियाकुशलता और शौच यह वैद्य के चार गुण हैं ॥ ४ ॥

बहुतातत्रयोग्यत्वमनेकविधकल्पना । सम्पच्चेतिचतुष्कोऽयंद्रव्याणांगुणउच्यते ॥ ५ ॥

बहुताई रोग के योग्य होना अनेक प्रकार की कल्पना और सम्पत्ति यह चार द्रव्य के गुण हैं ॥ ५ ॥

उपचारज्ञता दाक्ष्यमनुरागश्चभर्त्तरि ॥ शौचञ्चेतिचतुष्कोऽयंगुणः परिचरेजने ॥ ६ ॥

सेवा का जानना, चतुरता, स्वामीमें अनुराग और शौच यह चार परिचारक अर्थात् सेवकके गुण हैं ॥ ६ ॥

स्मृतिर्निर्देशकारित्वमभीरुत्वमथापिच । ज्ञापकत्वञ्चरोगाणामातुरस्यगुणाःस्मृताः ॥ ७ ॥

स्मृति, वैद्य की आज्ञा मानना, भीत न होना और रोगका अच्छे प्रकार से बताना यह चार रोगी के गुण हैं ॥ ७ ॥

कारणंषोडशगुणं सिद्धौपादचतुष्टयम् । विज्ञाताशासितायोक्ताप्रधानंभिषगत्रतु ॥ ८ ॥

सोलह गुणों से युक्त वैद्य आदिक चारों रोगकी निवृत्ति में कारण हैं परन्तु इन चारों में ज्ञाता शिक्षक तथा योगों का जाननेवाला वैद्य मुख्य है ॥ ८ ॥

पक्तौहिकारणं पक्तुर्यथापात्रेन्धनानलाः । विजेतुर्विजयेभूमिश्चमूःप्रहरणानिच ॥ ९ ॥

जैसे पाकक्रिया में पात्र ईंधन तथा अग्नि इनके कारण होने परभी पाक करने वाला ही मुख्य है और जैसे विजयमें पृथ्वी सेना तथा शस्त्रोंके कारणहोने पर भी युद्ध करने वाला नियंताही मुख्य है ॥ ९ ॥

आतुराद्यास्तथासिद्धौ पादाःकारणसंज्ञिता । वैद्यस्यातश्चिकित्सायांप्रधानंकारणंभिषक् ॥ १० ॥

उसी प्रकार चिकित्सा में रोगी परिचारक तथा औषधि तो कारणहैंही परन्तु मुख्य कारण वैद्यही है ॥ १० ॥

मृद्दण्डचक्रसूत्राद्याःकुम्भकाराद्दतेयथा । नावहन्तिगुणं वैद्याद्दतेपादत्रयंतथा ॥ ११ ॥

जैसे मृत्तिका दंडचक्र और सूत्रादिक कुंभकारके विना घट नहीं बना सक्ते इसीप्रकार वैद्य के विना रोगी परिचारक और द्रव्य यह तीनों रोग को नहीं दूर करसक्ते ॥ ११ ॥

गन्धर्वपुरवन्नाशं यद्विकाराःसुदारु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णाः। यान्तियच्चेतरेवृद्धिमाशूपायप्रतीक्षिणः॥ १२॥

शीघ्र उपाय करनेवाले के अत्यन्त दुस्साध्यरोग गन्धर्वपुर के समान शीघ्रही नष्टहोकर नीरोगता वृद्धिको प्राप्त होतीहै॥ १२॥

सतिपादत्रयेज्ञाज्ञौ भिषजावत्रकारणम्। वरमात्माहुतोज्ञेन नचिकित्साप्रवर्त्तिता॥ १३॥

द्रव्य, परिचारक और रोगीके होनेपर भी ज्ञाता और अज्ञान वैद्यही कारण है क्योंकि मूर्ख वैद्य की औषधि करने की अपेक्षा विना औषधि किये मरजाना ही उत्तम है॥ १३॥

पाणिचाराद्यथाचक्षुरज्ञानाद्भीतभीतवत्। नौर्मारुतवशेवाज्ञो भिषक्चरतिकर्मसु॥ १४॥

जैसे अन्धा हाथ फैला २ कर डर डर कर चलता है उसी प्रकार वायु के आधीन नौका के समान अज्ञान वैद्य चिकित्सा में प्रवृत्त होता है॥ १४॥

यदृच्छयासमापन्नमुत्तार्य्यनियतायुषम्। भिषग्मानीनिहन्त्याशुशतान्यनियतायुषाम्॥ १५॥

मूर्ख वैद्य भाग्यवशसे किसी आयुष्मान् रोगी को अच्छा करके अभिमान से सैकड़ों भाग्यहत रोगियों को मारताहै॥ १५॥

तस्माच्छास्त्रेऽर्थविज्ञाने प्रवृत्तौकर्मदर्शने। भिषक्चतुष्टयेयुक्तःप्राणाभिसरउच्यते॥ १६॥

इससे शास्त्र अर्थज्ञान वैद्यक करने में प्रवृत्ति और कर्मदर्शन (किसी वैद्यके पास बैठकर चिकित्सा सीखना) इन चारों गुणों से युक्त वैद्य प्राणों का रक्षक कहलाता है॥ १६॥

हेतौलिङ्गेप्रशमने रोगाणामपुनर्भवे। ज्ञानंचतुर्विधंयस्य सराजार्हो भिषक्तमः॥ १७॥

हेतु, लक्षण, रोगों का नाश और रोगोंका फिर न उत्पन्न होना इन चारों बातों का ज्ञान जिस वैद्यको होय उसको श्रेष्ठवैद्य राजा कहते हैं॥ १७॥

शस्त्रंशास्त्राणिसलिलं गुणदोषप्रवृत्तये। पात्रापेक्षीन्यतःप्रज्ञांचिकित्सार्थविशोधयेत्॥ १८॥

शस्त्र, शास्त्र और जल इन में पात्रके अनुसार गुण दोष होते हैं इससे चिकित्सा करने के लिये बुद्धिको शुद्ध करे॥ १८॥

विद्यावितर्कोविज्ञानं स्मृतिस्तत्परताक्रिया। यस्यैतेषड्गुणास्तस्य नसाध्यमतिवर्त्तते॥ १९॥

विद्या, सूझ बूझ, ज्ञान, स्मरणशक्ति, कार्य्य में तत्पर होना और कार्य्य में चतुरता जिसके यह छःगुण होयँ उसको कोई बात असाध्य नहीं है॥ १९॥

विद्यामतिःकर्मदृष्टिरभ्यासःसिद्धिराश्रयः। वैद्यशब्दाभिनिष्पत्तावलमेकैकमप्यदः॥ २०॥

विद्या, बुद्धि, कार्य्यों में दृष्टि रखना, अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भ्यास, सिद्धि तथा आश्रय इन में से एक २ ही गुण से युक्त वैद्य कहा जासक्ताहै ॥२०॥

यस्यत्वेतेगुणाःसर्वेसन्तिविद्यादयः शुभाः । सवैद्यशब्दंसद्भूतमर्हन् प्राणिसुखप्रदः ॥ २१ ॥

जो इन विद्याआदि संपूर्ण शुभगुणों से संयुक्त होय वह पूर्ण वैद्य होकर प्राणियों के सुखका देनेवाला होताहै ॥ २१ ॥

शास्त्रंज्योतिःप्रकाशार्थं दर्शनंबुद्धिरात्मनः । ताभ्यांभिषक्सुयुक्ताभ्या चिकित्सन्नापराध्यति ॥ २२ ॥

तेजोरूप प्रकाश के लिये शास्त्र और अपनी बुद्धि दर्पणरूप है इन दोनों से अच्छे प्रकार चिकित्सा करताहुआ वैद्य दोषभागी नहीं होता ॥ २२ ॥

चिकित्सितेत्रयःपादायस्माद्वैद्यव्यपाश्रयाः । तस्मात्प्रयत्नमातिष्ठेद्भिषक्स्वगुणसम्पदि ॥ २३ ॥

चिकित्सा के तीन पाद (द्रव्य परिचारक तथा रोगी) वैद्य के आश्रित हैं इस लिये वैद्य अपनेको गुणयुक्तकरने में यत्नकरो॥२३॥

मैत्रीकारुण्यमार्त्तेषु शक्येप्रीतिरुपेक्षणम् । प्रकृतिस्थेषुभूतेषुवैद्यवृत्तिश्चतुर्विधेति ॥ २४ ॥

असमर्थ रोगी पर मित्रता तथा दयाकी बुद्धि और समर्थ रोगी पर प्रीति और स्वस्थ मनुष्यों पर उपेक्षा यह चारप्रकारकी वैद्योंकी वृत्तिहै ॥ २४ ॥

तत्रश्लोकौ ॥

भिषग्जितांचतुष्पादंपादःपादश्चतुर्गुणः । भिषक्प्रधानंपादेभ्योयस्माद्वैद्यस्तुयद्गुणः ॥ २५ ॥

तिसमें यह दोश्लोक हैं कि चिकित्सा के चार पाद प्रत्येक पाद के चार २ गुण चारों पादों में वैद्य की प्रधानता और वैद्य के चार गुण ॥ २५ ॥

ज्ञानानिबुद्धिर्ब्राह्मीच भिषजांयाचतुर्विधा । सर्वमेतच्चतुष्पादेखुड्डकेसम्प्रकाशितमिति ॥ २६ ॥

खुड्डाकचतुष्पादाध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥

हेतु आदि के ज्ञान और चार प्रकारकी वैद्यों की ब्राह्मीबुद्धि यह सब विषय इस खुड्डाक चतुष्पाद अध्याय में वर्णन किया गयाहै ॥ २६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंखुड्डाकचतुष्पादनामनवांअध्यायसमाप्तहुआ ९॥

दशवाँ अध्याय ॥

अथातोमहाचतुष्पादमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः ॥

चतुष्पादंषोडशकलंभेषजमितिभिषजोभाषन्ते । यदुक्तंपूर्वाध्यायेषोडशगुणमितितद्भेषजम् । युक्तियुक्तमलमारोग्यायेतिभगवान्पुनर्वसुरात्रेयः ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त महाचतुष्पादनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा ॥

सोलह गुणों से युक्त वैद्य आदि चारोंपादों को वैद्य लोग भेषज कहते हैं जो पहले (नवम) अध्याय में सोलहगुणयुक्त भेषज कहा गयाहै उसका युक्तिपूर्वक प्रयोग होने से रोग नष्ट होते हैं यह भगवान् आत्रेयजीका मत है॥ १॥

नेतिमैत्रेयःकिंकारणंदृश्यन्तेह्यातुराःकेचिदुपकरणवन्तश्चपरिचारकसम्पन्नाश्चात्मवन्तश्चकुशलैश्चभिषग्भिरनुष्ठिताःसमुत्तिष्ठमानास्तथायुक्त्वाश्चापरेम्रियमाणास्तस्माद्भेषजमकिंचित्करंभवति॥ २॥

मैत्रेयजी कहते हैं कि यह नहीं होसक्ता क्योंकि उत्तम द्रव्ययुक्त परिचारकयुक्त विचारवान् और चतुर वैद्यों से चिकित्सा कियेगये कोई २ रोगी आरोग्य होजाते हैं और इसी प्रकार की सामग्रीयुक्त कोई २ रोगी मरभी जाते हैं इससे ज्ञात होताहै कि भेषज कुछ कर नहीं सक्ता॥ २॥

तद्यथा ॥ श्वभ्रेसरसिचप्रसिक्तमल्पमुदकम् ॥ नद्यांस्यन्दमानायांपांशुधानेपांशुमुष्टिप्रकीर्णइति॥ तथापरेदृश्यन्तेअनुपकरणाश्चापरिचारिकाश्चानात्मवन्तश्चाकुशलैश्चभिषग्भिरनुष्ठिताःसमुत्तिष्ठमानाः। तथायुक्ताम्रियमाणाश्चापरेयतश्चप्रतिकुर्वन्सिद्ध्यति प्रतिकुर्वन्म्रियतेअप्रतिकुर्वन्म्रियते ततश्चिन्त्यतेभेषजमभेषजेनाविशिष्टमितिमैत्रेयः॥ ३॥

वह ऐसे हैं जैसे गढ़े तथा सरोवर में थोड़ासा जल छोड़ने से और बहती हुई नदी तथा धूल के ढेरमें मुट्ठी २ भर धूल छोड़ने से कुछ नहीं होता उसी प्रकार भेषज व्यर्थ है इसी प्रकार से और भी देखा जाता है कि सामग्री तथा परिचारकरहित और विचारशून्य कोई २ रोगी मूर्ख वैद्यों सेभी चिकित्सा करवाने पर आरोग्य होजाते हैं और कोई २ इसी प्रकारके रोगी मरजाते हैं औषधि करने से जीते भी हैं और मरते भी हैं और औषधि न करने से जीतेभी हैं और मरते भी हैं इससे मालूम होता है कि औषधि करना और न करना समान हैं॥ ३॥

मिथ्याचिन्त्यतइत्यात्रेयःकिंकारणंयेह्यातुराःषोडशगुणसमुदितेनानेनभेषजेनोपपद्यमानाइत्युक्तंतदनुपपन्नंनहिभेषजसाध्यानांव्याधीनांभेषजमकारणंभवति। येपुनरातुराःकेवलाद्भेषजादृतेसमुत्तिष्ठन्तेनतेषांसम्पूर्णभेषजोपपादानायसमुत्थानविशेषोऽस्तियथाहिपतितंपुरुषंसमर्थमुत्थानायोत्थापयन्पुरुषोबलमस्योपादध्यात्। सक्षिप्रतरमपरिक्लिष्टएवोत्तिष्ठेत्तद्वत्सम्पूर्णभेषजो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पलम्भादातुराः। येचातुराःकेवला द्भेषजादपिम्रियन्तेनचसर्वएवतेभेष जोपपन्नाःसमुत्तिष्ठेरन्ननहिसर्वेव्या धयोभवन्त्युपायसाध्याः ॥ ४ ॥

इस मतको सुनकर आत्रेयजीने कहा कि हे मैत्रेय तुम्हारा विचार ठीक नहीं है क्योंकि जो रोगी सोलहगुणयुक्त भेषज से चिकित्सा किये गये इत्यादि जो कहा सो सिद्ध नहीं होसक्ता क्योंकि औषधि साध्य रोगों में व्यर्थ नहीं होती और जो रोगी औषधि के विनाही आरोग्य होजाते हैं उन के औषधि करके आरोग्य होने में विशेषता है जैसे कि उठने के लिये समर्थ भी गिरेहुए पुरुषको कोई अन्यपुरुष जो उठने के लिये सहारा देवे तो वह विना क्लेशही के शीघ्र उठता है उसी प्रकार सोलह प्रकार के गुणों से युक्त औषधि के द्वारा रोगीभी विना क्लेश के आरोग्य होजाते हैं और जोकि रोगी औषधि करने परभी मरजाते हैं तो यह नियम नहीं है कि औषधि करने से सब आरोग्यही होजाँय क्योंकि संपूर्ण रोग उपायसाध्यनहीं होते ॥ ४ ॥

नचोपायसाध्यानांव्याधीनामनुपा येनसिद्धिरस्तिनचासाध्यानांव्या धीनां भेषजसमुदायोऽस्तिनह्यलं ज्ञानवान् भिषङ्मुमूर्षुमातुरमुत्थाप यितुम् । परीक्ष्यकारिणोहिकुश लाभवन्ति । यथाहियोगज्ञोऽभ्या सनित्यइष्वासोधनुरादायेषुमपास्य न्नातिविप्रकृष्टे महतिकायेनाप बाधोभवति । सम्पादयतिचेष्टका र्य्यम् । तथाभिषक्स्वगुणसम्पन्न उपकरणवान्वीक्ष्यकर्मारम्भमाणः साध्यरोगमनपराधः सम्पादयत्ये वातुरमारोग्येण नतस्मान्नभेषजम भेषजेनाविशिष्टंभवति ॥ ५ ॥

उपाय से साध्यरोग उपाय के विना नहीं शान्त होते और असाध्य रोगों की कोई औषधि भी नहींहै ज्ञानवान् वैद्य भी मरनेवाले रोगी को नहीं आरोग्य करसक्ता है जो परीक्षा करके कार्य्य करते हैं वह कुशल कहलाते हैं जैसे धनुषविद्याका जानने वाला अभ्यासशाली धनुर्धारी धनुष में वाण लगाकर निकटवर्त्ती बड़े लक्षको विना श्रमकेही वेधकर अपने कार्य्य को सिद्ध करता है उसी प्रकार अपने गुणोंसे तथा सामग्री से युक्त और विचार कर कार्य्य करने वाला वैद्य साध्य रोग को निस्सन्देह आरोग्य करताहै इस्से औषधि करना और न करना समान नहीं है ॥ ५ ॥

इदंचेदंचनःप्रत्यक्षंयदनातुरेण भेष जेनातुरंचिकित्सामः । क्षाममक्षा मेनकृशंदुर्बलमाप्याययामः ॥ ६ ॥

यह २ बातें हमलोगों को प्रत्यक्ष हैं दोषरहित भेषज से रोगी की चिकित्सा करते हैं क्षामको अक्षामसे कृश तथा दुर्बल को तृप्त करते हैं ॥ ६ ॥

स्थूलंमेदस्विनमपतर्पयामः । शी तेनोष्णाभिभूतमुपचरामः । शी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताभिभूतमुष्णेनन्यूनान् धातून्पूरयामः। व्यतिरिक्तान्ह्रासयामः। व्याधीन्मूलविपर्ययेणोपचरन्तः सम्यक्प्रकृतौस्थापयामः। तेषांनस्तथाकुर्वतामयंभेषजसमुदायः। कान्ततमोभवति॥ ७॥

मेदावाले स्थूल पुरुष को लंघनकरातेहैं, उष्णता से व्याकुल की शीतसे औषधि करते हैं, शीतसे व्याकुल की उष्णता से औषधि करते हैं, घटीहुई धातुओं को पूर्णकरते हैं, बढ़ीहुई धातुओं को घटाते हैं और रोगों के हेतुओं से विपरीत औषधि देकर रोगियों को स्वस्थ करते हैं इस प्रकार से करने वाले हम लोगों के भेषजों का समुदाय बहुत सुन्दर होता है॥ ७॥

भवंतिचात्र।

साध्यासाध्यविभागज्ञो ज्ञानपूर्वंचिकित्सकः। कालेचारभतेकर्मयत्तत्साधयतिध्रुवम्॥ ८॥

इस में यह श्लोक हैं। साध्य और असाध्यके भेदका जानने वाला वैद्य विचारपूर्व्वक समय पर जिस कार्य्य का आरंभ करता है उसको निस्सन्देह सिद्ध करताहै॥ ८॥

स्वार्थविद्यायशोहानिमुपक्रोशमसंग्रहम्। प्राप्नुयान्नियतंवैद्योयोऽसाध्यंसमुपाचरेत्॥ ९॥

जो वैद्य असाध्य रोगीकी चिकित्सा करताहै वह स्वार्थ, विद्या तथा यशकी हानि निन्दा और असंग्रह (उससे कोई चिकित्सा नहीं करवाता) को प्राप्त होताहै॥ ९॥

सुखसाध्यंमतंसाध्यंकृच्छ्रसाध्यमथापिच। द्विविधञ्चाप्यसाध्यंस्याद्याप्यंयदनुपक्रमम्॥ १०॥

साध्य रोग दो प्रकार के होते हैं एक सुखसाध्य दूसरा कष्टसाध्य और असाध्य रोग भी दो प्रकार के होते हैं याप्य (देखने लायक) तथा अनुपक्रम (जो आराम न हो सके)॥ १०॥

साध्यानां त्रिविधश्चाल्पमध्यमोत्कृष्टतांप्रति। विकल्पोनत्वसाध्यानांनियतानांविकल्पना॥ ११॥

अल्पसाध्य, मध्यसाध्य और उत्कृष्टसाध्य यह तीन भेद साध्य रोगों के हैं परन्तु निश्चित असाध्य रोगों के कोई भेद नहीं हैं॥ ११॥

हेतवःपूर्वरूपाणि रूपाण्यल्पानियस्यच। नचतुल्यगुणोदूष्योनदोषःप्रकृतिर्भवेत्॥ १२॥

जिस रोगके हेतु पूर्व्वरूप तथा लक्षण अल्पहोंय, दूष्य (रसादि) के गुणदोष के तुल्य न होंय, प्रकृति में दोष न होय॥ १२॥

नचकालगुणस्तुल्यो नदोषोदुरुपक्रमः। गतिरेकानवत्वञ्चरोगस्योपद्रवोनच॥ १३॥

काल के गुण तुल्य न होंय, दोष दुस्साध्य न होय, एकही मार्ग से उत्पत्ति होय, रोग नवीन होय, रोगके उपद्रव न होंय॥ १३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोषश्चैकःसमुत्पत्तौ देहःसर्वौषधक्षमः। चतुष्पादोपपत्तिश्चसुखसाध्यस्यलक्षणम् ॥ १४ ॥

उत्पत्ति में दोष एकही होय शरीर संपूर्ण औषधियों के ग्रहण करने की सामर्थ्य रखता होय और चिकित्सा के चारों पाद ठीक होयँ ऐसा रोग सुखसाध्य होताहै ॥ १४ ॥

निमित्तपूर्वरूपाणां रूपाणांमध्यमेबले। कालप्रकृतिदुष्टानांसामान्योऽन्यतमस्यच ॥ १५ ॥

हेतु पूर्व्वरूप तथा रूपका बल मध्यम होय काल प्रकृति तथा दूष्य इनमें से कोई दोष के समान होय ॥ १५ ॥

गर्भिणीवृद्धबालानां नात्युपद्रवपीडितम्। शस्त्रक्षाराग्निकृत्यानामनवंकृच्छ्रदोषजम् ॥ १६ ॥

गर्भिणी, बालक अथवा वृद्धहोय, बहुत उपद्रव न होंय, शस्त्र, क्षार तथा अग्निकर्मकी आवश्यकता होय, रोग प्राचीन होय, कठिन दोष से उत्पन्न हुआ होय ॥ १६ ॥

विद्यादेकपथंरोगंनातिपूर्णचतुष्पदम्। द्विपथंनातिकालंवाकृच्छ्रसाध्यंद्विदोषजम् ॥ १७ ॥

एक मार्ग से उत्पन्न हुआ होय तथा चिकित्साके चारों पाद पूर्ण न होंय अथवा दो मार्ग से उत्पन्न हुआ होय और बहुत पुराना न होय यह दो दोष से उत्पन्न हुए कष्टसाध्य रोग के लक्षण हैं ॥ १७ ॥

शेषत्वादायुषोयाप्यमसाध्यंपथ्यसेवया। लब्ध्वाल्पसुखमल्पेनहेतुनाशप्रवर्त्तकम् ॥ १८ ॥

आयु के बाकी रहनेपर पथ्य सेवन करने से असाध्य रोगभी याप्य होता है थोड़े सुख के प्राप्त होने से थोड़े कारण से शीघ्र बढ़ने वाला ॥ १८ ॥

गम्भीरंबहुधातुस्थं मर्म्मसन्धिसमाश्रितम्। नित्यानुशायिनंरोगंदीर्घकालमवस्थितम् ॥ १९ ॥

गम्भीर, बहुत धातुओं में स्थित,मर्म तथा संधियों में स्थित, नित्यतापयुक्त, बहुत पुराना ॥ १९ ॥

विद्याद्द्विदोषजंतद्वत् प्रत्याख्येयंत्रिदोषजम्। क्रियापथमतिक्रांतं सर्वमार्गानुसारिणम् ॥ २० ॥

उसको द्विदोषज समझकर तिसी प्रकार त्रिदोषज रोग चिकित्सा करने के अयोग्य हैं और क्रियाके अयोग्य व सब मार्गों से उत्पन्न हुआ ॥ २० ॥

औत्सुक्यारतिसंमोहकरमिन्द्रियनाशनम्। दुर्बलस्यसुसंवृद्धंव्याधिंसारिष्टमेवच ॥ २१ ॥

उत्सुकता, बेचैनी तथा मोह करनेवाला, इन्द्रियनाशक, दुर्बलतायुक्त, बढ़ा हुआ और अरिष्ट लक्षणों से युक्त भी रोग असाध्य होता है ॥ २१ ॥

भिषजाप्राक्परीक्ष्यैवं विकाराणांसुलक्षणम्। पश्चात्कार्य्यसमारम्भः कार्य्यःसाध्येषुधीमता ॥ २२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमान् वैद्य पहले रोगों के लक्षणों की परीक्षा करके पीछे से साध्य रोगों की चिकित्सा करे ॥ २२ ॥

साध्यासाध्यविभागज्ञोयःसम्यक्प्रतिपत्तिमान्। नसमैत्रेयतुल्यानां मिथ्याबुद्धिंप्रकल्पयेदिति ॥२३॥

जो वैद्य साध्य तथा असाध्य के विभाग का जाननेवाला और ज्ञानवान् होय वह मैत्रेयके समान मिथ्याबुद्धि की कल्पना न करे ॥ २३ ॥

तत्रश्लोकौ।

इहौषधंपादगुणाः प्रभावोभेषजाश्रयः। आत्रेयमैत्रेयमतीमतिद्वैविध्यनिश्चयः ॥ २४ ॥

उसमें दो श्लोक हैं। औषध, पादों के गुण, भेषज का प्रभाव, आत्रेय तथा मैत्रेय का मत, दोनों मतों का निश्चय ॥ २४ ॥

चतुर्विधविकल्पाश्च व्याधयःस्वस्वलक्षणाः। उक्तामहाचतुष्पादेयेष्वायत्तंभिषग्जितमिति ॥ २५ ॥

अग्नीत्यादि ॥ महाचतुष्पदाध्यायः दशमः समाप्तः ॥ १० ॥

अपने २ लक्षणोंसमेत रोगों की चारप्रकार की कल्पना (जिनके आधीन वैद्यों का जय है) यह सब इस महाचतुष्पादनाम अध्याय में कहागया है ॥ २५ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें महाचतुष्पादनामदशवां अध्याय समाप्तहुआ ॥ १० ॥

ग्यारहवां अध्याय।

अथातस्तिस्रैषणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

इहखलु पुरुषेणानुपहतसत्त्वबुद्धिपौरुषपराक्रमेणहितमिहचामुष्मिंश्लोकेसमनुपश्यतातिस्रएषणाः पर्य्येष्टव्याभवन्ति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त तिस्रैषणीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

इस संसार में नहीं हतहुए हैं मन बुद्धि पुरुषार्थ तथा पराक्रम जिसके उनको इसलोक तथा परलोक में हित चाहने की इच्छासे तीन एषणाओंका उद्योग करना चाहिये ॥ १ ॥

तद्यथा। प्राणैषणाधनैषणापरलोकैषणेतिआसान्तुखल्वेषणानां प्राणैषणां तावत् पूर्वतरमापद्येत कस्मात् प्राणपरित्यागेहि सर्वत्यागः। तस्यानुपालनंस्वस्थस्यस्वस्थवृत्तिरातुरस्य विकारप्रशमनेऽप्रमादस्तदुभयमेतदुक्तंवक्ष्यतेच। तद्यथोक्तमनुवर्त्तमानः प्राणानुपालनादीर्घमायुरवाप्नोतीति ॥ प्रथमैषणाव्याख्याताभवति ॥ २ ॥

वह यह हैं। प्राणैषणा, धनैषणा और परलोकैषणा इन एषणाओं में से पहले प्राणैषणा का उद्योग करना चाहिये क्योंकि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणों के त्याग से सबका त्याग होजाता है प्राणोंकी रक्षा यह है स्वस्थ होने पर स्वस्थों के आचरण और रोग होने पर विकार की शान्ति करने में सावधानता यह दोनों बातें कही गई और आगे भी कही जावेंगी इनके अनुसार आचरण करने से प्राणों की रक्षा होती है इससे मनुष्य दीर्घायु होता है इस प्रकार पहली एषणा कही गई ॥ २ ॥

अथद्वितीयांधनैषणामापद्यते। प्राणेभ्योह्यनन्तरंधनमेवपर्य्येष्टव्यंभवति। नह्यतःपापात्पापीयोऽस्ति यदनुपकरणस्यदीर्घमायुःतस्मादुपकरणानिपर्य्येष्टुंयतेतत्रोपकरणोपायाननुव्याख्यास्यामः॥ ३ ॥

प्राणैषणा के उपरान्त धनैषणा का उद्योग करना चाहिये क्योंकि प्राणों के अनन्तर धन काही उद्योग किया जाता है साधनरहित हो के दीर्घायु होने से बढ़कर कोई पातक नहीं इससे जीविका ढूंढ़ने का यत्न करना चाहिये, धनोपार्जनके उपायों को आगे कहते हैं॥ ३ ॥

तद्यथा। कृषिपाशुपाल्यवाणिज्यराजोपसेवादीनि। यानिचान्यान्यपिसतामविगर्हितानिकर्म्माणिवृत्तिपुष्टिकराणिविद्यात्तान्यारभेतकर्त्तुम्। तथाकुर्वन्दीर्घजीवितमनुवसतःपुरुषोभवतीति॥ द्वितीयाधनैषणाव्याख्याताभवति॥ ४ ॥

जैसे खेती पशुपालन, व्यापार और राजसेवा आदि इनको छोड़के और भी सज्जनों से नहीं निन्दा किये गये जीविका को पुष्ट करने वाले कार्य्यों को करे ऐसा करने से दीर्घायु होकर सुखपूर्व्वक जीता है इस प्रकार दूसरी धनैषणा कही गई॥ ४ ॥

अथतृतीयांपरलोकैषणामापद्येतसंशयश्चात्रकथं भविष्यामइतश्च्युतानवेतिकुतःपुनःसंशयइतिउच्यते सन्तिह्येकेप्रत्यक्षपराःपरोक्षत्वात्पुनर्भवस्य नास्तिक्यमाश्रिताः सन्तिचागमप्रत्ययादेवपुनर्भवमिच्छन्ति श्रुतिभेदाच्च। मातरंपितरञ्चैकेमन्यन्तेजन्मकारणम्स्वभावंपरनिर्माणंयदृच्छाञ्चापरेजनाइत्यतःसंशयः। किंनुखल्वस्तिपुनर्भवोनवेति॥ तत्रबुद्धिमान्नास्तिक्यबुद्धिंजह्यात् विचिकित्साञ्च। कस्मात् प्रत्यक्षं ह्यल्पमनल्पमप्रत्यक्षमस्तियदागमानुमानयुक्तिभिरुपलभ्यते॥ यैरेवतावदिन्द्रियैःप्रत्यक्षमुपलभ्यते तान्येवसन्तिचाप्रत्यक्षाणि॥ ५ ॥

धनैषणा के उपरान्त परलोकैषणा का उद्योगकरे परन्तु परलोकैषणा में सन्देह होताहै कि मरने के उपरान्त भी हम रहैंगे या न रहैंगे यह सन्देह क्यों होता है सो कहा जाता है जैसे कि कोई प्रत्यक्षवादी पुनर्जन्म के प्रत्यक्ष न होने से नास्तिकता का आश्रय करते हैं (पुनर्जन्म नहीं मानते) कोई शास्त्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर विश्वास से और श्रुति के सम्मत से पुनर्जन्म को मानते हैं कोई माता पिताको जन्म का कारण मानते हैं कोई स्वभाव को जन्म का कारण मानते हैं कोई कोई परनिर्माण को कारण मानते हैं और कोई यदृच्छा (इत्तिफ़ाक़) को कारण मानते हैं इसी से सन्देह होता है कि पुनर्जन्म है या नहीं बुद्धिमान् पुरुष को चाहिये कि नास्तिकता की बुद्धि तथा सन्देह को छोड़े क्योंकि परोक्षकी अपेक्षा प्रत्यक्ष थोड़ा है जो शास्त्र अनुमान तथा युक्तियों के द्वारा जाना जाताहै जिन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष होता है वही अप्रत्यक्ष हैं ॥ ५ ॥

सताञ्चरूपाणामतिसन्निकर्षादतिविप्रकर्षादावरणात् करणदौर्बल्यान्मनोऽनवस्थानात्समानाभिहारादभिभावादतिसौक्ष्म्याच्चप्रत्यक्षानुपलब्धिः ॥ तस्मादपरीक्षितमेतदुच्यतेप्रत्यक्षमेवास्तिनान्यदस्तीतिश्रुतयश्चैतानकारणंयुक्तिविरोधात् ॥ ६ ॥

रूपवान् वस्तुओं काभी वहुत निकट होने से वहुत दूर होने से व्यवधान से इन्द्रियों की दुर्बलता से मनकी असावधानता से तुल्य वस्तु में मिलजाने से (नदी में जलकण मिलने के तुल्य) अभिभव से (इन्द्रियों के क्षोभ से चिमगादड़ आदि को सूर्य्य का न दिखाई देना आदि) तथा अति सूक्ष्मता से प्रत्यक्ष नहीं होना इसलिये प्रत्यक्षही है अप्रत्यक्ष नहीं है यह कहना ठीक नहीं है और युक्तिसे भी विरुद्ध है ॥ ६ ॥

आत्मामातुःपितुर्वायः सोपत्यंयदिसञ्चरेत् । द्विविधंसंचरेदात्मासर्वोवावयवेनवा ॥ ७ ॥

जो माता अथवा पिता का आत्मा सन्तानरूप से उत्पन्न होय तब यह पूछते हैं कि संपूर्ण आत्मा उत्पन्न होता है या उसका कोई भाग उत्पन्न होता है ॥ ७ ॥

सर्वश्चेत्संचरेन्मातुः पितुर्वामरणंभवेत् । निरन्तरंनावयवःकश्चित्सूक्ष्मस्यचात्मनः ॥ ८ ॥

यदि सम्पूर्ण आत्मा उत्पन्न होय तो सन्तान उत्पन्न होने के उपरान्त माता अथवा पिता की मृत्यु होजानी चाहिये यदि आत्मा का कोई भागही उत्पन्न होता है तो सूक्ष्म आत्माका भाग नहीं होसक्ता ॥ ८ ॥

बुद्धिर्मनश्चनिर्णीते यथैवात्मातथैवते । येषाञ्चैषामतिस्तेषां योनिर्नास्तिचतुर्विधा ॥ ९ ॥

और यदि बुद्धि तथा मन सन्तानरूप से उत्पन्न होता है तो यह भी नहीं होसक्ता क्योंकि यह भी आत्माहीके तुल्य सूक्ष्म तथा भागरहित हैं और जिनका यह मत है कि माता पिताही सन्तानमें कारण हैं उनके मत में अंडज स्वेदज जरायुज और उद्भिज यह चारों योनि नहीं होसक्तीं क्योंकि इन चारों की उत्पत्ति माता पितासे नहीं होती ॥ ९ ॥

विद्यात्स्वाभाविकंषरणां धातूनांयत्स्वलक्षणम् । संयोगेचवियोगेचतेषांकर्मैवकारणम् ॥ १० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वी जल तेज वायु आकाश और आत्मा यह छः धातु संयोग और विभाग के अनुसार सब प्राणियों की उत्पत्ति की कारण हैं क्योंकि इन्हींके स्वाभाविक लक्षण सब में पाये जाते हैं ॥ १० ॥

अनादेश्चेतनाधातोर्नेष्यतेपरनिर्मितिः । परआत्मासचेद्धेतुरिष्टोऽस्तु परिनिर्मितिः ॥ ११ ॥

अनादि चेतना धातु आत्मा पर अर्थात् किसी अन्यके द्वारा बनाईहुई नहीं होसक्ती और जो आत्माको ही पर मानते हो और वही कारणहै तो पर निर्माण मानने में कोई हानि नहीं है ॥ ११ ॥

नपरीक्षानपरीक्ष्यं नकर्त्ताकारणंन च । नदेवानर्षयःसिद्धाःकर्म्मकर्म्मफलंनच ॥ १२ ॥

जिनके मतमें परीक्षा, परीक्षणीयकर्त्ता, कारण, देवता, ऋषि, सिद्ध, कर्म, कर्मका फल नहीं है ॥ १२ ॥

नास्तिकस्यास्तिनैवात्मायदृच्छोपहतात्मनः । पातकेभ्यःपरञ्चैत न्.।तर्कंनास्तिकग्रहः ॥ १३ ॥

और यदृच्छा के मानने से नष्ट बुद्धि वाले जो आत्माको नहीं मानते हैं वह नास्तिक सब पापियों से बढ़कर पापी हैं ॥ १३ ॥

तस्मान्मतिं विमुच्यैताममार्गप्रसृतांबुधः । सतांबुद्धिप्रदीपेनपश्येत्सर्वंयथातथमिति ॥ १४ ॥

इसलिये कुमार्ग में जानेवाली बुद्धि को छोड़कर सज्जनों के बुद्धिरूपी दीपकसे सब बातें ठीक २ देखे ॥ १४ ॥

द्विविधमेवखलुसर्वंसच्चासच्चतस्यचतुर्विधापरीक्षा । आप्तोपदेशःप्रत्यक्षमनुमानंयुक्तिश्चेति ॥ १५ ॥

सब पदार्थ दो प्रकार के होते हैं एक सत् और दूसरा असत् इनकी परीक्षा आप्तोपदेश प्रत्यक्ष अनुमान और युक्ति इन चारप्रकारोंसे होती है ॥ १५ ॥

आप्तास्तावत् ।

रजस्तमोभ्यांनिर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेनये । येषांत्रिकालममलंज्ञानमव्याहतंसदा ॥ १६ ॥

पहले आप्तकहते हैं। तप तथा ज्ञानके बल से रजोगुण तथा तमोगुण से रहित भूत भविष्य और वर्त्तमान इनतीनों कालोंके अच्छे प्रकार जानने वाले नाशरहित हैं ॥ १६ ॥

आप्ताःशिष्टविबुद्धास्तेतेषांवाक्यमसंशयम् । सत्यंवक्ष्यन्तितेकस्मादसत्यंनीरजस्तमाः ॥ १७ ॥

वह शिष्ट तथा विबुद्ध आप्त कहलाते हैं इनके वाक्य निस्सन्देह सत्य होते हैं क्योंकि यह लोग रजोगुण तथा तमोगुण से रहित होते हैं इसलिये मिथ्या नहीं बोलते ॥ १७ ॥

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्त्तते । व्यक्तातदात्वेयाबुद्धिः प्रत्यक्षंसानिरुच्यते ॥ १८ ॥

आत्मा, इन्द्रिय, मन और विषय इन चारों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्पन्न के संबन्धहोने से उस समय जो बुद्धि... होती है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं ॥ ...लिंचानुमी

प्रत्यक्षपूर्वंत्रिविधंत्रि...धूमेनमैथुनंगर्भद यते। वह्निर्निगू...६ ॥

...शनात् ॥... द्वारा भूत भविष्य तथा वर्त्तमान ...त्यानों कालों का तीन प्रकार का अनुमान ...न्होताहै जैसे छिपीहुई अग्नि का धूमके द्वारा वर्त्तमानकालिक अनुमान होताहै गर्भ के होने से मैथुनका ॥ १९ ॥

एवंव्यवस्यन्त्यतीतं बीजात्फलम नागतम्। दृष्ट्वाबीजात्फलंजात मिहैवसदृशंबुधाः ॥ २० ॥

भूतकालिक अनुमान होता है और बीजसे फलका भविष्यत्कालिक अनुमान होता है पंडित लोग बीजसे उत्पन्न हुए फलको देख कर इसी में उपमान काभी अन्तर्भाव कर-ते हैं ॥ २० ॥

जलकर्षणबीजर्त्तुसंयोगात्सस्यसं भवः। युक्तिःषड्धातुसंयोगाद्गर्भा णांसम्भवस्तथा ॥ २१ ॥

जल, जोतना, बीज तथा ऋतु इन के सं-योगसे जैसे अन्न उत्पन्न होताहै उसी प्रकार छःधातुओं के योगसे गर्भ उत्पन्न होताहै यह युक्ति कहलाती है ॥ २१ ॥

मध्यमन्थनमन्थानसंयोगादग्निस म्भवः। युक्तियुक्ताचतुष्पादसम्प द्व्याधिनिवर्हणी ॥ २२ ॥

जैसे मथ्य मन्थन तथा मन्थानके संयोगसे अग्नि उत्पन्न होती है इसी प्रकार युक्तिपूर्व-क चिकित्सा चारों पादों के होने से रोगको नाश करती है ॥ २२ ॥

बुद्धिःपश्यतियाभावान् बहुकारण योगजान्। युक्तिस्त्रिकालासाज्ञेया त्रिवर्गःसाध्यतेयया ॥ २३ ॥

जो बुद्धि बहुत कारणों के योगसे उत्पन्न हुए पदार्थों को जानती है और जिस्से त्रिवर्ग सिद्ध होता है उसे त्रिकालायुक्ति कह-ते हैं ॥ २३ ॥

एषापरीक्षानास्त्यन्या ययासर्वंपरी क्ष्यते। परीक्ष्यंसदसच्चैवंतयाचा स्तिपुनर्भवः ॥ २४ ॥

यही परीक्षा है इस के सिवाय और कोई परीक्षा नहीं है इसी से सब पदार्थों की परीक्षा की जाती है इसी से सत् तथा असत्की परी-क्षा करनी चाहिये और इसी से पुनर्जन्म सिद्ध होताहै ॥ २४ ॥

तत्राप्तागमस्तावद्वेदोयश्चान्योऽपि कश्चिद्वेदार्थादविपरीतःपरीक्षकैःप्र णीतः। शिष्टानुमतोलोकानुग्रह प्रवृत्तःशास्त्रवादः सचाप्तागमःआ प्तागमादुपलभ्यते। दानतपोयज्ञ सत्याहिंसाब्रह्मचर्य्याण्यभ्युदयनिः श्रेयसकराणीतिनचानतिवृत्तसत्व दोषाणामदोषैरपुनर्भवोधर्म्यद्वारेषू पदिश्यते ॥ २५ ॥

तिसमें वेद और वेदार्थ के अनुकूल परी-क्षकों से बनाये गये शिष्टोंके संमत तथा लो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोपकारी शास्त्रको आप्तागम कहते हैं आप्तागम से जाना जाता है कि दान तप यज्ञ सत्य अहिंसा तथा ब्रह्मचर्य्य यह सब अभ्युदय तथा मोक्षके कारण हैं आप्तोंने कहा है कि मनकी शुद्धिरहित मनुष्यों को दान आदि धर्म करने से भी मुक्ति नहीं प्राप्त होती है ॥ २५ ॥

धर्मद्वारावहितैश्चव्यपगतभयरागद्वेषलोभमोहमानैर्ब्रह्मपरैराप्तैः कर्मविद्भिरनुपहतसत्त्वबुद्धिप्रचारैःपूर्वैःपूर्वतरैर्महर्षिभिर्दिव्यचक्षुर्भिर्दृष्ट्वोपदिष्टपुनर्भवइतिव्यवस्येदेवंप्रत्यक्षमपिचोपलभ्यते ॥ २६ ॥

धर्मात्मा भय राग द्वेष लोभ मोह तथा मानरहित ब्रह्ममें तत्पर कर्म के जाननेवाले बुद्धिमान् शुद्धमन वाले बहुत प्राचीन दिव्य दृष्टिवाले और आप्त महर्षियों ने विचार के पुनर्जन्म को माना है यह जानना चाहिये इसी प्रकार प्रत्यक्ष से भी पुनर्जन्म पाया जाता है ॥ २६ ॥

मातापित्रोर्विसदृशान्यपत्यानितुल्यसम्भवानांवर्णस्वराकृतिसत्त्वबुद्धिभाग्यविशेषाः । प्रवरावरकुलजन्मदास्यैश्वर्य्यसुखासुखमायुः । आयुषोवैषम्यमिहकृतस्यावाप्तिरशिक्षितानांचरुदितस्तनपानहासत्रासादीनाञ्चप्रवृत्तिलक्षणोत्पत्तिःकर्मसासान्येफलविशेषोमेधाक्वचित्क्वचित्कर्मण्यमेधाजातिस्मरणमिहागमनमितश्च्युतानाञ्चभूतानांसमदर्शनेप्रियाप्रियत्वम्अतएवानुमीयते । यत्स्वकृतमपरिहार्य्यमविनाशिपौर्वदेहिकं देवसंज्ञकमानुबन्धिकंकर्म्म तस्यैतत्फलमितश्चान्यद्भविष्यतीतिफलाद्बीजमनुमीयते । फलंचबीजात् ॥ २७ ॥

कि सन्तान माता पिता के तुल्य नहीं होती यदि तुल्यभी होती है तो वर्ण स्वर आकृति मन बुद्धि तथा भाग्य में भेद होता है किसी का उत्तम कुल में जन्म और किसी का निकृष्ट कुल में जन्म होताहै कोई दास होता है कोई ऐश्वर्य्य भोग करता है किसी का जीवन सुख से व्यतीत होता है और किसी का दुःखसे किसी की अधिक आयुहोती है और किसीकी न्यून होती है इस जन्म में नहीं किये हुये कर्म फलकी प्राप्ति विना सीखे रोदन, स्तनपान, हास्य तथा भय आदिमें प्रवृत्ति समान कर्मकरने पर भी फलका भेद, कोई बुद्धिमान् कोई कर्मण्य (काममेंचालाक होना) कोई निर्बुद्धि किसी को जातिस्मरण होना और समान वस्तु के देखने पर भी किसी को प्रिय मालूम होना किसीको अप्रिय इन सब बातों से अनुमान किया जाता है कि पूर्वजन्ममें अपना किया हुआ दैवनाम आनुबन्धिक (सिलसिलेवार चलेजाने वाला) कर्म अपरिहार्य्य (बेरोक) तथा अविनाशी होताहै उसी कर्म का यह फल है और इस जन्म के कर्म का फल आगामीजन्ममें होगा जैसे फल से बीजका और बीजसे फल का अनुमान कि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या जाताहै इसी प्रकार पुनर्जन्मका भी अ-नुमान किया जाता है ॥ २७ ॥

युक्तिश्चैषाषड्धातुसमुदयाद्गर्भजन्मकर्तृकरणसंयोगात्क्रियाकृतस्य कर्मणःफलंनाकृतस्यनांकुरोत्पत्तिरबीजात्। कर्मसदृशंफलंनान्यस्माद्बीजादन्यस्योत्पत्तिरितियुक्तिः ॥ २८ ॥

छः धातुओंके समुदायसे गर्भ उत्पन्न होता है और आत्मा का सम्बन्ध परलोकही से रहता है कर्त्ता और करण के संयोग से क्रिया होती है करेहुए कर्म काही फल होता है विना कियेका नहीं होता जैसे कि विना बीजके अंकुर नहीं उत्पन्न होता कर्मके तुल्यही फल होताहै क्योंकि अन्य बीजसे अन्य फल की उत्पत्ति नहीं होती यह युक्तिहै ॥ २८ ॥

एवंप्रमाणैश्चतुर्भिरुपदिष्टेःपुनर्भवो धर्म्मद्वारेष्वनुविधीयते ॥ २९ ॥

इस प्रकार चारों प्रमाणों से पुनर्जन्म के सिद्ध होजानेपर आगे कहेहुए धर्मद्वारों का वर्णन करते हैं ॥ २९ ॥

तद्यथागुरुशुश्रूषायामध्ययनेव्रतचर्य्यायांदारक्रियायामपत्योत्पादने भृत्यभरणेऽतिथिपूजायांदानेनाभिध्यायांतपस्यनसूयायांदेहवाङ्मनसेकर्म्मण्यक्लिष्टेदेहेन्द्रियमनोऽर्थबुद्ध्यात्मपरीक्षायां मनः समाधाविति । यानिचान्यान्यप्येवंविधानिकर्म्माणिसतामविगर्हितानिस्वर्ग्याणि वृत्तिपुष्टिकराणिविद्यात्तान्यारभेतकर्त्तुम् । तथाकुर्वन्निहचयशोलभतेप्रेत्यचस्वर्गमिति । तृतीयापरलोकैषणाव्याख्याताभवति ॥ ३० ॥

जैसे गुरुसेवा, अध्ययन, व्रत, विवाह, पुत्र उत्पन्न करना, सेवकों का पालन, अतिथि-पूजा, दान, पराये धनमें इच्छा न करना, तप, गुणों में दोष न लगाना, कायिक, मानसिक तथा वाचिक सत्कर्म्म में क्लेशित न होना और समाधि इस प्रकार के अन्यभी सत्कर्म जो स्वर्गमें हितकारी, सज्जनों से नहीं निन्दा किये गये, आजीविका को पुष्ट करने वाले ज्ञान होंय उनको भी करै ऐसा करने से इस लोक में यश होता है और मरकर स्वर्ग मिलता है यह तीसरी परलोकैषणा कही गई ॥ ३० ॥

अथखलुत्रयउपस्तम्भाः। त्रिविधबलम् ॥

त्रीण्यायतनानि। त्रयोरोगाः। त्रयोरोगमार्गाः त्रिविधाभिषजः त्रिविधमौषधमिति ॥ ३१ ॥

इसके उपरान्त शरीर के उपस्तंभ (सहारे) बल, रोग के कारण, रोग, रोगोंके मार्ग वैद्य और औषध यह सब तीन २ प्रकार के हैं ॥ ३१ ॥

त्रयउपस्तम्भाइत्याहारःस्वप्नोब्रह्मचर्य्यमितिएभिस्त्रिभिर्युक्तियुक्तैरुपस्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्धमुपस्तम्भैःशरीरंबलवर्णोपचयो पचितमनुवर्त्तते । यावदायुषःसं स्कारात् ॥ ३२ ॥

आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य यह तीन उपस्तंभ हैं इन तीनों उपस्तंभों से युक्तिपूर्व्वक धारण किया हुआ शरीर मरणपर्य्यन्त बल वर्ण तथा पुष्टता से युक्त रहता है॥ ३२ ॥

संस्कारमहितमनुपसेवमानस्ययइ हैवोपदेक्ष्यते । त्रिविधंबलमिति सहजंकालजंयुक्तिकृतञ्चसहजंयच्छ रीरसत्त्ववयाःप्राकृतम्। कालकृतमृ तुविभागजंवयःकृतञ्च। युक्तिकृतंपु नस्तदाहारचेष्टायोगजम्॥ ३३ ॥

इनका अच्छे प्रकार व्यवहार न करने से शरीर का अहित होता है यह यहांही आगे कहा जायगा स्वाभाविक, कालकृत और युक्तिकृत यह तीन प्रकारके बल हैं शरीर तथा मनके प्रकृति से भये बल को स्वाभाविक कहते हैं ऋतुओं के भेदसे तथा अवस्थाके भेद से हुए बलको कालकृत् कहते हैं और आहार तथा चेष्टा के योग से हुए बलको युक्तिकृत् कहते हैं॥ ३३ ॥

त्रीण्यायतनानीतिअर्थानांकर्म्मणः कालस्य चातियोगायोगामिथ्यो गाः । तत्रातिप्रभावतांदृश्याना मतिमात्रंदर्शनमतियोगः सर्वशोऽ दर्शनमयोगः । अतिसूक्ष्माति विप्रकृष्टरौद्रभैरवाद्भुतद्विष्टबीभत्सवि कृतादिरूपदर्शनंमिथ्यायोगः ३४॥

अर्थ (शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध) कर्म तथा काल के अतियोग अयोग और मिथ्यायोग यह तीन रोगोंके कारण हैं बहुत तेजवाले दृश्यों को बहुत देखने से रूपका अतियोग सर्वथा न देखने को अयोग और बहुत सूक्ष्म और बहुत मिलेहुए बहुत दूर, उग्र,भयंकर, अद्भुत, अप्रिय, घिनोने तथा विकारयुक्त रूपोंके देखने को रूप का मिथ्यायोग कहते हैं॥ ३४ ॥

तथातिमात्रस्तनितोपहतक्कुष्टादी नांशब्दानामतिमात्रश्रवणमतियो गः। सर्वशोऽश्रवणमयोगः। परुषे ष्टविनाशोपघातप्रधर्षणभीषणादि शब्दश्रवणंमिथ्यायोगः॥ ३५ ॥

इसी भांति बिजली के बहुत कड़कने को तथा नगाड़े आदिकी ध्वनि के बहुत सुनने को शब्दका अतियोग, सर्वथा न सुनने को अयोग और कठोर, प्रियनाश, उपघात तथा प्रधर्षण, भयानक आदि शब्दों के सुनने को शब्द का मिथ्यायोग कहते हैं॥ ३५ ॥

तथातितीक्ष्णोग्राभिष्यन्दिनांग न्धानामतिमात्रं घ्राणमतियोगः। सर्वशोऽघ्राणमयोगः। पूतिद्विष्टा मेध्यक्लिन्नविषपवनकुणपगन्धादि घ्राणंमिथ्यायोगः॥ ३६ ॥

इसीप्रकार अत्यन्त तीक्ष्ण, उग्र तथा अभिष्यन्दी गन्धों के बहुत सूंघने को गन्धका अतियोग सर्वथा न सूंघने को अयोग और सड़ीहुई अप्रिय अपवित्र विषयुक्त वायु तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुर्दे आदिकी गन्धके सूंघने को गन्ध का मिथ्यायोग कहते हैं ॥ ३६ ॥

तथारसानामत्यादानमतियोगः । अनादानमयोगः । मिथ्यायोगो राशिवर्ज्येष्वाहारविधिविशेषायतनेषूपादिक्ष्यते ॥ ३७ ॥

इसी तरह रसोंके बहुत ग्रहण करने को रसका अतियोग तथा सर्वथा न ग्रहण करने को अयोग कहते हैं और राशिवर्ज्य आहारविधिके विशेष स्थानों में रसके मिथ्यायोग का उपदेश किया जायगा ॥ ३७ ॥

तथातिशीतोष्णानांस्पृश्यानांस्नानाभ्यङ्गोत्सादनादीनाञ्चात्युपसेवनमतियोगः । सर्वशोऽनुपसेवनमयोगः । विषमस्नानाभिघाताशुचिभूतसंस्पर्शादयश्चेतिमिथ्यायोगः ॥ ३८ ॥

तैसेही अधिक शीतल तथा उष्णआदि स्पर्श से पदार्थों के और स्नान अभ्यंग तथा उबटन आदि के अधिक सेवनको स्पर्श का अतियोग सर्वथा सेवन न करने को अयोग और विषम स्थान चोट तथा अपवित्र प्राणियों के स्पर्श आदिको स्पर्श का मिथ्यायोग कहते हैं ॥ ३८ ॥

तत्रैकं स्पर्शनेन्द्रियमिंद्रियाणामिन्द्रियव्यापकंततःसमवायिस्पर्शनव्यासेर्व्यापकमपिच चेतस्तस्मात्सर्वेन्द्रियाणां व्यापकःस्पर्शकृतोयोभावविशेषःसोऽयमनुपशयात्पञ्चविधस्त्रिविधविकल्पोभवत्यसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः । सात्म्यार्थोह्युपशयार्थः ॥ ३९ ॥

इन इन्द्रियोंमें से त्वगिन्द्रिय सम्पूर्ण इन्द्रियोंमें व्यापक तथा मनके साथ नित्य संयोग रखनेवाली है और मनही इस के संपूर्ण इन्द्रियों में व्यापक होने का कारण है इससे सम्पूर्ण इन्द्रियों का व्यापक व स्पर्श का जो भावविशेष वह असात्म्य इन्द्रियार्थ संयोग से पांच प्रकार का होकर प्रत्येक तीन २ प्रकार का विकल्प होताहै सात्म्य और उपशय यह दोनों एकार्थवाचक शब्द हैं ॥ ३९ ॥

कर्म्मवाङ्मनःशरीरप्रवृत्तिः । तत्र वाङ्मनःशरीरातिप्रवृत्तिरतियोगः सर्वशोऽप्रवृत्तिरयोगः ॥ ४० ॥

वाणी मन तथा शरीर की प्रवृत्ति को कर्म कहते हैं तिसमें वाणी मन तथा शरीर की अधिक प्रवृत्ति को अतियोग और सर्वथा प्रवृत्ति न होने को अयोग कहते हैं ॥ ४० ॥

सूचकानृताकालकलहाप्रियाबद्धानुपचारपरुषवचनादिर्वाङ्मिथ्यायोगः ॥ ४१ ॥

चुगलखोरी, झूंठ, विना समय के बोलना, कलह और अप्रिय अनर्थक अयोग्य तथा कठोर वाक्य आदि वाणी के मिथ्यायोग हैं ॥ ४१ ॥

भयशोकक्रोधलोभमोहमानेर्ष्यामिथ्यादर्शनादिर्मानसोमिथ्यायोगः ॥ ४२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भय, शोक, क्रोध, लोभ, मोह, मान, ईर्ष्या तथा मिथ्यादर्शन आदि मनके मिथ्या योग हैं ॥ ४२ ॥

वेगधारणोदीरणविषमस्खलनपतनाङ्गप्रणिधानाङ्गप्रदूषणप्रहारमर्दनप्राणोपरोधसंक्लेशनादिःशारीरोमिथ्यायोगः ॥ ४३ ॥

मल मूत्रादि वेगों का रोकना तथा उदीरण (जबर्दस्ती निकालना) ऊंचे नीचे स्थान में उछलना चलना तथा गिरना विषमतासे अंगों का रखना अंगप्रदूषण प्रहार मर्दन प्राणवायु का रोकना तथा क्लेशादि शरीर के मिथ्यायोगहैं ॥ ४३ ॥

संग्रहेणचातियोगायोगवर्जं कर्म्म वाङ्मनःशरीरजमहितमनुपदिष्टंयत्तच्च मिथ्यायोगंविद्यादिति । त्रिविधविकल्पंत्रिविधमेवकर्म्मप्रज्ञापराध इतिव्यवस्येत् ॥ ४४ ॥

संक्षेप से वाणी मन तथा शरीर के अहित नहीं कहेहुए भी अतियोग अयोगवर्ज्य कर्म को मिथ्यायोग कहते हैं तीन प्रकार के विकल्प हैं और तीन प्रकार के ही कर्मदोष को बुद्धिविकार जानना चाहिये ॥ ४४ ॥

शीतोष्णवर्षालक्षणःपुनर्हेमन्तग्रीष्मवर्षासंवत्सरःसकालः ॥ तत्रातिमात्रस्वलक्षणःकालः कालातियोगः। हीनस्वलक्षणःकालयोगः। यथास्वलक्षणविपरीतलक्षणस्तुकालोमिथ्यायोगः । कालःपुनःपरिणामउच्यते ॥ ४५ ॥

शीत उष्ण तथा वर्षारूप अथवा हेमन्त ग्रीष्म वर्षारूप संवत्सर को काल कहते हैं तिसमें काल के अपने लक्षणों से अधिक युक्त होने को काल का अतियोग लक्षणों के हीन होने को अयोग और अपने लक्षणों से विपरीत लक्षणों से युक्त होने को काल का मिथ्यायोग कहते हैं इसी काल को परिणाम कहते हैं ॥ ४५ ॥

इत्यसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगःप्रज्ञापराधःपरिणामश्चेति ॥ ४६ ॥

इस प्रकार असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग प्रज्ञापराध और परिणाम यह तीनों ॥ ४६ ॥

त्रयस्त्रिविधविकल्पाःकारणंविकाराणाम् ॥ ४७ ॥

तीन प्रकारों के विकल्पों से युक्त होकर रोगों के कारण होते हैं ॥ ४७ ॥

समयोगयुक्तास्तु प्रकृतिहेतवोभवन्ति। सर्वेषामेवभावानांभावाभावौनान्तरेणयोगायोगातियोगामिथ्यायोगात्समुपलभ्येते । यथास्वस्वापेक्षिणौहिभावाभावौ ॥ ४८ ॥

विषय आदिका समानयोग आरोग्य का कारण है संपूर्ण पदार्थों के भाव (अच्छे प्रकारसे होना) तथा नाशयोग अतियोग और मिथ्यायोग के विना नहीं होते हैं भाव तथा नाश अपनी २ युक्ति की अपेक्षा करते हैं ॥ ४८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रयोरोगाइतिनिजागन्तुमानसाः तत्रनिजःशरीरदोषसमुत्थः। आगन्तुर्भूतविषवाय्वग्निसम्प्रहारादिसमुत्थः। मानसःपुनरिष्टस्यालाभाल्लाभाच्चानिष्टस्योपजायते ॥४६॥

निज (शारीरिक) आगन्तुक तथा मानस यह तीन प्रकार के रोग हैं निज (शारीरिक) रोग शरीर के दोषों से आगन्तुक रोग भूत विष वायु अग्नि तथा प्रहारादि से और मानस रोग इष्ट वस्तु के न मिलने से तथा अनिष्ट के मिलने से होते हैं ॥ ४९ ॥

तत्रबुद्धिमतामानसव्याधिविपरीतेनापिसताबुद्ध्याहिताहितमवेक्ष्यावेक्ष्यधर्मार्थकामानामहितानामनुपसेवनेहितानाञ्चोपसेवनेप्रयतितव्यम् ॥ ५० ॥

तिसमें मानसिक रोग से युक्त बुद्धिमान् पुरुष को हित तथा अहितको विचारकर धर्म्म अर्थ तथा काम इनकी अहितकारी वस्तुओं के त्याग करने में और हितकारी वस्तुओं के ग्रहण करने में यत्न करना चाहिये ॥ ५० ॥

नह्यन्तरेणलोकेत्रयमेतन्मानसंकिञ्चिन्निष्पद्यते सुखंवादुःखंवा तस्मादेतच्चानुष्ठेयम्। तद्विद्यावृद्धानाञ्चोपसेवनेप्रयतितव्यम्। आत्मदेशकालबलशक्तिज्ञाने यथावच्चेति ॥ ५१ ॥

इन तीनों के विना लोकमें कोई मानसिक सुख अथवा दुःख नहीं होता है इसलिये धर्म्म अर्थ तथा कामका उद्योग करना चाहिये, वृद्ध विद्वानों का सेवन करना चाहिये और आत्मा देश काल बल तथा शक्ति के जानने में यत्न करना चाहिये ॥ ५१ ॥

भवतिचात्र ॥ मानसंप्रतिभैषज्यं त्रिवर्गस्यान्ववेक्षणम्। तद्विद्यासेवाविज्ञानमात्मादीनाञ्चसर्वशइति ॥ ५२ ॥

इसमें यह श्लोक है धर्म अर्थ तथा कामका अनुष्ठान धर्म आदिके जाननेवालों की सेवा और आत्मा आदिका जानना यह मानसिक रोगकी औषधि हैं ॥ ५२ ॥

त्रयोरोगमार्गाइति। शाखामर्मास्थिसन्धयःकोष्ठञ्च। तत्रशाखारक्तादयोधातवस्त्वक्चबाह्योरोगमार्गः। मर्माणिपुनर्वस्तिहृदयमूर्द्धादीन्यस्थिसन्धयोऽस्थिसंयोगास्तत्रोपनिबद्धाश्च स्नायुकण्डरासमध्यमोरोगमार्गः। कोष्ठंपुनरुच्यतेमहाश्रोतः शरीरमध्यंमहानिम्नमामपक्वाशयश्चेतिपर्य्यायशब्दैः सरोगमार्गआभ्यन्तरः ॥ ५३ ॥

शाखा, मर्म तथा हड्डियों की संधि और कोष्ठ यह तीन रोगों के मार्ग हैं तिसमें रक्त आदि धातु तथा त्वचा को शाखा कहते हैं यह बाह्य रोगों के मार्ग हैं वस्ति हृदय तथा मस्तक आदि मर्म और हड्डियों के जोड़ और इनमें बँधी हुई स्नायु तथा कंडरा रोगों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के मध्यम मार्ग हैं आमाशय तथा पक्वाशय को कोष्ठ कहते हैं महास्रोत शरीर मध्य तथा महानिम्न यह भी कोष्ठके नाम हैं यह रोगों का आभ्यन्तर मार्ग है ॥ ५३ ॥

तत्रगण्डःपिडिकालज्यपचीचर्म्मकीलाधिमांसमसककुष्ठव्यंगाद योविकारावहिर्मार्गजाः ॥ ५४ ॥

तिसमें गलगण्ड, पिडिका, अलजी, अपची, चर्मकील, अर्बुद, अधिमांस, अलसक कुष्ठ तथा व्यंगआदि रोग बाहरके मार्गों से उत्पन्न होते हैं ॥ ५४ ॥

वीसर्पश्वयथुगुल्मार्शविद्रध्यादयःशाखानुसारिणोभवन्तिरोगाः ॥ ५५ ॥

वीसर्प, शोथ, गुल्म, बवासीर तथा विद्रधि आदि रोग शाखाओंमें होते हैं ॥ ५५ ॥

पक्षवधग्रहापतानकार्दितशोषराजयक्ष्मास्थिसंधिशूलगुदभ्रंशादयः शिरोहृद्बस्तिरोगादयश्चमध्यममार्गानुसारिणोभवन्तिरोगाः ॥५६॥

पक्षाघात, ग्रह, अपतानक, अर्दित, शोष, राजयक्ष्मा, हड्डी तथा संधियोंकी पीड़ा, गुदभ्रंश, शिर के रोग, हृदय के रोग और वस्ति के रोग इत्यादि मध्यमार्ग में होते हैं ॥ ५६ ॥

ज्वरातीसारछर्द्यलसकविषूचिकाश्वासहिक्कानाहोदरप्लीहादयोऽन्तमार्गजाश्च। विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयःकोष्ठानुसारिणोभवन्तिरोगाः ॥ ५७ ॥

अतीसार, छर्दि, अलसक, विषूचिका, खांसी, श्वास, हिचकी, अफरा, उदर तथा प्लीहा आदि रोग आभ्यंतर मार्ग में होते हैं जहरवात, सूजन, गुल्म, बवासीर तथा विद्रधि आदि रोग कोष्ठके मार्गमें होते हैं ॥५७॥

त्रिविधाभिषजाइति। भिषक्छन्दचराःसन्तिसन्त्येकेसिद्धाधिताःसन्तिवैद्यागुणैर्युक्तास्त्रिविधाभिषजोभुवि ॥ ५८ ॥

छली, सिद्ध, साधित और वैद्यक के गुणों से युक्त यह तीन प्रकार के वैद्य पृथ्वीमें होते हैं ॥ ५८ ॥

वैद्यभाण्डौषधैःपुष्पैःपल्लवैरवलोकनैः। लभन्तेयेभिषक्शब्दमज्ञास्तेप्रतिरूपकाः ॥ ५९ ॥

शीशी आदि औषधियों के पात्र औषध पुष्प तथा पत्ता इनके देखने से जो वैद्यपने को प्राप्त होते हैं वह छली वैद्य हैं ॥ ५९ ॥

श्रीयशोज्ञानसिद्धानांव्यपदेशादतद्विधाः। वैद्यशब्दंलभन्तेयेज्ञेयास्तेसिद्धसाधिताः ॥ ६० ॥

जो वैद्यक के नहीं जाननेवाले लोग ऐश्वर्य्य, यश तथा ज्ञान के द्वारा प्रसिद्ध वैद्यों के बहानेसे उनके तुल्य वैद्य बनते हैं उनको सिद्ध साधित वैद्य कहते हैं ॥ ६० ॥

प्रयोगज्ञानविज्ञानसिद्धिसिद्धाःसुखप्रदाः। जीविताभिसरास्तेस्युर्वैद्यत्वंतेष्ववस्थितमिति ॥ ६१ ॥

औषधियों के प्रयोग तथा शास्त्र के जानने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाले कार्य्यकुशल आरोग्य देनेवाले तथा प्राणों के स्थिर करनेवाले यथार्थ वैद्य कहलाते हैं॥ ६१ ॥

त्रिविधमौषधमिति। दैवव्यपाश्रयं युक्तिव्यपाश्रयंसत्त्वावजयश्च । तत्रदैवव्यपाश्रयंमन्त्रौषधिमणिमङ्गलनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादियुक्तिव्यपाश्रयंपुनराहारौषधद्रव्याणांयोजना। सत्त्वावजयःपुनरहितेभ्योऽर्थेभ्योमनोनिग्रहः ॥ ६२ ॥

दैव व्यपाश्रय युक्तिव्यपाश्रय और सत्त्वावजय यह तीन प्रकार की औषधि होती है तिसमें मंत्र, औषध, मणि, मंगल, नियम, प्रायश्चित्त, व्रत, स्वस्त्ययन, प्रणिपात, तथा तीर्थयात्रा आदिको दैवव्यपाश्रय औषधि कहते हैं आहार तथा औषधियों की योजना को युक्तिव्यपाश्रय औषधि कहते हैं अहित विषयों से मनके रोकने को सत्त्वावजय औषधि कहते हैं॥ ६२ ॥

शरीरदोषप्रकोपे खलुशरीरमेवाश्रित्यप्रायशस्त्रिविधमौषधमिच्छन्ति। अन्तःपरिमार्जनं बहिःपरिमार्जनं शस्त्रप्रणिधानञ्चेति। तत्रान्तःपरिमार्जनंयदन्तःशरीरमनुप्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन्प्रतिमार्ष्टि। यत्पुनर्बहिःस्पर्शमाश्रित्याभ्यङ्गस्वेदप्रदेहपरिषेकोन्मर्दनाद्यैरामयान् प्रमार्ष्टितद्बहिःपरिमार्जनम्॥६३॥

शारीरिक दोषों के कुपित होनेपर शरीर को आश्रय करके प्रायः तीन प्रकार की औषधि करीजाती हैं अन्तःपरिमार्जन बहिःपरिमार्जन और शस्त्रप्रणिधान तिसमें जो आहार शरीरके भीतर जाकर रोग को शान्त करताहै उसे अन्तःपरिमार्जन कहते हैं और अभ्यंग, स्वेद, लेप, परिषेक तथा मर्दन आदिके द्वारा बाहर स्पर्श करने से जो औषधि रोगों को दूरकरती है उसे बहिःपरिमार्जन औषधि कहते हैं ॥ ६३ ॥

शस्त्रप्रणिधानंपुनश्छेदनभेदनव्यथनदारणलेखनोत्पाटनप्रच्छन्नसीवनैषणक्षारजलौकाश्चेति ॥ ६४ ॥

छेदन, भेदन, वेधन, दारण, लेखन, उत्पाटन, प्रच्छन्न, सीवन, एषण, क्षार और जोंक इन सब उपायों को शस्त्र प्रणिधान कहते हैं॥ ६४ ॥

प्राज्ञोरोगेसमुत्पन्नेबाह्येनाभ्यन्तरेण वा । कर्मणालभतेशर्मशस्त्रोपक्रमणेनवा ॥ ६५ ॥

बुद्धिमान् पुरुष रोगके उत्पन्न होनेपर बाह्य तथा आभ्यन्तर औषधि के द्वारा अथवा शस्त्र कर्म से सुखको प्राप्त होताहै॥ ६५ ॥

बालस्तुखलुमोहाद्वा प्रमादाद्वान बुध्यते। उत्पद्यमानंप्रथमंरोगंशत्रुमिवाबुधः ॥ ६६ ॥

और बालक मोह अथवा असावधानता से पहले उत्पन्नहुए रोग को इस तरह नहीं जानता जैसे अज्ञानी शत्रुको ॥ ६६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अग्राहिप्रथमंभूत्वारोगःपश्चाद्विवर्द्धते। सजातमूलोमुष्णातिबलमायुश्चदुर्मतेः॥ ६७॥

रोग पहले थोड़ा उत्पन्न होकर पीछे बढ़ताहै और वह बढ़कर मूढ़ मनुष्य की आयु तथा बलको नष्ट करता है॥ ६७॥

नमर्त्योलभतेश्रद्धां तावद्यावन्नपीड्यते। पीडितस्तुमतिंपश्चात् कुरुतेव्याधिनिग्रहे॥ ६८॥

मूर्ख मनुष्य जब तक बहुत पीड़ित नहीं होताहै तब तक उसे ज्ञान नहीं होता फिर पीड़ित होकर रोगको दूर करना चाहता है॥ ६८॥

अथपुत्रांश्चदारांश्च जातींश्चाहूयभाषते। सर्वस्वेनापिमेकश्चिद्भिषगानीयतामिति॥ ६९॥

तब पुत्र स्त्री तथा जातिवालों से भी बुलाकर कहता है कि मेरे सर्वस्व कोभी खर्च करके कोई वैद्य बुलाओ॥ ६९॥

तथाविधञ्चकःशक्तोदुर्बलंव्याधिपीडितम्। कृशंक्षीणेन्द्रियंदीनंपरित्रातुंगतायुषम्॥ ७०॥

परन्तु दुर्बल, रोगसे पीड़ित, कृश, निर्बल इन्द्रियवाले, दीन तथा आयुहीन उस रोगी को कौन बचा सक्ता है॥ ७०॥

सत्रातारमनासाद्य बालस्त्यजतिजीवितम्। गोधालांगूलबद्धेवाकृष्यमाणाबलीयसा॥ ७१॥

और फिर वह मूर्ख अपनी रक्षा करनेवाले वैद्य को न पाकर पूंछमें बँधीहुई तथा बलवान् शत्रुसे खैंचीगई गोह के समान प्राणों को त्याग करता है॥ ७१॥

तस्मात्प्रागेवरोगेभ्यो रोगेषुतरुणेषुवा। भेषजैःप्रतिकुर्व्वीतयइच्छेत् सुखमात्मनः॥ ७२॥

इसलिये सुख चाहनेवाला पुरुष रोग के उत्पन्न होने से प्रथमही अथवा रोग के प्रारंभही में औषधि करे॥ ७२॥

तत्रश्लोकौ।

एषणाःसमुपस्तम्भा बलकारणमामयाः। तिस्रैषणीयेमार्गाश्चभिषजोभेषजानिच॥ ७३॥ त्रित्वेनाष्टौसमुद्दिष्टाः कृष्णात्रेयेणधीमता। भावाभावेषुशक्तेनयेषुसर्वंप्रतिष्ठितमिति॥ ७४॥

अग्नीत्यादि॥ एकादशस्तिस्रैषणीयाध्यायःसमाप्तः॥ ११॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं॥

इस तिस्रैषणीयनाम अध्याय में भाव अभाव में समर्थ बुद्धिमान् आत्रेयजीने एषणा, उपस्तंभ, बल, कारण, रोगमार्ग, वैद्य तथा औषध इन आठों को तीन २ भाग में विभाग करके कहाहै सम्पूर्ण चिकित्सा इन्हीं के आश्रित है॥ ७३।७४॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें तिस्रैषणीयनामग्यारहवाँअध्यायसमाप्तहुआ॥ ११॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बारहवां अध्याय ॥

अथातोवातकलाकलीयमध्यायं व्याख्यास्यामः । इतिहस्माह भगवानात्रेयः ।

वातकलाकलाज्ञानमधिकृत्यपरस्परमेतानिजिज्ञासमानाः समुपविश्यमहर्षयःपप्रच्छुरन्योन्यंकिंगुणोवायुःकिमस्यप्रकोपनमुपशमनानिवास्यकानि । कथञ्चैनमसङ्घातमनवस्थितमनासाद्यप्रकोपनप्रशमनानिप्रकोपयन्तिप्रशमयन्तिवा। कानिचास्यकुपिताकुपितस्यशरीराशरीरचरस्यशरीरेषुचरतःकर्माणिबहिःशरीरेभ्योवेति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त वातकलाकलीयनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा वायुकी अत्यन्त सूक्ष्म व्यवस्थाके जानने के लिये महर्षिलोग इकट्ठे होकर परस्पर पूछतेहुए कि वायु के कौन गुण हैं वायु काहे से कुपित होती है तथा काहेसे शान्त होती है और अवयवरहित तथा स्थिरतारहित वायुको विनापाये कुपित करनेवाली तथा शान्त करनेवाली औषधि किस प्रकार से कुपित तथा शान्त करती हैं और शरीर के भीतर तथा बाहर विचरण करनेवाली वायु के शरीरके भीतर तथा बाहर विचरण करने के समय कौन से कार्य्य हैं ॥ १ ॥

अत्रोवाच कुशः सांकृत्यायनः । रूक्षलघुशीतदारुणखरविषदाः षडिमेवातगुणाभवन्ति । तच्छ्रुत्वावाक्यं कुमारशिराभरद्वाजउवाच ॥ २ ॥

उन ऋषियों में से कुश सांकृत्यायन ऋषि ने कहा कि रूक्ष लघु शीत दारुण खर तथा विषद यह छः वायु के गुण हैं यह सुनकर.कुमारशिरा भरद्वाज ऋषि बोले ॥ २ ॥

एवमेतद्यथाभगवानाहएतएववातगुणाभवन्ति । सत्त्वैरेवंगुणैरेवंद्रव्यैरेवंप्रभावैश्चकर्म्मभिरभ्यस्यमानैर्वायुःप्रकोपमापद्यतेसमानगुणाभ्यासोहिधातूनांवृद्धिकारणमिति ॥ ३ ॥

कि ऐसाही है जैसा कि आपने कहा वायु के यही गुण हैं इसीप्रकारके प्रभाववाले सत्त्व, गुण, द्रव्य, और कार्य्यों के अभ्यास से वायु कुपित होती है क्योंकि तुल्य गुणवाले औषध आदि का अभ्यासही धातुओं की वृद्धिका कारणहै ३ ॥

तच्छ्रुत्वावाक्यकाङ्क्षायनोवाह्लीकभिषगुवाच । एवमेतद्यथाभगवानाह । एतान्येववातप्रकोपनानिभवन्ति । अतोविपरीतानिस्यप्रशमनानिभवन्ति । प्रकोपनविपर्य्ययोहिधातूनांप्रशमकारणमिति ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनकर कांक्षायन वाह्लीकभिषक्‌ने कहा कि जो आप कहते हैं वह यथार्थही है वायु के प्रकोप से यही होता है और इसके विपरीत होने से वायु शान्त होजाती है धातुओं की शांति का कारणभी वायु के कुपित न होने से है ॥ ४ ॥

तच्छ्रुत्वावाक्यं बडिशोधामार्गवउवाच । एवमेतद्यथाभगवानाह । एतान्येववातप्रकोपप्रशमनानिभवन्ति । यथाह्येनमसंघातमवस्थितमनासाद्यप्रकोपनप्रशमनानिप्रकोपयन्तिप्रशमयन्तिवा । तथानुव्याख्यास्यामः । वातप्रकोपनानिखलुरूक्षलघुशीतदारुणखरविषदशुषिरकराणिशरीराणांतथाविधेषुशरीरेषुवायुराश्रयंगत्वा आप्याय्यमानःप्रकोपमापद्यते । वातप्रशमनानिपुनःस्निग्धगुरूष्णश्लक्ष्णमृदुपिच्छलघनकराणिशरीराणां तथाविधेषुशरीरेषुवायुरासज्यमानश्चरन्प्रशान्तिमापद्यते ॥ ५ ॥

यह सुनकर बडिशोधामार्गव नाम ऋषिने कहा कि आप ठीक कहते हैं यही वायुके कुपित तथा शान्त करने के कारण हैं जिस प्रकार से अवयवरहित तथा स्थिरतारहित वायु को विना पाये भी कुपित तथा शान्त करनेवाली औषधि कुपित तथा शान्त करती है सो सब मैं कहताहूं रूक्ष, लघु, शीत, दारुण, खर, विपद तथा शुषिरकारक औषधादिक शरीर की वायु को कुपित करते हैं और इसी प्रकार के शरीरों में वायु आश्रय को पाकर बढ़ती हुई कुपित होती है स्निग्ध गुरु उष्ण श्लक्ष्ण पिच्छल तथा घनकारक औषधादि शरीर की वायु को शान्त करते हैं इस प्रकार के शरीर में आश्रय को पाकर विचरतीहुई वायु शान्त होती है ॥ ५ ॥

तच्छ्रुत्वाबडिशवचनमवितथमृषिगणैरनुमतमुवाचवार्योविदोराजर्षिः । एवमेतत्सर्वमनपवादंयथा भगवानाह । यानितुखलुवायोःकुपिताकुपितस्यशरीराशरीरचरस्य शरीरेषुचरतःकर्माणिबहिःशरीरेभ्योवाभवन्ति ॥ ६ ॥

बडिशऋषिके सत्य तथा ऋषियों से अनुमोदन कियेहुए वचनको सुनकर वार्योविद नाम राजर्षिने कहा कि आपका कथन बहुत सत्य है कुपित तथा शान्त और शरीरके भीतर तथा बाहर विचरण करनेवाली वायुके शरीरके भीतर तथा बाहर विचरन करने में जो कार्य्य उत्पन्न होते हैं ॥ ६ ॥

तेषामवयवान्प्रत्यक्षानुमानोपमानैःसाधयित्वानमस्कृत्यवायवेयथाशक्तिप्रवक्ष्यामोवायुस्तन्त्रयन्त्रधरः प्राणोदानसमानव्यानापानात्माप्रवर्त्तकश्चेष्टानामुच्चावचानांनियन्ताप्रणेताचमनसः । सर्वेन्द्रियाणामुद्योतकः । सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढासर्वशरीरधातुव्यूहाकरःस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्धानकरःशरीरस्यप्रवर्त्तकोवाचःप्रकृतिःस्पर्शशब्दयोःश्रोत्रस्पर्शनयोर्मूलंहर्षोत्साहयोर्योनिसमीरणोऽग्नेर्दोषसंशोषणः। क्षेप्ताबहिर्मलानांस्थूलाणुस्रोतसांभेत्ताकर्त्तागर्भाकृतीनांआयुषोऽनुवृत्तिप्रत्ययभूतोभवत्यकुपितः ॥ ७ ॥

उनको प्रत्यक्ष अनुमान तथा आप्तोपदेश के द्वारा सिद्ध करके और वायु को नमस्कार करके यथाशक्ति कहता हूं कोपरहित वायु शरीर रूपी तन्त्र यन्त्र को धारण करनेवाली प्राण उदान समान व्यान तथा अपानरूप चेष्टाओं को प्रवृत्त करनेवाली मनको रोकने वाली तथा लेचलनेवाली सब इन्द्रियों के उद्योग को करनेवाली संपूर्ण इन्द्रियों के विषयों को प्राप्तकरानेवाली शरीरकी संपूर्ण धातुओं को पुष्टकरानेवाली शरीर को जोड़नेवाली वाणी को प्रवृत्त करानेवाली शब्द तथा स्पर्श की प्रकृति कान तथा त्वचा इन्द्रिय का मूल हर्ष तथा उत्साह की कारण अग्नि को दीप्त करनेवाली दोषोंकी सुखानेवाली मलों को वाहर निकालने वाली स्थूल तथा सूक्ष्म स्रोतोंकी भेद करनेवाली गर्भकी आकृतियों की करनेवाली और जीवन की स्थितिका निश्चय करानेवाली है ॥ ७ ॥

कुपितस्तुखलुशरीरे शरीरंनानाविधैर्विकारैरुपतपति बलवर्णसुखायुषामुपघाताय मनोव्याहर्षयति सर्वेन्द्रियाण्यपहन्ति । विहन्तिगर्भान् विकृतिमापादयत्यतिकालं धारयति । भयशोकमोहदैन्यातिप्रलापान्जनयतिप्राणांश्चोपरुणद्धि । प्रकृतिभूतस्यखल्वस्य लोकेचरतःकर्माणीमानिभवन्ति ॥ ८ ॥

कुपित वायु शरीरको अनेक प्रकारके विकारों से संतप्तकरानेवाली बल वर्ण सुख तथा आयुको नष्ट करनेवाली मनको बिगाड़ने वाली सब इन्द्रियों को नष्ट करनेवाली गर्भोंको विकारयुक्त नष्ट तथा बहुत काल तक स्थित करनेवाली भय शोक मोह दीनता तथा अत्यन्त प्रलापको करनेवाली और प्राणों को रोकनेवाली होती है और कोपरहित होकर संसार में विचरतीहुई वायु के यह कर्म हैं ॥ ८ ॥

तद्यथा ।

धरणीधारणंज्वलनोज्ज्वालनम् । आदित्यचन्द्रनक्षत्रग्रहगणानांसन्तानगतिविधानं सृष्टिश्चमेघानाम् । अपाञ्चविसर्गःप्रवर्तनंस्रोतसांपुष्पफलानाञ्चाभिनिर्वर्त्तनमुद्भेदनञ्चौद्भिदानामृतूनांप्रविभागः । विभागोधातूनांधातुमानसंस्थानव्यक्तिः । बीजाभिसंस्कारःशस्याभिवर्द्धनंविक्लेदोपशोषणमवैकारिकविकारश्चेति ॥ ९ ॥

पृथ्वीको धारण करती है अग्नि को दीप्त करती है सूर्य्य चन्द्रमा नक्षत्र तथा ग्रहों की स्थिति तथा गति करती है मेघों को उत्पन्न करती है जल का त्याग करती है स्रोतों को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रवृत्त करती है पुष्प तथा फलों को उत्पन्न करती है वृक्ष तथा लताआदि को निकालती है ऋतु तथा धातुओं का विभाग करती है धातुओं की खानों को प्रकट करती है बीजों को शुद्ध करती है धान्यों को बढ़ाती है आर्द्र नहीं करती सुखातीहै और पदार्थों के विकारोंको नष्ट करती है ॥ ९ ॥

प्रकुपितस्यखल्वस्यलोकेषुचरतःकर्माणीमानिभवन्ति ॥ १० ॥

संसार में विचरतीहुई कुपित वायुके यह सब कार्य्य होते हैं ॥ १० ॥

तद्यथा।

उत्पीडनंसागराणामुद्वर्त्तनंसरसांप्रतिसरणमापगानामाकम्पनञ्चभूमेराधमनमम्बुदानांशिखरिशिखरावमथनमुन्मथनमनोकहानांनिहारनिर्ह्लादपांशुसिकतामत्स्यभेकोरगक्षाररुधिराश्माशनिविसर्गोव्याद्नञ्चषण्णामृतूनांशस्यानामसंघातोभूतानाञ्चोपसर्गो भावानाञ्चाभावकरणम् । चतुर्युगान्तकराणां मेघसूर्य्यानलानां विसर्गःसहिभगवान्प्रभवश्चाव्ययश्च भूतानांभावानामभावाकरः ॥ ११ ॥

जैसे समुद्रों का पीड़न तड़ागोंका खलभलाना नदीआदि का प्रतिसरण भूकम्प मेघों का कंपन पर्व्वतों के शिखरों का मर्द्दन वृक्षों का उखड़ना पाला शब्द धूल बालू मछली मेढ़क सर्प क्षार रुधिर पाषाण तथा वज्र इन का त्याग छः ऋतुओं के विकार नाजका बहुत न होना भूतोंका उपसर्ग (शुभाशुभसूचक महाभूतविकार) भावों का अभाव और चतुर्युग के अन्त करने वाले मेघ सूर्य्य अग्नि तथा वायुका प्रकटहोना यह कार्य्य हैं यही भगवान् वायु प्रभु अविनाशी भूतोंका भाव तथा अभाव करनेवाली ॥ ११ ॥

सुखासुखयोर्विधाता मृत्युर्यमोनियन्ताप्रजापतिरदितिर्विश्वकर्माविश्वरूपः सर्वगः सर्वतन्त्राणांविधाता । भावानामणुर्विभुर्विष्णुः क्रान्तालोकानांवायुरेव भगवानिति ॥ १२ ॥

सुख तथा दुःखकारी मृत्यु यम नियन्ता प्रजापति अदिति विश्वकर्मा विश्वरूप सर्वगामी संपूर्ण शरीरों का निर्माण करनेवाली अणु विभु विष्णु लोकों का आक्रमण करनेवाली वायुही भगवान् हैं ॥ १२ ॥

तच्छ्रुत्वावाक्यविद्धचोमारीचिरुवाच । यद्यप्येवमेतत्किमर्थस्यास्य वचनेविज्ञानेवासामर्थ्यमस्ति भिषग्विद्यायाम् । भिषग्विद्यांवाधिकृत्यकथाप्रवर्त्तते। वार्य्योविदउवाच । भिषक्पवनमतिबलमतिपरुषमतिशीघ्रकारिणमात्ययिकञ्चेन्नानुनिशम्येत् ॥ १३ ॥

वार्य्योविद्के यह वचन सुनकर मारीचि ने कहा कि यदि वायुमें इसप्रकार की शक्ति है तो चिकित्साके विषयमें इसके वर्णनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और इसके ज्ञानकी क्या सामर्थ्य है और इस के यहां कथनही से क्याप्रयोजन है यह सुन कर वार्योविदने कहा कि यदि अत्यन्त बलवान् अत्यन्त कठोर बहुत शीघ्रकारी अत्यन्त अनिष्टकारी वैद्य वायुको न शान्तकरेगा तो॥ १३॥

सहसाप्रकुपितमतिप्रयतः कथमग्रेऽभिरक्षितुमभिधास्यति । प्रागेवैनमत्ययभयादिति । वायोर्यथार्थास्तुतिरपिभवत्यारोग्यायबलवर्णवृद्धयेवर्चस्वित्वायोपचयायच । ज्ञानोपपत्तये परमायुःप्रकर्षायचेति । मारीचिरुवाच । अग्निरेवशरीरे पित्तान्तर्गतःकुपिताकुपितः शुभाशुभानिकरोति ॥ १४ ॥

सहसापूर्वक कुपित होनेवाली वायुको यत्नसे रक्षा करने के लिये अगाड़ी कैसे समर्थ होगा क्योंकि पहलेही इससे नाशहोजाने का भयहै और आरोग्य बल तथा वर्ण की वृद्धि तेज पुष्टता ज्ञानकी उत्पत्ति तथा आयुकी वृद्धिकेलिये वायुकी यथार्थ स्तुतिकरे मारीचि ने कहा कि शरीरमें पित्तके अन्तर्गत कुपित तथा कोपरहित अग्निही शुभ और अशुभों को करता है॥ १४॥

तद्यथा।

पक्तिमपक्तिंदर्शनमदर्शनंमात्रामात्रत्वमूष्मणः प्रकृतिविकृतिवर्णौऽशौर्य्यंभयंक्रोधंहर्षंमोहंप्रसादमित्येदमादीनिचापराणिद्वन्द्वादीनीति । तच्छ्रुत्वामारीचिवचः । काश्यप उवाच । सोमएवशरीरेश्लेष्मान्तर्गतःकुपिताकुपितःशुभाशुभानिकरोति ॥ १५ ॥

वह यह हैं परिपाक अपरिपाक दर्शन अदर्शन मात्रा मात्रत्व ऊष्माकी प्रकृति ऊष्माका विकार वर्ण शौर्य्य भय क्रोध हर्ष मोह तथा प्रसन्नता आदि अन्य सुख दुःखादिकोंको करती है मारीचिके यह वचन सुनकर काश्यप ने कहा कि शरीरमें कफके अन्तर्गत सोमही कुपित तथा कोपरहित होकर शुभ अशुभोंको करता है॥ १५॥

तद्यथा।

दार्ढ्यंशैथिल्यमुपचयंकार्श्यमुत्साहमालस्यंवृषतांक्लीबतांज्ञानमज्ञानंबुद्धिंमोहमेवमादीनिचापराणिद्वन्द्वादीनीति । तच्छ्रुत्वाकाश्यपवचोभगवान्पुनर्वसुरात्रेयउवाच । सर्वएवभवन्तःसम्यगाहुरन्यत्रैकान्तिकवचनात् ॥ १६ ॥

वह यह हैं दृढ़ता शिथिलता वृद्धि कृशता उत्साह आलस्य वृष्यता नपुंसकता ज्ञान अज्ञान बुद्धि तथा मोह आदिक अन्य शुभाशुभों को करताहै काश्यपके यह वचन सुनकर भगवान् पुनर्वसु आत्रेयजी ने कहा कि आप सब लोग ठीक कहते हैं परन्तु वात पित्त तथा कफों में से एकही की मुख्यता कहना ठीक नहीं है॥ १६॥

सर्वएवखलुवातपित्तश्लेष्मणःप्रकृ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिभूताःपुरुषमव्यापन्नेन्द्रियंबलव र्णसुखोपपन्नमायुषामहतोपपादय न्ति । सम्यगेवाचरिताधर्मार्थका मानिःश्रेयसेनमहतापुरुषमिहचामु ष्मिंश्चलोके विकृतास्त्वेनंमहताvि पर्य्ययेणोपवादयन्ति । ऋतवश्च यइवविकृतिमापन्नालोकमशुभेनो पघातकालेइत्येतदृषयःसर्वएवानु मेनिरेवचनमात्रेयस्यभगवतोऽभि ननन्दुश्चेति ॥ १७ ॥

क्योंकि वायु पित्त तथा कफ यह तीनों स्वाभाविक होकर मनुष्यको स्वस्थ बल वर्ण तथा सुख से युक्त और दीर्घायु करते हैं जैसे धर्म अर्थ तथा काम अच्छे प्रकार से आचरण किये गये इस लोक में तथा परलोक में सुख देते हैं इसी प्रकार से वातादिक भी करते हैं और विकारयुक्त वातादिक उपघातकाल में विकार को प्राप्तहुई ऋतुओं के समान मनुष्य को अत्यन्त दुःखित करते हैं आत्रेयजी के इस वचन को सुनकर सब ऋषियों ने अनुमोदन किया और प्रशंसा की ॥ १७ ॥

भवतिचात्र ॥ तदात्रेयवचःश्रुत्वा सर्वएवानुमेनिरेऋषयोऽभिननन्दु श्चयथेन्द्रवचनंसुराः ॥ १८ ॥

इस में यह श्लोक हैं। जैसे इन्द्रके वचनको सुनकर सब देवता लोग अनुमोदन करके प्रशंसा करते हैं उसी प्रकार ऋषियोंने आत्रेयजी के वचनको सुनकर अनुमोदन और प्रशंसाकी ॥ १८ ॥

तत्रश्लोकौ । गुणाःषड्विधाहेतुर्वि विधंकर्मतत्पुनः । वायोश्चतुर्वि धंकर्मपृथक्चकफपित्तयोः ॥ १९ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। वायुके छःगुण दो प्रकार के हेतु तथा अनेक कार्य्य वात तथा पित्त के चार प्रकार के अलग २ कर्म ॥ १९ ॥

महर्षीणांमतिर्याचपुनर्वसुमतिश्च या। कलाकलीयेवातस्यतत्सर्वंस म्प्रकाशितमिति ॥ २० ॥

निर्देशचतुष्कम् ॥

अग्नीत्यादिवातकलाकलीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥

महर्षियोंका मत तथा अपना मत इस वातकलाकलीय नाम अध्याय में आत्रेयजी ने कहा है ॥ २० ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंवातकला- कलीयनामद्वादशअध्यायसमाप्तहुआ १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

अथातःस्नेहाध्यायं व्याख्यास्यामः। इति हस्माह भगवानात्रेयः ॥ सांख्यैःसंख्यातसंख्येयैःसहासीनंपु नर्वसुम् । जगद्धितार्थंपप्रच्छवह्नि वेशःसुसंशयम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त स्नेहाध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा चौबीस तत्त्वोंके वर्णन करनेवाले सांख्य शास्त्रके जाननेवाले महर्षियों के साथ बैठे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुये आत्रेयजीसे जगत् के हितके लिये अ-ग्निवेश ने अपना यह सन्देह पूछा॥ १॥

किंयोनयःकतिस्नेहाः केचस्नेहगुणाःपृथक्। कालानुपानेकेकस्य कतिकाश्चविचारणाः॥ २॥

कि हे भगवन् किन २ वस्तुओं से स्नेह उत्पन्न होताहै कै प्रकार के स्नेह होतेहैं स्नेहोंके अलग २ कौन २ गुण होते हैं किस स्नेह का कौनसा समय तथा अनुपानहै किस स्नेह की कितनी तथा कौन २ विचारणा हैं॥ २॥

कतिमात्राःकथंमानाकाचकेषूपदिश्यते। कश्चकेभ्योहितःस्नेहःप्रकर्षःस्नेहनेचकः॥ ३॥

स्नेहकी कैमात्रा तथा क्यामान हैं कौन सा स्नेह किसको हित है किन २ स्नेहों में कौन सी मात्राचाहिये स्नेहनमें क्या उत्तमता है॥ ३॥

स्नेह्याःकेकेचनस्निग्धाःस्निग्धातिस्निग्धलक्षणम्। किंपानात्प्रथमंपीतेजीर्णेकिञ्चहिताहितम्॥ ४॥

किन को स्नेहपान कराना चाहिये किन को न करानाचाहिये स्निग्ध तथा अत्यन्त स्निग्ध के क्या लक्षण हैं स्नेहपीने के पहले पीकर तथा पचजाने पर क्या हित तथा अहित है॥ ४॥

केमृदुक्रूरकोष्ठाःकाव्यापदःसिद्धयश्चकाः। अच्छेसंशोधनेचैवस्नेहेकावृत्तिरिष्यते॥ ५॥

मृदु तथा क्रूर कोष्ठ वाले कौन कहलाते हैं अधिक स्नेहपान से कौन रोग होते हैं स्नेहपान से क्या लाभ होताहै संशमन तथा संशोधन स्नेह के कौन नियम हैं॥ ५॥

विचारणाःकेषुयोज्याविधिनाकेनतत्प्रभो। स्नेहस्यामितविज्ञानज्ञानमिच्छामिवेदितुम्॥ ६॥

और किन स्नेहों में किस विधि से विचारणा करनी चाहिये यह संपूर्ण स्नेहका शास्त्र हे अमितविज्ञान मैं जानना चाहताहूं॥ ६॥

अथतत्संशयच्छेत्ताप्रत्युवाचपुनर्वसुः। स्नेहानांद्विविधाचासौयोनिःस्थावरजङ्गमा॥ ७॥

इसके उपरान्त अग्निवेश के सन्देह को दूर करनेवाले भगवान् पुनर्वसु आत्रेयजी बोले हे सौम्य स्थावरजंगम भेद से स्नेह दो प्रकार के होते हैं॥ ७॥

तिलःपियालाभिषुकौविभीतकश्चित्राभयैरण्डमधूकसर्षपाः। कुसुम्भबिल्वार्भकमूलकातसीनिकोचकाक्षोडकरञ्जशिग्रुकाः॥ ८॥

तिल चिरोंजी अभिषुक (एक पहाड़ी फल) बहेड़ा कचरी हड़ अरंड महुआ सरसों कुसुमबेल अर्भक (फलविशेष) मूली अलसी निकोचक (फलविशेष) अखरोट करंज तथा सहजन॥ ८॥

स्नेहाश्रयाःस्थावरसंज्ञितास्तथास्युर्जङ्गमामत्स्यमृगाःसपक्षिणः। ते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षांदधिक्षीरघृतामिषंवसास्नेहेषुम ज्जाचतथोपदिश्यते ॥ ६ ॥

इन से जो स्नेह उत्पन्न होताहै वह स्थावर कहलाता है मछली मृग तथा पक्षियों के दही दूध घी मांस चरबी तथा मज्जाको जंगम स्नेह कहते हैं ॥ ९ ॥

सर्वेषांतैलजातानां तिलतैलंविशि ष्यते । बलार्थेस्नेहनेचाग्र्यमैरण्ड न्तुविरेचने ॥ १० ॥

संपूर्ण तैलों में से तिलतैल स्नेहन तथा बलके लिये और अरंड का तेल विरेचन के लिये श्रेष्ठ है ॥ १० ॥

सर्पिस्तैलंवसामज्जासर्वस्नेहोत्तमा मता । एष्वप्यश्चैवोत्तमंसर्पिःसंस्कार स्यानुवर्त्तनात् ॥ ११ ॥

संपूर्ण स्नेहों में घी तेल चरबी तथा मज्जा श्रेष्ठ है अपने गुणों को न त्यागकर अन्य वस्तुके गुणों को ग्रहण करने से घृत इन सब में श्रेष्ठ है ॥ ११ ॥

घृतंपित्तानिलहरंरसशुक्रौजसांहि तम् ॥ निर्वापणंमृदुकरंस्वरवर्णप्र सादनम् ॥ १२ ॥

घृत पित्त तथा वायु का नाशक रस शुक्र तथा ओजका वर्द्धक दोषनाशक कोमलता-कारक और स्वर तथा वर्ण को उत्तम करने वाला होता है ॥ १२ ॥

मारुतघ्नंनचश्लेष्मवर्द्धनंबलवर्द्धन म् । त्वच्यमुष्णंस्थिरकरंतैलंयोनि विशोधनम् ॥ १३ ॥

तैल बायुनाशक कफको नहीं बढ़ाता व बल बढ़ाने वाला त्वचाको हित उष्ण स्थिरताकारक तथा योनिको शुद्ध करने वाला होता है ॥ १३ ॥

विद्धभग्नाहतभ्रष्टयोनिकर्णशिरो रुजि । पौरुषोपचयेस्नेहेव्यायामे चेष्यतेवसा ॥ १४ ॥

चरबी विंधे तथा टूटेहुए स्थान में भ्रष्ट योनि कर्ण तथा शिरके रोगों में पुरुषार्थ के बढ़ाने में स्नेहन में और व्यायाम में हित है ॥ १४ ॥

बलशुक्ररसश्लेष्ममेदोमज्जाविव र्द्धनः । मज्जाविशेषतोऽस्थ्नाञ्च ब लकृत्स्नेहनेहितः ॥ १५ ॥

मज्जा बल शुक्र रस कफ मेदा तथा मज्जाको अत्यन्त बढ़ाती है और विशेष करके हड्डियों में बल देनेवाली तथा स्नेहन में हितहै ॥ १५ ॥

सर्पिश्शरदिपातव्यं वसामज्जाच माधवे । तैलंप्रावृषिनात्युष्णं शीते स्नेहंपिबेन्नरः ॥ १६ ॥

शरद ऋतु में घृत वैशाख में चरबी तथा मज्जा और वर्षाकाल में तैल पानकरना चाहिये अत्यन्त उष्ण तथा शीत काल में स्नेहपान न करे ॥ १६ ॥

वातपित्ताधिकेरात्रावुष्णेचापिपि बेन्नरः । श्लेष्माधिकेदिवाशीतेपि बेच्चामलभास्करे ॥ १७ ॥

उष्णकालमें रात्रिके समय वात तथा पित्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की अधिकता में और शीतकालमें दिनके समय जब कि सूर्योदय अच्छे प्रकार से होजाय कफकी अधिकता में मनुष्य स्नेह पान करे ॥ १७ ॥

अत्युष्णेवादिवापीते वातपित्ताधिकेनच । मूर्च्छांपिपासामुन्मादं कामलांवासमीरयेत् ॥ १८ ॥

यदि अत्यंत उष्णकाल में वात तथा पित्त की अधिकतावाला पुरुष दिनमें स्नेहपानकरे तो मूर्च्छा पिपासा उन्माद तथा कामर इन रोगों को प्राप्तहोताहै ॥ १८ ॥

शीतेरात्रौपिबेत्स्नेहं नरःश्लेष्माधिकोऽपिवा । आनाहमरुचिंशूलं पाण्डुतांवासमृच्छति ॥ १९ ॥

कफकी अधिकतावाला पुरुष शीतकाल में यदि रात्रिके समय स्नेहपान करे तो अफरा अरुचि शूल तथा पाण्डुरोग को प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥

जलमुष्णंघृतेपेयंयूषस्तैलेऽनुशस्यते । वसामज्जोऽस्तुमण्डःस्यात् सर्वेषूष्णमथाम्बुवा ॥ २० ॥

घृतपान करके उष्ण जल तैल पान करके मांस यूष चरबी तथा मज्जा पान करके मांड़ अथवा सब प्रकारके स्नेहपान के अनन्तर उष्ण जल पीना चाहिये ॥ २० ॥

ओदनश्चविलेपीच रसोमांसंपयोदधि । यवागूःसूपशाकौचयूषः काम्बलिकःखडः ॥ २१ ॥

भात विलेपी (एकप्रकारकी यवागू) रस मांस दूध दही यवागू दाल शाक यूष काम्बलिकखड ॥ २१ ॥

सक्तवस्तिलपिष्टञ्च मद्यंलेहास्तथैवच । भक्ष्यमभ्यञ्जनंवस्तिस्तथाचोत्तरवस्तयः ॥ २२ ॥

सत्तू खल मद्य अवलेह भक्ष्य पदार्थ अभ्यंग वस्तिकर्म उत्तरवस्ति ॥ २२ ॥

गण्डूषःकर्णतैलञ्च नस्तःकर्णाक्षितर्पणम् । चतुर्विंशतिरित्येताः स्नेहस्यप्रविचारणा ॥ २३ ॥

कुल्ले कानों में तेल भरना आंखों का तर्पण यह चौवीस स्नेहकी विचारणा हैं अर्थात् इन चौवीसके साथ स्नेहन कराना चाहिये ॥ २३ ॥

अच्छपेयस्तुयःस्नेहोनतमाहुर्विचारणाम् । स्नेहस्यसभिषग्दृष्टः कल्पःप्राथमकल्पिकः ॥ २४ ॥

केवल स्नेह पीनेको विचारणा नहीं कहते हैं वैद्य लोग इसको स्नेह का प्रथम कल्प कहते हैं ॥ २४ ॥

रसैश्चोपहतःस्नेहःसमासव्यासयोगिभिः । षड्भिस्त्रिषष्टिधासंख्यांप्राप्नोत्येकश्चकेवलः ॥ २५ ॥

समस्त (मिलेहुए) तथा व्यस्त (फैलेहुए) छः रसों के योगसे एक स्नेह ६३ प्रकार का होताहै केवल स्नेह एक प्रकारका होता है ॥ २५ ॥

एवमेषाचतुःषष्टिः स्नेहानांप्रविचारणा । सात्म्यर्तुव्याधिपुरुषान्प्रयोज्याजानताभवेत् ॥ २६ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार स्नेहों की ६४ विचारणा हैं ऋतु रोग तथा पुरुषों को देखकर इनका प्रयोग करना चाहिये ॥ २६ ॥

अहोरात्रमहःकृत्स्नमर्द्धाहञ्चप्रतीक्ष्यते । प्रधानामध्यमाह्रस्वास्नेहमात्राजरांप्रति ॥ २७ ॥

स्नेहकी प्रधान मात्रा एकदिन रात्रि में मध्यम मात्रा दिनभर में और हृस्वमात्रा दो पहर में पचती है ॥ २७ ॥

इतितिस्रःसमुद्दिष्टा मात्राःस्नेहस्य मानतः । तासांप्रयोगान्वक्ष्यामि पुरुषंपुरुषंप्रति ॥ २८ ॥

यह तीन स्नेहकी मात्रा के प्रमाण कहेगये अब किस पुरुष को कौन मात्रा उचितहै उसे कहते हैं ॥ २८ ॥

प्रभूतस्नेहनित्याये क्षुत्पिपासासहानराः । पावकश्चोत्तमबलोयेषांयेचोत्तमाबले ॥ २९ ॥

नित्यही बहुत स्नेह सेवन करने वाले भूख तथा प्यास के सहने वाले तीक्ष्ण जठराग्नि वाले बहुत बलवान् ॥ २९ ॥

गुल्मिनःसर्पदष्टाश्चविसर्पोपहताश्चये । उन्मत्ताःकृच्छ्रमूत्राश्चगाढवर्चसएवच ॥ ३० ॥

गुल्मरोगी सर्प से डसेगये जहरखातवाले मतवाले मूत्रकृच्छ्र वाले कठिन मलवाले पुरुषों को ॥ ३० ॥

पिबेयुरुत्तमांमात्रां तस्याःपानेगुणान्शृणु । विकारान्शमयत्येषा शीघ्रंसम्यक्प्रयोजिता ॥ ३१ ॥

स्नेहकी उत्तम मात्रा पीनी चाहिये उत्तम मात्राके गुण यह हैं अच्छे प्रकार से प्रयोग कीगई उत्तम मात्रा शीघ्रही सब विकारों को शान्त करती है ॥ ३१ ॥

दोषानुकर्षिणीमात्रासर्वमार्गानुसारिणी । बल्यापुनर्नवकरीशरीरेन्द्रियचेतसाम् ॥ ३२ ॥

दोषों को खींचती है सब मार्गों को प्राप्त होती है बल बढ़ाती है और शरीर इन्द्रिय तथा चित्त को नवीन करती है ॥ ३२ ॥

अरुष्कस्फोटपिडिकाकण्डुपामाभिरर्दिताः । कुष्ठिनश्चप्रमूढाश्चवातशोणितकाश्चये ॥ ३३ ॥

अरुष्क (एक प्रकार का घाव) विस्फोटक पिड़िका खुजली पामा कुष्ठ प्रमेह तथा वातरक्तवाले ॥ ३३ ॥

नातिबह्वाशिनश्चैवमृदुकोष्ठास्तथैवच । पिबेयुर्मध्यमांमात्रांमध्यमाश्चापियेबले ॥ ३४ ॥

स्वल्प भोजन करनेवाले कोमल कोष्ठवाले और मध्यम बलवाले पुरुषों को स्नेहकी मध्यम मात्रा देनीचाहिये ॥ ३४ ॥

मात्रेषामन्दविभ्रंशा नचातिबलहारिणी। सुखेनचस्नेहयतिशोधनार्थेचयुज्यते ॥ ३५ ॥

यह मात्रा अल्पविरेचक है बहुत बलको नहीं घटाती और सुखपूर्वक स्निग्ध करती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है शोधन के लिये इसका प्रयोग करना चाहिये ॥ ३५ ॥

येतुवृद्धाश्चबालाश्च सुकुमाराःसुखोचिताः। रिक्तकोष्ठत्वमहितंयेषांमन्दाग्नयश्चये ॥ ३६ ॥

वृद्ध बालक सुकुमार सुख के अभ्यासी विरेचन के द्वारा जिनका कोष्ठ शुद्ध करना उचित नहीं है मन्दाग्निवाले ॥ ३६ ॥

ज्वरातीसारकासश्च येषांचिरसमुत्थिताः। स्नेहमात्रांपिबेयुस्तेह्रस्वांयेचावरावले ॥ ३७ ॥

ज्वर अतीसार तथा खाँसी जिनके यह रोग पुराने होगयेहैं और हीन बलवाले ऐसे पुरुषों को स्नेहकी ह्रस्व मात्रा देनी चाहिये॥३७॥

परिहारेसुखाचैषा मात्रास्नेहनबृंहणी। वृष्याबल्यानिराबाधाचिरञ्चाप्यनुवर्त्तते ॥ ३८ ॥

यह मात्रा परिहारमें सुख देनेवाली स्नेहन धातु वीर्य्य तथा बलकी बढ़ानेवाली बाधारहित और बहुत कालतक सेवन करने के योग्य होती है ॥ ३८ ॥

वातपित्तप्रकृतयो वातपित्तविकारिणः। चक्षुःकामाःक्षताःक्षीणावृद्धाबालास्तथाबलाः ॥ ३९ ॥

वात तथा पित्त की प्रकृति वाले वात तथा पित्त के रोग वाले न्यून दृष्टिवाले क्षीण वृद्ध बालक निर्बल ॥ ३९ ॥

आयुःप्रकर्षकामाश्च बलवर्णस्वरार्थिनः। पुष्टिकामाःप्रजाकामाः सौकुमार्य्यार्थिनश्चये ॥ ४० ॥

दीर्घायु चाहनेवाले बल वर्ण स्वर पुष्टता सन्तान सुकुमारता इनके चाहने वाले ॥४०॥

दीप्त्योजःस्मृतिमेधाग्निबुद्धीन्द्रियबलार्थिनः। पिबेयुःसर्पिरार्त्ताश्च दाहशस्त्रविषाग्निभिः ॥ ४१ ॥

दीप्ति ओज स्मृति मेधा अग्नि बुद्धि तथा इन्द्रियों के बलको चाहनेवाले और दाह शस्त्र विष तथा अग्नि से पीड़ित मनुष्यों को घृत पान करना चाहिये ॥ ४१ ॥

प्रवृद्धश्लेष्ममेदस्काश्चलस्थूलगलोदराः। वातव्याधिभिराविष्टावातप्रकृतयश्चये ॥ ४२ ॥

अधिक कफ तथा मेदावाले चंचल तथा स्थूलगला और उदरवाले वातरोगों से पीड़ित वातप्रकृतिवाले ॥ ४२ ॥

बलंतनुत्वंलघुतां दृढतांस्थिरगात्रताम्। स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वक्तांयेचकांक्षन्तिदेहिनः ॥ ४३ ॥

बल सूक्ष्मता लघुता दृढ़ता अंगों की स्थिरता त्वचाकी स्निग्धता श्लक्ष्णता तथा सूक्ष्मताके चाहनेवाले ॥ ४३ ॥

कृमिकोष्ठाः क्रूरकोष्ठास्तथानाडीभिरर्दिताः। पिबेयुःशीतलेकालेतैलंतैलोचिताश्चये ॥ ४४ ॥

कृमियुक्त तथा कठोर कोष्ठवाले और नासूरवाले पुरुषों को शीतकालमें तेल पीना चाहिये और तेलके अभ्यासवालों को भी तेल पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातातपसहायेच रूक्षाभाराध्वकर्षि ताः । संशुष्करेतोरुधिरानिष्फीत कफमेदसः ॥ ४५ ॥

वायु तथा धूपके सहनेवाले रूखे भार तथा मार्ग से पीड़ित शुष्क रुधिर तथा वीर्य्यवाले यून कफ तथा मेदवाले ॥ ४५ ॥

अस्थिसन्धिशिरास्नायुमर्मकोष्ठम हारुजः । बलवान्मारुतोयेषांखानि चावृत्यतिष्ठति ॥ ४६ ॥

हड्डी सन्धि शिरा स्नायु मर्म तथा कोष्ठ में अत्यन्त पीड़ावाले बलवान् वायुके द्वाराभरे हुए छिद्रवाले ॥ ४६ ॥

महच्चाग्निबलंयेषांवसासात्म्याश्च येनराः । तेषांस्नेहयितव्यानांवसा पानंविधीयते ॥ ४७ ॥

तीक्ष्ण अग्निवाले और चरबी के अभ्यास वाले मनुष्यों को जो स्नेह पिलानाहोय तो चरवी पिलावे ॥ ४७ ॥

दीप्ताग्नयःक्लेशसहाघस्मराः स्नेह सेविनः । वातार्त्ताःक्रूरकोष्ठाश्च स्नेह्यामज्जानमाप्नुयुः ॥ ४८ ॥

दीप्ताग्निवाले क्लेश सहने वाले बहुत भोजन करनेवाले स्नेह के सेवन करनेवाले वात से पीड़ित तथा कठिन कोष्ठवाले मनुष्य को जो स्नेह पिलाना होय तो मज्जा पिलावे ॥ ४८ ॥

येभ्योयेभ्योहितोयोयः स्नेहःसपरि कीर्तितः । स्नेहनस्यप्रकर्षौतुसप्तरा त्रत्रिरात्रकौ ॥ ४९ ॥

जिस जिस को जौन २ सा स्नेह हित है सो कहागया स्नेह का सातरात्रि अथवा तीन रात्रि प्रकर्ष होता है ॥ ४९ ॥

स्वेद्याःशोधयितव्याश्च रूक्षवात विकारिणः । व्यायाममद्यस्त्रीनि त्याःस्नेह्याःस्युर्येचचिन्तकाः ५०॥

स्वेदके योग्य शोधन के योग्य रूखे वातरोगी व्यायाम मद्य तथा स्त्रियों का नित्य सेवन करने वाले और चिन्ताग्रस्त मनुष्यों को स्नेहपान कराना चाहिये ॥ ५० ॥

संशोधनादृतेयेषां रूक्षणंसंप्रवक्ष्य ते । नतेषांस्नेहनंशस्तमुत्सन्नकफ मेदसाम् ॥ ५१ ॥

शोधनके बिना रूक्षण के योग्य अधिक कफ तथा मेदवालों को स्नेहपान अच्छा नहीं है ॥ ५१ ॥

अभिष्यन्दाननगुदानित्यमन्दाग्न यश्चये । तृषामूर्च्छापरीताश्चग र्भिण्यस्तालुशोषिणः ॥ ५२ ॥

मुख तथा गुदाके रोगवाले नित्य मन्दाग्निवाले तृषा तथा मूर्च्छा से युक्त गर्भिणी स्त्री तालु शोषवाले ॥ ५२ ॥

अन्नद्विषश्छर्दयन्तो जठरामगरार्दि ताः । दुर्वलाश्चप्रतान्ताश्चस्नेह ग्लानामदातुराः ॥ ५३ ॥

अरुचि छर्दि तथा ग्लानिवाले उदर और आमाशय में रोगवाले दुर्बल स्नेह से ग्लान और मतवाले ॥ ५३ ॥

नस्नेह्यावर्त्तमानेषुननस्तोवस्तिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मसु । स्नेहपानात्प्रजायन्तेतेषांरो गाःसुदारुणाः ॥ ५४ ॥

इनको स्नेहपान न कराना चाहिये इनको स्नेहपान कराने से भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं नस्य तथा वस्तिक्रिया में भी स्नेहपान निषिद्ध है ॥ ५४ ॥

पुरीषंग्रथितंरूक्षंवायुरप्रगुणोमृदुः । पक्ताखरत्वंरौक्ष्यञ्चगात्रस्यास्निग्ध लक्षणम् ॥ ५५ ॥

अंगों के स्निग्ध न होने के यह लक्षण हैं जैसे मलकी कठिनता तथा रूक्षता वायु का उलटा होना मदाग्नि और शरीरका खुरखुरापन तथा रूखा होना ॥ ५५ ॥

वातानुलोम्यंदीप्तोग्निर्वर्चः स्निग्ध मसंहतम् । मार्दवंस्निग्धताचाङ्गे स्निग्धानामुपजायते ॥ ५६ ॥

अच्छे प्रकार स्नेहपान करने से वायु का अपने मार्ग के अनुसारहोना मल का स्निग्ध तथा अकठोर होना अग्नि का दीप्त होना और अंगोंका स्निग्ध तथा कोमल होना यह लक्षण होते हैं ॥ ५६ ॥

पाण्डुतागौरवंजाड्यंपुरीषस्याविप कता । तन्द्रीररुचिरुत्क्लेशःस्याद तिस्निग्धलक्षणम् ॥ ५७ ॥

पाण्डुता भारीपन जड़ता मलका न पकना तन्द्रा अरुचि और मतली यह अधिक स्नेहपान के लक्षण हैं ॥ ५७ ॥

द्रवोष्णमनभिष्यन्दिभोज्यमन्नं प्र माणतः । नातिस्निग्धमसंकीर्णं श्वःस्नेहंपातुमिच्छता ॥ ५८ ॥

स्नेहपान के एक दिन पहले पतला उष्ण अभिष्यन्दरहित अल्प स्निग्ध असंकीर्ण (कोमल) तथा थोड़ा अन्न भोजनकरे॥५८॥

पिबेत्संशमनंस्नेहमन्नकाले प्रकां क्षितः । शुद्ध्यर्थंपुनराहारेनैशेजी र्णेपिबेन्नरः ॥ ५९ ॥

भोजन के समय बहुत भूख लगने पर संशमन स्नेह पिये और रात्रिको कियेहुए भोजन के परिपाकहोजाने पर शोधन के लिये स्नेहपिये ॥ ५९ ॥

उष्णोदकोपचारी स्याद्ब्रह्मचारीक्ष पाशयः । शकृन्मूत्रानिलोद्गारातु दीकांश्यनधारयेत् ॥ ६० ॥

स्नेहपान करके गरमजल का व्यवहार करे ब्रह्मचर्य्य करे रात्रिको सोवे मल मूत्र वायु तथा डकार के वेगको न रोके ॥ ६० ॥

व्यायाममुच्चैर्वचनंक्रोधशोकौहि मातपौ । वर्जयेदप्रवातञ्चसेवेत शयनासनम् ॥ ६१ ॥

व्यायाम जोरसे बोलना क्रोध शोक शीत तथा धूप इन सब का त्यागकरे और वायुरहित स्थरानका सेवन करे ॥ ६१ ॥

स्नेहंपीत्वानरःस्नेहंप्रतिभुञ्जानएव च । स्नेहमिथ्योपचाराद्धिजायन्ते दारुणागदाः ॥ ६२ ॥

स्नेह पीकर उसके पचे विना फिर स्नेह पीने से स्नेहके अनुचित व्यवहार होनें के कारण भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ६२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेण स्निह्यत्यच्छोपसेवया। स्निह्यति क्रूरकोष्ठस्तु सप्तरात्रेण मानवः॥ ६३॥

केवल स्नेहपान करने से शुद्ध कोष्ठवाला तीन रात्रिमें और क्रूर कोष्ठवाला सात रात्रि में स्निग्ध होता है॥ ६३॥

गुडमिक्षुरसं मस्तु क्षीरमुल्लोडितं दधि। पायसं कृसरं सर्पिः काश्मर्य्यत्रिफलारसम्॥ ६४॥

गुड़ ईखकारस दहीका तोड़ दूध उल्लोड़ित दही खीर खिचड़ी घी खंभारी त्रिफले का रस॥ ६४॥

द्राक्षारसं पीलुरसं जलमुष्णमथापि वा। मद्यं वा तरुणं पीत्वा मृदुकोष्ठो विरिच्यते॥ ६५॥

दाखकारस पीलूकारस उष्णजल अथवा नवीनमद्य को पीकर कोमल कोष्ठवाले का विरेचन होताहै॥ ६५॥

विरेचयन्ति नैतानि क्रूरकोष्ठं कदाचन। भवति क्रूरकोष्ठस्य ग्रहण्यत्युल्वणानिलाः॥ ६६॥

परन्तु इन से क्रूर कोष्ठ वाले का विरेचन कभी नहीं होताहै क्योंकि क्रूर कोष्ठवाले की ग्रहणी में अधिक वायु होती है॥ ६६॥

उदीर्णपित्ताल्पकफा ग्रहणी मन्दमारुता। मृदुकोष्ठस्य तस्मात्स सुविरेच्यो नरः स्मृतः॥ ६७॥

अधिक पित्तवाली और न्यून कफ तथा वायुवाली ग्रहणी जिसकी होती है उसका कोष्ठ कोमल होता है इसी से उसका विरेचन सुखपूर्वक होताहै॥ ६७॥

उदीर्णपित्ता ग्रहणी यस्य चाग्निबलं महत्। भस्मीभवति तस्याशु स्नेहः पीतोऽग्नितेजसा॥ ६८॥

जिसकी ग्रहणी अधिक पित्तवाली होय तथा अग्निका बल अधिक होय उसका पान कियाहुआ स्नेह अग्निके तेजसे शीघ्रही भस्म होजाता है॥ ६८॥

स जग्ध्वा स्नेहमात्रां तामोजः प्रक्षालयन्बली। स्नेहाग्निरुत्तमां तृष्णां सोपसर्गामुदीरयेत्॥ ६९॥

फिर स्नेहकी मात्रा को खाकर ओज को क्षीण करतीहुई बलवान् स्नेहकी अग्नि उपद्रव सहित बड़ी तृषाको उत्पन्न करताहै॥ ६९॥

नालं स्नेहसमृद्धस्य शमायान्नं सुगुर्वपि॥ स चेत्सुशीतं सलिलं नासादयति दह्यते॥ ७०॥

बहुत भारी अन्न खाने से भी वह अग्नि शान्त नहीं होती यदि उस समय शीतल जल न मिले तो इस तरह भस्म होजाता है॥ ७०॥

यथैवाशीविषः कक्षमध्यगः स्वविषाग्निना। अजीर्णे यदि तु स्नेहे तृष्णास्याच्छर्दयेद्भिषक्॥ ७१॥

जैसे तृणों के बीच में मास हुआ सर्प अपने विषकी अग्निसे भस्म होताहै जो स्नेह के विना पचे तृषा उत्पन्न होय तो वैद्य को वमन कराना चाहिये॥ ७१॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतोदकंपुनःपीत्वा भुक्त्वारूक्षा न्नमुल्लिखेत्। नसर्पिःकेवलेपित्ते पेयंसामेविशेषतः ॥ ७२ ॥

और शीतल जल पीके तथा रूखा अन्न खाके फिर वमन करे केवल पित्त में और विशेष करके आमसहित पित्त में घृत न पिये ॥ ७२ ॥

सर्वंह्यनुचरेदेहं हत्वासंज्ञाञ्चमार येत्। तन्द्रासोत्क्लेशआनाहोज्व रःस्तम्भोविसंज्ञता ॥ ७३ ॥

क्योंकि वह घी संपूर्ण शरीर में फैलके और संज्ञाको नष्ट करके मनुष्य को मारडालता है तन्द्रा मतली मल मूत्र का रुकना जड़ता बेहोशी ॥ ७३ ॥

कोष्ठानिकरडुःपाण्डुत्वंशोफार्शा स्यरुचिस्तृषा। जठरंग्रहणीदो षःस्तैमित्यंवाक्यनिग्रहः ॥ ७४ ॥

कुष्ठ खुजली पांडु सूजन बवासीर अरुचि तृषा उदर ग्रहणी स्तैमित्य (शरीरका गीले कपड़े से ढका हुआसा मालूम होना) वचन वन्द होना ॥ ७४ ॥

शूलमामप्रदोषाश्चजायतेस्नेहवि भ्रमात्। तत्राप्युल्लेखनंशस्तंस्वे दःकालप्रतीक्षणम् ॥ ७५ ॥

शूल और आमदोष यह रोग स्नेहपान के विगड़ने में होते हैं स्नेहजन्य इन रोगों में उल्लेखन श्रेष्ठ है और समयकी प्रतीक्षा करके स्वेद ॥ ७५ ॥

प्रतिप्रत्तिर्व्याधिवलंबुद्ध्वास्रंसन मेवच। तक्रारिष्टप्रयोगश्चरूक्षपा नान्नसेवनम् ॥ ७६ ॥

प्रति रोगों का बल देखकर वमन तक्र का अरिष्टपान रूखे अन्न पान का सेवन ॥ ७६ ॥

मूत्राणांत्रिफलायाश्च स्नेहव्याप त्तिभेषजम्। अकालेचाहितश्चैव मात्रयानचयोजितः ॥ ७७ ॥

मूत्र तथा त्रिफलेका रस और स्नेह के रोगों की नाश करनेवाली औषध समय के विना अहितकारीमात्रासे विपरीत बहुत सेवन कियागया ॥ ७७ ॥

स्नेहोमिथ्योपचाराच्चव्यापद्येतााति सेवितः। स्नेहात्प्रस्कन्दनोजन्तु स्त्रिरात्रोपरतःपिबेत् ॥ ७८ ॥

स्नेह मिथ्या उपचारों से रोगों को उत्पन्न करताहै स्नेहपान से प्रस्कन्दितजन को तीन रात्रि के बाद स्नेह पीना चाहिये ॥ ७८ ॥

स्नेहञ्चद्रवमुष्णञ्च त्र्यहंभुक्त्वार सौदनम्। एकाहोपरतस्तद्वद्भु क्त्वाप्रच्छर्दनंपिबेत् ॥ ७९ ॥

स्निग्ध पतले तथा उष्णमांस के रस के साथ भातको खाकर विरेचन की औषधपिये जो वमनकी औषधपीनी होय तो एक दिनका अन्तर देकर इसी प्रकार का भोजन करके पिये ॥ ७९ ॥

स्यात्तुसंशोधनार्थाय वृत्तिःस्नेहवि रिक्तवत्। स्नेहद्विषःस्नेहनित्या मृदुकोष्ठाश्चयेनराः ॥ ८० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संशमन स्नेहपान में विरेचन के समान नियम करना चाहिये स्नेह में अरुचिवाले नित्य स्नेहपान करनेवाले कोमल कोष्ठवाले ॥ ८० ॥

क्लेशासहामद्यनित्यास्तेषामिष्टाविचारणा। लावतैत्तिरिमायूरहंसवाराहकौक्कुटाः ॥ ८१ ॥

क्लेशको न सहसकनेवाले और नित्यमद्यपान करनेवाले मनुष्यों को अन्य द्रव्यों के साथ स्नेहपान कराना चाहिये लवा तीतर मोर हंस शूकर मुरगा ॥ ८१ ॥

गव्यजोरभ्रमात्स्याश्चरसाःस्वस्नेहनेहिताः। यवकोलकुलत्थाश्च स्नेहाःसगुडशर्कराः ॥ ८२ ॥

गौ बकरा मेढ़ा और मछली इनके मांस का रस स्नेहके साथ हितकारी है यव बेर कुलथी गुड़ शक्कर ॥ ८२ ॥

दाडिमंदधिसव्योषं रससंयोगसंग्रहः। स्नेहयन्तितिलाःपूर्वंजग्धाः सस्नेहफाणिताः ॥ ८३ ॥

अनार दही और त्रिकटु इनके रसके साथ स्नेहपान करना उचित है भोजनके पहले स्नेह तथा फाणित (राब) के साथ तिलों को खाने से ॥ ८३ ॥

कृशराश्च बहुस्नेहास्तिलकाम्बलिकास्तथा॥ फाणितंशृङ्गवेरश्च तैलञ्चसुरयासह ॥ ८४ ॥

और खिचड़ी काम्बलिक तथा तिल बहुत स्नेह के साथ खाने से स्नेहन होताहै मद्य के साथ राब सोंठ तथा तेल को और घृतयुक्त मांसके रस को ॥ ८४ ॥

पिबेद्रूक्षोघृतैर्मांसैर्जीर्णेऽश्नीयाच्चभोजनम्। तैलंसुरायामण्डेनवसांमज्जानमेववा ॥ ८५ ॥

रूक्ष पुरुष पिये फिर इनके पचजानेपर घृत व मांसके साथ भोजन करे मांड के साथ तेल को वारुणी मदिरा के साथ चरबी अथवा मज्जा को ॥ ८५ ॥

पिबेत्सफाणितंक्षीरंनरःस्निह्यतिवातिकः। धारोष्णंस्नेहसंयुक्तंपीत्वा सलवणंपयः ॥ ८६ ॥

और राबके साथ दूधके पीनेसे वातप्रकृति वाला मनुष्य स्निग्ध होता है स्नेह तथा शकरयुक्त धारोष्ण दूध को पीकर ॥ ८६ ॥

नरःस्निह्यतिपीत्वावासरंदध्नःसफाणितम्। पाञ्चप्रसृतिकीपेयापायसोमाषमिश्रकः ॥ ८७ ॥

अथवा राबके साथ दही की मलाई को खाकर मनुष्य स्निग्ध होता है पांचप्रसृतिकी पेया और बहुत स्नेहयुक्त उर्द मिली हुई ॥ ८७ ॥

क्षीरसिद्धोबहुस्नेहः स्नेहयेदचिरान्नरम्। सर्पिस्तैलवसामज्जातण्डुलप्रसृतैःकृता ॥ ८८ ॥

दूधकी खीर पीनेसे मनुष्य शीघ्रही स्निग्ध होताहै घी तेल चरबी मज्जा तथा चांवल इनको एक २ पसर लेकर पाककीहुई ॥ ८८ ॥

पाञ्चप्रसृतिकीपेया पेयास्नेहनमि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

च्छता। ग्राम्यानूपोदकंमांसंगुडं दधिपयस्तिलान् ॥ ८९ ॥

पेया को पांचप्रसृतिकी कहते हैं स्नेहन का चाहनेवाला इसको पिये ग्रामीण पशु अनूप देश के पशु तथा जलके जीव इनका मांस गुड़ दही दूध और तिल ॥ ८९ ॥

कुष्ठीशोषीप्रमेहीच स्नेहनेनप्रयोजयेत्। स्नेहैर्यथास्वंतान्सिद्धैः स्नेहयेदविकारिभिः ॥ ९० ॥

इनको कुष्ठ सूजन तथा प्रमेहवाले स्नेहन में व्यवहार न करें वह अपने २ रोगों को हितकारी विकाररहित औषधियों के साथ स्नेह को सिद्ध करके पानकरें ॥ ९० ॥

पिप्पलीभिर्हरीतक्यासिद्धैस्त्रिफलयापित्रा। द्राक्षामलकयूषाभ्यांदध्नाचाम्लेनसाधयेत् ॥ ९१ ॥

पीपल तथा हड़के साथ त्रिफला के साथ दाख तथा आमले के यूष के साथ और दही तथा खटाई के साथ सिद्धकरै ॥ ९१ ॥

व्योषगर्भंभिषक्स्नेहं पीत्वास्निह्यतितन्नरः। यवलोककुलत्थानांरसःक्षीरंसुरादधि ॥ ९२ ॥

त्रिकटु के साथ स्नेह को पीके कुष्ठादि रोग वाले स्निग्ध होते हैं यव बेर तथा कुलथी का रस दूध मदिरा दही ॥ ९२ ॥

क्षारःसर्पिश्चतत्सिद्धंस्नेहनीयंघृतोत्तमम्। तैलमज्जावसासर्पिर्बदरीत्रिफलारसैः ॥ ९३ ॥

और क्षार इन के द्वारा पाक कियाहुआ घी बहुत उत्तम स्नेहन है बेर तथा त्रिफला के रस के साथ तेल मज्जा चरबी तथा घीको पाक करके ॥ ९३ ॥

योनिशुक्रप्रदोषेषु साधयित्वाप्रयोजयेत्। गृह्णात्यम्बुयथावस्त्रंप्रस्रवत्यधिकंयथा ॥ ९४ ॥

योनि और वीर्य्य के रोगों में व्यवहार करे जैसे वस्त्र जल को ग्रहण करता है और जल अधिक होय तो निचुड़ जाताहै ॥ ९४ ॥

यथाग्निर्जीर्य्यतिस्नेहस्तथास्रवतिचाधिकः। यथावाक्लेद्यमृत्पिण्डमासिक्तंत्वरयाजलम् ॥ ९५ ॥

इसी प्रकार अग्नि पिये हुए स्नेहको पचातीहै यदि वह स्नेह अधिक होय तो वह जाता है जैसे क्लेद्य (भिगोने के योग्य) मृत्पिण्ड पर शीघ्रही जल छोड़ने से जल वह जाता है ॥ ९५ ॥

स्रवतिस्रंसतेस्नेहस्तथात्वरितसेवितः। लवणोपहिताःस्नेहाःस्नेहयन्त्यचिरान्नरम् ॥ ९६ ॥

उसी प्रकार शीघ्रता से पान किया गया स्नेह मलादि को विना निकाले निकल जाताहै लवणयुक्त स्नेह मनुष्य को शीघ्रही स्निग्ध करता है ॥ ९६ ॥

तद्ध्यभिष्यन्द्यरूक्षञ्च सूक्ष्ममुष्णंव्यवायिच। स्नेहमग्रेप्रयुञ्जीततःस्वेदमनन्तरम् ॥ स्नेहस्वेदोपपन्नस्यसंशोधनमथेतरमिति ॥ ९७ ॥

अभिष्यन्दी रूक्षतारहित सूक्ष्म उष्ण तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यवायी (शरीर में अपने गुण को व्याप्त करके परिपाक होनेवाला) होता है और पहले स्नेहपान करावे फिर स्वेदन करे और स्वेदन तथा स्नेहन के उपरान्त संशोधन (वमन विरेचनादि) का प्रयोगकरे॥९७॥

तत्रश्लोकः॥

स्नेहविधिःकृत्स्नव्यापत्सिद्धिःसभेषजा। यथाप्रश्नंभगवताव्याहृतं चान्द्रभागिना॥९८॥

स्नेहाध्यायस्त्रयोदशःसमाप्तः॥१३॥

उस में यह श्लोक है॥ इस स्नेहाध्याय में अग्निवेशके प्रश्नके अनुसार आत्रेयजी ने स्नेह और स्नेह की सब विधि स्नेहपान से भये रोग और इन की औषधि यह सबबातें कहीं॥९८॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंस्नेहाध्यायेंनामतेरहवाँअध्यायसमाप्तहुआ १३॥

चौदहवां अध्याय॥

अथातःस्वेदाध्यायं व्याख्यास्यामः। इति हस्माह भगवानात्रेयः। अतःस्वेदाःप्रवक्ष्यन्ते यैर्यथावत्प्रयोजितैः। स्वेदसाध्याःप्रशाम्यन्तिगदावातकफात्मकाः॥१॥

इसके उपरान्त स्वेदाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा इसके उपरान्त स्वेदों का वर्णन करते हैं जिन के विधिपूर्वक व्यवहार से स्वेदसाध्य वात कफज रोग शान्त होतेहैं॥१॥

स्नेहपूर्वंप्रयुक्तेनस्वेदेनावर्जितेऽनिले। पुरीषमूत्ररेतांसिनसज्जन्ति कथञ्चन॥२॥

पहले स्नेहन करके पीछेसे व्यवहार किये गये स्वेदन से वायु के शान्त होजानेपर मल मूत्र तथा वीर्य्य कभी नहीं रुकते॥२॥

शुष्काण्यपिहिकाष्ठानिस्नेहस्वेदोपपादनैः। नमयन्तियथान्यायं किंपुनर्जीवतोनरान्॥३॥

सूखे काष्ठभी स्नेहन और स्वेदन से कोमल होजाते हैं फिर जीवधारी मनुष्यों को इन से गुण होने में क्या आश्चर्य्य है॥३॥

रोगर्तुव्याधितापेक्षोनात्युष्णोऽतिमृदुर्नच। द्रव्यवान्कल्पितोदेशे स्वेदःकार्य्यकरोमतः॥४॥

रोग ऋतु तथा रोगी के अनुसार व्यवहार कियागया न बहुत उष्ण तथा न बहुत कोमल द्रव्यवाला और उचित स्थानमें प्रयोग कियागया स्वेद हितकारी होताहै॥४॥

व्याधौशीतेशरीरेच महान्स्वेदोमहाबले। दुर्बलेदुर्बलःस्वेदोमध्यमे मध्यमोहितः॥५॥

जिस रोग में शरीर शीतल होजाय उसमें जो रोगीका शरीर बलवान् होय तो महास्वेद व जो दुर्बल होय तो दुर्बल स्वेद और मध्यम होय तो मध्यम स्वेद देना हितकारी है॥५॥

वा[illegible]श्लेष्मणिवातेवा कफेवास्वेद इष्यते। स्निग्धरूक्षस्तथास्निग्धो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऽरूक्षश्चाप्युपकल्पितः ॥ ६ ॥

वात कफजनित रोग में स्निग्ध तथा रूक्ष स्वेद वातज रोग में स्निग्ध स्वेद और कफज रोग में रूक्ष स्वेद का प्रयोग करना चाहिये ॥ ६ ॥

आमाशयगतेवाते कफेपक्वाशयाश्रिते । रूक्षपूर्वोहितःस्वेदःस्नेहपूर्वस्तथैवच ॥ ७ ॥

वायु के आमाशय में प्राप्त होने पर पहले रूक्ष स्वेद देना चाहिये और कफके पक्वाशय में प्राप्त होनेपर पहले स्निग्ध स्वेद देना चाहिये ॥ ७ ॥

वृषणौहृदयंदृष्टीस्वेदयेन्मृदुनैववा । मध्यमंवंक्षणौशेषमङ्गावयवमिष्टतः ॥ ८ ॥

अण्डकोश हृदय तथा नेत्रमें स्वेद न देवे और जो देवे तो कोमल देवे वंक्षणमें मध्यम स्वेद देवे और शेष अंगों में जैसा स्वेद आवश्यक होवे वैसा देवे ॥ ८ ॥

सुशुद्धैर्नक्तकैःपिण्ड्यागोधूमानामथापिवा । पद्मोत्पलपलाशैर्वास्वेद्यःसंवृत्यचक्षुषी ॥ ९ ॥

शुद्ध चिथड़ों से गेहूंके आटेकी लोईसे अथवा कमल तथा उत्पल और ढाक के पत्तों से ढककर नेत्रोंमें स्वेद देना चाहिये ॥ ९ ॥

मुक्तावलीभिःशीताभिः शीतलैर्भाजनैरपि । जलार्द्रैर्जलजैर्हस्तैःस्विद्यतोहृदयंस्पृशेत् ॥ १० ॥

जिसे स्वेद दिया गयाहोय उसके हृदयको ठंढी मोतियों की माला शीतल पात्र कमल तथा जलसे गीले हाथोंकेद्वारा स्पर्शकरे १०॥

शीतशूलव्युपरमेस्तम्भगौरवनिग्रहे । सञ्जातेमार्दवेस्वेदेस्वेदनाद्विरतिर्मता ॥ ११ ॥

स्वेद देते देते शीत शूल जड़ता तथा शरीर के गौरव के मिटजाने पर स्वेद देना बन्द करदेवे ॥ ११ ॥

पित्तप्रकोपोमूर्च्छाच शरीरसदनंतृषा । दाहस्वेदाङ्गदौर्बल्यमतिस्विन्नस्यलक्षणम् ॥ १२ ॥

पित्तका कोप मूर्च्छा शरीर का टूटना तृषा दाह स्वेद अंगोंकी दुर्बलता यह अधिक स्वेदन के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

उक्तस्तस्याशितीयेयोग्रैष्मिकःसर्वशोविधिः । सोऽतिस्विन्नस्यकर्त्तव्योमधुरःस्निग्धशीतलः॥१३॥

तस्याशितीयनाम अध्याय में जो ग्रीष्म ऋतु की विधि कहीगई वह सम्पूर्ण मधुर स्निग्ध तथा शीतलविधि अधिक स्वेदवाले कोभी करनी चाहिये ॥ १३ ॥

कषायमद्यनित्यानांगर्भिण्यारक्तपित्तिनाम् । पित्तिनांसातिसाराणांरूक्षाणांमधुमेहिनाम् ॥ १४ ॥

कषाय तथा मद्यके नित्य सेवन करनेवाले गर्भिणी स्त्री रक्तपित्तवाले पित्तप्रकृतिवाले अतीसारवाले रूखे मधुप्रमेहवाले ॥ १४ ॥

विदग्धभ्रष्टनाडीनांविषमद्यविकारि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णाम्। श्रान्तानांनष्टसंज्ञानांस्थूलानांपित्तप्रमेहिनाम् ॥ १५ ॥

विदग्ध तथा भ्रष्ट नाड़ीवाले विष तथा मद्य के विकारवाले श्रान्त संज्ञारहित स्थूल पित्तज प्रमेहवाले ॥ १५ ॥

तृष्यतांक्षुधितानाञ्चक्रुद्धानांशोचतामपि। कामल्युदरिणाञ्चैवक्षतानामाढ्यरोगिणाम् ॥१६॥

प्यासे भूखे क्रुद्ध शोकयुक्त कामला तथा उदर रोगवाले घाववाले आढ्यवातवाले ॥ १६ ॥

दुर्बलातिविशुष्काणामुपक्षीणौजसांतथा। भिषक्तैमिरिकाणाञ्चन स्वेदमवतारयेत् ॥ १७ ॥

दुर्बल अत्यन्त शुष्क शरीर वाले क्षीण ओजवाले और तिमिरवाले इन को वैद्य स्वेदन न करावै ॥ १७ ॥

प्रतिश्यायेचकासेचहिक्काश्वासेष्वलाघवे। कर्णमन्यांशिरःशूलेस्वरभेदेगलग्रहे ॥ १८ ॥

प्रतिश्याय (जुकाम) खांसी हिचकी श्वास गौरव कान गले के पीछे की नस तथा शिरकी पीड़ावाले स्वरभंग गलग्रह ॥ १८ ॥

अर्दितैकाङ्गसर्वाङ्गपक्षाघातेविनामके। कोष्ठानाहविबन्धेषुशुक्राघातेविजृम्भके ॥ १९ ॥

अर्दित एकाङ्ग सर्वाङ्ग पक्षाघात विनामक कोष्ठबद्ध मल तथा मूत्र का रुकना शुक्राघात जंभाई ॥ १९ ॥

पार्श्वपृष्ठकटीकुक्षि संग्रहेगृध्रसीषु च। मूत्रकृच्छ्रेमहत्त्वेचमुष्कयोरङ्गमर्दके ॥ २० ॥

पार्श्व पीठ कटि तथा कुक्षिका जकड़ना गृध्रसी मूत्रकृच्छ्र अंडकोश की वृद्धि अंगमर्द ॥ २० ॥

पादोरुजानुजङ्घार्त्तिसंग्रहे श्वयथावपि। खल्लीष्वामेषुशीतेचवेपथौवातकण्टके ॥ २१ ॥

पैर जांघ घुटनी तथा पिंडलियों की पीड़ा सूजन गंजा आमदोष शीतकम्प वातकण्टक ॥ २१ ॥

सङ्कोचायामशूलेषु स्तम्भगौरवसुप्तिषु। सर्वाङ्गेषुविकारेषुस्वेदनंहितमुच्यते ॥ २२ ॥

संकोच आयाम शूल स्तंभ गौरव सुप्ति और सब अंगोंका विकार इन रोगोंमें स्वेदन हित है ॥ २२ ॥

तिलमाषकुलत्थाम्लघृततैलामिषौदनैः। पायसैःकृसरैर्मांसैःपिण्डस्वेदंप्रयोजयेत् ॥ २३ ॥

तिल उर्द कुलथी घी तेल मांस तथा भात और खीर खिचड़ी तथा मांस के द्वारा पिंड स्वेद का प्रयोग करना चाहिये ॥ २३ ॥

गोखरोष्ट्रवराहाश्वशकृद्भिः सतुषैर्यवैः। सिकतापांशुपाषाणकरीषायसपूटकैः ॥ २४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गौ गधा ऊंट शूकर तथा घोड़ा इनकी विष्ठा से भूसीसहित यवोंसे और बालू धूल पाषाण शुष्कगोबर का चूर्ण तथा लोह चूर्ण ॥ २४ ॥

श्लैष्मिकान्स्वेदयेत्पूर्वैर्वातिकान् समुपाचरेत् । द्रव्याण्येतानिशस्यन्तेयथास्वंप्रस्तरेष्वपि ॥ २५ ॥

इनकी पोटली से कफज रोगों में स्वेदन करना चाहिये वातज रोगों में भी पूर्वोक्त द्रव्यों से स्वेदन करना चाहिये और प्रस्तर स्वेद में भी रोगके अनुसार इन औषधियों का व्यवहार करना चाहिये ॥ २५ ॥

भूगृहेषुचजेन्ताकेषूष्णगर्भगृहेषुच। विधूमाङ्गारतप्तेष्वभ्यक्तःस्विद्यतिना सुखम् ॥ २६ ॥

धूमरहित अंगारोंसे तप्त भूगृह जेन्ताक और उष्णगर्भ गृहमें तेलआदि लगायेहुए मनुष्यका सुखपूर्वक स्वेदन होताहै ॥ २६ ॥

ग्राम्यानूपौदकंमांसं पयोबस्तशिरस्तथा। वराहमध्यपित्तासृक्स्नेहवत्तिलतण्डुलान् ॥ २७ ॥

ग्राम अनूपदेश तथा जल के जीवों का मांस दूध बकरे का शिर सूअरका मध्य-भाग पित्त रुधिर रेंड़ी तिल तथा चावल इन का काढ़ा करके नाड़ीस्वेद देना चा-हिये ॥ २७ ॥

इत्येतानिसमुत्क्वाथ्य नाडीस्वेदंप्रयोजयेत् । देशकालविभागज्ञो युक्त्यपेक्षोभिषक्क्रमः ॥ २८ ॥

देश काल रोग तथा युक्ति का जाननेवाला वैद्य ॥ २८ ॥

वारुणामृतकैरण्डशिग्रुमूलकसर्षपैः। वासावंशकरञ्जार्कपत्रैरश्मान्तकस्यच ॥ २९ ॥

वरुणा गिलोय अरंड सहजन मूली तथा सरसों बांस करंजुआ आक अशमन्तक ॥२९॥

शोभाञ्जनकशैरीयमालतीसुरसार्जकैः। पत्रैरुत्क्वाथ्यसलिलंनाडीस्वेदंप्रयोजयेत् ॥ ३० ॥

शोभांजन कसेरू चमेली तुलसी तथा रासना इनकी पत्ती इन सबको जलमें उवालकर नाड़ी स्वेद देवे ॥ ३० ॥

भूतीकपञ्चमूलाभ्यांसुरयादधिमस्तुना। ॥ पत्रैरम्लैश्चसस्नेहैर्नाडीस्वेदं प्रयोजयेत् ॥ ३१ ॥

भूतृण पंचमूल मद्य दहीकातोड़ स्नेहयुक्त आंवले के पत्ते इन सबके द्वारा नाड़ीस्वेद देनाचाहिये ॥ ३१ ॥

एतएवचनिर्यूहाः प्रयोज्याजालकोष्ठके । स्वेदनार्थंघृतक्षीरतैलकोष्ठांश्चकारयेत् ॥ ३२ ॥

इन संपूर्ण क्वाथोंको नाँदमें स्वेदनके लिये रक्खे अथवा घी दूध तथा तेलके नाँद बनवावे ॥ ३२ ॥

गोधूमशकलैश्चूर्णैर्यवानामम्लसंयुतैः । सस्नेहकिण्वलवणैरुपनाहःप्रशस्यते ॥ ३३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गेहूं के टुकड़े यवका आटा खटाई स्नेह सुराबीज और लवण इन का लेप श्रेष्ठ है ॥ ३३ ॥

गन्धैःसुरायाःकिण्वेनजीवन्त्याशत पुष्पया । उमयाकुष्ठतैलाभ्यां युक्तयाचोपनाहयेत् ॥ ३४ ॥

गन्धक सुराबीज जीवन्ती सौंफ अलसी कूट और तेल इनका लेप करना चाहिये ॥३४॥

चर्मभिश्चोपनद्धव्यः सलोमभिरपूतिभिः । उष्णवीर्य्यैरलाभेतुकौशेयाविकशाटकैः ॥ ३५ ॥

लेपके स्थानमें सुन्दर लौंगयुक्त दुर्गन्धरहित तथा उष्ण वीर्य्यवाले चमड़े बाँधे यदि यह न मिलें तो रेशमी ऊनी अथवा अन्यलोमवाले वस्त्रोंसे बाँधे ॥ ३५ ॥

रात्रौबद्धंदिवामुञ्चेत्मुञ्चेद्रात्रौदिवा कृतम् । विदाहपरिहारार्थंस्यात् प्रकर्षस्तुशीतले ॥ ३६ ॥

रात्रिमें बाँधेहुए को दिनमें खोले और दिनमें बाँधेहुए को रात्रिमें खोले क्योंकि ऐसा करने से दाह नहीं होता परन्तु शीतकाल में अधिक समयतक रहनेसे भी कोई दोष नहीं होता ॥ ३६ ॥

सङ्करः प्रस्तरोनाडीपरिषेकोऽवगाहनम् । जेन्ताकोश्मघनःकर्षूकुटीभूःकुम्भिकैवच ॥ ३७ ॥

संकर प्रस्तर नाड़ी परिषेक अवगाहन जेन्ताक अश्मघन कर्षू कुटी भू कुंभी ॥ ३७ ॥

कूपोहोलाकइत्येतेस्वेदयन्तित्रयोदश । तान्यथावत्प्रवक्ष्यामिसर्वानेवानुपूर्वशः । इति ॥ ३८ ॥

कूप होलाक यह तेरह स्वेद हैं इन सबको क्रमपूर्वक यथावत् कहते हैं ॥ ३८ ॥

तत्रवस्त्रान्तरितैरवस्त्रान्तरितैर्वापिण्डैर्यथोक्तैरुपस्वेदनंसङ्करस्वेदइतिविद्यात् ॥ ३९ ॥

पिसीहुई औषधियों को वस्त्र में रखकर पोटली बनाके विधिपूर्वक स्वेददेनेको संकर स्वेद कहते हैं ॥ ३९ ॥

शूकशमीधान्यपुलाकानांवेशवारायसकृशरोत्कारिकादीनांवाप्रस्तरेकौशेयाविकोत्तरप्रच्छदेपञ्चाङ्गुलोरुबुकार्कपत्रप्रच्छदेवास्वभ्यक्तसर्वगात्रस्यशयानस्योपरिस्वेदनं प्रस्तरस्वेदइतिविद्यात् ॥ ४० ॥

शरीर में तैलादि लगाकर पत्थरपर रेशमी तथा ऊनी वस्त्र बिछाकर अथवा पंचांगुल अरंड तथा आकके पत्तों को बिछाकर लेटेहुए मनुष्य को शमीधान्य (उर्दआदि) शूकधान्य (यवआदि) तथा पुलाक सामाआदि के द्वारा अथवा वेशवार (गर्म मसाला जोकि शाकादि में पड़ता है) लोहा खिचड़ी तथा उत्कारिका आदिके द्वारा जो स्वेद दिया जाता है उसे प्रस्तरस्वेद कहते हैं ॥ ४० ॥

स्वेदनद्रव्याणांपुनर्मूलफलपत्रभङ्गादीनां मृगशकुनपिशितशिरःस्पदादीनामुष्णस्वभावानांवायथार्ह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्म्ललवणस्नेहोपसंहितानांमूत्रक्षीरादीनांवाकुम्भ्यांवाष्पमनद्धमन्त्या मुत्क्कथितानांनाड्याशरेषीकावंशदलकरञ्जार्कपत्रान्यतमकृतयागजाग्रहस्तसंस्थानयाव्यामदीर्घयाव्यामार्द्धदीर्घयावाव्यामचतुर्भागाष्टभागमूलाग्रपरिणाहस्रोतसासर्वतोवा तहरपत्रसंवृतच्छिद्रयाद्विस्त्रिर्वाविनामितयावातहरसिद्धस्नेहाभ्यक्तगात्रोवाष्पमपहरेत। बाष्पोह्यनूर्द्धगामीविहलचण्डवेगस्त्वचमविदहन्सुखंस्वेदयतीतिनाडीस्वेदः॥४१॥

स्वेदयोग्य औषधियों के मूल फल पत्र तथा भांग आदिकों को मृग शकुन मांस शिरसपद उष्णस्वभाव वाले पशु तथा पक्षियों को यथायोग्य खटाई नोन तथा स्नेहयुक्त मांस शिर तथा पैरको अथवा मूत्र तथा दूध आदिको जिससे भाप न निकले ऐसे घड़े में भरके काथकरे फिर सरहरी ईषीका बाँस करंजुआ तथा आक इन में से किसी पत्ती के द्वारा हाथी की सूड़ के समान आकृति वाली व्याम (फैलेहुए दोनों हाथों का मध्य) भर लंबी व्यामके बत्तीसवें भाग के तुल्य अग्रभागमें छिद्र वाली सब ओर वातनाशक पत्रों से ढके छिद्रवाली और दो अथवा तीन स्थानों में टेढ़ी हुई नली बनावे वात नाशक औषधियों से सिद्ध स्नेह को शरीर में लगाकर उस घड़े में नली को लगाकर बफारा लेवे भाफ टेढ़ी आनेवाली वे हुत वेगरहित तथा त्वचा को नहीं जलाती हुई सुखपूर्व्वक स्वेदन करती है इसे नाड़ीस्वेदन कहते हैं॥ ४१ ॥

वातिकोत्तरवातिकानांपुनर्मूलादीनामुत्क्काथैःसुखोष्णैःकुम्भीर्वायुलिकाःप्रनाडीर्वापूरयित्वा यथार्हसिद्धस्नेहाभ्यक्तगात्रंवस्त्रावच्छन्नंपरिषेचयेदितिपरिषेकः॥ ४२॥

वातिल अधिकवातिल मूलादिक सुखोष्ण काथसे कुम्भीवायुलिका नली भरदेवे और यथोचित सिद्ध हुआ स्नेह देहमें लगाकर वस्त्रसे ढकके सींचे उसे परिषेक स्वेद कहते हैं॥ ४२ ॥

वातहरोत्क्काथक्षीरतैलघृतपिशितरसोष्णसलिलकोष्ठकावनाहस्तुयथोक्तएवावगाहः॥ ४३ ॥

वातनाशक औषधियोंके काढ़े दूध तेल घी मांस रस तथा उष्ण जलको गरम २ नाँदमें भरकर उसमें अवगाहन (गोता लगाना जिसमें शिर न डूबे) करने को अवगाहन स्वेद कहते हैं॥ ४३ ॥

अथजेन्ताकंचिकीर्षुर्भूमिंपरीक्षेत। तत्रपूर्वस्यांदिश्युत्तरस्यांवा गुणवतिप्रशस्तेभूमिभागेकृष्णमृत्तिकेसुवर्णमृत्तिकेवापरीवापपुष्करिण्यादीनांजलाशयानामन्यतमस्यकूलेदक्षिणेपश्चिमेवासूपतीर्थेसमसुविभक्तभूमिभागेसप्ताष्टौवाअरत्नीरुपक्

CC-0. ... Collection. ...

म्योदकात्प्राङ्मुखमुदङ्मुखंवाभिमुखतीर्थंकूटागारंकारयेत् ॥ ४४ ॥

इसके उपरान्त जेन्ताक स्वेदकी इच्छा करनेवाला भूमिकी परीक्षाकरे तिसमें पूर्व अथवा उत्तर दिशामें गुणवान् श्रेष्ठ कृष्णवर्ण मधुर मृत्तिकायुक्त अथवा सुनहले रंगकी मृत्तिकावाले नदी तथा तलैया आदि जलाशयोंमें से किसीके दक्षिण अथवा पश्चिम किनारे व सुन्दर तीर्थपर श्रेष्ठ गुणवान् पृथ्वी के सम विभागवाले भागमें जलसे सात अथवा आठ हाथ की दूरीपर पूर्व्वमुख अथवा उत्तरमुख सम्मुख तीर्थ वाला कूटागार बनावे ॥ ४४ ॥

उत्सेधविस्तारतः परमरत्नीहिषोडशसमन्तात्सुवृत्तंमृत्कर्म्मसम्पन्नमनेकवातायनम् । अस्यकूटागारस्यान्तः समन्ततोभित्तिमरत्नीविस्तारोत्सेधांपिण्डिकांकारयेत्कपाटवर्जम्। मध्येचास्यकूटागारस्यचतुष्किष्कुमात्रपुरुषप्रमाणंमृन्मयंकन्दुसंस्थानंबहुसूक्ष्मच्छिद्रमङ्गारकोष्ठकान्तंसपिधानंकारयेत् ॥ ४५ ॥

उसकी उंचाई तथा चौड़ाई १६ हाथहोय यह सब ओर से बन्दहोय और जालीदार झरोखे वाला होय इस कूटागारके भीतर हाथभर ऊंची तथा चौड़ी चौंतरिया दीवाल में लगीहुई चारोंओर बनावे कूटागार के भीतर किवाड़ों से रहित चार हाथ पर्य्यन्त दो आदमी गहरा बहुत छिद्रयुक्त कढ़ाई के समान ढक्कनयुक्त तंदूर बनावे ॥ ४५ ॥

तत्रखादिराणामाश्वकर्णादीनांवाकाष्ठानां पूरयित्वाप्रदीपयेत् । सयदाजानीयात्साधुदग्धानिकाष्ठानिगतधूमानिअवतप्तञ्चकेवलमग्निनातदग्निगृहंस्वेदयोग्येनचोष्मणायुक्तमिति ॥ ४६ ॥

उस में कत्थे तथा पवित्र काष्ठों को भरकर जलादे जब काष्ठ अच्छे प्रकार से जल जांय धूम न रहै घर अग्नि से उष्ण होजाय और स्वेद के योग्य ऊष्मा से युक्त होय ॥ ४६ ॥

तत्रैनंपुरुषंवातहराभ्यक्तगात्रंवस्त्रावच्छन्नंप्रवेशयेत्प्रवेशयंश्चैनमनुशिष्यात् । सौम्यप्रविशकल्याणायारोग्यायचेति । प्रविश्यचैनांपिण्डिकामधिरुह्यपार्श्वापरपार्श्वाभ्यांयथासुखंशयीथाः नचत्वयास्वेदमूर्च्छापरीतेनापिसतापिण्डिकैषाविमोक्तव्यात्माआप्राणोच्छ्वासात् । भ्रश्यमानोह्यतः पिण्डिकावकाशात्द्वारमनधिगच्छन्स्वेदमूर्च्छापरीततयासद्यःप्राणान्जह्याः ॥ ४७ ॥

तब वातनाशक तैलादि लगाकर वस्त्र ओढ़े हुए रोगी को उसमें घुसने की आज्ञा देवे उस समय उस को यह शिक्षा देवे कि हे सौम्य कल्याण तथा आरोग्य के लिये तुम इस में प्रवेशकरो और प्रवेश करके इस चौंतरिया पर चढ़के इस के जिस ओर चाहो उसीओर इसपर शयनकरो परन्तु स्वेद तथा

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छा से युक्त होकर भी जब तक शरीर में प्राण रहैं तब तक इस चौंतरिया को न छोड़ना क्योंकि इससे गिरकर द्वारपर न आके स्वेद तथा मूर्च्छा से युक्त होने के कारण शीघ्रही मरजाओगे॥ ४७॥

तस्मात्पिण्डिकामेनांनकथञ्चनमुञ्चेथाःत्वंयदाजानीयाःविगताभिष्यन्दमात्मानं सम्यक्प्रस्रुतस्वेदपिच्छंसर्वस्रोतोविमुक्तंलघुभूतमपगतविबन्धस्तम्भसुप्तिवेदनागौरवमिति। ततस्तांपिण्डिकामनुसरन्द्वारंप्रपद्येथाः। निष्क्रम्यचनसहसाचक्षुषोः परिपालनार्थंशीतोदकमुपस्पृशेथाः। अपगतसन्तापक्लमस्तु मुहूर्त्तात्सुखोष्णेनवारिणायथान्यायंपरिषिक्तोऽश्नीयाइतिजेन्ताकस्वेदः॥ ४८॥

इससे इसको कदापि न छोड़ना इस के उपरान्त स्वेद लेके जब जाना कि मैं क्लेदकारी दोषरहित तथा अच्छे प्रकार वहेहुए स्वेद वाला होगया सब स्रोत खुलगये हलकापन आगया विबन्धस्तम्भ सुप्त पीड़ा तथा भारीपन नष्ट होगया तब उसी चौंतरिया के मार्ग से बाहर चले आना बाहर निकलकर जल्दी से शीतल जलमें प्रवेश न करना क्योंकि इससे नेत्रों में दोष होता है फिर सन्ताप तथा ग्लानिके दूर होजानेपर मुहूर्त्तभर उष्ण जलसे अपने को सिंचवाकर भोजन करना यह जेन्ताक स्वेद है॥ ४८॥

शयानस्यप्रमाणेन घनामश्ममयींशिलाम्।तापयित्वामारुतघ्नैर्दारुभिःसंप्रदीपितैः४६ व्यपोह्यसर्वानङ्गारान्प्रोक्ष्यचैवोष्णवारिणा। तांशिलामथकुर्वीत कौषेयाविकसंस्तराम्५० तस्यांस्वभ्यक्तसर्वाङ्गः शयानःस्विद्यतेसुखम्। रौरवाजिनकौषेयप्रावाराद्यैस्सुसंवृतः५१इत्युक्तोऽश्मघनस्वेदःकर्षूस्वेदःप्रवक्ष्यते। खानयेच्छयनस्याधःकर्षूंस्थानविभागवित्॥ ॥ ५२॥

जिसको स्वेदन देनाहोय उसके प्रमाण के अनुसार घनी शिलाको वातनाशक काष्ठोंसे तपाकर सम्पूर्ण अंगारों को उसपरसे हटाकर उसको गरमजल से साफकरे फिर उस शिलापर रेशमी अथवा ऊनीवस्त्र बिछाकर रोगीके सम्पूर्ण शरीरमें तैलादि लगाकर उस शिलापर सुलावे और रौरव मृगचर्म रेशमी वस्त्र तथा दुपट्टा आदि उढ़ावे इससे सुखपूर्वक स्वेदन होता है यह अश्म घनस्वेद है आगे कर्षूस्वेद को कहते हैं स्थानके विभाग का जाननेवाला वैद्य रोगी के शयन के स्थान के नीचे कर्षू (एक प्रकार की भट्टी जो भीतर बड़ी होय और मुख छोटाहो) खुदवावे॥ ४९। ५२॥

दीप्तैरधूमैरङ्गारैस्तांकर्षूंपूरयेत्ततः। तस्यामुपरिशय्यायां स्वपन्स्विद्यतिनासुखम्॥ ५३॥

उसमें जलतेहुए धूम रहित अंगारे भरवादे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसके ऊपर शय्यामें सोने से मनुष्यका सुखपूर्वक स्वेदन होता है इसे कर्पूस्वेदन कहते हैं ॥ ५३ ॥

अनत्युत्सेधविस्तारां वृत्ताकारामलोचनाम्। घनभित्तिंकुटींकृत्वा कुष्ठाद्यैःसम्प्रलेपयेत् ॥ ५४ ॥

न अत्यन्त ऊंची न अत्यन्त विस्तीर्ण गोल आकारवाली झरोखों से रहित घनी दीवार वाली कुटी बनाकर उसे कूट आदि औषधियों से लिपवावे ॥ ५४ ॥

कुटीमध्येभिषक्शय्यांस्वास्तीर्णांश्चोपकल्पयेत्। प्रावाराजिनकौषेयकुत्थकम्बलगोलकैः ॥ ५५ ॥

फिर वैद्य उसके भीतर डुपट्टे मृगचर्म रेशमी वस्त्र कुथ कंबल तथा गौणकसे सजीहुई शय्या बिछवावे ॥ ५५ ॥

हसन्तिकाभिरङ्गारपूर्णाभिस्ताश्चसर्वशः। परिवार्य्यान्तरारोहेदभ्यक्तःस्विद्यतेसुखम् ॥ ५६ ॥

और जलतेहुए अंगारों से पूर्ण अंगीठियां उसके चारोंओर रक्खे फिर रोगी शरीरमें स्नेह लगाकर शय्यापर चढ़े इस रीतिसे सुखपूर्वक स्वेदन होताहै इस स्वेदको कुटीस्वेद कहते हैं ॥ ५६ ॥

यएवाश्मघनस्वेदविधिर्भूमौसएवतु। प्रशस्तायांनिवातायांसमायामुपदिश्यते ॥ ५७ ॥

उत्तम वातरहित तथा समभूमिमें अश्मन्त घनस्वेदके समान जो स्वेद दियाजाता है उसे भूस्वेद कहते हैं ॥ ५७ ॥

कुम्भींवातहरक्काथपूर्णां भूमौनिखातयेत्। अर्द्धभागंत्रिभागंवाशयनंतत्रचोपरि ॥ ५८ ॥

वातनाशक क्काथसे पूर्ण हाँड़ीको आधी वा तीन हिस्से पृथ्वी में गाड़ देवे उसके ऊपर शय्या ॥ ५८ ॥

स्थापयेदासनंवापिनातिसान्द्रपरिच्छदम्। अथकुम्भ्यांसुसन्तप्तान्प्रक्षिपेदयसोगुडान् ॥ ५९ ॥

पाषाणान्वोष्मणातेनतत्स्थःस्विद्यतिनासुखम्। सुसंवृताङ्गस्त्वभ्यङ्गः स्नेहैरनिलनाशनैः ॥ ६० ॥

अथवा आसन जिसमें बहुत मोटे बिछौने न बिछेहों बिछावे इसके अनन्तर उस हाँड़ी में लोहे के या पत्थरके गरम टुकड़े छोड़नेसे जो भाफ निकलती है उससे उस शय्या अथवा आसनपर वातनाशक स्नेहों को लगाके और अच्छे प्रकार ओढ़के बैठा हुआ मनुष्य सुखपूर्वक स्विन्न होताहै इस स्वेदनको कुंभीस्वेद कहते हैं ॥ ५९ । ६० ॥

कूपंशयनविस्तारंद्विगुणञ्चापिवेधतः। देशेनिवातेशस्तेचकुर्य्यादन्तःसुमार्जितम् ॥ ६१ ॥

रोगी की शय्याके समान विस्तारवाला या विस्तार से दूना गहरा कुँआँ श्रेष्ठ तथा वातरहित स्थान में खुदवावे और उसे अच्छे प्रकार से साफकराके ॥ ६१ ॥

हस्त्यश्वगोखरोष्ट्राणांकरीषैर्दग्धपूरिते। स्ववच्छन्नःससंस्तीर्णेऽभ्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्तस्त्वयतिनासुखम् ॥ ६२ ॥

हाथी घोड़े गौ गधे तथा ऊंटकी विष्ठा उसमें भर के जला दे फिर विष्ठा के जल जाने पर उस पर शय्या बिछाकर ओढ़कर लेटने से सुखपूर्वक स्वेदन होता है इसे कूप स्वेद कहते हैं॥ ६२॥

धीतिकान्तुकरीषाणांयथोक्तानांप्रदीपयेत् । शयनांतःप्रमाणेन शय्यामुपरितत्रच ॥ ६३ ॥ सुदग्धायां विधूमायां यथोक्तामुपकल्पयेत् । स्ववच्छन्नःस्वपंस्तत्राभ्यक्तः स्विद्यतिनासुखम् ॥ ६४॥

रोगी की शय्या के तुल्य बड़े पीतलके पात्र में पहले कहेहुए हाथी आदिकी विष्ठा को रख कर जलादे फिर जब वह जल कर धूम-रहित होजाय तो उसके ऊपर पूर्वोक्त रीति से शय्या बिछावे फिर शरीर में तैलादिलगा के ओढकर उस पर लेटे उस्से सुखपूर्व्वक स्वेदन होताहै॥ ६३।६४॥

होलाकस्वेदइत्येपसुखःप्रोक्तोमहर्षिणेति । इतित्रयोदशविधःस्वेदोऽग्निगुणसंश्रयः ॥ ६५ ॥

इसे होलाक स्वेद कहते हैं इसप्रकार महर्षि करके अग्निके आधीन तेरह प्रकार के स्वेद कहेगये ॥ ६५॥

व्यायामउष्णसदनंगुरुप्रावरणंक्षुधा। बहुपानंभयक्रोधावुपनाहाहवातपाः ॥ ६६॥

व्यायाम उष्णगृह भारी ओढना क्षुधा अत्यन्त मद्यपान भय क्रोध मलेप युद्ध और धूप ॥ ६६ ॥

स्वेदयन्तिदशैतानिनरमग्निगुणादृते। इत्युक्तोद्विविधःस्वेदःसंयुक्तोऽग्निगुणैर्नच ॥ ६७ ॥ एकाङ्गसर्वाङ्गगतःस्निग्धोरूक्षस्तथैवच । इत्येतत्त्रिविधंद्वन्द्वंस्वेद मुद्दिश्यकीर्तितम् ॥ ६८ ॥

इन दशों से अग्निके बिना भी स्वेदन होताहै अग्नि के संपर्क के द्वारा और बिना अग्निके संपर्क के एक अंगका अथवा सब अंगों का और स्निग्ध अथवा रूक्ष यह स्वेदों का तीन प्रकार का द्वन्द्व कहागया ॥ ६७।६८ ॥

स्निग्धःस्वेदैरुपक्रम्यःस्विन्नःपथ्याशनोभवेत्। तदहःस्विन्नगात्रस्तुव्यायामंवर्जयेन्नरइति ॥ ६९ ॥

स्निग्ध स्वेद के उपरान्त पथ्य भोजनकरे और उस दिन व्यायामको वर्ज देवे ॥ ६९॥

तत्र श्लोकाः ।

स्वेदोयथाकार्यकरोहितोयेभ्यश्चयद्विधः॥ यत्रदेशेयथायोग्योदेशोरक्ष्यश्चयोयथा ॥ ७०॥

उसमें यह श्लोक हैं। स्वेदके उपकार जिस प्रकार का स्वेद जिनको हितकारी है स्थानभेद से स्वेदों के नियम स्वेदन में जिस प्रकार से रक्षाकरनी चाहिये ॥ ७० ॥

स्विन्नातिस्विन्नरूपाणितथातिस्विन्नभेषजम् । अस्वेद्याःस्वेदयोग्याश्चस्वेदद्रव्याणिकल्पना ॥ ७१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्विन्न तथा अतिस्विन्न के लक्षण अति-रूविन्नकी औषध स्वेदनके योग्य तथा अयोग्य स्वेदन द्रव्यों की कल्पना ॥ ७१ ॥

त्रयोदशविधःस्वेदो विनादशविधोऽग्निना। संग्रहेणचषट्स्वेदाः स्वेदाध्यायेनिदर्शिताः॥ ७२ ॥
स्वेदाधिकारे यद्वाच्यमुक्तमेतन्महर्षिणा। शिष्यैस्तुप्रतिपत्तव्यमुपदेष्टापुनर्वसुरिति॥ ७३॥

अग्नीत्यादि ॥ स्वेदाध्यायश्चतुर्दशः समाप्तः॥ १४॥

तेरह प्रकार का स्वेद अग्नि के विना दश प्रकार का स्वेद और संक्षेप से छःप्रकार का स्वेद यह सब स्वेदाध्याय में जो कुछ कहने के योग्य था सो भगवान् पुनर्वसुजी ने वर्णन किया यह सब शिष्यों को जानना चाहिये ॥ ७२ । ७३ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रेस्वेदाध्यायनामचौदहवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १४॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

अथातउपकल्पनीयमध्यायंव्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

इहखलुराजानंराजमात्रमन्यंवाविपुलद्रव्यंसंभृतसम्भारंवमनंविरेचनंवापाययितुकामेन भिषजाप्रागेवौषधपानात्सम्भाराउपकल्पनीयाभवन्ति। सम्यक्चैवहिगच्छत्यौषधे प्रतिभोगार्थाः व्यापन्नेचौषधेव्यापदःपरिसंख्यायप्रतीकारार्थाः। नहि सन्निकृष्टेकालेप्रादुर्भूतायामापदि सत्यपिक्रयाक्रयेसुकरमाशुसम्भरणमौषधानांयथावदित्येवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच॥ १॥

इसके उपरान्त उपकल्पनीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा—

जो वैद्य राजा अथवा राजाके तुल्य बहुत धनवान् किसी अन्यव्यक्ति को वमन वा विरेचनादि देना चाहै तो औषध पिलाने से पूर्व्वही सामग्री इकट्ठी करलेवे क्योंकि जो औषध पीने से कोई विकार न उत्पन्न हुआ तो वह सामग्री अन्य सुखों के अर्थ होती है और यदि विकार उत्पन्न हुआ तो विकार की शान्ति के लिये होती है थोड़े से समय में यदि कोई विकार उत्पन्न हुआ तो औषधों का मोल लेना सम्भव भी होय तथापि ठीक ठीक औषधों का शीघ्र इकट्ठा करना सहज नहीं होता इसप्रकार कहतेहुये आत्रेय जीसे अग्निवेश ने कहा कि ॥ १ ॥

ननुभगवन्नादावेवज्ञानवतातथाप्रतिविधातव्यंयथाप्रतिविहितेसिद्ध्येदेवौषधमेकान्तेन। सम्यक्प्रयोगनिमित्ताहि सर्वकर्मणांसिद्धिरिष्टा व्यापच्चासम्यक्प्रयोगनिमित्ता। अथसम्यगसम्यक्च समारब्धंकर्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्ध्यतिव्यापद्यतेवानियमेन।
तुल्यंभवतिज्ञानमज्ञानेनेति ॥ २ ॥

हे भगवन् प्रथमही ज्ञानवान् वैद्य ऐसा यत्न करै कि औषध अवश्य सिद्धहोय क्योंकि सब कर्म्मों की सिद्धि अच्छे प्रकारसे प्रयोग के आधीन है और विकारप्रयोगों के अच्छे प्रकार न होनेसे होताहै जो अच्छे प्रकार से कर्म्म का आरम्भ कियाजाय तो अवश्य सिद्ध होता है और जो अच्छे प्रकारसे कर्म का आरम्भ न कियाजाय तो कर्म्म सिद्ध नहीं होता फिर ऐसा होनेसे वैद्यक का ज्ञान होना तथा न होना तुल्य हुआजाता है अर्थात् वमन विरेचनादि देने से जो विकार उत्पन्नही होगया तो वैद्यक के जाननेसे क्या फल है ॥ २ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः। शक्यंतथाप्रतिविधातुमस्माभिरस्मद्विधैर्वाप्यग्निवेशयथाप्रतिविहितेसिद्ध्येदेवौषधमेकान्तेनतच्चप्रयोगसौष्ठवमुपदेष्टुंयथावन्नहिकश्चिदस्ति। य एतदेवमुपदिष्टमुपधारयितुमुत्सहेत ॥ ३ ॥

यह सुनकर आत्रेय जीने कहा कि हे अग्निवेश तुमने जैसा नियम वा वैद्यक का कौशल कहा वैसा मैं या मेरे सदृशही करसक्ते हैं और मैंहीं ऐसा उपदेश कर सक्ताहूं ऐसे मनुष्य बहुत न्यून हैं जो इन विषयों का उपदेशकरें या ऐसे विषयोंको समझसकें ॥ ३ ॥

उपधार्य्य वा तथाप्रतिपत्तुंप्रयोक्तुं वा। सूक्ष्माणिहिदोषभेषजदेशकालबलशरीराहारसात्म्यसत्त्वप्रकृतिवयसामवस्थान्तराणि ॥ ४ ॥

यदि समझ भी सक्ते हैं तो उनको विचारपूर्वक प्रयोग करना नहीं आता क्योंकि दोष, औषध, देश, काल, बल, शरीर, आहार, स्वात्म्य, सत्त्व, प्रकृति तथा अवस्था इनके भेद अत्यन्त सूक्ष्म हैं ॥ ४ ॥

यान्यनुचिन्त्यमानानिविमलविपुलबुद्धेरपिबुद्धिमाकुलीकुर्य्युःकिंपुनरल्पबुद्धेः ॥ ५ ॥

इनका बिचार करने से बड़े विमल बुद्धिमानों की भी बुद्धि व्याकुल होजाती है तो कमबुद्धि वालोंका क्या कहना ॥ ५ ॥

तस्मादुभयमेतद्यथावदुपदेक्ष्यामः। सम्यक्प्रयोगञ्चौषधानांव्यापन्नानाञ्चव्यापत्साधनानिसिद्धिषूत्तरकालम्। इदानीं तावत्संभारान्विविधानपिसमासेनोपदेक्ष्यामः ॥ ६ ॥

इसलिये औषधोंका अच्छेप्रकार से जानना और अच्छेप्रकार से प्रयोग तथा औषध ग्रहण से उत्पन्न हुए विकारों का उपाय यह दोनों बातें सिद्धि स्थानमें कही जायंगी इस समय अनेक प्रकारकी सामग्रियों को संक्षेप से कहते हैं ॥ ६ ॥

तद्यथा। दृढंनिवातंप्रवातैकदेशंसुखप्रविचारमनुपत्यकंधूमातपरजसांमनभिगमनीयमनिष्टानाञ्च शब्दस्पर्शरसरूपगन्धानांसोपानोदूखलमुसलवर्चःस्थानस्नानभूमिमहानसोपे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तंवास्तुविद्याकुशलःप्रशस्तंगृहमे
वतावत्पूर्वमुपकल्पयेत् ॥ ७ ॥

जैसे वास्तुविद्या (इंजीनियरी) का जानने वाला मनुष्य दृढ़ वातरहित एकभागमें वायुयुक्त सुखपूर्वक घूमने योग्य अनुपत्यक (तराई में नहीं बनाभया धूम धूप तथा धूल जिसमें न जासके अनिष्टरूप रस गन्ध तथा स्पर्श से रहित सीढ़ी ऊखल मूसल जाजरूर स्नानभूमि तथा रसोई के स्थानोंसे युक्त श्रेष्ठघर पहले बनवावे ॥ ७ ॥

ततःशीलशौचाचारानुरागदाक्ष्य
प्रादक्षिण्योपपन्नानुपचारकुशला
न्सर्वकर्मसुपर्य्यवदातान्सूपौदनपा
चकस्नापकसंवाहकोत्थापकसंवेश
कौषधपेषकांश्चपरिचारकान्सर्वकर्म
स्वप्रतिकूलान्तथागीतवादित्रोल्ला
पकश्लोकगाथाख्यायिकेतिहास
पुराणकुशलानभिप्रायज्ञनानुमतां
श्चदेशकालविदःपरिषद्यांश्च। त
थालावकपिञ्जलशशहरिणैणकाल
पुच्छकमृगमातृकोरभ्रान् ॥ ८ ॥

इसके उपरान्त शील शुद्धता चतुरता अनुराग दया सेवा में प्रवीणता सब कार्यों में चतुरता दाल भातका बनाना स्नान कराना पैर दवाना उठाना लिटाना तथा औषध पीसना इन गुणोंसे युक्त किसी कार्य्य में भी न हटनेवाले सेवकों को रक्खे गाना बजाना प्रसन्नकरना श्लोक कहानी किस्सा इतिहास तथा पुराण इन सबमें प्रवीण प्रिय अभिप्राय देश तथा कालके जाननेवाले परिषद्य (मुसाहिब) रक्खे लवा कपिंजल खरगोश हिरन एण कालपुच्छक मृगमातृक मेढ़ा ॥८॥

गांदोग्ध्रींशीलवतीमनातुरांजीवद्व
त्सां सुप्रतिविहिततृणशरणपानी
याम्। पात्र्याचमनीयोदकोष्ठमणि
कघटपिठरपर्य्योगकुम्भीकुम्भकुण्ड
शरावदर्वीकटोदञ्चनपरिपचनम
न्थानचर्म्मचेलसूत्रकार्पासोर्णादी
निचशयनासनादीनिचोपन्यस्त
भृङ्गारप्रतिग्रहाणिसुप्रयुक्तास्तरणो
त्तरप्रच्छदोपधानानि स्वापाश्रयाणि
संवेशनस्नेहस्वेदाभ्यङ्गप्रदेहपरि
षेकानुलेपनवमनविरेचनास्थापना
नुवासनशिरोविरेचनमूत्रोच्चारकर्म
णामुपचारसुखानि सुप्रक्षालितोप
धानाश्चसुश्लक्ष्णखरमध्यमादृषदः
शस्त्राणिचोपकरणार्थानि। धूमनेत्रं
वचोस्तिनेत्रञ्चोत्तरबास्तिकञ्च।
कुशहस्तकञ्चतूलाञ्चमानभाण्ड
ञ्चघृततैलवसामज्जक्षौद्रफाणित
लवणेन्धनोदकमधुसीधुसुरासौवी
रकतुषोदकमैरेयमेदकदाधिदधिम
ण्डोदस्विद्धान्यम्लमूत्राणिच॥९॥

और दूध देनेवाली सीधी रोगरहित जीते बछड़ेवाली तथा अच्छेप्रकार से घास पानी आदि ग्रहण करनेवाली गौ पाले पंचपात्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ेहुए दोषबलके अनुसार अपने २ चिह्नोंको प्रकट करते हैं घटेहुए दोष अपने २ लक्षणों को त्याग करते हैं और सम दोष अपना २ काम ठीक २ करते हैं ॥ ५९ ॥

वातादीनांरसादीनांमलानामोजसस्तथा। क्षयस्तत्रानिलादीनामुक्तंसंक्षीणलक्षणम् ॥ ६० ॥

वात पित्त कफ रसादि सात धातु मल तथा ओज इन सबकी क्षीणता होती है इन ... कफ इनकी क्षीणता कहीग-

दशेद्वादशेचात् ॥

इस के उपरान्त ... समय अथवा ... उष्ण ज... लालध... यवागू... इसी... भोज... नथा...

शब्दंनोच्चैर्द्रवतिदूयते। हृदयंताम्यतिस्वल्पचेष्टस्यापिरसक्षये ॥ ६१ ॥

रसके क्षीण होजाने पर उच्चशब्द नहीं सुनाजासक्ता हृदयमें शून्यता धड़धड़ाहट चंचलता तथा पीड़ा होतीहै और कार्य्य कम किया जाता है ॥ ६१ ॥

परुषास्फुटिताम्लानात्वग्रूक्षारक्तसंक्षये। मांसक्षयेविशेषेणस्फिग्ग्रीवोदरशुष्कता ॥ ६२ ॥

रुधिरके क्षीण होजाने पर कर्कशता अंगों का फटना म्लानता और त्वचा की रूक्षता यह लक्षण होते हैं मांसके क्षीण होजाने पर पूर्व्वोक्त लक्षण होते हैं और विशेष करके कूला ग्रीवा तथा उदर सूख जाताहै ॥ ६२ ॥

सन्धीनांस्फुटनंग्लानिरक्ष्णोरायासएवच। लक्षणंमेदसिक्षीणेतनुत्वंचोदरत्वचः ॥ ६३ ॥

मेदा के क्षीण होजानेपर सन्धियोंमें फटनेकीसी पीड़ा, नेत्रोंमें ग्लानि, श्रम और उदर व त्वचा की क्षीणता यह लक्षण होते हैं ॥ ६३ ॥

केशलोमनखश्मश्रुद्विजप्रपतनंश्रमः। ज्ञेयमस्थिक्षयेरूपंसन्धिशैथिल्यमेवच ॥ ६४ ॥

हड्डियों के क्षीण होजानेपर केश, रोम नख डाढ़ी तथा दाँतों का गिरना, श्रम और सन्धियोंकी शिथिलता यहलक्षणहोतेहैं॥६४॥

शीर्य्यन्तइवचास्थीनिदुर्बलानिलघूनिच। प्रततंवातरोगीचक्षीणेमज्जनिदेहिनाम् ॥ ६५ ॥

मज्जा के क्षीण होजानेपर हड्डियों की शिथिलता, दुर्बलता तथा हलकापन और वातज रोग यह लक्षण होते हैं ॥ ६५ ॥

दौर्बल्यंमुखशोषश्च पाण्डुत्वंसदनंक्लमः। क्लैब्यंशुक्राविसर्गश्चक्षीणशुक्रस्यलक्षणम् ॥ ६६ ॥

वीर्य के क्षीण होजानेपर दुर्बलता, मुख का सूखना, पांडुता, शिथिलता, ग्लानि, नपुंसकता और वीर्यपात न होना यह लक्षण होते हैं ॥ ६६ ॥

क्षीणेशकृतिचान्त्राणिपीडयन्निवमारुतः। रूक्षस्योन्नमयन्कुक्षिंतिर्य्यगूर्द्धञ्चगच्छति ॥ ६७ ॥

मलके क्षीण होजानेपर वायु आँतों को पीड़ित करके रूखे मनुष्य की कुक्षिमें तिरछी अथवा ऊर्ध्वगमन करती है ॥ ६७ ॥

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रक्षयेमूत्रकृच्छ्रंमूत्रवैवर्ण्यमेवच। पिपासाबाधतेचास्यमुखञ्चपरिशुष्यति ॥ ६८ ॥

मूत्रके क्षीण होजानेपर मूत्रकृच्छ्र, मूत्र की विवर्णता, प्यास और मुखका सूखना यह लक्षण होते हैं ॥ ६८ ॥

मलायनानिचान्यानि शून्यानिच लघूनिच। विशुष्काणिचलक्ष्यन्ते यथास्वंमलसंक्षये ॥ ६९ ॥

अन्य मलों के क्षीण होजाने पर उनके स्थान शून्य हलके और शुष्क होजाते हैं ॥ ६९ ॥

बिभेतिदुर्बलोऽभीक्ष्णंध्यायतिव्यथितेन्द्रियः। दुश्छायोदुर्मनारूक्षःक्षामश्चैवौजसःक्षये ॥ ७० ॥

ओजके क्षीणहोजाने पर भय दुर्बलता चिन्ता इन्द्रियों में विकलता कान्तिका नष्ट होना मनका खिन्न होना रूक्षता और कृशता यह लक्षण होते हैं ॥ ७० ॥

हृदितिष्ठतियच्छुद्धंरक्तमीषत्सपीतकम्। ओजःशरीरेसंख्यातंतन्नाशान्नाविनश्यति ॥ ७१ ॥

हृदय में कुछ पीतवर्ण जो शुद्ध रुधिर रहताहै उसे ओज कहते हैं इसके नष्ट होने से मनुष्य नष्ट होजाता है ॥ ७१ ॥

व्यायामोऽनशनंचिन्तारूक्षाल्पप्रमिताशनम्। वातातपौभयंशोकोरूक्षपानंप्रजागरः ॥ ७२ ॥

व्यायाम अनशन चिन्ता रूखा तथा थोड़ा भोजन वायु तथा धूपका सेवन भय शोक रूखी वस्तुओं का पीना जागरण ॥ ७२ ॥

कफशोणितशुक्राणां मलानांचातिवर्त्तनम्। कासोभूतोपघातश्च ज्ञातव्याःक्षयहेतवः ॥ ७३ ॥

कफ रुधिर मल तथा वीर्य्यका अधिक निकलना खांसी और भूतावेश यह क्षयके कारण हैं ॥ ७३ ॥

गुरुस्निग्धाम्ललवणं [illegible]मात्रशः। नवमन्नंचपा[illegible] स्यासुखानिच ॥ ७४ ॥

भारी स्निग्ध अम्ल तथा लवण अधिक खाना नवीन अन्न खाना नवीन मद्यादिक पीना बहुत सोना बहुत बैठना ॥ ७४ ॥

त्यक्तव्यायामचिन्तानांसंशोधनमकुर्वताम्। श्लेष्मापित्तञ्चमेदश्च मांसंचातिप्रवर्द्धते ॥ ७५ ॥

व्यायाम न करना चिन्तारहित होना और वमन विरेचनादि संशोधन न करना इन कारणों से कफ पित्त मेद तथा मांस यह सब बढ़ते हैं ॥ ७५ ॥

तैरावृतःप्रसादंहिगृहीत्वायातिमारुतः। यदावस्तिंतदाकृच्छ्रोमधुमेहःप्रवर्त्तते ॥ ७६ ॥

इनके द्वारा रुकीहुई वायु जब ओजको लेकर वस्तिस्थान में जातीहै तब कष्टदायक मधुमेह उत्पन्न होताहै ॥ ७६ ॥

समारुतस्यपित्तस्यकफस्यचमुहुर्मु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुः। दर्शयत्याकृतिंकृत्वा क्षयमाप्याय्यतेपुनः ॥ ७७ ॥

मधुममेह में वात पित्त तथा कफ तीनों के लक्षण वारंवार प्रकट होते हैं और फिर उनका क्षय होजाताहै ॥ ७७ ॥

उपेक्षयास्यजायन्तेपिडिकाःसप्तदारुणाः। मांसलेष्ववकाशेषुमर्म्मस्वपिचसन्धिषु ॥ ७८ ॥

मधुमेहकी उपेक्षा करनेसे मांसल स्थानों में मर्म्म ... सन्धियों में अत्यन्त कष्टदायक सात पिडिका होती हैं ॥ ७८ ॥

शराविकाकच्छपिकाजालिनीसर्षपीतथा। अलजीविनताख्याचविद्रधीचेतिसप्तमी ॥ ७९ ॥

वेसातो यह हैं शराविका कच्छपिका जालिनी सर्षपिका अलजी विनता और विद्रधि ॥ ७९ ॥

अन्तोन्नतामध्यनिम्नाश्यावाक्लेदरुजान्विता। शराविकास्यात्पिडिका शरावाकृतिसंस्थिता ॥ ८० ॥

सकोरेके समान आकृतिवाली किनारों में ऊंची बीचमें खाली कपिश वर्णवाली और क्लेद तथा पीड़ा से युक्त पिड़िका को शराविका कहते हैं ॥ ८० ॥

अवगाढार्तिनिस्तोदामहावास्तुपरिग्रहा। श्लक्ष्णाकच्छपपृष्ठाभापिडिकाकच्छपीमता ॥ ८१ ॥

बहुत स्थानोंमें फैलकर होनेवाली भीतर सूई गड़ने कीसी पीड़ायुक्त चिकनी और कछुएकी पीठके समान आकृति वाली पिड़िका को कच्छपिका कहते हैं ॥ ८१ ॥

स्तब्धाशिराजालवतीस्निग्धस्रावामहाशया। रुजानिस्तोदबहलासूक्ष्मच्छिद्राचजालिनी ॥ ८२ ॥

नसों के जालसे व्याप्त स्निग्ध स्रावयुक्त बहुत फैलीहुई न घटे न बढ़े पीड़ा तथा सूजी गड़ने कीसी अत्यन्त व्यथासे युक्त और सूक्ष्मछिद्रवाली पिड़िका को जालिनी कहते हैं ॥ ८२ ॥

पिडिकानातिमहतीक्षिप्रपाकामहारुजा। सर्षपीसर्षपाभाभिःपिडिकाभिश्चिताभवेत् ॥ ८३ ॥

नहीं बहुत बड़े आकारवाली शीघ्र पकनेवाली अत्यन्त पीड़ा वाली और सरसों के समान दानोंसे युक्त पिड़िका को सर्षपिका कहते हैं ॥ ८३ ॥

दहतित्वचमुत्थानेतृष्णामोहज्वरप्रदा। विसर्पत्यनिशंदुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी ॥ ८४ ॥

उठने में त्वचा में दाह करनेवाली तृषा मोह तथा ज्वरसे युक्त निरन्तर बढ़नेवाली और अत्यन्त दुःखदायक अग्नि के समान दाह करनेवाली पिड़िका को अलजी कहते हैं ॥ ८४ ॥

अवगाढरुजाक्लेदापृष्ठेवाप्युदरेऽपिवा। महतीविनतानीलापिडिकाविनतामता ॥ ८५ ॥

भीतर अत्यन्तपीड़ायुक्त क्लेदयुक्त पीठ तथा

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदरमें होनेवाली बड़े आकारवाली और नीलवर्णवाली पिड़िकाको विनता कहते हैं ॥ ८५ ॥

विद्रधिंद्विविधामाहुर्बाह्यामाभ्यन्तरींतथा। बाह्यात्वक्स्नायुमांसोत्था कण्डराभामहारुजा ॥ ८६ ॥

विद्रधि बाह्य और आभ्यन्तर भेदसे दो प्रकारकी होतीहै बाह्य विद्रधि त्वचा स्नायु तथा मांसमें उत्पन्नहोतीहै कवांचके समान उसकी आकृतिहोतीहै और उसमें बहुतपीड़ा होतीहै ॥ ८६ ॥

शीतकान्नविदाह्युष्णरूक्षशुष्कातिभोजनात्। विरुद्धाजीर्णसंक्लिष्टविषमासात्म्यभोजनात्। व्यापन्नबहुमद्यत्वाद्वेगसन्धारणाच्छ्रमात् ॥ ८७ ॥

शीत विदाही उष्ण रूक्ष शुष्क विरुद्ध तथा दुर्गन्धित वस्तुओंके खानेसे बहुत तथा विषम भोजनसे अजीर्ण में खाने से असात्म्यवस्तुओंके खानेसे दूषितअन्न खानेसे बहुत मद्य पीने से मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से श्रमसे ॥ ८७ ॥

जिह्मव्यायामशयनादतिभाराध्वमैथुनात्। अन्तःशरीरेमांसासृगाविशन्तियदामलाः ॥ ८८ ॥

टेढ़ेहोकर व्यायाम तथा शयनकरने से बहुतभार उठानेसे बहुतचलनेसे और बहुत मैथुनसे शरीरकेभीतर मांस तथा रुधिरमें वातादिदोष जब प्रवेशकरते हैं ॥ ८८ ॥

तदासञ्जायते ग्रन्थिर्गम्भीरस्थःसुदारुणः। हृदयेक्लोम्नियकृतिप्लीह्निकुक्षौचवृक्कयोः ॥ ८९ ॥

तबशरीरके भीतर भयानक ग्रन्थि उत्पन्न होती है हृदय (क्लोम कण्ठ तथा छातीकी सन्धि) यकृत् प्लीहा कुक्षि वृक्क (कलेजा) ८९॥

नाभ्यांवंक्षणयोर्वापिवस्तौवातीव्रवेदनः। दुष्टरक्तातिमात्रत्वात्सर्वेषां[illegible]घ्रंविदह्यते ॥ ९० ॥

नाभि, वंक्षण (जांघ तथा नितंब [illegible] और बस्ति इनमें अत्यन्त पीड़ा[illegible] ग्रन्थि उत्पन्न होती है दूषित रुधिर की [illegible]धिकतासे शीघ्रही विदग्ध (पक्व) होजा[illegible] है ॥ ९० ॥

ततःशीघ्रविदाहित्वाद्विद्रधीत्यभिधीयते। व्यवच्छेदभ्रमानाहशब्दस्फुरणसर्पणैः ९१ वातिकींपैत्तिकींतृष्णादाहमोहमदज्वरैः। जृम्भोत्क्लेशारुचिस्तम्भशीतकैःश्लैष्मिकींविदुः। सर्वास्वासुमहच्छूलंविद्रधीषूपजायते ॥ ९२ ॥

इसीसे इसको विद्रधि कहते हैं बिंधने तथा छेदनेकी सी पीड़ा भ्रम आनाह शब्दस्फुरण और सर्पण इन लक्षणों से वातज विद्रधि तृषा दाह मोह मद तथा ज्वरसे पित्तज विद्रधि और जँभाई मतली अरुचि स्तंभ तथा शीत से कफज विद्रधि जाननी चाहिये इन सब विद्रधियों में बड़ी पीड़ा होतीहै ॥ ९१।९२॥

तप्तैःशस्त्रैर्यथामथ्येतोल्मुकैरिवदह्य

ते। विद्रधीन्यम्लतांयाताबृश्चिकै रिवदश्यते॥ ९३॥

यह मालूम होता है कि मानों कोई तप्त शस्त्रों से इसको मथ रहा है और उल्मुक से जला रहा है विद्रधि के पकनेके समय बिच्छुओं के काटने कीसी पीड़ा होतीहै॥ ९३॥

तनुरूक्षारुणंस्रावंफेनिलंवातविद्रधी। पित्तंमाषकुलत्थोदसन्निभंपित्तविद्र मधुः॥ ९४॥

[illegible] विद्रधिमें प[illegible] रूखा रक्तवर्ण युक्त स्राव होताहै पित्तज विद्रधिमें [illegible] उड़द तथा कुलथी के रसके समान स्राव [illegible]ता है॥ ९४॥

श्लैष्मिकीस्रवतिश्वेतंबहुलंपिच्छिलंबहु। लक्षणंसर्वमेवैतद्भजतेसान्निपातिकी॥ ९५॥

और कफज विद्रधिमें श्वेतवर्ण चिकना तथा गाढ़ा बहुत स्राव होताहै सन्निपातज विद्रधिमें यह सब लक्षणहोते हैं॥ ९५॥

अथासांविद्रधीनांसाध्यासाध्यविशेषज्ञानार्थंस्थानकृतं लिङ्गविशेषमुपदेक्ष्यामः। तत्रप्रधानमर्मजायांविद्रध्यां हृद्घट्टनतमकप्रमोहकासाः क्लोमजायां पिपासामुखशोषगलग्रहाः। यकृज्जायांश्वासः। प्लीहजायामुच्छ्वासोपरोधः। कुक्षिजायां कुक्षिपार्श्वान्तरांसशूलम्। वृक्कजायांपार्श्वपृष्ठकटिग्रहः नाभिजायां हिक्का। वंक्षणजायांसक्थिसादः। बस्तिजायां कृच्छ्रमूत्रपूतिवर्चस्त्वं चेति॥ ९६॥

अब इन विद्रधियों की साध्यासाध्य विशेषता जानने के लिये विद्रधियों के स्थानानुसार लक्षण कहते हैं जैसे हृदय में विद्रधि होनेपर वक्षःस्थल में धड़कन तमकश्वास मोह तथा खांसी क्लोममें विद्रधि होनेपर तृषा और मुखका सूखना तथा गलग्रह यकृत् में विद्रधि होने से श्वास प्लीहा में विद्रधि होनेपर श्वास लेनेमें कष्ट होना कुक्षि में विद्रधि होनेपर पार्श्व पीठ तथा कटि में पीड़ा नाभिमें विद्रधि होनेपर हिचकी वंक्षण में विद्रधि होनेपर जाँघमें पीड़ा और बस्ति में विद्रधि होनेपर मूत्रकृच्छ्र तथा मल का अत्यन्त दुर्गन्धित होना यह लक्षण होते हैं॥ ९६॥

पक्वामभिन्नासुऊर्द्ध्वजासु मुखात्स्रावःस्रवति। अधोजासुगुदादुभयतस्तुनाभिजायाम्॥ ९७॥

शरीर के ऊर्ध्वस्थानमें हुई विद्रधियों के पककर फूटजानेपर मुखसे स्राव होताहै अधःस्थानमें हुई विद्रधियों के पककर फूटजानेपर गुदा से स्राव होताहै नाभिमें हुई विद्रधि के पककर फूटजाने पर मुख तथा गुदा दोनों स्थानों से स्राव होता है॥ ९७॥

तासांहृन्नाभिबस्तिजाःपरिपक्वाःसान्निपातिकीचमरणाय। अवशिष्टाः पुनःकुशलमाशुप्रतिकारिणंचिकित्सकमासाद्योपशाम्यन्ति। तस्मा

दचिरोत्थितांविद्रधीं शस्त्रसर्पविद्युदग्नितुल्यां स्नेहस्वेदविरेचनैश्चोपक्रामेत् । सर्वशोगुल्मवच्चेतिचात्र ॥ ९८ ॥

इनमेंसे हृदय नाभि तथा वस्तिमें हुई और सन्निपातज विद्रधियों के पककर फूटजानेपर रोगी मरजाता है और शेष विद्रधियां चतुर तथा शीघ्रतासे[illegible] वैद्य को पाकर शान्त होजाती हैं इससे विद्रधिके उत्पन्न होतेही शस्त्र सर्प बिजली तथा अग्निके समान उसको जानकर स्नेह स्वेद तथा विरेचनकेद्वारा गुल्म के समान उसकी चिकि[illegible]

विनाप्रमेहम[illegible]ताजायन्ते दुष्टमेद[illegible]तानलक्ष्यन्तेयावद्वस्तुसः । तावत्तैं[illegible] ९९ ॥

परिग्रहः ॥ [illegible]को [illegible] दूषितहोती है उसके प्रमेहके

जिसकी मेद[illegible] पिड़िका उत्पन्नहोतीहैं और जविनाभी, यह[illegible]विषती नहीं हैं तबतक लक्षितनहीं बतक यहफैल[illegible] होतीं ॥ ९९ ॥

[illegible] अकच्छपिका जालिनीचे शरोविक[illegible]ः । जायन्तेताह्यतिबलाः तिङ्ःसद्[illegible]लेष्ममेदसाम् ॥ १०० ॥

प्रभूतश्ले[illegible]कफ तथा मेदावाले पुरुष के श[illegible] अधिक [illegible]च्छपिका और जालिनी नामराविका व[illegible] दुःखदायी पिड़िका उत्पन्न होतीक अत्यन्त [illegible]हैं ॥ १०० ॥

[illegible]चालजीचैव विनताविद्रधीच सर्षपी[illegible] । सद्यःपित्तोल्वणास्ताहिसम्भया[illegible]न्त्यल्पमेदसाम् ॥ १०१ ॥

अल्प मेदवाले पुरुष के सर्षपी अलजी विनता और विद्रधि नामक सुखसाध्य पिड़िकाहोती हैं ॥ १०१ ॥

मर्मस्वंसेगुदेपाल्योः स्तनेसन्धिषु पादयोः । जायन्तेयस्यपिडिकाःस प्रमेहीनजीवति ॥ १०२ ॥

मर्मस्थान गुदा कानोंकीलौ स्तन और पैरों की सन्धि इनस्थानों में जिस प्रमेहीके पिंका होतीहैं वहनहींजीता ॥ १०२ ॥

तथान्याःपि[illegible]काःसि[illegible]तरक्तप[illegible] [illegible]रुणाः । पाण्डुराःपाण्डुवर्णश्चभस्माभामेचकप्रभाः ॥ १०३ ॥

इनपिड़िकाओंके सिवाय पीत रक्त श्वेत अरुण कपिश तथा पांडुवर्णयुक्त भस्मके समान आभावाली स्निग्ध कृष्णवर्ण वाली ॥ १०३ ॥

मृद्व्यश्चकठिनाश्चान्याःस्थूलाः सूक्ष्मास्तथापराः । मन्दवेगामहावेगाःस्वल्पशूलामहारुजाः ॥ १०४ ॥

कोई कोमल कोई कठिन कोई स्थूल कोई सूक्ष्म कोई शीघ्र उत्पन्न होनेवाली कोईधीरे२ उत्पन्न होनेवाली और कोई स्वल्प पीड़ावाली कोई अधिक पीड़ावाली पिड़िका होतीहैं ॥ १०४ ॥

ताबुद्धामारुतादीनांयथास्वैर्हेतुलक्षणैः । ब्रूयादुपाचरेच्चाशुप्रागुपद्रवदर्शनात् ॥ १०५ ॥

इनमेंवातादि दोषोंको हेतु तथा लक्षणोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तः ॥ स्थानान्तरगतश्चैवजनय त्यामयान्बहून् ॥ ३६ ॥

एकही दोष कुपित होकर कारणों की विशेषता से और अन्य२ स्थानों में जाकर अनेक रोगों को उत्पन्न करताहै ॥ ३६ ॥

तस्माद्विकारप्रकृतीरधिष्ठानान्तराणिच । समुत्थानविशेषांश्च बुद्धा कर्मसमाचरेत् ॥ ३७ ॥

इससे रोगों के स्वभाव स्थान तथा कारणों को जानकर चिकित्सा करे ॥ ३७ ॥

योह्येतत्त्रिविधंज्ञात्वाकर्माण्यारभते भिषक् । ज्ञानपूर्वंयथान्यायंसकर्मसुनमुह्यति ॥ ३८ ॥

जो वैद्य इन तीनों प्रकारों को जानकर विचारपूर्वक शास्त्रानुसार चिकित्सा करता है वह चिकित्सा में मोह को नहीं प्राप्त होताहै ॥ ३८ ॥

नित्याःप्राणभृतांदेहेवातपित्तकफास्त्रयः । विकृताःप्रकृतिस्थावातान्बुभुत्सेतपण्डितः ॥ ३९ ॥

प्राणियों के शरीर में कफ वात पित्त यह तीनों सदैव रहते हैं इस से यह स्वाभाविक हैं अथवा विकारयुक्त हैं यह जानने की इच्छा विद्वान् करे ॥ ३९ ॥

उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टाधातुगतिःसमा । समोमोक्षोगतिमतां वायोःकर्माविकारजम् ॥ ४० ॥

विकाररहित वायु के यह कर्म हैं जैसे उत्साह श्वास का आनाजाना चेष्टा धातुओं की समगति और मल मूत्रादि का उचित निकलना ॥ ४० ॥

दर्शनंपक्तिरूष्माचक्षुत्तृणादेहमार्दवम् । प्रभाप्रसादोमेधाचपित्तकर्माविकारजम् ॥ ४१ ॥

दर्शन परिपाक ऊष्मा क्षुधा तृषा देहकी कोमलता कान्ति प्रसन्नता और मेधा यह विकाररहित पित्त के कार्य्य हैं ॥ ४१ ॥

स्नेहोबन्धःस्थिरत्वञ्चगौरवंवृषताबलम् । क्षमाधृतिरलोभश्चकफकर्माविकारजम् ॥ ४२ ॥

स्नेह संधियों की बंधना स्थिरता गौरव मैथुनकी इच्छा बल क्षमा धैर्य्य और लोभ न होना यह विकाररहित कफ के कार्य्य हैं ॥ ४२ ॥

वातपित्तकफैश्चैव न्यूनेलक्षणमुच्यते । कर्मणांप्रकृतेर्हानिर्वृद्धिर्वापिविरोधिनाम् ॥ ४३ ॥

वात पित्त तथा कफ के क्षीण होने पर उन के स्वाभाविक कार्य्योंकी हानि अथवा विरोधी कार्य्यों की वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥

दोषप्रकृतिवैशेष्यंनियतंवृद्धिलक्षणम् । दोषाणांप्रकृतिर्हानिर्वृद्धिर्वापिपरीक्ष्यते इति ॥ ४४ ॥

वातादि दोषों के स्वाभाविक कार्य्यों की वृद्धिसे उनकी वृद्धि जानी जातीहै इसी प्रकार से दोषों की समता हानि तथा वृद्धि जाननी चाहिये ॥ ४४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्रश्लोकौ।
संख्यानिमित्तंरूपाणिशोथानांसा
ध्यतानच। तेषांतेषांविकाराणांत्रि
विधंत्रोध्यसंग्रहम् ॥ ४५ ॥ प्राकृतं
कर्मदोषाणां लक्षणंहानिवृद्धिषु।
वीतमोहरजोदोषमोहमानमदस्पृ
हः। व्याख्यातवांस्त्रिशोफीयेरो
गाध्यायेपुनर्वसुः॥ ४६ ॥

इतिरोगचतुष्के त्रिशोफीयोऽष्टादशो-
ऽध्यायःसमाप्तः॥ १८॥

उस में यह दो श्लोक हैं। शोथों की संख्या, निमित्त, लक्षण, साध्यता तथा असाध्यता, उपजिह्विका आदि रोगों के पहले होनेवाले शोथ, रोगों के प्रकार भेद जानने के योग्य तीन प्रकार, दोषों के स्वाभाविक कार्य और दोषों की हानि तथा वृद्धि के लक्षण यह सब विषय इस त्रिशोथीयनाम अध्याय में मोह रजोगुण के दोष लोभ मान मद तथा स्पृहारहित भगवान् आत्रेयजी ने कहे॥ ४५।४६॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंत्रिशोथीय
नामअठारहवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

अथातोऽष्टोदरीयमध्यायंव्या
ख्यास्यामः।
इतिहस्माहभगवानात्रेयः।
इहखल्वष्टावुदराणि अष्टौमूत्राघाताः
अष्टौक्षीरदोषाअष्टौरेतोदोषाः सप्त
कुष्ठानिसप्तपिडिकाः सप्तविसर्पाः
षडतीसाराः षडुदावर्ताः पञ्चगु
ल्माःपञ्चप्लीहदोषाःपञ्चकासाःपञ्च
श्वासाःपञ्चहिक्काः पञ्चतृष्णाःपञ्च
छर्दयःपञ्चभक्तस्यानशनस्थानानि
पञ्चशिरोरोगाः पञ्चहृद्रोगाःपञ्चपा
ण्डुरोगाःपञ्चोन्मादाः चत्वारोऽप
स्माराःचत्वारोऽक्षिरोगाःचत्वारःक
र्णरोगाःचत्वारःप्रतिश्यायाःचत्वा
रोमुखरोगाः चत्वारोग्रहणीदोषाः
चत्वारोमदाःचत्वारोमूर्च्छाःचत्वारः
शोषाःचत्वारिक्लैब्यानित्रयःशोथाः
त्रीणिकिलासानि त्रिविधंलोहित
पित्तंद्वौज्वरौद्वौव्रणौद्वावायामौद्वे
गृध्रस्यौद्वेकामलेद्विविधमामंद्विवि
धंवातरक्तंद्विविधान्यर्शांसि एकः
ऊरुस्तम्भःएकःसंन्यासः एको
महागदः विंशतिः क्रिमिजा
तयःविंशतिःप्रमेहाः विंशतिर्योनि
व्यापदः। इत्यष्टाचत्वारिंशद्रोगा
धिकरणान्यस्मिन्संग्रहेभवन्ति।
उद्दिष्टानिएतानि यथोद्देशमभिनि
र्देक्ष्यामः। अष्टावुदराणीतिवात
पित्तकफसन्निपातप्लीहबद्धच्छिद्रो
दकोदरानीति। अष्टौमूत्राघाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इति वातपित्तकफसन्निपाताश्म
रीशर्कराशुक्रशोणितजाःअष्टौक्षीर
दोषाइतिवैवर्ण्यंवैगन्ध्यंवैरस्यंपैच्छि
ल्यंफेनसङ्घातंरौक्ष्यंगौरवमतिस्नेह
श्चेति । अष्टौरेतोदोषाइति तनुशु
ष्कंफेनिलंश्वेतं पूतिपिच्छिलम
न्यधातूपहितमवसादिचेति । स
प्तकुष्ठानीतिकपालोडुम्बरमण्डल
र्ष्यजिह्वपुण्डरीकसिध्मकाकणका
निसप्तपिडिकाइति शराविकाकच्छ
पिकाजालिनी सर्षप्यलजीविनता
विद्रधीच । सप्तवीसर्पाइति वात
पित्तकफाग्निकर्दमग्रन्थिसन्निपाता
ख्याः । षडतीसाराख्याइतिवात
पित्तकफसन्निपातभयशोकजाः ।
षडुदावर्त्ताइतिवातमूत्रपुरीषशुक्र
छर्दिक्षवथुजाः । पञ्चगुल्माइतिवा
तपित्तकफसन्निपातरक्तजाः । पञ्च
प्लीहदोषाइतिगुल्मैर्व्याख्याताः ।
पञ्चकासाइतिवातपित्तकफक्षत
क्षयजाः । पञ्चश्वासाइतिमहो
र्द्धच्छिन्नतमकक्षुद्राः । पञ्चहिक्का
इतिमहतीगम्भीराव्यपेताक्षुद्राचा
न्नजाच । पञ्चतृष्णाइति वात
पित्तामक्षयोपसर्गात्मिकाः ।
पञ्चच्छर्दयइतिद्विष्टान्नसंयोगजावा
तपित्तकफसन्निपातोद्रेकात्मिकाश्च
पञ्चभक्तस्यानशनस्थानानीतिवा
तपित्तकफद्वेषायासाः । पञ्चशि
रोरोगाइतिपूर्वोद्देशमभिसमस्यवा
तपित्तकफसन्निपातक्रिमिजाः ।
पञ्चहृद्रोगाइतिशिरोरोगैर्व्याख्या
ताः । पञ्चपाण्डुरोगाइतिवातपि
त्तकफसन्निपातमृद्भक्षणजाः ।
पञ्चोन्मादाइतिवातपित्तकफसन्नि
पातागन्तुनिमित्ताः । चत्वारोऽप
स्माराइति वातपित्तकफसन्निपात
निमित्तजाः । चत्वारोक्षिरोगाःच
त्वारः कर्णरोगाः चत्वारःप्रतिश्या
याःचत्वारोमुखरोगाःचत्वारोग्रहणी
दोषाःचत्वारोमदाः चत्वारोमूर्च्छा
इतिअपस्मारैर्व्याख्याताः । चत्वारः
शोषाइतिसाहससन्धारणक्षयविष
माशनजाः । चत्वारिक्लैब्यानीति
बीजोपघाताद्ध्वजभङ्गाज्जरायाःशु
क्रक्षयाच्च । त्रयः शोथाश्चेतिवात
पित्तश्लेष्मनिमित्ताः । त्रीणिकि
लासानीतिरक्तताम्रशुक्लानि । त्रि
विधंलोहितपित्तमित्यूर्द्ध्वभागमधो
भागमुभयभागञ्च द्वौज्वरौइतिउ
ष्णाभिप्रायःशीतसमुत्थश्चशीता
भिप्रायश्चोष्णसमुत्थःद्वौव्रणौइति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निजश्चागन्तुजश्च। द्वावायामा वितिवाह्यश्चाभ्यन्तरश्चद्वेगृध्रस्या वितिवाताद्वातकफाच्च। द्वेकामले इतिकोष्ठाश्रयाशाखाश्रयाच। द्विविधमाममित्यलसकोविसूचिकाचेति। द्विविधंवातरक्तमितिगम्भीरमुत्तानञ्च। द्विविधान्यर्शांसीतिआर्द्राणिशुष्काणिच। एकऊरुष्कंभ इतिआमत्रिदोषसमुत्थानः। एकःसंन्यासइति। त्रिदोषात्मकोमनःशरीराधिष्ठानसमुत्थः। एकोमहागदइतिअतत्त्वाभिनिवेशः। विंशतिःक्रिमिजातयइतियूकाःपिपीलिकाश्चेतिद्विविधाबहिर्मलजाःकेशादाः लोमादालोमद्वीपाःसौरसाऔदुम्बराजन्तुमातरश्चेतिषट्शोणितजाःअन्त्रादाउदरादाहृदयचराःचुरवोदर्भपुष्पाः सौगन्धिकामहागुदाश्चेतिसप्तकफजाःककेरुकामकेरुकालेलिहाःसशूलकाःसौसुरादाश्चेतिपञ्च पुरीषजाइति। विंशतिः क्रिमिजातयः। विंशतिः प्रमेहाइतिउदकमेहश्चेक्षुमेहश्चरसमेहश्चसान्द्रमेहश्चसान्द्रप्रसादमेहश्चशुक्लमेहश्चशुक्रमेहश्चशीतमेहश्चशनैर्मेहश्चासिकतामेहश्चलालामेहश्चेतिदशश्लेष्मनिमित्ताः। क्षारमेहश्च कालमेहश्च नीलमेहश्चलोहितमेहश्च मञ्जिष्ठामेहश्चहरिद्रामेहश्चेतिषट्पित्तनिमित्ताः। वसामेहश्चमज्जमेहश्चहस्तिमेहश्च मधुमेहश्चेतिचत्वारोवातनिमित्ता इतिविंशतिःप्रमेहाः। विंशतिर्योनिव्यापदइतिवातिकीपैत्तिकीश्लैष्मिकीसान्निपातिकी चेतिचतस्रःदोषजाः। दूष्यसंसर्गप्रकृतिनिर्देशैरवशिष्टाःषोडशनिर्दिश्यन्ते। तद्यथारक्तयोनिश्चारजस्का चाचरणा चातिचरणाच प्राक्चरणाचोपप्लुताचोदावर्तिनी चकर्णिनीचपुत्रघ्नी चान्तर्मुखीचसूचीमुखीचशुष्काचवामिनीचषण्ढयोनिश्चमहायोनिश्चेति विंशतिर्योनिव्यापदःकेवलश्चायमुद्देशः। यथोद्देशमभिनिर्दिष्ट इति।

भवतिचात्र।

विंशकाश्चैककाश्चैव त्रिकाश्चोक्तास्त्रयस्त्रयः। द्विकाश्चाष्टौचतुष्काश्चदश्द्वादशपञ्चकाः॥ चत्वारश्चाष्टकावर्गाःषट्कौद्वौसप्तकास्त्रयः। अष्टोदरीयेरोगाणामध्यायेसम्प्रकाशितः॥ १॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त अष्टोदरीयनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

आठप्रकार के उदर आठप्रकार के मूत्राघात आठप्रकार के दुग्धविकार आठप्रकारके वीर्य्यदोष सातकुष्ठ सात पिड़िका सात ज्वरबात छः अतीसार छः उदावर्त पांचगुल्म पांच प्लीहाके रोग पांचप्रकारकी खांसी पांचप्रकार के श्वास पांच प्रकार की हिचकी पांच प्रकार की तृषा पांच प्रकारकी छर्द्दि पांच प्रकारकी अरुचि पांच प्रकार के शिरोरोग पांच प्रकार के हृद्रोग पांच प्रकारके पांडुरोग पांच प्रकारके उन्माद चारप्रकारकी मिरगी चारप्रकार के नेत्ररोग चारप्रकारके कर्णरोग चार प्रकारके प्रतिश्याय (जुकाम) चार प्रकारके मुखरोग चार प्रकारके ग्रहणीदोष चारप्रकारके मद चार प्रकारकी मूर्च्छा चारप्रकारके शोष चार प्रकार की नपुंसकता तीन प्रकारके शोथ तीन प्रकारके किलास (कुष्ठविशेष) तीन प्रकार का रक्तपित्त दो प्रकार का ज्वर दो प्रकार के व्रण दो प्रकार का श्रम दो प्रकार की गृध्रसी दोप्रकार की कामला दो प्रकार का आम दोप्रकारका वातरक्त दोप्रकारकी बवासीर एक ऊरुस्तंभ एकसंन्यास एक महागद बीसप्रकार के कृमि बीसप्रकार के प्रमेह और बीस प्रकारके योनिरोग इस संग्रह में अड़तालीस रोगों के अधिकार कहेगये अब इन के उद्देश कहते हैं आठप्रकार के उदररोग जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज प्लीहोदर बद्धोदर छिद्रोदर और जलोदर और आठप्रकारके मूत्राघात जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज अश्मरी से पैदाहुआ शर्करा से उत्पन्न वीर्यसे उत्पन्न रक्तसे उत्पन्न और आठ प्रकारके दुग्धरोग जैसे विवर्णता दुर्गन्धि विरसता पिच्छलता फेणसंयुक्त होना रूक्षता गुरुता अतिस्निग्धता और आठ प्रकार के वीर्यदोष जैसे पतलाहोना शुष्कता फेनसंयुक्त होना श्वेतवर्ण का न होना दुर्गन्धि पिच्छलता रुधिर आदि से मिला हुआ होना जल में डालने से डूबजाना और सात प्रकार के कुष्ठ जैसे कापाल उदुम्बर मण्डल ऋष्यजिह्व पुंडरीक सिध्मल काकणक और सात प्रकार की पिड़िका जैसे शराविका कच्छपिका जालिनी सर्षपी अलजी विनता विद्रधि और सात प्रकारके ज्वरबात जैसे वातज पित्तज कफज अग्निज कर्दमज ग्रंथिज सन्निपातज और छः प्रकारके अतीसार जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज भयज शोकज और छः प्रकारके उदावर्त्त जैसे वातज मूत्रज पुरीषज शुक्रज छर्दिज क्षवथुज और पांच प्रकारके गुल्म जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और पांचप्रकारके प्लीहा के दोष जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और पांच प्रकार की खांसी जैसे वातज पित्तज कफज क्षयज क्षतज और पांच प्रकारके श्वास जैसे महाश्वास ऊर्ध्वश्वास छिन्नश्वास तमक श्वास छिद्रश्वास और पांच प्रकारकी हिचकी जैसे महती गंभीरा जमला क्षुद्रा अन्नजा और पांच प्रकार की तृषा जैसे वातज पित्तज आमज क्षयज उपसर्गज और पांच प्रकारकी छर्द्दि जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज दुष्टान्नसंयोगज और पांचप्रकारकी अरुचि जैसे वातज पित्तज कफज द्वेषज परिश्रमज और पांचप्रकारके शिरोरोग जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज क्रिमिज और पांचप्रकारके हृद्रोग जैसे वातज पित्त-

Digitized by eGangotri

ज कफज सन्निपातज क्रिमिज और पांचप्रकार के पांडुरोग जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज मृद्धक्षणज और पांचप्रकारके उन्माद जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज आगन्तुज और चारप्रकारकी मिरगी जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और चार २ प्रकारके नेत्ररोग कर्णरोग प्रतिश्याय (जुकाम) मुखरोग ग्रहणीदोष और मूर्च्छा हैं जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और चारप्रकार के शोष जैसे साहसज मल मूत्रादिवेगरोधजनित क्षयज विषमाशनज और चारप्रकारकी नपुंसकता जैसे बीजोपघातज ध्वजभंगज वृद्धताजनित शुक्रक्षयज और तीन प्रकारके शोथ जैसे वातज पित्तज कफज और तीन प्रकारके किलास (कुष्ठविशेष) जैसे रक्त ताम्रवर्ण तथा श्वेत और तीन प्रकार का रक्तपित्त जैसे ऊर्ध्वग अधोग उभयग और दो प्रकारके ज्वर जैसे शीतसमुत्थ उष्णाभिप्राय (जिस ज्वरमें शीत मालूम होय और रोगी उष्णताकी अभिलाषा करै) और उष्णसमुत्थशीताभिप्राय (जो ज्वर उष्णता से होय और रोगी शीत की अभिलाषा करै) दो प्रकारके व्रण जैसे निज और आगन्तुज दो प्रकार का श्रम जैसे बाह्य और आभ्यन्तर दो प्रकार की गृध्रसी जैसे वातज और वात कफज दो प्रकार की कामला जैसे कोष्ठाश्रया और शाखाश्रया दो प्रकार का आम जैसे अलसक और विशूचिका दो प्रकार का वातरक्त जैसे गंभीर और म्लान दोप्रकार की बवासीर जैसे शुष्क और आर्द्र आम तथा त्रिदोष से उत्पन्न हुआ ऊरुस्तंभ एक प्रकार का है और मन तथा शरीर में उत्पन्न हुआ त्रिदोषज संन्यास रोग एक प्रकारकाहै और तत्त्वके विचार न करने से हुआ महागद एक प्रकारका होताहै और क्रिमि बीस २० प्रकारके होतेहैं जैसे यूक और पिपीलिका यह दोप्रकारके क्रिमि बहिर्मलसे होतेहैं केशाद लोमाद लोमद्वीप सौरस औदुम्बर तथा जन्तुमातर यह छः प्रकारके क्रिमिरुधिर से उत्पन्न होते हैं अंत्राद उदराद हृदयचर चुरु दर्भकुसुम सौगन्धिक तथामहागुद यह सात प्रकारके क्रिमि कफसे उत्पन्न हैं और ककेरुक मकेरुक लेलिह सशूलक तथा सौसुराद यह पांच प्रकारके क्रिमि विष्ठा से उत्पन्न होते हैं यह बीस प्रकारके क्रिमिजातिहैं और बीस प्रकारके प्रमेह जैसे उदकमेह इक्षुमेह सान्द्रमेह सान्द्रप्रसादमेह रसमेह शुक्रमेह शीतमेह शनैर्मेह सिकतामेह तथा लालामेह यह दशप्रमेह कफजहैं और क्षारमेह कालमेह नीलमेह लोहितमेह मंजिष्ठामेह तथा हरिद्रामेह यह छःप्रमेह पित्तज हैं और वसामेह मज्जामेह हस्तिमेह तथा मधुमेह यह चार प्रमेह वातज हैं इस प्रकार बीस प्रमेह हुए योनि रोग बीस प्रकारके हैं जैसे वातकी पैत्तिकी श्लैष्मकी तथा सान्निपातिकी चार प्रकारकी इन दोषों से और दूष्यके संसर्गसे रोगोंके स्वभावानुसार शेष सोलह योनि रोग कहेजाते हैं जैसे रक्तयोनि अरजस्का अचरणा अतिचरणा प्राक्चरणा उपप्लुता परिप्लुता उदावर्त्तिनी कर्णिनी पुत्रघ्नी अन्तर्मुखी सूचीमुखी शुष्का वामिनी षंढयोनि और महायोनि यह सबमिलकर बीस योनिरोग हुए इस प्रकार यह सब रोग उद्देशसहित कहेगये इस में यह श्लोक हैं तीनरोग बीस २ प्रकार के तीन रोग एक २ प्रकारके तीन रोग तीन २ प्रकारके आठरोग दो २ प्रकारके दश रोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चार २ प्रकारके बारह रोग पांच २ प्रकारके चाररोग आठ २ प्रकारके दो रोग छः छः प्रकारके और तीन रोग सात २ प्रकारके इस अष्टोदरीयनाम अध्याय में प्रकाशित किये गये हैं ॥ १ ॥

सर्वएवनिजविकारानान्यत्रवातपित्तकफेभ्योनिवर्त्तन्ते । यथाशकुनिःसर्वांदिशमपिपरिपतन्स्वांछायांनातिवर्त्ततेतथास्वधातुवैषम्यनिमित्ताःसर्वविकारावातपित्तकफान्नातिवर्त्तन्ते । वातपित्तश्लेष्मणांपुनःसमुत्थानस्थानसंस्थानप्रकृतिविशेषानभिसमीक्ष्यतदात्मकानपिच सर्वविकारांस्तानेवोपदिशन्तिबुद्धिमन्त इति ॥ २ ॥

संपूर्ण निज विकार वात पित्त तथा कफ के विना नहीं होसक्ते हैं जैसे कोई पक्षी संपूर्ण दिशाओं में भ्रमण करताहुआ भी अपनी छाया को नहीं उल्लंघन करसक्ता है उसी प्रकार धातुओं की विषमता से हुए रोगभी वात पित्त तथा कफ का नहीं उल्लंघन करसक्ते हैं वात पित्त तथा कफ के कारण स्थान स्थिति तथा प्रकृतिकी विशेषता को देखकर बुद्धिमान् लोग संपूर्ण विकारों को वातपित्तकफात्मक कहते हैं इति ॥ २ ॥

तत्रश्लोकौ।

स्वधातुवैषम्यनिमित्तजाये विकारसंघाबहवःशरीरे । नतेपृथक्पित्त कफानिलेभ्यआगन्तवस्त्वेव ततो विशिष्टाः ॥ ३ ॥

इस में यह दोश्लोक हैं। शरीर में धातुओं की विषमता से जो रोग उत्पन्न होते हैं वह वात पित्त तथा कफ से अलग नहीं होते परन्तु आगन्तुज रोगों में विशेषता है ॥ ३ ॥

आगन्तुरन्वेतिनिजंविकारं निजस्तथागंतुरतिप्रवृद्धः । तत्रानुबन्धं प्रकृतिञ्चसम्यग्ज्ञात्वा ततःकर्म्मसमारभेत ॥ ४ ॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते रोगचतुष्केअष्टोदरीयोनामोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

कभी बहुत बढ़ाहुआ आगन्तुज रोग निज रोगका अनुसरण करता है कभी बहुत बढ़ाहुआ निजरोग आगन्तुज रोगका अनुसरण करता है ऐसे स्थल में अनुबन्ध तथा प्रकृति को देखकर चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंअष्टोदरीयनामउन्नीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥

बीसवां अध्याय ॥

अथातो महारोगाध्यायं व्याख्यास्यामः।

इति हस्माह भगवानात्रेयः। चत्वारोरोगाभवन्ति आगन्तुवातपित्तश्लेष्मनिमित्ताः।तेषांचतुर्णां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मपिरोगाणांरोगत्वमेकविधं रुक् सामान्यात् । द्विविधापुनः प्रकृतिरेषामागन्तुनिजविभागाद् द्विविधं चैषामधिष्ठानंमनःशरीरविशेषात् । विकाराःपुनरेषामपरिसंख्येयाः प्रकृत्यधिष्ठानलिङ्गायतनविकल्पविशेषाणामपरिसंख्येयत्वात् । मुखानि तु खल्वागन्तोः नखदशनपतनाऽभिचाराभिशापाभिषङ्गव्यधबन्धपीडनरज्जुदहनमन्त्राशनिभूतोपसर्गादीनि । निजस्यतुमुखंवातपित्तश्लेष्मणांवैषम्यम् । द्वयोस्तुखलुआगन्तुनिजयोः प्रेरणसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः प्रज्ञापराधःपरिणामश्चेति । सर्वेपितुखल्वेतेऽभिप्रवृद्धाश्चत्वारोरोगाः परस्परमनुबध्नन्ति नचान्योन्यसन्देहमापद्यन्ते । आगन्तुर्हिव्यथापूर्वसमुत्पन्नोजघन्यंवातपित्तश्लेष्मणां वैषम्यमापादयति । निजेतुवातपित्तश्लेष्माणः पूर्ववैषम्यमापद्यन्तेजघन्यंव्यथामभिनिर्वर्तयन्ति । तेषांत्रयाणामपिदोषाणांशरीरेस्थानविभागउपदेक्ष्यते । तद्यथावस्तिःपुरीषाधानंकटिः सक्थिनीपादावस्थीनि वातस्थानानि । तत्रापिपक्काशयो विशेषेणवातस्थानं । स्वेदोरसोलसीकारुधिरमामाशयश्च पित्तस्थानानि तत्रापि आमाशयोविशेषेण पित्तस्थानम् । उरःशिरोग्रीवापर्वाण्यामाशयोमेदश्चश्लेष्मणःस्थानानि । तत्रापिउदरोविशेषेणश्लेष्मणःस्थानम् । सर्वशरीरचारास्तु वातपित्तश्लेष्माणोहिसर्वस्मिन्शरीरेकुपिताकुपिताःशुभाशुभानिकुर्वन्ति । प्रकृतिभूताःशुभानिउपचयबलवर्णप्रसादादीनि । अशुभानि पुनःविकृतिमापन्नानिविकारसंज्ञकानि तत्रविकाराः सामान्यजानानात्मजाश्चतत्रसामान्यजाः पूर्वमष्टोदरीयेव्याख्याताः। नानात्मजास्त्विहाध्यायेऽनुव्याख्यास्यामः । तद्यथाअशीतिर्वातविकाराः चत्वारिंशत्पित्तविकाराः विंशतिः श्लेष्मविकाराः । तत्रादौवातविकारानतुव्याख्यास्यामः । तद्यथा नखभेदश्च विपादिकाचपादशूलश्चपादभ्रंशश्च सुप्तपादताचवातखुडताचगुल्फग्रहश्चपिण्डिकोद्वेष्टनश्चगृध्रसीचजानुभेदश्च, जानुविश्लेषश्च, ऊरुस्तम्भश्च, ऊरुसादश्च, पाङ्गुल्यञ्च, गुदभ्रंशश्च,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुदार्त्तिश्च, वृषणोत्क्षेपश्च, शेफ स्तम्भश्च, वङ्क्षणानाहश्च, श्रोणिभेदश्च, विड्भेदश्च, उदावर्त्तश्च, खञ्जत्वञ्च, कुब्जत्वञ्च, वामनत्वञ्च, त्रिकग्रहश्च, पृष्ठग्रहश्च, पार्श्वावमर्दश्च,उदरवेष्टश्च, हृन्मोहश्च, हृदद्रवश्च, वक्ष-उपरोधश्च, वक्ष-उद्धर्षश्च,बाहुशोषश्च, ग्रीवास्तम्भश्च, मन्यास्तम्भश्च, कण्ठोद्धंसश्च, हनुस्तम्भश्च, ओष्ठभेदश्च, दन्तभेदश्च, दन्तशैथिल्यञ्च, मूकत्वञ्च,वाक्सङ्गश्च, कषायास्यताच, मुखशोषश्च, अरसज्ञताच, घ्राणनाशश्च, कर्णशूलञ्च, अशब्दश्रवणञ्च, उच्चैःश्रुतिश्च, बाधिर्य्यञ्च, वर्त्मस्तम्भश्च, वर्त्मसङ्कोचश्च, तिमिरश्च, अक्षिशूलञ्च, अक्षिव्युदासश्च, भ्रूव्युदासश्च, शंखभेदश्च, ललाटभेदश्च, शिरोरुक्च, केशभूमिस्फुटनञ्च अर्दितञ्च, एकाङ्गरोगश्च, सर्वांगरोगश्च, पक्षवधश्च, आक्षेपकश्च, दण्डकश्च, श्रमश्च, भ्रमश्च, वेपथुश्च, जृम्भाच, विषादश्चातिप्रलापश्च, ग्लानिश्च, रौक्ष्यञ्च, पारुष्यञ्च, श्यावारुणावभासताच, अस्वप्नश्च, अनवस्थितत्वञ्चेत्यशीतिर्वातविकाराः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त महारोगाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा आगन्तुज वातज पित्तज और कफज यह चार प्रकारके रोग होते हैं इन चारों प्रकारके रोगों में पीड़ा की समता से रोगत्व एकही प्रकार का है आगन्तुज तथा निजभेद से रोगों की प्रकृति दो प्रकार की है और इनके स्थान भी दो हैं मन तथा शरीर किन्तु इन के विकार असंख्य हैं क्योंकि प्रकृति स्थान लिंग आयतन तथा विकल्प इन की विशेषता असंख्य हैं आगन्तुज रोग नख दांत गिरना अभिचार (मारणादि हिंसा करना) शाप अभिषंग (गाली देना) वध वन्धन पीड़न रस्सी दहन मंत्र वज्र और भूतोत्पात इत्यादि कारणों से उत्पन्न होते हैं निजरोग वात पित्त तथा कफकी विषमतासे होते हैं निज और आगन्तुज यह दोनों प्रकार के रोग विषयों के साथ इन्द्रियों के असात्म्य संयोग से प्रज्ञापराध से और प्रकृति के बिगड़ने से उत्पन्न होते हैं चारों प्रकार के रोग वढ़कर एक दूसरे से मिलजाते हैं परन्तु परस्पर सन्देहजनक नहीं होते आगन्तुज रोग में पहले व्यथा होती है पीछे वात पित्त तथा कफकी विषमता होती है और निज रोगमें पहले वात पित्त तथा कफ की विषमता होतीहै और पीछे व्यथा उत्पन्न होती है तीनों दोषों के शरीर में अलग २ स्थानकहे जातेहैं जैसे वस्ति पक्वाशय कटि जंघा पैर तथा हड्डी यह वायु के स्थान हैं इनमें से पक्वाशय में विशेषकरके वायु रहती है स्वेदरस लसी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का (धातुविशेष) रुधिर तथा आमाशय यह पित्त के स्थान हैं इनमें से आमाशय में विशेष करके पित्त रहता है वक्षःस्थल शिर ग्रीवा पोरुए आमाशय तथा मेद यह कफ के स्थान हैं इनमें से वक्षःस्थलमें कफ विशेष करके रहताहै संपूर्ण शरीरमें विचरण करनेवाले वात पित्त कफ सब शरीर में कुपित तथा कोपरहित रहकर शुभाशुभ करते हैं विकाररहित वातादि दोष पुष्टता बल वर्ण तथा प्रसन्नता आदि शुभ कार्य्योंको करते हैं और विकारयुक्त वातादि दोषरोगसंज्ञक अशुभ कार्य्यों को करते हैं रोग दो प्रकार के होते हैं सामान्यज और नानात्मज इनमें से सामान्यज तो अष्टोदरीयनाम अध्याय में कहेगये अब इस अध्याय में नानात्मज कहे जायंगे वह जैसे वातज रोग अस्सी प्रकार के पित्तज रोग चालीस ४० प्रकारके और कफज रोग बीस २० प्रकारके हैं उनमें से पहले वातज रोग कहेजाते हैं जैसे नखभेद विपादिका पादशूल पादभ्रंश सुप्तपाद वातखुड्डता गुल्फग्रह पिण्डिकोद्वेष्टन गृध्रसी जानुभेद जानुविश्लेष ऊरुस्तंभ ऊरुसाद पांगुल्य गुदभ्रंश गुदार्त्ति वृषणोत्क्षेप शेफस्तम्भ वंक्षण आनाह शोणितभेद विड्भेद उदावर्त्त खंजता कुब्जता वामनत्व त्रिकग्रह पृष्ठग्रह पार्श्वावमर्द उदरावेष्ट हृन्मोह हृद्द्राव हृद्ग्रह वक्षउद्धर्ष वक्षउपरोध वाहुशोष ग्रीवास्तंभ मन्यास्तंभ कंठोपध्वंस हनुभेद ओष्ठभेद दन्तभेद दन्तशैथिल्य मूकत्व वाक्संग कषायास्यता मुखशोष अरसता घ्राणनाश कर्णशूल अशब्दश्रवण ऊंचा सुनना बधिरता वर्त्मस्तंभ वर्त्मसंकोच तिमिर अक्षिशूल अक्षिव्युदास भ्रूव्युदास शंखभेद ललाटभेद शिरोरुक् केश भूमिस्फुटन अर्दित एकांगरोग सर्वाङ्गरोग पक्षवध आक्षेपक दंडक श्रम भ्रम वेपथु जृंभा विषाद अतिप्रलाप ग्लानि रूक्षता परुषता श्यावारुणावभासिता अस्वप्न और अनवस्थितत्व यह अस्सी ८० वातज रोग हैं ॥ १ ॥

वातविकाराणामपरिसंख्येयानामाविष्कृततमाव्याख्याताः सर्वेष्वपि खल्वेतेषु वातविकारेषु अन्येषुचानुक्तेषु वायोरिदमात्मरूपमपरिणामि कर्मणश्चस्वलक्षणंयदुपलभ्य तदवयवंवाविमुक्तसन्देहावातविकारमेवाध्यवस्यन्ति कुशलाः ॥ २ ॥

वातज रोग असंख्य हैं उनमें से अत्यन्त प्रसिद्ध जो हैं वेही कहेगये हैं इन संपूर्ण रोगों में तथा नहीं कहेगये अन्य वातरोगों में भी वायु के आत्मस्वरूप तथा कार्य्य के सुलक्षण को अथवा उसके कुछ अंशों को पाकर चतुर वैद्य निस्सन्देह होकर वातज रोग का निश्चय करते हैं ॥ २ ॥

तद्यथा।

रौक्ष्यंलाघवंवैशद्यं, शैत्यंगतिरमूर्त्तत्वंचेतिवायोरात्मरूपाणि । एवंविधत्वाच्चकर्मणश्चस्वलक्षणमिदमस्यभवति तं तं शरीरावयवमाविशतः स्रंसभ्रंशव्यासाङ्गभेदसादहर्ष–तर्षावर्त्त--मर्दकम्पचालतोदव्यथवेष्टभङ्गास्तथाखरपरुषविषदसुषिरतारुणकषायविरसता–शोषशू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्वसुप्तिसङ्कुचनस्तम्भनानिवायोः कर्माणितैरन्वितंवातविकारमेवाध्यवस्येत् ॥ ३ ॥

जैसे रूक्षता लघुता विशदता शीतलता गति तथा अदृश्यता यह वायु के आत्मरूप हैं ऐसे आत्मरूप होने के कारण वायु के कार्य्य के यह लक्षण होते हैं जैसे स्रंसन भ्रंशन व्यासंग भेद अवसाद हर्ष कंप आवर्त्त (गोलकरना) तृषा अंगमर्द चालन पीड़ा बिंधनेकीसी पीड़ा वेष्टन भंग कर्कशता परुषता विशदता छिद्र करना रक्तवर्ण कषाय विरसता शोष शूल सुप्ति संकोच तथा स्तंभन यह वायु के कार्य्य हैं यह लक्षण जिसमें होंय उसे वातरोगी जानना चाहिये ॥ ३ ॥

तंमधुराम्ललवणस्निग्धोष्णैरुपक्रमैरुपक्रमेत। स्वेदस्नेहास्थापनानुवासननस्तःकर्म्मभोजनाभ्यंगोत्सादनपरिषेकादिभिर्वातहरैर्मात्रां कालञ्च प्रमाणीकृत्यास्थापनानुवासनन्तुसर्वथोपक्रमेभ्योवाते प्रधानतमंमन्यन्तेभिषजः ॥ ४ ॥

मधुर अम्ल लवण स्निग्ध तथा उष्ण वस्तुओंसे वातरोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये और स्वेदन स्नेहन आस्थापन अनुवासन नस्यकर्म भोजन अभ्यंग उत्सादन(मालिश) तथा परिषेक (सींचना) आदि वातहर के द्वारा चिकित्साकरे किन्तु मात्रा तथा कालको विचारले ऊपर कहीहुई संपूर्ण चिकित्साओंमें से वैद्य लोग अनुवासन तथा आस्थापन को वातज रोगों में प्रधान मानते हैं ॥ ४ ॥

तद्ध्यादितएवपक्वाशयमनुप्रविश्य केवलंवैकारिकं वातमूलंछिनत्ति। तत्रावजितेवातेऽपि शरीरान्तर्गता वातविकाराः प्रशान्तिमापद्यन्ते। यथावनस्पतेर्मूले छिन्ने स्कन्धशाखावरोहकुसुमफलपलाशादीनांनियतोविनाशस्तद्वत् ॥ ५ ॥

क्योंकि अनुवासन तथा आस्थापनकारक औषधि पहलेही पक्वाशय में जाकर वायु के विकारकारी मूल को नष्टकरदेतीहैं फिर वायु के शान्त होजानेपर शरीर में जितने वातज रोग होतेहैं वह आपही शान्त होजातेहैं जैसे वृक्षकी जड़ काट डालो तो उसके पुष्ट शाखा प्रशाखा पुष्प तथा फलादिक अवश्य नष्ट होजाते हैं ॥ ५ ॥

पित्तविकाराश्चत्वारिंशदतऊर्ध्वं व्याख्यास्यन्ते। तद्यथा—ओषश्च, प्लोषश्च, दाहश्च, दवथुश्च, धूमकश्च, अम्लकश्च, विदाहश्च, अन्तर्दाहश्च, अंसदाहश्च, ऊष्माधिक्यञ्च, अतिस्वेदश्चांगगंधश्च, अंगावयवदरणंच, शोणितक्लेदश्च, मांसक्लेदश्च, त्वग्दाहश्च, मांसदाहश्च, त्वङ्मांसदरणञ्च, चर्मदरणञ्च, रक्तकोष्ठाश्च, रक्तविस्फोटाश्च, रक्तपित्तञ्च, रक्तम-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एडलानिच, हरितत्वञ्च, हारिद्रत्वञ्च, नीलिकाच, कक्षाच, कामलाच, तिक्तास्यताच, पूतिमुखताच, तृष्णायाआधिक्यञ्च, अतृप्तिश्च, आस्यपाकश्च, गलपाकश्च, अक्षिपाकश्च, गुदपाकश्च, मेढ्रपाकश्च, जीवादानञ्च, तमःप्रवेशश्च, हरितहारिद्रमूत्रनेत्रवर्चस्त्वंचेति चत्वारिंशतिपित्तविकाराः । पित्तविकाराणामपरिसंख्येयानामाविष्कृततमाव्याख्याताभवन्ति ॥ ६ ॥

इसके उपरान्त पित्तके चालीस प्रकार के रोग कहेजाते हैं जैसे ओष (पासरक्खीहुई अग्निकासा संताप) प्लोष (अग्निसे जल जानेकी सी पीड़ा) दाह दवथु (शरीर में अग्नि लगने कीसी पीड़ा) मुखसे धुआंसा निकलना खट्टीडकार आना विदाह अन्तर्दाह अंशदाह ऊष्माकी अधिकता स्वेद शरीरमें दुर्गन्धि अंगों का फटना रुधिर में क्लेदहोना मांसमें क्लेद होना त्वग्दाह मांसदाह त्वचा तथा मांसका फटना चमड़ेका फटना रक्तवर्ण के चकत्ते रक्तवर्ण विस्फोटक रक्तपित्त रक्तमंडल शरीरका हरित वर्णहोना पीतवर्ण होना नीलिका कक्षा कामला मुखकातिक्तहोना मुख से दुर्गन्धि आना तृषाकी अधिकता तृप्तन होना मुखका पकना गलेका पकना नेत्रोंका पकना गुदाका पकना लिंगका पकना जीवादान (मारा निकलते से मालूम होना) अन्धकारसा मालूम होना और मूत्र नेत्र तथा विष्ठाका हरित अथवा पीलाहोजाना यह चालीस पित्त के रोग हैं असंख्य पित्तरोगों में से जो बहुत प्रसिद्ध हैं सोई कहेगये हैं ॥ ६ ॥

सर्वेष्वपिखल्वेतेषु पित्तविकारेष्वन्येषुचानुक्तेषुपित्तस्येदमात्मरूपमपरिणामिकर्म्मणश्चस्वलक्षणंयत्तदुपलभ्यतदवयवंवाविमुक्तसन्देहाः पित्तविकारमेवाध्यवस्यन्ति कुशलाः ॥ ७ ॥

इन सम्पूर्ण पित्तरोगों में तथा नहीं कहे गये अन्यपित्तरोगों में भी पित्त का जो आत्मरूप और नहीं बदलने वाले कार्य का लक्षण उसे पाकर अथवा उसके अंश को पाकर चतुर वैद्य निस्सन्देह होकर पित्तके रोग का निश्चय करे ॥ ७ ॥

तद्यथा ॥

औष्ण्यंतैक्ष्ण्यंलाघवमनतिस्नेहोवर्णश्चशुक्लारुणवर्ज्जो गन्धश्चविस्रोरसौचकटुकाम्लौ पित्तस्यात्मरूपाणि । एवंविधस्याचकर्म्मणःस्वलक्षणमिदमस्यभवति । तंतंशरीरावयवमाविशतोदाहोष्मपाकस्वेदक्लेदकोथस्रावरागाः यथास्वञ्चगन्धवर्णरसादिभिर्निर्वर्त्तनं पित्तस्यकर्म्माणितैरन्वितं पित्तविकारमेवाध्यवस्येत् ॥ ८ ॥

जैसे उष्णता तीक्ष्णता लघुता स्नेह की अल्पता श्वेतता तथा रक्ततारहित वर्ण आम

गन्धि और कटु तथा अम्लरस यह पित्तके आत्मरूपहैं ऐसे स्वरूप होनेके कारण शरीर में स्थित पित्तके कार्य्य के यह लक्षण होते हैं जैसे दाह उष्णता पाक स्वेद क्लेद कोथ स्राव राग और पित्तके अनुसार गन्ध वर्ण तथा रसका उत्पन्न होना यह पित्तके कार्य्य हैं यह जिस में होंय उसे पित्तका रोगी जानना चाहिये ॥ ८ ॥

तंमधुरतिक्तकषायशीतैरुपक्रमैरुपक्रमेत स्नेहविरेकप्रदेहपरिषेकाभ्यङ्गावगाहादिभिः पित्तहरैर्मात्रांकालञ्चप्रमाणीकृत्य । विरेचनन्तु सर्वोपक्रमेभ्यः पित्तेप्रधानतमंमन्यन्तेभिषजः ॥ ९ ॥

मधुर तिक्त कषाय तथा शीतल वस्तुओंसे तिस पित्तरोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये और स्नेहन विरेचन प्रदेह (लेप) परिषेक अभ्यंग तथा अवगाहनादिक पित्तनाशक कार्य्यकरे इनमें मात्रा काल तथा समय का विचार करलें इन सम्पूर्ण औषधियों में से वैद्य लोग पित्तके लिये विरेचन को अत्यन्त प्रधान मानते हैं ॥ ९ ॥

तद्ध्यादितएवामाशयमनुप्रविश्य केवलंवैकारिकं पित्तमूलञ्चापकर्षति । तत्रावजितेपित्तेऽपिशरीरान्तर्गताःपित्तविकाराःप्रशान्तिमापद्यन्ते । यथाग्नौव्यपोढेकेवलमग्निगृहञ्चशीतंभवतितद्वत् ॥ १० ॥

क्योंकि विरेचनकारक औषध पहलेही आमाशय में जाकर पित्त के विकारकारी मूल को नष्ट करती है इससे पित्त के शान्त होजानेपर शरीर में पित्तसे हुए सम्पूर्ण रोग इस तरह शान्त होजाते हैं जैसे अग्निगृहसे अग्नि निकाल लेने से अग्निरहित गृह शीतल होजाता है ॥ १० ॥

श्लेष्मविकाराश्च विंशतिरतऊर्द्धं व्याख्यास्यन्ते । तद्यथा–तृप्तिश्च, तन्द्राच, निद्राधिक्यञ्च, स्तैमित्यञ्च, गुरुगात्रताच, आलस्यञ्च, मुखमाधुर्य्यञ्च, मुखस्रावश्च, उद्गारश्च, श्लेष्मोद्गरणञ्च, मलस्याधिक्यञ्च कण्ठोपलेपश्च, बलाशश्च, हृदयोपलेपश्च, धमनीप्रतिचयश्च, गलगण्डश्च, अतिस्थौल्यञ्च, शीताग्निताच, उदर्दश्च, श्वेतावभासताच, श्वेतमूत्रनेत्रवर्चस्त्वञ्चेति विंशतिः श्लेष्माधिकाराः ॥ ११ ॥

इसके उपरान्त कफज बीस २० रोग कहेजाते हैं जैसे तृप्ति, तन्द्रा निद्राकी अधिकता शरीर का गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना शरीर का भारीपन आलस्य मुखकी मधुरता बहुत लार बहना कफकी वमन मलकी अधिकता डकारें आना कफकी अधिकता हृदय तथा कण्ठमें कफ लिपा हुआसा मालूम होना नसोंकी स्थूलता गलगण्ड अत्यन्त स्थूलता मंदाग्नि उदर्द श्वेतवर्ण और मूत्र नेत्र तथा मलका श्वेत होना यह बीस कफज रोग हैं ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्लेष्मविकाराणामपरिसंख्येयानां माविष्कृततमाव्याख्याताः। सर्वेष्वपितुखल्वेतेषु श्लेष्मविकारेष्वन्येषुचानुक्तेषु श्लेष्मणइदमात्मरूपमपरिणामिकर्मणश्चस्वलक्षणंयदुपलभ्यते तदवयवंवाविमुक्तसन्देहाः श्लेष्मविकारमध्यवस्यन्तिकुशलाः॥ १२॥

असंख्य कफज रोगोंमें से यह वहुत प्रसिद्ध रोगोंमें कहेगये हैं इन सम्पूर्ण कफज रोग तथा नहीं कहेगये अन्य कफज रोगोंमेंभी कफका जो आत्मरूप तथा नहीं बदलनेवाले कार्य्य का जो लक्षण उसे पाकर या उसके किसी अंशको पाकर चतुर वैद्य निस्सन्देह होकर कफज विकार का निश्चय करते हैं॥ १२॥

तद्यथा--श्वैत्यशैत्यगौरवमाधुर्य्यमात्सर्याणि श्लेष्मण आत्मरूपाण्येवंविधत्वाच्चकर्मणः स्वलक्षणमिदमस्यभवति। तंतंशरीरावयवमाविशतः श्वैत्यशैत्यकंडूस्थैर्य्यगौरवस्नेहस्तम्भसुप्तिक्लेदोपदेहबंधमाधुर्य्यचिरकारित्वानि श्लेष्मणः कर्माणितैरन्वितं श्लेष्मविकारमेवाध्यवस्येत्॥ १३॥

वह इस प्रकार है। शुक्लता शीतलता गौरव मधुरता तथा मत्सरता यह कफके आत्मरूप हैं ऐसे स्वरूप होनेके कारण शरीरके अंगों में प्रवेश कियेहुये कफके कार्य्य के यह लक्षण होते हैं जैसे शुक्लता शीतलता खुजली स्थिरता गौरव स्नेह स्तम्भ सुप्ति क्लेद उपदेह बन्ध मधुरता तथा धीरे २ कार्य्य करना यह कफके कार्य्य हैं यह जिसके होंय उसे कफका रोगी जानना चाहिये॥ १३॥

तंकटुकतिक्तकषायतीक्ष्णोष्णरूक्षैरुपक्रमैरुपक्रमेतस्वेदनवमनशिरोविरेचनव्यायामादिभिः श्लेष्महरैर्मात्रांकालञ्चप्रमाणीकृत्य। वमनन्तुसर्वोपक्रमेभ्यःश्लेष्मणिप्रधानतमंमन्यन्तेभिषजः॥ १४॥

कटु तिक्त कषाय तीक्ष्ण उष्ण तथा रूखी वस्तुओंके द्वारा कफज रोगों की चिकित्सा करे और समय तथा मात्राका विचार करके कफनाशक स्वेदन वमन शिरोविरेचन तथा व्यायामादि के द्वारा चिकित्सा करे ऊपर कहीहुई संपूर्ण चिकित्साओं में से, वैद्य लोग कफज रोगोंमें वमनको प्रधान मानते हैं॥ १४॥

तद्ध्यादितएवामाशयमनुप्रविश्य केवलं वैकारिकंश्लेष्ममूलमपकर्षति। तत्रावजितेश्लेष्मण्यपिशरीरान्तर्गताःश्लेष्मविकाराः प्रशान्तिमापद्यन्ते। यथाभिन्नेकेदारसेतौशालियवषष्टिकादीन्यभिष्यन्द्यमानानिअम्भसाप्रशोषमापद्यन्तेतद्वदिति॥ १५॥

क्योंकि वमनकारक औषध पहलेही आमाशय में जाकर कफके विकारकारी मूलको

नष्ट करती है इस्से कफ के शान्त होजानेपर शरीरमें हुए संपूर्ण कफज रोग इस तरह शान्तहोजाते हैं जैसे खेतकी मेंड़के तोड़देने से जलके बहजानेपर शालिधान्य यव तथा साठीआदिक सूखजाते हैं ॥ १५ ॥

भवन्तिचात्र।

रोगमादौपरीक्षेततततोऽनन्तरमौषधम्। ततःकर्मभिषक्पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ॥ १६ ॥

इस में यह श्लोक हैं। कि वैद्य पहले रोग की परीक्षा करे फिर औषधि की परीक्षा करे तदनन्तर ज्ञानपूर्वक चिकित्सा का प्रारंभ करे ॥ १६ ॥

यस्तुरोगमविज्ञायकर्माण्यारभतेभिषक्। अप्यौषधविधानज्ञस्तस्यसिद्धिर्यदृच्छया ॥ १७ ॥

जो वैद्य रोगको विना जाने चिकित्सा का प्रारंभ करता है वह चाहै औषधियों के विधान को जानता भी होय परन्तु उस को सिद्धि यदृच्छाही (इत्तिफाक) से प्राप्त होतीहै ॥ १७ ॥

यस्तुरोगविशेषज्ञःसर्वभैषज्यकोविदः। देशकालप्रमाणज्ञस्तस्यसिद्धिरसंशयम् ॥ १८ ॥

और जो वैद्य रोगों की विशेषता संपूर्ण औषध और देश तथा काल के प्रमाण को जानता है उसकी चिकित्सा अवश्य सिद्ध होती है ॥ १८ ॥

तत्रश्लोकाः।

संग्रहः प्रकृतिर्देशोविकारमुखमीरणम्। असन्देहोऽनुबन्धश्चरोगाणांसम्प्रकाशितः ॥ १९ ॥ दोषस्थानानिरोगाणांगणानानात्मजाश्रये। रूपंपृथक्त्वंदोषाणांकर्मचापरिणामियत् ॥ २० ॥ पृथक्त्वेनचदोषाणांनिर्दिष्टाःसमुपक्रमाः। सम्यक्महतिरोगाणामध्याये तत्त्वदर्शिना ॥ २१ ॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते रोगचतुष्केमहारोगाध्यायोनामविंशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २० ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। कि संग्रह प्रकृति देश विकारों के कारण असन्देह रोगों का अनुबन्ध दोष स्थान नानात्मज रोगों के गण दोषों का पृथक् २ आत्मरूप नहीं बदलने वाला कार्य्य और पृथक् चिकित्सा यह सब विषय इस महारोगाध्याय में आत्रेयजी ने कहे १९।२१ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंमहारोगाध्यायनामबीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

अथतोऽष्टौनिन्दितीयमध्यायंव्याख्यास्यामः।

इति हस्माहभगवानात्रेयः।

इहखलुशरीरमधिकृत्याष्टौपुरुषानिन्दिताभवन्ति। तद्यथा—अतिदीर्घश्चातिह्रस्वश्चातिलोमाचालो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माचातिकृष्णश्चातिगौरश्चातिस्थूल श्चातिकृशश्चेति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अष्टौनिन्दितीय नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

निश्चय करके इस शरीर के विषय में आठ पुरुष निन्दित होते हैं जैसे अतिदीर्घ अतिह्रस्व अधिक रोमवाला रोमरहित अत्यन्त गौरवर्ण अत्यन्त कृष्णवर्ण अत्यन्त स्थूल और अत्यन्त कृश ॥ १ ॥

तत्रातिस्थूलकृशयोर्भूयएवापरेनिन्दितविशेषाभवन्ति । अतिस्थूलस्यतावदायुषोह्रासः जरोपरोधः कृच्छ्रव्यवायता दौर्बल्यं दौर्गन्ध्यंस्वेदाबाधःक्षुदतिमात्रंपिपासातियोगश्चेतिभवन्त्यष्टौदोषाः ॥ २ ॥

इन में से अत्यन्त स्थूल तथा कृश विशेष करके निन्द्य होते हैं क्योंकि आयु की क्षीणता शीघ्रही वृद्ध होना मैथुन में कष्ट दुर्बलता दुर्गन्धि अधिक स्वेद अत्यन्त क्षुधा और अधिक तृषा यह आठ दोष अत्यन्त स्थूलपुरुष के होते हैं ॥ २ ॥

तदतिस्थौल्यमतिसंपूरणाद्गुरुमधुरशीतस्निग्धोपयोगादव्यायामादव्यवायाददिवास्वप्नाद्धर्षनित्यत्वादचिन्तनाद्बीजस्वभावाच्चोपजायन्ते ॥ ३ ॥

अधिक भोजन भारी मधुर शीतल तथा स्निग्ध वस्तुओंका भोजन व्यायाम न करना मैथुन न करना दिन में सोना सदैव प्रसन्न रहना चिन्तारहित होना और वीर्य्य स्वभाव इन कारणों से अत्यन्त स्थूलता होती ॥ ३ ॥

तस्यातिमात्रंमेदस्विनोमेदएवोपचीयते नेतरेधातवस्तस्मादस्यायुषोह्रासः, शैथिल्यात्सौकुमार्य्याद्गुरुत्वाच्चमेदसोजरोपरोधः,शुक्राबहुत्वान्मेदसावृतमार्गत्वात्कृच्छ्रव्यवायता दौर्बल्यमसमत्वाद्धातूनां, दौर्गन्ध्यंमेदोदोषान्मेदसःस्वभावत्वात्स्वेदलत्वाच्चमेदसः, श्लेष्मसंसर्गाद्विष्यन्दित्वाच्च बहुत्वाद्व्यायामासहत्वात्स्वेदाबाधः, तीक्ष्णाग्नित्वात्प्रभूतकोष्ठवायुत्वाच्च क्षुदतिमात्रं पिपासातियोगश्चेति ॥ ४ ॥

स्थूलपुरुष की केवल मेदाही बढ़ती है अन्यधातु नहीं बढ़ती है इस से आयु क्षीण होती है शिथिलता से सुकुमारता से तथा मेदाके भारीपन से वृद्धावस्था शीघ्रही आजाती है वीर्य्य की हीनता से तथा मेदा के द्वारा मार्ग के रुकजाने से मैथुन करने में कष्टहोता है धातुओंके विषम होने से दुर्बलता होती है मेदाके दोष से मेदा के स्वभाव से और मेदाके स्वेदकारी होने से शरीर में दुर्गन्धि आती है कफ के संसर्ग से क्लेद से शरीरके भारी होने से व्यायाम न करसकने से स्वेद बहुत निकलता है और अग्नि के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीक्ष्ण होनेसे तथा कोष्ठमें वायुकी अधिकता से क्षुधा तथा तृषाकी अधिकता होतीहै ॥४॥

भवन्तिचात्र।

मेदसावृतमार्गत्वाद्वायुःकोष्ठेविशेषतः। चरन्सन्धुक्षयत्यग्निमाहारं शोषयत्यपि॥५॥

इसमें यह श्लोक हैं। कि मेदासे मार्गों के रुकजाने के कारण वायु कोष्ठ में विशेष विचरण करके अग्निको दीप्त करती है और आहार को सुखाती है॥५॥

तस्मात्सशीघ्रंजनयत्याहारञ्चात्रकांक्षति। विकारांश्चाश्नुतेघोरान्किंचित्कालव्यतिक्रमात्॥६॥

इससे स्थूल पुरुष का अन्न शीघ्रही पच जाता है और उसे फिर अन्नकी इच्छा होती है उस समय उसे जो भोजन न मिले तो घोर विकार उत्पन्न होते हैं॥६॥

एतावुपद्रवकरौ विशेषादग्निमारुतौ। एतौहिदहतःस्थूलंवनदावोवनंयथा॥७॥

अग्नि तथा वायु यही दोनों विशेष करके उपद्रव करते हैं जैसे दावाग्नि वनको भस्म करती है उसी प्रकार अग्नि तथा वायु स्थूल पुरुषका नाश करती है॥७॥

मेदस्यतीवसंवृद्धे सहसैवानिलादयः। विकारान्दारुणान्कृत्वानाशयन्त्याशुजीवितम्॥८॥

मेदके सहसापूर्व्वक बहुत बढ़जाने पर वातादिक दोष भयंकर दोषों को उत्पन्न करके शीघ्रही प्राणों को नष्ट करते हैं॥८॥

मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः। अयथोपचयोत्साहोनरोऽतिस्थूलउच्यते॥९॥

मेद तथा मांसके बहुत बढ़ने से कूला उदर तथा स्तन जिसके हिलने लगें कार्य्य करने में उत्साह न होय और स्थूलता अच्छी न मालूम पड़े ऐसे पुरुष को अतिस्थूल कहते हैं॥९॥

इतिमेदस्विनोदोषाहेतवोरूपमेवच। निर्दिष्टंवक्ष्यतेवाच्यमतिकार्श्येऽप्यतःपरम्॥१०॥

यह मेदस्वी पुरुषके दोष कारण तथा लक्षण कहेगये इसके उपरान्त अत्यन्त कृशता का वर्णन करते हैं॥१०॥

सेवारूक्षान्नपानानां लंघनंप्रमिताशनम्। क्रियातियोगःशोकश्ववेगनिद्राविनिग्रहः॥११॥

रूखी वस्तुओंका भोजन तथा पान लंघन स्वल्पभोजन अधिक कार्य्य करना शोक मल मूत्रादि वेग तथा निद्राका रोकना॥११॥

रूक्षस्योद्वर्त्तनंस्नानस्याभ्यासःप्रकृतिर्जरा। विकारानुशयःक्रोधःकुर्वन्त्यतिकृशंनरम्॥१२॥

रूखी वस्तुओं की मालिश नित्य स्नान स्वभाव वृद्धावस्था सदैव रोगी रहना और क्रोध यह मनुष्य को अत्यन्त कृश करते हैं॥१२॥

व्यायाममतिसौहित्यं क्षुत्पिपासाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थौषधम्। कृशोनसहतेतद्वदतिशीतोष्णमैथुनम्॥ १३॥

अत्यन्त कृश पुरुष व्यायाम अधिक भोजन क्षुधा तृषा औषध अधिक शीत अधिक उष्णता तथा, मैथुन को नहीं सहसक्ता है॥ १३॥

प्लीहाकासःक्षयःश्वासोगुल्मार्शांस्युदराणिच। कृशंप्रायोऽभिधावन्ति रोगाश्चग्रहणीगताः॥ १४॥

प्लीहा खांसी क्षय श्वास गुल्म बवासीर उदर तथा संग्रहणी यह रोग प्रायः अत्यन्त कृश पुरुषको प्राप्त होते हैं॥ १४॥

शुष्कस्फिगुदरग्रीवोधमनीजालसन्ततः। त्वगस्थिशोषोऽतिकृशः स्थूलपर्वानरोमतः॥ १५॥

कूला उदर ग्रीवा त्वचा और हड्डियोंका सूखजाना सब शरीर में नसेछाजांय और पोरुओं की स्थूलता यह अत्यन्त कृशके लक्षण हैं॥ १५॥

सततंव्याधितावेतावतिस्थूलकृशौनरौ। सततंचोपचर्य्यौहिकर्षणैर्बृंहणैरपि॥ १६॥

अतिस्थूल तथा अत्यन्त कृश यह दोनों सदैव रोगी रहते हैं इससे कर्षण तथा बृंहण से सदैव इनकी चिकित्सा करे॥ १६॥

स्थौल्यकार्श्येवरंकार्श्यंसमोपकरणौहितौ। यद्युभौव्याधिरागच्छेत्स्थूलमेवातिपीडयेत्॥ १७॥

अत्यन्त स्थूल तथा अत्यन्त कृश इन दोनोंके पास समान उपकरण होनेपरभी स्थूल की अपेक्षा कृश अच्छा है क्योंकि जो इन दोनों को रोग होय तो कृशकी अपेक्षा स्थूल को अधिक पीड़ा होती है॥ १७॥

सममांसप्रमाणस्तुसमसंहननोनरः। दृढेन्द्रियत्वाद्व्याधीनां नबलेनाभिभूयते॥ १८॥

जिसके शरीर में मांस अधिक तथा न्यून न होय और जिस स्थान में जैसे मांसादिक की आवश्यकता है वैसाही होय उस पुरुष को इन्द्रियों की दृढ़ता के कारण रोग बहुत पीड़ित नहीं करता॥ १८॥

क्षुत्पिपासातपसहःशीतव्यायामसंसहः। समपक्तासमजरःसममांसचयोमतः॥ १९॥

क्षुधा तृषा धूप शीत तथा व्यायामका सहने वाला अग्नि के अनुसार अन्न का परिपाक करने वाला और समय पर वृद्धा वस्था से युक्त होने वाला पुरुष न अधिक स्थूल न अधिक कृश कहाजाता है॥ १९॥

गुरुचातर्पणंचेष्टंस्थूलानांकर्षणंप्रति। कृशानांबृंहणार्थंचलघुसन्तर्पणञ्चयत्॥ २०॥

स्थूल पुरुषों को कृश करने के लिये भारी और अतर्पणकारी वस्तु भोजनमें देनीचाहिये और कृशों को धातुवर्द्धनके लिये हलका संतर्पण हितहै॥ २०॥

वातघ्नान्यन्नपानानिश्लेष्ममेदोहराणिच। रूक्षोष्णावस्तयस्तीक्ष्णारू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षारयुद्वर्त्तनानिच ॥ २१ ॥

वात कफ तथा मेदानाशक अन्न पान रूक्ष उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्ति रूखे उवटन ॥२१॥

गुडूचीभद्रमुस्तानांप्रयोगस्त्रैफलस्तथा। तक्रारिष्टप्रयोगस्तु प्रयोगोमाक्षिकस्यच॥ २२ ॥

गिलोय व कदम्ब तथा नागरमोथा का प्रयोग त्रिफलाका प्रयोग तक्रारिष्टका प्रयोग शहतका प्रयोग ॥ २२ ॥

विडङ्गनागरंक्षारःकाललोहरजोमधु। यवामलकचूर्णञ्चप्रयोगःश्रेष्ठ उच्यते ॥ २३ ॥

वायविडंग तथा सोंठ जवाखार काले लोहे का चूर्ण शहत यवका चूर्ण तथा आमले का चूर्ण इनका प्रयोग अत्यन्त स्थूल के लिये श्रेष्ठ है ॥ २३ ॥

विल्वादिपञ्चमूलस्यप्रयोगःक्षौद्रसंयुतः। शिलाजतुप्रयोगस्तुसाग्निमन्थरसाशिला ॥ २४ ॥

सहतयुक्त वेल आदि पंचमूलका काढ़ा अरणी के रस सहित शिलाजीत का प्रयोग ॥ २४ ॥

प्रसातिकाप्रियंगुश्चश्यामाकायवकायवाः। चूर्णह्वाःकोद्रवामुद्गाकुलत्थाश्चक्रमर्द्दकाः ॥ २५ ॥

प्रसातिका (नीवार) ककुनी सामा यव जुआर कोदों मूंग कुलथी वनमूंग ॥ २५ ॥

आढकीनाञ्चबीजानिपटोलामलकैःसह। भोजनार्थंप्रयोज्यानिपानञ्चानुमधूदकम् ॥ २६ ॥

अड़हर यह संपूर्ण अन्न परवल तथा आमले के साथ अत्यन्त स्थूल पुरुषको भोजन करने चाहिये और भोजन के उपरान्त सहत मिला हुआ जल पीना चाहिये ॥ २६ ॥

अरिष्टांश्चानुपानार्थेमेदोमांसकफापहान्। अतिस्थौल्यविनाशायसंविभज्यप्रयोजयेत् ॥ २७ ॥

अतिस्थूलता के नाशार्थ अलग २ मेदा मांस तथा कफनाशक अरिष्ट पीना चाहिये ॥ २७ ॥

प्रजागरंव्यवायञ्चव्यायामंचिन्तनानिच। स्थौल्यमिच्छन्परित्यक्तुंक्रमेणाभिप्रवर्द्धयेत् ॥ २८ ॥

जो मनुष्य स्थूलता को त्याग करना चाहै वह जागरण मैथुन व्यायाम तथा चिन्ता क्रम से बढ़ावे ॥ २८ ॥

स्वप्नोहर्षःसुखाशय्यामनसोनिर्वृतिःशमः। चिन्ताव्यवायव्यायामविरामःप्रियदर्शनम् ॥ २९ ॥

निद्रा हर्ष सुखदायक शय्या मन में सन्तोष शान्ति अचिन्ता मैथुन तथा व्यायाम का त्याग प्रियदर्शन ॥ २९ ॥

नवान्नानिनवंमद्यंग्राम्यानूपौदकाःरसाः। संस्कृतानिचमांसानिदधिसर्पिःपयांसिच ॥ ३० ॥

नवीनअन्न नवीनमद्य और ग्राम्य अनूप देश तथा जल के जीवों के मांसका रस तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अच्छे प्रकार से पकायाहुआ मांस दही घी दूध ॥ ३० ॥

इक्षवःशालयोमांसागोधूमाशुडवैकृतम् । वस्तयःस्निग्धमधुरास्तैलाभ्यङ्गश्चसर्वदा ॥ ३१ ॥

ईख शालिधान्य उर्द गेहूं गुड़के बनेहुये पदार्थ स्निग्ध तथा मधुर वस्ति नित्य तैलाभ्यङ्ग ॥ ३१ ॥

स्निग्धमुद्वर्त्तनंस्नानंगन्धमाल्यनिषेवणम् । शुक्लोवासोयथाकालंदोषाणामवसेचनम् ॥ ३२ ॥

स्निग्ध उबटन स्नान सुगन्धित मालाओं का धारण श्वेतवस्त्र समय के अनुसार वमनादि कार्य्य ॥ ३२ ॥

रसायनानांवृष्याणांयोगानामुपसेवनम् । हत्वातिकार्श्यमादत्तेनृणामुपचयंपरम् ॥ ३३ ॥

रसायन तथा वृष्ययोग यह सब मनुष्यकी कृशता को दूर करके शरीर को पुष्टिकारक होते हैं ॥ ३३ ॥

अचिन्तनाच्चकार्य्याणांध्रुवंसन्तर्पणेनच । स्वप्नप्रसङ्गाच्चनरोवराहइवपुष्यति ॥ ३४ ॥

किसी कार्य्य की चिन्ता न करने से पुष्टताकारी औषधियों के सेवन से और सुखपूर्वक सोने से मनुष्य शूकर के समान पुष्ट होताहै ॥ ३४ ॥

यदातुमनसिक्लान्तेकर्मात्मानःक्लान्विताः । विषयेभ्योनिवर्त्तन्तेतदास्वपितिमानवः ॥ ३५ ॥

मनके थकजाने पर जब सम्पूर्ण इन्द्रियां थककर विषयों से निवृत्त होजाती हैं तब मनुष्य को निद्रा आती है ॥ ३५ ॥

निद्रायत्तंसुखंदुःखंपुष्टिःकार्श्यंबलाबलम् । वृषताक्लीवताज्ञानमज्ञानंजीवितंनच ॥ ३६ ॥

सुख दुःख पुष्टता कृशता बल निर्बलता वृष्यता नपुंसकता ज्ञान अज्ञान जीवन और मृत्यु यह सब निद्राके आधीन हैं ॥ ३६ ॥

अकालेऽतिप्रसंगाच्चनचनिद्रानिषेविता । सुखायुषीपराकुर्य्यात्कालरात्रिरिवापरा ॥ ३७ ॥

असमय में सोने से बहुत सोने से और न सोने से निद्रा दूसरी कालरात्रिके समान मनुष्य के सुख तथा आयु को नाश करदेती है ॥ ३७ ॥

सैवयुक्तापुनर्युङ्क्तेनिद्रादेहंसुखायुषा । पुरुषंयोगिनंसिद्ध्यासत्याबुद्धिरिवागता ॥ ३८ ॥

और युक्तिपूर्वक सेवन कीहुई निद्रा योगी पुरुष को सिद्धि से प्राप्तहुई यथार्थ बुद्धिके समान सुख तथा आयुसे पूर्ण करतीहै ॥ ३८ ॥

गीताध्ययनमद्यस्त्रीकर्मभाराध्वकर्षिताः । अजीर्णिनःक्षताःक्षीणावृद्धाबालास्तथाबलाः ॥ ३९ ॥

गीत अध्ययन मद्यपान मैथुन कार्य्यभार तथा मार्गगमन से कृश अजीर्ण क्षत क्षीणता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा वृद्धावस्थासेयुक्त बालक निर्बल ॥३९॥

तृष्णातीसारशूलार्त्ताःश्वासिनःशूलिनःकृशाः। पतिताभिहतोन्मत्ताः क्लान्तायानप्रजागरैः ॥ ४० ॥

तृषा अतीसार शूल श्वास तथा हिचकी से व्याकुल कृश ऊंचे स्थानसे गिरेहुए चोटवाले उन्मत्त सवारी तथा जागरणसे व्याकुल॥४०॥

क्रोधशोकभयक्लान्तादिवास्वप्नोचिताश्चये। सर्वएतेदिवास्वप्नंसेवेरन्सार्वकालिकम् ॥ ४१ ॥

क्रोध शोक तथा भयसे युक्त और अन्य जो दिनमें सोने के योग्यहोंय इन सबको दिनमें सदैव सोना उचित है ॥ ४१ ॥

धातुसाम्यात्तथाह्येषांबलञ्चाप्युपजायते। श्लेष्मापुष्यतिचाङ्गानिस्थैर्य्यं भवतिचायुषः ॥ ४२ ॥

इससे धातु समता को प्राप्त होती हैं बल बढ़ताहै कफ तथा अंग पुष्ट होते हैं और आयु स्थिर होती है॥ ४२ ॥

श्लेष्माचादानरूक्षाणांवर्द्धमानेच मारुते। रात्रीणांचातिसंक्षेपाद्दिवास्वप्नःप्रशस्यते ॥ ४३ ॥

ग्रीष्मऋतु में आदान (सूर्यका किरणोंसे रसको सूखना) से शरीर रूक्ष होजाताहै वायु बढ़ती है और रात्रि छोटी होजाती हैं इससे दिनमें सोना श्रेष्ठ है ॥ ४३ ॥

ग्रीष्मवर्ज्येषुकालेषुदिवास्वप्नात्प्रकुप्यतः। श्लेष्मपित्तेदिवास्वप्नस्तस्मात्तेषुनशस्यते ॥ ४४ ॥

ग्रीष्मऋतु के सिवाय अन्य कालोंमें दिनमें सोनेसे कफ तथा पित्त कुपित होताहै इससे अन्य ऋतुओं में दिनमें शयन करना श्रेष्ठ नहीं है ॥ ४४ ॥

मेदस्विनःस्नेहनित्याःश्लेष्मलाः श्लेष्मरोगिणः। दूषीविषार्त्ताश्चदिवानशयीरन्कदाचन ॥ ४५ ॥

अधिक मेदावाले नित्य स्नेहका सेवन करनेवाले अधिक कफवाले कफज रोगवाले और दूषीविषसे पीड़ित इन सबको दिन में कदापि शयन न करना चाहिये ॥ ४५ ॥

हलीमकःशिरःशूलंस्तैमित्यंगुरुगात्रता। अङ्गमर्दोऽग्निनाशश्चप्रलेपोहृदयस्यच ॥ ४६ ॥

हलीमक शिरकी पीड़ा शरीरका गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना अंगों का भारीपन अंगमर्द मंदाग्नि हृदयका कफ से लिपा हुआसा मालूम होना ॥ ४६ ॥

शोथारोचकहृल्लासपीनसार्द्धावभेदकाः। कोठश्चपिडिकाःकण्डूस्तन्द्राकासोगलामयाः ॥ ४७ ॥

शोथ अरुचि मतली पीनस आधाशीशी चकत्ते पिड़िका खुजली तन्द्रा खांसी गलेके रोग ॥ ४७ ॥

स्मृतिबुद्धिप्रमोहाश्चसंरोधःस्रोतसांज्वरः। इन्द्रियाणामसामर्थ्यंविषवेगप्रवर्त्तनम् ॥ ४८ ॥

स्मृति तथा बुद्धिका नष्टहोना स्रोतों का रुकना ज्वर इन्द्रियोंका असमर्थ होना और विषके वेगका बढ़ना ॥ ४८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवेन्नृणांदिवास्वप्नस्याहितस्यनिषेवणात् । तस्माद्धिताहितंस्वप्नंबुद्ध्वास्वप्यात्सुखंबुधः ॥ ४९ ॥

यह सम्पूर्ण रोग दिनमें अनुचित शयन करने से होते हैं इससे बुद्धिमान् पुरुष हित तथा अहित जानकर शयनकरे ॥ ४९ ॥

रात्रौजागरणंरूक्षंस्निग्धमस्वपनंदिवा। अरूक्षमनभिष्यन्दित्वासीनप्रचलायितम् ॥ ५० ॥

रात्रिमें जगनेसे रूक्षता और दिनमें सोने से स्निग्धता होती है और बैठने से तथा टहलनेसे न रूक्षता होतीहै न क्लेद होताहै॥५०॥

देहवृत्तौयथाहारः तथास्वप्नःसुखोमतः । स्वप्नाहारसमुत्थेचस्थौल्यकार्श्येविशेषतः ॥ ५१ ॥

शरीर के बिषयमें जैसे भोजन सुखकारी है वैसे निद्राभी सुखकारी है विशेष करके निद्रा तथा आहारसे ही स्थूलता और कृशता उत्पन्न होती है ॥ ५१ ॥

अभ्यङ्गोत्सादनंस्नानंग्राम्यानूपौदकारसाः । शाल्यन्नंसदधिक्षीरंस्नेहोमद्यंमनःसुखम् ॥ ५२ ॥

अभ्यंग (तेलमलना) उबटन स्नान ग्राम्य जलचर तथा अनूप देशके जीवोंके मांसका रस शालिधान्य दही दूध स्नेह मद्य मनका सुख ॥ ५२ ॥

मनसोऽनुगुणागन्धाःशब्दाःसंवाहनानिच। चक्षुषस्तर्पणंलेपःशिरसोवदनस्यच ॥ ५३ ॥

मनके अनुकूल गन्ध तथा शब्द शरीर दबवाना नेत्रोंका तर्पण शिरमें तथा शरीरमें सुन्दर लेप लगाना ॥ ५३ ॥

स्वास्तीर्णंशयनंवेश्मसुखंकालस्तथोचितः । आनयन्त्यचिरान्निद्राम्प्रनष्टायानिमित्ततः ॥ ५४ ॥

सुन्दर बिछीहुई शय्या सुखदायक गृह और उचित समय यह सम्पूर्ण किसी कारण से नष्टहुई निद्राको शीघ्रही लाते हैं ॥ ५४ ॥

कायस्यशिरसश्चैवविरेकश्छर्दनंभयम् । चिन्ताक्रोधस्तथाधूमोव्यायामोरक्तमोक्षणम् ॥ ५५ ॥

विरेचन शिरोविरेचन वमन भय चिन्ता क्रोध धुआं व्यायाम रुधिर निकलवाना ५५॥

उपवासःसुखाशय्यासत्त्वौदार्य्यंतमोजयः । निद्राप्रसङ्गमहितं वारयन्ति समुत्थितम् ॥ ५६ ॥

लंघन असुखकारी शय्या सत्त्वगुण की अधिकता और तमोगुणका नाश इनकारणों से अहितकारी निद्राका नाश होताहै ॥ ५६ ॥

एतएवचविज्ञेयानिद्रानाशस्यहेतवः । कार्य्यंकालोविकारश्चप्रकृतिर्वायुरेवच ॥ ५७ ॥

कार्य्य काल रोग प्रकृति तथा वायु यहही निद्राके नाशके कारण हैं ॥ ५७ ॥

तमोभवाश्लेष्मसमुद्भवाचमनःशरीरश्रमसम्भवाच। आगन्तुकीव्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्यनुवर्त्तिनीच रात्रिस्वभावप्रभवाच निद्रा ॥ ५८ ॥

तमोगुणसे हुई कफसे हुई मन तथा शरीर के श्रमसे हुई आगन्तुकी रोग के अनुसार होनेवाली और रात्रिके स्वभाव से हुई इन सब निद्राओंमें से ॥ ५८ ॥

रात्रिस्वभावप्रभवामतायातांभूतधात्रींप्रवदन्तिनिद्राम् । तमोभवामाहुरघस्यमूलंशेषंपुनर्व्याधिषुनिर्दिशन्ति ॥ ५६ ॥

रात्रिके स्वभाव से हुई निद्रा को भूतधात्री कहते हैं और तमोगुण से हुई निद्रा को पापकामूल कहते हैं और शेष निद्राओं की रोगों में गणना है ॥ ५९ ॥

तत्रश्लोकाः ।

निन्दिताःपुरुषास्तेषांयौविशेषेणनिन्दितौ । वक्ष्यामिकारणंदोषास्तयोर्निन्दितभेषजम् ॥ ६० ॥

तिसमें यह श्लोक हैं । निन्दित पुरुष उन मेंसे जो दो विशेष करके निन्दित हैं उन दोनों के निन्दित होने का कारण दोष तथा औषध कहूंगा ॥ ६० ॥

येभ्योयदाहितानिद्रायेभ्यश्चाप्यहितायदा । अतिनिद्रानिद्रयोश्चभेषजंयद्भवाचसा ॥ ६१ ॥

जिनको जब निद्रा हित है जिनको जब निद्रा अहित है अतिनिद्रा तथा निद्रा नाशकी चिकित्सा और निद्राका कारण ॥ ६१ ॥

यायायथाप्रभावाचनिद्राततसर्वमात्रिजः । अष्टौनिन्दितसंख्यातेऽयाजहारपुनर्वसुः ॥ ६२ ॥

इति योजनाचतुष्के अष्टौनिन्दितीयो नाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

जिस २ निद्राका जो प्रभाव है यह सम्पूर्ण विषय इस अष्टौनिन्दितीय नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने कहे ॥ ६२ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंअष्टौनिन्दितीयनामइक्कीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

अथातोलंघनबृंहणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

इतिहस्माह भगवानात्रेयः ।

तपःस्वाध्यायनिरतानात्रेयःशिष्यसत्तमान् । षडग्निवेशप्रमुखानुक्त्वान्परिचोदयन् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त लंघन बृंहणीय नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

आत्रेयजीने तप तथा स्वाध्याय में निरत अग्निवेशादि अपने छओं शिष्योंसे कहा ॥१॥

लंघनंबृंहणंकालेरूक्षणंस्नेहनंतथा। स्वेदनंस्तम्भनञ्चैवजानीतेयःसवैभिषक् ॥ २ ॥

कि जो समयके अनुसार लंघन बृंहण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षण स्नेहन स्वेदन तथा स्तम्भन इनको जानता है वह ठीक २ वैद्य है ॥ २ ॥

इतितमेवमुक्तवन्तं भगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच । भगवँल्लंघनंकिंस्विल्लंघनीयाश्चकीदृशाः । बृंहणंबृंहणीयाश्चरूक्षणीयाश्चरूक्षणम् ३॥

इस प्रकार कहतेहुए भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने कहा कि हे भगवन् लंघन किसको कहते हैं और लंघनके योग्य कौन हैं बृंहण तथा बृंहण के योग्य मनुष्य रूक्षण तथा रूक्षण के योग्य मनुष्य ॥ ३ ॥

स्नेहनंस्नेहनीयाश्चस्वेदाःस्वेद्याश्चकेमताः । स्तम्भनंस्तम्भनीयाश्चवक्तुमर्हसितद्गुरो ॥ ४ ॥

स्नेहन तथा स्नेहन के योग्य मनुष्य स्वेदन तथा स्वेदन के योग्य मनुष्य स्तम्भन तथा स्तम्भनके योग्य मनुष्य कौन हैं हेगुरो इनका कृपा करके वर्णन कीजिये ॥ ४ ॥

लंघनप्रभृतीनाञ्च षण्णामेषांसमासतः कृताकृतातिवृत्तानांलक्षणंवक्तुमर्हसि ॥ ५ ॥

और लंघनादि छओंके योग अयोग तथा अतियोग के लक्षण संक्षेप से वर्णन कीजिये ॥ ५ ॥

गुरुरुवाच

यत्किञ्चिल्लाघवकरंदेहेतल्लङ्घनंस्मृतम्। बृंहत्वंयच्छरीरस्यजनयेत्तच्चबृंहणम् ॥ ६ ॥

आत्रेयजीने कहा कि जिसकेद्वारा शरीरमें लघुता होय उसका नाम लंघन है जिस के द्वारा शरीर में पुष्टता होय उसका नाम बृंहण है ॥ ६ ॥

रौक्ष्यंखरत्वंवैषद्यं यत्कुर्यात्तद्धिरूक्षणम्। स्नेहनंस्नेहानिःष्यन्दमार्दवक्लेदकारकम् ॥ ७ ॥

जिसकेद्वारा शरीरमें रूक्षता कर्कशता तथा विषदता होय उसको रूक्षण कहते हैं जिसके द्वारा शरीरमें स्निग्धता कोमलता तथा क्लेद होय उसे स्नेहन कहते हैं ॥ ७ ॥

स्तम्भगौरवशीतघ्नंस्वेदनंस्वेदकारकम् । स्तम्भनंस्तम्भयतियद्गतिमन्तंचलंध्रुवम् ॥ ८ ॥

जिसके द्वारा स्तंभ गौरव तथा शीत का नाश होय और स्वेद निकले उसे स्वेदन कहते हैं और जिसके द्वारा चंचल तथा द्रव वस्तुकी गति रुकजाय उसे स्तंभन कहते हैं ॥ ८ ॥

लघूष्णतीक्ष्णविषदं रूक्षंसूक्ष्मंखरंसरम् । कठिनञ्चैवयद्द्रव्यंप्रायस्तल्लङ्घनंस्मृतम् ॥ ९ ॥

लघु उष्ण तीक्ष्ण विषद रूक्ष सूक्ष्म खर सर (दस्तावर) तथा कठिन वस्तुको प्रायः लंघन कहते हैं क्योंकि यह वस्तु प्रायःशरीरको हलका करती हैं ॥ ९ ॥

गुरुशीतमृदुस्निग्धं बहुलंसूक्ष्मपिच्छिलम्। प्रायोमन्दंस्थिरंसूक्ष्मंद्रव्यंबृंहणमुच्यते ॥ १० ॥

गुरु शीत मृदु स्निग्ध बहुल स्थूल पिच्छिल

मन्द स्थिर तथा श्लक्ष्ण वस्तुको बृंहण कहते हैं क्योंकि ऐसी वस्तुओं से प्रायः शरीर पुष्ट होता है ॥ १० ॥

रूक्षंलघुखरंतीक्ष्णमुष्णंस्थिरमपिच्छलम् । प्रायशःकठिनञ्चैवयद्द्रव्यंतद्धिरूक्षणम् ॥ ११ ॥

रूक्ष लघु तीक्ष्ण उष्ण स्थिर पिच्छिलतारहित तथा कठिन वस्तुको रूक्षण कहते हैं क्योंकि ऐसी वस्तुओं से प्रायः रूक्षता होती है ॥ ११ ॥

द्रवंसूक्ष्मंसरंस्निग्धंपिच्छिलंगुरुशीतलम् । प्रायोमन्दंमृदुचयद्द्रव्यंतत्स्नेहनंमतम् ॥ १२ ॥

द्रव सूक्ष्म सर स्निग्ध पिच्छिल गुरु शीतल मन्द तथा मृदु वस्तुको स्नेहन कहते हैं क्योंकि ऐसी वस्तुओं से प्रायः शरीर चिक्कण होताहै ॥ १२ ॥

उष्णंतीक्ष्णंसरंस्निग्धंरूक्षंसूक्ष्मंद्रवंस्थिरम् । द्रव्यंगुरुचयत्प्रायःतद्धिस्वेदनमुच्यते ॥ १३ ॥

उष्ण तीक्ष्ण सर स्निग्ध रूक्ष सूक्ष्म द्रव स्थिर तथा गुरु वस्तुको स्वेदन कहते हैं क्योंकि ऐसी वस्तुओं से प्रायः शरीर में पसीना निकलता है ॥ १३ ॥

शीतंमन्दंमृदुश्लक्ष्णंरूक्षंसूक्ष्मंद्रवंसरम् । यद्द्रव्यंलघुचोद्दिष्टंप्रायस्तत्स्तम्भनंस्मृतम् ॥ १४ ॥

शीत मंद मृदु श्लक्ष्ण रूक्ष सूक्ष्म द्रव सर तथा लघु वस्तुको स्तंभन कहते हैं क्योंकि ऐसी वस्तुओं से प्रायः शरीर में द्रव तथा चंचल वस्तुओं की गति रुकजाती है ॥ १४ ॥

चतुष्प्रकारासंशुद्धिःपिपासामारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेतिलंघनम् ॥ १५ ॥

चार प्रकार की संशुद्धि (वमनादि) तृषा वायु धूप पाचन उपवास तथा व्यायाम यह सब लंघन हैं ॥ १५ ॥

प्रभूतश्लेष्मपित्तास्रमलाःसंदुष्टमारुताः । बृहच्छरीराबलिनोलंघनीयाविशुद्धिभिः ॥ १६ ॥

अधिक कफ पित्त रुधिर तथा मलवाले दूषित वायुवाले स्थूल शरीरवाले तथा बलवान् पुरुष इन सब को संशुद्धि (वमन विरेचनादि) के द्वारा लंघन कराना चाहिये ॥ १६ ॥

येषांमध्यबलारोगाः कफपित्तसमुत्थिताः । वम्यतीसारहृद्रोगविसूच्यलसकज्वराः ॥ १७ ॥

जिनके कफ पित्तज रोग मध्यबलवाले के होंय और जिनके छर्दि अतीसार हृद्रोग विसूचिका अलसक ज्वर ॥ १७ ॥

विबन्धगौरवोद्गारहृल्लासारोचकादयः । पाचनैस्तान्भिषक्प्राज्ञःप्रायेणादावुपाचरेत् ॥ १८ ॥

विबन्ध गौरव डकार मतली तथा अरुचि आदिक रोग होंय उनको बुद्धिमान् वैद्य पहले पाचन करावे ॥ १८ ॥

अतएवयथोद्दिष्टायेषामल्पबलाग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाः। पिपासानिग्रहस्तेषामुपवासैश्चतान्जयेत् ॥ १६ ॥

जिनके पूर्वोक्त रोग स्वल्प बलवान् होंय उनकी तृषाके रोकने से तथा उपवासों से चिकित्सा करे ॥ १९ ॥

रोगान्जयेन्मध्यबलान्व्यायामातपमारुतैः। बलिनांकिंपुनर्येषांरोगाणामवरंबलम् ॥ २० ॥

मध्यबलवाले रोगोंको व्यायाम धूप तथा वायुकेद्वारा जीते और बलवान् पुरुषों के छोटे बलके रोग होंय तो कहना ही क्या है ॥ २०

त्वग्दोषिणांप्रमीढानांस्निग्धाभिष्यन्दिबृंहिणाम्। शिशिरेलंघनंशस्तमपिवातविकारिणाम् ॥ २१ ॥

त्वचामें दोषवाले प्रमेही स्निग्ध अभिष्यन्दी तथा पुष्ट पुरुषों को और वातज रोगवाले पुरुषों को शिशिर ऋतु में लंघन करवाना चाहिये ॥ २१ ॥

अदिग्धविद्धमक्लिष्टंवयःस्थंसात्म्यचारिणाम्। मृगमत्स्यविहङ्गानां मांसंबृंहणमुच्यते ॥ २२ ॥

अदिग्धवेध तथा रोगरहित उचित अवस्थावाले सात्म्य मृग मछली तथा पक्षियोंका मांस बृंहण कहा जाता है ॥ २२ ॥

क्षीणाःक्षताःकृशावृद्धादुर्बलानित्यमध्वगाः। स्त्रीमद्यनित्याग्रीष्मेचबृंहणीयानराःस्मृताः ॥ २३ ॥

क्षीण क्षत कृश वृद्ध दुर्बल नित्य मार्ग चलनेवाले नित्य मैथुन करने वाले और नित्य मद्य पीनेवाले पुरुषों को बृंहण ग्रीष्मऋतु में कराना चाहिये ॥ २३ ॥

शोषार्शोग्रहणीदोषैर्व्याधिभिःकर्शिताश्चये। तेषांक्रव्यादमांसानांबृंहणालाघवेरसाः ॥ २४ ॥

यक्ष्मा बवासीर तथा ग्रहणी के दोषों से कृश पुरुषों के लिये मांसाशी जीवोंका मांस बृंहण तथा हलका होताहै ॥ २४ ॥

स्नानमुत्सादनंस्वप्नोमधुराःस्नेहवस्तयः। शर्कराक्षीरसर्पींषिसर्वेषांविद्धिबृंहणम् ॥ २५ ॥

स्नान उबटन निद्रा मधुर स्नेह वस्ति शक्कर दूध तथा घी यह सब के लिये बृंहण हैं ॥ २५ ॥

कटुतिक्तकषायाणांसेवनंस्त्रीष्वसंयमः। खलीपिण्याकतक्राणांमध्वादीनांचरूक्षणम् ॥ २६ ॥

कटु तिक्त तथा कषाय वस्तुओं का सेवन मैथुन खली पीना मट्ठा तथा सहत यह सब रूक्षण कहलाते हैं ॥ २६ ॥

अभिष्यन्दामहादोषामर्मस्थाव्याधयश्चये। ऊरुस्तम्भप्रभृतयोरूक्षणीयानिदर्शिताः ॥ २७ ॥

अभिष्यन्द दोषों की अधिकता मर्मस्थान में हुए रोग तथा स्तंभादिक रोग इन सब में रूक्षण हितहै ॥ २७ ॥

स्नेहाःस्नेहयितव्याश्चस्वेदाःस्वेद्याश्चयेनराः। स्नेहाध्यायेमयोक्तास्ते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वेदाख्येचसविस्तराः ॥ २८ ॥

स्नेहन तथा स्नेहन के योग्य पुरुष और स्वेदन तथा स्वेदन के योग्य पुरुष इन का वर्णन मैंने स्नेहाध्याय तथा स्वेदाध्याय में विस्तारपूर्वक किया है ॥ २८ ॥

द्रवंतनुसरं यावच्छीतौकरणमौषधम् । स्वाद्वतिक्तंकषायञ्चस्तम्भनंसर्वमेवतत् ॥ २९ ॥

द्रव तनु (पतली) सर शीतल मधुर तिक्त तथा कषाय यह सब वस्तु स्तंभन होती हैं ॥ २९ ॥

पित्तक्षाराग्निदग्धायेवम्यतीसारपीडिताः । विषस्वेदातियोगार्त्ताःस्तम्भनीयास्तथापराः ॥ ३० ॥

पित्त क्षार तथा अग्नि से दग्ध छर्दि तथा अतीसार से पीड़ित और विष तथा स्वेद के अतियोगसे व्याकुल पुरुष स्तंभनके योग्य होता है ॥ ३० ॥

वातमूत्रपुरीषाणांविसर्गेगात्रलाघवे । हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौतन्द्राक्लमेगते ॥ ३१ ॥

वायु मल तथा मूत्रका त्याग अंगों का हलकापन हृदय डकार कण्ठ तथा मुखकी शुद्धता तन्द्रा तथा ग्लानि का नाश ॥ ३१ ॥

स्वेदेजातेरुचौचैव क्षुत्पिपासासहोदये । कृतंलंघनमादेश्यंनिर्व्यथेचान्तरात्मनि ॥ ३२ ॥

स्वेद रुचि क्षुधा तथा तृषा का साथही उत्पन्न होना और चित्त की प्रसन्नता यह अच्छे प्रकार से किये गये लंघन के लक्षण हैं ॥ ३२ ॥

पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्च कासःशोषोमुखस्यच । क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णा दौर्बल्यंश्रोत्रनेत्रयोः ॥ ३३ ॥

पोरुओं में टूटने कीसी पीड़ा अंगमर्द खांसी मुखका सूखना क्षुधाका नाश अरुचि तृषा कान तथा नेत्रोंकी शक्तिका घटना ३३॥

मनसःसम्भ्रमोऽभीक्ष्णमूर्द्ध्ववायुस्तमोहृदि । देहाग्निबलनाशश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत् ॥ ३४ ॥

मनका भ्रान्त होना वारंवार हिचकी आदि आना हृदय में अन्धकारसा मालूम होना और मंदाग्नि देहके बलका नाश यह लंघन के अधिक करने से होते हैं ॥ ३४ ॥

बलंपुष्ट्युपलम्भश्च कार्श्यदोषविवर्जितम् । लक्षणंबृंहितेस्थौल्यमतिचात्यर्थबृंहिते ॥ ३५ ॥

बल पुष्टता और दोषरहित कृशता यह अच्छेप्रकार से हुए बृंहण के लक्षण हैं और अधिक बृंहण होने से अधिक स्थूलता होती है ॥ ३५ ॥

कृताकृतस्यचिह्नंयल्लंघितेतद्धिरूक्षिते । स्तम्भितःस्याद्बलेलब्धेयथोक्तैश्चामयैर्जितैः ॥ ३६ ॥

अच्छेप्रकारहुए तथा अधिकहुए बृंहण के जो लक्षण हैं वही अच्छेप्रकार से हुए तथा अधिकहुए रूक्षणके भी लक्षण हैं रोगों का नाश होना तथा बल होना यह अच्छेप्रकार से हुए स्तम्भनका लक्षण है ॥ ३६ ॥

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्यावतास्तब्धगात्रत्वमुद्वेगोहनुसंग्रहः । हृद्वर्चौनिग्रहश्चस्यादतिस्तम्भितलक्षणम् ॥ ३७ ॥

कपिशवर्ण होना अंगोंका स्तब्ध होजाना जावड़ोंका जकड़ना मलका रुकना हृदयका जकड़ना और घबराहट यह अधिक स्तम्भन होने के लक्षण हैं ॥ ३७ ॥

लक्षणंचकृतानांस्यात्षण्णामेषांसमासतः । तदौषधीनांव्याधीनामशमोवृद्धिरेववा ॥ ३८ ॥

लंघनादि से शान्त होनेवाले रोगों का न शान्तहोना अथवा बढ़ना यह लंघनादि छवों के अच्छे प्रकार न होने का लक्षणहै ॥३८॥

इतिषट्सर्वरोगाणांप्रोक्ताःसम्यगुपक्रमाः । साध्यानांसाधनेसिद्धामात्राकालानुरोधिनइति ॥ ३९ ॥

यह लंघनादिक छः कर्म संपूर्ण रोगों की चिकित्साके लिये कहेगयेहैं मात्रा तथा काल के अनुसार इन का व्यवहार करने से साध्य रोग अच्छे होते हैं ॥ ३९ ॥

भवति चात्र ।

दोषाणांबहुसंसर्गात्सङ्कीर्यन्तेह्युपक्रमाः । षट्त्वंतुनातिवर्त्तन्तेत्रित्ववातादयोयथा ॥ ४० ॥

इस में यह श्लोक है। दोषों के बहुत संसर्गसे चिकित्सा भी मिली हुई होती है परन्तु जैसे वातादि दोषों का त्रित्व (तीनहोना) नहीं दूरहोता है इसी प्रकार लंघनादिकों का षट्त्व नहीं दूरहोता है ॥ ४० ॥

इत्येस्मिँल्लंघनाध्याये व्याख्याताः षडुपक्रमाः । यथाप्रश्नंभगवताचिकित्सार्थैःप्रवर्त्तिता ॥ ४१ ॥

इतियोजनाचतुष्केलंघनबृंहणीयोनाम द्वाविंशोऽध्यायः समाप्तः ॥ २२ ॥

इस लंघन बृंहणीय नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने अग्निवेश के प्रश्नके अनुसार चिकित्सा के प्रवर्त्तक लंघनादि छः कार्य्य कहे ॥ ४१ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंलंघनबृंहणीय नामबाईसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

अथातः सन्तर्पणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

इति हस्माह भगवानात्रेयः ।

सन्तर्पयतियःस्निग्धैर्मधुरैर्गुरुपिच्छिलैः । नवान्नैर्नवमद्यैश्चमांसैश्चानूपवारिजैः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त सन्तर्पणीय नाम अध्याय का व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

जो मनुष्य स्निग्ध मधुर भारी तथा पिच्छिल वस्तुओं से नवीन अन्न तथा मद्य से अनूपदेश तथा जलके जीवोंके मांस से शरीर को तृप्त करता है ॥ १ ॥

गोरसैर्गौडिकैश्चान्नैः पिष्टिकैश्चातिमात्रशः । चेष्टाद्वेषीदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतः ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और गोरस से गुड़के बनेहुए पदार्थों से तथा पीठी के पदार्थों से तृप्त करताहै कार्य्य नहीं करता दिनमें सोता है और सदैव लेटा तथा बैठा रहता है ॥ २ ॥

रोगास्तस्योपजायन्तेसन्तर्पणनिमित्तजाः। प्रमेहकण्डूपिडकाःकोठपाण्ड्वामयज्वराः॥ ३ ॥

उसके संतर्पण से हुए यह रोग होते हैं जैसे प्रमेह खुजली पिड़िका चकत्ते पांडु ज्वर ॥३॥

कुष्ठान्यामप्रदोषाश्चमूत्रकृच्छ्रमरोचकम्। तन्द्राक्लैब्यमतिस्थौल्यमालस्यंगुरुगात्रता॥ ४ ॥

कुष्ठ आमदोष मूत्रकृच्छ्र अरुचि तन्द्रा नपुंसकता अत्यन्त स्थूलता अंगोंका भारी होना आलस्य ॥ ४ ॥

इन्द्रियेस्रोतसांरोधोबुद्धेर्मोहःप्रमीलकः। शोफाश्चैवंविधाश्चान्येशीघ्रमप्रतिकुर्वतः॥ ५ ॥

इन्द्रिय तथा स्रोतों का कफसे लिपाहुआ सा मालूम होना बुद्धि का मोह प्रमीलक (एकप्रकार की तन्द्रा) और शोथ तथा अन्य प्रकारके रोग होते हैं जो शीघ्र औषधि नहीं करता ॥ ५ ॥

शस्तमुल्लेखनंतेषां विरेकोरक्तमोक्षणम्। व्यायामश्चोपवासश्चधूमाश्चस्वेदनानिच॥ ६ ॥ सक्षौद्रश्चाभयाप्रासःप्रायोरूक्षान्नसेवनम्। चूर्णप्रदेहायेचोक्ताःकण्डूकोठविनाशनाः॥ ७ ॥

इन रोगों में वमन विरेचन रक्तमोक्षण व्यायाम उपवास धूम्रपान स्वेदन सहत के साथ हड़का चूर्ण चाटना प्रायः रूखे अन्न खाना और खुजली तथा चकत्तों के नाशके लिये कहेगये चूर्ण तथा लेप यह सब हितकारी होते हैं ॥ ६।७ ॥

त्रिफलारग्वधंपाठां सप्तपर्णंसवत्सकम्। मुस्तंनिम्बंसमदनंजलेनोत्क्वथितंपिबेत्॥ ८ ॥ तेनमोहादयोयान्तिनाशमभ्यस्यतांध्रुवम्। मात्राकालप्रयुक्तेन सन्तर्पणसमुत्थिताः॥ ९ ॥

हड़ बहेड़ा आमला अमलतास पाढ़र छितवन कुरैया नागरमोथा नीम तथा मैनफल इन सब का काढ़ा करके मात्रा तथा कालके अनुसार देने से संतर्पण से हुए प्रमेहादिक रोग अवश्य नष्ट होते हैं ॥ ८।९ ॥

मुस्तमारग्वधःपाठात्रिफलादेवदारु च। श्वदंष्ट्राखदिरोनिम्बोहरिद्रात्वक्चवत्सकात्॥ १० ॥

नागरमोथा अमलतास पाढ़र त्रिफला देवदारु गोखरू कत्था नीम हल्दी कुरैयाकी छाल ॥ १० ॥

रसमेषांयथादोषंप्रातःप्रातःपिबेन्नरः। सन्तर्पणकृतैःसर्वैर्व्याधिभिर्विप्रमुच्यते॥ ११ ॥

इन के रसको दोष के अनुसार प्रातःकाल पीने से संतर्पण से हुए सब रोग नष्ट होते हैं ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एभिश्चोद्वर्त्तनोद्धर्षस्नानयोगोप योजितैः । त्वग्दोषाःप्रशमंयान्तित थास्नेहोपसंहितैः ॥ १२ ॥

और इन का उबटन लगाने से इन को शरीर में मलने से इनका क्काथ करके स्नान करने से और इनके द्वारा सिद्धहुए स्नेह के मलने से त्वचाके दोष नष्ट होते हैं ॥ १२ ॥

कुष्ठंगोमेदकंहिङ्गुक्रौञ्चास्थित्र्यूष णंवचाम् । वृषकैलेश्वदंष्ट्रांचखरा ह्वाश्मभेदिकम् ॥ १३ ॥

कूट गोरोचन हींग क्रौंच पक्षी की हड्डी सोंठ मिर्च पीपल बच अडूसा छोटी इलायची गोखरू अजवायन और पाषाणभेद ॥ १३ ॥

तक्रेणदधिमण्डेनबदराम्लरसेनवा। मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहञ्च पीतमेतद्व्यपोह ति ॥ १४ ॥

इन सबको पीसकर मट्ठे के साथ दही के तोड़ के साथ अथवा बेरके रसके साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र तथा प्रमेह का नाश होता है ॥ १४ ॥

तक्राभयाप्रयोगैश्च त्रिफलायास्त थैवच । अरिष्टानांप्रयोगैश्चयान्ति मेहादयःशमम् ॥ १५ ॥

मट्ठेमें हड़ मिलाकर पीनेसे मट्ठेमें त्रिफला मिलाकर पीने से अथवा अरिष्ट पीनेसे प्रमेहादिक रोग नष्ट होते हैं ॥ १५ ॥

त्र्यूषणंत्रिफलाक्षौद्रंक्रिमिघ्नंसाजमो दकम् । मन्थोऽयंसक्तवःसर्पिर्हितो लोहोदकाप्लुतः । व्योषंविडङ्गं शिग्रूणित्रिफलाकटुरोहिणी ॥ १६ ॥

सोंठ पीपल मिर्च हड़ बहेड़ा आमला वायविड़ंग तथा अजमोद इन सबके चूर्ण को लोहेके जलमें मिलाकर और उसमें घी तथा सत्तू मिलाकर पीने से संतर्पणहुए रोगी को हितहै सोंठ मिर्च पीपल वायविड़ंग हड़ बहेड़ा आमला कुटकी ॥ १६ ॥

बृहत्यौद्वेहरिद्रेद्वेपाठासातिविषास्थि रा । हिङ्गुकेबुकमूलानियवानीधा न्याचित्रकम् ॥ १७ ॥

भटकटैया बड़ी भटकटैया हल्दी दारुहल्दी पाढ़र अतीस सरिवन हींग केवुककी जड़ अजवायन धनियां चीता ॥ १७ ॥

सौवर्चलमजाजीञ्चहवुषांचेतिचूर्ण येत् । चूर्णतैलघृतक्षौद्रभागाःस्युर्मा नतःसमाः ॥ १८ ॥

सोचरनोन कालाजीरा तथा हाऊबेर इन सबका चूर्ण एक भाग तैल घृत तथा सहत एक २ भाग ॥ १८ ॥

सक्तूनांषोडशगुणोभागःसन्तर्पणं पिबेत् । प्रयोगादस्यशाम्यन्ति रो गाःसन्तर्पणोत्थिताः ॥ १९ ॥

और सत्तू सोलह भाग इन सबको मिला कर पीने से संतर्पण से हुए रोग शान्त होते हैं ॥ १९ ॥

प्रमेहामूढवाताश्चकुष्ठान्यर्शांसि कामलाः । प्लीहापाण्डामयःशो फोमूत्रकृच्छ्रमरोचकः ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रमेह मूढ़वात कुष्ठ बवासीर कामला प्लीहा पांडु शोथ मूत्रकृच्छ्र अरुचि ॥ २० ॥

हृद्रोगोराजयक्ष्माचकासःश्वासोगलग्रहः। क्रिमयोग्रहणीदोषाःश्वैत्र्यंस्थौल्यमतीवच। नराणांदीप्यतेचाग्निःस्मृतिर्बुद्धिश्चवर्द्धते ॥ २१ ॥

हृद्रोग राजयक्ष्मा श्वास खांसी गलग्रह क्रिमि ग्रहणीदोष श्वेत कुष्ठ और शरीरकी अत्यन्त स्थूलता इन सबका नाश होता है अग्निदीप्त होतीहै और स्मृति तथा बुद्धि बढ़ती है ॥ २१ ॥

व्यायामनित्योजीर्णाशीयवगोधूमभोजनःसन्तर्पणकृतैर्दोषैर्मुच्यतेस्थौल्याद्विमुच्यते ॥ २२ ॥

नित्य व्यायाम करनेवाले एकवारके भोजन पकजानेपर द्वितीयवार भोजन करनेवाले यव तथा गेहूं के पदार्थ खानेवाले मनुष्य स्थूलता को छोड़कर संतर्पणसेहुए रोगोंसे छूट जाते हैं ॥ २२ ॥

उक्तःसन्तर्पणोत्थानामपतर्पणमौषधम्। वक्ष्यन्तेसौषधाश्चोर्ध्वमपतर्पणजागदाः ॥ २३ ॥

संतर्पणसे हुए रोग तथा उनकी औषधों का वर्णन कियागया अब अपतर्पणसे हुए रोग तथा उनकी औषधों का वर्णन किया जाता है ॥ २३ ॥

देहाग्निबलवर्णौजःशुक्रमांसबलक्षयः। ज्वरःकासानुबन्धश्चपार्श्वशूलमरोचकः ॥ २४ ॥

शरीर अग्नि बल ओज वर्ण वीर्य तथा मांसकाक्षय ज्वर खांसी पसलियों में पीड़ा अरुचि ॥ २४ ॥

श्रोत्रदौर्बल्यमुन्मादः प्रलापाहृदयव्यथा। विण्मूत्रसंग्रहःशूलंजंघोरुत्रिकसंश्रयम् ॥ २५ ॥

कर्णेन्द्रिय की दुर्बलता उन्माद प्रलाप हृदय में पीड़ा मलमूत्र का रुकना शूल जंघा पिंडली तथा त्रिकका जकड़जाना ॥ २५ ॥

पर्वास्थिसन्धिभेदश्च येचान्येवातजागदाः। ऊर्द्ध्ववातादयःसर्वेजायन्तेतेऽपतर्पणात् ॥ २६ ॥

पोरुए हड्डी तथा संधियों में पीड़ा यह सब रोग और अन्य ऊर्ध्ववातादिक वातज रोग अपतर्पण से होते हैं ॥ २६ ॥

तेषांसन्तर्पणंतज्ज्ञैः पुनराख्यातमौषधम्। यत्तदात्वेसमर्थस्यादभ्यासेवातदिष्यते ॥ २७ ॥

इन रोगों में संतर्पणकारक औषध उसी समय समर्थ करनेवाली अथवा अभ्याससे समर्थ करनेवाली तिसके जानने वालोंने देनी कहीहै ॥ २७ ॥

सद्यःक्षीणोहिसद्योवैतर्पणेनोपचीयते। नर्तेसन्तर्पणाभ्यासाच्चिरक्षीणस्तुपुष्यति ॥ २८ ॥

क्योंकि शीघ्रही क्षीणहुआ पुरुष शीघ्रही संतर्पण करानेसे पुष्ट होजाता है और बहुत कालसे क्षीणहुआ पुरुष संतर्पणके अभ्यास के विना नहीं पुष्ट होता ॥ २८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देहाग्निदोषभैषज्यमात्राकालानुवर्त्तिना। कार्य्यमत्वरमाणेन भेषजं चिरदुर्बले॥ २९॥

बहुत काल से दुर्बल हुए पुरुष की चिकित्सा अग्निदोष औषधकी मात्रा तथा समय का विचार करके धीरे २ करनी चाहिये॥ २९॥

हितामांसरसास्तस्मै पयांसिचघृतानिच। स्नानानिवस्तयोऽभ्यङ्गास्तर्पणास्तर्पणाश्चये॥ ३०॥

मांसकारस दूध घी स्नान बस्ति तैलाभ्यंग तथा अन्यतर्पण व अतर्पणकारक पदार्थ उसको हित होते हैं॥ ३०॥

ज्वरकासप्रसक्तानां कृशानांमूत्रकृच्छ्रिणाम्। तृष्यतामूर्द्ध्ववातानांहितंवक्ष्यामितर्पणम्॥ ३१॥

ज्वर तथा खांसीवाले कृश मूत्रकृच्छ्रवाले तृषायुक्त तथा ऊर्ध्ववातवाले पुरुषों को हितकारी तर्पण कहताहूं॥ ३१॥

शर्करापिप्पलीतैलघृतक्षौद्रसमांशकैः। सक्तुद्विगुणितोवृष्यस्तेषांमन्थःप्रशस्यते॥ ३२॥

शक्कर पीपल तेल घी तथा सहत यह सब समभाग और इन सबका दूना सत्तू मिलाकर पीनेसे हितहोताहै और यह योग पुरुषार्थकारक भी है॥ ३२॥

सक्तवोमदिराक्षौद्रंशर्कराचेतितर्पणम्। पिबेन्मारुतविण्मूत्रकफपित्तानुलोमनम्॥ ३३॥

सत्तू मद्य सहत तथा शक्कर इन सबको मिलाकर पीने से वायु मल मूत्र कफ तथा पित्त यह सब अपने मार्ग के अनुसार होजाते हैं॥ ३३॥

फाणितंसक्तवःसर्पिर्दधिमण्डोऽम्लकाञ्जिकम्। तर्पणंमूत्रकृच्छ्रघ्नमुदावर्त्तहरंपिबेत्॥ ३४॥

राब सत्तू घी दहीका तोड़ तथा कांजी इनका तर्पण पीनेसे मूत्रकृच्छ्र तथा उदावर्त्तका नाश होताहै॥ ३४॥

मन्थःखर्ज्जूरमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लीकदाडिमैः। परूषकैःसामलकैर्युक्तोमद्यविकारनुत्॥ ३५॥

खजूर दाख चूक इमली दाड़िम फालसा तथा आमला इन सबका मन्थ मद्यके विकारोंको पीनाचाहिये॥ ३५॥

स्वाद्वम्लोजलकृतः सस्नेहोरूक्षएववा। सद्यःसन्तर्पणोमन्थःस्थैर्य्यवर्णबलप्रदः॥ ३६॥

मधुर वस्तु तथा खट्टी वस्तुओं को जलमें मिलाकर घी छोड़ के अथवा न छोड़कर पीने से शीघ्रही संतर्पण होताहै और स्थिरता वर्ण तथा बलकीवृद्धि होतीहै॥ ३६॥

तत्रश्लोकः।

सन्तर्पणोत्थायेरोगारोगायेचापतर्पणात्। सन्तर्पणीयेतेऽध्यायेसौषधाःपरिकीर्त्तिताः॥ ३७॥

इतिसंतर्पणीयोऽध्यायस्त्रयोविंशःसमाप्तः॥ २३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिसमें यह श्लोकहै। संतर्पण से हुए रोग तथा उनकी औषध और अपतर्पण से हुए रोग तथा उनकी औषध यह विषय इस संतर्पणीय नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने कहाहै॥ ३७॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसंतर्पणीय नामतेईसवाँअध्यायसमाप्तहुआ॥ २३॥

चौबीसवां अध्याय॥

अथातोविधिशोणितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

विधिनाशोणितंजातंशुद्धंभवतिदेहिनाम्। देशकालौकसात्म्यानांविधिर्यःसंप्रदर्शितः॥ १॥

इसके उपरान्त विधिशोणितीयनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा॥

देश काल स्थान तथा स्वभावके अनुसार जो रुधिरके शुद्ध करने की विधि कहीगई है उससे मनुष्यका रुधिर शुद्ध होताहै॥ १॥

तद्विशुद्धंहिरुधिरंबलवर्णसुखायुषा। युनक्तिप्राणिनंप्राणःशोणितंह्यनुवर्त्तते॥ २॥

और जिनका रुधिर शुद्ध होजाताहै उनके बल वर्ण तथा आयुकी वृद्धि होतीहै क्योंकि मनुष्योंकी प्राणवायु रुधिर के अनुकूल रहती है॥ २॥

प्रदुष्टबहुतीक्ष्णोष्णैर्मद्यैरन्यैश्चतद्विधैः। तथातिलवणक्षारैरम्लैःकटुभिरेवच॥ ३॥

दूषित बहुत तीक्ष्ण उष्ण मद्य पीनेसे अथवा मद्यकेही सदृश अन्य वस्तुओं के पीने से अत्यन्त लवण क्षार अम्ल तथा कटु वस्तुओं के सेवन से॥ ३॥

कुलत्थमाषनिष्पावतिलतैलनिषेवणैः। पिण्डालुमूलकादीनांहरितानाञ्चसर्वशः॥ ४॥

कुलथी उर्द निष्पाव तिल तथा तेल इनके सेवन से पिंडालू मूली तथा हरेशाकोंके खाने से॥ ४॥

जलजानूपवैलानां प्रसहानांचसेवनात्। दध्यम्लमस्तुसक्तूनांसुरासौवीरकस्यच॥ ५॥

जलके अनूप देशके जलके किनारे रहनेवाले तथा प्रसह जीवों के मांसके सेवन से दही खटाई दहीका तोड़ सत्तू मदिरा तथा सौवीरक (मद्यविशेष) इनके सेवनसे॥५॥

विरुद्धानामुपक्लिन्नपूतीनांभक्षणेनच। भुक्त्वादिवाप्रस्वपतांद्रवस्निग्धगुरूणिच॥ ६॥

विरुद्ध तथा सड़ीहुई वस्तुओं के खाने से दिनमें भोजन करके सोनेसे द्रव स्निग्ध तथा भारी वस्तुओं के सेवनसे॥ ६॥

अत्यादानंतथाक्रोधंभजतांचातपानलौ। छर्दिवेगप्रतीघातात्कालेचानवसेचनात्॥ ७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिक भोजन व क्रोध से वायु तथा धूप के सेवनसे वमन के वेगको रोकने से समयपर स्नान न करने से ॥ ७ ॥

श्रमाभिघातसन्तापैरजीर्णाध्यशनैस्तथा । शरत्कालस्वभावाच्चशोणितंसंप्रदुष्यति ॥ ८ ॥

श्रमसे चोट लगने से सन्ताप से अजीर्ण में भोजन करने से और शरदऋतु के स्वभाव से रुधिर दूषित होता है ॥ ८ ॥

ततःशोणितजारोगाःप्रजायन्तेपृथग्विधाः । मुखपाकोऽक्षिरोगश्चपूतिघ्राणास्यगन्धता ॥ ९ ॥

फिर रुधिर के दूषित होनेसे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं जैसे मुख नासिका तथा नेत्रोंका पकना नासिका तथा मुखसे दुर्गन्धि आना ॥ ९ ॥

गुल्मोपदंशवीसर्परक्तपित्तप्रमीलकाः । विद्रधीरक्तमेहश्चप्रदरोवातशोणितम् ॥ १० ॥

गुल्म उपदंश जहरवात रक्तपित्त प्रमीलक विद्रधि रक्तप्रमेह प्रदर वातरक्त ॥ १० ॥

वैवर्ण्यमग्निनाशश्चपिपासागुरुगात्रता । सन्तापश्चातिदौर्बल्यमरुचिःशिरसश्चरुक् ॥ ११ ॥

विवर्णता मंदाग्नि तृषा अंगों का भारीपन सन्ताप अत्यन्त दुर्बलता अरुचि शिर में पीड़ा ॥ ११ ॥

विदाहश्चान्नपानस्यतिक्ताम्लोद्गरणंक्लमः । क्रोधप्रचुरताबुद्धेःसंमोहोलवणास्यता ॥ १२ ॥

भोजन तथा जलका परिपाक न होना तिक्त तथा खट्टीडकार आना ग्लानि क्रोध की अधिकता बुद्धिका मोहितहोना मुख का निमकीन रहना ॥ १२ ॥

स्वेदःशरीरदौर्गन्ध्यंमदःकम्पःस्वरक्षयः । तन्द्रानिद्रातियोगश्चतमसश्चातिदर्शनम् ॥ १३ ॥

स्वेद शरीर में दुर्गन्धिआना मद कंप स्वरभंग तन्द्रा निद्राकी अधिकता अन्धकार सा दिखाईदेना ॥ १३ ॥

कण्डूरुक्कोठपिडिकाःकुष्ठचर्मदलादयः । विकाराःसर्वएवैतेविज्ञेयाःशोणिताश्रयाः ॥ १४ ॥

खुजली चकत्ते पिड़िका कुष्ठ तथा चर्मदल यह सब रोग रुधिर के आश्रय विकारसे होतेहैं ॥ १४ ॥

शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैरुपक्रान्ताश्चयेगदाः । सम्यक्साध्यानसिध्यन्तिरक्तजांस्तान्विभावयेत् ॥ १५ ॥

जो साध्यरोग शीत उष्ण स्निग्ध तथा रूक्ष आदि औषधियों के द्वारा अच्छीतरह चिकित्सा करनेपर भी शान्त न होंय उनको रक्तज जानना चाहिये ॥ १५ ॥

कुर्य्याच्छोणितरोगेषु रक्तपित्तहरींक्रियाम् । विरेकमुपवासंवास्रावणंशोणितस्यवा ॥ १६ ॥

रक्तज रोगों में रक्त पित्तनाशक चिकित्सा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करे और विरेचन अनुवासन अथवा रक्तमोक्षण करे ॥ १६ ॥

बलदोषप्रमाणाद्वाविशुद्ध्यारुधिरस्यवा । रुधिरंस्रावयेज्जन्तोराशयंप्रसमीक्ष्यवा ॥ १७ ॥

बल तथा दोष के प्रमाणको जानकर रुधिरकी शुद्धताको देखकर रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ १७ ॥

अरुणाभंभवेद्वातात्पिच्छिलंफेनिलंतनु । पित्तात्पीतासितंरक्तंस्त्यायत्यौष्ण्याच्चिरात् ॥ १८ ॥

वायु से अरुणवर्ण फेनायुक्त विशद तथा पतला रुधिर होता है पित्तसे पीला तथा कृष्णवर्ण और उष्णताके कारण बहुत देरमें जमनेवाला रुधिर होता हैं ॥ ॥ १८ ॥

ईषत्पाण्डुकफाद्दुष्टंपिच्छिलंतन्तुमद्घनम् । द्विदोषलिङ्गंसंसर्गात्त्रिलिङ्गंसान्निपातिकम् ॥ १९ ॥

कफसे दूषित रुधिर कुछ पाण्डुवर्ण पिच्छिल तन्तुमत् (डोरेसे मालूम होंय) तथा गाढ़ा होताहै दो दोषों के चिह्न होंय तो दो दोषों से दूषित और तीनों दोषोंके चिह्न होंय तो सन्निपात से दूषित रुधिर जानना चाहिये ॥ १९ ॥

तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तकसन्निभम् । गुञ्जाफलसवर्णञ्चविशुद्धंविद्धिशोणितम् ॥ २० ॥

वीरवहूटी के समान आभावाला महावर के तुल्य और गोंगची के समान रंगवाला रुधिर शुद्ध होताहै ॥ २० ॥

नात्युष्णशीतंलघुदीपनीयं रक्तेऽपनीतेहितमन्नपानम् । तदाशरीरंह्यनवस्थितासृगग्निर्विशेषेण च रक्षितव्यम् ॥ २१ ॥

रुधिर निकलवाने के उपरान्त न बहुत शीतल न बहुत उष्ण हलका तथा दीपन अन्नपान हित है क्योंकि उस समय शरीर में रुधिर ठीक नहीं होता इससे अग्निकी रक्षा विशेष करके करनी चाहिये ॥ २१ ॥

प्रसन्नवर्णेन्द्रियमिन्द्रियार्थानिच्छन्तमव्याहतपक्तृवेगम् । सुखान्वितंतुष्टिबलोपपन्नं विशुद्धरक्तंपुरुषंवदन्ति ॥ २२ ॥

वर्ण तथा इन्द्रियोंकी प्रसन्नता विषयोंपर इच्छाका होना ठीक परिपाक होना सुख पुष्टता और बल यह शुद्ध रुधिरवाले पुरुषके लक्षण हैं ॥ २२ ॥

यदातुरक्तवाहीनिरससंज्ञावहानिच । पृथक्पृथक्समस्तावास्रोतांसिकुपितामलाः ॥ २३ ॥ मलिनाहारशीलस्यरजोमोहावृतात्मनः । प्रतिहत्यावतिष्ठन्ते जायन्तेव्याधयस्तदा ॥ २४ ॥

जिस समय दूषित आहार करनेवाले रजोगुण तथा मोहसेयुक्त चित्तवाले पुरुषके वातादिक तीनों दोष मिलकर अथवा अलग २ रुधिरवाही तथा रससंज्ञावाही स्रोतोंको वि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गाड़ करके स्थित होते हैं उस समय यह रोग होते हैं ॥ २३ । २४ ॥

मदमूर्च्छायसंन्यासास्तेषांविद्याद्विचक्षणः। यथोत्तरंबलाधिक्यंहेतुलिङ्गोपशान्तिषु ॥ २५ ॥

जैसे मद मूर्च्छा तथा संन्यास इन रोगोंमें बुद्धिमान् वैद्य हेतु लक्षण तथा शान्तिमें उत्तरोत्तर बलकी अधिकता जाने ॥ २५ ॥

दुर्बलञ्चेतसःस्थानंयदावायुःप्रपद्यते। मनोविक्षोभयन्जन्तोःसंज्ञांसंमोहयेत्तदा ॥ २६ ॥

कुपित वायु जिस समय चित्तके दुर्बल स्थान में प्राप्त होकर मनको बिगाड़ती है उस समय मनुष्यकी संज्ञा व्याकुल होजाती है ॥ २६ ॥

पित्तमेवंकफश्चैवंमनोविक्षोभयन्नृणाम्। संज्ञांनयत्याकुलतांविशेषश्चात्रवक्ष्यते ॥ २७ ॥

पित्त तथा कफ भी इसी प्रकार से मनको बिगाड़कर मनुष्यों की संज्ञाको व्याकुल करते हैं इन में जो विशेषता है वह आगे कहते हैं ॥ २७ ॥

सक्तानल्पद्रुताभाषंचलस्खलितचेतसम्। विद्याद्वातमदाविष्टंरूक्षश्यावारुणाकृतिम् ॥ २८ ॥

जल्दी २ बहुत बकना चंचलता गिर २ पड़ना रूक्षता और कपिश तथा अरुण वर्ण यह वातज मदके लक्षण हैं ॥ २८ ॥

सक्रोधपरुषाभाषंसंप्रहारकलिप्रियम्। विद्यात्पित्तमदाविष्टंरक्तपीतासिताकृतिम् ॥ २९ ॥

क्रोधपूर्व्वक कठोर वचन कहना मारना पीटना लड़ना और रक्त पीत तथा कृष्ण वर्ण होजाना यह पित्तज मदरोग के लक्षणहैं ॥ २९ ॥

स्वल्पसंबन्धवचनं तन्द्रालस्यसमन्वितम्। विद्यात्कफमदाविष्टंपाण्डुप्रध्यानतत्परम् ॥ ३० ॥

स्वल्प सम्बन्ध से वचन कहना तन्द्रा आलस्य पांडुवर्ण और विचार में तत्पर होना यह कफज मदके लक्षण हैं ॥ ३० ॥

सर्वाण्येतानिरूपाणिसन्निपातकृते मदे। जायतेशाम्यतित्वाशुमदोमद्यमदाकृतिः ॥ ३१ ॥

सन्निपातज मदमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं मद्यपान से हुए मद के समान आकृतिवाला मद शीघ्रही उत्पन्न होताहै और शीघ्रही शान्त होताहै ॥ ३१ ॥

यश्चमद्यमदःप्रोक्तोविषजोरौधिरश्चयः। सर्वएतेमदानर्तेवातपित्तकफत्रयात् ॥ ३२ ॥

मद्यका मद विषजमद और रक्तजमद यह सब मदभी वात पित्त तथा कफके विना नहीं होसक्ते ॥ ३२ ॥

नीलंवायदिवाकृष्णमाकाशमथवारुणम्। पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रञ्चप्रतिबुध्यते ॥ ३३ ॥

नीलवर्ण कृष्णवर्ण अथवा अरुणवर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आकाश देखकर मूर्च्छित होना और शीघ्रही जगना ॥ ३३ ॥

वेपथुश्चाङ्गमर्दश्चप्रपीडाहृदयस्यच। कार्श्यंश्यावारुणाछायामूर्च्छायेवातसम्भवे ॥ ३४ ॥

कंप अंगमर्द हृदय में पीड़ा कृशता और कपिश तथा अरुण वर्ण होना यह वातज मूर्च्छा के लक्षण हैं ॥ ३४ ॥

रक्तंहरितवर्णंवा वियत्पीतमथापि वा। पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदश्च प्रबुध्यते ॥ ३५ ॥

रक्त हरित अथवा पीतवर्ण आकाश को देखकर मूर्च्छितहोना और स्वेद निकलने पर जगना ॥ ३५ ॥

सपिपासःससन्तापो रक्तपित्ताकुलेक्षणः। संभिन्नवर्चाःपीताभोमूर्च्छायेपित्तसंभवे ॥ ३६ ॥

तृषा सन्ताप नेत्रों में रक्तपित्तका कोप मलका पतला होना और पीतवर्ण यह पित्तज मूर्च्छाके लक्षण हैं ॥ ३६ ॥

मेघसङ्काशमाकाशमावृतंवातमोघनैः। पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुध्यते ॥ ३७ ॥

मेघोंसे अथवा अन्धकार से आच्छादित आकाश को देखकर मूर्च्छित होना और बहुत देरमें जगना ॥ ३७ ॥

गुरुभिःप्रावृतैरङ्गैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा। सप्रसेकःसहृल्लासोमूर्च्छायेकफसम्भवे ॥ ३८ ॥

गीले तथा भारी चमड़े से अंगोंका ढका हुआसा मालूम होना मुखसे लारवहना और मतली यह कफज मूर्च्छाके लक्षण हैं ॥ ३८ ॥

सर्वाकृतिःसन्निपातादपस्मारइवागतः। सजन्तुंपातयत्याशुविनाबीभत्सचेष्टितैः ॥ ३९ ॥

सन्निपातज मूर्च्छामें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं यह मिरगी के समान शीघ्रही मनुष्य को गिरादेती है परन्तु इस में बीभत्स चेष्टा (हाथ पैर पटकना) नहीं होती ॥ ३९ ॥

दोषेषुमदमूर्च्छायाःकृतवेगेषुदेहिनाम्। स्वयमेवोपशाम्यन्तिसंन्यासोनौषधैर्विना ॥ ४० ॥

वातादि दोषों के वेगके शान्त होजानेपर मद तथा मूर्च्छा आपही शान्त होजाते हैं परन्तु संन्यास रोग औषधियों के बिना नहीं शान्त होता ॥ ४० ॥

वाग्देहमनसांचेष्टामाक्षिप्यातिबलामलाः। संन्यस्यन्त्यबलंजन्तुंप्राणायतनसंश्रिताः ॥ ४१ ॥

अत्यन्त बलवान् वातादिक दोष वाणी देह तथा मनकी चेष्टाको नष्ट करके प्राणोंके स्थान में स्थित होके निर्बल पुरुषके संन्यास रोग उत्पन्न करते हैं ॥ ४१ ॥

सनासंन्याससंन्यस्तःकाष्ठभूतोमृतोपमः। प्राणैर्वियुज्यतेशीघ्रंमुक्त्वासद्यःफलांक्रियाम् ॥ ४२ ॥

संन्यासरोगयुक्त पुरुष मृतक के समान काष्ठसा होजाताहै उसी समय जो कोई शीघ्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फल देनेवाली चिकित्सा न की जाय तो उस के प्राण निकलजाते हैं ॥ ४२ ॥

दुर्गेऽम्भसियथामज्जद्भाजनन्त्वरया बुधः। गृह्णीयात्तलमप्राप्तंतथासंन्यासपीडितम् ॥ ४३ ॥

जैसे बहुत गहरे जलमें डूबते हुए पात्रको बुद्धिमान् पुरुष ऐसी शीघ्रता से निकालता है जिसमें वह पात्र जलकी थाह तक नहीं पहुंचने पाता इसी प्रकार बुद्धिमान् वैद्य संन्यास रोगवाले की चिकित्सा करे ॥ ४३ ॥

अञ्जनान्यवपीडाश्च धूमःप्रधमनानिच। सूचीभिस्तोदनंशस्तंदाहःपीडानखान्तरे ॥ ४४ ॥

अंजन तीक्ष्ण नस्य धूम्र प्रधमन सूई गाड़ना शस्त्रों को तपाकर दागना नखों को दबाना ॥ ४४ ॥

लुञ्चनंकेशलोम्नांचदन्तैर्दशनमेव च। आत्मगुप्तावघर्षश्चहितास्तस्यावबोधने ॥ ४५ ॥

केश तथा रोमों को नोचना दांतों से काटना और कवांचकी फली रगड़ना संन्यास रोगवाले के चैतन्य करने में हितहै ॥ ४५ ॥

संमूर्च्छितानितीक्ष्णानिमद्यानिविविधानिच। प्रभूतकटुतिक्तानितस्यास्येगालयेन्मुहुः ॥ ४६ ॥

अनेक प्रकार की तीक्ष्ण मद्यों में बहुत सी कड़वी वस्तु मिलाकर संन्यास रोगवाले के मुख में वारंवार छोड़े ॥ ४६ ॥

मातुलुङ्गरसंतद्वन्महौषधसमायुतम्। तद्वत्सौवीरकंदद्यात्तद्युक्तंमद्याम्लकाञ्जिकैः ॥ ४७ ॥

जंभीरी नींबूके रसमें सोंठ मिलाकर उस के मुख में छोड़े और मद्य तथा कांजी में सौवीर ॥ ४७ ॥

हिङ्गूषणसमायुक्तंयावत्संज्ञाप्रबोधनात्। प्रबुद्धसंज्ञमन्नैश्चलघुभिस्तमुपाचयेत् ॥ ४८ ॥

हींग सोंठ मिर्च पीपल मिलाकर उसके मुख में डाले यह सब बातें तब तक करे जब तक कि वह चैतन्य न होय संज्ञा होने के उपरान्त लघु अन्न भोजन करावे ॥ ४८ ॥

विस्मापनैःस्मारणैश्चप्रियश्रुतिभिरेवच। पटुभिर्गीतवादित्रशब्दैश्चित्रैश्चदर्शनैः ॥ ४९ ॥

विस्मयकारी तथा स्मृतिकारक प्रियवाक्य सुनावे मनोहर गीत तथा बाजे सुनावे और विचित्र वस्तु दिखावे ॥ ४९ ॥

स्रंसनोल्लेखनैर्धूमैरञ्जनैःकवलग्रहैः। शोणितस्यावसेकैश्चव्यायामोद्धर्षणैस्तथा ॥ ५० ॥

स्रंसन वमन धूम्रपान अंजन कवलग्रह रक्तमोक्षण व्यायाम तथा उद्घर्षण (रगड़ना) ॥ ५० ॥

प्रबुद्धसंज्ञं मतिमाननुबद्धमुपाचरेत्। तस्यसंरक्षितव्यंहिमनःप्रलयहेतुतः ॥ ५१ ॥

इनकेद्वारा संज्ञा होजाने के पीछे बुद्धिमान् वैद्य चिकित्साकरे और प्रलयके कारणों से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसके मनकी रक्षाकरे अर्थात् रोगीके चित्तमें किसी प्रकारका विकार न उत्पन्न होय॥५१॥

स्नेहस्वेदोपपन्नानांयथादोषंयथाबलम्। पञ्चकर्माणिकुर्वीतमूर्च्छायेपुमदेषुच ॥५२॥

मद तथा मूर्च्छा रोगमें स्नेहन तथा स्वेदन करके दोष तथा बलके अनुसार वमनादि पंचकर्म करने चाहिये ॥ ५२ ॥

अष्टाविंशत्यौषधस्योर्द्धमथवातिक्तसर्पिषः। प्रयोगःशस्यतेतद्वन्महतःपट्पलस्यवा ॥ ५३ ॥

अष्टाविंशत्यौषध घृत तिक्तघृत तथा महा षट्पद घृतका प्रयोग ॥ ५३ ॥

त्रिफलायाःप्रयोगोवासघृतक्षौद्रशर्करः। शिलाजतुप्रयोगोवाप्रयोगःपयसोऽपिवा ॥ ५४ ॥

त्रिफला घी सहत तथा शक्कर का प्रयोग शिलाजीतका प्रयोग दूधका प्रयोग ॥ ५४ ॥

पिप्पलीनांप्रयोगोवाप्रयोगश्चित्रकस्यवा। रसायनानांकौम्भस्यसर्पिषोवाप्रशस्यते ॥ ५५ ॥

पीपल का प्रयोग चीतेका प्रयोग अथवा रसायनाधिकारमें कहेगये कौंभघृतका प्रयोग इन रोगोंमें हितहै ॥ ५५ ॥

रक्तावसेकाच्छास्त्राणांसतांसत्त्ववतामपि। सेवनान्मदमूर्च्छायाःप्रशाम्यन्तिशरीरिणाम् इति ॥ ५६ ॥

रक्तमोक्षण सच्छास्त्रोंका अवलोकन तथा साधुओं का सेवन इससे भी मनुष्यों के मद तथा मूर्च्छाका नाश होताहै ॥ ५६ ॥

तत्रश्लोकौ।

विशुद्धञ्चाविशुद्धंचशोणितंतस्यहेतवः। रक्तप्रदोषजारोगास्तेषुरोगेषुचौषधम् ॥ ५७ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। शुद्ध तथा विकारयुक्त रुधिर तथा उसके हेतु रुधिरके विकारसे होनेवालेरोग तथा इनकीऔषध॥५७॥

मदमूर्च्छायसंन्यासहेतुलक्षणभेषजम्। विधिशोणितकेऽध्यायेसर्वमेतत्प्रकाशितम् ॥ ५८ ॥

इतियोजनाचतुष्केविधिशोणिताध्यायश्चतुर्विंशःसमाप्तः ॥ २४ ॥

मद मूर्च्छा तथा संन्यास रोगके हेतु लक्षण तथा औषध यह सब विषय इस विधिशोणितीयनाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ ५८ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंविधिशोणितीयनामचौबीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय॥

अथातोयज्जःपुरुषीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

पुराप्रत्यक्षधर्म्माणंभगवन्तंपुनर्वसुम्। समेतानांमहर्षीणांप्रादुरासीदियंकथा ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त यज्जःपुरुषीयनाय अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीनेकहा ॥

पूर्वसमय में धर्मदर्शी भगवान् आत्रेयजी के पास बैठेहुए संपूर्ण महर्षियों में यह कथा प्रकट हुई ॥ १ ॥

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां योऽयंपुरुष संज्ञकः। राशिरस्यामयानाञ्चप्रागु त्पत्तिविनिश्चये॥ २॥

कि आत्मा इन्द्रिय मन तथा विषय इन सब का समष्टिरूप जो पुरुष उसकी और रोगोंकी किस प्रकार से उत्पत्ति होती है पहले यह निश्चय करना चाहिये॥ २ ॥

अथकाशिपतिर्वाक्यंत्रामकोऽर्थवद न्तरा। व्याजहारर्षिसमितिमभिसृ त्याभिवाद्यच॥ ३॥

इस बीचमें काशिपतिवामक नाम राजर्षि ने संपूर्ण ऋषियों के निकट जाके प्रणाम करके कहा ॥ ३ ॥

किन्न स्यात्पुरुषोयज्जस्तज्जास्त स्यामयाःस्मृताः। नवेत्युक्तेनरेन्द्रेण प्रोवाचर्षीन्पुनर्वसुः॥ ४॥

कि जिन वस्तुओं से पुरुष उत्पन्न हुआहै क्या उन्हीं वस्तुओं से रोगभी उत्पन्न हुएहैं अथवा नहीं काशिपति के यह वचन सुन कर भगवान् आत्रेयजीने ऋषियोंसे कहा॥४॥

सर्वएवामितज्ञानविज्ञानच्छिन्नसंश याः। भवन्तश्छेत्तुमर्हन्तिकाशिरा जस्यसंशयम्॥ ५॥

कि तुम सब लोग अमित ज्ञान तथा विज्ञान के द्वारा सन्देहसे रहित होगयेहो इस्से काशिराज के सन्देह को दूर करने योग्य हो ॥ ५ ॥

पारीक्षिस्तत्परीक्ष्याग्रेमौद्गल्योवाक्य मब्रवीत्। आत्मजःपुरुषोरोगाश्चा त्मजाःकारणंहिसः॥ ६॥

यह सुनतेही परीक्षाके पहले पारीक्षि मौद्गल्य ऋषिने विचार करके कहा कि आत्मासे पुरुष उत्पन्न है और आत्माहीसे रोग उत्पन्न हैं क्योंकि आत्मा कारणहै ॥ ६ ॥

सचिनोत्युपभुङ्क्तेचकर्म्मकर्म्मफ लानिच। नह्यृतेचेतनाधातोःप्रवृ त्तिःसुखदुःखयोः॥ ७॥

आत्माही कर्मोंका संचय करताहै और कर्मके फलोंको भोगता है क्योंकि चैतन्य आत्मा के विना सुख दुःख की प्रवृत्ति नहीं होसक्ती ॥ ७ ॥

शरलोमातुनेत्याहनह्यात्मात्मानमा त्मना। योजयेद्व्याधिभिर्दुःखैर्दुःख द्वेषीकदाचन॥ ८॥

यह सुनकर शरलोमानामा ऋषिने कहा कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि दुःखद्वेषी आत्मा स्वयं दुःखदायक रोगोंसे अपने को कदापि युक्त नहीं करेगा ॥ ८ ॥

रजस्तमोभ्यांतुमनःपरीतंसत्त्वसंज्ञ कम्। शरीरस्यसमुत्पत्तौविकाराणा ञ्चकारणम्॥ ९॥

किन्तु रजोगुण तथा तमोगुण से युक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्वसंज्ञक मनहीं शरीरकी तथा रोगों की उत्पत्ति में कारण है ॥ ९ ॥

वार्य्योविदस्तुनेत्याह वह्येकंकारणं मनः । नर्तेशरीरंशारीरारोगानम नसःस्थितिः ॥ १० ॥

शरलोमा के वचन सुनकर वार्योविद नाम ऋषिने कहा कि ऐसा नहींहोसक्ता क्योंकि एक मनही शरीर का तथा रोगोंका कारण नहींहै शरीरके विना शरीरसंबन्धी रोग तथा मनकी स्थिति नहीं होसक्ती ॥ १० ॥

रसजानितुभूतानि व्याधयश्चपृथ ग्विधाः । आपोहिव्याधिवत्यस्ताः स्मृतानिर्वृतिहेतवः ॥ ११ ॥

इस्से संपूर्ण प्राणी तथा अनेक प्रकार के रोग रससे उत्पन्न हैं और रस जल में रहताहै इस्से जलही सब की सिद्धिका कारण है ॥ ११ ॥

हिरण्याक्षस्तुनेत्याहनह्यात्मारसजः स्मृतः । नातीन्द्रियंमनःसन्तिरोगाः शव्दादिजास्तथा ॥ १२ ॥

वार्य्योविदके वचन सुनकर हिरण्याक्ष ऋषिने कहा कि आत्मारस से नहीं उत्पन्न होसक्ता अतीन्द्रिय मनभी रससे नहीं उत्पन्न होसक्ता और शव्दादिकोंसे उत्पन्न हुए रोग भी रससे नहीं उत्पन्न होसक्ते ॥ १२ ॥

षड्धातुजस्तुपुरुषो रोगाःषड्धातु जास्तथा । राशिःषड्धातुजोह्येष सांख्यैराद्यःपरीक्षितः ॥ १३ ॥

इस्से पुरुष तथा संपूर्ण रोग षट्धातु (पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तथा आत्मा) ओंसे उत्पन्नहैं प्राचीन सांख्यवेत्ता ऋषियोंने परीक्षा करके कहा है यह पुरुष नाम समष्टिषट् धातुओं से उत्पन्न है ॥ १३ ॥

तथाब्रुवाणंकुशिकमाहतन्नेतिशौ नकः । कस्मान्मातापितृभ्यांहि विनाषड्धातुजोभवेत् ॥ १४ ॥

कुशिक ऋषिके यह वचन सुनकर शौनक ऋषिने कहा कि यह ठीक नहींहै क्योंकि माता पिता के विना षट्धातुओं से पुरुष कैसे उत्पन्न होसक्ताहै ॥ १४ ॥

पुरुषःपुरुषाद्गौर्गोरश्वादश्वःप्रजा यते । पैत्र्यामेहादयश्चोक्तारोगा स्ताएवकारणम् ॥ १५ ॥

देखो पुरुषसेही पुरुषका जन्म होताहै गौसे गौका जन्म होताहै और घोड़ेसे घोड़ेका जन्म होताहै और प्रमेहादिक रोगभी पैतृक कहेगये हैं इससे माता पिताही कारण हैं ॥ १५ ॥

भद्रकाप्यस्तुनेत्याहनह्यन्धोऽन्धात् प्रजायते । मातापित्रोश्चतेपूर्वमु त्पत्तिर्नोपपद्यते ॥ १६ ॥

शौनकके यह वचन सुनकर भद्रकाप्य ऋषिने कहा कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि अन्धेका पुत्र अन्धाही नहीं होता और जो माता पिताही रोगोंके कारण होंय तो रोगोंकी उत्पत्तिका पहले से निश्चय नहीं होता ॥ १६ ॥

कर्म्मजस्तुमतोजन्तुःकर्मजास्तस्य चामयाः । नह्यृतेकर्मणोजन्मरोगा णांपुरुषस्यच ॥ १७ ॥

Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

इससे कर्मसेही पुरुष तथा रोगोंकी उत्पत्ति है क्योंकि कर्मोंके विना पुरुष तथा रोगोंकी उत्पत्ति नहीं होसक्ती ॥ १७ ॥

भरद्वाजस्तुनेत्याह कर्तापूर्वंहि कर्मणः । दृष्टंनचाकृतंकर्मयस्यस्यात् पुरुषःफलम् ॥ १८ ॥

भद्रकाप्य के यह वचन सुनकर भरद्वाज ऋषिने कहा कि यह नहीं होसक्ता क्योंकि पहले कर्मका कोई कर्त्ता होना चाहिये और विना किये किसी कर्मकी उत्पत्ति देखी नहीं गई जिसका फल पुरुष होय ॥ १८ ॥

भावहेतुःस्वभावस्तु व्याधीनांपुरुषस्यच । खरद्रवचलोष्णत्वंतेजोऽन्तानांयथैवहि ॥ १९ ॥

इससे जैसे पृथ्वी जल वायु तथा तेज में खरत्व द्रवत्व चलत्व तथा उष्णत्व यह गुण स्वभावही से होते हैं उसी प्रकार पुरुष तथा रोगोंकीभी उत्पत्ति स्वभावहीसे होतीहै॥१९॥

कांकायनस्तुनेत्याहनह्यारम्भेफलंभवेत् । भवेत्स्वभावाद्भावानामसिद्धिःसिद्धिरेववा ॥ २० ॥

भरद्वाजके यह वचन सुनकर कांकायनऋषिने कहा कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि आरम्भमेंही फल नहीं होता और स्वभाव से पदार्थों की सिद्धि अथवा असिद्धिभी होसक्ती है ॥ २० ॥

स्रष्टात्वमितसङ्कल्पोब्रह्मापत्यंप्रजापतिः । चेतनाचेतनास्यास्यजगतःसुखदुःखयोः ॥ २१ ॥

इससे ब्रह्माके पुत्र अमितसंकल्प प्रजापति ही इस चराचर संसारके चेतन व अचेतन तथा सुख दुःखके उत्पन्न करनेवालेहैं ॥२१॥

तथेतिभिक्षुरात्रेयोनह्यपत्यं प्रजापतिः । प्रजाहितैषीसततंदुःखैर्युञ्ज्यान्नसाधुवत् ॥ २२ ॥

कांकायन के वचन सुनकर भिक्षुनामक आत्रेय ऋषिने कहा कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि प्रजापति प्रजाके हितैषी हैं वह दुष्टों के समान प्रजाको दुःखों से कैसे संयुक्त कर सक्ते हैं ॥ २२ ॥

कालजस्त्वेवपुरुषः कालजास्तस्यचामयाः । जगत्कालवशंसर्वंकालःसर्वत्रकारणम् ॥ २३ ॥

इस्से कालसेही पुरुष तथा रोगों की उत्पत्तिहै संपूर्ण जगत् कालकेही वशीभूत है इससे कालही सबमें कारण है ॥ २३ ॥

तथर्षीणांविवदतामुवाचेदंपुनर्वसुः । मैवंवोचततत्त्वंहिदुष्प्रापंपक्षसंश्रयात् ॥ २४ ॥

ऋषियों को इस प्रकार विवाद करते देखकर भगवान् आत्रेय पुनर्वसुजी ने कहा कि इस प्रकारसे विवाद न करो क्योंकि पक्षपात करने से तत्त्व नहीं निकलता ॥ २४ ॥

वादास्प्रतिवादाह्विवदन्तोनिश्रितानिच । पक्षान्तंनैवगच्छन्तितिलपीडकवद्गतौ ॥ २५ ॥

जैसे कोल्हूका बैल चलते २ कभी सीमा को नहीं प्राप्त होता उसी प्रकार निश्चय क-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रके वाद तथा प्रतिबाद को कहते हुए पुरुष पक्षके अन्तको नहीं प्राप्त होते ॥ २५ ॥

मुक्त्वैनंवादसंघट्टमध्यात्ममनुचिन्त्य ताम्। नाविधूतेतमःस्कन्धेज्ञेयेज्ञानं प्रवर्त्तते ॥ २६ ॥

इस्से इस विवादको त्याग कर तत्त्वका विचार करिये क्योंकि अन्धकार के विना दूरहुए ज्ञेय वस्तुका ज्ञान नहीं होता ॥ २६ ॥

येषामेवहिभावानांसम्पत्सञ्जनयेन्नरम्। तेषामेवविपद्व्याधीन्विविधान्समुदीरयेत् ॥ २७ ॥

जिनपदार्थों की संपत्ति (अच्छे प्रकार होने) से मनुष्य की उत्पत्ति होती है उन्हीं पदार्थों की विपत् (विकार युक्त होने) से रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २७ ॥

अथात्रेयस्य भगवतोवचनमनुनिशम्यपुनरेववामकः काशिपतिरुवाचभगवन्तमात्रेयम् । भगवन्सम्पन्निमित्तजस्यपुरुषस्यविपन्निमित्तजानांचरोगाणांकिमभिवृद्धिकारणमिति । तमुवाचभगवानात्रेयोहिताहारोपयोगः एकएवपुरुषस्य अभिवृद्धिकरोभवतिअहिताहारोपयोगः पुनर्व्याधीनांनिमित्तमिति ॥ २८ ॥

भगवान् आत्रेय के यह वचन सुनकर फिर काशिराज वामकने कहा कि हे भगवन् सम्पन्निमित्तज पुरुष तथा विपन्निमित्तज रोगों की वृद्धि का क्याकारण है यह सुनकर आत्रेयजी ने कहा कि केवल हितकारी आहारही पुरुष की वृद्धि का कारण है और अहित आहार का व्यवहार रोगों की वृद्धिका कारण है ॥ २८ ॥

एवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेश उवाच । कथमिहभगवन्। हिताहितानामाहारजातानांलक्षणमनपवादमभिजानीयाहितसमाख्यातानांचैवआहारजातानामहितसमाख्यातानाञ्च मात्राकालक्रियाभूमिदेहदोषपुरुषावस्थान्तरेषुविपरीतकारित्वमुपलभामहे इति ॥ २९ ॥

इस प्रकार कहते हुए भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने पूछा कि हे भगवन् हितकारी तथा अहितकारी आहारों का निर्दोषलक्षण किस प्रकार से जानाजाय क्योंकि हितकारी तथा अहितकारी आहारों का मात्रा समय क्रिया भूमि देह दोष तथा पुरुषों की अवस्था इनकी विशेषतासे विपरीत फल प्राप्त होताहै ॥ २९ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः । यदाहारजातमग्निवेश ! समांश्चैवशरीरधातून्प्रकृतौस्थापयति विषमांश्चसमीकरोतिइत्येतद्धितंविद्धिविपरीतमहितमितिएतद्धिताहितलक्षणमनपवादंभवति ॥ ३० ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर आत्रेयजी ने कहा कि हे अग्निवेश जो आहार शरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की सम धातुओं को स्वाभाविक रखता है और विषम धातुओं को सम करता है उसी को हितकारी जानो और इससे विपरीत को अहितकारी जानो हित तथा अहित जानने का यही निर्दोष लक्षण है ॥ ३० ॥

एवंवादिनञ्चभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच। भगवन्! नन्वेतदेवमुपदिष्टंभूयिष्ठकल्पाःसर्वभिषजोविज्ञास्यन्ति ॥ ३१ ॥

यह भगवान् आत्रेयजी के वचन सुनकर अग्निवेशने कहा कि हे भगवन् इस प्रकारके उपदेश से प्रायः सब वैद्यों को इसका ज्ञान नहीं होगा ॥ ३१ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः। येषांविदितमाहारतत्त्वमग्निवेश! गुणतोद्रव्यतःकर्म्मतःसर्वावयवतोमात्रादयोभावास्तएतदेवमुपदिष्टं विज्ञातुमुत्सहन्ते। यथातुखल्वेतदुपदिष्टंभूयिष्ठकल्पाःसर्वभिषजोविज्ञास्यन्तितथैतदुपदेक्ष्यामः। मात्रादीन्भावानुदाहरन्तस्तेषाहिबहुविधाविकल्पाभवन्ति। आहारविधिविशेषांस्तुखलुलक्षणतश्चावयवतश्चानुव्याख्यास्यामः ॥ ३२ ॥

अग्निवेश के वचन सुनकर आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश जो आहारके तत्त्व को गुण द्रव्य तथा क्रियाओं के द्वारा जानते हैं और मात्रादिकको भी सब प्रकारसे जानते हैं वही इस प्रकारके उपदेश से इसको जान सकेंगे परन्तु जिस प्रकारके उपदेशसे प्रायः सब वैद्य जानसकें उस प्रकारसे अन्न मात्रादि भावोंका उदाहरण देके उपदेश करते हैं मात्रादिकोंके बहुत प्रकारके विकल्प हैं आहारविधिके विशेषों को लक्षण तथा अवयवोंके अनुसार आगे कहते हैं ॥ ३२ ॥

आहारत्वम्। आहारस्यैकविधमर्थाभेदात्सपुनर्द्वियोनिःस्थावरजङ्गमात्मकत्वात्। द्विविधःप्रभावोहिताहितोदर्कविशेषाच्चतुर्विधोपयोगः पानाशनभक्ष्यलेह्योपयोगात्। षडास्वादोरसभेदतःषड्विधत्वाद्विंशतिगुणोगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षमन्दतीक्ष्णास्थिरसरमृदुकठिनविशदपिच्छिलश्लक्ष्णखरसूक्ष्मस्थूलसान्द्रद्रवानुगमनात्। अपरिसंख्येयविकल्पोद्रव्यसंयोगकरणबाहुल्यात्तस्ययेयेविकारावयवाभूयिष्ठमुपयुज्यन्ते। भूयिष्ठकल्पनाश्चमनुष्याणां प्रकृत्यैवहिततमाश्चाहिततमाश्चतांस्तान्यथावदनुव्याख्यास्यामः। तद्यथालोहितशालयःशूकधान्यानां पथ्यतमत्वेश्रेष्ठतमाः। मुद्गाःशमीधान्यानाम्, आंतरीक्षमुदकानांसैन्धवंलवणानांजीवन्तीशाकंशाकानाम्। ऐणेयंमृगमांसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नांलावःपक्षिणांगोधाबिलेशयानां
रोहितोमत्स्यानांगव्यंसर्पिःसर्पिषां
गोक्षीरंक्षीराणांतिलतैलंस्थावरजा
तानांस्नेहानांवराहवसाआनूपमृग
वसानांचुलुकीवसामत्स्यवसानांहं
सवसाजलचरविहङ्गवसानांकुक्कुटव
साविष्किरशकुनिवसानामाजमेदः
शाखादमेदसांशृङ्गवेरंकन्दानांमृद्वी
काफलानांशर्कराइक्षुविकाराणाम्।
इतिप्रकृत्यैवहिततमानामाहारविका
राणांप्राधान्यतोद्रव्याणिव्याख्याता
नि। अहिततमानामप्युपदेक्ष्यामः।
यवकःशूकधान्यानामपथ्यत्वेप्रकृष्ट
तमाभवन्ति। माषाःशमीधान्यानां
वर्षानादेयमुदकानामौषरंलवणा
नांसर्षपशाकंशाकानांगोमांसंमृग
मांसानांकालकपोतःपक्षिणांभेको
बिलेशयानांचिलिचिमोमत्स्याना
माविकंसर्पिःसर्पिषामाविक्षीरंक्षीरा
णांकुसुम्भस्नेहःस्नेहानांस्थावराणां
महिषवसाआनूपमृगवसानांकुम्भी
रवसामत्स्यवसानां काकमद्गुवसा
जलचरविहङ्गवसानां मूलकंकन्दा
नां चाटकवसाविष्किरशकुनिवसा
नांहस्तिमेदःशाखादमेदसांलिकुचं
फलानां फाणितमिक्षुविकाराणा

मितिप्रकृत्यैवअहिततमानामाहार
विकाराणां निकृष्टतमानिद्रव्याणि
व्याख्यातानि । हिताहितावयवा
नामाहारविकाराणाम्अतोभूयःक
र्मौषधानांप्राधान्यतःसानुबन्धानिद्र
व्याणि अनुव्याख्यास्यामः। तद्य
थाअन्नंवृत्तिकराणांश्रेष्ठम्। उदक
माश्वासकराणांसुराश्रमहराणांक्षी
रंजीवनीयानांमांसंबृंहणीयानांर
स्तर्पणीयानांलवणमन्नद्रव्यरुचिक
राणामम्लंहृद्यानांकुक्कुटोबल्यानांन
क्ररेतोवृष्याणांमधुश्लेष्मपित्तप्रश
मनानांसर्पिर्वातपित्तप्रशमनानांतै
लंवातश्लेष्मप्रशमनानांवमनंश्ले
ष्महराणांविरेचनंपित्तहराणांबस्ति
र्वातहराणांस्वेदोमार्दवकराणांव्या
यामःस्थैर्य्यकराणांक्षारःपुंस्त्वोपघा
तिनांतिन्दुकमनन्नद्रव्यरुचिकराणा
मामं कपित्थमकण्ठ्यानामाविकंस
र्पिरहृद्यानामजाक्षीरंशोषघ्नस्तन्यसा
त्म्यरक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमना
नामविक्षीरं श्लेष्मपित्तोपचयकरा
णांमहिषीक्षीरंस्वप्नजननानांमन्दक
दध्यभिष्यन्दकराणांगवेधुकान्नंक
र्शनीयानामुद्दालकान्नंविरूक्षणीया
नामिक्षुर्मूत्रजननानांयवाःपुरीष

ननानांजाम्बवंवातजननानांशष्कु
ल्यःश्लेष्मापित्तजननानांकुलुत्था
अम्लापित्तजननानांमाषाःश्लेष्म
पित्तजननानां मदनफलंवमना
स्थापनानुवासनोपयोगिनांत्रिवृत्सु
खविरेचनानां चतुरङ्गुलंमृदुवि
रेचनानां स्नुक्पयस्तीक्ष्णविरेचना
नांप्रत्यक्पुष्पीशिरोविरेचनानांवि
डङ्गंक्रिमिघ्नानांशिरीषोविषघ्नानांख
दिरःकुष्ठघ्नानांरास्नावातहराणामा
मलकंवयःस्थापनानां हरीतकीप
थ्यानामेरण्डमूलंवृष्यवातहराणांपि
प्पलीमूलंदीपनीयपाचनीयानाह
प्रशमनानांचित्रकमूलंदीपनीयगु
दशूलशोथहराणांपुष्करमूलंहिक्का
श्वासकासपार्श्वशूलहराणांमुस्तंसं
ग्राहकदीपनीयपाचनीयानामुदी
च्यंनिर्वापणीयदीपनीयच्छर्द्यती
सारहराणांकट्वङ्गंसंग्राहकदीपनीय
पाचनीयानाम् । अनन्तासंग्राहिक
दीपनीयरक्तपित्तप्रशमनानाममृ
तासंग्राहिकवातहरदीपनीयश्लेष्म
शोणितविबन्धप्रशमनानांबिल्वंसं
ग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमना
नामतिविषादीपनीयपाचनीयसंग्रा
हिकसर्वदोषहराणामुत्पलकुमुदप

द्मकिञ्जल्काःसंग्राहकरक्तपित्तप्रश
मनानां दुरालभापित्तश्लेष्मोपशो
षणानां गन्धप्रियङ्गुःशोणितपि
त्तातियोगप्रशमनानां कुटजत्वक्
श्लेष्मपित्तरक्तसंग्राहकोपशोषणा
नां काश्मर्य्यफलंरक्तसंग्राहकरक्त
पित्तप्रशमनानां पृश्निपर्णीसंग्रा
हकवातहरदीपनीयवृष्याणां विदा
रिगन्धावृष्यसर्वदोषहराणां बला
संग्राहकबल्यवातहराणां गोक्षुरको
मूत्रकृच्छ्रानिलहराणां हिङ्गुनि
र्य्यासःछेदनीयदीपनीयभेदनीया
नुलोमिकवातकफप्रशमनानां अ
म्लवेतसोभेदनीयदीपनीयानुलो
मिकवातश्लेष्मप्रशमनानां या
वशूकःस्रंसनीयपाचनीयार्शोघ्ना
नां तक्राभ्यासोग्रहणीदोषार्शो
घृतव्यापत्प्रशमनानां क्रव्यादमां
साभ्यासोग्रहणीदोषशोषार्शोघ्ना
नां घृतक्षीराभ्यासोरसायनानां
समघृतसक्तुकाभ्यासोवृष्योदाव
र्त्तहराणां तैलगण्डूषाभ्यासोदन्त
बलरुचिकराणां चन्दनोदुम्बरंदाह
निर्वापणानां रास्नागुरुणीशीता
पनयनप्रलेपनानांलामज्जकोशी
रेदाहत्वग्दोषस्वेदापनयनप्रलेपना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नांकुष्ठंवातहराभ्यङ्गोपनाहयोगि
नांमधुकञ्चक्षुष्य वृष्यकेश्यकण्ठ्य
वर्ण्यबल्यविरजनीयरोपणीयानां
वायुः प्राणसंज्ञाप्रधानहेतूनामग्नि
रामस्तम्भशीतशूलोद्वेपनप्रशमना
नांजलंस्तम्भनीयानां मृद्भृष्टलो
ष्टनिर्वापितमुदकं तृष्णातियोगप्र
शमनानायतिमात्राशनमामप्रदो
षहेतूनां यथाग्न्यभ्यवहरणोऽग्नि
सन्धुक्षणानांयथासात्म्यं चेष्टाभ्य
वहारः सेव्यानांकालभोजनमारो
ग्यकरा[illegible]सन्धारणमनारोग्य
करा[illegible] तृप्तिराहारगुणानां मद्यंसौ
मनस्[illegible]जनानां मद्याक्षेपोधीधृति
स्मृतिहराणां गुरुभोजनन्दुर्विपा
कानामेकाशनभोजनं सुखपरिणा
मकराणां स्त्रीपुअतिप्रसङ्गःशोष
कराणां शुक्रवेगनिग्रहःशाण्ड्य
कराणां परायतनमन्नमश्रद्धाजन
नानामनशनमायुषोह्रासकराणां
प्रमिताशनं कर्षणीयानामजीर्णा
ध्यशनं ग्रहणीदूषणानांविषमाश
नमग्निवैषम्यकराणां विरुद्धवी
र्य्याशनन्निन्दितव्याधिकराणांप्रश
मः पथ्यानामायासःसर्वापथ्यानां
मिथ्यायोगोव्याधिसुखानांरजस्व

लाभिगमनमलक्ष्मीकाणांब्रह्मचर्य्य
मायुष्यकराणांसंकल्पोवृष्याणांदौ
र्मनस्यमवृष्याणामयथाबलप्रारम्भः
प्राणोपरोधिनांविषादोरोगवर्द्धना
नांस्नानंश्रमहराणां हर्षःप्रीणना
नांशोकःशोषणानांनिर्वृतिःपुष्टिक
राणामतिस्वप्नस्तन्द्राकराणां सर्व
रसाभ्यासोबलकराणामेकरसाभ्या
सोदौर्बल्यकराणांगर्भशल्यमनाह्य
र्य्याणामजीर्णमुद्धार्य्याणां बालो
मृदुभेषजीयानां वृद्धोयाप्यानांग
र्भिणीतीक्ष्णौषधव्यायामवर्ज्जनी
यानां सौमनस्यंगर्भधारकाणांस
न्निपातोदुश्चिकित्स्यानामामोवि
षमचिकित्स्यानां ज्वरोरोगाणांकु
ष्ठंदीर्घरोगाणांराजयक्ष्मारोगसमू
हानां प्रमेहोऽनुषंगिनां जलौकसो
ऽनुशस्त्राणांवस्तिस्तन्त्राणांहिमवा
नौषधिभूमीनां मरुभूरारोग्यदेशा
नामनूपमहितदेशानां निर्देशका
रित्वमातुरगुणानांभिषक्चिकित्सा
ज्ञानांनास्तिकोवर्ज्यानांलौल्यं क्ले
शकराणामनिर्देशकारित्वमरिष्टा
नामनिर्वेदआर्त्तलक्षणानां योगो
वैद्यगुणानांविज्ञानमौषधीनांशास्त्र
सहितस्तर्कःसाधनानांसम्प्रतिपत्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कालज्ञानप्रयोजनानामनुद्योगो व्यवसायकालातिपत्तिहेतूनांदृष्ट कर्मतानिःसंशयकराणामसमर्थता भयकराणां तद्विद्यसम्भाषाबुद्धिव र्द्धनानामाचार्य्यः शास्त्राधिगमहे तूनामायुर्वेदोऽमृतानांसद्धचनमनु ष्ठेयानामसम्बद्धवचनं संग्रहणंस र्व्वाहितानांसर्व्वसन्न्यासःसुखाना मिति ॥ ३३ ॥

आहार में आहारत्व एकही प्रकार का है क्योंकि अर्थमें कुछ भेद नहीं है स्थावर तथा जंगमभेदसे आहारके उत्पत्तिस्थान दो हैं हितकारी तथा अहितकारी भेदसे आहारका भाव दो प्रकारकाहै पान अशन भक्ष्य तथा ...भेदसे आहार का प्रयोग चार प्रकार का ...रसों के भेदसे आहार का स्वाद छःप्रकार ...है गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष मन्द ...क्ष्ण स्थिर सर मृदु कठिन विशद पिच्छि- ... श्लक्ष्ण खर सूक्ष्म स्थूल घन तथा द्रव ... बीस आहारके गुण हैं द्रव्य संयोग तथा ...कारों के भेदसे आहारके विकल्प असंख्य ...नमें से जो २ विकल्पों के अवयव बहुधा ...हार कियेजाते हैं और स्वभावहीसे मनु- ...को बहुत हितकारी तथा अहितकारी ...हैं उनका यथावत् वर्णन किया जाताहै ...क धान्योंमेंसे लालधान अत्यन्त पथ्य ...बहुत श्रेष्ठ है शमी धान्योंमें मूंग बहुत ...जलोंमें वृष्टिका जल श्रेष्ठ है लवणोंमें ...बसे श्रेष्ठ है शाकों में जीवन्ती शाक ...मृगों के मांसोंमें से एण मृगका मांस श्रेष्ठहै पक्षियोंके मांसोंमें ...वा पक्षीका मांस श्रेष्ठहै बिलमें रहनेवाले जीवोंके मांसोंमें से गोहका मांस श्रेष्ठहै मछलियोंमें से रोह मछली श्रेष्ठहै घृतोंमें गौका घी सबसे श्रेष्ठहै दूधों में गौका दूध सबसे श्रेष्ठहै स्थावर स्नेहोंमें से तिलका तेल सबसे श्रेष्ठहै अनूपदेशके रहनेवाले मृगोंकी चरवींमेंसे शूकर की चरवी सबसे श्रेष्ठहै मछलियों की चरवियोंमें से शल्ल- की मछली की चरवी सबसे श्रेष्ठ है जलचर पक्षियोंकी चरबियोंमें से हंसकी चरबी सबसे श्रेष्ठहै विष्किर पक्षियों की (चुगनेवाले) चरवियों में से मुर्गों की चरबी सबसे श्रेष्ठ है शाखा तथा पत्ते खानेवाले पशुओंकी चरबियोंमेंसे बकरी की चरबी सबसे श्रेष्ठ है कन्दों मेंसे अदरक सबसे श्रेष्ठ है फलों में मुनक्का सबसे श्रेष्ठहै और इक्षुविकारों में शर्करा सबसे श्रेष्ठहै यह स्वाभाविक सबसे अधिक हितकारी भोजन की वस्तु कहीगई अब अहितकारी वस्तु कही जाती हैं शूक धान्यों में से अपथ्य होने में यवक (यवविशेष) सबसे अधिक है शमी धान्यों में उर्द सबसे अधिक अपकारी हैं जलों में से वर्षाकाल की नदी का जल बहुत अहितकारी है लवणोंमें से खारी निमक सबसे अधिक अहितकारी है शाकों में से सरसों का शाक अधिक अपकारीहै पशुओं के मांसमें से गोमांस सब से अधिक अपकारीहै पक्षियों के मांसमेंसे काले कबूतर का मांस अधिक अपकारी है बिलमें रहनेवाले जीवों के मांसमें से भेकका मांस अधिक अपकारीहै मछलियोंमें से चिलचिम मछली अधिक अपकारी है घृतोंमें से भेड़का घी अधिक अपकारी है दूधोंमें से भी भेड़का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तदात्रेयस्यभगवतोवचनमनुनिश
म्यपुनरपिभगवन्तमात्रेयमग्निवेश
उवाच । यथोद्देशमभिनिर्दिष्टःकेव
लोऽयमर्थोभगवता श्रुतस्त्वस्मा
भिः । आसवद्रव्याणामिदानींलक्ष
णमनतिसंक्षेपेणोपदिश्यमानंशु
श्रूषामहेइतितमुवाचभगवानात्रे
यः । धान्यफलसारपुष्पकाण्डप
त्रत्वचोभवन्त्यासवयोनयःअग्नि
वेश ! संग्रहेणाष्टौशर्करानवमास्ता
सु द्रव्यसंयोगकरणतोऽपरिसंख्ये
यासुयथापथ्यतमानासवामानांच
तुरशीतिंनिबोधसुरासौवीरतुषोदक
मैरेयमेदकधान्याम्लषड्धान्यावा
सवाः । मृद्वीकाखर्जूरकाश्मर्यधन्व
नराजादनतृणशूल्यपरूषाभयाम
लकमृगलण्डिकाजाम्बवकपित्थ-
बकुल-बदरकर्कन्धुपीलुपियालप
नसन्यग्रोधाश्वत्थप्लक्षकपीतनोड़ु
म्बराजमोदशृङ्गाटकशंखिनीतिफ
लासवाः षड्विंशतिः । विदा
रिगन्धाश्वगन्धाकृष्णगन्धाशता
वरीश्यामात्रिवृद्दन्तीद्रवन्तीबिल्वो
रुमुकचित्रमूलैरेकादशमूलास
वाः । शालप्रियकाश्वकर्ण
चन्दनस्यन्दनखदिरकदरसप्तपर्णा

र्ज्जुनासनारिमेदतिन्दुककिणिही
शमीशुक्तिशिंशपाशिरीषवञ्जुल
धन्वनमधूकसारासवाविंशतिः ।
पद्मोत्पलनलिनकुमुद-सौगन्धिक
पुण्डरीकशतपत्रमधूक-प्रियंगुधा
तकीपुष्पैर्दशमाःपुष्पासवाः । इक्षु
काण्डेक्षुइक्षुबालिकापुण्ड्रकचतुर्थाः
काण्डासवाः । पटोलताडीपत्रास
वौद्वौभवतः । तिल्वकलोध्रैलवालु
कक्रमुकचतुर्थास्त्वगासवाभवन्ति
शर्करासवएकएव । इत्येषामासवा
नामासुतत्वादासवसंज्ञाएवमेषामा
सवानां चतुरशीतिः परस्परेणा
संसृष्टानामासवद्रव्याणामुपनिर्दि
ष्टाः । द्रव्यसंयोगविभागस्त्वेषाम्ब
हुविकल्पसंस्कारश्च यथास्वयोनि
संस्कारसंस्कृताश्चासवाः स्वंकर्म्म
कुर्व्वन्ति संयोगसंस्कारदेशकाल
मात्रादयश्च भावास्तेषांतेषामास
वानान्तेतेसमुपदिश्यन्ते तत्तत्का
र्य्यमभिसमीक्ष्येति ॥ ४१ ॥

तब भगवान् आत्रेयजीके यह वचन सुन
कर अग्निवेशने फिर आत्रेयजीसे कहा कि
हे भगवन् आपने यह जो विषय केवल उ-
द्देशके अनुसार वर्णन किया वह हम लोगोंने
सुना अब आसव द्रव्यों के लक्षण विस्तार-
पूर्वक सुना चाहताहूं अग्निवेशके यह वचन

CC-0. Gangotri Math Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश धान्य फलसार पुष्प कांड पत्र त्वचा यह आसवके उत्पत्तिस्थान हैं और संग्रह से आठ व ९ शर्करा हैं वह द्रव्योंके संयोग से असंख्य होजाते हैं उनमें से ८४ प्रकारके आसव पथ्यतम (अत्यन्त पथ्य) होते हैं उसे सुनो सुरा सौवीर तुषोदक मैरेय मेदक तथा धान्याम्ल यह छः आसव धान्यज हैं मुनक्का खजूर खंभारीका फल धन्वन् खिन्नी वेलाका फल फालसा हड़ आँवला मृगलिंडका जामन कैथा बकुल (वेरविशेष) वदर (वेरविशेष) कर्कन्धू (वेरविशेष) पीलू चिरौंजी कटहर बर्गदका फल पीपल का फल पकरियाका फल अमरा गूलर अजमोद सिंहाड़ा और शंखकौड़ी इन २६ फलोंसे छब्बीस प्रकारके फलज आसव बनते हैं बिलारीकन्द असगंध कृष्णगंधा सतावर कालीनिसोथ जमालगोटेकी जड़ मूसली बेलकी जड़ अरंडकी जड़ चीता और मूली इन ११ मूलोंसे ग्यारह प्रकारके मूलज आसव बनते हैं शाल प्रियक अश्वकर्ण चन्दन तिनिस खदिर कन्दर छितवन अर्जुन विजयसार दुर्गन्धित खदिर तेंदुआ लटजीरा शमी ककूदनि सीसम सिरस अशोक धन्वन् और मुलहठी इन बीस २० वृक्षों के सारोंमें से बीस प्रकारके सारज आसव बनते हैं पद्म उत्पल नलिन कुमुद सौगन्धिक पुण्डरीक शतपत्र मुलहठी प्रियंगु और धवई के फूल इन दश पुष्पों से दश प्रकार के पुष्पज आसव बनते हैं ईख तालमखाना इक्षुबालिका तथा पौंडा इन चारोंसे चारप्रकार के कांडासव बनते हैं परवल की पत्ती तथा ताड़के पत्तोंसे दो प्रकार के पत्रज आसव बनते हैं तिल्लक लोध एलुआ तथा सुपारी इन चार वृक्षोंकी छालों से चार प्रकार के त्वगासव बनते हैं और शर्करा से एकही प्रकारका आसव बनताहै ऊपर कहे हुए सब प्रकार के मध्य आसुतत्व होने से आसव कहलाते हैं परस्पर नहीं मिलाईगई आसव द्रव्यों से यह८४ प्रकारके आसव बनते हैं और इन द्रव्यों के संयोग के विभागमें बहुत से विकल्प तथा संस्कार होते हैं अपने २ कारण तथा संस्कार के अनुसार आसवों में गुण होते हैं संयोग संस्कार देश काल तथा मात्रा आदिक मध्य के कार्यों को देखकरके स्वभावके अनुसार उपदेश कियेजाते हैं ४१॥

भवन्तिचात्र।

मनःशरीराग्निबलप्रदानामस्वप्नशोकारुचिनाशनानाम् । संहर्षणानांप्रवरासवानामशीतिरुक्ताचतुरुत्तरैषा ॥ ४२ ॥

इसमें यह श्लोकहैं। कि मन शरीर तथा अग्नि को बलदायक अनिद्रा शोक तथा अरुचिनाशक और हर्षकारी यह८४प्रकार के आसव कहेगये ॥ ४२ ॥

शरीरयोगप्रकृतौमतानितत्त्वेनचाहारविनिश्चयोयः ॥ उवाचयज्जःपुरुषादिकेऽस्मिन्मुनिस्तथाग्र्याणिवरासवांश्च इति ॥ ४३ ॥

इतिअन्नपाचनचतुष्केयज्जःपुरुषीयोऽध्यायःपंचविंशःसमाप्तः २५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर के योग में हितकारी वस्तु और तत्त्वपूर्वक आहारका निश्चय यह सब विषय इस यज्ज:पुरुषीय नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने कहे ॥ ४३ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंयज्ज:पुरुषीय नामपचीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

अथातोआत्रेयभद्रकाप्यीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

इति हस्माह भगवानात्रेयः

आत्रेयोभद्रकाप्यश्चशाकुन्तेयस्तथैवच । पूर्णाक्षश्चैवमौद्गल्योहिरण्याक्षश्चकौशिकः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त आत्रेयभद्रकाप्यीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

आत्रेय भद्रकाप्य शाकुन्तेय पूर्णाक्षय मौद्गल्य हिरण्याक्ष कौशिक ॥ १ ॥

यःकुमारशिरानाम भरद्वाजःसचानघः । श्रीमान्वार्य्योविदश्चैवराजामतिमतांवरः ॥ २ ॥

जिसका कुमाराशिरा नामहै वह और पापरहित भारद्वाज व बुद्धिमानों में श्रेष्ठ श्रीमान् राजावार्य्योविद ॥ २ ॥

निमिश्चराजावैदेहोबडिशश्चमहामतिः । काङ्कायनश्चबाह्लीकोबाह्लीकभिषजांवरः ॥ ३ ॥

राजा निमि वैदेह महामति बडिश कांकायन बाह्लीक देशके वैद्योंमें श्रेष्ठ बाह्लीक ॥ ३ ॥

एतेश्रुतवयोवृद्धाजितात्मानोमहर्षयः । वनेचैत्ररथेरम्येसमीयुर्विजिहीर्षवः ॥ ४ ॥

यह सब विद्यावयोवृद्ध जितेन्द्रिय महर्षि लोग परममनोहर चैत्ररथ नाम वनमें संदेह दूरकरनेकी इच्छासे एकत्रितहुए ॥ ४ ॥

तेषांतत्रोपविष्टानामियमर्थवतीकथा । बभूवार्थविदांसम्यक्रसाहारविनिश्चये ॥ ५ ॥

उस वनमें बैठेहुए इन अर्थ के ज्ञाता मुनियों में रस तथा आहारके निश्चय के विषय में यह सार्थक वार्त्तालाप हुआ ॥ ५ ॥

एकएवरसइत्युवाचभद्रकाप्योयंपञ्चानामिन्द्रियार्थानामन्यतमंजिह्वावैषयिकंभावमाचक्षतेकुशलाः । सपुनरुदकादनन्यइति ॥ ६ ॥

उससमय भद्रकाप्य ऋषिने कहा कि रस एकहीहै क्योंकि इस रसको चतुरलोग पांच इन्द्रियों के विषयोंमें से जिह्वा इन्द्रियका विषय कहते हैं और फिर वह रस जल से अलग नहीं है ॥ ६ ॥

द्वौरसावितिशाकुन्तेयोब्राह्मणश्छेदनीयश्चोपशमनीयश्चेति ॥ ७ ॥

शाकुन्तेय ब्राह्मण ने कहा रस दो हैं छेदनीय तथा उपशमनीय ॥ ७ ॥

त्रयोरसाइतिपूर्णाक्षःमौद्गल्यश्छेदनीयोपशमनीयौसाधारणाश्च ॥ ८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णाक्षयमौद्गल्य ने कहा कि रस तीन-प्रकार के हैं छेदनीय उपशमनीय तथा साधारण ॥ ८ ॥

चत्वारोरसाइतिहिरण्याक्षःकौशिकः स्वादुर्हितश्च स्वादुरहितश्चअस्वादुरहितश्चास्वादुर्हितश्चेति ९ ॥

हिरण्याक्ष कौशिक ने कहा चारप्रकार के रस हैं स्वादुहित स्वादुअहित अस्वादुहित अस्वादुअहित ॥ ९ ॥

पञ्चरसाइतिकुमारशिराभरद्वाजोभौमोदकाग्नेयवायवीयान्तरिक्षाः १०॥

कुमारशिरा भारद्वाजने कहा पांच रस हैं भौम औदक आग्नेय वायव्य तथा अन्तरिक्ष ॥ १०

षड्रसाइतिवार्य्योविदोराजर्षिःगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षाः ११ ॥

राजर्षि वार्य्योविदने कहा कि रस छः हैं गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध तथा रूक्ष॥११॥

सप्तरसाइतिनिमिर्वैदेहोमधुराम्ललवणकटुकतिक्तकषायक्षाराः १२॥

वैदेह निमिने कहा कि रस सात हैं मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय तथाक्षार१२॥

अष्टौरसाइतिबडिशोधामार्गवोमधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायक्षाराव्यक्ताः ॥ १३ ॥

धामार्गव बड़िशने कहा कि रस आठ हैं मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय क्षार तथा अव्यक्त ॥ १३ ॥

अपरिसंख्येयारसाइतिकाङ्कायनोबाह्लीकभिषगाश्रयगुणकर्मसंस्कारविशेषाणामपरिमेयत्वात् १४ ॥

वाह्लीक कांकायनने कहा कि वैद्य आश्रय गुण कर्म तथा संस्कारविशेषोंके असंख्य होने से रस असंख्य हैं ॥ १४ ॥

षडेवरसाइत्युवाचभगवानात्रेयःपुनर्वसुःमधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाः । तेषांषण्णांरसानांयोनिरुदकम् । छेदनोपशमनेद्वेकर्मणी । तयोर्मिश्रीभावात्साधारणत्वं स्वाद्वस्वादुताभक्तिः । द्वौहिताहितौप्रभावौ । पञ्चमहाभूतविकारास्त्वाश्रयाः ॥ १५ ॥

तदनन्तर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि रस छःही हैं मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय इन छःओं रसोंका उत्पत्तिस्थान जल है छेदन तथा उपशमन यह दो रसोंके कर्म हैं इन दोनोंके मिलने से साधारणता होती है रुचिके अनुसार रस स्वादु तथा अस्वादु मालूम होते हैं रसोंके हित तथा अहित दो प्रभाव हैं पंच महाभूतों के विकाररूप द्रव्य रसों के आश्रय हैं ॥ १५ ॥

प्रकृतिविकृतिविचारदेशकालवशास्तेषुआश्रयेषुद्रव्यसंज्ञकेषुगुणागुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्याः॥१६॥

तिन आश्रय द्रव्यों में प्रकृति विकृति विचार देश तथा काल के अनुसार गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध तथा रूक्षादिक गुण होते हैं ॥ १६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षरणात्क्षारोनासौरसोद्रव्यंतदनेक रससमुत्पन्नमनेकरसंकटुकलवणभूयिष्ठमनेकेन्द्रियार्थसमन्वितंकरणाभिनिर्वृत्तम् ॥ १७ ॥

क्षरण होने से क्षार रस नहीं है किन्तु द्रव्य है वह अनेक रसों से उत्पन्न होता है इस से उस में अनेक रस होते हैं परन्तु कटु तथा लवणरस अधिक होता है क्षार अनेक इन्द्रियों के विषय से संयुक्त है और क्रियासे सिद्ध होताहै ॥ १७ ॥

अव्यक्तीभावस्तुखलुरसानांप्रकृतावनुरसेअनुरससमन्वितेवाद्रव्ये॥१८॥

प्रकृति अनुरस तथा अनुरसयुक्त द्रव्य में रस अव्यक्त होते हैं ॥ १८ ॥

अपरिसंख्येयत्वंपुनरेतेषामाश्रयादीनांभावानांविशेषान्नाश्रायतेनचतस्मादन्यत्वमुपपद्यते ॥ १९ ॥

इन आश्रयादिक पदार्थों की विशेषता से रस असंख्य कहेजाते हैं परन्तु इस्से वह अन्य नहीं होते ॥ १९ ॥

परस्परंसंसृष्टभूयिष्ठत्वान्नचैषामनिवृत्तिर्गुणप्रकृतीनामपरिसंख्येयत्वम्भवति । तस्मान्नसंसृष्टानांरसानां कर्मोपदिशन्तिबुद्धिमन्तः ॥ २० ॥

परस्पर मिलने व अधिक से रसों की असिद्धि नहीं होती किन्तु गुण तथा प्रकृतियां असंख्य होजाती हैं इस्से बुद्धिमान् वैद्य मिले हुए रसोंके कर्मका उपदेश नहीं करते हैं॥२०॥

तच्चैवकारणमपेक्षमाणाः षण्णांरसानाम्परस्परेणासंसृष्टानांलक्षणपृथक्त्वमुपदेक्ष्यामः । अग्रेतुतावद्द्रव्यभेदमभिप्रेत्यकिञ्चिदभिधास्यामः । सर्व्वन्द्रव्यम्पाञ्चभौतिकमस्मिन्नेवार्थेतच्चेतनावदचेतनञ्च । तस्यगुणाः शब्दादयोगुर्वादयश्चद्रवान्तः । कर्मपञ्चविधमुक्तंवमनादि ॥ २१ ॥

इसी कारणकी अपेक्षासे परस्पर नहीं मिले हुए छओं रसोंके लक्षणों का पृथक् २ उपदेश करते हैं और आगे द्रव्योंके भेद के विषय में कुछ कहेंगे इस शास्त्रमें जिन द्रव्यों का वर्णन है वह सब पांचभौतिकहैं उनमेंसे कुछ चैतन्य हैं और कुछ जड़ हैं शब्दादिक तथा द्रवपर्यन्त गुरु आदिक द्रव्यों के गुण हैं और वमनादिक पांच द्रव्यों के कर्म हैं ॥ २१ ॥

तत्रद्रव्याणिगुरुखरकठिनमन्दस्थिरविषदसान्द्रस्थूलगन्धगुणबहुलानि पार्थिवानि तान्युपचयसङ्घातगौरवस्थैर्यकराणि ॥ २२ ॥

पांच भौतिक द्रव्योंमें से पार्थिव द्रव्य गुरु खर कठिन मन्द स्थिर बिषद घन स्थूल तथा अधिक गन्ध गुणयुक्त होती हैं यह द्रव्य पुष्टता कठिनता गौरव तथा स्थिरताकारक होती हैं ॥ २२ ॥

द्रवस्निग्धशीतमन्दमृदुपिच्छिलरसगुणबहुलान्याप्यानि तान्युत्क्लेदस्नेहबन्धविष्यन्दप्रह्लादकराणि २३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रव स्निग्ध शीत मन्द मृदु पिच्छिल सर अधिक गुणयुक्त द्रव्य आप्य (जलसंबंधी) होती हैं यह द्रव्य क्लेद स्निग्धता बन्ध अभिष्यन्द तथा हर्षकारक होती हैं ॥ २३ ॥

उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मलघुरूक्षविषदरूप गुणबहुलानि आग्नेयानितानिदाहपाकप्रभाप्रकाशवर्णकराणि२४॥

उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म लघु रूक्ष विषद तथा अधिक रूप गुणयुक्त द्रव्य आग्नेय होती हैं यह द्रव्यदाह पाक प्रभा प्रकाश तथा वर्णकारक होती हैं ॥ २४ ॥

लघुशीतरूक्षखरविषदसूक्ष्मस्पर्श गुणबहुलानिवायव्यानि तानिरौक्ष्यग्लानिविचारवैषद्यलाघवकराणि ॥ २५ ॥

लघु शीत रूक्ष खर विषद सूक्ष्म तथा अधिक स्पर्शगुणयुक्त द्रव्य वायव्य कहाती हैं यह द्रव्य रूक्षता ग्लानि गमन वैषद्य तथा लघुताकारक होती हैं ॥ २५ ॥

मृदुलघुसूक्ष्मश्लक्ष्णशब्दगुणबहुलान्याकाशात्मकानि तानिमार्दवसौषिर्यलाघवकराणि ॥ २६ ॥

मृदु लघु सूक्ष्म श्लक्ष्ण तथा अधिक शब्द गुणयुक्त द्रव्य आकाशात्मक होती हैं यह द्रव्य कोमलता छिद्र तथा लघुता कारक होती हैं ॥ २६ ॥

अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतञ्जगतिकिञ्चिद्द्रव्यमुपलभ्यते । तां युक्तिमर्थञ्च तन्तमभिप्रेत्य नचगुणप्रभावादेवकार्म्मुकाणि भवन्ति ॥ २७ ॥

इस उपदेश से संसार में ऐसी कोई द्रव्य नहीं है जो औषधि न होय युक्ति तथा प्रयोजनको देखकर उनका व्यवहार करना चाहिये केवल गुणोंकेही प्रभाव से द्रव्य कार्य्यकारी नहीं होतीं ॥ २७ ॥

द्रव्याणि हि द्रव्यप्रभावाद्गुणप्रभावाच्च तस्मिंस्तस्मिन्कालेतत्तदधिष्ठानमासाद्य तान्ताञ्चयुक्तिंयत्कुर्वन्ति तत्कर्म्मयेनकुर्वन्तितद्वीर्य्यं, यत्रकुर्व्वन्ति तदधिकरणंयदाकुर्वन्तिसकालो यथाकुर्वन्तिसउपायो यत्साधयंतितत्फलम् ॥ २८ ॥

द्रव्य अपने प्रभाव से गुणों के प्रभाव से तथा अपने और गुण दोनों के प्रभाव से समय २ पर यथोचित प्रभाव को पाकर युक्ति के अनुसार जो करती हैं उसे कर्म कहते हैं जिसके द्वारा कर्म करती हैं उसे वीर्य्य कहते हैं जिसमें करती हैं वह अधिकरण कहते हैं जब करती हैं उसे काल कहते हैं जिस प्रकार से करती हैं उसे उपाय कहते हैं और जो प्रयोजन सिद्ध होता है उसे फल कहते हैं ॥ २८ ॥

भेदश्चैषां त्रिषष्टिविधिविकल्पो द्रव्यदेशकालप्रभावात्तदुपदेक्ष्यामः २९ ॥

द्रव्य देश तथा कालके प्रभावसे इन रसोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६३ प्रकार के भेद विकल्प से होते हैं उनका उपदेश करताहूं ॥ २९ ॥

स्वादुरम्लादिभिर्योगं शेषैरम्लाद यःपृथक् । यानिपञ्चदशैतानिद्र व्याणिहिरसानितु ॥ ३० ॥

मधुररस का अम्लादिकों के साथ और अम्लादि रसों का शेष लवणादिकों के साथ अलग २ योग होने से १५ प्रकारकी द्विरस द्रव्य होती हैं जैसे मधुर अम्ल मधुर लवण मधुर तिक्त मधुर कटु तथा मधुर कषाय अम्ल लवण अम्ल कटु अम्ल तिक्त तथा अम्ल कषाय लवण कटु लवण तिक्त तथा लवण कषाय कटु तिक्त तथा कटु कषाय और तिक्त कषाय इसप्रकारसे १५ हुई ॥ ३० ॥

पृथगम्लादियुक्तस्य योगःशेषैःपृथ ग्भवेत् । मधुरस्यतथाम्लस्य लवण स्यकटोस्तथा ॥ ३१ ॥ त्रिरसानि यथासंख्यंद्रव्याण्युक्तानिविंशतिः । वक्ष्यन्तेतुचतुष्केणद्रव्याणिदशप ञ्चच ॥ ३२ ॥

मधुर अम्ल लवण तथा कटु इनको अम्लादि के साथ युक्त करके फिर शेष लवणादिके साथ अलग २ योग करने से त्रिरस वीस २० द्रव्य होती हैं जैसे मधुर अम्ल लवण मधुर अम्ल कटु मधुर अम्ल तिक्त मधुर अम्ल कषाय मधुर लवण कटु मधुर लवण तिक्त मधुर लवण कषाय मधुर कटु तिक्त मधुर कटु कषाय तथा मधुर तिक्त कषाय अम्ल लवण कटु अम्ल लवण तिक्त अम्ल लवण कषाय अम्ल कटु तिक्त अम्ल कटु कषाय तथा अम्ल तिक्त कषाय लवण कटु तिक्त लवण कटु कषाय लवण तिक्त कषाय और तिक्त कटु कषाय इस प्रकार २० त्रिरस द्रव्यहुईं और चार २ रसों के संयोग से १५ प्रकार की द्रव्य कही जाती हैं ॥ ३१ । ३२ ॥

स्वाद्वम्लौसहितौयोगंलवणाद्यैःपृ थग्गतौ । योगंशेषैःपृथक्यातःच तुष्कंरससंख्यया ॥ ३३ ॥ सहितौ स्वादुलवणौतद्वत्कट्वादिभिःपृथक् । युक्तौशेषैःपृथग्योगंयातःस्वादूषणौ यथा ॥ ३४ ॥ कट्वाद्यैरम्ललवणौ संयुक्तौसहितौपृथक् । यातःशेषैः पृथग्योगंशेषैरम्लकटूतथा ॥ ३५ ॥ युज्यतेतुकषायेणसतिक्तौलवणौप णौ । षट्तुपञ्चरसान्याहुरेकैकस्या पवर्जनात् ॥ ३६ ॥

मधुर और अम्ल मिलकर लवण आदिके साथ पृथक् २ योग प्राप्तहोकर व शेषोंके साथ अलग २ योग होनेसे रसकी चतुष्क संख्या होती हैं और उसी तरह मधुर व लवण मिलकर कटुआदि के साथ पृथक् २ योग प्राप्तहोकर तथा मधुर व ऊषण मिलकर शेषोंके साथ पृथक् २ संयोग होनेसे चतुष्कसंख्या होती है अम्ल व लवण मिलकर कटुआदिके साथ पृथक् २ योग प्राप्तहोकर तथा अम्ल व कटु मिलकर शेषोंके साथ पृथक् २ संयोग होने से चतुष्कसंख्या होती है जैसे मधुर अम्ल लवण कटु मधुर अम्ल लवण तिक्त मधुर अम्ल लवण कषाय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धुर अम्ल कटु तिक्त मधुर अम्ल कटु कषाय मधुर अम्ल तिक्त कषाय मधुर लवण कटु तिक्त मधुर लवण कटु कषाय मधुर लवण तिक्त कषाय मधुर कटु कषाय तिक्त अम्ल लवण कटु तिक्त अम्ल लवण कटु कषाय अम्ल लवण तिक्त कषाय अम्ल कटु कषाय तिक्त लवण कटु तिक्त कषाय और एक २ रसके छोड़ने से पंच रस द्रव्य छः प्रकार की हैं जैसे मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त और अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय इत्यादि ॥ ३३।३६ ॥

षट्चैवैकरसानिस्युरेकंषड्रसमेवतु। इतित्रिषष्टिर्द्रव्याणां निर्दिष्टारससंख्यया ॥ ३७ ॥

एक २ रसवाली द्रव्य छःप्रकारकी होतीहैं और षड्रस द्रव्य एक प्रकारकी होती है इस प्रकाररसों की संख्या से ६३ प्रकारकी द्रव्य होती हैं ॥ ३७ ॥

त्रिषष्टिःस्यात्त्वसंख्येयारसानुरसकल्पनात्। रसास्तरतमाभ्यांतांसंख्यामभिपतन्तिहि ॥ ३८ ॥

प्रधान रस तथा अप्रधान रसोंकी कल्पना से यह ६३ असंख्य होजायँगी क्योंकि तरतम के लगाने से (मधुर मधुरतर मधुरतम इत्यादि) रस असंख्य होजाते हैं ॥ ३८ ॥

संयोगाःसप्तपञ्चाशत्कल्पनातुत्रिषष्टिधा। रसानांतत्रयोग्यत्वात्कल्पितारसचिन्तकैः ॥ ३९ ॥

तहां रसों की योग्यता से रसके विचार करने वाले वैद्यों ने रसों के संयोग ५७ प्रकारके और रसोंकी कल्पना ६३ प्रकारकी कही हैं ॥ ३९ ॥

क्वचिदेकोरसःकल्प्यःसंयुक्ताश्चरसाः क्वचित्। दोषौषधादीन्सञ्चिन्त्य भिषजासिद्धिमिच्छता ॥ ४० ॥

रोगोंको दूर करनेकी इच्छा करने वाला वैद्य दोष तथा औषधियों का विचार करके कहीं एक रसकी और कहीं संयुक्त रसोंकी कल्पना करे ॥ ४० ॥

द्रव्याणिद्विरसादीनि संयुक्तांश्चरसान्बुधः। रसानेकैकशश्चैवकल्पयन्तिगदान्प्रति ॥ ४१ ॥

बुद्धिमान् वैद्य रोगोंके बलको देखकर दो रसवाली संयुक्त रसवाली तथा एक एक रसवाली द्रव्योंकी कल्पना करते हैं ॥ ४१ ॥

यःस्याद्रसविकल्पज्ञः स्याच्चदोषविकल्पवित्। नसमुह्येद्विकाराणांहेतुलिङ्गोपशान्तिषु ॥ ४२ ॥

जो वैद्य रसों के तथा दोषों के विकल्पों को जानता है वह रोगों के हेतु तथा लक्षणों के जानने में और उनको शान्तकरने में मोह को नहीं प्राप्तहोता ॥ ४२ ॥

व्यक्तःशुक्तस्यचादौचरसोद्रव्यस्यलक्ष्यते। विपर्ययेणानुरसोरसोनास्तिहिसप्तमः ॥ ४३ ॥

प्रकटता से शुक्त वस्तु के आदि में जो रस लक्षित होता है वह प्रधान है और इससे विपरीत जो लक्षित होताहै वह अप्रधान अनुरस है क्योंकि कोई सातवाँरस नहीं है ॥ ४३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परापरत्वेयुक्तिश्च संख्यासंयोगएव च । विभागश्चपृथक्त्वञ्चपरिमाणमथापिच ॥ ४४ ॥

परत्व अपरत्व युक्ति संख्या संयोग विभाग पृथक्त्व परिमाण ॥ ४४ ॥

संस्कारोऽभ्यासइत्येतेगुणाज्ञेयाःपरादयः । सिद्ध्युपायश्चिकित्सायालक्षणैस्तान्प्रवक्ष्यते ॥ ४५ ॥

संस्कार अभ्यास यह परत्वादि दशगुण चिकित्सा की सिद्धि के उपायरूप हैं इनके लक्षण कहते हैं ॥ ४५ ॥

देशकालवयोमानपाकवीर्य्यरसादिषु । परापरत्वेयुक्तिस्तुयोजनायाचयुज्यते ॥ ४६ ॥

देश काल अवस्था मान पाक वीर्य्य तथा रसादिकों में परत्व तथा अपरत्व (प्रधानता तथा अप्रधानता) जाने जाते हैं दोषोंको देख कर जो औषधियों की कल्पना कीजाती हैं उसे युक्ति कहते हैं ॥ ४६ ॥

संख्यास्याद्गणितंयोगःसहसंयोगउच्यते । द्रव्याणांद्वन्द्वसर्वैककर्मजोनित्यएवच ॥ ४७ ॥

एक दोआदि गणित को संख्या कहते हैं एक प्रकारकी दो प्रकारकी तथा बहुतसी द्रव्योंके परस्पर योग को संयोग कहते हैं यह संयोग द्रव्योंके एक अनेक तथा दो कार्योंसे उत्पन्न हुआ अनित्य होता है ॥ ४७ ॥

विभागस्तुविभक्तिस्तुवियोगोभागशोग्रहः । पृथक्त्वंस्यादसंयोगोवैलक्षण्यमनेकता ॥ ४८ ॥

भाग करने को विभाग विभक्ति तथा वियोग कहते हैं परस्पर असंयोग को पृथक्त्व और अनेकता को वैलक्षण्य कहते हैं ॥४८॥

परिमाणंपुनर्मानं संस्कारःकरणंमतम् । भावाभ्यसनमभ्यासःशीलनंसततक्रिया ॥ ४९ ॥

तोलको परिमाण कहते हैं वस्तुओं की गुणान्तरोत्पादक क्रिया को संस्कार कहते हैं और किसी कार्य्य के वारंवार करने को अभ्यास अभ्यसन तथा शीलन कहते हैं॥४९॥

इतिस्वलक्षणैरुक्ताःगुणाः सर्वेपरादयः ॥ चिकित्सायैरविदितैर्नयथावत्प्रवर्त्तते ॥ ५० ॥

इस प्रकार परत्वादि दश गुणों के लक्षण कहेगये इन गुणों के विनाजाने यथावत् चिकित्सा नहीं होसक्ती ॥ ५० ॥

गुणागुणाश्रयानोक्तास्तस्माद्रसगुणान्भिषक् । विद्याद्द्रव्यगुणान्कर्त्तुरभिप्रायाःपृथग्विधाः ॥ ५१ ॥

गुण गुणोंके आश्रय नहीं होते इससे रसके जो गुण कहेगये हैं वह वैद्य को रसके आश्रयभूत द्रव्य के गुण जानने चाहिये क्योंकि ग्रन्थकर्त्ताके अभिप्राय जुदे २ होते हैं॥५१॥

अतश्चप्रकृतिंबुद्ध्वादेशकालान्तराणिच । तन्त्रकर्त्तुरभिप्रायानुपायांश्चार्थमादिशेत् ॥ ५२ ॥

इससे प्रकृति विषय देश तथा कालके भे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को जानकर और ग्रन्थकर्त्ता के अभिप्राय तथा उपायों को जानकर अर्थ कहना चाहिये ॥ ५२ ॥

परञ्चातःप्रवक्ष्यन्ते रसानांषड्विभक्तयः । षट्पञ्चभूतप्रभवाःसंख्याताश्चयथारसाः ॥ ५३ ॥

इसके उपरान्त रसोंके छः विभाग और जिस प्रकार पंचमहाभूतों से छः रस उत्पन्न होते हैं वह विषय कहाजाताहै ॥ ५३ ॥

सौम्याःखल्वापोऽन्तरिक्षप्रभवाः प्रकृतिशीतालघ्व्यश्च अव्यक्तरसाश्च तास्त्वन्तरिक्षाद्भ्रश्यमानाभ्रष्टाश्चपञ्चमहाभूतविकारगुणसमन्विताजङ्गमस्थावराणांभूतानां मूर्त्तिरभिप्रीणयन्ति तासुमूर्तिषुषड्भिर्मूर्च्छयंतिरसाः ॥ ५४ ॥

आकाश में उत्पन्न हुआ जल सोमगुणयुक्त स्वभावसे शीतल हलका तथा अव्यक्त रस (जिसमें कोई रस न मालूमहो) होता है वह जल आकाशसे गिरकर पांचों महाभूतोंके गुणोंसे युक्त होकर जंगम तथा स्थावर प्राणियों के शरीरों को तृप्त करता है और उन के शरीरों में छः रस प्रकाशित होते हैं ॥ ५४ ॥

तेषां षण्णांरसानांसोमगुणातिरेकान्मधुरोरसः। पृथिव्यग्निभूयिष्ठत्वादम्लः सलिलाग्निभूयिष्ठत्वाल्लवणोवाय्वग्निभूयिष्ठत्वात्कटुकोवाय्वाकाशातिरेकात्तिक्तः पवनपृथिव्यतिरेकात्कषायः । एवमेषांरसानांषट्त्वमुत्पन्नम् ॥ ५५ ॥

इन छः रसोंमें से सोमगुण की अधिकता से मधुररस पृथ्वी तथा अग्निगुणकी अधिकता से अम्लरस जल तथा अग्निगुण की अधिकतासे लवणरस वायु तथा अग्निगुणकी अधिकता से कटुरस वायु तथा आकाशगुणकी अधिकता से तिक्तरस और वायु तथा पृथ्वी गुणकी अधिकता से कषायरस उत्पन्न होताहै इस प्रकारसे यह छः रस उत्पन्न होते हैं ॥ ५५ ॥

न्यूनातिरेकविशेषान्महाभूतानामिवजङ्गमस्थावराणां नानावर्णाकृतिविशेषाः षट्ऋतुकत्वाच्चकालस्यउत्पन्नोमहाभूतानां न्यूनातिरेकविशेषः ॥ ५६ ॥

पंचमहाभूतों की न्यूनता तथा अधिकता की विशेषता से जंगम तथा स्थावर प्राणियों के नानाप्रकारके वर्ण तथा आकार होते हैं और समयके छः ऋतुयुक्त होने से महाभूतों की न्यूनता तथा अधिकता उत्पन्न होतीहै ५६॥

तत्राग्निमारुतात्मकारसाः प्रायेणोर्द्ध्वभाजोलाघवात्प्लवकत्वाच्च वायोरूर्द्ध्वज्वलनत्वाच्च वह्नेःसलिलपृथिव्यात्मकास्तु प्रायेणाधोभाजः पृथिव्यागुरुत्वान्निम्नगत्वाच्चोदकस्यव्यामिश्रात्मकास्तुपुनरुभयतोभागभाजः ॥ ५७ ॥

इन रसोंमें से प्रायः अग्नि वाय्वात्मक रस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वस्थान में रहते हैं क्योंकि वायु हलकी तथा वक्रगामी होती है और अग्नि ऊपर को जलती है जल तथा पृथिव्यात्मक रस प्रायः अधरस्थान में रहते हैं क्योंकि पृथ्वी गुरु (भारी) है और जल अधोगामी है और मिलेहुए रस ऊर्ध्व तथा अधोभाग दोनों में रहते हैं ॥ ५७ ॥

तेषां षण्णांरसानामेकैकस्ययथाद्रव्यगुणकर्माण्यनुव्याख्यास्यामः। तत्रमधुरोरसःशरीरसात्म्याद्रसरुधिरमांसमेदोऽस्थिमज्जौजः शुक्राभिवर्द्धनआयुष्यःषडिन्द्रियप्रसादनोबलवर्णकरः पित्तविषमारुतघ्नस्तृष्णाप्रशमनस्त्वच्यः केश्यःकण्ठ्यःप्रीणनोजीवनस्तर्प्पणः स्नेहनः स्थैर्य्यकरः क्षीणक्षतसन्धानरोघ्राणमुखकण्ठौष्ठतालुप्रह्लादनोदाहमूर्च्छाप्रशमनः षट्पदपिपीलिकानामिष्टतमः स्निग्धः शीतोगुरुश्च ॥ ५८ ॥

इन छः रसोंमें से प्रत्येक रसके द्रव्याश्रित गुण तथा कर्म कहेजाते हैं मधुररस शरीरको सात्म्य होने से रस रुधिर मांस मेदा अस्थि मज्जा ओज तथा वीर्य्यका वर्धक होता है आयुको हित होता है मन तथा पांचों इन्द्रियों को प्रसन्न करता है बल तथा वर्णकारी होता है पित्त विष वायु को नाश करनेवाला है और तृषाको शान्त करता है त्वचा केश तथा कंठ को हितकारी होताहै प्रसन्नताकारी जीवन तृप्तिकारी स्नेहन तथा स्थिरताकारी होताहै क्षीणता को दूरकरताहै घावको भरता है नासिका मुख कंठ ओष्ठ तथा तालु को प्रसन्न करता है मूर्च्छा तथा दाह को शान्त करता है भ्रमर तथा चेंटियों को अत्यन्त प्रिय होताहै और स्निग्ध शीत तथा गुरु होताहै ॥ ५८ ॥

सएवंगुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानःस्थौल्यंमार्दवमालस्यमतिस्वप्नंगौरवमनन्नाभिलाषमग्नेर्दौर्बल्यमास्यकण्ठमांसाभिवृद्धिं श्वासकासप्रतिश्यायालसकशीतज्वरानाहास्यमाधुर्य्यवमथुसंज्ञास्वरप्रणाशगलगण्डमालाश्लीपदगलशोफवस्तिधमनीगुदोपलेपाक्ष्यामयानभिष्यन्दामित्येवंप्रभृतीन्कफजान्विकारानुपजनयति ॥ ५९ ॥

इस प्रकार के गुणों से युक्त होनेपर भी केवल मधुररस काही अत्यन्त सेवन करने से स्थूलता कोमलता आलस्य अतिनिद्रा गौरव अरुचि मन्दाग्नि मुख तथा कंठ में मांस वृद्धि श्वास खांसी प्रतिश्याय(जुकाम) अलसक (अजीर्णविशेष) शीतज्वर आनाह (अफरा) मुखकी मधुरता छर्दि संज्ञा तथा स्वरका नाश गलगंड गंडमाला श्लीपद (फीलपांव) गले में सूजन वस्ति में धमनी में तथा गुदामें लेपसा मालूम होना नेत्ररोग और अभिष्यन्द तथा इसी प्रकार के अन्य कफज रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अम्लोरसोभक्तंरोचयति, अग्निंदीपयति, देहंबृंहयति, जर्जरयति, मनोबोधयति, इन्द्रियाणिदृढीकरोति, वलंवर्द्धयति, वातमनुलोमयति, हृदयंतर्पयति, आस्यंसंस्रावयति,भुक्तमपकर्षयति, क्लेदंजनयति, प्रीणयतिलघुरूष्णःस्निग्धश्च ६० ॥

अम्लरस रुचिकारक होताहै अग्निको दीप्त करता है शरीर को पुष्टकरताहै तथा पराक्रम करता है मनको प्रसन्न करता है इन्द्रियों को दृढ़ करता है वलको बढ़ाता है वायुको मार्ग के अनुसार करता है हृदय को तृप्त करताहै मुखसे लार बहाताहै भोजन पचाताहै क्लेद उत्पन्न करताहै तृप्तिकरता है और लघु उष्ण तथा स्निग्ध होताहै ॥ ६० ॥

सएवंगुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानोदन्तान्हर्षयतितर्पयति,संमीलयतिअक्षिणी, संवीजयतिलोमानि, कफंविलापयति,पित्तमभिवर्द्धयति, रक्तंदूषयति, मांसंविदहति, कायंशिथिलीकरोति, क्षीणक्षतकृशदुर्बलानांश्वयथुमापादयति। अपिचक्षताभिहतदष्टभग्नशूलिच्युतावमूदितपरिसर्पितमर्दितच्छिन्नाविद्धोत्पिष्टादीनिपाचयत्याग्नेयस्वभावात्परिदहतिकण्ठमुरोहृदयञ्च ॥ ६१ ॥

इस प्रकार के गुणों से युक्त होने पर भी केवल अम्लरसके ही अधिक सेवन से दन्तहर्ष तृप्ति नेत्रों का बन्द रहना रोमांच कफ की द्रवता पित्तवृद्धि रक्तदोष मांस में विदाह शरीर में शिथिलता क्षीणक्षत कृश तथा दुर्वलों का शोथयुक्त होना क्षत चोट दष्ट भग्न शूल च्युत अवमूत्रित परिसर्पित मर्दित छिन्न विद्ध तथा उत्पिष्ट आदि स्थानों का पकना यह विकार उत्पन्न होते हैं और अम्लरसके आग्नेय स्वभाव होने से कंठ उर तथा हृदय में दाह होता है ॥ ६१ ॥

लवणोरसःपाचनःक्लेदनोदीपनश्च्यावनश्छेदनोभेदनस्तीक्ष्णःसरोविकास्यधःस्रंस्यवकाशकरोवातहरःस्तम्भबन्धसंघातविधमनःसर्वरसप्रत्यनीकभूतआस्यंविस्रावयति,कफंविष्यन्दयति,मार्गाञ्छोधयति, सर्वशरीरावयवान्मृदुकरोति,रोचयत्याहारमाहारयोगीचात्यर्थगुरुःस्निग्धउष्णश्च ॥ ६२ ॥

लवणरस पाचन क्लेदन दीपन रेचन छेदन भेदन तीक्ष्ण सर विकाशी अधोगामी छिद्रकारी तथा वातनाशक होता है स्तम्भ बन्ध तथा कठिनता को नष्ट करताहै सब रसों के विपरीत होताहै मुखसे लार बहाताहै कफ को ढीला करताहै मार्गोंको शुद्ध करताहै शरीरके सर्वांगों को कोमल करताहै आहारमें रुचि बढ़ाता है आहार का अत्यन्त उपयोगी है और गुरु स्निग्ध तथा उष्ण होताहै ६२॥

सएवंगुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानःपित्तंकोपयति, रक्तंवर्द्धयति,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तर्षयति, मूर्च्छयति, तापयति, दाहयति, कुष्णातिमांसानि, प्रगालयतिकुष्ठानि, विषंवर्द्धयति, शोफान्स्फोटयति, दन्तांच्छयावतिपुंस्त्वमुपहन्ति, इन्द्रियाण्युपरुणाद्धि, वलीपलितखालित्यमापादयतिच, लोहितपित्ताम्लपित्तवीसर्पवातरक्तविचर्च्चिकेन्द्रलुप्तप्रभृतीन्विकारानुपजनयति ॥ ६३ ॥

इस प्रकारके गुणोंसे युक्त होनेपर भी केवल लवण रसकाही अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त कुपित होताहै रुधिर बढ़ताहै तृषा मूर्च्छा ताप तथा दाह उत्पन्न होताहै मांसमें खुजली होती है कुष्ठ गलताहै विष बढ़ताहै शोथ फटता है दांत नीले होजाते हैं नपुंसकता होती है इन्द्रियां रुकजाती हैं वली (झुर्री) पलित (बाल सफेद) तथा खालित्य (गंजा) उत्पन्न होते हैं रक्तपित्त अम्लपित्त वीसर्प वातरक्त विचर्चिका (कुष्ठविशेष) तथा इन्द्रलुप्त आदिक रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ६३ ॥

कटुकोरसोवक्त्रंशोधयति, अग्निंदीपयति, भुक्तंशोषयति, घ्राणमास्रावयति, चक्षुर्विरेचयति, स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि, अलसकश्वयथूपचयोदर्दाभिष्यन्दस्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति, रोचयत्यशनं, कण्डूर्विनाशयति, व्रणानवसादयति, क्रिमीन्हिनस्ति, मांसंविलिखति, शोणितसङ्घातंभिनत्ति, बन्धांश्छिनत्ति, मार्ग्गान्विवृणोति, श्लेष्माणंशमयति, लघुरुष्णोरूक्षश्च ॥ ६४ ॥

कटुरस मुख को शुद्ध करता है अग्निको दीप्त करताहै आहार को सुखाताहै नासिका तथा नेत्रोंसे जल बहाताहै इन्द्रियोंको स्फोटन करता है अलसक (अजीर्णविशेष) शोथ स्थूलता उदर्द (रोगविशेष) अभिष्यन्द स्नेह स्वेद क्लेद तथा मलको नष्ट करताहै भोजन में रुचि उत्पन्न करता है खुजलीको नष्ट करताहै व्रणोंको अवसन्न (सुन्न) करता है क्रिमियोंको मारताहै मांसको न्यून करता है जमेहुए रुधिर को पिघलाता है बन्धों को छिन्न करताहै मार्गों को खोलता है कफ को शान्त करता है और लघु उष्ण तथा रूखा होताहै ॥ ६४ ॥

सएवंगुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानोविपाकप्रभावात् । पौंस्त्वमुपहन्ति, रसवीर्य्यप्रभावान्मोहयति ग्लापयति सादयति कर्षयति, मूर्च्छयतिनमयतितमयति भ्रमयति कण्ठम्परिदहति शरीरतापमुपजनयतिबलंक्षिणोति तृष्णाञ्जनयति वाय्वग्निबाहुल्याद्भ्रममदवथुकम्पतोदभेदैश्चरणभुजपार्श्वपृष्ठप्रभृतिषुमारुतजान्विकारानुपजनयति ॥ ६५ ॥

इस प्रकार के गुणों से युक्त होनेपर भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केवल कटुरसकाही अधिक सेवन करने से कटुरस विपाक के प्रभावसे पुंस्त्वको नष्ट करताहै रस तथा वीर्य्यके प्रभाव से मोह तथा ग्लानि को उत्पन्न करताहै शरीरको शिथिल करता है कृशता करताहै मूर्च्छा नमन तम तथा भ्रम उत्पन्न करता है कंठ में दाह तथा शरीरमें ताप उत्पन्न करता है बलको क्षीण करता है तृषा को उत्पन्न करताहै और वायु तथा अग्निगुण की अधिकता से भ्रम मद ताप कंप तोद तथा भेद होने से पैर भुजा पार्श्व तथा पीठ आदि अंगों में वातज रोग उत्पन्न करता है ॥ ६५ ॥

तिक्तोरसःस्वयमरोचिष्णुररोचकघ्नो विषघ्नःक्रिमिघ्नोमूर्च्छादाहकण्डू कुष्ठतृष्णाप्रशमनः त्वङ्मांसयोः स्थिरीकरणोज्वरघ्नोदीपनःपाचनः स्तन्यशोधनोलेखनः क्लेदमेदोव सामज्जालसिकापूयस्वेदमूत्रपुरी षपित्तश्लेष्मोपशोषणोरूक्षशीतो लघुश्च ॥ ६६ ॥

तिक्तरस स्वयं रुचियुक्त नहीं होता परन्तु अरुचिको नाश करताहै विष तथा क्रिमि को नष्ट करता है मूर्च्छा दाह खुजली कुष्ठ तथा तृषाको शान्तकरता है त्वचा तथा मांस को स्थिर करता है ज्वरको नष्ट करता है दीपन तथा पाचन होताहै दुग्धको शुद्ध करता है लेखन है क्लेद चरबी मज्जा लसीका (धातु-विशेष) पीब स्वेद मूत्र विष्ठा पित्त तथा कफ को सुखाता है और रूक्ष शीत तथा लघु होताहै ॥ ६६ ॥

सएवं गुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानोरौक्ष्यात्खरविषदस्वभावाच्चरसरुधिरमांसमेदोऽस्थिमज्जशुक्राण्युच्छोषयति स्रोतसांखरत्वमुपपादयति बलमादत्तेकर्षयतिमोहयतिवदनमुपशोषयतिअपरांश्च वातविकारानुपजनयति ॥ ६७ ॥

इस प्रकारके गुणों से युक्त होनेपर भी केवल तिक्तरसकाही अधिक सेवन करने से तिक्तरस रूक्षगुण से और खर तथा विषद स्वभाव होने से रस रुधिर मांस मेदा अस्थि मज्जा तथा वीर्य्य को सुखाता है स्रोतों को कर्कश करता है बलकारक है मोह तथा कर्षण उत्पन्न करता है मुखको सुखाताहै और अन्य वातज रोग उत्पन्न करता है ॥ ६७ ॥

कषायोरसः संशमनःसंग्राहीसन्धारणः पीडनोरोपणःशोषणः स्तम्भनः श्लेष्मरक्तपित्तप्रशमनः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता रूक्षः शीतोगुरुश्च ॥ ६८ ॥

कषाय रस संशमन संग्राही संधारण पीड़ाकारी घावका भरने वाला सुखाने वाला स्तंभन कफ तथा रक्तपित्त को शान्त करने वाला शरीर में क्लेद का उपयोगकारक और रूक्ष शीतल तथा भारी होताहै ॥ ६८ ॥

सएवं गुणोऽप्येकएवात्यर्थमुपयुज्यमानआस्यंशोषयति, हृदयम्पीडयति, उदरमाध्मापयति, वाचन्नि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गृह्णाति, स्रोतांस्यत्रबध्नाति, श्यावत्वमापादयति, पौंस्त्वमुपहन्ति, विष्टभ्यजरांगच्छति, वातमूत्रपुरीषाण्यवगृह्णाति, कर्षयति, ग्लापयति, तर्षयति, स्तम्भयति, खरविषदरूक्षत्वात्पक्षवधग्रहापतानकार्दितप्रभृतींश्च वातविकारानुपजनयतीति ॥ ६९ ॥

इस प्रकार के गुणों से युक्त होनेपर भी केवल कषायरसकाही अत्यन्त सेवन करने से मुखको सुखाताहै हृदय को पीड़ित करता है उदर में अफरा करता है वाक् शक्ति को रोकता है स्रोतों को बांधता है कपिश वर्ण करताहै नपुंसकता करताहै विदग्ध होकर पचताहै वायु मूत्र तथा मलको रोकताहै कृशता ग्लानि तृषा तथा स्तम्भ को उत्पन्न करताहै और खर विषद तथा रूक्ष होनेसे पक्षवध पक्षग्रह अपतानक तथा अर्दित आदिक वात रोगों को उत्पन्न करताहै ॥ ६९ ॥

एवमेतेषड्रसाःपृथक्त्वेनवामात्रशःसम्यगुपयुज्यमानाउपकारकराअध्यात्मलोकस्यापकारकराः पुनरतोऽन्यथोपयुज्यमानांस्तान्विद्वानुपकारार्थमेवमात्रशःसम्यगुपयोजयेदिति ॥ ७० ॥

इन छः रसों को अलग २ अथवा मात्रा से अच्छे प्रकार व्यवहार करने से अध्यात्म लोकका उपकार होता है और यदि इनका विपरीत से व्यवहार न कियाजाय तो अपकार होता है इससे विद्वान् वैद्य उपकार के लिये मात्राके अनुसार अच्छेप्रकार से इनका व्यवहार करे ॥ ७० ॥

भवन्तिचात्र।

शीतंवीर्य्येणयद्द्रव्यं मधुरंरसपाकयोः। तयोरम्लंयदुष्णंचयच्चोष्णंकटुकंतयोः ॥ ७१ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। कि जो द्रव्य वीर्यमें शीत होती है वह रस तथा पाकमें मधुर होती है जो द्रव्य रस तथा पाक में अम्ल होती है वह वीर्य में उष्ण होती है और जो द्रव्य रस तथा पाकमें कटु होती है वहभी वीर्य में उष्ण होती है ॥ ७१ ॥

तेषांरसोपदेशेननिर्देश्योगुणसंग्रहः। वीर्य्यतोविपरीतानांपाकतश्चोपदेक्ष्यते ॥ ७२ ॥

इन द्रव्यों के रसके अनुसार गुण दिखलाने चाहिये वीर्य तथा पाकमें जो द्रव्य विपरीत हैं उनके गुण कहेजाते हैं ॥ ७२ ॥

यथापयोयथासर्पिर्यथावाचव्यचित्रकौ। एवमादीनिचान्यानिनिर्दिशेद्रसतोभिषक् ॥ ७३ ॥

जैसे दूध घी चव्य तथा चीता के गुण रसानुसार कहे हैं ऐसेही इसी प्रकारकी अन्य द्रव्योंके भी रसके अनुसार गुण वैद्य को कहने चाहिये ॥ ७३ ॥

मधुरंकिञ्चिदुष्णंस्यात्कषायंतिक्तमेवच। यथामहत्पञ्चमूलंयथाब्जानूपमामिषम् ॥ ७४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोई मधुर कषाय तथा तिक्त द्रव्य उष्ण होती है जैसे बृहत्पंचमूल और अनूप देशके जीवोंका मांस ॥ ७४ ॥

लवणंसैन्धवंनोष्णमम्लमामलकं तथा। अर्कागुरुगुडूचीनांतिक्तानामुष्णमुच्यते ॥ ७५ ॥

और सैंधव लवण लवण रसयुक्त होनेपर भी उष्ण नहीं होता व आमला अम्ल होने परभी उष्ण नहीं होता आक अगर तथा गिलोय यह द्रव्य तिक्तरस होनेपरभी उष्ण होती हैं ॥ ७५ ॥

किञ्चिदम्लंहिसंग्राहिकिंचिदम्लं भिनत्तिच। यथाकपित्थंसंग्राहिभेदिचामलकंतथा। पिप्पलीनागरं वृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते ॥ ७६ ॥

कोई अम्लद्रव्य ग्राही होती है और कोई अम्लद्रव्य भेदी होतीहै जैसे कैथा ग्राही होताहै और आमला भेदी होता है कटुरस द्रव्य पुंस्त्वनाशक होती है परन्तु पीपल तथा सोंठ कटुरस होनेपर भी पुंस्त्ववर्धक होती है ॥ ७६ ॥

कषायःस्तम्भनःशीतः सोऽभयात्वन्यथामता। तस्माद्रसोपदेशेननसर्वंद्रव्यमादिशेत् ॥ ७७ ॥

कषायरस द्रव्य स्तंभन तथा शीतल होते हैं परन्तु हड़ स्तंभन और शीतल दोनों नहीं होती इससे रसोंके गुणों के अनुसार संपूर्ण द्रव्योंके गुण न कहे ॥ ७७ ॥

दृष्टंतुल्यरसेऽप्येवंद्रव्येद्रव्येगुणान्तरम्। रौक्ष्यात्कषायोरूक्षाणामुत्तमो मध्यमःकटुः ॥ ७८ ॥

क्योंकि तुल्यरस वाली द्रव्योंमें भी गुणों का भेद देखाजाता है रूक्ष रसोंमें से रूक्षता से कषायरस श्रेष्ठ कटुरस मध्यम ॥ ७८ ॥

तिक्तोऽवरस्तथोष्णानामुष्णत्वाल्लवणःपरः। मध्योऽम्लःकटुकश्चान्त्यःस्निग्धानांमधुरःपरः। मध्योऽम्लोलवणश्चान्त्योरसः स्नेहान्निरुच्यते ॥ ७९ ॥

और तिक्तरस हीन है उष्ण रसोंमें से उष्णतामें लवणरस उत्तम अम्लरस मध्यम और कटुरस हीनहै स्निग्ध रसोंमें से स्निग्धतामें मधुररस श्रेष्ठ अम्लरस मध्यम और लवणरस हीन है और यह दोनों रस स्नेह में कहेगये हैं ॥ ७९ ॥

मध्याकृष्टावराःशैत्यात्कषायस्वादुतिक्तकाः। तिक्तात्कषायोमधुरःशीताच्छीततरःपरः। स्वादुर्गुरुत्वादधिकःकषायाल्लवणोऽवरः ॥ ८० ॥

शीतरसों में से शीतता में मधुररस श्रेष्ठ कषायरस मध्यम और तिक्तरस हीन है तिक्तसे कषाय मधुर है और शीतसे अति शीत श्रेष्ठ है गुरु रसों में से गुरुता में मधुर रस श्रेष्ठ कषायरस मध्यम तथा लवणरस हीन है ॥ ८० ॥

अम्लात्कटुस्ततस्तिक्तोलघुत्वादुत्तमोमतः। केचिल्लघूनामवरमिच्छंतिलवणंरसम् ॥ ८१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लघुरसों में से लघुता में तिक्तरस श्रेष्ठ कटुरस मध्यम और अम्लरस हीनहै और कोई आचार्य्य लघुरसोंमें से लवण को हीन कहते हैं ॥ ८१ ॥

गौरवेलाघवेचैव सोऽवरस्तूभयोरपि । परञ्चातोविपाकानांलक्षणंसम्प्रवक्ष्यते ॥ ८२ ॥

गुरुता तथा लघुता दोनों में लवणरस हीन है इस के उपरान्त विपाकों का लक्षण कहते हैं ॥ ८२ ॥

कटुतिक्तकषायाणांविपाकःप्रायशः कटुः । अम्लोऽम्लंपच्यतेस्वादुमधुरंलवणस्तथा ॥ ८३ ॥

प्रायः कटु तिक्त तथा कषाय रसवाली द्रव्यों का विपाक कटु होता है अम्ल रसका विपाक अम्ल होताहै और मधुर तथा लवण-रस का विपाक मधुर होताहै ॥ ८३ ॥

मधुरोलवणाम्लौचस्निग्धभावात्त्रयोरसाः । वातमूत्रपुरीषाणांप्रायोमोक्षेसुखामताः ॥ ८४ ॥

मधुर लवण तथा अम्ल यह तीनों रस स्निग्ध होने के कारण प्रायः वात मूत्र तथा पुरीष के त्याग में सुखदायक होते हैं ॥ ८४ ॥

कटुतिक्तकषायास्तु रूक्षभावात्त्रयोरसाः । दुःखाविमोक्षेदृश्यन्तेवातविण्मूत्ररेतसाम् ॥ ८५ ॥

कटु तिक्त तथा कषाय यह तीनों रस रूक्ष होने के कारण प्रायः वात मल मूत्र तथा वीर्यके त्याग में दुःखदायक होते हैं ॥ ८५ ॥

शुक्रहाबद्धविण्मूत्रो विपाकोवातलःकटुः । मधुरःसृष्टविण्मूत्रोविपाकेकफशुक्रलः ॥ ८६ ॥

कटुविपाक वीर्यनाशक मूत्र तथा पुरीषका रोधक और बादी होता है मधुरविपाक मूत्र तथा मलका निकालनेवाला और कफ तथा वीर्यका वर्धक होताहै ॥ ८६ ॥

पित्तकृत्सृष्टविण्मूत्रः पाकेऽम्लःशुक्रनाशनः । तेषांगुरुःस्यान्मधुरःकटुकाम्लावतोऽन्यथा ॥ ८७ ॥

अम्लविपाक पित्तका करनेवाला मलमूत्रका निकालनेवाला और वीर्यनाशक होताहै तिनमें से मधुरविपाक गुरु होताहै और कटु तथा अम्लविपाक लघु होताहै ॥ ८७ ॥

विपाकलक्षणस्याल्पमध्यभूयस्त्वमेवच । द्रव्याणांगुणवैशेष्यात्तत्रतत्रोपलक्षयेत् ॥ ८८ ॥

विपाकों के लक्षणों की अल्पता मध्यता तथा अधिकता द्रव्यों के गुणों की विषमता से तहां २ देखना चाहिये ॥ ८८ ॥

तीक्ष्णंरूक्षंमृदुस्निग्धं लघूष्णंगुरुशीतलम् । वीर्यमष्टविधंकेचित्केचिद्द्विविधमास्थिताः ॥ ८९ ॥ शीतोष्णमितिवीर्यन्तु क्रियतेयेनयाक्रिया । नावीर्यंकुरुतेकिञ्चित्सर्वावीर्यकृताक्रिया ॥ ९० ॥

कोई २ आचार्य तीक्ष्ण रूक्ष मृदु स्निग्ध लघु उष्ण गुरु तथा शीतल यह आठ प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के वीर्य कहते हैं और कोई शीतल तथा उष्ण दोही प्रकारका वीर्य्य कहते हैं जिस शक्तिकेद्वारा क्रिया सिद्ध होती है उसे वीर्य्य कहते हैं वीर्यके विना कोई क्रिया नहीं होती है इससे सम्पूर्ण क्रिया वीर्यवती हैं ८९।९०॥

रसोनिपातेद्रव्याणां विपाकःकर्म निष्ठया । वीर्यंयावदधीवासान्नि पाताच्चोपलभ्यते ॥ ९१ ॥

द्रव्यों को जिह्वामें रखतेही रसका अनुभव होताहै क्रियाके परिणाम में विपाकका अनुभव होताहै और आस्वादन से तथा परिपाक क्रियाके परिणाममें वीर्य्य जानाजाताहै९१॥

रसवीर्यविपाकानां सामान्यंयस्यल क्ष्यते । विशेषःकर्मणांचैव प्रभाव स्तस्यचस्मृतः ॥ ९२ ॥

रस वीर्य्य तथा विपाक जहां समान होय और क्रियामें विशेषता जानपड़े वहां द्रव्य का प्रभाव जानना चाहिये ॥ ९२ ॥

कटुकःकटुकःपाकेवीर्योष्णश्चित्र कोमतः । तद्वद्दन्तीप्रभावात्तुविरेच यतिमानवम् ॥ ९३ ॥

चीता कटु होता है व पाकमें भी कटु है और उष्ण वीर्य्य होताहै इसी प्रकार दन्ती (जमालगोटे की जड़) भी रस तथा विपाकमें कटु और उष्णवीर्य होती है परन्तु प्रभावसे मनुष्य को विरेचक होती है ॥ ९३ ॥

विषंविषघ्नमुक्तंयत् प्रभावस्तत्रकार णम् । ऊर्ध्वानुलोमनंयच्चतत्प्रभाव प्रभावितम् ॥ ९४ ॥

विष विष को दूर करता है यह जो कहा गयाहै इसमें प्रभावही कारण है और दोषों का जो ऊपर लेजाना है इसमें भी प्रभावही कारण है ॥ ९४ ॥

मणीनांधारणीयानां कर्मयद्विवि धात्मकम् । तत्प्रभावकृतंतेषांप्रभा वोचिन्त्यइष्यते ॥ ९५ ॥

मणियों के धारण करने से जो अनेक प्रकारके कार्य्य होते हैं उसमें प्रभावही कारण है क्योंकि उनका प्रभाव अचिन्त्य होता है ॥ ९५ ॥

किञ्चिद्रसेनकुरुते कर्मवीर्येणचा परम् । द्रव्यंगुणेनपाकेन प्रभावेण चकिञ्चन ॥ ९६ ॥

कोई द्रव्य रससे कोई वीर्य्य से कोई गुण से कोई विपाक से और कोई प्रभावसे कार्य्य करती है ॥ ९६ ॥

रसंविपाकस्तौवीर्यं प्रभावस्तानपो हति ॥ गुणसाम्यरसादीनामितिनै सर्गिकम्बलम् ॥ ९७ ॥

रसको विपाक नष्ट करता है रस तथा विपाक को वीर्य्य नष्ट करताहै और रस विपाक तथा वीर्य्य को प्रभाव नष्ट करताहै रसादिकों के गुणों की समता में स्वाभाविक बल देखना चाहिये ॥ ९७ ॥

सम्यग्विपाकवीर्याणि प्रभावश्चा प्युदाहृतः ॥ ९८ ॥

विपाक वीर्य्य तथा प्रभाव इनका वर्णन अच्छे प्रकार से कियागया ॥ ९८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षण्णां रसानां विज्ञानमुपदेक्ष्याम्यतः परम्। स्नेहनप्रीणनाह्लादमार्दवैरुपलभ्यते ॥ ९९ ॥ मुखस्थो मधुरश्चास्यं व्याप्नुवल्लिम्पतीव च। दन्तहर्षात्मुखस्रावात्स्वेदनात्मुखबोधनात्। विदाहाच्चास्यकण्ठस्य प्राश्यैवाम्लं रसं वदेत् ॥ १०० ॥

अब इस के उपरान्त छः रसों के विज्ञान का उपदेश करताहूं स्निग्धता प्रीति आह्लाद तथा कोमलता के द्वारा मधुररस जानाजाता है और मुखमें स्थित मधुर रस मुखको व्याप्त करता हुवा मुख में लिपसा जाता है दन्तहर्ष मुखसे लारबहना स्वेदन मुख मालूम होना और मुख तथा कंठ में विदाह होना इन लक्षणों के द्वारा अम्लरस जानना चाहिये ९९।१०० ॥

प्रलीयन्क्लेदविष्यन्दलाघवं कुरुते मुखे। यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः स विदाहान्मुखस्य च ॥ १०१ ॥

जो रस मुख में जाके लगतेही क्लेद अभिष्यन्द तथा लघुता करे और मुखमें शीघ्रही विदाह उत्पन्न करे उसे लवणरस जानना चाहिये ॥ १०१ ॥

संवेजयेद्यो रसानां निपाते तुदतीव च। विदहन्मुखनासाक्षिसंस्रावी स कटुः स्मृतः ॥ १०२ ॥

जो रस लगतेही जिह्वा में उद्वेग उत्पन्न करे और दाहपूर्वक पीड़ा करे और मुख तथा नासिका से जल बहावे उसे कटुरस जानना चाहिये ॥ १०२ ॥

प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च। स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः ॥ १०३ ॥

जो रस जिह्वा में लगने से पीड़ा उत्पन्न करे तथा स्वादिष्ट न लगे और मुख में विषदता शोष तथा आह्लाद करे उसे तिक्तरस कहते हैं ॥ १०३ ॥

वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः। बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि इति ॥ १०४ ॥

जो रस जिह्वामें विषदता स्तंभ तथा जड़ता उत्पन्न करे और गलेको अत्यन्त बाँधता देवे उसे कषायरस कहते हैं यह विकासीभी होताहै ॥ १०४ ॥

एवंवादिनं भगवन्तमात्रेयमग्निवेश उवाच। भगवन् श्रुतमेतदवितथमर्थसम्पद्युक्तं भगवतो यथावद्द्रव्यकर्माधिकारे वचः परं त्वाहारविकाराणां वैरोधिकानां लक्षणमनतिसंक्षेपेणोपदिश्यमानं शुश्रूषामहे इति ॥ १०५ ॥

इस प्रकार कहतेहुए भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेश ने कहा कि हे भगवन् आपसे यह अर्थ सम्पत्युक्त द्रव्योंके कर्म का विषय यथार्थरूपसे सुना अब इसके उपरान्त आहार के विरोधी द्रव्योंका लक्षण संक्षेपसे सुनना चाहता हूं ॥ १०५ ॥

तमुवाच भगवानात्रेयः। देहधातुप्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्यनीकभूतानिद्रव्याणिदेहधातुवि
रोधमापाद्यन्तेपरस्परविरुद्धानिका
निचित्संयोगात्संस्कारादपराणिदे
शकालमात्रादिभिश्चापराणितथा
स्वभावादपराणि ॥ १०६ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि देहकी धातुओंके विरुद्ध द्रव्य देहकी धातुओंमें विरोध उत्पन्न करती हैं कोई द्रव्य परस्पर गुण विरुद्ध होनेके कारण कोई संयोगविरोध से कोई संस्कार विरोधसे कोई देशकाल तथा मात्राके विरोध से और कोई स्वभाव के विरोध से विरोध उत्पन्न करती हैं ॥ १०६ ॥

तत्रयान्याहारमधिकृत्यभूयिष्ठमुप
युज्यन्तेतेषामेकदेशंवैरोधिकमधि
कृत्योपदेक्ष्यामः ॥ १०७ ॥

इनमें से जो द्रव्य विशेष करके आहार में व्यवहार की जाती हैं उन के एकदेशविरोधित्व को लेकर उपदेश करताहूं ॥ १०७ ॥

नमत्स्यान्पयसा सहाभ्यवहरेदुभयं
ह्येतन्मधुरंमधुरविपाकान्महाभिष्य
न्दिशीतोष्णत्वाद्विरुद्धवीर्य्यंविरुद्ध
वीर्य्यत्वाच्छोणितप्रदूषणायमहाभि
ष्यन्दित्वान्मार्गोपरोधायच॥ १०८॥

दूधके साथ मछली न खाय क्योंकि यह दोनों मधुररस हैं और विपाकमें भी मधुर होने से महाअभिष्यन्दी (रतूवत करनेवाली होजाती है दुग्ध शीतवीर्य्य है मछली उष्ण वीर्य्य है इससे दोनों विरुद्धवीर्य्य हैं विरुद्धवीर्य्य होने से यह दोनों रुधिरको दूषित करते हैं और महाअभिष्यन्दी होने से शरीरके स्रोतों को रोकते हैं ॥ १०८ ॥

तदनन्तरमात्रेयवचनमनुनिशम्य
भद्रकाप्योऽग्निवेशमुवाच । सर्वा
नेवमत्स्यान्पयसासहाभ्यवहरेतअ
न्यत्रैकस्माच्चिलिचिमात् । सपुनः
शकलीसर्वतोलोहितराजिःरोहित
प्रकारःप्रायोभूमौचरतितञ्चेत्पयसा
सहाभ्यवहरेन्निःसंशयंशोणितजा
नांविबन्धजानांवाव्याधीनामन्यत
मंअथवामरणंप्राप्नुयादिति १०९॥

तदनन्तर भगवान् आत्रेयजी के वचन सुनकर भद्रकाप्य ऋषिने अग्निवेश से कहा कि एक चिलचिम मछलीको छोड़कर और सब मछली दूधकेसाथ खानी चाहियें चिलचिम मछली में टुकड़े २ से होते हैं उस पर लोहितवर्ण की धारी होती हैं रोहू मछली के समान उसका आकार होताहै और प्रायः भूमि में रहतीहै उसको जो दूधके साथखाय तो रक्तज या विबन्धज कोई रोग अवश्य होताहै अथवा मृत्यु होजाती है ॥ १०९ ॥

नेतिभगवानात्रेयः । सर्वानेवम
त्स्यान्नपयसाभ्यवहरेद्विशेषतस्तुचि
लिचिमंसहिमहाभिष्यन्दितमत्वा
त्स्थूललक्षणतरानेतान्व्याधीनुप
जनयत्यामविषमुदीरयतिच ११०॥

भद्रकाप्य के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा यह ठीक नहीं है कोई भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मछली दूधके साथ न खाना चाहिये और चिलचिम विशेष करके क्योंकि चिलचिम अत्यन्त महाअभिष्यन्दी होने के कारण स्थूल लक्षणवाली इन व्याधियों को उत्पन्न करती है और आमविष को उत्तेजित करती है ॥ ११० ॥

ग्राम्यानूपौदकपिशितानिमधुतिल गुडपयोमाषमूलकबिसैर्विरूढधान्यै श्चनैकधाआद्यात् । तन्मूलश्चबाधि र्य्यान्ध्यवेपथुजाड्यविकलमूकतामै न्मिण्यमथवामरणमाप्नोति १११ ॥

ग्राम्य अनूपदेश तथा जल के जीवों का मांस सहत तिल गुड़ दूध उर्द मूली कमल की डंडी तथा अंकुरित नाजके साथ एकबार भी न खाय ऐसा भोजन करने से बधिरता अन्धता कंप जड़ता मूकता तथा मिनमिनापन यह रोग उत्पन्न होते हैं अथवा मरण होजाता है ॥ १११ ॥

नपौष्करंरोहिणीकं वाशाकंनकपो तान् सार्षपतैलभृष्टान्मधुपयोभ्यां सहाभ्यवहरेत् । तन्मूलं हि शोणि ताभिष्यन्दधमनीप्रतिचयापस्मार शङ्खकगलगण्डरोहिणीकानामन्य तमम्प्राप्नोत्यथवामरणमिति॥११२॥

पुष्कर साग रोहिणी साग तथा कबूतरों का मांस सरसों के तेल में भूनकर सहत तथा दूध के साथ न खाय ऐसा भोजन करने से रक्तजदोष अभिष्यन्द शिराओं का प्रतिचय मिरगी शंखक (शिरोरोगविशेष) गल-गंड तथा रोहिणी इन रोगों में से कोई रोग होताहै अथवा मृत्यु होती है ॥ ११२ ॥

नमूलकलशुनकृष्णगन्धार्जकसु मुखसुरसादीनि भक्षयित्वापयःसे व्यंकुष्ठाबाधभयात् ॥ ११३ ॥

मूली लहसन कृष्णगन्धा श्वेतबबई सुमुख तथा सुरस आदिशाकों को खाकर दूध न पीना चाहिये क्योंकि इस में कुष्ठ होने का भय रहता है ॥ ११३ ॥

नवास्तुशाकंनलिकुचंपक्कं मधुपयो भ्यांसहोपयोज्यम् । एतद्धिमरणा यायथवा बलवर्णतेजोवीर्य्योपरोधा यालघुव्याधयेषाण्ड्यायच॥११४॥

बथुयेका शाक तथा पक्का बड़हल को सहत तथा दूध के साथ न खाय क्योंकि ऐसे भोजन से मृत्यु होती है अथवा बल वर्ण तेज तथा वीर्य्य की हानि होती है और कोई बड़ी व्याधि तथा नपुंसकता उत्पन्न होती है ॥ ११४ ॥

तदेवलिकुचपक्कं नमाषसूपगुडस र्पिर्भिः सहोपयोज्यं वैरोधकत्वा त् ॥ ११५ ॥

उर्दकी दाल गुड़ तथा घीके साथ पक्का बड़हल न खाय क्योंकि यह संयोग विरुद्ध है ॥ ११५ ॥

तथाम्रातकमातुलुङ्गलिकुचकरमर्द मोचदन्तशठबदरकोशाम्रभव्यजा म्बवकपित्थतिन्तिडीकपारावताक्षो टपनसनालिकेरदाडिमामलकान्ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वम्प्रकाराणि चान्यानिसर्व्वञ्चाम्लन्द्रव्यमद्रवञ्च पयसासह विरुद्धम् ॥ ११६ ॥

इसीतरह आम्रातक बिजौरा नींबू बड़हल करोंदा केला जंभीरी नींबू बेर कोशाम्र भव्य जामन कैथा इमली पारावत अखरोट कटहल नारियल दाड़िम तथा आमला यह सब फल तथा इसी प्रकारके अन्य फल और द्रव तथा शुष्क सब प्रकार की खट्टी वस्तु दूध के साथ खाना बिरुद्ध है ॥ ११६ ॥

कंगुवरकमकुष्ठककुलत्थमाषनिष्पावाः पयसासहविरुद्धाः पद्मोत्तरिकाशाकं शार्करोमैरेयोमधुचसहोपयुक्तंविरुद्धं वातञ्चातिकोपयति ॥ ११७ ॥

कंगु वरक मकुष्ठक कुलथी उर्द तथा निष्पाव (अन्नविशेष) इनको दूधके साथ खाना विरुद्ध है पद्मोत्तरिका शाक शक्कर मैरेय (मद्यविशेष) तथा सहत इनका एक साथ खाना विरुद्ध है इससे वायु अत्यन्त कुपित होती है ॥ ११७ ॥

हारिद्रकः सर्षपतैलभृष्टोविरुद्धापित्तञ्चातिकोपयति पायसोमन्थानुपानोविरुद्धः । उपोदिकातिलकल्कसिद्धाहेतुरतीसारस्य ॥ ११८ ॥

सरसों के तैलमें भूनीहुई हल्दी विरुद्धहै पित्तको अत्यन्त कोपित करती है खीर खाकर मन्थ पीना विरुद्ध है तिलोंकी पिट्ठी के साथ करिमुआंका शाक खाने से अतीसार होताहै ॥ ११८ ॥

वलाकावारुण्याकुल्माषैरपि विरुद्धा । सैवशूकरवसापरिभृष्टासद्योव्यापादयति ॥ ११९ ॥

बगले का मांस वारुणी मदिरा के साथ तथा कुल्माष (अधगले यव आदिक) के साथ विरुद्ध है बगले के मांस को शूकर की चरबीमें भूनकर खानेसे शीघ्रही मृत्यु होती है ॥ ११९ ॥

मायूरमांसमेरण्डसीसकासक्तमेरंडाग्निप्लुष्टंसद्योव्यापादयति ॥१२०॥

मोरके के मांस को रेड़ीके तेलके साथ खाने से अथवा रेड़ी की लकड़ी की आग में भूनकर खाने से शीघ्रही मृत्यु होती है ॥ १२० ॥

तदेव भस्मपांसुपरिध्वस्तंसक्षौद्रंमरणाय ॥ १२१ ॥

और वही भस्म पांसुसे परिध्वस्त शहद के साथ खाने से मृत्यु होती है ॥ १२१ ॥

हारीतकमांसं हारिद्राग्निप्लुष्टंसद्योव्यापादयति । मत्स्यतैलनिस्ताडनसिद्धाःपिप्पल्यस्तथाकाकमाचीमधुचमरणाय ॥ १२२ ॥

हारीत पक्षीके मांस को हल्दी के काष्ठ के द्वारा भूनकर खाने से शीघ्रही मृत्यु होती है मछली के तेलमें पीपल पकाकर खाने से और काकजंघा तथा सहत मिलाकर खाने से मृत्यु होती है ॥ १२२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुचोष्णमुष्णार्त्तस्यच मधुमरणा य ॥ १२३ ॥

सहत गरम करके खाने से और उष्णता से पीड़ित पुरुष को सहत खाने से मृत्यु होती है ॥ १२३ ॥

मधुसर्प्पिषीतुल्येमधुवारिचान्तरिक्षंस मधूतम्मधुपुष्करबीजंमधुपीत्वोष्णो दकम्भल्लातकोष्णोदकम्॥१२४॥

समभाग सहत और घी एकमें मिलाकर पीना सहत और वर्षाका जल एकमें मिला कर पीना पुष्करमूल तथा सहत एकमें मिला कर खाके उष्ण जल पीना यह संयोग विरुद्ध हैं गरमजल के साथ भिलावां खाना संयोगविरुद्ध है ॥ १२४ ॥

तक्रसिद्धःकम्पिल्लकःपर्युषिताका चमाचीअङ्गारशूल्योभासइतिविरु द्धानीत्येतद्यथाप्रश्नमभिनिर्दिष्ट म् ॥ १२५ ॥

भवन्ति चात्र श्लोकाः ॥

मट्ठेमें पाक किया कवीला संयोगविरुद्ध है पाक कीहुई बासी काकजंघा विरुद्ध है भास पक्षीके मांसका कवाव विरुद्ध है प्रश्नके अनुसार यह विरोधी वस्तु कहीगई ॥ १२५ ॥

यत्किञ्चिद्दोषमासाद्यननिर्हरतिका यतः । आहारजातंतत्सर्वमहिता योपपद्यते ॥ १२६ ॥

इसमें यह श्लोक हैं । जो द्रव्य दोष को प्राप्त होकर आहार से उत्पन्न दोषोंको शरीर से न निकाले वह वस्तु पुरुष को अहितकारी होती है ॥ १२६ ॥

यच्चापि देशकालाग्निसात्म्यासा त्म्यानिलादिभिः । संस्कारतोवीर्य तश्चकोष्ठावस्थाक्रमैरपि ॥१२७॥

और जो वस्तु देश काल अग्नि सात्म्य असात्म्य वायु संस्कार वीर्य कोष्ठ अवस्थाके क्रमसे विरुद्ध है ॥ १२७ ॥

परिहारोपचाराभ्यां पाकात्संयोग तोऽपिच । विरुद्धंतच्चनहितंहृत्संप द्विधिभिश्चयत् ॥ १२८ ॥

तथा आहार व उपचार से पाकसे संयोग से हृदयसे सम्पत्से विधिसे जो विरुद्ध है वह हितकारी नहीं है ॥ १२८ ॥

विरुद्धंदेशतस्तावद्रूक्षतीक्ष्णादिध न्वनि । आनूपेस्निग्धशीतादिभेप जंयन्निषेव्यते ॥ १२९ ॥

अनूपदेश में स्निग्ध और शीतआदि औषधका सेवन करना तथा धन्वदेश में रूखी व तीक्ष्णआदि का सेवन करना देशविरुद्ध है ॥ १२९ ॥

कालतोऽपिविरुद्धंयच्छीतरूक्षादि सेवनम् । शीतेकालेतथोष्णेचक टुकोष्णादिसेवनम् ॥ १३० ॥

शीतकाल में ठंढी तथा रूखीआदि वस्तु का सेवन और उष्णकाल में गरम व कडु द्रव्यका सेवन करना कालविरुद्ध है॥१३०॥

विरुद्धमनलेतद्वन्नानुरूपंचतुर्विधे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुसर्पिःसमधृतं मात्रयातद्विरुध्य
ते॥ १३१॥

ऐसेही चार प्रकारकी अग्निके अनुरूप न होना तथा मधु और घृत है बराबर जिसमें व मात्रासे विरुद्ध होना अग्निविरुद्ध है॥१३१॥

कटुकोष्णादिसात्म्यस्यस्वादुशी
तादिसेवनम्। यत्तत्सात्म्यविरुद्ध
न्तुविरुद्धंत्वनलादिभिः॥१३२॥

कटु और उष्ण स्वभाववाले मनुष्य को मधुर व शीत वस्तुका सेवन करना तथा अग्निआदि से विरुद्ध सात्म्यविरुद्धहै१३२॥

यासमानगुणाभ्यासविरुद्धान्नौषध
क्रिया। संस्कारतोविरुद्धन्तद्यद्भो
ज्यंविषवद्व्रजेत्॥ १३३॥

जो औषधकी क्रिया समान गुण व अभ्यासके विरुद्ध होवै और जो खाने से विषवत् गुणकरे वह संस्कारविरुद्धहै॥ १३३॥

ऐरण्डसीसकासक्तंशिखिमांसंतथै
वहि। विरुद्धंवीर्य्यतोज्ञेयंवीर्य्यतः
शीतलात्मकम्॥ १३४॥

एरंड के तेल में मिलाहुआ मृगाका मांस तथा शीतवीर्यवाली वस्तु वीर्यविरुद्ध है १३४॥

तत्संयोज्योष्णवीर्य्येणद्रव्येणसह
सेव्यते।क्रूरकोष्ठस्यचात्यल्पंमंदवी
र्य्यमभेदनम्॥ १३५॥

उष्णवीर्य वाली वस्तुके साथ उसको मिलाकर सेवन करने से और क्रूरकोष्ठ मनुष्य को अतिअल्प वीर्यमें मन्द अभेदकारी१३५॥

मृदुकोष्ठस्यगुरुचभेदनीयंतथाबहु।
एतत्कोष्ठविरुद्धन्तुविरुद्धंस्या
दवस्थया॥ १३६॥

और मृदुकोष्ठ वाले मनुष्य को भारी बहुत भेदनीय तथा अवस्था से यह कोष्ठविरुद्ध है॥ १३६॥

श्रमव्यवायव्यायामसक्तस्यानिल
कोपनम्। निद्रालसस्यालसस्यभो
जनंश्लेष्मकोपनम्॥ १३७॥

श्रम मैथुन व्यायाम इन में आसक्त मनुष्य को वायुका कुपित होना तथा निद्राका आलस कफका कुपित करनेवाला भोजन अवस्थाविरुद्ध है॥ १३७॥

यच्चानुत्सृज्यविण्मूत्रंभुंक्तेयश्चानभु
क्षितः। तच्चकर्मविरुद्धंस्याद्यच्चाति
क्षुद्वशानुगः॥ १३८॥

जो मनुष्य विना मलमूत्र किये भोजन करताहै और विनाक्षुधा के भोजन करता है तथा अत्यन्त क्षुधाके वशीभूत होकर भोजन करताहै वह कर्मविरुद्धहै॥ १३८॥

परहारविरुद्धन्तुवराहादीन्निषेव्यय
त्। सेवेतोष्णंघृतादींश्चपीत्वाशी
तंनिषेवते॥ १३९॥

जो वाराह आदि जीवों के मांसको खाके उष्ण पदार्थका सेवन करताहै तथा घृतआदि पीकर शीतल द्रव्यों का सेवन करता है वह आहारविरुद्धहै॥ १३९॥

विरुद्धंपाकतश्चापिदुष्टदुर्दारुसाधि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तम् । अपक्वतण्डुलात्यर्थपक्वदग्धं चयद्भवेत् ॥ १४० ॥

जो द्रव्य खराब होगईहो व खराब काष्ठमें पकाई गईहो व कच्चे चांवल व बहुत पकाहुआ तथा जलगया हुआ पदार्थ पाकविरुद्ध है ॥ १४० ॥

संयोगतोविरुद्धं तद्यथाम्लंपयसास ह । अमनोरुचितंयच्च हृद्विरुद्धन्त दुच्यते ॥ १४१ ॥

दूधके साथ खटाई का खाना संयोगविरुद्ध है और अपने मन के अरुचिकारी पदार्थ का सेवन करना हृद्विरुद्धहै ॥ १४१ ॥

सम्पद्विरुद्धंतद्विद्यादसञ्जातरसन्तु तत् । अतिक्रान्तरसंवापि विपन्नर समेववा ॥ १४२ ॥

जिस द्रव्यकी उत्पत्तिहीमें रस न हो व जिसका रस सूखगया हो और विपन्न रस हो वह सम्पाद्विरुद्ध है ॥ १४२ ॥

ज्ञेयंविधिविरुद्धन्तु भुज्यतेनिभृतेन यत् । तदेवंविधमन्नंस्याद्विरुद्धमुप योजितम् ॥ १४३ ॥

जो मनुष्य तृप्ति को प्राप्त होकर भोजन करे वह विधिविरुद्ध है इस प्रकार अन्नों का भोजन करना विरुद्ध होताहै ॥ १४३ ॥

सात्म्यतोऽल्पतयावापिदीप्ताग्नेस्त रुणस्यचास्नेहव्यायामबलिनोविरु द्धंवितथम्भवेत् ॥ १४४ ॥

सात्म्य अल्पता दीप्ताग्नि तरुण स्नेह व्यायाम बली इनको विरुद्ध अन्नका सेवन करना निष्फल होताहै ॥ १४४ ॥

षाण्ड्यान्ध्यवीसर्पदकोदराणांवि स्फोटकोन्मादभगन्दराणाम् । मूर्च्छामदाध्मानगलग्रहाणां पाण्ड्वा मयस्यामविषस्यचैव ॥ १४५ ॥

नपुंसकता अन्धता वीसर्प जलोदर विस्फोटक उन्माद भगन्दर मूर्च्छा मद आध्मान गलग्रह पांडु आमबात विषदोष ॥ १४५ ॥

किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथा स्रपित्तज्वरपीनसानाम् । सन्तान दोषस्यतथैवमृत्योर्विरुद्धमन्नंप्रवद न्तिहेतुम् ॥ १४६ ॥

किलास कुष्ठ ग्रहणीदोष शोष रक्तपित्त ज्वर पीनस सन्तानदोष तथा मृत्यु इन सबका विरुद्धान्न भोजन का कारण कहा है ॥ १४६ ॥

एषाञ्चखलुपरेषाञ्चवैरोधिकानिमि त्तानांव्याधीनामिमेभावाःप्रतिका राः । यथावमनंविरेचनञ्च तद्विरो धिनाञ्चद्रव्याणांसंशमनार्थमुपयो गस्तथाविधैश्च द्रव्यैःपूर्वमभिसं स्कारःशरीरस्येति ॥ १४७ ॥

इन रोगोंका तथा विरुद्ध भोजन से हुए अन्य रोगोंके नाशके यह उपाय हैं कि जैसे वमन विरेचन और जो विरुद्ध वस्तु खाईहो उसके शान्ति करने का प्रयोग और उसी प्रकार विरोधी द्रव्योंका पहलेहीसे शरीरका संस्कार ॥ १४७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवतिचात्र।

विरुद्धाशनजान्रोगान्प्रतिहन्तिविरेचनम्। वमनंशमनञ्चैव पूर्ववाहितसेवनम् ॥ १४८ ॥

इस में यह श्लोकहै विरुद्ध भोजन से हुए रोग वमन विरेचन तथा संशमन के द्वारा दूर होतेहैं अथवा विरुद्ध भोजन करने से पहलेही हितकारी वस्तु खालेने से विकार नहीं उत्पन्न होताहै ॥ १४८ ॥

तत्रश्लोकाः।

मतिरासीन्महर्षीणां यायारसविनिश्चये। द्रव्याणिगुणकर्म्मभ्यांद्रव्यसंख्यारसाश्रयाः ॥ १४९ ॥

तिसमें यह श्लोकहैं। रसके निश्चयमें महर्षियों के मत द्रव्यों के गुण तथा कर्म द्रव्यों की रसाश्रित संख्या ॥ १४९ ॥

कारणंरससंख्याच रसानुरसलक्षणम्। परादीनांगुणानांचलक्षणानिपृथक्पृथक् ॥ १५० ॥

रस संख्या का कारण प्रधानरस तथा अप्रधानरस का लक्षण परत्वादि गुणों के अलग २ लक्षण ॥ १५० ॥

पञ्चात्मकानांषट्त्वञ्च रसानांयेन हेतुना। ऊर्ध्वानुलोमभाजश्चयद्गुणातिशयाद्रसाः ॥ १५१ ॥

पंचमहाभूतात्मक रसों को छःहोने का कारण जिनके गुणों की अधिकता से रसों के भाग ऊर्ध्वभाग तथा अधोभाग के भागी होते हैं ॥ १५१ ॥

षण्णांरसानांषट्त्वैवसुविभक्ताविभक्तयः। उद्देशश्चापविद्धश्चद्रव्याणांगुणकर्म्मणि ॥ १५२ ॥

छः रसों का अच्छी रीतिसे छः विभाग द्रव्यों का गुण कर्म्म के उद्देश तथा अपवाद ॥ १५२ ॥

प्रवरावरमध्यत्वं रसानांगौरवादिषु। पाकप्रभावयोर्लिंगं वीर्य्यसंख्याविनिश्चयः ॥ १५३ ॥

गौरवादि गुणोंमें रसोंकी श्रेष्ठता मध्यमता तथा हीनता पाक तथा प्रभावका लक्षण वीर्यकी संख्याका निश्चय ॥ १५३ ॥

षण्णामास्वाद्यमानानां रसानांयत्स्वलक्षणम्। यद्यद्विरुध्यतेयस्माद्येनयत्कारिचैवयत् ॥ १५४ ॥

स्वाद लेने से छः रसों के लक्षण जो २ वस्तु जिसके साथमें विरोधी हैं तथा जो विकार उत्पन्न करती हैं ॥ १५४ ॥

वैरोधिकनिमित्तानां व्याधीनामौषधञ्चयत्। आत्रेयेभद्रकाप्यीये तत्सर्व्वमवदन्मुनिः ॥ १५५ ॥

इत्यन्नपानचतुष्केआत्रेयभद्रकाप्यीयोनाम षड्विंशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २६ ॥

और विरुद्ध भोजनसे हुए रोगोंकी औषध यह सब विषय इस आत्रेय भद्रकाप्यीय अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने कहे हैं १५५॥
इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंआत्रेयभद्रका-
प्यीयनामछब्बीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २६ ॥

सत्ताईसवांअध्याय ॥

अथातोऽन्नपानविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

इष्टवर्णगन्धरसस्पर्शविधिविहितमन्नपानंप्राणिनां प्राणसंज्ञकानांप्राणमाचक्षतेकुशलाः। प्रत्यक्षफलदर्शनात्तदिन्धनाह्यन्तराग्नेःस्थितिस्तदेवसत्त्वमूर्जयति । तच्छरीरधातुव्यूहबलवर्णेन्द्रियप्रसादकरंयथोक्तमुपसेव्यमानंविपरीतमहितायसम्पद्यते ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अन्नपान विधिनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

चतुर वैद्य लोग मनोहर वर्ण गन्ध रस तथा स्पर्शयुक्त विधिपूर्वक कियेहुए प्राणसंज्ञक प्राणियों के अन्नपान को प्राणरूप कहते हैं प्रत्यक्ष फल देखने से मालूमहोता है कि अन्नपानही मनुष्यकी अग्निका ईंधन है इसीसे सत्त्व बढ़ता है विधिपूर्व्वक इसका सेवन करने से शरीर की धातुका व्यूह बल वर्ण तथा इन्द्रियों की प्रसन्नता होती है और विपरीतसेवन से अहित होताहै ॥ १ ॥

तस्माद्धिताहितावबोधनार्थमन्नपानविधिमखिलेनोपदेक्ष्यामोऽग्निवेश ॥ २ ॥

इससे हित तथा अहित को जानने के लिये हे अग्निवेश संपूर्ण अन्नपानविधि का वर्णन करते हैं ॥ २ ॥

तत्स्वभावादुदकंक्लेदयति, लवणंविष्यन्दयति, क्षारःपाचयति, मधुसन्दधाति, सर्पिःस्नेहयति,क्षीरंजीवयति, मांसंबृंहयति, रसः प्रीणयति, सुराजर्जरीकरोति, शीधुअवधमयति, द्राक्षारसोदीपयति, फाणितंमाचिनोति, दधिशोफंजनयति, पिण्याकशाकंग्लपयति, प्रभूतान्तर्मलोमाषसूपः, दृष्टिशुक्रघ्नःक्षारः प्रायःपित्तलमम्लमन्यत्रमधुनः पुराणाच्चशालियवगोधूमात्, प्रायः सर्वंतिक्तं वातलमवृष्यञ्चान्यत्रवेत्राग्रपटोलात्,प्रायःकटुकंवातलमवृष्यञ्चान्यत्रपिप्पलीविश्वभेषजात् ॥ ३ ॥

जल स्वभावसेही क्लेदकारक है लवण विष्यन्दकारक है क्षार पचाता है सहत संधान करताहै घृत स्निग्धता करताहै दूध जीवन है मांस बृंहण (धातु बढ़ानेवाला) है रस प्रसन्नताकारक है मद्य आहार को जीर्ण करती है शीधु (मद्यविशेष) दाहकारक है दाखका रस दीपन है राब संचयकारक है दही शोथकारक है सरसोंका शाक ग्लानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारक है उर्द की दाल अत्यन्त मलवर्द्धक है क्षार दृष्टि तथा वीर्य्यनाशक दाड़िम और आमलेको छोड़कर प्रायः सब अम्ल वस्तु पित्तवर्द्धक हैं सहत पुराने धान यव तथा गेहूं के सिवाय प्रायः सब मधुर वस्तु पित्तवर्द्धक हैं वेतके अग्रभाग तथा पटोल के सिवाय प्रायः सब तिक्त वस्तु वायुवर्द्धक और पुंस्त्वनाशक हैं सोंठ तथा पीपल के सिवाय प्रायः सब कटुद्रव्य वायुवर्द्धक तथा पुंस्त्वनाशक हैं ॥ ३ ॥

परमतोवर्गसंग्रहेणाहारद्रव्याण्यनुव्याख्यास्यामः ॥ ४ ॥

इसके उपरान्त वर्गोंके क्रमसे आहार द्रव्योंका व्याख्यान करते हैं ॥ ४ ॥

शूकधान्यशमीधान्यमांसशाकफलाश्रयान् । वर्गान्हरितमद्याम्बुगोरसेक्षुविकारिकान् ॥ ५ ॥

शूक धान्य शमी धान्य मांस शाक फल हरित मद्य जल दुग्ध इक्षुविकार ॥ ५ ॥

दशद्वौचपरौवर्गौकृतान्नाहारयोगिनाम् । रसवीर्य्यविपाकैश्चप्रभावैश्चोपदेक्ष्यते ॥ ६ ॥

दश यह और कृतान्न तथा आहारयोगी दो यह बारह वर्गरस वीर्य विपाक तथा प्रभावसहित उपदेश कियेजाते हैं ॥ ६ ॥

अथ शूकधान्यवर्गः ।

रक्तशालिर्महाशालिःकलमःशकुनाहृतः । चूर्णकोदीर्घशूकश्चगौरःपाण्डुकलांगुलौ ॥ ७ ॥

रक्तशालि (लाल धान्य) महाशालि कलम (जो उखाड़कर फिर जमायेजायँ) शकुलाहृत (धान्यविशेष) चूर्णक दीर्घशूक श्वेत शालि पाण्डुवर्ण शालि लांगुल शालि ॥ ७ ॥

सुगन्धिकालोहवालाः शालिवाख्याःप्रमोदकाः । पतङ्गास्तपनीयश्चयेचान्येशालयःशुभाः ॥ ८ ॥

सुगन्धिक लोहवाल शालिव प्रमोदक पतंग तथा तपनीय और जो २ उत्तम धान्य हैं ॥ ८ ॥

शीतारसेविपाकेचमधुराःस्वल्पमारुताः । बद्धाल्पवर्चसःस्निग्धाबृंहणाःशुक्रमूत्रलाः ॥ ९ ॥

वह सब रस तथा विपाक में शीत मधुर स्वल्प वायुकारक बँधाहुआ थोड़ा मल उत्पन्न करनेवाले स्निग्ध बृंहण और वीर्य्य तथा मूत्रके वर्द्धक होते हैं ॥ ९ ॥

रक्तशालिर्वरस्तेषांतृष्णाघ्नस्त्रिमलापहः । महांस्तस्यानुकलमस्तस्याप्यनु ततःपरे ॥ १० ॥

इन सब धानोंमें से लालधान्य सबसे श्रेष्ठ हैं यह तृषा तथा त्रिदोषनाशक होते हैं लालधानों की अपेक्षा महाशालि गुणों में हीन है महाशालि की अपेक्षा कलम धान हीनगुणहै और कलम धानकी अपेक्षा अन्य सब धान हीनगुण हैं ॥ १० ॥

यवकाहायनाःपांशुवाप्योनैषधकादयः । शालीनांशालयः कुर्वन्त्यनुकारंगुणागुणैः ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यवक हायन पांशु वाप्य तथा नैषधक आदिक धान गुण अगुण में पूर्वोक्त धानोंके समान हैं ॥ ११ ॥

शीतःस्निग्धोगुरुःस्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरात्मकः। षष्टिकःप्रवरोगौरःकृष्णगौरस्ततोऽनुच ॥ १२ ॥

षष्टिक धान (साठी) शीतल स्निग्ध भारी मधुर त्रिदोषनाशक तथा स्थिरताकारक होताहै सब साठी धानोंमें से श्वेत श्रेष्ठ होताहै और कालाधान उनकी अपेक्षा हीन होताहै ॥ १२ ॥

वरकोद्दालकौचीनशारदोज्ज्वलदर्दुराः । गन्धलाःकुरुविन्दाश्चषष्टिकाल्पान्तरागुणैः ॥ १३ ॥

वरक उद्दालक चीन शारद उज्ज्वल दर्दुर गन्धन तथा कुरुविन्द यह गुणों में साठी की अपेक्षा कुछहीन होताहै ॥ १३ ॥

मधुरश्चाम्लपाकश्च व्रीहिःपित्तकरोगुरुः । बहुमूत्रपुरीषोष्मात्रिदोषस्त्वेवपाटलः॥ १४ ॥

व्रीहिधान मधुर पाक में खट्टा पित्तकारी तथा भारी होता है पाटलधान बहुत मूत्र तथा मलकारी उष्ण तथा त्रिदोषकारक होता है ॥ १४॥

सकोरदूषःश्यामाकःकषायमधुरोलघुः। वातलःकफपित्तघ्नःशीतसंग्राहिशोषणः ॥ १५ ॥

कोदों तथा सामा कषैले मधुर हलके बादी कफ पित्तनाशक शीतल ग्राही तथा शुष्कताकारक होताहै ॥ १५ ॥

हस्तिश्यामाकनीवारतोयपर्णीगवेधुकाः । प्रशातिकाम्भःश्यामाकलौहित्याणुप्रियङ्गवः ॥ १६ ॥

हस्ति श्यामाक नीवार (तिन्नीके चावल) तोयपर्णी सेंहुआं प्रशातिका जल श्यामाक रक्त श्यामाक ककुनी ॥ १६ ॥

मुकुन्दझिंझिटगर्मूटीचरुकावरकास्तथा । शिबिरोत्कटचूर्णाह्वःश्यामाकसदृशागुणैः ॥ १७ ॥

मुकुन्द झिण्टी गर्मूटी चरुक आवरक शिविर उत्कट तथा चूर्णाह्व इन सब नाजोंमें सामाके समान गुण होताहै ॥ १७ ॥

रूक्षःशीतोगुरुःस्वादुःबहुवातशकृद्यवः । स्थैर्य्यकृत्सकषायस्तुबल्यःश्लेष्मविकारनुत् ॥ १८ ॥

यव रूखा शीतल भारी मधुर बहुत बादी अधिक मलकारी स्थिरताकारी कषैला बलिष्ठ और कफज रोगनाशक होताहै ॥ १८ ॥

रूक्षःकषायानुरसोमधुरःकफपित्तहा । मेदःक्रिमिविषघ्नश्चबल्योवेणुयवोमतः ॥ १९ ॥

वेणुयव रूखा कषैला मधुर कफ पित्तनाशक बलकारी और मेद क्रिमि तथा विषनाशक होताहै ॥ १९ ॥

सन्धानकृद्वातहरोगोधूमःस्वादुशीतलः । जीवनोबृंहणोवृष्यःस्निग्धःस्थैर्य्यकरोगुरुः ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गेहूं सन्धानकारी (जोड़नेवाला) वायुनाशक मधुर शीतल जीवनको हित बृंहण पुंस्त्ववर्द्धक स्निग्ध स्थिरताकारी तथा भारी होताहै ॥ २० ॥

नान्दीमुखीमधूलीच मधुरस्निग्ध शीतले। इत्ययंशूकधान्यानांपूर्वो वर्गःसमाप्यते ॥ २१ ॥

इतिशूकधान्यवर्गः।

नान्दीमुखी तथा मधूली यह दोनों मधुर स्निग्ध तथा शीतल होती हैं इस प्रकार यह शूक धान्योंका प्रथमवर्ग समाप्त हुआ॥ २१॥

इति शूकधान्यवर्गः॥

अथ शमीधान्यवर्गः।

कषायमधुरोरूक्षःशीतःपाकेकटुर्लघुः। विषदःश्लेष्मपित्तघ्नोमुद्गःसूप्योत्तमोमतः॥ २२॥

मूंग कषैली मधुर रूखी शीतल पाक में कटु हलकी विषद तथा कफ पित्तनाशक होती है यह सब दालोंमें श्रेष्ठहै ॥ २२ ॥

रूक्षश्चैवकषायश्चवातलःश्लेष्मपित्तहा। विष्टम्भीचाप्यवृष्यश्च राजमाषःप्रकीर्तितः॥ २३॥

राजमाष रूखा कसैला बादी कफपित्तनाशक विष्टम्भी पुंस्त्वनाशक होताहै॥ २३॥

वृष्यःपरंवातहरःस्निग्धोष्णमधुरोगुरुः। बल्योबहुमलःपुंस्त्वंमाषःशीघ्रंददातिच॥ २४॥

उर्द वीर्यवर्द्धक अत्यन्त वायुनाशक स्निग्ध उष्ण मधुर भारी बलकारी बहुत मलकारी और शीघ्रही पुंस्त्व देनेवाला होता है॥ २४॥

उष्णाःकषायाःपाकेऽम्लाःकफशुक्रानिलापहाः। कुलत्थाग्राहिणःकासहिक्काश्वासार्शसांहिताः२५॥

कुलथी उष्ण कषैली पाकमें अम्ल कफ वीर्य्य तथा वायुनाशक ग्राही और खांसी हिचकी श्वास तथा ववासीर वालोंको हित होती है॥ २५॥

मधुरामधुराःपाकेग्राहिणोरूक्षशीतलाः। मकुष्ठकाःप्रशस्यन्ते रक्तपित्तज्वरादिषु॥ २६॥

मकुष्ठक (मोठ) मधुर पाकमें मधुर ग्राही रूखी शीतल और रक्तपित्त तथा ज्वरमें श्रेष्ठ होती है॥ २६॥

चणकाश्चमसूराश्च खण्डिकाःसहरेणवः। लघवःशीतमधुराःसकषायाविरूक्षणाः॥२७॥ पित्तश्लेष्मणिशस्यन्ते सूपेष्वालेपनेषुच। तेषांमसूरःसंग्राही कषायोवातलःपरम्॥ २८॥

चने मसूर खण्डिका तथा रेणु यह सब हलके शीतल मधुर कषैले रूखे और पित्त तथा कफमें सूप व आलेपनमें हितकारी होते हैं इनमें से मसूर ग्राही होती है और कषाय अत्यन्त वादी होती है॥ २७। २८॥

स्निग्धोष्णमधुरस्तीक्ष्णः कषायःकटुकस्तिलः। त्वच्यःकेश्यश्चब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ल्यश्चवातघ्नःकफपित्तकृत् ॥२९॥

तिल स्निग्ध उष्ण मधुर तीक्ष्ण कषैला कटु त्वचा तथा केशों को हित बलकारी वातनाशक और कफ पित्तकारी होताहै ॥२९॥

गुर्व्योऽथमधुराःशीताबलघ्नारूक्षणात्मिकाः। सस्नेहाबलिभिर्भोज्याविविधाःशिम्बिजातयः ॥ ३० ॥

सब प्रकारकी सेम भारी मधुर शीतल बलनाशक रूखी स्निग्ध और बलवानोंसे भोजन करनेके योग्य होतीहै ॥ ३० ॥

आढकीकफपित्तघ्नीवातलाकफवातनुत्। अवल्गुजःसैडगजोनिष्पावावातपित्तलाः ॥ ३१ ॥

अरहड़ कफ पित्त तथा कफवातनाशक और वादी होती है अवल्गुज एड़गज तथा निष्पाव यह वातपित्तकारक होतेहैं ॥ ३१ ॥

काकाण्डोलात्मगुप्तानां माषवत्फलमादिशेत्। द्वितीयोऽयंशमीधान्यवर्गःप्रोक्तोमहर्षिणा ॥ ३२ ॥

इतिशमीधान्यवर्गः।

काकाण्डोल कवांच आदिके फल उर्द के समान गुणकारी होते हैं यह दूसरा शमीधान्यवर्ग आत्रेयजी ने कहा ॥ ३२ ॥

इति शमीधान्यवर्गः ॥

अथमांसवर्गः।

गोखराश्वतरोष्ट्राश्वद्वीपिसिंहर्क्षवानराः। वृकोव्याघ्रस्तरक्षुश्चबभ्रुमार्जारमूषिकाः ॥ ३३ ॥

गौ गर्दभ खच्चर ऊंट घोड़ा द्वीपी सिंह रीछ वानर भिड़हा व्याघ्र चीता नौला बिल्ली मूष ॥ ३३ ॥

लोपाकोजम्बुकःश्येनोवान्तादश्चाषवायसौ। शशघ्नोमधुहाभासोगृध्रोलूककुलिङ्गकाः ॥ ३४ ॥

लोपाक श्रगाल बाज वान्ताद चाख काक शशघ्न मधुहा भास गीध उल्लू कुलिङ्गक ॥ ३४ ॥

धूमीकाकुररश्चेतिप्रसहामृगपक्षिणः। श्वेतःश्यामश्चित्रपृष्ठःकालकःकाकुलीमृगः ॥ ३५ ॥

धूमिका और कुरर यह सब पशु पक्षी प्रसह कहलाते हैं श्वेतमृग श्याममृग चित्रपृष्ठमृग कालकमृग काकुलीमृग ॥ ३५ ॥

कुचीकाचिल्लकोभेकोगोधाशल्लकगण्डकौ। कदलीनकुलःश्वाविदितिभूमिशयाःस्मृताः ॥ ३६ ॥

कुचीका चिल्लक मेढ़क गोह शल्लक (सेई) गण्डक कदली नकुल (नौला) और श्वावित यह पशु भूमिशय कहलाते हैं ॥ ३६ ॥

सृमरश्चमरः खड्गोमहिषोगवयोगजः। न्यंकुर्वराहश्चानूपामृगाःसर्वेरुरुस्तथा ॥ ३७ ॥

सृमर चमर खड्ग महिष गवय हाथी न्यंकु और शूकर तथा रुरुआदि सम्पूर्ण मृग यह सब अनूप कहलाते हैं ॥ ३७ ॥

कूर्मःकर्कटकोमत्स्यः शिशुमारस्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिञ्जिलः। शुक्तिशङ्खोद्रकुम्भीरचुलुकीमकरादयः॥ ३८॥

कछुआ कर्कटा मछली शिशुमार तिमिंगिल सीपी शङ्ख कुम्भीर चुलुकी तथा मगर आदिक॥ ३८॥

इतिवारिशयाःप्रोक्ता वक्ष्यन्तेवारिचारिणः। हंसःक्रौञ्चोबलाकाचबकःकारण्डवःप्लवः॥ ३९॥

यह जलशय कहेगये अब जलचर कहते हैं हंस क्रौंच वगला बलाका (एकमकारका वगला) कारंडव प्लव॥ ३९॥

शरारीपुष्कराह्वश्च केशरीमानतुण्डिकः। मृणालकण्ठोमद्गुश्च कादम्बःकाकतुण्डकः॥ ४०॥

शरारि पुष्कर केशरी मान्तुंडिक मृणालकंठ मद्गु (हारिल) कादंब (बत्तक) काकतुंडक॥ ४०॥

उत्क्रोशःपुण्डरीकाक्षोमेघरावोऽम्बुकुक्कुटी। आरानन्दीमुखीवाटी सुमुखाःसहचारिणः॥ ४१॥

कुररी पुंडरीकाक्ष मेघराव जलकुकुट आरानन्दी मुखी वाटी सुमुखा सहचारी॥ ४१॥

रोहिणीकामकालीचसारसोरक्तशीर्षकः। चक्रवाकास्तथान्येच खगाःसन्त्यम्बुचारिणः॥ ४२॥

रोहिणी कामकाली सारस रक्तशीर्षक तथा चक्रवाक आदि औरभी पक्षी जलचर कहलाते हैं॥ ४२॥

पृषतःशरभोवामः श्वदंष्ट्रामृगमातृकाः। शशोरणौकुरङ्गश्च गोकर्णःकोट्टकारकः॥ ४३॥

पृषत शरभ वाम श्वदंष्ट्रा मृगमातृक शश उरण कुरंग गोकर्ण कोट्टकारक॥ ४३॥

चारुष्कोहरिणैणौच शम्बरःकालपुच्छकः। ऋष्यश्चतरपोतश्चविज्ञेयाजांगलामृगाः॥ ४४॥

चारुष्क हरिण एण शम्बर कालपुच्छक ऋष्य तथा तरपोत यह जांगल मृग कहलाते हैं॥ ४४॥

लावोवर्त्तीरकश्चैव वार्तीकःसकपिञ्जलः। चकोरश्चोपचक्रश्चकुक्कुटोरक्तवर्त्तकः॥ ४५॥

लवा वर्त्तीरक वर्त्तीक कपिंजल चकोर उपचक्र कुक्कुट तथा रक्तवर्त्तक॥ ४५॥

लावाद्याविष्किरास्त्वेतेवक्ष्यन्तेवर्त्तकादयः। वर्त्तकोवर्त्तिकाचैव बर्हीतित्तिरिकुक्कुटौ॥ ४६॥

यह लवादि विष्किर कहलाते हैं अब वर्त्तकादिक कहते हैं वर्त्तक वर्त्तिका मोर तित्तिर कुक्कुट॥ ४६॥

कङ्कसारपदेन्द्राभगोनर्दगिरिवर्त्तकाः। क्रकरोऽवकरश्चैववराहश्चेतिविष्किराः॥ ४७॥

कंकसार पदेन्द्राभ गोनर्द गिरिवर्त्तक क्रकर अवकर और वराह इन सबकोभी विष्किर कहते हैं॥ ४७॥

शतपत्रोभृङ्गराजः कोयष्टीजीवजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वकः। कैरातःकोकिलोऽत्यूहोगो पापुत्रःप्रियात्मजः॥ ४८॥

शतपत्र भृंगराज कोयष्टि जीवजीवक कैरात कोकिल अत्यूह गोपापुत्र प्रियात्मज॥४८॥

लट्वालट्टकषोबभ्रुर्वटहाडिण्डिमानकः। जटीदुन्दुभिवाक्कावलोहपृष्ठकुलिंगकाः॥ ४९॥

लट्वा लट्टकष बभ्रु वटहा डिंडिमानक जटी दुन्दुभि वाक्का अवलोह पृष्ठकुलिंगक॥ ४९॥

कपोतशुकसारङ्गाश्चिरिटीकंकुयष्टिकाः। सारिकाकलविङ्कश्च चटकोऽङ्गारचूडकः॥ ५०॥

कपोत शुक सारंग चिरिटीक कुयष्टिका सारिका कलविंक चटक अंगारचूड़क॥५०॥

पारावतःपाण्डविकइत्युक्ताः प्रतुदा द्विजाः। प्रसह्यभक्षयन्तीतिप्रसहास्तेनसंज्ञिताः॥ ५१॥

पारावत और पाण्डविक यह पक्षी प्रतुद कहलाते हैं और बलात्कार से भोजन करते हैं इससे प्रसह कहलाते हैं॥ ५१॥

भूशयाबिलवासित्वादानूपानूपसंश्रयात्। जलेनिवासाज्जलजाजलचर्य्याज्जलेचराः। स्थलजाजांगलाः प्रोक्तामृगाजांगलचारिणः॥ ५२॥

बिलमें रहने से भूमिशय अनूप में रहने से आनूप जलमें रहने से जलज जलमें विचरण करने से जलचर स्थलमें रहने और जांगल देशमें विचरण करनेसे जांगलकहलाते हैं॥ ५२॥

विकीर्यविष्किराश्चेति प्रतुद्यप्रतुदाःस्मृताः। योनिरष्टविधात्वेषां मांसानांपरिकीर्तिताः॥ ५३॥

बखेरकर खाते हैं इससे विष्किर कहलाते हैं टोंट मारमार करखाते हैं इससे प्रतुद कहलाते हैं आठ मांस के उत्पत्तिस्थान कहे हैं॥ ५३॥

प्रसहाभूशयानूपवारिजावारिचारिणः। गुरूष्णस्निग्धमधुराबलोपचयवर्द्धनाः॥ ५४॥

इनमें से प्रसह भूमिशय आनूप वारिज तथा जलचर जीवोंका मांस भारी उष्ण स्निग्ध मधुर बलकारी॥ ५४॥

वृष्याःपरंवातहराः कफपित्ताभिवर्द्धिनः। हिताव्यायामनित्यानांनरादीप्ताग्नयश्चये॥ ५५॥

वीर्य्यवर्धक अत्यन्त वायुनाशक और कफ तथा पित्तवर्धक होताहै यह जो मनुष्य नित्य व्यायाम करनेवाले तथा दीप्ताग्निवाले हैं उनको हितहै॥ ५५॥

प्रसहानांविशेषेणमांसंमांसाशिनांभिषक्। जीर्णार्शोग्रहणीदोषशोषार्त्तानांप्रयोजयेत्॥ ५६॥

वैद्य जो मांसाशी पुरुष जीर्ण होगये हों और बवासीर ग्रहणीदोष तथा शोषरोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से व्याकुल होंय उनको प्रसह जीवों का मांस विशेष करके खिलवावे ॥ ५६ ॥

लावाद्योविष्किरोवर्गः प्रतुदाजांगलामृगाः । लघवःशीतमधुराःसकषायाहितानृणाम् ॥ ५७ ॥ पित्तोत्तरेवातमध्येसन्निपातेकफानुगे । विष्किरावर्त्तकाद्यास्तुप्रसहाल्पान्तरागुणैः ॥ ५८ ॥

लवाआदिक विष्किरजीव प्रतुदजीव तथा जांगल जीवोंका मांस हलका शीतल मधुर तथा कषैला होता है यह अधिक पित्त मध्य वात तथा हीनकफवाले सन्निपातमें मनुष्यों के लिये अत्यन्त हित होता है वर्त्तक आदि विष्किरजीवों का मांस प्रसहोंके मांससे गुणों में कुछ न्यून होताहै ॥ ५७। ५८ ॥

नातिशीतगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम् । शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दिबृंहणम् ॥ ५९ ॥

बकरेका मांस बहुत शीतल भारी तथा स्निग्ध नहीं होता त्रिदोषोंमें से कोई दोष भी नहीं उत्पन्न करता शरीरकी धातुओं के समान होनेके कारण अभिष्यन्दी नहींहोता और बृंहण होताहै ॥ ५९ ॥

मांसंमधुरशीतत्वाद्गुरुबृंहणमाविकम् । योनावजाविकेमिश्रगोचरत्वादनिश्चिते ॥ ६० ॥

भेड़का मांस मधुर तथा शीतल होने के कारण भारी होता है और बृंहण (धातुवर्धक) होताहै बकरी तथा भेड़आदि के संसर्गसे जो जीव उत्पन्न होते हैं उनके मांसों के गुणका कुछ निश्चय नहींहोता ॥ ६० ॥

सामान्येनोपदिष्टानां मांसानांस्त्रगुणैःपृथक् । केषाञ्चिद्गुणवैशेष्याद्विशेषउपदेक्ष्यते ॥ ६१ ॥

मांसों के जो सामान्य गुण कहेगये हैं उन में से किसी २ पशु पक्षी के मांसके गुण में विषमता होती है इससे वह अलग कहेजाते हैं ॥ ६१ ॥

दर्शनश्रोत्रमेधाग्निवयोवर्णस्वरायुषाम् । बर्हीहिततमोबल्योवातघ्नोमांसशुक्रलः ॥ ६२ ॥

मोरका मांस नेत्र कर्ण मेधा अग्नि आयु वर्ण स्वर तथा अवस्था को अत्यन्त हितकारी होताहै बल बढ़ाता है वायुको नाश करता है और मांस तथा वीर्यको बढ़ाता है ॥६२॥

गुरूष्णस्निग्धमधुराःस्वरवर्णबलप्रदाः । बृंहणाःशुक्रलाश्चोक्ताहंसामारुतनाशनाः ॥ ६३ ॥

हंसका मांस भारी उष्ण स्निग्ध तथा मधुर होता है स्वर वर्ण तथा बलको बढ़ाता है बृंहण होता है वीर्य को बढ़ाता है और वायु को नाश करता है ॥ ६३ ॥

स्निग्धाश्चोष्णाश्चवृष्याश्चबृंहणाःस्वरबोधनाः । बल्याःपरंवातहराःस्वेदनाश्चरणायुधाः ॥ ६४ ॥

मुर्गेका मांस स्निग्ध उष्ण वीर्यवर्धक बृंहण स्वर को उत्तम करनेवाला बलकारी स्वेदकारक और अत्यन्त वातनाशक होता है ॥ ६४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुरूष्णमधुरोनातिधन्वानूपनिषेवणात्। तित्तिरिःसञ्जयेच्छीघ्रंत्रीन्दोषाननिलोल्वणान्॥ ६५॥

मरुदेशमें तथा सजल स्थान में बहुत न रहने से तित्तिर पक्षीका मांस भारी उष्ण तथा मधुर होताहै और वाताधिक सन्निपात को शीघ्रही नष्ट करता है॥ ६५॥

पित्तश्लेष्मविकारेषु सरक्तेषुकपिञ्जलाः। मन्दवातेषुशस्यन्तेशैत्यमाधुर्य्यलाघवात्॥ ६६॥

कपिंजल पक्षीका मांस शीतल मधुर तथा लघु होता है और न्यून वातवाले रक्तसहित पित्त कफज रोगोंमें हित होताहै॥ ६६॥

लावाःकषायमधुराःलघवोऽग्निविवर्द्धनाः। सन्निपातप्रशमनाःकटुकाश्चविपाकतः॥ ६७॥

लवा पक्षीका मांस कषैला मधुर लघु अग्निवर्द्धक सन्निपातनाशक तथा पाकमें कटु होता है॥ ६७॥

कषायमधुराः शीतारक्तपित्तनिबर्हणाः। विपाकेमधुराश्चैवकपोतागृहवासिनः॥ ६८॥

गृहवासी कबूतरों का मांस कषैला मधुर शीतल रक्तपित्तनाशक और पाक में मधुर होताहै॥ ६८॥

तेभ्योलघुतराःकिञ्चित् कपोतावनवासिनः। शीताःसंग्राहिणश्चैवस्वल्पयूषाश्चतेमताः॥ ६९॥

गृहवासी कबूतरों की अपेक्षा वनवासी कबूतरों का मांस कुछ हलका होताहै और शीतल ग्राही तथा थोड़े यूषवाला होता है॥ ६९॥

शुकमांसंकषायाम्लंविपाकेरूक्षशीतलम्। शोषकासक्षयहितंसंग्राहिलघुदीपनम्॥ ७०॥

तोते का मांस कषैला पाक में खट्टा रूखा शीतल ग्राही हलका तथा दीपन होता है और राजयक्ष्मा खांसी तथा क्षयमें हित होताहै॥ ७०॥

कषायविशदोरूक्षःशीतःपाकेकटुर्लघुः। शशःस्वादुःप्रशस्तश्चसन्निपातेऽनिलावरे॥ ७१॥

खरगोश का मांस कषैला विशद रूखा शीतल पाक में कटु हलका मधुर और हीनवातवाले सन्निपात में हित होताहै॥ ७१॥

चटकामधुराःस्निग्धाबलशुक्रविवर्द्धनाः। सन्निपातप्रशमनाःशमनामारुतस्यच॥ ७२॥

चटक (गौरैया) का मांस मधुर स्निग्ध बलकारी वीर्य्यवर्द्धक और सन्निपात तथा वातनाशक होताहै॥ ७२॥

मधुराःकटुकाःपाकेत्रिदोषशमनाःशिवाः। लघवोबद्धविण्मूत्राःशीताश्चैणाःप्रकीर्तिताः॥ ७३॥

शृगाल का मांस मधुर पाकमें कटु तथा त्रिदोषनाशक होता है एण (मृगविशेष) का मांस हलका मल मूत्रका बद्ध करनेवाला तथा शीतल होताहै॥ ७३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोधाविपाकेमधुराःकषायकटुका रसे। वातपित्तप्रशमनीबृंहणीबल वर्द्धिनी ॥ ७४ ॥

गोह का मांस पाक में मधुर रस में कषाय तथा कटु वात पित्तनाशक बृंहण तथा बलकारी होताहै ॥ ७४ ॥

शल्लकोमधुराम्लस्तुबिपाकेकटुकः स्मृतः। वातपित्तकफघ्नश्चकास श्वासहरस्तथा ॥ ७५ ॥

शल्लक (सेई) का मांस मधुर अम्ल पाक में कटु वात पित्त तथा कफनाशक और कास श्वासनाशक होता है ॥ ७५ ॥

शैवलाहारभोजित्वात्स्वप्नस्यचाविवर्जनात्। रोहितोदीपनीयश्चलघु पाकोमहाबलः ॥ ७६ ॥

रोहूमछली शिवार खाती है और सोती नहीं है इस से उसका मांस दीपन पाकमें लघु और महाबलकारी होताहै ॥ ७६ ॥

गुरूष्णमधुराबल्याबृंहणाःपवनापहाः। मत्स्याःस्निग्धाश्चवृष्या श्चबहुदोषाःप्रकीर्त्तिताः ॥ ७७ ॥

मछली भारी उष्ण मधुर बलकारी बृंहण वातनाशक स्निग्ध वीर्य्यवर्धक और बहुत दोषकारी होती हैं ॥ ७७ ॥

स्नेहनंबृंहणंवृष्यंश्रमघ्नमनिलापहम्। वाराहपिशितंबल्यंरोचनंस्वेदनंगुरु ॥ ७८ ॥

शूकरका मांस स्निग्ध बृंहण वीर्य्यवर्धक श्रम तथा वातनाशक बलकारी रुचिकारी स्वेदन तथा भारी होताहै ॥ ७८ ॥

बल्योवातहरोवृष्यश्चक्षुष्योबलवर्द्धनः। मेधास्मृतिकरःपथ्यःशोषघ्नः कूर्मउच्यते ॥ ७९ ॥

कछुए का मांस बलवर्धक वातनाशक वीर्य्यवर्धक नेत्रों को हित मेधा तथा स्मृतिकारी पथ्य और शोषनाशक होताहै ॥ ७९ ॥

गव्यंकेवलवातेषुपीनसेविषमज्वरे। शुष्ककासश्रमात्यग्निमांसक्षयहितञ्चयत् ॥ ८० ॥

गोमांस केवल वातरोगमें पीनसमें विषमज्वरमें सूखी खांसी में श्रम में अग्निकी अधिकतामें और मांसक्षय में हितहै ॥ ८० ॥

स्निग्धोष्णमधुरंवृष्यंमाहिषंगुरुतर्पणम्। दार्ढ्यंबृहत्त्वमुत्साहंस्वप्नञ्च जनयत्यपि ॥ ८१ ॥

भैंसेका मांस स्निग्ध उष्ण मधुर वीर्य्यवर्द्धक भारी तृप्तिकारक दृढ़ताकारी शरीर को वृद्धिकारी उत्साहकारक और अति निद्राकारक होताहै ॥ ८१ ॥

धार्त्तराष्ट्रचकोराणांदक्षाणांशिखिनामपि। चटकानाञ्चयानिस्युरण्डानिचहितानिच ॥ रेतःक्षीणेषु कासेषुहृद्रोगेषुक्षतेषु च। मधुराण्यविपाकीनिसद्योबलकराणिच ॥ ८२ ॥

धार्तराष्ट्र (हंसविशेष) चकोर दक्ष मोर तथा चटक इनके अंडे मधुर कठिनता से पच-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेवाले तथा शीघ्रही बलकारी होते हैं और वीर्य्य क्षय खांसी हृद्रोग तथा क्षतमें हितकारी होतेहैं॥ ८२॥

शरीरबृंहणेनान्यत्दार्ढ्यंमांसाद्धिशिष्यते । इतिवर्गस्तृतीयोऽयं मांसानांपरिकीर्तितः॥ ८३॥

इति मांसवर्गः।

शरीरवर्द्धक तथा दृढ़ताकारी पदार्थों में मांस से बढ़कर कोई पदार्थनहीं है यह तीसरा मांसवर्ग कहागया॥ ८३॥

इति मांसवर्गः।

अथ शाकवर्गः।

पाठातुषाशठीशाकंवास्तुकंसुनिषण्णकम्। विद्याद्ग्राहित्रिदोषघ्नंभिन्नवर्चस्तुवास्तुकम्॥ ८४॥

पाढल मूशा शटीशाक (नरकचूरका शाक) बथुआ और सुनिषण्णक (शिरषारी) यह शाक ग्राही तथा त्रिदोषनाशक होते हैं इनमें से बथुआ मलभेदक होताहै॥ ८४॥

त्रिदोषशमनीवृष्याकाकमाचीरसायनी। नात्युष्णशीतवीर्य्याचभेदनीकुष्ठनाशिनी॥ ८५॥

काकमाची (काकजंघा) शाक त्रिदोषनाशक वीर्य्यवर्द्धक रसायन न बहुत उष्णवीर्य्य न बहुत शीतवीर्य्य भेदन और कुष्ठनाशक होता है॥ ८५॥

राजक्षवकशाकन्तुत्रिदोषशमनंलघु। ग्राहिशस्तंविशेषेणग्रहण्यर्शोविकारिणाम्॥ ८६॥

राजक्षवक (राई) का शाक त्रिदोषनाशक हलका ग्राही और ग्रहणी तथा बवासीरवालोंको विशेष हितकारी होताहै॥ ८६॥

कालशाकन्तुकटुकंदीपनंगरशोफजित्। लघूष्णंवातलंरूक्षंकरालंशाकमुच्यते॥ ८७॥

कालशाक कटु तथा दीपन होता है और विषदोष तथा शोथ को नष्ट करता है करालशाक हलका उष्ण वायुवर्द्धक तथा रूखा होताहै॥ ८७॥

दीपनीचोष्णवीर्य्याचग्राहिणीकफमारुते। प्रशस्यतेऽम्लचाङ्गेरीग्रहण्यर्शोहिताचसा॥ ८८॥

अम्ल चांगेरी (खट्टा अमलौना) दीपन उष्णवीर्य ग्राही कफज तथा वातज रोगों में हितकारी और ग्रहणी तथा बवासीर वालों को हितकारी होताहै॥ ८८॥

मधुरामधुरापाकेभेदनीश्लेष्मवर्द्धिनी। वृष्यास्निग्धाचशीताचमदघ्नीचाप्युपोदिका॥ ८९॥

उपोदिका (करेमुआं) मधुर पाकमें मधुर भेदन कफवर्द्धक वीर्यवर्द्धक स्निग्ध शीतल और मदनाशक होती है॥ ८९॥

रूक्षोमदविषघ्नश्चप्रशस्तोरक्तपित्तिनाम्। मधुरोमधुरःपाकेशीतलस्तण्डुलीयकः॥ ९०॥

तंडुलीयक (चौराई) रूखी मद तथा विषनाशक रक्तपित्तवालों को हितकारी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुर पाकमें मधुर और शीतल होती है॥ ९० ॥

मण्डूकपर्णीवेत्राग्रंकुचेलावनतिक्तकम् । कर्कोटकावल्गुजकौपटोलंशकुलादनी॥ ९१ ॥

मंडूकपर्णी (मजीठा शाक) बेतका अग्रभाग कुचेला वनतिक्तक (पाढ़र) कर्कोटक (खिकसा) अवल्गुज (बकुचीशाक) पर्वल शकुलादनी (कुटकीशाक)॥ ९१ ॥

वृषपुष्पाणिशार्ङ्गेष्ठाकेवूकंसकटिल्लकम् । नाडीकलायंगोजिह्वावार्त्ताकंतिलपर्णिका। कुलकंकर्कशंनिम्बंशाकंपर्पटकञ्चयत्॥ ९२ ॥

वृषपुष्प (काकड़ासिंगी के फूल) शार्ङ्गेष्ठा केवूक करेला नारीका शाक मटरका शाक गोभी बैंगन तिलपर्णिका तेंदुआ कर्कश नींब पित्तपापड़ा॥ ९२ ॥

कफपित्तहरंतिक्तंशीतंकटुविपच्यते। सर्वाणिसूप्यशाकानिफञ्जीचिल्लीकतुम्बुकः॥ ९३ ॥

यह सब शाक कफपित्तनाशक तिक्त शीतल तथा पाक में कटु होते हैं और संपूर्ण दालवाले अन्नों के शाक भंगरा चिल्लीक तुम्बुक॥ ९३ ॥

आलुकानिचसर्वाणिसपत्राणिकटिञ्जरः। शणशाल्मलिपुष्पाणिकर्वुदारःसुवर्चला॥ ९४ ॥

संपूर्ण आलू आलुओं के पत्ते कटिंजर सन सेमरके फूल कर्वुदार (रक्त कचनार) सुवर्चला॥ ९४ ॥

निष्पावःकोविदारश्चपत्तूरश्चाखुपर्णिका। कुमारजीवोलट्वाकःपलङ्क्यामारिषस्तथा॥ ९५ ॥

निष्पाव कोविदार (कचनार) पत्तुर मूसाकरणी वरना लट्वाक (करंजभेद) पालक मरसा॥ ९५ ॥

कलम्बोनालिकास्मर्य्युःकुसुम्भवृकधूमकौ। लक्ष्मणश्चप्रपुन्नाडोनलिनीकाकुवेरकः॥ ९६ ॥

कलंबी नारीका शाक कुसुंभ वृकधूमक लक्ष्मणा चकवड़ नलिनीका कुवेरक॥९६॥

लोणिकायवशाकश्चकूष्माण्डकमवल्गुजः। यातुकःशालकल्याणीत्रिपर्णीपीलुपर्णिका॥ ९७ ॥

लौनियां यवशाक कूष्माण्ड अवल्गुज यातुक शालकल्याणी त्रिपर्णी तथा पीलुपर्णी (चिनार)॥ ९७ ॥

शाकंगुरुचरूक्षञ्चप्रायोविष्टभ्यजीर्य्यति। मधुरंशीतवीर्य्यञ्चपुरीषस्यचभेदनम्॥ ९८ ॥

यह सब शाक भारी रूखे मधुर वीर्य्य में शीत मलभेदक और प्रायः विष्टंभ करके पचनेवाले होते हैं॥ ९८ ॥

स्विन्नंनिष्पीडितरसं स्नेहाढ्यंतत्प्रशस्यते। शणस्यकोविदारस्यकर्बुदारस्यशाल्मलेः॥ ९९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन शाकों को उबालकर निचोड़ के तैलादिमें भूनके खाना श्रेष्ठहै सन कचनार रक्त कचनार तथा शाल्मली॥ ९९॥

पुष्पंग्राहिप्रशस्तञ्चरक्तपित्तेविशेषतः। न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षपद्मादिपल्लवाः॥ १००॥

इन के पुष्प ग्राही और रक्तपित्तमें विशेष हितकारी होते हैं बर्गद गूलर पीपल पकरिया तथा कमल आदिके पत्ते॥ १००॥

कषायाःस्तम्भनाः शीताहिताःपित्तातिसारिणाम्। वायुंवत्सादनीहन्यात्कफंगण्डीरचित्रकौ १०१॥

कषैले स्तंभन शीतल तथा पित्तातीसार वालोंको हित होते हैं और वत्सादनी वातनाशक व गण्डीर और चित्रक कफनाशक होते हैं॥ १०१॥

श्रेयसीबिल्वपर्णीचबिल्वपत्रन्तुवातनुत्। भाण्डीशतावरीशाकंबलाजीवन्तिजञ्चयत्॥ १०२॥

श्रेष्ठ बिल्वपर्णी और बिल्वपत्र वातरोग को नाशकरती है भाण्डी शतावरिशाक बला जीवन्ती॥ १०२॥

पर्वण्याःपर्वपुष्प्याश्चवातपित्तहरंस्मृतम्। लघुभिन्नशकृत्तिक्तंलाङ्गुलक्युरुवुकयोः॥ १०३॥

पर्वणी पर्वपुष्पी इनकाशाक वात पित्तनाशक होता है और लांगुलकी व उरुवुकका शाक हलका तिक्त तथा मलभेदक होता है॥ १०३॥

तिलवेतसशाकञ्चशाकंपञ्चांगुलस्यवा। वातलंकटुतिक्ताम्लमधोमार्गप्रवर्त्तकम्॥ १०४॥

तिलवेतस व पंचांगुलकाशाक बादी कटु तिक्त तथा अम्ल होता है और अधोमार्ग का प्रवर्त्तक है॥ १०४॥

रूक्षाम्लमुष्णंकौसुम्भंकफघ्नंपित्तवर्द्धनम्। त्रपुसैरुवारुकंस्वादुगुरुविष्टम्भिशीतलम्॥ १०५॥

कुसुमका शाक रूक्ष अम्ल उष्णहै कफको नाश करताहै पित्त को बढ़ाता है खीरा तथा ककरी मधुर भारी विष्टंभी शीतल॥ १०५॥

मुखप्रियञ्चरूक्षञ्चमूत्रलंत्रपुसंत्वति। एर्वारुकञ्चसंपक्वंदाहतृष्णाश्रमार्तिनुत्॥ १०६॥

मुखप्रिय तथा रूखे होते हैं खीरा अधिक मूत्रकारी होतेहैं पक्की ककड़ी दाह तृषा तथा श्रमको नाश करती है॥ १०६॥

वर्चोभेदीन्यलाबूनिरूक्षशीतगुरूणिच। चिर्भिटैर्वारुकेतद्वद्वर्चोभेदहितेतुते॥ १०७॥

लौकी मलभेदक रूखी शीतल तथा भारी होती है चिर्भिटी (गोरखककड़ी) तथा एर्वारुक इन दोनों में भी लौकीकेही समान गुण होते हैं परन्तु यह मलभेदमें हित होते हैं॥ १०७॥

कूष्माण्डमुक्तंसक्षारंमधुराम्लंतथालघु। सृष्टमूत्रपुरीषञ्चसर्वदोषनिवर्हणम्॥ १०८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कूष्माण्ड क्षारसहित मधुर खट्टा हलका मल मूत्रका निकालने वाला और सम्पूर्ण दोषोंका नाशक होताहै ॥ १०८ ॥

केलूटञ्चकदम्बञ्चनदीमाषकमैन्दुकम्। विषदंगुरुशीतंचसमभिष्यन्दिचोच्यते ॥ १०९ ॥

केलूट कदम्ब नदीमाषक तथा ऐंदुक यह विषद भारी शीतल तथा अभिष्यन्दी होते हैं ॥ १०९ ॥

उत्पलानिकषायाणिपित्तरक्तहराणिच। तथातालप्रलम्बञ्चउरःक्षतरुजापहम्। खर्जूरंतालशस्यञ्चरक्तपित्तक्षयापहम् ॥ ११० ॥

उत्पल कषैले तथा रक्तपित्तनाशक होते हैं ताड़की जटा उरक्षत रोगकी पीड़ा को नष्ट करती है खजूर तथा तालशस्य यह दोनों रक्तपित्त तथा क्षय को नष्ट करते हैं ॥ ११० ॥

भरूटंविसशालूकक्रौञ्चादनकशेरुकम्। शृङ्गाटकंकलोड्यञ्चगुरुविष्टम्भिशीतलम् ॥ १११ ॥

भरूट कमल की जड़ कमल की डण्डी क्रौंचादन कसेरू सिंहाड़ा तथा कलोड्य यह भारी विष्टम्भी तथा शीतल होते हैं ॥ १११ ॥

कुमुदोत्पलनालास्तुसपुष्पाःसफलाःस्मृताः। शीताःस्वादुकषायास्तुकफमारुतकोपनाः ॥ ११२ ॥

कुमुद तथा उत्पलके पुष्प नाल तथा फल शीतल मधुर कषैले और कफ तथा वातको कुपित करनेवाले होते हैं ॥ ११२ ॥

कषायमीषद्विष्टम्भिरक्तपित्तहरंस्मृतम्। पौष्करन्तुभवेद्वीजंमधुरंरसपाकयोः ॥ ११३ ॥

कमल के बीज कषैले कुछ विष्टंभी रक्तपित्तनाशक और रस तथा पाक में मधुर होते हैं ॥ ११३ ॥

बल्यःशीतोगुरुःस्निग्धस्तर्पणोबृंहणात्मकः। वातपित्तहरःस्वादुर्वृष्योमुञ्जातकःस्मृतः ॥ ११४ ॥

मुंजातक बलकारी शीतल भारी स्निग्ध तृप्तिकारी बृंहण वातपित्तनाशक मधुर तथा वीर्य्यवर्द्धक होताहै ॥ ११४ ॥

जीवनोबृंहणोवृष्यःकण्ठ्यःशस्तोरसायने। विदारीकन्दोबल्यश्चमूत्रलःस्वादुशीतलः ॥ ११५ ॥

बिलारीकन्द जीवन बृंहण वीर्य्यवर्द्धक कण्ठको हित रसायन में श्रेष्ठ बलकारी मूत्रकारी मधुर तथा शीतल होताहै ॥ ११५ ॥

अम्लीकायाःस्मृतःकन्दोग्रहण्यर्शोहितोलघुः। नात्युष्णःकफवातघ्नोग्राहीशस्तोमदात्यये ॥ ११६ ॥

इमली की जड़ ग्रहणी तथा बवासीर में हित हलकी बहुत उष्णतारहित कफ वातनाशक ग्राही तथा मदात्यय में हित होती है ॥ ११६ ॥

त्रिदोषंबद्धविण्मूत्रंसार्षपंशाकमुच्यते। तद्वत्पिण्डालुकंविद्यात्कन्दत्वाच्चमुखप्रियम् ॥ ११७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरसों का शाक त्रिदोषकारी तथा मल मूत्र का रोकने वाला होताहै पिंडालू में भी इसी प्रकारके गुण होते हैं परन्तु यह कन्दहोने के कारण अधिक स्वादुयुक्त होताहै ॥ ११७॥

सर्पच्छत्रकवर्ज्यास्तु बह्वयोन्यच्छत्रजातयः। शीताःपीनसकर्य्यश्च मधुरागुर्व्यएवच । चतुर्थःशाकवर्गोऽयंपत्रकन्दफलाश्रयः ११८॥

इति शाकवर्गः।

सर्पछत्रक को छोड़कर और सब छत्रक शाक शीतल पीनस रोगकारी मधुर तथा भारी होते हैं पत्र कन्द तथा फलविषयक यह चौथा शाकवर्ग समाप्तहुआ ॥ ११८॥

इति शाकवर्गः॥

अथ फलवर्गः।

तृष्णादाहज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान् । वातपित्तमुदावर्तंस्वरभेदंमदात्ययम्॥ ११९ ॥ तिक्तास्यतामास्यशोषं कासञ्चाशुव्यपोहति । मृद्वीकाबृंहणीवृष्या मधुरस्निग्धशीतला ॥ १२०॥

मुनक्का तृषा दाह ज्वर श्वास रक्तपित्त क्षत क्षय वात पित्त उदावर्त्त स्वरभेद मदात्यय मुखका तिक्त होना मुखका सूखना तथा खांसी इन सब रोगों को शीघ्रही नष्ट करताहै और बृंहण वीर्य्यवर्द्धक मधुर स्निग्ध तथा शीतल होताहै ॥ ११९ । १२० ॥

मधुरंबृंहणंवृष्यंखर्जूरंगुरुशीतलम् ।

क्षयेऽभिघातेदाहेचवातपित्तेचतद्धितम् ॥ १२१ ॥

खजूरका फल मधुर वीर्य्यवर्द्धक बृंहण भारी तथा शीतल होता है और क्षय चोट दाह तथा वातपित्त में हितकारी होता है ॥ १२१ ॥

तर्पणंबृंहणंफल्गुगुरुविष्टम्भिशीतलम् । परूषकंमधूकञ्चवातपित्तेच शस्यते ॥ १२२ ॥

फल्गु तृप्तिकारी बृंहण भारी विष्टंभी तथा शीतल होताहै फालसा तथा महुएका फल वातपित्त में हित होता है ॥ १२२ ॥

मधुरंबृंहणंबल्यमाम्रातंतर्पणंगुरु। सस्नेहंश्लेष्मलंशीतंवृष्यंविष्टभ्य जीर्य्यति ॥ १२३ ॥

अमरा मधुरा बृंहण बलवर्द्धक तृप्तिकारी भारी स्निग्ध कफकारी शीतल वीर्य्यवर्द्धक तथा विष्टंभ करके पचनेवाला होताहै१२३॥

तालशस्यानिसिद्धानि नारिकेलफलानिच । बृंहणस्निग्धशीतानि बल्यानिमधुराणिच ॥ १२४॥

ताड़काफल तथा नारियल यह दोनों बृंहण स्निग्ध शीतल बलकारी तथा मधुर होते हैं ॥ १२४ ॥

मधुराम्लकषायञ्चविष्टम्भिगुरुशीतलम् । पित्तश्लेष्महरंभव्यंग्राहिवक्त्रविशोधनम् ॥ १२५ ॥

भव्य मधुर अम्ल कषाय विष्टंभी भारी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतल कफपित्तनाशक ग्राही तथा मुखशोधक होताहै ॥ १२५ ॥

अम्लंपरूषकंद्राक्षाबदर्य्याण्यारुकाणिच। पित्तश्लेष्मप्रकोपीणिकर्कन्धुलकुचान्यपि ॥ १२६ ॥

खट्टा फालसा दाख बेर आडू कर्कन्धू (बेरविशेष) तथा बड़हल यह सब कफ तथा पित्तको कुपित करते हैं ॥ १२६ ॥

नात्युष्णंगुरुसम्पक्कंस्वादुप्रायंमुखप्रियम्। बृंहणंजीर्य्यतिक्षिप्रंनातिदोषलमारुकम् ॥ १२७ ॥

पक्का आडू बहुत उष्णतारहित भारी मधुरप्राय मुखप्रिय बृंहण शीघ्रही पचनेवाला और अधिक दोष करनेवाला नहीं होता है ॥ १२७ ॥

द्विविधंशीतमुष्णञ्चमधुरञ्चाम्लमेवच। गुरुपारावतंज्ञेयमरुच्यत्यग्निनाशनम् ॥ १२८ ॥

पारावत फल दो प्रकारका होता है एक मधुर और एक खट्टा जो मधुर होताहै वह शीतल होताहै और जो खट्टा होता है वह उष्ण होताहै दोनों प्रकारके पारावत भारी और अरुचि तथा अत्यग्निनाशक होते हैं ॥ १२८ ॥

भव्यादल्पान्तरगुणं काश्मर्य्यफलमुच्यते। तथैवाल्पान्तरगुणन्तूदम्लम्परूषकम् ॥ १२९ ॥

खम्भारी के फलमें भव्यकी अपेक्षा कुछ न्यून गुण होते हैं और सहतूतमें फालसे की अपेक्षा कुछ न्यून गुण होते हैं ॥ १२९ ॥

कषायमधुरंटङ्कं वातलंगुरुशीतलम्। कपित्थमविपक्कंकण्ठघ्नमामंसंग्राहिवातलम् ॥ १३० ॥

टंकफल कषाय मधुर बादी भारी तथा शीतल होताहै कच्चा कैथा स्वर तथा विषनाशक ग्राही तथा बादी होताहै ॥ १३० ॥

मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम्। परिपक्कंसदोषघ्नंविषघ्नंग्राहिगुर्वपि ॥ १३१ ॥

और खटमिट्ठाहोने से तथा सुगन्धित होने से रुचिकारी होताहै पक्का कैथा त्रिदोष तथा विषनाशक ग्राही और भारी होताहै ॥ १३१ ॥

दुर्जरम्बिल्वसिद्धन्तु दोषलंपूतिमारुतम्। स्निग्धोष्णतीक्ष्णंतद्बालंदीपनंकफवातजित् ॥ १३२ ॥

पक्काबेल वहुत क्लेशसे पचताहै त्रिदोषकारी होताहै और दुर्गन्धित वायुको उत्पन्न करताहै कच्चाबेल स्निग्ध उष्ण तीक्ष्ण दीपन तथा कफवातनाशक होताहै ॥ १३२ ॥

वातपित्तकरंबालमापूर्णंपित्तवर्द्धनम्। पक्कमाम्रंजयेद्वायुंमांसशुक्रबलप्रदम् ॥ १३३ ॥

छोटी अंबिया रक्तपित्तकारी होतीहै बड़ी अंबिया पित्तवर्द्धक होती है पक्का आम वायु को नष्ट करताहै और मांस वीर्य्य तथा बल को बढ़ाता है ॥ १३३ ॥

कषायमधुरप्रायं गुरुविष्टम्भिशीत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लम् । जाम्बवङ्कफपित्तघ्नंग्राहिवा तकरम्परम् ॥ १३४ ॥

जामन कषैली मधुर भारी विष्टंभी शीतल कफपित्तनाशक ग्राही तथा अत्यन्त बादी होती है ॥ १३४ ॥

मधुरंवदरंस्निग्धंभेदनंवातपित्तजित् । तच्छुष्कंकफवातघ्नं पित्तेनच विरुध्यते । कषायमधुरंशीतंग्राहि सिञ्चितिकाफलम् ॥ १३५ ॥

बेर मधुर स्निग्ध भेदन तथा वातपित्तनाशक होता है सूखा बेर कफवातनाशक और पित्त का विरोधी होताहै सिंचितिका फल कषैला मधुर ग्राही तथा शीतल होता है ॥ १३५ ॥

गाङ्गेरुकीकरीरञ्च बिम्बीतोदनधन्वनम् । मधुरंसकषायञ्चशीतंपित्तकफापहम् ॥ १३६ ॥

ककही करीलका फल कुंदरू तोदन तथा धन्वन यह मधुर कषैले शीतल तथा कफपित्तनाशक होते हैं ॥ १३६ ॥

क्षीरिकंपनसंमोचं राजादनफलानिच । स्वादूनिसकषायाणिस्निग्धशीतगुरूणिच ॥ १३७ ॥

पक्का कटहल केला तथा खिन्नी यह मधुर कषैले स्निग्ध शीतल तथा भारी होते हैं ॥ १३७ ॥

कषायविषदत्वाच्चसौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् । अवदंशक्षमंरूक्षंवातलंलवलीफलम् ॥ १३८ ॥

और कषाय विषद तथा सुगन्धित होनेके कारण रुचिकारी होते हैं हरफारेवड़ी मद रोगनाशक रूखी तथा बादी होती है ॥ १३८ ॥

नीपंसभार्गकंपीलुतृणशून्यंविकङ्कतम् । प्राचीनामलकञ्चैव दोषघ्नंगरहारिच ॥ १३९ ॥

कदंब भंगराका फल पीलू बेलेन्धू कंटायका फल और प्राचीन आमला तथा सब त्रिदोष तथा विषनाशक हैं ॥

इंगुदंतिक्तमधुरं स्निग्धोष्णं कफवातजित् । तिन्दुकंकफपित्तघ्नं कषायमधुरंलघु ॥ १४० ॥

इंगुदी (गोंदी) का फल तिक्त मधुर स्निग्ध उष्ण तथा कफवातनाशक होता है तेंदुआ कफपित्तनाशक कषैला मधुर तथा हलका होताहै ॥ १४० ॥

विद्यादामलकेसर्वान् रसान्लवणवर्जितान् । स्वेदमेदःकफोत्क्लेदपित्तरोगविनाशनम् ॥ १४१ ॥

आमलेमें लवण के सिवाय और सबरस होते हैं आमला स्वेद मेद कफ क्लेद तथा पित्तज रोगोंको नष्ट करताहै ॥ १४१ ॥

रूक्षंस्वादुकषायाम्लं कफपित्तहरम्परम् । रसासृङ्मांसमेदोजान्दोषान्हन्तिबिभीतकम् ॥ १४२ ॥

बहेड़ा रूखा मधुर कषैला खट्टा तथा अत्यन्त कफपित्तनाशक होता है और रस रुधिर मांस तथा मेदामें हुए रोगों को नष्ट करता है ॥ १४२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अम्लंकषायमधुरंवातघ्नंग्राहिदीपनम् । स्निग्धोष्णंदाडिमंहृद्यंकफपित्ताविरोधिच ॥ १४३ ॥

दाड़िम खट्टा कषैला मधुर वातनाशक ग्राही दीपन स्निग्ध उष्ण हृदय को हित और कफ तथा पित्तको नहीं कुपित करनेवाला होताहै ॥ १४३ ॥

रूक्षाम्लंदाडिमंयत्तुतत्पित्तानिलकोपनम् । मधुरंपित्तनुत्तेषान्ताद्धिदाडिममुत्तमम् ॥ १४४ ॥

खट्टा अनार रूखा होताहै और पित्त तथा वायुको कुपित करता है मधुर अनार पित्तनाशक होता है इनमें से पहला अनार उत्तमहै ॥ १४४ ॥

वृक्षाम्लंग्राहिरूक्षोष्णंवातश्लेष्मणिशस्यते । अम्लिकायाःफलंशुष्कंतस्मादल्पान्तरंगुणैः ॥ १४५ ॥

वृक्षाम्ल (चूक वा बिषांबिल) ग्राही रूखा उष्ण और वात तथा कफमें हित होता है इमलीके सूखे फलमें वृक्षाम्लकी अपेक्षा कुछ न्यूनगुण होते हैं ॥ १४५ ॥

गुणैस्तैरेवसंयुक्तंभेदनन्त्वम्लवेतसम् । शूलेऽरुचौविबन्धेचमन्देऽग्नौ मद्यविक्षये ॥ १४६ ॥ हिक्काकासेचश्वासेचवम्यांवर्चोगदेषुच । वातश्लेष्मसमुत्थेषुसर्वेष्वेतेषुदिश्यते । केशरंमातुलुङ्गस्य लघुशीतमतोऽन्यथा ॥ १४७ ॥

अमलवेदमें भी यही गुण होते हैं परन्तु वह भेदन होताहै बिजौरानींबूकाजीरा शूल अरुचि विबन्ध मन्दाग्नि मद्यविक्षेप हिचकी खांसी श्वास छर्दि मलरोग और सब प्रकार के वातज तथा कफज रोगोंमें हितहै यह हलका तथा शीतल होताहै ॥ १४६ । १४७ ॥

रोचनोदीपनोहृद्यःसुगन्धिस्त्वग्निवर्जितः ॥ कर्चूरःकफवातघ्नःश्वासहिक्कार्शसांहितः ॥ १४८ ॥

छिलाहुआ कचूर का फल रुचिकारी दीपन हृदय को हित सुगन्धित अग्निवर्जित कफवातनाशक और श्वास हिचकी तथा बवासीर में हित होताहै ॥ १४८ ॥

मधुरंकिञ्चिदम्लञ्चहृद्यंभक्तप्ररोचनम् । दुर्जरंवातशमनंनागरङ्गफलंगुरु ॥ १४९ ॥

नारंगी मधुर कुछ खट्टी हृदय को हित भोजनमें रुचिकारी देरमें पचने वाली और वातघ्न तथा भारी होती है ॥ १४९ ॥

वातामाभिषुकाक्षोटमकूलकनिकोचकाः । गुरूष्णस्निग्धमधुराःसोरुमाणाबलप्रदाः ॥ १५० ॥ वातघ्ना बृंहणावृष्याःकफपित्ताभिवर्द्धनाः । पियालमेषांसदृशं विद्यादौष्ण्यंविनागुणैः ॥ १५१ ॥

बदाम अभिषुक अखरोट छोटी दन्ती का फल और पिस्ता यह भारी उष्ण स्निग्ध मधुर बलकारी वातघ्न बृंहण और कफ पित्त तथा वीर्य्यवर्द्धक होते हैं उष्णता के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिवाय चिरोंजी में भी यही गुण होते हैं ॥ १५०।१५१ ॥

श्लेष्मलंमधुरंशीतंश्लेष्मातकफलंगुरु ॥ १५२ ॥

लसौड़े का फल कफकारी मधुर शीतल तथा भारी होताहै ॥ १५२ ॥

श्लेष्मलंगुरुविष्टम्भिचाङ्कोटफलमग्निजित् । गुरूष्णमधुरंरूक्षंकेशघ्नंचशमीफलम् ॥ १५३ ॥

अंकोठ (अंकुहर) फल भारी कफकारी विष्टंभी तथा अग्निनाशक होता है शमीवृक्ष का फल भारी उष्ण मधुर रूखा तथा केशनाशक होताहै ॥ १५३ ॥

विष्टम्भयतिकारञ्जंपित्तश्लेष्माविरोधिच । आम्रातकंदन्तशठमम्लंसकरमर्दकम् ॥ १५४ ॥ रक्तपित्तकरंविद्यादैरावतकमेवच । वातघ्नंदीपनञ्चैववार्ताकंकटुतिक्तकम् ॥ १५५ ॥

करंजुए का फल विष्टंभी तथा पित्त कफ का अविरोधी होता है खट्टा आमरा जंभीरी नींबू करोंदा और नारंगी यह सब रक्तपित्तकारी हैं वार्ताक वातघ्न दीपन कटु तथा तिक्त होताहै ॥ १५४।१५५ ॥

वातलंकफपित्तघ्नंविद्यात्पर्पटकीफलम् । पित्तश्लेष्मघ्नमम्लञ्चवातिकञ्चाक्षिकीफलम् ॥ १५६ ॥ मधुराण्यविपाकीनिवातपित्तहराणिच ॥ १५७ ॥

परपटकी फल बादी तथा कफ पित्तनाशक होता है अक्षिकीफल पित्तकफनाशक खट्टा बादी और विपाक में मधुर तथा वातपित्तनाशक होताहै ॥ १५६।१५७ ॥

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधानांफलानिच । कषायमधुराम्लानिवातलानिगुरूणिच ॥ १५८ ॥

पीपल गूलर पकरिया तथा वर्गद इन के फल कषैले खट्टे मधुर बादी तथा भारी होते हैं ॥ १५८ ॥

भल्लातकास्थ्यग्निसमंत्वङ्मांसंस्वादुशीतलम् । पञ्चमःफलवर्गोऽयमुक्तःप्रायोपयोगिकः ॥ १५९ ॥

इति फलवर्गः ।

भिलावेंका बीज अग्निके समान उष्ण होताहै और उसकी छाल तथा गूदा मधुर तथा शीतल होताहै प्रायः व्यवहारके योग्य फलों का यह पांचवां वर्ग कहागया ॥ १५९ ॥

इति फलवर्गः ।

अथ हरितवर्गः ।

रोचनंदीपनंवृष्यमार्द्रकंविश्वभेषजम् । वातश्लेष्मविबन्धेषुरसस्तस्योपदिश्यते ॥ १६० ॥

अदरक रुचिकारी दीपन तथा पुंस्त्ववर्द्धक होतीहै वातज तथा कफज विबन्धों में अदरक का रस देना चाहिये ॥ १६० ॥

रोचनोदीपनस्तीक्ष्णः सुगन्धिर्मुखशोधनः । जम्बीरःकफवातघ्नःक्रिमिघ्नोभक्तपाचनः ॥ १६१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जंभीरी नींबू रुचिकारी दीपन तीक्ष्ण सुगन्धित मुख शोधन कफ वात तथा क्रिमिनाशक और भोजन का पचानेवाला होता है ॥ १६१ ॥

बालंदोषहरंवृद्धं त्रिदोषंमारुतापहम् । स्निग्धासिद्धंविशुष्कन्तुमूलकङ्कफवातजित् ॥ १६२ ॥

छोटी मूली त्रिदोषनाशक बड़ी मूली त्रिदोषकारी तैलादि में भुनीहुई मूली वातनाशक और सूखी मूली वात कफघ्न होती है ॥ १६२ ॥

हिक्काकासविषश्वासपार्श्वशूलविनाशनः । पित्तकृत्कफवातघ्नःसुरसःपूतिगन्धनुत् ॥ १६३ ॥

सुरस (तुलसीविशेष) हिचकी खांसी विषश्वास वायु कफ तथा पसलियों की पीड़ाको नष्ट करता है पित्तको बढ़ाता है और दुर्गन्धि को नष्ट करताहै ॥ १६३ ॥

यवानीचार्जकश्चैवशिग्रुशालेयमृष्टकम् । हृद्यान्यास्वादनीयानिपित्तमुत्क्लेशयन्तिच ॥ १६४ ॥

अजवाइन श्वेतबवई सहजन सोया तथा मृष्टक यह हृदय को हित रुचिकारक तथा पित्तको उघारनेवाले होते हैं ॥ १६४ ॥

गण्डीरोजलपिप्पल्यस्तुम्बुरुःशृङ्गवेरिका । तीक्ष्णोष्णकटुरूक्षाणिकफवातहराणिच ॥ १६५ ॥

गंडीर जलपीपल तुम्बुरु (धनियांविशेष) तथा सोंठ यह सब तीक्ष्ण उष्ण कटु रूक्ष तथा कफ वातनाशक होते हैं ॥ १६५ ॥

पुंस्त्वघ्नःकटुरूक्षोष्णोभूतृणोवक्त्रशोधनः । खराश्वाकफवातघ्नीवस्तिरोगरुजापहा ॥ १६६ ॥

भूतृण (रोहिष) पुंस्त्वनाशक कटु रूखा उष्ण तथा मुखशोधक होताहै अजमोद कफघ्न वातघ्न तथा वस्तिरोगनाशक होती है ॥ १६६ ॥

धान्यकंचाजगन्धाच सुमुखाश्चेतिरोचनाः । सुगन्धानातिकटुकादोषानुत्क्लेशयन्तितु ॥ १६७ ॥

धनियां बवई तथा सुमुख यह रुचिकारक सुगन्धित नहीं बहुत कटु और दोषों को उभाड़नेवाले होते हैं ॥ १६७ ॥

ग्राहीगृञ्जनकस्तीक्ष्णोवातश्लेष्माशसांहितः । स्वेदनेऽभ्यवहार्येचयोजयेत्तमपित्तिनाम् ॥ १६८ ॥

गाजर ग्राही तीक्ष्ण और वातज वा कफज बवासीर में हित होती है यह पित्तरहित पुरुषों को स्वेदन तथा भोजनमें व्यवहार करनी चाहिये ॥ १६८ ॥

श्लेष्मलोमारुतघ्नश्च पलाण्डुर्नचपित्तनुत् । आहारयोगीबल्यश्चगुरुर्वृष्योऽथरोचनः ॥ १६९ ॥

प्याज कफकारी वातघ्न पित्तको नहीं नाश करनेवाली भोजन का उपयोगी बलकारी भारी पुंस्त्ववर्द्धक तथा रुचिकारी होती है ॥ १६९ ॥

क्रिमिकुष्ठकिलासघ्नोवातघ्नोगु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ल्मनाशनः। स्निग्धश्चोष्णश्चवृ
ष्यश्चलशुनःकटुकोगुरुः॥१७०॥

लहसन क्रिमि कुष्ठ तथा किलासनाशक वातघ्न गुल्मनाशक स्निग्ध उष्ण पुंस्त्वव- र्द्धक कटु तथा भारी होताहै ॥ १७० ॥

शुष्काणिकफवातघ्नान्येतान्येषांफ
लानितु। हरितानामयञ्चैषांषष्ठोव
र्गःसमाप्यते॥ १७१ ॥

इति हरितवर्गः।

सूखी प्याज तथा लहसन और इनके फल कफघ्न तथा वातघ्न होते हैं इन् हरितों के इस छठेवर्गको समाप्त करते हैं॥ १७१ ॥

इति हरितवर्गः॥

अथ मद्यवर्गः।

प्रकृत्यामद्यमम्लोष्णमम्लंचोक्तंवि
पाकतः। सर्वसामान्यतस्तस्यविशे
षउपदेक्ष्यते॥ १७२ ॥

मद्य स्वभाव से अम्ल उष्ण तथा पाकमें अम्ल होती है यह सब मद्यों के सामान्य गुण हैं उसकी विशेषता आगे कही जाती है॥ १७२ ॥

कृशानांसक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोवि
कारिणाम्। सुराप्रशस्तावातघ्नीस्त
न्यरक्तक्षयेषुच॥ १७३ ॥

कृश मूत्रकृच्छ्रवाले ग्रहणी तथा ववासीर रोगवाले क्षीणरक्तवाले और क्षीणदुग्ध वाली स्त्री इन सवको सुरा (मद्यविशेष) हितहै यह वातघ्न होती है॥ १७३ ॥

हिक्काश्वासप्रतिश्यायकासवर्चोग्र
हारुचौ। वम्यानाहविबन्धेषुवात
घ्नीमदिराहिता॥ १७४ ॥

हिचकी श्वास प्रतिश्याय खांसी मलका रुकना अरुचि छर्दि आनाह तथा विबन्ध इन सब रोगों में मदिरा (मद्यविशेष) हितहै क्योंकि यह वातनाशक होतीहै॥ १७४ ॥

शूलप्रवाहिकाटोपकफवातार्शसां
हितः। जगलोग्राहिरूक्षोष्णःशो
फघ्नोभुक्तपाचनः॥ १७५ ॥

शूल प्रवाहिका (अजीर्णविशेष) आटोप तथा कफज वातज ववासीर इन में जगल (मद्यविशेष) हित है यह ग्राही रूखी उष्ण शोथनाशक तथा भोजन को पचाने वाली होतीहै॥ १७५ ॥

शोफार्शोग्रहणीदोषपाण्डुरोगारु
चिज्वरान्। हन्त्यरिष्टःकफकृतान्
रोगान्रोचनदीपनः॥ १७६ ॥

शोथ बवासीर ग्रहणीदोष पांडु अरुचि ज्वर तथा कफज रोगों को अरिष्ट (मद्यविशेष) नष्ट करता है यह रुचिकारी तथा दीपन होताहै॥ १७६ ॥

मुखप्रियःसुखमदःसुगन्धिर्वस्तिरो
गनुत्। जरणीयःपरिणतोहृद्योव
र्ण्यश्चशार्करः॥ १७७ ॥

शर्कराकी मद्य मुखप्रिय स्वल्प मदकारी सुगन्धित वस्तिरोगनाशक पाचन पुरानी होजाने पर हृदय को हित और वर्णको हितकारी होती है॥ १७७ ॥

रोचनोदीपनोहृद्यःशोषशोफार्शसां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हितः । स्नेहश्लेष्मविकारघ्नोव र्ण्यः पक्करसोमतः ॥ १७८ ॥

ईखके पक्के रस से बनी हुई मदिरा रुचिकारी दीपन हृदय को हित शोष शोथ तथा बवासीर में हितकारी स्नेह तथा कफज विकारनाशक और वर्ण को उत्तम करने वाली होती है ॥ १७८ ॥

जरणीयोविबन्धघ्नःस्वरवर्णविशो धनः । लेखनःशीतरसिकोहितः शोफोदरार्शसाम् ॥ १७९ ॥

ईखके शीतलरससे बनीहुई मदिरा पाचन विबन्धनाशक स्वर तथा वर्ण को शुद्धकरने वाली लेखन और शोथ उदर तथा बवासीर में हितकारी होतीहै ॥ १७९ ॥

सृष्टोभिन्नशकृद्वातोगौडस्तर्पणदी पनः । पाण्डुरोगव्रणहितादीपनी चाक्षिकीमता ॥ १८० ॥

गुड़की मदिरा मधुर मलभेदक वायुभेदक तृप्तिकारक तथा दीपन होती है बहेड़े की मदिरा पांडुरोग तथा व्रणमें हित होती है और दीपन होतीहै ॥ १८० ॥

सुरासवस्तीव्रमदोवातघ्नोवदनप्रि यः । छेदीमध्वासवस्तीक्ष्णोमैरेयो मधुरोगुरुः ॥ १८१ ॥

सुरासव (मद्यविशेष) अत्यन्त मदकारी वातघ्न तथा मुखप्रिय होती है मध्वासव (महुए की मदिरा) तीक्ष्ण तथा भेदक होती है और मैरेय (मद्यविशेष) मधुर तथा भारी होती है ॥ १८१ ॥

धातक्यभिषुतोहृद्योरूक्षोरोचनदी पनः। माध्वीकवन्नचात्युष्णोमृद्वी केक्षुरसासवः ॥ १८२ ॥

धायके फूलों की मदिरा हृदय को हित रूखी रुचिकारी तथा दीपन होती है दाख तथा ईखके रसकी मदिरा सहत के समान बहुत उष्ण नहीं होती है ॥ १८२ ॥

रोचनंदीपनंहृद्यंबल्यंपित्ताविरोधि च । विबन्धघ्नंकफघ्नञ्चमधुलघ्व ल्पमारुतम् ॥ १८३ ॥

सहत रुचिकारी दीपन हृदय को हित बलकारी पित्त में नहीं विरोधी विबन्धनाशक कफघ्न हलका तथा कुछ बादी होता है ॥ १८३ ॥

सुरासमण्डारूक्षोष्णायवानांवातपि त्तला । गुर्वीजीर्य्यतिविष्टभ्यश्ले ष्मलस्तुमधूलकः ॥ १८४ ॥

मण्डसहित मदिरा रूखी तथा उष्ण होती है जौकी मदिरा बादी पित्तवर्धक भारी तथा विष्टंभ करके पचनेवाली होती है और जल में हुए महुएकी मदिरा कफवर्धक होतीहै ॥ १८४ ॥

दीपनंजरणीयञ्चहृत्पाण्डुक्रिमिरो गनुत्। ग्रहण्यर्शोहितंभेदिसौवी रकतुषोदकम् ॥ १८५ ॥

सौवीरक तथा तुषोदक (कांजीविशेष) दीपन पाचन हृदयरोग पांडुरोग तथा क्रिमिनाशक हैं और ग्रहणीदोष तथा बवासीर में हित और भेदक होते हैं ॥ १८५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाहज्वरापहंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम्। विबन्धघ्नमविस्रंसिदीपनञ्चाम्लकाञ्चिकम् ॥ १८६ ॥

अम्ल काँजी स्पर्शसे दाह तथा ज्वरनाशक होती है और पीने से वात कफ तथा विबन्धनाशक होती है विस्रंसी नहीं होती और दीपन होती है ॥ १८६ ॥

प्रायशोऽभिनवंमद्यंगुरुदोषसमीरणम्। स्रोतसांशोधनंजीर्णंदीपनंलघुरोचनम् ॥ १८७ ॥

प्रायः नवीन मद्य भारी तथा दोषोंकी बढ़ानेवाली होती है पुरानी मद्य स्रोतों को शुद्ध करने वाली दीपन हलकी रुचिकारी ॥ १८७ ॥

हर्षणंप्रीणनंबल्यंभयशोकश्रमापहम्। प्रागल्भ्यवीर्य्यप्रतिभातुष्टिपुष्टिबलप्रदम्। सात्त्विकैर्विधिवद्युक्त्यापीतंस्यादमृतंयथा १८८ ॥

हर्षकारी प्रीतिकारी बलकारी भय शोक तथा श्रमकी नाश करनेवाली प्रगल्भता वीर्य्य प्रतिभा तुष्टता तथा पुष्टता करनेवाली होती है यह सात्त्विक लोगों से विधिपूर्वक युक्तिसे पीगई अमृत के समान गुणकारी होती है ॥ १८८ ॥

वर्गोऽयंसप्तमोमद्यमधिकृत्यप्रकीर्तितः ॥ १८९ ॥

इतिमद्यवर्गः।

यह मद्य के विषय में सातवां वर्ग कहा गया ॥ १८९ ॥

इति मद्यवर्गः॥

अथ जलवर्गः॥

जलमेकविधंसर्वंपतत्यैन्द्रंनभस्तलात् ॥ तत्पतत्पतितञ्चैवदेशकालावपेक्षते ॥ १९० ॥

आकाश से एकही प्रकारका सम्पूर्ण जल गिरता है गिरता हुआ तथा गिरपड़ा हुआ जल देशकालकी अपेक्षा करताहै ॥ १९० ॥

खात्पतत्सोमवाय्वर्कैः स्पृष्टंकालानुवर्त्तिभिः। शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्यथासन्नंमहीगुणैः ॥ १९१ ॥

आकाश से गिरता हुआ जल समयके अनुसार चन्द्रमा वायु तथा सूर्य्यके स्पर्शसे और पृथ्वी में आकर पृथ्वीके शीत उष्ण स्निग्ध तथा रूक्षआदि गुणोंसे युक्त होताहै ॥ १९१ ॥

शीतंशुचिशिवंमृष्टंविमलंलघुषड्गुणम्। प्रकृत्यादिव्यमुदकंभ्रष्टंपात्रमपेक्षते ॥ १९२ ॥

आकाश का जल स्वभाव से शीत पवित्र हितकारी मधुर निर्म्मल तथा लघु इन छः गुणों से युक्त होताहै पृथ्वी में आकर उसमें पात्रके अनुसार गुण होजाते हैं ॥ १९२ ॥

श्वेतेकषायंभवतिपाण्डुरेचैवतिक्तकम्। कपिलेकटुकंतोयमूषरेलवणान्वितम्। कटुपर्वतविस्तारेमधुरंकृष्णमृत्तिके ॥ १९३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वेतभूमि में कसैला जल होताहै और पाण्डुवर्ण में तिक्त कपिला में कडुवा ऊसरमें नमकीन पहाड़ से गिरनेमें भी कटु तथा काली मिट्टीमें मीठा जल होताहै ॥ १९३ ॥

एतत्षड्गुणमाख्यातंमहीस्थस्यजलस्यहि । तथाऽव्यक्तरसंविद्यादैन्द्रंकारंहिमञ्चतत् ॥ १९४॥

पृथ्वीमें स्थित जलों के यह छः गुण कहे गये तैसेही आकाशका जल निर्मल रसवाला तथा शीतल जानना चाहिये ॥ १९४ ॥

यदन्तरीक्षात्पततीन्द्रसृष्टञ्चोक्तैश्च पात्रेपरिगृह्यतेऽम्भः । तदैन्द्रमित्येववदन्तिधीरानरेन्द्रपेयंसलिलंप्रधानम् ॥ १९५ ॥

इन्द्रका बनायाहुआ जल जो कि आकाश से गिरताहै वह पात्रमें ग्रहण करलिया जाय तो उसको धैर्यवान् मनुष्य ऐंद्र कहते हैं यह उत्तम जल राजाओं के पीने योग्य होता है ॥ १९५ ॥

ऋतावृताविहाख्याताःसर्वएवाम्भसोगुणाः । ईषत्कषायमधुरंसुसूक्ष्मंविषदंलघु ॥ १९६ ॥ अरूक्षमनभिष्यन्दिसर्वंपानीयमुत्तमम् । गुर्वभिष्यन्दिपानीयं वार्षिकंमधुरंलघु ॥ १९७॥

ऋतु अऋतुमें सम्पूर्ण जलके गुण यहकहे हैं कि सम्पूर्ण पीने योग्य उत्तम जल कुछ कसैला मधुर सूक्ष्म विषद हलका अरूक्षअनभिष्यन्दी होताहै और वर्षाकाल का जल भारी अभिष्यन्दी तथा मधुर होताहै १९६।१९७

तनुलघ्वनभिष्यन्दिप्रायःशरदिवर्षति । तत्तुयेसुकुमाराःस्युःस्निग्धभूयिष्ठभोजिनः ॥ १९८ ॥ तेषांभक्ष्येचभोज्येचलेह्येपेयेचशस्यते । हेमन्तेसलिलंस्निग्धंवृष्यंबल्यंहितंगुरु ॥ १९९ ॥

जो जल प्रायः शरद्ऋतु में बरसताहै वह सूक्ष्म हलका अनभिष्यन्दी होता है वह सुकुमार तथा स्निग्ध व अधिक भोजन करनेवाले पुरुषों के भक्ष्य भोज्य लेह्य और पेयमें हितकारी होता है और हेमन्तऋतु का जल स्निग्ध वीर्यका बढ़ानेवाला बलकारी हित तथा भारी होताहै ॥ १९८। १९९ ॥

किञ्चित्ततोलघुतरंशिशिरेकफवातजित् । कषायमधुरंरूक्षंविद्याद्वासन्तिकंजलम् । ग्रैष्मिकंत्वनभिष्यन्दिजलमित्येवनिश्चयम् २०० ॥

शिशिरऋतुका जल हेमन्तऋतुसे कुछ हलका तथा कफ वातका नाश करनेवाला होताहै व वसन्तऋतु का जल कषैला मधुर रूखा होताहै और ग्रीष्मऋतुका जल अनभिष्यन्दी होताहै यह निश्चय है ॥ २०० ॥

विभ्रान्तेष्वृतुकालेषुयत्प्रयच्छन्ति तोयदाः । सलिलंतत्तुदोपाययुज्यतेनात्रसंशयः ॥ २०१ ॥

ऋतु समयमें जो विभ्रान्त से मेघ जल बरसते हैं वह दोषों को करनेवाला होताहै इसमें संशय नहीं है ॥ २०१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजभीराजमात्रैश्चसुकुमारैश्चमा नवैः । संगृहीताःशरद्यापःप्रयोक्त व्याविशेषतः ॥ २०२ ॥

राजा, राजाके तुल्य तथा सुकुमार पुरुषों को शरदृऋतुके संग्रह कियेहुये जलका प्रयोग विशेष करके करना चाहिये ॥ २०२ ॥

नद्यःपाषाणविच्छिन्नविक्षुब्धाविम लोदकाः । हिमवत्प्रभवाःपथ्याः पुण्यादेवर्षिसेविताः ॥ २०३ ॥

हिमालय से उत्पन्नहुई नदियों का जल पाषाणोंमें लग २ कर क्षुभित होताहै इसीसे निर्मल होता है और पथ्य होताहै और अत्यन्त पवित्र होताहै क्योंकि देवर्षि लोग उन नदियों का सेवन करते हैं ॥ २०३ ॥

नद्यःपाषाणसिकतावाहिन्योविम लोदकाः । मलयप्रभवायाश्चजलं तास्वमृतोपमम् ॥ २०४ ॥

मलयाचल से उत्पन्न हुई नदियां जिनमें पाषाण तथा बालू बहती है उनका जल निर्मल तथा अमृतके समान गुणकारी होता है ॥ २०४ ॥

पश्चिमाभिमुखायाश्च पथ्यास्ता निर्मलोदकाः । प्रायोमृदुवहागुर्व्यो याश्चपूर्वसमुद्रगाः ॥ २०५ ॥

जो नदियां पश्चिमकी ओर बहती हैं उन का जल निर्मल तथा पथ्य होताहै और जो नदियां पूर्व के समुद्र में मिलती हैं वह प्रायः धीरे २ बहती हैं उन का जल भारी होता है ॥ २०५ ॥

पारियात्रभवायाश्चविन्ध्यसह्यभ वाश्चयाः । शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ताहेतुःश्लीपदस्यच ॥ २०६ ॥

पारियात्र विन्ध्य तथा सह्य पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियों का जल शिरो रोग हृद्रोग कुष्ठ तथा श्लीपद (फीलपाव) का कारण होता है ॥ २०६ ॥

वसुधाकीटसर्पाखुमलसंदूषितोद काः । वर्षाजलवहानद्यःसर्वदोषस मीरणाः ॥ २०७ ॥

मृत्तिका कीच सर्प तथा मूसोंके मलसे दूषित जल और जिनमें वर्षाका जल बहता है ऐसी नदियोंका जल सम्पूर्ण दोषोंको करता है ॥ २०७ ॥

वापीकूपतडागोत्ससरःप्रस्रवणा दिषु । आनूपशैलधन्वानां गुण दोषैर्विभावयेत् ॥ २०८ ॥

बावली कूप तड़ाग उत्स (जहांपर झरने का पानी आकर ठहरता है) सर तथा झिरना इत्यादि के जल में सजलदेश मरुदेश तथा पर्वतों के अनुसार गुण दोषों का विचार करना चाहिये ॥ २०८ ॥

पिच्छिलंक्रिमिलंक्लिन्नंपर्णशैवाल कर्दमैः । विवर्णंविरसंसान्द्रंदुर्गन्धि नहितंजलम् ॥ २०९ ॥

पत्ते सिवार तथा कीचड़ के संयोगसे सड़ा हुआ जल पिच्छिल क्रिमियुक्त विवर्ण विरस गाढ़ा दुर्गन्धित तथा अहित होताहै ॥ २०९ ॥

विस्रंत्रिदोषंलवणमम्बुयद्वरुणाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यम् । इत्यम्बुवर्गः प्रोक्तोऽयमष्टमः सुविनिश्चितः ॥ २१० ॥

इति अम्बुवर्गः ।

समुद्रका खारी जल दुर्गन्धित तथा त्रिदोषकारी होताहै यह आठवाँ जलवर्ग कहा गया ॥ २१० ॥

इतिजलवर्गः ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

स्वादुशीतंमृदुस्निग्धं बहलंश्लक्ष्ण पिच्छिलम् । गुरुमन्दंप्रसन्नञ्चगव्यं दशगुणम्पयः ॥ २११ ॥

गौका दूध दशगुणों से युक्त होताहै जैसे मधुर शीतल मृदु स्निग्ध बहल श्लक्ष्ण पिच्छिल गुरु मन्द तथा प्रसन्न ॥ २११ ॥

तदेवंगुणमेवौजः सामान्यादभिवर्द्धयेत् । प्रवरंजीवनीयानां क्षीरमुक्तंरसायनम् ॥ २१२ ॥

इन गुणों से युक्त होनेके कारण और सामान्यता से गौका दूध ओजको बढ़ाताहै जीवनीय पदार्थों में श्रेष्ठ है और रसायन है ॥ २१२ ॥

महिषीणांगुरुतरं गव्याच्छीततरंपयः स्नेहान्यूनमनिद्रायहितमत्यग्नयेचतत् ॥ २१३ ॥

भैंसका दूध गौके दूधकी अपेक्षा अधिक भारी तथा शीतल होता है और स्निग्धतामें न्यून नहीं होता यह निद्रारहित को तथा तीक्ष्ण अग्निवाले को हित है ॥ २१३ ॥

रूक्षोष्णंक्षीरमुष्ट्रीणामीषत्सलवणंलघु । शस्तंवातकफानाहक्रिमिशोफोदरार्शसाम् ॥ २१४ ॥

ऊंटनीका दूध रूखा उष्ण कुछ नमकीन तथा हलका होताहै यह वात कफ आनाह क्रिमि शोथ उदर तथा ववासीर में हित है ॥ २१४ ॥

बल्यंस्थैर्यकरंसर्वमुष्णञ्चैकशफंपयः साम्लंसलवणंरूक्षं शाखावातहरंलघु ॥ २१५ ॥

एक खुरवाले सब पशुओंका दूध बलकारी स्थिरताकारी उष्ण अम्ल तथा कुछ नमकीन और रूखा होताहै और हाथ पैरोंमें होनेवाली वायु को नष्ट करताहै और हलका होता है ॥ २१५ ॥

छागंकषायमधुरं शीतंग्राहिपयोलघु । रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् ॥ २१६ ॥

बकरीका दूध कषैला मधुर शीतल ग्राही तथा हलका होताहै और रक्तपित्त अतीसार क्षय खांसी तथा ज्वरको नष्ट करताहै २१६ ॥

हिक्काश्वासकरन्तूष्णं पित्तश्लेष्मलमाविकम् । हस्तिनीनांपयोबल्यंगुरुस्थैर्यकरम्परम् ॥ २१७ ॥

भेड़ीका दूध उष्ण हिचकी तथा श्वासकारी और पित्त तथा कफवर्द्धक होताहै हथिनीका दूध बलकारी भारी तथा अत्यन्त स्थिरताकारी होताहै ॥ २१७ ॥

जीवनंबृंहणंसात्म्यंस्नेहनंमानुषंप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यः। लावणंरक्तपित्तेचतर्पणञ्चाक्षि शूलिनाम् ॥ २१८ ॥

स्त्रीका दूध जीवन बृंहण सात्म्य तथा स्नेहन होता है रक्तपित्तमें इसकी नास लेनी चाहिये और नेत्रोंकी पीड़ामें यह नेत्रोंमें भरना चाहिये ॥ २१८ ॥

रोचनंदीपनंवृष्यं स्नेहनंबलवर्द्धनम्। पाकेऽम्लमुष्णंवातघ्नंमंगलंबृंहणंदधि ॥ २१९ ॥

दही रुचिकारी दीपन वीर्य्यवर्द्धक स्नेहन बलकारी पाकमें उष्ण तथा अम्ल वातघ्न मंगलकारी तथा बृंहण होताहै ॥२१९॥

पीनसेचातिसारेचशीतकेविषमज्वरे। अरुचौमूत्रकृच्छ्रेच कार्श्येचदधिशस्यते ॥ २२० ॥

पीनस अतीसार जूड़ी विषमज्वर अरुचि मूत्रकृच्छ्र तथा कृशता में दही हित होता है ॥ २२० ॥

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशोदधिगर्हितम्। रक्तपित्तकफोत्थेषुविकारेष्वहितञ्चतत् ॥ २२१ ॥

शरद् ग्रीष्म तथा वसन्त ऋतुमें प्रायः दही वर्जित है रक्तपित्त तथा कफज रोगवालोंको भी दही अहितकारी है ॥ २२१ ॥

त्रिदोषंमन्दकंजातं वातघ्नंदधिशुक्रलम्। सरःश्लेष्मानिलघ्नस्तुमंडः स्रोतोविशोधनः ॥ २२२ ॥

मन्दक (कमजमाहुआ दही) त्रिदोषकारी होता है और जमजानेपर वातघ्न तथा वीर्य्यवर्द्धक होताहै दहीकी मलाई कफकारी तथा वातनाशक होती है दहीका तोड़ स्रोतोंको शुद्ध करता है ॥ २२२ ॥

शोफार्शोग्रहणीदोषमूत्रकृच्छ्रोदरारुचि। स्नेहव्यापदिपाण्डुत्वेतक्रंदद्याद्गरेषुच ॥ २२३ ॥

शोथ बवासीर ग्रहणीदोष मूत्रकृच्छ्र उदर अरुचि स्नेहपान से हुए रोग पांडु तथा गरदोष (संयोगजविष) में मट्ठा दे चाहिये ॥ २२३ ॥

संग्राहिदीपनंहृद्यं नवनीतंनवोद्धृतम्। ग्रहण्यर्शोविकारघ्नमर्दितारुचिनाशनम् ॥ २२४ ॥

ताजा मक्खन ग्राही दीपन तथा हृदयको हितहोताहै और ग्रहणी बवासीर अर्दित तथा अरुचिको नष्ट करताहै ॥ २२४ ॥

स्मृतिबुद्ध्यग्निशुक्रौजः कफमेदोविवर्द्धनम्। वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ २२५ ॥

घी स्मृति बुद्धि अग्नि वीर्य्य ओज कफ तथा मेदाको बढ़ाताहै वात पित्त विष उन्माद यक्ष्मा अलक्ष्मी तथा ज्वरको नष्ट करता है ॥ २२५ ॥

सर्वस्नेहोत्तमंशीतं मधुरंरसपाकयोः। सहस्रवीर्यंविधिभिर्घृतंकर्मसहस्रकृत् ॥ २२६ ॥

सब स्नेहों में उत्तम होता है शीतल होता है रस तथा पाक में मधुर होता है घी हजा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रों विधियों से हजारों कार्य्य करताहै२२६॥

मदापस्मारमूर्च्छाय शोषोन्मादग रज्वरान्। योनिकर्णशिरःशूलंघृतं जीर्णमपोहति॥ २२७॥

पुराना घी मद मिरगी मूर्च्छाश्राय शोथ उन्माद गरदोष तथा ज्वर और योनिकर्ण तथा शिर की पीड़ा इनरोगों को नष्ट करता है॥ २२७॥

सर्पींष्यजाविमहिषीक्षीरवत्स्वानि निर्दिशेत्। पीयूषोमोरटञ्चैव कि लाटास्त्रिविधाश्चये॥ २२८॥

बकरी भेड़ तथा भैंसके घीमें इन्हीं के दूध के समान गुण होते हैं पेयूष (पेवसी) मोरट (फटे दूधका पानी) तथा अनेक प्रकार के किलाट (पके दूधके फटने के पीछे जो गाढ़ा दूध का लोंदा होताहै)॥ २२८॥

दीप्ताग्नीनामनिद्राणांसर्वएतेसुखप्र दाः। गुरवस्तर्पणावृष्या बृंहणाःप वनापहाः॥ २२६॥

यह दीप्ताग्निवालों को तथा निद्रारहित पुरुषों को सुखकारी होतेहैं और भारी तृप्तिकारी वीर्य्यवर्द्धक बृंहण तथा वातनाशक होते हैं॥ २२९॥

विषदागुरवोरूक्षाग्राहिणस्तक्रपिंड काः। गोरसानामयंवर्गोनवमःप रिकीर्त्तितः॥ २३०॥

इतिगोरसवर्गः।

तक्रपिंड (दही तथा मट्ठे के द्वारा दूधको फाड़के पतले कपड़े में बांधके जल निकाल कर जो बचता है उसे तक्रपिंड कहते हैं) विषद भारी ग्राही तथा रूखा होताहै यह नवाँ गोरसवर्ग वर्णन कियागया॥ २३०॥

इति गोरसवर्गः॥

अथेक्षुवर्गः।

वृष्यःशीतःस्थिरः स्निग्धोबृंहणोम धुरोरसः। श्लेष्मणोभक्षितस्येक्षो र्यान्त्रिकस्तुविदह्यते॥ २३१॥

दाँतों से चूसाहुआ ईख का रस वीर्य्यवर्द्धक शीतल स्निग्ध बृंहण स्थिर मधुर तथा कफकारी होताहै और यन्त्र से निकालाहुआ ईखका रस विदाही होताहै॥ २३१॥

शैत्यात्प्रसादान्माधुर्य्यात्पौण्ड्रकाद्वं शकोवरः। प्रभूतक्रिमिमज्जासृङ् मेदोमांसकरोगुडः॥ २३२॥

शीतलता निर्मलता तथा मधुरता इन गुणों से पौंड़की अपेक्षा बड़ीखवाईख श्रेष्ठ होता है गुड़ बहुत क्रिमि मज्जा रुधिर मेदा तथा मांस का वर्द्धक होताहै॥ २३२॥

क्षुद्रोगुडश्चतुर्भागस्त्रिभागार्द्धार्द्ध शोषितः। रसोगुरुर्यथापूर्वंधौतंस्व ल्पमलोगुडः॥ २३३॥

क्षुद्र गुड़ और चतुर्थभाग अवशिष्ट तृतीयभाग अवशिष्ट तथा अर्द्धावशिष्ट ईखका रस यह यथा पूर्व भारी होते हैं अर्थात् अर्धभागावशिष्टसे तृतीयभागावशिष्ट ईखका रस भारी होताहै इत्यादि निर्मल गुड़ स्वल्पमलकारी होताहै॥ २३३॥

ततोमत्स्यण्डिकाखण्डशर्कराविम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाःपरम् । यथायथैषांवैमल्यंभवे च्छैत्यन्तथातथा ॥ २३४ ॥

मत्स्यंडिका (कुछ पतला बहुत गाढ़ा ईख का रस किसी पात्रमें थोड़ा २ टपकायागया मत्स्यंडी कहाताहै खांड़ तथा शर्करा यह गुड़की अपेक्षा निर्मल होती हैं यह जैसी २ अधिक निर्मल होती जाती हैं वैसी वैसी उनमें शीतलता अधिक होती है ॥ २३४ ॥

वृष्याःक्षीणक्षतहिताःसस्नेहागुड शर्कराः। कषायमधुराःशीताःसति क्ताःयासशर्कराः ॥ २३५ ॥

गुड़की शक्कर वीर्य्यवर्द्धक क्षीण तथा क्षत को हित और स्निग्ध होती है जवासे की शक्कर कषैली मधुर शीतल तथा तिक्त होती है ॥ २३५ ॥

रूक्षावम्यतिसारघ्नीछेदनीमधुश र्करा । तृष्णासृक्पित्तदाहेषुप्रश स्ताःसर्वशर्कराः ॥ २३६ ॥

शहतकी शक्कर रूखी तथा छेदन होती है और छर्दि तथा अतीसारको नष्ट करती है तृषा रक्तपित्त तथा दाहमें सब प्रकार की शक्कर हित होती हैं ॥ २३६ ॥

माक्षिकम्भ्रामरंक्षौद्रं पौत्तिकंमधुजा तयः । माक्षिकंप्रवरंतेषांविशेषाद् भ्रामरंगुरु ॥ २३७ ॥

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र तथा पौत्तिक इनचार प्रकारों का सहत होताहै इन में से माक्षिक सब से श्रेष्ठ होताहै और भ्रामर बहुत भारी होताहै ॥ २३७ ॥

माक्षिकंतैलवर्णंस्याच्छ्वेतंभ्रामरमु च्यते । क्षौद्रन्तुकपिलंविद्याद्घृतव र्णन्तुपौत्तिकम् ॥ २३८ ॥

माक्षिक सहत तैलके समान वर्णवाला होताहै भ्रामर सहत श्वेत होताहै क्षौद्र सह कपिल वर्ण होताहै और पौत्तिक सहत घी समान होताहै ॥ २३८ ॥

वातलंगुरुशीतञ्चरक्तपित्तकफाप ह्म् । सन्धातृछेदनंरूक्षं कषायम मधु ॥ २३९ ॥

सहत भारी शीतल बादी रक्तपित्तना कफघ्न संधानकारक छेदन रूखा कषैला मधुर होताहै ॥ २३९ ॥

हन्यान्मधूष्णमुष्णार्त्तमथवासवि न्वयात् । गुरुरूक्षकषायत्वाच्छै त्याच्चाल्पंहितंमधु ॥ २४० ॥

सहत विषयुक्त होताहै इस कारणसे गर करके खाने से और उष्णतासे व्याकुल पुरुष को देने से मृत्युकारी होताहै भारी रूखा कषैला तथा शीतल होनेके कारण सहत थोड़ासाही हितकारी होताहै ॥ २४० ॥

नातःकष्टतमंकिञ्चिन्मध्वामात्तद्धि माधवम् । उपक्रमविरोधित्वात्सद्यो हन्याद्यथाविषम् ॥ २४१ ॥

मध्वाम (बहुत सहत खाने से जो आम उत्पन्न होताहै उसे मध्वाम कहते हैं) से बढ़कर और कोई रोग कष्टसाध्य नहीं होता क्योंकि यह चिकित्सा के विरोधी होने से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्रही मनुष्य को विषकी तरह मारडालता है ॥ २४१ ॥

आमेसोष्णाक्रियाकार्य्यासामध्वा मेविरुध्यते। मध्वामंदारुणंतस्मा त्सद्योहन्याद्यथाविषम् ॥ २४२ ॥

आम में उष्णक्रिया करनी चाहिये और वह मध्वाम में विरुद्ध होती है इससे यह बड़ा भयंकर होताहै विषके समान शीघ्रही मनुष्य को मारडालताहै ॥ २४२ ॥

नानाद्रव्यात्मकत्वाच्चयोगवाहिहि मंमधु। इतीक्षुविकृतिप्रायोवर्गोऽयं दशमोमतः ॥ २४३ ॥

इति इक्षुवर्गः।

नानाद्रव्यात्मक होने से सहत योगवाही तथा शीतल होताहै यह इक्षुविकार संबन्धी दशवाँ वर्ग समाप्तहुआ ॥ २४३ ॥

इति इक्षुवर्ग ॥

अथ कृतान्नवर्गः।

क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगवि नाशिनी। स्वेदाग्निजननीपेयावा तवर्चोऽनुलोमनी ॥ २४४ ॥

पेया (चावलों से नौगुना जल डाल के पाक कियाजाय बहुत पतला होय और चावल कम दिखाई देवें उसको पेया कहते हैं) क्षुधा तृषा ग्लानि दुर्बलता तथा कुक्षिरोगों को नष्ट करती है स्वेद तथा अग्नि को पैदा करती है और वायु तथा मलको निकालती है ॥ २४४ ॥

तर्पणीग्राहिणीलघ्वीहृद्याचापिवि लेपिका। शृतःपिप्पलिशुण्ठीभ्यां युक्तोलाजाम्लदाडिमैः २४५ ॥

पीपल सोंठसे पकाई गई लाज अम्ल अनारसे युक्त विलेपी (चावलों का अठगुना जल डालकर पकाने से जो चावल अधिक मालूम होय और पानी कमरहै उसे विलेपी कहते हैं) तृप्तिकारी ग्राही हलकी तथा हृदय को हित होती है ॥ २४५ ॥

मण्डस्तुदीपयत्यग्निंवातञ्चाप्यनु लोमयेत्। मृदूकरोतिस्रोतांसिस्वे दंसंजनयत्यपि ॥ २४६ ॥

मंड (चावलों का १४ गुना जल डालके पकाने से चावल न मालूम होयँ केवल पतला जलसा मालूम होय उसे मंड कहते हैं) अग्निको दीप्त करता है वायुको अपने मार्ग के अनुसार करता है स्रोतों को कोमल करता है और स्वेद उत्पन्न करताहै ॥ २४६ ॥

लंघितानांविरिक्तानांजीर्णेस्नेहेचतृ ष्यताम्। दीपनत्वाल्लघुत्वाच्चमण्डः स्यात्प्राणधारणः ॥ २४७ ॥

लंघन कियेहुये विरेचन कियेहुये तथा स्नेहके पचजानेपर तृषायुक्त पुरुषों को मण्ड दीपन तथा लघु होने के कारण प्राणधारक होताहै ॥ २४७ ॥

तृष्णातीसारशमनोधातुसाम्यक रःशिवः। लाजमण्डोऽग्निजननो दाहमूर्च्छानिवारणः ॥ २४८ ॥

खीलों का मण्ड तृषा अतीसार को नष्ट करताहै धातुओं को सम करताहै कल्याण-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारी है अग्निको बढ़ाता है और दाह तथा मूर्च्छा को नष्ट करताहै ॥ २४८ ॥

मन्दाग्निविषमाग्नीनांबालस्थविर योषिताम् । देयश्चसुकुमाराणां लाजमण्डःसुसंस्कृतः ॥ क्षुत्पिपासासहःपथ्यःशुद्धानान्तुमलापहः ॥ २४९ ॥

मंदाग्निवाले जठराग्निवाले बालक वृद्ध स्त्री तथा सुकुमार इन सबको खीलोंका मण्ड देना चाहिये और अच्छीतरह संस्कार किया हुआ क्षुधा तृषा को रोकता है और पथ्य होताहै और वमन विरेचनादि से शुद्धहुये पुरुषोंके मलको नष्ट करताहै ॥ २४९ ॥

सुधौतःप्रस्रुतःस्विन्नःसन्तप्तश्चौदनोलघुः । भृष्टतण्डुलमिच्छन्तिगरश्लेष्मामयेष्वपि ॥ २५० ॥

अच्छेप्रकार से चावलों को धोकर पकाके माड़ निकालाहुआ उष्ण भात हलका होता है गरदोष तथा कफजरोगों में भुनेहुये चावलों को देना चाहिये ॥ २५० ॥

अधौतःप्रस्रुतःस्विन्नःशीतश्चाप्योदनोगुरुः ॥ २५१ ॥

विना धोयेहुये चावलों को पकाकर विना माड़ निकाला हुआ ठण्ढा भात भारी होता है ॥ २५१ ॥

मांसशाकवसातैलघृतमज्जाफलौदनाः । बल्याःसन्तर्पणाहृद्यागुरवोबृंहयन्ति च ॥ २५२ ॥

मांस शाक चरबी तेल घी मज्जा तथा फलोंके साथमें पाक कियाहुआ भात बलकारी तृप्तिकारी हृदय को हित भारी और बृंहण होताहै ॥ २५२ ॥

तद्वन्माषतिलक्षीरमुद्गसंयोगसाधिताः । कुल्माषागुरवोरूक्षावातलाभिन्नवर्चसः ॥ २५३ ॥

उर्द तिल दूध तथा मूंगके संयोग में पाक कियेहुये भातमेंभी यही गुण होते हैं कुलमाष (अधउबले जौ आदि) भारी रूखे बादी तथा मलभेदक होते हैं ॥ २५३ ॥

स्विन्नभक्ष्यास्तुयेकेचित्सौप्यगोधूमयावकाः । भिषक्तेषांयथाद्रव्यमादिशेद्गुरुलाघवम् ॥ २५४ ॥

दाल गेहूं तथा जौ को उबालकर जो खानेयोग्य पदार्थ बनते हैं उनका भारीपन तथा हलकापन इन्हीं अन्नोंके अनुसार वैद्य को कहना चाहिये ॥ २५४ ॥

अकृतंकृतयूषञ्चतनुसंस्कारितंरसम् । सूपमम्लमनम्लञ्चगुरुंविद्याद्यथोत्तरम् ॥ २५५ ॥

अकृतयूष कृतयूष पतला संस्कारित रस खट्टी दाल तथा खटाई रहित दाल यह एक से एक भारी हैं ॥ २५५ ॥

सक्तवोवातलारूक्षा बहुवर्चोऽनुलोमिनः । तर्पयन्तिनरंसद्यःपीताःसद्योबलाश्चते ॥ २५६ ॥

सत्तू बादी रूखे अधिक मलकारी दोषों को मार्गके अनुसार करनेवाले शीघ्रही तृप्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेवाले और पीने से शीघ्रही बलकारी होते हैं ॥ २५६ ॥

मधुरालघवःशीताः सक्तवःशालिसम्भवाः। ग्राहिणोरक्तपित्तघ्नास्तृषाछर्दिज्वरापहाः ॥ २५७ ॥

चावलों के सत्तू मधुर हलके शीतल तथा ग्राही होते हैं और रक्त पित्त छर्दि तृषा तथा ज्वर को नष्ट करते हैं ॥ २५७ ॥

हन्याद्व्याधीन्यवापूपोयावकोवाट्य एवच। उदावर्त्तप्रतिश्यायकासमेहगलग्रहान् ॥ २५८ ॥

यवापूप यावक और वाटय यह उदावर्त्त प्रतिश्याय (जुकाम) खांसी प्रमेह तथा गलग्रह को नष्ट करते हैं ॥ २५८ ॥

धानासंज्ञास्तुयेभक्ष्याः प्रायस्तेलेखनात्मकाः। शुष्कत्वात्तर्पणाश्चैवविष्टम्भित्वाच्चदुर्जराः ॥ २५६ ॥

धाना (भुनेहुये यवादिक भक्ष्यपदार्थ) प्रायः लेखन होतेहैं शुष्क होनेसे तृप्तिकारक होतेहैं और विष्टम्भी होने से देरमें पचते हैं ॥ २५९ ॥

विरूढधानाःशष्कुल्योमधुक्रोडाःसपिण्डकाः। सूपाःपूपुलिकाद्याश्च गुरवःपैष्टिकाःपरम् ॥ २६० ॥

विरूढ़ धान्य (अंकुरित अन्न) शष्कुली मधुक्रोड़ा पिंडिका दाल पूपुलिका तथा पीठीके पदार्थ यह बहुतभारी होते हैं॥२६०॥

फलमांसवसाशाकपललक्षौद्रसंस्कृताः। भक्ष्यावृष्याश्चबल्याश्चगुरवोबृंहणात्मकाः ॥ २६१ ॥

फल मांस चरबी शाक तिलोंका चूर्ण तथा सहत इनके संयोग से बनेहुये भक्ष्य पदार्थ वीर्य्यवर्द्धक बलकारी भारी तथा बृंहण होते हैं ॥ २६१ ॥

वेशवारोगुरुःस्निग्धो बलोपचयवर्द्धनः। गुरवस्तर्पणावृष्याःक्षीरेक्षुरससूपकाः ॥ २६२ ॥

वेसवार भारी स्निग्ध बलकारी तथा पौष्टिक होताहै दूध तथा ईखके रसकेद्वारा बनेहुये पिट्ठी के पदार्थ भारी तृप्तिकारी तथा वीर्य्यवर्द्धक होते हैं ॥ २६२ ॥

सगुडाःसतिलाश्चैव सक्षीरक्षौद्रशर्कराः। वृष्याबल्याश्चभक्ष्यास्तुतेपरं गुरवःस्मृताः ॥ २६३ ॥

गुड़ तिल दूध सहत तथा शक्कर इनके साथ पाक कियेहुये भक्ष्य पदार्थ वीर्य्यवर्द्धक बलकारी तथा बहुतभारी होते हैं ॥ २६३ ॥

सस्नेहाःस्नेहसिद्धाश्च भक्ष्याविविधलक्षणाः। गुरवस्तर्पणावृष्या हृद्यागोधूमिकामताः ॥ २६४ ॥

घृतादि स्नेहकेद्वारा पाक कियेगये गेंहूंके अनेक प्रकारके भक्ष्य पदार्थ स्निग्ध भारी तृप्तिकारी वीर्य्यवर्द्धक तथा हृदय को हित होते हैं ॥ २६४ ॥

संस्काराल्लघवःसन्ति भक्ष्यागोधूमपैष्टिकाः। धानापर्पटपूपाद्यास्तान् बुद्ध्वानिर्दिशेत्तथा ॥ २६५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संस्कार वशसे गेंहूंके कोई २ भक्ष्य पदार्थ हलके भी होते हैं धाना (भुने जौ) पर्पट (पापड़)तथा पूपआदि पदार्थ इनके संस्कार को देखकर गुणों को जाने ॥ २६५ ॥

पृथुकागुरवोभृष्टान्भक्षयेदल्पशस्तु तान्। यावाविष्टभ्यजीर्यन्तिसतुषा भिन्नवर्चसः ॥ २६६ ॥

चिड़वे भारी होते हैं इस्से इनको भूनकर थोड़ा खाय जौके चिड़वे विष्टम्भ करके पंचते हैं इन चिड़वों में जो भूसीभी होय तो मलभेदक होते हैं ॥ २६६ ॥

सूप्यान्नविकृताभक्ष्यावातलारूक्षशीतलाः। सकटुस्नेहलवणानल्पशो भक्षयेत्तुतान् ॥ २६७ ॥

मूंगआदि की पिट्ठीके वनेहुये पदार्थ वादी रूखे तथा शीतल होते हैं इससे इनमें कटु लवण तथा स्नेह मिलाकर स्वल्प भोजन करना चाहिये ॥ २६७ ॥

मृदुपाकाश्चयेभक्ष्याः स्थूलाश्चकठिनाश्चये। गुरवस्तेष्यतिक्रान्तपाकाःपुष्टिबलप्रदाः ॥ २६८ ॥

जो भक्ष्य पदार्थ स्थूल तथा कठिन होते हैं और कम पकाये जाते हैं परन्तु कच्चे नहीं वह भारी होते हैं और पुष्ट तथा वलदायक होते हैं ॥ २६८ ॥

द्रव्यसंयोगसंस्कारं द्रव्यमानंपृथक्तथा। भक्ष्याणामादिशेद्बुद्ध्वायथास्वंगुरुलाघवम् ॥ २६९ ॥

द्रव्योंके संयोग संस्कार तथा प्रमाण को अलग २ देखकर भक्ष्य पदार्थों की गुरुताको तथा लघुता को कहै ॥ २६९ ॥

रसालाबृंहणीवृष्यास्निग्धाबल्यारुचिप्रदा। स्नेहनंतर्पणंहृद्यंवातघ्नं सगुडंदधि ॥ २७० ॥

शिखरन बृंहण वीर्य्यवर्द्धक स्निग्ध बलकारी तथा रुचिकारी होती है गुड़ सहित दही स्निग्ध तृप्तिकारी हृदय को हित तथा वातघ्न होता है ॥ २७० ॥

द्राक्षाखर्जूरकोलानां गुरुविष्टम्भिपानकम्। परूषकाणांक्षौद्रस्ययच्चेक्षुविकृतिप्रति ॥ २७१ ॥

दाख खजूर तथा बेरका पना विष्टम्भी भारी होताहै फालसे सहत तथा गुड़आदि-विकार ॥ २७१ ॥

तेषांकट्वम्लसंयोगाः पानकानांपृथक्पृथक्। द्रव्यमानंचविज्ञायगुणकर्माणिचादिशेत् ॥ २७२ ॥

इनके पनों में पृथक् २ कटु तथा अम्लके संयोगको देखकर और द्रव्योंके प्रमाण को जानकर गुण तथा कर्म कहे ॥ २७२ ॥

कट्वम्लस्वादुलवणा लघवोरागषाडवाः। मुखप्रियाश्चहृद्याश्चदीपना भक्तरोचनाः ॥ २७३ ॥

रागषाड़व (गुड़के जलावमें नोन खटाई तेल तथा सोंठ डालकर जो पन्ना बनताहै उसे रागषाड़व कहते हैं) हलका कटु अम्ल मधुर नमकीन मुखप्रिय हृदय को हित दीपन तथा खानेमें रुचिकारी होताहै ॥ २७३ ॥

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

आम्रामलकलेहाश्चबृंहणाबलवर्द्धनाः। रोचनास्तर्पणाश्चोक्ताःस्नेहमाधुर्यगौरवात् ॥ २७४ ॥

आम तथा आमलेका अवलेह स्नेह तथा मधुरताके गौरवसे बृंहण बलवर्द्धक रुचिकारी तृप्तिकारी होताहै ॥ २७४ ॥

बुद्ध्वासंयोगसंस्कारं द्रव्यमानञ्च तत्स्मृतम् । गुणकर्माणिलेहानां तेषांतेषांतथावदेत् ॥ २७५ ॥

जिस वस्तुका अवलेह बनाहो उसके प्रमाण संयोग तथा संस्कार को जानकर तिन २ अवलेहों के गुण तथा कर्म कहे ॥ २७५ ॥

रक्तपित्तकफोत्क्लेदिशुक्तंवातानुलोमनम् । कन्दमूलफलाद्यञ्चतद्वद्विद्यात्तदासुतम् ॥ २७६ ॥

सिरका रक्त पित्त तथा कफ को कुपित करता है और वायु को मार्ग के अनुसार करता है सिरके में कन्दमूल फलादि जो पदार्थ पड़ते हैं उनमें भी उसीकेसे गुण होते हैं ॥ २७६ ॥

शिण्डाकीचासुतञ्चान्यत्कालाम्लंरोचनंलघु । विद्याद्वर्गंकृतान्नानामेकादशतमंभिषक् ॥ २७७ ॥

इति कृतान्नवर्गः ।

शिंडाकी तथा आसूत दूसरे काल आमला यह रुचिकारी तथा हलके होते हैं इस ग्यारहवें कृतान्नवर्ग को वैद्य जानै ॥ २७७ ॥

इति कृतान्नवर्ग ॥

अथाहारयोगवर्गः ।

कषायानुरसंस्वादु सूक्ष्ममुष्णंव्यवायिच । पित्तलंबद्धविण्मूत्रंनचश्लेष्माभिवर्द्धनम् ॥ २७८ ॥

तेल कुछ कषैला मधुर सूक्ष्म उष्ण व्यवायी पित्तवर्द्धक मल मूत्रका बांधनेवाला कफको नहीं बढ़ानेवाला होताहै ॥ २७८ ॥

वातघ्नेषूत्तमंबल्यंत्वच्यंमेधाग्निवर्द्धनम् । तैलंसंयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहम्मतम् २७९ ॥

वातघ्नों में उत्तम बलकारी त्वचा को हित और मेधा तथा अग्निवर्द्धक होता है संयोग तथा संस्कारवशसे तैल संपूर्ण रोगों को नष्ट करता है ॥ २७९ ॥

तैलप्रयोगादजरानिर्विकाराजितश्रमाः । आसन्नातिबलाःसंख्येदैत्याधिपतयःपुरा ॥ २८० ॥

पूर्व्व समयमें तैलही के प्रयोग से दैत्याधिपति संग्राममें अजर निर्विकार श्रम सहनेवाले तथा अत्यन्त बलवान् होते थे ॥२८०॥

एरण्डतैलंमधुरं गुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरम्परम् ॥ २८१ ॥

रेड़ीकातेल मधुर भारी तथा कफवर्द्धक होताहै और वात रक्त गुल्म हृद्रोग तथा जीर्ण ज्वर को नष्ट करता है ॥ २८१ ॥

कटूष्णंसार्षपंतैलं रक्तपित्तप्रदूषणम् । कफशुक्रानिलहरंकण्डूकोठविनाशनम् ॥ २८२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरसों का तेल कटु उष्ण रक्त पित्तकारी कफघ्न वातघ्न और वीर्य्य खुजली तथा चकत्तों का नाशक होताहै ॥ २८२ ॥

पियालतैलंमधुरं गुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम् । हितमिच्छन्तिनात्यौष्ण्यात्संयोगेवातपित्तयोः ॥ २८३ ॥

चिरोंजी का तेल मधुर भारी तथा कफवर्द्धक होता है यह अधिक उष्ण न होने के कारण वात पित्तके संयोग में हितकारी होताहै ॥ २८३ ॥

आतस्यंमधुराम्लन्तु विपाकेकटुकं तथा । उष्णवीर्यहितंवाते रक्तपित्तप्रकोपनम् ॥ २८४ ॥

अलसी का तेल मधुर अम्ल पाक में कटु उष्ण वीर्य्य वातमें हित और रक्त पित्त को कुपित करनेवाला होताहै ॥ २८४ ॥

कुसुम्भतैलमुष्णञ्च विपाकेकटुकं गुरु । विदाहिचविशेषेण सर्वरोगप्रकोपनम् ॥ २८५ ॥

कुसुमका तेल उष्ण पाक में कटु भारी तथा विदाही होताहै और विशेष करके सब रोगों को कुपित करता है ॥ २८५ ॥

फलानांयानिचान्यानि तैलान्याहारसन्निधौ । युज्यन्तेगुणकर्मभ्यांतानिब्रूयाद्यथायथम् ॥ २८६ ॥

और जो फलों के अन्य तेल भोजन में व्यवहार किये जाते हैं उनमें फलों केही सदृश गुण कर्म जानने चाहिये ॥ २८६ ॥

मधुरोबृंहणोवृष्योबल्योमज्जातथा वसा । यथासत्त्वन्तुशैत्योष्णेवसामज्ज्ञोर्विनिर्दिशेत् ॥ २८७ ॥

चरबी तथा मज्जा मधुर बृंहण वीर्य्यवर्द्धक तथा बलकारी होती हैं इनमें शीतलता तथा उष्णता जिस जीवकी यह होय उसीके अनुसार जाननी चाहिये ॥ २८७ ॥

सस्नेहंदीपनंवृष्यमुष्णंवातकफापहम् । विपाकमधुरंहृद्यंरोचनंविश्वभेषजम् ॥ २८८ ॥

सोंठ स्निग्ध दीपन पुंस्त्ववर्द्धक उष्ण वात कफनाशक पाकमें मधुर हृदयको हित तथा रुचिकारी होती है ॥ २८८ ॥

श्लेष्मलामधुराचार्द्रागुर्वीस्निग्धाचपिप्पली । साशुष्काकफवातघ्नी कटुकावृष्यसम्मता ॥ २८९ ॥

आर्द्र पीपल कफकारी मधुर भारी त[...] स्निग्ध होती है सूखी पीपल कफ वात [...] शक कटु तथा पुंस्त्ववर्द्धक होती है ॥२८[...]

नात्यर्थमुष्णंमरिचमवृष्यंलघुरोचम् । छेदित्वाच्छोषणत्वाचदीपनंकफवातजित् ॥ २९० ॥

मिर्च कुछ उष्ण कुछ वीर्य्यवर्द्धक हलकी रुचिकारी और छेदन तथा शोषण होने से दीपन तथा वातकफनाशक होती है ॥ २९० ॥

वातश्लेष्मविबन्धघ्नं कटुकंदीपनंलघु । हिंगुशूलप्रशमनंविद्यात्पाचनरोचनम् ॥ २९१ ॥

हींग वात कफ तथा विबन्धनाशक कटु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दीपन हलकी शूलनाशक पाचन तथा रुचिकारी होती है ॥ २९१ ॥

रोचनंदीपनंहृद्यं चक्षुष्यमविदाहि च। त्रिदोषघ्नंसमधुरंसैन्धवंलवणोत्तमम् ॥ २९२ ॥

सैंधवलवण रुचिकारी दीपन हृदय और नेत्रों को हित अविदाही त्रिदोषघ्न कुछ मधुर और सब लवणों में श्रेष्ठ होताहै ॥ २९२ ॥

सौक्ष्म्यादौष्ण्याल्लघुत्वाच्च सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् । सौवर्चलंविबन्धघ्नंहृद्यमुद्गारशोधिच ॥ २९३ ॥

सोचरनोन सूक्ष्मता लघुता उष्णता तथा सुगन्धि से रुचिकारी विबन्धनाशक हृदय को हित तथा उद्गारशोधक होताहै ॥ २९३ ॥

तैक्ष्ण्यादौष्ण्याद्व्यवायित्वाद्दीपनं शूलनाशनम् । ऊर्ध्वञ्चाधश्चवातानामानुलोम्यकरंविडम् ॥ २९४ ॥

खारी नमक तीक्ष्णता उष्णता तथा व्यवायी होने से दीपन तथा शूलनाशक होताहै और अधोभाग से तथा ऊर्ध्वभागसे वायुको निकालता है ॥ २९४ ॥

सतिक्तकटुसक्षारं तीक्ष्णमुत्क्लेदि चौद्भिदम् । नकाललवणेगन्धःसौवर्चलगुणाश्चते ॥ २९५ ॥

उद्भिद लवण तिक्त कटु क्षार तीक्ष्ण तथा क्लेदकारक होता है कालेनोन में सुगन्धिके सिवाय और सब गुण सोचरनोन के से होते हैं ॥ २९५ ॥

सामुद्रकंसमधुरं सतिक्तंकटुपांशुजम् । रोचनंलवणंसर्वंपाकिस्रंस्यनिलापहम् ॥ २९६ ॥

सामुद्र नोन कुछ मधुर होताहै और पांशुजनोन तिक्त तथा कटु होता है सब नोन रुचिकारक पाचन स्रंसी तथा वातनाशक होते हैं ॥ २९६ ॥

हृत्पाण्डुग्रहणीदोषप्लीहानाहगलग्रहान् । कासंकफजमर्शांसियावशूकोव्यपोहति ॥ २९७ ॥

जवाखार हृद्रोग पांडुरोग ग्रहणी दोष प्लीहा आनाह गलग्रह कफज खांसी तथा बवासीर को नष्ट करता है ॥ २९७ ॥

तीक्ष्णोष्णोलघुरूक्षश्चक्लेदीपाकीविदारणः । दहनोदीपनश्छेत्तासर्वःक्षारोऽग्निसन्निभः ॥ २९८ ॥

सब क्षार तीक्ष्ण उष्ण लघु रूक्ष क्लेदकारक पाचन विदारण दाहकारक दीपन छेदन अग्निके समान होते हैं २९८ ॥

कारव्यःकुञ्चिकाजाजी कवरीधान्यतुम्बुरुः। रोचनंदीपनंवातकफदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ २९९ ॥

कालाजीरा कलौंजी श्वेतजीरा सौंफ धनियां तथा तुम्बुरु (मिर्च के आकार फटे मुखवाला फल विशेष) यह सब रुचिकारी दीपन और वात कफ तथा दुर्गन्धि के नाशक होते हैं ॥ २९९ ॥

आहारयोगिनांभक्तिनिश्चयोनतुविद्यते। समासोद्वादशश्चायंवर्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आहारयोगिनाम् ॥ ३०० ॥

इत्याहारयोगवर्गः ।

किस आहारके साथ किस वस्तुका संयोग होताहै इसका कुछ निश्चय नहीं है यह बारहवां आहार योगिवर्ग कहागया ॥ ३०० ॥

इति आहारयोगिवर्ग ॥

शूकधान्यंशमीधान्यंसमातीतंप्रशस्यते । पुराणंप्रायशोरूक्षंप्रायेणाभिनवंगुरु ॥ ३०१ ॥

शूक धान्य तथा शमी धान्य यह दोनों एकवर्षके पुराने श्रेष्ठ होते हैं बहुत पुराना नाज प्रायः रूखा होता है और नयानाज प्रायः भारी होताहै ॥ ३०१ ॥

यद्यदागच्छतिक्षिप्रं तत्तल्लघुतरंस्मृतम् ॥ ३०२ ॥

जो नाज जिस २ की अपेक्षा जल्दी उत्पन्न होताहै वह उस २ की अपेक्षा हलका होताहै ॥ ३०२ ॥

निस्तुषंयुक्तिभृष्टन्तुसूप्यंलघुविपच्यते ॥ ३०३ ॥

भूसी रहित तथा युक्तिसे भूनीहुई दाल पाकमें हलकी होती है ॥ ३०३ ॥

मृतंकृशात्यमेध्यञ्च वृद्धंबालंविषैर्हतम् । अगोचरमृतंव्याडमृदितंमांसमुत्सृजेत् ॥ ३०४ ॥

माराहुआ कृश अतिअपवित्र बाल वृद्ध विषसे मारागया किसी गुप्तस्थानमें मारागया और मांसाशी पशुओं से मारागया जो जीव उसका मांस न खाना चाहिये ॥ ३०४ ॥

अतोऽन्यथाहितंमांसंबृंहणंबलवर्द्धनम् । प्रीणनःसर्वभूतानांहृद्योमांसरसःपरम् ॥ ३०५ ॥

इसके सिवाय अन्यमांस हित बृंहण तथा बलका बढ़ानेवाला होताहै मांसका रस (यखनी) सब प्राणियों को तृप्तिकारी तथा हृदय को परम हित होताहै ॥ ३०५ ॥

शुष्यतांव्याधिमुक्तानांकृशानांक्षीणरेतसाम् । बलवर्णार्थिनाञ्चैवरसंविद्याद्यथामृतम् ॥ ३०६ ॥

शोष रोगवाले रोगसे छुटेहुये कृश क्षीणवीर्य्य और बल तथा वर्णके चाहनेवाले पुरुषों को यह मांस रस अमृतके समान गुणकारी है ॥ ३०६ ॥

सर्वरोगप्रशमनंयथास्वंविहितंरसम् । विद्यात्स्वर्य्यंबलकरंवयोबुद्धीन्द्रियायुषाम् ॥ ३०७ ॥

रोगके अनुसार कल्पना कियाहुआ मांस रस सब रोगों को नष्ट करताहै और स्वर को हित करनेवाला वय बुद्धि इन्द्रिय तथा आयु को बलकारी होताहै ॥ ३०७ ॥

व्यायामनित्याःस्त्रीनित्यामद्यनित्याश्चयेनराः । नित्यंमांसरसाहारानातुराःस्युर्नदुर्बलाः ॥ ३०८ ॥

जो मनुष्य नित्य व्यायाम करते हैं नित्य मैथुन करते हैं और नित्य मद्यपान करते हैं वह जो नित्य मांसरस का सेवनकरैं तो न रोगी होंय न दुर्बल होंय ॥ ३०८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रिमिवातातपहतंशुष्कंजीर्णमनार्त्तवम्। शाकंनिःस्नेहसिद्धञ्चवर्ज्यं यच्चापरिस्रुतम् ॥ ३०९ ॥

क्रिमि वायु तथा धूप से दूषित शुष्क जीर्ण अकालोत्पन्न घृतादिस्नेह के विना पाक कियागया और नहीं निंचोड़ा गया शाक त्याज्य है ३०९ ॥

पुराणमामंसंक्लिष्टंक्रिमिव्यालहिमातपैः। अदेशाकालजंक्लिन्नंयत्स्यात्फलमसाधुतत् ॥ ३१० ॥

पुराना कच्चा और क्रिमि सर्प हिम तथा धूप से दूषित अदेश तथा अकाल में उत्पन्न और सड़ाहुआ फल अहित होताहै॥३१०॥

हरितानांयथाशाकंनिर्देशंसाधनादृते ॥ ३११ ॥

(अदरक आदिक) हरित वस्तु भी शाकोंके समान विना साधन के त्याज्य होती हैं ॥ ३११ ॥

मद्याम्बुगोरसादीनांस्वेस्वेवर्गेविनिश्चयः ॥ ३१२ ॥

मद्य जल तथा गोरसआदिकों का उन्हीं के वर्ग से निश्चय करना चाहिये ॥ ३१२ ॥

यदाहारगुणैःपानंविपरीतंतदिष्यते। अन्नानुपानंधातूनांदृष्टंयन्नविरोधिच ॥ ३१३ ॥

जो पेय वस्तु आहार के गुणों से विपरीत होय और धातुओं के विरुद्ध न होय उसका अनुपान करना चाहिये ॥ ३१३ ॥

आसवानांसमुद्दिष्टाअशीतिश्चतुरुत्तराः ॥ ३१४ ॥

८४ प्रकार के आसव पहले कहेजाचुके हैं ॥ ३१४ ॥

जलंपेयमपेयञ्चपरीक्ष्यानुपिबेद्धितम् ॥ ३१५ ॥

यह जल पीने के योग्य है अथवा नहीं है यह विचार करके जलपीना हितहै॥ ३१५॥

स्निग्धोष्णंमारुतेशस्तंपित्तेमधुरशीतलम्। कफेऽनुपानंरूक्षोष्णंक्षयेमांसरसःपरम् ॥ ३१६ ॥

वायु में स्निग्ध तथा उष्ण पित्तमें मधुर तथा शीतल और कफमें रूखा तथा उष्ण अनुपान हित होता है और क्षयरोगमें मांसरसका अनुपान श्रेष्ठ है ॥ ३१६ ॥

उपवासाध्वभारस्त्रीमारुतातपकर्म्मभिः। क्लान्तानामनुपानार्थंपयःपथ्यंयथामृतम् ॥ ३१७ ॥

उपवास मार्गभार मैथुन वायु तथा धूप के द्वारा व्याकुल पुरुषों को दूधका अनुपान अमृत के समान पथ्य होताहै ॥ ३१७ ॥

सुराकृशानांपुष्ट्यर्थमनुपानंप्रशस्यते। कार्श्यार्थंस्थूलदेहानामनुशस्तंमधूदकम् ॥ ३१८ ॥

कृश पुरुषों को पुष्टताके लिये सुराका अनुपान करना श्रेष्ठ है और स्थूल पुरुषों को कृशताके लिये सहतके शर्बतका अनुपान करना श्रेष्ठ होताहै ॥ ३१८ ॥

अल्पाग्नीनामनिद्राणांतन्द्राशोक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भयक्लमैः । मद्यमांसोचितानाञ्चम द्यमेवानुशस्यते ॥ ३१९ ॥

मन्दाग्निवाले निद्रा रहित तन्द्रा शोक भय तथा ग्लानि से युक्त और मद्य तथा मांसके अभ्यासवाले पुरुषों को मद्यही का अनुपान करना श्रेष्ठहै ॥ ३१९ ॥

अथानुपानकर्मप्रवक्ष्यामि । अनुपानंतर्पयतिप्रीणयतिऊर्जयतिप र्य्याप्तिमभिनिर्वर्त्तयतिभुक्तमवसाद यतिअन्नसङ्घातंभिनत्तिमार्दवमा पादयतिक्लेदयतिजरयतिसुखपरि णामितामाशुव्यवायिताञ्चाहार स्योपजनयतीति ॥ ३२० ॥

अब अनुपानकी क्रिया कहताहूं जैसे, अनुपान तृप्ति करताहै प्रीति करताहै बल करताहै पूर्त्ति करता है आहार को अवसन्न करता है खायेहुये अन्नके समूह को भिन्न २ करताहै कोमलता करता है क्लेद करता है पचाता है आहार का सुखपूर्व्वक परिणाम करताहै और आहार को शीघ्र व्यवायी (जो द्रव्य अपने गुणों से सब शरीर को व्याप्त करके परिपाक को प्राप्त होय उसे व्यवायी कहते हैं) करताहै ॥ ३२० ॥

तत्रश्लोकाः ।

अनुपानंहितंयुक्तंतर्पयत्याशुमानवम् । सुखंपचतिचाहारमायुषेचबलायच ॥ ३२१ ॥

तिसमें यह श्लोकहैं । हितकारी, युक्त अनुपान मनुष्य को शीघ्रही तृप्त करता है और शीघ्रही भोजन को पचाकर आयु तथा बल को हितकारी होताहै ॥ ३२१ ॥

नोर्द्ध्वाङ्गमारुताविष्टानहिक्काश्वासकासिनः । नगीतभाषाध्ययनप्रसक्तानोरसिक्षताः ॥ ३२२ ॥

शरीरके ऊर्ध्व भागमें बायु रोगवाले हिचकी श्वास तथा खांसीवाले गीत अधिक भाषण तथा अध्ययन में तत्पर रहनेवाले और उरक्षतवाले मनुष्यों को ॥ ३२२ ॥

पिबेयुरुदकंभुक्त्वातद्धिकण्ठोरसि स्थितम् । स्नेहमाहारजंहत्वाभूयो दोषायकल्पते ॥ ३२३ ॥

भोजन के उपरान्त जल का अनुपान न करना चाहिये क्योंकि वह कण्ठ तथा हृदय में स्थित आहार से उत्पन्न स्नेह को नाश करके फिर दोषको करता है ॥ ३२३ ॥

अनुपानैकदेशोऽयमुक्तःप्रायोपयोगिकः । द्रव्यन्तुनहिनिर्देष्टुंशक्यं कृत्स्नेननामभिः ॥ ३२४ ॥

प्रायः उपयोग करने के योग्य अनुपानों का एक देश कहागया क्योंकि संपूर्ण वस्तुओं के नाम कहना बहुत कठिन है ॥ ३२४

यथानामौषधंकिञ्चिद्देशजानांवचो यथा ॥ द्रव्यंतत्तत्तथावाच्यमनुक्त मिहतद्भवेत् ॥ ३२५ ॥

जैसे अनेक देशों में अनेक प्रकार की औषधि तथा भाषा होती हैं उसी प्रकार जिन द्रव्यों के गुण नहीं कहेगये हैं उनको भी जानना चाहिये ॥ ३२५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चराःशरीरावयवाःस्वभावोधातवः क्रिया ॥ लिङ्गंप्रमाणंसंस्कारोमा त्राचास्मिन्परीक्ष्यते ॥ ३२६ ॥

चर शरीर के अंग स्वभाव धातु क्रिया लिंग प्रमाण संस्कार तथा मात्रा इनकी परीक्षा इसमें की जाती है ॥ ३२६ ॥

चरोऽनूपजलाकाशधन्वाद्योभक्ष्य संविधौ ॥ जलजानूपजाश्चैवजला नूपचराश्चये ॥ ३२७ ॥

अनूप देश जल आकाश तथा मरुदेशआदिकी जो भक्ष्य सामग्री है उसे चरकहते हैं जल में हुए अनूप देशमें हुए और जल तथा अनूपदेशमें विचरण करनेवाले ॥ ३२७ ॥

गुरुभक्ष्याश्चयेसत्त्वाःसर्वेतेगुरवः स्मृताः ॥ लघुभक्ष्यास्तुलघवोध न्वजाधन्वचारिणः ॥ ३२८ ॥

भारी वस्तु खानेवाले जो जीव हैं वह सब भारी कहलाते हैं मरुदेशमें उत्पन्न हुए मरुदेशमें विचरण करनेवाले और हलकी वस्तु खानेवाले जीव हलके होते हैं ३२८ ॥

शरीरावयवाःसक्थिशिरःस्कन्धाद यस्तथा ॥ सक्थिमांसाद्गुरुस्कन्ध स्ततःक्रोडस्ततःशिरः ॥ ३२९ ॥

जंघा शिर तथा स्कन्धादिक शरीर के अंग हैं जंघाओं के मांससे कन्धेका मांस भारी होताहै कन्धेके मांससे क्रोड़ (भुजान्तर) का मांस भारी होताहै क्रोड़के मांस से शिरका मांस भारी होताहै ॥ ३२९ ॥

वृषणौचर्ममेढ्रञ्चश्रोणीवृक्कौयकृद्गु दम् ॥ मांसाद्गुरुतरंविद्याद्यथास्वं मेध्यमस्थिच ॥ ३३० ॥

अंडकोश चर्म लिंग नितम्ब कलेजा यकृत (जिगर) तथा गुदा इनका मांस एकसे एक का भारी होताहै और हड्डीमें जो मांस लगाहोता है वह मेध्य होताहै ॥ ३३० ॥

स्वभावाल्लघवोमुद्गास्तथालावकपि ञ्जलाः । स्वभावाद्गुरवोमाषवराह महिषास्तथा ॥ ३३१ ॥

लवा तथा कपिंजल का मांस और मूंग यह स्वभावसे ही लघु हैं शूकर तथा भैंसे का मांस और उर्द यह स्वभाव से भारी हैं ॥ ३३१ ॥

धातूनांशोणितादीनांगुरुंविद्याद्य थोत्तरम् । अलसेभ्योविशिष्यन्ते प्राणिनोयेबहुक्रियाः ॥ ३३२ ॥

रुधिर आदि धातु उत्तरोत्तर भारी होती हैं जो प्राणी बहुत कार्य्य करते हैं उनका मांस-आलसियों की अपेक्षा भारी होताहै॥ ३३२॥

गौरवेलिङ्गसामान्येपुंसांस्त्रीणाञ्च लाघवम् । महाप्रमाणागुरवःस्वजा तौलघवोऽन्यथा ॥ ३३३ ॥

समान जातिके जीवों में पुरुषकी अपेक्षा स्त्री का मांस हलका होता है एक जातिके जीवों में जो बड़े होते हैं वह भारी होते हैं और जो छोटे होते हैं वह हलके होते हैं ॥ ३३३ ॥

गुरूणांलाघवंविद्यात्संस्कारात्सवि पर्ययम् । व्रीहेर्लाजायथाचस्युःस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्तूनांसिद्धपिण्डकाः ॥ ३३४ ॥

संस्कारसे भारी वस्तु भी लघु होजाती है और लघु भारी होजातीहै जैसे धानोंकी अपेक्षा खील हलकी होती है और सत्तुओं की अपेक्षा सत्तुओं की पिंड़ियां भारी होती हैं॥ ३३४ ॥

अल्पादानेगुरूणाञ्चलघूनांचाति सेवने । मात्राकारणमुद्दिष्टंद्रव्या णांगुरुलाघवे ॥ ३३५ ॥

भारी वस्तुओं के अल्प भोजन से लघुता मालूम होतीहै और हलकी वस्तुओं के अधिक भोजन से गुरुता मालूम होती है इस लघुता गुरुता में मात्रा कारण है॥ ३३५ ॥

गुरूणामल्पमादेयंलघूनांतृप्तिरि ष्यते । मात्रामपेक्षतेद्रव्यंमात्राचा ग्निमपेक्षते॥ ३३६ ॥

भारी वस्तु स्वल्प खानी चाहिये और हलकी वस्तु तृप्तिपूर्वक खानी चाहिये क्योंकि द्रव्यमात्राकी अपेक्षा करती है और मात्रा अग्निवलकी अपेक्षा करती है ३३६ ॥

बलमारोग्यमायुश्चप्राणाश्चाग्नौप्र तिष्ठिताः । अनुपानेन्धनैश्चाग्नि र्दीप्यतेशाम्यतेऽन्यथा॥ ३३७॥

बल आरोग्य आयु तथा प्राण अग्नि में स्थित हैं और अनुपान तथा ईंधन के द्वारा अग्नि देदीप्य होती है नहीं तो मन्द होजाती है॥ ३३७ ॥

गुरुलाघवचिन्त्येयंप्रायेणाल्पबला न्प्रति । मन्दकर्मानना(?)रोग्यान्सुकु मारान्सुखोचितान् ॥ ३३८ ॥

प्रायः अल्प बलवान् अल्पकार्य्य करनेवाले रोगी सुकुमार तथा सुखाभ्यासी पुरुषों के लिये गुरुता लघुताका विचार करना चाहिये॥ ३३८ ॥

दीप्ताग्नयःखराहाराःकर्म्मनित्यामहोदराः । येनराःप्रतितांश्चिन्त्यंना वश्यंगुरुलाघवम् ॥ ३३९ ॥

दीप्ताग्निवाले कठिन वस्तु भोजनकरनेवाले नित्य कार्य्य करनेवाले और बड़े उदरवाले पुरुषोंके लिये गुरुता लघुता के विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है ३३९ ॥

हिताभिर्ज्जुहुयान्नित्यमन्तराग्निस माहितः । अनुपानसमिद्भिर्नामा त्राकालौविचारयन् ॥ ३४० ॥

मनुष्य सदैव मात्रा तथा कालका निश्चय करके हितकारी अनुपानरूपी समिधों जठराग्नि में हवनकरे ॥ ३४० ॥

आहिताग्नेःसदापथ्यान्यन्तराग्नं जुहोतियः । दिवसेदिवसेब्रह्मजप त्यथददातिच । नरंनिःश्रेयसेयुक्तं सात्म्यज्ञंपानभोजने ॥ ३४१ ॥

जो मनुष्य बाह्य अग्नि में हवन करके सदैव जठराग्नि में पथ्य वस्तुओं का हवन करता है और प्रतिदिन ब्रह्म का जपकरता है और दान करता है तथा अपने कल्याण में युक्त पान भोजन के सात्म्य को जानता है॥ ३४१ ॥

भजन्तेनामयाःकेचिद्भाविनोऽप्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्तराहृते। षट्त्रिंशच्चसहस्राणि रात्रीणांहितभोजनः। जीवत्यनातुरोजन्तुर्जितात्मासम्मतःसतामिति॥ ३४२॥

उस हित भोजन करनेवाले के जन्मान्तर में भी कोई रोग नहीं होते व सौवर्ष पर्यन्त नीरोग जीताहै और जितात्मा होने से सज्जनों में प्रतिष्ठित होता है॥ ३४२॥

तत्रश्लोकाः॥

अनुपानगुणाःसाग्र्यावर्गाद्वादशनिश्चिताः। सगुणान्यन्नपानानि गुरुलाघवसंग्रहः॥ ३४३॥

अनुपान के गुण बारह वर्ग गुण सहित अन्नपान और गुरुता तथा लघुता का विचार यह जो सब विषय॥ ३४३॥

अनुपानविधावुक्तंतत्परीक्ष्यंविशेषतः। प्राणःप्राणभृतामन्नमन्नंलोकोऽभिधावति॥ ३४४॥

इस अनुपानविधि अध्याय में कहा गया उसकी विशेष परीक्षा करनी चाहिये क्योंकि अन्नही प्राणियों का प्राण है और संपूर्ण लोग अन्नही के पीछे दौड़ते हैं॥ ३४४॥

वर्णप्रसादःसौस्वर्यंजीवितंप्रतिभासुखम्। तुष्टिःपुष्टिर्बलंमेधासर्वमन्नेप्रतिष्ठितम्॥ ३४५॥

वर्णकी उत्तमता स्वरकी उत्तमता जीवन प्रतिभा सुख तुष्टता पुष्टता और बल तथा मेधा यह सब अन्नही में स्थित हैं॥ ३४५॥

लौकिकंकर्म्मयद्वृत्तौस्वर्गतौयच्चवैदिकम्। कर्मापवर्गेयच्चोक्तंतच्चाप्यन्नेप्रतिष्ठितम्॥ ३४६॥

इत्यन्नपानचतुष्केऽन्नपानविधिरध्यायः॥२७॥

जीविका के निमित्त जो लौकिक कर्म्म किया जाताहै स्वर्गके लिये जो वैदिक कर्म्म किया जाताहै और मोक्षके लिये जो कर्म्म कहागया है वहभी अन्नके आधीनहै॥३४६॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें अन्नपान विधिनामसत्ताईसवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ २७॥

अट्ठाईसवांअध्याय॥

अथातोविविधाशितपीतीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

विविधमशितपीतलीढखादितंजन्तोर्हितमन्नमग्निसन्धुक्षितबलेन यथास्वेनोष्मणासम्यग्विपच्यमानंकालवदनवस्थितसर्वधातुपाकमनुपहतसर्वधातूष्ममारुतस्रोतःकेवलंशरीरमुपचयबलवर्णसुखायुषा योजयतीतिशरीरधातूनूर्जयन्धातवोहिधात्वाहाराःप्रकृतिमनुवर्त्तन्ते॥ १॥

इसके उपरान्त विविधाशितपीतीयनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा॥

प्राणियों करके खायागया पीयागया चाटागया तथा चर्वण कियागया हितकारी अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेकप्रकारका अन्न जठराग्नि से बढ़ेहुए बलवाली अपनी २ ऊष्माओं से अच्छेप्रकार पचकर जिसमें सम्पूर्ण धातुओंका परिपाक होताहै और सम्पूर्ण धातुओंकी ऊष्मा वायु तथा स्रोत नहीं रुके होते हैं ऐसे शरीर को धातुओं की वृद्धि करताहुआ बल वर्ण सुख तथा आयुसे युक्त करताहै फिर धातु,धातुका आहार करके प्रकृतिके अनुसार होती हैं १॥

तत्राहारप्रसादाख्योरसःकिट्टञ्चमलाख्यमभिनिर्वर्त्ततेकिट्टात्मूत्रस्वेदपुरीषवातपित्तश्लेष्माणःकर्णाक्षिनासिकास्यलोमकूपप्रजननमलकेशश्मश्रुलोमनखादयश्चात्रयवाः॥ २॥

उस अन्न में आहार प्रसादनामरस और मलनाम किट्ट उत्पन्न होताहै किट्टसे मूत्र स्वेद पुरीष वायु पित्त कफ और कान नेत्र नासिका मुख तथा रोमकूप से उत्पन्न होनेवाला मल और केश डाढ़ी रोम तथा नखादिक अंग उत्पन्न होते हैं॥ २॥

पुष्यन्तित्वाहाररसात् रसरुधिरमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रौजांसिपञ्चेंद्रियद्रव्याणि धातुप्रसादसंज्ञकानि शरीरसन्धिबन्धपिच्छादयश्चावयवाः तेसर्वेएवधातवोमलाख्याः प्रसादाख्याश्चरसमलाभ्यांपुष्यन्तः स्वंमानमनुवर्त्तन्ते॥ ३॥

और आहार प्रसादनामरस से रस रुधिर मांस मेदा अस्थि मज्जा वीर्य्य धातु प्रसाद संज्ञक पञ्चेन्द्रिय द्रव्य और शरीर की सन्धिबन्ध तथा पिच्छा आदिक अंग यह सब पुष्ट होते हैं यह सब मलनाम तथा प्रसादनाम धातु मल तथा रससे पुष्ट होकर शरीर और अवस्थाके अनुकूल अपने २ मानके अनुसार होती हैं॥ ३॥

यथावयः शरीरमेवंरसमलौस्वप्रमाणावस्थितौआश्रयस्यसमधातोर्धातुसाम्यमनुवर्त्तयतोनिमित्ततस्तुक्षीणातिवृद्धानां प्रसादाख्यानां धातूनां वृद्धिक्षयाभ्यामाहारमूलाभ्यांरसः साम्यमुत्पादयते आरोग्याय॥ ४॥

इस प्रकारसे अपने २ प्रमाण के अनुसार स्थित रस और मल आश्रय भूत समधातु नामक शरीरकी धातुओं को सम करते हैं किसी कारण से क्षीणहुई अथवा वृद्धि को प्राप्तहुई प्रसादनाम धातुओं को आहारसे हुई वृद्धि तथा क्षय से आरोग्यके निमित्त रस समकरता है॥ ४॥

किट्टञ्चमलानामेवमेव॥ स्वमानातिरिक्ताः पुनरुत्सर्गिणः शीतोष्णपर्य्यायगुणैश्चोपचर्य्यमाणामलाःशरीरधातुसाम्यकराः समुपलभ्यन्ते॥ ५॥

और इसी प्रकारसे किट्ट मलों को समकरता है अपने प्रमाण की अपेक्षा अधिक निकलतेहुये मल शीतल तथा उष्ण पर्य्याय गुणों से चिकित्सित होकर शरीर की धा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुओं के सम करनेवाले होते हैं ॥ ५ ॥

तेषान्तु मलप्रसादाख्यानां धातूनां स्रोतांस्ययनमुखानि तानि यथाविभागेन यथास्वंधातुनापूरयन्त्येवमिदंशरीरमशितपीतलीढखादितप्रभवम् । अशितलीढखादितप्रभवाश्चास्मिन्शरीरेव्याधयोभवन्ति॥६॥

मल तथा प्रसादनाम उन धातुओं के गमन मार्ग स्रोत कहलाते हैं वह स्रोत विभागके अनुसार अपने २ को धातुओं से पूर्ण करते हैं इस प्रकार से यह शरीर खायेगये पीयेगये चाटेगये तथा चर्बण कियेगये अन्न से उत्पन्न होताहै और इसी से शरीर में रोग भी होते हैं ॥ ६ ॥

हिताहितोपयोगविशेषास्त्वत्रशुभाशुभविशेषकराभवन्ति इति ॥७॥

आहारका हित तथा अहित उपयोगही शुभाशुभ विशेषको करता है ॥ ७ ॥

एवं वादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच ॥ दृश्यन्ते हि भगवन् हितसमाख्यातमप्याहारमुपयुञ्जानाव्याधिमन्तश्चागदाश्च तथैवाहितसमाख्यातमेवं दृष्टेकथंहिताहितोपयोगविशेषात्मकं शुभाशुभविशेषमुपलभेमहीति ॥ ८ ॥

इस प्रकार कहतेहुये भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने कहा कि हे भगवन्! हितकारी आहार के व्यवहार करनेवाले भी रोगवान् दिखाई देते हैं और अहितकारी आहार के व्यवहार करनेवाले नीरोग दिखाई देते हैं ऐसा होनेपर कैसे मालूम होय कि हित तथा अहित आहार का उपयोगही शुभ तथा अशुभ का कारण है ॥ ८ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः । नहिताहारोपयोगिनामग्निवेश तन्निमित्ता व्याधयोजायन्ते । नचकेवलंहिताहारोपयोगादेवसर्वं व्याधिभयमतिक्रान्तंभवति । सन्तिहि ऋतेपिहिताहारोपयोगादन्यारोगप्रकृतयः ।

तद्यथा ।—

कालविपर्य्ययः प्रज्ञापराधः परिणामश्च शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाश्चासात्म्याइति । ताश्चरोगप्रकृतयोरसान्सम्यगुपयुञ्जानं पुरुषमशुभेनोपपादयन्ति । तस्माद्धिताहारोपयोगिनोऽपिदृश्यन्तेव्याधिमंतः। अहिताहारोपयोगिनां पुनःकारणतोनसद्योदोषवान् भवत्यपचारोन हिसर्वाण्यपथ्यानि तुल्यदोषकराणि । नचसर्वेदोषास्तुल्यबलाः । न चसर्वाणिशरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि । तदेवह्यपथ्यंदेशकालसंयोग–वीर्य्यप्रमाणाति योगाद्भूयस्तरमपथ्यंसम्पद्यते । सएवदोषः संसृष्टयोनिविरुद्धोपक्रमोगम्भीरानु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गतः प्राणायतनसमुत्थोमर्मोपघा तीवाभूयान् कष्टतमःक्षिप्रकारितम श्चसम्पद्यते ॥ ९ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश हित आहार के व्यवहार करनेवालों को आहार निमित्तक रोग नहीं उत्पन्न होता किन्तु केवल हित आहार के व्यवहारही से सम्पूर्ण रोगोंका भय नहीं दूर होता क्योंकि अहित आहार के व्यवहार के सिवाय अन्यभी रोग के कारणहैं जैसे काल विपर्य्यय मज्ञापराध का परिणाम और असात्म्य शब्द स्पर्श रूप रस तथा गन्ध यह रोगोंके कारणहैं यह कारण रसों को अच्छी प्रकारसे व्यवहार करतेहुये भी पुरुषको रोगयुक्त करते हैं इसी से हित आहार के व्यवहार करनेवाले भी रोगी देखेजाते हैं और अहित आहार का व्यवहार करनेवाले पुरुषों का अपचार (बदपरहेजी) अनेक कारणों से शीघ्रही दोषकारी नहीं होता है क्योंकि संपूर्ण अपथ्य तुल्य दोषकारी नहीं होते हैं और संपूर्ण दोष तुल्य बलवान् नहीं होते और संपूर्ण शरीर रोगों के सहने में समर्थ नहीं होते जिससे कि रोग नहीं उत्पन्न हुआ था वही अपथ्य देश काल संयोग वीर्य्य तथा प्रमाण के अतियोग से अत्यन्त अहितकारी होजाता है और वही दोष यदि अनेक कारणों से उत्पन्न हुआ हो विरुद्ध चिकित्सा वाला हो और शरीर के किसी गंभीर स्थान में उत्पन्न हुआहो प्राणों के स्थानमें उत्पन्न हुआहो अथवा किसी मर्मस्थानको पीड़ादेता हो तो अत्यन्त कष्टदायक और शीघ्रही अत्यन्त अनिष्टकारी होताहै ॥ ९ ॥

शरीराणिचातिस्थूलानिअतिकृशा निअनिविष्टमांसशोणितास्थीनि दुर्बलानिअसात्म्याहारोपचितान्य ल्पाहाराणिअल्पसत्त्वानिवाभव न्तिअव्याधिसहानि ॥ १० ॥

अत्यन्त स्थूल अत्यन्त कृश अच्छे प्रका[र] से नहीं प्राप्तहुए मांस तथा रुधिर हड्डीआदि धातु वाले दुर्बल असात्म्य आहार से बढ़ेहुए स्वल्प आहारवाले और स्वल्प सत्त्ववाले शरीर रोगोंके सहनेमें असमर्थ होते हैं॥१०॥

विपरीतानिपुनर्व्याधिसहानिएभ्य श्चैवापथ्याहारदोषशरीरविशेषे भ्योव्याधयोमृदवोदारुणाःक्षिप्रसम् मुत्थाश्चिरकारिणश्चभवन्ति॥११॥

और इनसे विपरीत जो होते हैं वह रो[गों] को सहसक्ते हैं इन्हीं अपथ्याहार दोष त[था] शरीर की विशेषताओं से रोग मृदु अथ[वा] दारुण और शीघ्र बढ़नेवाले अथवा चि[र]कारी होते हैं ॥ ११ ॥

अतएवचवातपित्तश्लेष्माणःस्था नविशेषेप्रकुपिताव्याधिविशेषान भिनिर्वर्त्तयन्तिअग्निवेश ! तत्रर सादिषुस्थानेषुप्रकुपितानांदोषाणां यस्मिन्स्थानेयेयेव्याधयःसम्भव न्तितांस्तान्यथावदनुव्याख्यास्या मः ॥ १२ ॥

हे अग्निवेश इसी से वात पित्त तथा कफ शरीरके स्थान विशेषमें कुपित होकरविशेष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगों को उत्पन्न करते हैं रसादि स्थानों में कुपितहुये दोषों से जिस २ स्थान में जो २ रोग उत्पन्न होते हैं उनका आगे व्याख्यान करते हैं ॥ १२ ॥

अश्रद्धाचारुचिश्चास्यवैरस्यमरसज्ञता। हृल्लासोगौरवंतन्द्रासाङ्गमर्दो ज्वरस्तमः ॥ १३ ॥

अश्रद्धा अरुचि मुखकी विरसता रसका न मालूम पड़ना मचली गौरव तन्द्रा अंगमर्द ज्वर अन्धकारसा दीखना ॥ १३ ॥

पाण्डुत्वंस्रोतसांरोधःक्लैब्यंसादःकृशाङ्गता । नाशोऽग्नेरयथाकालं वलयःपलितानिच। रसप्रदोषजा रोगावक्ष्यन्तेरक्तदोषजाः १४ ॥

पाण्डुता स्रोतोंका रुकना नपुंसकता शिथिलता कृशता मन्दाग्नि और वृद्धावस्था के विनाही झुर्री तथा बालोंका पकना यह रोग रसके दूषित होनेसे उत्पन्न होते हैं आगे रुधिरके दूषित होनेसे जो रोग उत्पन्न होते हैं वह कहेजाते हैं ॥ १४ ॥

कुष्ठवीसर्पपिडिकारक्तपित्तमसृग्दरः । गुदमेढ्रास्यपाकश्चप्लीहागुल्मोऽथविद्रधी ॥ १५ ॥

कुष्ठ जहरबात पिड़िका रक्तपित्त प्रदर गुदा लिंग तथा मुखका पकजाना प्लीहा गुल्म विद्रधि ॥ १५ ॥

नीलिकाकामलाव्यङ्गं पिप्लवस्तिलकालकाः। दद्रुश्चर्म्मदलंश्वित्रः पामाकोठास्रमण्डलम्। रक्तप्रदोषाज्जायन्तेशृणुमांसप्रदोषजान् १६ ॥

नीलिका कामला व्यंग पिप्लव तिलकालक दाद चर्मदल श्वित्र (श्वेत कुष्ठ) खुजली चकत्ते और रक्तमण्डल यह रोग रुधिर के दूषित होने से उत्पन्न होते हैं अब आगे मांसके दूषित होनेसे जो रोग उत्पन्न होते हैं उनको सुनो ॥ १६ ॥

अधिमांसार्बुदंकीलगलशालूकशुण्डिकाः ॥ पूतिमांसालजीगण्डगण्डमालोपजिह्विकाः ॥ १७ ॥

अधिमांस अर्बुद कीलक गलरोग शालूक शुण्डिका पूतिमांस अलजी गलगण्ड गण्डमाला और उपजिह्विका ॥ १७ ॥

विद्यान्मांसाश्रयान्मेदःसंश्रयांस्तु प्रवक्ष्यते ॥ निदानानिप्रमेहाणांपूर्वरूपाणियानिच ॥ १८ ॥

यह रोग मांसके दूषित होनेसे उत्पन्न होतेहैं आगे मेदाके दूषित होने से उत्पन्न होने वाले रोगों को कहते हैं और प्रमेहों के निदान पूर्व्वरूप यहभी सब कहते हैं ॥ १८ ॥

अध्यस्थिदन्तदन्तास्थिभेदः शूलं विवर्णता । केशलोमनखश्मश्रुदोषाश्चास्थिप्रकोपजाः ॥ १९ ॥

अध्यस्थि (हड्डीपैहड्डी निकलना) अधिदन्त (दाँत पै दाँत निकलना) अस्थिभेद शूल विवर्णता और केश रोम नख तथा डाढ़ीका दूषित होना यह रोग हड्डियों के कुपित होने से उत्पन्न होते हैं ॥ १९ ॥

रुक्पर्वणांभ्रमोमूर्च्छादर्शनंतमसो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मताः। अरुषांस्थूलमूलानांपर्वजा नान्चदर्शनम्॥ २०॥ मज्जाप्रदोषाच्छुक्रस्यदोषात्क्लैब्यमहर्षणम्। रोगिणंक्लीबमल्पायुंविरूपंवाप्रजायते॥ २१॥ नवासञ्जायतेगर्भः पततिप्रस्रवत्यपि। शुक्रंहिदुष्टं सापत्यंसदारंबाधतेनरम्॥ २२॥

पोरुओं में पीड़ा भ्रम मूर्च्छा अन्धकारसा दिखाई देना और पोरुओंमें बड़े २ घावहोना यह रोग मज्जा के दूषित होनें से उत्पन्न होते हैं नपुंसकता तथा हर्षका न होना अथवा रोगी नपुंसक अल्पायु तथा विरूप सन्तान होना अथवा गर्भ का स्थित ही न होना और गर्भ स्थित होनेपर गर्भका वहजाना या गिरपड़ना यह दोष वीर्य्य के दूषित होने से उत्पन्न होते हैं दूषित वीर्य्य सहित स्त्री तथा पुत्रके मनुष्य को बाधा करता है॥ २०। २१। २२॥

इन्द्रियाणिसमाश्रित्य प्रकुप्यन्तिय दामलाः। उपतापोपघाताभ्यांयोज यन्तीन्द्रियाणिते॥ २३॥

जब मल इन्द्रियों का आश्रय करके कुपित होते हैं तब इन्द्रियों को नष्ट करते हैं अथवा पीड़ित करते हैं॥ २३॥

स्नायौशिराकण्डरयोर्दुष्टाः क्लिश्य न्तिमानवम्। स्तम्भसङ्कोचखल्ली भिर्ग्रन्थिस्फुरणसुप्तिभिः॥ २४॥

स्नायु शिरा तथा कंडराओं में दूषित हुए मल मनुष्य को स्तंभ संकोच वाँयटे ग्रंथियों का फड़कना और सुन्न इन रोगों से पीड़ित करते हैं॥ २४॥

मलानाश्रित्यकुपिताभेददोषप्रदूषणम्। दोषामलानांकुर्वन्तिसङ्गोत्सर्गावतीवच॥ २५॥

मलों का आश्रय करके कुपित हुए दोष मलभेद करते हैं तथा मलोंको दूषित करते हैं और मलों को रोक देते हैं अथवा बहुत निकालते हैं॥ २५॥

विविधादशितात्पीतादहिताल्लीढ खादितात्। भवन्त्येतेमनुष्याणांविकारयउदाहृताः॥ २६॥

खायेगये पीये गये चाटेगये तथा चर्वणकिये गये अनेक प्रकारके अहित अन्नों से मनुष्योंको ऊपर कहे हुए सब रोग उत्पन्न होते हैं॥ २६॥

तेषामिच्छन्ननुत्पत्तिं सेवेतमतिमान्सदा। हितान्येवाशितादीनिनस्युस्तज्जास्तथामयाः॥ २७॥

जो मनुष्य इन रोगों का उत्पन्न होना न चाहै वह हितकारीही आहार का सेवन करे जिस्से अहितकारी आहार से उत्पन्न होनेवाले रोग उसके नहीं उत्पन्न होयँ॥ २७॥

रसजानांविकाराणांसर्वलङ्घनमौषधम्। विधिशोणितकेऽध्यायेरक्तजानांभिषग्जितम्॥ २८॥

रससे उत्पन्न हुए विकारों की लंघन कराही औषधि है रक्तज विकारोंकी चिकित्सा विधिशोणितीय अध्यायमें कही गईहै॥ २८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मांसजानान्तुसंशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्मच। अष्टौनिन्दितसंख्याते मेदोजानांचिकित्सितम् ॥ २९ ॥

मांसजविकारों में शस्त्र क्षार तथा अग्नि के द्वारा संशोधन क्रिया करनी चाहिये मेदज विकारोंकी चिकित्सा अष्टौनिन्दितीय अध्यायमें कहीगई है ॥ २९ ॥

अस्थ्याश्रयाणांव्याधीनां पञ्चकर्माणिभेषजम्। वस्तयःक्षीरसर्पींषि तिक्तकोपहितानिच ॥ ३० ॥

हड्डियों में हुए विकारोंकी चिकित्सा पंचकर्म से करनी चाहिये और तिक्तकयुक्त दूध तथा घृतके द्वारा वस्ति लेनी चाहिये ॥ ३० ॥

मज्जाशुक्रसमुत्थानामौषधंस्वादुतिक्तकम्। अन्नंव्यवायव्यायामौशुद्धिःकालेचमात्रया ॥ ३१ ॥

मज्जा तथा वीर्य्य में हुए दोषोंकी चिकित्सा मधुर तथा तिक्त अन्न मैथुन व्यायाम और योग्य समयमें मात्राके अनुसार वमनादि संशोधन है ॥ ३१ ॥

शान्तिरिन्द्रियजानान्तु त्रिमर्मीये प्रवक्ष्यते ॥ ३२ ॥

इन्द्रियों में हुए विकारोंकी चिकित्सा त्रिमर्मीय अध्यायमें वर्णन करेंगे ॥ ३२ ॥

स्नाय्वादिजानांप्रशमोवक्ष्यतेवातरोगिके। नवेगान्धारणेऽध्यायेचिकित्सासंग्रहःकृतः ॥ ३३ ॥ मलजानांविकाराणांसिद्धिश्चोक्ताक्वचित् ॥ ३४ ॥

स्नायु आदिक में हुए रोगों की चिकित्सा वातरोगिक अध्यायमें कहीजायगी नवेगान्धारणीय नाम अध्यायमें मलज रोगों की चिकित्सा का संग्रह कियागया है और अन्य स्थानों में भी कहीं २ इनकी चिकित्सा कही गई है ॥ ३३ । ३४ ॥

व्यायामादुष्मणस्तैक्ष्ण्याद्धितस्यानवधारणात्। कोष्ठाच्छाखामला यान्तिद्रुतत्वान्मारुतस्यच ॥ ३५ ॥

व्यायाम ऊष्माकी तीक्ष्णता हितकार्य्यों का न करना और वायु का शीघ्रकारी होना इन कारणों से कोष्ठमें स्थित मल शाखाओं (रस रक्तादि धातु) में प्राप्त होतेहैं ॥ ३५ ॥

तत्रस्थाश्चविलम्बन्तेकदाचिन्नासमीरिताः। नादेशकालेकुप्यन्तिभूयोहेतुप्रतीक्षिणः ॥ ३६ ॥

और वहां यदि किसी कारणसे प्रेरित न होकर देरीतक स्थित रहते हैं और फिर हेतु की प्रतीक्षा करके देश तथा कालके विना कुपित नहीं होते ॥ ३६ ॥

वृद्ध्याभिष्यन्दनात्पाकात्स्रोतोमुखविशोधनात्। शाखामुक्त्वामलाःकोष्ठं यान्तिवायोश्चनिग्रहात् ॥ ३७ ॥

वृद्धि से अभिष्यन्द से पाकसे स्रोतों के मुखों के शुद्ध होने से और वायुके निग्रह से मल शाखाओंसे कोष्ठमें चलेजाते हैं ॥ ३७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजातानामनुत्पत्तौजातानांविनिवृत्तये। रोगाणांयोविधिर्दृष्टःसुखार्थीतंसमाचरेत्॥ ३८॥

नहीं उत्पन्न हुए रोगों की अनुत्पत्ति के लिये और उत्पन्न हुए रोगोंकी निवृत्ति के लिये जो विधि कहीगईहै सुखार्थी पुरुष उस का सेवन करे॥ ३८॥

सुखार्थाःसर्वभूतानां मताःसर्वाःप्रवृत्तयः। ज्ञानाज्ञानविशेषात्तुमार्गामार्गप्रवृत्तयः॥ ३९॥

सम्पूर्ण प्राणियों की सम्पूर्ण प्रवृत्ति सुख के लियेही होती है परन्तु ज्ञान तथा अज्ञान की विशेषता से मार्ग और कुमार्ग में प्रवृत्ति होती है॥ ३९॥

हितमेवानुरुध्यन्ते प्रसमीक्ष्यपरीक्षकाः। रजोमोहावृतात्मानःप्रियमेवतुलौकिकाः॥ ४०॥

परीक्षक लोग विचार करके हितही का सेवन करते हैं और रजोगुण तथा मोहसे व्याप्त लौकिक लोग प्रियवस्तु का सेवन करते हैं अर्थात् हिताहितका विचार नहीं करतेहैं ४०॥

श्रुतंबुद्धिःस्मृतिर्दार्ढ्यं धृतिर्हितनिषेवणम्। वाक्प्रशुद्धिःशमोधैर्य्यमाश्रयन्तिपरीक्षकम्॥ ४१॥

श्रुत बुद्धि स्मृति दृढ़ता धृति हितकार सेवन वाणी की शुद्धता शम और धैर्य्य यह गुण परीक्षक को प्राप्त होते हैं॥ ४१॥

लौकिकंनाश्रयन्त्येतेगुणामोहतमश्रितम्। तन्मूलाबहुलाश्चैव रोगाः शारीरमानसाः॥ ४२॥

मोह तथा तमसे व्याप्त लौकिक पुरुष को यह गुण नहीं प्राप्त होते हैं और इसीसे बहुत से शारीरिक तथा मानसिक बहुतसे रोग उनको प्राप्त होते हैं॥ ४२॥

प्रज्ञापराधाद्ध्यहितानर्थान्पञ्चनिषेवते। सन्धारयतिवेगांश्चसेवतेसाहसानिच॥ ४३॥

अज्ञ पुरुष बुद्धिके अपराध से पांचों इन्द्रियों के अहित विषयों का सेवन करताहै वेगों को रोकताहै साहस करता है॥ ४३॥

तदात्वसुखसञ्ज्ञेषुभावेष्वज्ञोऽनुरज्यते। रज्यतेनतुविज्ञाताविज्ञानेह्यमलीकृते॥ ४४॥

इस्से असुखकारी भावों में अनुरक्त होता है परन्तु निर्मल विज्ञानयुक्त ज्ञाता पुरुष असुखकारी भावों में नहीं अनुरक्त होता ४४।

नरागान्नाप्यविज्ञानादाहारमुपयोजयेत्। परीक्ष्यहितमश्नीयाद्देहोह्याहारसम्भवः॥ ४५॥

रागसे तथा अज्ञानसे आहार का व्यवहार न करे किन्तु परीक्षा करके हितकारी आहार करे क्योंकि शरीर आहार से ही उत्पन्न है॥ ४५॥

आहारस्यविधावष्टौविशेषाहेतुसंज्ञकाः। शुभाशुभसमुत्पत्तौतान्परीक्ष्योपयोजयेत्॥ ४६॥

आहारविधिमें हेतुसंज्ञक जो आठ विशे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष हैं उनको शुभ तथा अशुभ की उत्पत्ति में परीक्षा करके उपयोग करे ॥ ४६ ॥

परिहार्य्याण्यपथ्यानिसदापरिहरन्नरः। भवत्यनृणतांप्राप्तःसाधूनामिहपण्डितः ॥ ४७ ॥

त्याग करने के योग्य अपथ्यों को सदैव त्याग करता हुआ पण्डित पुरुष साधुओं से अनृणताको प्राप्त होता है ॥ ४७ ॥

यत्तुरोगसमुत्थानमशक्यमिहकेनचित्। परिहर्त्तुंनतत्प्राप्यशोचितव्यंमनीषिणा ॥ ४८ ॥

जो रोगकी उत्पत्ति किसी से भी हटाई नहीं जासक्ती है उसे प्राप्त होकर बुद्धिमान्को शोक नहीं करना चाहिये ॥ ४८ ॥

तत्र श्लोकाः।

आहारसम्भवोयस्तुरोगाश्चाहारसम्भवाः। हिताहितविशेषाश्चविशेषःसुखदुःखयोः ॥ ४६ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। जो आहारसंभव रोग आहार से उत्पन्न होता है हित तथा अहितकी विशेषता सुख दुःखकी विशेषता ४९॥

सहत्वेचासहत्वेचदुःखानांदेहसत्त्वयोः। विशेषोरोगसंघाश्चधातुजायेपृथक्पृथक् ॥ ५० ॥

दुःखों के सहसकने में तथा न सहसकने में देह तथा सत्त्वकी विशेषता रसादि धातुओंसे उत्पन्न हुए अलग २ रोगसमूह ॥ ५० ॥

तेषाञ्चैवप्रशमनंकोष्ठाच्छाखाउपेत्यच। दोषायथाप्रकुप्यन्तिशाखाभ्यःकोष्ठमेत्यच ॥ ५१ ॥

इनकी शान्ति कोष्ठसे शाखाओं में जाकर जिस प्रकार दोष कुपित होते हैं जिस प्रकार शाखाओं से कोष्ठमें जाते हैं ॥ ५१ ॥

प्राज्ञाज्ञयोर्विशेषश्चस्वस्थातुरहितञ्चयत्। विविधाशितपीतीयेतत्सर्वंसम्प्रकाशितम् ॥ ५२ ॥

इतिअग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृतेसूत्रस्थानेअन्नपानचतुष्केविविधाशितपीतीयोनामअष्टाविंशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २८ ॥

बुद्धिमान तथा मूर्ख की विशेषता और स्वस्थ तथा रोगी को जो हितहै यह सब विषय इस विविधाशितपीतीय अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने प्रकाशित किया ॥ ५२ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें विविधाशितपीतीयनामअट्ठाईसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २८ ॥

उन्तीसवांअध्याय ॥

अथातोदशप्राणायतनीयमध्यायंव्याख्यास्यामः।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

दशैवायतनान्याहुःप्राणायेषुप्रतिष्ठिताः। शंखौमर्म्मत्रयंकण्ठोरक्तशुक्रौजसीगुदम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त दशप्राणायतनीय अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संज्ञास्तेपांयथाकृताः॥ अयनान्ताः षड्ग्र्याश्चरूपंवेदविदाञ्चयत् ॥८०॥

तिस में यह श्लोक हैं। हृदय में स्थित दश महामूलनाड़ी जिस प्रकार से नाड़ियों की यह संज्ञा होती है माणवर्द्धक आदिकों के छः मुख्य पदार्थ आयुर्वेद जाननेवालों के लक्षण॥ ८०॥

सप्तकश्चाष्टकश्चैव परिप्रश्नःसनिर्ण यः। यथावाच्यंयदर्थञ्च षड्विधाश्चै कदेशिकाः॥ ८१॥

निर्णयसहित सात तथा आठ प्रश्न जिस प्रकार से जिसलिये करने चाहिये और छः प्रकारके एकदेशिक॥ ८१॥

अर्थेदशमहामूलेसर्वमेतत्प्रकाशि तम्। संग्रहश्चैवमध्यायस्तन्त्रस्या स्यैवकेवलः॥ ८२॥

यह सब विषय इस दशमहामूलीय नाम अध्याय में भगवान् आत्रेय जी ने कहा इस अध्याय में केवल इस तन्त्रका सम्पूर्ण संग्रह है॥ ८२॥

यथासुमनसांसूत्रंसंग्रहार्थंविधीयते। संग्रहार्थंयथार्थानामृषिणासंग्रहःकृ तः॥ ८३॥

इतिअग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते सूत्रस्थानेऽर्थेमहादशमूलीयोनाम त्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ ३०॥

जैसे पुष्पों की माला बनाने के लिये सूत्रकी आवश्यकता होती है उसीप्रकार अर्थों के संग्रह के लिये भगवान् आत्रेयजी ने यह सूत्रस्थान कहा है॥ ८३॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रतिसंस्कृततन्त्र में अर्थेदशमूलीयनाम तीसवां अध्याय समाप्तहुआ ३० सूत्रस्थानसमाप्त॥

अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते। इयतावधिनासर्वसूत्रस्थानंस माप्यते॥

निदानस्थान॥

प्रथम अध्याय॥

अथातो निदानस्थानं लिख्यते। अथातोज्वरनिदानंव्याख्यास्यामः इति हस्माहभगवानात्रेयः। इहखलुहेतुर्निमित्तमायतनंकर्त्ताका रणंप्रत्ययःसमुत्थाननिदानमित्यन र्थान्तरम्। तत्त्रिविधअसात्म्येन्द्रि यार्थसंयोगःप्रज्ञापराधःपरिणामश्चे ति। अतस्त्रिविधविकल्पाव्याधयः प्रादुर्भवन्त्याग्नेयसौम्यवायव्याःद्वि विधाश्चापरेराजसास्तामसाश्च। त त्रव्याधिरामयोगदआतङ्कोयक्ष्मा ज्वरोविकारइत्यनर्थान्तरम्। तस्यो पलब्धिर्निदानपूर्वरूपलिङ्गोपशय सम्प्राप्तितश्चतत्रनिदानंकारणमित्यु क्तमग्रेपूर्वरूपंप्रागुत्पत्तिर्लक्षणंव्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धेः। प्रादुर्भूतलक्षणंपुनर्लिङ्गंतत्रलिङ्गमाकृतिर्लक्षणंचिह्नंसंस्थानंव्यञ्जनंरूपमित्यनर्थान्तरमस्मिन्नर्थे। उपशयःपुनर्हेतुव्याधिविपरीतानां विपरीतार्थकारिणाञ्चौषधाहारविहाराणां उपयोगःसुखानुबन्धः । संप्राप्तिर्जातिरागतिरित्यनर्थान्तरंव्याधेःसासंख्याप्राधान्यविधिविकल्पबलकालविशेषैर्भिद्यते। संख्या यथाष्टौज्वराःपञ्चगुल्माःसप्तकुष्ठान्येवमादि । प्राधान्यंपुनर्दोषाणांतरतमयोगेनोपलभ्यतेतत्रद्वयोस्तरस्त्रिषुतमइति । विधिर्नामद्विविधाव्याधयोनिजागन्तुभेदेन।त्रिविधास्त्रिदोषभेदेनचतुर्विधाःसाध्यासाध्यमृदुदारुणभेदेन पृथक् । विकल्पोनामसमवेतानां पुनर्दोषाणामंशांशबलविकल्पोऽस्मिन्नर्थे। बलकालविशेषःपुनर्व्याधीनामृत्वहोरात्राहारकालविधिनियतोभवति । तस्माद्व्याधीन्भिषगनुपहतसत्त्वबुद्धिर्हेत्वादिभिर्भावैर्यथावदनुबुध्येत । इत्यर्थसंग्रहोनिदानस्थानस्योद्दिष्टोभवति तंविस्तरेणभूयः परमतोऽनुव्याख्यास्यामः । तत्रप्रथमएवतावदाद्याल्लोभाभिद्रोहकोपप्रभवानष्टौव्याधीन्निदानपूर्वेणक्रमेणअनुव्याख्यास्यामः। तथासूत्रसंग्रहमात्रंचिकित्सायाःचिकित्सितेषुचोत्तरकालंयथोद्दिष्टंविकाराननुव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त ज्वर के निदान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा— इस शास्त्र में हेतु निमित्त आयतन कर्ता कारण प्रत्यय समुत्थान तथा निदान यह सब एकार्थवाचक शब्द हैं निदान तीन प्रकार का है जैसे असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग प्रज्ञापराध तथा परिणाम निदान से आग्नेय सौम्य तथा वायव्य यह तीन प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और राजस तथा तामस दो प्रकार के अन्यरोग होते हैं व्याधि आमय गद आतङ्क यक्ष्मा ज्वर, विकार तथा रोग यह एकार्थवाचक शब्द हैं निदान पूर्वरूप, लक्षण, उपशय तथा संप्राप्ति के द्वारा रोग का ज्ञान होता है इन में से निदान कारण को कहते हैं यह पहलेही कहागया, रोग उत्पन्न होने से पहलेही जो लक्षण उत्पन्न होते हैं उसे पूर्वरूप कहते हैं रोगके उत्पन्न होने पर जो चिह्न उत्पन्न होते हैं उन्हें लक्षण कहते हैं लिङ्ग आकृति लक्षण चिह्न संस्थान व्यञ्जन तथा रूप यह एकार्थ वाचक शब्द हैं हेतु विपरीत औषध हेतु विपरीत आहार हेतुविपरीत विहार व्याधि विपरीत औषध व्याधिविपरीत आहार व्याधिविपरीत विहार हेतुव्याधि उभय विपरीत औषध हेतुव्याधि उभय विपरीत आहार हेतुव्याधि उभय विपरीतविहार हेतुविपरीतार्थकारी औषध हेतुविपरीतार्थकारी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आहार हेतुविपरीतार्थकारी विहार व्याधि विपरीतार्थकारी औषध व्याधि विपरीतार्थकारी आहार व्याधिविपरीतार्थकारी विहार हेतुव्याधि उभय विपरीतार्थकारी औषध हेतु व्याधि उभय विपरीतार्थकारी आहार हेतु व्याधि उभयविपरीतार्थकारी विहार इन के उपयोग से जो सुख की प्राप्ति उसे उपशय कहते हैं सम्प्राप्ति जाति तथा आगति यह एकार्थवाचक शब्द हैं रोगों की संख्या प्रधानता विधि विकल्प और बल तथा काल की विशेषता से सम्प्राप्ति के भेद होते हैं संख्या जैसे आठ ज्वर पांच गुल्म सात कुष्ठ इत्यादि प्रधानता दोषों के तरतम योग से जानीजाती है दो दोषों की प्रधानता में तर और तीन दोषों की प्रधानता में तम जैसे वृद्धतर तथा वृद्धतम वायु इत्यादि विधि अर्थात् प्रकार जैसे निज तथा आगन्तुज भेद से दो प्रकार के रोग होते हैं त्रिदोषों के भेद से तीन प्रकार के रोग होते हैं और साध्य असाध्य मृदु तथा दारुण भेद से चार प्रकार के रोग होते हैं मिलेहुये दोषों की अंशांशकल्पना को विकल्पकल्पना कहते हैं बल तथा काल की विशेषता ऋतु दिन रात्रि भोजनकाल तथा भोजन की विधि से जानी जाती है इस से वैद्य मन तथा बुद्धि को स्थिर करके रोगों को निदानादि के द्वारा अच्छे प्रकार से जाने इस प्रकार निदानस्थान का संक्षेप कहा गया आगे विस्तार से इस का वर्णन किया जाता है इस निदानस्थान में पहले लोभ तथा द्रोह से उत्पन्न हुये आठ रोगों का निदानपूर्व्वक क्रम से व्याख्यान किया जायगा और चिकित्सा के सूत्र का संक्षेपमात्र कहा जायगा और चिकित्सितस्थान में रोगों की चिकित्सा विस्तारपूर्व्वक वर्णन की जावेगी ॥ १ ॥

इहखलुज्वरएवादौविकाराणामुपदिश्यते । तत्प्रथमत्वाच्छारीराणाम् । अथखलुअष्टाभ्यःकारणेभ्योज्वरःसञ्जायतेमनुष्याणांतद्यथावातात्पित्तात्कफाद्वातपित्ताभ्यांपित्तश्लेष्मभ्यांवातश्लेष्मभ्यांवातापित्तश्लेष्मभ्यःआगन्तोरष्टमात्कारणात्तस्यनिदानपूर्वरूपलिङ्गोपचयविशेषानुपदेक्ष्यामः । तद्यथारूक्षलघुशीतव्यायामवमनविरेचनास्थापनशिरोविरेचनातियोगवेगसन्धारणानशनाभिघातव्यवायोद्वेगशोकशोणितातिसेकजागरणविषमशरीरन्यासेभ्योऽतिसेवितेभ्योवायुःप्रकोपमापद्यते । सयदाप्रकुपितःप्रविश्यामाशयमुष्मणःस्थानमुष्मणासह मिश्रीभूतआद्यमाहारपरिणामधातुं रसनामानमन्ववेद्यरसस्वेदवहानिचस्रोतांसिचपिधायअग्निं उपहत्यपक्तिस्थानादुष्माणंवहिः निरस्यकेवलंशरीरमनुपद्यतेतदाज्वरमभिनिर्वर्त्तयति तस्येमानिलिङ्गानिभवन्ति । तद्यथाविषमारम्भविसर्गित्वमूष्मणोवैषम्यंतीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतनुभावानवस्थानानिज्वरस्यज रणान्तेदिवसान्ते घर्मान्तेवाज्वरा भ्यागमनमभिवृद्धिर्वाज्वरस्यविशे षेण परुषारुणवर्णत्वंनखनयनवद नमूत्रपुरीषत्वचामत्यर्थंरूक्षीभाव श्चानेकविधोपमाश्चचलाचलाश्चवे दनास्तेषां तेषामङ्गावयवानाम् । तद्यथापादयोःसुप्ततापिण्डिकयोरु द्वेष्टनंजानुनोःकेवलानाञ्चसन्धीनां विश्लेषणमूर्वोःसादः कटीपार्श्वपृ ष्ठस्कन्धबाह्वंसोरसाञ्चभग्नरुग्ण मृदितमथितचटितावपीडितावतुन्न त्वमिवहन्वोरप्रसिद्धिः स्वनश्चकर्ण योःशंखयोर्निस्तोदः कषायास्यत्व मास्यवैरस्यं वामुखतालुकण्ठशोषः पिपासाहृदयग्रहःशुष्कछर्दिःशुष्क कासःक्षवथूद्गारविनिग्रहोऽन्नरसखे दःप्रसेकारोचकाविपाकाः विषाद विजृम्भाविनामवेपथुश्रमभ्रमप्र लापजागरणलोमहर्षदन्तहर्षास्त थोष्माभिप्रायतानिदानोक्तानामनु पचयोविपरीतोपचयश्चेतिवातज्वर लिङ्गानिस्युः । तृष्णाम्ललवण क्षारकटुकाजीर्णभोजनेभ्योऽतिसे वितेभ्यस्तथातितीक्ष्णातपाग्निस न्तापश्रमक्रोधविषमाहारेभ्यःपित्तं प्रकोपमापद्यते । तद्यथाप्रकुपित मामाशयादेवोष्माणमुपसंसृज्या द्यमाहारपरिणामधातुंरसनामानम न्वावेद्यरसस्वेदवहानिचश्रोतांसि पिधायद्रवत्वादग्निमुपहत्य पंक्ति स्थानादूष्माणंबहिर्द्धारंनिरस्यप्रपी डयन्केवलंशरीरमुपपद्यतेतदाज्वर मभिनिर्वर्त्तयति तस्येमानिलिङ्गा निभवन्ति । तद्यथायुगपदेवकेव लेशरीरे ज्वराभ्यागमनमभिवृद्धि र्वा । भुक्तस्यविदाहकालेमध्यन्दि नेऽर्द्धरात्रेशरदिवाविशेषेणकटुका स्यताघ्राणमुखकण्ठोष्ठतालुपाक स्तृष्णाभ्रमोमदोमूर्च्छापित्तच्छर्द नमतीसारोऽन्नद्वेषःसदनंस्वेदः प्रला पोरक्तकोठाभिनिर्वृत्तिः शरीरेहरि तहारिद्रत्वंनखनयनवदनमूत्रपुरीष त्वचामत्यर्थमूष्मणस्तीव्रभावोऽति मात्रंदाहः शीताभिप्रायतानिदा नोक्तानामनुपचयोविपरीतोपचय श्चेतिपित्तज्वरलिङ्गानिभवन्ति । स्निग्धमधुरगुरुशीतपिच्छिलाम्ल लवण-दिवास्वप्न-हर्षव्यायामेभ्यो ऽतिसेवितेभ्यः श्लेष्माप्रकोपमा पद्यते । सयदाप्रकुपितःप्रवि श्यामाशयमूष्मणासहमिश्रीभूत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माद्यमाहारपरिणामधातुंरसनामा
नमन्ववेत्यरसस्वेदवहानिचस्रोतां
सिपिधायाग्निमुपहत्यपंक्तिस्थाना
दूष्माणंवाबहिःनिरस्यप्रपीडयन्के
वलंशरीरमुपपद्यतेतदाज्वरमभिनि
र्वर्त्तयति । तस्येमानिलिङ्गानिभ
वन्ति । तद्यथायुगपदेवकेवलेश
रीरे ज्वराभ्यागमनमभिवृद्धिर्वाभु
क्तमात्रेपूर्वाह्नेपूर्वरात्रेवसन्तकाले
वाविशेषेण गुरुगात्रत्वमनन्नाभि
लापः श्लेष्मप्रसेकोमुखस्यचमाधु
र्य्यंहृल्लासोहृदयोपलेपःस्तिमितत्वं
छर्दिर्मृद्वग्निता निद्रायाआधिक्यं
स्तम्भःतन्द्राश्वासःकासःप्रतिश्या
यःशैत्यंश्वैत्यञ्चनयननखवदनमूत्र
पुरीषत्वचामत्यर्थंशीतपिडकाभृश
मङ्गेभ्यउत्तिष्ठतिउष्णाभिप्रायता
निदानोक्तानामनुपचयोविपरीतो
पचयश्चेतिश्लेष्मज्वरलिङ्गानिभव
न्ति । विषमाशनादनशनादन्न
स्यअपरिवर्त्ताद्दतुव्यापत्तेः असा
त्म्यागन्धोपघ्राणाद्द्विषोपहतस्यो
दकस्यउपयोगाद्गरेभ्योगिरीणामुप
श्लेषात् स्नेहस्वेदवमनविरेचना
स्थापनानुवासनशिरोविरेचनाना
मयथावत्प्रयोगात्स्त्रीणाञ्चविषमप्र

जननात्प्रजातानाञ्चमिथ्योपचारा
द्यथोक्तानाञ्च हेतूनांमिश्रीभावाद्य
थानिदानंद्वन्द्वानामन्यतमःसर्वेवा
त्रयोदोषायुगपत्प्रकोपमापद्यन्ते ।
तेप्रकुपितास्तयैवानुपूर्व्याज्वरमभि
निर्वर्त्तयन्तितत्रयथोक्तानांज्वरलि
ङ्गानांमिश्रीभावविशेषदर्शनाद्द्वं
द्विकमन्यतमंज्वरंसान्निपातिकंवा
विद्यात् । अभिघाताभिषङ्गाभिचा
राभिशापेभ्यआगन्तुर्ब्यथापूर्वोज्व
रोऽष्टमोभवति । सकञ्चित्कालमा
गन्तुःकेवलोभूत्वापश्चाद्दोषैरनुबध्य
ते । अभिघातजोवायुनादुष्टशोणि
ताधिष्ठानेनअभिषङ्गजःपुनर्वात
पित्ताभ्याम्अभिचाराभिशापजौ
तुसन्निपातेनउपनिबध्यते । सप्त
विधाज्ज्वराद्विशिष्टलिङ्गोपक्रमस
मुत्थितत्वाद्विशिष्टोवेदितव्यः ।
कर्मणासाधारणेन चोपक्रम्येतिअ
ष्टविधाज्वरप्रकृतिरुक्ता । ज्वरस्त्वे
कएवसन्तापलक्षणस्तमेवाभिप्राय
विशेषाद्विविधमाचक्षतेनिजागन्तु
विशेषाच्चतत्रनिजंद्विविधंत्रिविधं
चतुर्विधंसप्तविधञ्चाहुर्वातादिविक
ल्पात्तस्येमानिपूर्वरूपाणि । तद्य
थामुखवैरस्यंगुरुगात्रत्वमनन्नाभि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लापश्चक्षुषोराकुलत्वमस्नागमनंनि
द्रायाआधिक्यमरतिर्जृम्भाविनामो
वेपथुःश्रमभ्रमप्रलापजागरणलोम
हर्षशब्दगीतवातातपासहत्वमरो
चकाविपाकौदौर्बल्यमङ्गमर्दःसदन
मल्पप्राणतादीर्घसूत्रताआलस्यमु
पचितस्यकर्मणोहानिःप्रतीपतास्व
कार्य्येषुगुरूणांवाक्येषुअभ्यसूया
बालेषुप्रद्वेषःस्वधर्मेषुअचिन्तामा
ल्यानुलेपनभोजनक्लेशनंमधुरेषुभ
क्ष्येषुप्रद्वेषोऽम्ललवणकटुकप्रिय
ताचेतिज्वरपूर्वरूपाणि । प्राक्स
न्तापादपिचैनंसन्तापार्त्तमनुबध्न
न्तीत्येतानिएकैकज्वरलिङ्गानिवि
स्तरसमासाभ्याम् । ज्वरस्तुखलु
महेश्वरकोपप्रभवःसर्वप्राणिनांप्रा
णहरोदेहेन्द्रियमनस्तापकरःप्रज्ञाब
लवर्णहर्षोत्साहसादनार्त्तिश्रमक्लम
मोहाहारोपरोधसञ्जननोज्वरयति
शरीराणिइतिज्वरः । नान्येव्या
धयस्तथादारुणाबहूपद्रवादुश्चिकि
त्स्यायथायमिति । सर्वरोगाधिप
तिर्ज्वरःनानातिर्य्यग्योनिषुबहुवि
धैःशब्दैरभिधीयतेसर्वप्राणभृतश्च
सज्वराएवजायन्तेसज्वराएवम्रिय
न्तेसमहामोहास्तेनाभिभूताःप्राग्दै
हिकंदेहिनःकर्मकिञ्चिन्नस्मरन्तिस
र्वप्राणिभ्यश्चज्वरएवप्राणानादत्ते।
तत्रास्यपूर्वरूपदर्शनेज्वरादौवाहि
तंलघ्वशनमतर्पणंवाज्वरस्यामा
शयसमुत्थत्वात् । ततःकषायपा
नाभ्यङ्गस्वेदप्रदेहपरिषेकानुलेपन
वमनविरेचनास्थापनानुवासनोप
पशमननस्तःकर्मधूपधूमपानाञ्ज
नक्षीरभोजनविधानंयथास्वंयुक्त्या
जीर्णज्वरेषुसर्वेष्वेवसर्पिषःपानंप्र
शस्यते । यथास्वमौषधसिद्धस्य
सर्पिर्हिस्नेहाद्वातंशमयतिसंस्कारा
त्कफंशैत्यात्पित्तमूष्माणंचतस्मा
ज्जीर्णज्वरेषुतुसर्वेष्वेवसर्पिर्हितमु
दकमिवाग्निप्लुष्टेषुद्रव्येष्विति॥२॥

यहांपर पहले ज्वरकाही वर्णन कियाजाता है क्योंकि शारीरिक रोगोंमें ज्वरही प्रथम है आठ कारणों से मनुष्यों को ज्वर आता है जैसे वात से पित्त से कफसे वातपित्त से पित्त कफ से वातकफ से वातपित्त कफ से और आगन्तु कारण से ज्वर के निदान पूर्वरूप लक्षण उपशय तथा सम्प्राप्ति का वर्णन किया जाता है जैसे रूक्ष लघु तथा शीतल वस्तु व्यायाम वमन विरेचन तथा आस्थापन का अतियोग मल मूत्रादि वेगों का रोकना लंघन अभिघात मैथुन उद्वेग (घबराहट) शोक रुधिर का अधिक निकलना रात्रि में जागना तथा विषमता से शरीर को रखना इन सब के अधिक सेवनसे वायु कुपित होती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह कुपितवायु आमाशय में प्रवेश करके ऊष्मासे मिलकर आहार के परिणाम से हुई रसनाम पहली धातु को पाकर रस तथा स्वेदकी लेचलनेवाली नाड़ियों को बन्दकर के अग्नि को मन्द करके पक्काशय से ऊष्मा को बाहर निकालकर सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होती है तब ज्वर उत्पन्न होता है उस ज्वरमें यह लक्षण होते हैं जैसे ज्वरके चढ़ने की तथा उतरनेकी विषमता उष्णताकी विषमता ज्वरकी तीक्ष्णताका तथा स्वल्पताका कुछ ठीक न होना भोजनके परिपाकके अन्त में दिनान्त में अथवा वर्षाकाल में ज्वरका आना या बढ़ना नख नेत्र मुख मूत्र तथा विष्ठाका विशेष कर्कश तथा अरुण होना शरीर का अधिक क्लिष्ट (थकितसा) होना और अंगोंमें अनेक प्रकारकी चलाचल पीड़ा जैसे पैरोंका सुन्न होजाना पिंडलियों का ऐंठना घुटने तथा संधियों में टूटने कीसी पीड़ा जंघाओंमें शिथिलता कमरमें टूटनेकीसी पीड़ा पसलियों में व्यथा पीठमें मर्दनकीसी पीड़ा स्कंधोंमें मथनेकीसी पीड़ा भुजाओं में चड़चड़ाहट अंसोंमें अवपीड़ित तथा वक्षस्थल में सुई गड़नेकीसी पीड़ा जावड़ों का जकड़ना कानोंमें सनसनाहट होना कपालकी हड्डियों का दुखना मुखका कषैला अथवा विरस होना मुख तालु तथा कण्ठका सूखना तृषा हृदयग्रह शुष्क छर्दि शुष्कखांसी छींक तथा डकारका रुकना अन्नरसयुक्त थूक आना अरुचि परिपाक का न होना विषाद जंभाई विनाम (एक प्रकार की पीड़ा) कम्प श्रम भ्रम, प्रलाप निद्रा का नाश, रोमहर्ष दन्तहर्ष, उष्णता की इच्छा, निदान में कहीहुई द्रव्यादिकों का अनुपशय और उन से विपरीत द्रव्यादिकों का उपशय यह वातज्वरके लक्षण हैं उष्ण, अम्ल, लवण, क्षार तथा कटुवस्तुओं के अधिक भोजनसे, अजीर्णमें भोजन करने से अत्यन्त तीक्ष्ण धूप तथा अग्नि के सन्ताप से, श्रम से, क्रोध से तथा विषम आहार से, पित्त कुपित होता है कुपितहुआ पित्त आमाशयमें ही ऊष्मा से मिलकर आहारकी परिणामरूप रसनाम प्रथम धातुमें प्राप्तहोके रस तथा स्वेदके लेचलनेवाली नाड़ियों को रोककर द्रवता से जठराग्नि को मन्द करके पक्काशय से ऊष्मा को निकालकर पीड़ा करता हुआ सम्पूर्ण शरीरमें प्राप्त होताहै इससे ज्वर उत्पन्न होताहै उस ज्वरके यह लक्षण हैं जैसे एकसाथही सम्पूर्ण शरीरमें ज्वर चढ़ना अथवा ज्वरका बढ़ना भोजनके परिपाक समयमें मध्याह्न में अर्धरात्रिमें अथवा शरदृतुमें ज्वरका आना अथवा विशेष होना मुख का कडुवा होना नासिका मुख कण्ठ ओष्ठ तथा तालुका पकना तृषा भ्रम मोह मूर्च्छा पित्तकी वमन अतीसार अन्नमें अरुचि स्वेद प्रलाप शरीर में लाल चकत्ते पड़जाना नख नेत्र मुख मूत्र पुरीष तथा त्वचा का हरा होजाना अथवा पीला होजाना ऊष्मा का बहुत तीव्र होना अत्यन्त दाह शीत की इच्छा निदानोक्त आहारादिकों का अनुपचय (हानि) और उससे विपरीत आहारादिकोंका उपचय (वृद्धि) यह पित्तज्वर के लक्षण हैं स्निग्ध मधुर गुरु शीतल पिच्छिल अम्ल तथा लवण इन वस्तुओं का अधिक भोजन दिनमें सोना हर्ष तथा व्यायाम इनके अधिक सेवनसे कफ कुपित होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है कुपित हुआ कफ आमाशय में जाकर ऊष्मासे मिलकर आहार की परिणामरूप रसनाम प्रथम धातुका आश्रय करके रस तथा स्वेदकी लेचलनेवाली नाड़ियों को रोक के अग्नि को मन्द करके पक्वाशय से ऊष्मा को बाहर निकालकर पीड़ा करता हुआ सम्पूर्ण शरीरमें प्राप्त होताहै इससे ज्वर उत्पन्न होता है उसके यह लक्षण हैं जैसे एक साथही शरीर भरमें ज्वर चढ़ना अथवा ज्वरका बढ़ना भोजन करनेपर पूर्वाह्न में पूर्वरात्रिमें अथवा वसन्तऋतु में ज्वरका विशेष करके बढ़ना अथवा आना अंगोंका भारीहोना अन्नमें अनिच्छा बहुत कफ थूकना मुखकी मधुरता मतली हृदयका लिपाहुआसा मालूम होना शरीरका गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना छर्दि मन्दाग्नि निद्राकी अधिकता स्तंभ तन्द्रा श्वास खांसी जुकाम नेत्र नख मुख मूत्र पुरीष तथा त्वचा का अधिक श्वेत होजाना अंगों में शीतल पिड़िकाओं का बहुत निकलना उष्णता की इच्छा निदान में कहे आहारादिकों का अनुपचय (हानि) और इससे विपरीत आहारादिकों का उपचय (वृद्धि) यह कफ ज्वरके लक्षण हैं विषमाशन अनशन ऋतुओं का बदलना ऋतुओं की व्यापत्ति (ऋतुओं के अनुसार शीत तथा वर्षाआदिका न होना) असात्म्य गन्ध का सूंघना विषदूषित जलका व्यवहार करना गरदोष पर्वतोंका उपश्लेष स्नेह स्वेद वमन बिरेचन आस्थापन अनुवासन तथा शिरोविरेचन का यथावत् प्रयोग न होना स्त्रियों के विषमता से गर्भका उत्पन्न होना प्रसवके उपरान्त उचित व्यवहार न करना और पूर्वोक्त वातजादिक ज्वरोंके हेतुओं का मिलना इन कारणों से निदान के अनुसार दो २ दोष अथवा तीनों दोष एक साथही कुपित होते हैं कुपितहुये दोष पूर्वोक्त क्रमसे ज्वरको उत्पन्न करते हैं इन ज्वरोंमें पूर्वोक्त लक्षणों का मिश्रीभाव (मिला हुआ) देखकर द्वन्द्वज अथवा सन्निपातज ज्वरका निश्चय करना चाहिये अभिघात (चोट लगना) अभिषंग (अनादर) अभिचार (मारणादि कर्म्म) तथा अभिशाप (मद्यपानादि मिथ्या कलंक लगना) इन कारणों से आठवां आगन्तुज ज्वर उत्पन्न होताहै आगन्तुज ज्वर कुछ कालतक दोषरहित रहकर पीछे वातादिदोषों से सम्बद्ध होताहै अभिघातज ज्वर रुधिर में स्थित वायु से दूषित होताहै अभिषंगज ज्वर वात तथा पित्तसे दूषित होताहै और अभिचारज तथा अभिशापज ज्वर त्रिदोष से दूषित होताहै वातजादिक सात ज्वरोंकी अपेक्षा आगन्तुज ज्वरमें लक्षण चिकित्सा तथा निदान की विशेषता है इससे यह अलग कहागया है साधारण क्रमसे ज्वरकी चिकित्सा करनी चाहिये ज्वरकी प्रकृति आठ प्रकारकी कहीगई सन्तापरूपी लक्षणकी समतासे ज्वर एकही है वह ज्वर अभिप्राय की विशेषता से दो प्रकारका कहा जाताहै निज तथा आगन्तुज उनमें से निज ज्वर वातादि दोषोंके विकल्प से दो प्रकारका तीन प्रकार का चार प्रकारका तथा सात प्रकारका होता है ज्वरके यह पूर्वरूप होते हैं जैसे मुखकी विरसता शरीर का भारीपन अन्नमें अरुचि नेत्रों में विकलता आंसू निकलना निद्राकी अधिकता अरति (बेचैनी) जंभाई विनाम (एक प्रकारकी पीड़ा)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कंप श्रम भ्रम प्रलाप जागरण रोमांच दन्तहर्ष शब्द गीत वायु तथा धूपका कभी सहसकना कभी न सहसकना अरुचि अविपाक दुर्बलता अंगमर्द शिथिलता अल्पप्राणता दीर्घसूत्रता आलस्य बड़े कार्य्य की हानि अपने कार्यों में प्रतिकूलता गुरुओं के वाक्यों में निन्दा बालकों से द्वेष अपने धर्ममें चिन्तारहित होना माला पहरना चन्दनादि लेप तथा भोजनमें क्लेश मधुर भोजनसे द्वेष और अम्ल लवण तथा कटु वस्तुओं में रुचि यह ज्वरके पूर्वरूप हैं और ज्वर होनेके पीछे भी यह लक्षण बने रहते हैं इस प्रकार एक २ ज्वरके विस्तार तथा संक्षेप से लक्षण कहेगये ज्वर श्रीशिवजी के कोपसे उत्पन्न हुआ है यह सब प्राणियोंका प्राणनाशकहै शरीर इन्द्रिय तथा मनका संतप्त करनेवाला है बुद्धि बल वर्ण तथा उत्साह को शिथिल करताहै पीड़ा श्रम क्लम तथा मोह को उत्पन्न करता है और भोजन को रोकता है यह प्राणियों को जीर्ण करता है इस से इसका ज्वर नाम है यह जैसा दारुण बहुत उपद्रवयुक्त तथा दुस्साध्य है वैसा और कोई रोग नहीं है यह सब रोगों का अधिपति है यह अनेक प्रकार की तिर्य्यग्योनियों में अनेक प्रकार के शब्दों से कहाजाताहै सम्पूर्ण प्राणी ज्वर सहित उत्पन्न होते हैं और ज्वर सहितही मृत्युको प्राप्त होते हैं यह ज्वर महामोहरूप है इसी के प्रभाव से प्राणियों को अपने पूर्वजन्म का कुछ भी स्मरण नहीं रहता है यही सम्पूर्ण प्राणियों के प्राणों को हरता है ज्वर के पूर्वरूपोंको देख करही अथवा ज्वर के आदि में हलका भोजन अथवा लंघन हित है क्योंकि ज्वर आमाशय से उत्पन्न होताहै लंघन के उपरांत कषायपान, तैलादिमर्दन, स्वेद, लेप, परिषेक, अनुलेपन, वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, उपशमन, नस्यकर्म, धूप, धूम्रपान, अञ्जन तथा क्षीरभोजन का विधान करना चाहिये सब प्रकार के जीर्णज्वरों में अपने अपने अनुसार औषधियों से सिद्धयुक्तिपूर्वक घृतका पान श्रेष्ठ है घी स्नेहसे वायु को औषधियों के संस्कार से कफ को और शीतलता से पित्त तथा ऊष्मा को शान्त करता है इस से सम्पूर्ण जीर्णज्वरों में घी ऐसा हितकारी है जैसे अग्नि से जलते हुये पदार्थों में जल ॥ २ ॥

तत्र श्लोकाः।

यथाप्रज्वलितंवेश्म परिषिञ्चन्तिवारिणा। नराःशान्तिमभिप्रेत्य तथा जीर्णज्वरेघृतम् ॥ ३ ॥

तिस में यह श्लोक है। जैसे जलतेहुये घर में अग्नि की शान्ति के लिये मनुष्य जल को डालते हैं उसी प्रकार आरोग्य के लिये सम्पूर्ण जीर्णज्वरों में घृत हितकारी है॥ ३॥

स्नेहाद्वातंशमयतिशैत्यात्पित्तंनियच्छति। घृतंतुल्यगुणंदोषं संस्कारात्तुजयेत्कफम् ॥ ४ ॥

घी स्नेह से वायु को शीतलता से पित्त को और औषधियों के संस्कार से तुल्यगुण वाले कफ को भी शान्त करता है॥ ४॥

नान्यःस्नेहस्तथाकश्चित्संस्कारमनुवर्त्तते। यथासर्पिरतःसर्पिःसर्वस्नेहोत्तमंपरम् ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जैसे घी संस्कार के अनुकूल हो जाता है उस प्रकार से और कोई स्नेह नहीं होता इस से घी संपूर्णस्नेहों में श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

गद्योक्तोयःपुनःश्लोकैरर्थःसमनुगीयते । तद्व्यक्तिव्यवसायार्थंद्विरुक्तःसनगर्ह्यते ॥ ६ ॥

गद्य में कहाहुआ जो विषय श्लोकों में फिर कहाजाता है उससे उसके गुणों की अधिकता प्रकट होती है इस से उस में पुनरुक्ति दोष न जानना चाहिये ॥ ६ ॥

त्रिविधंनामपर्य्यायैर्हेतुंपञ्चविधान् गदान् । गदलक्षणपर्य्यायान्व्याधेःपञ्चविधंग्रहम् ॥ ७ ॥

तीन प्रकार का निदान, निदान के नाम पांच प्रकार के रोग, रोगों के नाम, रोगों के लक्षणों के नाम पांच प्रकार से रोगों का जानना ॥ ७ ॥

ज्वरमष्टविधंतस्यप्रकृष्टासन्नकारणम् । पूर्वरूपञ्चरूपञ्चसंग्रहेभेषजस्य च ॥ ८ ॥

आठ प्रकार का ज्वर, ज्वर के विप्रकृष्ट तथा सन्निकृष्ट कारण, ज्वरके पूर्वरूप, ज्वरके लक्षण और संक्षेप से ज्वर की चिकित्सा ॥ ८ ॥

व्याख्यातवान्ज्वरस्याग्रेनिदानेविगतज्वरः । भगवानग्निवेशायप्रणतायपुनर्वसुः ॥ ९ ॥

इतिचरकप्रतिसंस्कृतेतन्त्रेज्वरनिदानोनामप्रथमाध्यायः ॥ १ ॥

यह सब विषय तापरहित भगवान् आत्रेयजी ने इस ज्वरनिदान अध्याय में अग्निवेश नाम अपने शिष्य को उपदेश किया है ॥ ९ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्र में ज्वरनिदाननाम प्रथमाध्याय समाप्तहुआ ॥ १ ॥

द्वितीयाध्याय ॥

रक्तपित्तनिदान।

अथातोरक्तपित्तनिदानं व्याख्यास्यामः। इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

पित्तंयथाभूतंलोहितापित्तमितिसंज्ञांलभतेतत्तथानुव्याख्यास्यामः। यदायस्तुजन्तुर्यवकोद्दालकोरकदूषकप्रायाणिअन्नानिनित्यंभुङ्क्तेभृशोष्णतीक्ष्णमपिचान्यदन्नजातं निष्पावमाषकुलत्थक्षारसूपोपहितं दधिमण्डोदश्वित्कट्वम्लकाञ्जिकोपहितंवाराहमाहिषाविकमत्स्यगव्यपिशितंपिण्याकंपिण्डालुकशाकोपहितंमूलकसर्षपलशुनकरञ्जशिग्रुकृष्णडयूषभूस्तृणसुमुखसुरसकुठेरगण्डीरकालमालकपर्णासक्षवकफणिज्जकोपदंशंसुरासौवीरतुषोदकमैरेयमेचकमधूलकशुक्तकुवलबदराम्लप्रायान्नपानंपिष्टानोत्तरभू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यिष्ठमुष्णाभितप्तोऽतिमात्रमतिवे
लंवापयसासमश्नातिरोहिणीकाल
कपोतमांसंवासर्षपतैलक्षारसिद्धंकु
लत्थमाषपिण्याकजाम्बलकुचपक्कैः
शौक्तिकैर्वासहक्षीरमामभतिमात्रम
थवापिबत्युष्णाभितप्तस्तस्यैवमाच
रतःपित्तंप्रकोपमापद्यते। लोहित
ञ्चस्वप्रमाणमतिवर्त्तते॥ १॥

इसके उपरान्त रक्त पित्त का निदान व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा पित्त जिस प्रकार का होकर रक्तपित्त-नाम को प्राप्त होता है उसका व्याख्यान किया जाता है जब कोई प्राणी यवक (जौविशेष) उद्दालक (अन्नविशेष) तथा कोदों आदि बहुत उष्ण तथा तीक्ष्ण अन्न नित्य खाता है निष्पाव (सेम के बीज) उर्द तथा कुलथी की क्षारयुक्त दाल के साथ या दही मण्ड, मट्ठा, कटु, अम्ल तथा कांजी के साथ भोजन करता है शूकर, भैंसा, भेड़ी, मछली तथा गौ का मांस खाता है पिण्डालू (गोलआलू) के साथ खरी को खाता है, मूली सरसों, लहसन, करञ्जुआ, सहजन, खरयूष, भूस्तृण, (तृणविशेष) सुमुख (शाकविशेष) रासना, कुठेरक (बबई) गांडर कालक (शाकविशेष) पर्णास (एक प्रकारकी बबई) नकछिकनी तथा मरुआ, इन को बीच बीच में खाकर सुरा, सौवीर, तुषोदक, मैरेय, मेदक, मधूलक कुवल, बदर तथा खट्टीवस्तुओं का अनुपान कर के उष्णतासे व्याकुल होकर बारंबार दूधके साथ पिट्ठी की वस्तु खाता है रोहिणीक तथा कालेकबूतर का मांस सरसों के तेल तथा क्षार वस्तुओं में पका कर खाता है अथवा कुलथी उर्द, खली, जामन तथा बड़हल के साथ पाक कियेगये सीपी के मांस के साथ बहुत सा कच्चा दूध पीता है उस पुरुषका पित्त कुपित होता है और रुधिर अपने प्रमाण से अधिक हो जाता है॥ १॥

तस्मिन्प्रमाणातिप्रवृत्तेपित्तंप्रकु
पितंशरीरमनुसर्पद्यदैवयकृत्प्लीह
प्रभावाणांलोहितवहानांस्रोतसां
लोहिताभिष्यन्दगुरूणिमुखान्या
साद्यप्रतिपद्यतेतदैवलोहितंदूषय
ति॥ २॥

रुधिर के प्रमाण के अधिक हो जाने पर कुपितहुआ पित्त सम्पूर्ण शरीरमें घूमताहुआ जब यकृत् तथा प्लीहासे उत्पन्न हुई रुधिर के लेचलनेवाली नाड़ियों के रुधिर के बहने से भारीमुखों में प्राप्त होता है तो रुधिर को दूषित करता है॥ २॥

संसर्गान्तल्लोहितप्रदूषणाल्लोहित
गन्धवर्णानुविधानाच्चपित्तंलोहि
तमित्याचक्षते॥ ३॥

और संसर्ग से रुधिरके दूषित करने से और रुधिर के समान गन्ध तथा वर्णयुक्त होने से पित्तरक्त कहलाता है॥ ३॥

तस्येमानिपूर्वरूपाणि। तद्यथा।
अनन्नाभिलाषोभुक्तस्यविदाहःशु
क्ताम्लरसगन्धस्योद्गारश्छर्देःअभी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दणागमनंछर्दितस्यबीभत्सतास्वरभेदोगात्राणांसदनंपरिदाहश्चमुखाद्धूमागमइवलोहलोहितमत्स्यामगन्धित्वमपिचास्यस्यरक्तहरितहारिद्रवत्वमङ्गावयवशकृन्मूत्रस्वेदलालाशिंघानकास्यकर्णमल-पिडकानामङ्गसंवेदनालोहितनीलपीतश्यावानामर्चिष्मताञ्चरूपाणांस्वप्नदर्शनमभीक्ष्णमितिलोहितपित्तपूर्वरूपाणि ॥ ४ ॥

तिस रक्तपित्त के यह पूर्व्वरूप होते हैं जैसे अन्न में अनिच्छा, भोजन का विदाह, वारंवार डकार के साथ सिरके के समान खट्टा रससा निकलना, अनेक प्रकार की दुर्गन्धित वमन, स्वरभेद, अंगों की शिथिलता, शरीरमें दाह मुख से धुआंसा निकलना, मुख से लोहेकी सी रुधिरकी सी तथा कच्ची मछली कीसी दुर्गन्धि आना, अंग, पुरीष, मूत्र, स्वेद, लार, नासिका का मल, मुख कानों का मल तथा पिडिका इनका रक्त हरित अथवा पीत हो जाना, पीड़ासहित फुंसियां होना और स्वप्नमें रक्त नील पीत तथा कपिशवर्णयुक्त तेजस्वीरूपों का दिखाई देना यह रक्तपित्त के पूर्वरूप हैं ॥ ४ ॥

उपद्रवास्तुखलुदौर्बल्यारोचकाविपाकश्वासकासज्वरातीसारशोफशोषपाण्डुरोगस्वरभेदाः ॥ ५ ॥

रक्तपित्त के यह उपद्रव हैं जैसे दुर्बलता, अरुचि, अन्नका न पचना, श्वास, खांसी, ज्वर अतीसार, शोथ, क्षयी, पाण्डुरोग तथा स्वरभङ्ग ॥ ५ ॥

मार्गौपुनरस्यद्वौऊर्द्ध्वञ्चाधश्चतद्बहुश्लेष्मणिशरीरेश्लेष्मसंसर्गादूर्द्ध्वंप्रपद्यमानंकर्णनासिकानेत्रास्येभ्यःप्रच्यवते । बहुवातेतुशरीरेवातसंसर्गादधःप्रपद्यमानंमूत्रपुरीषमार्गाभ्यांप्रच्यवते । बहुवातश्लेष्मणितुशरीरेश्लेष्मवातसंसर्गाद्द्वावपिमार्गौप्रपद्यते । तौमार्गौप्रपद्यमानंसर्वेभ्यएवयथोक्तेभ्यःखेभ्यःप्रच्यवतेशरीरस्य ॥ ६ ॥

रक्तपित्त के दो मार्ग हैं ऊर्ध्वभाग तथा अधोभाग बहुत कफवाले शरीर में कफ के संसर्ग से ऊर्ध्वभाग में प्राप्तहुआ रुधिर कान नाक नेत्र तथा मुख के द्वारा बहता है, बहुत वातवाले शरीर में वायु के संसर्ग से अधोभाग में प्राप्तहुआ रुधिर मूत्र तथा पुरीष के मार्गों से बहता है बहुत वायु तथा कफवाले शरीर में कफ तथा वायु के संसर्ग से शरीर के ऊर्ध्वभाग तथा अधोभाग में प्राप्तहुआ रुधिर पूर्वोक्त सब मार्गोंसे बहता है ॥ ६ ॥

तत्रयदूर्द्ध्वभागंतत्साध्यंविरेचनोपक्रमणीयत्वाद्बह्वौषधत्वाच्च ॥ ७ ॥

ऊर्ध्वभागसे बहता हुआ रक्त पित्त साध्य है क्योंकि उसकी चिकित्सा विरेचन के द्वारा होती है और उसकी बहुतसी औषध हैं ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदधोभागंतद्याप्यंवमनोपक्रमणी यत्वादल्पौषधत्वाच्च ॥ ८ ॥

जो रक्त अधोभाग से बहता है वह याप्य है क्योंकि उसकी चिकित्सा वमन के द्वारा होती है और उसकी औषध स्वल्प हैं ॥ ८ ॥

यदुभयभागंतदसाध्यंवमनविरेच नायोगित्वादनौषधत्वाच्च ॥ ९ ॥

जो रक्त पित्त दोनों भागोंसे बहता है वह असाध्य है क्योंकि वमन तथा विरेचन के द्वारा उसकी चिकित्सा नहीं होसक्ती और उसकी कोई औषध नहीं है ॥ ९ ॥

रक्तपित्तप्रकोपस्तुखलुपुरादक्षयज्ञ ध्वंसेरुद्रकोपामर्षाग्निनाप्राणिनां परिगतशरीरप्राणानामनुज्वरमभ वत् ॥ १० ॥

पूर्व्वसमयमें दक्षके यज्ञके विध्वंसमें शिवजीके अग्निरूपी कोप से प्राणियों के प्राण तथा शरीर नष्ट होजानेपर ज्वरके उपरान्त रक्तपित्त की उत्पत्ति हुई है ॥ १० ॥

तस्याशुकारिणोदावाग्नेरिवापति तस्यात्ययिकस्याशुप्रशान्तौयति तव्यंमात्रांदेशंकालञ्चाभिसमीक्ष्य सन्तर्पणेनापतर्पणेनवामृदुमधुर शिशिरतिक्तकषायैरभ्यवहार्य्यैःप्र देहपरिषेकावगाहसंस्पर्शनैर्वमना द्यैर्वातत्रावहितेनेति ॥ ११ ॥

शीघ्रकारी दावाग्नि के समान उपस्थित प्राणघातक रक्तपित्तकी शान्तिके लिये मात्रा देश तथा काल को देखकर सावधानता पूर्वक संतर्पण से अथवा अपतर्पण से मृदु मधुर शीतल तिक्त तथा कषाय रसयुक्त भोजन लेप परिषेक अवगाहन तथा संस्पर्शनकेद्वारा अथवा वमनादि के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ११ ॥

तत्र श्लोकाः ।

साध्यंलोहितपित्तंतद्यदूर्द्ध्वंप्रतिपद्य ते । विरेचनस्ययोगित्वाद्बहुत्वाद्भे षजस्यच ॥ १२ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं । ऊर्ध्वभागसे बहनेवाला रक्तपित्त साध्य होता है क्योंकि उसकी चिकित्सा विरेचनकेद्वारा होसक्तीहै और उसकी औषध भी बहुत हैं ॥ १२ ॥

वमनंनहिपित्तस्य हरणेश्रेष्ठमुच्य ते । यश्चतत्रानुगोवायुस्तच्छान्तौ चावरंमतम् ॥ १३ ॥

पित्तके दूर करनेमें वमन श्रेष्ठ नहीं है और उसके साथमें जो वायु है उसको भी शान्त करनेमें वमन श्रेष्ठ नहीं है ॥ १३ ॥

स्याच्चयोगावहंतत्रकषायंतिक्तका निच । तस्माद्याप्यंसमाख्यातं यद्रक्तमनुलोमगम् ॥ १४ ॥

ऐसे रक्तपित्तमें कषाय तथा तिक्तरसयुक्त औषधियों का व्यवहार करना चाहिये इसी से अधोभाग से बहनेवाला रक्तपित्त याप्य कहलाता है ॥ १४ ॥

रक्तन्तुयदधोभागंतद्याप्यमितिनि श्रयः । वमनस्याल्पयोगित्वाद ल्पत्वाद्भेषजस्यच ॥ १५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो रक्त नीचे के मार्गों से बहता है वह निश्चय याप्य है क्योंकि वह वमन का अल्पयोगी और थोड़ी औषधोंवाला है ॥ १५ ॥

रक्तपित्तन्तुयन्मार्गौद्वावपिप्रतिपद्यते । असाध्यमपितज्ज्ञेयंपूर्वोक्तादपिकारणात् ॥ १६ ॥

जो रक्तपित्त दोनों मार्गों से प्रवृत्त होताहै उसे पूर्वोक्त कारणों से असाध्य जानना चाहिये ॥ १६ ॥

नहिसंशोधनंकिंचिदस्त्यस्यप्रतिमार्गगम् । प्रतिमार्गश्चहरणंरक्तपित्तेविधीयते । एवमेवोपशमनं सर्वशोनास्यविद्यते ॥ १७ ॥

दोनों मार्गों से प्रवृत्त होनेवाले रक्तपित्तमें प्रतिकूल मार्ग्ग से दोषोंका निकालनेवाला कोई संशोधन नहीं है और प्रतिकूल मार्गसे दोषोंका निकालना रक्तपित्त में आवश्यक है और इसी प्रकारसे इसके शान्त करनेवाली औषध भी नहीं है ॥ १७ ॥

संसृष्टेषुचदोषेषुसर्वजिच्छमनंमतम् ॥ १८ ॥

मिलेहुये दोषोंमें त्रिदोषनाशक औषध हित होती है ॥ १८ ॥

इत्युक्तंत्रिविधोदर्करक्तंमार्गविशेषतः ॥ १९ ॥

इस प्रकार मार्गों की विशेषता से तीन प्रकारका रक्तपित्त कहागया ॥ १९ ॥

एभ्यस्तुखलुहेतुभ्यःकिञ्चित्साध्यंनसिध्यति । प्रेष्योपकरणाभावाद्दौरात्म्याद्वैद्यदोषतः । अकर्म्मतश्चसाध्यत्वंकश्चिद्रोगोऽतिवर्त्तते ॥ २० ॥

दूत तथा सामग्री का अभाव रोगीकी दुष्टता तथा वैद्योंके दोष इन कारणों से साध्य रोगभी असाध्य होजाते हैं कोई २ रोग चिकित्सा न करनेसे असाध्य होजाते हैं ॥२०॥

तत्रासाध्यत्वमेकंस्यात्साध्ययाप्यपरिक्रमात् । रक्तपित्तस्यविज्ञानमिदंतस्योपदेक्ष्यते ॥ २१ ॥

साध्य तथा याप्य दोनों की चिकित्सा कीजाती है इससे साध्यत्व एकही है रक्तपित्तका साध्यासाध्य ज्ञान यह उपदेश करते हैं ॥ २१ ॥

यत्कृष्णमथवानीलंयद्वाशक्रधनुष्प्रभम् । रक्तपित्तमसाध्यंतद्वासोरञ्जनञ्चयत् ॥ २२ ॥

जिस रक्तपित्तवाले के कृष्ण नील अथवा इन्द्रधनुषके समान रुधिर गिरे वह असाध्य है और जिस रक्तपित्तवाले के रुधिरसे रँगे हुये वस्त्रका दाग़ न छूटे वह भी असाध्य है ॥ २२ ॥

भृशंपूत्यतिमात्रञ्चसर्वोपद्रववच्चयत् । बलमांसक्षयेयच्चतच्चरक्तमसिद्धिमत् ॥ २३ ॥

जिस रक्तपित्तवाले के अत्यन्त दुर्गन्धित व मात्रासे अधिक रुधिर गिरे तथा पूर्व्वोक्त सम्पूर्ण उपद्रव होयँ वह असाध्य है जिस रक्तपित्तवालेका मांस तथा बल क्षीण होगया हो वह असाध्य है ॥ २३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथात्मकशरीरस्यैव क्षिप्रंवायुःप्रकोपमापद्यते। सप्रकुपिततथात्मकेशरीरेविसर्प्पन्यदावसामादाय मूत्रवहानिस्रोतांसिप्रतिपद्यते तदावसामेहमभिनिर्वर्त्तयति ॥ २९ ॥

इस प्रकार पित्तके कोपसे होनेवाले छःप्रमेह कहेगये कटु कषाय तिक्त रूक्ष लघु तथा शीत वस्तुओं के अधिक सेवनसे मैथुन व्यायाम वमन विरेचन आस्थापन तथा शिरोविरेचनके अतियोग से मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से अनशन से चोट लगने से धूपके बहुत सेवनसे उद्वेग तथा शोकसे वहुत रुधिर निकलवाने से रात्रिमें जागने से और शरीर के विषमतापूर्वक रखने से वातप्रकृतिवाले की वायु शीघ्रही कुपित होती है कुपितहुई वायु शरीरमें विचरण करके जब चरवी को लेकर मूत्रके बहनेवाले स्रोतोंमें प्राप्त होती है तब वसाप्रमेह को उत्पन्न करती है ॥ २९ ॥

यदापुनर्मज्जानं मूत्रवस्तावाकर्षति तदामज्जामेहमभिनिर्वर्त्तयति ॥ ३० ॥

और जब मज्जा को मूत्र वस्तिके स्थानमें लाती है तब मज्जाप्रमेह को उत्पन्न करती है ॥ ३० ॥

यदालसीकां मूत्राशयऽभिवहन्मूत्रमनुबन्धंश्च्योतयतिलसीकातिबहुत्वाद्विक्षेपणाच्चवायोः खल्वस्यातिमूत्रप्रवृत्तिसङ्गंकरोति तदासमत्तइवगजःक्षरत्यजस्रंमूत्रमवेगंतंहस्तिमेहिनमाचक्षते ॥ ३१ ॥

जब लसीका धातु को मूत्राशय में लेजाकर मूत्रके साथ निकालती है और लसीका के बहुत होनेसे तथा वायुके विक्षेपणगुणसे बहुतसा मूत्र निकलता है तब मनुष्य मतवाले हाथीके समान वेगके विना लगातार मूतताहै उसे हस्तिप्रमेह कहते हैं ॥ ३१ ॥

ओजःपुनर्मधुरस्वभावंतद्यपारौक्ष्यात्वायुःकषायत्वेनाभिसंसृज्यमूत्राशयेऽभिवहति तदा मधुमेहिनंकरोति ॥ ३२ ॥

स्वभावसे मधुर ओज धातु को जब रूक्षता से वायु कषायरसयुक्त करके मूत्राशय में लाती है तब मधुप्रमेह होताहै ॥ ३२ ॥

तानिमांश्चतुरःप्रमेहान्वातजानसाध्यानाचक्षते । महात्ययिकत्वाद्विप्रतिषिद्धोपक्रमत्वात् तेषामपिचपूर्व्ववद्गुणविशेषेण नामविशेषाः ॥ ३३ ॥

यह चारोंवातजप्रमेह महात्ययी (मज्जा आदिगंभीर धातुओं के दूषित करनेवाले) होने से और चिकित्सा के विरुद्ध होने से असाध्य हैं इनके भी पूर्ववत् वायु के गुणों की विशेषता से अलग २ नाम हैं ॥ ३३ ॥

तद्यथा ।

वसामेहश्चमज्जमेहश्च हस्तिमेहश्चमधुमेहश्चेति ॥ ३४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जैसे वसामेह मज्जामेह हस्तिमेह और मधुमेह ॥ ३४ ॥

तत्र श्लोकाः।

वातप्रमेहविशेषविज्ञानार्थाः। वसामिश्रंवसाभञ्चमूत्रंमेहतियोनरः। वसामेहिनमाहुस्तमसाध्यंवातकोपतः ॥ ३५ ॥

तहां वातप्रमेहों के जानने के लिये यह श्लोक हैं। वायु के कोप से जिस मनुष्यका मूत्र चरबी से मिलाहुआ तथा चरवी के तुल्य वर्णवाला वारंवार निकले उसे वसामेह कहते हैं यह असाध्य है ॥ ३५ ॥

मज्जानंसहमूत्रेण मुहुर्म्मेहतियोनरः। मज्जामेहिनमाहुस्तमसाध्यंवातकोपतः ॥ ३६ ॥

वायु के कोप से जो मनुष्य वारंवार मज्जासहित मूत्रत्यागकरे उसे मज्जामेही कहते हैं यह असाध्य है ॥ ३६ ॥

हस्तीमत्तइवाजस्रं मूत्रंक्षरतियोभृशम्। हस्तिमेहिनमाहुस्तमसाध्यंवातकोपतः ॥ ३७ ॥

वायु के कोपसे जो मनुष्य मतवाले हाथी के समान लगातार बहुत मूत्र त्यागकरे उसे हस्तिमेही कहते हैं यह असाध्य है ॥ ३७ ॥

कषायमधुरंपाण्डुं रूक्षंमेहतियोनरः। वातकोपादसाध्यन्तं प्रतीयान्मधुमेहिनम् ॥ ३८ ॥

वायु के कोपसे जो मनुष्य कसैला मधुर पांडुवर्ण तथा रूखा मूत्र त्यागकरे उसे मधुमेही जानना चाहिये यह भी असाध्य होता है ॥ ३८ ॥

इतिचत्वारः प्रमेहाव्वातप्रकोपनिमित्ताः। तएवं त्रिदोषप्रकोपनिमित्ताविंशतिप्रमेहाव्याख्याताः। त्रयस्तु दोषाःप्रकुपिताः प्रमेहानभिनिर्वर्त्तयिष्यन्तइमानि पूर्व्वरूपाणि दर्शयन्ति ॥ ३९ ॥

यह चारों वातके कोपसे होनेवाले प्रमेह कहेगये इस प्रकार वात पित्त तथा कफ तीनोंके कोपसे होनेवाले बीस प्रमेह कहेगये वातादिक तीनों दोष कुपित होकर जब प्रमेहों को उत्पन्न करने वाले होते हैं तब यह पूर्व्वरूप होते हैं ॥ ३९ ॥

तद्यथा।

जटिलीभावं केशेषुमाधुर्य्यमास्येकरपादयोःसुप्ततांदाहम्मुखतालुकण्ठशोषंपिपासामालस्यंमलञ्चकायेकायच्छिद्रेषूपदेहंपरिदाहंसुप्ततांचाङ्गेषुषट्पदपिपीलिकाभिःशरीरमूत्राभिसरणंमूत्रेचमूत्रदोषान्वितंशरीरगन्धंनिद्रांतन्द्राञ्चसर्वकालमिति ४०

जैसे बालोंकी जटासी बंधना मुखमें मीठापन हाथ पैरों में सुन्न तथा दाह मुख तालु तथा कण्ठ का सूखना तृषा आलस्य शरीर में मल उत्पन्न होना रोमकूपोंका बन्दसा होजाना अंगोंमें दाह तथा सुन्न शरीर में तथा मूत्रमें भौंरे तथा चींटियों का लगना मूत्रमें मूत्रदोषों से युक्त शरीरकीसी गन्धि होना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लकुष्ठमभिनिर्वर्त्तते। पित्तेत्वौदु म्बरंश्लेष्मणिमण्डलकुष्ठम् ५॥

यह वातादि तीनों दोष कुपित होकर त्वचाआदि चारों धातुओं को दूषित करके वायु की अधिकता से कपाल नाम कुष्ठ होता है पित्तकी अधिकतामें औदुम्बरनाम कुष्ठ होता है और कफ की अधिकतामें मण्डलनाम कुष्ठ होता है ॥ ५ ॥

वातपित्तयोर्ऋष्यजिह्वंपित्तश्लेष्मणोःपुण्डरीकं श्लेष्ममारुतयोःसिध्मकुष्ठंसर्वदोषातिवृद्धौकाकणकमभिनिर्वर्त्तते। इत्येवमेषसप्तविधः कुष्ठविशेषोभवति ॥ ६ ॥

वात पित्त की अधिकता में ऋष्यजिह्वनाम कुष्ठ होताहै पित्त कफकी अधिकता में पुण्डरीकनाम कुष्ठ होताहै कफ वायुकी अधिकता में सिध्मनाम कुष्ठ होताहै और वातादि तीनों दोषों की अधिकतामें काकणकनाम कुष्ठ होताहै इस रीति से सात प्रकार के कुष्ठ होते हैं ॥ ६ ॥

सचैषभूयोऽतःप्रकृतिविकल्पतयाभूयसींविकारसंख्यामापद्यते ॥ ७ ॥

यही सातों प्रकृति के विकल्प से बहुतसी विकार संख्या को प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

तत्रेदंसर्वकुष्ठनिदानंपुनःसमासेन उपदेक्ष्यामः। शीतोष्णव्यत्यासमलानुपूर्व्योपसेवमानस्यतथासन्तर्पणापतर्पणाभ्यवहार्य्यव्यत्यासंचमधुफाणितमत्स्यमूलककाकमाचीःस ततमतिमात्रमप्यजीर्णेसमश्नतश्चिलिचिमञ्चपयसाहायनकयवकचीनकोद्दालककोरदूषप्रायाणिचान्नानि क्षीरदधितक्रकोलकुलत्थमाषातसीयूषकुसुम्भस्नेहवन्त्यैतैश्चापिसुहितस्यव्यवायव्यायामसन्तापानप्युपसेवमानस्यभयश्रमसंतापोपहतस्य सहसाशीतोदकमवतरतोविदग्धमाहारमनुल्लिख्यविदाहीन्यभ्यवहरतः छर्दिंञ्चप्रतिघ्नतःस्नेहांश्चाभिचरतःयुगपत्त्रयोदोषाःप्रकोपमापद्यन्ते। त्वगादयःचत्वारःशैथिल्यमापद्यन्ते। तेषुशिथिलेषुदोषाः प्रकुपिताःस्थानमभिगम्यसन्तिष्ठमानाःतानेवत्वगादीन्दूषयन्तःकुष्ठान्यभिनिर्वर्त्तयन्ति ॥ ८ ॥

तिसमें यह सम्पूर्ण कुष्ठोंका निदान संक्षेप से कहते हैं जैसे शीतोष्ण का व्यतिक्रमसे व्यवहार संतर्पण तथा अपतर्पणके व्यवहार का व्यतिक्रम मधु फाणित (राब) मछली मूली तथा काकजंघा इनका अधिक भोजन अजीर्ण में भोजन दूधकेसाथ चिलिचिम मछलीका खाना हायनक (धान्यविशेष) यवक चीनक उद्दालक (वनकोदों) तथा कोदों इन अन्नों को दूध दही मट्ठा बेर कुलथी उर्द तथा अलसीका यूष तथा कुसुमका तेल इनके साथ प्रायः खाना बहुत भोजन करके मैथुन व्यायाम तथा तापका सेवन करना भय श्रम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा तापसे व्याकुल होकर सहसा शीतल जलमें प्रवेश करना एकवारके भोजन विना पचे द्वितीयवार विदाही वस्तुओंका भोजन करना छर्दिका रोकना और स्नेहनका ठीक२ न होना इन कारणों से वातादि तीनों दोष कुपित होजाते हैं और त्वचाआदिक चारों धातु शिथिलता को प्राप्त होजाती हैं इन शिथिल धातुओंमें कुपितहुये वातादि दोष स्थितहोकर इन्हीं धातुओं को दूषित करके कुष्ठों को उत्पन्न करते हैं ॥ ८ ॥

तत्रेमानिपूर्वरूपाणि । तद्यथाअस्वेदनमतिस्वेदनं पारुष्यमतिश्लक्ष्णतावैवर्ण्यंकण्डूर्निस्तोदःसुप्तता परिदाहःपरिहर्षोलोमहर्षोखरत्वमुष्मायणंगौरवंश्वयथुर्वीसर्पागमनमभीक्ष्णंकायच्छिद्रेषूपदाहःपक्वदग्धदष्टक्षतोपस्खलितेष्वतिमात्रंवेदना स्वल्पानामपिच व्रणानांदुष्टिरसंरोहणञ्चेतितेभ्योऽनन्तरंकुष्ठानिजायन्ते ॥ ९ ॥

तहां कुष्ठोंके यह पूर्व्वरूप होते हैं जैसे स्वेदका न निकलना अथवा स्वेदका बहुत निकलना अंगोंका कर्कश होना तथा अत्यन्त चिक्कण होना विवर्णता खुजली निस्तोद (एक प्रकार की पीड़ा) सुन्न दाह परिहर्ष रोमांच त्वचाका खुरखुरा होजाना शरीर से ऊष्मा कासा निकलना गौरव शोथ जहरबात होना शरीर के छिद्रों में सदैव दाह रहना पकेहुए जलेहुए काटेहुए क्षत तथा टूटेहुए स्थानों में अत्यन्त पीड़ा होना और छोटे २ व्रणों का भी दूषित होजाना तथा पूर्ण न होना यह कुष्ठों के पूर्व्वरूप हैं इसके अनन्तर कुष्ठ उत्पन्न होते हैं ॥ ९ ॥

तेषामिदंवेदनावर्णसंस्थानप्रभावनामविशेषविज्ञानम् । तद्यथा । रूक्षारुणपरुषाणिविषमविसृतानि खरपर्य्यन्तानि तनून्युद्वृत्तबहिस्तनूनिसुप्तसुप्तानि हृषितलोमाचितानिनिस्तोदबहुलानिअल्पकण्डूदाहपूयलसीकान्याशुगतिसमुत्थानानिआशुभेदीनि जन्तुमन्ति कृष्णारुणकपालवर्णानिकपालकुष्ठानीतिविद्यात् ॥ १० ॥

तिन कुष्ठों की पीड़ा वर्ण संस्थान प्रभाव तथा नामोंकी विशेषता इसप्रकार जाननी चाहिये जैसे रूक्ष अरुण वर्णयुक्त परुष विषमतासे फैलाहुआ किनारों पर खुरखुरा पतली त्वचावाला सुन्नतायुक्त रोमांचयुक्त सूई गड़ने कीसी बहुत पीड़ायुक्त स्वल्पखुजली दाह पीप तथा लसीकायुक्त शीघ्रही उत्पन्न होनेवाला शीघ्रही भिन्न होनेवाला कीड़ों से युक्त और काले तथा लाल कपालों के समान वर्णयुक्त कुष्ठ कपालकुष्ठ कहलाता है ॥ १० ॥

ताम्राणिताम्ररोमराजीभिरवनद्धानिबहुलानिबहुबहलरक्तपूयलसीकानिकण्डू–क्लेद–कोथदाहपाकवन्त्याशुगतिसमुत्थानभेदीनिससन्तापक्रिमीण्युदुम्बरफलपक्वपर्णा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्युदुम्बरकुष्ठानीतिविद्यात् ११ ॥

ताम्रवर्ण वाले रोमों की पंक्तियोंसे व्याप्त बहुत रुधिर पीप तथा लसीकायुक्त खुजली क्लेद कोथ दाह तथा पाकयुक्त शीघ्रही उत्पन्न होनेवाले तथा भिन्न होनेवाले सन्ताप तथा क्रिमियुक्त और पक्के गूलर के समान वर्णयुक्त कुष्ठका उदुम्बर नाम है ॥ ११ ॥

स्निग्धानिगुरूण्युत्सेधवन्ति श्लक्ष्णास्थिरपीनपर्य्यन्तानिशुक्लरक्तावभासानिबहुलबहलशुक्लपिच्छिलस्रावीणिशुक्लरोमराजीसन्तानानिबहुकण्डूक्रिमीणिसक्तगतिसमुत्थानभेदीनिपरिमण्डलानिमण्डलकुष्ठानीतिविद्यात् ॥ १२ ॥

स्निग्ध गुरु तथा उन्नत किनारों पर श्लक्ष्ण तथा स्थूल शुक्ल तथा रक्तवर्णयुक्त बहुत गाढ़े श्वेतवर्ण तथा पिच्छिलस्राव से युक्त श्वेत रोमों की पंक्तियों से व्याप्त बहुत खुजली तथा कृमियों से युक्त धीरे २ उत्पन्न होने वाले तथा भिन्न होनेवाले मंडलाकार कुष्ठ को मंडलकुष्ठ कहते हैं ॥ १२ ॥

परुषाण्यरुणवर्णानिबहिरन्तः श्यावानिनीलपीतताम्रावभासान्याशुगतिसमुत्थानान्यल्पकण्डूक्लेदक्रिमीणिदाहभेदनिस्तोदपाकबहुलानिशूकोपहतोपमानवेदनान्युत्सन्नमध्यानितनुपर्य्यन्तानिकर्कशपिडिकाचितानिदीर्घपरिमण्डलानिऋष्यजिह्वाकृतीनिऋष्यजिह्वानीतिविद्यात् ॥ १३ ॥

परुष बाहर अरुणवर्णयुक्त भीतर कपिश वर्णयुक्त नील पीत तथा ताम्रवर्ण वाली आभायुक्त शीघ्र उत्पन्न होनेवाले स्वल्पखुजली क्लेद तथा क्रिमियुक्त बहुत दाह भेद सूई गड़ने कीसी पीड़ा तथा पाकयुक्त शूक (यव आदिधान्यों की तीक्ष्णनोक) गड़ने कीसी पीड़ायुक्त बीच में ऊंचे किनारों पर पतले कर्कश पिडिकाओं से व्याप्त बड़े मंडल वाले और रीछकी जिह्वाके समान आकृतिवाले कुष्ठ को ऋक्षजिह्व कुष्ठ कहते हैं ॥ १३ ॥

शुक्लरक्तावभासानिरक्तपर्य्यन्तानिरक्तशिराराजीसन्ततान्युत्सेधवन्तिबहुबहलरक्तपूयलसीकानिकण्डूक्रिमिदाहपाकवन्त्याशुगतिसमुत्थानभेदीनिपुण्डरीकपलाशसंकाशानिपुण्डरीकाणीतिविद्यात् १४॥

शुक्ल तथा रक्त आभायुक्त किनारों पर रक्त लाल लकीरों से व्याप्त ऊंचे बहुत रुधिर पीप तथा लसीकावाले खुजली क्रिमि दाह तथा पाकयुक्त शीघ्र उत्पन्न होनेवाले तथा भिन्न होनेवाले और श्वेत कमल के पत्ते के समान आकृतिवाले कुष्ठको पुंडरीककुष्ठ कहते हैं ॥ १४ ॥

परुषारुणविशीर्णबहिस्तनून्यन्तःस्निग्धानिशुक्लरक्तावभासानिबहून्यल्पवेदनान्यल्पकण्डूदाहपूयलसीकामिलघुसमुत्थानान्यल्पभेद-

CC-0. Gangotri Trust Collection. Digitized by eGangotri

क्रिमीएयलावु-पुष्पसङ्काशानि सिध्म-कुष्ठानीतिविद्यात् १५ ॥

बाहर परुष अरुण तथा गलेहुए पतली त्वचावाले भीतर स्निग्ध शुक्ल तथा रक्त आभावाले बहुत फैलेहुए स्वल्प पीड़ा खुजली दाह पीप तथा लसीकायुक्त धीरे २ उत्पन्न होनेवाले स्वल्पभेद तथा क्रिमिवाले और लौकी के पुष्प के समान आकृति वाले कुष्ठको सिध्मकुष्ठ कहते हैं ॥ १५ ॥

काकणन्तिकावर्णान्यादौपश्चात्सर्वकुष्ठलिङ्गसमन्वितानिपापीयसांसर्वकुष्ठलिङ्गसम्भवेनानेकवर्णानि काकणकानीतिविद्यात् ॥ १६ ॥

पहले घोंघची के समान वर्णयुक्त पीछे संपूर्ण कुष्ठों के लक्षणों से युक्त कुष्ठको काकण कहते हैं बड़े पापियों के संपूर्ण कुष्ठों के लक्षणों के होनेसे अनेक वर्णयुक्त यह कुष्ठ होता है ॥ १६ ॥

तान्यसाध्यानिसाध्यानिपुनरितराणि । तत्रयदसाध्यंतदसाध्यतांनातिवर्त्तते । साध्यंपुनःकिञ्चित्साध्यतामतिवर्त्ततेकदाचिदपचारात् १७

यह असाध्य है इसके सिवाय अन्य छः कुष्ठ साध्य हैं जो असाध्य है वह अपनी असाध्यताको नहीं छोड़ता और कोई २ साध्य बदपरहेजी से कदाचित् साध्यताको छोड़ के असाध्य होजाते हैं ॥ १७ ॥

साध्यानीहषट्काकणकवर्ज्यानि अचिकित्स्यमानानिअपचारतोवा दोषैरभिष्यन्दमानानिअसाध्यतामुपयान्ति ॥ १८ ॥

काकणक कुष्ठ के सिवाय अन्य जो छः कुष्ठ साध्य हैं वह चिकित्सा न करने से अथवा बदपरहेजी से दोषों करके अभिष्यन्दी होकर असाध्य होजाते हैं ॥ १८ ॥

साध्यानामपिह्युपेक्षमाणानामेषांत्वङ्मांसशोणितलसीकाकोथक्लेदसंस्वेदजाःक्रिमयोऽभिमूर्च्छन्ति । ते भक्षयन्तोत्वगादीन्दोषान्पुनर्दूषयन्तःइमानुपद्रवान्पृथक्पृथगुत्पादयन्ति ॥ १९ ॥

साध्य कुष्ठों की भी चिकित्सा न करने से त्वचा मांस रुधिर लसीका कोथ क्लेद तथा स्वेद से क्रिमि बढ़जाते हैं और त्वचा आदि को भक्षण करतेहुए और दोषों को दूषित करतेहुए पृथक् २ इन उपद्रवों को उत्पन्न करते हैं ॥ १९ ॥

ततोत्रातःश्यावारुणपरुषवर्णतामपिचरौक्ष्यशूलशोथतोदवेपथुहर्षसङ्कोचायासस्तम्भसुप्तिभेदभङ्गान् । पित्तंपुनर्दाहस्वेदक्लेदकोथकण्डूस्रावपाकरागान् । श्लेष्मात्वस्यश्वैत्यशैत्यास्थैर्य्यकण्डूगौरवोत्सेधोपस्नेहोपलेपान् । क्रिमयस्त्वगादींश्चतुरःशिराः स्नायून्यस्थीन्यपिचतरुणानिखादन्ति ॥ २० ॥

जैसे वायु कपिशता अरुणता परुषता रू-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षता शूल शोथ सूजी गड़नेकी सी पीड़ा कंप हर्ष सङ्कोच आयास स्तंभ सुन्न भेद तथा टूटने की सी पीड़ा इनको उत्पन्न करता है व पित्त दाह स्वेद क्लेद कोथ खुजली स्राव पकना तथा रक्तता इनको उत्पन्न करताहै और कफ मुख की श्वेतवर्णता शीतलता स्थिरता खुजली गौरव उत्सेध तथा स्नेहसे लिपाहुआसा मालूम होना इन सब बातोंको उत्पन्न करता है और क्रिमि त्वचा आदि चार धातुओंको शिराओं को स्नायुओंको और तरुण हड्डियोंको खाते हैं ॥ २० ॥

अस्यामवस्थायामुपद्रवाःकुष्ठिनंस्पृशन्ति। तद्यथा।—प्रस्रवणमङ्गभेदःपतनान्यङ्गावयवानांतृष्णाज्वरातीसारदाहदौर्बल्यारोचकाविपाकाश्चतद्विधमसाध्यंविद्यादिति॥ २१ ॥

इस अवस्था में कुष्ठी के यह उपद्रव होते हैं जैसे पीप आदि का बहना अंगों का फटना अंगोंका गल २ कर गिरना तृषा ज्वर अतीसार दाह दुर्बलता अरुचि तथा अविपाक इस प्रकारके उपद्रवों से युक्त रोगी को असाध्य जानना चाहिये ॥ २१ ॥

तत्रश्लोकाः।

साध्योऽयमितियःपूर्वंनरोरोगमुपेक्षते। सकिञ्चित्कालमासाद्यमृतएवावबुध्यते॥ २२ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। जो मनुष्य यह साध्य है ऐसा विचारकर पहले रोगकी उपेक्षा करता है वह कुछ कालके उपरान्त मृत्यु को प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥

यस्तुप्रागेवरोगेभ्योरोगेषुतरुणेषुच। भेषजंकुरुतेसम्यक्सचिरंसुखमश्नुते॥ २३ ॥

और जो मनुष्य रोगोंके पूर्वरूपमें ही अथवा रोगोंके तरुण होतेही औषध करता है वह बहुत कालतक सुखी रहता है ॥ २३ ॥

यथास्वल्पेनयत्नेनच्छिद्यतेतरुणस्तरुः। सएवातिप्रवृद्धस्तुनसुच्छेद्यतमोभवेत्॥ २४ ॥

जैसे छोटा वृक्ष थोड़ेही यत्नसे कटजाता है और वही बढ़जानेपर सुखपूर्वक काटने योग्य नहीं होता है ॥ २४ ॥

एवमेवविकारोऽपितरुणःसाध्यतेसुखम्। विवृद्धःसाध्यतेकृच्छ्रादसाध्योवापिजायते॥ २५ ॥

इसी प्रकार रोगभी तरुणावस्था में सुखसाध्य होताहै और बढ़जाने पर कष्टसाध्य अथवा असाध्य होजाताहै ॥ २५ ॥

संख्याद्रव्याणिदोषाश्चहेतवःपूर्वलक्षणम्। रूपाण्युपद्रवाश्चोक्ताःकुष्ठानांकौष्ठिकेपृथक्॥ २६ ॥

इतिअग्निवेशकृतेतन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते कुष्ठनिदानंनाम पञ्चमोध्यायः॥ ५ ॥

कुष्ठनिदान नाम इस अध्यायमें भगवान् आत्रेयजी ने कुष्ठोंकी संख्या द्रव्य दोष निदान पूर्वरूप लक्षण तथा उपद्रव यहसब अलग२ कहे ॥ २६ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंकुष्ठनिदाननामपांचवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छठा अध्याय

शोषनिदानम् ।

अथातःशोषनिदानंव्याख्यास्यामः।
इतिहस्माह भगवानात्रेयः ।
इहखलुचत्वारिशोषस्यायतनानि ।
तद्यथा ।—साहसंसन्धारणंक्षयोविषमाशनमिति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त निदान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा शोष(राजयक्ष्मा)के चार निदान हैं जैसे साहस संधारण क्षय और विषमाशन ॥ १ ॥

तत्रयदुक्तंसाहसंशोषस्यायतनमितितदनुव्याख्यास्यामः । यदापुरुषोदुर्बलोहिसन्बलवतासहविगृह्णातिअतिमहतावाधनुषाव्यायच्छतिजल्पतिवातिमात्रमतिमात्रंवाभारमुद्वहतिअप्सुवाप्लवतेचातिदूरमुत्सादनपदाघातनेवातिप्रगाढमासेवतेअतिप्रकृष्टंवाध्वानंद्रुतमभिपततिअभिहन्यतेवान्यद्वाकिञ्चिदेवंविधंविषममतिमात्रंवाव्यायामजातमारभतेतस्यातिमात्रेणकर्मणाउरःक्षण्यतेतस्यउरःक्षतमुपप्लवतेवायुः । सतत्रावस्थितःश्लेष्माणमुरःस्थमुपसंगृह्यशोषयन्विहरत्यूर्द्धमधस्तिर्य्यक्च ॥ २ ॥

इन चारों निदानोंमें से साहस जो शोष का निदान कहागया उसका व्याख्यान किया जाता है जब दुर्बल पुरुष बलवान् के साथ मल्लयुद्धादिक करता है अथवा बहुत भारी धनुष चलाता है बहुत बोलताहै बहुत भारी बोझ उठाता है पानी में बहुत तैरता है पैरोंसे बहुत भारी वस्तुओं को ठेलताहै जल्दी २ बहुत दूर चलताहै द्वेष करता है अथवा इसी प्रकार के अन्य व्यायामादि कार्य्य बहुत करता है उसका इन साहसी कार्य्यों से हृदय क्षत होजाता है उस उरक्षतमें वायु उपद्रव करती है और वहां स्थित होकर वहांके कफको लेकर सुखातीहुई ऊपर नीचे तथा तिरछी विचरण करती है ॥ २ ॥

योंऽशस्तस्यशरीरसन्धीन्आविशति तेन जृम्भाङ्गमर्दोज्वरश्चोपजायते । यस्त्वामाशयमुपैतितेनरोगाभवन्तिउरस्याअरोचकश्च । यःकण्ठंप्रपद्यतेकण्ठस्वनमुद्ध्वंसतेस्वरश्चावसीदतियःप्राणवहानिस्रोतांस्येतितेनश्वासःप्रतिश्यायश्चोपजायते। यः शिरस्यवतिष्ठते शिरस्तेनोपहन्यते ॥ ३ ॥

उसका जो अंश शरीरकी संधियोंमें प्रविष्ट होताहै उससे जंभाई अंगमर्द तथा ज्वर उत्पन्नहोता है जो अंश आमाशय में प्राप्तहोता है उससे हृदय सम्बन्धी रोग तथा अरुचि होती है जो अंश कण्ठ में प्राप्त होता है उससे कण्ठध्वंस तथा स्वरभंग होता है जो अंश प्राणवायुके लेचलनेवाले स्रोतोंमें प्राप्त होताहै उससे श्वास तथा जुकाम पैदाहोते हैं और जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंश शिर में प्राप्त होता है उस्से शिरके रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥

ततःक्षणनाच्चैवोरसोविषमगतित्वाच्चवायोःकण्ठस्योद्ध्वंसनात्कासःसंजायते। कासप्रसङ्गादुरसिक्षतेसशोणितंष्ठीवतिशोणितागमाच्चास्यदौर्गन्ध्यमुपजायतेएवमेतेसाहसप्रभवाःसाहसिकमुपद्रवाःस्पृशन्ति ४

तदनन्तर हृदयमें घाव होजाने से वायु की विषमगति से और कण्ठध्वंस से खांसी उत्पन्न होती है उस खांसी के द्वारा क्षतके वढ़नेपर थूक में रुधिर आने लगता है और रुधिर निकलने से दुर्गन्धि आने लगती है इस प्रकार साहस से हुए अनेक उपद्रव साहसी को होते हैं ॥ ४ ॥

ततःसोऽप्युपशोषणैरेतैरुपद्रवैरुपद्रुतःशनैःशनैरुपशुष्यति।तस्मात्पुरुपोमतिमान्बलमात्मनःसमीक्ष्य तदनुरूपाणिकर्माण्यारभेतकर्त्तुम्। बलसमाधानंहिशरीरंशरीरमूलश्च पुरुषइति ॥ ५ ॥

तब शोषकारी इन उपद्रवों से व्याकुल वह पुरुष धीरे २ शुष्क होजाता है इस्से बुद्धिमान् पुरुष अपने बलको देखके उसके अनुरूप कार्यों का प्रारम्भ करे क्योंकि शरीर बल के आश्रित है और पुरुष का मूल शरीरहै ॥ ५ ॥

तत्रश्लोकः।

साहसंवर्जयेत्कर्मरक्षन्जीवितमात्मनः।जीवन्हिपुरुषस्त्विष्टंकर्मणःफलमश्नुते ॥ ६ ॥

तिसमें यह श्लोक है। अपने प्राणों की रक्षा चाहने वाला पुरुष साहसको त्याग दे क्योंकि जीता हुआही पुरुष कर्मों के वांछित फल को भोगताहै ॥ ६ ॥

सन्धारणंशोषस्यायतनमितियदुक्तंतदनुव्याख्यास्यामः। यदापुरुषोराजसमीपेभर्तृसमीपेवागुरोर्वापादमूलेद्यूतसभांसभाजयन्स्त्रीमध्यंवानुप्रविश्ययानैर्वाप्युच्चावचैर्गच्छन्भयात्प्रसंगाद्ध्रीमत्वाद्घृणित्वाद्वानिरुणद्ध्यागतान्निवातमूत्रपुरीषाणितस्यसन्धारणाद्वायुःप्रकोपमापद्यते ॥ ७ ॥

संधारणशोष का निदान है यह जो कहा गया उसका अब व्याख्यान किया जाता है जब पुरुष राजाके समीप में स्वामी के समीप में गुरुओं के निकट द्यूतसभा में स्त्रियों के बीचमें अथवा ऊंची नीची सवारियों पर चढ़के जाने में भयसे किसी प्रसङ्ग से लज्जासे अथवा घृणासे उपस्थित हुए वायु मूत्र तथा पुरीष के वेगको रोकता है तब वेगोंके रोकने से उसका वायु कुपित होताहै ॥ ७ ॥

सप्रकुपितः पित्तश्लेष्माणौसमुदीर्य्योर्द्धमधस्तिर्य्यक्चविहरतिततश्चांशविशेषेणपूर्ववच्छरीरावयवविशेषंप्रविश्यशूलंजनयतिभिनत्तिपुरीष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुच्छोषयतिवा, पार्श्वेचाभिरुजति गृह्णात्यंसौकण्ठमुरश्चावधमतिशिर श्चोपहन्ति,कासंश्वासंज्वरंस्वरभेदंप्र तिश्यायञ्चोपजनयति ॥ ८ ॥

कुपित हुआ वायु पित्त व कफ को बढ़ाकर ऊपर नीचे तथा तिरछे विहार करता है उपरान्त अंशकी विशेषता से शरीर के किसी अङ्ग में पहले की तरह प्रवेश करके शूल को उत्पन्न करता हैं मलको फाड़ देता है या सुखा देताहै पसलियों में पीड़ा उत्पन्न करताहै कन्धों को जकड़ता है कण्ठ तथा वक्षःस्थलमें धमक उत्पन्न करता है शिरमें पीड़ा करता है और खांसी श्वास ज्वर स्वरभङ्ग तथा जुकाम को उत्पन्न करताहै ॥ ८ ॥

ततः सोऽप्युपशोषणैरेतैरुपद्रवैरुप द्रुतःशनैःशनैरुपशुष्यति । तस्मा त्पुरुषोमतिमानात्मनः शरीरेष्वेव योगक्षेमकरेषुप्रयतेत विशेषेणश रीरंह्यस्यमूलंशरीरमूलश्च पुरुषइ ति ॥ ९ ॥

इसके बाद वह पुरुष इन शोषकारी उपद्रवों से व्याकुल होकर धीरे २ सूख जाता है इससे बुद्धिमान् पुरुष शरीरके योगक्षेममें विशेष यत्न करे क्योंकि शरीरही योगक्षेम का मूल है और शरीरही पुरुष का मूलहै ॥ ९ ॥

तत्र श्लोकः।

सर्व्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपाल येत् । तदभावेहिभावानांसर्वाभा वःशरीरिणामिति ॥ १० ॥

तिसमें यह श्लोक है मनुष्य अन्य सब बातों का त्याग करके पहले शरीरही की पालनाकरे क्योंकि शरीरके अभावमें शरीरियों की सब बातोंका अभाव होजाताहै ॥ १० ॥

क्षयः शोषस्यायतनमितियदुक्तंतद नुव्याख्यास्यामः । यदापुरुषोति मात्रं शोकचिन्तापरीतहृदयोभव ति, ईर्षोत्कण्ठाभयक्रोधादिभिर्वा समाविश्यते, कृशोवासन्रूक्षान्न पानसेवीभवति, दुर्ब्बलप्रकृतिरना हारोऽल्पाहारोवाआस्ते तदातस्य हृदयस्थायीरसः क्षयमुपैति । सत स्योपक्षयात्संशोषंप्राप्नोति अप्रती काराच्चानुबध्यते यक्ष्मणायथोपदे क्ष्यमाणरूपेण ॥ ११ ॥

क्षय शोकका निदान है यह जो कहागया उसका व्याख्यान किया जाता है जब पुरुष हृदय में अत्यन्त शोक अथवा चिन्ता से व्याप्त होता है अथवा ईर्ष्या उत्कंठा भय तथा क्रोधादिकों से युक्त होता है या कृश होकर रूखे अन्नपान का सेवन करता है या दुर्बलाकृति होकर लंघन अथवा अल्पाहार करता है तब उस के हृदय में स्थितहुआ रस क्षीण होजाता है रस के क्षीण होने से वह सूखता है और शीघ्रही उस की चिकित्सा न करने से आगे कहे जानेवाले यक्ष्मारोग से युक्त होता है ॥ ११ ॥

यदापुरुषोऽतिहर्षात्प्रसक्तभावः स्त्री षुअतिप्रसङ्गमारभते तस्यातिप्रस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्नाद्रेतःक्षयमुपैति क्षयमपिचोपगच्छति रेतसियदिमनःस्त्रीभ्योनैवास्यनिवर्त्तते अतिप्रवर्त्ततेएव तस्यातिप्रणीतसङ्कल्पस्य मैथुनमापद्यमानस्यशुक्रंनप्रवर्तते अतिमात्रोपक्षीणत्वात् । अथास्यवायुर्व्यायच्छमानस्यैव धमनीरनुप्रविश्य शोणितवाहिनीस्ताभ्यः शोणितं प्रच्यावयति तच्छुक्रक्षयाच्छुक्रमार्गेणशोणितम्प्रवर्त्तते वातानुसृत लिंगम् ॥ १२ ॥

जब पुरुष अत्यन्त हर्ष से स्त्रियों में आसक्त होकर बहुत मैथुन करता है तब बहुत प्रसंग के कारण उसका वीर्य्य क्षय को प्राप्त होता है वीर्य्य के क्षीण होजाने पर भी जो उसका चित्त स्त्रियोंसे नहीं हटता है और वह अत्यन्त आसक्त होकर फिर मैथुन में प्रवृत्त होता है तब अत्यन्त क्षीण होजाने के कारण वीर्य्य नहींआता किन्तु मैथुन करते ही समय वायु रुधिरके लेचलने वाली नाड़ियों में प्रवेश करके उन नाड़ियों में से रुधिर को लाती है इससे वायु के लक्षणों से युक्त वह रुधिरही वीर्य्य के क्षीण होजानेके कारण वीर्य्यके स्थान से निकलताहै १२ ॥

अथास्य शुक्रक्षयाच्छोणितप्रवर्तनाच्चसन्धयःशिथिलीभवन्ति । रौक्ष्यमुपजायते । भूयःशरीरेदौर्ब्बल्यमाविशति वायुःप्रकोपमापद्यते । सप्रकुपितोऽवशकंशरीरमनुसर्पन् परिशोषयति मांसशोणितेप्रच्यावयति श्लेष्मपित्तेसंरुजतिपार्श्वे चावगृह्णात्यंसौकण्ठमुद्ध्वंसयति शिरः श्लेष्मणाप्युपक्लिश्यप्रतिपूरयति श्लेष्मणासन्धींश्चप्रपीडयन् करोत्यङ्गमर्दमरोचकाविपाकौचपित्तश्लेष्मोत्क्लेशात्प्रतिलोमगत्वाच्च वायुर्ज्वरं कासंस्वरभेदंप्रतिश्यायञ्चोपजनयति ॥ १३ ॥

तदनन्तर वीर्य्य के क्षीण होजाने से तथा रुधिर के निकलने से संधियां शिथिल होजाती हैं रूक्षता उत्पन्न होती है फिर शरीर दुर्बल होजाता है और वायु कुपित होता है वह कुपित हुआ वायु उस दुर्बल शरीर में विचरण करता हुआ मांस तथा रुधिरको सुखाता है कफ तथा पित्त को उभाड़ता है पसलियों में पीड़ा करता है कंधोंको जकड़ सा देता है शिर के कफ को उभारकर उसे कफ से पूर्ण करदेता है संधियों को पीड़ित करताहुआ अंगमर्द को उत्पन्न करता है अरुचि तथा अविपाक को उत्पन्न करता है और पित्तकफ के उभरने से तथा उलटे गमनसे ज्वर खांसी स्वरभेद तथा जुकामको उत्पन्न करता है ॥ १३ ॥

ततः सोप्युपशोषणैरेतैरुपद्रवैरुपद्रुतःशनैःशनैरुपशुष्यति । तस्मात् पुरुषोमतिमानात्मनः शरीरमनुरक्षं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रमनुरक्षेत् । पराह्येषाफलनिर्वृत्तिराहारस्येति ॥ १४ ॥

तदनन्तर शोषकारी इन उपद्रवों से व्याकुल पुरुष धीरे २ सूखता है इससे बुद्धिमान् पुरुष शरीरकी रक्षा के लिये वीर्य्यकी रक्षा करे क्योंकि यह वीर्य्यही भोजन की मुख्य फलसिद्धि है ॥ १४ ॥

तत्रश्लोकः।

आहारस्यपरन्धाम शुक्रंतद्रक्ष्यमात्मनः । क्षयेह्यस्यबहून्रोगान्मरणंवा नियच्छति ॥ १५ ॥

तिस में यह श्लोक है। आहारका मुख्य तेज वीर्य्यहै इसकी अवश्य रक्षाकरनी चाहिये क्योंकि इस के क्षीण होजाने से बहुत रोग होतेहैं अथवा मृत्यु होजाती है ॥ १५ ॥

विषमाशनं शोषस्यायतनमितियदुक्तन्तदनुव्याख्यास्यामः। यदापुरुषः पानाशनभक्ष्यलेह्योपयोगान् प्रकृतिकरणसंयोगराशिदेशकालोपयोगसंस्थोपशयविषमानासेवते तदातस्यवातपित्तश्लेष्माणोवैषम्यमापद्यन्ते । तेविषमाःशरीरमनुपसृत्य यदास्रोतसाम्मुखानिप्रतिवार्य्यावतिष्ठन्ते तदाजन्तुर्य्यदाहारजातमाहरति तदस्यमूत्रपुरीषमेवोपचीयतेभूयिष्ठम्, नान्यस्तथा शरीरधातुः सपुरीषोपष्टम्भाद्वर्त्तयति ॥ १६ ॥

विषमाशन शोष का निदान है यह जो कहा गया उसका व्याख्यान करते हैं जब पुरुष पान अशन भक्ष्य तथा लेह्य वस्तुओं का व्यवहार प्रकृति करण संयोग राशि देश काल उपयोग तथा संस्था इनके उपशय की विषमता से करता है तब उस के वात पित्त तथा कफ यह तीनों दोष विषम होजाते हैं कुपित हुए यह दोष शरीर में विचरणकर के स्रोतों के मुखों को रोककर स्थित होते हैं इससे मनुष्य जो कुछ भोजन करता है उससे बहुत सा मूत्र तथा पुरीषही उत्पन्न होताहै शरीर की अन्य धातु नहीं बढ़ने पाती इस अवस्था में पुरुष पुरीष के ही सहारेसे रहता है ॥ १६ ॥

तस्माच्छुष्यतोविशेषेण पुरीषमनुरक्ष्यम्, तथासर्व्वेषामत्यर्थकृशदुर्ब्बलानाम्। तस्यानाप्याय्यमानस्याविषमाशनोपचितादोषाः पृथक्पृथगुपद्रवैर्युञ्जतोभूयः शरीरमुपशोषयन्ति ॥ १७ ॥

इससे शोष रोगवाले के तथा संपूर्ण अत्यन्त कृश तथा दुर्बल पुरुषों के पुरीष की यत्नसे रक्षा करना चाहिये उस विषमाशन वाले शोषरोगी का जो शीघ्रही आप्यायन (तरकरना) न किया जाय तो विषमाशन से बढ़ेहुए दोष अलग २ दोषों को उत्पन्न करके फिर शरीर को अत्यन्त कृश करते हैं ॥ १७ ॥

तत्र वातःशूलमङ्गमर्दकण्ठोद्ध्वंसनंपार्श्वसंरोजनमंसावमर्दनंस्वरभे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दं प्रतिश्यायञ्चोपजनयति। पित्तं पुनर्ज्वरमतीसारं सान्तर्दाहञ्च। श्लेष्मा प्रतिश्यायं शिरसो गुरुत्वञ्चा समरोचकञ्च ॥ १८ ॥

तब इन दोषों में से वायु शूल अंगमर्द कंठध्वंस पसली तथा कन्धों में पीड़ा स्वरभेद तथा जुकाम को उत्पन्न करता है पित्तज्वर अतीसार तथा अन्तर्दाह को उत्पन्न करता है और कफ जुकाम खांसी शिर का भारीपन तथा अरुचि को उत्पन्न करता है॥ १८ ॥

स कासप्रसङ्गादुरसिक्षते शोणितं ष्ठीवति। शोणितगमनाच्चास्य दौर्ब्बल्यमुपजायते। एवमेते विषमाशनोपचितादोषाराजयक्ष्माणमभिनिर्वर्त्तयन्ति॥ १६ ॥

तदनन्तर खांसी के द्वारा हृदय में घाव होजाने से थूकमें रुधिर आने लगता है और रुधिर आने से दुर्वलता उत्पन्न होती है इस प्रकार विषमाशन से बढ़ेहुए दोष राजयक्ष्मा को उत्पन्न करते हैं॥ १९ ॥

स तैरुपशोषणैरुपद्रवैरुपद्रुतःशनैः शनैरुपशुष्यति। तस्मात्पुरुषोमतिमान् प्रकृतिकरणसंयोगराशिदेशकालोपयोगसंस्थोपशयादविषमाहारमाहरेदिति॥ २० ॥

शोषकारी इन उपद्रवों से व्याकुल पुरुष धीरे २ सूखता है इस से बुद्धिमान् पुरुष प्रकृतिकरण संयोग राशि देशकाल उपयोग तथा संस्थाके उपशय से समाहारकरे॥२०॥

तत्र श्लोकः।

हिताशीस्यान्मिताशीस्यात् कालभोजी जितेन्द्रियः। पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनादिति॥ २१ ॥

तिस में यह श्लोक है। बुद्धिमान् पुरुष विषमाशन से बहुत से कष्टदायकरोगों की उत्पत्ति जानकर जितेन्द्रिय होके समयपर हितकारी तथा थोड़ा भोजन करे॥ २१ ॥

एतैश्चतुर्भिः शोषस्यायतनैरभ्युपसेवितैर्वातपित्तश्लेष्माणएव प्रकोपमापद्यन्ते। ते प्रकुपितानानाविधैरुपद्रवैः शरीरमुपशोषयन्ति। तं सर्व्वरोगाणां कष्टतमम्मत्वा राजयक्ष्माणमाचक्षते भिषजः। यस्माद्वा पूर्व्वमासीद्भगवतः सोमस्योडुराजस्य तस्माद्राजयक्ष्मेति॥२२॥

शोष के इन चारोंनिदानों का सेवन करने से वात पित्त तथा कफ तीनोंदोष कुपित होते हैं और कुपित होकर अनेक प्रकार के रोगों से शरीर को शुष्क करते हैं वैद्यलोग इस शोषरोग को संपूर्ण रोगोंसे अधिक कष्टदायी जानकर राजयक्ष्मा कहते हैं अथवा नक्षत्रराज भगवान् चन्द्रमा के यह रोग पहले हुआ था इस से राजयक्ष्मा कहते हैं॥ २२ ॥

तस्येमानिपूर्व्वरूपाणि। तद्यथा,— प्रतिश्यायः क्षवथुरभीक्ष्णं श्लेष्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसेकोमुखमाधुर्य्यमनन्नाभिलाषोऽन्नकालेचायासोदोषदर्शनमदोषदर्शनमदोषेष्वल्पदोषेषु वाभावेषुपात्रोदकान्नसूपापूपोपदंशपरिवेशकेषु मुक्तवतोहृल्लासस्तथोल्लेखनमाहारस्यान्तरान्तरामुखपादस्यशोषः पाण्योरवेक्षणमत्यर्थमक्ष्णोःश्वेततावाह्वोः प्रमाणजिज्ञासास्त्रीकामतातिघृणित्वम्बीभत्सदर्शनतां च कायेस्वप्नेहि अभीक्ष्णंदर्शनमनुदकानामुदकस्थानानां शून्यानाञ्च ग्रामनगरनिगमजनपदानांशुष्कदग्धभग्नानाञ्च वनानांकृकलासमयूरवानरशुकसर्प्पकाकोलूकादिभिः संस्पर्शनमधिरोहणंवा अश्वोष्ट्रखरवराहैर्य्यानञ्च केशास्थिभस्मतुषाङ्गारराशीनाञ्चाधिरोहणमिति शोषपूर्व्वरूपाणि भवन्ति ॥ २३ ॥

राजयक्ष्मा के यह पूर्वरूप होते हैं जैसे जुकाम वारंवार छींक आना मुखसे वहुत कफ निकलना मुख की मधुरता अन्न में अनिच्छा भोजन के समय में श्रम सा मालूम होना स्वल्प दोषवाले तथा दोषरहित पात्र जल अन्न दाल उपदंश (चटनीआदिक) तथा परिवेश (परोसनेवाला) कों में द्वोष देखना भोजन करते ही मतली होना धीरे २ भोजन का घटना मुख तथा पैरों का सूखना वारंवार हाथों को देखना नेत्रों का बहुत श्वेत होजाना भुजाओं का प्रमाण जानने की इच्छा मैथुन की वहुत इच्छा बहुत घृणा होना तथा शरीर का वीभत्सित होजाना स्वप्न में वारंवार सूखे जलाशय तथा सूने ग्राम नगर देशादिका देखना सूखेहुए जले हुए तथा टूटेहुए बनोंका देखना गिरगट मोर वानर तोता सर्प काक तथा उलूक आदि जीवों का स्पर्श करना अश्व ऊंट खर तथा शूकर पर चढ़ना या उनपर चढ़कर चलना और केश हड्डी भस्म भूसी तथा अंगारों के ढेरपर चढ़ना यह राजयक्ष्माके पूर्वरूपहैं॥२३॥

अतऊर्ध्वमेकादशरूपाणि । तद्यथा,—शिरसः प्रतिपूरणं कासःश्वासः स्वरभेदः श्लेष्मणश्छर्दनंशोणितष्ठीवनं पार्श्वसंरोजनं अंसावमर्दोज्वरः अतीसारस्तथा अरोचक इति ॥ २४ ॥

इसके बाद यह ग्यारह लक्षण यक्ष्मा के होते हैं जैसे शिरका भराहुआ सा मालूम होना खांसी श्वास स्वरभेद कफका वमन होना थूक में रुधिर आना पसली और कन्धों में पीड़ा होना ज्वर अतीसार तथा अरुचि॥२४॥

तत्रापरिक्षीणमांसशोणितोबलवानजातारिष्टः सर्वैरपिशोषलिंगैरुपद्रुतः साध्यो ज्ञेयः ॥ २५ ॥

जिस राजयक्ष्मा वाले के मांस तथा रुधिर क्षीण न हुआ हो बल बनाहो और अरिष्ट न उत्पन्न हुएहों उसको पूर्वोक्त ग्यारह लक्षण होने पर भी साध्य जानना चाहिये ॥ २५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलवर्णोपचयोपचितोहिसहिष्णुत्वा द्व्याध्यौषधबलस्य कामं बहुलिंगो ऽप्यल्पलिंगएवमन्तव्यः ॥ २६ ॥

क्योंकि बल तथा वर्णकी वृद्धिसे युक्त पुरुष रोग तथा औषध के बल को सहसक्ता है इस्से उसके बहुत लक्षण भी थोड़ेही जानने चाहिये ॥ २६ ॥

दुर्बलन्त्वतिक्षीणमांसशोणितमल्पलिंगमप्यजातारिष्टमपिबहुलिंगमेवविद्यात् अहसत्वाद्व्याध्यौषधबलस्य तं परिवर्जयेत् ॥ २७॥

जिस राजयक्ष्मावाले का मांस तथा रुधिर क्षीण होगया हो बल घटगयाहो उसके चाहै थोड़े लक्षण भी होयँ और अरिष्ट नहीं उत्पन्न हुए भी होयँ परन्तु उसे संपूर्ण लक्षणों से युक्त जानना चाहिये क्योंकि वह रोग तथा औषध के बलको नहीं सहसक्ता इस्से उस की चिकित्सानहीं करनी चाहिये ॥ २७ ॥

क्षणेनहिप्रादुर्भवन्त्यरिष्टानि।अन्यनिमित्तश्चारिष्टप्रादुर्भावइति॥२८॥

ऐसे रोगी के क्षणभरही में अरिष्ट उत्पन्न होजाते हैं और अन्य निमित्तों से भी अरिष्ट उत्पन्न होते हैं ॥ २८ ॥

तत्र श्लोकः।

समुत्थानञ्च लिंगञ्च यःशोषस्यावबुध्यते। पूर्वरूपञ्चतत्त्वेन सराज्ञः कर्त्तुमर्हति ॥ २९ ॥

इतिशोषनिदानंसमाप्तम् ॥ ६ ॥

तिस में यह श्लोक है। जो वैद्य राजयक्ष्मा के निदान पूर्व्वरूप तथा लक्षणको तत्त्व से जानता है वह राजाकी चिकित्सा करने के योग्य होता है ॥ २९ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें यहशोषनिदाननामछठाअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ६ ॥

सातवाँअध्याय ॥

उन्मादनिदानम्।

इति हस्माह भगवानात्रेयः।

इह खलु पञ्च उन्मादाभवन्ति। तद्यथा,—वातपित्तकफसन्निपातागन्तुनिमित्तास्तत्र दोषनिमित्ताश्चत्वारः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त उन्मादनिदान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा पांचप्रकार के उन्माद होते हैं जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और आगन्तुज इन पांचों मेंसे वातादिदोषनिमित्तक चार उन्माद ॥ १ ॥

पुरुषाणामेवंविधानां क्षिप्रमभिनिर्वर्त्तन्ते। तद्यथा,—भीरूणामुपक्लिष्टसत्त्वानामुत्सन्नदोषाणाञ्च मलविकृतोपहितानि अनुचितानि आहारजातानि वैषम्ययुक्तेनोपयोगविधिनोपयुञ्जानानांतन्त्रप्रयोगंवाविषममाचरतामन्यांवाचेष्टांविषमांसमाचरतांअत्युपक्षीणदेहानाञ्चव्याधिवेगसमुद्भ्रमितानामु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहतमनसांवा कामक्रोधलोभहर्ष भयशोकचिन्तोद्वेगादिभिःपुनरभि घाताभ्याहतानांत्रामनसिउपहतेबु द्धौचप्रचलितायामभ्युदीर्णदोषाः प्रकुपिताहृदयमुपसृत्यमनोवहानि स्रोतांसिआवृत्यजनयतिउन्मादम्। उन्मादंपुनर्मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृ तिभक्तिशीलचेष्टाचारविभ्रमंविद्या त्॥ २ ॥

ऐसे पुरुषोंके शीघ्रही होते हैं जैसे भीरु (डरपोक) दूषित सत्त्ववाले उत्सन्न दोषवाले मलके विकारों से युक्त अनुचित आहारों को विषमता से खानेवाले विषमता से तन्त्रके प्रयोगों को करनेवाले अथवा अन्य विषम चेष्टा करनेवाले बहुत क्षीण शरीरवाले रोगोंके वेगसे भ्रान्ति को प्राप्तहुये काम क्रोध लोभ हर्ष भय शोक चिन्ता तथा उद्वेग आदिकों से बिगड़ेहुये चित्तवाले अथवा शस्त्रादिकी चोट से युक्त पुरुषों के मनके हत होनेपर औंर बुद्धिके चंचल होजानेपर बढ़े हुए दोष कुपित होकर हृदयमें जाके मन के ले चलनेवाले स्रोतोंको ढककर उन्माद को उत्पन्न करते हैं मन बुद्धि संज्ञा ज्ञान स्मृति भक्ति शील चेष्टा तथा आहारके विभ्रमको उन्माद कहते हैं॥ २॥

तस्येमानिपूर्वरूपाणि। तद्यथा,– शिरसःशून्यभावःचक्षुषोराकुलता स्वनःकर्णयोरुच्छ्वासस्याधिक्यमा स्यसंस्रवणमनन्नाभिलाषोऽरोचका विपाकौहृदयग्रहोध्यानायाससम्मो होद्वेगाश्चास्थानेसततंलोमहर्षोज्वर श्चाभीक्ष्णमुन्मत्तचित्तत्वमुदर्दितत्व मर्दिताकृतिकरणञ्चव्याधेः। स्व प्नेचदर्शनमभीक्ष्णंभ्रान्तचलिताव स्थितानवस्थितानाञ्चरूपाणामप्रश स्तानाञ्चतिलपीडकचक्राधिरोहणं वातकुण्डलिकाभिश्चोन्मथनं निम ज्जनंकलुषाणामम्भसामावर्त्तेषु च क्षुषोश्चापसर्पणमिति दोषनिमित्ता नामुन्मादानां पूर्वरूपाणि॥ ३॥

उन्माद के यह पूर्वरूप होते हैं जैसे शिर का शून्य मालूम होना नेत्रोंका ढबैला होना कानों में शब्द होना अधिक श्वास आना मुख से लार बहना अन्नमें अनिच्छा अरुचि अविपाक हृदय का जकड़ासा होना कारण के विनाही ध्यान श्रम मोह तथा उद्वेग का होना सदैव रोमांच होना ज्वर बहुधा चित्तका उन्मत्त रहना उदर्दित और अर्दित रोगकीसी आकृति बनाना स्वप्नमें प्रायः भ्रान्त चलित अनवस्थित तथा अप्रशस्त (निन्दित) रूपों का दिखाई देना कोल्हूपर चढ़ना वायुके बौंडरोंमें फँसना गदलेजलों के भ्रमरोंमें डूबना और नेत्रोंका चंचल होना यह दोषज उन्मादोंके पूर्वरूप हैं॥ ३॥

ततोऽनन्तरमुन्मादाभिनिर्वृत्तिस्त त्रेदमुन्मादविज्ञानं भवति तद्यथा, परिसर्पणमक्षिभ्रुवामोष्ठांसहनुह स्तपादविक्षेपणमकस्मात् अनिय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तानाश्च सततं गिरामुत्सर्गःफेना गमनमास्यात्स्मितहसितनृत्यगीतवादित्रादिप्रयोगाश्चास्थाने, वीणावंशशङ्खशम्यातालशब्दानुकरणम् असाम्ना। यानमयानैरलङ्करणमलङ्कारिकैर्द्रव्यैर्लोभोऽभ्यवहार्य्येष्वलब्धेषु। लब्धेषुचावमानस्तीव्रं मात्सर्य्यं कार्श्यं पारुष्यमुत्पिण्डतारुणाक्षता वातोपशयविपर्य्यासादनुपशयिता चेतिवातोन्मादलिङ्गानि भवन्ति ॥ ४ ॥

इन्हीं लक्षणों के उपरान्त उन्माद उत्पन्न होताहै उन्मादों के यह लक्षण हैं जैसे नेत्र तथा भृकुटियोंका चंचल होना ओठ कन्धे जावड़ा हाथ तथा पैर अकस्मात् इनका हलाना चलाना सदैव असंवद्ध वचन कहना मुखसे फेना निकलना विना कारणके हँसना गाना मुसकाना नाचना तथा बाजा बजाना वीणा शंख वांसुरी तथा बिजलीके शब्दका हाथों से अनुकरण करना जो पदार्थ सवारी के योग्य नहीं हैं उनपर चढ़ना जो वस्तु आभूषणोंके योग्य नहीं हैं उनके आभूषण बना के पहरना भोजनके अलभ्य पदार्थों में लोभ करना लभ्य भोजनके पदार्थोंका त्यागकरना बहुत मत्सरता कृशता परुषता उत्पिण्डता नेत्रोंका रक्त होजाना और वातके शान्त करनेवाली वस्तुओंके विपरीत वस्तुओंका अहित होना यह वातज उन्मादके लक्षण हैं॥४॥

अमर्षःक्रोधःसंरम्भश्चास्थानेशस्त्रलोष्टकाष्ठमुष्टिभिरभिद्रवणंस्वेषांपरेषां वा प्रच्छायशीतोदकान्नाभिलाषः सन्तापोऽतिवेलः। ताम्रहरितहारिद्रसंरब्धाक्षतापित्तोपशयविपर्य्यासादनुपशायिताचेतिपित्तोन्मादलिङ्गानिभवन्ति ॥ ५ ॥

विना प्रयोजन असहिष्णुता क्रोध संभ्रम इनका होना अपने अथवा पराये लोगों को शस्त्र ढेला काष्ठ तथा घूंसे से मारने को चलना छाया शीतल जल तथा शीतल अन्न की इच्छा बहुत सन्ताप नेत्रोंका ताम्रवर्ण हरित तथा पीला होना नेत्रों में घबराहटसी मालूम होना और पित्तमें सुखकारी वस्तुओं के विपरीत वस्तुओं से अहित होना यह पित्तज उन्मादके लक्षण हैं॥ ५ ॥

स्थानमेकदेशेतूष्णीम्भावोऽल्पशश्चंक्रमणंलालाशिंघाणकप्रस्रवणमनन्नाभिलाषोरहस्कामताबीभत्सत्वंशौचद्वेषःस्वल्पनिद्रताश्वयथुराननेशुक्लस्तिमितमलोपदिग्धाक्षताश्लेष्मोपशयविपर्य्यासादनुपशयिताचेतिश्लेष्मोन्मादलिङ्गानिभवन्ति ॥ ६ ॥

एक स्थान में चुपचाप बैठे रहना स्वल्प भ्रमण करना लार तथा नाकका बहना अन्न में अनिच्छा एकान्तकी इच्छा वीभत्सता शौच न करना निद्राकी स्वल्पता मुखमें सूजन नेत्रोंका श्वेत स्थिर तथा मलयुक्त होना कफमें सुखकारी वस्तुओं से विपरीत वस्तुओं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का अहित होना यह कफज उन्मादके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

त्रिदोषलिङ्गसन्निपातेतुसान्निपातिकंविद्यात् । तमसाध्यमित्याचक्षते कुशलाः ॥ ७ ॥

तीनों दोषोंके लक्षणोंके मिलने से सन्निपातज उन्माद जानना चाहिये इसे कुशली वैद्य असाध्य कहते हैं ॥ ७ ॥

साध्यानान्तुत्रयाणांसाधनानिभवन्ति । तद्यथा स्नेह–स्वेदवमनविरेचनास्थापनानुवासनोपशमननस्तःकर्मधूपधूमपानाञ्जनावपीडप्रधमनाभ्यङ्गप्रदेहपरिषेकानुलेपनवधबन्धनावरोधन–वित्रासन–विस्मापनविस्मारणापतर्पणशिराव्यधनानि ॥ ८ ॥

वातज पित्तज तथा कफज यह तीन उन्माद साध्य होते हैं इनकी चिकित्सा स्नेहन स्वेदन वमन विरेचन आस्थापन अनुवासन उपशमन नस्य धूप धूम्रपान अंजन अवपीड़न प्रधमन तैलादिमर्द्दन लेप परिषेक अनुलेपन बन्धन अवरोधन त्रासन (भय दिखाना) आश्चर्यित कराना विस्मित कराना अपतर्पण(लंघनादि)तथा शिराव्यधन (नाड़ियों का दबाना) इनकेद्वारा करनी चाहिये॥८॥

भोजनविधानञ्चयथास्वंयुक्त्यायच्चान्यदपिकिञ्चिन्निदानविपरीतमौषधं कार्य्यतत्स्यादिति ॥ ९ ॥

दोषके अनुसार भोजन देना चाहिये और इनके सिवाय अन्य जो निदानके विपरीत औषधहो वहभी करना चाहिये ॥ ९ ॥

तत्रश्लोकः ।

उन्मादान्दोषजान्साध्यान्साधयेद्भिषगुत्तमः । अनेनविधियुक्तेनकर्मणायत्प्रकीर्त्तितमिति ॥ १० ॥

तिसमें यह श्लोक है । उत्तम वैद्य पूर्वोक्त कर्मों से विधिपूर्व्वक दोषज साध्य उन्मादों की चिकित्सा करे ॥ १० ॥

यस्तुदोषनिमित्तेभ्यउन्मादेभ्यःसमुत्थानपूर्वरूपलिङ्गवेदनोपशयविशेषसमन्वितोभवतिउन्मादस्तमागन्तुमाचक्षते ॥ ११ ॥

जो उन्माद दोषज उन्मादोंके निदान पूर्वरूप तथा लक्षण वेदना उपशय की विशेषता सेयुक्त होताहै उसे आगन्तुज कहते हैं ॥११॥

केचित्पुनःपूर्वकृतंकर्माप्रशस्तमिच्छन्ति । तस्यनिमित्तंप्रज्ञापराधएवेतिभगवान्पुनर्वसुरात्रेयउवाच ॥ १२ ॥

कोई २ आचार्य्य पूर्व्वजन्मके अनुचित कर्मों को आगन्तुज उन्मादका निदान बताते हैं परन्तु भगवान् आत्रेयजी कहते हैं कि प्रज्ञापराध (बुद्धिका दोष) ही इसका निदानहै ॥ १२ ॥

प्रज्ञापराधाद्धिअयंदेवर्षिपितृगन्धर्वयक्षराक्षसपिशाचगुरुवृद्धसिद्धाचार्य्यपूज्यानवमत्याअहितानिआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चरतिअन्यद्वाकिञ्चित्कर्माप्रशस्त मारभते ॥ १३ ॥

जो मनुष्य प्रज्ञापराधसे देवता ऋषि पितर गन्धर्व्व यक्ष राक्षस पिशाच गुरु वृद्ध सिद्ध आचार्य तथा पूज्योंका तिरस्कार करके अहिताचरण करता है अथवा कोई अन्य निन्दित कार्य्य करताहै ॥ १३ ॥

तमात्मनोपहतमुपघ्नन्तोदेवाःकुर्वन्त्युन्मत्तम्। तत्रदेवादिप्रकोपनिमित्तेनागन्तुकोन्मादेनपुरस्कृतस्य इमानिपूर्वरूपाणि । तद्यथादेवगोब्राह्मणतपस्विनां हिंसारुचित्वं कोपनत्वंनृशंसाभिप्रायताअरतिरोजोवर्णच्छायाबलवपुषाञ्चोपतप्तिः। स्वप्नेचदेवादिभिरभिभर्त्सनंप्रवर्त्तनञ्चेतिआगन्तुनिमित्तस्यउन्मादस्य पूर्वरूपाणिभवन्ति ततोऽनन्तरमुन्मादाभिनिर्वृत्तिः ॥ १४ ॥

देवता लोग तिस तिरस्कार करनेवाले को ताड़ित करतेहुये उन्मत्त करदेते हैं जिस के देवताआदिक के कोपसे आगन्तुज उन्माद होनेवाला होता है उसके यह पूर्व्वरूप होते हैं जैसे देवता गौ ब्राह्मण तथा तपस्वियों की हिंसा करने में रुचि क्रोध परद्रोह करनेकी इच्छा अरति (बेचैनी) ओज वर्ण कान्ति बल तथा शरीर में उपताप स्वप्न में देवतादिकों से डाटा जाना तथा निन्दित कार्य्यों में प्रवृत्त कराया जाना यह आगंतुज उन्माद के पूर्वरूप होते हैं और इन लक्षणोंके उपरान्त उन्माद होता है ॥ १४ ॥

तत्रायमुन्मादकराणांभूतानामुन्मादयिष्यतामारम्भविशेषः तद्यथा। अवलोकयन्तोदेवाजनयन्तिउन्मादम् । गुरुवृद्धसिद्धर्षयोऽभिशपन्तः पितरोधर्षयन्तः। स्पृशन्तोगन्धर्वाः। समाविशन्तोयक्षराक्षसास्त्वामगन्धमाघ्रापयन्तःपिशाचाः पुनरधिरुह्यवाहयन्तः ॥ १५ ॥

उन्मादकारी देवता आदिक इसप्रकार उन्माद करते हैं जैसे देवता लोग दृष्टि से उन्माद करते हैं गुरु वृद्ध सिद्ध तथा ऋषि शापसे उन्माद करते हैं पितर लोग धर्षणा करके उन्माद करते हैं गंधर्व स्पर्श से उन्माद करते हैं यक्ष तथा राक्षस आवेश से उन्माद करते हैं और पिशाच आमगंध (मांसादिक) को सुंघाकर तथा पुरुष में चढ़ उस को सवारी करके उन्मादको करते हैं १५॥

तस्येमानिरूपाणि। तद्यथा,-अमर्त्यबलवीर्य्यपौरुषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणज्ञानवचनविज्ञानानिअनियतश्चोन्मादकालः ॥ १६ ॥

उस उन्मादके यह लक्षण होते हैं जैसे देवताओं के समान बल वीर्य्य पुरुषार्थ पराक्रम ग्रहण धारण स्मरण ज्ञान वचन तथा विज्ञान का होना और उन्माद के समय का कुछ निश्चय न होना ॥ १६ ॥

उन्मादयिष्यतामपिखलुदेवर्षिपितृगन्धर्वयक्षराक्षसपिशाचानांगुरुवृद्ध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धानांवाएषुअन्तरेषुअभिगमनीयाःपुरुषाभवन्तितद्यथा,-पापस्यकर्मणःसमारम्भेपूर्वकृतस्यवाकर्मणःपरिणामकालेएकस्यवाशून्यगृहवासेचतुष्पथाधिष्ठानेवासन्ध्यावेलायामप्रयतभावे वापर्वसन्धिषुवामिथुनभावेरजस्वलाभिगमनेवा विगुणेवाध्ययनबलिमङ्गलहोमप्रयोगे नियमव्रतब्रह्मचर्य्यभङ्गेवा महाहवेवादेशकुलपुरविनाशेवामहाग्रहोपगमनेवास्त्रियाःप्रजननकाले विविधभूताशुभाशुचिस्पर्शनेवावमनविरेचनरुधिरस्रावेवाशुचेरप्रयतस्यवा चैत्यदेवायतनाभिगमनेवा मांसमधुतिलगुडमद्योच्छिष्टेवादिग्वाससिवानिशिनगरनिगमचतुष्पथोपवनश्मशानायतनाभिगमनेवाद्विजगुरुसुरपूज्याभिधर्षणेवा धर्माख्यानव्यतिक्रमेवा अन्यस्यकर्मणोऽप्रशस्तस्यारम्भेवाइत्याघातकालाः१७॥

उन्माद करने की इच्छा करनेबाले देवता ऋषि पितर गन्धर्व यक्ष राक्षस तथा पिशाच या गुरु वृद्ध सिद्ध जिन २ अवसरों में आकर पुरुष को उन्मत्त करते हैं वह यहहैं जैसे पापकर्म का आरंभ प्राक्तन कर्म के परिणाम का समय शून्यगृह में अकेले रहना चौराहे पर जाना संध्या समय अपवित्रता पर्वोंकी सन्धि मैथुन रजस्वलाओं के साथ गमन करना निर्गुण विषय का अध्ययन बलि मंगल होम प्रयोग नियम व्रत तथा ब्रह्मचर्य्य इनका भंग होना घोर युद्ध देश कुल तथा नगरका विनाश महाग्रहों का गमन स्त्रियों के प्रसव समय अनेक प्रकार के अशुचि पदार्थों का स्पर्श वमन तथा रुधिरस्रावसे अपवित्रहोकर अथवा अन्य किसी प्रकार से अपवित्र होकर यज्ञशाला तथा किसी देवस्थान में जाना मांस मधु तिल गुड़ तथा मद्य से उच्छिष्ट होना नग्न होना रात्रि में नगर से बाहर निकल श्मशान में चौरहा में व वायु के सन्मुख जाना ब्राह्मण गुरु देवता तथा पूज्य लोगों का तिरस्कार करना धर्माख्यान का व्यतिक्रम करना अथवा अन्य किसी निन्दित कर्म का आरंभ करना यह देवतादिकों के उन्मत्त करने के समय हैं ॥ १७ ॥

त्रिविधन्तुखलुउन्मादकराणांभूतानामुन्मादनेप्रयोजनंभवति । तद्यथा, हिंसारतिरभ्यर्चनञ्चेति । तेषांतत्प्रयोजनमुन्मत्ताचरणविशेषलक्षणैर्विद्यात् । तत्रहिंसार्थमुन्माद्यमानोऽग्निंप्रविशति अप्सुवानिमज्जतिस्थलात्श्वभ्रेवानिपतति । शस्त्रकशाकाष्ठलोष्टमुष्टिभिर्हन्त्यात्मानमन्यच्चप्राणवधार्थमारभते । हिंसार्थिनमुन्मत्तमसाध्यंविद्यात् । साध्यौपुनर्द्वावितरौ ॥ १८ ॥

उन्मादकारी देवतादिकों के उन्मत्त करने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में तीन प्रयोजन होते हैं जैसे हिंसा रति और पूजन यह प्रयोजन उन्मत्तों के आचार विशेषों से जानने चाहिये जो पुरुष हिंसाके निमित्त उन्मत्त कियाजाता है वह अग्नि में प्रवेश करता है जल में डूबता है गढ़ों में गिरता है शस्त्र कशा काष्ठ ढेले तथा घूंसों के द्वारा अपने शरीर में प्रहार करता है अथवा अन्य प्राणनाशक कार्य करता है हिंसा के निमित्त जो उन्मत्त किया जाता है वह असाध्य है और बाक़ी के दो साध्य हैं १८॥

तयोःसाधनानि। मन्त्रौषधिमणि मङ्गलबल्युपहारहोमानियमव्रतप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययन-प्रणिपातगमनादीनिइतिएवमेतेपञ्चोन्मादाव्याख्याताभवन्ति॥ १६॥

उनकी चिकित्सा मंत्र औषध मणि मंगल वलि उपहार होम नियम व्रत प्रायश्चित्त उपवास स्वस्त्ययन प्रणाम तथा गमनादि के द्वारा करनी चाहिये इसप्रकार पांच उन्माद कहे गये॥ १९॥

ते तु खलु निजागन्तुविशेषेणसाध्यासाध्यविशेषेण च प्रविभज्यमानाः पञ्च सन्तो द्वौ एव भवतः॥२०॥

यह पांचो निज आगन्तुजभेद से और साध्यासाध्य की विशेषता से विभज्यमान होनेपर भी दो प्रकारके हैं॥ २०॥

तौ परस्परमनुबध्नीतः। कदाचिद्यथोक्तहेतुसंसर्गाच्च तयोः संसृष्टमेव पूर्वरूपं भवति संसृष्टमेवलिङ्गञ्च। तत्र असाध्यसंयोगंसाध्यासाध्यसंयोगंवाअसाध्यंविद्यात्। साध्यन्तु साध्यसंयोगं तस्य साधनं साधनसंयोगमेवविद्यादिति॥ २१॥

कदाचित् यह दोनों परस्पर मिलजाते हैं और पूर्वोक्त निदानों के संसर्ग से इन के पूर्व्वरूप तथा लक्षण भी मिलेहुए होते हैं इन में जो साध्यों का संयोग होय तो इनकी पूर्व्वोक्त चिकित्सा मिली हुई करनी चाहिये॥ २१॥

तत्र श्लोकाः।

नैव देवा न गन्धर्वा न पिशाचा न राक्षसाः। न चान्ये स्वयमक्लिष्टमुपक्लिश्यन्ति मानवम्॥ २२॥

तिस में यह श्लोक हैं। देवता गन्धर्व पिशाच तथा राक्षस अथवा और इसीप्रकार के लोग निर्दोष मनुष्य को क्लेश नहीं देते॥ २२॥

ये त्वेनमनुवर्त्तन्ते क्लिश्यमानं स्वकर्मणा। न तन्निमित्तः क्लेशोऽसौ न ह्यस्तिकृतकृत्यता॥ २३॥

और अपने कर्म से क्लेशित मनुष्य को जो देवतादिक क्लेश देते भी हैं उसमें उन को कारण न जानना चाहिये क्योंकि इससे उनकी कृतकृत्यता नहीं होती॥ २३॥

प्रज्ञापराधात् सम्प्राप्ते व्याधौकर्मज आत्मनः। नाभिशंसेद्बुधोदेवान् न पितॄन् नापिराक्षसान्॥ २४॥

प्रज्ञापराध से कर्मज रोगों के प्राप्त होनेपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान् मनुष्य देवता पितर तथा राक्षसोंको अपराध न लगावे ॥ २४ ॥

आत्मानमेव मन्येत कर्त्तारं सुखदुःखयोः । तस्माच्छ्रेयस्करंमार्गं प्रतिपद्येत नोत्रसेत ॥ २५ ॥

किन्तु अपने को ही सुख दुःख का कर्त्ता माने तिससे मनुष्य को उचित है कि कल्याणकारी मार्गका अवलम्बन करै भ्रम में न पड़े ॥ २५ ॥

देवादीनामुपचितिर्हितानामुपसेवनम् । न च तेभ्यो विरोधश्च सर्वमायत्तमात्मनि ॥ २६ ॥

देवादिकों का पूजन करे हित पदार्थोंका सेवन करे और देवतादिकोंसे कभी विरोध न करे क्योंकि यह सब आत्माही में टिके हैं ॥ २६ ॥

संख्यानिमित्तं द्विविधं लक्षणं साध्यता न च । उन्मादानां निदानेऽस्मिन् क्रियासूत्रञ्च भाषितम्॥२७॥

इति उन्मादनिदानं समाप्तम् ॥ ७ ॥

उन्मादों की संख्या निदान दो प्रकारके लक्षण साध्यता तथा असाध्यता और चिकित्सा का संक्षेप यह सब विषय भगवान् आत्रेय जीने इस उन्मादनिदान अध्याय में कहा ॥ २७ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्र में उन्मादनिदाननामसातवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

अपस्मारनिदानम् ।

इति हस्माह भगवानात्रेयः ।

इह खलु चत्वारोऽपस्मारा वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः ॥ १ ॥

इस के उपरान्त अपस्मारनिदान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा चार प्रकार के अपस्मार होते हैं जैसे वातज पित्तज कफज और सन्निपातज ॥ १ ॥

ते एवंविधानां प्राणभृतां क्षिप्रमभिनिर्वर्त्तन्ते। तद्यथा । रजस्तमोभ्यामुपहतचेतसामुद्भ्रान्तविषमबहुदोषाणांसमलविकृतोपहितानि अशुचीनि अभ्यवहारजातानि वैषम्ययुक्तेनउपयोगविधिनोपयुञ्जानानां तन्त्रप्रयोगमपिचविषममाचरतामन्याश्चशरीरचेष्टाविषमाःसमाचरतामत्युपक्षीणदेहानांवादोषाःप्रकुपितारजस्तमोभ्यामुपहतचेतसामन्तरात्मनःश्रेष्ठतममायतनंहृदयमुपसंगृह्यपर्य्यवतिष्ठन्तेतथाइन्द्रियायतनानितत्रचावस्थिताःसन्तोयदा हृदयमिन्द्रियायतनानिचेरिताःकामक्रोधभयलोभमोहहर्षशोकचिन्तोद्वेगादिभिः भूयः सहसाअभिपूरयन्तितदाजन्तुरपस्मरति ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह चारों मनुष्यों के इस प्रकार शीघ्रही होते हैं जैसे रजोगुण तथा तमोगुण से व्याकुलचित्तवाले भ्रमयुक्त विषम बहुत दोषवाले मलयुक्त विकारको प्राप्त अपवित्र भोजनों को विषमता से खानेवाले तंत्रप्रयोगों को विषमता से करनेवाले शरीर की अन्यचेष्टाओं को विषमता से करनेवाले तथा क्षीण शरीर वाले पुरुषों के दोष कुपित होकर रजोगुण तथा तमोगुण से विकलचित्तवाले अन्तरात्मा के श्रेष्ठ स्थान हृदय में प्राप्तहोकर स्थित होते हैं और वहां स्थित होकर जब काम क्रोध भय लोभ मोह हर्ष शोक चिन्ता तथा उद्वेगादिकों से प्रेरित होकर हृदय तथा इन्द्रियस्थानों को सहसा पूर्ण करते हैं तब अपस्मार रोगहोता है ॥ २ ॥

अपस्मारंपुनः स्मृतिबुद्धिसत्वसंप्लवाद्बीभत्सचेष्टमावस्थिकंतमःप्रवेशमाचक्षते ॥ ३ ॥

स्मृति बुद्धि तथा सत्त्वके बिगड़जाने से बीभत्सचेष्टा (हाथ पैर पटकना) युक्त होकर अज्ञानयुक्त होजानेको अपस्मार कहतेहैं ॥३॥

तस्येमानिपूर्वरूपाणिभवन्ति । तद्यथा-भ्रूव्युदासःसततमक्ष्णोर्वैकृतमशब्दश्रवणंलालाशिंघाणकप्रस्रवणमनन्नाभ्यशनमरोचकाविपाकौहृदयग्रहः कुक्षेराटोपोदौर्बल्यमङ्गमर्दोमोहस्तमसोदर्शनंमूर्च्छाभ्रमश्चाभीक्ष्णञ्चस्वप्नेमदनर्त्तन-पीडन-वेपनव्यधनपतनादीनिअपस्मारपूर्वरूपाणिभवन्तिततोऽनन्तरमपस्माराभिनिर्वृत्तिः ॥ ४ ॥

तिस अपस्मार के यह पूर्व्वरूप होते हैं जैसे भृकुटियों को सकोड़ना नेत्रोंका सदैव विकारयुक्त रहना कमसुनाई देना लार बहना अन्न में अनिच्छा अरुचि अविपाक हृदय जकड़ाहुआ सा मालूमदेना कुक्षिमें गड़गड़ाहट होना दुर्बलता अंगमर्द मोह अंधकार सा दिखाई देना मूर्च्छा तथा वारंवार भ्रम होना और स्वप्नमें उन्मत्तता नाचना पीड़ा कंप मानसी पीड़ा तथा गिरना इनबातों का होना इन लक्षणों के उपरान्त अपस्मार होता है ॥ ४ ॥

तत्रेदमपस्मारविशेषविज्ञानंभवति । तद्यथा । अभीक्ष्णमपस्मरन्तं क्षणे क्षणे संज्ञां प्रतिलभमानमुत्पिंडिताक्षमसाम्नावात्विलपन्तमुद्वमंतंफेनमतीवाध्मातग्रीवमाविद्धशिरस्कं विषमविनतांगुलिमनवस्थितसक्थिपाणिपादमरुणपरुषश्यावनखनयनवदनत्वचमनवस्थितचपलपरुषरूक्षरूपदर्शिनंवातलानुपशयं विरीतोपशयं वातेनापस्मारवन्तं विद्यात् ॥ ५ ॥

तहां इसप्रकार से अपस्मार का विशेष ज्ञान होताहै जैसे वारंवार अपस्मारयुक्त होना क्षण २ में चैतन्य होजाना नेत्रों को इधर उधर चलाना प्रलाप करना फेने का वमन होना ग्रीवा का जकड़ा हुआसा होना शिरमें पीड़ा टेढ़ी बेढ़ी उंगलियों से मुट्ठी बाँधना हा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थ पैर तथा जंघाओं का स्थिर न रहना नख नेत्र मुख तथा त्वचा का परुष अरुण तथा कपिश वर्ण होना स्थिरतारहित चंचल परुष तथा रूखे रूपों का दिखाई देना बादी वस्तुओं से अहित होना और वातनाशक वस्तुओं से हित होना यह वातज अपस्मार के लक्षण हैं ॥ ५ ॥

अभीक्ष्णमपस्मरन्तं क्षणेक्षणे संज्ञां प्रतिलभमानमनुकूजन्तमास्फालयन्तंच भूमिंहरितहारिद्रताम्रनखनयनवदनत्वचं रुधिरोक्षितोग्रभैरवप्रदीप्तरुषितरूपदर्शिनं पित्तलानुपशयं विपरीतोपशयं पित्तेनापस्मारितं विद्यात् ॥ ६ ॥

वारंवार अपस्मार से युक्त होना क्षण २ में चैतन्य होना चिल्लाना पृथ्वी में हाथ पैर पटकना नख नेत्र मुख तथा त्वचाका हरा पीला अथवा ताम्रवर्ण होना नेत्रों का लाल होना उग्र भयंकर दीप्त तथा रूखे रूपों को देखना पित्तकारी वस्तुओं से अहित होना और पित्तनाशकारी वस्तुओं से हित होना यह पित्तज अपस्मार के लक्षण हैं ॥ ६ ॥

चिरादपस्मरन्तं चिराच्चसंज्ञांप्रतिलभमानंपतन्तमनतिविकृतचेष्टंलालामुद्वमन्तंशुक्लनखनयनवदनत्वचं शुक्लगुरुस्निग्धरूपदर्शिनंश्लेष्मलानुपशयंविपरीतोपशयंश्लेष्मणापस्मारितंविद्यात् ॥ ७ ॥

बहुत काल में अपस्मार होना बहुत देरमें चैतन्य होना गिरकर हाथ पैर आदिका न पटकना लार का मुखसे गिरना नख नेत्र मुख तथा त्वचा को श्वेत होना श्वेत स्निग्ध तथा भारी रूपों का दिखाई देना कफकारी वस्तुओं से अहित होना और कफघ्न वस्तुओं से हित होना यह कफज अपस्मार के लक्षण हैं ॥ ७ ॥

समवेतसर्वलिङ्गमपस्मारंसान्निपातिकंविद्यात्। तमसाध्यमाचक्षते। इतिचत्वारोऽपस्माराः। तेषामागन्तुरनुबन्धोभवत्येव। कदाचित्सउत्तरकालमुपदेक्ष्यते। तस्यविशेषविज्ञानंयथोक्तैर्लिङ्गैर्लिङ्गाधिक्यमदोषलिंगानुरूपंकिञ्चिद्धितंतत्तुअपस्मारिभ्यस्तीक्ष्णानिचैवसंशोधनानिउपशमनानियथास्वंमन्त्रादीनिचागन्तुसंयोगे ॥ ८ ॥

जिस अपस्मार में पूर्वोक्त तीनों दोषों के लक्षण मिलेहोयँ उसे सन्निपातज अपस्मार जानना चाहिये यह असाध्य होता है इस प्रकार चारों अपस्मार कहेगये इनमें कदाचित् आगन्तुसंबंध भी होता है वह आगे कहा जायगा उसका विशेष लक्षण यह है कि पूर्वोक्तलक्षणों से कुछ अधिकता होनी और अदोषलक्षणों के अनुरूप कुछ हित होना अपस्मार रोगों में तीक्ष्ण संशोधन तथा दोष के अनुसार संशमन औषध के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और आगन्तुसंयोग में मंत्रादिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तस्मिन्हिदक्षाध्वरोध्वंसेदेहिनांनानादिक्षुविद्रवतामतिसरणप्लवनलङ्घनाद्यैर्देहविक्षोभणैःपुरागुल्मोत्पत्तिरुद्धविष्प्राशान्मेहकुष्ठानांभयत्रासशोकैरुन्मादानांविविधभूताशुचिसंस्पर्शादपस्माराणाम् ९॥

पूर्वसमय दक्ष के यज्ञ के विध्वंस में दिशाओंमें भागकर गये हुए देहधारियोंके बहुत चलना भागना तथा लंघनादिक देहके क्षोभों से गुल्मरोग की उत्पत्ति हुई थी हविके खाने से प्रमेह तथा कुष्ठकी उत्पत्ति हुई थी भय त्रास तथा शोकसे उन्माद की उत्पत्ति हुई थी अनेक प्रकार के अपवित्र भूतों के स्पर्श से अपस्मार की उत्पत्ति हुई थी॥९॥

ज्वरस्तुमहेश्वरललाटप्रभवः। तत्सन्तापाद्रक्तपित्तमतिव्यवायात्पुनर्नक्षत्रराजस्यराजयक्ष्मेति॥ १०॥

श्री शिवजी के ललाट से ज्वरकी उत्पत्ति हुईथी उसके सन्ताप से रक्तपित्तकी उत्पत्ति हुई थी और बहुत मैथुन करने से चन्द्रमाको राजयक्ष्मा हुआ था॥ १०॥

तत्रश्लोकाः।

अपस्मरतिवातेनपित्तेनचकफेनच। चतुर्थःसन्निपातेनप्रत्याख्येयस्तथाविधः॥ ११॥

तिसमें यह श्लोक हैं। वातज पित्तज कफज तथा सन्निपातज यह चार प्रकारके अपस्मार हैं॥ ११॥

साध्यांस्तुभिषजःप्राज्ञाःसाधयन्ति समाहिताः। तीक्ष्णैःसंशोधनैश्चैव यथास्वंशमनैरपि॥ १२॥

साध्य अपस्मारों की चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्य सावधान होकर तीक्ष्णसंशोधनों से तथा दोष के अनुसार संशमन से करते हैं॥ १२॥

यदादोषनिमित्तस्यभवत्यागन्तुरन्वयः। तदासाधारणंकर्मप्रवदन्तिभिषग्वराः॥ १३॥

और जब दोषज अपस्मारों में आगन्तुसंयोग होताहै तब साधारणकर्म करना चाहिये यह श्रेष्ठ वैद्यों का मत है॥ १३॥

सर्वरोगविशेषज्ञःसर्वौषधविशेषवित्। भिषक्सर्वामयान्हन्तिनचमोहंनियच्छति। इत्येतदखिलेनोक्तंनिदानस्थानमुत्तमम्॥ १४॥

संपूर्ण रोगों की विशेषता का जानने वाला और संपूर्ण औषधियोंकी विशेषता का जानने वाला वैद्य सब रोगोंको दूर करताहै और मोहको नहीं प्राप्तहोता है इस प्रकार उत्तम रीति से संपूर्ण निदानस्थान कहागया॥ १४॥

निदानार्थकरोरोगोरोगस्याप्युपलभ्यते। तद्यथाज्वरसन्तापाद्रक्तपित्तमुदीर्य्यते॥ १५॥

कोई२रोग भी रोगोंका निदान होजाताहै जैसे ज्वरके सन्तापसे रक्तपित्त होता है॥१५॥

रक्तपित्ताज्ज्वरस्ताभ्यांशोषश्चाप्युपजायते। प्लीहाभिवृद्ध्याजठरंजठराच्छोफएवच॥ १६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्तपित्त से ज्वर होता है और ज्वर तथा रक्तपित्त से राजयक्ष्मा होताहै प्लीहा के बढ़ने से उदररोग होताहै और उदररोग से शोथ उत्पन्नहोता है ॥ १६ ॥

अर्शोभ्योजठरंदुःखंगुल्मश्चाप्युपजायते। प्रतिश्यायादथोकासःकासात्संजायतेक्षयः। क्षयोरोगस्यहेतुत्वे शोषश्चाप्युपजायते ॥ १७ ॥

बवासीरसे दुःखदायी उदररोग तथा गुल्मरोग होताहै जुकाम से खांसी खांसी से क्षय और क्षयसे राजयक्ष्मा होताहै ॥ १७ ॥

तेपूर्वंकेवलारोगाःपश्चाद्धेत्वर्थकारिणः। उभयार्थकराद्दृष्टास्तथैवैकार्थकारिणः ॥ १८ ॥

यह रोग पहलेकेवल उत्पन्न होते हैं और पीछे निदानार्थकारी अर्थात् निदानरूप होकर अन्य रोगोंको उत्पन्न करते हैं कोई रोग उभयार्थक होते हैं (आप बने रहकर दूसरे रोगों को भी उत्पन्न करते हैं) और कोई एकार्थकारी होते हैं (अन्य रोगों को उत्पन्न करके आप नष्ट होजाते हैं) ॥ १८ ॥

कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वाप्रशाम्यति। नप्रशाम्यतिचाप्यन्योहेतुत्वंकुरुतेऽपिच ॥ १९ ॥

कोई रोग अन्य रोग का कारण होकर आप शान्त होजाता है और कोई रोग आप नहीं शान्त होताहै और अन्य रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ १९ ॥

एवंकृच्छ्रतमानॄणांदृश्यन्तेव्याधिसङ्कराः। प्रयोगापरिशुद्धत्वात्तथाचान्योन्यसम्भवात् ॥ २० ॥

औषधियों के यथार्थ व्यवहार न होने से और रोगों के परस्पर कारण रूप होनेसे इसीप्रकार से मनुष्यों को अत्यन्त कष्टदायी रोगसंकर उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥

प्रयोगःशमयेद्व्याधिंयोऽन्यमन्यमुदीरयेत्। नासौविशुद्धःशुद्धस्तुशमयेद्योनकोपयेत् ॥ २१ ॥

जिस प्रयोग से एक रोग शान्त होजाय और अन्य २ रोग उत्पन्न होजाय वह शुद्ध नहीं कहलाता है शुद्ध प्रयोग वह है जो एक रोग को शान्त करके दूसरे को उत्पन्न न करे ॥ २१ ॥

एकोहेतुरनेकस्यतथैकस्यैकएवहि। व्याधेरेकस्य चानेकोबहूनांबहवोऽपिच ॥ २२ ॥

एक हेतुसे अनेक रोग होते हैं एक हेतु से एकही रोग होता है अनेक हेतुओं से एक रोग होता है और अनेक हेतुओं से अनेक रोग होते हैं ॥ २२ ॥

ज्वरभ्रमप्रलापाद्यादृश्यन्तेरूक्षहेतुजाः। रूक्षेणैकेनचाप्येकोज्वरएवोपजायते ॥ २३ ॥

जैसे रूक्षता से ज्वर भ्रम तथा प्रलापादि अनेक रोग होते हैं एक रूक्षता से केवल ज्वरही होता है ॥ २३ ॥

हेतुभिर्बहुभिश्चैकोज्वरोरूक्षादिभिर्भवेत्। रूक्षादिभिर्ज्वराद्याश्चव्याधयःसम्भवन्तिहि ॥ २४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूक्षता आदि अनेक हेतुओं से केवल ज्वर होता है और रूक्षता आदि अनेक हेतुओं से ज्वरादि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं॥ २४॥

लिङ्गञ्चैकमनेकस्यतथैकस्यैकमुच्य ते। बहून्येकस्यचव्याधेर्बहूनांस्युर्ब हूनिच॥ २५॥

अनेक रोगोंका एक लक्षण होता है एक रोग का एक लक्षण होताहै एक रोग के बहुत लक्षण होते हैं और अनेक रोगों के अनेक लक्षण होते हैं॥ २५॥

विषमारम्भमूलानांलिङ्गमेकंज्वरोम तः। ज्वरस्यैकस्यचाप्येकःसन्तापो लिङ्गमुच्यते॥ २६॥

जैसे विषमारंभ से हुये अनेक रोगों का ज्वरही एक लक्षण है केवल ज्वरका संताप ही लक्षण है॥ २६॥

विषमारम्भमूलैश्चज्वरएकोनिरुच्य ते। लिङ्गैरेतैर्ज्वरश्वासहिक्काद्याः सन्तिचामयाः॥ २७॥

केवल ज्वरके विषमारंभ से हुए बहुत से लक्षण हैं और ज्वर श्वास तथा हिचकी आदि अनेक रोगों के विषमारंभ से हुए अनेक लक्षण हैं॥ २७॥

एकाशान्तिरनेकस्यतथैकैकस्यल क्ष्यते। व्याधेरेकस्यचानेकोबहूनां बहुयएवच॥ २८॥

अनेक रोगों का एक उपाय है एकरोग का एक उपाय है एकरोग के अनेक उपाय हैं और अनेक रोगों के अनेक उपाय होते हैं॥ २८॥

शान्तिरामाशयोत्थानांव्याधीनां लंघनक्रिया। ज्वरस्यैकस्यचाप्ये काशान्तिर्लंघनमुच्यते॥ २९॥

जैसे आमाशय से हुए अनेक रोगोंका लंघन एक उपाय है केवल ज्वर का लंघन एक उपाय है॥ २९॥

तथालघ्वशनाद्याश्चज्वरस्यैकस्य शान्तयः। एताश्चैवज्वरश्वासहि क्कादीनांप्रशान्तयः॥ ३०॥

एक ज्वरके लघु भोजनादिक अनेक उपाय हैं और ज्वर श्वास तथा हिचकी आदि अनेक रोगों के लघु भोजनादिक अनेक उपाय हैं॥ ३०॥

सुखसाध्यःसुखोपायःकालेनाल्पेन साध्यते। साध्यतेकृच्छ्रसाध्यस्तुय त्नेनमहताचिरात्॥ ३१॥

सुखसाध्य रोग साधारण उपायोंसे शीघ्र ही शान्त होजाते हैं और कष्टसाध्यरोग बड़े कष्ट से बहुत काल में नष्ट होते हैं॥ ३१॥

यातिनाशेषतांव्याधिरसाध्योयाप्य संज्ञितः। परोऽसाध्यःक्रियाःसर्वाः प्रत्याख्येयोऽतिवर्त्तते॥ ३२॥

याप्य नाम असाध्य रोग कभी समूल नष्ट नहीं होते और असाध्य रोग में संपूर्ण चिकित्सा व्यर्थ होजाती है॥ ३२॥

नासाध्यःसाध्यतांयातिसाध्योयाति त्वसाध्यताम्। पादावचाराद्दैवाद्वा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यान्तिभावान्तरङ्गदाः ॥ ३३ ॥

असाध्यरोग साध्य नहींहोते किन्तु साध्य रोग असाध्य होजाते हैं वैद्यादि चतुष्पादों के अपचार से अथवा भाग्यवश से रोग भावान्तरों को प्राप्त होते हैं ॥ ३३ ॥

वृद्धिस्थानक्षयावस्थादोषाणामुपलक्षयेत । सुसूक्ष्मामपिचप्राज्ञोदेहाग्निबलचेतसाम् ॥ ३४ ॥

बुद्धिमान् वैद्य दोषोंकी वृद्धि समता तथा क्षयावस्था को और देह अग्निबल तथा चित्तकी सूक्ष्मावस्था को देखता रहै ॥३४॥

व्याध्यवस्थाविशेषान्हिज्ञात्वाज्ञात्वाविचक्षणः । तस्यांतस्यामवस्थायांतत्तच्छ्रेयःप्रपद्यते ३५ ॥

क्योंकि चतुर पुरुष रोगों की अवस्था विशेषों को जान २ कर उन २ अवस्थाओं में कल्याण को प्राप्त होताहै ॥ ३५ ॥

प्रायस्तिर्य्यग्गतादोषाःक्लेशयन्त्यातुरांश्चिरम् । तेषुनत्वरयाकुर्य्याद्देहाग्निबलवित्क्रियाम् ॥ ३६ ॥

प्रायः तिर्य्यक् (तिरछे) गतदोष रोगियों को बहुत काल तक क्लेश देते हैं इससे उन में देह अग्नि तथा बलका जाननेवाला वैद्य शीघ्रता से क्रिया न करे ॥ ३६ ॥

प्रयोगैःक्षपयेद्वातान्सुखंवाकोष्ठमानयेत् । ज्ञात्वाकोष्ठप्रपन्नांस्तान्यथास्वंतंहरेद्बुधः ॥ ३७॥

और उन दोषों को प्रयोगों से शान्तकरे अथवा उनको सुखपूर्वक कोष्ठ में ले आवे फिर उनको कोष्ठ में प्राप्तहुए जानकर यथायोग्य औषध देकर उन्हें दूरकरे ॥ ३७ ॥

ज्ञानार्थंयानिचोक्तानिव्याधिलिङ्गानिसंग्रहे । व्याधयस्तेतदात्वेतुलिङ्गानीष्टानिनामयाः ॥ ३८ ॥

रोगों के जानने के लिये जो रोगरूपी लक्षण संग्रह में कहे गये हैं उन रोगों के उस समय लक्षण जानना चाहिये किन्तु रोग न जानना चाहिये ॥ ३८ ॥

विकाराःप्रकृतिश्चैव द्वयंसर्वंसमासतः । तद्धेतुवशगंहेतोरभावान्नानुवर्त्तते ॥ ३९ ॥

संक्षेप से विकार और प्रकृति इन्हीं दोनों में सब बातें आजाती हैं और यह दोनों हेतु के वशीभूत हैं क्योंकि हेतु के विना इनकी प्रवृत्ति नहीं होती ॥ ३९ ॥

तत्रश्लोकाः।

हेतवःपूर्वरूपाणिरूपाण्युपशयस्तथा । संप्राप्तिःपूर्वमुत्पत्तिःसूत्रमात्रंचिकित्सितम् ॥ ४० ॥

तिस में यह श्लोक हैं निदान पूर्व्वरूप लक्षण उपशय संप्राप्ति आदि उत्पत्ति चिकित्सा का संक्षेप ॥ ४० ॥

ज्वरादीनांविकाराणामष्टानांसाध्यतानच । पृथगेकैकशश्चोक्ताहेतुलिङ्गोपशान्तयः ॥ ४१ ॥

और ज्वरादि आठरोगोंकी साध्यता तथा असाध्यता यह सब विषय कहागया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हेतु लक्षण तथा उपाय यह अलग २ तथा एक २ करके कहे गये ॥ ४१ ॥

हेतुपर्य्यायनामानि व्याधीनांलक्षणस्यच। निदानस्थानमेतावत्संग्रहेणोपदिश्यते ॥ ४२ ॥

निदानस्थानं सम्पूर्णम्।

निदान रोग तथा लक्षणोंके पर्य्याय शब्द कहे गये यही सब विषय निदानस्थान में संक्षेप से कहे गये हैं ॥ ४२ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंअपस्मारनाम निदानआठवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ८ ॥

निदानस्थानसमाप्त।

अथविमानस्थान ॥

प्रथमअध्याय ॥

अथातोरसविमानंव्याख्यास्यामः। इति हस्माह भगवानात्रेयः। इहखलुव्याधीनां निमित्तपूर्वरूपरूपोपशयसंख्याप्राधान्यविधिविकल्पबलकालविशेषाननुप्रविश्यानन्तरंरसद्रव्यदोषविकार-भेषज-देशकालबलशरीराहारसारसात्म्यसत्त्वप्रकृतिवयसां मानमवहितमनसायथावज्ज्ञेयंभवतिभिषजारसादिमानज्ञानायत्तत्वात्क्रियायाः। नहिअमानज्ञोरसादीनांभिषक्व्याधिनिग्रहसमर्थोभवति। तस्माद्रसादिमानज्ञानार्थंविमानस्थानमुपदेक्ष्यामोऽग्निवेश। तत्रादौरसद्रव्यदोषविकारप्रभावान्वक्ष्यामः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त रसविमान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा रोगों के निदान पूर्वरूप लक्षण उपशय संख्या प्रधानता विधि विकल्प बल तथा कालके विशेषोंके जानने के उपरान्त वैद्य को रस द्रव्य दोष विकार औषध देश काल बल शरीर आहार सार सात्म्य सत्त्व प्रकृति तथा अवस्थाका मान सावधानपूर्वक यथावत् जानना चाहिये क्योंकि चिकित्सा रसादिके मानके जाननेके लिये है जो वैद्य रसादिकों के मान को नहीं जानता है वह रोग को दूर नहीं कर सक्ता इससे रसादिकों के मानके जानने के लिये हे अग्निवेश अब हम विमानस्थान का उपदेश करते हैं उसमें पहले रस द्रव्य दोष विकार तथा प्रभावका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

रसास्तावत्षट्मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायास्तेसम्यगुपयुज्यमानाः शरीरंयापयन्ति। मिथ्योपयुज्यमानास्तुखलुदोषप्रकोपनायोपकल्पयन्ति ॥ २ ॥

मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त तथा कषाय यह छः रस होते हैं इनका अच्छे प्रकार उपयोग करने से शरीर पुष्ट रहताहै और इनका विपरीत उपयोग होने से वातादि दोष कुपित होते हैं ॥ २ ॥

दोषाःपुनस्त्रयोवातपित्तश्लेष्माणःतेप्रकृतिभूताः शरीरोपकारकाभव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्ति । विकृतिमापन्नाःखलुनानावि धैर्विकारैःशरीरमुपतापयन्ति ॥ ३ ॥

वात पित्त तथा कफ यह तीन दोष हैं यह जब स्वाभाविक (समावस्थामें) होते हैं तब शरीरके उपकारक होते हैं और जब विकार को प्राप्त होते हैं तो अनेक प्रकारके रोगों से शरीर को व्याकुल करते हैं ॥ ३ ॥

तत्रदोषमेकैकंत्रयस्त्रयो रसाजनय न्ति, त्रयस्त्रयश्चोपशमयन्ति ।

तद्यथा,-

कटुतिक्तकषाया वातं जनयन्ति, मधुराम्ललवणास्त्वेनं शमयन्ति । कटुकाम्ललवणाः पित्तं जनय न्ति । मधुरतिक्तकषायाःपुनरेनं शमयन्ति । मधुराम्ललवणाःश्ले ष्माणं जनयन्ति, कटुतिक्तकषा यास्त्वेनं शमयन्ति ॥ ४ ॥

तीन २ रस एक २ दोष को उत्पन्न करते हैं और तीन २ ही रस एक २ दोष को शांत करते हैं जैसे कटु तिक्त तथा कषाय रस वायु को उत्पन्न करते हैं और मधुर अम्ल तथा लवण वायु को शान्त करते हैं कटु अम्ल तथा लवण पित्त को उत्पन्न करते हैं और मधुर तिक्त तथा कषाय पित्त को शान्त करते हैं मधुर अम्ल तथा लवणरस कफ को उत्पन्न करते हैं और कटु तिक्त कषाय कफ को शान्त करते हैं ॥ ४ ॥

रसदोषसन्निपाते तु ये रसायैर्दोषैः समानगुणाः समानगुणभूयिष्ठा वा भवन्ति ते तानभिवर्द्धयन्ति । विपरीतगुणास्तुविपरीतगुणभूयि ष्ठा वा शमयन्त्यभ्यस्यमानाः इ त्येतद्व्यवस्थाहेतोःषट्त्वमुपदिश्य ते रसानां परस्परेणासंसृष्टानाम् । त्रित्वञ्च दोषाणाम् । संसर्गविक ल्पविस्तारोह्येषामपरिसंख्येयो भ वति, विकल्पभेदापरिसंख्येयत्वा त् ॥ ५ ॥

रस तथा दोषों के मिलने में जो रस जिन दोषोंसे गुणों में समानहो अथवा अधिक समान गुणवाला होय वह अभ्यास करने से उसे बढ़ाते हैं और विपरीत गुणवाले अथवा अधिक विपरीत गुणवाले अभ्यास करने से उसे शान्त करते हैं परस्पर नहीं मिलेहुये रसों का षट्त्व (छः होना) और दोषोंका त्रित्व (तीन होना) यह सब व्यवस्था के लिये उपदेश किया जाता है इनके संसर्ग विसर्गका विस्तार असंख्य होताहै क्योंकि विकल्पों के भेद असंख्य हैं ॥ ५ ॥

तत्र खलु अनेकरसेषु द्रव्येष्वनेक दोषात्मकेषु च विकारेषु रसदोषप्र भावमेकैकत्वेनाभिसमीक्ष्य ततोद्र व्यविकारप्रभावतत्त्वं व्यवस्येत् । न त्वेवंखलु सर्वत्र । न हि विकृतिविष मसमवेतानांनानात्मकानां द्रव्या णां परस्परेण चोपहतानामन्यैश्च विकल्पनैर्विकल्पितानामवयवप्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावानुमानेन समुदायप्रभावतत्त्व मध्यवसितुमशक्यम् ॥ ६ ॥

तिसमें निश्चय से अनेक रसवाली द्रव्य तथा अनेक दोषोंवाले विकारों में रस तथा दोषोंके प्रभाव को एक २ देखकर तदनन्तर द्रव्य तथा विकारों के प्रभावके तत्त्वका निश्चयकरे परन्तु यह बात सर्वत्र नहीं है क्योंकि विकारों से तथा विषमता से युक्त परस्पर गुणान्तरों से अयुक्त और अन्य विकल्पों से विकल्पित अनेक प्रकारकी द्रव्यों के समुदायका प्रभावतत्त्व अवयवों के प्रभावके अनुमान से नहीं निश्चित होसक्ता है ॥ ६ ॥

तथायुक्ते हि समुदायेसमुदायप्रभावतत्त्वमेवोपलभ्य ततो रसद्रव्यविकारप्रभावतत्त्वं व्यवस्येततस्माद्रसप्रभावतश्च द्रव्यप्रभावतश्चदोषप्रभावतश्चविकारप्रभावतश्चतत्त्वमुपदेक्ष्यामः। तत्रैपरसद्रव्यदोषविकारप्रभावउपदिष्टोभवति ॥ ७ ॥

ऐसे समुदाय में समुदाय के प्रभावतत्त्व को ही जानकर रस द्रव्य तथा विकारों के प्रभावतत्त्व का निश्चयकरै इस से रसप्रभाव के द्वारा द्रव्यप्रभाव के द्वारा दोष प्रभावके द्वारा तथा विकारप्रभाव के द्वारा तत्त्व का उपदेश करते हैं तिसमें रस द्रव्य दोष तथा विकारोंके प्रभावका उपदेश कियागया॥७॥

द्रव्यप्रभावंपुनरुपदेक्ष्यामः। तैलसर्पिर्मधूनिवातपित्तश्लेष्मप्रशमनानिद्रव्याणिभवन्ति। तत्रतैलंस्नेहौष्ण्याद्गौरवोपपन्नत्वाद्वातंजयति सततमभ्यस्यमानम्। वातोहिरौक्ष्यशैत्यलाघवोपपन्नोविरुद्धगुणो भवति। विरुद्धगुणसन्निपातेहिभूयसाल्पमवजीयतेतस्मात्तैलंवातंजयतिसततमभ्यस्यमानम् ॥ ८ ॥

और द्रव्य के प्रभाव का फिर उपदेश करते हैं जैसे तेल घी तथा सहत यह द्रव्य वात पित्त तथा कफ को शान्त करती हैं इन में से सदैव अभ्यास कियागया तैल स्नेह उष्णता तथा गुरुत्व से युक्त होने के कारण वायु को शान्त करता है क्योंकि वायु में रूक्षता शीतलता तथा लघुता यह विरुद्ध गुण हैं और विरुद्ध गुणों के संयोग में जो गुण अधिक होते हैं वह स्वल्पको जीत लेते हैं इस से सदैव अभ्यास कियागया तैल वायु को जीतता है ॥ ८ ॥

सर्पिःखलुएवमेवपित्तंजयतिमाधुर्याच्छैत्यात्मन्दवीर्य्यत्वाच्चपित्तंह्य मधुरमुष्णंतीक्ष्णम् ॥ ६ ॥

इसीप्रकार निश्चय से घी पित्तको शान्त करता है क्योंकि घी मधुर शीतल तथा मन्द होता है और पित्त मधुरतारहित उष्ण तथा तीक्ष्ण होता है ॥ ९ ॥

मधु च श्लेष्माणं जयति रौक्ष्यात् कषायत्वाच्च श्लेष्मा हि स्निग्धो मन्दो मधुरश्च ॥ १० ॥

और सहत कफ को जीतता है क्योंकि रूखा तीक्ष्ण तथा कषैला होता है और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफ स्निग्ध मन्द तथा मधुर होता है॥ १० ॥

यच्चान्यदपि किञ्चिद्द्रव्यमेवंवात पित्तकफेभ्यो गुणतो विपरीतं तच्चैतान् जयति अभ्यस्यमानम्। अथ खलु त्रीणि द्रव्याणि नात्युपयुञ्जीताधिकमन्येभ्यो द्रव्येभ्यः तद्यथा। पिप्पलीक्षारं लवणमिति ॥ ११॥

और इन से अन्य भी जो कोई द्रव्य वात पित्त तथा कफ से गुणों में विपरीत होती है उनके अभ्यास से भी वातादिक शान्त होते हैं पीपलक्षार तथा लवण इन तीन द्रव्योंका अन्य द्रव्यों की अपेक्षा अधिक व्यवहार न करे॥ ११ ॥

पिप्पल्यो हि कटुकाः सद्योमधुरविपाका गुर्व्यो नात्यर्थम्। स्निग्धोष्णाःप्रक्लेदिन्यो भेषजाभिमताश्च। ताः सद्यःशुभाशुभकारिण्यो भवन्त्यापातभद्राःप्रयोगसमसाद्गुण्याद्दोषसञ्चयानुबन्धाः सततमुपयुज्यमानाहिगुरुप्रक्लेदित्वात् श्लेष्माणमुत्क्लेशयन्ति। औष्ण्यात् पित्तम्। न च वातप्रशमनायोपकल्पन्तेअल्पस्नेहोष्णभावात्। योगवाहिन्यस्तु खलु भवन्ति। तस्मात् पिप्पलीर्नात्युपयुञ्जीत॥ १२ ॥

क्योंकि पीपल कटु शीघ्रही मधुर विपाकयुक्त स्वल्प गुरु स्निग्ध उष्ण क्लेदकारक और वैद्योंको अभीष्ट होती है यह शीघ्रही शुभाशुभफल करने वाली होती हैं जो समय तथा मात्रा के अनुसार इनका प्रयोग किया जाय तो कुछ दिन हितकारी होती हैं यह सदैव अभ्यास करने से दोषों को संचित करती हैं गुरुत्व तथा क्लेदकारकत्व गुण के द्वारा कफ को उभाड़ती हैं उष्णता से पित्त को उभाड़ती हैं और स्निग्धता तथा उष्णताके स्वल्प होने से वायु को नहीं शान्त करसक्ती हैं परन्तु यह योगवाही (जिस के साथ होयँ उसीकासा गुण अपना भी करती हैं) होती हैं इस से पीपलका बहुत उपयोग न करना चाहिये॥ १२ ॥

क्षारः पुनरौष्ण्यतैक्ष्ण्यलाघवोपपन्नःक्लेदयत्यादौ पश्चात् विशोधयति। स पचनदहनभेदनार्थमुपयुज्यते। सोऽतिप्रयुज्यमानः केशाक्षिहृदयपुंस्त्वोपघातकरःसम्पद्यते। ये ह्येनं ग्रामनगरनिगमजनपदाः सततमुपयुञ्जते ते ह्यान्ध्यषाण्ढ्यखालित्यपालित्यभाजोहृदयोपकर्त्तिनश्च भवन्ति तद्यथा, प्राच्याश्चीनाश्च तस्मात् क्षारंनात्युपयुञ्जीत॥ १३॥

क्षार उष्णता तीक्ष्णता तथा लघुता से युक्त होता है यह पहले क्लेद करता है पीछे शोधन करता है पाचन दहन तथा भेदन के लिये इसका व्यवहार कियाजाता है इसका बहुत व्यवहार करने से केश नेत्र हृदय तथा पुंस्त्व का नाश होता है जो ग्राम नगर तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देश के निवासी सदैव इसका व्यवहार करते हैं वह अन्धता नपुंसकता गंजापन केशों का श्वेत होना तथा हृदयमें काटने कीसी पीड़ा से युक्त होते हैं जैसे पूर्व्व देश के तथा चीन देश के लोग होते हैं इस से क्षारका बहुत व्यवहार न करना चाहिये ॥ १३ ॥

लवणम्पुनरौष्ण्यतैक्ष्ण्योपन्नमनति गुरुअनतिस्निग्धमुपक्लेदिविस्रंसन समर्थमन्नद्रव्यरुचिकरमापातभद्रम्। प्रयोगातिरेकाद्दोषसञ्जयानुबन्धम्। तद्रोचनपाचनोपक्लेदनविस्रंसनार्थ मुपयुज्यते। तदत्यर्थमुपयुज्यमानं ग्लानिशैथिल्यदौर्बल्याभिनिर्वृत्ति करं शरीरस्यभवति। ये ह्येतद्ग्राम नगरनिगमजनपदाः सततमुपयुञ्जते, ते भूयिष्ठंग्लास्नवःशिथिल मांसशोणिताभवन्ति अपरिक्लेश सहाश्च। तद्यथा, बाह्लीकसौराष्ट्रिकसैन्धवसौवीरकाः। तेहिपयसापि सदालवणमश्नन्ति । येऽपीहभूमेरत्यूषरादेशास्तेषुऔषधिवीरुद्वनस्पतिवानस्पत्यानजायन्ते । अल्पतेजसोवाभवन्तिलवणोपहतत्वात्। तस्माल्लवणंनात्युपयुञ्जीत । ये ह्यतिलवणसात्म्याः पुरुषास्तेषामपिखालित्यैन्द्रलुप्तपालित्यानितथा वलयश्चाकालेभवन्ति । तस्मात्तेषांतत्सात्म्यतः क्रमेणापगमनं श्रेयः ॥ १४ ॥

लवण उष्णता तथा तीक्ष्णतासे युक्त होताहै बहुतभारी तथा स्निग्ध नहींहोता क्लेद करता है स्रंसन करता है और अन्न में रुचिकारक होता है समय तथा मात्रा के अनुसार व्यवहार करने से कुछ दिन हितकारी होता है फिर दोषों को संचित करताहै रुचि पाचन क्लेदन तथा स्रंसनके लिये इसका व्यवहार किया जाता है इसका बहुत व्यवहार करनेसे शरीरमें ग्लानि शिथिलता तथा दुर्बलता होतीहै जो ग्राम नगर तथा देशके निवासी इसका सदैव बहुत व्यवहार करते हैं वह बहुधा ग्लानियुक्त शिथिल मांस तथा रुधिरवाले और क्लेशके नहीं सहनेवाले होते हैं जैसे बाह्लीक सौराष्ट्र सिन्धु तथा सौवीर देशके निवासी यह लोग दूधके साथभी सदैव लवण खाते हैं पृथ्वीके ऊषर देशोंमें औषध वनस्पति वीरुध तथा वानस्पत्य नहीं होती हैं अथवा अल्पतेजस्वी होती हैं क्योंकि लवणकेद्वारा वह नष्ट होजाती हैं इससे लवण का बहुत व्यवहार न करे जिन लोगों को लवणका बहुत अभ्यास होताहै वह अकालमेंही केशोंकी श्वेतता इन्द्रलुप्त गंजापन तथा झुर्रियों से युक्त होते हैं इससे उन लोगों को धीरे २ लवण का अभ्यास छोड़ना चाहिये ॥ १४ ॥

सात्म्यमपिहि क्रमेणोपनिवर्त्यमानमदोषमल्पदोषंवाभवति। सात्म्यंनामतद्यदात्मनिउपशेते। सात्म्यार्थोह्युपशयार्थः। तत् त्रिविधम्प्रवरावरमध्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभागेन; सप्तविधञ्चरसैकैकत्वेन सर्व्वरसोपयोगाच्च। तत्र सर्व्वरसंप्रवरमवरमेकरसं मध्यमन्तु प्रवरावरमध्यस्थम्। तत्रावरमध्याभ्यांसात्म्याभ्यां क्रमेणप्रवरमुपपादयेत् सात्म्यम्। सर्व्वरसमपिचद्रव्यंसात्म्यमुपपन्नम् सर्व्वाणि आहारविधिविशेषायतनानि अभिसमीक्ष्यहितमेवानुरुध्यते ॥ १५ ॥

सात्म्य वस्तुकाभी धीरे २ त्याग करने से कोई दोष नहीं होताहै अथवा होताभी है तो स्वल्प होता है जो अपने को हित होय उसे सात्म्य कहते हैं सात्म्य और उपशय यह दोनों एकार्थ हैं वह तीन प्रकारका होता है जैसे श्रेष्ठ मध्यम तथा निकृष्ट छः रसोंके अलग २ अभ्याससे तथा सम्पूर्ण रसोंके अभ्यास से सात्म्य सात प्रकारका है सम्पूर्ण रसोंका अभ्यास होना श्रेष्ठ सात्म्य है एकही रसका अभ्यास निकृष्ट सात्म्य है और इन दोनोंकी मध्यावस्था मध्यम सात्म्य है इनमें से जिसको मध्यम तथा हीन सात्म्य होय वह क्रमसे श्रेष्ठ सात्म्य को अभ्यास करे सम्पूर्ण रसोंके सात्म्य होजानेपर सम्पूर्ण आहारके विधि विशेष तथा हेतुओं को देखकर जो हित होय उसका सेवनकरे ॥ १५ ॥

तत्र खल्विमानि अष्टावाहारविधिविशेषायतनानि भवन्ति। तद्यथा प्रकृतिकरणसंयोगराशिदेशकालोपयोगसंस्थोपयोक्त्रष्टमानिभवन्ति ॥ १६ ॥

तहां निश्चय से यह आठ आहारके विधि विशेष आयतन हैं जैसे प्रकृति करण संयोग राशि देश काल उपयोग संस्था और उपयोक्ता यह आठ होते हैं ॥ १६ ॥

तत्रप्रकृतिरुच्यतेस्वभावोयः सपुनराहारौषधद्रव्याणांस्वभाविकोगुर्वादिगुणयोगः। तद्यथा,—माषमुद्गयोः शूकरैणयोश्च ॥ १७ ॥

इनमें से प्रकृति स्वभावको कहते हैं आहार तथा औषध द्रव्योंके स्वाभाविक गुरुत्वादि गुणयोगको स्वभाव कहते हैं जैसे उर्दका गुरुत्व मूंगका लघुत्व और शूकर का गुरुत्व तथा एणमृगका लघुत्व ॥ १७ ॥

करणंपुनःस्वाभाविकानांद्रव्याणामभिसंस्कारः। संस्कारोहिगुणान्तराधानमुच्यते। तेगुणाश्चतोयाग्निसन्निकर्षशौचमन्थनदेशकालवशेनभावनादिभिःकालप्रकर्षभाजनादिभिश्चाधीयन्ते ॥ १८ ॥

स्वाभाविक द्रव्यों के संस्कार को करण कहते हैं और गुणान्तर उत्पन्न करने को संस्कार कहते हैं वह गुण जल तथा अग्नि के संयोगज शौच से मथने से देशकाल वास तथा भावनादिकों से और काल प्रकर्ष तथा पात्रादिकोंकेद्वारा उत्पन्न होते हैं ॥ १८ ॥

संयोगस्तुद्वयोर्बहूनांवाद्रव्याणांसंहतीभावःसविशेषमारभतेयत्रैकशो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रव्याणिआरभन्ते। यथामधुसर्पिषो मधुमत्स्यपयसाञ्चसंयोगः ॥ १९ ॥

दो अथवा बहुत द्रव्योंके मिलनेको संयोग कहते हैं यह विशेषता को उत्पन्न करता है जो विशेषता अलग २ द्रव्योंसे नहीं उत्पन्न होसक्ती है जैसे घी तथा सहतका संयोग और मधु मत्स्य तथा दूधका संयोग ॥ १९ ॥

राशिस्तुसर्वग्रहपरिग्रहौमात्राऽमात्राफलविनिश्चयार्थःप्रकृतः। तत्रसर्वस्याहारस्यप्रमाणग्रहणमेकपिण्डेनसर्वग्रहः। परिग्रहश्चपुनःप्रमाणग्रहणमेकैकत्वेनाहारद्रव्याणाम्। सर्वस्यहिग्रहःसर्वग्रहःसर्वतश्चग्रहःपरिग्रहःउच्यते ॥ २० ॥

सर्वग्रह और परिग्रह को राशि कहते हैं यह मात्रा तथा हीनाधिक मात्राके फलके निश्चय के लिये है तिसमें सम्पूर्ण आहारी वस्तुओं का एकाकार से प्रमाण करना सर्व्वग्रह कहलाताहै और संपूर्ण आहारी वस्तुओंका अलग एक २ प्रमाण करना परिग्रह कहलाता है क्योंकि सब के ग्रहणको सर्वग्रह और सब के अलग २ ग्रहणको परिग्रह कहतेहैं ॥ २० ॥

देशःपुनःस्थानंद्रव्याणामुत्पत्तिप्रचारौदेशसात्म्यञ्चाचष्टे ॥ २१ ॥

देश स्थान को कहते हैं इससे द्रव्यों के उत्पत्तिस्थान तथा प्रचार (मृगादिका) निवास स्थानादि का सात्म्य कहाजाताहै ॥ २१ ॥

कालोहिनित्यगश्चावस्थिकश्च। तत्रावस्थिकोविकारमपेक्ष्यते। नित्यगस्तुखलुऋतुसात्म्यापेक्षः ॥ २२ ॥

काल दोप्रकारकाहोता है एक नित्यग दूसरा आवस्थिक रोगकी अपेक्षासे जो समय लियाजाता है वह आवस्थिक कहाजाता है और शीतोष्णादि ऋतुसात्म्य की अपेक्षा से जो काल लियाजाता है वह नित्यग कहलाता है ॥ २२ ॥

उपयोगसंस्थातूपयोगनियमःसजीर्णलक्षणापेक्षः ॥ २३ ॥

आहारके व्यवहारके नियम को उपयोगसंस्था कहते हैं आहारके व्यवहारका नियम यह है कि आहार किस प्रकारसे पचेगा इस बातकी अपेक्षा करना ॥ २३ ॥

उपयोक्तापुनर्यस्तमाहारमुपयुंक्ते। यदायत्तमोकसात्म्यम् ॥ २४ ॥

आहार करनेवाले को उपयोक्ता कहते हैं जिसके आधीन ओक सात्म्य है ॥ २४ ॥

इत्यष्टावाहारविधिविशेषायतनानिभवन्ति। एषांविशेषाःशुभाशुभफलप्रदाःपरस्परोपकारकाभवन्ति। तान्बुभुत्सेत। बुद्ध्वाचहितेप्सुरेवस्यान्नचमोहात्प्रमादाद्वाप्रियमहितमसुखोदर्कमुपसेव्यमाहारजातमन्यद्वा ॥ २५ ॥

यह आठ आहारके विधि के विशेष आयतन होते हैं इनके विशेष शुभाशुभ फलदायक और परस्पर उपकारक होते हैं इससे इनके जानने की इच्छाकरे और जानकर हितकी ही अभिलाषाकरे किन्तु मोह अथवा प्रमाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से अहितकारी परिणाम में कुफलदायक प्रिय आहार तथा अन्य वस्तु का सेवन न करे ॥ २५ ॥

तत्रेदमाहारविधिविधानमरोगाणामपिचातुराणांहितम् । केषाञ्चित्काले प्रकृत्यैवहिततमंभुञ्जानानांभवति । उष्णंस्निग्धंमात्रावज्जीर्णेवीर्य्याविरुद्धंइष्टदेशेइष्टसर्वोपकरणंनातिद्रुतं नातिविलम्बितंनजल्पन्नहसंस्तन्मनाभुञ्जीतआत्मानमभिसमीक्ष्यसम्यक् ॥ २६ ॥

स्वभावसेही समयपर अत्यन्त हित वस्तुओंका भोजन करनेवाले रोगी तथा नीरोगी दोनों को यह वक्ष्यमाण आहारविधि हितहै उष्ण स्निग्ध वीर्य्यके अविरुद्ध वस्तु को मात्राके अनुसार एकबारके भोजनके पचजाने पर इष्ट स्थानमें सम्पूर्ण सामग्रियों से युक्त होकर न बहुत जल्दी न बहुत धीरे न बहुत बोलता हुआ न हँसता हुआ तत्पर होकर अपने हिताहित को देखकर अच्छे प्रकार से भोजनकरे ॥ २६ ॥

तस्यसाद्गुण्यमुपदेक्ष्यामः । उष्णमश्नीयादुष्णंहिभुज्यमानंस्वदतेभुक्तञ्चाग्निमुदीर्य्यमुदीरयति । क्षिप्रञ्चजरांगच्छति, वातञ्चानुलोमयति, श्लेष्माणञ्चपरिशोषयतितस्मादुष्णमश्नीयात् ॥ २७ ॥

इस प्रकार भोजन करने से जो फल होता है उसका उपदेश करते हैं उष्ण भोजनकरे क्योंकि उष्ण भोजनमें स्वादु होताहै उदरमें जाकर जठराग्नि को दीप्त करता है शीघ्रही पचता है वायु को मार्गके अनुसार करता है और कफ को सुखाता है इससे उष्ण भोजन करना चाहिये ॥ २७ ॥

स्निग्धमश्नीयात् । स्निग्धं हि भुज्यमानंस्वदते । भुक्तञ्चाग्निमुदीरयति क्षिप्रंजरांगच्छति वातमनुलोमयति दृढीकरोति । शरीरोपचयंबलाभिवृद्धिञ्चोपजनयति, वर्णप्रसादमपिचाभिनिर्वर्त्तयति । तस्मात् स्निग्धमश्नीयात् ॥ २८ ॥

स्निग्ध भोजनकरे क्योंकि स्निग्ध भोजन स्वादुयुक्त होताहै उदरमें जाकर जठराग्नि को दीप्त करताहै शीघ्रही पचता है वायु को मार्गके अनुसार करता है शरीर की वृद्धि को दृढ़ करताहै बल को बढ़ाता है और वर्ण को श्रेष्ठ करता है इससे स्निग्ध भोजन करना चाहिये ॥ २८ ॥

मात्रावदश्नीयात् । मात्रावद्धि भुक्तम् वातपित्तकफानप्रपीडयदायुरेवविवर्द्धयति केवलंसुखं सम्यक्पक्कं विड्भूतं गुदमनुपर्य्येति न चोष्माणमुपहन्ति अव्यथञ्चपरिपाकमेति । तस्मात्मात्रावदश्नीयात् ॥ २९ ॥

मात्राके अनुसार भोजनकरे क्योंकि मात्रा के अनुसार किया हुआ भोजन वात पित्त तथा कफ को नहीं दूषित करता है आयु को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ाता है सुखपूर्वक मल होकर गुदामें आजाता है ऊष्मा को नहीं नष्ट करता है और क्लेशके विनाही पचजाता है इससे मात्राके अनुसार भोजन करना चाहिये ॥ २९ ॥

जीर्णेऽश्नीयात्। अजीर्णे हि भुञ्जानस्यपूर्व्वस्याहारस्य रसमपरिणत मुत्तरेणाहाररसेनोपसृजन् सर्व्वान् दोषान् प्रकोपयत्याशु। जीर्णेतुभुञ्जानस्य स्वस्थानस्थेषु दोषेषुअग्नौचोदीर्णेजातायाञ्च बुभुक्षायां विवृतेषुच स्रोतसांमुखेषुचोद्गारेविशुद्धेहृदये विशुद्धेवातानुलोम्येविसृष्टेषुच वातमूत्रपुरीषवेगेषु जीर्णमभ्यवहृतमाहारजातं सर्व्वशरीर धातूनप्रदूषयदायुरेवाभिवर्द्धयतिकेवलम्। तस्माज्जीर्णेऽश्नीयात्॥ ३०॥

भोजन पचजानेपर भोजनकरे क्योंकि अजीर्ण में भोजन करने से पहलीबारके आहारका अपरिपक्व रस द्वितीयवारके आहार के रससे मिलकर शीघ्रही सब दोषों को कुपित करताहै और जो कोई आहारके पचजानेपर भोजन करता है उसके सम्पूर्ण दोषोंके अपने २ स्थानमें स्थित होजानेपर अग्निके दीप्त होनेपर क्षुधाके उत्पन्न होनेपर स्रोतोंके मुखों के खुलजानेपर डकार तथा हृदयके शुद्ध होजानेपर और वायुके अनुलोम होनेपर वायु मूत्र तथा मल का त्याग करचुकनेपर पहली वारके आहार के पचजानेपर खाया हुआ आहार सम्पूर्ण धातुओं को दूषित न करके आयु को बढ़ाता है इससे पहलीवारके भोजन पचजानेपर द्वितीयवार भोजन करना चाहिये ॥ ३० ॥

वीर्य्याविरुद्धमश्नीयात्। अविरुद्धवीर्य्यमश्नन् हि नविरुद्धवीर्य्याहारजैर्विकारैरयमुपसृज्यतेतस्माद्वीर्य्याविरुद्धमश्नीयात्॥ ३१॥

वीर्य्यके अविरुद्ध भोजनकरे क्योंकि अविरुद्ध वीर्य्यवाले भोजनों के पदार्थ को भोजन करने से विरुद्ध वीर्य्यवाले आहारसे उत्पन्न होनेवाले विकार नहीं उत्पन्न होते हैं इससे वीर्य्यके अविरुद्ध भोजनकरे ॥ ३१ ॥

इष्टे देशेऽश्नीयात्। इष्टे हि देशेभुञ्जानोनानिष्टदेशजैर्मनोविघातकरैर्भावैर्मनोविघातंप्राप्नोति तथैवेष्टैःसर्वोपकरणैस्तस्मादिष्टेदेशेतथेष्टसर्वोपकरणञ्चाश्नीयात्॥ ३२॥

मनोहर स्थानमें बैठकर भोजनकरे क्योंकि मनोहर स्थानमें भोजन करनेसे दूषित स्थानों में भोजन करने के द्वारा होनेवाले मनके अप्रसन्न करनेवाले भावों से मन अप्रसन्नता को नहीं प्राप्त होताहै और सम्पूर्ण सामग्रीयुक्त होकर भोजन करने से भी यही उपकार होता है इससे मनोहरस्थान में संपूर्ण सामग्री को एकत्रित करके भोजन करना चाहिये ॥ ३२ ॥

नातिद्रुतमश्नीयात्। अतिद्रुतंहि भुञ्जानस्य उत्स्नेहनमवसदनंभोजनस्याप्रतिष्ठानम्। भोज्यदोष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साद्गुण्योपलब्धिश्चननियता। तस्मान्नातिद्रुतमश्नीयात् ॥ ३३॥

बहुत जल्दी भोजन न करे क्योंकि बहुत जल्दी भोजन करने से भोजन ऊपरको आ जाता है शिथिलता होती है भोजन अपने स्थान में ठीक २ नहीं स्थितहोता और भोजन के दोष गुण ठीक २ नहीं मालूम होते इस से बहुत जल्दी भोजन न करना चाहिये ॥ ३३ ॥

नातिविलम्बितमश्नीयात्। अतिविलम्बितंहि भुञ्जानोनतृप्तिमधिगच्छतिबहुभुंक्तेशीतीभवतिचाहारजातं विषमपाकञ्चभवति। तस्मान्नातिविलम्बितमश्नीयात् ॥३४॥

बहुत धीरे २ भोजन नकरे क्योंकि बहुत धीरे २ भोजन करने से तृप्ति नहीं होती बहुत खाया जाता है भोजन शीतल होजाताहै और भोजन का परिपाक विषमता से होताहै इससे बहुत धीरे २ भोजन न करना चाहिये ॥ ३४ ॥

अजल्पन्नहसन्तन्मनाभुञ्जीत्। जल्पतोहसतोऽन्यमनसो वाभुञ्जानस्यतएवहि दोषाभवन्ति यएवातिद्रुतमश्नतः। तस्मादजल्पन्नहसंस्तन्मनाभुञ्जीत ॥ ३५ ॥

न बोलता हुआ न हँसता हुआ चित्तलगाकर भोजनकरे क्योंकि बातें कर २ खाने से हंस २ कर खाने से और चित्त न लगाकर खाने से वही दोष होते हैं जो बहुत शीघ्र खाने से होते हैं इससे न बातें करता हुआ न हँसता हुआ चित्त लगाकर भोजन करे ॥ ३५ ॥

आत्मानमभिसमीक्ष्य भुञ्जीतसम्यक्। इदम्ममोपशेते इदन्नोपशेते इति। विदितं हि अस्यआत्मनआत्मसात्म्यम्भवति। तस्मादात्मनात्मानमभिसमीक्ष्य भुञ्जीतसम्यगिति ॥ ३६ ॥

अपने हिताहित को देखकर अच्छे प्रकार से भोजन करे क्योंकि यह मुझको हित है यह मुझको अहित है इसप्रकार जानकर कियाहुआ भोजन सात्म्य होता है इस से अपने हिताहित को जानकर अच्छेप्रकार भोजन करना चाहिये ॥ ३६ ॥

तत्र श्लोकाः ॥

रसान्द्रव्याणिदोषांश्च विकारांश्च प्रभावतः। वेदयोदेशकालौचशरीरञ्चसनाभिषक् ॥ ३७ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। जो रस द्रव्य दोष तथा विकारोंके प्रभाव को जानता है और देश काल तथा शरीर को जानता है वही वैद्य है ॥ ३७ ॥

विमानार्थोरसद्रव्यदोषरोगाःप्रभावतः। द्रव्याणिनातिसेव्यानि त्रिविधंसात्म्यमेवच ॥ ३८ ॥

विमानशब्द का अर्थ प्रभाव से रसद्रव्य दोष तथा रोग बहुत नहीं सेवन करने के योग्य द्रव्य तीन प्रकार के सात्म्य ॥ ३८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आहारायतनान्यष्टौभोजसाद्गुणय मेवच । विमानेरससंख्यातेसर्व्वमे तत्प्रकाशितम् ॥ ३९ ॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते विमानस्थानेरसविमानन्नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

आहार के आठ आयतन और भोजनकी सद्गुणता यह सब विषय इस रसविमान नाम अध्याय में कहागया ॥ ३९ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंरसविमान नामप्रथमअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

त्रिविधकुक्षीयम् ।

इति हस्माह भगवानात्रेयः । त्रिविधंकुक्षौस्थापयेदवकाशांशमा हारस्याहारमुपयुञ्जानः । तद्यथैक मवकाशांशमूर्त्तानामाहारविकारा णामेकन्द्रवाणामेकम्पुनर्वातपित्त श्लेष्मणाम् ॥ १ ॥

इस के उपरान्त त्रिविधकुक्षीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा ॥

भोजन करने में भोजन के लिये कुक्षि में तीन प्रकार का अवकाशांश रखना चाहिये जैसे कुक्षिका एकभाग भोजन के कठिन पदार्थों के लिये एक द्रव पदार्थों के लिये और एक वात पित्त तथा कफ के संचार के लिये रखना चाहिये ॥ १ ॥

एतावतीं ह्याहारमात्रामुपयुञ्जानो नामात्राहारजंकिञ्चिदशुभंप्राप्नोति नचकेवलम्मात्रावत्त्वादेवाहारस्यकृ त्स्नमाहारफलसौष्ठवमवाप्तुंशक्य म् । प्रकृत्यादीनामष्टानामाहारवि धिविशेषायतनानां प्रविभक्तफलक त्वात् । तत्र तावदाहारराशिमधि कृत्य मात्रामात्राफलविनिश्चया र्थःप्रकृतः । एतावानेवह्याहारा शिविधिविकल्पोयावत् मात्रावत्त्व ममात्रावत्त्वञ्च तत्रमात्रावत्त्वंपूर्व मुपदिष्टंकुक्ष्यंशविभागेन।तद्भूयो विस्तरेणानुव्याख्यास्यामः ॥ २ ॥

क्योंकि इतनी मात्रा के अनुसार आहार करने से ही नाधिक मात्रा के द्वारा होनेवाले दोष नहीं उत्पन्न होते हैं किन्तु केवल मात्रा के अनुसार भोजन करने से ही भोजन के संपूर्ण श्रेष्ठ फल नहीं प्राप्त होसक्ते हैं क्योंकि प्रकृति आदिक आठ आहार विधि विशेषायतनों के फल अलग २ हैं इनमें से राशि के अधिकार में मात्रा तथा अमात्रा के फल का निश्चय कियागया मात्रा के अनुसार होना तथा मात्रा के अनुसार न होना यही आहार राशिकी विधिका विकल्प है कुक्षि के अंशोंके विभागसे मात्रा के अनुसार होने का पहले उपदेश कियागया अब फिर उस का विस्तार से व्याख्यान करते हैं ॥ २ ॥

तद्यथा—कुक्षेरप्रपीडनमाहारेण हृदय स्यानवरोधः पार्श्वयोरविपाटनमन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिगौरवमुदरस्यप्रीणनमिन्द्रियाणां क्षुत्पिपासोपरमः स्थानाशनशयन गमनप्रश्वासोच्छ्वासहास्यसङ्कथा सुचसुखानुवृत्तिः सायम्प्रातश्च सुखेनपरिणमनम्। बलवर्णोपचयकरत्वञ्चेति मात्रावतोलक्षणमाहारस्यभवति ॥ ३ ॥

वह जैसे आहार के द्वारा कुक्षि में पीड़ा न होना हृदय का अवरोधन होना पसलियों में फटने की सी पीड़ा न होना उदर में बहुत गौरव न मालूम होना इन्द्रियों का प्रसन्न होना क्षुधा तथा तृषा का निवृत्त होना खड़े होने में बैठने में सोने में चलने में श्वास लेने में श्वास छोड़ने में हास्य में तथा वार्त्तालाप करने में सुख होना सायंकाल तथा प्रातःकाल सुखपूर्व्वक भोजन का पचजाना और बल तथा वर्ण की वृद्धि होना यह मात्रा के अनुसार किये हुए भोजन के लक्षण हैं ॥ ३ ॥

अमात्रावत्त्वंपुनर्द्विविधमाचक्षते । हीनमधिकञ्च । तत्रहीनमात्राहाराशिंबलवर्णोपचयक्षयकरमतृप्तिकरमुदावर्तकरमवृष्यमनायुष्यमनौजस्यंमनोबुद्धीन्द्रियोपघातकरंसारविधमनमलक्ष्म्यावहमशीतेश्चवातविकाराणामायतनमाचक्षते ॥ ४ ॥

अमात्रा के अनुसार भोजन दो प्रकारका है एक हीनमात्रा दूसरा अधिकमात्रा इनमें से हीनमात्रा के अनुसार किया हुआ भोजन बल वर्ण तथा वृद्धिको क्षीणकरता है तृप्ति नहीं करता उदावर्त्त रोगको उत्पन्न करता है नपुंसकता करता है ओज तथा आयु को क्षीण करता है मन बुद्धि तथा इन्द्रियों को नष्ट करता है सारविधमन करता है अलक्ष्मी को उत्पन्न करता है और वातज अस्सी प्रकार के रोगों का आयतन कहाता है ॥ ४ ॥

अतिमात्रंपुनःसर्वदोषप्रकोपनमिच्छन्तिसर्वकुशलाः ॥ ५ ॥

अधिक मात्रा के अनुसार कियागया भोजन संपूर्ण दोषों को कुपित करता है यह संपूर्ण चतुर वैद्योंका मत है ॥ ५ ॥

योहिमूर्त्तानामाहारविकाराणांसौहित्यंगत्वापश्चाद्द्रवैस्तृप्तिमापद्यतेभूयस्तस्यामाशयगतावातपित्तश्लेष्माणोऽभ्यवहारेणअतिमात्रेणअतिप्रपीड्यमानाःसर्वेयुगपत्प्रकोपमापद्यन्ते ॥ ६ ॥

जो मनुष्य पहले कठिन वस्तुओं से तृप्त होकर फिर पीछे से द्रव वस्तुओंका सेवनकरताहै उसके आमाशय में प्राप्त वात पित्त कफ अधिक आहार से पीड़ित होकर एक साथही कुपितहोते हैं ॥ ६ ॥

तेप्रकुपितास्तमेवाहारराशिमपरिणतमाविश्यकुक्ष्येकदेशमाश्रिताविष्टम्भयन्तःसहसावापिउत्तराधराभ्यां मार्गाभ्यांप्रच्यावयन्तःपृथक्पृथग्वि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारानभिनिर्वर्त्तयन्तिअतिमात्रभोक्तुः ॥ ७ ॥

कुपितहुए वह दोष कुक्षिके एकदेश में स्थितहोकर उसअपरिपक्क आहारमें प्रविष्ट होके उसको विष्टम्भ करके अथवा एकाएकी ऊर्द्ध्वभाग से या अधोभागसे निकालकर अलग २ रोगों को उत्पन्न करते हैं ॥ ७ ॥

तत्रवातःशूलानाहाङ्गमर्दमुखशोषमूर्च्छाभ्रमाग्निवैषम्यशिरासङ्कोचनसंस्तम्भनानिकरोति ॥ ८ ॥

उनमें से वायु शूल आनाह अंगमर्द मुखका सूखना मूर्च्छा भ्रम अग्निकी विषमता नसोंका सिकुड़ना तथा स्तंभ इनरोगों को उत्पन्न करती है ॥ ८ ॥

पित्तंपुनर्ज्वरमतीसारमन्तर्दाहंतृष्णामदभ्रमप्रलपनानि ॥ ९ ॥

पित्तज्वर अतीसार अन्तर्दाह तृषा मद भ्रम तथा प्रलापको उत्पन्न करता है ॥ ९ ॥

श्लेष्मातुछर्द्यरोचकाविपाकशीतज्वरालस्यगात्र-गौरवाभिनिर्वृत्तिकरःसम्पद्यते ॥ १० ॥

और कफ छर्दि अरुचि अविपाक शीतज्वर आलस्य तथा शरीरका भारीपन इनरोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ १० ॥

नखलुकेवलमतिमात्रमेवाहारराशिमामप्रदोषकारणमिच्छन्ति। अपितुखलुगुरुरूक्षशीतशुष्कद्विष्टविष्टम्भिविदाह्यशुचिविरुद्धानामकालेअन्नपानानामुपसेवनम्। कामक्रोधलोभमोहेर्ष्याह्रीशोकलोभोद्वेगभयोपतप्तेनमनसावायदन्नपानमुपयुज्यतेतदपिआममेवप्रदूषयति ॥ ११ ॥

केवल अधिक भोजनसेही आमदोष की उत्पत्ति नहींहोती किन्तु भारी रूक्ष शीतल शुष्कद्विष्ट (जिस्से नफरतहो) विष्टंभी विदाही अपवित्र तथा विरुद्ध अन्नपानका असमय में सेवन और काम क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या लज्जा शोक उद्वेग तथा भयसे चित्तके व्याकुलहोने पर भोजन करना इनसे भी आमदोष उत्पन्नहोता है ॥ ११ ॥

भवति चात्र।

मात्रयाप्यभ्यवहृतंपथ्यञ्चान्नंनजीर्य्यति। चिन्ताशोकभयक्रोधदुःखशय्याप्रजागरैः ॥ १२ ॥

इसमें यह श्लोकहै चिन्ता शोक भय तथा क्रोधके द्वारा चित्तके विकलहोनेसे क्लेशदायक शय्या पर सोने से और रात्रिमें जागने से मात्रा के अनुसार खायागया अन्न भी नहीं पचताहै ॥ १२ ॥

तंद्विविधमामप्रदोषमाचक्षतेभिषजः। विसूचिकामलसञ्च। तत्रविसूचिकामूर्द्ध्वञ्चाधश्चप्रवृत्तामदोषांयथोक्तरूपांविद्यात् ॥ १३ ॥

वैद्यलोग आमरोगको दोमकारका कहते हैं एक विसूचिका दूसरा अलसक इनमें से विसूचिका में वमन भी होता है और दस्त भी आते हैं इसके लक्षण जैसे कहे हैं वैसेही जानने चाहियें ॥ १३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अलसकमुपदेक्ष्यामः । दुर्बलस्याल्पाग्नेर्बहुश्लेष्मणोवातमूत्रपुरीषवेगविधारिणःस्थिरगुरुबहुरूक्षशीतशुष्कान्नसेविनस्तदन्नपानमनिलप्रपीडितंश्लेष्मणाचविबद्धमार्गमतिमात्रप्रलीनमलसत्वान्नबहिर्मुखीभवति । ततश्छर्द्यतीसारवर्ज्यानिआमप्रदोषलिङ्गानिअभिदर्शयतिअतिमात्राणि । अतिमात्रप्रदुष्टाश्चदोषाःप्रदुष्टामबद्धमार्गास्तिर्य्यग्गच्छन्तः कदाचित्केवलमेवास्य शरीरन्दण्डवत् स्तम्भयन्ति । ततस्तमलसकमसाध्यम्ब्रुवते ॥ १४ ॥

अलसक का उपदेश कियाजाता है जैसे दुर्बल मन्दाग्निवाले बहुत कफवाले वायुमूत्र तथा मलके वेगको रोकनेवाले और स्थिर भारी बहुत रूक्ष शीतल तथा शुष्क अन्नका भोजन करनेवाले पुरुषों से खायागया अन्न पान वायु से पीड़ितहोकर और कफ से बद्ध मार्ग होकर बहुत मलीन (चपकेहुए) तथा अलस (स्थिर) होजाने से बाहर नहीं निकलता तब छर्दि तथा अतीसार के सिवाय आमदोषके अन्य लक्षण बहुत प्रकट होते हैं और बहुत दूषितहुए वातादि दोष दूषित आम से बद्धमार्गहोकर इधर उधर जाके रोगीके शरीरको कभी २ दण्डकेसमान स्तब्ध करते हैं तब इस अलसक रोगको असाध्य कहते हैं ॥ १४ ॥

विरुद्धाध्यशनाजीर्णाशनशीलिनःपुनरेवदोषमामविषमित्याचक्षते भिषजोविषसदृशलिङ्गत्वात्, तत्परमसाध्यमाशुकारित्वात्, विरुद्धोपक्रमत्वाच्चेति ॥ १५ ॥

विरुद्ध भोजन करनेवाले भोजनपर भोजन करनेवाले तथा अजीर्ण में भोजन करनेवाले पुरुषोंके दोषको वैद्य आमविष कहते हैं क्योंकि उसमें विषकेसे चिह्न होते हैं वह अत्यन्त असाध्य होताहै क्योंकि शीघ्रही प्राणहरनेवालाहोता है और उसकी जो चिकित्सा की जाती वह विरुद्ध होती है ॥ १५ ॥

तत्र साध्यमामंप्रदुष्टमलसीभूतमुल्लेखयेदादौपाययित्वालवणमुष्णञ्चवारि । ततःस्वेदनवर्त्तिप्रणिधानाभ्यामुपाचरेदुपवासयेच्चैनम् ॥ १६ ॥

साध्य अलसक रोगमें लवण सहित उष्णजल पिलाकर आमको निकाले तदनन्तर स्वेदन तथा वर्त्तिप्रणिधान (साफा) के द्वारा चिकित्साकरे और लंघन करावे ॥ १६ ॥

विसूचिकायांतु लङ्घनमेवाग्रेविरिक्तवच्चानुपूर्वी ॥ १७ ॥

और विसूचिका में पहले लंघनकरावे फिर विरेचनवाले के समान क्रमकरे ॥ १७ ॥

आमप्रदोषेषु त्वन्नकालेजीर्णाहारं पुनर्दोषावलिप्तामाशयस्तिमितगुरुकोष्ठमनन्नाभिलाषिणमभिसमीक्ष्य पाययेद्दोषशेषपाचनार्थमौषधमग्निसन्धुक्षणार्थञ्च नत्वजीर्णा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शनम् । आमप्रदोषदुर्ब्बलोह्यग्नि र्युगपद्दोषमौषधमाहारजातञ्चाश क्तः पक्तुम् ॥ १८ ॥

आमदोषों में अन्न देने के समय आहार के पचजाने पर भी आमाशय को दोषों से युक्त देखकर कोष्ठ को क्लेदयुक्त तथा भारी देखकर और अन्न में अरुचि देखकर अवशिष्ट दोषों के पचाने के लिये तथा अग्नि को दीप्त करनेके लिये औषध पिलावे किन्तु अजीर्ण में औषध भी न पिलावे क्योंकि आमदोष से दुर्बल अग्नि एकसाथही दोष औषध तथा आहार को नहीं पचा सक्ती है ॥ १८ ॥

अपिचामप्रदोषाहारौषधविभ्रमोऽ तिबलत्वादुपरतकायाग्निम् सहसै वातुरमलमभिपातयेत् ॥ १९ ॥

और आमदोष भोजन तथा औषधका विभ्रम (गड़बड़होजाना) अत्यन्त बलवान् होने के कारण मन्दाग्निवाले निर्बल पुरुष को शीघ्रही नष्ट करदेता है ॥ १९ ॥

आमप्रदोषजानां पुनर्विकाराणा मपतर्पणेनैवोपरमोभवति। सतित्व नुबन्धेकृतापतर्पणानां व्याधीनांनि ग्रहे निमित्तविपरीतमपास्यौषधमा तङ्कविपरीतमेवावचारयेत् । यथा स्वं सर्व्वविकाराणामपिच निग्रहेहे तुव्याधिविपरीतमौषधमिच्छान्तिकु शलाः ॥ २० ॥

आमदोषसे हुए विकार अपतर्पण (लंघन) तथा से ही नष्ट होते हैं यदि अपतर्पण करनेपरभी विकार बनेरहैं तो अपतर्पणके उपरान्त रोगों के नष्ट करने के लिये हेतुविपरीत औषधको छोड़कर रोग विपरीत औषधकरे अर्थात् रोग के शान्त करनेवाली औषधकरे चतुरवैद्य संपूर्ण रोगों के शान्त करने के लिये हेतु-विपरीत तथा रोगविपरीत औषध देने की इच्छा करते हैं ॥ २० ॥

तदर्थकारिविपक्कभुक्तामप्रदोषस्य पु नः परिपक्कदोषस्य दीप्तेचाग्नौअ भ्यङ्गास्थापनानुवासनं विधिवत् स्नेहपानञ्च युक्त्याप्रयोज्यम्, प्र समीक्ष्य दोषभेषजदेशकालबलश रीराहारसात्म्यसत्त्वप्रकृतिवयसामव स्थान्तराणि विकारांश्चसम्यगि ति ॥ २१ ॥

फिर आमदोषके कुपित होनेपर तथा आम दोष के पचजानेपर अग्नि को दीप्त जानकर अभ्यंग आस्थापन अनुवासन तथा स्नेह-पान विधिपूर्वक करना चाहिये परन्तु इन में दोष औषध देश काल बल शरीर आहार सात्म्य सत्त्व प्रकृति तथा अवस्थाकी दशाओं को और रोगोंको विचारलेना चाहिये ॥ २१ ॥

भवति चात्र ।

अशितंखादितंपीतं लीढञ्चक्वविप च्यते । एतत्त्वांधीर! पृच्छामस्तन्न आचक्ष्वबुद्धिमन् ॥ २२ ॥

इस में यह श्लोक हैं। चर्व्य खाद्य पेय लेह्य पदार्थ मनुष्य के उदर में जाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहां पचते हैं हे धीर यह बतलाइये हमलोग आपसे पूछते हैं ॥ २२ ॥

इत्यग्निवेशप्रमुखैःशिष्यैःपृष्टःपुनर्वसुः। आचचक्षेततस्तेभ्योयत्राहारोविपच्यते ॥ २३ ॥

इस प्रकार अग्निवेश हैं श्रेष्ठ जिनमें ऐसे शिष्योंकेद्वारा पूछेगये पुनर्वसुजी जहां आहार पचताहै वह तिन शिष्योंसे कहतेभये ॥ २३ ॥

नाभिस्तनान्तरंजन्तोरामाशयइतिस्मृतः। अशितंखादितंपीतंलीढञ्चात्रविपच्यते ॥ २४ ॥

कि प्राणियों की नाभि तथा स्तनोंके वीच में आमाशय नाम स्थान होताहै उसीमें चर्व्य खाद्य लेह्य तथा पेय पदार्थ पचते हैं ॥ २४ ॥

आमाशयगतःपाकमाहारःप्राप्यकेवलम्। पक्वःसर्वाशयःपश्चाद्धमनीभिःप्रपद्यते ॥ २५ ॥

भोजन किया हुआ आहार पहले आमाशयमें जाकर परिपक्व होता है तदनन्तर नाड़ियोंकेद्वारा रसरूप होके सब स्थानोंमें जाताहै ॥ २५ ॥

तस्यमात्रावतोलिङ्गफलञ्चोक्तंयथायथम्। अमात्रस्यतथालिङ्गंफलञ्चोक्तंविभागशः ॥ २६ ॥

इस अध्याय में मात्राके अनुसार तथा अमात्राके अनुसार कियेगये आहारके लक्षण तथा फल यथावत् विभागपूर्वक कहेगये॥२६॥

आहारविध्यायतनानिचाष्टौसम्यक्परीक्ष्यात्महितंविदध्यात्। अन्यश्चयःकश्चिदिहास्तिमार्गोहितोपयोगेषुभजेततञ्च ॥ २७ ॥

इतिअग्निवेशकृतेतंत्रेचरकप्रतिसंस्कृतेविमानस्थानेत्रिविधकुक्षीयं विमानंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

आहार विधिके आठ आयतनों को अच्छे प्रकारसे परीक्षा करके जो अपने को हितहोय उसका सेवनकरे और इनके सिवाय अन्य जो कोई हितका मार्गहोय उसका भी सेवन करे ॥ २७ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंत्रिविधकुक्षीय विमाननामदूसराअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

तीसराअध्याय ॥

जनपदोद्ध्वंसनीयम्।

इति हस्माह भगवानात्रेयः।

जनपदमण्डलेपञ्चालक्षेत्रेद्विजातिवराध्युषितायांकाम्पिल्यराजधान्यांभगवान्पुनर्वसुरात्रेयोऽन्तेवासिगणपरिवृतःपश्चिमेघर्म्ममासेगङ्गातीरेवनविचारमनुविचरन्शिष्यमग्निवेशमब्रवीत् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त जनपदोद्ध्वंसनीय नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा अनेक प्रकारके लोगों के निवासस्थान श्रेष्ठ ब्राह्मणों से युक्त पांचालदेशीय कम्पिल्लनाम राजधानी में गंगाजीके तटपर वनमें शिष्यों सहित विचरण करतेहुये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भगवान् आत्रेयजीने ग्रीष्मऋतुके पिछले महीनेमें अग्निवेश से कहा ॥ १ ॥

दृश्यन्तेहिखलुसौम्य ! नक्षत्रग्रहचन्द्रसूर्य्यानिलानलानांदिशाञ्चप्रकृतिभूताऋतुवैकारिकाभावाअचिरादितोभूरपिचनयथावद्रसवीर्य्यविपाकप्रभावमोषधीनांप्रतिविधास्यति। तद्वियोगाच्चातङ्कप्रायतानियता। तस्मात्प्रागुद्ध्वंसात्प्राक्चभूमेर्विरसीभावादुद्धरसौम्य ! भैषज्यानि, यावन्नोपहतरसवीर्य्यविपाकप्रभावाणि।वयंचैषांरसवीर्य्यविपाकप्रभावानुपयोक्ष्यामहे, येचास्माननुकाङ्क्षन्ति,यांश्चवयमनुकांक्षामः२॥

कि हे सौम्य प्रकृतिभूत नक्षत्र ग्रह चन्द्रमा सूर्य्य वायु अग्नि तथा दिशा इनके ऋतुसम्बन्धी विकार दिखाई देते हैं थोड़ेही काल में पृथ्वी भी औषधियों के रस वीर्य्य तथा विपाक को नहीं धारण करेगी इससे प्रायः सम्पूर्ण लोग रोगी होंगे इसी कारणसे देश के विगड़ने के तथा पृथ्वी के विरस होने के पहलेही औषधि उखाड़लो नहीं तो इनके रस वीर्य्य विपाक तथा प्रभाव नष्ट होजायँगे जो लोग हमसे आकांक्षा करेंगे और जिनकी हम कांक्षा करते हैं उन पुरुषोंके लिये इन औषधियों के रस वीर्य्य विपाक तथा प्रभाव का व्यवहार करेंगे ॥ २ ॥

नहिसम्यगुद्धृतेषुभैषज्येषुसम्यग्विहितेषुसम्यग्विचारचारितेषुजनपदोद्ध्वंसकराणांविकाराणांकिञ्चित्प्रतीकारगौरवम्भवति ॥ ३ ॥

अच्छे प्रकार से उखाड़ीगई औषधियों को अच्छे प्रकार से बनाकर श्रेष्ठ प्रकार से व्यवहार करनेपर देशके नष्ट करनेवाले रोगों के प्रतीकार करने में कुछ भी कठिनता नहीं होती है ॥ ३ ॥

एवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच। उद्धृतानिखलुभगवन्! भैषज्यानि सम्यग्विहितानिसम्यग्विचारचारितानि । अपितुखलु जनपदोद्ध्वंसनमेकेनऽव्याधिनायुगपदसमानप्रकृत्याहारदेहबलसात्म्यासत्त्ववयसांमनुष्याणांकस्माद्भवतीति ॥ ४ ॥

इस प्रकार कहतेहुए भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेश ने कहा कि हे भगवन् यदि औषधियां उखाड़भी लीं और अच्छे प्रकार से बनाकर दीयी भी परन्तु अब यह संदेह होता है कि अनेक प्रकार की प्रकृति आहार देह बल सात्म्य सत्त्व तथा अवस्थावाले मनुष्यों का देश एकही रोग से एकही साथ क्यों नष्ट होता है ॥ ४ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः। एवमसामान्यानामेभिरपिअग्निवेश ! प्रकृत्यादिभिर्भावैर्मनुष्याणांयेऽन्येभावाःसामान्यस्तद्वैगुण्यात्समानकालाःसमानलिङ्गाश्चव्याधयोभिनि

Digitized by eGangotri

वर्त्तमानाजनपदमुद्ध्वंसयन्ति । तेतु खलुइमेभावाःसामान्याजनपदेषुभवन्ति । तद्यथा,–वायुरुदकंदेशःकालइति ॥ ५ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा हे अग्निवेश मनुष्यों के प्रकृति आदि भावों के समान न होनेपर भी और जो सामान्य भाव हैं उनके दूषित होने से एकही साथ एकही प्रकारके रोग उत्पन्न होकर देशको नष्ट करते हैं वह सामान्य भाव यह हैं जैसे वायु जल देश तथा काल ॥ ५ ॥

तत्रवातमेवंविधमनारोग्यकरंविद्यात् । तद्यथा,–ऋतुविषममतिस्तिमितमतिचलमतिपरुषमतिशीतमत्युष्णमतिरूक्षमत्यभिष्यन्दिनमतिभैरवारावमतिप्रतिहतपरस्परगतिमतिकुण्डलिनमसात्म्यगन्धबाष्पसिकतापांशुधूमोपहतमिति ॥ ६ ॥

इनमें से इस प्रकार की वायु को रोगकारी जानना चाहिये जैसे ऋतु से विपरीत बहुत आर्द्र बहुत चंचल बहुत कठोर बहुत शीतल बहुत उष्ण बहुत रूखी बहुत बाष्पयुक्त बहुत भयानक शब्दयुक्त परस्पर बहुत टक्कर खाती हुई बहुत बोंडरों से युक्त और असात्म्य गन्ध बाष्प बालू धूलि तथा धूमयुक्त ॥ ६ ॥

उदकन्तुखलुअत्यर्थविकृतगन्धवर्णरसस्पर्शवत्क्लेदबहुलमपक्रान्तजलचरविहङ्गमुपक्षीणजलाशयमप्रीतिकरमपगतगुणंविद्यात् ॥ ७ ॥

जलभी अत्यन्त विकार को प्राप्त गन्ध वर्ण रस तथा स्पर्शयुक्त बहुत क्लेद युक्त चलचर पक्षियोंसे त्याग कियागया जलाशय में शुष्क हुआ और नहीं प्रीतिकारी दूषित जानना चाहिये ॥ ७ ॥

देशंपुनःविकृतप्रकृतिवर्णगन्धरससंस्पर्शंक्लेदबहुलमुपसृष्टंसरीसृपव्यालमशकशलभमक्षिकामूषकोलूकश्माशानिकशकुनिजम्बुकादिभिस्तृणोलूपोपवनवन्तंप्रतानादिबहुलमपूर्ववदवपतितंशुष्कनष्टशस्यंधूम्रपवनंप्रध्मातपतत्रिगणमुत्क्रुष्टश्वगणमुद्भ्रान्तव्यथितविविधमृगपक्षिसंघमुत्सृष्टनष्टधर्म्मसत्यलज्जाचारगुणजनपदंशश्वत्क्षुभितोदीर्णसलिलाशयंप्रततोल्कापातनिर्घातभूमिकम्पमतिभयारावरूपंरूक्षताम्रारुणसिताभ्रजालसंवृतार्कचन्द्रतारकमभीक्ष्णंसम्भ्रमोद्वेगमिवसत्रासरुदितमिवसतमस्कमिवगुह्यकाचरितमिवाक्रन्दितशब्दबहुलञ्चाहितंविद्यात् ॥ ८ ॥

ऐसे देशको दूषित जानना चाहिये जैसे प्रकृति के विरुद्ध वर्ण गन्ध रस तथा स्पर्शयुक्त बहुत क्लेदयुक्त सर्प वनके पशु मच्छर टीड़ी मक्खी मूस उल्लू श्मशानके पक्षी तथा शृगालादिकों से पीड़ित तृण तथा उलूपों (तृणविशेषों) से तथा उपवनों (झाड़ि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लश्चासत्कर्मपूर्वकृतम् । तयोर्यो निःप्रज्ञापराधएव ॥ २३ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश वायुआदिक के दूषित होनेका अधर्म कारणहै और अधर्मका कारण प्राक्तन असत्कर्म है और अधर्म्म तथा असत्कर्म्म इन दोनोंका कारण प्रज्ञापराध (बुद्धिदोष) है ॥ २३ ॥

तद्यथा,-यदादेशनगरनिगमजनपदप्रधानाधर्ममुत्क्रम्यअधर्मेणप्रजांप्रवर्त्तयन्तितदाश्रितोपाश्रिताः पौरजनपदाव्यवहारोपजीविनश्च तमधर्ममभिवर्द्धयन्ति ॥ २४ ॥

जैसे जब देश नगर निगम (परकोटे का नगर तथा जनपद (जिसमें बहुत लोग बसते हों) के प्रधान (राजाआदिक) धर्म्म को छोड़कर अधर्म्म से प्रजाका पालन करते हैं तब उनके आश्रित तथा उपाश्रित पुरवासी तथा देशवासी और व्यवहारोपजीवी लोग उस अधर्म को बढ़ाते हैं ॥ २४ ॥

ततःसोऽधर्मःप्रसभंधर्ममन्तर्धत्ते । ततस्तेऽन्तर्हितधर्माणोदेवताभिरपित्यज्यन्ते। तेषां तथान्तर्हितधर्माणामधर्मप्रधानानामपक्रान्तदेवतानामृतवोव्यापद्यन्ते । तेननापोयथाकालंदेवोवर्षति । विकृतंवावर्षति वातानसम्यगभिवान्तिक्षितिर्व्यापद्यतेसलिलानिउपशुष्यन्ति । ओषधयःस्वभावंपरिहायापद्यन्तेविकृतिम् । ततउद्ध्वंसन्तेजनपदाःस्पर्शाभ्यवहार्य्यदोषात् ॥ २५ ॥

इससे वह अधर्म बढ़कर धर्म को लुप्त कर देता है तब उन अधर्मियों को देवता लोग त्यागकर देते हैं इस प्रकार धर्मरहित अधर्म में रत तथा देवताओं से त्याग कियेगये उन लोगोंके लिये ऋतु विपरीत होजाती हैं इस से समयके अनुसार वृष्टि नहीं होती अथवा विकारयुक्त वृष्टि होती है वायु अच्छेप्रकारसे नहीं चलती पृथ्वी दूषित होजाती है जल सूखजाते हैं और औषधियां प्रभाव को त्यागकर विकारको प्राप्तहोजाती हैं तब स्पर्श तथा भोजनके दोषसे देश नष्ट होजाते हैं ॥ २५ ॥

तथा शस्त्रप्रभवस्यअपिजनपदोद्ध्वंसस्य अधर्म्मएवहेतुर्भवति । येतिप्रवृद्धलोभक्रोधरोषमानाः तेदुर्बलानवमत्य आत्मस्वजनपरोपघातायशस्त्रेण परस्परमभिक्रामन्ति परान्वाभिक्रामन्ति परैर्वाभिक्राम्यन्ते रक्षोगणादिभिर्वाविविधैर्भूतसङ्घैस्तमधर्म्ममन्यद्वाप्यपचारान्तरमुपलभ्याभिहन्यन्ते । तथाभिशापस्याप्यधर्म्मएव हेतुर्भवति ॥ २६ ॥

शस्त्रकेद्वारा देशके नष्ट होनेकाभी अधर्मही कारण है जैसे बहुत लोभ क्रोध रोष तथा मानसे बहुतयुक्त होकर वह अधर्मी पुरुष दुर्बलों का तिरस्कार करके अपने स्वजनोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा शत्रुओं के नाशके लिये शस्त्रोंकेद्वारा युद्ध करते हैं वह शत्रुओंपर चढ़ाई करते हैं अथवा शत्रु उनपर चढ़ाई करते हैं उनके इस अधर्म को तथा अन्य दोष को पाकर राक्षसादिक भूतगणभी उन को सताते हैं शापका भी अधर्मही कारण होताहै ॥ २६ ॥

ये लुप्तधर्म्माणोधर्म्मादपेताः तेगुरुवृद्धसिद्धर्षिपूज्यानवमत्य अहितानिआचरन्ति ॥ २७ ॥

जैसे वह लोग अधर्म्मी होकर धर्मसे रहित होके गुरु वृद्ध सिद्ध ऋषि तथा पूज्योंका अपमान करके अहित आचरण करते हैं ॥२७॥

ततस्ताः प्रजागुर्व्वादिभिरभिशप्ता भस्मतामुपयान्ति। प्रागप्यसूदनेकपुरुषकुलविनाशाय नियतप्रत्ययोपलम्भान्नियताश्चपरे । अनियतप्रत्ययोपलम्भादनियताश्चापरे ॥ २८ ॥

तब गुरुआदिक उनको शाप देते हैं इससे वह भस्म होजाते हैं और इससे उनके वंशके वंश नष्ट होजाते हैं नियत प्रत्ययोपलम्भ (निश्चित ज्ञानानुभव) से कोई शाप नियत होते हैं और अनियत प्रत्ययोपलम्भ (अनिश्चित ज्ञानानुभव) से कोई अनियत होते हैं ॥ २८ ॥

प्रागपिचाधर्म्माद्दतेनाशुभोत्पत्तिरन्यतोऽभूत् । आदिकालेहिअदितिसुतसमौजसोऽतिविमलविपुलप्रभावाः प्रत्यक्षदेवदेवर्षिधर्म्मयज्ञविधिविधानाःशैलेन्द्रसारसंहतस्थिरशरीराः प्रसन्नवर्णेन्द्रियाः पवनसमबलजवपराक्रमाश्चारुस्फिचोभिरूपप्रमाणाकृतिप्रसादोपचयवन्तःसत्यार्ज्जवानृशंस्यदानदमनियमतपउपवासब्रह्मचर्य्यव्रतपराव्यपगतभयरागद्वेषमोहलोभक्रोधशोकमानरोगनिद्रातन्द्राश्रमक्लमालस्यपरिग्रहाश्च पुरुषाबभूवुरमितायुषः ॥ २९ ॥

पूर्वसमयमें भी अधर्म के विना अशुभ की उत्पत्ति नहींहुई है आदिसमय में देवताओं के समान ओजवाले अत्यन्त विमल तथा विपुल प्रभाववाले देवता देवर्षि धर्म्म तथा यज्ञ विधिविधान को प्रत्यक्ष करनेवाले पर्वतोंके समान सारयुक्त कठिन तथा स्थिर शरीरवाले निर्मलवर्ण तथा इन्द्रियवाले वायु के समान बल वीर्य्य तथा पराक्रमवाले सुन्दर कूलेवाले अनुरूप (माफिक) प्रमाण आकृति प्रसन्नता तथा वृद्धिवाले सत्य आर्जव (सीधापन) अनिष्ठुरता दान जितेन्द्रियता नियम तप उपवास तथा ब्रह्मचर्य्य में तत्पर भय राग द्वेष मोह लोभ क्रोध शोक मान रोग निद्रा तन्द्रा श्रम ग्लानि आलस्य तथा परिग्रह से रहित पुरुष अपरिमित आयुर्दायवाले होते थे ॥ २९ ॥

तेषामुदारसत्त्वगुणकर्म्मणामचिन्त्यत्वात् रसवीर्य्यविपाकप्रभावगुणसमुदितानि प्रादुर्बभूवुःशस्यानि सर्व्वगुणसमुदितत्वात्पृथिव्यादीनांकृतयुगस्यादौ। भ्रश्यतितुकृतयुगेकेषा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ञ्चिदत्यादानात्सम्पन्निकानांश रीरगौरवमासीत् । सत्त्वानांगौरवा च्छ्रमः श्रमादालस्यमालस्यात स ञ्चयः सञ्चयात्परिग्रहः परिग्रहा ल्लोभः प्रादुर्भूतः ॥ ३० ॥

महासत्त्वगुण तथा कर्मवाले उन पुरुषों के लिये अचिन्त्य रस वीर्य्य विपाक तथा प्रभाव गुणयुक्त अन्न होते थे क्योंकि सतयुग के आदि में पृथ्वी आदिक तत्त्व संपूर्ण गुणों से युक्त थे तदनन्तर सतयुग के क्षीण होने परकुछ सम्पन्न पुरुषोंके बहुत ग्रहण करने से शरीर में गौरव उत्पन्न हुआ गौरव से श्रमहुआ श्रमसे आलस्य हुआ आलस्य से संचयहुआ संचयसे परिग्रह हुआ और परिग्रहसे लोभ हुआ ॥ ३० ॥

ततःकृतयुगेगतेत्रेतायां लोभादभि द्रोहः । अभिद्रोहादनृतवचनमनृत वचनात्कामक्रोधमानद्वेषपारुष्या भिघात–भयतापशोकचित्तोद्वेगा दयःप्रवृत्ताः ॥ ३१ ॥

तदनन्तर सतयुग के व्यतीत होने पर त्रेता में लोभसे द्रोह उत्पन्न हुआ द्रोह से मिथ्या बोलना मिथ्या बोलने से काम क्रोध मान द्वेष कठोरता अभिघात (शत्रुता) भय सन्ताप शोक तथा चित्तोद्वेग (चित्तघबराना) आदि उत्पन्न हुए ॥ ३१ ॥

ततस्त्रेतायां धर्म्मपादोऽन्तर्द्धानम गमत् । तस्यान्तर्द्धानात्पृथिव्या दीनांगुणपादप्रणाशोऽभूत् । तत्प्र णाशकृतश्चशस्यानांस्नेहवैमल्य रसवीर्य्यविपाकप्रभावगुणपादभ्रं शः ॥ ३२ ॥

इससे त्रेतामें धर्म का एक पाद नष्ट होगया धर्म के पादके नष्ट होने से पृथिव्यादिकों के गुणका एक पाद नष्ट होगया उससे अन्नों के स्नेह निर्मलता रस वीर्य्य विपाक तथा प्रभाव के गुण का एकपाद नष्ट होगया ॥ ३२ ॥

ततस्तानिप्रजाशरीराणिहीनगुण पादैर्हीयमानगुणैश्चाहारविहारैय थापूर्वमुपष्टभ्यमानानि अग्निमारु तपरीतानिप्राग्व्याधिभिर्ज्वरादिभि राक्रान्तानिअतःप्राणिनोह्रासमवा पुरायुषःक्रमश इति ॥ ३३ ॥

तब प्रजाओं के शरीर हीनगुणवाले तथा हीन होते हुए गुण वाले आहार विहारों से पुष्ट होने के कारण ऊष्मा तथा वायुसे युक्त होकर पहले ज्वरादि रोगों से क्लेशित हुए इससे धीरे २ प्राणियों की आयु क्षीण होने लगी ॥ ३३ ॥

भवति चात्र ।

युगेयुगेधर्म्मपादःक्रमेणानेनहीय ते । गुणपादश्चभूतानामेवंलोकःप्र लीयते ॥ ३४ ॥

इस में यह श्लोक है इसप्रकार से युग २ में धर्म का एक पाद हीन होता है और पृथिव्यादि के गुणों का भी एक २ पाद क्षीण होता है इसप्रकार मनुष्यों की आयु नष्ट होती है ॥ ३४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संवत्सरशतेपूर्णे यातिसंवत्सरःक्षयम्। देहिनामायुषःकालेयत्रयन्मानमिष्यते ॥ ३५ ॥ इतिविकाराणांप्रागुत्पत्तिहेतुरुक्तोभवति॥३६॥

जिससमय में आयुका जो प्रमाण है उस के अनुसार सौवर्ष के व्यतीत होनेपर आयु का एकवर्ष क्षीण होताहै इसप्रकार से रोगों के प्रथम उत्पन्न होने का कारण कहागया ३५ । ३६ ॥

एवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेश उवाच । किन्नुखलुभगवन् ! नियतकालप्रमाणमायुः सर्वंनवेतिभगवानुवाच । इहअग्निवेश ! भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते ॥ ३७॥

इसप्रकार कहते हुए भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने कहा कि हे भगवन् आयु के काल का प्रमाण निश्चित होता है या नहीं यहसुनकर भगवान् आत्रेय जीने कहा कि हे अग्निवेश मनुष्योंकी आयु युक्ति के आधीन होती है ॥ ३७ ॥

दैवेपुरुषकारेच स्थितंह्यस्यबलाबलम्। दैवमात्मकृतंविद्यात्कर्मयत्पूर्वदैहिकम् ॥ ३८ ॥

आयुका बलावल दैव तथा पुरुषकारमें स्थित है पूर्व्वजन्म में अपने किये हुए कर्म को दैव कहते हैं ॥ ३८ ॥

स्मृतःपुरुषकारस्तुक्रियतेयदिहापरम्। बलाबलविशेषोऽस्तितयोरपि चकर्म्मणोः ॥ ३९ ॥

और इस जन्म में जो कर्म कियाजाता है उसे पुरुषकार कहते हैं दैव तथा पुरुषकार इन दोनों कर्मों में भी वलावल की विशेषता होती है ॥ ३९ ॥

दृष्टंहित्रिविधंकर्म्महीनंमध्यममुत्तमम्। तयोरुदारयोर्युक्तिर्दीर्घस्यस्वसुखस्यच ॥ ४० ॥

यह दोनों कर्म तीन २ प्रकारके होते हैं जैसे हीन मध्यम तथा उत्तम उत्तम कर्मों के द्वारा दीर्घायु तथा दीर्घसुख की प्राप्ति होती है ॥ ४० ॥

नियतस्यायुषोहेतुर्विपरीतस्यचेतरा। मध्यमामध्यमस्येष्टा कारणंशृणुचापरम् ॥ ४१ ॥

हीनकर्मों के द्वारा हीन आयु तथा हीन सुख की प्राप्ति होती है और मध्यम कर्मोंसे मध्यम आयु तथा मध्यसुखकी प्राप्ति होती है अब दूसरा कारण सुनो ॥ ४१ ॥

दैवंपुरुषकारेण दुर्बलंह्युपहन्यते । दैवेनचेतरत्कर्म्म विशिष्टेनोपहन्यते ॥ ४२ ॥

यदि पूर्व्वजन्म के कर्म दुर्बल होयँ तो पुरुषकार उनको नष्ट करदेता है और जो पूर्व्वजन्म का कर्म अधिक बलवान् होय तो पुरुषकार को नष्ट करदेता है ॥ ४२ ॥

दृष्ट्वायदेकेमन्यन्तेनियतंमानमायुषः । कर्मकिञ्चित्क्वचित्कालेविपाकेनियतंमहत्। किञ्चित्त्वकालनियतंप्रत्ययैःप्रतिबोध्यते इति ॥ ४३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह देखकर कोई २ लोग आयुका प्रमाण निश्चित मानते हैं किसी महाकर्मका किसी समय में फल होना निश्चित होता है और किसी कर्मके फल के समय का निश्चय नहीं होता किन्तु वह कारणों को पाकर फलित होता है ॥ ४३ ॥

तस्मादुभयदृष्टत्वादेकान्तग्रहणम साधुनिदर्शनमपिचात्रउदाहरिष्यामः। यदिहिनियतकालप्रमाणमायुःसर्वस्यात् तदायुष्कामाणांनमन्त्रौषधिमणिमङ्गलवल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनाद्याःक्रियाइष्टयश्चप्रयुज्येरन् ॥ ४४ ॥

इस से दोनों बातों के प्रत्यक्ष होने से एक ही का ग्रहण करना अनुचित है यहांपर उदाहरण भी हम देते हैं जो सब की आयु के समय का निश्चय होय तो आयुके चाहने वाले मंत्र औषध मणि मंगल बलि उपहार होम नियम प्रायश्चित्त उपवास स्वस्त्ययन प्रणाम तथा गमनादिक क्रिया तथा यज्ञोंका प्रयोग न करें ॥ ४४ ॥

नउद्भ्रान्तचण्डचपलगोगजोष्ट्रखरतुरगमहिषादयः पवनादयश्चदुष्टाः परिहार्य्याःस्युःनप्रपातगिरिविषमदुर्गाम्बुवेगाः।तथानप्रमत्तोन्मत्तोद्भ्रान्त-चण्डचपलमोहलोभाकुलमतयोनारयोनप्रवृद्धोऽग्निर्नच विविधविषाश्रयाःसरीसृपोरगादयः। नसाहसंनदेशकालचर्य्यानरेन्द्रप्रकोप इत्येवमादयोभावानाभावकराःस्युः आयुषः सर्वस्यनियतकालप्रमाणत्वात् ॥ ४५ ॥

घबराये हुए क्रोधयुक्त तथा चंचल बैल हाथी ऊंट गधा घोड़ा तथा महिषआदिक और दूषित वायु इनसे कोई बचने का उपाय न करे विषम पर्व्वत से गिरना दुर्गम जलका वेग और प्रमत्त उन्मत्त उद्भ्रांत क्रोधी चंचल मोहयुक्त तथा लोभी शत्रु इनसे कोई बचने का उपाय न करे और तीक्ष्ण अग्नि तथा अनेक विषैले सर्पादिक जीवों से भी बचने का उपाय न करें साहस देशचर्य्या कालचर्या तथा राजाओंका कोप इत्यादि बातें आयुकी नष्ट करनेवाली न होयँ क्योंकि सबकी आयु का समय निश्चित है ॥ ४५ ॥

नचानभ्यस्ताकालमरणभयनिवारकाणामकालमरणभयमागच्छेत्प्राणिनाम्। व्यर्थाश्चारम्भकथाप्रयोगबुद्धयःस्युर्महर्षीणांरसायनाधिकारी ॥ ४६ ॥

कभी भी अकालमृत्यु के न होने से प्राणियों को अकालमृत्यु का भय न होय और रसायनाधिकारमें महर्षियों के कहेहुए संपूर्ण प्रयोग व्यर्थ होजायँ ॥ ४६ ॥

नापीन्द्रोनियतायुषंशत्रुंवज्रेणाभिहन्यात्। नाश्विनावार्त्तंभेषजेनोपपादयेताम्। नर्षयोयथेष्टमायुस्तपसाप्राप्नुयुर्नचविदितवेदितव्याम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हर्षयः ससुरेशाः सम्यक्पश्येयुरुपदिशेयुराचरेयुर्वा ॥ ४७ ॥

इन्द्र भी अपने शत्रुकी आयुको निश्चित मानकर अपने वज्रसे उसे न मारे अश्विनीकुमार रोगी की चिकित्सा न करें महर्षि लोग तपसे यथेष्ठ आयुको न पावें और इन्द्रसहित सर्वज्ञ महर्षिलोग आयुवर्द्धक वातोंका न उपदेश करें न आचरण करें ॥ ४७ ॥

अपिचसर्वचक्षुषामेतत्परंयदैन्द्रंचक्षुरिदञ्चास्माकंतेनप्रत्यक्षं यथापुरुषसहस्राणामुत्थायोत्थायाहवंकुर्वतामकुर्वताञ्चातुल्यायुष्ट्वंतथाजातमात्राणामप्रतीकारात्प्रतीकाराच्च अविषाविषप्राशिनांचापिअतुल्यायुष्ट्वंनचतुल्योयोगक्षेमउदपानघटानां चित्रघटानाञ्चोत्सीदताम् ॥ ४८ ॥

यह बात हम लोगों के प्रत्यक्ष है कि जो लोग नित्ययुद्ध करते हैं और जो नहीं करते हैं उन की आयु तुल्य नहीं होती क्योंकि युद्ध करने वाले प्रायः शस्त्र के ही द्वारा मरते हैं और युद्ध न करनेवाले शस्त्र के द्वारा नहीं मरते जो लोग रोगों का प्रतीकार नहीं करते हैं और जो लोग विषम आहारादिका त्याग करके प्रतीकार करते हैं उनकीभी आयु तुल्य नहीं होती देखो जलपान के घट तथा चित्रितघट इनदोनों प्रकार के घटों के फूटने में जैसे समता नहीं है इसी प्रकार यत्न करते हुए तथा यत्न न करते हुए मनुष्यों के योगक्षेम तथा आयुकी समता नहीं होसक्ती ॥ ४८ ॥

तस्माद्धितोपचारमूलंजीवितमतो विपर्य्ययान्मृत्युः ॥ अपिचदेशकालात्मगुणविपरीतानांकर्मणामाहारविकाराणाञ्चक्रियोपयोगः ॥४९॥

इससे हितका सेवन करना जीवनका मूल है और विपरीत आचरण करनेमें मृत्युहोती है और देशकाल के गुणोंसे तथा अपने से विपरीत कार्य्य तथा आहार विहारका सेवन भी मृत्यु का कारण है ॥ ४९ ॥

सम्यक्सर्वातियोगसन्धारणमसन्धारणमुदीर्णानाञ्चगतिमतांसहसानाञ्चवर्जनमारोग्यानुवृत्तौउपलभामहे हेतुमुपदिशामः सम्यक्पश्यामश्चेति ॥ ५० ॥

संपूर्ण अतियोगों का त्याग करना उपस्थितहुए वेगों का न रोकना और साहस न करना आरोग्य का मूलहै यह बात हम अच्छे प्रकार जानते हैं उपदेश करते हैं और देखते भी हैं ॥ ५० ॥

अतःपरमग्निवेशउवाच। एवंसति अनियतकालप्रमाणायुषांभगवन्! कथं कालमृत्युरकालमृत्युर्भवतीति ॥ ५१ ॥

इस के उपरान्त अग्निवेश ने कहा कि हे भगवन् ऐसा होने से जो आयु के समयका कोई प्रमाण नहीं है तो अकालमृत्यु और कालमृत्यु यह कैसे हो सक्ती हैं ॥ ५१ ॥

तमुवाचभगवानात्रेयः। श्रूयतामग्निवेश ! यथायानसमायुक्तोऽ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

क्षःप्रकृत्यैवाक्षगुणैरुपेतःस्यात् । स चसर्वगुणोपपन्नोवाह्यमानोयथाकालंस्वप्रमाणक्षयादेवावसानंगच्छेत्तथायुःशरीरोपगतंबलवतःप्रकृत्याय थावदुपचर्य्यमाणंस्वप्रमाणक्षयादेवअवसानंगच्छति ॥ ५२ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा हे अग्निवेश सुनो जैसे वाहनयुक्त संपूर्ण रथों के गुणों से युक्त तथा अन्य संपूर्ण गुणों से युक्त गाड़ी चलाने से समयके अनुसार अपने प्रमाण के क्षीणहोने से ही नष्ट होती है उसीप्रकार बलवान् पुरुष के शरीर में प्राप्त आयु यथावत् व्यवहार करने से अपने प्रमाण के क्षीण होने ही पर नष्ट होती है ॥ ५२ ॥

समृत्युः कालेयथाच सएवाक्षोऽति भाराधिष्ठितत्वाद्विषमपथादपथादक्षचक्रभङ्गाद्वाह्यवाहकदोषादनिर्मोक्षात्पर्य्यसनादनुपाङ्गाच्चान्तरा व्यसनमापद्यते ॥ ५३ ॥

यही कालमृत्यु कहलाती है और जैसे वही गाड़ी बहुत बोझा लादने से ऊंचे नीचे मार्ग में चलाने से मार्गरहित स्थानमें चलाने से पहिये के टूटने से वाहन तथा गाड़ी वालों के दोषसे बराबर चलातेही रहनेसे ठीक स्थानमें न खड़ी करीजानेसे और अड़ाने आदि के न होने से बीचही में टूट जाती है॥५३॥

तथायुरप्ययथाबलमारम्भादयथाग्न्यभ्यवहरणाद्विषमाभ्यवहरणाद्विषमशरीरन्यासादतिमैथुनादसत्संश्रयादुदीर्णवेगविनिग्रहात् । विधार्य्यवेगाविधारणाद्भूत–विषवाय्वग्न्युपतापादभिघातादाहारप्रतीकार–विवर्ज्जनाच्चान्तराव्यसनमापद्यते । समृत्युरकाले ॥ ५४ ॥

इसी प्रकार बलके अनुसार कार्य्य न करने से अग्निके अनुसार भोजन न करने से शरीर को विषमतापूर्व्वक रखने से बहुत मैथुन करने से दुर्जनों का संसर्ग करने से उपस्थित हुए वेगोंके रोकने से जिन वेगों को रोकना चाहिये उनके न रोकने से भूत विष तथा अग्निके तापसे चोट लगने से और भोजन न करने से बीचमें ही आयु नष्ट होजाती है इसे अकालमृत्यु कहते हैं ॥ ५४ ॥

तथा ज्वरादीनप्यातङ्कान्मिथ्योपचरितानकालमृत्यून् पश्याम इति ॥ ५५ ॥

ज्वरादि रोगों में भी अच्छे प्रकार चिकित्सा न करने से अकालमृत्यु होती है ॥५५॥

अथाग्निवेशः पप्रच्छ किन्नुखलुभगवन् ! ज्वरितेभ्यः पानीयमुष्णंभूयिष्ठं प्रयच्छन्तिभिषजोनतथाशीतम् । अस्तिच शीतसाध्योधातुर्ज्वरकर इति ॥ ५६ ॥

इसके उपरान्त अग्निवेशने पूछा कि हे भगवन् वैद्य लोग बहुधा ज्वर वालोंको उष्ण जल देते हैं शीतल नहीं देते और शीतसाध्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धातु से ज्वर उत्पन्न होता है इस विपरीतका क्या कारण है ॥ ५६ ॥

तमुवाच भगवानात्रेयोज्वरितस्य कायसमुत्थानदेशकालानभिसमीक्ष्य पाचनार्थम्पानीयमुष्णम्प्रयच्छन्तिभिषजः। ज्वरोह्यामाशयसमुत्थः, प्रायोभेषजानि चामाशयसमुत्थानां विकाराणाम्पाचनवमनापतर्पणानि शमनानिभवन्ति। पाचनार्थञ्च पानीयमुष्णन्तस्मादेतज्ज्वरितेभ्यः प्रयच्छन्ति भिषजोभूयिष्ठम् ॥ ५७ ॥

अग्निवेशके वचन सुनकर भगवान् आत्रेय जीने कहा कि शरीर निदान देश तथा काल को देखकर वैद्य लोग ज्वर वालेको पाचनके लिये उष्णजल देतेहैं ज्वर आमाशयसे उत्पन्न होता है प्रायः आमाशयसे उत्पन्न हुए रोगों को शान्त करनेके लिये पाचन वमन तथा अपतर्पण औषधहै इस्से पाचन के लिये वैद्य लोग ज्वर वालों को उष्णजल बहुत देते हैं ॥ ५७ ॥

तद्धयेषांपीतं वातमनुलोमयति अग्निमुदर्य्यमुदीरयति। क्षिप्रंजरांगच्छति श्लेष्माणञ्च परिशोषयति स्वल्पमपिचपीतं तृष्णाप्रशमनायोपपद्यते तथायुक्तमपिचैतन्नात्यर्थोत्सन्नपित्तेज्वरे सदाहभ्रमप्रलापातिसारेवाप्रदेयमुष्णे नहि दाहभ्रमप्रलापातिसाराभूयोऽभिवर्द्धन्ते शीतेनोपशाम्यन्तीति ॥ ५८ ॥

उष्णजल वायुको अधोगामी करताहै जठराग्नि को बढ़ाता है शीघ्रही पचता है कफको सुखाता है और थोड़ा भी पियाहुआ तृषाको शान्त करता है इस प्रकार का गुणकारी भी उष्णजल बहुत बढ़े हुए पित्तज्वरमें अथवा दाह भ्रम प्रलाप तथा अतीसारयुक्त ज्वर में न देना चाहिये क्योंकि उष्णसे दाह भ्रम प्रलाप तथा अतीसार यह बहुत बढ़जाते हैं और शीतसे शान्त होजाते हैं ॥ ५८ ॥

भवतिचात्र।

शीतेनोष्णकृतान्रोगान् शमयन्ति भिषग्विदः। येतुशीतकृतारोगास्तेषांचोष्णंभिषग्जितम् ॥ ५६ ॥

इसमें यह श्लोक है। वैद्य लोग उष्णता से रोगोंको शीतसे और शीतसे हुए रोगोंको उष्णतासे शान्त करते हैं ॥ ५९ ॥

एवमितरेषामपिव्याधीनां निदानविपरीतमौषधङ्कार्य्यम् ॥ ६० ॥

इस प्रकार अन्य रोगोंकी भी हेतुविपरीत औषध करनी चाहिये ॥ ६० ॥

तथा तर्पणनिमित्तानामपि व्याधीनांनान्तरेण पूरणमस्तिशान्तिस्तथा पूरणनिमित्तानां नान्तरेणापतर्पणम् ॥ ६१ ॥

इसी प्रकार अपतर्पणसे हुए रोगोंकी संतर्पणके सिवाय कोई औषध नहीं है और संतर्पण से हुए रोगोंकी अपतर्पणके सिवाय कोई औषध नहीं है ॥ ६१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतर्पणमपिच त्रिविधं लङ्घनंलङ्घनपाचनंदोषावसेचनंचेति । तत्र लङ्घनमल्पदोषाणाम् । लङ्घने ह्यग्निमारुतवृद्ध्यावातातपपरीतमिवाल्पमुदकमल्पदोषः प्रशोषमापद्यते ॥ ६२ ॥

अपतर्पण तीन प्रकारका है जैसे लंघन लंघनपाचन और दोषावसेचन (दोषों का निकालना) इनमें से थोड़े दोष वालों को लंघन हितहै जैसे वायु तथा धूपसे थोड़ासा जल सूखजाता है उसी प्रकार लंघन के द्वारा बढ़ी हुई अग्नि तथा वायुसे स्वल्प दोष शान्त होजाता है ॥ ६२ ॥

लङ्घनपाचनाभ्यांमध्यबलः सूर्य्यसन्तापमारुताभ्यां पांशुभस्मावकिरणैरिवचानतिबहूदकम्मध्यदोषः प्रशोषमापद्यते ॥ ६३ ॥

लंघन पाचन मध्यबलयुक्त दोषवाले को हित है जैसे धूप तथा वायुसे और धूलि डालने से बहुत अधिकतारहित जल सूखजाताहै उसी प्रकार लंघन तथा पाचन से मध्यबलवाला दोष सूख जाता है अर्थात् नष्ट होजाताहै॥६३॥

बहुदोषाणांपुनर्दोषावसेचनमेवकार्य्यम् । नह्यभिन्नेकेदारसेतौ पल्वलप्रसेकोऽस्ति । तद्वद्दोषावसेचनम् । दोषावसेचनन्तु खलु अन्यद्वाभेषजम्प्राप्तकालमप्यातुरस्यनैवं विधस्यकुर्य्यात् ॥ ६४ ॥

और बहुत दोष वालों को दोषावसेचन ही हितहै जैसे खेतकी मेड़को विना तोड़े स्वल्प तड़ागों का जल नहीं सूखता है उसी प्रकार दोषों को विना निकाले बहुत बढ़े हुए दोष नहीं शान्त होते दोषावसेचन तथा अन्य औषध समय होनेपर भी ऐसे रोगी को न करे ॥ ६४ ॥

अनपवादप्रतीकारस्याधनस्यापरिचारकस्य वैद्यमानिनश्चण्डस्यासूयकस्य तीव्राधर्म्मरुचेरतिक्षीणबलमांसशोणितस्य असाध्यरोगोपहतस्यमुमूर्षुलिंगान्वितस्यचेति। एवंविधं ह्यातुरमुपचरन्भिषक्पापीयसाअयशसा योगंगच्छतीति ॥ ६५ ॥

जैसे अनपवाद प्रतीकार निर्धन सेवकरहित अपने को वैद्य मानने वाला क्रोधी गुणों में भी दोष लगाने वाला अधर्म में रुचि वाला बहुत क्षीण हुए मांस बल तथा रुधिरवाला असाध्य रोगसे युक्त और मरने वाले के लक्षणोंसे युक्त ऐसे रोगीकी चिकित्सा करनेसे वैद्यको पाप तथा अयश होताहै ॥ ६५ ॥

तत्र श्लोकाः ।

अल्पोदकद्रुमोयस्तु प्रवातःप्रचुरातपः । ज्ञेयःसजाङ्गलोदेशःस्वल्परोगतमोपिच ॥ ६६ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं । जिस देश में जल तथा वृक्ष स्वल्प होयँ और वायु तथा धूपकी अधिकता होय उसे जांगलदेश कहते हैं ऐसे देशमें बहुतही स्वल्प रोग होते हैं ॥ ६६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचुरोदकवृक्षोयोनिर्वातोदुर्लभातपः। अरूपोऽबहुदोषश्च समःसाधारणोमतः॥ ६७॥

जिस देशमें जल तथा वृक्ष अधिक होयँ वायु कम चलती होय धूप बहुत कम आती हो और पृथ्वी का वर्ण अच्छा न होय उस देशको साधारणदेश कहते हैं उसमें बहुत रोग होते हैं॥ ६७॥

तदात्वेचानुबन्धोवायस्यस्यादशुभंफलम्। कर्म्मणस्तन्नकर्त्तव्यमेतद्बुद्धिमतांमतम्॥ ६८॥

उसी समय अथवा अनुबन्ध (सिलसिलेवार चले जाने) में जिस कार्य्य से अशुभ फल होय वह न करना चाहिये यह बुद्धिमानों का मत है॥ ६८॥

पूर्वरूपाणिसामान्या हेतवःस्वस्वलक्षणाः। देशोद्ध्वंसस्यभैषज्यंहेतूनांमूलमेवच॥ ६९॥

देशोद्ध्वंस के पूर्व्वरूप लक्षणसहित सामान्य भेद औषध चिकित्सा हेतुओं का मूल॥ ६९॥

प्राग्विकारसमुत्पत्तिरायुषश्चक्षयक्रमः। मरणंप्रतिभूतानां कालाकालविनिश्चयः॥ ७०॥

रोगों की आद्युत्पत्ति आयुके क्षीण होनेका क्रम प्राणियोंकी कालमृत्यु तथा अकालमृत्यु का निश्चय॥ ७०॥

यथाचाकालमरणं यथायुक्तञ्चभैषजम्। सिद्धियात्यौषधंयेषां नकुर्य्याद्येनहेतुना॥ ७१॥

जिस प्रकारसे अकालमृत्यु होती है जिस प्रकार की औषधी देनेसे सफल होतीहै और जिस कारण से जिनकी औषध न करनी चाहिये॥ ७१॥

तदग्निवेशायात्रेयोनिखिलंसर्व्वमुक्तवान्। देशोद्ध्वंसनिमित्तीयेविमानेमुनिसत्तमः॥ ७२॥

इति जनपदोद्ध्वंसनीयं विमानं समाप्तम्॥ ३॥

यह सब विषय इस जनपदोद्ध्वंसनीय नाम अध्यायमें मुनिसत्तम भगवान् आत्रेयजी ने अग्निवेशसे कहा॥ ७२॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रेमेंजनपदोद्ध्वंसनीयनामतीसराअध्यायसमाप्तहुआ॥ ३॥

चौथा अध्याय॥

त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयः।

त्रिविधंखलुरोगविशेषज्ञानंभवति। तद्यथा,-आप्तोपदेशः, प्रत्यक्षमनुमानञ्चेति॥ १॥

इसके उपरान्त त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीय नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा तीन प्रकारोंसे रोगविशेषोंका ज्ञान होताहै जैसे आप्तोपदेश प्रत्यक्ष और अनुमान॥ १॥

तत्राप्तोपदेशोनामआप्तवचनम्। आप्ताह्यवितर्कस्मृतिविभागविदोनि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्प्रीत्युपतापदर्शिनश्च। तेषामेवंगुणयोगाद्यद्वचनंतत्प्रमाणम्। अप्रमाणंपुनर्मत्तोन्मत्तमूर्खरक्तदुष्टान्तःकरणवचनमिति॥ २॥

इनमें से आप्तोपदेश आप्तलोगोंके वचन को कहते हैं तर्करहित स्मृतियों के विभाग के जाननेवाले और रागद्वेषरहित होकर रोगों के देखनेवाले आप्त कहलाते हैं वह लोग इसप्रकार के गुणों से युक्त होते हैं इस कारण उनके वचन प्रमाण होते हैं मत्त उन्मत्त मूर्ख तथा रागयुक्त पुरुषोंके दूषित तथा अदूषित भी वचन अप्रमाण होते हैं॥ २॥

प्रत्यक्षन्तुखलुयत्तत्स्वयमिन्द्रियैर्मनसाचोपलभ्यते। अनुमानंखलुतर्कोयुक्त्यपेक्षः॥ ३॥

जो स्वयं इन्द्रिय तथा मनके द्वारा जाना जाय उसे प्रत्यक्ष कहते हैं युक्ति के अनुसार जो तर्क है उसे अनुमान कहते हैं॥ ३॥

त्रिविधेनखल्वनेनज्ञानसमुदयेनपूर्वंपरीक्ष्यरोगंसर्वथासर्वमेवोत्तरकालमध्यवसानमदोषंभवति॥ ४॥

इन तीनों प्रकार के ज्ञानों के द्वारा रोग की सबप्रकार से परीक्षा करके भविष्यके लिये जो निश्चय कियाजाता है वह निर्दोष होता है॥ ४॥

नह्यज्ञानावयवेनकृत्स्नेज्ञेयेज्ञानमुत्पद्यते। त्रिविधेत्वस्मिन्ज्ञानसमुदाये पूर्वमाप्तोपदेशाज्ज्ञानं ततःप्रत्यक्षानुमानाभ्यांपरीक्षोपपद्यते। किंह्यनुपदिष्टपूर्वं प्रत्यक्षानुमानाभ्यांपरीक्षमाणोविद्यात्। तस्माद्द्विविधापरीक्षाज्ञानवतांप्रत्यक्षमनुमानञ्चेति। त्रिविधावासहोपदेशेन। तत्रेदमुपदिशन्तिबुद्धिमन्तो रोगमेकैकमेवंप्रकोपमेवंयोनिमेवात्मानमेवमधिष्ठानमेवंवेदनमेवंसंस्थानंएवंशब्दस्पर्शरूपरसगन्धमेवमुपद्रवमेवंवृद्धिस्थानक्षयसमन्वितमेवमुदर्कमेवंनामानमेवंयोगविद्यात्। तस्मिन्नियंप्रतीकारार्थप्रवृत्तिरथवानिवृत्तिरित्युपदेशाज्ज्ञायते॥ ५॥

इन तीनप्रकारके ज्ञानोंमें से एकहीके द्वारा संपूर्ण ज्ञेय वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता इन तीनों प्रकारके ज्ञानों में से पहले आप्तोपदेश के द्वारा ज्ञान होता है फिर प्रत्यक्ष तथा अनुमान के द्वारा परीक्षा कीजाती है क्योंकि पहले उपदेशके विना प्रत्यक्ष तथा अनुमान के द्वारा परीक्षा करने से क्या जाना जाता है इस्से उपदेश के द्वारा ज्ञान होने के उपरान्त प्रत्यक्ष तथा अनुमान दो प्रकार की परीक्षा होती है अथवा आप्तोपदेश प्रत्यक्ष तथा अनुमान यह तीन प्रकार की परीक्षा होतीहै प्रति रोग में बुद्धिमान् लोग इस प्रकारसे उपदेश करते हैं जैसे यह रोग इस दोषसे हुआहै यह इसका कारण है यह इसका स्वरूप है यह इसका स्थान है इस प्रकारकी इसमें पीड़ा होती है इस प्रकारके शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध इस में होते हैं इस प्रकारके उपद्रव इसमें होते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं इस प्रकार की वृद्धि समता तथा क्षय इस में होती है इस प्रकार का परिणाम इसमें होता है और यह इसका नाम है इस प्रकार से रोगको जाने फिर उपदेश से यह जाना जाता है कि ऐसे स्थानमें चिकित्सा करनी चाहिये और ऐसे में न करनी चाहिये ॥ ५ ॥

प्रत्यक्षतस्तुखलुरोगतत्त्वंबुभुत्सुःसर्वैरिन्द्रियैःसर्वानिन्द्रियार्थानातुरशरीरगतान्परीक्षेतान्यत्ररसज्ञानात्। तद्यथा, अन्त्रकूजनंसन्धिस्फोटनमंगुलीपर्वणांचस्वरविशेषांश्चयेचान्येऽपि केचिच्छरीरोपगताः शब्दाः स्युस्तान्श्रोत्रेणपरीक्षेत । वर्णसंस्थानप्रमाणच्छायाशरीरप्रकृतिविकारौ चक्षुर्वैषयिकाणिचान्यानिकानिचतानिचक्षुषापरीक्षेत ॥ ६ ॥

प्रत्यक्ष से रोगके तत्त्वके जानने की इच्छा करता हुआ वैद्य अपनी संपूर्ण इन्द्रियों से रोगी के शरीर के रसके सिवाय संपूर्ण विषयों की परीक्षा करे जैसे आँतों का शब्द उंगलियों के पोरुओं की संधियों का चटकना स्वरभेद तथा अन्य जो कोई शरीर में शब्द होते हैं उनकी कान से परीक्षा करे वर्णसंस्थान (आकृति) प्रमाण छाया शरीर की प्रकृति तथा विकृति तथा अन्य देखने के योग्य विषयों की नेत्रके द्वारा परीक्षाकरे ॥ ६ ॥

रसन्तुखलु आतुरशरीरगतमिन्द्रियवैषयिकमप्यनुमानादवगच्छेत्। न ह्यस्यप्रत्यक्षेणग्रहणमुपपद्यते । तस्मादातुरपरिप्रश्नेनैवातुरमुखरसंविद्यात्। यूकापसर्पणेनत्वस्यशरीरवैरस्यंमक्षिकोपदर्शनेनशरीरमाधुर्य्यम्। लोहितपित्तसन्देहेतुकिन्धारिलोहितलोहितपित्तंवेतिस्वकाकभक्षणात् धारिलोहितमभक्षणाल्लोहितमित्यनुमातव्यम् एवमन्यानप्यातुरशरीरगतान्रसाननुमिमीत। गन्धांस्तुखलुसर्वशरीरगतानातुरस्य प्रकृतिवैकारिकान्घ्राणेनपरीक्षेत स्पर्शञ्चपाणिना प्रकृतिविकृतियुक्तमिति प्रत्यक्षतोऽनुमानैकदेशतश्च परीक्षणमुक्तम् ॥ ७ ॥

रोगीके शरीरका रस यद्यपि रसना इन्द्रिय के द्वारा जाना जासक्ता है तथापि उसको अनुमानही से जाने क्योंकि इसका प्रत्यक्ष से जानना योग्यनहीं है इससे रोगी से पूछकर रोगी के मुख का रस जाने जुआं पड़ने से शरीर की विरसता जाने मक्खियों के बैठने से शरीर की मधुरता जाने क्या विकाररहित रुधिर है अथवा रक्तपित्त है इस संदेह में कुत्ते तथा कौओंको वह रुधिर पीनेके लिये देवे जब वह उसे पियें तो शुद्ध रुधिर जानना चाहिये और न पियें तो रक्तपित्त जानना चाहिये इसी प्रकार रोगीके शरीर के अन्य रसों का भी अनुमान करे रोगी के संपूर्ण शरीर की स्वाभाविक तथा विकारयुक्त गन्ध को अपनी घ्राणके द्वारा जाने और स्वाभाविक तथा विकारयुक्त स्पर्श को हाथसे जाने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार प्रत्यक्षसे तथा कुछ अनुमान से परीक्षा करनी कहीगई ॥ ७ ॥

इमेतुखल्वन्येप्येवमेवभूयोऽनुमानज्ञेयाभवन्तिभावाः। तद्यथा,अग्निंजरणशक्त्या,बलंव्यायामशक्त्या, श्रोत्रादीन्शब्दादिग्रहणेन, मनोऽर्थाव्यभिचारेण, विज्ञानंव्यवसायेन, रजःसङ्गेन, मोहमविज्ञानेन, क्रोधमभिद्रोहेण, शोकं दैन्येन, हर्षमामोदेन, प्रीतिं तोषेण भयंविपादेन धैर्य्यमविषादेन, वीर्य्यमुत्साहेन, स्थानमविभ्रमेण, श्रद्धामभिप्रायेण, मेधां ग्रहणेन,संज्ञांनामग्रहणेन,स्मृतिं स्मरणेन,ह्रियमपत्रपेण शीलमनुशीलनेन, द्वेषंप्रतिषेधेन उपाधिमनुबन्धेनधृतिमलौल्येन,वश्यतांविधेयतया, वयोभक्तिसात्म्यव्याधिसमुत्थानानिकालदेशोपशय[illegible]नाविशेषेणगूढलिंगंव्याधिमुप[illegible]ानुपशयाभ्यांदोषप्रमाणविशेष[illegible]चारविशेषेण आयुषःक्षयमरिष्टैरुप[illegible]तश्रेयस्त्वंकल्याणाभिनिवेशेन [illegible]लंसत्त्वमविकारेणेति। ग्रहण्यास्तु [illegible]दारुणत्वं दुःस्वप्नदर्शनमभिप्रायं[illegible]ष्टसुखदुःखानिचातुरपरिप्रश्नेनैव[illegible]द्यादिति ॥ ८ ॥

इसी प्रकार यह व[illegible] भी अनुमानके द्वारा जाननी चाहियें जैसे जठराग्नि को परिपाकशक्तिसे बलको व्यायामशक्तिसे कान आदिक इन्द्रियों को शब्दादि के ग्रहणसे मनको अर्थ के अनुसंधान से विज्ञान को प्रवृत्ति से रजोगुण को संगसे मोहको अविज्ञानसे क्रोध को द्रोहसे शोक को दीनता से हर्ष को प्रसन्नता से प्रीति को सन्तोष से भयको विषाद से धैर्य्य को अविषाद से वीर्य्य को उत्साह से स्थिरता को भ्रम न होनेसे श्रद्धाको अभिप्रायसे मेधाको धारणाशक्तिसे संज्ञाको नाम पुकारने से स्मृति को स्मरणसे लज्जा को लज्जित होने से शीलको अभ्याससे द्वेषको निषेधसे उपाधिको अनुबन्ध (दोषों को उत्पन्न करना) से धैर्य्य को अचंचलतासे वश्यता को आधीनता से अवस्था भक्ति सात्म्य तथा रोगों के निदानों को कालदेश हितकारी आहार विहार तथा पीड़ाकी विशेषता से छिपेहुए लक्षणवाले रोग को उपशय तथा अनुपशय से दोषके प्रमाणविशेष को अपचार (बदपरहेजी) की विशेषता से आयुकी क्षीणताको अरिष्टों से होनेवाले शुभ को कल्याणकारी बातों में प्रवृत्तहोने से अनालस्य को अविकारसे और ग्रहणीकी कोमलता तथा कठिनता दुःस्वप्न देखना इष्ट तथा अनिष्ट वस्तु सुख दुःख इन सबको रोगी से पूछकर जाने ॥ ८ ॥

भवन्तिचात्र।

आप्ततश्चोपदेशेन प्रत्यक्षकरणेन च। अनुमानेनचव्याधीन्सम्यग्विद्याद्विचक्षणः ॥ ९ ॥

इस में यह श्लोक हैं। चतुर वैद्य आप्तोप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देश प्रत्यक्ष तथा अनुमान के द्वारा रोगों को अच्छे प्रकारसे जाने ॥ ९ ॥

सर्व्वथासर्व्वमालोच्ययथासम्भवमर्थवित्। अथाध्यवस्येत्तत्त्वेच कार्य्ये च तदनन्तरम् ॥ १० ॥

अर्थ का जानने वाला वैद्य यथासंभव सब बातों का विचार करके तदनन्तर तत्त्व तथा कार्य्य का निश्चयकरे ॥ १० ॥

कार्य्यतत्त्वविशेषज्ञः प्रतिपत्तौनमुह्यति। अमूढःफलमाप्नोतियदमोहनिमित्तजम् ॥ ११ ॥

कार्य्य तथा तत्त्व के विशेष का जानने वाला ज्ञान में मोहको नहीं प्राप्त होता और मोहरहित पुरुष को यथार्थ फल प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

ज्ञानबुद्धिप्रदीपेन योनाविशतितत्त्ववित्। आतुरस्यान्तरात्मानंनसरोगांश्चिकित्सति ॥ १२ ॥

तत्त्वका जानने वाला जो वैद्य ज्ञानयुक्त बुद्धिरूप दीपक से रोगीके शरीर में नहीं प्रवेश करता है वह रोगों की चिकित्सा नहीं करसक्ता है ॥ १२ ॥

सर्व्वरोगविशेषाणां त्रिविधंज्ञानसंग्रहम्। यथाचोपदिशन्त्याप्ताःप्रत्यक्षंगृह्यतेयथा ॥ १३ ॥

सम्पूर्णरोगों के लिये तीन प्रकार का ज्ञान जिस प्रकारसे आप्तलोग उपदेश करते हैं और जिस प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान होताहै ॥ १३ ॥

येयथाचानुमानेन ज्ञेयास्तांश्चात्युदारधीः। भावांस्त्रिरोगविज्ञानेविमानेमुनिरुक्तवान् ॥ १४ ॥

त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो बातें जिस प्रकार अनुमान से जाननी चाहियें यह सब विषय इस त्रिविध, रोग विज्ञानी नामअध्याय में महाबुद्धिमान् भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ १४ ॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रति संस्कृततन्त्रमें त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयनामचौथा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

स्रोतोविमानम्।

इति हस्माह भगवानात्रेयः।

यावन्तः पुरुषेमूर्त्तिमन्तोभावविशेषास्तावन्तएवास्मिन्स्रोतसां प्रकारविशेषाः, सर्व्वेभावाहिपुरुषेनान्तरेणस्रोतांस्यभिनिवर्त्तन्ते क्षयंवानगच्छन्ति। स्रोतांसिखलुपरिणाममापद्यमानानां धातूनामभिवाहीनिभवन्ति अयनार्थेनअपिचैकेमहर्षयःस्रोतसामेव समुदयम्पुरुषमिच्छन्ति सर्व्वगतत्वात्सर्व्वसरत्वाच्चदोषप्रकोपणप्रशमनानां नत्वेतदेवंयस्यसहिपुरुषः स्रोतांसियच्चवहन्ति यच्चावहन्ति यत्रचावस्थितानिसर्वं तदन्यत्तेभ्यः ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त स्रोतोविमानका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा—

पुरुष में जितने मूर्त्तिमान् पदार्थ हैं उतनेही प्रकार के स्रोतभी हैं पुरुष में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो स्रोतों के विना उत्पन्न होसके या क्षीण होसके स्रोत बदलतीहुई धातुओं को ले चलते हैं और मार्ग होते हैं कोई कोई आचार्य स्रोतों के सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होनेसे और सर्व्वसर होने से पुरुष को स्रोतों का समूहरूप कहते हैं परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि जिस के वह स्रोत हैं जिन को ले चलते हैं, जहां स्थित हैं, वह सब उन से अन्य हैं ॥ १ ॥

अतिबहुत्वात्तु खलु केचिदपरिसंख्येयानिआचक्षतेस्रोतांसि, परिसंख्येयानिपुनरन्ये, तेषांस्रोतसांयथा स्थानंकतिचित् प्रकारान्मूलतश्चप्रकोपविज्ञानतश्चानुव्याख्यास्यामः ये भविष्यन्त्यलमनुक्तार्थज्ञानवतेविज्ञाननायचाज्ञानाय, तद्यथा, प्राणोदकान्नरस–रुधिर–मांस–मेदोऽस्थिमज्जाशुक्रमूत्र–पुरीषस्वेदवहानिवातपित्तश्लेष्मणांपुनः सर्वशरीरचराणांसर्वस्रोतांसिअयनभूतानि ॥ २ ॥

कोई २ आचार्य्य स्रोतों के बहुत होने से उन को असंख्य कहते हैं और कोई कोई संख्या के योग्य कहते हैं उन स्रोतों के मूल तथा विकारसहित कुछ प्रकार व्याख्यान कियेजाते हैं जिससे अनुक्त अर्थ ज्ञानवान् के ज्ञान तथा अज्ञानकेलिये जैसे समर्थ होंगे प्राण, जल, अन्न, रस, रुधिर, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, वीर्य्य, मूत्रपुरीष तथा स्वेद इन के लेचलने वाले होते हैं और सम्पूर्णशरीर में विचरण करनेवाले वात, पित्त, तथा कफ के मार्गरूप होते हैं ॥ २ ॥

तद्वदतीन्द्रियाणांपुनःसत्त्वादीनां केवलंचेतनावच्छरीरमयनभूतमधिष्ठानभूतञ्च, तदेतत्स्रोतसांप्रकृतिभूतत्वान्नविकारैरुपसृज्यतेशरीरम्। तत्रप्राणवहानांस्रोतसांहृदयंमूलंमहास्रोतश्च, प्रदुष्टानामिदंविशेषज्ञानं भवति, अतिसृष्टकुपितंसप्रतिबन्धं अल्पाल्पमभीक्ष्णवासशब्दशूल मुच्छ्वसन्तंदृष्ट्वाप्राणवहान्यस्यस्रोतांसिप्रदुष्टानीतिविद्यात् ॥ ३ ॥

इसी प्रकार चेतनायुक्त शरीर इन्द्रियों के अगोचर सत्त्वादि पदार्थों का मार्गरूप तथा स्थानरूप हैं स्रोतों के दूषित न होने से शरीर में कोई विकार नहीं होता है प्राण के लेचलनेवाले स्रोतों का हृदय तथा महास्रोत मूल है उन स्रोतों के दूषित होने के यह लक्षण हैं जैसे जिसके रुक २ कर बहुत श्वास निकले अथवा वारंवार स्वल्प २ शूल सहित शब्द युक्त श्वास निकले उसे देखकर यह जानना चाहिये कि इस के प्राणके लेचलनेवाले स्रोत दूषित हैं ॥ ३ ॥

उदकवहानां स्रोतसांतालुमूलं क्लोमच, प्रदुष्टानामिदंविज्ञानं, तद्यथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिह्वाताल्वोष्ठकण्ठक्लोमशोषंपिपा साञ्चातिप्रवृद्धांदृष्ट्वाउदकवहान्यस्य स्रोतांसिप्रदुष्टानीतिविद्यात् ॥ ४ ॥

जलके लेचलनेवाले स्रोतों का तालु तथा फुप्फुस मूल है इनके दूषित होने के यह लक्षण हैं जैसे जिह्वा तालु ओठ कंठ तथा फुप्फुस का सूखना और बहुत प्यासहोना इन लक्षणोंको देखकर जानना चाहिये कि जल के लेचलनेवाले स्रोत दूषित हैं ॥ ४ ॥

अन्नवहानांस्रोतसांआमाशयोमूलं वामञ्चपार्श्वम्; प्रदुष्टानान्तुखलुए षामिदंविशेषविज्ञानंभवति,तद्यथा अनन्नाभिलषणमरोचकाविपाकौछ र्दिश्चदृष्ट्वाअन्नवहानिस्रोतांसिप्रदुष्टा नीतिविद्यात् ॥ ५ ॥

अन्न के लेचलनेवाले स्रोतों का आमाशय तथा वामपार्श्व मूल है इनके दूषित होनेके यह लक्षण हैं जैसे अन्नमें अनिच्छा अरुचि अविपाक तथा छर्दि इन लक्षणोंको देखकर जानना चाहिये कि अन्नके लेचलनेवाले स्रोत दूषित हुए हैं ॥ ५ ॥

रसवहानांस्रोतसांहृदयंमूलंदशच धमन्यः, शोणितवहानांस्रोतसां यकृत् मूलंप्लीहाच, मांसवहानाञ्च स्रोतसांस्नायुमूलंत्वक्च,मज्जाव हानांस्रोतसामस्थीनि मूलंसक्थ यश्च,शुक्रवहानांस्रोतसांवृषणौमूलं शेफश्च। प्रदुष्टानान्तुरसादिस्रोतसां खलुएषांविज्ञानान्युक्तानिविविधा शीतियेअध्यायेयान्येवहिधातूनांप्र दोषविज्ञानानितान्येवयथास्वंधातु स्रोतसाम् ॥ ६ ॥

रसके लेचलनेवाले स्रोतोंका हृदय तथा दश नाड़ी मूल हैं रुधिर के लेचलनेवाले स्रोतों का यकृत् तथा प्लीहा मूल है मांसके लेचलनेवाले स्रोतों का स्नायु तथा त्वचा मूलहै मज्जाके लेचलनेवाले स्रोतोंका अस्थि तथा जंघा मूलहै वीर्य्य के लेचलनेवाले स्रोतों का अंडकोश तथा लिंग मूल है रसादिके लेचलनेवाले स्रोतों के दूषित होने के लक्षण विविधाशित पीतीयनाम अध्याय में कहेगये हैं क्योंकि जो लक्षण धातुओं के दूषित होने के हैं वही उन के स्रोतों के दूषित होने के भी हैं ॥ ६ ॥

मूत्रवहाणांस्रोतसांवस्तिर्मूलंवंक्षणौ च, खलुएषामिदंप्रदुष्टानांविज्ञानम तिसृष्टंप्रतिबद्धंकुपित्तमल्पाल्पमभी क्ष्णंवासशूलंमूत्रंमूत्रवन्तंदृष्ट्वामूत्रव हाण्यस्यस्रोतांसिप्रदुष्टानीतिविद्या त् ॥ ७ ॥

मूत्रके लेचलनेवाले स्रोतों का वस्ति तथा वंक्षण मूल है उनके कुपित होने के यह लक्षण हैं जैसे रुक २ कर बहुत मूत्रहोना अथवा वारंवार थोड़ी पीड़ा सहित मूत्रहोना इन लक्षणों को देखकर जानना चाहिये कि मूत्रके लेचलनेवाले स्रोत कुपित हैं ॥ ७ ॥

पुरीषवहाणांस्रोतसांपक्वाशयोमूलं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थूलगुदश्च;प्रदुष्टानांखलुएषामिदं विज्ञानं;कृच्छ्रेणाल्पाल्पंसशूलमति द्रवंकुपितमतिवृद्धंचोपविशन्तंदृष्ट्वा पुरीषवहाण्यस्यस्रोतांसिप्रदुष्टानी तिविद्यात् ॥ ८ ॥

पुरीष के लेचलनेवाले स्रोतोंका पक्वाशय तथा स्थूल गुदा मूल है इनके दूषित होने के यह लक्षण हैं कठिनता से थोड़ा २ पीड़ा सहित वहुतपतला मलनिकले अथवा बहुत बँधाहुआ मल वहुत रुक २ कर निकले इन लक्षणोंको देखकर जानना चाहिये कि पुरीष के लेचलनेवाले स्रोत दूषित हैं ॥ ८ ॥

स्वेदवहानांस्रोतसांमेदोमूलंरोमकूपाश्च;प्रदुष्टानांखलुएषामिदंविज्ञानमस्वेदनमतिस्वेदनंपारुष्यमतिश्लक्ष्णतांपरिदाहंलोमहर्षञ्चदृष्ट्वास्वेदवहान्यस्यस्रोतांसिप्रदुष्टानीतिविद्यात् ॥ ९ ॥

स्वेद के लेचलनेवाले स्रोतों का मेदा तथा रोमकूप मूल हैं इनके दूषित होनेके यह लक्षण हैं जैसे स्वेद न निकलना अथवा वहुत स्वेद निकलना त्वचाका खुरखुरापन त्वचाका वहुत चिकना होना दाह तथा रोमांच इन लक्षणों को देखकर जानना चाहिये कि स्वेद के लेचलनेवाले स्रोत दूषित हैं ॥ ९ ॥

स्रोतांसिशिराधमन्योरसवाहिन्योनाड्यःपन्थानोमार्गाःशरीरच्छिद्राणिसंवृतासंवृतानिस्थानानिआशयाःआलयाःनिकेताश्चेतिशरीरधात्ववकाशानांलक्ष्यालक्ष्याणांनामानि ॥ १० ॥

स्रोत शिरा धमनी रसवाहिनी नाड़ी पंथा मार्ग शरीर छिद्र संवृतस्थान असंवृतस्थान आशय आलय तथा निकेत यह शरीर की धातुओं के लक्ष्य तथा अलक्ष्य अवकाशों के नाम हैं ॥ १० ॥

तेषांप्रकोपात्स्थानस्थाश्चैवमार्गगाश्चैवशरीरधातवः प्रकोपमापद्यन्ते ॥ ११ ॥

इनके कुपित होने से अपने २ स्थानों में स्थित तथा मार्ग में प्राप्त शरीर की धातु कुपित होती हैं ॥ ११ ॥

इतरेषांवाप्रकोपादितराणि ॥ १२ ॥ स्रोतांसिस्रोतांस्येवधातवश्चधातून्प्रदूषयन्ति ॥ १३ ॥ प्रदुष्टास्त्वेषांसर्वेषामेववातपित्तश्लेष्माणोदुष्टादूषयितारोभवान्तिदोषस्वभावादिति ॥ १४ ॥

कुछ स्रोतोंके कुपित होने से उनके संसर्ग से अन्य स्रोतही कुपित होते हैं और कुछ धातुओंके दूषित होने से अन्यधातुहीं दूषित होती हैं परन्तु दूषित हुए वात पित्त कफ इन सब को दूषित करते हैं क्योंकि इनका यही स्वभाव है ॥ १२ । १३ । १४ ॥

भवतिचात्र ।

क्षयात्सन्धारणाद्रौक्ष्याद्व्यायामात्क्षु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धितस्यच। प्राणवाहीणिदुष्यन्ति स्रोतांस्यन्यैश्चदारुणैः॥ १५॥

इस में यह श्लोक है क्षय वेगोंका रोकना रूक्षता क्षुधा में व्यायाम करना तथा अन्य दारुणकर्म करना इन कर्मों से प्राणके लेचलनेवाले स्रोत कुपित होते हैं॥ १५॥

औष्ण्यादामाद्भयात्पानादतिशुष्कान्नसेवनात्। अम्बुवाहीनिदुष्यन्तितृषायाश्चातिपीडनात् १६॥

उष्णता आमदोष भय बहुत जलादिक पीना बहुत शुष्क अन्नखाना और तृषा को बहुत रोकना इन कारणों से जलके लेचलनेवाले स्रोत कुपित होते हैं॥ १६॥

अतिमात्रस्यचाकालेचाहितस्यच भोजनात्। अन्नवाहीनिदुष्यन्तिवैगुण्यात्पावकस्यच॥ १७॥

अकाल में बहुत खाने से अहित भोजन से तथा अग्नि के दूषित होने से अन्नके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ १७॥

गुरुशीतमतिस्निग्धमतिमात्रनिषेवणात्। रसवाहीनिदुष्यन्तिचिन्त्यानाञ्चातिचिन्तनात्॥ १८॥

भारी स्निग्ध तथा शीतल वस्तुओं के बहुत सेवन से और बहुत चिन्ता करने से रसके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ १८॥

विदाहीन्यन्नपानानि स्निग्धोष्णानिद्रवाणिच। रक्तवाहीनिदुष्यन्ति भजताञ्चातपानलौ॥ १९॥

विदाही स्निग्ध उष्ण तथा द्रव अन्नपानके सेवन से और धूप तथा अग्निके सेवन से रुधिर के लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ १९॥

अभिष्यन्दीनिभोज्यानि स्थूलानिचगुरूणिच। मांसवाहीनिदुष्यन्ति भुक्त्वाचस्वपतोदिवा॥ २०॥

अभिष्यन्दकारी स्थूल तथा भारी वस्तुओंके भोजन से और दिन में भोजन करके सोने से मांसके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ २०॥

अव्यायामाद्दिवास्वप्नान्मेध्यानाञ्चातिभक्षणात्। मेदोवाहीनिदुष्यन्ति वारुण्याश्चातिसेवनात्॥ २१॥

व्यायाम न करने से दिनमें सोने से मेधाकारी वस्तुओं के बहुत खानेसे और वारुणी मदिराके बहुत पीनेसे मेदाके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ २१॥

व्यायामादतिसंक्षोभादस्थ्नामतिचभक्षणात्। अस्थिवाहीनिदुष्यन्ति वातलानाञ्चसेवनात्॥ २२॥

व्यायामसे बहुत क्षोभसे बहुत हड्डी खाने से और बहुत बादी वस्तु खानेसे हड्डीके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं॥ २२॥

उत्पेषादत्यभिष्यन्दादभिघातात्प्रपीडनात्। मज्जावाहीनिदुष्यन्ति विरुद्धानाञ्चसेवनात्॥ २३॥

उत्पेषण (पिस जाना) से बहुत अभिष्यन्दी वस्तु खाने से चोट लगने से दबजाने से और विरुद्ध वस्तुओं के खाने से मज्जाके ले-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चलने वाले स्रोत दूषित होते हैं ॥ २३ ॥

अकालायोनिगमनान्निग्रहादतिमैथुनात् । शुक्रवाहीणिदुष्यन्तिशस्त्रक्षाराग्निभिस्तथा ॥ २४ ॥

कुसमय में मैथुन करने से अयोनिमें गमन करने से वीर्य्यके रोकने से बहुत मैथुन करने से और शस्त्रक्षार तथा अग्निके सेवनसे वीर्य्य के लेचलनेवाले स्रोत दूषितहोते हैं ॥ २४ ॥

मूत्रितोदकभक्षस्त्रीसेवनान्मूत्रनिग्रहात् । मूत्रवाहीणिदुष्यन्तिक्षीणस्याथकृशस्यच ॥ २५ ॥

लघुशंका करके जलपान भोजन तथा स्त्री प्रसंग करने से मूत्रके रोकने से क्षीणता से तथा कृशतासे मूत्रके ले चलने वाले स्रोत दूषित होते हैं ॥ २५ ॥

विधारणादत्यशनादजीर्णाध्यशनात्तथा । वर्चोवहानिदुष्यन्तिदुर्बलाग्नेः कृशस्यच ॥ २६ ॥

मलके रोकने से वहुत भोजन करने से अजीर्ण में भोजन करने से भोजन पर भोजन करने से मन्दाग्नि से तथा कृशतासे मल के ले चलने वाले स्रोत दूषित होते हैं ॥ २६ ॥

व्यायामादतिसन्तापाच्छीतोष्णाक्रमसेवनात् । स्वेदवाहीनिदुष्यन्तिक्रोधशोकभयैस्तथा ॥ २७ ॥

व्यायाम से वहुत सन्ताप से शीत तथा उष्ण के अनुचित सेवनसे क्रोध से शोक से तथा भयसे स्वेदके लेचलनेवाले स्रोत दूषित होते हैं ॥ २७ ॥

आहारश्चविहारश्चयःस्याद्दोषगुणैःसमः । धातुभिर्विगुणश्चापिस्रोतसांसप्रदूषकः ॥ २८ ॥

जो आहार विहार दोषोंके गुणों से समान होवे और धातुओं के विरुद्ध होय उसे स्रोतों का दूषित करनेवाला जानना चाहिये २८ ॥

अतिप्रवृत्तिःसङ्गोवा शिराणांग्रन्थयोऽपिवा । विमार्गगमनंवापिस्रोतसांदुष्टलक्षणम् ॥ २९ ॥

मलादिकों का बहुत निकलना अथवा न निकलना नाड़ियों में ग्रन्थिपड़जाना और रसादिकोंका अपने मार्ग के अनुसार न होना यह स्रोतों के दूषित होने के लक्षण हैं ॥ २९ ॥

स्वधातुसमवर्णानिवृत्तस्थूलान्यणूनिच । स्रोतांसिदीर्घाण्याकृत्याप्रतानसदृशानिच ॥ ३० ॥

सम्पूर्ण स्रोतों का वर्ण अपनी २ धातु के वर्ण के समान होता है स्रोत गोल होते हैं स्थूल अथवा सूक्ष्म होते हैं दीर्घ होते हैं और आकृति में लताके समान होते हैं ॥ ॥ ३० ॥

प्राणोदकान्नवाहानांदुष्टानांश्वासिकीक्रिया । कार्य्यातृष्णोपशमनी तथैवामप्रदोषिकी ॥ ३१ ॥

प्राण जल तथा अन्न के लेचलनेवाले स्रोतोंके दूषित होने पर क्रम से श्वास तृ[ष्णा] तथा आमदोष की शान्त करनेवाली [क्रि]या करनी चाहिये ॥ ३१ ॥

विविधाशितपीतीये रसायामाहु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षधम् । दूषितस्रोतसांकुर्य्यात्तद्यथास्वमुपक्रमम् ॥ ३२ ॥

विविधाशितपीतीय अध्याय में रसादि धातुओं की जो औषध कहीगई हैं वही रसादि धातुओं के लेचलनेवाले स्रोतोंकी भी करनीचाहिये ॥ ३२ ॥

मूत्रविट्स्वेदवाहानांचिकित्सामौत्रकृच्छ्रिकी । तथातिसारिकीकार्य्या तथाज्वरचिकित्सिकीइति ॥ ३३ ॥

मूत्र पुरीष तथा स्वेद के लेचलनेवाले स्रोतोंके दूषित होने पर क्रम से मूत्रकृच्छ्र, अतीसार तथा ज्वरकी चिकित्सा करनीचाहिये ॥ ३३ ॥

तत्र श्लोकाः ।

त्रयोदशानांमूलानि स्रोतसांदुष्टलक्षणम् । सामान्यंनामपर्य्यायाःकोपनानिपरस्परम् ॥ ३४ ॥

तिस में यह श्लोकहैं। तेरह प्रकारके स्रोतों के मूल इन के दूषित होने के लक्षण, सामान्यलक्षण, स्रोतों के पर्य्याय शब्द परस्पर कुपित करनेवाले ॥ ३४ ॥

दोषहेतुः पृथक्त्वेन भेषजोद्देशएव च । स्रोतोविमानेनिर्दिष्टस्तथाचादौविनिश्चयः ॥ ३५ ॥

स्रोतों के दूषित होने के अलग अलग कारण औषध का उद्देश और स्रोतोंका आदि में निश्चय यह सब विषय इस स्रोतोविमाननाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ ३५ ॥

केवलंविहितं यस्य शरीरंसर्वभावतः । शारीराःसर्वरोगाश्च सकर्म्मसुनमुह्यति ॥ ३६ ॥

इतिस्रोतोविमानं समाप्तम् ।

जो सम्पूर्णशरीर के सब पदार्थों को तथा सम्पूर्णरोगों को जानता है वह चिकित्सा में मोह को नहीं प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रति संस्कृततन्त्र में स्रोतोविमाननाम पांचवांअध्याय समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

छठा अध्याय ॥

रोगानीकम् ।

द्वेरोगानीकेभवतः प्रभावभेदेनसाध्यञ्चासाध्यञ्च,द्वेरोगानीकेबलभेदेनमृदुचदारुणञ्च,द्वेरोगानीकेअधिष्ठानभेदेनमनोऽधिष्ठानंशरीराधिष्ठानञ्च, रोगानीकेद्वेनिमित्तभेदेनस्वधातुवैषम्यनिमित्तञ्चागन्तु निमित्तञ्च, द्वेरोगानीकेआशयभेदेन आमाशयसमुत्थञ्चपक्वाशयसमुत्थञ्च ॥ १ ॥

इस के उपरान्त रोगानीकविमान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा—

प्रभाव भेदसे दो प्रकारके रोगसमूह होते हैं जैसे साध्य तथा असाध्य बल भेदसे दो प्रकारके रोगसमूह होते हैं जैसे मृदु तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दारुण स्थान भेदसे दो प्रकारके रोग समूह होते हैं जैसे मनस्थानवाले तथा शरीरस्थान वाले निमित्त भेदसे दो प्रकारके रोगसमूह होते हैं जैसे धातुकी विषमतासे होनेवाले तथा आगन्तुज आशय भेदसे दो प्रकारके रोग-समूह होतेहैं जैसे आमाशयसे होनेवाले तथा पक्वाशयसे होनेवाले ॥ १ ॥

एवमेतत्प्रभावबलाधिष्ठाननिमित्ताशयद्वैधंसमुद्भेदप्रकृत्यन्तरेण भिद्यमानमथवासन्धीयमानंस्यादेकत्वं वा बहुत्वंवा, एकत्वंतावदेकमेवरोगानीकंदुःखसामान्यात्, बहुत्वन्तु दशरोगानीकानिप्रभावभेदादीनि, बहुत्वमपिसंख्येयं वास्यादसंख्येयं, संख्येयंयथोक्तम्अष्टोदरीये, असंख्येयंयथामहतिरोगाध्याये रुग्वर्णसमुत्थानादीनामसंख्येयत्वात् ॥ २ ॥

इस प्रकार प्रभाव बल स्थान निमित्त तथा आशय यह दो २ प्रकारके हैं भेदके प्रकृत्यन्तर से भिन्न होकर अथवा मिलकर इनका एकत्व भी अथवा बहुत्व भी होता है एकत्व तो इस प्रकारसे होता है कि सबरोग एकही प्रकारके हैं क्योंकि दुःख होना सबमें समान है और बहुत्त्व इस प्रकारसे है जैसे प्रभावादि भेदसे दश प्रकारके रोगसमूह कहेगये और बहुत्त्व संख्या के योग्य भी होताहै तथा असंख्य भी होताहै संख्येयपन तो अष्टोदरीयनाम अध्याय में कहा गया और असंख्येयत्व महारोगाध्याय में रोगवर्ण तथा निदानादिकों की असंख्येयता से कहागया ॥ २ ॥

नचसंख्येयाग्रेषुभेदप्रकृत्यन्तरीयेष्वविगीतिरित्यतोन दोषवतीस्यादत्र काचित्प्रतिज्ञानचाविगीतिरित्यतः स्याददोषवद्भेत्ता हिभेद्यमन्यथाभिनत्त्यन्यथापुरस्ताद्भिन्नंभेदप्रकृत्यन्तरेणभिन्दन्भेदसंख्याविशेषमापादयत्यनेकधानचपूर्वं भेदाग्रमुपहन्ति ॥ ३ ॥

भेदों के प्रकृत्यन्तर से हुए मुख्य संख्येयों में निन्दा नहीं है इसलिये कोई भी प्रतिज्ञा दोषवती न होगी क्योंकि निन्दा न होने से दोषका न होना सिद्ध होताहै (यहां परजो दोनकार हैं उनसे मुख्य अर्थही की पुष्टताहोती है) भेद करने वाला पहले अन्यप्रकार से हुए भेद्यको अन्य रीति से भिन्न करता है और भेदको प्रकृत्यन्तर से भिन्न करता हुआ भेदमें अनेक प्रकारों से संख्या विशेषों को उत्पन्न करताहै किन्तु मुख्य भेदको नहीं नष्ट करता है ॥ ३ ॥

समानायांमपिखलुभेदप्रकृतौप्रकृतानुपयोगान्तरमपेक्ष्यसन्तिह्यर्थान्तराणिसमानशब्दाभिहितानि। सामानोहिरोगशब्दोदोषेषुव्याधिपुच वर्त्तते । दोषाअपिरोगशब्दमातङ्कशब्दंयक्ष्मशब्दंदोषप्रकृतिशब्दं विकारशब्दञ्चलभन्ते। तत्रदोषेषु चैव व्याधिषु च रोगशब्दःसमानः शेषेषुतुविशेषवान् ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भेद प्रकृति के समान होने पर भी प्रकृति में उपयोगान्तर को न देखकर एकही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे रोग शब्द दोषों में तथा व्याधियों में भी कहाजाता है और दोषों को रोग आतंक यक्ष्मा दोष प्रकृति तथा विकार कहते हैं तहाँ दोषों में तथा व्याधियों में रोग शब्द समानहै और इनसे व्यतिरिक्तों में विशेषवाची है ॥ ४ ॥

तत्रव्याधयोऽपरिसंख्येयाभवन्त्यति बहुत्वाद्दोषास्तु परिसंख्येयाअनति बहुत्वात्तस्माद्यथोचितंविकाराउदाहरणार्थमनवशेषेणच दोषाव्याख्यास्यन्ते ॥ ५ ॥

तिसमें रोग अत्यन्त बहुत होनेके कारण असंख्य होते हैं और दोष बहुत अत्यन्त न होने के कारण संख्या के योग्य होते हैं इस से उदाहरण के निमित्त रोगों को और संपूर्णतासे दोषों को व्याख्यान करते हैं ॥ ५ ॥

रजस्तमश्चमानसौदोषौ, तयोर्विकाराःकामक्रोधलोभमोहेर्ष्यामानमदशोकचित्तोद्वेगभयहर्षादयः॥६॥

रजोगुण तथा तमोगुण यह दोनों मन के दोष हैं और इन दोनों दोषों के रोग काम क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या मान मद शोक चित्तोद्वेग भय तथा हर्षादिक हैं ॥ ६ ॥

वातपित्तश्लेष्माणस्तुशारीरादोषास्तेषामपिचविकाराज्वरातीसारशोथशोषमेहकुष्ठादयइति ॥ ७ ॥

वात पित्त तथा कफ यह तीनों शरीर के दोष हैं इन दोषोंके रोग ज्वर अतीसार शोथ राजयक्ष्मा प्रमेह तथा कुष्ठ आदिक हैं ॥ ७ ॥

दोषाश्चकेवलाव्याख्याताः, विकारैकदेशश्च ॥ ८ ॥

इस प्रकार दोष सब कहेगये और रोगोंका एकदेश कहा गया ॥ ८ ॥

तत्रतुखल्वेषांद्वयानामपिदोषाणां त्रिविधंप्रकोपणमसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगःप्रज्ञापराधःपरिणामश्चेति। प्रकुपितास्तुप्रकोपणविशेषात्। द्रव्यविशेषाच्च विकारविशेषानभिनिर्वर्त्तयन्तिअपरिसंख्येयास्तेविकाराः परस्परमनुवर्त्तमानाः। कदाचिदनुबध्नन्तिकामादयोज्वरादयश्च। नियतस्त्वनुबन्धोरजस्तमसोः परस्परंनह्यरजस्कन्तमः ॥ ९ ॥

तिसमें दोनों प्रकारके दोषों के कुपित होने के तीन कारण हैं जैसेइन्द्रिय तथा विषयोंका असात्म्यसंयोग प्रज्ञापराध (बुद्धिदोष) तथा परिणाम (प्राक्तन कर्मका फलोन्मुखहोना) कुपितहुए दोष हेतुओंकी विशेषता तथा द्रव्यों की विशेषता से असंख्य विकारों को उत्पन्न करते हैं वह कामादिक तथा ज्वरादिक विकार परस्पर अनुकूल होकर कभी २ अनुबन्धको प्राप्त होते हैं और रजोगुण तथा तमोगुण का परस्पर अनुबन्ध नित्य है क्योंकि रजोगुणके विना तमोगुण नहीं रहता है ॥ ९ ॥

प्रायःशरीरदोषाणामेकाधिष्ठीयमानानांसन्निपातः संसर्गोवासमानगुणत्वाद्दोषाहिदूषणैःसमानाः॥१०॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जल के वाह्य तथा आभ्यन्तर कार्य्यों का निर्वाह करावे जो लटजीरेका काढ़ा न मिल सके तो कटु तिक्त तथा कषाय औषधियों का काढ़ा मूत्र अथवा क्षार जल रोगी पर छिड़के फिर सींचने के पीछे रोगी को निर्वात स्थानमें लेजाकर पीपल पीपलामूल चव्य चीता तथा सोंठ के साथ पाक कीगई यवागूआदि भोजन क्रम २ से देवे ॥ २४ ॥

विलेपीक्रमागतञ्चैनमनुवासयेद्विडङ्गतैलेनैकान्तरंद्विस्त्रिर्वा । यदिपुनरस्यातिप्रवृद्धञ्छीर्षादीन्क्रिमीन्मन्येत, शिरस्येवअभिसर्पतः कदाचित्ततः स्नेहस्वेदाभ्यामस्यशिरउपपाद्यविरेचयेदपामार्गतण्डुलादिनाशिरोविरेचनेन ॥ २५ ॥

जब उसको क्रमसे विलेपी खाने को मिलने लगे तब बायविड़ङ्ग के तेलसे एक दिनका अन्तर देके दो अथवा तीनबार अनुवासन वस्ति देवे इसके उपरान्त जो फिर उसके बहुत क्रिमि बढ़ेहुए शीतादि क्रिमि शिरमें जाते मालूम होयँ तो शिरमें स्नेहन तथा स्वेदन करके लटजीरेके चांवल आदि शिरोविरेचन कारी औषधियोंसे शिरोविरेचन करावे२५॥

यस्त्वभ्याहार्य्योविधिःप्रकृतिविघातायोक्तःक्रिमीणां, सोऽनुव्याख्यास्यते।मूषिकपर्णीसमूलाग्रप्रतानामपहृत्यखण्डशश्छेदयित्वाउलूखलेक्षोदयित्वापाणिभ्यांपीडयित्वाचरसंगृह्णीयात् । तेनरसेनलोहितशालितण्डुलपिष्टंसमालोड्य पूपलिकांकृत्वाविधूमेषुअङ्गारेषुविपाच्यविडङ्गतैललवणोपहितांक्रिमिकोष्ठायभक्षयितुंप्रयच्छेत् । तदनन्तरंचअम्लकाञ्जिकमुदश्विद्धापिप्पल्यादिपञ्चवर्गसंसृष्टंसलवणमनुपाययेत् ॥ २६ ॥

पहले जो क्रिमियों के प्रकृति विघातमें भोजन की विधि कहीगई है उसका वर्णन किया जाता है जैसे मूसापर्णी की जड़ तथा पत्ते आदि सहित लाकर टुकड़े कर ऊखल में कूटके हाथों से दबाकर उसका रस निकाले उस रसके द्वारा लाल धानों के चावलों के आटे को मलकर पूपलिका बनाकर धूमरहित अंगारों में पकावे फिर उसमें बायविडंग का तेल तथा लवण लगाकर जिसके कोष्ठ में क्रिमि होंय उसे खिलावे भोजनके उपरांत अम्लकांजी अथवा मट्ठेमें पिप्पल्यादि पंचवर्ग तथा लवण मिलाके पिलावे ॥ २६ ॥

अनेनकल्पेनमार्कवार्कसहचरनीपनिर्गुण्डीसुमुखसुरसकुठेरककण्डीरकालमालकपर्णासक्षवकफणिज्झकबकुल-कुटजसुवर्णक्षीरीसुरसानामन्यतमस्मिन्कारयेत्पूपलिकानि तथा किलिहीकिराततिक्तकसुवहामलक–हरीतकी–विभीतकस्वरसेषुकारयेत्पूपलिकाः । स्वरसांश्चैतानेकैकशोद्वन्द्वशः सर्वशोवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुविलुलितान्प्रातरनन्नायपातुंप्रयच्छेत् ॥ २७ ॥

इसी प्रकार भंगरा आक सहँचर (सफेद फूलकी कटसरैया) कदंब निर्गुण्डी सुमुख सुरस श्यामबवई कंडीर कालमालक पर्णास क्षवक मरुआ मोहरसिली कुरैया सुवर्णक्षीरी सुरसा (रासन) लटजीरा चिरायता सुवहा (नीले फूल का सिनिवार) आमला हड़ तथा बहेड़ा इनमें से किसीके रसमें पूपलिका बनाकर खिलावे और प्रातःकाल इनमें में से किसीके स्वरस को दोके स्वरस को अथवा सबके स्वरसको सहत मिलाकर विना भोजन करायेही पिलावे ॥ २७ ॥

अथाश्वशकृदाहृत्यमहतिकिलिञ्जेप्रस्तीर्य्यातपेशोषयित्वोलूखलेक्षोदयित्वादृषदिपुनःसूक्ष्माणिचूर्णानिकारयित्वाविडङ्गकषायेण त्रिफलाकषायेणवाअष्टकृत्वोदशकृत्वोवाआतपेसुपरिभावितानिभावयित्वादृषदिपुनः सूक्ष्माणिचूर्णानिकारयित्वानवेकलशेसमवाप्यानुगुप्तंनिधापयेत् । तेषान्तुखलुचूर्णानांपाणितलं चूर्णयावद्वासाधुमन्येतक्षौद्रेणसंसृज्यक्रिमिकोष्ठायलेढुंयच्छेत् ॥ २८ ॥

इसके बाद घोड़ेकी लीद को लाकर कुंड में रखके धूपमें सुखाकर ऊखल में कुटवाके सिलपर महीन पिसवाकर बायबिडंग अथवा त्रिफलेके काढ़ेमें आठ तथा दशवार भावना देकर धूपमें सुखा फिर सिलपर पिसवाकर नवीन कलशमें रखकर गुप्त करके रक्खे फिर उस चूर्णमें से तोलेभर अथवा जितना उचित समझे सहतमें मिलाके जिसके कोष्ठमें क्रिमि होयँ उसे चटावे ॥ २८ ॥

तथाभल्लातकास्थीन्याहार्य्यकलशप्रमाणेनसम्पोथ्यस्नेहभाविते दृढेकलशेसूक्ष्मानेकच्छिद्रब्रध्नेमृदावलिप्तेसमवाप्योडुपेनपिधायभूमौआकण्ठंनिखातस्य स्नेहभावितस्यैव अन्यस्यदृढस्यकुम्भस्यउपरिसमारोप्यसमन्तात् गोमयैरुपचित्यदाहयेत् । सयदाजानीयात्साधुदग्धानिगोमयानिगलितस्नेहानिभल्लातकास्थीनिततस्तंकुम्भमुद्धारयेत् । अथतस्माद्वितीयात् कुम्भात्तंस्नेहमदायविडङ्गतण्डुलचूर्णैःस्नेहार्द्धमात्रैःप्रतिसंसृज्यातपेसर्वमहः स्थापयित्वाततोऽस्मैमात्रांप्रयच्छेत्पानाय । तेनसाधुविरिच्यतेविरिक्तस्यचानुपूर्वीयथोक्ता ॥ २९ ॥

तैसेही एक कलशभर भिलावां मंगाकर कूटकर चिकना मजबूत कलश जिसके पेंदेमें महीन दृढ़ छिद्र होय उसमें उसे भरदे और उसमें मट्टी लेसकर उसके मुखको सकोरे आदिसे बन्द करदेवे फिर पृथ्वीमें एक चिकना पक्का कलश गलेतक गाड़दे मुख उसका खुलारहै उस मुखपर भिलावें से भराहु-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्लेष्मजानांक्रिमीणांचिकित्सितं कार्य्यम् । इत्येवंक्रिमिघ्नोभेषजविधिस्तुव्याख्यातोभवति ॥ ३५ ॥

इन दोनों में विशेषता यह है कि पुरीषज क्रिमियों में स्वल्पमात्रा से आस्थापन अनुवासन तथा विरेचन बहुधा करना चाहिये और कफज क्रिमियों में अधिक मात्रा से शिरोविरेचन वमन तथा उपशमन बहुधा करना चाहिये इस प्रकार क्रिमियों की चिकित्सा की विधि कहीगई ॥ ३५ ॥

तमनुतिष्ठता यथास्वंहेतुवर्जनेप्रयतितव्यम् । यथोद्देशमेवमिदंक्रिमिकोष्ठचिकित्सितंयथावदनुव्याख्यातंभवतीति ॥ ३६ ॥

इस विधि का करनेवाला पुरुष निदानोक्त आहार विहारों के त्याग करने में बहुत यत्न करे इस प्रकार क्रिमि कोष्ठवालों की चिकित्सा यथावत् कहीगई ॥ ३६ ॥

तत्रश्लोकाः ।

अपकर्षणमेवादौक्रिमीणांभेषजंस्मृतम् । ततोविघातःप्रकृतेर्निदानस्यचवर्जनम् ॥ ३७ ॥

तिस में यह श्लोक हैं । क्रिमिरोग में पहले क्रिमियों का निकालनाही औषध है तदनन्तर प्रकृतिविघात और निदानोक्त आहार विहारों का त्याग करना चाहिये ॥ ३७ ॥

एतावद्भिषजाकार्य्यंरोगेरोगेयथाविधि । अयमेवविकाराणांसर्वेषामपिनिग्रहे ॥ ३८ ॥ विधिर्दृष्टस्त्रिधायोऽयंक्रिमीनुद्दिश्यकीर्तितः। संशोधनंसंशमनंनिदानस्यचवर्जनम् ३९॥

सम्पूर्णरोगोंमें विधिपूर्व्वक यही क्रमकरना चाहिये क्रिमियों के विषय में जो यह तीन प्रकारकी चिकित्सा अर्थात् संशोधन, संशमन तथा निदानोक्त आहार विहारों का त्याग करना कही गई है यही सम्पूर्णरोगों के शान्त करने में करनी चाहिये ॥ ३८ । ३९ ॥

व्याधितौपुरुषौज्ञाज्ञौभिषजौसप्रयोजनौ । विंशतिःक्रिमयस्त्वेषांहेत्वादिःसप्तकोगणः ॥ ४० ॥

दो प्रकार के व्याधितपुरुष प्रयोजनसहित मूर्ख तथा ज्ञानी वैद्य बीस प्रकार के क्रिमि तथा क्रिमियों के निदानादिक सात गण ॥ ४० ॥

उक्तोव्याधितरूपीये विमानेपरमर्षिणा। शिष्यसंबोधनार्थञ्चव्याधिप्रशमनायच ॥ ४१ ॥

इति व्याधितरूपीयंविमानंसमाप्तम् ॥ ७॥

यह सब विषय इस व्याधितरूपीय विमान में भगवान् आत्रेय जी ने शिष्यों की शिक्षा के लिये तथा रोगों की शान्ति के अर्थ कहा ॥ ४१ ॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें व्याधितरूपीयविमान नाम सातवांअध्याय समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आठवां अध्याय।

रोगभिषग्जितीयम्

इतिहस्माहभगवानात्रेयः।

बुद्धिमानात्मनःकार्य्यगुरुलाघवेकर्मफलमनुबन्धंदेशकालौचविदित्वा युक्तिदर्शनाद्भिषग्बुभूषुःशास्त्रमेवादितःपरीक्षेत। विविधानिहिशास्त्राणिभिषजांप्रचरन्तिलोके। तत्रयन्मन्येतमहद्यशस्विधीरपुरुषानुमोदितमर्थबहुलमाप्तजनपूजितंत्रिविधशिष्यबुद्धिहितमपगतपुनरुक्तदोषमार्षंसुप्रणीतसूत्रभाष्यसंग्रहक्रमंस्वाधारमनवपतितशब्दमकष्टशब्दंपुष्कलाभिधानंक्रमागतार्थमर्थतत्त्वनिश्चयप्रधानंसङ्गतार्थमसंकुलप्रकरणमाशुप्रबोधकंलक्षणवच्चोदाहरणवच्चतदभिप्रपद्येतशास्त्रम्।शास्त्रंह्येवंविधममलइवादित्यस्तमोविधूयप्रकाशयतिसर्वम् ॥ १ ॥

इस के उपरान्त रोगभिषग्जितीय नाम विमान का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा—

बुद्धिमान् पुरुष जो वैद्य होना चाहै तो अपने कार्य्यकी गुरुता, लघुता, कर्म्मके फल, अनुबन्ध,देश तथा काल को जानकर युक्तिपूर्व्वक पहले शास्त्रही की परीक्षा करे लोकमें वैद्योंके अनेक शास्त्रों का प्रचार है उन में से जिस को यशस्वी तथा धीरपुरुष ग्रहण करते हों जिसमें अर्थका विस्तारहो आप्तलोग जिस की प्रशंसाकरते होयँ जो तीनप्रकारके शिष्यों की शिक्षा के लिये हित हो जिस में पुनरुक्ति दोष न होय जो ऋषिप्रणीत होय जिस में सूत्र, भाष्य का क्रम अच्छे प्रकार से होय जिस में शास्त्रान्तर की अपेक्षा न होय जिस में दूषित शब्द न होयँ जिस के शब्द कठिन न होंय जिस में पुष्ट विषयों का वर्णन होय जिस का अर्थ परम्परासे प्राप्त होताहोय जिस में अर्थतत्त्व का प्रधानता से निश्चय होय जिसमें असंगत अर्थ न होय जिसके सब प्रकरण अलग २ होयँ जिससे शीघ्रही बोध होय और जिसमें लक्षण तथा उदाहरण दोनों होयँ उसी शास्त्र को ग्रहणकरना चाहिये क्योंकि इस प्रकार का शास्त्र निर्मल सूर्य के समान अन्धकार को दूरकरके सबको प्रकाशित करता है ॥ १ ॥

ततोऽनन्तरमाचार्य्यंपरीक्षेत। तद्यथा,—पर्य्यवदातश्रुतंपरीदृष्टकर्माणंदक्षंदक्षिणंशुचिंजितहस्तमुपकरणवन्तंसर्वेन्द्रियोपपन्नंप्रकृतिज्ञंप्रतिपत्तिज्ञमनुपस्कृतविद्यमनहंकृतमनसूयकमकोपनंक्लेशक्षमंशिष्यवत्सलमध्यापकंज्ञापनासमर्थञ्चइत्येवंगुणोह्याचार्य्यःसुक्षेत्रमार्त्तवोमेघइवशस्यगुणैःसुशिष्यमाशुवैद्यगुणैःसम्पादयति। तमुपसृत्यारिराधयिषुरुपचरेदग्निवच्चदेववच्चराजवच्चापि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मसम्बन्धी वृक्षों की शाखा) कुश लाज सरसों अक्षत श्वेतपुष्प श्वेत पुष्पोंकी माला पवित्र भोजनके पदार्थ और पिसीहुई तथा विन पिसी गन्धद्रव्य इन वस्तुओं को लेकर आवो और शिष्य वैसाही करे ॥ ६ ॥

तमुपस्थितमाज्ञायसमेशुचौदेशेप्राक्प्रवणेवाचतुष्किष्कुमात्रं चतुरस्रं स्थण्डिलंगोमयोदकेनोपलिप्तंकुशास्तीर्णंसुपरिहितंपरिधिभिश्चतुर्दिशं यथोक्तचन्दनोदककुम्भक्षौमहेमहिरण्यरजतमणिमुक्ताविद्रुमालंकृतं मेध्य-भक्ष्य-गन्धशुक्लपुष्पलाजासर्षपाक्षतोपशोभितंकृत्वातत्रपालाशीभिरैंगुदीभिरौदुम्बरीभिर्माधुकीभिर्वा समिद्भिरग्निमुपसमाधायप्राङ्मुखः शुचिरध्ययनविधिमनुविधायमधुसर्पिर्भ्यांत्रिस्त्रिर्जुहुयादग्निम् । आशीःसंप्रयुक्तैर्मन्त्रैर्ब्राह्मणमग्निंधन्वन्तरिंप्रजापतिमश्विनाइन्द्रमृषींश्चसूत्रकारानभिमन्त्रायमाणः । पूर्वंस्वाहेतिशिष्यश्चैनमन्वारभेतहुत्वाचप्रदक्षिणमग्निमनुपरिक्रामेत् । ततोऽनुपरिक्राम्यब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयेत । भिषजश्चाभिपूजयेत् ॥ ७ ॥

उन वस्तुओं को लेके शिष्यको आया जानके समपवित्र उत्तर अथवा पूर्वकी ओर को नीचे स्थान में चार हाथके चौकोर स्थंडिल (यज्ञार्थभूमि) को गोबरसे लीपकर उसपर कुश बिछाकर उसके चारों ओर परिधि अर्थात् यज्ञ वृक्षोंकी शाखा रखकर पूर्वोक्त चन्दन जलकुम्भ रेशमी वस्त्र सुवर्ण धन चांदी मणि मोती तथा मूंगोंसे उस स्थानको शोभित करे और पवित्र भक्ष्य पदार्थ गन्ध द्रव्य श्वेत पुष्प खील सरसों तथा अक्षतोंको वहीं रखकर ढाककी गोंदी की गूलरकी अथवा महुएकी समिधोंसे अग्निको प्रज्वलित करके पवित्र हो पूर्वाभिमुख बैठके अध्ययन विधि को करके आशीर्वादात्मक मन्त्रोंसे अग्निमें तीन २ बार घृत तथा सहतका हवन करे फिर ब्रह्मा अग्नि धन्वन्तरि प्रजापति अश्विनीकुमार इन्द्र तथा सूत्रकार ऋषि इनके चतुर्थ्यन्त नामों में स्वाहा शब्द लगाके अभिमंत्रित करके हवन करे और आचार्य्यके वाद शिष्य भी हवन करे हवनके उपरान्त अग्निकी प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करावे और वैद्योंका पूजनकरे ॥ ७ ॥

अथैनमग्निसकाशेब्राह्मणसकाशे भिषक्सकाशेचानुशिष्यात् । ब्रह्मचारिणाश्मश्रुधारिणासत्यवादिना अमांसादेनमेध्यसेविना निर्मत्सरेणाशास्त्रधारिणाभवितव्यम् । नच तेमद्वचनात्किञ्चिदकार्य्यंस्यादन्यत्र राजद्विष्टात्प्राणहराद्विपुलादधर्म्यादनर्थसंप्रयुक्ताद्वाप्यर्थात् । मदर्पणेनमत्प्रधानेनमदधीनेनमत्प्रियहितानुवर्त्तिनाचशश्वद्भवितव्यम् । पुत्रवद्दासवदर्थिवच्चोपचरतानुसर्त्तव्योऽ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम् । अनुत्सुकेनावहितेनअनन्यम
नसाविनीतेनावेक्ष्यावेक्ष्यकारिणा
अनसूयकेनचाभ्यनुज्ञातेनप्रविचरि
तव्यम्अनुज्ञातेनचप्रविचरता ॥८॥

तदनन्तर अग्नि के निकट ब्राह्मणों के निकट तथा वैद्यों के निकट आचार्य्य शिष्य को यह शिक्षा देवे कि ब्रह्मचारी श्मश्रुधारी सत्यवादी अमांसाशी पवित्रसेवी मत्सर-रहित तथा अशस्त्रधारी तुमको होना चाहिये राजासे द्वेषयुक्त प्राणनाशक बहुत अधर्मयुक्त तथा अनर्थकारी कार्य्य के सिवाय मैं जो कुछ कहूँगा सो सब तुमको करनाहोगा जो कुछ मिले वह मेरे अर्पण करना मुझे प्रधान समझना मेरे आधीन रहना और मेरे प्रिय तथा हितकार्य्य करना पुत्रके समान दास के समान तथा अर्थी के समान मेरी सेवाकरना निरभिमान होकर सावधान होकर अनन्यचित्त होकर नम्रहोकर विचार-पूर्वक कार्य करनेवाले होकर तथा असूया-रहित होकर मेरेपास रहना और मेरीआज्ञा के विना कोई कार्य्य न करना और आज्ञा पाकर जो कार्य्य करना तो ॥ ८ ॥

पूर्वंगुर्वर्थोपाहरणेयथाशक्तिप्रयतित
व्यम् । कर्मसिद्धिमर्थसिद्धिंयशो
लाभञ्चप्रेत्यचस्वर्गमिच्छताभिषजा।
गोब्राह्मणमादौकृत्वासर्वप्राणभृतां
शर्माशासितव्यम् । अहरहरुत्ति
ष्ठताचोपविशताचसर्वात्मनाचातु
राणामारोग्येप्रयतितव्यम् । जी
वितहेतोरपिचातुरेभ्योनातिद्रोग्ध
व्यम् । मनसापिचपरस्त्रियोना
भिगमनीयाः । तथासर्वमेवपर
स्वम् । निभृतवेशपरिच्छेदेनचभ
वितव्यम् ! अशौण्डेनअपापेनअ
पापसहायेनचश्लक्ष्णशुक्लधर्म्यश
र्म्यधन्यसत्यहितमितवचसादेश
कालविचारिणास्मृतिमताज्ञानो
त्थानोपकरणसम्पत्सुनित्यंयत्नव
ता । नचकदाचिद्राजद्विष्टानांराज
द्वेषिणांवामहाजनद्विष्टानांमहाजन
द्वेषिणांवाऔषधमनुविधातव्यम् ।
एवंसर्वेषामत्यर्थविकृतदुष्टदुःखशी
लाचारोपचाराणामनपवादप्रती
कारादीनांमुमूर्षुताञ्चतथैवासन्निहिते
श्वराणांस्त्रीणामनध्यक्षाणांवा ॥६॥

पहले गुरुके प्रयोजन के सिद्ध करने में यथाशक्ति यत्न करना कार्य्यसिद्धि धन तथा यश को इसलोक में और मरकर स्वर्ग का चाहनेवाला वैद्य पहले गौ ब्राह्मण की तदनन्तर संपूर्ण प्राणियों के सुखकी इच्छाकरे प्रतिदिन उठते तथा बैठते सबप्रकार रोगियों के आराम करने का यत्न करना चाहिये प्राणोंके निमित्त भी रोगियों से बहुत धन न लेनाचाहिये पराई स्त्रियोंपर तथा परायेधन पर कभी चित्त न चलानाचाहिये विनीतवेष रखना चाहिये नम्रपरिकर रखना चाहिये मद्यपान न करना चाहिये पापियों का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सङ्ग न करना चाहिये मृदु, दोषरहित, धर्म्मयुक्त, शान्त, धन्य, सत्य, हित तथा मितवचन बोलना चाहिये देश तथा समय का विचार करना चाहिये स्मृति रखना चाहिये ज्ञानवृद्धि तथा उपकरण की सम्पत्ति में नित्य यत्न करना चाहिये राजा से द्वेष करनेवाले अथवा जिन से राजा द्वेष करता हो श्रेष्ठ लोगों से द्वेष करनेवाले अथवा श्रेष्ठ लोग जिन से द्वेष करते हों अत्यन्त विकृत दुःखदायक दुष्टशील आचार तथा उपचारवाले अनपवादमतिकार आदि तथा शीघ्र मरनेवालों की चिकित्सा कभी न करनी चाहिये और जिन स्त्रियों के पति तथा अधिकारी न होयँ उनकीभी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ ९ ॥

नचकदाचित्स्त्रीदत्तमामिषमादातव्यमननुज्ञातंभर्त्राअथवाअध्यक्षेण। आतुरकुलञ्चानुप्रविशता त्वया विदितेनानुमतप्रवेशिनासार्द्धंपुरुषेण सुसंवीतेनावाक्शिरसास्मृतिमता स्तिमितेनअवेक्ष्यावेक्ष्यबुद्ध्यामनसासर्वमाचरतासम्यगनुप्रवेष्टव्यम्। अनुप्रविश्यचवाङ्मनोबुद्धीन्द्रियाणिनक्वचित्प्रणिधातव्यानिअन्यत्रातुरोपकारार्थावाआतुरगतेष्वन्येष्वाभावेषु। नचातुरकुलप्रवृत्तयोबहिर्निश्चारयितव्याः। ह्रासितञ्चायुषःप्रमाणमातुरस्यनवर्णयितव्यंजानतापिच। तत्रयत्रोच्यमानमातुरस्यअन्यस्यवाप्युपघातायसम्पद्यते। ज्ञानवतापिचनात्यर्थमात्मनोज्ञानेनविकत्थितव्यम्। आप्तादपिहिविकत्थमानादत्यर्थमुद्विजन्ति अनेके ॥ १० ॥

स्त्रियों का दियाहुआ मांस उन के पति तथा अधिकारी की आज्ञाविना कभी न लेना चाहिये रोगी के घर जाना होय तो भीतर कहलवाकर आज्ञा लेकर किसी पुरुष को साथ लेकर वस्त्रादिकों से शरीर को अच्छे प्रकार ढककर नीचेको मुख करके पुरानी बातों को स्मरण करके नम्रहोकर बुद्धि तथा मनसे सब बातों को समझ कर विवरण करके रोगी के घर में प्रवेश करना चाहिये रोगी के घर में जाकर रोगी के उपकार के सिवाय अन्य किसी विषय में वाणी मन बुद्धि तथा इन्द्रिय न लगानी चाहिये और रोग के सिवाय रोगी के किसी अन्य विषय का न विचार करनाचाहिये बाहर निकलकर रोगीके घर की बात अन्य किसीसे न कहनी चाहिये रोगी की आयु क्षीण होगई है यह बात जानकरभी न कहनी चाहिये ऐसा कहने से रोगी तथा अन्य लोगों को बड़ा क्लेश होता है अच्छे प्रकार से बहुत ज्ञानयुक्त होकर भी अपने ज्ञान की प्रशंसा न करनी चाहिये क्योंकि कोई कोई लोग बहुत प्रशंसा करनेवाले प्रमाणिक पुरुषों से भी घबड़ाते हैं ॥ १० ॥

नचैवहिअस्तिआयुर्वेदस्यपारं,तस्मादप्रमत्तःशश्वदभियोगमस्मिन्गच्छेत्। तदेवंकार्य्यमेवंभूयश्च

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृत्तस्यसौष्ठवमनुसूयतापरेभ्योऽप्य गमयितव्यम्। कृत्स्नोहिलोकोबुद्धिमतामाचार्य्यःशत्रुश्चाबुद्धिमतामेतच्चाभिसमीक्ष्यबुद्धिमताअमित्रस्यापिधन्यंयशस्यमायुष्यंपौष्टिकं लौकिकमभ्युपदिशतोवचःश्रोतव्यमनुविधातव्यञ्चेति ॥ ११ ॥

आयुर्वेद का पार नहीं है इससे सावधान होकर इस में निरन्तर बहुत श्रम करना चाहिये इसीप्रकार से सब आचरण करने चाहिये और गुणों में दोपारोपण न करके द्वेषी लोगों से भी श्रेष्ठबातें सीखनी चाहिये क्योंकि बुद्धिमान् लोग संपूर्णलोक को आचार्य्यमानकर उससे उपदेश लेते हैं और मूर्ख लोग सब संसार को अपना शत्रु समझते हैं यह जानके बुद्धिमान् पुरुष को अमित्रका भी धन्य यशकारी आयुको हित तथा लोक में हितकारी उपदेश वचन सुनना चाहिये और उसके अनुकूल आचरण करनाचाहिये॥११॥

अतःपरमिदंब्रूयाद्देवताग्निद्विजातिगुरुवृद्धसिद्धाचार्य्येषुतेसम्यग्वर्त्तितव्यम्। तेषुतेसम्यग्वर्त्तमानस्यायमग्निःसर्वगन्धरसरत्नबीजानियथेरिताश्चदेवताःशिवायस्युः अतः अन्यथाचावर्त्तमानस्याशिवायेति। एवंब्रुवतिचाचार्य्येशिष्यस्तथेतिब्रूयात्। यथोपदेशञ्चकुर्वन्नध्याप्योज्ञेयेअतःअन्यथातुअनध्याप्यःअध्याप्यमध्यापयन्हिआचार्य्योयथोक्तै श्चाध्यापनफलैर्योगमाप्नोतिअन्यैश्चानुक्तैःश्रेयस्करैर्गुणैःशिष्यमात्मानञ्चयुनक्ति। इतिअध्यापनविधिरुक्तः ॥ १२ ॥

इस के अनन्तर फिर यह कहै कि देवता अग्नि ब्राह्मण गुरु वृद्ध सिद्ध तथा आचार्य्यों के साथ सद् व्यवहार करना जो तुम इन लोगों से सद् व्यवहार करोगे तो यह अग्नि संपूर्ण गन्ध रस रत्न बीज तथा देवता तुम्हारा कल्याण करेंगे और जो इसके विपरीत आचरण करोगे तो तुम्हारा अकल्याण करेंगे आचार्य्य के यह वचन सुनके शिष्य को कहना चाहिये कि बहुत अच्छा जो शिष्य पूर्व्वोक्त आचरणकरे उसे पढ़ाने के योग्य जानना चाहिये और जो इसके विपरीत आचरण करे उसे पढ़ाने के अयोग्य जानना चाहिये पढ़ाने के योग्य शिष्यको पढ़ाता हुआ आचार्य्य पढ़ाने के यथोक्तफल को प्राप्त होता है और अन्य अनुक्त गुणों से अपनेको तथा शिष्य को युक्त करता है इस प्रकार अध्यापनविधि कहीगई ॥ १२ ॥

अध्ययनाध्यापनविधिवत्सम्भाषाविधिमतऊर्ध्वंव्याख्यास्यामः। भिषग्भिषजासहसम्भाषेत। तद्विद्यसम्भषाहिज्ञानाभियोगसंहर्षकरीभवति। वैशारद्यमपिचाभिनिर्वर्त्तयति वचनशक्तिमपिचाधत्तेयशश्चाभिदीपयति। पूर्वेश्रुतेचसन्देहवतः पुनःश्रवणाच्छ्रुतसंशयमपकर्षति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रुतेचासन्देहवतोभूयोऽध्यवसायमभिनिर्वर्त्तयति। अश्रुतमपिचकञ्चिदर्थश्रोत्रविषयमापादयति। यच्चाचार्य्यःशिष्यायशुश्रूषवेप्रसन्नक्रमेणोपदिशतिगुह्याभिमतमर्थजातम् तत्परस्परेणसहजल्पन्पिण्डेनविजिगीषुराहसंहर्षात्तस्मात्तद्विद्यसम्भाषामभिप्रशंसन्तिकुशलाः॥१३॥

इसके उपरान्त अब अध्ययन तथा अध्यापनकी विधिके समान संभाषा की विधि वर्णन करते हैं वैद्य वैद्यके साथ संभाषण करते हैं इसको तद्विद्यसंभाषा कहते हैं इस्से ज्ञान तथा वादकी शक्ति बढ़ती है धृष्टता होती है वचन शक्ति बढ़ती है यश होता है पहले सुने हुए जिस किसी विषय में सन्देह है उसके फिर सुनने से सन्देह दूर होजाता है सन्देह रहित विषयमें पुष्टता होती है जो विषय नहीं सुने हैं वह भी सुनने में आजाते हैं जो छिपी हुई वातें आचार्य्य शिष्य को सेवा करने पर वहुत प्रसन्न होकर क्रम २ से वतलाताहै वह वातें परस्पर वाद करने में जीतने की इच्छा से एकसाथ कही जाती हैं इस्से चतुर लोग तद्विद्यसंभाषाकी प्रशंसा करते हैं॥ १३॥

द्विविधातुखलुतद्विद्यसम्भाषाभवतिसन्धायसम्भाषाविगृह्यसम्भाषा च। तत्रज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनशक्तिसम्पन्नेनाकोपनेनअनुपस्कृतविद्येनानसूयकेनअनुनयकोविदेनक्लेशक्षमेणप्रियसम्भाषणेनचसहसन्धायसम्भाषाविधीयते। तथाविधेनसहकथयन्विश्रब्धःकथयेत्पृच्छेदपिचविश्रब्धःपृच्छतेचास्मैविश्रब्धायविशदमर्थंब्रूयात्। नचनिग्रहभयादुद्विजेत्। निगृह्यचैनंनहृष्येत्, नचपरेषुविकत्थेत्। नचमोहादेकान्तग्राहीस्यात्, नचाप्रस्तुतमर्थमनुवर्णयेत्। सम्यक्चानतुनयेनानुनीयेत, अनुनयाच्चपरंतत्रचावहितःस्यादित्यनुलोमसम्भाषाविधिः॥ १४॥

तद्विद्यसंभाषा दो प्रकारकी होती है एक तो परस्पर मिलकर संभाषण करना और दूसरी परस्पर विग्रह करके संभाषण करना तिसमें ज्ञान विज्ञान वचन तथा प्रतिवचन शक्तियुक्त क्रोधरहित गम्भीरविद्यावाले गुणों में दोष न लगानेवाले नम्र क्लेश के सहनेवाले तथा मियवादी पुरुषके साथ संधि करके भाषण कियाजाता है ऐसे पुरुष के साथ संभाषण करनेमें विश्वासयुक्त होकर वार्त्तालाप करे विश्वासयुक्त होकर पूछे और विश्वासपूर्वक पूछते हुए उस पुरुषको वहुत स्पष्ट उत्तर देवे हारजानेके भयसे घबरावे नहीं उसको जीतकर प्रसन्न न होय न दूसरों के आगे कहै मोह से किसी बात पर हठ न करे जो वात स्पष्ट नहीं हुई है उस को फिर कहै अच्छे प्रकार से सांत्वनापूर्वक वार्त्तालाप करता हुआ उसके साथ संभाषण करे और सावधान रहै यह संधि करके संभाषण करनेकी विधिहै॥ १४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतऊर्ध्वमितरेणसहविगृह्यसम्भाषे तश्रेयसायोगमात्मनःपश्यन्। प्रागेवचजल्पाज्जल्पान्तरंपरावरान्तरं परिषद्विशेषांश्चसम्यक्परीक्षेतसम्यक्परीक्षाहिबुद्धिमतांकार्य्यप्रवृत्ति निवृत्तिकालौचशंसति। तस्मात् परीक्षामतिप्रशंसन्तिकुशलाः। परीक्षमाणस्तुखलुपरावरान्तरमिमाञ्जल्पकगुणाञ्छ्रेयस्करांश्चदोषवतश्चपरीक्षेतसम्यक्। तद्यथा,श्रुतंविज्ञानं धारणंप्रतिभानंवचनशक्तिरित्येतान्गुणाञ्छ्रेयस्करानाहुः। इमान्पुनर्दोषवतःकोपनत्वमवैशारद्यंभीरुत्वमनवहितत्वमिति।एतान्द्वयानपिगुणान्गुरुलाघवतः परस्यचैवात्मनश्चतोलयेत्॥ १५॥

इसके उपरान्त पूर्व्वोक्त गुण जिस में न होयँ उसके साथ विग्रह करके संभाषण करे जो अपना कोई कल्याण देखे तो विग्रहकरके संभाषण करे संभाषण करने के पहलेही जल्पान्तर पर अवर आतुरं तथा सभा की परीक्षा अच्छेप्रकार से करले क्योंकि अच्छेप्रकार से परीक्षा ही बुद्धिमानोंको कार्य्य की प्रवृत्ति तथा निवृत्ति के समयको प्रकट कराती है इसी से चतुरलोग परीक्षा की प्रशंसाकरते हैं पर अवर तथा आतुरकी परीक्षा करता हुआ जल्पक जल्पक के कल्याणकारी तथा दोषकारी इन गुणों की अच्छे प्रकारसे परीक्षाकरे जैसे श्रुत विज्ञान धारण प्रतिभा तथा वचनशक्ति यह जल्पक के कल्याणकारी गुण हैं और क्रोध धृष्टताका न होना डरपोकपन तथा सावधान न रहना यह दोषकारी गुण हैं अपने में तथा प्रतिवादी में इन दोनों प्रकार के गुणों की गुरुता तथा लघुता की तुलना करे॥ १५॥

तत्रत्रिविधःपरःसम्पद्यते,प्रवरःप्रत्यवरः समोवागुणविनिक्षेपतोनत्वेवं कार्त्स्न्येन॥ १६॥

तिस में पर (प्रतिवादी) तीन प्रकारका होता है जैसे प्रवर (अपने से गुणोंमें श्रेष्ठ) प्रत्यवर (अपने से गुणोंमें न्यून) तथा सम (अपने समानगुणवाला) यह श्रेष्ठता आदिक गुणों के विषय में लीजाती है सब विषयोंमें नहीं॥ १६॥

परिषच्चखलुद्विविधा, ज्ञानवतीमूढ़परिषच्च, सैवद्विविधासतीत्रिविधा पुनरनेनकारणविभागेनसुहृत्परिषत्, उदासीनपरिषत्प्रतिनिविष्टपरिषच्चेति॥ १७॥

सभा दो प्रकार की होती है एकज्ञानवती सभा और एक मूर्खसभा यही दोनों फिर कारणों के विभाग से तीन २ प्रकार की होती हैं जैसे मित्रसभा उदासीनसभा (न शत्रु न मित्र जिसमें होयँ) तथा प्रतिनिविष्ट सभा (जिसमें द्वेषीलोग होयँ)॥ १७॥

तत्रप्रतिनिविष्टायांपरिषदिज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनशक्तिसम्पन्नायांमूढायांवानकथञ्चित्केनचित्सहजल्पोविधीयते। मूढायान्तु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुहृत्परिषदि उदासीनायां वा ज्ञान
विज्ञानमन्तरेणाप्यदीप्तयशसामहा
जनद्विष्टेनसहजल्पोविधीयते । त
द्विधेनचसहकथयताआविद्धदीर्घ
सूत्रसंकुलैर्वाक्यदण्डकैःकथयित
व्यम् । अतिहृष्टंमुहुर्मुहुरुपहसता
परंनिरूपयताचपरिषदमाकारैर्ब्रुवत
श्चास्यवाक्यावकाशोनदेयः । कष्ट
शब्दञ्चब्रुवन्वक्तव्योनोच्यतइति ।
अथवापुनर्हीनातेप्रतिज्ञेतिपुनश्चाह्व
यमानःप्रतिवक्तव्यः । परिसंवत्सरं
भवान्शिक्षतांतावत् । अथवापर्य्या
प्तमेतावत्ते । सकृदेवहिपारिक्षेपिकं
निहितंनिहतमाहुरिति । नास्ययो
गःकर्त्तव्यःकथञ्चिदप्येवंश्रेयसास
हविगृह्यवक्तव्यमित्याहुरेके । न
त्वेवंज्यायसासहविग्रहंप्रशंसन्तिकु
शलाः ॥ १८ ॥

इनमें से ज्ञान विज्ञान वचन तथा प्रतिवचन शक्तियुक्त होय अथवा मूर्खों की होय प्रतिनिविष्टसभा में किसी के साथ किसी प्रकार से भी जल्प न करना चाहिये मूर्ख मित्रसभा तथा उदासीनसभा में अधिक ज्ञान विज्ञान के विना भी यशस्वी तथा श्रेष्ठपुरुषों से द्वेष रखनेवाले के साथ जल्प करे संभाषण के समय बड़े २ कठिन सूत्रों से मिलेहुए बहुत बड़े २ वाक्य बोले बहुत प्रसन्नतापूर्वक वारंवार हंसे ऐसा रूप बनावे तथा चेष्टाकरे जिससे सभा वालोंको प्रतिवादी की मूर्खता प्रकट हो प्रतिवादी को कहने का अवकाश न दे जो प्रतिवादी कठिन शब्द बोले तो कहै कि मैं नहीं कुछ कहताहूं अथवा तुम्हारी प्रतिज्ञा (जिसबात को सिद्धकरना है) हीन हुई जो प्रतिवादी फिर जल्पना करना चाहै तो कहै कि अभी एकवर्ष तुम और सीखो तुम्हारे लिये इतना ही बहुत है एकवार जिसको जीत लिया वह जीताही समझा जाता है ऐसा कहकर कल्याणयुक्त होकर फिर उसके साथ संभाषण न करना चाहिये यह किसी २ लोगों का मत है परन्तु चतुरलोग बड़ेके साथ इस प्रकार से विग्रह करना नहीं अच्छा समझते हैं ॥ १८ ॥

प्रत्यवरेणतुसहसमानाभिमतेनवा
विगृह्यजल्पतासुहृत्परिषदिकथयि
तव्यम् । अथवाप्युदासीनपरिषदि
अवधानश्रवणज्ञानविज्ञानोपधा
रणवचनशक्तिसम्पन्नायांकथयता
चावहितेनपरस्यसादगुण्यदोषबल
मवेक्षितव्यम् । समवेक्ष्यचयत्रैनं
श्रेष्ठंमन्येतनास्यतत्रजल्पंयोजयेत
अनाविष्कृतमयोगंकुर्वन् । यत्रत्वे
नमवरंमन्येततत्रैवैनमाशुनिगृह्णी
यात् ॥ १९ ॥

प्रत्यवर (अपने से गुणों में न्यून) अथवा समके साथ मित्रसभामें विग्रह करके वाद करना चाहिये अथवा सावधानता श्रवण ज्ञान विज्ञान उपधारण तथा वचनशक्तियुक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदासीनसभामें वाद विवाद करना होय तो सावधानतापूर्व्वक प्रतिवादी के गुण तथा दोषों के बलको देखे और देखकर जिस विषय में उसको श्रेष्ठ जाने उस विषय में उसके साथ शास्त्रार्थ न करे और सभामें अपनी अल्पज्ञता भी न प्रकट होने दे और जिस विषय में उसको न्यून जाने उसी में शीघ्रही उसको जीतले ॥ १९ ॥

तत्र नु खल्विमेप्रत्यवराणामाशुनिग्रहेभवन्ति उपायाः । तद्यथा; श्रुतहीनं महतासूत्रपाठेनाभिभवेत् विज्ञानहीनम्पुनः कष्टशब्देनवाक्येन, वाक्यधारणाहीनमाविद्धदीर्घसंकुलैर्वाक्यदण्डकैः, प्रतिभाहीनं पुनर्वचनेनानेकविधेनानेकार्थवाचिना, वचन–शक्तिहीनमर्द्धोक्तस्य वाक्यस्याक्षेपेण, अविशारदमपत्रपणेन, कोपनमायासनेन, भीरुंवित्रासनेन, अनवहितं नियमनेन इत्येवमेतैरुपायैरवरमभिभवेत् ॥ २० ॥

तहां न्यून गुणवालों को जीतने के लिये यह उपाय हैं जैसे हीनश्रुत (जिसने बहुत शास्त्र सुनानहीं हो) को बड़े २ सूत्रोंका पाठ करके जीते विज्ञानहीन को कठिनशब्दयुक्त वाक्य बोलकर जीते जिसे धारणा शक्ति न होय उसको बड़े २ कठिन सूत्रों से मिलेहुए बड़े २ वाक्य कहकर जीते प्रतिभारहित को अनेकार्थवाची अनेकवार्त्ता बारंबार कहकर जीते जिसे कहनेकी शक्ति न होय उसको जब वह आधे वचन कहचुके तब बीचही में उसके कहने को खंडन करके जीते जो धृष्ट न होय उसको लज्जित करके जीते क्रोधीको बहुत श्रमित कराके जीते भीरुको भय दिखाकर जीते और असावधान को नियम करके जीते इस प्रकार इन उपायों से न्यून प्रतिवादी को शीघ्र पराजयकरे ॥ २० ॥

विगृह्यकथयेत्युक्त्या युक्तञ्चननिवारयन् । विगृह्यभाषातीव्रंहिकेषांचिद्द्रोहमावहेत् ॥ २१ ॥

विग्रह करके संभाषण करनेमें युक्तिपूर्व्वक बात कहै और युक्तियुक्तवाक्यों को मान लेवे क्योंकि विग्रह करके वार्त्तालाप करनेमें किसी २ से बड़ा द्रोह होजाता है ॥ २१ ॥

नाकार्य्यमस्तिक्रुद्धस्य नावाच्यमपिविद्यते । कुशलानाभिनन्दन्ति कलहंसमितौसताम् ॥ २२ ॥

क्रुद्ध पुरुष को न कुछ अकार्य्य है न अवाच्य है इससे चतुरपुरुष सज्जनों के आहितकारी कलहकी प्रशंसा नहीं करते हैं ॥ २२ ॥

एवं प्रवृत्तेतु वादेप्रागेववादात् तावदिदंकर्त्तंयतेत । सन्धायपरिषदाऽयनभूतमात्मनः प्रकरणमादेशयितव्यम् । यद्वापरस्यभृशदुर्गं स्यात् । पक्षमथवापरस्यभृशंविमुखमानयेत् । परिषदिचोपसंहितायामशक्यमस्माभिर्वक्तुमितितूष्णीमासीदंषैवचतेपरिषद्यथेष्टं यथायो

ग्यं यथाभिप्रायंवादंवादमर्य्यादाञ्च स्थापयिष्यतीत्युक्त्वा ॥ २३ ॥

और जब इस प्रकार वाद होनेवाला होय तब यह करना चाहिये कि वाद होनेके पहलेही सभासदों से सन्धिकरके ऐसा यत्न करै जिससे सभासद लोग वादके लिये वह प्रकरण नियतकरैं जो अपने को अभ्यस्त होय अथवा जो प्रतिवादी के लिये बहुत कठिन होय अथवा जो प्रतिवादी के बहुत विमुख होय फिर यह कहकर चुप होजाय कि सभाके एकत्रित होने पर मैं कुछ नहीं कहसक्ताहूं यह सभाही यथेष्ट यथायोग्य अभिप्राय के अनुसार वाद तथा वादमर्य्यादा का स्थापन करेगी ॥ २३ ॥

तत्रेदं वादमर्य्यादालक्षणं भवति इदम् वाच्यमिदमवाच्यमेवंसतिप राजितोभवतीति इमानि खलुपदानि भिषग्वादमार्गज्ञानार्थमधिगम्यानिभवन्ति । तद्यथावादो, द्रव्यम्, गुणाः, कर्म्म, सामान्यं, विशेषः, समवायः, प्रतिज्ञा, स्थापना, प्रतिष्ठापना, हेतुः, उपनयः, निगमनम्, उत्तरम्, दृष्टान्तः, सिद्धान्तः, शब्दः, प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, औपम्यम्, ऐतिह्यम्, संशयः, प्रयोजनम्, सव्यभिचारम्, जिज्ञासा, व्यवसायः, अर्थप्राप्तिः, सम्भवः, अनुयोज्यम्, अननुयोज्यम्, अनुयोगः प्रत्यनुयोगः, वाक्यदोषः, वाक्यप्रशंसा, छलम्, अहेतुः, अतीतकालम्, उपालम्भः, परिहारः, प्रतिज्ञाहानिः, अभ्यनुज्ञा, हेत्वन्तरम्, अर्थान्तरम्, निग्रहस्थानमिति ॥ २४ ॥

तहां वादमर्य्यादा का यह लक्षण है जैसे यह कहना चाहिये या न कहना चाहिये और ऐसा होने पर पराजय होगा और वादके मार्गको जानने के लिये यह पद वैद्यको अवश्य जानलेने चाहिये जैसे वाद द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय प्रतिज्ञा स्थापना प्रतिष्ठापना हेतु उपनय निगमन उत्तर दृष्टान्त सिद्धान्त शब्द प्रत्यक्ष अनुमान औपम्य ऐतिह्य संशय प्रयोजन सव्यभिचार जिज्ञासा व्यवसाय अर्थप्राप्ति संभव अनुयोज्य अननुयोज्य अनुयोग प्रत्यनुयोग वाक्यदोष वाक्यप्रशंसा छल अहेतु अतीतकाल उपालंभ परिहार प्रतिज्ञाहानि अभ्यनुज्ञा हेत्वन्तर अर्थान्तर तथा निग्रहस्थान ॥ २४ ॥

तत्रतुवादः । वादोनामयःपरस्परेण सहशास्त्रपूर्व्वकम् विगृह्यकथयति । स वादोद्विविधः संग्रहेण; जल्पोवितण्डाच । तत्रपक्षाश्रितयोर्वचनंजल्पः । जल्पविपर्य्ययोवितण्डा । यथैकस्यपक्षः पुनर्भवोऽस्तीतिनास्तीत्यपरस्य । तौ च स्वपक्षं स्वहेतुभिःस्वस्वपक्षंस्थापयतः परपक्षमुद्भावयतःएषजल्पोजल्प

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विपर्य्ययोवितण्डा। वितण्डानाम परपक्षेदोषवचनमात्रमेवमेव॥२५॥

तहां परस्पर विग्रह करके शास्त्रके अनुकूल जो कथन है उसे वाद कहते हैं वह वाद संग्रह से दो प्रकार का है जल्प और वितंडा तिसमें अपने २ पक्षके स्थापनको जल्प कहते हैं और इसके विपरीत को वितंडा कहते हैं जैसे एक का पक्ष है कि पुनर्जन्म है और दूसरे का पक्ष है कि पुनर्जन्म नहींहै यह दोनों अपने २ पक्षों को हेतुओं से सिद्ध करते हैं इसे जल्प कहते हैं इससे विपरीत वितंडा और वितंडामें केवल पराये पक्षमें दोषही दियाजाताहै ॥ २५ ॥

द्रव्यगुणकर्म्मसामान्यविशेषसमवायाः स्वलक्षणैःश्लोकस्थाने पूर्वमुक्ताः ॥ २६ ॥

द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष तथा समवाय इनके लक्षण पहलेही सूत्रस्थान में कहे गये हैं ॥ २६ ॥

अथ प्रतिज्ञानामसाध्यवचनं यथा नित्यःपुरुषइति ॥ २७ ॥

प्रतिज्ञा-जिस बातको सिद्ध करना हो उसे प्रतिज्ञा कहतेहैं जैसे पुरुष नित्यहै ॥ २७॥

अथस्थापना।

स्थापनानामतस्याएवप्रतिज्ञायाहेतुदृष्टान्तोपनयनिगमैःस्थापना,पूर्वहिप्रतिज्ञा, पश्चात्स्थापना।किंह्यप्रतिज्ञातंस्थापयिष्यतियथानित्यःपुरुष इतिप्रतिज्ञाहेतुरकृतकत्वादिति । दृष्टान्तोयथाकाशंतचानित्यम्। उपनयोयथाचाकृतकमाकाशंतथा पुरुषः । निगमनंतस्मान्नित्य इति ॥ २८ ॥

स्थापना—उस प्रतिज्ञाको हेतु दृष्टान्त उपनय तथा निगमनसे स्थापन करने को स्थापना कहते हैं पहले प्रतिज्ञाकीजाती है तदनन्तर उसकी स्थापना कीजाती है क्योंकि विना प्रतिज्ञा किये स्थापनहीं किसबातका किया जाय जैसे नित्यः पुरुषः यह प्रतिज्ञा है इसका हेतु है पुरुष का कृत्रिम न होना इसका दृष्टान्त यह है कि आकाश कृत्रिम नहीं है और वह नित्य है इसका उपनय यह है कि जैसे आकाश कृत्रिम नहीं है वैसेही पुरुष भी कृत्रिम नहीं है और निगमन यह है कि इस्से पुरुष नित्यहै ॥ २८ ॥

अथप्रतिष्ठापनानामयापरप्रतिज्ञायाःप्रतिविपरीतार्थस्थापना । यथा अनित्यपुरुषः इतिप्रतिज्ञाहेतुरैन्द्रियकत्वात् । दृष्टान्तोयथाघट ऐन्द्रियकःसचानित्यः । उपनयो यथाघटस्तथापुरुषः तस्मादनित्य इति ॥ २९ ॥

प्रतिष्ठापना—प्रतिवादी की प्रतिज्ञाके विपरीत स्थापना को प्रतिष्ठापना कहतेहैं जैसे पुरुष अनित्यहै यह प्रतिज्ञाहै इसका हेतु यह है कि इन्द्रियों का विषयहै दृष्टान्त यहहै कि जैसे घट इन्द्रियों का विषयहै और वह अनित्यहै उपनय यहहै किजैसेघट इन्द्रियोंका विषयहै वैसा पुरुष भी इन्द्रियों का विषय है और निगमन यहहै कि इस्से पुरुष अनित्यहै ॥ २९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथ हेतुः।

हेतुर्नामोपलब्धिकारणंतत्प्रत्यक्षमनुमानमैतिह्यमौपम्यमित्येभिर्हेतुभिर्यदुपलभ्यं चात्तत्त्वम् ॥ ३० ॥

हेतु—ज्ञानके कारणको हेतु कहतेहैं प्रत्यक्ष अनुमान औपम्य तथा ऐतिह्य इन हेतुओं से जो ज्ञात होता है उसे तत्त्व कहते हैं ॥ ३० ॥

उपनयोनिगमनञ्चोक्तंस्थापनाप्रतिष्ठापनाव्याख्यायाम् ॥ ३१ ॥

उपनय तथा निगमन यह दोनों स्थापना की व्याख्यामें कहेगये हैं ॥ ३१ ॥

अथउत्तरंनामसाधर्म्योपदिष्टेवाहेतौवैधर्म्यवचनंवैधर्म्योपदिष्टेवासाधर्म्यवचनं यथाहेतुसधर्म्माणोविकाराः शीतकस्यहिव्याधेर्हेतुसाधर्म्यवचनंहिमशिशिरवातसंस्पर्शाइतिब्रुवतःपरोब्रूयाद्धेतुविधर्म्माणोविकाराःयथाशरीरावयवानांदाहौष्ण्यंकोथप्रपचनेहेतुवैधर्म्यंहिमशिशिरवातसंस्पर्शाइति। एतत्सविपर्य्ययमुत्तरम् ॥ ३२ ॥

उत्तर साधर्म्यसे कहे हुए हेतुमें वैधर्म्य कहना और वैधर्म्यसे कहेहुए हेतुमें साधर्म्य कहना यह उत्तर है जैसे हेतुके समान विकारों का धर्म होताहै क्योंकि शीतक व्याधिके जो धर्म हैं वही उसके कारणभूत हिम तथा शिशिर वात स्पर्श के लिये हैं इस प्रकार कहते हुए वादीसे प्रतिवादी कहै कि हेतुके समान विकारोंके धर्म नहीं होते क्योंकि कोथके पकने में शरीरके अङ्गोंमें दाह तथा उष्णता होती है और इसके हेतुभूत हिम तथा शिशिर वात स्पर्श में यह बात नहीं है यह विपर्य्यय सहित उत्तर है ॥ ३२ ॥

अथ दृष्टान्तः—दृष्टान्तोनामयत्रमूर्खविदुषांबुद्धिसाम्यंयोवर्ण्यंवर्णयति। यथाग्निरुष्णो द्रवमुदकंस्थिरापृथिवीआदित्यः प्रकाशकइतियथावादित्यः प्रकाशकस्तथासांख्यवचनं प्रकाशकमिति ॥ ३३ ॥

दृष्टान्त—जिसमें मूर्ख तथा बुद्धिमानों की बुद्धिकी समता होय और जो वर्णनके योग्य बात का वर्णन करे उसे दृष्टान्त कहते हैं जैसे अग्नि उष्णहै जल द्रव है पृथ्वी स्थिर है तथा सूर्य्य प्रकाशक है अथवा जैसे सूर्य्य प्रकाशक है तैसे सांख्यवचन प्रकाशक है ॥ ३३ ॥

अथ सिद्धान्तः—सिद्धान्तोनामयः परीक्षकैर्बहुविधंपरीक्ष्यहेतुभिःसाधयित्वास्थाप्यतेनिर्णयः ससिद्धान्तः। सचोक्तश्चतुर्विधः। सचतुर्विधः सर्वतन्त्रसिद्धान्तः। प्रतितन्त्रसिद्धान्तोऽधिकरणसिद्धान्तोऽभ्युपगमसिद्धान्तइति ३४ ॥

सिद्धान्त—परीक्षकलोग बहुत प्रकारसे परीक्षा करके जिस निर्णय को हेतुओं से सिद्ध करके स्थापन करते हैं उसे सिद्धान्त कहते हैं सिद्धान्त चार प्रकार का होताहै जैसे सर्वतंत्रसिद्धान्त प्रतितन्त्रसिद्धान्त अधिकरण-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धान्त और अभ्युपगम सिद्धान्त ॥ ३४ ॥

तत्रसर्वतन्त्रसिद्धान्तोनामतस्मिंस्तस्मिन्सर्वस्मिंस्तन्त्रेतत्प्रसिद्धंसन्तिनिदानानिसंतिव्याधयःसन्तिसिद्ध्युपायाःसाध्यानामिति॥३५॥

निदान हैं रोग हैं और साध्य रोगों के उपाय हैं यह सब तंत्रोंका मत है इससे ही इसे सर्वतंत्रसिद्धान्त कहते हैं ॥ ३५ ॥

प्रतितन्त्रसिद्धान्तोनाम तस्मिंस्तस्मिंस्तन्त्रेतत्तत्प्रसिद्धंयथान्यत्राष्टौरसाःषडन्यत्र। पञ्चेन्द्रियाणियथान्यत्रषडिन्द्रियाणि। वातादिकृताःसर्वविकारायथान्यत्रवातादिकृताभूतकृताश्चप्रसिद्धाः ॥ ३६ ॥

जो एकही एकतंत्र में प्रसिद्ध होय उसे प्रतितंत्रसिद्धान्त कहते हैं जैसे किसी तंत्र में आठ रस हैं किसी में छःरस हैं किसी तंत्र में पांच इन्द्रिय हैं किसी में छः हैं किसी तंत्र में सब विकार वातादिकृत हैं और किसी तंत्र में वातादिकृत तथा भूतकृत प्रसिद्ध हैं ॥ ३६ ॥

अधिकरणसिद्धान्तोनाम सयस्मिन्नधिकरणेसंस्तूयमानेसिद्धान्यन्यान्यपिअधिकरणानिभवन्ति। यथा नमुक्तःकर्म्मानुबन्धिकंकुरुतेनिस्पृहत्वादितिप्रस्तुतेसिद्धाःकर्म्मफलमोक्षपुरुषप्रेत्यभावाभवन्ति ३७ ॥

जिस अधिकरणके प्रस्ताव में अन्य अधिकरण भी सिद्ध होजायँ उसे अधिकरण सिद्धान्त कहते हैं जैसे मुक्तपुरुष आनुबन्धिक (जिनका सिलसिला चलाजाय) कर्म नहीं करता है क्योंकि वह निस्पृह होता है इस प्रस्ताव में कर्मफल मोक्ष पुरुष तथा पुनर्जन्म सिद्ध होता है ॥ ३७ ॥

अभ्युपगमसिद्धान्तोनामयमर्थमसिद्धमपरीक्षितमनुपदिष्टमहेतुकंवावादकालेऽभ्युपगच्छन्तिभिषजः। तद्यथा,—द्रव्यंनप्रधानमितिकृत्वावक्ष्यामः। गुणःप्रधानमितिकृत्वावक्ष्यामइत्येवमादिश्चतुर्विधःसिद्धान्तः ॥ ३८ ॥

वैद्यलोग वाद के समय में असिद्ध अपरीक्षित उपदेशरहित तथा हेतुरहित जिस बात का अंगीकार करलेते हैं उसे अभ्युपगम सिद्धान्त कहते हैं जैसे द्रव्य प्रधान नहीं है यह मानकर कहेंगे और गुणप्रधान है यह मानकर कहेंगे इत्यादि इस प्रकार चार प्रकार के सिद्धान्त कहेगये ॥ ३८ ॥

शब्दोनामवर्णसमाम्नायःसचतुर्विधः दृष्टार्थश्चादृष्टार्थश्चसत्यश्चानृतश्चेति। तत्रदृष्टार्थस्त्रिभिर्हेतुभिर्दोषाःप्रकुप्यन्तिषड्भिरुपक्रमैश्चप्रशाम्यन्ति। श्रोत्रादिसद्भावेशब्दादिग्रहणमितिअदृष्टार्थः पुनरस्तिप्रेत्यभावोऽस्तिमोक्षइतिसत्योनामयथार्थभूतः। सन्त्यायुर्वेदोपदेशाः। सन्त्युपायाःसाध्यानाम्। सन्त्यारम्भ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फलानीति। सत्यविपर्य्ययाच्चानृतम्॥ ३९॥

शब्द—अक्षरोंके समूहको शब्द कहते हैं दृष्टार्थ तथा अदृष्टार्थ और सत्य तथा मिथ्या यह शब्द के भेद हैं तीन हेतुओं से दोष कुपित होते हैं और छः प्रकार की चिकित्सा से शान्त होते हैं यह दृष्टार्थ शब्द कहलाते हैं क्योंकि इनके अर्थ प्रत्यक्ष में देखे जाते हैं कान आदि के होने से जो शब्दादिकों का ग्रहण करना है वह अदृष्टार्थ कहलाता है जैसे पुनर्जन्म है मोक्ष है इत्यादि आयुर्वेद है साध्य रोगों के उपाय हैं और आरंभके फल हैं यह सत्य शब्द हैं इससे विपरीत मिथ्या शब्द कहलाते हैं॥ ३९॥

अथ प्रत्यक्षम्। प्रत्यक्षंनामतद्यदात्मनापञ्चेन्द्रियैश्चस्वयमुपलभ्यते। तत्रात्मप्रत्यक्षाःसुखदुःखेच्छाद्वेषादयः। शब्दादयस्त्विन्द्रियप्रत्यक्षाः॥ ४०॥

प्रत्यक्ष—जो मनके द्वारा तथा इन्द्रियों के [illegible] स्वयं जानाजाय उसे प्रत्यक्ष कहते हैं सुख दुःख इच्छा तथा द्वेषादिकों का मनसे प्रत्यक्ष होताहै और शब्दादिकों का इन्द्रियों से प्रत्यक्ष होता है॥ ४०॥

अनुमानंनामतर्कोयुक्त्यपेक्षोयथोक्ष्मग्निंजरणशक्त्याबलंव्यायामशक्त्याश्रोत्रादीनिशब्दादिग्रहणेनेन्द्रियाणीत्येवमादिः॥ ४१॥

अनुमान—युक्तिपूर्व्वक जो तर्क करना है उसे अनुमान कहते हैं जैसे पहले कहा गया है कि अग्नि को परिपाकशक्ति से बलको व्यायामशक्ति से और कर्णादि इन्द्रियों को शब्दादिके ग्रहण से जाने इत्यादि॥ ४१॥

अथ औपम्यम्। औपम्यंनामयदन्येनान्यस्यसादृश्यमधिकृत्यप्रकाशनंयथादण्डेनदण्डकस्यधनुषाधनुष्टम्भस्यइष्वासिनाआरोग्यदस्येति॥ ४२॥

औपम्य—एककी सदृशता लेकर जो दूसरे का प्रकाशित करना है उसे औपम्य कहते हैं जैसे दंड की सदृशता से दंडक रोगका ज्ञान होता है धनुष की सदृशता से धानुष्क का ज्ञान होता है और बाण चलाने वाले की सदृशता से वैद्य का ज्ञान होता है॥ ४२॥

अथ ऐतिह्यम्। ऐतिह्यंनामआप्तोपदेशोवेदादिः॥ ४३॥

ऐतिह्य—आप्तोपदेश वेदादिको ऐतिह्य कहते हैं॥ ४३॥

अथ संशयः। संशयोनामसन्दिग्धेष्वर्थेषुअनिश्चयः। यथा किमकालमृत्युरस्तिनास्तीति॥ ४४॥

संशय—संदिग्ध विषयोंमें जो निश्चयकरना है उसे संशय कहते हैं जैसे अकालमृत्यु है या नहीं॥ ४४॥

अथ प्रयोजनम्। प्रयोजनंनामयदर्थमारभ्यन्तआरम्भाः। यथा यद्यकालमृत्युरस्ति ततोहमात्मान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मायुष्यैरुपचरिष्यामि अनायुष्या
णिच परिहरिष्यामि कथंमामका
लमृत्युः प्रसहेतेति ॥ ४५ ॥

प्रयोजन— जिसलिये कार्य्यों का प्रारंभ क्रियाजाता है उसे प्रयोजन कहते हैं जैसे जो अकालमृत्यु है तो मैं आयुके हितकारी व्यवहार करूंगा और आयु के अहितकारी पदार्थों का त्याग करूंगा फिर कैसे अकाल-मृत्यु मुझको होगी ॥ ४५ ॥

अथ सव्यभिचारम् । सव्यभिचारं
नामव्द्यभिचरणम् यथाभवेदिदमौ
षधंतस्मिन्व्याधौ यौगिकमथवाने
ति ॥ ४६ ॥

सव्यभिचार—जिसकी स्थिरता न होय उसे सव्यभिचार कहते हैं जैसे इस रोगमें यह औषध गुणकारी होगी या न भी होगी॥४६॥

अथ जिज्ञासा । जिज्ञासानामपरी
क्षायथाभेषजपरीक्षोत्तरकालसुपदे
दयते ॥ ४७ ॥

जिज्ञासा—परीक्षा करने को जिज्ञासा कहते हैं जैसे औषधियों की परीक्षा आगे कही जायगी ॥ ४७ ॥

अथ व्यवसायः । व्यवसायो नाम
निश्चयः यथावातिकएवायंव्याधि
रिदमेवास्यभेषजमिति ॥ ४८ ॥

व्यवसाय—निश्चय करनेको व्यवसाय कहते हैं जैसे यह रोग वातजही है और यही इसकी औषध है ॥ ४८ ॥

अथार्थप्राप्तिः । अर्थप्राप्तिर्नाम यत्रै
केनार्त्थेनोक्तेन अपरस्यार्त्थस्यानु
क्तस्यसिद्धिः । यथानायंसन्तर्प्पण
साध्यो व्याधिरित्युक्ते भवत्यर्थप्राप्ति
रतर्प्पणसाध्योऽयमिति । नानेन
दिवाभोक्तव्यमिति उक्तेभवत्यर्थप्रा
प्तिर्निशिभोक्तव्यमिति ॥ ४६ ॥

अर्थप्राप्ति—जहां एक बात कहने से दूसरी अनुक्त बात की सिद्धिहोय उसे अर्थप्राप्ति कहते हैं जैसे यह रोग संतर्पणसाध्य नहीं है यह कहने से इस बात की प्राप्ति होती है कि यह रोग अपतर्पणसाध्य है और इसे दिन में न खानाचाहिये इससे यह बात सिद्धहोती है कि रात्रिमें खाना चाहिये ॥ ४९ ॥

अथ सम्भवः । सम्भवोनामयोयतः
सम्भवतिसतस्यसम्भवः । यथाषड्
धातवोगर्भस्यव्याधेरहितं हितमा
रोग्यस्येति ॥ ५० ॥

संभव—[illegible] जिसकी उत्पत्ति होती है वह उसका संभव [illegible]ाता है जैसे षट्धातु गर्भ का संभवहैं अहित[illegible] संभव है और हितसेवन आरोग्य का संभव है ॥५०॥

अथानुयोज्यम् । अनुयोज्यं नाम
यद्वाक्यं वाक्यदोषयुक्तन्तदनुयो
ज्यमुच्यते। सामान्योदाहृतेष्वर्थेषु
वाविशेषग्रहणार्थन्तद्वाक्यमनुयो
ज्यम् । यथा संशोधनसाध्योऽयं
व्याधिरित्युक्ते किं वमनासा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्यः किं विरेचनसाध्यइत्यनुयुज्यते ॥ ५१ ॥

अनुयोज्य–जो वाक्य वाक्यदोषों से युक्त होता है वह अनुयोज्य कहलाता है अथवा सामान्यता से कहेगये विषयोंमें विशेषता जानने के लिये जो वाक्य कहाजाता है वह अनुयोज्य कहलाता है जैसे यह रोग संशोधनसाध्य है यह कहने पर पूछा जाता है कि वमनसाध्यहै अथवा विरेचनसाध्यहै ॥ ५१ ॥

अथाननुयोज्यम् । अननुयोज्यम् नामातो विपर्य्ययेण यथायमसाध्यः ॥ ५२ ॥

अननुयोज्य–जो अनुयोज्य के विपरीत होय उसे अननुयोज्य कहते हैं जैसे यह असाध्य है ॥ ५२ ॥

अथ अनुयोगः । अनुयोगोनाम यत् तद्विद्यानां तद्विद्यैरेवसार्द्धं तन्त्रेतन्त्रैकदेशेवाप्रश्नः प्रश्नैकदेशोवाज्ञानविज्ञानवचनपरीक्षार्थमादिश्यते । अथवानित्यःपुरुषइति प्रतिज्ञातेयत्परः कोहेतुरित्याहसोऽनुयोगः ॥ ५३ ॥

अनुयोग–जो जिस विद्याको जानता होय वह उसी विद्याके जाननेवाले से ज्ञान विज्ञान तथा वचन की परीक्षा के लिये तंत्र अथवातंत्रके किसी विषय में प्रश्न अथवा प्रश्न का एक देश कहता है उसे अनुयोग कहते हैं अथवा पुरुष नित्य है यह प्रतिज्ञा करने पर जो प्रतिवादी पूछता है कि क्या कारण है उसको अनुयोग कहते हैं ॥ ५३ ॥

अथ प्रत्यनुयोगः । प्रत्यनुयोगोनाम अनुयोगस्यानुयोगः । यथा अनुयोगस्यपुनः कोहेतुरिति ॥५४॥

प्रत्यनुयोग–अनुयोग में अनुयोगकरनेको प्रत्यनुयोग कहते हैं जैसे अनुयोगका क्या कारणहै यह कहना ॥ ५४ ॥

अथ वाक्यदोषः । वाक्यदोषोनामयथा खल्वस्मिन्नर्थे न्यूनमधिकमनर्थकमपार्थकं विरुद्धञ्चेति ॥ ५५ ॥

वाक्यदोष– किसी विषय में वाक्यकी न्यूनता अधिकता अनर्थकता अपार्थकता तथा विरुद्धता होय उसे वाक्यदोष कहते हैं ॥ ५५ ॥

अथ न्यूनम् । अत्रहेतूदाहरणोपनयनिगमनानामन्यतमेनापिन्यूनं न्यूनम्भवति यद्वाबहूपदिष्टहेतुकमेकेनसाध्यतेहेतुनातच्च न्यूनंएतानि ह्यन्तरेणप्रकृतोप्यर्थःप्रणश्येत्॥५६॥

न्यून–हेतु उदाहरण उपनय तथा निगमन इनमें से एक भी जिस वाक्य में न होय वह न्यून कहलाता है अथवा जो बात अनेक हेतुओं से सिद्ध होती है उसे एकही हेतुसे सिद्धकरना यह भी न्यूनदोष है क्योंकि उन के विना मुख्य अर्थ भी नष्ट होजाताहै ॥ ५६ ॥

अथआधिक्यम् । आधिक्यंनाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदायुर्वेदे भाष्यमाणे बार्हस्पत्यमौशनसमन्यद्वा प्रतिसम्बंधार्थमुच्यते यद्वा पुनः प्रतिसम्बद्धार्थमपि द्विरभिधीयते, तत्पुनरुक्तत्वादाधिकं, तच्च पुनरुक्तं द्विविधं अर्थपुनरुक्तं शब्द पुनरुक्तञ्च। तत्रार्थपुनरुक्तं नाम यथा भेषजमौषधं साधनमिति, शब्द पुनरुक्तञ्च भेषजं भेषजमिति॥५७॥

आधिक्य—जहाँ आयुर्वेद का विषय कहना उचित है वहाँ बार्हस्पत्य औशनस अथवा अन्य शास्त्रों का संबंध के विनाही कहना अधिकता दोष कहलाता है अथवा संबद्ध काभी दोवार कहना पुनरुक्त दोष से अधिक कहलाता है और पुनरुक्त दो प्रकार का होता है जैसे एक अर्थ पुनरुक्त दूसरा शब्द पुनरुक्त अर्थ पुनरुक्त जैसे भेषज औषध तथा साधन इत्यादि एकार्थ शब्दों का कहना और शब्द पुनरुक्त जैसे भेषज दोबार कहना॥ ५७॥

अनर्थकं नाम यद्वचनमक्षरग्राममात्रमेव स्यात्पञ्चवर्गवन्न चार्थतो गृह्यते॥ ५८॥

जिस वचन में वर्गों के समान अक्षरमात्र होयँ अर्थ कुछ भी न होय उसे अनर्थक कहते हैं॥ ५८॥

अपार्थकं नाम यदर्थवच्च परस्परेणचायुज्यमानार्थं यथा तक्रनक्रवंशवज्रनिशाकरा इति॥ ५९॥

जिस वाक्य में अर्थयुक्त शब्द तो होयँ परन्तु वह परस्पर संलग्न होयँ उसे अपार्थक वाक्य कहते हैं जैसे तक्र नक्र वंश वज्र निशाकर इत्यादि॥ ५९॥

विरुद्धं नाम यद्दृष्टान्तसिद्धान्तसमयैर्विरुद्धं तत्र पूर्वं दृष्टान्तसिद्धान्तावुक्तौ। समयः पुनस्त्रिधा भवति यथायुर्वैदिकसमयो याज्ञियसमयो मोक्षशास्त्रिकसमय इति। तत्रायुर्वैदिकसमयश्चतुष्पादसिद्धिः। आलभ्याय जमानैः पशव इति याज्ञियसमयः। सर्वभूतेष्वहिंसेति मोक्षशास्त्रिकसमयस्तत्र स्वसमयविपरीतमुच्यमानं विरुद्धमिति वाक्यदोषाः॥ ६०॥

जो दृष्टान्त-सिद्धान्त का समय (संकेत अथवा नियम) से विपरीत होय वह विरुद्ध दोष है इन में से दृष्टान्त और सिद्धान्त तो पहले कहेगये हैं और समय जैसे आयुर्वैदिक समय याज्ञिय समय तथा मोक्षशास्त्रिक समय आयुर्वैदिक समय यह है कि चतुष्पाद भेषज की सिद्धि होना याज्ञिय समय यह है कि पशुओं का वधकरना और मोक्षशास्त्रिक समय यह है कि सब प्राणियों की अहिंसा इन में जो अपने समय के विपरीत कहाजाता है वह विपरीत कहलाता है यह वाक्यदोष है॥ ६०॥

वाक्यप्रशंसा नाम यथा अन्यूनमनधिकमर्थवदनपार्थकमविरुद्धमधिगतपदार्थञ्चतद्वाक्यमननुयोज्यमिति प्रशस्यते॥ ६१॥

जो वाक्य न्यूनता अधिकता अनर्थकता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपार्थकता तथा विरुद्धतासे रहित हो और जिसका पदार्थ ज्ञात होय वह वाक्य अननुयोज्य (जिसमें कुछ पूछनेकी आवश्यकता न हो) होने के कारण प्रशंसा कियाजाता है यह वाक्यप्रशंसा कहलाती है ॥ ६१ ॥

छलंनामपरिशठमर्थाभासमनर्थकं वाग्वस्तुमात्रमेव । तद्द्विविधंवाक्छलंसामान्यच्छलञ्च। तत्रवाक्छलंनामयथाकश्चिद्ब्रूयात्नवतन्त्रोऽयंभिषगिति,भिषग्ब्रूयान्नाहंनवतन्त्रएकतन्त्रोऽहमिति । परोब्रूयान्नाहंब्रवीमिनवतन्त्राणितवेति, अथतुनवाभ्यस्तंतेतन्त्रमिति, भिषक्ब्रूयान्नमयानवाभ्यस्तंतन्त्रमनेकशताभ्यस्तंमयातन्त्रमितिवाक्छलम् ॥ ६२ ॥

वक्रतायुक्त अर्थाभास (अर्थ मालूम परै परन्तु कुछ तत्त्व न होय) तथा अपार्थक वाक्यमात्र को छल कहते हैं छल दोप्रकार का होता है एकवाक्छल दूसरा सामान्य छल वाक्छल जैसे कोई कहै कि यह वैद्य नवतंत्र है यह सुनकर वैद्यकहै कि मैं नवतंत्र नहीं हूं एकतंत्र हूं यहसुनकर वह पुरुषकहै कि मैं यह नहीं कहता हूं कि तुम नव तंत्र जानते हो किन्तु मैं यह कहताहूं कि तुमने तंत्र का नव अर्थात् नवीन अभ्यास किया है यहसुनकर वैद्यकहै कि मैंने तंत्र में नवीन अभ्यास नहीं किया है किन्तु सैकड़ोंबार तंत्र में अभ्यास किया है यह वाक्छल कहलाता है ॥ ६२ ॥

सामान्यच्छलंनामयथाव्याधिप्रशमनायौषधमित्युक्तेपरोब्रूयात्सत्सत्प्रशमनायेतिकिन्नुभवानाहसद्रोगः सदौषधंयदिचसत्सत्प्रशमनायभवतितत्रसत्कासःसत्क्षयःसत्सामान्यात्कासःक्षयप्रशमनायभविष्यतीति एतत्सामान्यच्छलम् ॥ ६३ ॥

जैसे औषध से रोग शान्त होता है यह वादी के वचन सुनकर प्रतिवादी कहै कि सत् (अस्ति) से सत् शान्त होता है यह तुम्हारा मत है क्योंकि रोग भी सत् है और औषध भी सत्है और जो सत्से सत् शान्त होता है तो खांसी भी सत् है और क्षयभी सत्है सत् की सामान्यता से तुम्हारे मत में खांसीसे क्षय की शान्तिहोगी यह सामान्य छल है ॥ ६३ ॥

अहेतुर्नामप्रकरणसमःसंशयसमो वर्ण्यसमइति । तत्रप्रकरणसमो नामाहेतुर्यथान्यः शरीरादात्मानित्यइतिपक्षेपरोब्रूयाच्छरीरादन्यआत्मातस्मान्नित्यः शरीरमनित्यमतो विधर्मिणानेनच भवितव्यम् एष चाहेतुर्नहियएवपक्षःसएवहेतुः ६४॥

प्रकरणसम संशयसम तथा वर्ण्यसम यह अहेतुके भेदहैं प्रकरणसम अहेतु जैसे आत्मा शरीर से अन्य है क्योंकि नित्य है इस पक्ष में कोई कहै कि आत्मा शरीर से अन्य है इसलिये नित्य है शरीर अनित्य है और शरीर से आत्मा विधर्मी है (शरीर और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा के धर्म जुदे २ हैं यह अहेतु हुआ क्योंकि जो पक्षहै वही हेतुनहीं होसक्ता॥६४॥

संशयसमोनामाहेतुर्यएवसंशयहेतुः सएवसंशयच्छेदहेतुर्यथा अयमायुर्व्वेदैकदेशमाह किन्वयंचिकित्सकःस्यान्नवेति संशयेपरोब्रूयाद्यस्मादयमायुर्वेदैकदेशमाह तस्माच्चिकित्सकोऽयमिति । नचसंशयस्थेहेतुं विशेषयत्येषचाहेतुः नहि यएवसंशयहेतुः सएवसंशयच्छेदहेतुः॥ ६५॥

संशय सम अहेतु उसको कहते हैं कि जो संशय का हेतुहो वही संशयके नाश का हेतु होय जैसे यह आयुर्वेदके एक देशको कहताहै क्या यह वैद्यहै या नहीं इस संशय में दूसरा कहै कि यह आयुर्वेदके एक देशको कहता है इस्से वैद्य है इसमें संशयके हेतुसे कुछ विशेषता नहीं हुई इस्से यह अहेतुहै क्योंकि जो संशय का हेतुहै वही संशयके नाशका हेतु नहीं होसक्ता॥ ६५॥

वर्ण्यसमोनामाहेतुर्योहेतुर्वर्ण्याविशिष्टः यथापरोब्रूयादस्पर्शत्वाद्बुद्धिरनित्याशब्दवदिति तत्रवर्ण्यः शब्दोबुद्धिरपिवर्ण्यातदुभयवर्ण्याविशिष्टत्वाद्वर्ण्यसमोऽप्यहेतुः६६॥

वर्ण्यसमअहेतु—जैसे जो हेतु वर्ण्यादि में विशेषता न रखताहो वह वर्ण्यसमअहेतु कहलाता है जैसे मतिवादी कहै कि स्पर्श के न होने से बुद्धिअनित्यहै जैसे शब्द यहां शब्द भी वर्ण्य है और बुद्धि भी वर्ण्यहै इस्से दोनों के सम होनेसे वर्ण्यसमअहेतु हुआ॥ ६६॥

अतीतकालम् । अतीतकालंनाम यत्पूर्ववाच्यंतत्पश्चादुच्यतेतत्कालातीतत्वादग्राह्यंभवतिपरंवानिग्रहप्राप्तमनिगृह्यपरिगृह्यपक्षान्तरितंपश्चान्निगृहीतेतत्तस्यअतीतकालत्वान्निग्रहवचनसमर्थंभवतीति॥ ६७॥

अतीतकाल—जो बात पहले कहनी चाहिये वह पीछे कहीजाय वह अतीतकाल कहलाता है ऐसी बातका कालातीत से ग्रहण नहीं कियाजासक्ता है अथवा निग्रह प्राप्तहुये को विना ग्रहण किये अन्यपक्ष का ग्रहण कियाजाय और पीछे से परका ग्रहण कियाजावे तो कालातीत होने से निग्रहवचनसमर्थ होता है॥ ६७॥

उपालम्भोनामहेतोर्दोषवचनंयथा पूर्वमहेतवो हेत्वाभासाव्याख्याताः॥ ६८॥

उपालंभ—हेतुओं के दोष कहने को उपालंभ कहते हैं जैसे पहले हेत्वाभासअहेतु कहेगये हैं॥ ६८॥

परिहारोनामतस्यैवदोषवचनस्यपरिहरणंयथानित्यमात्मनिशरीरस्थेजीवलिङ्गान्युपलभ्यन्तेतस्यचापगमान्नोपलभ्यन्तेतस्मादन्यः शरीरादात्मानित्यःशरीराच्चेति॥६९॥

परिहार—दोषों के मिटाने को परिहार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहतेहैं जैसे आत्माके शरीरमें स्थित होनेपर नित्यही जीवके चिह्न पायेजाते हैं और आत्मा के चलेजाने पर जीवके चिह्न नहीं मालूमहोते हैं इस्से आत्मा शरीरसे अन्य है और नित्य है ॥ ६९ ॥

प्रतिज्ञाहानिः।

प्रतिज्ञाहानिर्नामयःपूर्वंप्रतिगृहीतां प्रतिज्ञांपर्य्यनुयुक्तःपरित्यजतियथा प्राक्प्रतिज्ञांकृत्वानित्यःपुरुषइतिप र्य्यनुयुक्तस्त्वाहानित्यइति ॥ ७० ॥

प्रतिज्ञाहानि—पहले कीहुई प्रतिज्ञाको किसी के प्रश्न करने पर छोड़देने को प्रतिज्ञाहानि कहते हैं जैसे किसीने पहले प्रतिज्ञाकी कि पुरुष अनित्यहै और जब प्रतिवादी ने उससे प्रश्नकिया तब उसने कहा नित्यहै ॥ ७० ॥

अभ्यनुज्ञानामयइष्टानिष्टाभ्युपगमः ॥ ७१ ॥

अभ्यनुज्ञा—इष्ट तथा अनिष्टके मानलेने को अभ्यनुज्ञा कहते हैं ॥ ७१ ॥

हेत्वन्तरंनामप्रकृतहेतौवाच्येयद्विकारहेतुमाह ॥ ७२ ॥

हेत्वन्तर—जहां प्रकृतिका हेतु कहना उचित होय वहां विकृतिका हेतु कहनेको हेत्वन्तर कहते हैं ॥ ७२ ॥

अर्थान्तरंनामज्वरलक्षणेवाच्येप्रमेहलक्षणमाह ॥ ७३ ॥

अर्थान्तर—जहां ज्वरका लक्षण कहना हो वहां प्रमेहका लक्षण कहाजाय उसे अर्थान्तर कहते हैं ॥ ७३ ॥

निग्रहस्थानंनामपराजयप्राप्तिस्तच्च त्रिरुक्तस्यवाक्यस्यअविज्ञानंपरिष दिविज्ञानवत्याम् । यद्वाअननुयोज्यस्यानुयोगोअनुयोज्यस्यचाननुयोगः ॥ ७४ ॥

निग्रहस्थान—सभाके जानने पर तीन बार कहेगये वाक्यके न जानने को जो पूछने के योग्य नहीं है उसके पूछने को और जो पूछने के योग्य है उसके न पूछने को निग्रहस्थान कहते हैं ॥ ७४ ॥

प्रतिज्ञाहानिरभ्यनुज्ञाकालातीतवचनमहेतुर्न्यूनमतिरिक्तंव्यर्थकंपुनरुक्तंव्यर्थमनर्थकंपुनरुक्तंविरुद्धंहेत्वन्तरमर्थान्तरंनिग्रहस्थानमितिवाद मर्य्यादापदानियथोद्देशमनिर्दिष्टानि ॥ ७५ ॥

प्रतिज्ञाहानि अभ्यनुज्ञा कालातीत वचन अहेतु न्यूनता अधिकता अनर्थकता अपार्थकता पुनरुक्त विरुद्ध हेत्वन्तर अर्थान्तर तथा निग्रहस्थान यहसब वादके मार्ग पद उद्देशसहित कहेगये ॥ ७५ ॥

वादस्तुखलुभिषजांवर्त्तमानोवर्त्तेतायुर्वेदएवनान्यत्र ॥ ७६ ॥

वैद्यों का वर्त्तमान वाद वैद्यकही में होना चाहिये अन्य विषयोंमें नहीं ॥ ७६ ॥

तत्रहिवाक्यप्रतिवाक्यविस्ताराःकेवलाश्चोपपत्तयश्चसर्वाधिकरणेषु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताःसर्वाःसम्यगवेक्ष्यावेक्ष्यसर्वंवा कथंब्रूयान्नाप्रकृतिकमशास्त्रमपरीक्षितमसाधकमाकुलमज्ञापकंवासर्वञ्च हेतुमद्ब्रूयाद्धेतुमन्तोह्यकलुषाःसर्व एववादविग्रहाश्चिकित्सितेकारणभूताः। प्रशस्तबुद्धिवर्द्धकत्वात्सर्वारम्भसिद्धिंहिआवहतिअनुपहताबुद्धिः॥ ७७॥

उसवाद में संपूर्ण अधिकरणों की उपपत्ति और वाक्य तथा प्रसिवाक्यों के विस्तार होते हैं उन सब को देख २ कर वाक्यकहै प्रकृति से विरुद्ध शास्त्र से विपरीत परीक्षारहित साधकरहित आकुल (जिसमें विपयमिले हुए होयँ) तथा ज्ञापकरहित वाक्य न कहै जो कहै वह सब हेतुयुक्त कहै प्रशस्तबुद्धिके वर्द्धक होने के कारण हेतुयुक्त तथा निर्दोष संपूर्ण ही वादवाक्यही वैद्यक शास्त्र में कारणभूत हैं क्योंकि अनुपहत (कहीं रुकेनहीं) बुद्धि संपूर्ण कार्यों को सिद्ध करती है॥ ७७॥

इमानिखलुतावदिहकानिचित्प्रकरणानिब्रूमः। ज्ञानपूर्वकंकर्मणांसमारम्भंप्रशंसन्तिकुशलाः॥ ७८॥

यहांपर कुछ प्रकरण कहताहूं क्योंकि कुशललोग ज्ञानपूर्व्वक कार्य के प्रारंभ की प्रशंसा करते हैं॥ ७८॥

ज्ञात्वाहिकारणकरणकार्य्ययोनिकार्य्यकार्य्यफलानुबन्धदेशकालप्रवृत्त्युपायान्सम्यगभिनिर्वर्त्यमानःकार्य्याभिनिर्वृत्तौइष्टफलानुबन्धकंकार्य्यमभिनिर्वर्त्तयतिअनतिमहताप्रयत्नेनकर्त्ता॥ ७९॥

कारण करण कार्य्ययोनि कार्य्य कार्य्यफल अनुबन्ध देश काल प्रवृत्ति तथा उपाय इन को जानकर अच्छे प्रकार से कार्य्य करताहुआ कर्त्ता थोड़े ही यत्न से कार्य्य के इष्ट फल को सिद्ध करता है॥ ७९॥

तत्रकारणंनामतद्यत्करोतिसएवहेतुःकर्त्तासः॥ ८०॥

कारण—जो कार्य कर्त्ताहै उसे कारण कहते हैं उसी को हेतु तथा कर्त्ता भी कहते हैं॥ ८०॥

करणंपुनस्तद्यदुपकरणायोपकल्पते कर्त्तुःकार्य्याभिनिर्वृत्तौप्रयतमानस्य॥ ८१॥

करण—कार्य्यकी सिद्धि में जो कर्त्ताकी सहायता के लिये व्यवहार किया जाता है उसे करण कहते हैं॥ ८१॥

कार्य्ययोनिस्तुसायाविक्रियमाणाकार्य्यत्वमापद्यते॥ ८२॥

कार्य्ययोनि—जो विकार को प्राप्त होकर कार्यत्व को प्राप्त होजाय उसे कार्य्ययोनि कहते हैं (जैसे घट कार्य्य है और उसकी योनि मृत्तिका है)॥ ८२॥

कार्य्यन्तुतद्यस्याभिनिर्वृत्तिमभिसन्धायप्रवर्त्ततेकर्त्ता॥ ८३॥

कार्य्य—जिसकी सिद्धिके लिये कर्त्ता प्रवृत्त होता है उसे कार्य्य कहते हैं॥ ८३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कार्यफलंपुनस्तद्यत्प्रयोजनाकार्य्या भिनिर्वृत्तिरिष्यते ॥ ८४ ॥

कार्य्यफल—जिस प्रयोजनके लिये कार्य की सिद्धि चाहीजाय उसे कार्य्यफल कहते हैं ॥ ८४ ॥

अनुबन्धस्तुकर्त्तारमवश्यमनुबध्ना तिकार्य्यादुत्तरकालंकार्य्यनिमित्तः शुभोवाप्यशुभोवाभावः ॥ ८५ ॥

अनुबन्ध—कार्य्यसिद्धहोने के उपरान्त कार्य्यनिमित्तक जो शुभ अथवा अशुभभाव कर्त्ताको अवश्य प्राप्त होय उसे अनुबन्ध कहते हैं ॥ ८५ ॥

देशस्त्वधिष्ठानम् ॥ ८६ ॥

जिस स्थानमें कार्य्य कियाजाय उसे देश कहते हैं ॥ ८६ ॥

कालःपुनःपरिणामः ॥ ८७ ॥

और परिणामको काल कहते हैं ॥ ८७ ॥

प्रवृत्तिस्तुखलुचेष्टाकार्य्यार्थासैवक्रि याकर्मयत्नःकार्य्यसमारम्भश्च॥८८॥

प्रवृत्ति—कार्य्य के निमित्त जो चेष्टाकी जाती है उसे प्रवृत्ति कहते हैं क्रिया कर्म यत्न तथा कार्य्यसमारंभ यह प्रवृत्तिके नामहैं ॥८८॥

उपायाःपुनःकारणादीनांसौष्ठवम् अभिसन्धानञ्चसम्यक्कार्य्यकार्य्य फलानुबन्धोपायवर्ज्यानां कार्य्या णामभिनिर्वर्त्तकइत्यतोअभ्युपायः कृतेनोपायार्थोऽस्तिनचविद्यतेतदा त्वेकृताच्चोत्तरकालंफलंफलाच्चानुब न्धइतिव्याख्यातंदशविधम्॥८९॥

उपाय—कार्य्य—कार्य्यफल तथा अनुबन्ध इन के सिवाय जो कारणादिकों का समीचीनत्व तथा विधान उसे उपाय कहते हैं उपाय से ही कार्य्य सिद्ध होता है जब कार्य्य होगया तो उपाय का कोई प्रयोजन नहीं है और कार्य्य की उत्पत्ति के समय कार्य्य की विद्यमानता नहीं होती और कार्य्य होजाने के उपरान्त फल तथा अनुबन्ध होता है इससे कार्य्य कार्य्यफल तथा अनुबन्धको छोड़कर अन्य कारणादिकों के विधानको उपाय कहते हैं इसप्रकार कारणादि दशप्रकरण कहे गये ॥ ८९ ॥

अग्रेपरीक्ष्यंततोऽनन्तरकार्य्यार्थाप्र वृत्तिरिष्टातस्माद्भिषक्कार्य्यंचिकी र्षुःप्राक्कार्य्यसमारम्भात्परीक्षया केवलंपरीक्ष्यंपरीक्ष्यार्थकर्मसमारब्धुं तकर्त्तुम् ॥ ९० ॥

पहले परीक्षा करनी चाहिये तदनन्तर कार्य्य में प्रवृत्ति करनी चाहिये इससे कार्य्य करने की इच्छा करता हुआ वैद्य कार्य्यारंभ के पहले परीक्षा से परीक्ष्य परीक्षा करने के योग्य की परीक्षा करके कार्य्य का प्रारंभ करे ॥ ९० ॥

तत्रचेद्भिषगभिषग्वाभिषजंकश्चि त्पृच्छेद्वमनविरेचनास्थापनानुवास नशिरोविरेचनानिप्रयोक्तुकामेन भिषजाकतिविधयापरीक्षयाकतिवि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धमेवपरीक्ष्यंकश्चात्रपरीक्ष्यविशेषः कथञ्चपरीक्षितव्यंकिंप्रयोजनाचप रीक्षाक्कचवमनादीनांप्रवृत्तिःक्कचनि वृत्तिःप्रवृत्तिनिवृत्तिसंयोगेचकिंनै ष्ठिकंकानिचवमनादीनांभेषजद्र व्याणिउपयोगंगच्छन्तीति। सए वंपृष्टोयदिमोहयितुमिच्छेद्ब्रूयादे नंबहुविधाहिपरीक्षातथापरीक्ष्यवि धिभेदः। कतमेनविधिभेदप्रकृत्य न्तरेणपरीक्ष्यस्यभिन्नस्यभेदाग्रंभवा न्पृच्छतिआख्यायमानंनेदानींभव तोऽन्येनविधिभेदप्रकृत्यन्तरेणभि न्नयापरीक्षयाअन्येनवाविधिभेदप्रकृ त्यन्तरेणपरीक्ष्यस्यभिन्नस्याभिल षितमर्थंश्रोतुमहमन्येनपरीक्षाविधि भेदेनअन्येनवाविधिभेदप्रकृत्यन्त रेणपरीक्ष्यंभित्त्वार्थमाचक्षाणइच्छां प्रपूरयेयमिति ॥ ९१ ॥

जो कार्य्यारंभ में वैद्य अथवा कोई अन्य पुरुष वैद्य से पूछे कि वमन विरेचन आस्थापन अनुवासन तथा शिरोविरेचन का मयोगकरने की इच्छाकरनेवाला वैद्य कै मकार की परीक्षाओं से कै मकारकी परीक्षा करने के योग्य वस्तुओं की परीक्षा करे-परीक्षा करने के योग्य वस्तुओं की क्या विशेषता है किस मकार से परीक्षा करनी चाहिये परीक्षा का क्या मयोजन है वमनादिकों की कहां मवृत्ति होती है और कहां निवृत्ति होती है जहां मवृत्ति निवृत्ति दोनों के लक्षण मिलेहुए होयँ वहां क्याकरना चाहिये और कौनसी औषधियां वमनादिकों में व्यवहार की जाती हैं इस मश्न को सुनकर यदि मश्नकर्त्ता को मोहित करना चाहै तो कहै कि अनेक मकार की परीक्षा हैं और अनेकमकार की परीक्ष्य वस्तु हैं आप किसमकार के भेद कारणान्तर से परीक्ष्य के भेदों को पूछना चाहते हैं इस समय आप के सिवाय भेदों के मकृत्यन्तर से परीक्ष्य के भेदों को कोई नहीं सुनना चाहताहै इससे परीक्षाविधि के भेदों के मकृत्यन्तरसे कौन से परीक्ष्यभेद को कहकर मैं आपकी इच्छा को पूर्ण करूं ॥ ९१ ॥

सयद्युत्तरंब्रूयात्तत्परीक्ष्योत्तरंवाच्यं स्याद्यथोक्तंप्रतिवचनमवेक्ष्यसम्यग्य दितुब्रूयान्नचैनंमोहयितुमिच्छेत्प्राप्त न्तुवचनकालंमन्येतकाममस्मैब्रूया दाप्तमेवनिखिलेन ॥ ९२ ॥

यह सुनकर जो मश्नकर्त्ता कहै कि अच्छे मकारसे विचारकर ऐसा उत्तर दो जिस में मेरा समाधान होय यह सुनकर फिर उसको मोहित न करना चाहै और उचित उत्तर देने का समय जानकर बहुत स्पष्ट यथार्थ उत्तर देवे ॥ ९२ ॥

द्विविधापरीक्षाज्ञानवतांप्रत्यक्षमनु मानञ्च, एतत्तुद्वयमुपदेशश्चपरीक्षा त्रयमेवमेषाद्विविधापरीक्षात्रिविधा वासहोपदेशेन ॥ ९३ ॥

ज्ञानवानों की मत्यक्ष तथा अनुमान यह दो परीक्षा होती हैं और उपदेश को भी इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के साथ मिलाने से तीनपरीक्षा होती हैं इस प्रकार दो प्रकार की अथवा तीनप्रकार की परीक्षा हुई ॥ ९३ ॥

दशविधन्तुपरीक्ष्यंकारणादियदुक्त मग्रेतदिहभिषगादिषुसंसार्य्यसन्दर्शयिष्यामः;इहकार्य्यप्राप्तौकारणं भिषक्, करणंपुनर्भेषजं,कार्य्ययोनि र्धातुवैषम्यं, कार्य्यंधातुसाम्यं,कार्य्य फलं सुखावाप्तिः, अनुबन्धआयुः, देशोभूमिरातुरश्च, कालःसंवत्सर श्चातुरावस्थाच, प्रवृत्तिःप्रतिकर्मस मारम्भः;उपायोभिषगादीनांसौष्ठ वमभिसन्धानञ्चसम्यगिहापिअस्यो पायस्यविषयःपूर्वेणैवोपायविशेषे णव्याख्यातइतिकारणादीनिदश। दशसुभिषगादिषुसंसार्य्यसन्दर्शि तानि, तथैवानुपूर्व्याएतद्दशविधं परीक्ष्यमुक्तञ्च ॥ ९४ ॥

पहले जो कारणादिक कहेगये हैं वही दशप्रकार के परीक्ष्य हैं उनको यहां वैद्यादिकोंमें फैलाकर दिखाते हैं जैसे यहां वैद्यक शास्त्र में कार्य्यप्राप्तिका कारण वैद्य है करण भेषज है कार्य्ययोनि धातुओं की विषमता है कार्य्य धातुओंकी समता है कार्य्यफल सुख प्राप्ति है अनुबन्ध आयु है देश भूमि तथा रोगी है काल संवत्सर तथा रोगी की अवस्था है प्रवृत्ति चिकित्साका प्रारंभ है और उपाय वैद्यादिकों का विधान तथा अपने कार्य्य के अनुकूल होना है यहां भी उपाय का विषय जैसा पहले कहागया है वैसाही जानना चाहिये इसप्रकार कारणादिक दश वैद्यादि दशों में फैलाकर कहे गये इसीक्रम से यह दशप्रकारके परीक्ष्य कहेगये हैं॥९४॥

तस्ययोयःपरीक्ष्यविशेषोयथायथाच परीक्षितव्यःससतथा तथा व्याख्यास्यते। कारणंभिषगित्युक्तमग्रेतस्य परीक्षाभिषङ्नामसयोभिषतियःसूत्रार्थप्रयोगकुशलः यस्यचायुःसर्वथाविदितम् ॥ ९५ ॥

इन में जिस २ की जौन २ सी परीक्षा करनी चाहिये वह आगे व्याख्यान की जाती है वैद्य कारण है यह जो पहले कहागया है उस की परीक्षा कहीजाती है जो चिकित्सा करे जो सूत्रार्थ के प्रयोग में चतुर होय और जो आयु को अच्छे प्रकार से जानता होय उसे वैद्य कहते हैं ॥ ९५ ॥

यथावत्सर्वधातुसाम्यं चिकीर्षन्नात्मानमेवादितः परीक्षेत। गुणेषु गुणतःकार्य्याभिनिर्वृत्तिंपश्यन्कच्चिदहमस्यकार्य्यस्यअभिनिर्वर्त्तने समर्थोनवेति ॥ ९६ ॥

अच्छे प्रकार से धातुओं के सम करने की इच्छाकरनेवाला वैद्य गुणों से कार्य्य सिद्ध होते हैं यह जानकर पहले अपनेही गुणों की परीक्षाकरे कि मैं इस कार्य्य के करने में समर्थहूं अथवा नहीं ॥ ९६ ॥

तत्रेमेभिषग्गुणायैरुपपन्नोभिषग्धातुसाम्याभिनिर्वर्त्तने समर्थोभवति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तद्यथापर्य्यवदातश्रुततापरिदृष्टकर्मतादाक्ष्यंशौचं जितहस्तताउपकरणवत्तासर्वेन्द्रियोपपन्नताप्रकृतिज्ञताप्रतिपत्तिज्ञताचेति ॥ ९७ ॥

तिस में यह गुण वैद्य के हैं कि जिनसे वैद्य धातुओंके सम करने को समर्थ होता है जैसे अच्छे प्रकार से शास्त्र का जानना दृष्टकर्मता (तजरबेकारी) चतुरता शौच जितहस्तता (फुरतीहोनेमें, हाथ की सफाई) सामग्रीयुक्त होना संपूर्ण इन्द्रियों से युक्त होना प्रकृतिका जानना और प्रतिपत्तिज्ञता (अवश्यकर्त्तव्यहै इस बातका जानना) ॥ ९७ ॥

करणंपुनर्भेषजम् । भेषजंनामतद्यदुपकरणायोपकल्प्यते, भिषजोधातुसाम्याभिनिर्वृत्तौप्रयतमानस्य, विशेषतश्चोपायान्तरेभ्यस्तद्द्विविधं व्यपाश्रयभेदाद्दैवव्यपाश्रयं युक्तिव्यपाश्रयञ्चातत्रदैवव्यपाश्रयमन्त्रौषधिमणिमङ्गलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवास–दान–स्वस्त्ययन–प्रणिपातगमनादि । युक्तिव्यपाश्रयंसंशोधनोपशमनेचेष्टाश्चदृष्टफलाःएतच्चैवभेषजमङ्गभेदादपिद्विविधंद्रव्यभूतमद्रव्यभूतञ्चतत्रयदद्रव्यभूतंतदुपायाभिप्लुतम् । उपायोनामभयदर्शनविस्मापनक्षोभणहर्षणभर्त्सनवधबन्धस्वप्नसंवाहनादिरमूर्त्तोभावोयथोक्ताः सिद्ध्युपायाश्च । यत्तुद्रव्यभूतंतद्वमनादिषुयोगमुपैति ॥ ९८ ॥

भेषज करण है यह जो कहागया उसकी परीक्षा कहते हैं धातुओं को सम करने के लिये यत्न करतेहुए वैद्य के लिये जो उपकरणरूप हो उसे भेषज कहते हैं वह आश्राय भेद से दो प्रकार की हैं जैसे दैवव्यपाश्रय तथा युक्तिव्ययाश्रय तहां मंत्र औषध मणि मंगल बलि उपहार होम नियम प्रायश्चित्त उपवास दान स्वस्त्ययन तथा प्रणिपात गमनआदि यह दैवव्ययाश्रय भेषज हैं और संशोधन उपशमन तथा प्रत्यक्ष फलदायक चेष्टा यह युक्तिव्ययाश्रय भेषज हैं युक्तिव्ययाश्रय भेषज अंगभेद से दो प्रकार की होती है एक द्रव्यभूत दूसरी अद्रव्यभूत तिसमें अद्रव्यभूत भेषज उपायरूप है भय दिखाना आश्चर्यितकराना क्षोभकराना हर्षित करना डाटना ताड़ना करना बन्धन स्वप्न तथा अंगमर्द्दन आदिक जो रूपरहित भाव और अनेक प्रकार की सिद्धि यह उपाय कहलाते हैं और द्रव्यभूत भेषज का वमनादि में व्यवहार कियाजाता है ॥ ९८ ॥

तस्यापिइयं परीक्षाइदमेवंप्रकृत्याएवंगुणमेवंप्रभावमस्मिन्देशेजातमस्मिन्नृतौएवंगृहीतमेवंनिहितमेवमुपस्कृतमनयामात्रयायुक्तमस्मिन्रोगे एवंविधस्यपुरुषस्यैतावन्तंदोषमपकर्षयतिउपशमयतिवाअन्यदपिचैवंविधंभेषजंभवेत्तच्चानेनान्येन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाविशेषेणयुक्तमिति ॥ ९९ ॥

उसकी यह परीक्षा है इस औषध की यह प्रकृति है इस प्रकार के गुण हैं यह प्रभाव है अमुकदेश और अमुकऋतु में यह उत्पन्नहुई है इस प्रकार यह लीगई इस प्रकार रक्खीगई इस प्रकार बनाईगई अमुकऋतु में इस प्रकार के पुरुषको इसकी इतनी मात्रा देनेसे इतना दोष निकलता है अथवा शान्त होता है और इसी प्रकारकी और भी औषध थी उस में यह २ विशेषता थीं ॥ ९९ ॥

कार्य्ययोनिर्धातुवैषम्यं तस्यलक्षणं विकारागमः परीक्षात्वस्यविकारप्रकृतेश्चैवोनातिरिक्तलिङ्गविशेषावेक्षणं विकारस्यचसाध्यासाध्यमृदुदारुण लिङ्गविशेषावेक्षणमिति ॥ १०० ॥

धातुओं की विषमता कार्य्ययोनि है रोगों का होनाही धातुओं की विषमताका लक्षण है रोगों के दोषों की न्यूनता तथा अधिकता के लक्षण विशेषों का देखना और रोगोंकी साध्यता असाध्यता मृदुता तथा दारुणताके लक्षण विशेषों का देखना यह इस की परीक्षाहै ॥ १०० ॥

कार्य्यंधातुसाम्यम्, तस्यलक्षणंविकारोपशमः, परीक्षात्वस्यरुगपशमनंस्वरवर्णयोगः शरीरोपचयःबलवृद्धिरभ्यवहार्य्याभिलाषोरुचिराहारकालेभ्यवहृतस्य चाहृतस्यचाहारस्य सम्यग्जरणंनिद्रालाभोयथाकालं वैकारिकाणां स्वप्नानामदर्शनं सुखेनचप्रतिबोधनं वातमूत्रपुरीषरेतसाम्मुक्तिः । सर्व्वाकारैर्मनोबुद्धीन्द्रियाणाञ्च अव्यापत्तिरिति ॥ १०१ ॥

धातु साम्यकार्य्य है रोगों का शान्तहोनाही धातुसाम्यका लक्षण है और यह इस की परीक्षाहै जैसे रोग का दूरहोना स्वर तथा वर्णका ठीक होना शरीर की पुष्टता बल की वृद्धि भोजन पर इच्छा रुचि भोजन के समय पर अच्छे प्रकार खाये हुए आहारका अच्छे प्रकार पचजाना समयपर निद्रा आना विकार से होनेवाले स्वप्नों का न दिखाई पड़ना समय पर जगना वायुमूत्र पुरीष तथा वीर्य्य का अच्छे प्रकार से निकलना और मन बुद्धि तथा इन्द्रियों का सब प्रकार से स्वस्थ होना ॥ १०१ ॥

कार्य्यफलंसुखावाप्तिस्तस्यलक्षणंमनोबुद्धीन्द्रियशरीरतुष्टिः ॥ १०२ ॥

कार्य्यफल—सुखकी प्राप्ति है मन बुद्धि इन्द्रिय तथा शरीर इनका तुष्ट होना तिसका लक्षण है ॥ १०२ ॥

अनुबन्धस्तुखलुआयुस्तस्यलक्षणं प्राणैःसंयोगः ॥ १०३ ॥

अनुबन्ध आयु है प्राणों के साथ शरीर का संयोग होना आयु का लक्षण है ॥ १०३ ॥

देशस्तु भूमिरातुरश्चतत्रभूमिपरीक्षाआतुरस्य परिज्ञानहेतोर्वास्यादौषधपरिज्ञानहेतोर्वा । तत्रतावदियमातुरपरिज्ञानहेतोः । तद्यथा अयं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कस्मिन्भूमिदेशेजातः संवृद्धोऽव्याधितोवेतितस्मिंश्च भूमिदेशेमनुष्याणामिदमाहारजातमिदंविहारजातमेतद्बलमेवं विधम् सत्त्वमेवं विधं सात्म्यमेवंविधोदोषोभक्तिरियमिमेव्याधयोहितमिदमहितमिदमितिप्रायोग्रहणेन ॥ १०४ ॥

भूमि तथा रोगी यह दोनों चिकित्सा शास्त्र में देश कहलाते हैं इनमें भूमि परीक्षा रोगी के ज्ञानके लिये अथवा औषध के परिज्ञान के लिये होती है इनमें से रोगी के ज्ञान के लिये यह भूमि परीक्षा होती है जैसे यह मनुष्य किस देश में उत्पन्न हुआहै किस देशमें इसने वृद्धि पाई है और किस देश में रोगी हुआ उस देशमें मनुष्यों का यह आहार है यह विहारहै इस प्रकारका सत्त्व है इतना बल है इस प्रकार का सात्म्यहै इस प्रकार का दोष होताहै यह भक्ति होती है यह रोग होते हैं यह हित होताहै और यह अहित होताहै इन्हीं बातोंकी प्रायः परीक्षा करनी चाहिये ॥ १०४ ॥

औषधपरिज्ञानहेतोस्तु कल्पेषुभूमिपरीक्षावक्ष्यते ॥ १०५ ॥

और औषध के परिज्ञान के लिये कल्पस्थान में भूमिपरीक्षा कही जायगी ॥ १०५ ॥

आतुरस्तु खलुकार्य्यदेशस्तस्यपरीक्षाआयुषःप्रमाणज्ञानहेतोर्वास्याद्बलदोषप्रमाणज्ञानहेतोर्वा ॥ १०६ ॥

रोगी देश है इसकी परीक्षा आयु के प्रमाण जानने के लिये अथवा बल तथा दोषके प्रमाण के जानने के लिये होती है इनमें बल तथा दोषों का प्रमाण जानने के लिये इस निमित्त परीक्षा करनी चाहिये ॥ १०६ ॥

तत्र तावदियं बलदोषविशेषप्रमाणापेक्षासहसाहिं अतिबलमौषधमपरीक्षकप्रयुक्तमल्पबलमातुरमभिघातयेत्, नहि अतिबलान्याग्नेयसौम्यवायवीयान्यौषधान्यग्निक्षारशस्त्रकर्म्माणि । वा शक्यन्तेऽल्पबलैःसोढुमविषह्यातितीक्ष्णवेगत्वाद्धिसद्यः—प्राणहराणिस्युः ॥ १०७ ॥

कि बल दोष प्रमाण की अपेक्षा विना परीक्षा किये अल्प बलवान् रोगी को जो अधिक बलकारी औषध दीजाय तो वह शीघ्रही उसको नष्टकर डालती है क्योंकि स्वल्प बलवान् रोगी अधिक बलयुक्त अधिक अग्नि गुणवाली अधिक जल गुणवाली तथा अधिक वायु गुणवाली औषधियों को अथवा अग्नि क्षार तथा शस्त्र कर्म को नहीं सहसक्ता है किन्तु यह औषधी अपने असह्य तीक्ष्ण वेग से रोगी के शीघ्रही प्राण हरलेती हैं ॥ १०७ ॥

एतच्चैव कारणमवेक्ष्यमाणाहीनबलमातुरमविषादकरैर्मृदुसुकुमारप्रायैरुत्तरोत्तरगुरुभिरविभ्रमैरनात्ययिकैश्चोपचरन्त्यौषधैः विशेषतश्च नारीः ताह्यनवस्थितमृदुविकृतविक्लवहृदयाःप्रायःसुकुमारानार्य्योऽबलाःपरमसंस्तभ्याश्च ॥ १०८ ॥

इसी कारण से वैद्यलोग विषाद को नहीं उत्पन्न करने वाली मृदु तथा सुकुमार उत्तरो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चर गुरु भ्रान्तिरहित और किसी प्रकार का अपकार नहीं करनेवाली औषधियों से हीन बलवाले रोगियों की चिकित्सा करते हैं और विशेष करके स्त्रियों की इस प्रकार चिकित्सा करते हैं क्योंकि स्त्रियां प्रायः सुकुमार निर्बल तथा पराश्रित होती हैं और उनका हृदय अनवस्थित मृदु तुच्छ तथा शीघ्रही विकल होनेवाला होता है ॥ १०८ ॥

तथा बलवति बलवद्व्याधिपरिगते स्वल्पबलमौषधमपरीक्षकप्रयुक्तम साधकंभवतितस्मादातुरम्परीक्षेत प्रकृतितश्च विकृतितश्च सारतश्च संहननतश्च प्रमाणतश्च सात्म्य तश्च सत्त्ववतश्चाहारशक्तितश्चव्या यामशक्तितश्चवयस्तश्चेति॥१०६॥

इसी प्रकार बलवान् रोगी को अथवा बलवान् रोग से युक्त रोगी को बिना परीक्षा किये स्वल्प बलयुक्त औषध देने से कुछ उपकार नहीं होता इससे प्रकृति विकृति सार संहनन प्रमाण सात्म्य सत्त्व आहारशक्ति व्यायामशक्ति तथा अवस्था के द्वारा रोगी की परीक्षा करनी चाहिये ॥ १०९ ॥

बलप्रमाणविशेषग्रहणहेतोः तत्रा मीप्रकृत्यादयोभावाः । तद्यथा— शुक्रशोणितप्रकृतिं कालगर्भाश यप्रकृतिमातुराहारविहार—प्रकृतिं महाभूतविकारप्रकृतिञ्च गर्भशरी रमपेक्षते । एताहि येनयेनदोषेणा धिकतमेनैकेनानेकतमेन वा स मनुबध्यन्ते तेन तेन दोषेणगर्भोऽ नुबध्यते । ततः सासादोषप्रकृतिरु च्यते मनुष्याणां गर्भादिप्रवृत्ता। तस्माद्वातलाः प्रकृत्याकेचित् पित्तलाः केचिच्छ्लेष्मलाः केचित्संसृष्टाःसमधातवः प्रकृत्याकेचिद्भवन्ति तेषांहि लक्षणानि व्याख्यास्यामः ॥ ११० ॥

इससे बल का प्रमाण विशेष जाना जाता है प्रकृति आदिकों का भाव यह है जैसे शुक्र शोणितप्रकृति—कालगर्भाशयप्रकृति—रोगीके आहार विहारकी प्रकृति तथा महाभूत विकार प्रकृति यह गर्भमें जो शरीर होताहै उस के अनुसार होती हैं जो २ अत्यन्त अधिक अनेक अथवा एक दोष इनके साथ सम्बन्ध रखता है वही गर्भ से भी सम्बन्ध रखता है इससे उन२ दोषोंकी प्रकृति मनुष्योंकी प्रकृति कहलाती है इसी कारण से कोई मनुष्य स्वभावसेही गर्भसे उत्पन्न होतेही वातल (अधिक वातवाले) होते हैं कोई पित्तल (अधिक पित्तवाले) कोई श्लेष्मल (अधिक कफवाले) कोई संसृष्ट (जिनमें मिले हुए दोष होयँ) और कोई स्वभावसेही समधातुवाले होते हैं उनके लक्षण कहताहूं ॥ ११० ॥

श्लेष्माहि स्निग्धश्लक्ष्णमृदुमधुर सारसान्द्रमन्दस्तिमितगुरुशीतविज्जलाच्छः। अस्यस्नेहाच्छ्लेष्मलाः स्निग्धाङ्गाः, श्लक्ष्णत्वाच्छ्लक्ष्णाङ्गाः, मृदुत्वाद्दृष्टिसुखसुकुमाराव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दातशरीराः, माधुर्य्यात्प्रभूतशुक्र व्यवायापत्याः, सारत्वात् सारसंहतस्थिरशरीराः, सान्द्रत्वादुपचित परिपूर्णसर्व्वगात्राः, मन्दत्वान्मन्द चेष्टाहारविहाराः, स्तैमित्यादशीघ्रारम्भक्षोभविकाराः, गुरुत्वात्साराधिष्ठितगतयः शैत्यादल्पक्षुत्तृष्णा–सन्ताप–स्वेददोषाः, विज्जलत्वात् सुश्लिष्टसारबन्धसन्धानाः तथाच्छत्वात्प्रसन्नदर्शनाननाः प्रसन्नस्निग्धवर्णस्वराश्च भवन्ति। तएवम् गुणयोगाच्छ्लेष्मलाबलवन्तोवसुमन्तो विद्यावन्त ओजस्विनः शान्ताआयुष्मन्तश्चभवन्ति ॥ १११ ॥

कफ स्निग्ध श्लक्ष्ण मृदु मधुर सार सान्द्र मन्दस्तिमित गुरु शीतल विज्जल तथा अच्छ होता है कफके स्निग्ध होनेसे अधिककफ वाले पुरुषोंके अङ्ग स्निग्ध होते हैं कफके श्लक्ष्ण होने से अधिक कफवालों के अङ्ग श्लक्ष्ण होते हैं कफके मृदु होने से अधिक कफ वालोंके शरीर देखनेमें सुन्दर सुकुमार तथा श्वेत होते हैं कफके मधुर होने से अधिक कफ वाले पुरुषोंके वीर्य्य अधिक होता है मैथुनशक्ति अधिक होती है तथा सन्तति बहुत होती है कफके सारगुणसे अधिक कफ वाले पुरुषोंके शरीरसार (स्थिरांश) से संहत (खिंचे हुए, तथा स्थिर होतेहैं कफके सान्द्र (गाढ़े) होने से अधिक कफवालोंके संपूर्ण अङ्ग पुष्ट तथा पूर्ण होते हैं कफ के मन्द होने से अधिक कफवाले पुरुष चेष्टा आहार तथा विहारमें शिथिल होते हैं कफके स्तिमित होने से अधिक कफवाले पुरुष आरम्भ क्षोभ तथा विकार में शीघ्रतायुक्त नहीं होते कफके गुरु होने से अधिक कफ वाले पुरुष सारयुक्त तथा स्थिरगतिवाले होते हैं कफ के शीतल होने से अधिक कफवाले पुरुषों को क्षुधा तृषा सन्ताप स्वेद तथा दोष स्वल्प होते हैं कफके विज्जल (सचिक्कण) होनेसे अधिक कफवाले पुरुषों की संधियां अच्छे प्रकारसे जुड़ी हुई तथा दृढ़ होती हैं और कफ के अच्छ (साफ़) होने से अधिक कफवाले पुरुषों के नेत्र तथा मुख प्रसन्न और निर्मल होते हैं और वर्ण तथा स्वर उत्तम होते हैं इस प्रकारके गुण होनेसे अधिक कफ वाले पुरुष बलवान् धनवान् विद्वान् ओजस्वी शान्त तथा आयुष्मान् होते हैं ॥ १११ ॥

पित्तमुष्णं तीक्ष्णंद्रवं विस्रमम्लंकटुकञ्च। तस्यौष्ण्यात्पित्तलाभवन्तिउष्णासहाःशुष्कसुकुमारावदातगात्राः प्रभूतपिप्लुव्यङ्गतिलकपिडकाः क्षुत्पिपासावन्तः क्षिप्रवलीपलितखालित्यदोषाः। प्रायोमृद्वल्पकपिलश्मश्रुलोमकेशाःतैक्ष्ण्यात्तीक्ष्णपराक्रमाः। तीक्ष्णाग्नयः प्रभूताशनपानाःक्लेशसहिष्णवोदन्दशूकाः द्रवत्वाच्छिथिलमृदुसन्धिबन्धमांसाःप्रभूतसृष्टस्वेदमूत्रपुरीषा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्चविस्रत्वात् । प्रभूतपूतिवक्षःकक्षस्कन्धास्यशिरःशरीरगन्धाःकटुम्लत्वादल्पशुक्रव्यवायापत्याः। त एवं गुणयोगात्पित्तलामध्यबला मध्यायुषोमध्यज्ञानविज्ञानवित्तोपकरणवन्तश्च भवन्ति ॥ ११२ ॥

पित्त उष्ण तीक्ष्ण द्रव विस्र अम्ल तथा कटु होताहै पित्तके उष्ण होनेसे अधिक पित्त वाले पुरुष उष्णता को नहीं सहसक्ते हैं उन का शरीर सुकुमार तथा शुद्ध होता है उनके लहसन व्यङ्ग तिल तथा फुंसी अधिक होती हैं उनको क्षुधा तथा तृषा अधिक होती है शीघ्रही झुर्री बालोंका पकना तथा गंजापनदोष होजाता है प्रायः डाढ़ी रोम तथा केश कोमल स्वल्प तथा भूरे रंगके होते हैं पित्तके तीक्ष्ण होनेसे अधिक पित्तवाले पुरुष तीक्ष्ण पराक्रम तथा अग्निवाले होते हैं भोजन पान अधिक करते हैं क्लेश को नहीं सहसक्तेहैं पित्त के द्रव होने से अधिक पित्तवाले पुरुषोंकी संधि तथा मांस शिथिल तथा कोमल होते हैं उनके स्वेद मूत्र तथा पुरीष अधिक होता है पित्तके विस्र (कच्चे मांसकी सी दुर्गन्धियुक्त) होने से अधिक पित्तवाले मनुष्योंके वक्षःस्थल बगल शिर तथा शरीर के अन्य अङ्गोंमें दुर्गन्धि आती है और पित्तके कटु तथा अम्ल होने से अधिक पित्तवाले पुरुषों के वीर्य्य अल्प होता है मैथुनशक्ति न्यून होती है तथा सन्तति भी कम होती है इस प्रकारके गुणहोने से अधिक पित्तवाले पुरुष मध्यबली मध्य आयु और ज्ञान विज्ञान धन तथा उपकरण (सामान) युक्त होते हैं ॥ ११२ ॥

वातस्तुरूक्षलघुचलबहुशीघ्रशीतपरुषविशदस्तस्यरौक्ष्याद्वातलारूक्षापचिताल्पशरीराःप्रततरूक्षक्षामभिन्नसक्तजर्जरस्वराजागरूकाश्चभवन्तिलघुत्वाच्चलघुचपलगतिचेष्टाहारविहाराः चलत्वादनवस्थितसन्ध्यक्षिभ्रूहन्वोष्ठजिह्वाशिरःस्कन्धपाणिपादाःबहुत्वाद्बहुप्रलापकण्डराशिराप्रतानाः शीघ्रत्वाच्छीघ्रसमारम्भक्षोभविकाराः शीघ्रोत्रासरागविरागाःश्रुतग्राहिणः अल्पस्मृतयश्चशैत्याच्छीतासहिष्णवः प्रततशीतकोद्वेपकस्तम्भाः पारुष्यात्परुषकेशश्मश्रुरोमनखदशनवदनपाणिपादाङ्गावैशद्यात्स्फुटिताङ्गावयवाःसततसन्धिशब्दगामिनश्चभवन्ति।तएवंगुणयोगाद्वातलाः प्रायेणाल्पबलाश्चाल्पायुषश्चाल्पापत्याश्चाल्पसाधनाश्चाधन्याश्च ॥११३॥

वायु रूक्ष लघु चल बहु शीघ्र शीतल परुष तथा विशद होती है वायुके रूक्ष होने से अधिक वायुवाले पुरुषों का शरीर रूखा तथा वृद्धिरहित होता है स्वर फैलाहुआ रूखा क्षीण भिन्न तथा जर्जर होता है इन को निद्रा कम आतीहै वायुके लघु होनेसे अधिक वात वाले पुरुष गति चेष्टा आहार और व्यवहार में चपल होते हैं वायु के चल होने से अधिक वातवाले पुरुषों की सन्धि हड्डी भ्रुकुटी जाव-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ड़ा ओष्ठ जिह्वा शिर कन्धे हाथ तथा पैर दृढ़ नहीं होते वायु के बहुत होने से अधिक वातवाले पुरुष बड़े बकवादी होते हैं उनके शरीर में कण्डरा (एकप्रकारकी नसें) तथा शिराओं के जालसे दिखाई देते हैं वायु के शीघ्र होने से अधिक वातवाले पुरुष आरंभ क्षोभ विकार भय राग तथा द्वेषमें शीघ्रतायुक्त होते हैं सुनीहुई वातको मानलेते हैं तथा स्वल्प स्मृतिवाले होते हैं वायुके शीतल होने से अधिक वातवाले पुरुष शीत को नहीं सहसक्ते उनको शीत कम्प तथा स्तंभ बहुत होता है वायु के परुष (खुरखुरे) होने, से अधिक वातवाले पुरुषों के केश डाढ़ी रोम नख दाँत मुख पैर तथा अन्य अंग खुरखुरे होते हैं वायु के विशद होने से अधिक वातवाले पुरुषों के अंग फटेहुए होते हैं और जब वह चलते हैं तब उनकी सन्धियों में शब्द होते हैं इस प्रकारके गुण होनेसे प्रायः अधिक वातवाले पुरुष अल्प बलवान् अल्पायु निर्धन तथा स्वल्पसाधन (थोड़ासामान) वाले होते हैं और उन के सन्तति कमहोती है ॥ ११३ ॥

संसर्गात्संसृष्टलक्षणाः सर्वगुणस मुदितास्तुसमधातवः इत्येवंप्रकृति तःपरीक्षेत ॥ ११४ ॥

दोषोंके मिलेहुए होने से लक्षण भी संसृष्ट (मिलेहुए होते) हैं और जिस पुरुष में यह सब गुण होयँ उसे समधातु जानना चाहिये ॥ ११४ ॥

विकृतितश्चेति । विकृतिरुच्यतेविकारः । तत्रविकारहेतुदोषदूष्यप्रकृतिदेशकालबलविशेषैर्लिङ्गतश्च परीक्षेत । नह्यन्तरेणहेत्वादीनांबलविशेषं व्याधिबलविशेषोपलब्धिः यस्यहिव्याधेर्दूष्यदोषप्रकृतिदेशकालसाम्यंभवतिमहच्चहेतुलिङ्गबलंसव्याधिर्बलवान्तद्विपर्य्ययाच्चाल्पबलः । मध्यबलस्तुदूष्यादीनामन्यतमसामान्याद्धेतुलिङ्गमध्यबलत्वाच्चउपलभ्यते ॥ ११५ ॥

विकृति से परीक्षा करने का वर्णन करते हैं जैसे विकार को विकृति कहते हैं हेतु दूष्य दोष प्रकृति देश तथा काल इनके बल की विशेषता से तथा लक्षणोंसे विकार की परीक्षा करनी चाहिये क्योंकि हेत्वादिकों के बलविशेषको विनाजाने रोग का बलविशेष नहीं जानाजाताहै जिस रोगमें दूष्य दोष प्रकृति देश तथा कालकी समता होय और हेतु बल तथा लक्षणों की अधिकता होय उस रोग को बलवान् जाननाचाहिये इससे विपरीत को अल्प बलवान् जाननाचाहिये जिस रोग में दूष्यादिकों में किसी की समता होय और हेतु तथा लक्षण मध्यम बलवान् होयँ उस रोग को मध्यम बलवान् जानना चाहिये ॥ ११५ ॥

सारतश्चेतिसाराणिअष्टौपुरुषाणांबलमानविशेषज्ञानार्थमुपदिश्यन्ते। तद्यथा,—त्वग्रक्तमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रसत्त्वानि । तत्रस्निग्धश्लक्ष्णमृदुप्रसन्नसूक्ष्माल्पगम्भीरसुकुमारलोमासप्रभाचत्वक्साराणा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्‌। सासारतासुखसौभाग्यैश्वर्य्यो पभोगबुद्धिविद्यारोग्यप्रहर्षणानि आयुष्यत्वञ्चाचष्टे ॥ ११६ ॥

सार से परीक्षा करने का वर्णन मनुष्यों के बल के प्रमाण विशेषको जाननेके लिये आठसार कहेजाते हैं जैसे त्वचा रुधिर मांस मेदा अस्थि मज्जा वीर्य्य तथा सत्त्व इनमें से जिन पुरुषों की त्वचा सार होती है उनकी त्वचा स्निग्ध श्लक्ष्ण कोमल निर्मल सूक्ष्म अल्पगंभीर सुकुमार रोमयुक्त तथा कान्ति-युक्तसी होती है और जिन मनुष्योंकी त्वचा सार होती है उनके सुख सौभाग्य ऐश्वर्य्य भोगबुद्धि विद्या आरोग्य हर्ष तथा आयु को जताती है ॥ ११६ ॥

कर्णाक्षि-मुख-जिह्वानासौष्ठपाणि पादतल-नख-ललाटमेहनानिस्निग्धरक्तानिश्रीमन्तिभ्राजिष्णूनिर क्तसाराणाम्‌ । सासारतासुख मुदग्रतांमेधांमनस्वित्वंसौकुमार्य्य मनतिबलमक्लेशासहिष्णुत्वञ्चाच ष्टे ॥ ११७ ॥

जिन मनुष्यों के रुधिरसार होताहै उनके कान नेत्र मुख जिह्वा नासिका ओष्ठ हथेली पैरोंके तलुए नख ललाट तथा लिंग स्निग्ध रक्तवर्णयुक्त सुन्दर तथा दीप्तियुक्त होते हैं रक्तसार पुरुषों के सुख उच्चता मेधा मनस्विता सुकुमारता अधिक बल न होना और क्लेशको न सह सकना यहस्वभावहै॥ ११७॥

शंख–ललाट–कृकाटिकाक्षिगण्ड हनुग्रीवास्कन्धोदरकक्षवक्षः-पाणि पादसन्धयःस्थिरगुरुशुभमांसोपचि तामांससाराणाम्‌ । सासारताक्षमां धृतिमलौल्यंवित्तंविद्यांसुखमार्जव मारोग्यंबलमायुश्चदीर्घमाचष्टे११८॥

जिन पुरुषोंके मांससार होता है उनके शंख (मस्तक की हड्डी) ललाट कृकाटिका (शिर और ग्रीवा की सन्धिका पिछलाभाग) नेत्र कपोल जावड़ा ग्रीवा कन्धे वक्षःस्थल वगल उर हाथ पैर तथा सन्धि यह सब अंगस्थिर तथा सुन्दर मांस से भरे हुए होते हैं क्षमा धैर्य्य निर्लोभता धन विद्या सुख सरलता आरोग्य बल तथा आयु यह मांससार वालों के अधिक होते हैं ॥ ११८ ॥

वर्णस्वरनेत्रकेशलोमनखदन्तौष्ठ मूत्रपुरीषेषुविशेषतःस्नेहोमेदः सा राणाम्‌ । सासारतावित्तैश्वर्य्यसु खोपभोगप्रदानान्यार्जवंसुकुमारोप चारतामाचष्टे॥ ११९ ॥

जिन पुरुषों के मेदासार होती है उन के वर्ण स्वर नेत्र केश रोम नख दांत ओष्ठ मूत्र तथा पुरीष यह विशेष करके स्निग्ध होते हैं मेदासारवाले पुरुष धनवान् ऐश्वर्य्य-वान् सुखी भोगयुक्त दानी सरल तथा सुकुमार होते हैं ॥ ११९ ॥

पार्ष्णिगुल्फजान्वरत्निजत्रुचिबुक शिरःपर्व्वस्थूलाः स्थूलास्थिनखद न्ताश्चास्थिसारास्ते महोत्साहाः। क्रियावन्तश्च क्लेशसहाःसारास्थिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीराभवन्ति आयुष्मन्तश्च॥१२०॥

जिन पुरुषों के अस्थिसार होते हैं उनके एड़ी गट्टे घुटने अरत्नि (कुहनीसे छंगुली तकके भाग) जत्रु (कन्धे की सन्धि) ठुड्डी शिर पोरुए हड्डी नख तथा दांत यह सब स्थूल होते हैं अस्थिसार पुरुष बड़े उत्साही बहुतकार्य्य करनेवाले क्लेश सहने वाले स्थिर शरीरवाले तथा दीर्घायु होतेहैं॥१२०॥

तन्वङ्गा बलवन्तःस्निग्धवर्णस्वराः स्थूलदीर्घवृत्तसन्धयश्चमज्जासारा स्ते दीर्घायुषोबलवन्तः॥ १२१॥

जिन पुरुषों के मज्जासार होती है उनके अंग कृश होते हैं बल अधिक होता है वर्ण तथा स्वरस्निग्ध होते हैं और शरीर की सन्धियां स्थूल दीर्घ तथा गोल होती हैं मज्जासार पुरुष दीर्घायु तथा बलवान् होते हैं॥ १२१॥

श्रुतविज्ञानवित्तापत्यसम्मानभाज श्चसौम्याः सौम्यप्रेक्षिणश्चशीरपूर्णलोचनाइवप्रहर्षबहुलाः स्निग्ध वृत्तसारसमसंहतशिखरिदशनाःप्रसन्नस्निग्धवर्णस्वरा भ्राजिष्णवो महास्फिजश्च शुक्रसाराःतेस्त्रीप्रियाःप्रियोपभोगाबलवन्तः॥१२२॥

जिन पुरुषों के वीर्य्यसार होता है वह शास्त्र ज्ञान धन तथा सन्ततियुक्त होते हैं मानी तथा सौम्य होते हैं सौम्यतासे देखते हैं ऐसे प्रसन्न रहते हैं कि मानों उनके नेत्रों में दुग्धही भराहुआ है उनके दांत स्निग्ध सम पुष्ट तथा नुकीले होते हैं वर्ण निर्मल तथा स्निग्ध होता है स्वर मधुर तथा गंभीर होता है नितम्ब बहुत बड़ेहोते हैं और वह कान्तियुक्त होते हैं वह लोग स्त्रियों को बहुतप्रिय होते हैं स्त्रियों को उनके साथ भोग करने में बड़ा आनन्द होता है और वह बड़े बलवान् होते हैं॥ १२२॥

सुखैश्वर्य्यारोग्यवित्तसम्मानापत्य भाजः स्मृतिमन्तोभक्तिमन्तः कृत ज्ञाप्राज्ञाःशुचयोमहोत्साहा दक्षाधीराः समरविक्रान्तयोधिनः त्यक्तविषादाः सुव्यवस्थितागम्भीरबुद्धिचेतसः कल्याणाभिनिवेशिनश्चसत्त्व साराः॥ १२३॥

जिन पुरुषों का सत्त्वसार होता है वह सुखी ऐश्वर्य्यवान् नीरोग धनवान् मानी स्मृतिमान् भक्तिमान् कृतज्ञ प्राज्ञ पवित्र बड़े उत्साही चतुर धीर समर में अत्यन्त पराक्रमसे युद्ध करनेवाले खेदरहित स्थिर गंभीरबुद्धि तथा चित्तवाले और कल्याणकारी विषयों में रुचिकारी होतेहैं॥१२३॥

तेषां स्वलक्षणैरेवगुणाव्याख्याताः॥ १२४॥

इन सब सारोंके लक्षणों सेही गुणभी जान लेने चाहिये॥ १२४॥

तत्र सर्व्वैःसारैरुपेताःपुरुषाभवन्त्यतिबलाः परंगौरवयुक्ताः क्लेशसहाः सर्व्वारम्भेष्वात्मनिजातप्रत्ययाःकल्याणाभिनिवेशिनः स्थिरसमाहि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तशरीराःसुसमाहितगतयः सानुनादस्निग्धगम्भीरमहास्वराः सुखैश्वर्य्यवित्तोपभोगसम्मानभाजोमन्दजरसोमन्दविकाराः प्रायस्तुल्यगुणविस्तीर्णापत्याः चिरजीविनश्च॥१२५॥

जो पुरुष संपूर्ण सारों से युक्त होते हैं वह अत्यन्त बलवान् अत्यन्त गौरवयुक्त क्लेश सहने वाले सब कार्य्यों में अपने को समर्थ जानने वाले कल्याणकारी विषयों में रुचि करने वाले स्थिर तथा सुडौल शरीर वाले सुन्दर गतिवाले प्रतिध्वनियुक्त स्निग्ध तथा गंभीर महास्वर वाले सुखी ऐश्वर्य्यवान् धनी भोगयुक्त मानी वृद्धावस्था में बहुत शिथिल न होने वाले स्वल्प रोग वाले अपनेही समान गुणयुक्त बहुत सन्तान वाले और दीर्घायु होते हैं॥१२५॥

अतोविपरीतास्त्वसाराः॥१२६॥

इस से विपरीत जो हैं वह असार कहलाते है॥१२६॥

मध्यानांमध्यैःसारविशेषैर्गुणविशेषाव्याख्याताः। इतिसाराण्यष्टौ पुरुषाणांबलप्रमाणविशेषज्ञानार्थानि॥१२७॥

जिन पुरुषों में सारों के गुण मध्यम होयँ उनको मध्यमसार जानना चाहिये इस प्रकार पुरुषों के बलके प्रमाणविशेषके जाननेकेलिये आठ सार कहे गये हैं॥१२७॥

कथंनुशरीरमात्रदर्शनादेव भिषक् मुह्येदयमुपचितत्वाद्बलवानयंअल्पबलः कृशत्वान्महाबलवानयंमहाशरीरत्वादयमल्पशरीरत्वादल्पबलइति। दृश्यन्तेह्यल्पशरीराःकृशाश्चैकेबलवन्तः तत्रपिपीलिकाभारहरणवत्सिद्धिः। अतश्चसारतः परीक्षेतइत्युक्तम्॥१२८॥

केवल शरीर को देखकर यह स्थूल है इस कारण बलवान् होगा यह कृश है इस से निर्बल होगा इसका बड़ा शरीर है यह बलवान् होगा इसका छोटा शरीर है यह निर्बल होगा इस प्रकार वैद्य मोहित न होय इसी लिये सार से परीक्षा करनी चाहिये यह कहागया क्योंकि ऐसा देखाजाता है कि कोई २ छोटे तथा कृश शरीर वाले भी बलवान् होते हैं जैसे चेंटी अपने शरीर से भी अधिक भारको ले चलती है॥१२८॥

संहननतश्चेतिसंहननंसंघातःसंयोजनमित्येकोऽर्थः॥१२९॥

संहनन से परीक्षा करनी चाहिये इसका वर्णन संहनन संघात तथा संयोजन यह एकार्थवाचक शब्द हैं॥१२९॥

तत्रसमसुविभक्तास्थिसुबद्धसंधिसुनिविष्टमांसशोणितं सुसंहतंशरीरमित्युच्यते। तत्रसुसंहतशरीराः पुरुषाबलवन्तो विपर्य्ययेणअल्पबलाः प्रवरावरमध्यत्वात् संहननस्य मध्यबलाभवन्ति॥१३०॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिसमें जिस शरीर में संपूर्ण अस्थि सम तथा अच्छे प्रकार से विभक्त होयँ सन्धियां अच्छे प्रकार से बद्ध होयँ रुधिर तथा मांस अच्छे प्रकार से भरा हुआ होय उस शरीर को सुसंहत कहते हैं सुसंहत शरीर वाले पुरुष बलवान् होते हैं इस से विपरीत स्वल्प बलवान् होते हैं और इन लक्षणों के न्यून होने से मध्यम बलवान् होते हैं ॥ १३० ॥

प्रमाणतश्चेतिशरीरप्रमाणंपुनर्यथा स्वेनांगुलिप्रमाणेनोपदेक्ष्यते। उत्सेधविस्तारायामैर्यथाक्रमम् ॥ १३१ ॥

प्रमाण से परीक्षा करने का वर्णन—अपनी अंगुलियों के प्रमाण से शरीर की उंचाई दीर्घता तथा विस्तार का क्रमसे उपदेश किया जाता है ॥ १३१ ॥

तत्रपादौचत्वारिषट्चतुर्दशचाङ्गुलानि, जंघेत्वष्टादशांगुलेषोडशांगुलिपरिक्षेपे, जानुनीचतुरंगुलेषोडशांगुलिपरिक्षेपे, त्रिंशदंगुलपरिक्षेपावष्टादशांगुलावूरू, वृषणौषडंगुलदीर्घौअष्टांगुलपरिणाहौ,शेफः षडंगुलदीर्घंपञ्चांगुलपरिणाहं, द्वादशांगुलपरिणाहोभगः, षोडशांगुलविस्ताराकटी, दशांगुलंवस्तिशिरः, दशांगुलविस्तारंद्वादशांगुलमुदरं,दशांगुलविस्तीर्णेद्वादशांगुलायामेपार्श्वे द्वादशांगुलविस्तारंस्तनान्तरंद्व्यंगुलंस्तनपर्यन्तं,चतुर्विंशत्यंगुलविशालं द्वादशांगुलोत्सेधमुरःद्व्यंगुलंहृदयम्,अष्टांगुलौ स्कन्धौ,षडंगुलावंसौ, षोडशांगुलौबाहू,पञ्चदशांगुलौपाणी,हस्तौ द्वादशांगुलौ,कक्षौअष्टांगुलौ, त्रिकंद्वादशांगुलोत्सेधम्, अष्टादशांगुलोत्सेधंपृष्ठं,चतुरंगुलोत्सेधाद्वाविंशत्यंगुलपरिणाहाशिरोधरा,द्वादशांगुलोत्सेधंचतुर्विंशत्यंगुलपरिणाहमाननं,पञ्चांगुलमास्यं,चिबुकौष्ठकर्णाक्षिमध्यनासिकाललाटानि, चतुरंगुलानि,षोडशांगुलोत्सेधंद्वात्रिंशदंगुलपरिणाहंशिरइति पृथक्त्वेनाङ्गावयवानांमानमुक्तंकेवलंपुनःशरीरमंगुलिपर्वाणिचतुरशीतिस्तदायामविस्तारसमंसमुच्यते ॥ १३२ ॥

तिसमें पैरों की उंचाई चार ४ अंगुल विस्तार छः ६ अंगुल तथा दीर्घता १४ अंगुल दोनों टखने अठारह अंगुल के होते हैं और १६ अंगुल की उनकी गुलाई होती है घुटने ४ अंगुल के होते हैं गुलाई १६ अंगुल की होती है जांघ १८ अंगुल की लंबी और उसकी गुलाई ३० अंगुल की होती है अंडकोश ६ अंगुल के लम्बे और गुलाई ८ अंगुल की होती है लिंग ६ अंगुल का लंबा और ५ अंगुल की उसकी गुलाई होती है योनि १२ अंगुलकी होती है कटिका विस्तार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१६ अंगुल वस्ति का ऊर्ध्वभाग १० अंगुल का पेट १२ अंगुल का लंबा और १० अंगुल का चौड़ा होताहै पसलियां १२ अंगुल लम्बी तथा १० अंगुल चौड़ी होती हैं स्तनों का मध्यभाग १२ अंगुल का चौड़ा होता है स्तनोंके किनारे २ अंगुलके होते हैं वक्षःस्थल २४ अंगुल चौड़ा तथा १२ अंगुल ऊंचा होता है हृदय २ अंगुल का कन्धे आठ २ अंगुल के और अंश छः अंगुल के होते हैं भुजा १६ अंगुलकी पहुंचा १५ अंगुलका हाथ बारह२ अंगुल के वगल आठ २ अंगुल की त्रिक (पीठकी रीड़के नीचे तीन गांठ जो होती हैं) वारह अंगुल की होती है पीठ ८ अंगुल ऊंची होतीहै ग्रीवा ४ अंगुल ऊंची तथा २२ अंगुल गोलहोती है मुख (चेहरा)१२ अंगुल ऊंचा और २४ अंगुल का विस्तारवाला मुख ५ अंगुल का ठोढ़ी ओष्ठ कान नेत्र कान नेत्रों का मध्यभाग नासिका तथा ललाट यह चार २ अंगुलके होते हैं शिर १६ अंगुल ऊंचा और ३२ अंगुल विस्तृत होता है इस प्रकार संपूर्ण अंगों का अलग २ प्रमाण कहा या सब शरीर ४ अंगुलका होताहै जिस शरीर की लंबाई तथा चौड़ाई ठीक होय वह सम कहलाता है ॥ १३२ ॥

तत्रायुर्बलमोजः सुखमैश्वर्य्यंवित्त मिष्टाश्चापरेभावाभवन्त्यायत्ताःप्रमा णवतिशरीरेविपर्य्ययस्तुहीनेऽधि केवा ॥ १३३ ॥

आयु बल ओज सुख ऐश्वर्य्य धन तथा अन्य इष्ट पदार्थ प्रमाणयुक्त शरीरमें होते हैं और प्रमाणकी न्यूनता तथा अधिकता होनेमें इन सब बातों की विपरीतताहोती है॥१३३॥

सात्म्यतश्चेति। सात्म्यंनामतद्यत्सा तत्येनोपयुज्यमानमुपशेतेतत्रयेघृ तक्षीरतैलमांसरससात्म्याःसर्वरस सात्म्याश्चतेबलवन्तःक्लेशसहाश्चि रजीविनश्चभवन्ति । रूक्षनित्याः पुनरेकरससात्म्याश्चयेतेप्रायेणाल्प बलाश्चाक्लेशसहाअल्पायुषोऽल्पसा धनाश्चभवन्ति ॥ १३४ ॥

सात्म्य से परीक्षा करने का वर्णन—जो वस्तु सदैव सेवन करनेसे हितकारी होय उसे सात्म्य कहते हैं घी दूध तैल तथा मांसरस जिन पुरुषों को सात्म्य होता है और संपूर्ण रस जिनको सात्म्य होते हैं वह पुरुष बलवान् क्लेश सहने में समर्थ तथा चिरंजीवी होते हैं जो पुरुष नित्य रूखा भोजन करते हैं और जिनको एकही रस सात्म्य होता है वह प्रायः स्वल्प बलवान् क्लेश सहने में असमर्थ अल्पायु तथा अल्पसाधन वाले होते हैं॥ १३४ ॥

व्यामिश्रसात्म्यास्तुयेतेमध्यबलाः सात्म्यनिमित्ततः ॥ १३५ ॥

जिन पुरुषों को पूर्वोक्त वस्तु मिली हुई सात्म्य होती हैं वह निमित्तसे मध्यबलवान् होते हैं ॥ १३५ ॥

सत्त्वतश्चेति । सत्त्वमुच्यतेमनस्त च्छरीरस्यतन्त्रकमात्मयोगात्तत्रि विधंबलभेदेनप्रवरंमध्यमवरमिति। अतश्चप्रवरमध्यावरसत्त्वाश्चपुरुषाभ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वन्ति । तत्रप्रवरसत्त्वाःसत्त्वसाराः सारेषुउपदिष्टाःस्वल्पशरीराह्यपिते निजागन्तुनिमित्तासुमहतीष्वपि पीडास्वव्यग्राद्दृश्यन्तेसत्त्वगुणवैशेष्यात् ॥ १३६ ॥

सत्त्वसे परीक्षा करने का वर्णन—मन को सत्त्व कहते हैं आत्माके संयोगसे मन शरीर का प्रेरक होताहै वह मन बलके भेदसे तीन प्रकार का है जैसे श्रेष्ठ मध्यम तथा हीन इससे श्रेष्ठ सत्त्ववाले मध्य सत्त्ववाले तथा हीन सत्त्ववाले पुरुष होते हैं इनमें से श्रेष्ठ सत्त्वपुरुष कम होते हैं उनका वर्णन सार परीक्षामें कियागया है और श्रेष्ठ सत्त्व पुरुष चाहै स्वल्प शरीर वाले भी होयँ परन्तु वह दोषज तथा आगन्तुज बड़ी २ पीड़ाओं में भी सत्त्व की विशेषता से व्यग्र नहीं होते ॥ १३६ ॥

मध्यसत्त्वास्तुपरानात्मनिउपनिधायसंस्तम्भयन्तिआत्मनाआत्मानंपरैःवापिसंस्तभ्यन्तेहीनसत्त्वास्तुनात्मनानचपरैःसत्त्वबलंशक्यन्तेउपस्तम्भयितुंमहाशरीराह्यपितेस्वल्पानामपिवेदनानामसहाद्दृश्यन्ते । सन्निहितभयशोकलोभमोहमानारौद्रभैरवद्विष्टबीभत्सविकृतसङ्कथासु अपिचपशुपुरुषमांसशोणितानि चावेक्ष्यविषादवैवर्ण्यमूर्च्छोन्माद भ्रमप्रपतनानामन्यतममाप्नुवन्त्यथवामरणमिति ॥ १३७ ॥

मध्यम सत्त्व पुरुष अपने बलसे तथा दूसरों के भी बलसे अपने को सावधान रखते हैं और हीनसत्त्व पुरुष न अपने बलसे न दूसरों के बलसे सावधान रहसक्ते हैं उनका शरीर चाहै बहुत बड़ा भी होय परन्तु वह थोड़ीसी वेदनाओं को भी नहीं सह सक्ते हैं भय शोक लोभ मोह तथा मानसे सदैवयुक्त रहते हैं उग्र भयंकर द्वेषकारी बीभत्स तथा विकृत बातों में भी और पशु तथा पुरुषोंके मांस रुधिरादिको देखकर ही विषाद विवर्णता मूर्च्छा उन्माद भ्रम तथा पतन इनमें से किसी उपद्रव को प्राप्त होते हैं अथवा मृत्यु को प्राप्त होजाते हैं ॥ १३७ ॥

आहारशक्तितश्चेति । आहारशक्तिरभ्यवहरणशक्त्याजरणशक्त्याचपरीक्ष्यबलायुषीह्याहारायते॥१३८॥

आहारशक्ति से परीक्षा करने का वर्णन भोजनकरने की सामर्थ्य तथा पचाने की सामर्थ्य से आहारशक्तिकी परीक्षा करनी चाहिये क्योंकि बल तथा आयु भोजन के आधीनहै ॥ १३८ ॥

व्यामशक्तितश्चेति।व्यायामशक्तिमपिकर्मशक्त्यापरीक्ष्याकर्मशक्त्याह्यनुमीयतेबलंत्रिविधम् ॥ १३९ ॥

व्यायामशक्ति से परीक्षा करने का वर्णन-कार्य्य करने की सामर्थ्य से व्यायामशक्ति की परीक्षा करनी चाहिये कार्य्य करने की सामर्थ्य सेही तीन प्रकार के बलका अनुमान होता है ॥ १३९ ॥

वयस्तश्चेति । कालप्रमाणविशे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षापेक्षिणीहिशरीरावस्थावयोऽभिधीयते। तद्वयोयथावस्थानभेदेन त्रिविधंबालंमध्यंजीर्णमिति॥१४०॥

अवस्था से परीक्षा करने का वर्णन काल के प्रमाणविशेष की अपेक्षा जो शरीर की अवस्था होती है उसे वय कहते हैं स्थूलभेद से वय तीनप्रकार के होते हैं जैसे बाल मध्य तथा जीर्ण॥१४०॥

तत्रबालमपरिपक्वधातुगुणमजातव्यञ्जनंसुकुमारमक्लेशसहमसम्पूर्णबलं श्लेष्मधातुप्रायमाषोडशवर्षम्। विवर्द्धमानधातुगुणंपुनःप्रायेणानवस्थितसत्त्वमात्रिंशद्वर्षमुपदिष्टम्। मध्यंपुनःसमत्वागतबलवीर्य्यपौरुषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणवचनविज्ञानसर्वधातुगुणं बलस्थितमवस्थितसत्त्वमविशीर्य्यमाणधातुगुणं पित्तधातुप्रायमाषष्टिवर्षमुद्दिष्टम्। अतःपरं परिहीयमाणधात्विन्द्रियबलपौरुषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणवचनविज्ञानंभ्रश्यमानधातुगुणंवातधातुप्रायंक्रमेणप्रजीर्णमुच्यतेआवर्षशतम्॥१४१॥

तहां १६ वर्षतक बाल्य अवस्था रहती है उस अवस्थामें धातुगुण परिपक्व नहीं होते डाढ़ी आदि पुरुषचिह्न उत्पन्न नहीं होते सुकुमारता होती है क्लेश नहीं सहाजाता है बल पूर्ण नहीं होताहै और कफकी अधिकता होतीहै ३० वर्ष तक धातुओंके गुण विशेषकरके बढ़ते हैं और सत्त्वकी अच्छी तरह स्थिति रहती है और मध्यावस्था ६० वर्षतक है इस अवस्था में बल वीर्य्य पौरुष पराक्रम ग्रहण धारण स्मरण वचन विज्ञान तथा सम्पूर्ण धातुओंके गुण सम होते हैं और पित्तकी अधिकता होती है तदनन्तर १०० वर्षतक जीर्णावस्था होती है इस अवस्थामें धातु इन्द्रिय बल पौरुष पराक्रम ग्रहण स्मरण वचन तथा विज्ञान की क्षीणता होती है धातुओं के गुण क्रमसे न्यून होजाते हैं और वायु की अधिकता होती है॥१४१॥

वर्षशतंखलु आयुषःप्रमाणमस्मिन्काले। सन्तिपुनरधिकोनवर्षशतजीविनोमनुष्याः। तेषांविकृतिवर्ज्यैःप्रकृत्यादिबलविशेषैरायुषोलक्षणतश्चप्रमाणमुपलभ्यवयसस्त्रित्वंविभजेत। एवंप्रकृत्यादीनांविकृतिवर्ज्यानांभावानांप्रवरमध्यावरविभागेनबलविशेषंविभजेत्। विकृतिबलत्रैविध्येनतु दोषबलंत्रिविधमनुमीयते। ततोभैषज्यस्यतीक्ष्णमृदुमध्यविभागेनत्रित्वंविभज्ययथादोषंभैषज्यमवचारयेदिति॥१४२॥

आयु का प्रमाण १०० वर्ष का है परन्तु इस समय में प्रायः मनुष्योंकी आयु सौ वर्ष से न्यूनही होती है उनके विकारों के सिवाय प्रकृति आदिकों के बलविशेषके द्वारा तथा लक्षणों के द्वारा आयुके प्रमाण को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जानकर अवस्था के तीनभाग करे इसी प्रकार श्रेष्ठ मध्यम तथा हीनभेदसे विकृतिको छोड़कर प्रकृत्यादिकों के बलविशेष का विभागकरे और विकारों के तीन प्रकार के बलसे दोषों के तीनप्रकार के बलका अनुमानकरे तदनन्तर तीक्ष्णता मृदुता तथा मध्यमताके भेदसे औषधका तीनप्रकारसे विभाग करके दोषके अनुसार औषध करे ॥ १४२ ॥

आयुषःप्रमाणज्ञानहेतोःपुनरिन्द्रियेषुजातिसूत्रीयेचलक्षणान्युपदेक्ष्यन्ते ॥ १४३ ॥

आयुका प्रमाण जानने के लिये इन्द्रियस्थानमें लक्षण कहे जायँगे ॥ १४३ ॥

कालःपुनःसंवत्सरश्चातुरावस्थाच। तत्रसंवत्सरोद्विधात्रिधाषोढाद्वादशधाभूयश्चातःप्रविभज्यतेतत्तत्कार्य्यमभिसमीक्ष्य ॥ १४४ ॥

संवत्सर तथा रोगी की अवस्था काल है संवत्सर दो प्रकार से तीनप्रकार से छः प्रकार से बारहप्रकार से तथा अनेकप्रकार से तिस २ कार्य्य को देखकर विभक्त होता है ॥ १४४ ॥

तत्रखलुतावत्षोढाप्रविभज्यकार्य्यमुपदेक्ष्यते । हेमन्तोग्रीष्मोवर्षाश्चेतिशीतोष्णवर्षलक्षणास्त्रयःऋतवो भवन्ति। तेषामन्तरेष्वितरेसाधारणलक्षणास्त्रयःऋतवःप्रावृट्शरद्वसन्ताइति । प्रावृड्इतिप्रथमःप्रवृष्टःकालस्तस्यअनुबन्धोवर्षाएवमेतेसंशोधनमधिकृत्यषड्विभज्यन्तेऋतवः ॥ १४५ ॥

उन विभागों में से यहां छःप्रकार से विभाग करके कार्य्य का उपदेश किया जाता है हेमन्त ग्रीष्म तथा वर्षा इन तीन ऋतुओंके शीत उष्ण तथा वृष्टि यह लक्षण हैं इन्हीं ऋतुओं के बीच में प्रावृट् शरद तथा वसन्त यह तीन ऋतु होती हैं इन में वृष्टि शीत तथा उष्णता यह लक्षण साधारण होते हैं वृष्टि के प्रथम समयको प्रावृट् कहते हैं इसके उपरान्त वर्षाऋतु होती है इस प्रकार से संशोधन के विषय में छः ऋतुओं का विभाग किया जाता है ॥ १४५ ॥

तत्रसाधारणलक्षणेष्वृतुषुर्वमनादीनांप्रवृत्तिर्विधीयते निवृत्तिरितरेषु। साधारणलक्षणाहिमन्दशीतोष्णवर्षत्वात्सुखतमाश्चभवन्तिअविकल्पकाश्चशरीरौषधानामितरेपुनरत्यर्थशीतोष्णवर्षत्वाद्दुःखतमाश्चभवंतिविकल्पाश्चशरीरौषधानाम् ॥ १४६ ॥

इन ऋतुओं में से साधारण लक्षणवाली ऋतुओं में (प्रावृट् शरद तथा वसन्तमें) वमनआदि कर्म कराने चाहिये इनसे अन्य ऋतुओंमें वमनादि कार्य्य न कराने चाहिये क्योंकि साधारण लक्षण वाली ऋतु शीत उष्ण तथा वृष्टिकी न्यूनता से अत्यन्त सुखदायी होती है और इनऋतुओं में शरीर तथा औषधियोंमें अन्तर नहीं उत्पन्न होता किन्तु इन के सिवाय अन्य शेष तीन ऋतु शीत उष्ण तथा वृष्टिकी अधिकता से अत्यन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुःखदायी होती हैं और इन ऋतुओं में शरीर तथा औषधियों में अन्तर होजाता है ॥ १४६ ॥

तत्रहेमन्तेह्यतिमात्रशीतोपहतत्वाच्छरीरमसुखोपपन्नंभवति । अतिशीतवाताध्मातमतिदारुणीभूतमवनद्धदोषम् । भेषजंपुनःसंशोधनार्थमुष्णस्वभावमन्तेशीतोपहतत्वान्मन्दवीर्य्यत्वमापद्यते ।तस्मात्तयोःसंयोगेसंशोधनमयोगायोपपद्यतेशरीरञ्चवातोपद्रवाय१४७॥

हेमन्त ऋतु में बहुत शीत होने के कारण शरीर पीड़ित रहता है शीतल वायु के लगने से अत्यन्त दारुण होजाता है और दोष वद्ध (रुके) होजाते हैं और संशोधनके लिये जिन उष्ण औषधियों का व्यवहार किया जाता है वह शीतके योग से मन्दवीर्य्य होजाती हैं इससे हेमन्त ऋतु में जो संशोधन दिया जाता है उससे अच्छेप्रकार वमन विरेचनादि नहीं होते और शरीर में वातज रोग उत्पन्न होजाते हैं ॥ १४७ ॥

ग्रीष्मेपुनर्भृशोष्णोपहतत्वाच्छरीरमसुखोपपन्नंभवति । उष्णवाताताध्मातमतिशिथिलमत्यन्तप्रविलीनदोषंभेषजंपुनः संशोधनार्थमुष्णस्वभावमेवात्युष्णानुगमनात्तीक्ष्णतरत्वमापद्यते । तस्मात्तयोःसंयोगेसंशोधनमतियोगायोपपद्यते शरीरमपिपिपासोपद्रवाय ॥१४८॥

ग्रीष्मऋतु में बहुत उष्णता से शरीर खिन्न रहता है उष्ण वायु लगने से शरीर में शिथिलता होजाती है और दोष बहुत लीन होजाते हैं और संशोधन के लिये जिन उष्ण औषधियों का व्यवहार कियाजाता है वह औषधियां बहुत उष्णता के योग से अति उष्ण होजाती हैं इस से ग्रीष्म ऋतु में जो संशोधन दिया जाता है उससे वमन विरेचनादि बहुत अधिक होते हैं और तृषा उत्पन्न होती है ॥ १४८ ॥

वर्षासुतुमेघजालावततेगूढार्कचन्द्रतारेधाराकुलेवियतिभूमौपङ्कजलपटलसंवृतायामत्यर्थोपक्लिन्नशरीरेषुभूतेषुविहतस्वभावेषुचकेवलेष्वौषधग्रामेषुतोयदानुगतमारुतसंसर्गोपहतेषुगुरुप्रवृत्तीनिवमनादीनिभवन्ति । गुरुसमुत्थानानिशरीराणि । तस्माद्वमनादीनांनिवृत्तिर्विधीयते वर्षान्तेषुऋतुषु नचेदात्यायिकंस्यात् ॥ १४९ ॥

वर्षाऋतु में मेघों से सूर्य्य चन्द्रमा तथा नक्षत्रादिक आच्छादित होजाते हैं जलधाराओं से आकाश पूर्ण होजाताहै पृथ्वीकीचसे व्याप्त होजाती है इससे प्राणियों के शरीर अत्यन्त क्लेदयुक्त होजाते हैं और जलयुक्त वायु के संसर्गसे औषधियों के गुण नष्ट होजाते हैं इस ऋतु में संशोधन देनेसे वमनादिक बड़े गौरव से होते हैं और शरीर भी बहुत भारी होजा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताहै इससे हेमन्त ग्रीष्म तथा वर्षाऋतु में जो कोई बड़ी आवश्यकता न होय तो वमनादि न करावे ॥ १४९ ॥

आत्ययिकेपुनःकर्म्मणिकाममृतुंविकल्प्यकृत्रिमगुणोपधानेनयथर्त्तुगुणविपरीतेन भैषज्यंसंयोगसंस्कारप्रमाणविकल्पेनउपपाद्यप्रमाणवीर्य्यसमंकृत्वाततःप्रयोजयेदुत्तमेनयत्नेनअवहितः ॥ १५० ॥

और जो कोई बहुत कठिन रोगहोय तो ऋतुके गुणों से विपरीत कृत्रिम गुणोंसे ऋतु को बदलकर और संयोग संस्कार तथा प्रमाण से औषधि को समवीर्य्य करके सावधानतापूर्व्वक बड़े यत्न से वमनादि का प्रयोग करे ॥ १५० ॥

आतुरावस्थास्वपितुकार्य्याकार्य्यंप्रतिकालाकालसंज्ञातद्यथाअस्यामवस्थायामस्य भेषजस्यकालोऽकालः पुनरस्येति ॥ १५१ ॥

रोगीकी अवस्थाओं में भी कार्य्याकार्य्य के अनुसार काल तथा अकाल संज्ञा होती हैं जैसे इस अवस्था में इस औषधिका काल है और इस औषधिका अकाल है अर्थात् काल नहीं है ॥ १५१ ॥

एतदपिभवति अवस्थाविशेषेणतस्मादातुरावस्थास्वपिहिकालाकालसंज्ञा। तस्यपरीक्षामुहुर्मुहुरातुरस्य सर्वावस्थाविशेषावेक्षणंयथावत्भेषजप्रयोगार्थम्।नह्यतिपतितकालमप्राप्तकालंवाभेषजमुपयुज्यमानंयौगिकंभवति । कालोहिभैषज्यप्रयोगपर्य्याप्तिमभिनिर्वर्त्तयति॥१५२॥

यह भी बात अवस्थाविशेष से होती है इससे रोगीकी अवस्थाओंमें भी काल अकाल संज्ञा होती है औषधिका यथावत् प्रयोग करनेके लिये वारंवार रोगी की सब अवस्थाओं का देखनाही उसकी परीक्षा है समय के उपरान्त अथवा समय के पहले दीगई औषधि यथार्थ गुण नहीं करती क्योंकि समयही औषधि के यथार्थ गुणको सिद्ध करता है ॥ १५२ ॥

प्रवृत्तिस्तुप्रतिकर्म्मसमारंभः। तस्य लक्षणंभिषगातुरौषधपरिचारकाणां क्रियासमायोगः ॥ १५३ ॥

चिकित्साका प्रारंभ प्रवृत्ति है उस का लक्षण वैद्य रोगी औषधि तथा परिचारक इन की क्रियाओं के योग को चिकित्साका प्रारंभ कहते हैं ॥ १५३ ॥

उपायःपुनर्भिषगादीनांसौष्ठवमभिसन्धानञ्चसम्यक् । तस्यलक्षणंभिषगादीनांयथोक्तगुणसंपद्देशकालप्रमाणसात्म्यक्रियादिभिश्च सिद्धिकारणैःसम्यगुपपादितस्यौषधस्यावचारणमिति । एवमेतेदशपरीक्ष्यविशेषाः पृथक्पृथक्परीक्षितव्याभवन्ति । परीक्षायास्तुखलुप्रयोजनंप्रतिपत्तिज्ञानम् ॥ १५४ ॥

वैद्यादिकों की समीचीनता तथा विधान उपाय हैं उसका लक्षण वैद्यादिकों के यथोक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुण संपत् देश काल प्रमाण सात्म्य तथा क्रिया आदिक सिद्धिके कारणोंके द्वारा अच्छेप्रकार से सम्पन्न(तैयार) कीगई औषधिके प्रयोग को उपाय कहते हैं इस प्रकार से यह दश परीक्ष्य अलग २ परीक्षा करने के योग्य हैं प्रतिपत्ति का ज्ञानही परीक्षाका प्रयोजन है ॥ १५४ ॥

प्रतिपत्तिर्नामसयस्तुविकारःयथा प्रतिपत्तव्यतस्य यथानुष्ठानज्ञानम् ॥ १५५ ॥

जिस रोग को जिस प्रकार से जानना चाहिये उसको उसी प्रकार से जानने को प्रतिपत्ति कहते हैं ॥ १५५ ॥

यत्रतुखलुवमनादीनांप्रवृत्तिर्यत्रच निवृत्तिस्तद्व्यासतःसिद्धिषूत्तरकालमुपदेक्ष्यते। प्रवृत्तिनिवृत्तिलक्षण संयोगेतुखलुगुरुलाघवंसंप्रधार्य्यसम्यगध्यवस्येदन्यतरनिष्ठायाम्। सन्तिहिव्याधयःशास्त्रेषुउत्सर्गापवादैरुपक्रमंप्रतिनिर्दिष्टाःतस्माद्गुरुलाघवंसम्प्रधार्य्यसम्यगध्यवस्येदित्युक्तम् ॥ १५६ ॥

वमनादिकों का जहाँ प्रयोग करना चाहिये और जहाँ नहीं करना चाहिये उसका सिद्धिस्थान में विस्तारपूर्व्वक वर्णन कियाजायगा जहाँ वमनादिकों की प्रवृत्ति तथा निवृत्तिके लक्षण मिलेहुए होयँ वहाँ अच्छे प्रकार से गुरुता तथा लघुता का विचार करके दो में से एकका निश्चय करे क्योंकि शास्त्रों में सामान्य तथा विशेष से रोगों की चिकित्सा करनी कही है इससे गुरुलाघवका अच्छीप्रकार से जांच करके निश्चयकरना यह कहाहै॥१५६॥

यानितुखलुवमनादिषुभेषजद्रव्याण्युपयोगंगच्छन्तितान्यनुव्याख्यास्यन्ते । तद्यथा—फलजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवकुटजकारिडकाकृतवेधनफलानि । जीमूतकेक्ष्वाकुकुटजकृतवेधनपत्रपुष्पाणि । आरग्वधवृक्षकमदनस्वादुकण्टकपाठापाटलाशार्ङ्गेष्टामूर्वासप्तपर्णनक्तमाल—पिचुमर्दपटोलसुषवी—गुडूचीसोमवल्कचित्रकद्वीपिशिग्रुमूलकषायैश्च । मधुमधूककोविदारकर्बुदारनीपनिचुलबिम्बीशणपुष्पीसदापुष्पीप्रत्यक्पुष्पीकषायैश्चएलाहरेणुप्रियङ्गु—पृथ्वीका-कुस्तुम्बुरुतगरनलदह्रीवेरतालीशोशीरकषायैश्च । इक्षुकाण्डेक्ष्विक्षुवालिकादर्भपोटगलकालंकृतकषायैश्च । सुमनाःसौमनसायिनीहरिद्रादारुहरिद्रावृश्चीरपुनर्नवामहासहाक्षुद्रसहाकषायैश्चशाल्मलिशाल्मकभद्रपर्ण्येलापर्ण्युपोदिकोद्दालकधन्वनराजादनोपचित्रागोपीभृङ्गाटिकाकपिकच्छुकषायैश्च । पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृङ्गवेरस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्षपफाणितक्षीरक्षारलवणोदकैश्च यथोपलाभंयथेष्टंवाप्युपसंस्कृत्यव र्तिक्रियाचूर्णावलेहस्नेहकषायमां सरसयवागूयूषकाम्बलिकक्षीरोपधे यान्मोदकानन्यांश्चयोगान्विवि धाननुविधाययथार्हंवमनार्हायद द्याद्विधिवद्वमनमितिकल्पसंग्रहो वमनद्रव्याणांकल्पस्त्वेषांविस्तरेणो त्तरकालमुपदेक्ष्यते ॥ १५७ ॥

किवांच इनका काढ़ा पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ सरसों राव दूध क्षार तथा नोनका जल पूर्वोक्त संपूर्ण औषधियों में से जो कुछ मिलसकें अथवा जितनी चाहै उतनी औष-धियोंको लाकर वर्त्तिक्रिया चूर्ण अवलेह स्नेह क्वाथ मांसरस यवागू दुग्ध यूष उपधेय (हु-लास) आसव तथा मोदक इत्यादि अनेक योग वनाकर वमन कराने के योग्य पुरुषको यथायोग्य देनाचाहिये इसप्रकार संक्षेप से वमनकारक द्रव्य कहीगई कल्पस्थानमें इनका विस्तारपूर्व्वक वर्णन किया जायगा॥१५७॥

वमनादिकों में जिन औषधियोंका व्यव-हारकियाजाता हैं वह आगेकहीजाती हैं जैसे मैनफल बन्दाल, कड़वीलौकी श्वेतफूल की तुरई कुरैया तथा भींजी तरकारी इनके फल तुरई बन्दाल कड़वी लौकी कुरैया तथा भीं-जी तरकारी इनके पत्र तथा पुष्प अमल्तास वृक्षक दाख कण्टक पाठी पाढर शार्ङ्गष्ठा चि-नार छितवन कंजा नींब परवल कालाजीरा गिलोय कायफल चीता सतावर द्वीपी तथा सहँजनकीजड़ इनका क्वाथ मुलहटी महुआ कचनार कर्वुदार (सफेद कचनार) कदंब वेत कुंदरू वनसनई सफेद अकवन तथा ल-टजीरा इनका काढ़ा इलायची गगनधूल प्रि-यंगु कालाजीरा धनियां तगर सुगन्धबाला तालीस तथा खस इनका काढ़ा ईख तालम-खाना कितारी कुश काँस तथा कालंकत इन के काढ़े से चमेली सौमनसायनी हल्दी दारु-हल्दी वृश्चीर गदापूर्णा वनउर्दी वनमूंग इनका काढ़ा सेमर शाल्मलूक गंभारी रासना पोय वनकोदों धन्वन् (वृक्षविशेष) खिन्नी उपचि-त्रा (मूसरी) गोपी (स्याहसाई) सिंहाड़ा तथा

विरेचनद्रव्याणितु श्यामात्रिवृच्चतु रंगुलतिल्वकमहावृक्षसप्तलाशङ्खि नीदन्तीद्रवन्तीनां क्षीरमूलत्वक्पत्र पुष्पफलानि यथायोगमेतैश्चैवक्षीर मूलत्वक्पत्रफलपुष्पफलैर्विक्लिप्ता विक्लिप्तैः अजगन्धाश्वगन्धाजशृ ङ्गीक्षीरिणीनीलिनीक्लीतककषायै श्चप्रकीर्य्योदकीर्य्यामसूरविदला कम्पिल्लकविडङ्गगवाक्षीकषायैश्च पीलूप्रियालमृद्वीकाकाश्मर्य्यपरू षक–बदरदाडिमामलक–हरीतकी विभीतकवृश्चीरपुनर्नवाविदारिग न्धादिकषायैश्चशीधुसुरासौवीरक तुषोदकमैरेयमेदक–मदिरामधुमधू लकधान्याम्लकुवलबदर–खर्जूरक र्कन्धुभिश्च दधिदधिमण्डोदश्वि द्भिश्च गोमहिष्यजावीनाञ्च क्षी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्मूत्रैर्यथोपलाभम् यथेष्टं वाप्युपसं स्कृत्यवर्तिक्रिया चूर्णावलेहस्नेहकषायमांसरसयूषकाम्बलिकयवागूक्षीरोपधेयान् मोदकानन्यांश्च भक्ष्यविकारान् विविधांश्च योगानभिविधाय यथार्हंविरेचनार्हाय दद्याद्विरेचनमिति कल्पसंग्रहोविरेचनद्रव्याणां कल्पस्त्वेषां विस्तरेणोपदेक्ष्यतेउत्तरकालम् ॥ १५८ ॥

विरेचनकारक औषध–कालानिसोथ अमलतास लोध महावृक्ष सप्तला (वसन्तीनिवार) शंखिनी (शंखकौडी) दन्ती जमालगोटे का वृक्ष तथा मूसाकरणी (मुसली) इनका दूध मूल छाल पत्र पुष्प तथा फल यह सब औषधियां मिली हुई अथवा अलग २ बवई असगन्ध काकड़ासिंगी क्षीरिणी नीलिनी (नील) तथा क्लीतक (मुलहठी) इनका काढ़ा कंजा डहरकंजा काला निसोथ कवीला बायविडंग तथा गवाक्षी (इनारुन्) इनका क्वाथ पीलू चिरोंजी दाख गंभारी फालसा बेर दाड़िम आमला हड़ बहेड़ा वृश्चीर गदापूर्णा सरिवन इत्यादिकों का क्वाथ शीधु (मद्यविशेष) सुरा (मद्य) सौवीर (मद्य) तुषोदक (एकप्रकारका कांजी) मैरेय मेदक मदिरा मधु महुआ धान्याम्ल (कांजीविशेष) कुवल (एकप्रकारकाबेर) बदर (एकप्रकारकाबेर) खजूर तथा कर्कन्धू (एकप्रकार का बेर) दही दहीकातोड़ तथा मट्ठा गौ भैंस बकरी तथा भेड़ इनका दूध तथा मूत्र पूर्वोक्त औषधियों में से जो कुछ मिलसकें अथवा जितनी चाहै उनके द्वारा वर्त्तिक्रिया चूर्ण आसव स्नेह अवलेह क्वाथ मांसरस यूष यवागू दूध तथा मोदक और अन्य अनेकप्रकार के योग बनाकर विरेचन के योग्य पुरुष को विरेचनके लिये देवे यह विरेचनकारक औषध संक्षेप से कहीगई इनका कल्पस्थान में विस्तारपूर्वक वर्णन कियाजायगा ॥ १५८ ॥

आस्थापनेषुतु भूयिष्ठकल्पानिस्युर्द्रव्याणि नामतोविस्तरेणोपदिश्यमानानि अपरिसंख्येयानिस्युरतिबहुत्वात् । इष्टश्चानतिसंक्षेपविस्तरोपदेशस्तन्त्रे इष्टञ्च केवलंज्ञानं तस्माद्रसतएवतान्यनुव्याख्यास्यन्ते ॥ १५९ ॥

आस्थापन में द्रव्यों की अनेक प्रकारकी कल्पनाहोती हैं जो नाम ले २ कर विस्तारपूर्वक उनका वर्णन कियाजाय तो अधिकता के कारण वह असंख्य होजायँ और तंत्र में न बहुत विस्तारसे न बहुत संक्षेपसे वर्णन करना चाहिये और सब का ज्ञानहोना भी आवश्यकहै इससे रसके अनुसार उनका वर्णन कियाजायगा ॥ १५९ ॥

रससंसर्गविकल्पविस्तारो ह्येषामपरिसंख्येयः समवेतानां रसानामंशांशबलविकल्पातिबहुत्वात् तस्माद्द्रव्याणाञ्चैकदेशमुदाहरणार्थं रसेष्वनुविभज्य रसैकैकदेशेनच नामलक्षणार्थञ्च षडास्थापनस्कन्धारसतोऽनुविभज्य व्याख्यास्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्ते। यत्तुषड्विधमास्थापनमाचक्ष
ते भिषजस्तद्दुर्लभतरं संसृष्टरसभू
यिष्ठत्वाद्द्रव्याणाम्। तस्मान्मधु
राणि मधुरप्रायाणि मधुरप्रभावाणि
मधुरप्रभावप्रायाण्यपिच मधुरस्क
न्धे मधुराण्येव कृत्वोपदेक्ष्यन्ते।
तथाइतराणि द्रव्याण्यपितद्यथा,–
जीवकर्षभकौ जीवन्ती वीरातामल
की काकोली क्षीरकाकोली मुद्गप
र्णी माषपर्णी शालपर्णी पृश्निप
र्ण्यसनपर्णी–मेदामहामेदा कर्कट
शृङ्गी शृङ्गाटिकाछिन्नरुहाच्छत्राति
च्छत्राश्रावणी महाश्रावणी अल
म्बुषा सहदेवा विश्वदेवाशुक्लाक्षी
रशुक्ला बलातिबला विदारी, क्षीर
विदारी,क्षुद्रसहा महासहा–ऋष्यग
न्धाश्वगन्धा–पयस्याबृश्चीर–पुन
र्नवाबृहती–कण्टकारिकैरण्डमोरट
श्वदंष्ट्रासंहर्षा शतावरीशतपुष्पा
मधूकपुष्पी यष्टिमधुमधूलिकामृद्वी
का खर्जूर–परूषकात्मगुप्ता पुष्कर
बीजकशेरुका राजकशेरुका का
लङ्कतक काश्मर्य्यशीतपाक्योदन
पाकीतालखर्ज्जूरमस्तकेक्षिवक्षुना
लिकादर्भकुशकाशशालिगुन्द्रेत्क
टकशरमूलरजाक्षवकर्ष्यप्रोक्ता–द्रा
रदाभारद्वाजीवनत्रपुष्यभीरुपत्री
हंसपदी काकनासा कुलिंगाक्षी क्षी
रवल्लीकपोतवल्लीगोपवल्लीमधु
वल्ली सोमवल्लीति। एषामेवं
विधानमन्येषाञ्च मधुरवर्ग्गपरिसं
ख्यातानामौषधद्रव्याणां छेद्यानि
खण्डशश्छेदयित्वाभेद्यानि चाणु
शोभेदयित्वाप्रक्षाल्य पानीयेनसु
प्रक्षालितायां स्थाल्यां समवाप्यप
यसाअर्द्धोदकेनाभ्यासिच्य साध
येद्दर्व्यासततमुपघट्टयन् तदुपयुक्तं
भूयिष्ठेऽम्भसिगतरसेष्वौषधेषुपय
सिचानुपदग्धे स्थालीमुपहृत्यपरि
स्रुतम्पूतम्पयः सुखोष्णं घृततैलव
सामज्जालवणफाणितोपहितंवस्तिं
वातविकारिणे विधिज्ञोविधिवद्द
द्यात्। शीतन्तु मधुसर्पिर्भ्यामुपसं
सृज्य पित्तविकारिणेदद्यादितिमधु
रस्कन्धः॥ १६०॥

मिले हुए रसों के अंशांश बल भेद के बहुत अधिक होने के कारण रसोंके संसर्ग के विकल्पका विस्तार असंख्यताको प्राप्त होजाता है इससे उदाहरण के निमित्त रसोंके एक देश से द्रव्यों के एक २ देशका विभाग कर के नाम तथा लक्षण जानने के लिये छः आस्थापन स्कन्ध रसोंके अनुसार विभाग करके वर्णन किये जायँगे वैद्यलोग जो छः प्रकार का आस्थापन कहते हैं यह बहुत दुर्लभ है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि प्रायः सभी द्रव्यों में अनेक रस मिले हुए होते हैं इस से मधुरस्कन्ध में मधुर मधुर प्राय मधुरप्रभाव तथा प्रायः मधुरप्रभावयुक्त द्रव्य मधुरही मानकर उपदेश कीजायँगी इसी प्रकार अन्य स्कन्धों में भी जानना चाहिये जैसे जीवक ऋषभक जीवन्ती काकोली भूमि आमला काकोली क्षीरकाकोली बनउर्द बनमूंग सरिवन पिठवन असनपर्णी मेदा महामेदा काकड़ासिंगी खिलड़ा गिलोय छत्रा अतिच्छत्रा (तृणविशेष) मुंडली बड़ी मुंडली लजौनी सहदेई विश्वदेवा शर्करा बरियारा ककैया घीग्वार सेवती ऋष्यगन्धा (विधारा) असगन्ध दूधीर गदहपूर्णा भटकटैया बड़ी भटकटैया अरंड चिनार गोखरू संहर्षा शतावर सौंफ महुएके फूल मुलहठी मधूलिका (लताविशेष) दाख खजूर फालसा किवांच कमलगट्टा कसेरू राजादन (खिन्नी या चिरौंजी) बड़ा कसेरू कालंकत गंभारी शीतपाकी ओदनपाकी तालखजूरी ईख ताल मखाना दर्भ कुश काश शालिधान्य ककुनी तज शरमूल राजक्षवक बड़ीशतावर बनकपास वनका खीरा अभीरुपत्री हंसपदी कौआटोंटी कुलिंगा विलारीकन्द कपोतवल्ली गोपवल्ली (समलर) मधुवल्ली तथा सोमलता यह औषध तथा मधुरवर्ग में कहीहुई इसीमकारकी अन्य औषध लेकर इनमें से जो काटने के योग्यहों उनके छोटे २ टुकड़े काटकर जो फूटने के योग्य होयँ उनको महीन कूटकर धोकर धोये हुए पात्रमें रखकर आधा दूध मिला हुआ जल उनपर छिड़के फिर यथायोग्य बहुतसा जल डालकर पकावे और कलछी से चलाता जाय जब औषधियों का रस जल में निकलकर आजाय तब उतारकर छान लेवे फिर उसे कुछ गरम २ काढ़े में घी तेल चरबी मज्जा लवण तथा राव मिलाकर वात रोगी को विधिपूर्वक वस्ति देवे और जो पित्त के रोगी को देना होय तो काढ़े को शीतल करके उसमें घी तथा सहत मिलाकर वस्ति देवे इति मधुरस्कन्ध ॥ १६० ॥

आम्राम्रातकलकुचकरमर्दवृक्षाम्लाम्लवेतसकुवलबदरदाडिममातुलुङ्गकण्डीरामलकनन्दीतकलालतिकाशीतदन्तशठैरावतककोषाम्रधन्वनानां फलानि पत्राणि च अश्मन्तकचाङ्गेरीणां चतुर्विधानां चाम्लिकानां द्वयोः कोलयोर्द्वयोश्च आमशुष्कयोर्द्वयोश्च शुष्काम्लिकयोर्ग्राम्यारण्ययोश्चासवद्रव्याणि च सुरासौवीरतुषोदकमैरेयमेदकमदिरामधुशीधुशाक्तिदधि-दधिमण्डोदश्विद्धान्याम्लादीनि एषामेवं विधानाञ्चान्येषाञ्चाम्लवर्ग—परिसंख्यातानामौषधद्रव्याणां छेद्यानि खण्डशः छेदयित्वा भेद्यानि चाणुशोभेदयित्वा द्रवैः स्थितानि अवसिच्यसाधयित्वोपसंस्कृत्य यथावत्तैलवसामधुमज्जालवणफाणितोपहितं सुखोष्णंवस्तिंवातविकारिणे विधिवद्द्यादितिअम्लस्कन्धः ॥ १६१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आम आमरा बड़हल, करोंदा तिंतिणीक अमलवेत कुबल (बेरविशेष) बेर दाड़िम बिजौरानींबू कंडीर आमला, नन्दीतक शीतक कैथा नारंगी कोशाम्र तथा धन्वन (वृक्षविशेष) इनके फल चांगेरी चूका का साग अश्मन्तक चार प्रकार की इमली दो प्रकार का कोलिक ग्राम्य तथा आरण्य भेदसे दो प्रकार का शुक्ताम्लिक इनके पत्र आसव सुरा सौवीर तुषोदक मैरेय मेदक मदिरा मधु शीधु सुक्त दधि दही का तोड़ मट्ठा तथा धान्याम्ल यह औषध तथा अन्य अम्लवर्ग में कही हुई औषधियों को लेकर जो काटने के योग्य हैं उन्हें काटकर जो कूटने योग्य हैं उन्हें महीन कूटकर द्रव वस्तुओं को उनमें मिलाकर पूर्वोक्त रीतिसे काढ़ा करके कुछ उष्ण काढ़े में तेल चरबी मज्जा लवण तथा राब मिला कर वात रोगी को विधिपूर्वक वस्ति देवे इति अम्लस्कन्ध ॥ १६१ ॥

सैन्धवसौवर्चलकालविडपाक्यानूपकूप्यबालकैलमूलकसामुद्ररोमकौद्भिदौषरपाटेयकपांशुजानीति एवं प्रकाराणि चान्यानि लवणवर्गपरिसंख्यातानि एतानि अम्लोपहितानि उष्णोदकोपहितानिवा स्नेहवन्तिसुखोष्णं वस्तिं वातविकारिणे विधिज्ञोविधिवद्दद्यादितिलवणस्कन्धः ॥ १६२ ॥

सैंधव सौवर्चल (सोचरनोन) कालानोन विड़नोन आनूप कूप्य वालक ऐलमूलक सामुद्र (पांगा) रोमक (सांभर) औद्भिद औसर पाटेयक तथा पांशुज यह तथा लवण वर्ग में कहीहुई अन्य औषधियों को लेकर अम्ल अथवा उष्णजल में मिलाकर उस में तैलादिक स्नेह मिलाकर वात रोगी को विधिपूर्वक कुछ गरम २ वस्तिदेवे इति लवण स्कन्ध ॥ १६२ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलहस्तिपिप्पलीचव्यचित्रकशृङ्गवेरमरिचाजमोदार्द्रकविडङ्गकुस्तुम्बुरुपीलुतेजोवत्येलाकुष्ठभल्लातकास्थिहिंगुकिलिममूलकसर्षप-लशुन-करञ्जशिग्रुकमधुरा—शिग्रुकखरपुष्पाभूस्तृणसुमुखसुरस-कुठेरक-काण्डीरकालमालकपर्णासक्षवकफणिज्जकक्षारमूत्रपित्तानामेषामेवंविधानाञ्चअन्येषांकटुकवर्गपरिसंख्यातानामौषधद्रव्याणांछेद्यानिखण्डशश्छेदयित्वाभेद्यानिचाणुशोभेदयित्वागोमूत्रेणसह साधयित्वोपसंस्कृत्य यथावन्मधुतैललवणोपहितं सुखोष्णं वस्तिं श्लेष्मविकारिणे विधिज्ञो विधिवद्दद्यात् इतिकटुकस्कन्धः ॥ ॥ १६३ ॥

पीपल पीपलामूल गजपीपल चव्य चीता सोंठ मिर्च अजमोद बायबिड़ंग तुम्बुरु पीलू तेजबल छोटीइलायची कूट भिलावां हींग देवदारु मूली सरसों लहसन कंजा सहजन मधुर सहजन बवई सूरण (अगियाखर)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुमुख (तुलसीविशेष) सुरस कुठेरक (श्यामबवई कौंडीर कालमालक पर्णास नकछिकनी मरुआ क्षार मूत्र तथा पित्ता यह तथा कटुवर्ग में कहीहुई अन्य औषधियों को लेकर जो काटने के योग्य हैं उनके छोटे २ टुकड़े करके और जो कूटने के योग्य हैं उन्हें महीन कूटकर गोमूत्र में काढ़ा करके छानकर कुछ गरम काढ़ेमें तेल लवण तथा सहत मिलाकर कफके रोगी को विधिपूर्व्वक वस्ति देवें इति कटुस्कन्ध ॥ १६३ ॥

चन्दननलदकृतमालनक्तमालनिम्बतुम्बुरुकुटजहरिद्रादारुहरिद्रामुस्तमूर्व्वाकिराततिक्तककटुरोहिणीत्रायमाणाकरवीरकेवुकककटिल्लकवृषमण्डूकपर्णीकर्कोटकवार्त्ताकुकर्कशकाकमाचीकारवेल्लकाकोदुम्बरिकासुषव्यतिविषापटोलकुणकपाठागुडूचीवेत्राग्रवेतसविकंकतबकुलसोमवल्कसप्तपर्णसुमनोऽर्कावल्गुजवचातगरागुरुबालकोशीराणाम् ॥ एषामेवंविधानाञ्चान्येषां तिक्तवर्गपरिसंख्यातानामौषधद्रव्याणां छेद्यानि खण्डशश्छेदयित्वा भेद्यानिचाणुशोभेदयित्वा प्रक्षाल्य पानीयेनाऽभ्यासिच्य साधयित्वोपसंस्कृत्य यथावन्मधुतैललवणोपहितं सुखोष्णं वस्तिं श्लेष्मविकारिणे विधिज्ञोविधिवद्दद्यात् । शीतन्तुमधुसर्पिर्भ्यामुपसंस्कृत्य पित्तविकारिणेदद्यादितितिक्तस्कन्धः ॥ १६४ ॥

चन्दन खस अमलतास कंजा नींब कड़वीतोंबी कुरैया हल्दी दारुहल्दी मोथा चिनार चिरायता कुटकी त्रायमाणा कनेर केवुक (केउआसाग) लालजगदहपूर्नी अडूसा मजीठ खिकसा बैंगन कमलागुंडी मकोय करेला कठुंबरि कालाजीरा अतीस परवल मकर तेंदू पाठा (पाढ़र) बेंतका अग्रभाग जल बेंत कटाई मुहलसरी कायफल छितवन चमेली आक बकुची वच तगर अगर सुगन्धवाला तथा खस यह तथा अन्य इसी प्रकारकी तिक्त वर्गमें कहीहुई औषधियों को लेकर जो काटने के योग्य हों उन्हें महीन काटकर और जो कूटने के योग्य हैं उन्हें महीन कूटकर काढ़ा करके छानके कुछ गरमकाढ़े में सहत तेल तथा नोन मिलाकर कफके रोगी को विधिपूर्व्वक वस्ति देवे और ठंढेकाढ़े में सहत तथा घी मिलाकर पित्त के रोगी को वस्ति देवे इति तिक्त स्कन्ध ॥ १६४ ॥

प्रियंग्वनन्ताम्रास्थिअम्बष्ठकीकट्वङ्गलोध्रमोचरससमङ्गाधातकीपुष्पपद्मापद्मकेशरजम्ब्वाम्रप्लक्षवटकपीतनोदुम्बराश्वत्थभल्लातकाश्मन्तकाशिरीषशिंशपासोमवल्कतिन्दुकपियालबदरखदिरसप्तपर्णाश्वकर्णस्यन्दनार्जुनासनारिमेदैलवालुक-परिपेलवकदम्बशल्लकीजि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ङ्गिनी काशकशेरुकाराजकशेरुका कट्फल वंशपद्मकाशोकशालधव सर्ज्जभूर्ज्जशणपुष्पीशमीमाची कवरकतुङ्गाजकर्णाश्वकर्णस्फुर्ज्ज कबिभीतककुम्भीकपुष्करबीजवि समृणाल–तालखर्जूर तरुणीनामे षामेवंविधानाञ्चान्येषां कषायवर्ग्गे परिसंख्यातानामौषधद्रव्याणां छे द्यानि खण्डशः छेदयित्वाभेद्यानि चाणुशोभेदयित्वा प्रक्षाल्य पानी येनसह साधयित्वोपसंस्कृत्य यथा वन्मधुतैललवणोपहितं सुखोष्णं वस्तिं श्लेष्मविकारिणे दद्यादिति। शीतन्तुमधुसर्पिर्भ्यामुपसंस्कृत्यपि त्तविकारिणे दद्यादितिकषायस्क न्धः ॥ १६५ ॥

प्रियंगु जवासा आमकी बिजली पाढल सरिवन लोध मोचरस बाराहीकन्द धायके फूल पद्माक पद्मकेसर जामन आम पकरिया वर्गद गेंठी गूलर पीपल भिलावां अश्मन्तक सिरस शिंशपा (शीशम) श्वेत खदिर पपरिया (कत्था) तेंदू चिरोंजी बेर कत्था छितवन चन्दन अर्जुन मेद एलुआ के वटी मोथा कदंब शल्लकी (एकतरहकाशाल) मजीठ काश कसेरू बड़ा कसेरू कायफल बांस स्थल कमल अशोक शाल धव भूर्ज विजयसार गूगल शमी (छोंकर) माइया बबई अजकर्ण (सलैया) अश्वकर्ण (एक प्रकारकासाल) तेंदू बहेड़ा कायफल कमलगट्टा कमल की जड़ कमलकी डंडी ताल खजूर तथा गुलाब यह तथा इसीप्रकार की कषाय वर्ग में कहीहुई अन्य औषधियों को लेकर जो काटनेके योग्य हों उनके छोटे २ टुकड़े करके और जो कूटने के योग्य हों उन्हें महीन कूटकर जलसे धोके काढ़ाकर छानकर कुछ गरम काढ़े में सहत तेल तथा लवण मिलाकर कफ के रोगी को विधिपूर्व्वक बस्ति देवै और ठंढे काढ़े में सहत तथा घृत मिलाकर पित्त के रोगी को वस्ति देवे इति कषायस्कन्ध ॥ १६५ ॥

तत्रश्लोकाः।

षड्वर्गाःपरिसंख्याता यएतेरसभेद तः। आस्थापनमभिप्रेत्यतान्विद्या त्सार्वयौगिकान् ॥ १६६ ॥

तिस में यह श्लोक हैं रसोंके भेद के अनुसार आस्थापन के लिये यह जो छः वर्ग कहेगये इन को सब योगों के लिये जानना चाहिये ॥ १६६ ॥

सर्वतोहिप्रणिहिताःसर्वरोगेषुजान ता। सर्वान्रोगान्नियच्छन्तियेभ्य आस्थापनंहितम् ॥ १६७ ॥

जिन रोगियों को आस्थापन हित है उन के संपूर्ण रोगों को बुद्धिमान् वैद्य इन का प्रयोग करके दूरकरे क्योंकि यह स्थापन साध्य सबरोगों को नष्ट करते हैं ॥१६७॥

येषांयेषांप्रशान्त्यर्थंयेयेनपरिकीर्त्ति ताः। द्रव्यवर्गाविकाराणांतेषांतेप रिकोपकाः ॥ १६८ ॥

जिन २ रोगों के दूरकरने को जो २

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ग नहीं कहेगये हैं उन २ रोगों को वह द्रव्य वर्ग कुपित करते हैं॥ १६८॥

इत्येतेषडास्थापनस्कन्धारसतोऽनुविशज्यव्याख्याताः। तेभ्योभिषग्बुद्धिमान्परिसंख्यातमपियद्द्रव्यमयौगिकंमन्येततदपकर्षयेत्। यद्यच्चानुक्तमपियौगिकंवामन्येततत्तद्द्यात्। वर्गमपिवर्गेणउपसंसृजेदेकमेकेनअनेकेनवायुक्तिंप्रमाणीकृत्य। प्रचरणमिवभिक्षुकस्यबीजमिवकर्षकस्यसूत्रंबुद्धिमतामल्पमपि अनल्पज्ञानायभवति॥ १६९॥

इस प्रकार यह छःआस्थापन स्कन्ध रस के अनुसार विभाग करके कहेगये हैं बुद्धिमान् वैद्य इन वर्गोंमें से जिस औषध को अयोग्य समझें उसको निकालडालें और इन वर्गों में नहीं कही हुई भी जो औषध योग्य समझें उसे मिलालें युक्तिपूर्व्वक एकवर्ग के साथ एक अथवा अनेकवर्ग भी मिलावे जैसे भिक्षुक विचरणमात्रसे अनेक कार्य्य सिद्ध करते हैं और जैसे किसानलोग एक बीज से अनेक बीज उत्पन्न करते हैं इसी प्रकार बुद्धिमान् लोग छोटे से सूत्रसे अधिक ज्ञान को प्राप्त करते हैं॥ १६९॥

तस्माद्बुद्धिमतामूहापोहवितर्कामन्दबुद्धेस्तुयथोक्तानुगमनमेवश्रेयः॥ १७०॥

इससे बुद्धिमान्को तो ऊहापोह वितर्क करनीचाहिये और मन्दबुद्धिवाले को जैसा कहा गया है उसी के अनुसार कार्य्यकरना अच्छा है॥ १७०॥

यथोक्तं हि मार्गमनुगच्छन्भिषक्संसाधयतिवाकार्य्यमनतिमहत्त्वादनतिह्रस्वत्वाद्दुदाहरणस्येति १७१॥

जैसा कहा है उसी के अनुसार कार्य्य करताहुआ वैद्य कभी कार्य्य को सिद्धकरता है और कभी कार्य्य को बिगाड़ भी देता है क्योंकि उदाहरण बहुत विस्तार तथा बहुत संक्षेप से नहीं कहाजाता॥ १७१॥

अतःपरमनुवासनद्रव्याणिअनुव्याख्यास्यन्ते। अनुवासनन्तुस्नेहएव। स्नेहस्तुद्विविधः। स्थावरोजङ्गमात्मकश्च तत्र स्थावरात्मकःस्नेहःतैलमतैलञ्च। तत्रतैलमेवकृत्वोपदिश्यतेसर्वतस्तैलप्राधान्यात् । जङ्गमात्मकस्तुवसामज्जासर्पिरिति॥ १७२॥

इस के उपरान्त अनुवासन वस्ति की द्रव्य कहीजाती हैं स्नेहनवस्तिको अनुवासन कहते हैं स्नेह दोप्रकार का होता है स्थावर से उत्पन्न हुआ तथा जंगम से उत्पन्न हुआ स्थावर वस्तुओं से उत्पन्नहुआ स्नेह तैल तथा तैल से भिन्न भी होता है परन्तु तैल कहकर ही उसका उपदेश कियाजाता है क्योंकि तेलही सब में प्रधान है और जंगम द्रव्यसे उत्पन्नहुआ स्नेह चरबी मज्जा तथा घी है॥ १७२॥

तेषांतैलवसामज्जासर्पिषांतुयथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वंश्रेष्ठम्। वातश्लेष्मविकारेषु अनुवासनीयेषुयथोत्तरंपित्तविकारेषुसर्वएववासर्वेषुयोगमायान्तिसंस्कारविधिविशेषादिति ॥ १७३ ॥

तेल चरबी मज्जा तथा घी यह यथा पूर्व श्रेष्ठ हैं अर्थात् घी की अपेक्षा मज्जा श्रेष्ठ है इत्यादि यह बात वायु तथा कफके विकार वालों के लिये अनुवासन वस्ति देनेके अर्थ है और पित्तरोग में जो अनुवासन वस्ति देनीहोय तो यह तैलादिक उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं अर्थात् तैल की अपेक्षा चरबी श्रेष्ठहै इत्यादि अथवा औषधियों के संस्कार विशेष से संपूर्ण स्नेह संपूर्ण रोगों में व्यवहार कियेजाते हैं ॥ १७३ ॥

शिरोविरेचनद्रव्याणिपुनःअपामार्गपिप्पलीमरिचविडङ्गशिग्रुशिरीष-कुस्तुम्बुरु-बिल्वाजाज्याजमोदावार्ताकीपृथ्वीकैलाहरेणुफलानिच। सुमुखसुरसकुठेरकगण्डीरककालमालकपर्णासक्षवकफणिज्जकहरिद्राशृङ्गवेरमूलकलशुनतर्कारीसर्षपपत्राणिच। अर्कालर्ककुष्ठनागदन्तीवचाभार्गीश्वेताज्योतिष्मतीगवाक्षीगण्डीरावाक्रुपुष्पीवृश्चिकालीवयस्थातिविषामूलानिच। हरिद्राशृङ्गवेरमूलकलशुनकन्दाश्चलोध्रमदनसप्तपर्णनिम्बार्कपुष्पाणिच। देवदार्वगुरुसरलशल्लकीजिङ्गिन्यसनहिंगुनिर्य्यासाश्चतेजोवराङ्गेंगुदीशोभाञ्जनबृहतीकण्टकारिकात्वगिति। शिरोविरेचनंसप्तविधंफलपत्रमूलकन्दपुष्पनिर्य्यासत्वगाश्रयभेदात् ॥ १७४ ॥

शिरो विरेचनकी द्रव्य लटजीरा पीपल मिर्च वायबिड़ंग सहँजन सिरस तुम्बुरू बेल सफेदजीरा अजमोद बैंगन बड़ीइलायची छोटीइलायची तथा गँगनधूल इनके फल सुमुख सुरस (रासन) श्यामबबई गंडीर गांडर कालमालक बबई नकछिकनी मरुआ हल्दी अदरक मूली लहसन जाही तथा सरसों इनके पत्र आक श्वेत मदार कूट नागदमनी वच भारंगी सफेद निसोथ मालकांगनी इन्द्रायण कंडीर पुष्पी वृश्चिकाली ब्राह्मी तथा अतीस इनके मूल हल्दी अदरक मूली तथा लहसन इनके कन्द लोध मैनफल छितवन नींब तथा आक इनके फूल देवदारु अगर सरल साल मजीठ विजयसार तथा हींग इनके गोंद तेजबल दालचीनी गोंदी सहँजन भटकटैया तथा बड़ीभटकटैया इनकी छाल ॥ फल पत्र मूल कन्द पुष्प गोंद तथा छाल इन आश्रयों के भेद से शिरोविरेचन सात प्रकारका होता है॥ १७४ ॥

लवणकटुतिक्तकषायाणि च इन्द्रियोपशयानितथापराण्यनुक्तान्यपि द्रव्याणियथायोगविहितानिशिरोविरेचनार्थमुपदिश्यन्तेइति ॥१७५॥

इन्द्रियों को हितकरी लवण कटु तिक्त तथा कषाय और नहीं कहीहुई अन्य वस्तु भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिरोविरेचनमें युक्तिपूर्वक व्यवहार करनेको उपदेश कीजाती हैं ॥ १७५ ॥

तत्र श्लोकाः ।

लक्षणाचार्य्यशिष्याणांपरीक्षाकारणञ्चयत् । अध्येयाध्यापनविधिः सम्भाषाविधिरेवच ॥ १७६ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं । आचार्य्य तथा शिष्यके लक्षण परीक्षा कारण अध्ययन तथा अध्यापनकी विधि संभाषणकी विधि॥१७६॥

षड्भिर्न्यूनानिपञ्चाशद्वादशार्थपदानिच । पदानिदशचान्यानिकारणादीनितत्त्वतः ॥ १७७

वाद करने के लिये चौवालीस तथा बारह शब्दोंका अर्थपद और कारण आदिक अन्य दशपद ॥ १७७ ॥

सम्प्रश्नश्चपरीक्षादेर्नवकोवमनादिषु । भिषग्जितीयेरोगाणांविमाने सम्प्रदर्शितः ॥ १७८ ॥

वमनादिकों में परीक्षादि के ९ प्रश्न यह सब विषय इस भिषग्जितीय नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ १७८ ॥

बहुविधमिदमुक्तमर्थजातंबहुविधवाक्यविचित्रमर्थजातम् । बहुविधशुभशब्दसन्धियुक्तंबहुविधवादनिषूदनंपरेषाम् ॥ १७९ ॥

अनेकप्रकारके विचित्र वाक्योंसहित अनेक प्रकारके शुभ शब्दोंसेयुक्त अनेकप्रकारका यह अर्थ समूह कहागयाइस्से प्रतिवादियोंके अनेक प्रकार के वादका खण्डन होता है॥१७९॥

इमांमतिंबहुविधहेतुसंश्रयांविजज्ञिवान्परमतवादसूदनीम् । निलीयते परवचनावमर्दनेनशक्यतेपरवचनैश्चमर्दितुम् ॥ १८० ॥

प्रतिवादियों के वादकी खण्डन करनेवाली अनेक प्रकारके हेतुओंसेयुक्त इस युक्तिका जाननेवाला प्रतिवादियों को जीतता है और प्रतिवादी लोग उसको नहीं जीतसक्ते हैं ॥ १८० ॥

दोषादीनांतुभावानांसर्वेषामेवहेतुना । मानात्समस्तमानानिनिरुक्तानिविभागशः ॥ १८१ ॥

इतिविमानस्थानंसमाप्तम् ॥

दोषादि सम्पूर्ण पदार्थों के हेतुपूर्वक मान से सम्पूर्ण मान विभाग करके कहे गये हैं ॥ १८१ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें भिषग्जितीय नाम आठवांअध्याय समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

विमान स्थान समाप्त हुआ ॥

शारीरस्थान

पहला अध्याय ॥

कतिधापुरुषीयम् ।

इतिहस्माहभगवानात्रेयः ।

अग्निवेश उवाच ।

कतिधापुरुषोधीमन् ! धातुभेदेन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भिद्यते। पुरुषःकारणंकस्मात्प्रभवः पुरुषस्यकः॥ १॥

इसके उपरांत कतिधापुरुषीय अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा अग्निवेश ने कहा कि हे धीमन्, पुरुष धातुओंके भेदसे कै प्रकारसे भिन्न होता है पुरुष किससे कारणहै पुरुषकी उत्पत्ति क्या है॥ १॥

किमज्ञोऽज्ञःसनित्यःकिंकिमनित्यो निदर्शितः। प्रकृतिःकाविकाराःके किंलिंगम्पुरुषस्यच॥ २॥

पुरुष ज्ञानवान् है अथवा अज्ञानी नित्य है अथवा अनित्य है प्रकृति क्या है विकार कौन हैं और पुरुष के लक्षण क्याहैं॥ २॥

निष्क्रियञ्चस्वतन्त्रञ्च वशिनंसर्वगं विभुम्। वदन्त्यात्मानमात्मज्ञाःक्षेत्रज्ञंसाक्षिणंतथा॥ ३॥

आत्मज्ञ लोग आत्माको निष्क्रिय स्वतन्त्र वशी सर्वग विभु क्षेत्रज्ञ तथा साक्षी कहते हैं॥ ३॥

निष्क्रियस्यक्रियातस्य भगवन्! विद्यतेकथम्। स्वतन्त्रश्चेदनिष्टासु कथंयो[illegible]निषुजायते॥ ४॥

परन्तु यदि पुरुष निष्क्रिय है तो उस में क्रिया कैसे हैं जो पुरुष स्वतंत्र है तो अनिष्ट योनियों में क्यों उत्पन्न होताहै॥ ४॥

वशी[illegible]यद्यसुखैःकस्माद्भावैराक्रम्यतेबलात्। [illegible] सर्वाःसर्वगतत्वाच्चवेदनाःकिंनवेत्तिसः[illegible]॥ ५॥

जो पुरुष वशी है तो असुखकारी भावों से बलात्कारपूर्वक क्यों सताया जाता है जो पुरुष सर्वगहै तो सम्पूर्ण संसारकी पीड़ाओं को क्यों नहीं जानता॥ ५॥

नपश्यतिविभुः कस्माच्छैलकुड्यतिरस्कृतम्। क्षेत्रज्ञःक्षेत्रमथवा किंपूर्वमितिसंशयः॥ ६॥

जो पुरुष विभु है तो पर्वत तथा दिवाल आदिकों से छिपेहुए पदार्थों को क्यों नहीं देखता और क्षेत्रज्ञ पहले है अथवा क्षेत्र पहले है यह सन्देह है॥ ६॥

ज्ञेयंक्षेत्रंविनापूर्वं क्षेत्रज्ञोहिनयुज्यते। क्षेत्रञ्चयदिपूर्वंस्यात्क्षेत्रज्ञःस्यादशाश्वतः॥ ७॥

क्योंकि क्षेत्र ज्ञेय अर्थात् ज्ञान का विषय है उसके विना क्षेत्रज्ञ होई नहीं सक्ता और जो क्षेत्र पहलेहोय तो क्षेत्रज्ञ अनित्यहोजाय॥७॥

साक्षिभूतश्चकस्यायं कर्त्ताह्यन्यो न विद्यते। स्यात्कथञ्चाविकारस्य विशेषोवेदनाकृतः॥ ८॥

जो अन्य कोई कर्त्ता नहीं है तो पुरुष साक्षी किसका है और जो पुरुष विकाररहित है तो पीड़ाओं की विशेषता उसे कैसे मालूम हुई॥ ८॥

अथचार्त्तस्यभगवंस्तिसृणांकांचिकित्सति। अतीतांवेदनांवैद्योवर्त्तमानांभविष्यतीम्॥ ९॥

और हे भगवन् अतीत वर्त्तमान तथा भविष्यत् इन तीन प्रकार रोगीकी वेदनाओंमें से वैद्यलोग किसकी चिकित्सा करते हैं॥ ९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भविष्यन्त्याअसंप्राप्तिरतीतायाअ नागमः। साम्प्रतिक्याअपिस्थानं नास्त्यर्त्तेःसंशयोह्यतः ॥ १० ॥

क्योंकि भविष्य वेदना उपस्थित नहीं हैं अतीत वेदना फिर लौट नहीं आतीं और वर्त्तमान की स्थिति नहीं है इसी से सन्देह होता है कि वैद्यलोग किसकी चिकित्सा करते हैं॥ १० ॥

कारणंवेदनानांकिं किमधिष्ठानमुच्यते । क्वचैतावेदनाःसर्वानिवृत्तिं यान्त्यशेषतः ॥ ११ ॥

वेदनाओं का क्या कारण है वेदनाओंका स्थान क्या है और कहाँ यह संपूर्ण वेदना अशेषता से (बिलकुल) निवृत्त होती हैं॥ ११ ॥

सर्ववित्सर्वसन्न्यासी सर्वसंयोगनिःसृतः । एकःप्रशान्तोभूतात्माकैर्लिंगैरुपलभ्यते ॥ १२ ॥

सर्वज्ञ सर्वसंन्यासी सर्वसंयोगरहित एक तथा शान्त जीवात्मा किन लक्षणों से जाना जाता है ॥ १२ ॥

वचइत्यग्निवेशस्य श्रुत्वामतिमतां वरः । सर्वंयथावत्प्रोवाचप्रशान्तात्मापुनर्वसुः ॥ १३ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर शान्तचित्त महाबुद्धिमान् भगवान् आत्रेयजी ने सब बातोंका यथार्थ उत्तरदिया ॥ १३ ॥

खादयश्चेतनाषष्ठा धातवःपुरुषः स्मृतः । चेतनाधातुरप्येकःस्मृतःपुरुषसंज्ञकः ॥ १४ ॥

पृथ्वी जल तेज वायु आकाश तथा चेतना इन छः धातुओं को पुरुष कहते हैं इनमें से केवल चेतना धातुको भी पुरुष कहते हैं॥१४॥

पुनश्चधातुभेदेन चतुर्विंशतिकः स्मृतः । मनोदशेन्द्रियाण्यर्थाःप्रकृतिश्चाष्टधातुकी ॥ १५ ॥

फिर धातुओं के भेद से पुरुष में २४ धातु कही जाती हैं जैसे मन पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय पांच विषय और आठ धातुवाली प्रकृति ॥ १५ ॥

लक्षणंमनसोज्ञानस्याभावोभावएववा। सतिह्यात्मेन्द्रियार्थानां सन्निकर्षेणवर्त्तते ॥ १६ ॥

ज्ञानका होना तथा न होना मनका लक्षण है क्योंकि आत्मा तथा इन्द्रियों के संयोग होनेपर भी ॥ १६ ॥

वैधृत्यान्मनसोज्ञानं सान्निध्यात्तच्च वर्त्तते । अणुत्वमथचैकत्वंद्वौगुणौ मनसःस्मृतौ ॥ १७ ॥

मनके संयोग के विना ज्ञाननहीं [illegible] और मनके संयोग होने पर ज्ञान हो[illegible] णुत्व तथा एकत्व यह दो मनके गुण [illegible]

चिन्त्यविचार्य्यमूह्यञ्च ध्येयंस[illegible] मेवच । यत्किञ्चिन्मनसोज्ञे[illegible] वंह्यर्थसंज्ञकम् ॥ १८ ॥

चिन्ता करनेके योग्य विचार[illegible] योग्य तर्क करने के योग्य ध्य[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योग्य संकल्प करने के योग्य तथा अन्य जो कुछ जानने के योग्य होय वह सब मन का विषय है ॥ १८ ॥

इन्द्रियाभिग्रहःकर्म्ममनसस्स्वस्यनिग्रहः। ऊहोविचारश्चततःपरम्बुद्धिः प्रवर्त्तते ॥ १६ ॥

इन्द्रियों का चलाना तथा रोकना तर्क और विचार यह मनके काम हैं मनके कार्य्य के उपरान्त बुद्धि की प्रवृत्ति होती है॥ १९॥

इन्द्रियेणेन्द्रियार्थोहि समनस्केनगृह्यते। कल्प्यतेमनसाप्यूर्द्ध गुणतो दोषतोयथा ॥ २० ॥

मनसहित इन्द्रिय विषय का ग्रहण करती है तदनन्तर मन उसमें गुण दोषकी कल्पना करता है ॥ २० ॥

जायतेविषयेतत्र याबुद्धिर्निश्चयात्मिका। व्यवस्यतेतयावक्तुंकर्त्तुंवा बुद्धिपूर्वकम् ॥ २१ ॥

फिर उसविषय में जो निश्चयात्मिका वृत्तिरूप बुद्धि उत्पन्नहोती है उसी से बुद्धिपूर्व्वक कुछ कहाजाताहै अथवा कियाजाताहै॥२१॥

एकैकाधिकयुक्तानि खादीनामिन्द्रियाणितु। पञ्चकर्म्मानुमेयानियेभ्यो बुद्धिःप्रवर्त्तते ॥ २२ ॥

आकाशादि महाभूतों की कर्ण आदिपांचों इन्द्रियां एक २ महाभूतों से अधिक युक्त हैं अर्थात् कर्ण इन्द्रियके साथ आकाश त्वचा इन्द्रियके साथ आकाश तथा वायु चक्षुरिन्द्रिय के साथ आकाश वायु तथा अग्नि इत्यादि इनपांचों इन्द्रियोंका सुनना छूना देखना स्वादलेना तथा सूंघना इन पांच कर्मों से अनुमान कियाजाता है इन्हींका आश्रय करके बुद्धि प्रवृत्त होतीहै ॥ २२ ॥

हस्तपादंगुदोपस्थंजिह्वेंद्रियमथापि वा। कर्म्मेन्द्रियाणिपञ्चैवपादौगमनकर्मणि ॥ २३ ॥

हस्त पाद उपस्थ गुदा तथा जिह्वा यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं इनमें से पैरों के द्वारा गमन कियाजाता है॥ २३॥

पायूपस्थौविसर्गार्थे हस्तौग्रहणधारणे। जिह्वावागिन्द्रियंवाक्चसत्या ज्योतिस्तमोऽनृता ॥ २४ ॥

गुदा तथा लिंग के द्वारा मलका त्यागकियाजाताहै हाथों के द्वारा ग्रहण तथा हरण कियाजाताहै और जिह्वाके द्वारा भाषण कियाजाताहै भाषण दोप्रकारका होता है एक सत्य दूसरा मिथ्या सत्यभाषण तेजस्वरूप कहागया और मिथ्याभाषण तमस्वरूप कहा गया है॥२४॥

महाभूतानिखंवायुरग्निरापःक्षितिस्तथा। शब्दःस्पर्शश्चरूपञ्चरसो गन्धाश्चतद्गुणाः ॥ २५ ॥

आकाश वायु अग्नि जल तथा पृथ्वी यह पांचमहाभूत हैं शब्द स्पर्श रूप रस तथा गन्ध यह इनके गुणहैं ॥ २५ ॥

तेषामेकोगुणः पूर्वोगुणवृद्धिः परेपरे। पूर्वःपूर्वोगुणश्चैवक्रमशोगुणिषुस्मृतः ॥ २६ ॥

इनमें से आकाश में एक गुण शब्द है फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवशिष्टों में एक २ गुण की अधिकता है अर्थात् वायु में शब्द स्पर्श दो गुण हैं अग्नि में शब्द स्पर्श रूप यह तीन गुण हैं जलमें शब्द स्पर्श रूप तथा रस यह चारगुणहैं और पृथ्वी में शब्द स्पर्श रूप रस तथा गन्ध यह पांच गुण हैं परन्तु आकाशादि महाभूतों के क्रम से शब्दादिक एक २ गुण कहलाते हैं ॥ २६ ॥

खरद्रवचलोष्णत्वं भूजलानिलतेजसाम् । आकाशस्याप्रतीघातोदृष्टं लिंगंयथाक्रमम् ॥ २७ ॥

खरत्व द्रवत्व चलत्व उष्णत्व तथा प्रतीघात यह पृथ्वी जल वायु अग्नि तथा आकाश के क्रम से चिह्न हैं ॥ २७ ॥

लक्षणंसर्व्वमेवैतत्स्पर्शनेन्द्रियगोचरः । स्पर्शनेन्द्रियविज्ञेयःस्पर्शोहिसविपर्य्ययः ॥ २८ ॥

यह सब चिह्न स्पर्शेन्द्रियके गोचर होते हैं क्योंकि स्पर्शन इन्द्रियसे विपर्य्ययसहित स्पर्श का ज्ञान होता है ॥ २८ ॥

गुणाःशरीरेगुणिनां निर्दिष्टाश्चिह्नमेवच। अर्थाशब्दादयोज्ञेयागोचराविषयागुणाः ॥ २९ ॥

शरीर में गुणियों के (पृथिव्यादिकोंके) गुण तथा चिह्न कहेगये हैं शब्दादिकों को अर्थ ज्ञेय गोचर विषय तथा गुण कहते हैं ॥ २९ ॥

यायदिन्द्रियमाश्रित्य जन्तोर्बुद्धिःप्रवर्त्तते । यातिसातेननिर्देशम्मन साचमनोभवा ॥ ३० ॥

जिस इन्द्रियका आश्रय करके प्राणी की बुद्धि प्रवृत्त होती है वह उसी के अनुसार कही जाती है और मनका आश्रय करके जो बुद्धि प्रवृत्त होती है वह मनके अनुसार कही जाती है अर्थात् दर्शन इन्द्रिय का आश्रय करके जो बुद्धि प्रवृत्त होती है वह दर्शन-बुद्धि कहलाती है इत्यादि ॥ ३० ॥

भेदात्कार्य्येन्द्रियार्थानां बह्व्योवैबुद्धयःस्मृताः । आत्मेन्द्रियमनोऽर्थाना मेकैकासन्निकर्षजा ॥ ३१ ॥

कार्य्य इन्द्रिय तथा विषयों के भेद से बहुत प्रकारकी बुद्धि होती हैं आत्मा इन्द्रिय मन तथा विषय इनके योग से बुद्धि उत्पन्न होती है ॥ ३१ ॥

अंगुल्यंगुष्ठतरजस्तन्त्रीवीणानखोद्भवः । दृष्टःशब्दोयथाबुद्धिर्दृष्टासंयोगजातथा ॥ ३२ ॥

जैसे अंगुली तथा अंगूठे के संयोग से और तन्त्री वीणा तथा नख के संयोग से शब्द उत्पन्न होताहै उसी प्रकार संयोग से बुद्धि उत्पन्न होती है ॥ ३२ ॥

बुद्धीन्द्रियमनोऽर्थानां विद्याद्योगधरम्परम् । चतुर्विंशकइत्येषराशिःपुरुषसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

बुद्धि इन्द्रिय मन तथा विषय इनका परस्पर योग जानना चाहिये इसप्रकार चौबीस धातुओं के संयोग को पुरुष कहते हैं ॥ ३३ ॥

रजस्तमोभ्यांयुक्तस्य संयोगोऽयमनन्तवान् । ताभ्यांनिराकृताभ्यान्तु सत्त्वबुद्ध्यानिवर्त्तते ॥ ३४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रजोगुण तथा तमोगुण से युक्त पुरुष का यह संयोग अनन्त है और रजोगुण तथा तमोगुण का त्यागकरके सत्त्वका अवलम्बन करने से इसकी निवृत्ति होती है ॥ ३४ ॥

अत्रकर्म्मफलञ्चात्र ज्ञानञ्चात्रप्रतिष्ठितम् । अत्रमोहःसुखंदुःखंजीवितंमरणंस्वतः ॥ ३५ ॥

कर्मफल ज्ञान मोह सुख दुःख जीवन तथा मरण यह स्वभावसे पुरुषमें स्थितहैं ॥ ३५ ॥

एवंयोवेदतत्त्वेनसवेदप्रलयोदयौ ३६

जो तत्त्व से इसप्रकार जानते हैं वह सृष्टि तथा प्रलय को जानसक्ते हैं ॥ ३६ ॥

पारम्पर्य्यंचिकित्साच ज्ञातव्यंयच्चकिञ्चन ॥ ३७ ॥ भास्तमःसत्यमनृतंवेदःकर्म्मशुभाशुभम् । नस्यात्कर्त्तावेदिताचपुरुषोनभवेद्यदि ॥ ३८ ॥

जो पुरुष न होय तो परम्परा चिकित्सा संपूर्ण ज्ञातव्य विषय दीप्ति अन्धकार सत्य मिथ्या वेद शुभाशुभ कर्म कर्त्ता ज्ञाता ॥ ३७ । ३८ ॥

नाश्रयोनसुखंनार्त्तिर्नगतिर्नागतिर्नवाक् । नविज्ञानंनशास्त्राणिनजन्ममरणंनच ॥ ३९ ॥

आश्रय सुख क्रीड़ा गति आगति वाक्य विज्ञान शास्त्र जन्म मरण ॥ ३९ ॥

नबन्धोनचमोक्षःस्यात्पुरुषोनभवेद्यदि । कारणंपुरुषस्तस्मात्कारणज्ञैरुदाहृतः ॥ ४० ॥

बन्ध तथा मोक्ष यह न होयँ इसी से कारणज्ञ विद्वानोंने पुरुषको कारण कहाहै ॥ ४० ॥

नचकारणमात्मा स्यात्खादयःस्युरहेतुकाः । नचैषुसम्भवेद्ज्ञानंनचतैःस्यात्प्रयोजनम् ॥ ४१ ॥

जो आत्मा कारण न होय तो आकाशादिक हेतुरहित होजायँ और इनके विषय का ज्ञान न होय और इनका कुछ प्रयोजन भी न रहै ॥ ४१ ॥

मृद्दण्डचक्रैश्चकृतंकुम्भकाराद्दृतेघटम् । कृतंमृत्तृणकाष्ठैश्चगृहकाराद्विनागृहम् ॥ ४२ ॥

जो मृत्तिका दंड तथा चक्र के द्वारा कुंभकारके विनाही घट बनाहुआ माने और जो थवई के विना मृत्तिका तृण तथा काष्ठों से घर बनाहुआ माने ॥ ४२ ॥

योवदेत्सवदेद्देहं सम्भूयकरणैःकृतम् । विनाकर्त्तारमज्ञानाद्युक्त्यागमबहिष्कृतः ॥ ४३ ॥

वही अज्ञान से युक्ति तथा शास्त्रविरुद्ध यहबात कहैगा कि कर्त्ता के विना कारणों ने ही मिलकर देह को उत्पन्न करलिया है ॥ ४३ ॥

कारणंपुरुषःसर्वैःप्रमाणैरुपलभ्यते । येभ्यःप्रमेयंसर्वेभ्यआगमेभ्यःप्रतीयते ॥ ४४ ॥

जिन संपूर्ण आगमों की प्रमाणों से प्रमेय जाना जाता है उन्हीं संपूर्ण प्रमाणों से पुरुष कारण है यह सिद्ध होता है ॥ ४४ ॥

नतेतत्सदृशास्त्वन्येपारम्पर्य्यसमु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवशिष्टों में एक २ गुण की अधिकता है अर्थात् वायु में शब्द स्पर्श दो गुण हैं अग्नि में शब्द स्पर्श रूप यह तीन गुण हैं जलमें शब्द स्पर्श रूप तथा रस यह चारगुणहैं और पृथ्वी में शब्द स्पर्श रूप रस तथा गन्ध यह पांच गुण हैं परन्तु आकाशादि महाभूतों के क्रम से शब्दादिक एक २ गुण कहलाते हैं ॥ २६ ॥

खरद्रवचलोष्णत्वं भूजलानिलतेजसाम् । आकाशस्याप्रतीघातोदृष्टं लिंगंयथाक्रमम् ॥ २७ ॥

खरत्व द्रवत्व चलत्व उष्णत्व तथा प्रतीघात यह पृथ्वी जल वायु अग्नि तथा आकाश के क्रम से चिह्न हैं ॥ २७ ॥

लक्षणंसर्व्वमेवैतत्स्पर्शनेन्द्रियगोचरः। स्पर्शनेन्द्रियविज्ञेयःस्पर्शोहिसविपर्य्ययः ॥ २८ ॥

यह सब चिह्न स्पर्शेन्द्रियके गोचर होते हैं क्योंकि स्पर्शन इन्द्रियसे विपर्य्ययसहित स्पर्श का ज्ञान होता है ॥ २८ ॥

गुणाःशरीरेगुणिनां निर्दिष्टाश्चिह्नमेवच। अर्थाशब्दादयोज्ञेयागोचराविषयागुणाः ॥ २९ ॥

शरीर में गुणियों के (पृथिव्यादिकोंके) गुण तथा चिह्न कहेगये हैं शब्दादिकों को अर्थ ज्ञेय गोचर विषय तथा गुण कहते हैं ॥ २९ ॥

यायदिन्द्रियमाश्रित्य जन्तोर्बुद्धिःप्रवर्त्तते । यातिसातेननिर्देशम्मनसाचमनोभवा ॥ ३० ॥

जिस इन्द्रियका आश्रय करके प्राणी की बुद्धि प्रवृत्त होती है वह उसी के अनुसार कही जाती है और मनका आश्रय करके जो बुद्धि प्रवृत्त होती है वह मनके अनुसार कही जाती है अर्थात् दर्शन इन्द्रिय का आश्रय करके जो बुद्धि प्रवृत्त होती है वह दर्शनबुद्धि कहलाती है इत्यादि ॥ ३० ॥

भेदात्कार्य्येन्द्रियार्थानां बह्व्योवैबुद्धयःस्मृताः। आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानामेकैकासन्निकर्षजा ॥ ३१ ॥

कार्य्य इन्द्रिय तथा विषयों के भेद से बहुत प्रकारकी बुद्धि होती हैं आत्मा इन्द्रिय मन तथा विषय इनके योग से बुद्धि उत्पन्न होती है ॥ ३१ ॥

अंगुल्यंगुष्ठतरजस्तन्त्रीवीणानखोद्भवः । दृष्टःशब्दोयथाबुद्धिर्दृष्टासंयोगजातथा ॥ ३२ ॥

जैसे अंगुली तथा अंगूठे के संयोग से और तन्त्री वीणा तथा नख के संयोग से शब्द उत्पन्न होताहै उसी प्रकार संयोग से बुद्धि उत्पन्न होती है ॥ ३२ ॥

बुद्धीन्द्रियमनोऽर्थानां विद्याद्योगधरम्परम् । चतुर्विंशकइत्येषराशिःपुरुषसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

बुद्धि इन्द्रिय मन तथा विषय इनका परस्पर योग जानना चाहिये इसप्रकार चौबीस धातुओं के संयोग को पुरुष कहते हैं ॥ ३३ ॥

रजस्तमोभ्यांयुक्तस्य संयोगोऽयमनन्तवान् । ताभ्यांनिराकृताभ्यान्तु सत्त्ववृद्ध्यानिवर्त्तते ॥ ३४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रजोगुण तथा तमोगुण से युक्त पुरुष का यह संयोग अनन्त है और रजोगुण तथा तमोगुण का त्यागकरके सत्त्वका अवलम्बन करने से इसकी निवृत्ति होती है ॥ ३४ ॥

अत्रकर्म्मफलञ्चात्र ज्ञानञ्चात्रप्रतिष्ठितम् । अत्रमोहःसुखंदुःखंजीवितंमरणंस्वतः ॥ ३५ ॥

कर्मफल ज्ञान मोह सुख दुःख जीवन तथा मरण यह स्वभावसे पुरुषमें स्थितहैं ॥ ३५ ॥

एवंयोवेदतत्त्वेनसवेदप्रलयोदयौ ३६

जो तत्त्व से इसप्रकार जानते हैं वह सृष्टि तथा प्रलय को जानसक्ते हैं ॥ ३६ ॥

पारम्पर्य्यंचिकित्साच ज्ञातव्यंयच्च किञ्चन ॥ ३७ ॥ भास्तमःसत्यमनृतंवेदःकर्म्मशुभाशुभम् । नस्यात्कर्त्तावेदिताचपुरुषोनभवेद्यदि ॥ ३८ ॥

जो पुरुष न होय तो परम्परा चिकित्सा संपूर्ण ज्ञातव्य विषय दीप्ति अन्धकार सत्य मिथ्या वेद शुभाशुभ कर्म कर्त्ता ज्ञाता ॥ ३७ । ३८ ॥

नाश्रयोनसुखंनार्त्तिर्नगतिर्नागतिर्नवाक् । नविज्ञानंनशास्त्राणिनजन्ममरणंनच ॥ ३९ ॥

आश्रय सुख क्रीड़ा गति आगति वाक्य विज्ञान शास्त्र जन्म मरण ॥ ३९ ॥

नबन्धोनचमोक्षःस्यात्पुरुषोनभवेद्यदि । कारणंपुरुषस्तस्मात्कारणज्ञैरुदाहृतः ॥ ४० ॥

बन्ध तथा मोक्ष यह न होयँ इसी से कारणज्ञ विद्वानोंने पुरुषको कारण कहाहै ॥ ४० ॥

नचकारणमात्मा स्यात्खादयःस्युरहेतुकाः । नचैषुसम्भवेद्ज्ञानंनचतैःस्यात्प्रयोजनम् ॥ ४१ ॥

जो आत्मा कारण न होय तो आकाशादिक हेतुरहित होजायँ और इनके विषय का ज्ञान न होय और इनका कुछ प्रयोजन भी न रहै ॥ ४१ ॥

मृद्दण्डचक्रैश्चकृतंकुम्भकारादृतेघटम् । कृतंमृत्तृणकाष्ठैश्चगृहकाराद्विनागृहम् ॥ ४२ ॥

जो मृत्तिका दंड तथा चक्र के द्वारा कुंभकारके विनाही घट बनाहुआ माने और जो थवई के विना मृत्तिका तृण तथा काष्ठों से घर बनाहुआ माने ॥ ४२ ॥

योवदेत्सवदेद्देहं सम्भूयकरणैःकृतम् । विनाकर्त्तारमज्ञानाद्युक्त्यागमबहिष्कृतः ॥ ४३ ॥

वही अज्ञान से युक्ति तथा शास्त्रविरुद्ध यहवात कहैगा कि कर्त्ता के विना कारणों ने ही मिलकर देह को उत्पन्न करलिया है ॥ ४३ ॥

कारणंपुरुषःसर्वैःप्रमाणैरुपलभ्यते । येभ्यःप्रमेयंसर्वेभ्यआगमेभ्यःप्रतीयते ॥ ४४ ॥

जिन संपूर्ण आगमों की प्रमाणों से प्रमेय जाना जाता है उन्हीं संपूर्ण प्रमाणों से पुरुष कारण है यह सिद्ध होता है ॥ ४४ ॥

नतेतत्सदृशास्त्वन्येपारम्पर्य्यसमु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थिताः। सारूप्याद्येतएवेतिनिर्दिश्यन्तेनरान्नराः॥ ४५॥

जो अन्य परस्परा से पैदाहुए वे उस पुरुष के बराबर नहीं हैं और समानरूपतासे जे नर से नर बतलाये वेही भाव कहे जाते हैं॥४५॥

भावास्त्वेषांसमुदयोनिरीशःसत्त्वसंज्ञकः। कर्त्ताभोक्तानसपुमानितिकेचिद्व्यवस्थिताः॥ ४६॥

इनभावों का समुदय (उत्पन्न होना) ईश-रहित सत्त्वसंज्ञक कहाता है वह पुरुष कर्त्ता और भोक्ता नहीं ऐसा व्यवस्था (विचार) में स्थित कोई कहते हैं॥ ४६॥

तेषामन्यैःकृतस्यान्ये भावाभावैर्नराःफलम्। भुञ्जतेसदृशाःप्राप्तंयैरात्मानोपदिश्यते॥ ४७॥

उनके विचारमें जिन्होंने आत्माका उपदेश नहीं किया वह अन्य समानरूप नरभाव अन्य भावोंसे कियेहुए कर्म के प्राप्त फल को भोगते हैं॥ ४७॥

कारणानन्यतादृष्टाकर्त्तुःकर्त्तासएवतु। कर्त्ताहिकरणैर्युक्तःकारणंसर्वकर्मणाम्॥ ४८॥

कर्ता के कारणों की अनन्यता दिखाईगई कोई कर्त्ताहै जो कि निश्चयकर सर्व साधनोंसे युक्त होकर सर्वकर्मोंका कारण होता है॥४८॥

निमेषकालाद्भावानांकालःशीघ्रतरोऽत्यये। भग्नानांचपुनर्भावःकृतंनान्यमुपैतिच॥ ४९॥

भावोंके नाशहोनेपर निमेषकालसे शीघ्रतर काल है और भग्नोंका पुनर्भाव (फिर-होना) कियेहुए अन्यको नहीं प्राप्त होता है॥ ४९॥

मतंतत्त्वविदामेतद्यस्मात्कर्त्तासकारणम्। क्रियोपभोगेभूतानांनित्यःपुरुषसंज्ञकः॥ ५०॥

तत्त्वोंके जानने वालोंका यह मतहै कि जिससे वह कर्ता कारण कहाजाता जो कि प्राणियों की क्रियाके उपभोग में सनातन पुरुषसंज्ञक होता है॥ ५०॥

अहङ्कारःफलंकर्मदेहान्तरगतिःस्मृतिः। विद्यतेसतिभूतानांकारणेदेहमन्तरा॥ ५१॥

कारणों के विद्यमान होतेहुए प्राणियोंकी देहके भीतरही अहंकार, फल, कर्म दूसरे शरीरमें जाना और स्मरण ये बने रहते हैं॥५१॥

प्रभवोनह्यनादित्वाद्विद्यतेपरमात्मनः। पुरुषोराशिसंज्ञस्तुमोहेच्छाद्वेषकर्मजः॥ ५२॥

परमात्मा अनादि है इससे उसकी उत्पत्ति का कोई कारण नहीं परन्तु धातु समूहरूप पुरुष मोह इच्छा द्वेष तथा कर्मसेउत्पन्न होता है॥ ५२॥

आत्मज्ञःकरणैर्योगाज्ज्ञानं तस्य प्रवर्त्तते। करणानामवैमल्याद योगाद्वानवर्त्तते॥ ५३॥

आत्मा ज्ञानवान्है करणों के साथ संयोग से उसका ज्ञान उत्पन्न होताहै करणों के नि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेल न होने से अथवा करणोंका योग न होने से ज्ञान नहीं होता ॥ ५३ ॥

पश्यतोऽपियथादर्शेसंक्लिष्टेनास्ति दर्शनम् । तद्वज्जलेवाकलुषेचेतस्युपहतेतथा ॥ ५४ ॥

जैसे मलिन दर्पण में तथा मैले जलमें देखने से भी प्रतिबिम्ब नहीं दिखाई देता है इसी प्रकार चित्तके दूषित होनेपर ज्ञान नहीं होता ॥ ५४ ॥

करणानि मनोबुद्धिर्बुद्धिकर्मेन्द्रियाणिच । कर्तुःसंयोगजंकर्मवेदना बुद्धिरेवच ॥ ५५ ॥

मन बुद्धि ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय यह सब करण कहलाते हैं कर्त्ता के साथ इन सबका संयोग होने से कर्म उत्पन्न होता है और इसी से वेदना का ज्ञान भी होता है ॥ ५५ ॥

नैकःप्रवर्त्ततेकर्त्तुंभूतात्मानाश्नुतेफलम् । संयोगाद्वर्त्ततेसर्वंतमृतेनास्तिकिंचन ॥ ५६ ॥

अकेला जीवात्मा कर्म नहीं करता न फल का भोग करता है संयोगही से कर्म तथा कर्मफल का भोग होता है संयोग के विना कुछ भी नहीं होता ॥ ५६ ॥

नह्येकोवर्त्तते भावोवर्त्ततेनाप्यहेतुकः । शीघ्रगत्वात्स्वभावात्त्वभावोनव्यतिवर्त्तते ॥ ५७ ॥

कोई भाव एकनहीं होता और न हेतुरहित होता किन्तु शीघ्रगामी होने के कारण भाव अपने स्वभावका उल्लंघन नहीं करताहै ॥५७॥

अनादिःपुरुषोनित्योविपरीतस्तुहेतुजः । सदाकारणवन्नित्यंदृष्टंहेतुमदन्यथा ॥ ५८ ॥

पुरुष अनादि तथा नित्यहै और जो इससे विपरीत है वह हेतुसे उत्पन्न है क्योंकि सत् तथा कारणरहित जो पदार्थ है वह नित्य देखागया है और जो हेतुसे उत्पन्न हुआ है वह अनित्य देखागया है ॥ ५८ ॥

तदेवभावादग्राह्यंनित्यत्वान्नकुतश्चन । भावाद्ज्ञेयंतदव्यक्तमचिन्त्यंव्यक्तमन्यथा ॥ ५९ ॥

नित्य होने के कारण वह किसी भाव से भी अग्राह्य नहीं है वह भाव (सत्ता) से जाना जाताहै अचिन्त्यहै तथा अव्यक्त है और इस से जो विपरीतहै वह व्यक्त कहलाताहै॥५९॥

अव्यक्तमात्माक्षेत्रज्ञःशाश्वतोविभुरव्ययः । तस्माद्यदन्यत्तद्व्यक्तंवक्ष्यतेचापरंद्वयम् ॥ ६० ॥

आत्मा अव्यक्त क्षेत्रज्ञ नित्य विभु तथा अविनाशी है इससे जो अन्यहै वह सब व्यक्त कहलाता है ॥ ६० ॥

व्यक्तञ्चेन्द्रियकञ्चैवगृह्यतेतदयदिन्द्रियैः । अतोऽन्यत्पुनरव्यक्तंलिङ्गग्राह्यमतीन्द्रियम् ॥ ६१ ॥

जो इन्द्रियोंसे ग्रहण कियाजाय वह व्यक्त तथा ऐन्द्रियक कहलाता है और जो केवल चिह्नों सेही जानाजाय वह अतीन्द्रिय तथा अव्यक्त कहलाता है ॥ ६१ ॥

खादीनिबुद्धिरव्यक्तमहङ्कारस्तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्टमः । भूतप्रकृतिरुद्दिष्टाविकाराश्चै वषोडश ॥ ६२ ॥ बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चैवपञ्चकर्मेन्द्रियाणिच । समन स्काश्च पञ्चार्थाविकाराइतिसंज्ञि ताः ॥ ६३ ॥

पृथ्वी अप तेज वायु आकाश अव्यक्त बुद्धि तथा आठवां अहंकार यह भूतप्रकृति कहलाती हैं और पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय पांच शब्दादि विषय और मन यह सोलह विकार कहलाते हैं ॥ ६२ । ६३ ॥

इतिक्षेत्रंसमुद्दिष्टंसर्वमव्यक्तवर्जित म् । अव्यक्तमस्यक्षेत्रस्यक्षेत्रज्ञमृ षयोविदुः ॥ ६४ ॥

अव्यक्तको छोड़कर यह सब क्षेत्र कहलाते हैं और अव्यक्त को ऋषिलोग इस क्षेत्रका क्षेत्रज्ञ बतलाते हैं ॥ ६४ ॥

जायतेबुद्धिरव्यक्ताद्बुद्ध्याहमिति मन्यते । परंखादीन्यहङ्कारउपाद त्तेयथाक्रमम् ॥ ६५ ॥

अव्यक्त से बुद्धि उत्पन्न होती है बुद्धि से अहंकार उत्पन्न होता है और अहंकार से आकाशादिक क्रमपूर्व्वक उत्पन्न होते हैं ॥६५॥

ततःसम्पूर्णसर्वाङ्गोजातोऽभ्युदित उच्यते । पुरुषःप्रलयेचेष्टैःपुनर्भावै र्वियुज्यते ॥ ६६ ॥

तदनन्तर इन्हीं से सर्वाङ्गयुक्त उत्पन्न हुआ पुरुष कहाजाता है प्रलयसमय में पुरुष इन सब भागों से पृथक् होजाता है ॥ ६६ ॥

अव्यक्ताद्व्यक्ततांयातिव्यक्तादव्य क्ततांपुनः । रजस्तमोभ्यामाविष्टश्च क्रवत्परिवर्त्तते ॥ ६७ ॥

रजोगुण तथा तमोगुणयुक्त पुरुष अव्यक्तसे व्यक्तता को प्राप्त होताहै अर्थात् सृष्टिके प्रारम्भमें अव्यक्तपुरुष शरीर धारण करके व्यक्त होता है और व्यक्तसे अव्यक्तता को प्राप्त होताहै अर्थात् प्रलयमें स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर को छोड़कर अव्यक्त होकर सुषुप्ति अवस्था में स्थित होता है इस प्रकार चक्रके समान घूमा करताहै अर्थात् जन्म मरणादि को प्राप्त होताहै ॥ ६७ ॥

येषांद्वन्द्वेपरासक्तिरहङ्कारपराश्चये । उदयप्रलयौतेषांनतेषांयेत्वतोऽन्य था ॥ ६८ ॥

जो पुरुष सुख दुःखमें बहुत आसक्त रहते हैं और अहंकारयुक्त होते हैं वही जन्म मरण को प्राप्त होते हैं और जो सुख दुःखमें आसक्त न होकर अहंकारसे रहित होते हैं उनको जन्म मरणका क्लेश नहीं भोगना पड़ता है अर्थात् वह मुक्त होजाते हैं ॥ ६८ ॥

प्राणापानौनिमेषाद्याजीवनंमनसो गतिः । इन्द्रियान्तरसञ्चारःप्रेरणंधा रणञ्चयत् ॥ ६९ ॥

प्राण अपान निमेष जीवन मनकी गति मनका इन्द्रियान्तरों में घूमना प्रेरण करना धारण करना ॥ ६९ ॥

देशान्तरगतिःस्वप्ने पञ्चत्वग्रहणंत था । दृष्टस्यदक्षिणेनाक्ष्णासव्येना पगमस्तथा ॥ ७० ॥

स्वप्नमें देशान्तर को जाना मृत्यु दक्षिण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेत्रसे देखीहुई वस्तु को वाम नेत्रसे पहचानना ॥ ७० ॥

इच्छाद्वेषःसुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतनाधृतिः । बुद्धिःस्मृतिरहङ्कारोलिङ्गानि परमात्मनः ॥ ७१ ॥

इच्छा द्वेष सुख दुःख प्रयत्न चेतना धैर्य्य बुद्धि स्मृति तथा अहंकार यह परमात्मा के चिह्न हैं ॥ ७१ ॥

यस्मात्समुपलभ्यन्तेलिङ्गान्येतानि जीवतः । नमृतस्यात्मलिङ्गानि तस्मादाहुर्महर्षयः ॥ ७२ ॥

यह सब चिह्न जीतेहुये पुरुषमें पायेजाते हैं मरेहुये में नहीं पायेजाते हैं इससे महर्षिलोग इन चिह्नों को आत्माके चिह्न कहते हैं ॥७२॥

शरीरंहिगतेतस्मिञ्छून्यागारमचेतनम् । पञ्चभूतावशेषत्वात्पञ्चत्वंगतमुच्यते ॥ ७३ ॥

आत्माके चलेजानेपर शरीर शून्य तथा चैतन्यता से रहित होजाता है केवल पंच महाभूतही बाकी रहजाते हैं इसीसे उसे पंचत्व (मरण) को प्राप्त हुआ कहते हैं ॥ ७३ ॥

अचेतनंक्रियावच्चमनश्चेतयितापरः । युक्तस्यमनसातस्यनिर्दिश्यंते विभोःक्रियाः ॥ ७४ ॥

मन चैतन्य रहित तथा क्रियावान् है आत्माके योगसे मनमें चैतन्यता होती है और मनके योगसे वह विभु आत्मा क्रियावान् कहलाता है ॥ ७४ ॥

चेतनावान्यतश्चात्माततःकर्त्तानिरुच्यते । अचेतनत्वाच्चमनःक्रियावदपिनोच्यते ॥ ७५ ॥

आत्मा चैतन्य है इसी से कर्त्ता कहाजाता है और मन यद्यपि क्रियावान् है तथापि चेतनारहित होने के कारण कर्त्ता नहीं कहलाताहै ॥ ७५ ॥

यथास्वेनात्मनःसर्वमनःसर्वासुयोनिषु । प्राणैस्तन्त्रयतेप्राणीनह्यन्योऽन्यस्यतन्त्रकः ॥ ७६ ॥

जैसे प्राणी अपने प्राणों से मनको सम्पूर्ण योनियों में बांध लेताहै क्योंकि अन्यका प्रेरक अन्य नहीं होसक्ता ॥ ७६ ॥

वशीतत्कुरुतेकर्मयत्कृत्वाफलमश्नुते । वशीचेतःसमाधत्तेवशीसर्वंनिरस्यति ॥ ७७ ॥

आत्मा वशी है क्योंकि जो चाहता है सो करता है और उसके फल को भोक्ताहै और वशी होनेके कारण चित्त को समाधिमें लगाताहै और सम्पूर्ण कर्मों का त्याग करता है ॥ ७७ ॥

देहीसर्वगतोह्यात्मास्वेस्वेसंस्पर्शनेन्द्रिये । सर्वाःसर्वाश्रयस्थास्तुनात्मातोवेत्तिवेदनाः ॥ ७८ ॥

देहधारी सर्व्वग आत्मा अपनी २ स्पर्शन इन्द्रियका आश्रयण करके वेदनाओंका अनुभव करता है और इन्द्रियां प्रति शरीर में अलग २ हैं इससे आत्मा सम्पूर्ण संसारकी वेदनाओं का अनुभव नहीं करसक्ता ॥७८॥

विभुत्वमतएवास्ययस्मात्सर्वगतो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महान् । मनसश्चसमाधानात्पश्य त्यात्मातिरस्कृतम् ॥ ७९ ॥

सर्व्वग आत्मा मनको समाधिमें लगाकर पर्व्वतादिकों में छिपीहुई भी वस्तुओं को देखताहै इसीसे विभुहै ॥ ७९ ॥

नित्यानुबन्धंमनसादेहकर्मानुपातिना।सर्वयोनिगतंविद्यादेकयोनाव पिस्थितम् ॥ ८० ॥

शरीरके कर्म्मोंका अनुसरण करनेवाले मनके साथ आत्माका सदैवसे सम्बन्ध चला आया है इससे एकही योनि में मनको एकाग्र करके आत्मा सब योनियों का वृत्तांत जान सक्ताहै ॥ ८० ॥

आदिर्नास्त्यात्मनःक्षेत्रपारम्पर्य्यम नादिकम् । अतस्तयोरनादित्वा त्किंपूर्वमितिनोच्यते ॥ ८१ ॥

आत्माका आदि नहीं और क्षेत्र परम्परा (सृष्टिक्रम) भी अनादि है दोनोंके अनादि होनेके कारण क्षेत्र पहले है अथवा क्षेत्रज्ञ पहले है यह नहीं कहा जासक्ता ॥ ८१ ॥

ज्ञःसाक्षीत्युच्यतेनाज्ञःसाक्षीह्यात्मा ह्यतःस्मृतः । सर्वभावाहिसर्वेषांभूतानामात्मसाक्षिकाः ॥ ८२ ॥

जो ज्ञानीहै वही साक्षी कहा जाताहै और जो अज्ञानी है वह साक्षी नहीं होताहै इससे आत्मा को साक्षी कहते हैं इसीसे सब प्राणियोंकी सब बातों में उनका आत्माही साक्षी है ॥ ८२ ॥

नैकःकदाचिद्भूतात्मालक्षणैरुपलभ्यते । विशेषोऽनुपलभ्यस्यतस्य नैकस्यविद्यते ॥ ८३ ॥

केवल (अकेला) आत्मा लक्षणोंकेद्वारा नहीं पायाजाता और उस अप्राप्त एक आत्मामें कोई विशेषता नहीं होती है ॥ ८३ ॥

संयोगःपुरुषस्येष्टोविशेषोवेदनाकृतः । वेदनायत्रनियताविशेषस्तत्र तत्कृतः ॥ ८४ ॥

तो मालूम हुआ कि संयोगज पुरुषमेंही वेदनाओं की विशेषता होती है क्योंकि जिसमें वेदना होती है उसीमें वेदनाओंकी कीहुई विशेषता भी होती है ॥ ८४ ॥

चिकित्सतिभिषक्सर्वास्त्रिकालावेदनाइति। ययायुक्त्यावदन्त्येकेसा युक्तिरुपधार्य्यताम् ॥ ८५ ॥

वैद्यलोग भूत भविष्य तथा वर्त्तमान तीनों कालों की वेदनाओं की चिकित्सा करते हैं इस बात को जिस युक्तिसे लोग सिद्ध करते हैं उस युक्ति को तुम सुनो ॥ ८५ ॥

पुनस्तच्छिरसः शूलंज्वरःसपुनरागतः । पुनःसकासोबलवांश्छर्दिः सापुनरागता ॥ ८६ ॥

फिर वही शिरकी पीड़ा आगई फिर वही ज्वर आया फिर वही बलवान् खांसी आई तथा फिर वही छर्दि उपस्थित हुई ॥ ८६ ॥

एभिःप्रसन्नैर्वचनैरतीतागमनंमतम् । कालश्चायमतीतानामार्तीनां पुनरागतः ॥ ८७ ॥

इन वचनों से व्यतीत वेदनाओं का फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगमन मानागया और अतीत वेदनाओं का समय फिर आगया ॥ ८७ ॥

तमर्त्तिकालमुद्दिश्यभेषजंयत्प्रयुज्यते। अतीतानांप्रशमनंवेदनानांतदुच्यते ॥ ८८ ॥

यह मानकर वेदनाओं के उस अतीत समयका उद्देश करके जो चिकित्सा की जाती है उसे अतीत वेदनाओं की चिकित्सा कहते हैं ॥ ८८ ॥

आपस्ताःपुनरागुर्याभिःशस्यंपुराहतम्। तथाप्रक्रियतेसेतुःप्रतिकर्मतथाश्रयेत् ॥ ८९ ॥

जिस जल के द्वारा नाज पहले नष्ट हुआ था वही जल फिर आनेवाला है यह जानकर जैसे जल के रोकने को बांध बनाया जाता है ॥ ८९ ॥

पूर्वरूपंविकाराणांदृष्ट्वाप्रादुर्भविष्यताम्। याक्रियाक्रियतेसाचवेदनांहन्त्यनागताम् ॥ ९० ॥

उसीप्रकार होनेवाले रोगों के पूर्व्वरूपको देखकर जो चिकित्सा की जाती है वह भविष्य वेदनाओंको नाशकरदेती है ॥ ९० ॥

पारम्पर्य्यानुबन्धस्तुदुःखानांविनिवर्त्तते। सुखहेतूपचारेणसुखञ्चापिप्रवर्त्तते ॥ ९१ ॥

सुखकारी आचरणों से परम्परागत दुःख निवृत्त होता है और सुख की प्रवृत्ति होती है ॥ ९१ ॥

नसमायान्तिवैषम्यंविषमाःसमतांनच। हेतुभिःसदृशानित्यंजायन्तेदेहधातवः ॥ ९२ ॥

जो समधातु हैं वह विषमता को नहीं प्राप्त होतीं तथा जो विषमधातु हैं वह समताको नहीं प्राप्त होतीं क्योंकि देह की धातु सदैव हेतुओं के सदृश होती है ॥ ९२ ॥

युक्तिमेतांपुरस्कृत्यत्रिकालंवेदनांभिषक्। हन्तीत्युक्ताचिकित्सासानैष्ठिकीयाविनोपधा ॥ ९३ ॥

इस युक्तिको लेकर वैद्यलोग त्रिकाल वेदनाको नाश करते हैं उपधा (दगाबाजी) ओंके विना जो चिकित्सा है उसे नैष्ठिकी चिकित्सा कहते हैं ॥ ९३ ॥

उपधाहिपरोहेतुर्दुःखदुःखाश्रयप्रदः। त्यागःसर्वोपधानाञ्चसर्वदुःखव्यपोहकः ॥ ९४ ॥

क्योंकि उपधा दुःख तथा दुःखके आश्रयों की कारण है संपूर्ण उपधाओं का त्यागही सब दुःखों का नाशक है ॥ ९४ ॥

कोषकारोयथाह्यंशूनुपादत्तेवधप्रदान्। उपादत्तेतथार्थेभ्यस्तृष्णामज्ञःसदातुरः ॥ ९५ ॥

कोशकार (रेशमकाकीड़ा) जैसे नाशके कारणरूप सूत्रों को अपने मुख से बनाता जाता है उसीप्रकार मूर्ख पुरुष विषयों में तृष्णा को बढ़ाता है ॥ ९५ ॥

यस्त्वग्निकल्पानर्थान्ज्ञोज्ञात्वातेभ्योनिवर्त्तते। अनारम्भादसंयोगात्तंदुःखंनोपतिष्ठते ॥ ९६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और जो ज्ञानवान् पुरुष विषयोंको अग्नि के समान जानकर उनका त्याग करता है अनारंभ (किसीविषय का आरंभ न करना) तथा असंयोगके कारण उसको दुःख नहीं प्राप्त होता ॥ ९६ ॥

धीधृतिस्मृतिविभ्रंशःसम्प्राप्तिःकालकर्मणाम्। असात्म्यार्थागमश्चेतिज्ञातव्यादुःखहेतवः ॥ ९७ ॥

बुद्धि धैर्य्य तथा स्मृतिका भ्रंश कालकर्मों की संप्राप्ति अर्थात् जिस समय में जो कार्य्य करना चाहिये उसका न करना तथा असात्म्य वस्तुओं का सेवन करना यह सब दुःख के कारण हैं ॥ ९७ ॥

विषमाभिनिवेशोयोनित्यानित्येहिताहिते। ज्ञेयःसबुद्धिविभ्रंशःसमंबुद्धिर्हिपश्यति ॥ ९८ ॥

नित्य अनित्य हित तथा अहित विषयोंमें विषमता से प्रवृत्त होने को बुद्धिभ्रंश कहते हैं क्योंकि बुद्धिही समता से कार्य्य करती है ॥ ९८ ॥

विषयप्रवणंचित्तंधृतिभ्रंशान्नशक्यते। नियन्तुमहितादर्थाद्धृतिर्हिनियमात्मिका ॥ ९९ ॥

धैर्य्य के भ्रंश नष्ट होजाने से विषयों में लगाहुआ चित्त अहित विषय से नहीं हटाया जा सक्ता है क्योंकि चित्तकी नियमात्मिका वृत्ति धैर्य्यही है ॥ ९९ ॥

तत्त्वज्ञानेस्मृतिर्यस्यरजोमोहावृतात्मनः। भ्रश्यतेसस्मृतिभ्रंशः स्मर्त्तव्यंहिस्मृतौस्थितम् ॥ १०० ॥

रजोगुण तथा मोह से आत्मा के आच्छादित होजानेपर जो तत्त्वज्ञानकी स्मृति नहीं रहती है उसे स्मृतिभ्रंश कहते हैं क्योंकि स्मरण करनेकी शक्ति स्मृतिहीमें है १०० ॥

धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टःकर्मयत्कुरुतेशुभम्। प्रज्ञापराधंतंविद्यात्सर्वदोषप्रकोपणम् ॥ १०१ ॥

धैर्य्य बुद्धि तथा स्मृति से भ्रष्ट हुआ पुरुष जो अशुभ कर्म करता है उसे प्रज्ञापराध जानना चाहिये प्रज्ञापराध से संपूर्णदोष उत्पन्न होते हैं ॥ १०१ ॥

उदीरणंगतिमतामुदीर्णानाञ्चनिग्रहः। सेवनंसाहसानाञ्चनारीणांचातिसेवनम् ॥ १०२ ॥

नहीं उपस्थित हुए मूत्र पुरीष आदिवेगों का हठपूर्व्वक निकालना उपस्थित हुए वेगों का रोकना साहसमें प्रवृत्त होना बहुत मैथुन करना ॥ १०२ ॥

कर्म्मकालातिपातश्च मिथ्यारम्भश्च कर्म्मणाम्। विनयाचारलोपश्चपूज्यानांचाभिधर्षणम् ॥ १०३ ॥

समयपर कार्य्य का न करना निरर्थक काम करना विनय तथा सदाचार का त्याग करना पूज्यों का अनादर करना ॥ १०३ ॥

ज्ञातानां स्वयमर्थानामहितानांनिषेवणम्। परमौन्मादिकानांचप्रत्ययानांनिषेवणम् ॥ १०४ ॥

जिन पदार्थों को जानते हैं कि यह हमारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अहित हैं उनका भी सेवन करना उन्माद के हेतुओंका सेवन करना ॥ १०४ ॥

अकालादेशसंचारौमैत्रीसंक्लिष्टकर्मभिः । इन्द्रियोपक्रमोक्तस्यसद्वृत्तस्यचवर्ज्जनम् ॥ १०५ ॥

कुदेश तथा कुसमय में घूमना दुष्टोंके साथ मित्रता करना इन्द्रियोपक्रमणीय नाम अध्याय में कहे हुए सदाचारका त्याग करना ॥ १०५ ॥

ईर्ष्यामानमदक्रोधलोभमोहमदभ्रमाः । तज्जंवाकर्मयत्क्लिष्टंक्लिष्टंयदेहकर्मच ॥ १०६ ॥

ईर्ष्या मान मद क्रोध लोभ मोह मद तथा भ्रम ईर्ष्यादिसे हुआ क्लेशदायक कर्म दैहिक क्लेशदायक कर्म ॥ १०६ ॥

यच्चान्यदीदृशंकर्म्म रजोमोहसमुत्थितम् । प्रज्ञापराधंतंशिष्टाब्रुवते व्याधिकारणम् ॥ १०७ ॥

और रजोगुण तथा मोहसे उत्पन्नहुए इसी प्रकारके अन्य कर्म इन सब को शिष्ट लोग प्रज्ञापराध कहते हैं प्रज्ञापराध रोगों का कारण है ॥ १०७ ॥

बुद्ध्याविषमविज्ञानं विषमञ्चप्रवर्तनम् । प्रज्ञापराधंजानीयान्मनसोगोचरंहितत् ॥ १०८ ॥

बुद्धि के द्वारा विषम ज्ञान होना अथवा बुद्धिकी विषमतासे प्रवृत्तहोना इसको भी प्रज्ञापराध जानना चाहिये यह प्रज्ञापराध मन द्वाराही जानाजाता है ॥ १०८ ॥

निर्दिष्टाकालसम्प्राप्तिर्व्याधीनांहेतुसंग्रहे । चयप्रकोपप्रशमाः पित्तादीनांयथापुरा ॥ १०९ ॥

रोगों के हेतुसंग्रह में कालसंप्राप्ति कहीगई पित्तादि दोषों का संचित होना कुपित होना शान्त होना ॥ १०९ ॥

मिथ्यातिहीनलिंगाश्च वर्षान्तारोगहेतवः । जीर्णभुक्तप्रजीर्णान्नकालाकालस्थितिश्चया ॥ ११० ॥

रोगोंका कारणरूप वर्षादि ऋतुओं का मिथ्यायोग अतियोग तथा हीनयोग भोजन के पचजाने पर फिर भोजन के काल तथा असमय का निर्णय ॥ ११० ॥

पूर्वमध्यपराह्णाश्च रात्र्यायामास्त्रयश्चये । येषुकालेषुनियतायेरोगास्तेच कालजाः ॥ १११ ॥

पूर्वाह्न मध्याह्न तथा अपराह्न और रात्रि के तीन भाग इन सबको काल संप्राप्ति कहते हैं जिन २ समयोंमें जो २ रोग अवश्य होते हैं वह रोग कालज कहलाते हैं ॥ १११ ॥

अन्येद्युष्कोद्व्यहग्राही तृतीयकचतुर्थकौ । स्वेस्वेकालेप्रवर्त्तन्तेकालेह्येषाम्बलागमः ॥ ११२ ॥

अन्येद्युष्क द्व्यहग्राही तृतीयक तथा चतुर्थक यह अपने २ समयमें प्रवृत्त होते हैं क्योंकि उन्हीं समयों में इनका बल बढ़ता है ॥ ११२ ॥

एतेचान्येचयेकेचित्कालजाविविधागदाः । अनागतेचिकित्स्यास्तेबलकालौविजानता ॥ ११३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विना। सुखंदुःखंयथायच्चबोद्धव्यं तत्तथोच्यते॥ १३२॥

आत्मा इन्द्रिय मन तथा बुद्धिका गोचर सुख दुःख कर्म्मके विना नहीं होता जिस प्रकारसे जो दुःख जाना जाताहै वह उसी प्रकारसे कहलाता है॥ १३२॥

स्पर्शनेन्द्रियसंस्पर्शःस्पर्शोमानस एवच। द्विविधःसुखदुःखानांवेदनानांप्रवर्त्तकः॥ १३३॥

इन्द्रियोंके द्वारा स्पर्श तथा मानस स्पर्श यह दो प्रकारका स्पर्शही सुख तथा दुःखदायी वेदनाओंका प्रवर्त्तक है॥ १३३॥

इच्छाद्वेषात्मिकातृष्णासुखदुःखात्प्रवर्त्तते। तृष्णाचसुखदुःखानां कारणंपुनरुच्यते॥ १३४॥

सुख तथा दुःखसे इच्छात्मक तथा द्वेषात्मक तृष्णा उत्पन्न होती है फिर वही तृष्णा सुख तथा दुःखका कारण कहीजाती है॥ १३४॥

उपादत्तेहिसाभावान्वेदनाश्रयसंज्ञकान्। स्पृश्यतेनानुपादानोनास्पृष्टोवेत्तिवेदनाः॥ १३५॥

इसका कारण यह है कि तृष्णा वेदनाओं के आश्रयभूतभावों का उपादान (ग्रहण) करती है क्योंकि उपादानके विना स्पर्श नहीं होता और स्पर्शके विना वेदनाओंका अनुभव नहीं होसक्ता है॥ १३५॥

वेदनानामधिष्ठानम्मनोदेहश्चसेन्द्रियः। केशलोमनखाग्रान्नमलद्रवगुणैर्विना॥ १३६॥

केश रोम नखाग्र अन्न मल द्रव तथा गुणों के विना इन्द्रिय सहित शरीर और मन वेदनाओंका स्थान है॥ १३६॥

योगेमोक्षेचसर्वासांवेदनानामवर्त्तनम्। मोक्षोनिवृत्तिर्निःशेषायोगोमोक्षप्रवर्त्तकः॥ १३७॥

योग तथा मोक्षमें कोई वेदना नहीं होती है मोक्षमें सब बातोंकी निवृत्ति होजाती है और योगसे मोक्ष होती है॥ १३७॥

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात्प्रवर्त्तते। सुखंदुःखमनारम्भादात्मस्थेमनसिस्थिते॥ १३८॥

आत्मा इन्द्रिय मन तथा विषयों के संयोग से सुख दुःखकी प्रवृत्ति होती है और किसी कार्य्यमें प्रवृत्त न होकर मनके आत्मामें स्थित होजाने पर॥ १३८॥

निवर्त्ततेतदुभयंवशित्वंचोपजायते। सशरीरस्ययोगज्ञास्तंयोगमृषयोविदुः॥ १३९॥

सुख दुःख दोनों निवृत्त होजाते हैं और शरीर सहित इन्द्रियां वशीभूत होजाती हैं ऋषिलोग इसी अवस्था को योग कहते हैं॥ १३९॥

आवेशश्चेतसोज्ञान मर्थानांछन्दतःक्रिया। दृष्टिःश्रोत्रंस्मृतिःकान्तिरिष्टतश्चाप्यदर्शनम्॥ १४०॥

चित्तका आवेश अर्थोंका ज्ञान स्वच्छन्दता से कार्य्य करना दृष्टि श्रवण स्मृति कान्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और अपनी इच्छाके अनुसार अदृष्ट होजाना ॥ १४० ॥

इत्यष्टविधमाख्यातंयोगिनांबलमैश्वरम् । शुद्धसत्त्वसमाधानात्तत्सर्वमुपजायते ॥ १४१ ॥

यह आठ प्रकार का दैवीबल योगियों को होजाता है शुद्धचित्त की समाधि लगने सेही यह सब बातें उत्पन्न होती हैं ॥ १४१ ॥

मोक्षोरजस्तमोऽभावाद्बलवत्कर्मसंक्षयात् । वियोगःकर्मसंयोगैरपुनर्भवउच्यते ॥ १४२ ॥

रजोगुण तथा तमोगुण के अभाव होने के कारण कर्मोंके क्षीण होजानेसे कर्म के संयोग से रहित होजाने को मोक्ष तथा अपुनर्भव कहते हैं ॥ १४२ ॥

सतामुपासनंसम्यगसतांपरिवर्जनम् । व्रतचर्य्योपवासश्चनियमाश्चपृथग्विधाः ॥ १४३ ॥

अच्छेप्रकारसे सज्जनों की उपासना असज्जनोंका त्याग व्रत उपवास अनेक प्रकारके नियम ॥ १४३ ॥

धारणंधर्मशास्त्राणांविज्ञानंविजनेरतिः । विषयेष्वरतिर्मोक्षे व्यवसायःपराधृतिः ॥ १४४ ॥

धर्मशास्त्रका अभ्यास विज्ञान निर्जन स्थानमें रहने की इच्छा विषयोंसे अनिच्छा मोक्ष में उद्योग अत्यन्त धैर्य्य ॥ १४४ ॥

कर्मणामसमारंभःकृतानाञ्चपरिक्षयः । नैष्कर्म्यमनहङ्कारःसंयोगेभयदर्शनम् ॥ १४५ ॥

कार्य्योंका अनारंभ प्राक्तन कर्मोंका नाश कर्मरहित होना अहंकाररहित होना संयोग से डरना ॥ १४५ ॥

मनोबुद्धिसमाधानमर्थतत्त्वपरीक्षणम् । तत्त्वस्मृतेरुपस्थानात्सर्वमेतत्प्रवर्त्तते ॥ १४६ ॥

मन तथा बुद्धिका समाधिस्थ होना तथा अर्थतत्त्वकी परीक्षा करना यह सब बातें स्मृतिके उपस्थित होनेसे होती हैं ॥ १४६ ॥

स्मृतिःसत्सेवनाद्यैश्च धृत्यन्तैरुपलभ्यते । स्मृत्वास्वभावंभावानांस्मरन्दुःखात्प्रमुच्यते ॥ १४७ ॥

और स्मृति सत्सेवन से आदि लेकर धैर्य्यपर्य्यन्त जो बातें कहीगई हैं उनसे पाईजाती हैं स्मृतिसेही सांसारिक भावों के स्वभाव को स्मरणकरके पुरुष दुःखसे छूटजाताहै॥ १४७॥

वक्ष्यन्तेकारणान्यष्टौस्मृतिर्यैरुपजायते । निमित्तरूपग्रहणात्सादृश्यात्सविपर्ययात् ॥ १४८ ॥ सत्त्वानुबन्धादभ्यासाज्ज्ञानयोगात्पुनःश्रुतात्। दृष्टश्रुतानुभूतानांस्मरणात्स्मृतिरुच्यते ॥ १४९ ॥

जिन आठ कारणों से स्मृति उत्पन्न होती है उनको कहते हैं दृष्ट श्रुत तथा अनुभूत पदार्थों का निमित्तग्रहण से रूपग्रहण से सादृश्यसे विपर्य्यय से मनको लगाये रखने से अभ्यास से ज्ञानयोग से तथा फिर सुनने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से जो स्मरण होता है उसे स्मृति कहते हैं॥ १४८। १४९॥

एतत्तदेकमयनंमुक्तैर्मोक्षस्यदर्शितम्। तत्त्वस्मृतिबलंयेनगतानपुनरागताः॥ १५०॥

मुक्तलोगोंने तत्त्वोंके स्मृतिबलकोही मोक्षका मार्ग कहा है जिसके द्वारा जाकर पुरुष फिर नहीं लौटते हैं अर्थात् मुक्त होजाते हैं॥ १५०॥

अयनंपुनराख्यातमेतद्योगस्ययोगिभिः। संख्यातधर्मैःसांख्यैश्चमुक्तैर्मोक्षस्यचायनम्॥ १५१॥

योगी लोगोंने भी इसे योगका मार्ग कहा है और सांख्य जानने वालों ने भी इसी को मोक्षका मार्ग कहा है॥ १५१॥

सर्वंकारणवद्दुःखमस्वञ्चानित्यमेवच। नचात्माकृतकंतद्धितत्रचोत्पद्यतेस्वता॥ १५२॥

इस संसार में जो कुछ है सो सब कार्य्यरूप है दुःखद तथा अनित्य इस संसारमें अपना कुछ भी नहीं है परन्तु इसमें स्वत्व तब तक रहता है॥ १५२॥

यावन्नोत्पद्यतेसत्याबुद्धिर्नैतदहंयया। नैतन्ममचविज्ञायज्ञःसर्वमतिवर्त्तते॥ १५३॥

जब तक यह मैं नहीं हूं यह मेरा नहीं है यह सत्यबुद्धि नहीं उत्पन्न होती और सत्यबुद्धि के उत्पन्न होनेपर ज्ञानी पुरुष सबका त्याग करदेता है॥ १५३॥

तस्मिंश्चरमसंन्यासेसमूलाःसर्ववेदनाः। ससंज्ञाज्ञानविज्ञानानिवृत्तिंयान्त्यशेषतः॥ १५४॥

उस अन्तिमत्याग में नामसहित संपूर्ण वेदना ज्ञान विज्ञान के द्वारा मूलसहित नष्ट होजाती हैं॥ १५४॥

अतःपरंब्रह्मभूतोभूतात्मानोपलभ्यते। निःसृतःसर्वभावेभ्यश्चिह्नंयस्यनविद्यते॥ १५५॥

तदनन्तर जीवात्मा ब्रह्मस्वरूप होजाता है फिर वह चिह्नोंसे नहीं जानाजाता है वह सब भावों से अलग होजाता है इससे उसके कोई चिह्न नहीं रहते क्योंकि॥ १५५॥

गतिर्ब्रह्मविदांब्रह्मतच्चाक्षरमलक्षणम्। ज्ञानंब्रह्मविदाञ्चात्रनाज्ञस्तज्ज्ञातुमर्हति॥ १५६॥

ब्रह्मज्ञानी लोग ब्रह्महीमें लीन होजाते हैं और ब्रह्म अक्षय तथा चिह्नों से रहित है ब्रह्मज्ञानी लोगही उसको जानसक्ते हैं अज्ञानी लोग उसको नहीं जानसक्ते हैं॥ १५६॥

प्रश्नाःपुरुषमाश्रित्य त्रयोविंशतिरुत्तमाः। कतिधापुरुषीयेऽस्मिन्निर्णीतास्तत्त्वदर्शिना॥ १५७॥

इति कतिधापुरुषीयंशारीरंसमाप्तम्॥ १॥

कतिधापुरुषीयनाम इस अध्यायमें तत्त्वदर्शी भगवान् आत्रेयजीने पुरुषके विषय में तेईस उत्तम प्रश्नोंका निर्णय किया॥ १५७॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें कतिधापुरुषीयनामपहलाअध्यायसमाप्तहुआ॥ १॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसराअध्याय॥

अतुल्यगोत्रीयम्।

अतुल्यगोत्रस्यरजःक्षयान्तेरहोविसृष्टंमिथुनीकृतस्य। किंस्याच्चतुष्पात्प्रभवञ्चषड्भ्योयत्स्त्रीषुगर्भत्वमुपैतिपुंसः॥ १॥

इसके उपरान्त अतुल्यगोत्रीयनाम शारीर का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा अग्निवेशने भगवान् आत्रेयजी से पूछा कि हे भगवन् रजोधर्मके उपरान्त अतुल्यगोत्रीयपुरुष के साथ रमण करने से पुरुष की कौनसी छः वस्तुओं से उत्पन्न चतुष्पादात्मक वस्तु स्त्रीमें गर्भत्व को प्राप्त होतीहै॥१॥

शुक्रंतदस्यप्रवदंतिधीरायद्धीयतेगर्भसमुद्भवाय। वाय्वग्निभूम्यब्गुणपादवत्तंषड्भ्योरसेभ्यःप्रभवश्चतस्य॥२॥

इस प्रश्न को सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि जिससे गर्भ उत्पन्न होता है उसे पण्डित लोग शुक्र कहते हैं वायु अग्नि पृथ्वी तथा जल इन्हीं चार भूतोंके चारअंश उसमें होते हैं और छः रसोंसे वह उत्पन्न है॥ २॥

सम्पूर्णदेहःसमयेसुखञ्चगर्भःकथंकेनचजायतेस्त्री। गर्भंचिराद्विन्दतिसप्रजापि भूत्वाथवानश्यतिकेनगर्भः॥ ३॥

अग्निवेशने पूछा कि हे भगवन् समयपर सम्पूर्ण अंगयुक्त गर्भ किस प्रकार और कारणसे सुखपूर्वक स्त्री उत्पन्न करती है कोई २ अबन्ध्या स्त्रीभी बहुत देरमें क्यों गर्भ धारण करती है और किस कारणसे गर्भ होकर भी नष्ट होजाता है॥ ३॥

शुक्रासृगात्माशयकालसम्पद्यस्योपचारश्चहितैस्तथार्थैः। गर्भश्चकालेचमुखीसुखञ्चसञ्जायतेसम्परिपूर्णदेहः॥ ४॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि वीर्य्य रज आत्मा आशय तथा समय इनके ठीक होनेपै हितकारी आहार विहारके सेवन से समयपर सम्पूर्ण अवयवयुक्त गर्भ सुखपूर्वक उत्पन्न होताहै॥ ४॥

योनिप्रदोषान्मनसोऽभितापाच्छुक्रासृगाहारविहारदोषात्। अकालयोगाद्बलसंक्षयाच्चगर्भंचिराद्विन्दतिसप्रजापि॥ ५॥

योनिके दूषित होने से मनके संतप्त होनेसे वीर्य्य रज तथा आहार विहारके दोषसे असमयमें संभोग करने से और बलके क्षीण होने से अबन्ध्या स्त्रीभी देरमें गर्भ धारण करती है॥ ५॥

असृङ्निरुद्धंपवनेननार्य्यागर्भंव्यवस्यन्त्यबुधाःकदाचित्। गर्भस्यरूपंहिकरोतितस्यास्तदासृगस्रावि विवर्द्धमानम्॥ ६॥

किसी २ स्त्री की वायु दूषित होकर रज को रोकती है और गर्भके सम्पूर्ण लक्षणों को उत्पन्न करती है तब वह रुकाहुआ रज क्रम से बढ़ता है मूर्खलोग अज्ञान से उसे गर्भही जानते हैं॥ ६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तदग्निसूर्य्यश्रमशोकरोगैरुष्णान्नपानैरथवाप्रवृत्तम् । दृष्ट्वासृगेकेनच गर्भमज्ञाः केचिन्नराभूतहृतंवदन्ति ॥ ७ ॥

अग्नि सूर्य्य श्रम शोक रोग तथा उष्ण अन्नपानकेद्वारा वह रज बहने लगता है यह देखकर कोई २ मूर्ख कहतेहैं कि गर्भ को भूत हरलेगया परन्तु यह मूर्खतामात्रहै ॥ ७ ॥

ओजोऽशनानांरजनीचराणामाहारहेतोर्नशरीरमिष्टम् । गर्भंहरेयुर्यदि तेन मातुर्लब्धावकाशं नहरेयुरोजः ॥ ८ ॥

क्योंकि भूतोंका आहार ओजधातुहै शरीर नहीं है जो वह स्त्रीके गर्भ से गर्भ को लेजायँ तो अवकाश पाकर उसका ओजधातुभी क्यों न लेजायँ ॥ ८ ॥

कन्यांसुतंवासहितौपृथग्वा सुतौसुतेवातनयान्बहून्वा । कस्मात्प्रसूतेसुचिरेणगर्भमेकोऽभिवृद्धिञ्च यमेभ्युपैति ॥ ९ ॥

अग्निवेशने भगवान् आत्रेयजी से पूछा कि हे भगवन् किस कारणसे पुत्र किस कारणसे कन्या किस कारणसे एक साथही पुत्र कन्या किस कारण से एक साथही दो पुत्र किस कारणसे एक साथही दो कन्या तथा किस कारणसे एक साथही अनेक सन्तान उत्पन्न होती हैं किसी २ स्त्रीका गर्भ क्यों बहुतकाल में उत्पन्न होता है और किस कारणसे दो सन्तानों के होने में एक हीनाङ्ग और एक पुष्टाङ्ग होती है ॥ ९ ॥

रक्तेन कन्यामधिकेनपुत्रं शुक्रेणतेनद्विविधीकृतेन । बीजेनकन्याञ्च सुतञ्चसूते यथास्वबीजान्यतराधिकेन ॥ १० ॥ शुक्राधिकंद्वैधमुपैतिबीजं यस्यासुतौसासहितौप्रसूते । रक्ताधिकंवायदिभेदमेति द्विधासुतेसासहितेप्रसूते ॥ ११ ॥

यहसुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि रजकी अधिकता में कन्या उत्पन्न होती है और वीर्य्य की अधिकता में पुत्र उत्पन्न होताहै वायु के द्वारा अधिक वीर्य्यवाले बीज (रक्ततथावीर्य्यमिलाहुआ) के जो दो भाग होजायँ तो दो पुत्र उत्पन्न होते हैं अधिक रजवाले बीजके जो दो भाग होजायँ तो दो कन्या उत्पन्न होती हैं और जो बीज के दो भागों में से एक में वीर्य्य अधिकहोय दूसरे में रुधिर अधिकहोय तो एकसे पुत्र दूसरे से कन्या उत्पन्न होती हैं ॥ १० । ११ ॥

भिनत्तियावद्बहुधाप्रपन्नः शुक्रार्त्तवंवायुरतिप्रवृद्धः । तावन्त्यपत्यानि यथाविभागंकर्म्मात्मकान्यस्ववशात्प्रसूते ॥ १२ ॥

जो बहुत बढ़ी हुई वायु बीज के अनेक भाग करडाले तो कर्म के अनुसार जितने विभाग होजायँ उतनी ही सन्तान उत्पन्न होजाती हैं ॥ १२ ॥

आहारमाप्नोतियदानगर्भः शोषंस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माप्नोतिपरिस्रुतिंवा। तंस्त्रीप्रसूतेसुचिरेणगर्भं पुष्टोयदावर्षगणैरपिस्यात्॥ १३॥

जो गर्भिणी स्त्रीको उत्तम आहार न मिले तो गर्भ शुष्क होजाता है अथवा वह जाता है वह सूखाहुआ गर्भ जब बहुत काल में पुष्ट हो लेताहै तब स्त्री उसे उत्पन्नकरतीहै॥१३॥

कर्म्मात्मकत्वाद्विषमांसभेदाच्छुक्रासृजंवृद्धिमुपैतिकुक्षौ। एकोधिकोन्यूनतरोद्वितीय एवंयमेऽप्यभ्यधिकोविशेषः॥ १४॥

भाग्यवश से अंशों की विषमता से शुक्र और रज कुक्षिमें वृद्धिको प्राप्त होते हैं अर्थात् एकभाग अधिक तथा दूसरेभागके न्यून होने के कारण दो सन्तानों में से एक सन्तान हीनाङ्ग और एक पुष्टाङ्ग होती है॥ १४॥

कस्माद्विरेताःपवनेन्द्रियोवा संस्कारवाहीनरनारिषण्डः। वक्रीतथेर्ष्याभिरतिःकथंवा सञ्जायतेवातिकषण्डकोवा॥ १५॥

अग्निवेशने भगवान् आत्रेयजी से पूछा कि हे भगवन् किसकारण से द्विरेता पवनेन्द्रिय संस्कारवाही नरषण्ड नारीषण्ड वक्री ईर्ष्यारत तथा वातिकषण्ड उत्पन्न होते हैं॥ १५॥

बीजात्समांशादुपतप्तबीजात्स्त्रीपुंसलिङ्गीभवतिद्विरेताः। शुक्राशयंगर्भगतस्यहत्वाकरोतिवायुःपवनेन्द्रियत्वम्॥ १६॥

यहसुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि जिस बीज में वीर्य्य तथा रज का भाग सम होता है उससे स्त्री तथा पुरुष दोनों के लक्षणयुक्त द्विरेता (नपुंसक) उत्पन्न होता है दूषित वायु गर्भस्थ प्राणी के वीर्य्याशय को नष्ट करके पवनेन्द्रिय को उत्पन्न करती है॥ १६॥

शुक्राशयद्वारविघट्टनेन संस्कारवाहंहिकरोतिवायुः। मन्दाल्पबीजावबलावहर्षौक्लीबौचहेतुर्विकृतिर्द्वयस्य॥ १७॥

वायुके द्वारा वीर्य्याशयके द्वारके बिगड़जाने से संस्कारवाही नाम नपुंसक उत्पन्न होता है जो स्त्री पुरुष मन्दबीज अल्पबीज निर्बल तथा मैथुन करने में हर्षरहित होयँ तो उनका पुत्र नरषण्ड और कन्या नारीषण्डहोतीहै॥१७॥

मातुर्व्यवायप्रतिघेनवक्री स्याद्बीजदौर्बल्यतयापितुश्च। ईर्ष्याभिभूतावपिमन्दहर्षावीर्यारतेरेववदन्ति हेतुम्॥ १८॥

मैथुनमें माता के क्रोधयुक्त होने से अथवा पिता के अल्पवीर्य्य होने से वक्री सन्तान उत्पन्न होती है जो स्त्री पुरुष ईर्ष्यायुक्त होकर हर्ष के विनाही मैथुन करते हैं उन की सन्तान ईर्ष्यारति (दूसरों को मैथुन करते देखके जिसका चित्त मैथुन करने को चाहै) होती है॥ १८॥

वाय्वग्निदोषाद्वृषणौतुयस्य नाशंगतौवातिकषण्डकःसः। इत्येवमष्टाविकृतिप्रकाराः कर्मात्मकानामुपलक्षणीयाः॥ १९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस पुरुषके अंडकोश वायु तथा अग्नि के दोषसे नष्टहोजायँ उसे वातिकषण्ड कहते हैं कर्म के अनुसार यह आठ प्रकारके विकार जानने चाहियें ॥ १९ ॥

गर्भस्यसद्योऽनुगतस्यकुक्षौ स्त्रीपुंनपुंसामुदरस्थितानाम्। किंलक्षणं कारणमिष्यतेकिं सरूपतांयेनचयात्यपत्यम् ॥ २० ॥

अग्निवेशने भगवान् आत्रेय जी से पूछा कि हे भगवन् शीघ्रही स्थितहुए गर्भ के क्या लक्षण हैं गर्भ में स्थितहुए स्त्री पुरुष तथा नपुंसक के क्या लक्षण हैं और किसकारण से सन्तान सदृश होती है ॥ २० ॥

निष्ठीविकागौरवमङ्गसादस्तन्द्राप्रहर्षौहृदयव्यथाच । तृप्तिश्चबीजग्रहणञ्चयोन्या गर्भस्यसद्योऽनुगतस्यलिंगम् ॥ २१ ॥

यहसुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि थूकना शरीर का भारीपन अंगों में शिथिलता तन्द्रा ग्लानि हृदयमें व्यथा तृप्ति और योनिसे वीर्य्य का न निकलना यह शीघ्रही स्थितहुए गर्भ के लक्षण हैं ॥ २१ ॥

सव्यांगचेष्टापुरुषार्थिनीस्त्री स्त्रीस्वप्नपानाशनशीलचेष्टा । सव्यांगगर्भानचवृत्तगर्भा सव्यप्रदुग्धास्त्रियमेवसूते ॥ २२ ॥

जो स्त्री कामातुर होकर वाम अंगसे चेष्टा करे स्त्रियों के समानसोवे स्त्रियों के समान भोजन तथा चेष्टा करे स्त्रियोंकाही सा स्वभाव प्रकट करे जिसके बाईं ओर गर्भहोय गर्भ गोल न होय और पहले वाम स्तन से ही दूध निकले वह स्त्री कन्याको ही उत्पन्न करती है ॥ २२ ॥

पुत्रन्त्वतोलिंगविपर्ययेण व्यमिश्रलिंगाप्रकृतिंतृतीयाम् । गर्भोपपत्तौतुमनःस्त्रियायं जन्तुंव्रजेत्तत्सदृशम्प्रसूते ॥ २३ ॥

जिसस्त्रीके इससे विपरीत लक्षण होयँ उस के पुत्र उत्पन्न होता है और जिसके मिलेहुए लक्षणहोयँ उसके नपुंसक उत्पन्न होताहै गर्भस्थिति के समय स्त्री अपने मनमें जिस प्राणीका स्मरण करती है वैसी ही सन्तति होती है ॥ २३ ॥

गर्भस्यचत्वारिचतुर्विधानि भूतानि मातापितृसम्भवानि। आहारजन्यात्मकृतानिचैव सर्वस्यसर्वाणिभवन्तिदेहे ॥ २४ ॥

सबके शरीरमें माता पिताके आहारसे हुए तथा अपने कर्मसेहुए चार प्रकारके चारमहाभूत होते हैं ॥ २४ ॥

तेषांविशेषाद्बलवन्तियानिभवन्ति मातापितृकर्मजानि। तानिव्यवस्येत्सदृशत्वलिंगसत्त्वं यथानूकमपि व्यवस्येत् ॥ २५ ॥

माता पिताका आहार विहार तथा अपने कर्म इनमें से जो बलवान् होय उसी के सदृश गर्भ होताहै और गर्भका चित्तभी उसी के सदृश होता है ॥ २५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कस्मात्प्रजांस्त्रीविकृतांप्रसूते हीनाधिकांगींविकलेन्द्रियाञ्च। देहात्कथंदेहमुपैतिचान्यमात्मासदाकैरनुबध्यतेच ॥ २६ ॥

अग्निवेश ने भगवान् आत्रेयजी से पूछा कि हेभगवन् किस कारण से किसी २ स्त्री के हीनाङ्ग अधिकाङ्ग तथा विकृताङ्ग सन्तति होती है आत्मा किस प्रकारसे एक देहमें से दूसरे देहमें जाताहै और कौन २ वस्तुओं से आत्मा बँधता है ॥ २६ ॥

बीजात्मकर्म्माशयकालदोषैर्मातुस्तदाहारविहारदोषैः। कुर्वन्तिदोषाविविधानिदुष्टाः संस्थानवर्णेन्द्रियवैकृतानि ॥ २७ ॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि बीज अपने कर्म,गर्भाशय तथा समय के दोष से और गर्भावस्थामें माताके आहार विहारों के दोष से कुपितहुए वातादि दोष आकृति वर्ण तथा इन्द्रियोंमें अनेक प्रकारके विकारों को उत्पन्न करते हैं ॥ २७ ॥

वर्षासुकाष्ठाश्मघनाम्बुवेगास्तरोःसरित्स्रोतसिसंस्थितस्य। यथैवकुर्य्युर्विकृतिंतथैव गर्भस्यकुक्षौनियतस्यदोषाः ॥ २८ ॥

जैसे वर्षाऋतु में नदी के प्रवाह में स्थित वृक्षमें काष्ठ पाषाण तथा जल के वेगके द्वारा विकार उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार कुक्षि में स्थित गर्भमें दोषोंके द्वारा विकार उत्पन्न होते हैं ॥ २८ ॥

भूतैश्चतुर्भिःसहितःसुसूक्ष्मैर्मनोजवोदेहमुपैतिदेहात्। कर्मात्मकत्वान्नतुतस्यदृश्यं दिव्यंविनादर्शनमस्तिरूपम् ॥ २९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म चार महाभूतों के साथ मन के वेगसे जीवात्मा एक शरीरसे दूसरे शरीर में जाता है उस समय उसका कर्मात्मकरूप होता है इससे दिव्यदृष्टिके विना उसे कोई देख नहीं सक्ता है ॥ २९ ॥

ससर्वगःसर्वशरीरभृच्च सविश्वकर्म्मासचविश्वरूपः। सचेतनाधातुरतीन्द्रियश्च सनित्ययुक्सानुशयःसएव ॥ ३० ॥

वह आत्माही सर्वव्यापी सर्वशरीरधारी विश्वकर्मा विश्वरूप चेतना धातु अतीन्द्रिय नित्ययुक्त तथा अनुशय (रागद्वेष) सहित होता है ॥ ३० ॥

रसात्ममातापितृसम्भवानिभूतानिविद्याद्दशषट्चदेहे। चत्वारितत्रात्मनिसंसृतानि स्थितस्तथात्माचचतुर्षुतेषु ॥ ३१ ॥

मधुरादि रस आत्मा माता तथा पिता इन से उत्पन्न १६ तत्त्व शरीरमें होते हैं इनमें से चार महाभूत आत्माके आश्रित रहते हैं और आत्मा उनचारों में स्थित रहता है ॥ ३१ ॥

भूतानिमातापितृसम्भवानि रजश्चशुक्रञ्चवदन्तिगर्भे। आप्याय्यतेशुक्रमसृक्चभूतैर्यैस्तानिभूतानिरसोद्भवानि ॥ ३२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गर्भमें रज और वीर्य्य माता पितासे उत्पन्न हुआ होता है जिन महाभूतों से रज तथा वीर्य्य उत्पन्न होताहै वह रसों से उत्पन्न होते हैं ॥ ३२ ॥

भूतानिचत्वारितुकर्मजानि यानात्मलीनानिविशन्तिगर्भम्। सद्बीजधर्माह्यपरापराणिदेहान्तराण्यात्मनियानियानि ॥ ३३ ॥

जो चार महाभूत आत्माके साथ गर्भ में प्रविष्ट होते हैं वह कर्मज हैं जब आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है तब वह चार महाभूत भी सूक्ष्मरूप से आत्माके संग जाते हैं ॥ ३३ ॥

रूपाद्धिरूपप्रभवःप्रसिद्धः कर्मात्मकानांमनसोमनस्तः। भवन्तियेत्वाकृतिबुद्धिभेदारजस्तमस्तत्रचकर्म्म हेतुः ॥ ३४ ॥

उन्हीं महाभूतोंसे आकार की उत्पत्ति होतीहै और पूर्व्वदैहिक मन से गर्भस्थ जीव के मनकी उत्पत्ति होती है प्रत्येक प्राणी के जो आकृति तथा बुद्धि में भेद होता है उस में रजोगुण तमोगुण तथा प्राक्तनकर्म्म कारण है ॥ ३४ ॥

अतीन्द्रियैस्तैरतिसूक्ष्मरूपैरात्माकदाचिन्नवियुक्तरूपः। नकर्म्मणा नैवमनोमतिभ्यां नचाप्यहङ्कारविकारदोषैः ॥ ३५ ॥

अत्यन्त सूक्ष्मरूप वाले अतीन्द्रिय चार महाभूत प्राक्तनकर्म मन बुद्धि तथा अहंकार के विकार दोषों से आत्मा कभी वियुक्त नहीं होता ॥ ३५ ॥

रजस्तमोभ्यान्तुमनोऽनुबद्धंज्ञानंविनातत्रहिसर्वदोषाः। गतिप्रवृत्त्योस्तुनिमित्तमुक्तंमनःसदोषंबलवच्चकर्म्म ॥ ३६ ॥

रजोगुण तथा तमोगुणयुक्त मनमें ज्ञानके विना सब दोष होते हैं दोषसहित मन और बलवान् कर्म यही गति और प्रवृत्ति के कारण हैं ॥ ३६ ॥

रोगाःकुतःसंशमनंकिमेषां हर्षस्यशोकस्यचकिंनिमित्तम्। शरीरसत्त्वप्रभवाविकाराःकथंनशान्ताःपुनरापतेयुः ॥ ३७ ॥

अग्निवेशने भगवान् आत्रेयजीसे पूंछा कि हे भगवन् रोग किस हेतु से होते हैं और रोगोंकी शान्ति किस प्रकारसे होतीहै हर्ष तथा शोक का क्या कारण है शरीर तथा मन से उत्पन्न होनेवाले रोग किस प्रकार से शान्त होकर फिर उत्पन्न नहीं होते ॥ ३७ ॥

प्रज्ञापराधोविषमास्तदर्थाहेतुस्तृतीयःपरिणामकालः। सर्वामयानांत्रिविधाचशान्तिर्ज्ञानार्थकालाःसमयोगयुक्ताः ॥ ३८ ॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि प्रज्ञापराध विषयों का विषमयोग और समय का परिणाम यही तीन सब रोगों के कारणहैं बुद्धि विषय तथा समय का समयोग रोगों की शान्तिका कारण है ॥ ३८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्म्याःक्रियाहर्षनिमित्तमुक्तास्ततोऽन्यथाशोकवशंनयन्ति । शरीरसत्त्वप्रभवास्तुदोषास्तयोरवृत्त्यानभवन्तिभूयः ॥ ३९ ॥

धार्मिक कार्य्य हर्ष के निमित्त हैं और अधर्मसंबन्धी कार्य्य शोक के कारण हैं शरीर तथा मनसेही संपूर्ण रोग उत्पन्न होतेहैं इससे शरीर तथा मनके न होनेहीसे रोग फिर नहीं होसक्ते ॥ ३९ ॥

रूपस्यसत्त्वस्य च सन्ततिर्यानोक्तस्तदादिर्नहिसोऽस्तिकश्चित् । तयोरवृत्तिःक्रियतेपराभ्यांधृतिस्मृतिभ्यांपरयाधियाच ॥ ४० ॥

शरीर तथा मनकी जो सन्तति (सदैव से होना आना) वह अनादिहै परन्तु यह कुछ हैं नहीं अत्यन्त धैर्य्य स्मृति तथा परमज्ञान से शरीर तथा मनकी निवृत्ति होजातीहै ॥ ४० ॥

सत्याश्रयेवाद्विविधेयथोक्तेपूर्वंगदेभ्यःप्रतिकर्म्मनित्यम् । जितेन्द्रियंनानुपतन्तिरोगास्तत्कालयुक्तंयदिनास्तिदैवम् ॥ ४१ ॥

रोगों के आश्रयभूत शरीर तथा मनके विद्यमान होने पर भी रोगोत्पत्ति के पहलेही जो चिकित्सा कीजाय इन्द्रियां वशमें होयँ और कोई प्राक्तनबुरे कर्म का फल उसी समय के लिये नियत न होय तो रोग नहीं होता ॥ ४१ ॥

दैवंपुरायत्कृतमुच्यतेतुतत्पौरुषंयत्विहकर्म्मदृष्टम् । प्रवृत्तिहेतुर्विषमःसदृष्टो निवृत्तिहेतुस्तुसमःस एव ॥ ४२ ॥

पूर्व्वजन्म के किये हुए कर्म को दैव कहतेहैं और जो इस जन्ममें कर्म कियाजाय उसे पौरुष कहतेहैं इन कर्मोंकी विषमता तथा समताही रोगों की प्रवृत्ति तथा निवृत्ति की कारण है ॥ ४२ ॥

हैमन्तिकं दोषचयं वसन्ते प्रवाहयन्ग्रैष्मिकमभ्रकाले । घनात्ययेवार्षिकमाशुसम्यक्प्राप्नोतिरोगानृतुजान्नजातु ॥ ४३ ॥

हेमन्त ऋतुमें संचितहुए दोषों को वसन्त ऋतुमें ग्रीष्मऋतु में संचितहुए दोषों को प्रावृट् ऋतुमें और वर्षा ऋतु में संचितहुए दोषों को शरद्ऋतु में निकलवाने से मनुष्यों को ऋतुओं के विकारसे होनेवाले रोग नहीं होते हैं ॥ ४३ ॥

नरोहिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारीविषयेष्वसक्तः । दातासमःसत्यपरःक्षमावानाप्तोपसेवीचभवत्यरोगः ॥ ४४ ॥

हित आहार तथा विहार का सेवन करनेवाला विचारपूर्वक कार्य्य करनेवाला विषयों में नहीं आसक्त होनेवाला दाता समदर्शी सत्यवादी क्षमाशील और आप्तलोगों का सेवन करनेवाला मनुष्य रोगी नहीं होता ॥ ४४ ॥

मतिर्वचःकर्म्मसुखानुबन्धिसत्त्वंविधेयंविशदाचबुद्धिः । ज्ञानंतपस्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्परताचयोगेयस्यास्तितंनानुपत न्तिरोगाः ॥ ४५ ॥

परिणाम में सुखदायक बुद्धि वचन तथा कर्म स्वाधीन मन निर्मलबुद्धि ज्ञान तप और योग में तत्पर होना यह बातें जिसमें होती हैं उसे कोई रोग नहीं उत्पन्न होता ॥ ४५ ॥

तत्र श्लोकः ।

इहाग्निवेशस्यमहार्थयुक्तंषड्विंश कंप्रश्नगणंमहर्षिः । अतुल्यहोत्रेभ गवान्यथावन्निर्णीतवाञ्ज्ञानविव र्द्धनार्थम् ॥ ४६ ॥

इति अतुल्यगोत्रीयंशारीरं समाप्तम् ॥ २ ॥

तिस में यह श्लोक है । अतुल्यगोत्रीय नाम इस अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने ज्ञान की वृद्धि के लिये अग्निवेश के महा अर्थ युक्त छव्वीस प्रश्नों का निर्णय किया ॥ ४६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें अतुल्यगोत्रीय नाम दूसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

खुड्डीकागर्भावक्रान्तिः ।

पुरुषस्यानुपहतरेतसःस्त्रियाश्चाप्रदु ष्टयोनिशोणितगर्भाशयायायदा भवतिसंसर्गःऋतुकाले । यदाचा नयोस्तथैवयुक्तयोःसंसर्गेतुशुक्र शोणितसंसर्गमन्तर्गर्भाशयगतं जीवोऽवक्रामतिसत्त्वसम्प्रयोगात्त दागर्भोऽभिनिर्वर्त्तते ॥ १ ॥

इस के उपरान्त खुड्डीकागर्भावक्रान्ति नाम शरीर का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा जिस पुरुष के वीर्य्य में कोई दोष न होय और जिस स्त्री की योनि रज तथा गर्भाशय में कोई दोष न होय ऐसे स्त्री पुरुषों का जब ऋतु के समय संयोग होताहै और संयोग मेंहीं रज तथा वीर्य्य मिल कर गर्भाशयमें जाता है और मनके अनुसार जीव उस में प्रवेश करता है तब गर्भ स्थिति होती है ॥ १ ॥

ससात्म्यरसोपयोगादरोगोऽभिसं वर्द्धते सम्यगुपचारैश्चोपचर्य्यमा णः । ततःप्राप्तकालःसर्वेन्द्रियोपप न्नःपरिपूर्णसर्वशरीरोबलवर्णसत्त्व संहननसम्पदुपेतःसुखेनजायतेस मुदायादेषांभावानाम् ॥ २ ॥

वह गर्भ सात्म्य रसों के सेवन से और अच्छे प्रकार उपचार करने से नीरोग होकर बढ़ता है फिर समय पाकर संपूर्ण इन्द्रिय युक्त संपूर्ण अंगों से परिपूर्ण बल वर्ण सत्त्व तथा संहनन (गठाहुआ शरीर) की श्रेष्ठता से युक्त होकर सुखपूर्वक उत्पन्न होता है ॥ २ ॥

मातृजश्चायंगर्भःपितृजश्चात्मजश्च सात्म्यजश्चरसजश्चास्तिचसत्त्वसंज्ञ मौपपादिकमितिहोवाचभगवाना त्रेयः ॥ ३ ॥

यह गर्भ माता पिता आत्मा रस तथा सात्म्य से उत्पन्न होता है और परलोक से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आकर सत्त्वसंज्ञक मन उसमें प्रविष्ट होताहै यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ ३ ॥

नेतिभरद्वाजः। किंकारणं हि न माता न पितानात्मानंसात्म्यंनपानाशनभक्ष्यलेह्योपयोगागर्भंजनयन्ति नचपरलोकादेत्यगर्भंसत्त्वसंज्ञकमवक्रामति । यदिहिमातापितरौगर्भंजनयेतांभूयस्यश्चस्त्रियःपुमांसश्चभूयांसःपुत्रकामाः,तेसर्वेपुत्रजन्माभिसन्धायमैथुनधर्ममापद्यमानाःपुत्रानेव जनयेयुर्दुहितॄर्वा दुहितृकामाः। नचकाश्चित्स्त्रियःकेचिद्वापुरुषानिरपत्याःस्युअपत्यकामाश्चपरिदेवेरन्। नचात्मात्मानंजनयति।यदिह्यात्मात्मानंजनयेज्जातोवाजनयेदात्मानमजातोवाजनयति। तच्च उभयथाप्ययुक्तम् । नहिजातोजनयतिसत्त्वान्नचैववाजातोजनयेत् सत्त्वात्तस्मादुभयथाप्यनुपपत्तिस्तिष्ठतु। अथतावदेतद्यदिअयमात्मानंशक्तोजनयितुंस्यान्नतुएनमिष्ठास्वेवकथंयोनिषुजनयेद्वशिनमप्रतिहतगतिकामरूपिणंतेजोबलजववर्णसत्त्वसंहननसमुदितमजरमरुजममरमेवंविधंहिआत्मात्मानमिच्छन्नित्यतोवाभूयः॥ ४ ॥

यहसुनक माता से उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥
ठीक नहीं श्चायंगर्भोनहिपितुर्ऋतेगर्भो
और इ ःस्यान्नचजन्मजरायुजानाम्।
उपयोग
और परलोक नअस्यगर्भस्यपितृजानि
नहीं होता जो भपितृतःसम्भवतःसम्भव
त्पन्नकरसकें तो बहुत्नुव्याख्यास्यामः ।
बहुत से ऐसे पुरुष श्मश्रुनखलोमदन्ता
की इच्छा करते हैं वह
करके जिनको पुत्रकी इच्छा ःशुक्रमिति
उत्पन्न करलें और जिनको कन्

होय वह कन्या को उत्पन्न करलें वै. क्योंकि अथवा कोई पुरुष भी सन्तान रहित न हो अन सन्तान के लिये दुःखित होंय आत्मा अपने को नहीं उत्पन्न करता है क्योंकि जो आत्मा अपने को उत्पन्न करे तो उत्पन्न आत्मा अपने को उत्पन्न करता है या अनुत्पन्न यह दोनोंबातें ही अनुचित हैं क्योंकि जो उत्पन्न हो चुका है वह फिर क्यों अपने को उत्पन्न करेगा काहे से वह तो विद्यमान ही है और अनुत्पन्न आत्मा भी अपने को नहीं उत्पन्न करसक्ता है क्योंकि उसकी सत्ताही नहीं है इस से यह दोनोंबातें असिद्ध हुई और जो मान भी लियाजाय कि आत्मा अपने को उत्पन्न करसक्ता है तो अभीष्ट योनियों में ही क्यों नहीं उत्पन्नकरे क्योंकि सभी स्वतन्त्र अप्रतिहतगति (जहांचाहै वहां जासके) कामरूपी और तेज बल वर्ण तथा सत्त्वयुक्त अजर अमर तथा नीरोग होना चाहते हैं इससे भी सिद्ध होता है कि आत्मा अपने को नहीं उत्पन्न कर सक्ता है ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्परताचयोगेयस्यास्तितंनाहिसात्म्य

न्तिरोगाः ॥ ४५ ॥ नैकान्ते

परिणाम में सुखदायक बुद्धि वचन्यसे

कर्म स्वाधीन मन निर्मलबुद्धि ज्ञानःस्युस्त

योग में तत्पर होना यह बातें ॥ ५ ॥

उसे कोई रोग नहीं उत्पन्न

नहीं उत्पन्न होसक्ता

तत्र श्ले की उत्पत्ति होय तो

इहाग्निवेशस्यकरने वालों के ही सन्तति

कंम्रश्नगणंसात्म्य का सेवन करने वाले

गवान् पत्य होजांय किन्तु देखा जाता है

त्म्य का सेवन करनेवाले तथा अ-

त्म्य का सेवन करनेवाले दोनों ही अन-

पत्य तथा सन्तान युक्त होते हैं इस से यह सिद्ध हुआ कि सात्म्य से गर्भ नहीं उत्पन्न हो सक्ता है ॥ ५ ॥

अरसजश्चायं गर्भोयदिहि रसजः स्यान्नकेचित्स्त्रीपुरुषेषु अनपत्याः स्युर्नहिकश्चिदस्त्येषां योरसान्नोप युंक्ते। श्रेष्ठरसोपयोगिनां चेद्गर्भा जायन्ते इत्यतोऽभिप्रेतमित्येवं सति। आजोरभ्रमार्ग्गमायूरगोक्षी र-दधि-घृत-मधु-तैल-सैन्धवे क्षुरसमुद्गशालिभृतानामेव एकान्ते नप्रजास्यात्। श्यामाकवरकोद्दा लककोरदूषककन्दमूलभक्ष्याश्च निखिलेनानपत्याःस्युः तच्चोभयमु यत्रैवदृश्यते ॥ ६ ॥

रसों से भी गर्भ नहीं उत्पन्न होता जो रसों से गर्भ की उत्पत्ति होय तो कोई स्त्री पुरुष कभी अनपत्य न होय क्योंकि ऐसा कोई स्त्री पुरुष नहीं है जो रसोंका सेवन न करे और जो कहाजाय कि श्रेष्ठ रसोंके सेवन से गर्भ उत्पन्न होता है इस अभिप्राय से रस से गर्भ की उत्पत्ति कही गई है तो बकरा भेड़ा मृग तथा मोरका मांस गौका दूध दही तथा घी सहत तैल सैंधवलवण ईखकारस मूंग तथा शालिधान्य इन्हीं के सेवन करने वालों के ही सन्तति होय और सामा कोदों वनकोदों तथा कन्दमूल खानेवाले सभी निरपत्यहोंय परन्तु ऐसा नहीं होता कि श्रेष्ठ रस सेवन करनेवाले तथा निकृष्ट रस सेवन करनेवाले दोनों ही अनपत्य तथा सन्तानवाले होते हैं इससे सिद्धहुआ कि रससे सन्तति नहीं उत्पन्न होती ॥ ६ ॥

नखलु अपि परलोकादेत्यसत्त्वंग र्भमवक्रामति। यदित्येनमवक्रामे न्नास्य किञ्चिदेवपौर्व्वदेहिकंस्या दविदितमश्रुतमदृष्टंवा। सचकि ञ्चिदपि न स्मरति तस्मादेतद्ब्रूम हेअमातृजश्चायंगर्भः पितृजश्चा नात्मजश्चासात्म्यजश्चरसजश्च व चास्ति सत्त्वमौपपादिकमितिहोवा चभरद्वाजः ॥ ७ ॥

परलोक से आकर मनभी गर्भ में नहीं प्रविष्ट होताहै जो ऐसा होय तो पूर्व जन्ममें जितनी बातें उसने देखी सुनी हैं वह सब उस को याद होंय परन्तु कुछ भी नहीं स्मरण होता इसी से हम कहते हैं कि माता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिता आत्मा सात्म्य तथा रससे गर्भ की उत्पत्ति नहीं होती और परलोक से आकर मन भी उसमें नहीं प्रविष्ट होता यह भरद्वाजजी ने कहा ॥ ७ ॥

नेतिभगवानात्रेयः । सर्वेभ्यएभ्यो भावेभ्यः समुदितेभ्योगर्भोऽभिनिर्वर्त्तते। मातृजश्चायंगर्भोनहि मातुर्विनागर्भोपपत्तिःस्यान्नच जन्म जरायुजानाम्। यानि खलु अस्यगर्भस्यमातृजानियानिचास्यमातृतः सम्भवतःसम्भवन्ति तानिअनुव्याख्यास्यामः । तद्यथा,–त्वक्च लोहितञ्च मांसञ्च मेदश्च नाभिश्च हृदयञ्च क्लोमच यकृच्च प्लीहाच बुक्कौचवस्तिश्चपुरीषाधानञ्चामाशयश्च पक्वाशयश्चोत्तरगुदञ्चाधरगुदश्चक्षुद्रान्त्रञ्चस्थूलान्त्रञ्चवपाचवपावहनञ्चेतिमातृजानि ॥ ८ ॥

तब भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि यह ठीक नहीं है माता पिताआदि संपूर्ण समुदायसेही गर्भ की उत्पत्ति होतीहै गर्भकी उत्पत्ति मातासे होती है क्योंकि माताके विना गर्भ नहीं होसक्ता और जरायुज जीवों का जन्म भी नहीं होसक्ता गर्भका जौन २ सा अंश माता से उत्पन्न होता है उनका वर्णन करते हैं जैसे त्वचा रुधिर मांस मेदा नाभि हृदय फुप्फुस यकृत् प्लीहा कलेजा वस्ति पुरीषाधान आमाशय पक्वाशय उत्तरगुद अधरगुद छोटी आंतें चरबी तथा चरबीका मार्ग यह सब गर्भ में माता से उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥

पितृजश्चायंगर्भोनहिपितुर्ऋतेगर्भोत्पत्तिःस्यान्नचजन्मजरायुजानाम् । यानिखलुअस्यगर्भस्यपितृजानि यानिचास्यपितृतःसम्भवतःसम्भवन्ति तानि अनुव्याख्यास्यामः । तद्यथा,–केशश्मश्रुनखलोमदन्तास्थिशिरास्नायुधमन्यःशुक्रमिति पितृजानि ९ ॥

पितासे गर्भ की उत्पत्ति होती है क्योंकि पिताके विना गर्भ होही नहीं सक्ता और जरायुज जीवोंका जन्मभी नहीं होसक्ता गर्भमें पिताके जो २ अंश होतेहैं उनका वर्णन करते हैं जैसे केश श्मश्रु नख रोम दाँत हड्डी शिरा स्नायु धमनी तथा वीर्य्य यह सब गर्भमें पितासे उत्पन्न होते हैं ॥ ९ ॥

आत्मजश्चायंगर्भोगर्भात्माह्यन्तरात्मायस्तमेनंजीवइत्याचक्षतेशाश्वतमरुजमजरममरमक्षयमभेद्यमच्छेद्यमलेद्यंविश्वरूपंविश्वकर्माणमव्यक्तमनादिमनिधनमक्षरमपि । सगर्भाशयमनुप्रविश्यशुक्रशोणिताभ्यांसंयोगमेत्यगर्भत्वेनजनयत्यात्मनात्मानमात्मसंज्ञाहिगर्भेतस्यपुनरात्मनोजन्मादिसत्त्वान्नोपपद्यतेतस्मादजातएवायंजातंगर्भजनयतिजातोऽप्यजातञ्चगर्भजनय

ति। सचैवगर्भःकालान्तरेणबालयुवस्थविरभावानवाप्नोति ॥ १० ॥

गर्भ आत्मा से उत्पन्न होता है गर्भ में जो आत्मा कारण होता है उसेही जीव कहते हैं आत्मा नित्य नीरोग अजर अमर अक्षय अभेद्य अच्छेद्य अलेह्य विश्वरूप विश्वकर्मा अव्यक्त अनादि तथा अनन्तहै यही आत्मा गर्भ में प्रवेश करके रज तथा वीर्य्य के संयोग को पाकर गर्भरूप से अपने को उत्पन्न करता है फिर गर्भमें जन्मादिं के होने से उस की आत्मासंज्ञा नहीं होसक्ती है इससे कहाजाता है कि उत्पन्न तथा अनुत्पन्न आत्मा गर्भ को उत्पन्न करता है वह गर्भ कालान्तर में बाल यौवन तथा वृद्धता इन अवस्थाओं को प्राप्त होता है ॥ १० ॥

सयस्यां यस्यामवस्थायां वर्त्तते तस्यांतस्यांजातोभवतियात्वस्यपुरस्कृतातस्यांजनिष्यमाणश्चतस्मात्सएवजातश्चाजातश्चयुगपद्भवति तस्मिंश्चैतदुभयंसम्भवतिजातत्वञ्चैवजनिष्यमाणत्वञ्च । सजातोजन्यतेसचैवानागतेष्ववस्थान्तरेषुअजातोजनयत्यात्मनात्मानम्। सतोह्यवस्थानुगमनमात्रामेवहिजन्मचोच्यतेतत्रतत्रवयसितस्यांतस्यामवस्थायाम्। यथासतामेवशुक्रशोणितजीवानांप्राक्संयोगाद्गर्भत्वंनभवतितच्चसंयोगाद्भवति। यथासतस्तस्यैवपुरुषस्यप्रागपत्यात्पितृत्वंनभवतितच्चापत्याद्भवति। तथासतस्तस्यैवगर्भस्यतस्यांतस्यामवस्थायां जातत्वमजातत्वञ्चोच्यते ॥ ११ ॥

वह आत्मा जिस २ अवस्थामें वर्तमानहोताहै उसमें उत्पन्न हुआ कहाजाताहै और जिस में उसका जन्म होनेवाला होता है उसमें जनिष्यमाण (उत्पन्न होनेवाला) कहलाताहै इससे वही आत्मा एकही समयमें उत्पन्न तथा अनुत्पन्न होताहै उसमें जातत्व तथा जनिष्यमाणत्व यह दोनों बातें संभव हैं इस प्रकार वह उत्पन्न होकर भी उत्पन्न होता है और अनागत अवस्थाओं में अनुत्पन्न होकर अपने को उत्पन्न करता है सद्वस्तुका अवस्थांतरोंमें जानाही जन्म कहलाता है जैसे वीर्य्य रज तथा जीव यह पहले विद्यमान होनेपर भी संयोग के बिना गर्भत्वको नहीं प्राप्त होते हैं किन्तु संयोग होनेपर गर्भत्व को प्राप्त होते हैं और जैसे कोई पुरुष विद्यमान होनेपर भी सन्तानोत्पत्ति के पहले पिता नहीं कहलाता है किन्तु सन्तानोत्पत्ति के पीछे पिताकहलाताहै इसी प्रकार सद्वस्तु आत्माका अवस्थाओंके भेदसे उत्पन्नत्व तथा अनुत्पन्नत्व कहाजाता है ॥ ११ ॥

नतुखलुगर्भस्यमातुर्नपितुर्नात्मनः सर्वभावेषुयथेष्टकारित्वमस्ति। ते किञ्चित्स्ववशात्कुर्वन्तिकिञ्चित्कर्मवशात्कचिच्चैषांकरणसक्तेर्भवति कचिन्नभवति। यत्रसत्वादिकरणसम्पत्तत्रयथाबलमेवयथेष्टकारित्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मतोऽन्यथाविपर्य्ययः । नचकरण दोषादकारणमात्मागर्भंजननेस म्भवति ॥ १२ ॥

गर्भोत्पत्ति में माता पिता तथा आत्मा को सब विषयों में यथेष्टकारित्त्व (जो चाहै सो करसके) नहीं है वह कुछ अपने वशसे करते हैं कुछ कर्मवशसे करते हैं कहीं२ उनकी करणशक्ति होती है और कहीं नहीं होती जहाँ सत्त्वादि करणों की श्रेष्ठता होती है वहाँ बलके अनुसार यथेष्ट कार्य्य किया जाता है नहीं तो विपरीतता होती है करणों के दूषित होनेपर आत्मा गर्भकी उत्पत्ति में समर्थ नहीं होसक्ता ॥ १२ ॥

दृष्टश्चचेष्टायोनिरैश्वर्य्यंमोक्षश्चात्म त्मविद्भिरात्मायत्तम् । नह्यन्यः सुखदुःखयोःकर्तानचान्यतोगर्भो जायतेजायमानोनचअंकुरोत्पत्ति रबीजात् ॥ १३ ॥

आत्मज्ञानी लोग चेष्टा योनि ऐश्वर्य तथा मोक्ष को आत्माके आधीन कहते हैं आत्मा के सिवाय और कोई सुख दुःखका कर्त्ता नहीं और आत्माके विना गर्भोत्पत्तिभी नहीं होती है क्योंकि बीजके विना किसी प्रकारसे भी अंकुरकी उत्पत्ति नहीं होसक्ती है ॥१३॥

यानितुखलुअस्यगर्भस्यात्मजानि यानिचअस्यात्मतःसम्भवतःसम्भ वन्तितानिअनुव्याख्यास्यामः । तद्यथा,-तासुतासुयोनिषुउत्पत्ति रायुरात्मज्ञानंमनइन्द्रियाणिप्राणा पानौप्रेरणंधारणमाकृतिस्वरवर्णवि शेषाः सुखदुःखेइच्छाद्वेषौचेतनाधृ तिबुद्धिस्मृतिरहंकारोयत्नश्चेत्यात्म जानि ॥ १४ ॥

गर्भमें जो २ अंश आत्मासे उत्पन्न होते हैं उनका वर्णन करते हैं जैसे अनेक योनियोंमें उत्पन्न होना आत्मज्ञान आयु मन इन्द्रिय प्राण अपान प्रेरणा धारण आकृति स्वर वर्ण सुख दुःख इच्छा द्वेष चैतन्यता धैर्य्य बुद्धि स्मृति अहंकार तथा प्रयत्न यह सब आत्मासे उत्पन्न हैं ॥ १४ ॥

सात्म्यजश्चायंगर्भः नहि असात्म्य सेवित्वमन्तरेणस्त्रीपुरुषयोर्वन्ध्यत्व मस्तिगर्भेषुवाअनिष्टोभावः । या वत्खलुअसात्म्यसेविनांस्त्रीपुरुषा णांत्रयोदोषाःप्रकुपिताःशरीरमुपस र्पन्तोनशुक्रशोणितगर्भाशयोपघा तायोपपद्यन्तेतावत्समर्थागर्भंजन नायभवन्ति । सात्म्यसेविनांपुनः स्त्रीपुरुषाणामनुपहतशुक्रशोणि तगर्भाशयानामृतुकालेसन्निपाति तानांजीवस्यानवक्रमणाद्गर्भानप्रा दुर्भवन्ति । नहिकेवलंसात्म्यजए वायं गर्भःसमुदायोऽत्रकारणमुच्य ते ॥ १५ ॥

गर्भ सात्म्य से उत्पन्न होताहै क्योंकि असात्म्य वस्तुओं के सेवनके विना स्त्री पुरुषों का वन्ध्यात्व नहीं होसक्ता न गर्भमें किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकारका विकार होसक्ता है असात्म्य वस्तुओंका सेवन करनेवाले स्त्री पुरुषोंके तीनों दोष कुपित होकर शरीर में फैल के जबतक वीर्य्य रज तथा गर्भाशय को नहीं बिगाड़ते हैं तभीतक असात्म्य वस्तुओं का सेवन करनेवाले भी गर्भ की उत्पत्ति करने में समर्थ होते हैं और जो स्त्री पुरुष सात्म्य वस्तुओं का सेवन करते हैं जिनके वीर्य्य रज तथा गर्भाशय दूषित नहीं हैं ऐसे स्त्री पुरुषोंके ऋतुकालमें संयोग होनेपर भी जीवात्माके प्रविष्ट न होने से गर्भोत्पत्ति नहीं होती क्योंकि केवल सात्म्यसेही गर्भोत्पत्ति नहीं होती किंतु सम्पूर्ण कारणोंका समुदायही गर्भकी उत्पत्तिका कारण है ॥ १५ ॥

यानितुखल्वस्य गर्भस्यसात्म्यजानियानि च अस्यसात्म्यतःसम्भवतःसम्भवन्तितानिअनुव्याख्यास्यामः । तद्यथा—आरोग्यमनालस्यमलोलुपत्वमिन्द्रियप्रसादःस्वरवर्णबीजसम्पत्प्रहर्षभूयस्त्वञ्चेतिसात्म्यजानि ॥ १६ ॥

गर्भ में जो २ अंश सात्म्य से उत्पन्न होते हैं उनका वर्णन करते हैं जैसे आरोग्य निरालस्यता निर्लोभता इन्द्रियों का निर्मल होना श्रेष्ठस्वर श्रेष्ठवर्ण श्रेष्ठवीर्य्य बहुत प्रसन्नता यह सब सात्म्य से उत्पन्न होते हैं ॥ १६ ॥

रसजश्चायंगर्भोनहिरसादृतेमातुः प्राणयात्रापिस्यात्किंपुनर्गर्भजन्म नचैवास्यसम्यगुपयुज्यमानारसा गर्भमभिनिर्वर्त्तयन्ति । नचकेवलं सम्यगुपयोगादेवरसानांगर्भाभिनिर्वृत्तिर्भवतिसमुदायोऽप्यत्रकारणमुच्यते ॥ १७ ॥

गर्भ रससे उत्पन्न होता है क्योंकि रस के विना माता की प्राणयात्रा भी नहीं होसक्ती गर्भ तो दूररहा अच्छे प्रकार व्यवहार किये गये रस गर्भोत्पत्ति के कारण नहीं हैं क्योंकि रसों के अच्छे प्रकार व्यवहारसेही गर्भ की उत्पत्ति नहीं होती किन्तु संपूर्ण कारणों का समुदायही गर्भोत्पत्ति में कारण है ॥ १७ ॥

यानितुखल्वस्य गर्भस्यरसजानि यानिचास्यरसतःसम्भवतःसम्भवन्तितान्यनुव्याख्यास्यामः । तद्यथा;—शरीरस्याभिनिर्वृत्तिरभिवृद्धिः प्राणानुबन्धस्तृप्तिः पुष्टिरुत्साहश्चेतिरसजानि ॥ १८ ॥

गर्भ के जो २ अंश रसों से उत्पन्न होते हैं उनका वर्णन करते हैं जैसे शरीर की सिद्धि शरीर की वृद्धि प्राणवायु का स्थित रहना तृप्ति पुष्टि तथा उत्साह यह रससे उत्पन्न होते हैं ॥ १८ ॥

अस्तिखल्वपिसत्त्वमौपपादिकंयज्जीवस्पृक्शरीरेणाभिसम्बध्नाति । यस्मिन्नपगमनपुरस्कृतेशीलमस्यव्यावर्त्ततेभक्तिर्विपर्य्यस्यते सर्वेन्द्रियाण्युपतप्यन्तेबलंहीयते व्याधयआप्यायन्ते । यस्माद्धीनः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणाञ्जहातियदिन्द्रियाणामभिग्रा हकञ्चमनइत्यभिधीयतेतत्त्रिविध माख्यायते शुद्धंराजसंतामसञ्च इति ॥ १९ ॥

परलोक से आकर मन अवश्य गर्भ में प्रविष्ट होता है क्योंकि मनही जीवात्माके साथ शरीर का संबन्धकरता है जब मन शरीर से जानेवाला होता है तब स्वभाव तथा भक्ति में विपरीतता होजाती है इन्द्रियां संतप्त होती हैं बल क्षीण होता है रोग बढ़तेहैं शरीर से मन के जातेही प्राण निकलजाते हैं और यह मनही इन्द्रियों का प्रेरक है मन तीन प्रकार का कहा जाता है शुद्ध राजस तथा तामस ॥१९॥

येनास्यखलुप्रयतोभूयिष्ठंतेनद्विती यायामाजातौसम्प्रयोगोभवति । यदातुतेनैवशुद्धेनसंयुज्यतेतदाजा तेरतिक्रान्तायाश्चस्मरति । स्मार्त्तं हिज्ञानमात्मनस्तस्यैवमनसोऽनुब न्धादनुवर्त्ततेयस्यानुवृत्तिपुरस्कृत्य पुरुषोजातिइत्युच्यतेइतिसत्त्वमुक्त म् ॥ २० ॥

मृत्यु के समय मनुष्य का जैसा मन होता है वैसाही दूसरे जन्म में भी होता है जिस का मन शुद्ध होता है उसे पूर्व्व जन्मका स्मरण रहता है आत्मा के साथ उस मनके परंपरागत संयोगसेही पूर्व्वजन्मका स्मरण होता है इसी से पुरुष जातिस्मर कहलाता है इस प्रकार मनका परलोक से आनाभी सिद्ध कियागया ॥ २० ॥

यानिखल्वस्यगर्भस्यसत्त्वजानिया निचअस्यसत्त्वतःसम्भवतःसम्भव न्तितानिअनुव्याख्यास्यामः । त द्यथा—भक्तिःशीलंशौचंद्वेषःस्मृति र्मोहस्त्यागोमात्सर्य्यंशौर्य्यंभयंक्रो धस्तन्द्राउत्साहस्तैक्ष्ण्यमार्दवंगा म्भीर्य्यमनवस्थितत्वमित्येवमादय श्चान्येतेसत्त्वजाविकारायानुत्तरका लंसत्त्वभेदमधिकृत्यउपदेक्ष्यामइ तिसत्त्वजानि । नानाविधानितुख लुसत्त्वानितानिसर्वाणिएकपुरुषे भवन्तिनचभवन्तिएककालम्,एक न्तुप्रायोऽनुवृत्त्याह । एवमयंनाना विधानामेषांगर्भकराणांभावानांस मुदायादभिनिर्वर्त्ततेगर्भः ॥ २१ ॥

गर्भ में जो२ मनके अंश हैं उनका वर्णन करते हैं जैसे भक्ति शील शौच द्वेष स्मृति मोह त्याग मत्सरता शूरता भय क्रोध तन्द्रा उत्साह तीक्ष्णता मृदुता गंभीरता तथा चंचलता इत्यादि अन्य बातें भी मनसे उत्पन्न होती हैं एक पुरुष में अनेक प्रकार का मन होता है किन्तु एकही समयमें अनेक प्रकार नहीं होते और जिस गुण की मनमें प्रायः अधिकता रहतीहै उसी के अनुसार मन एकप्रकार का कहलाता है अर्थात् जिस मनमें सत्त्व अधिक होता है वह सतोगुण जिसमें राजस अधिक होता है वह रजोगुण और जिसमें तम अधिक होता है वह तमोगुण कहलाता है इ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सप्रकार अनेक कारणों के समुदाय से गर्भ उत्पन्न होता है ॥ २१ ॥

यथाकूटागारंनानाद्रव्यसमुदयाद्य थावारथोनानारथाङ्गसमुदायात्तस्मा देतदवोचंमातृजश्चायंगर्भःपितृज श्चात्मजश्चसात्म्यजश्चरसजश्च। अ स्तिसत्त्वमौपपादिकमितिहोवाच भगवानात्रेयः ॥ २२ ॥

जैसे कूटागार (इसका वर्णन स्वेदाध्याय में होगा) अनेक द्रव्यों के समुदाय से और रथ अनेक अंगोंके समुदाय से बनता है उसी प्रकार गर्भ भी अनेक कारणों के समुदाय से होता है इसी से हमने कहाथा कि माता पिता आत्मा सात्म्य तथा रससे गर्भ की उत्पत्ति होती है और सत्त्वसंज्ञक मन उसमें आकर प्रवेश करता है यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥ २२ ॥

भरद्वाजउवाच । यद्ययमेषांनाना विधानांगर्भकराणांभावानांसमुदा यादभिनिर्वर्त्ततेगर्भःकथमयंसन्धी यते । यदिचापिसन्धीयतेकस्मा त्समुदायप्रभवःसन्गर्भोमनुष्यविग्र हेणजायतेमनुष्यश्चमनुष्यप्रभवउ च्यते । तत्रचेदिष्टमेतद्यस्मान्म नुष्योमनुष्यप्रभवस्तस्मान्मनुष्य विग्रहेणजायते । यथागौर्गोप्रभ वःयथाचाश्वोऽश्वप्रभवइत्येवंयदुक्त मग्रेसमुदायात्मकइतितदयुक्तंयदि च मनुष्योमनुष्यप्रभवःकस्माज्ज डान्धकुब्जमूकवामनमिन्मिनव्य ङ्गोन्मत्तकुष्ठकिलासिभ्योजाताःपि तृसदृशरूपानभवन्ति। अथात्रापि बुद्धिरेवंस्यात्स्वेनैवायमात्माचक्षुषा रूपाणिवेत्तिश्रोत्रेणशब्दान्घ्राणे नगन्धान्रसनेनरसान्स्पर्शनेनस्प र्शान्बुद्ध्याबोद्धव्यमित्यनेनहेतुना जडादिभ्योजाताःपितृसदृशाभव न्ति। अत्रापिप्रतिज्ञाहानिदोषःस्या देवमुक्तेह्यात्मासत्स्विन्द्रियेषुज्ञःस्या दसत्स्वज्ञोयत्रचैतदुभयंसम्भवतिज्ञ त्वमज्ञत्वञ्चसविकारप्रकृतिकश्चात्मा निर्विकारोज्ञश्च । यदिचदर्शनादि भिरात्माविषयान्वेत्तिनिरिन्द्रियोद र्शनादिविरहादज्ञःस्यादज्ञत्वाच्चका रणमकारणत्वाच्चानात्मेतिवाग्वस्तु मात्रमेतद्वचनमनर्थकंस्यादितिहो वाचभरद्वाजः ॥ २३ ॥

तब भरद्वाजमुनिने कहा जो कारणरूप अनेक प्रकारके पदार्थोंके समुदायसेही गर्भ की उत्पत्ति होती है तो वो सबपदार्थ किस प्रकारसे मिलकर गर्भरूप होजाते हैं और यदि मिलभीजाते हैं तो अनेकपदार्थों से बनाहुआ गर्भ किस कारण से मनुष्यरूप उत्पन्न होता है और क्यों मनुष्य मनुष्य का कारण कहाजाता है यहांपर यदि यह कहाजाय कि मनुष्यका कारण मनुष्य है इसीसे गर्भ मनुष्य

के आकार में उत्पन्न होताहै जैसे गौसे गौ उत्पन्न होती है और घोड़ेसे घोड़ा उत्पन्न होता है तो पहिले जो कहाहै कि अनेक पदार्थों के समुदाय से गर्भ उत्पन्न होता है वह असंगत होजायगा और जो मनुष्य के उत्पत्ति का मनुष्य कारण है तो जड़ अंधे कुवड़े गूंगे मिनमिने वामन व्यंगरोगयुक्त उन्मत्त कुष्ठी तथा किलासी मनुष्य से उत्पन्न हुई संतति पिता के समानहीं क्यों नहीं होती है यहां पर यह बोध भी होसक्ता है कि यह आत्मा अपने नेत्रोंकेद्वाराही रूप कानोंकेद्वाराही शब्द अपनी नासिकाकेद्वाराही गन्ध अपनी त्वचाकेद्वाराही स्पर्श अपनी जिह्वाकेद्वाराही रस और अपनी बुद्धिकेद्वाराही जाननेके योग्य विषयों का ग्रहण करता है इसी कारणसे जड़ तथा अन्ध आदि पुरुषों की संतति अपने पिताके सदृश नहीं होती है परन्तु ऐसा माननेपर प्रतिज्ञाहानिनाम दोष होगा क्योंकि इन्द्रियों के विद्यमान होनेपर आत्मा ज्ञानयुक्त और इन्द्रियोंके विद्यमान न होनेपर आत्मा ज्ञान रहित सिद्ध होजायगा और जिसमें ज्ञानित्व तथा अज्ञानित्व इन दोनों बातोंका सम्भवहो वह आत्मा विकारयुक्त प्रकृति निर्विकार ज्ञानयुक्त तथा अज्ञानयुक्त सिद्ध हुआ और जो दर्शन आदि इन्द्रियोंकेद्वाराही आत्मा विषयों को ग्रहण करता है और इन्द्रियों के न होने पर विषयोंका ग्रहण नहीं करताहै तो अज्ञान होने से आत्मा, कारण नहीं होसक्ता और अकारण होने से उसमें आत्मत्वही नहीं होसक्ता इससे जो आपने कहा वह कथनमात्रही है और अनर्थक है यह भरद्वाज मुनिने कहा ॥ २३ ॥

आत्रेयउवाच। पुरस्तादेतत्प्रतिज्ञातंसत्त्वंजीवस्पृक्शरीरेणाभिसम्बध्नातीति। यस्मात्तुसमुदायप्रभवःसन्गर्भोमनुष्यविग्रहेणजायतेमनुष्यश्चमनुष्यप्रभवइत्युच्यतेतद्वक्ष्यामः॥ २४ ॥

तब भगवान् आत्रेयजीने कहा कि पहिले यह कहागया है कि जीव सहित मनका शरीरके साथ सम्बन्ध होताहै अब जिस कारणसे अनेक पदार्थों से वनाहुआ गर्भ मनुष्यरूपसे उत्पन्न होताहै और मनुष्यका कारण मनुष्य कहाजाता है इसका वर्णन करते हैं॥ २४ ॥

भूतानांचतुर्विधायोनिर्भवतिजराय्यण्डस्वेदोद्भिदः। तासांखलुचतसृणामपियोनीनामेकैकायोनिरपरिसंख्येयभेदाभवतिभूतानामाकृतिविशेषापरिसंख्येयत्वात्। तत्र जरायुजानामण्डजानांप्राणिनामेतेगर्भकराभावायांयांयोनिमापद्यन्तेतस्यांतस्यांयोनौतथातथा रूपा भवन्ति। तद्यथा कनकरजतताम्रत्रपुसीसाआसिच्यमानास्तेषुतेषु मधूच्छिष्टबिम्बेषुतेयदामनुष्यबिम्बमापद्यन्तेतदामनुष्यविग्रहेणजायन्ते। तस्मात्समुदायात्मकः सन्गर्भोमनुष्यविग्रहेणजायते मनुष्यो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यप्रभवइत्युच्यतेतद्योनित्वात् ॥ २५ ॥

प्राणियों की जरायु अण्ड स्वेद तथा उद्भिद् यह चार योनि हैं इन चारों योनियों में से एक एक योनि के असंख्यभेद होते हैं क्योंकि प्राणियों के विशेष आकार असंख्य हैं चारो प्रकारकी योनियों में से जरायुज तथा अण्डज प्राणियों के गर्भजनक जो जो पदार्थ जिस जिस योनिमें प्राप्त होते हैं उस उस योनिमें उसी उसी प्रकारके रूप को धारण करते हैं जैसे मोमके साँचेमें सोना चांदी ताँबा रांगा तथा सीसा इन धातुओं को गलाकर ढालनेसे मनुष्य आदिकोंकीसी आकृति वनजाती है इसी प्रकार जब गर्भकारक पदार्थ मनुष्ययोनिमें प्रविष्ट होकर मिलते हैं तब मनुष्य आकार से उत्पन्न होते हैं और मनुष्यका कारण मनुष्य इस लिये कहलाता है कि मनुष्ययोनिसेही मनुष्यकी उत्पत्ति होती है ॥ २५ ॥

यच्चोक्तं यदि च मनुष्योमनुष्यप्रभवः कस्मान्नजडादिभ्योजाताः पितृसदृशरूपाभवन्तीति तत्रउच्यते यस्ययस्य हिअङ्गावयवस्यबीजेबीजभावउपतप्तोभवतितस्यतस्याङ्गावयवस्य विकृतिरुपजायते न उपजायतेच अनुतापात्तस्माद्उभयोपपत्तिरपिअत्रसर्व्वस्य चात्मजानि इन्द्रियाणितेषां भावाभावहेतुर्दैवन्तस्मान्नैकान्ततो जडादिभ्योजाताःपितृसदृशरूपाभवन्ति ॥ २६ ॥

और जो यह संदेह किया कि यदि मनुष्य से मनुष्य की उत्पत्ति है तो अन्धादिपुरुषों की संतति अन्धादिही होनी चाहिये इसका उत्तर यह है कि जिस जिस अंगके बीजमें रोग युक्त बीज होताहै वह अंग विकारयुक्त होता है और बीज निर्विकार होताहै तो अंगमें भी कोई विकार नहीं होता इससे विकारयुक्त होना तथा निर्विकार होना दोनों बातें सिद्ध होती हैं सबकी इन्द्रिय आत्मज होती हैं इन्द्रियोंके होने तथा न होनेका कारण पूर्वजन्मका कर्म्म है इससे जड़ तथा अन्धआदि मनुष्यों की संतति पिताके सदृश जड़ तथा अन्धही नहीं होती है ॥ २६ ॥

नचात्मासस्त्विन्द्रियेषु अज्ञोऽसत्सु वा भवत्यज्ञोनह्यसत्त्वः कदाचिदात्मासत्त्वविशेषाच्च उपलभ्यते ज्ञानविशेषइति ॥ २७ ॥

और इन्द्रियोंके होनेपर आत्मा ज्ञानयुक्त तथा इन्द्रियों के न होनेपर ज्ञानरहित होता यह कहनाभी ठीक नहीं है क्योंकि आत्मा के साथ सदैव सत्त्वसंज्ञक मन रहता है और सत्त्वसेही ज्ञानकी प्राप्ति होती है ॥ २७ ॥

भवन्तिचात्र ।

नकर्त्तुरिन्द्रियाभावात् कार्यज्ञानंप्रवर्त्तते । यैः क्रियावर्त्ततेयातु साविनातैर्नवर्त्तते ॥ २८ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। इन्द्रियोंके विना कर्त्ताको कार्य्यका ज्ञान नहीं होता क्योंकि जिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारणों से जो क्रिया सिद्ध होतीहै वह उनके विना नहीं होती ॥ २८ ॥

जानन्नपिमृदोभावात्कुम्भकृन्नप्रवर्त्तते। श्रूयताञ्चेदमध्यात्ममात्मज्ञानबलम्महत् ॥ २९ ॥

जैसे कुम्हार घटके बनाने की रीति को जानकर भी मृत्तिकाके विना घट नहीं बनासक्ताहै उसी प्रकार इन्द्रियों के विना आत्मा को विषयोंका ज्ञान नहीं होसक्ता है अब मैं आत्मज्ञान के पुष्ट करने के लिये अध्यात्म ज्ञान सुनाताहूं तुम सुनो ॥ २९ ॥

देहेन्द्रियाणिसंक्षिप्यमनःसंगृह्यचञ्चलम् । प्रविश्याध्यात्ममात्मज्ञः स्वे ज्ञानेपर्य्यवस्थितः ॥ ३० ॥

आत्मज्ञानी पुरुष इन्द्रियों को विषयों से निवृत्त करके और चंचल मनको रोक करके और अध्यात्म में प्रवेश करके आत्मज्ञान में स्थित होते हैं ॥ ३० ॥

सर्व्वत्र विहितज्ञानःसर्वभावान्परीक्षते । गृह्णीष्ववेदमपरम्भरद्वाजविनिर्णयम् ॥ ३१ ॥

और ज्ञानदृष्टि से सब पदार्थों की परीक्षा करते हैं उनका ज्ञान कहीं भी नहीं रुकता है हे भरद्वाज ! आत्मा ज्ञानयुक्त है इस बातपर एक दूसरा प्रमाण और सुनो ॥ ३१ ॥

निवृत्तेन्द्रियवाक्चेष्टः सुप्तःस्वप्नगतो यदा । विषयान्सुखदुःखेचवेत्तिनाज्ञोऽप्यतःस्मृतः ॥ ३२ ॥

जब मनुष्य सो जाताहै तब उसकी सम्पूर्ण इन्द्रियों की चेष्टा निवृत्त होजातीहै परन्तु स्वप्नमें सम्पूर्ण विषय तथा सुखदुःखका ज्ञान उसको होता है इससे यह सिद्ध होताहै कि आत्मा अज्ञान नहीं है ॥ ३२ ॥

नात्मज्ञानादृतेचैकं ज्ञानंकिञ्चित्प्रवर्त्तते । नह्येकोवर्त्ततेभावोवर्त्ततेनाप्यहेतुकः ॥ ३३ ॥

आत्मज्ञान के विना कोई भी ज्ञान प्रवृत्त नहीं होसक्ता संसार में कोई पदार्थ एकनहीं और हेतु रहित नहीं है ॥ ३३ ॥

तस्माद्ज्ञःप्रकृतिश्चात्माद्रष्टाकारणमेवच । सर्वमेतद्भरद्वाज ! निर्णीतं जहिसंशयमिति ॥ ३४ ॥

इससे आत्मा ज्ञानयुक्त प्रकृति द्रष्टा (साक्षी) तथा कारण है हे भरद्वाज ! यह सब बातें निर्णीत (निर्णय की हुई) हैं इस से संदेह को त्यागकरो ॥ ३४ ॥

तत्र श्लोकौ ।

हेतुगर्भस्यनिर्वृत्तौवृद्धौजन्मनिचैवयः । पुनर्वसुमतिर्याच भरद्वाजमतिश्चया ॥ ३५ ॥ प्रतिज्ञाप्रतिषेधश्चविशदश्चात्मनिर्णयः। गर्भावक्रान्तिमुद्दिश्यखुड्डीकंसम्प्रकाशितम् ॥ ३६ ॥

इति खुड्डीकागर्भावक्रान्तिः शारीरः समाप्तः ॥ ३ ॥

तिस में यह दो श्लोक हैं। खुड्डीकागर्भावक्रान्तिनाम इस अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने गर्भ की उत्पत्ति वृद्धि तथा बनने का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारण आत्रेयजी तथा भरद्वाज का मत प्रतिज्ञा, प्रतिषेध तथा विस्तारपूर्वक निर्णय यह सब विषय वर्णन किये हैं ॥ ३५ । ३६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंखुड्डीकगर्भावक्रान्तिनामतृतीयाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३ ॥

चौथाध्याय ॥

महतीगर्भावक्रान्तिः।

यतश्चगर्भःसम्भवति यस्मिंश्च गर्भसंज्ञायद्विकारश्चगर्भोयथाचानुपूर्व्याभिनिर्वर्त्तते कुक्षौयश्चास्य वृद्धिहेतुर्यतश्चास्यावृद्धिर्भवति यतश्च जायमानः कुक्षौ विनाशं प्राप्नोति यतश्चकार्त्स्न्येनाविनश्य न्विकृतिमापद्यतेतदनुव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त महतीगर्भावक्रान्तिनाम शारीरका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा जिससे गर्भ उत्पन्न होता है जिसमें गर्भसंज्ञा होती है जिनका विकार गर्भहै कुक्षिमें जिस क्रम से गर्भ की उत्पत्ति होती है, गर्भकी वृद्धि का कारण,गर्भ के न बढ़ने का कारण जिस कारण से गर्भ उत्पन्न होकर कुक्षिमें नष्ट होजाता है और जिस कारण से गर्भ बिलकुल नष्ट न होकर विकारको प्राप्त होता है इन सब बातों का आगे व्याख्यान कियाजाता है ॥ १ ॥

मातृतःपितृतआत्मतः सात्म्यतोरसतः सत्त्वतइत्येतेभ्योभावेभ्यः समुदितेभ्योगर्भःसम्भवति । तस्ययेयेऽवयवायतोयतः सम्भवतः सम्भवन्ति तान्विभज्यमातृजादीनवयवान्पृथक्पृथगुक्तमग्रे । शुक्रशोणितजीवसंयोगे तु खलु कुक्षिगतेगर्भसंज्ञाभवति ॥ २ ॥

माता, पिता, आत्मा, सात्म्य, रस तथा सत्त्व इनसब भावों के मिलने से गर्भ की उत्पत्ति होती है इनमें से जिसके द्वारा गर्भ का जौन २ सा अंग उत्पन्न होता है वह मातृज-आदि अंगोंका विभाग करके अलग २ पहिले कहागया कुक्षिमें वीर्य, रज तथा जीवके संयोग को गर्भ कहते हैं ॥ २ ॥

गर्भस्तुखलु अन्तरीक्षवाय्वग्नितोयभूमिविकारश्चेतनाधिष्ठानभूत एवमनयैव युक्त्या पञ्चमहाभूतविकारसमुदायात्मकोगर्भश्चेतनाधात्वधिष्ठानभूतः सह्यस्यषष्ठोधातुरुक्तः ॥ ३ ॥

आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा भूमि इनका विकार ही गर्भ है और यही गर्भ चेतना का आधार है इस युक्तिसे यह सिद्धहुआ कि पाँच महाभूतों के विकारों का समुदायरूप गर्भ चेतना धातुका आधार है यही चेतनाधातु गर्भ की छठी धातु कहलाती है ॥ ३ ॥

यथा त्वानुपूर्व्याभिनिर्वर्त्तते कुक्षौ तदनुव्याख्यास्यामः । गतेपुराणे रजसिनवेच अवस्थितेपुनः शुद्धस्नातां स्त्रियमव्यापन्नयोनिशोणि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तगर्भाशयामृतुमतीमाचक्ष्महे तयासह तथाभूतयायदापुमानव्यापन्नबीजोमिश्रीभावं गच्छति तस्यहर्षोदीरितःपरः शरीरधात्वात्मा शुक्रभूतोऽङ्गादङ्गात् सम्भवति। स तथाहर्षभूतेनात्मनोदीरितश्च अधिष्ठितबीजधातुः पुरुषशरीरादभिनिष्पद्योदितेन हितेन पथागर्भाशयमनुप्रविश्यार्त्तवेनाभिसंसर्ग्गमेति। तत्रपूर्वंचेतनाधातुः सत्त्वकरणोगुणग्रहणायपुनः प्रवर्त्तते। स हिहेतुः कारणंनिमित्तमक्षरंकर्त्तामन्तावेदिताबोद्धाद्रष्टाधाता ब्रह्माविश्वकर्माविश्वरूपःपुरुषःप्रभवोऽव्ययोनित्यो गुणीग्रहणंप्राधान्यमव्यक्तं जीवोज्ञःप्रकुलश्चेतनावान्विभुर्भूतात्माचेन्द्रियात्माचान्तरात्माचेति॥ ४॥

जिस क्रमसे कुक्षिमें गर्भकी उत्पत्ति होतीहै उसका वर्णन करते हैं पुराने रजके निवृत्त होजानेपर नवीन रजके प्रवृत्तहोनेपर चतुर्थ दिनमें शुद्ध स्नान की हुई जिसके रजयोनि तथा गर्भाशयमें कोई दोष नहो ऐसी स्त्री को ऋतुमती कहते हैं ऐसी स्त्री के साथ जिस पुरुष के बीजमें कोई दोष नहो ऐसा पुरुष जब संगम करता है तब उस पुरुषके हर्षके कारण अंग अंग से शुक्रनाम (वीर्य) परमधातु उत्पन्न होती है वह वीर्य हर्षयुक्त आत्मासे प्रेरित होकर पुरुषके शरीरसे निकलकर योनि के द्वारा गर्भाशय में जाकर रजसे मिलता है उस गर्भाशयमें चेतनाधातु सत्त्वके द्वारा गुणों का ग्रहण करनेके लिये पहिलेही से प्रवृत्तहोती है यही चेतना धातु हेतु कारण निमित्त अक्षर कर्त्ता मन्ता (मनन करनेवाला) वेदिता बोद्धा द्रष्टा धाता ब्रह्मा विश्वकर्मा विश्वरूप पुरुषप्रभव अव्यय नित्य गुणी ग्रहण प्रधान अव्यक्त जीव ज्ञ प्रकुल चेतनावान् विभु भूतात्मा इन्द्रियात्मा तथा अन्तरात्मा कही जाती है॥ ४॥

स गुणोपादानकालेऽन्तरिक्षम्पूर्वतरमन्येभ्योगुणेभ्यउपादत्ते यथाप्रलयात्ययेसिसृक्षुर्भूतान्यक्षरभूतःसत्त्वोपादानम्पूर्वतरमाकाशं सृजति। ततः क्रमेणव्यक्ततरगुणान्धातून् वाय्वादींश्चतुरः। तथादेहग्रहणेऽपिप्रवर्त्तमानः पूर्व्वतरमाकाशमेवोपादत्तेततःक्रमेणव्यक्ततरगुणान्धातून्वाय्वादींश्चतुरः। सर्वमपि तुखल्वेतद्गुणोपादानमणुनाकाले नभवति॥ ५॥

वह चेतना धातु गुणके ग्रहणकरने के समय अन्य गुणोंकी अपेक्षा पहिले आकाश का ग्रहण करतीहै जैसे प्रलयके उपरान्त आत्मा भूतों के उत्पन्न करनेकी इच्छा करके पहिले सत्त्वोपादानक आकाश को उत्पन्न करता है तदनन्तर क्रमसे आकाश की अपेक्षा अधिक प्रकट गुणवाली वायु आदिक चार धातुवों को उत्पन्न करताहै इसी प्रकार शरीर के ग्रह-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ण करने में भी प्रवृत्तहोकर पहिले आकाश काही ग्रहणकरता है तदनन्तर क्रमसे आकाश की अपेक्षा अधिक प्रकट गुणवाले वायुआदि चार को ग्रहण करता है इन सब गुणों का ग्रहण बहुत थोड़ेही समयमें होजाता है ॥५॥

ससर्गगुणवान्गर्भत्वमापन्नःप्रथमेमासिसंमूर्च्छितःसर्वधातुकलुषीकृतःखेटभूतोभवतिअव्यक्तविग्रहःसचसदसद्भूताङ्गावयवः ॥ ६ ॥

संपूर्ण गुणयुक्त वह चेतना धातु गर्भत्व को प्राप्त होकर पहिले महीने में संपूर्ण धातुवों से कलुष होकर कफसा होजाती है उस समय उसमें कोई आकार नहीं प्रकट होता है परन्तु महाभूतों के अंग सूक्ष्मरूप से उस में रहते हैं ॥ ६ ॥

द्वितीयेमासिघनःसम्पद्यतेपिण्डंपेश्यर्बुदंवातत्रघनःपुरुषःस्त्रीपेशीअर्बुदंनपुंसकम् ॥ ७ ॥

दूसरे महीने में वह गर्भ घना होजाता है और पेशी (अण्डा) अथवा अर्बुद (मांसपिण्ड) सा होजाताहै जो घना होय तो पुरुष जो पेशी होय तो स्त्री और जो अर्बुद होय तो नपुंसक होता है ॥ ७ ॥

तृतीयेमासिसर्वेन्द्रियाणिसर्वाङ्गावयवाश्चयौगपद्येनअभिनिर्वर्त्तन्ते॥८॥

तीसरे महीने में संपूर्ण इन्द्रिय तथा संपूर्ण अंग एक साथही उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥

तत्रास्यकेचिदङ्गावयवामातृजादीनवयवान्विभज्यपूर्वमुक्तायथावन्महाभूतविकारप्रविभागेनतुइदानीमस्यतांश्चैवअङ्गावयवान्कांश्चित्पर्यायान्तरेणपरांश्चअनुव्याख्यास्यामः ॥ ९ ॥

उन अंगोंमें से जो २ अंग माता तथा पिताआदि से उत्पन्न होते हैं वह पहिले विभाग करके कहेगये हैं अब महाभूतों के विकारों के विभाग से उन अंगों का पर्यायान्तर से तथा अन्य अंगोंका वर्णन करते हैं ॥ ९ ॥

मातृजादयोऽप्यस्यमहाभूतविकाराएवतत्रास्याकाशात्मकंशब्दः श्रोत्रंलाघवंसौक्ष्म्यंविवेकश्च ॥ १० ॥

माताआदि से उत्पन्न होनेवाले अंगभी महाभूतों के विकारही हैं उनमें से शब्द श्रो[त्र] लघुता सूक्ष्मता तथा विवेक यह आकाशात्मक अर्थात् आकाश के विकार हैं ॥ १० ॥

वाय्वात्मकंस्पर्शःस्पर्शनञ्चरौक्ष्यंप्रेरणंधातुव्यूहनंचेष्टाश्चशारीर्य्यः॥११॥

स्पर्श (छूना) स्पर्शन (त्वक् इन्द्रिय) रूक्षता श्वासलेना तथा श्वास छोड़ना धातुवों को लेचलना और शारीरिक चेष्टा यह वायु के विकार हैं॥ ११ ॥

अग्न्यात्मकं रूपं दर्शनंप्रकाशःपक्तिरौष्ण्यञ्च ॥ १२ ॥

रूप दर्शनेन्द्रिय प्रकाश परिपाक तथा उष्णता ये अग्निके विकार हैं॥ १२ ॥

अबात्मकंरसोरसनंशैत्यंमार्दवःस्नेहःक्लेदश्च ॥ १३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मापद्यतेऽथवाप्यचिरजातः स्यात् ॥ ३१ ॥

कुक्षिमें गर्भके बढ़ने के जो कारण कहेगये हैं उनके विपरीत होने से गर्भ नष्ट होजाता है अथवा बहुत कालमें उत्पन्न होताहै ॥ ३१ ॥

यतस्तुकात्स्न्र्येनाविश्यन्विकृतिमापद्यतेतदनुव्याख्यास्यामः ॥ ३२ ॥

जिन कारणों से गर्भ बिल्कुल नष्ट न होकर विकार को प्राप्त होजाता है वह कहेजाते हैं ॥ ३२ ॥

यदास्त्रियादोषप्रकोपनोक्तान्यासेवमानायादोषाः प्रकुपिताःशरीरमुपसर्पन्तःशोणितगर्भाशयौदूषयन्ति तदायंगर्भलभतेस्त्रीतदागर्भस्यमातृजानामवयवानामन्यतमोऽन्नयवो विकृतिमापद्यतएकोऽथवानेकः ३ ३॥

जब दोषोंके कुपित करनेवाली वस्तुओं के सेवनसे स्त्रीके कुपितहुये दोष शरीरमें विचरण करके रुधिर तथा गर्भाशय को दूषित करताहै तब स्त्री जो गर्भ धारण करती है उस गर्भके मातासे होनेवाले अंगोंमें से एक अथवा अनेक अंग विकारयुक्त होते हैं ॥ ३३ ॥

यस्ययस्यह्यवयवस्यबीजेबीजभागेवादोषाःप्रकोपमापद्यन्तेतंतमवयवंविकृतिराविशति ॥ ३४ ॥

बीज के जिस भागसे जो २ अंग उत्पन्न होताहै उस भागके दूषित होनेसे वही २ अंग विकारयुक्त होताहै ॥ ३४ ॥

यदाह्यस्याःशोणिंतगर्भाशयबीजभागःप्रदोषमापद्यतेतदाबन्ध्यांजनयति। यदापुनरस्याःशोणितेगर्भाशयबीजभागावयवःप्रदोषमापद्यतेतदापूतिप्रजांजनयति ३५ ॥

जब स्त्रीके रज तथा गर्भाशय के बीजका भाग दूषित होताहै तब बन्ध्या कन्या उत्पन्न होती है जब स्त्रीके रज तथा गर्भाशयके बीज के भागका कोई एकही भाग दूषित होता है तब ऐसी कन्या उत्पन्न होती है जिसकी संतति दूषित होती है ॥ ३५ ॥

यदात्वस्याःशोणितगर्भाशयबीजभागावयवःस्त्रीकराणाञ्चशरीरबीजभागानामेकदेशः प्रदोषमापद्यते तदास्त्र्याकृतिभूयिष्ठामस्त्रियंवार्त्तानामजनयतितांस्त्रीव्यापदमाचक्षते ॥ ३६ ॥

जब स्त्री के रज तथा गर्भाशय के बीज के भागका कोई अंश और स्त्रीजनक शरीर बीजके भागका कोई अंश दूषित होताहै तब स्त्री कीसी आकृतियुक्त अस्त्रीवार्त्तानाम नपुंसक उत्पन्न होता है इसको स्त्रीव्यापद कहते हैं ॥ ३६ ॥

एवमेवपुरुषस्यबीजदोषेपितृजावयवविकृतिंविद्याद्यदापुनरस्यबीजेबीजभागावयवःप्रदोषमापद्यतेतदापूतिप्रजांजनयति ॥ ३७ ॥

इसी प्रकार पुरुषके बीज में दोष होने से पितासे होनेवाले अंगोंमें विकार जानना चाहिये जब पुरुषके बीजका कोई भाग दूषित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होताहै तब दूषित संतति उत्पन्न होतीहै ॥ ३७॥

यदात्वस्यबीजेबीजभागावयवः पुरुषकराणाञ्चशरीरबीजभागानामेकदेशःप्रदोषमापद्यतेतदापुरुषाकृतिभूयिष्ठमपुरुषंतृणपूलिकंनामजनयतितांपुरुषव्यापदमाचक्षते ३८

जब पुरुषके बीजका कोई भाग और पुरुषजनक शरीर बीजके भागका कोई अंश दूषित होता है तब पुरुष कीसी आकृतियुक्त तृणपूलिकनाम नपुंसक उत्पन्न होताहै उसे पुरुषव्यापद कहते हैं ॥ ३८ ॥

एतेनमातृजानांपितृजानाञ्चावयवानांविकृतिर्व्याख्यानेनसात्म्यजानांरसजानांसत्त्वजानाञ्चावयवानां विकृतिर्व्याख्याता ॥ ३९ ॥

माता तथा पिता से होनेवाले अंगों के विकारके वर्णन करनेसे सात्म्यरस तथा सत्त्वसे होनेवाले अंगोंके विकारभी वर्णितहुये॥३९॥

निर्विकारःपरस्त्वात्मासर्वभूतानांनिर्विशेषःसत्त्वशरीरयोस्तुविशेषाद्विशेषोपलब्धिः ॥ ४० ॥

परमात्मा निर्विकार है और सब प्राणियों में सामान्य है परन्तु मन तथा शरीर की विशेषता से भेद मालूम होता है ॥ ४० ॥

तत्रत्रयस्तुशारीरदोषावातपित्तश्लेष्माणस्तेशरीरंदूषयन्ति ॥ ४१ ॥

तिसमें वात पित्त तथा कफ यह तीन शारीरिक दोष हैं यही शरीर को दूषित करते हैं ॥ ४१ ॥

द्वौपुनःसत्वदोषौरजस्तमश्च । तौसत्त्वंदूषयतस्ताभ्याञ्चसत्त्वशरीराभ्यां दुष्टाभ्यांविकृतिरुपजायतेनोपजायतेचाप्रदुष्टाभ्याम् ॥ ४२ ॥

रजोगुण तथा तमोगुण ये दो मन के दोष हैं यही मनको दूषित करते हैं मन तथा शरीर के दूषित होनेपर विकार उत्पन्न होता है और मन तथा शरीर के दूषित नहीं होने पर विकार नहीं उत्पन्न होता है ॥ ४२ ॥

तत्रशरीरंयोनिविशेषाच्चतुर्विधमुक्तमग्रेत्रिविधंखलुसत्त्वंशुद्धंराजसंतामसमिति । तत्रशुद्धमदोषमाख्यातंकल्याणांशत्वात् । राजसंसदोषमाख्यातंरोषांशत्वात् । तथातामसमपिसदोषमाख्यातं मोहांशत्वात् ॥ ४३ ॥

तहां शरीर योनियों की विशेषता से चार प्रकार का होताहै यह पहिले कहा गयाहै मन शुद्ध राजस तथा तामसभेदसे तीन प्रकार का है इनमें से शुद्ध मन कल्याणकारक होने से निर्दोष कहलाता है राजसमन क्रोधांश होने से सदोष कहलाताहै और तामसमन भी मोहांश होनेसे सदोष कहलाता है ॥ ४३ ॥

तेषान्तुत्रयाणामपिसत्त्वानामेकैकस्यभेदाग्रमपरिसंख्येयंतरतमयोगाच्छरीरयोनिविशेषेभ्यश्चान्योन्यानुविधानत्वाच्च । शरीरमपिसत्त्वमनुविधीयतेसत्त्वञ्चशरीरंतस्मात्कतिचि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्त्वसत्त्वभेदाननूकसादृश्याभिनिर्देशेन निदर्शनार्थमनुव्याख्यास्यामः ॥ ४४ ॥

दो में से एक के श्रेष्ठ होने से बहुतोंमेंसे एक के श्रेष्ठ होने से शरीरों के योनिविशेषों से और मनके अनुसार शरीर तथा शरीर के अनुसार मनके होने से तीनों प्रकार के मनों के असंख्य भेद होते हैं मन शरीर के अनुसार होता है और शरीर मनके अनुसार होता है इससे उदाहरण के लिये मन के कुछ भेद सदृशता के अनुसार कहे जाते हैं ॥ ४४ ॥

तद्यथा शुचिंसत्याभिसन्धं जितात्मानं संविभागिनं ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनशक्तिसम्पन्नं स्मृतिमन्तं कामक्रोधलोभमानमोहेर्ष्याहर्षोपेतंसमंसर्वभूतेषु ब्राह्मयंविद्यात् ॥ ४५ ॥

जैसे पवित्र सत्यसंध जितेन्द्रिय उचित अनुचित का विभाग करनेवाला ज्ञान विज्ञान उत्तर तथा प्रत्युत्तर की शक्तिसे युक्त स्मृतियुक्त काम क्रोध लोभ मोह मान ईर्षा हर्ष तथा अमर्ष (असहन) से रहित और सब प्राणियों में समदर्शी सत्त्व (मन) को ब्राह्मय कहते हैं ॥ ४५ ॥

इज्याध्ययनव्रतहोमब्रह्मचर्य्यमतिथिव्रतसुपशान्तमदमानरागद्वेषमोहलोभरोषं प्रतिभावचनविज्ञानोपधारणशक्तिसम्पन्नमार्षंविद्यात् ॥ ४६ ॥

यज्ञ अध्ययन व्रत होम ब्रह्मचर्य्य तथा अतिथिसत्कार से युक्त मद मान राग द्वेष मोह लोभ तथा रोष से रहित और उत्तर विज्ञान तथा धारणाशक्तिसे युक्त सत्त्व (मन) को आर्ष जानना चाहिये ॥ ४६ ॥

ऐश्वर्य्यवन्तमादेयवाक्यं यज्वानं शूरमोजस्विनं तेजसोपेतमक्लिष्टकर्माणं दीर्घदर्शिनन्धर्म्मार्थकामाभिरतमैन्द्रंविद्यात् ॥ ४७ ॥

ऐश्वर्य्ययुक्त ग्रहण करनेके योग्य यज्वा (यज्ञकरनेवाला) शूर ओजस्वी तेजस्वी क्लेशदायक कर्मरहित दीर्घदर्शी और धर्म अर्थ तथा काम में तत्पर जो सत्त्व (मन) उसे ऐन्द्र जानना चाहिये ॥ ४७ ॥

लेखास्थवृत्तं प्राप्तकारिणमसंहार्य्यमुत्थानवन्तं स्मृतिमन्तमैश्वर्य्यालम्बिनं व्यपगतरागद्वेषमोहं याम्यं विद्यात् ॥ ४८ ॥

मर्य्यादा के अनुसार कार्य्य करनेवाला समय के अनुसार कार्य्य करनेवाला समर्थ स्मृतियुक्त ऐश्वर्य्ययुक्त और राग द्वेष तथा मोहरहित जो सत्त्व (मन) उसे याम्य जानना चाहिये ॥ ४८ ॥

शूरंधीरंशुचिमशुचिद्वेषिणं यज्वानमम्भोविहाररतिमक्लिष्टकर्म्माणं स्थानकोपप्रसादं वारुणं विद्यात् ॥ ४९ ॥

शूर धीर पवित्र अपवित्रतासे द्वेष करनेवाला यज्ञकरनेवाला जलविहार में बहुत रुचिक-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रनेवाला क्लेशदायक कर्म नहीं करनेवाला और योग्य अवसरमें क्रोध तथा अनुग्रह करनेवाला जो सत्त्व (मन) उसे वारुण जाननाचाहिये ॥ ॥ ४९ ॥

स्थानमानोपभोगं परिवारसम्पन्नं मखविहारं धर्म्मार्थकामानित्यंशुचिं नयात पप्रसादं कौबेरंविद्यात्५०॥

व्यक्तकोपुरु ान में मान तथा भोग करनेवाला योग्यस्थाग क धर्म अर्थ तथा काममें नित्यतत्पर कुटुम्बयुक्त और प्रकट क्रोध तथा अनुग्रह करनेवाला पवित्र क जो सत्त्व (मन) उसे कौबेर जानना वाला जो सुख क ॥ चाहिये ॥ ५० ॥

प्रियनृत्यगीतवादित्रोल्लापकंश्लोकाख्यायिकेतिहासपुराणेषु कुशलं गन्धमाल्यानुलेपनवसनस्त्रीविहारकामनित्यमनसूयकंगान्धर्वंविद्यात् ॥ ५१ ॥

नृत्य गीत वाद्य तथा उल्लापक (आलापना) में रुचिरखनेवाला श्लोक आख्यायिका (कहानी) इतिहास तथा पुराण में प्रवीण सुगंध माला चन्दनादि लेप वस्त्र स्त्री तथा विहार में बहुत अभिलाष करनेवाला और असूया (गुणों में दोष लगाना) से रहित सत्त्व (मन) को गान्धर्व जानना चाहिये ॥ ५१ ॥

इत्येवंशुद्धस्यसत्त्वस्यसप्तविधंभेदांशंविद्यात्कल्याणांशत्वात्तत्संयोगात्तुब्राह्मयमत्यन्तशुद्धंव्यवस्येत ॥ ५२ ॥

इस प्रकार कल्याणकारी होनेके कारण शुद्ध सत्त्व (मन) के यह सातभेद जानने चाहिये इनमें से ब्राह्मय सत्त्व (मन) को अत्यन्त शुद्ध जानना चाहिये ॥ ५२ ॥

शूरंचण्डमसूयकमैश्वर्य्यवन्तमौदरिकंरौद्रमननुक्रोशकमात्मपूजकमासुरंविद्यात् ॥ ५३ ॥

शूर अत्यन्त क्रोधी असूया(गुणोंमें दोषलगाना)युक्त ऐश्वर्य्यवान् औदरिक (मरभूखा) उग्र निर्दय और अपने को सबसे अधिक समझनेवाला जो सत्त्व (मन) उसे आसुर जानना चाहिये ॥ ५३ ॥

अमर्षिणमनुबन्धकोपंछिद्रप्रहारिणंक्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतमंस्वप्नायासबहुलमीर्षुंराक्षसंविद्यात् ॥ ५४ ॥

क्रोधी क्रोध को बहुत कालतक चित्त में रखनेवाला अवसर पाकर प्रहार करनेवाला क्रूर भोजन में बहुत रुचि रखनेवाला और मांसमें बहुतही अधिक रुचिरखनेवाला बहुत सोनेवाला बहुत श्रम करनेवाला और ईर्षायुक्त जो सत्त्व (मन) उसे राक्षस जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

महालसंस्त्रैणं स्त्रीरहस्कामम शुचिंशुचिद्वेषिणंभीरुंभीषयितारंविकृतिविहाराहारशीलंपैशाचंविद्यात् ॥ ५५ ॥

अत्यन्त आलसी स्त्रियों के साथ एकान्त में बहुत विहार करनेवाला अपवित्र पवित्रता से द्वेष करनेवाला भीरु (डरपोक) भयानक और अनुचित आहार विहार करनेवाला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रस रसनेन्द्रिय शीतलता मृदुता स्नेह तथा क्लेद यह जल के विकार हैं ॥ १३ ॥

पृथिव्यात्मकोगन्धःघ्राणंगौरवंस्थैर्यंमूर्त्तिश्च ॥ १४ ॥

गन्ध घ्राणेन्द्रिय गुरुता स्थिरता तथा मूर्ति यह पृथिवी के विकार हैं ॥ १४ ॥

एवमयंलोकसम्मतःपुरुषः । यावन्तोहिलोकेभावविशेषाःतावन्तःपुरुषेयावन्तःपुरुषेतावन्तोलोकेइति बुधास्त्वेवंद्रष्टुमिच्छन्ति ॥ १५ ॥

इसप्रकार उत्पन्न हुआ यह पुरुष जगत् के समान होता है क्योंकि लोक में जितने पदार्थ हैं वह सब पुरुष में हैं और पुरुष में जितने पदार्थ हैं वह सब लोक में भी हैं यह बात विद्वान् लोगही जान सक्ते हैं ॥ १५ ॥

एवमस्येन्द्रियाणिअङ्गावयवाश्चयौगपद्येनाभिनिर्वर्त्तन्तेअन्यत्रतेभ्योभावेभ्योयेऽस्य जातस्योत्तरकालंजायन्तेतद्यथा,दन्ताव्यञ्जनानिव्यक्तीभावस्तथायुक्तानि चापराणिएषाप्रकृतिविकृतिःपुनरतोऽन्यथा । सन्तिखलुअस्मिन्गर्भेनित्याभावाःसन्तिचानित्याःतस्यएवाङ्गावयवाःसन्तिष्ठन्तेतएवस्त्रीलिङ्गंपुरुषलिङ्गंनपुंसकलिङ्गंवाबिभ्रति॥१६॥

इसप्रकार गर्भ के अंग व इन्द्रिय एकसाथ हीं उत्पन्न होते हैं परन्तु वह अंग नहीं उत्पन्न होते हैं जो गर्भोत्पत्ति के उपरान्त होने वाले हैं जैसे दन्त स्तन दाढ़ी के बाल रोम और इसीप्रकार के अन्य अंग यह तो प्रकृति है और इसके विपरीत विकृति है गर्भ में कुछ भाव नित्य और कुछ अनित्य हैं गर्भ के जौन२ से अंग साकार उत्पन्न होते हैं उन सब में स्त्री पुरुष अथवा नपुंसक के चिह्न होते हैं ॥ १६ ॥

ततःस्त्रीपुरुषयोर्येवैशेषिकाभावाःप्रधानसंश्रयागुणसंश्रयाश्चतेषांयतोभूयस्त्वंततोऽन्यतरभावः । तद्यथाक्लैब्यंभीरुत्वमवैशारद्यंमोहोऽवस्थानमधोगुरुत्वमसंहननंशैथिल्यंमार्दवंगर्भाशयबीजभागस्तथायुक्तानिचापराणिस्त्रीकराणि । अतोविपरीतानिपुरुषकराणिउभयभागभावानिनपुंसककराणि । यस्ययत्कालमेवइन्द्रियाणिसन्तिष्ठन्तेतत्कालमेवास्यचेतसिवेदनानिबन्धंप्राप्नोति । तस्मात्तदाप्रभृतिगर्भःस्पन्दतेप्रार्थयतेचजन्मान्तरानुभूतमिहयत्किञ्चित्तद्द्वैहृदयमाचक्षतेवृद्धाः । मातृजञ्चास्यहृदयंमातृहृदयाभिसम्बद्धंरसवाहिनीभिःसंवाहिनीभिस्तस्मात्तयोस्ताभिर्भक्तिःसम्पद्यते । तच्चैवकारणमवेक्षमाणानद्वैहृदय्यंविमानितंगर्भमिच्छन्तिकर्त्तुंविमानेह्यस्यदृश्यतेविनाशोविकृतिर्वा ॥ १७ ॥ समान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योगक्षेमाहिमातातदागर्भेणकेषुचि दर्थेषुतस्मात्प्रियहिताभ्यांगर्भिणीं विशेषेणोपचरन्तिकुशलाः॥ १८॥

जिनबातों से स्त्री पुरुष अथवा नपुंसक होगा यह भेद मालूम होता है और जो बातें प्रधान हैं उन्हीं की अधिकता से स्त्री आदिके होने का निश्चय होता है जैसे क्लीवता भी-रुता (डरपोंकहोना) अप्रगल्भता मोह श्रम मालूम होना शरीरके नीचे के भाग में भारी-पन मालूम होना शरीर का दृढ़ न मालूम होना शिथिलता कोमलता गर्भका बाईं ओर होना और इसीप्रकार के अन्य लक्षण होने से कन्या होती है इन लक्षणों के विपरीत होने से पुरुष होता है और दोनों प्रकार के लक्षण मिले हुए होने से नपुंसक होता है जिससमय गर्भ की इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं उसीसमय उसके चित्त में पीड़ाओं का ज्ञान होने लगता है इसीसे गर्भ उसी समय से हि-लता डुलता है और जन्मान्तर में अनुभव की हुई वस्तुओं की प्रार्थना करता है इस से वृद्धलोग गर्भ को द्वैहृदय्य कहते हैं गर्भ का हृदय माता से उत्पन्न होता है और रसवा-हिनी नाड़ियों के द्वारा माता के हृदय से संबद्ध होता है इससे रसवाहिनी नाड़ियों के द्वारा गर्भ तथा गर्भिणी दोनों की भक्ति संपन्न होती है इसीकारण से वैद्यलोग द्वै-हृदय्य गर्भका तिरस्कार नहीं करते हैं क्यों-कि गर्भ की रुचिके तिरस्कार करने से प्रायः गर्भ नष्ट होजाता है अथवा विकारयुक्त हो-जाता है उससमय गर्भिणी की इच्छा कुछ विषयों में गर्भ के अनुसार ही होती है इससे चतुरलोग गर्भिणीको प्रिय तथा हितवस्तुओं से तृप्तकरते हैं ॥ १७ । १८ ॥

तस्याद्वैहृदय्यस्यचविज्ञानार्थंलिङ्गा निसमासेनउपदेक्ष्यामः ॥ १९ ॥

तिसके द्वैहृदय्य जानने के लिये संक्षेप से लक्षण कहते हैं ॥ १९ ॥

उपचारसंबोधनंह्यस्याज्ञानेदोषज्ञा नञ्चलिङ्गतस्तस्मादिष्टोलिङ्गोपदे शस्तद्यथाआर्त्तवादर्शनमास्यसं स्रवणमनन्नाभिलाषश्छर्दिररोच कोऽम्लकामताचविशेषेण । श्रद्धा प्रणयनञ्चोच्चावचेषुभावेषुगुरुगात्र[illegible] चक्षुषोर्ग्लानिः स्तनयोःस्तन्यमोष्ठ योःस्तनमण्डलयोश्च कार्ष्ण्यमत्[illegible] र्थंश्वयथुः पादयोरीषल्लोमराज्यु[illegible] मोयोन्याश्चाटालत्वमितिगर्भेपर्य[illegible] गतेरूपाणिभवन्ति ॥ २० ॥

क्योंकि इसके विनाजाने यह दोष होता है कि गर्भिणी का उपचारनहीं होता है और जानना लक्षणों से ही होता है इससे लक्ष-णोंका कहना आवश्यक है वह लक्षण यह हैं जैसे रजोधर्म न होना लारबहना अन्न में अनिच्छा छर्दि अरुचि खट्टी वस्तु में बहुत रुचि होना अनेकप्रकार के पदार्थों में अभि-लाषकरना शरीर का भारी मालूम होना नेत्रोंका मलिनहोना स्तनोंमें दुग्धहोना ओष्ठ तथा स्तनों में कृष्णता पैरों में बहुत सूजन तथा योनिपर रोमों की सूक्ष्म पंक्तिका जाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सा होजाना गर्भ प्राप्त होने से यह लक्षण होते हैं ॥ २० ॥

सायद्यदिच्छेत्तत्तदस्यैदद्यादन्यत्र गर्भोपघातकरेभ्योभावेभ्यः । गर्भोपघातकरास्त्विमेभावाः तद्यथासर्वमतिगुरूष्णतीक्ष्णदारुणाश्चचेष्टाइमांश्चान्यानुपदिशन्ति वृद्धाः । देवतारक्षोऽनुचरपरिरक्षणार्थंनरक्तानिवासांसिबिभृयान्नमदकराणिचाद्यान्नाभ्यवहरेन्नयानमधिरोहेन्नमांसमश्नीयात्सर्वेन्द्रियप्रतिकूलांश्चभावान्दूरतःपरिवर्जयेत् ॥ २१ ॥

गर्भिणी जिन २ वस्तुओं की अभिलाषा करै वह सब उसको देनी चाहिये परन्तु गर्भ में जो अहित वस्तु हैं वह न देनी चाहिये जैसे बहुत भारीवस्तु बहुत उष्णवस्तु बहुततीक्ष्ण वस्तु तथा कष्टदायक चेष्टा यह तथा अन्य कारण भी गर्भ को हानि करने वाले वृद्ध लोगोंने कहे हैं देवता तथा राक्षसों के दूतोंसे रक्षित रहने के लिये गर्भिणी रक्तवस्त्र न पहिनै गर्भिणी मादक वस्तु न खाय सवारी पर न चढ़ै मांस न खाय और संपूर्ण इन्द्रियोंके प्रतिकूल विषयों का दूर से ही त्याग करै ॥ २१ ॥

यच्चान्यदपि किञ्चित्स्त्रियोविद्युस्तीत्रायान्तुखलुप्रार्थनायांकाममहितमप्यस्यैहितेनोपसंहितंदद्यात्प्रार्थनाविलयनार्थम् । प्रार्थनासन्धारणाद्धिवायुःकुपितोऽन्तःशरीरमनुचरन्गर्भस्यापद्यमानस्यविनाशंवैरूप्यंवाकुर्यात् ॥ २२ ॥

और जो कोई गर्भको हानिकारक वस्तु स्त्रियां जानती हों उसका भी त्यागकरै जो अहित वस्तु में गर्भिणी की बहुत ही इच्छा होय तो अहित वस्तुको भी हितवस्तुके साथ मिलाकर दे जिस से उसकी प्रार्थना पूर्ण होजाय क्योंकि प्रार्थना के भंगहोने से कुपित हुई वायु शरीरके भीतर विचरण करके गर्भ में जाकर गर्भ को नष्ट करदेती है अथवा विरूप करदेती है ॥ २२ ॥

चतुर्थेमासिस्थिरत्वमापद्यतेगर्भस्तस्मात्तदागर्भिणीगुरुगात्रत्वमधिकमापद्यतेविशेषेण ॥ २३ ॥

चौथे महीने में गर्भ स्थिर होजाता है इस से चौथे महीने में गर्भिणी को अपना शरीर बहुत भारी मालूम देता है ॥ २३ ॥

पञ्चमेमासिगर्भस्यमांसशोणितोपचयोभवतिअधिकमन्येभ्योमासेभ्यस्तस्मात्तदागर्भिणीकार्श्यमापद्यतेविशेषेण ॥ २४ ॥

पंचममास में अन्य मासों की अपेक्षा गर्भ का मांस तथा रुधिर अधिक बढ़ता है इससे पंचममास में गर्भिणी बहुत कृश होजाती है ॥ २४ ॥

षष्ठेमासिगर्भस्यबलवर्णोपचयोभवतिअधिकमन्येभ्योमासेभ्यस्तस्मात्तदागर्भिणीबलवर्णहानिमापद्यतेविशेषेण ॥ २५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छठे मास में अन्य मासों की अपेक्षा गर्भ का वर्ण तथा बल अधिक बढ़ता है इससे छठे मास में गर्भिणी के वर्ण तथा बलकी अधिक हानि होजाती है ॥ २५ ॥

सप्तमेमासिगर्भःसर्वैर्भावैराप्यायतेऽस्याः । तस्मात्तदागर्भिणीसर्वाकारैःक्लान्ततमाभवति ॥ २६ ॥

सप्तममास में गर्भ के सम्पूर्ण अंगपुष्ट होते हैं इससे सप्तममास में गर्भिणी सब प्रकार से बहुत म्लान रहती है ॥ २६ ॥

अष्टमेमासिगर्भश्चमातृतोगर्भतश्चमातारसवाहिनीभिःसंवाहिनीभिर्मुहुर्मुहुरोजःपरस्परतआददातिगर्भस्यसम्पूर्णत्वात्तस्मात्तदा गर्भिणीमुहुर्मुहुःमुदायुक्ताभवतिमुहुर्मुहुश्चग्लानातस्मात्तदागर्भस्यजन्मव्यापत्तिमद्भवत्योजसोऽनवस्थितत्वात्तश्चैवमभिसमीक्ष्याष्टमंमासमगर्भण्यमित्याचक्षतेकुशलाः॥२७॥

अष्टममास में गर्भ के सम्पूर्ण अंग पूर्ण होजाते हैं इससे गर्भ माता से और माता गर्भ से दोनों परस्पर रसवाहिनी नाड़ियों के द्वारा वारंवार ओज का ग्रहण करते हैं इससे अष्टममास में गर्भिणी वारंवार प्रसन्न होती है और वारंवार म्लान होती है ओज के स्थिर न होने के कारण अष्टममास में गर्भ की उत्पत्ति होने से बड़ीहानि होती है इससे बुद्धिमान् लोग अष्टममास को गर्भ के लिये अहित कहते हैं ॥ २७ ॥

तस्मिन्नेकदिवसातिक्रान्तेऽपिनवमंमाससमुपादायप्रसवकालमित्याहुरादशमान्मासादेतावान्कालोवैकारिकम् ॥ २८ ॥

अष्टममास के व्यतीत होनेपर नवममास के प्रथम दिन से दशममासपर्यन्त प्रसव का समय है और दशममासके उपरान्त प्रसव न होने से विकार जानना चाहिये ॥ २८ ॥

अतःपरंकुक्षौस्थानंगर्भस्य । एवमनयानुपूर्व्याभिनिर्वर्ततेकुक्षौ ॥२९॥

कुक्षिमें गर्भका स्थान है इसप्रकार पूर्वोक्त क्रमसे कुक्षिमें गर्भ उत्पन्न होताहै ॥ २९ ॥

मात्रादीनान्तुखलुगर्भकराणांभावानांसम्पदस्तथानिवृत्तस्यसौष्ठवान्मातृतश्चैवोपस्नेहोपस्वेदाभ्यांकालपरिणामात्स्वभावसंसिद्धेश्चकुक्षौवृद्धिंप्राप्नोति । मात्रादीनान्तुखलुगर्भकराणांभावानां व्यापत्तिनिमित्तमस्याजन्मभवति ॥ ३० ॥

माता आदिक गर्भ के कारणों के विगुण (दूषित) न होनेसे माताके आहार विहारों के उचित होने से माताकेद्वारा स्नेहन तथा स्वेदन के प्राप्त होने से समयके परिणाम से और स्वभाव से कुक्षिमें गर्भ वृद्धि को प्राप्त होताहै माता आदि कारणों के दूषित होनेसे गर्भकी उत्पत्ति नहीं होती ॥ ३० ॥

येत्वस्यकुक्षौवृद्धिहेतुसमाख्याताभावास्तेषां विपर्ययादुदरेविनाश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतिकर्मात्मकत्वाच्च। हेत्वादिभिरयुक्तसर्वलोकोऽहमितिविदित्वाज्ञानंपूर्वमुत्थाप्यतेऽपवर्गायेति ॥ ६ ॥

अग्निवेशके वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश जो पुरुष अपने में सब संसार को और संसारमें अपने को देखताहै उसे आत्मज्ञान उत्पन्न होता है जो सब संसार को अपने में देखताहै वह आत्मा को सुख दुःखका कर्त्ता मानता है अन्य को नहीं क्योंकि सुख और दुःख कर्म्मस्वरूप हैं हेत्वादिकों से रहित सम्पूर्ण संसार मैंहींहूं यह जानकर मोक्षके निमित्त ज्ञानपूर्व्वक उद्यत होता है ॥ ६ ॥

तत्रसंयोगापेक्षीलोकशब्दःषड्धातुसमुदायोहिसामान्यतःसर्वलोकः तस्यहेतुरुत्पत्तिर्वृद्धिरुपप्लवोवियोगश्च। तत्रहेतुरुत्पत्तिकारणमुत्पत्तिर्जन्मवृद्धिराप्यायनमुपप्लवोदुःखागमः षड्धातुविभागोवियोगः। स जीवापगमः सप्राणनिरोधः सभङ्गःसलोकस्वभावः ॥ ७ ॥

लोक (संसार) शब्द संयोगापेक्षी है क्योंकि छः धातुओंका समुदायही समानता से सब संसार है उसका हेतु उत्पत्ति वृद्धि उपप्लव तथा वियोग होताहै इनमें से उत्पत्ति का कारण हेतु कहाता है जन्म को उत्पत्ति कहते हैं आप्यायन (तर करना) वृद्धि कहलाता है दुःखकी प्राप्ति को उपप्लव कहते हैं और छओं धातुओंके विभाग को वियोग कहते हैं इसी को जीवापगम प्राणनिरोध भंग तथा लोक स्वभावभी कहते हैं ॥ ७ ॥

तस्य मूलंसर्वोपप्लवानाञ्च प्रवृत्तिर्निवृत्तिरुपरमश्च प्रवृत्तिर्दुःखं निवृत्तिः सुखमिति यज्ज्ञानमुत्पद्यते तत्सत्यम्। तस्यहेतुःसर्व्वलोकसामान्यज्ञानमेतत्प्रयोजनं सामान्योपदेशस्येति ॥ ८ ॥

वियोग तथा दुःखोंकी मूल प्रवृत्ति है और निवृत्ति से इनका नाश होताहै प्रवृत्ति दुःखरूपहै और निवृत्ति सुखरूप है यह जो ज्ञान उत्पन्न होताहै सो सत्य है इसका कारण सम्पूर्ण संसारमें अपनी समता को जाननाही है और यही संसार तथा पुरुषकी समता का उपदेश करनेका प्रयोजन है ॥ ८ ॥

अथाग्निवेशउवाच। किम्मूलाभगवन्! प्रवृत्तिर्निवृत्तौवाउपाय इति ॥ ९ ॥

भगवान् आत्रेयजीके यह वचन सुनकर अग्निवेशबोले कि हे भगवन्! प्रवृत्तिका क्या मूलहै और निवृत्तिके कौन उपाय हैं ॥ ९ ॥

भगवानुवाच। मोहेच्छाद्वेषकर्म्ममूलाप्रवृत्तिस्तज्जाह्यहङ्कारसङ्गसन्देहाभिसम्प्लवाभ्यवपातविप्रत्ययाविशेषानुपायाःतरुणमिवद्रुममतिविपुलशाखास्तरवोऽभिभूयः पुरुषमवतत्योत्तिष्ठन्ते यैरभिभूतोनसत्तामतिवर्त्तते ॥ १० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि मोह इच्छा द्वेष तथा कर्म्म यह प्रवृत्ति के मूल हैं प्रवृत्ति से अहंकार संग संदेह अभिसंप्लव अभ्यवपात विप्रत्यय अविशेष तथा अनुपाय इनकी उत्पत्ति होती है जैसे छोटे वृक्षको वड़ी वड़ी शाखावाले वृक्ष ढकलेते हैं और उसे वढ़ने नहीं देते हैं वैसेही अहंकारादिक भी वढ़कर पुरुषको ऐसा मोहित करते हैं कि पुरुषको अपना ज्ञान नहीं रहता है ॥ १० ॥

तत्रैवं जातिरूपवित्तबुद्धिशीलविद्याभिजनवयोवीर्य्यप्रभावसम्पन्नोऽहमित्यहङ्कारः ॥ ११ ॥

तहां इस प्रकार जाति रूप धन बुद्धि शील विद्या कुल अवस्था वीर्य तथा प्रभावसे मैं युक्तहूं यह समझना अहंकार है ॥ ११ ॥

यन्मनोवाक्कायकर्म्मनापवर्गायस सङ्गः ॥ १२ ॥

मन वचन तथा शरीर के द्वारा जो कर्म्म मुक्ति की इच्छाके विना किया जाता है उसे संग कहते हैं ॥ १२ ॥

कर्म्मफलमोक्षपुरुषप्रेत्य भावादयः सन्तिवानेतिसंशयः ॥ १३ ॥

कर्म्मफल मोक्ष तथा पुनर्जन्मआदिक हैं अथवा नहीं हैं इस विचार को संदेह कहते हैं ॥ १३ ॥

सर्व्वास्ववस्थास्वनन्योऽहमहंस्रष्टा स्वभावसंसिद्धोऽहमहंशरीरेन्द्रियबुद्धिस्मृतिविशेषराशिरिति ग्रहणमभिसम्प्लवः ॥ १४ ॥

सब अवस्थाओं में हम अनन्य हैं स्रष्टा (उत्पन्नकरनेवाले) हैं स्वभावसिद्ध हैं और शरीर इन्द्रिय बुद्धि तथा स्मृति के समूहरूप हैं ऐसा मानलेनेको अभिसंप्लव कहतेहैं॥ १४॥

मममातृपितृभ्रातृदारापत्यबन्धुमित्रभृत्यगणोगणस्यचाहमित्यभ्यवपातः ॥ १५ ॥

माता पिता भ्राता स्त्री पुत्र कन्या वन्धु मित्र तथा सेवक यह सब मेरे हैं और मैं इनकाहूं इस प्रकार मानलेने को अभ्यवपात कहते हैं ॥ १५ ॥

कार्य्याकार्य्यहिताहितशुभाशुभेषु विपरीताभिनिवेशो विप्रत्ययः ॥ १६ ॥

कार्य्य अकार्य्य हित अहित और शुभ अशुभ इनमें जो विपरीत प्रवृत्ति होती है उसे विप्रत्यय कहते हैं ॥ १६ ॥

ज्ञाज्ञयोः प्रकृतिविकारयोः प्रवृत्तिनिवृत्त्योश्चासामान्यदर्शनं विशेषः ॥ १७ ॥

ज्ञ (ज्ञानी) अज्ञप्रकृति विकार और प्रवृत्ति निवृत्ति इनमें असमानदृष्टिको विशेष कहते हैं ॥ १७ ॥

प्रोक्षणानशनाग्निहोत्रत्रिषवणाभ्युक्षणवाहनयजनयाजनयाचनसलिलहुताशनप्रवेशनादयःसमारम्भाः प्रोच्यन्तेह्यनुपायाः॥ १८॥

प्रोक्षण (यज्ञ पशुका मारना) अनशन (उपवास) अग्निहोत्र त्रिषवण (त्रिकाल स्नान) अभ्युक्षण (मंत्र पढ़कर जल छिड़-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कना) यज्ञकरना यज्ञकराना याच्चा आवाहन और जल तथा अग्निमें प्रवेश करना आदिक जो कार्य्य इनको अनुपाय कहते हैं (यद्यपि यह सब स्वर्गादि के उपाय हैं तथापि मोक्षके लिये निष्प्रयोजन होने के कारण इनको अनुपाय कहते हैं) ॥ १८ ॥

एवमयमधीधृतिस्मृतिरहङ्काराभिनिविष्टः संसक्तः ससंशयोऽभिसंप्लुतबुद्धिरभ्यवपतितोऽन्यथादृष्टिर्विशेषग्राही विमार्ग्गगतिर्निवासवृक्षः सत्त्वशरीरदोषमूलानांमूलं सर्व्वदुःखानांभवति ॥ १९ ॥

इस प्रकार बुद्धि धैर्य्य तथा स्मृति से रहित अहंकार संग संदेह अभिसंप्लव अभ्यवपात विमत्यय अविशेष तथा अनुपायसे युक्त पुरुष मन तथा शरीर के दोषों का निवास वृक्ष और सम्पूर्ण दुःखोंका मूल होजाताहै ॥१९॥

इत्येवमहङ्कारादिभिर्दोषैर्भ्राम्यमाणोनातिवर्त्तते प्रवृत्तिः सामूलमघस्य ॥ २० ॥

इस प्रकार अहंकारादि दोषों से संसार में भ्रमण करायागया पुरुष पापों की मूलरूप प्रवृत्ति को नहीं छोड़ता है ॥ २० ॥

निवृत्तिरपवर्गस्तत्परम्प्रशान्तं तदक्षरंतद्ब्रह्मसमोक्षः । तत्रमुमुक्षूणामुदयनानि व्याख्यास्यामः । तत्र लोकदोषदर्शिनोमुमुक्षोरादितएवाचार्य्याभिगमनं तस्योपदेशानुष्ठानम् ॥ २१ ॥

अपवर्ग परमशांति अक्षर ब्रह्म तथा मोक्ष को निवृत्ति कहते हैं अब यहांपर मुमुक्षुपुरुषों को मोक्षके उपाय प्रसंगसे कहेजाते हैं लोकमें दोषों को देखनेवाला मुमुक्षुपुरुष पहिले ही आचार्य के पास जाय और जो कुछ आचार्य उपदेश करै उसी के अनुकूल आचरण करै ॥ २१ ॥

अग्नेरेवोपचर्य्याधर्म्मशास्त्रानुगमनं तदर्थावबोधस्तेनावष्टम्भः तत्र यथोक्ताःक्रियाः सतामुपासनमसताम्परिवर्ज्जनं नसंगतिर्दुर्ज्जनेनसत्यं सर्व्वभूतहितमपरुषमनतिकाले परीक्ष्यवचनं सर्व्वप्राणिषु आत्मनीवावेक्षासर्व्वासामस्मरणमसङ्कल्पनमप्रार्थना अनभिभाषणञ्च स्त्रीणां सर्व्वपरिग्रहत्यागः कौपीनम्प्रच्छादनार्थं धातुरागनिवसनंकन्थासीवनहेतोः सूचीपिप्पलकंशौचाधानहेतोः जलकुण्डिकादण्डधारणम्भक्ष्यचर्य्यार्थं पात्रम्प्राणधारणार्थमेककालमग्राम्यो यथोपपन्नएवाऽभ्यवहारः । श्रमापनयनार्थं शीर्णशुष्कपर्णतृणास्तरणोपधानं ध्यानहेतोः कायनिबन्धनं वनेषु अनिकेतवासस्तन्द्रानिद्रालस्यादि कर्म्मवर्ज्जनमिन्द्रियार्थेषु अनुरागोपतापनिग्रहः सुप्तस्थितगतप्रेक्षिता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इत्यपरिसंख्येयभेदानांखलुत्रयाणामपिसत्त्वानांभेदैकदेशोव्याख्यातः॥ ६४॥

असंख्य भेदवाले तीनों प्रकार के सत्त्वों (मनों) के भेदका यह अंशमात्र कहा गया है॥ ६४॥

शुद्धस्यसत्त्वस्यसप्तविधोब्रह्मर्षिशक्रवरुणयमकुबेरगन्धर्वसत्त्वानुकारेण। राजसस्यषड्विधोदैत्यराक्षसपिशाचसर्पप्रेतशकुनिसत्त्वानुकारेण। तामसस्यत्रिविधःपशुमत्स्यवनस्पतिसत्त्वानुकारेण। कथञ्चयथासत्त्वमुपचारःस्यादिति। केवलश्चायमुद्देशःयथोद्देशमभिनिर्दिष्टोभवति। गर्भावक्रान्तिसंप्रयुक्तस्यार्थस्यविज्ञानेसामर्थ्यंगर्भकराणाञ्चभावानामनुसमाधिर्विघातश्चविघातकराणांभावानामिति॥ ६५॥

ब्रह्मा ऋषि इन्द्र वरुण यम कुबेर तथा गन्धर्व इनके सत्त्व (मन) की समता से शुद्ध सत्त्व (मन) के सात प्रकार होते हैं दैत्य राक्षस पिशाच सर्प्प प्रेत तथा शकुनि (पक्षी) इनके सत्त्व (मन) की समता से राजस सत्त्व छःप्रकार का होताहै पशु मत्स्य तथा वनस्पति इनके सत्त्व (मन) की समता से तामस सत्त्व (मन) तीन प्रकार का होता है सत्त्व (मन) के अनुसार गर्भिणी का सेवन किस प्रकारहो इसलिये सत्त्वों (मनों) के भेदमात्र सहित कहेगये गर्भोत्पत्तिके विषयमें जो बातें हैं उनके जानने की सामर्थ्य गर्भजनक पदार्थोंका संग्रह और गर्भनाशक पदार्थोंका त्याग होनेके लिये यह सब वर्णन कियागया है॥ ६५॥

तत्रश्लोकाः।

निमित्तमात्माप्रकृतिर्वृद्धिःकुक्षौक्रमेणच। वृद्धिहेतुश्चगर्भस्य पञ्चार्थाःशुभसंज्ञिताः॥ ६६॥

तिसमें यह श्लोक हैं। निमित्त आत्मा प्रकृति क्रमसे कुक्षिमें बढ़ना और वृद्धिका हेतु यह पांच बातें गर्भके लिये शुभ कहीगयी हैं॥ ६६॥

यज्जन्मनिचयोहेतुर्विनाशेविकृतावपि। इमांस्त्रीनशुभान्भावानाहुर्गर्भविघातकान्॥ ६७॥

गर्भके न उत्पन्न होनेमें नष्ट होजानेमें विकारयुक्त होने में जो कारण हैं वही तीन कारण गर्भनाशक अशुभभाव कहे हैं॥ ६७॥

शुभाशुभसमाख्यातानष्टौभावान्भिषक्। सर्वथावेदयःसर्वान्सराज्ञःकर्त्तुमर्हति॥ ६८॥

जो वैद्य शुभ तथा अशुभनामक इन आठों भावों को जानता है वही राजाकी चिकित्सा करनेके योग्यहै॥ ६८॥

अवाप्त्युपायान्गर्भस्यसएवंज्ञातुमर्हति। येचगर्भविघातोक्ताभावास्तांश्चाप्युदारधीः॥ ६९॥

इति महतीगर्भावक्रांतिशारीरंसमाप्तम्॥ ४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वही उदारबुद्धिवाला वैद्य गर्भस्थितिके उपाय तथा गर्भनाशक विषयों को अच्छेप्रकार जानसक्ता है ॥ ६९ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंमहतीगर्भावक्रान्तिनामचतुर्थोध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४ ॥

पांचवांअध्याय ॥

पुरुषविचयः ।

पुरुषोऽयंलोकसम्मितइत्युवाचभगवान्पुनर्वसुरात्रेयः । यावन्तोहिमूर्त्तिमन्तोलोकेभावविशेषास्तावन्तः पुरुषे, यावन्तःपुरुषे तावन्तोलोके ॥ १ ॥

इसके उपरान्त पुरुषविचयनाम शारीराध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि यह पुरुष जगत् के समानहै क्योंकि संसार में जितने मूर्त्तिमान् पदार्थ हैं वह सब पुरुषमें हैं और पुरुषमें जितने मूर्त्तिमान् पदार्थ हैं वह सब संसारमें हैं ॥ १ ॥

इत्येवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच । नैतावता वाक्येनोक्तंवाक्यार्थमवगाहामहे । भगवताबुद्ध्या भूयस्तरमतोऽनुव्याख्यायमानंशुश्रूषामहे ॥ २ ॥

भगवान् आत्रेयजी के यह वचन सुनकर अग्निवेशने कहा कि हे भगवन् इतनाही कहने से आपके कथनका तात्पर्य हमलोग नहीं समझसक्ते हैं इससे अब आपके मुखारविन्द से इसका सब विस्तार सुनना चाहते हैं ॥ २ ॥

इतितमुवाचभगवानात्रेयः । अपरिसंख्येयालोकावयवविशेषाःपुरुषावयवविशेषाअप्यपरिसंख्येयाः । यथायथाप्रधानञ्चतेषांयथास्थूलंभावान्सामान्यमभिप्रेत्योदाहरिष्यामः । तानेकमनानिबोधसम्यगुपवर्ण्यमानानग्निवेश ! षड्धातवःसमुदितालोकइतिशब्दंलभन्ते । तद्यथाः— पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशंब्रह्मचाव्यक्तमित्येतएवचषड्धातवःसमुदिताःपुरुषइतिशब्दंलभन्ते । तस्यपुरुषस्यपृथिवीमूर्त्तिरापःक्लेदस्तेजोऽभिसन्तापोवायुःप्राणोवियच्छिद्राणिब्रह्मान्तरात्मा ॥ ३ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि इस संसार के अंग विशेष असंख्य हैं और पुरुषके भी अंग विशेष असंख्य हैं हे अग्निवेश । इससे कुछ प्रधान स्थूल अंगों को लेकर मैं समता का वर्णन करताहूं तुम सावधान होकर सुनो छः धातुओंके समुदाय को संसार कहते हैं वह छः धातु यह हैं जैसे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश तथा अव्यक्त ब्रह्म और इन्हीं छः धातुओंके समुदाय को पुरुष कहते हैं उस पुरुष की मूर्त्ति पृथ्वी क्लेद जल सन्ताप तेज प्राणवायु छिद्र आकाश और अन्तरात्मा ब्रह्म है ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यथाखलुब्राह्मीविभूतिर्लोकेतथापुरुषेऽप्यान्तरात्मिकीविभूतिर्ब्रह्मणोविभूतिर्लोकेप्रजापतिरन्तरात्मनोविभूतिःपुरुषेसत्त्वम् । यस्त्विन्द्रोलोकेसपुरुषेऽहङ्कारःआदित्यास्तुआदानंरुद्रोरोषःसोमःप्रसादोवसवःसुखमश्विनौकान्तिर्मरुदुत्साहोविश्वेदेवाःसर्वेन्द्रियाणिसर्वेन्द्रियार्थाश्चतमोमोहोज्योतिर्ज्ञानम् । यथालोकस्यस्वर्गादिस्तथापुरुषस्यगर्भाधानंयथाकृतयुगमेवंबाल्यम् । यथात्रेतातथायौवनंयथाद्वापरस्तथास्था[illegible]र्य्ययथाकलिरेवमातुर्य्ययथायुगान्ते[illegible]थामरणमित्येवमनुमानेनानुक्तानामपि लोकपुरुषयोरवयवविशेषाणामग्निवेश ! सामान्यंविद्यात् ॥ ४ ॥

जैसे संसारमें ब्राह्मी विभूति है उसी प्रकार पुरुषमें अन्तरात्मा की विभूति है जैसे संसार में ब्रह्मकी विभूति प्रजापति हैं वैसेही पुरुषमें अन्तरात्मा की विभूति मनहै जैसे संसारमें इन्द्रहै वैसे पुरुषमें अहंकार है जैसे संसारमें सूर्य्य हैं वैसेही पुरुषमें आदान (ग्रहण करना) है जैसे संसारमें रुद्र हैं वैसेही पुरुषमें क्रोधहै जैसे संसारमें चन्द्रमा है वैसेही पुरुषमें प्रसन्नता है जैसे संसारमें वसु हैं वैसेही पुरुष में सुखहै जैसे संसारमें अश्विनीकुमार हैं वैसेही पुरुष में कान्ति है जैसे संसार में मरुत् (वायु) है वैसेही पुरुषमें उत्साह है जैसे संसारमें विश्वेदेवा हैं वैसेही पुरुषमें सम्पूर्ण इन्द्रिय तथा इन्द्रियोंके विषय हैं जैसे संसारमें अन्धकार है वैसेही पुरुषमें मोहहै जैसे संसार में प्रकाश है वैसेही पुरुषमें ज्ञानहै जैसे संसार में स्वर्गादिक हैं वैसेही पुरुषमें गर्भाधान है जैसे संसारमें सतयुग होताहै वैसेही पुरुषकी बाल्यावस्था होती है जैसे संसारमें त्रेतायुग होताहै वैसेही पुरुषकी युवावस्था होतीहै जैसे संसारमें द्वापरयुग होताहै वैसेही पुरुषकी वृद्धावस्था होती है जैसे संसारमें कलियुग होताहै वैसेही पुरुषके रोग होते हैं जैसे संसारमें प्रलय होती है वैसेही पुरुषकी मृत्यु होती है इस प्रकार संसार और पुरुषकी समता है हे अग्निवेश संसार और पुरुषके जिन अंगोंकी समता नहीं कहीगयी है उनकी समता अनुमानसे जानलेनी चाहिये ॥ ४ ॥

इत्येवंवादिनंभगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच । एवमेतत्सर्वमनपवा[illegible] यथोक्तंभगवतालोकपुरुषयोःसाम[illegible]न्यंकिन्तुअस्यसामान्योपदेशस्[illegible] योजनमिति ॥ ५ ॥

इस प्रकार कहतेहुये भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने कहा हे भगवन् आपने जो संसार और पुरुषकी समता कही वह निस्संदेह बहुत ठीकहै परन्तु इस समताके उपदेशका प्रयोजन क्याहै ॥ ५ ॥

भगवानुवाच । कथमग्निवेश ! सर्वलोकमात्मन्यात्मानञ्चसर्वलोकेसमनुपश्यतस्तस्यात्मबुद्धिरुत्पद्यतेइति। सर्वलोकंहिआत्मनिपश्यतोभवतिआत्मैवसुखदुःखयोःकर्त्तानान्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सब प्रकार की प्रवृत्ति दुःखरूप तथा सब का त्याग सुखरूप है यह ज्ञान होना पूर्वोक्त (आचार्य के पास जानाआदि) यह सब मोक्ष का मार्ग है इससे विपरीत आचरण करनेसे संसारमें बन्धन होताहै इस प्रकार मोक्ष के उपाय कहेगये ॥ २२ ॥

भवन्तिचात्र।

एतैरविमलंसत्त्वं शुद्ध्युपायैर्विशुध्यति। मृज्यमानइवादर्शस्तैलचेलकचादिभिः॥ २३ ॥

तहां यह श्लोक हैं जैसे तैल वस्त्र तथा केश आदिके द्वारा निर्मल कियागया दर्पण स्वच्छ होजाते हैं वैसे ही पूर्वोक्त उपायों के द्वारा शुद्ध किया गया मन निर्मल होजाता है ॥ २३ ॥

ग्रहाम्बुदरजोधूमनीहारैरसमावृतम्। यथार्कमण्डलम्भाति भातिसत्त्वंतथामलम्॥ २४ ॥

ग्रह (राहु) मेघ धूलि धूम तथा हिम के द्वारा नहीं आच्छादित सूर्यमण्डल के समान निर्मल सत्त्व (मन) शोभित होता है ॥ २४ ॥

ज्वलत्यात्मनिसंरुद्धं तत्सत्त्वंसंवृतायने। शुद्धःस्थिरःप्रसन्नार्चिर्दीपोदीपाशयेयथा॥ २५ ॥

जैसे दीपाशय (दीपक रखने का निर्वातस्थान) में शुद्ध स्थिर तथा निर्मल ज्योतियुक्त दीपक बलता है उसीप्रकार इन्द्रियों के रुक जानेपर आत्मामें लीन हुआ मन प्रकाशित होता है ॥ २५ ॥

शुद्धसत्त्वस्ययाशुद्धा सत्याबुद्धिःप्रवर्त्तते। ययाभिनत्त्यतिबलंमहामोहमयंतमः॥ २६ ॥

मनके शुद्ध होजानेपर जो शुद्ध सत्यबुद्धि उत्पन्न होती है जिसके द्वारा अत्यन्त बलवान् महामोहमय अन्धकार नष्ट होताहै॥२६॥

सर्वभावस्वभावज्ञोययाभवतिनिस्पृहः। योगंययासाधयतेसांख्यःसम्पद्यतेयया॥ २७ ॥

जिसके द्वारा सब पदार्थों के स्वभाव जाने जाते हैं जिसके द्वारा मनुष्य निस्पृह होजाता है जिसके द्वारा योग तथा सांख्य की सिद्धि होती है ॥ २७ ॥

ययानोपैत्यहङ्कारंनोपास्तेकारणंयया। ययानालम्बतेकिञ्चित्सर्वसंन्यस्यतेयया॥ २८ ॥

जिसके द्वारा पुरुष अहंकार से रहित होजाता है जिसके द्वारा संसार के कारणरूप धर्म्म अधर्म्म का त्याग होजाता है जिसके द्वारा किसी का आश्रय नहीं लेना पड़ता है जिस के द्वारा सब संग्रह का त्याग होजाता है ॥ २८ ॥

यातिब्रह्मययानित्यमजरंशान्तमक्षरम्। विद्यासिद्धिर्मतिर्मेधाप्रज्ञाज्ञानञ्चसामता॥ २९ ॥

और जिसके द्वारा नित्य अजर शान्त तथा अक्षय ब्रह्म की प्राप्ति होती है उसी बुद्धि को विद्या सिद्धि मति मेधा प्रज्ञा तथा ज्ञान कहते हैं ॥ २९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतऊर्द्ध्वंगर्भस्थापनानिव्याख्या स्यामः ॥ ३७ ॥

इसके उपरान्त गर्भके स्थापन करने वाले प्रयोग कहेजाते हैं ॥ ३७ ॥

ऐन्द्रीब्राह्मीशतवीर्य्यासहस्रवीर्य्या अमोघाअव्यथाशिवाबलाअरिष्टा वाट्यपुष्पीविश्वक्सेनकान्ताचआसामोषधीनांशिरसादक्षिणेनपाणिनाधारणमेताभिश्चैवसिद्धस्यपयसः सर्पिषोवापानमेताभिश्चैवपुष्येपुष्ये स्नानंसदाचैताभिःसमालभेत ३८॥

ऐन्द्री ब्राह्मी, शतवीर्य्या (श्वेतदूर्वा) सहस्रवीर्य्या पाढ़र अव्यथा (कपिला) हड़, बरियारा, अरिष्टा वाट्यपुष्पी और विलाईकन्द इन औषधियों को दक्षिण हाथ में अथवा शिरपर धारण करना चाहिये इन्हीं औषधियों के साथ पाक कियागया दूध अथवा घी पीना चाहिये इन्हीं औषधियों के साथ पाक कियेगये जल के द्वारा पुष्यनक्षत्र में स्नान करना चाहिये और इन्हीं औषधियों को सदा पास रखना चाहिये ॥ ३८ ॥

तथासर्वासांजीवनीयोक्तानामोषधीनांसदोपयोगस्तैस्तैरुपयोगविधिभिरितिगर्भस्थापनानिव्याख्यातानिभवन्ति ॥ ३९ ॥

इसी प्रकार जीवनीयगण में कहीहुई औषधियों के द्वारा पूर्वोक्त कार्य सदैव करने चाहिये यहगर्भस्थापनके प्रयोग कहेगये ॥ ३९ ॥

गर्भोपघातकरास्त्विमेभावाभवन्ति तद्यथाउत्कटुकविषमस्थानकठिनासनसेविन्या वातमूत्रपुरीषवेगानुपरुन्धत्यादारुणानुचितव्यायामसेविन्यास्तीक्ष्णोष्णातिमात्रसेविन्या प्रमिताशनसेविन्या गर्भोम्रियतेऽन्तःकुक्षेरकालेवास्रंसतेशोषीवाभवति ॥ ४० ॥

गर्भ के नष्टकरनेवाले यह कारण हैं जैसे उकुड़ूं बैठना विषमता से बैठना कठिन आसनपर बैठना वायु मूत्र तथा मल के वेगको रोकना कठिन तथा अनुचित व्यायाम करना (कसरतकरना) तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओं को बहुत खाना तथा स्वल्प भोजन करना इन कारणों से गर्भ कुक्षि के भीतर नष्ट होजाता है अथवा शुष्क होजाता है या समयके विनाही गिरजाता है ॥ ४० ॥

तथाभिघातप्रपीडनैःश्वभ्रकूपप्रपातदेशावलोकनैर्वाभीक्ष्णंमातुः प्रपतत्यकाले । तथातिमात्रसंक्षोभिभिर्यानैरप्रियातिमात्रश्रवणैर्वा। प्रततोत्तानशायिन्याः पुनर्गर्भस्यनाभ्याश्रयानाडीकण्ठमनुवेष्टयति॥४१॥

इसीप्रकार चोट लगने से दबने से तथा कूप गर्त्त (गड्ढा) और पर्वतों के शिखर आदि के देखने से समय के विनाही गर्भ गिर पड़ता है जिसपर चढ़ने से शरीर बहुत हिलै डुलै ऐसी सवारीपर चढ़ने से तथा बहुत अप्रिय शब्दों के सुनने से गर्भ गिर जाता है जो गर्भिणी स्त्री उतानी होकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोवै तो गर्भ की नाभि में जो नाड़ी लगी है वह गर्भ के गले में लपट जाती है॥ ४१ ॥

विवृतशायिनीनक्तञ्चारिणीचोन्मत्तंजनयत्यपस्मारिणंपुनःकलिकलहाचारशीला। व्यवायशीलाडुर्वपुषमह्रीकंस्त्रैणंवाशोकनित्याभीतमपचितमल्पायुषंवा। अभिध्यात्रीपरोपतापिनमीर्ष्युंस्त्रैणंवा। तेनात्यायासबहुलमतिद्रोहिणमकर्मशीलंवा। अमर्षिणीचण्डमौपाधिकमसूयकंवा। स्वप्ननित्यातन्द्रालुमबुधमल्पाग्निंवा। मद्यनित्यापिपासालुमनवस्थितचित्तंवा। गोधामांसप्रियाशर्करिणमश्मरिणंशनैर्मेहिनंवा। वराहमांसप्रियारक्ताक्षंक्रथनमनतिपरुषरोमाणंवा। मत्स्यमांसनित्याचिरनिमिषं स्तब्धाक्षंवा। मधुरनित्याप्रमेहिणंमूकमग्निस्थूलंवा। अम्लनित्यारक्तपित्तिनंत्वगक्षिरोगिणंवा। लवणनित्याशीघ्रवलीपलितखालित्यरोगिणंवा कटुकनित्यादुर्बलमल्पशुक्रमनपत्यंवा। तिक्तनित्याशोषिणमबलमपचितंवाकषायनित्याश्यावमानाहिनमुदावर्तिनंवा ॥ ४२ ॥

जो गर्भिणी स्त्री मैदान में सोती है अथवा रात्रि में बहुत घूमती है उसकी संतान उन्मत्त होती है जो गर्भिणी स्त्री सदैव कलह किया करती है उसकी संतान के मिरगी रोग होता है जो गर्भिणी स्त्री बहुत मैथुन कराती है उसकी संतान कानी कुबड़ी निर्लज्ज अथवा स्त्रियों के बहुत वशीभूत हाती है जो गर्भिणी स्त्री सदैव शोकयुक्त रहती है उसकी संतान भीत कृश अथवा अल्पायु होती है जो गर्भवती स्त्री पराये धनकी बहुत इच्छा करती है उसकी संतान दूसरों को पीड़ा देनेवाली ईर्षा (डाह) युक्त अथवा स्त्रियों के बहुत वशी भूत होती है जो गर्भिणी स्त्री चोरी करती है उसकी संतान स्वल्पश्रम में ही थकने वाली द्रोही अथवा कुत्सित कर्म्म करनेवाली होती है जो गर्भिणी स्त्री बहुत क्रोध किया करतीहै उसकी संतान क्रोधी उपाधी अथवा गुणों में दोष लगानेवाली होती है जो गर्भिणी स्त्री बहुत सोती है उस की संतान तन्द्रायुक्त मूर्ख अथवा मंदाग्नियुक्त होती है जो स्त्री बहुत मद्य पीती है उसकी संतान बहुत तृषायुक्त अथवा चंचलचित्त होती है जो गर्भिणी स्त्री .गोहका मांस खाती है उसकी संतान शर्करा प्रमेह पथरी अथवा शनैः प्रमेहयुक्त होती है जो गर्भिणी स्त्री शूकर का मांस खाती है उसकी संतान रक्त नेत्र अथवा कर्कश रोमयुक्त होती है जो गर्भिणी स्त्री बहुत मछली खाती है उस की संतान बहुत देर में पलकबन्द करती है अथवा उसके नेत्र जकड़े हुये से रहते हैं जो गर्भिणी स्त्री सदैव मधुर वस्तु खाती है उस की संतान प्रमेही मूक अथवा बहुत स्थूल होती है जो गर्भिणी स्त्री सदैव खट्टी वस्तु खाती है उसकी संतान प्रमेहरोग चर्म्मरोग अथवा नेत्ररोगोंसे युक्त होतीहै जो गर्भिणी स्त्री सदैव नमकीन वस्तु खाती है उसकी सं-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तान थोड़ीही अवस्थामें झुर्री गंजापन बालों का श्वेत होना इन रोगोंसे युक्त होती है जो गर्भिणी स्त्री सदैव कटुवस्तु खाती है उसकी संतान दुर्वल स्वल्प वीर्य्य युक्त अथवा अनपत्य (जिसके संतान न हो) होती है जो गर्भिणी स्त्री सदैव तिक्त वस्तु खाती है उस की संतान राजयक्ष्मा रोग से युक्त दुर्वल अथवा कृश होती है और जो गर्भिणी स्त्री सदैव कषैली वस्तु खाती है उसकी संतान कपिश (भूरा) वर्ण युक्त आनाह रोगयुक्त अथवा उदावर्त्त रोगयुक्त होती है ॥ ४२ ॥

यद्यच्चयस्ययस्यव्याधेर्निदानमुक्तं तत्तदासेवमानान्तर्वत्नीतद्विकारबहुलमपत्यंजनयति ॥ ४३ ॥

जिस जिस रोगका जो जो निदान कहा गया है गर्भिणी स्त्री यदि उस उस निदान का सेवन करै तो उसकी संतान उसी उसी रोग से युक्त होती है ॥ ४३ ॥

पितृजास्तुशुक्रदोषामातृजैरपचारैर्व्याख्याताइतिगर्भोपघातकराभावा व्याख्याताः ॥ ४४ ॥

जैसे माता के अपचार (बदपरहेजी) कहेगये वैसेही पुरुषके वीर्य्य दोष जानने चाहिये इस प्रकार गर्भके नष्ट करनेवाले कारण कहेगये ॥ ४४ ॥

तस्मादहितानाहारविहारान्प्रजासम्पदमिच्छन्तीस्त्रीविशेषेणवर्जयेत्साध्याचाराचात्मानमुपचरेद्धिताभ्यामाहारविहाराभ्याम् ॥ ४५ ॥

इससे गर्भवती स्त्री श्रेष्ठ संतान होने की इच्छा करके अहित आहार विहारों का विशेष करके त्यागकरै श्रेष्ठ आचरण करै और हित आहार विहार करै ॥ ४५ ॥

व्याधींश्चास्यामृदुमधुरशिशिरसुखसुकुमारप्रायैरौषधाहारोपचारैरुपचरेत् । नचास्यावमनविरेचनशिरोविरेचनानिप्रयोजयेन्नरक्तमवसेचयेत् । सर्वकालञ्चनास्थापनमनुवासनंवाकुर्य्यादन्यत्रात्ययिकाद्व्याधेः। अष्टमंमाससमुपादायवमनादिसाध्येषुपुनर्विकारेषुआत्ययिकेषुमृद्वभिर्वमनादिभिर्वोपचारःस्यात् ॥४६॥

गर्भिणी स्त्री के यदि कोई रोग होवै तो मृदु मधुर शीतल सुखदायक तथा सुकुमार औषध आहार तथा उपचार के द्वारा चिकित्सा करै गर्भिणी को बमन (कै) विरेचन (जुल्लाब) शिरोविरेचन (नाससूंघना) रक्तावसेचन (फस्तखुलाना) आस्थापन (एक तरहका अमल) तथा अनुवासन (एकतरह का अमल) यह कार्य्य यदि कोई कठिन मारक रोग न होय तो कदापि नहीं उचित हैं अष्टम मासमें यदि बमनादिसेही शान्त होने के योग्य कोई कठिन मारक रोग होय तो मृदु (बहुतनहीं व्याकुल करनेवाले) बमनादि के द्वारा अथवा उसीके समान उपचार के द्वारा चिकित्सा करै ॥ ४६ ॥

पूर्णमिवतैलपात्रमसंक्षोभ्याऽन्तर्वत्नीभवत्युपचर्य्या ॥ ४७ ॥

तैलसे भरेहुये पात्र के समान गर्भिणी स्त्री

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को क्षोभित (व्याकुल अथवा हिलाना डुलाना) न करके चिकित्साकरै ॥ ४७ ॥

साचेदपचाराद्द्वयोस्त्रिषुमासेषुपुष्पं पश्येन्नास्यागर्भःस्थास्यतीतिविद्यात्। अजातसाराहितस्मिन्कालेभवन्तिगर्भाः ॥ ४८ ॥

जो गर्भिणी स्त्री के द्वितीय अथवा तृतीय मासमें अपचार(बदपरहेजी)से रज बहने लगै तो जानलेना चाहिये कि इसका गर्भ ठहरैगा नहीं क्योंकि उस समयमें गर्भोंका कोई स्थिर अंश नहीं उत्पन्न होता है ॥ ४८ ॥

साचेच्चतुष्प्रभृतिषुमासेषुक्रोधशोकासूयेर्ष्याभयत्रासव्यवायव्यायामसंक्षोभसन्धारणविषमाशनशयनस्थानक्षुत्पिपासाद्यतियोगात्कदाहाराद्वापुष्पंपश्येत्तस्यागर्भस्थापनविधिमुपदेक्ष्यामः ॥ ४९ ॥

जिस गर्भिणी स्त्री के चौथे पाँचवें आदि महीने में क्रोध शोक असूया (गुणोंमें दोष लगाना) ईर्षा (डाह) भय त्रास मैथुन व्यायाम संक्षोभ (हिलना डुलना) मल मूत्रादि वेगोंका रोकना विषमता से बैठना विषमता से सोना विषमतासे भोजन करना क्षुधा तथा तृषाआदि की अधिकता से अथवा कुत्सित भोजन से रज बहनेलगै उसके गर्भ के स्थित रखनेकी विधि कहीजाती है ॥४९॥

पुष्पदर्शनादेवैनांब्रूयाच्छयनंतावन्मृदुसुखशिशिरास्तरणसंस्तीर्णमीषदवनतशिरस्कंप्रतिपद्यस्वेति। ततोयष्टिमधुकसर्पिर्भ्यांपरमशिशिरवारिणिसंस्थिताभ्यांपिचुमाप्लाव्योपस्थसमीपेस्थापयेत्। तस्यास्तथा शतधौतसहस्रधौताभ्यांसर्पिर्भ्यामधोनाभेःसर्वतःप्रदिह्यात्। गव्येनचैनांपयसासुशीतेनमधुकाम्बुनावान्यग्रोधादिकषायेणवापरिषेचयेदधोनाभेः। उदकंवासुशीतमवगाहयेत्क्षीरिणांकषायद्रुमाणाञ्चस्वरसपरिपीतानिचेलानिग्राहयेत्। न्यग्रोधादिसिद्धयोर्वाक्षीरसर्पिषोःपिचुंग्राहयेदतश्चैवाक्षमात्रंप्राशयेत्प्राशयेद्वाकेवलञ्चक्षीरसर्पिः॥ ५० ॥

चतुर्थआदि मासों में रज बहतेही स्त्री से कहै कि कोमल सुखदायक तथा शीतल विछौने बिछवा कर शय्यापर शयन करौ और शय्या शिरकी ओर कछु नीची रक्खो तदनन्तर अत्यन्त शीतल जल में घी तथा मुलेहठी मिलाकर उसमें रुई बोरकर उस स्त्री की योनिमें रखवावै सौबार अथवा हजारबार धोयेहुवे घीका लेप उसकी नाभि के नीचेकरवावे गौका शीतल दूध मुलहठी का शीतल काढ़ा अथवा बरगद आदिगणका काढ़ा उसकी नाभि के नीचे छिड़कै अथवा शीतल जल में उसे स्नान करावावे दूधवाले वृक्षों के तथा पूर्वोक्त कषाय-वृक्षोंके रसमें रुई भिगवाकर उसकी योनिमें रखवावे अथवा बरगदआदि गणके काढ़ेके साथ पाक कियेगये घी तथा दूधमें रुई भिगवाकर उसकी योनि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में रखवावे और वही घी तथा दूध तोले तोले भर उसको पिलावे अथवा केवल सामान्य घी तथा दूध पिलावे ॥ ५० ॥

पद्मोत्पलकुमुदकिञ्जल्कांश्चास्यैसमधुशर्करँल्लेहार्थंदद्यात्। शृङ्गाटकपुष्करबीजकशेरुकान्भक्षणार्थम्। गन्धप्रियंग्वसितोत्पलशालूकोदुम्बरशलाटुन्यग्रोधशुङ्गानिवापाययेदेनामाजेनपयसा ॥ ५१ ॥

पद्म उत्पल तथा कोकाबेली की केशर शहद तथा शक्कर में मिलाकर उसे चटावे सिंहाड़े कमलगट्टे तथा कशेरू उसको खाने के लिये दे गन्ध प्रियंगु नीलकमल कमल की जड़ गूलर का कच्चा फल तथा बरगद की शुंग बकरीके दूधमें मिलाकर उसे पिलावे ॥ ५१ ॥

पयसाचैनांबलातिबलाशालियष्टिकेक्षुमूलकाकोलीशृतेनसमधुशर्करंरक्तशालीनामोदनम्मृदुसुरभिशीतंभोजयेत्। लावकपिञ्जलकुरङ्गशम्बरशशहरिणैणकालपुच्छकरसेनवाघृतसलिलसिद्धेनसुखशिशिरोपवातदेशस्थांभोजयेत् ॥ ५२ ॥

बरियारा ककहिया शालिधान्य सांठी ईख की जड़ तथा काकोली इनकेसाथ पाक किये गये दूधमें शहद शक्कर तथा सुगन्धित लालधानोंका शीतल भात मिलाकर उसे खिलावे लवा कपिञ्जल (पक्षीविशेष) मृग शम्बर (मृगविशेष) खरगोश हिरन एण (मृगविशेष) तथा कालपुच्छक (मृगविशेष) इनके मांस को घी तथा जल के साथ पाक करके उस मांसके शीतल रसके साथ उसको शीतल तथा वायुयुक्त स्थानमें बिठालकर भोजन करावे ॥ ५२ ॥

तथाक्रोधशोकायासव्यवायव्यायामतश्चाभिरक्षेत्सौम्याभिश्चैनांकथाभिर्मनोऽनुकूलाभिरुपासीत्तथास्यागर्भस्तिष्ठति ॥ ५३ ॥

और क्रोध शोक परिश्रम मैथुन तथा व्यायाम उसको न करनेदे और मनोहर तथा सौम्य कथा उसको सुनावे इन उपायोंसे उसका गर्भ स्थित रहता है ॥ ५३ ॥

यस्याःपुनरामान्वयात्पुष्पदर्शनंस्यात्प्रायस्तस्यास्तद्गर्भबाधकंभवतिविरुद्धोपक्रमत्वात्तयोः ॥ ५४ ॥

जिस गर्भिणी स्त्री के आमके सम्बन्ध से रज बहता है प्रायः उसके गर्भ में बाधाहोती है क्योंकि इन दोनोंकी चिकित्साका क्रम परस्पर विरुद्ध है ॥ ५४ ॥

यस्याःपुनरुष्णतीक्ष्णोपयोगाद्गर्भिण्यामहतिसंजातसारेगर्भेपुष्पदर्शनंस्यादन्योवायोनिप्रस्रावः। तस्यागर्भोवृद्धिंनप्राप्नोतिनिःस्रुतत्वात्सकालान्तरमवतिष्ठतेऽतिमात्रंतमुपविष्टकमित्याचक्षतेकेचित् ॥ ५५ ॥

गर्भके स्थिरअंश उत्पन्न होजानेपर जिस गर्भिणी स्त्री के तीक्ष्ण वस्तु भोजन करने के कारण रज बहने लगता है अथवा अन्यकि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सी प्रकारका स्राव होने लगताहै उसका गर्भ बहने के कारण बढ़तानहीं है और बहुतकालतक उदरमेंही रहता है कोई कोई लोग उस गर्भको उपविष्टक कहते हैं ॥ ५५ ॥

उपवासव्रतकर्मपरायाःपुनःकदाहारायाःस्नेहद्वेषिण्यावातप्रकोपनोक्तान्यासेवमानायागर्भोनवृद्धिंप्राप्नोतिपरिशुष्कत्वात् । सचापिकालान्तरमवतिष्ठतेऽतिमात्रंस्पन्दनश्चभवति। तन्तुनागोदरमित्याचक्षते ॥ ५६ ॥

जो गर्भिणी स्त्री बहुत उपवास तथा व्रत करती है कुत्सित भोजन करती है घृत आदिक स्नेहसे द्वेष करतीहै और वायु को कुपित करनेवाले पदार्थों का अधिक सेवन करती है उसका गर्भ सूख जाने के कारण बढ़ता नहीं है और पेट में बहुत कालतक रहता है और उदर में बहुत घूमता रहता है इस गर्भ को नागोदर कहते हैं ॥ ५६ ॥

नार्य्योस्तयोरुभयोरपिचिकित्सितविशेषमुपदेक्ष्यामः ॥ ५७ ॥

उपविष्टक तथा नागोदर दोनों की चिकित्सा कही जाती है ॥ ५७ ॥

भौतिकजीवनीयबृंहणीयमधुरवातहरसिद्धानांसर्पिषामुपयोगः। नागोदरेतुयोनिव्यापन्निर्दिष्टंपयसामामगर्भाणाञ्चगर्भवृद्धिकराणाञ्चसम्भोजनमेतैरेवसिद्धैश्चघृतादिभिःसुबुभुक्षायामभीक्ष्णंयानवाहनापमार्जनावजृम्भणैरुपपादनमिति॥५८॥

जिस स्त्रीका गर्भ उपविष्टक होगया हो उसे भौतिकगण जीवनीयगण बृंहणीयगण मधुरगण तथा वातनाशकगण की औषधियों के साथ पाक कियागया घी पिलाना चाहिये जिसगर्भिणी स्त्री का गर्भ नागोदर होगया हो उस स्त्रीकी चिकित्सा योनिरोगों में जैसी कही गई है वैसीही करनीचाहिये और गर्भ की वृद्धि के निमित्त तथा आमगर्भ की पुष्टता के निमित्त जिसप्रकार का दूध पीनेको लिखा है पिलाना चाहिये और गर्भ की वृद्धि करने वाली जो वस्तु हैं उनके साथ पाक कियेगये घृतके साथ क्षुधा के समय भोजन कराना चाहिये और रथ आदिक सवारी पर चढ़ाना चाहिये भूला आदिपर चढ़ाना चाहिये और स्नान तथा जृंभण कराना चाहिये ॥ ५८ ॥

यस्याःपुनर्गर्भःप्रसुप्तोनस्पन्दतेतांश्येनमत्स्यगवयतित्तिरताम्रचूडशिखिनामन्यतमस्सर्पिष्मतारसेनमाषयूषेणवाप्रभूतसर्पिषामूलकयूषेणवारक्तशालीनामोदनंमृदुमधुरशीतंभोजयेत्। तैलाभ्यंगेनास्याश्चाभीक्ष्णमुदरत्रंक्षणोरुकटीपार्श्वपृष्ठप्रदेशानीषदुष्णेनोपाचरेत्॥५९॥

जिस गर्भिणी स्त्री का गर्भ हिलता डुलता न हो उसको बाज मछली गवय (गौके समान पशु विशेष) तीतर मुर्गा तथा मोर इनके मांस के घृतयुक्त रसके साथ उर्द की दालि के साथ अथवा बहुत घृतयुक्त तथा मूली के यूषके साथ लाल धानों के चावलों का शी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तलभात खवावे और उसके उदर जंघाओं की संधि जंघा कटि पशुली तथा पीठ में कुछ उष्ण तेल मलवावे ॥ ५९ ॥

यस्याःपुनरुदावर्त्तविबन्धःस्यादष्टमेमासेनचानुवासनसाध्यं मन्यते तस्यास्तद्विकारप्रशमनमुपकल्पयेन्निरूहमुदावर्त्तोह्युपेक्षितःसगर्भंसगर्भांगर्भिणींवानिपातयेत् ॥ ६० ॥

जिस गर्भिणी स्त्री के अष्टममास में उदावर्त्त से विबन्ध (मल मूत्रका रुक जाना) हो जाय और अनुवासन (एक तरह का अमल) से शान्त न होसक्ताहो तो उसको निरूहवस्ति (एक तरहका अमल) देनी चाहिये क्योंकि उदावर्त्त की चिकित्सा न करने से गर्भ का अथवा गर्भ सहित गर्भिणी का नाश हो जाताहै ॥ ६० ॥

तत्रवीरणशालिषष्टिककुशकाशेक्षुबालिकावेतसपरिव्याधमूलानांभूतीकानन्ताकाश्मर्य्यपरूषकमधुकमृद्वीकानाञ्चपयसार्द्धोदकेनोद्गमय्यरसंपियालबिभीतकमज्जातिलकल्कसम्प्रयुक्तमीषल्लवणमनत्युष्णंनिरूहंदद्यात् ॥ ६१ ॥

इस रोग में गांडर शालिधान सांठी कुश काश तालमखाना वेत तथा जलवेत इनकी जड़ और रोहिस जवासा खँभारी फालसा मुलहठी तथा मुनक्का इनसब को अर्द्धोदक (जिसमें आधापानी मिलाहो) दूधमें पीसकर रस निकाल के उस रस में चिरौंजी बहेड़ेकी मींगी तथा तिलकी चटनी मिलाकर कुछ लवण से युक्त करके कुछ उष्ण निरूह वस्ति दे ॥ ६१ ॥

व्यपगतविबन्धाञ्चैनांसुखसलिलपरिषिक्तांगींस्थैर्य्यकरमविदाहिनमाहारंभुक्तवतींसायंमधुरकसिद्धेनतैलेनानुवासयेन्न्युब्जान्त्वेनामास्थापनानुवासनाभ्यासमुपचरेत् ॥ ६२ ॥

तदनन्तर विबन्ध के दूर होजाने पर उसी स्त्री के अंगोंपर कुछ उष्ण जल छिड़ककर और गर्भ को स्थित करनेवाला विदाह रहित भोजन कराके सायँकाल के समय मधुरगण के साथ पाक किये गये तेल के द्वारा अनुवासन वस्ति दे स्त्री को उकडूं लिटाकर आस्थापन तथा अनुवासन वस्ति देनी चाहिये ॥ ६२ ॥

यस्याःपुनरतिमात्रदोषोपचयाद्वातीक्ष्णोष्णातिमात्रसेवनाद्वातमूत्रपुरीषवेगधारणैर्वाविषमाशनशयनस्थानसंपीडनैर्वाक्रोधशोकेर्ष्यासूयाभयत्रासादिभिर्वापरैःकर्मभिरन्तःकुक्षौगर्भोम्रियते। तस्याःस्तिमितस्तब्धमुदरमाततंशीतमाश्मान्तर्गतमिवभवत्यस्पन्दनोगर्भःशूलमधिकमुपजायतेनचाव्यःप्रादुर्भवन्तियोनिर्नप्रस्नवत्यक्षिणीचास्याःस्रस्तेभवतस्ताम्यतिव्यथतेभ्रमतेश्वसित्यरतिबहुलाचभवतिनवास्यवेगप्रादुर्भावोवायथावदुपलभ्यतेइत्येवंलक्षणांस्त्रियंमृतगर्भयमितिविद्यात् ॥ ६३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोषों की बहुत वृद्धिसे अथवा बहुत तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओं के बहुत भोजन से अथवा वायु मूत्र तथा मलके वेगको रोकने से विषमभोजन से विषमशयन से विषमस्थिति से दबनेसे अथवा क्रोध शोक ईर्षा असूया (गुणों में दोषलगाना) भय तथा त्रास आदिकों से अथवा अन्य किसी प्रकार के कार्य्य से जिस स्त्रीका गर्भ कुक्षिमें मरजाता है उस का उदर गीले कपड़ेसे ढकाहुआ सा जकड़ाहुआ सा फूला शीतल तथा पत्थरों से पूर्णसा होजाता है और चलायमान नहीं होता उदर में बहुत पीड़ा होती है प्रसव के समयकीसी पीड़ा नहीं होती योनिसे किसी प्रकार का स्राव नहीं होता नेत्र शिथिल होजाते हैं और गर्भिणी म्लान व्यथित भ्रमयुक्त तथा बेचैन होकर बहुत श्वास लेती है और मल मूत्रादिका वेग यथावत् नहीं होता जिस स्त्री के ऐसे लक्षण हों उसके गर्भ को मराहुआ जानना चाहिये ॥ ६३ ॥

तस्यगर्भशल्यस्यजरायुप्रपातनंकर्मसंशमनमित्याहुरेके। मन्त्रादिकमथर्ववेदविहितमित्येके। परिदृष्टकर्मणाशल्यहर्त्राहरणमित्येके॥६४॥

किसी किसी का यह मत है कि उस गर्भ की झोरी को गिरा देने से शान्ति होती है किसी किसी का यह मत है कि अथर्ववेदोक्त मंत्रादिकों के द्वारा गर्भ गिरकर पीड़ा की शान्ति होजाती है और किसी किसी का यह मत है कि दृष्टकर्म्मा (तजुरबेकार) शस्त्रकर्म के जाननेवाले वैद्य के द्वारा शस्त्र से वह गर्भ निकलवाडालना चाहिये ॥ ६४ ॥

व्यपगतगर्भशल्यान्तुस्त्रियमामगर्भांसुराशीध्वरिष्टमधुमदिरासवानामन्यतममग्रेसामर्थ्यतःपाययेत्गर्भकोष्ठविशुद्ध्यर्थमर्त्तिविस्मरणार्थंप्रहर्षणार्थञ्च ॥ ६५ ॥

गर्भ के निकलजाने पर गर्भ कोष्ठ को शुद्धकरने के लिये पीड़ाको भुलाने के लिये तथा प्रसन्नता के लिये उस स्त्री को शक्ति के अनुसार सुरा सीधु (मद्यविशेष) अरिष्ट(मद्यविशेष) मधु मदिरा तथा आसव इनमेंसे कोई पहिले पिलावे ॥ ६५ ॥

अतःपरंबृंहणैर्बलानुरक्षिभिःस्नेहसम्प्रयुक्तैर्यवाग्वादिभिर्विलेप्यादिभिर्वातत्कालयोगिभिराहारैरुपाचरेद्दोषधातुक्लेदविशोषणमात्रंतत्कालम् ॥ ६६ ॥

तदनन्तर दोष तथा धातुओंके क्लेदके सूख जानेपर्य्यन्त धातुवर्द्धक बलकारक तथा स्नेहयुक्त यवागूआदि अथवा विलेपी आदि तिसकाल के योग्य भोजन उस स्त्री को करावे ॥ ६६ ॥

अतःपरं स्नेहपानैर्वस्तिभिराहारविधिभिश्चदीपनीयजीवनीयबृंहणीयमधुरवातहरसमाख्यातैरुपचारैरुपाचरेत् ॥ ६७ ॥

तदनन्तर स्नेहपान वस्तिक्रिया (अमल देना) और जीवनीय बृंहणीय दीपन मधुर तथा वातनाशक उपचारों के द्वारा चिकित्सा करै ॥ ६७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिपक्वगर्भशल्यायाःपुनर्विमुक्तग र्भशल्यायास्तदहरेवस्नेहोपचारः स्यात् ॥ ६८ ॥

जिस स्त्री का गर्भ परिपूर्ण होकर मरै उस के गर्भ को निकलवाकर उसीदिन स्नेहपान करावे ॥ ६८ ॥

परमतोनिर्विकारमाप्यायमानस्यग र्भस्यमासेमासेकर्मोपदेक्ष्यामः६६॥

इसके उपरान्त निर्विकार होके गर्भ के बढ़ने के लिये महीने महीनेमें जो कृत्य करनी चाहिये वह कही जाती हैं ॥ ६९ ॥

प्रथमेमासेशङ्किताचेद्गर्भमापन्नाक्षी रमनुपस्कृतंमात्रावच्छीतंकालेपि बेत्सात्म्यञ्चभोजनंसायंप्रातश्चभुञ्जी त॥ ७० ॥

पहिले महीने में जो गर्भस्थिति होने का संदेह हो तो गर्भिणी किसी औषध के साथ नहीं पाक किया गया शीतल दूध मात्रा के अनुसार समयपर पिये और सायंकाल तथा प्रातःकाल सात्म्य भोजन करै ॥ ७० ॥

द्वितीयेमासेक्षीरमेवचमधुरौषधसि द्धम् । तृतीयेमासेक्षीरंमधुसर्पि र्भ्यामुपसंसृज्य । चतुर्थेमासेतुक्षीर नवनीतमक्षमात्रमश्नीयात् । पञ्च मेमासेक्षीरसर्पिः । षष्ठेमासेक्षीर सर्पिर्मधुरौषधसिद्धंतदेवसप्तमेमा से ॥ ७१

दूसरे महीने में मधुर औषधियों के साथ पाक किया हुआ दूधपीवै तीसरे महीने में शहद तथा घी मिलाकर दूधपीवे चौथे महीने में दूधसे निकला हुआ मक्खन तोले भर खाय पांचवें महीने में दूध घी मिलाकर पिये और छठे तथा सातवें महीने में मधुर औषधियोंके साथ पाक कियाहुआ घी तथा दूध पिये ॥ ७१ ॥

तत्रगर्भस्यकेशाजायमानामातुर्वि दाहंजनयन्तीतिस्त्रियोभाषन्ते त न्नेतिभगवानात्रेयः । किन्तुगर्भो त्पीडनाद्वातपित्तश्लेष्माणउरःप्रा प्यविदहन्तिततःकण्डूरुपजायतेक ण्डूमूलाचकिक्काशावाप्तिर्भवति त त्रकोलोदकेननवनीतस्यमधुरौषध सिद्धस्यपाणितलमात्रंकालेऽस्यैद द्यात् । चन्दनमृणालकल्कैश्चा स्याःस्तनोदरंविमृद्नीयात । शि रीषधातकीसर्षपमधुकचूर्णैःकुटजा र्जकबीजमुस्तहरिद्राकल्कैर्वानिम्ब कोलसुरसमञ्जिष्ठाकल्कैर्वा । पृष द्धरिणशशरुधिरयुतयात्रिफलया वाकरवीरकपत्रसिद्धेनवा तैलेना भ्यङ्गः । परिषेकःपुनर्मालतीमधु कसिद्धेनाम्भसाजातकण्डूयाचक ण्डूयनं वर्जयेत्त्वग्भेदनवैरूप्यपरि हारार्थमशक्यायान्तुकण्ड्वासुन्म र्दनोद्धर्षणाभ्यांपरिहारःस्यात् । म धुरमाहारजातंवातहरमल्पमल्पस्ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हलवणमल्पोदकानुपानंचभुञ्जी
त ॥ ७२ ॥

स्त्रियां कहती हैं कि सातवें महीने में गर्भ के केश उत्पन्न होकर माता के उदर में दाह उत्पन्न करते हैं परन्तु भगवान् आत्रेय जी कहते हैं कि यह ठीक नहीं है उनका मत यह है कि गर्भ से दबे हुये ,वात पित्त कफ हृदय में प्राप्त होकर विदाह को उत्पन्न करते हैं विदाहसे खुजली उत्पन्न होतीहै और खुजली से त्वचा फटने लगती है ऐसी दशा में मधुर औषधियों के साथ पाक किये गये मक्खन को बेरके काढ़े में मिलाकर गर्भिणी को समयपर अंजलीमात्र पिलावे चन्दन तथा कमल की डंडी का कल्क (चटनी) गर्भिणी स्त्री के स्तनों के बीच में मलै अथवा सिरस धवई सरसों तथा मुलहठी का चूर्ण अथवा कुरैया उजली बवई के बीज मोथा तथा हल्दी का कल्क (चटनी) अथवा नींब बेर रासना तथा मजीठ का कल्क अथवा पृषत्हरिण (मृगविशेष) तथा खरगोश के रुधिर के साथ पिसीहुई त्रिफला अथवा कनेर के पत्तों से सिद्ध कियेहुये तेल से मालिश करै और मालती व मुलेठी के द्वारा सिद्ध कियाहुआ जल छिड़के जो खुजली होय तो गर्भिणी को खुजलाने न दे क्योंकि खुजलाने से त्वचा फटजाती है और जो असह्य खुजली हो तो मालिश करके अथवा घर्षण करके खुजली को मिटावै और उसको वातनाशक मधुर भोजन करावै भोजन में लवण तथा स्नेह स्वल्प देवे और भोजन के उपरान्त जल बहुत ही कमपीने देवै ॥ ७२ ॥

अष्टमेतुमासेक्षीरयवागूंसर्पिष्मतीं कालेकालेपिबेत् । तन्नेतिभद्रकाप्यः, पैङ्गल्यावाधोह्यस्यागर्भमागच्छेदिति । अस्त्वत्रपैङ्गल्यावाध इत्याहभगवान्पुनर्वसुरात्रेयोनह्येतदकार्य्यंएवंकुर्वतीह्यारोग्यबलवर्ण स्वरसंहननसम्पदुपेतंज्ञातीनामपि श्रेष्ठमपत्यंजनयति ॥ ७३ ॥

अष्टममास में गर्भिणी को दूध में पाक कीगई यवागू में घी मिलाकर समय समय पर पिलावे भद्रकाप्य ऋषिका यह मत है कि अष्टममास में दूधकी यवागू नहीं पिलानी चाहिये क्योंकि इस से गर्भस्थ जीव पिंगलवर्ण होजाता है परन्तु भगवान् आत्रेय जी कहतेहैं कि पिंगलवर्ण हो तो हो तथापि दूधकी यवागू अवश्य पिलानी चाहिये क्योंकि अष्टममास में दूधकी यवागू पीने से आरोग्य बल वर्ण स्वर तथा संहनन (शरीर की गठन) की उत्तमतासे युक्त और ज्ञातिमें श्रेष्ठ संतान उत्पन्न होती है ॥ ७३ ॥

नवमेतुखल्वेनां मासेमधुरौषधसिद्धेनतैलेनानुवासयेत्।अतश्चास्यास्तैलंपिचुमिश्रंयोनौप्रणयेद्गर्भस्थानमार्गस्नेहनार्थम् ॥ ७४ ॥

नवें महीने में गर्भिणी को मधुरगणकी औषधियों के साथ पाक किये गये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति (एकतरहका अमल) दे तदनन्तर गर्भ का मार्ग चिकना करने के लिये तेल में रुई बोरकर उस की योनि में रक्खे ॥ ७४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदिदंकर्मप्रथममासमुपादायोपदिष्टमानवमान्मासात् । तेनगर्भिण्या गर्भसमयेगर्भधारणेकुक्षिकटीपार्श्वपृष्ठंमृदुभवतिवातश्चानुलोमःसम्पद्यतेमूत्रपुरीषेचप्रकृतिभूतेसुखेनमार्गमनुपद्येतचर्मनखानिचमार्दवमुपयान्तिबलवर्णौचोपचीयेतेपुत्रंचेष्टसम्पदुपेतंसुखिनंसुखेनैषाकालेनप्रजायतइति ॥ ७५ ॥

प्रथममास से नवममासपर्य्यन्त जो गर्भिणी के कर्म्म कहे गये उन के द्वारा गर्भ धारण करने के समय में गर्भिणी की कुक्षि कटि पसुली तथा पीठ कोमल होजाती है वायु अनुलोम (मार्गके अनुसार) होजाती है मूत्र तथा मल प्रकृतिस्थ होकर सुखपूर्वक अपने मार्ग में आजाते हैं त्वचा तथा नखों में कोमलता होजाती है बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है और उचित समयपर सुखपूर्वक श्रेष्ठ संतान उत्पन्न होती है ॥ ७५ ॥

प्राक्चैवास्यानवमान्मासात्सूतिकागारंकारयेदपहृतास्थिशर्कराकपालेदेशेप्रशस्तरूपरसगन्धायांभूमौप्राग्द्वारमुदग्द्वारंवा ॥ ७६ ॥

नवममासके पहिले ही श्रेष्ठ रूप रस तथा गंधयुक्त पृथ्वी में सूतिकागृह (सौरि) बनवावे उसमें से धूलि कंकड़ तथा खपड़ा साफ करवाडाले और सूतिकागृह का द्वार पूर्व की ओर अथवा उत्तर की ओर रक्खे ॥ ७६ ॥

तत्रबैल्वानांकाष्ठानांतिन्दुकैंगुदानांभल्लातकानांवारुणानांखदिराणांवा यानिचान्यान्यपिब्राह्मणाःशंसेयुरथर्ववेदविदस्तद्वसनालेपनाच्छादनापिधानसम्पदुपेतंवास्तुविद्यात् । हृदययोगेनाग्निसलिलोलूखलवर्चःस्थानस्नानभूमिमहानसमृतुसुखञ्च ॥ ७७ ॥

उस स्थानके किवाड़े आदिक बेल तेंदू गोंदनी भिलावां वरुण तथा खदिर अथवा अन्य जो वृक्ष अथर्ववेद के जाननेवाले ब्राह्मण बतावें उनके द्वारा वस्त्र लेपन आच्छादन पिधान सम्पदाओं से युक्त बनवाने चाहिये और विचारपूर्वक अग्निका स्थान जल का स्थान उलूखल (ऊखली) का स्थान मलत्याग करनेका स्थान स्नानस्थान तथा रसोईका स्थान ऋतुके अनुसार बनवाने चाहिये ॥ ७७ ॥

तत्रसर्पिस्तैलमधुसैन्धवसौवर्चलकाललवणविडङ्गगुडकुष्ठकिलिमनागर–पिप्पलीमूल–हस्तिपिप्पलीमण्डूकपर्ण्यैलालाङ्गलीवचाचव्य–चित्रक–चिरबिल्वहिंगुसर्षपलशुनकणकणिकानीपातसीवल्वजभूर्जाःकुलत्थमैरेयसुरासवाःसन्निहिताःस्युः ॥ ७८ ॥

घी तैल शहद सेंधानोन सोचरनोन कालानोन वायविडंग गुड़ कूट देवदारु सोंठि पिपरामूल गजपीपरि मजीठ इलायची किवाँच

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वच चव्य चीता कंजा हींग सरसों लहशुन चावलों के कण अलसी कदम्ब कुम्हड़ा भोजपत्र कुलथी मैरेय (मद्यविशेष) सुरा तथा आसव यह सब वस्तु सूतिकागृह में रखनी चाहिये ॥ ७८ ॥

तथाश्मानौद्वौद्वेचण्डमुसलेद्वेउलूखलेखरोवृषभश्चद्वौच तीक्ष्णौसूचीपिप्पलकौसौवर्णराजतौद्वेशस्त्राणिच तीक्ष्णायसानिद्वौचबिल्वमयौपर्य्यङ्कौतैन्दुकैंगुदानिचकाष्ठानिअग्निसन्धुक्षणानि स्त्रियश्चबह्व्योबहुशः प्रजाताःसौहार्दयुक्ताःसततमनुरक्ताः प्रदक्षिणाचाराःप्रतिपत्तिकुशलाः प्रकृतिवत्सलास्त्यक्तविषादाःक्लेशसहिष्णवोऽभिमताब्राह्मणश्चाथर्ववेदविदोयच्चान्यदपितत्रसमर्थंमन्येतयच्चब्राह्मणाब्रूयुःस्त्रियश्चवृद्धास्तत्कार्य्यम् ॥ ७९ ॥

दोशिल दोमूसल दो ऊखल गदहा बैल दो तीक्ष्ण सुई सोने के तथा चांदी के दो तीक्ष्ण पिप्पलक लोहे के तीक्ष्ण शस्त्र बेलके काठके बनेहुये दो पलँग अग्नि बालने के लिये तेंदू तथा गोंदनी की लकड़ी अनेकबार संतान जनानेवाली सुहृद अनुरक्त सुन्दर आचरणवाली प्रतिपत्ति (जिस समय जो करना चाहिये) में प्रवीण स्वभावसे ही स्नेहयुक्त विषादरहित क्लेश सहनेमें समर्थ तथा प्रिय बहुत सी स्त्रियाँ और अथर्ववेद के जाननेवाले ब्राह्मण यह सब सूतिकागृह में इकट्ठे करने चाहिये और इनके सिवाय अन्य जो उपयुक्त वस्तु ब्राह्मण तथा वृद्धा स्त्री बतावें वह भी इकट्ठी करनी चाहिये ॥ ७९ ॥

ततःप्रवृत्तेनवमेमासिपुण्येऽहनिप्रशस्तनक्षत्रयोगमुपगतेभगवतिशशिनिकल्याणेकरणेमैत्रेमुहूर्त्तेशान्तिंहुत्वागोब्राह्मणमग्निमुदकञ्चादौप्रवेश्यगोभ्यस्तृणोदकंमधुलाजांश्चप्रदायब्राह्मणेभ्योऽक्षतान्सुमनसोनान्दीमुखानिचफलानीष्टानिदत्त्वाउदक्पूर्वमासनस्थेभ्योऽभिवाद्यपुनराचम्यस्वस्तिवाचयेत्ततःपुण्याहशब्देनगोब्राह्मणमन्वावर्त्तमानाप्रविशेत्सूतिकागारम् । तत्रस्थाचप्रसवकालंप्रतीक्षेत ॥ ८० ॥

तदनन्तर नवममहीना लगनेपर गर्भिणी स्त्री पवित्रदिन में शुभ नक्षत्र में श्रेष्ठ योग व करण व चन्द्रमा में तथा मैत्र मुहूर्त्तमें (चारघड़ी दिन चढ़ेसे छः घड़ी दिनतक) शान्तिकर्म्म करके गौ ब्राह्मण अग्नि तथा जल को पहिले सूतिकागृहमें भेजके गौओंको तृण जल शहत तथा खीलैं देकर ब्राह्मणों को अक्षत पुष्प तथा मंगलसूचक प्रिय फल देकर ब्राह्मणों को उत्तर अथवा पूर्वमुख के आसन पर बैठालकर उन्हें प्रणाम करके आचमन करके स्वस्तिवाचन करावे तदनन्तर पुण्याहवाचन करातीहुई गौवों तथा ब्राह्मणोंकेपीछे पीछे सूतिकागृह में जाय और सूतिकागृह में जाकर प्रसवके समयकी प्रतीक्षा (राहदेखना) करै ॥ ८० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तस्यास्तुखल्विमानिलिङ्गानिप्रजननकालमभितोभवन्तितद्यथाक्लमो गात्राणांग्लानिराननस्यअक्ष्णोः शैथिल्यंविमुक्तबन्धनत्वमिववक्षसः कुक्षेरवस्रंसनमधोगुरुत्वंवंक्षणवस्तिकटीपार्श्वपृष्ठनिस्तोदोयोनेःप्रस्रवणमनन्नाभिलाषश्चेति । ततोऽनन्तरमावीनांप्रादुर्भावःप्रसेकश्चगर्भोदकस्य ॥ ८१ ॥

जब प्रसव होने का समय निकट होता है तब गर्भिणी के यह लक्षण होते हैं जैसे अंगों की शिथिलता मुखका म्लान होना नेत्रों का शिथिल होना छातियों का ढीलासा होजाना कुक्षिका अवस्रंसन (ढीला होजाना) शरीरके नीचे के भागका भारी होजाना वंक्षण (जंघाकी संधि) वस्ति कटि पसुली तथा पीठ में सुई गड़ने कीसी पीड़ा होना योनिका बहना तथा अन्न में अनिच्छा इन लक्षणों क उपरान्त प्रसव की पीड़ा उत्पन्न होती है और गर्भ में जो जल होता है वह बहने लगता है ॥ ८१ ॥

आवीप्रादुर्भावेतुभूमौशयनंविदध्यान्मृद्वास्तरणोपपन्नंतदध्यासीनांतां ततःसमन्ततःपरिवार्य्ययथोक्तगुणाः स्त्रियःपर्य्युपासीरन्नाश्वासयन्त्यो वाग्भिर्ग्राहिणीभिरुपदिष्टवदर्थाभिधायिनीभिः ॥ ८२ ॥

जब प्रसव की पीड़ा उत्पन्नहो तब पृथ्वीमें कोमल बिछौने पर गर्भिणी लेटे उस समय पूर्वोक्त गुणयुक्त स्त्रियाँ उसे चारोंओर से घेरकर उपदेशयुक्त मधुर वचनों से समझाती रहैं ॥ ८२ ॥

साचेदावीभिःसंक्लिश्यमानानप्रजायेताथैनांब्रूयादुत्तिष्ठमुसलमन्यतरद्गृह्णीष्वानेनैतदुदूखलंधान्यपूर्णं मुहुर्मुहुरभिजहिमुहुर्मुहुरवजृम्भस्वचंक्रमस्वचान्तरान्तराइत्येवमुपदिशन्त्येके ॥ ८३ ॥

यदि प्रसव वेदनाओंसे अत्यन्त क्लेश होनेपर भी संतान उत्पन्न न हो तो उसगर्भिणी से कहै कि उठो एक मूसल लेकर ऊखलमें भरे हुये धानों को कूटो और मूसल रखरख कर वारंवार ऊखल के पास घूमो यह किसी किसी आचार्य्य का मत है ॥ ८३ ॥

तन्नेत्याहभगवानात्रेयः । दारुणव्यायामवर्जनंहिगर्भिण्याःसततमुपदिश्यते । विशेषतश्चप्रजननकालेप्रचलितसर्वधातुदोषायाःसुकुमार्य्यानार्य्यामुसलव्यायामसमीरितोवायुरन्तरंलब्ध्वाप्राणान्हिंस्याद्दुष्प्रतीकारतमाहितस्मिन्कालेविशेषेणभवतिगर्भिणी । तस्मान्मुसलग्रहणंपरिहार्य्यमृषयोमन्यन्तेजृम्भणञ्चंक्रमणञ्चपुनरनुष्ठेयमिति ॥ ८४ ॥

परन्तु भगवान् आत्रेयजी कहते हैं कि यह ठीक नहीं है क्योंकि गर्भिणी स्त्री को कठिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यायाम सदैव वर्जित है और प्रसव के समय में तो विशेष करके वर्जित है प्रसवकाल में सम्पूर्ण दोष तथा धातु चलायमान होती हैं इस से उस समय जो सुकुमार स्त्री मूसल लेकर धान कूटै तो कुपित हुई वायु अवसर पाकर गर्भिणी के प्राणों को नष्टकरदे क्योंकि उस समय में गर्भिणी यदि किसी रोगसे ग्रसितहो तो उस की चिकित्सा करना बहुत ही कठिन होजाता है इससे ऋषिलोग गर्भिणीको मूसल लेना वर्जित करते हैं परन्तु जृम्भण तथा चंक्रमण (टहलना) उचित है ॥ ८४ ॥

अथास्यैदद्यात्कुष्ठैलालाङ्गलिकी वचाचित्रकचिरबिल्वचूर्णमुपघ्रातुं सातन्मुहुर्मुहुरुपजिघ्रेत्। तथाभूर्जत्रधूमंशिंशपासारधूमंतस्याश्चान्तरान्तरा । कटीपार्श्वपृष्ठसक्थिदेशादीषदुष्णेनतैलेनाभ्यज्यानुसुखमवमृद्नीयादित्यनेनतुकर्मणागर्भोऽवाक्प्रतिपाद्यते। सयदाजानीयाद्विमुच्य हृदयमुदरमस्यास्त्वाविशतिवस्तिशिरोऽवगृह्णातित्वरयन्तिएनामाव्यःपरिवर्त्ततेअस्याअवाग्गर्भइत्यस्यामवस्थायांपर्य्यङ्कमेनामारोप्यप्रवाहितमुपक्रमेतकर्णेचास्यामन्त्रमिममनुकूलास्त्रीजपेत्॥८५॥ क्षितिर्जलं वियत्तेजोवायुर्विष्णुःप्रजापतिः। सगर्भांत्वांसदापान्तु वैशल्यञ्चदिशन्तुते ॥ ८६ ॥ प्रसुवत्वमविक्लिष्टमविक्लिष्टाशुभानने ! कार्तिकेयद्युतिंपुत्रंकार्तिकेयाभिरक्षितमिति ॥ ८७ ॥

तदनन्तर गर्भिणी को सूंघने के लिये कूट इलायची लाङ्गलिकी वच चीता तथा कंजा इनका चूर्ण दे और गर्भिणी उसको वारंवार सूंघै बीच बीच में भोजपत्र तथा शीशम के गोंदका धूम सूंघती जाय तदनन्तर उसकी कटि पसुली पीठ तथा जांघों में कुछ उष्ण तैल नीचे की ओर को मलै इसप्रकार करने से गर्भ अधोमुख अर्थात् उलटा होजाता है जब यह मालूम पड़े कि गर्भ हृदय को छोड़कर उदर में प्रवेशकरके वस्ति के ऊर्ध्वभाग में आगया है प्रसव की पीड़ा बहुत उठरही हैं और गर्भ का मुख नीचे का होगया है तब उसे पलँगपर लिटाके उस से कहै कि प्रसव होने के लिये बलकरो और उस के कान में कोई अनुकूल स्त्री यह मंत्र पढ़ै ॥ क्षितिर्जलं वियत्तेजो वायुर्विष्णुः प्रजापतिः । सगर्भांत्वांसदापांतु वैशल्यंचदिशंतुते । प्रसुवत्वमविक्लिष्टमविक्लिष्टा शुभानने । कार्त्तिकेयद्युतिंपुत्रं कार्त्तिकेयाभिरक्षितम् ॥ ८५ । ८६ । ८७ ॥

ताश्चैनांयथोक्तगुणाःस्त्रियोऽनुशिष्युरनागतावीर्माप्रवाहिष्ठाःयाह्यनागतावीःप्रवाहयतेऽव्यर्थमेवास्यास्तत्कर्मभवति । प्रजाचास्याविकृतिमापन्नाचश्वासकासशोषप्लीहप्रसक्ताबाभवतियथाहिक्षवथूद्गार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातमूत्रपुरीषवेगान्प्रयतमानोऽप्य प्राप्तकालान्नलभतेकृच्छ्रेणऽप्याप्यवा प्नोतितथानागतकालंगर्भमविप्रवा हमाणायथाचैषामेवक्षवथ्वादीनां सन्धारणमुपघातायोपपद्यतेतथाप्रा प्तकालस्यगर्भस्याप्रवहणमिति । सायथानिर्देशं कुरुष्वेतिवक्तव्या स्यात् । तथाचकुर्वतीशनैःशनैःपू र्वंप्रवाहेततोऽनन्तरंबलवत्तरमिति तस्याञ्चप्रवाहमाणायांस्त्रियःशब्दं कुर्य्युःप्रजाताप्रजाताधन्यंधन्यंपुत्र मितितथास्याहर्षेणाप्यायन्ते प्रा णाः ॥ ८८ ॥

पूर्वोक्तगुणयुक्त स्त्रियां उस गर्भिणी स्त्री को यह शिक्षादें कि प्रसव की पीड़ाके विना प्रसव होने के लिये बल न करो क्योंकि जो स्त्री पीड़ा के विनाही प्रसव होने के लिये बलकरती है उसका श्रम व्यर्थही होताहै और उस की संतान किसी अंग में विकारयुक्त अथवा श्वास खांसी क्षय व प्लीहा आदि रोगों से युक्त होती है जैसे छींक डकार वाय मूत्र तथा विष्ठा आदिके उपस्थित न होने पर भी यदि उनके निकालने का यत्न कियाजाय तो समय के विना यत्न सफल नहीं होता है अथवा बहुत कष्ट से सफल होता है उसी प्रकार यदि प्रसव के समय के विनाही प्रसव के लिये बल कियाजाय तो वह व्यर्थ होता है अथवा बहुत कष्ट से प्रसव होता है और जैसे छींक आदिके वेगको रोकने से विकार उत्पन्न होते हैं इसीप्रकार यदि गर्भ के प्रसवसमय के उपस्थित होनेपर प्रसव होने के लिये बल न कियाजाय तो गर्भ में हानि पहुंचती है इससे जैसा उपदेश किया गया है वैसाही करो उन स्त्रियों के वचनों के अनुसार गर्भिणी पहिले धीरे धीरे प्रसव के लिये बलकरै फिर क्रमसे बहुत बल करै उस समय वह स्त्रियां यह कहैं कि धन्य है धन्य है पुत्र हुआ पुत्रहुआ ऐसा कहने से गर्भिणी के प्राण आनन्द से पूर्ण होजाते हैं ॥ ८८ ॥

यदाचप्रजातास्यात्तदैनामवेक्षेत काचिदस्याअमराप्रपन्नावाप्रपन्ना नेति । तस्याश्चेदमरानप्रपन्नास्या दथैनामन्यतमास्त्रीदक्षिणेनपाणि नानाभेरुपरिष्ठाद्बलवन्निपीड्यस व्येनपाणिनापृष्ठतउपसंगृह्यसुनि र्द्धूतंनिर्द्धूनुयात् । अथास्याःपाद पार्ष्णर्याश्रोणीमाकोटयेदस्याःस्फि चावुपसंगृह्यसुपीडितंपीडयेत् । अ थास्याबालवेण्याकण्ठतालूपरिमृ शेत् ॥ ८९ ॥

जब संतान उत्पन्न होजाय तब कोई स्त्री यह देखै कि गर्भिणी की झर गिरी कि नहीं यदि झर न गिरी होय तो कोई स्त्री उस प्रसूता (जच्चा) के नाभिके ऊपर दहिने हाथ से बहुत ही दवाकर पीठमें बायाँ हाथ लगाकर बहुत कँपावे तदनन्तर पैरों की एड़ियों के द्वारा उसके नितम्बों को कुटिल करै और कूलोंको पकड़कर बहुतही दबावै और उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की चोटी को उसके कण्ठ तथा तालु में रगड़े ॥ ८९ ॥

भूर्जपत्रकाचमणिसर्पनिर्मोकैश्चास्यायोनिंधूपयेत्। कुष्ठतालीसकल्कंबल्वजयूषेमैरेयसुरामण्डेवाकौलत्थेवा मण्डूकपर्णीपिप्पलीकाथेवासंप्लाव्यपाययेदेनाम् ॥ ९० ॥

तदनन्तर भोजपत्र कांच सांपकी कैंचुल के द्वारा उसकी योनि में धूप देवे और कूट तथा तालीशके कल्क (चटनी) को बल्वज (बगई) के यूषमें मैरेय (मद्यविशेष) में सुरा मंड में कुल्थी के काढ़े में अथवा मँजीठ तथा पीपल के काढ़े में मिलाकर पिलावे॥ ९० ॥

तथासूक्ष्मैलाकिलिमकुष्ठनागरविडङ्गकालविडचव्यपिप्पलीचित्रकोपकुञ्चिकाकल्कंखरवृषभस्यजरतोवादक्षिणंकर्णमुत्कृत्यदृषदिजर्जरीकृत्यबल्वजयूषादीनामन्यतममस्मिन्प्रक्षिप्यमुहूर्त्तस्थितमुद्धृत्यतदाप्लावनंपाययेदेनाम् ॥ ९१ ॥

और छोटी इलायची देवदारु कूट सोंठि बायविडंग कालानोन विडनोन चव्य पीपल चीता कालाजीरा इनके कल्क को बल्वज आदिके काथ में मिलाकर पिलावे बुड्ढे गधे अथवा बैल के दहिने कान को काटके शिलमें महीन पीसकर पूर्वोक्त बल्वज आदि कोंमें से किसी के काढ़े में कुछदेर भिगोकर निकालके वो काढ़ा प्रसूताको पिलावे॥९१॥

शतपुष्पाकुष्ठमदनहिंगुसिद्धस्यचैनांतैलस्यपिचुंग्राहयेदतश्चैवानुवासयेदेतैरेवचाप्लावनैःफलजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवकुटजकृतवेधनहस्तिपर्ण्युपहितैरास्थापयेत्॥ ९२॥

और सौंफ कूट मैनफल तथा हींगके साथ पाक किये गये तैल में रुई भिगोकर प्रसूता की योनि में रखवावें तदनन्तर उसी तैलके द्वारा प्रसूताको अनुवासनवस्ति (एकतरह का अमल) दे और मैनफल बन्दाल लटजीरा कुरैया कडुवी लौकी कृतवेधन तथा गजपीपल इनसबको पीसकर पूर्वोक्त बल्वज आदि के काढ़े में मिलाकर निरूहवस्ति (एकतरका अमल) दे ॥ ९२ ॥

तदास्थापनमस्याहिसहवातमूत्रपुरीषैर्निर्हरत्यमरामासक्तांवायोरनुलोमगमनात्। अमरंहिवातमूत्रपुरीषाण्यन्यानिचान्तर्बहिर्मुखानिसृजन्ति ॥ ९३ ॥

उस निरूहवस्ति के द्वारा वायु के अनुलोम होजानेसे वायु मूत्र तथा मल में लगी हुई झड़ निकल पड़ती है क्योंकि वात मूत्र विष्ठा तथा अन्यबाह्य तथा अभ्यन्तर मल झड़ में लगे रहते हैं ॥ ९३ ॥

तस्यान्तुखल्वमरायाः प्रपतनार्थेखल्वेवमेवकर्मणिक्रियमाणेजातमात्रेऽस्यैवंकुमारस्यकार्य्याण्येतानिकर्माणिभवन्तितद्यथाअश्मनोःसंघट्टनंकर्णयोर्मूलेशीतोदकेनोष्णोदकेनवासुखपरिषेकः।तथासंक्लेश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विहतान्प्राणान्पुनर्लभेतकृष्णकपालिकाशूर्पेणचैनमभिनिष्पुणीयाद्यच्चेष्टंस्याद्यावत्प्राणानांप्रत्यागमनात्तत्तत्सर्वमेवकुर्य्युः ॥ ६४ ॥

झड़के गिरनेके लिये इसप्रकार यत्न किये जानेपर उत्पन्न हुये बालक के लिये जो कार्य शीघ्रही करने चाहिये वह ये हैं जैसे पत्थरके दो टुकड़े लेकर बालकके कानों के मूलमें लगावे शीतल अथवा कुछ उष्णजल बालकके ऊपर छिड़कै ऐसा करनेसे उत्पत्ति में क्लेशके कारण जो बालकके प्राण मूर्च्छित से होजाते हैं वह फिर चैतन्य होजाते हैं सूप के द्वारा बालकके व्यजन (पंखा) करै इसके सिवाय और जिसकार्यसे बालकके प्राण सावधानहों वह करै ॥ ९४ ॥

ततः प्रत्यागतप्राणंप्रकृतिभूतमभिसमीक्ष्यस्नानोदकग्रहणाभ्यामुपपादयेत् । अथास्यताल्वोष्ठकण्ठजिह्वाप्रमार्जनमारभेतअंगुल्यासुपरिलिखितनखयासुप्रक्षालितोपधानकार्पासपिचुमत्याप्रथमंप्रमार्जितस्यास्यचशिरस्तालुकार्पासपिचुनास्नेहगर्भेणप्रतिच्छादयेत् । ततोऽस्यानन्तरंकार्य्यंसैन्धवोपहितेनसर्पिषाप्रच्छर्दनम् ॥ ६५ ॥

तदनन्तर प्राणों के सावधान होने पर बालक को प्रकृतिस्थ देखके उसे स्नान करावे और मल तथा मूत्रके स्थानको शुद्ध करै तदनन्तर कोई स्त्री नखको काटकर तर्जनी अँगुली में रुई लपेटकर बालकके ओठ, कण्ठ, तालू तथा जिह्वा को साफ करै फिर धोये हुये उस बालकके शिर तथा तालूको तैल में भिगोईहुई रुई से ढक देवे तदनन्तर सैन्धव लवणयुक्त घृत के द्वारा बालक को कै करावे ॥ ९५ ॥

नाड्यास्तस्याःकल्पनविधिमुपदेक्ष्यामः । नाभिबन्धनात्प्रभृतिहित्वाष्टांगुलमभिज्ञानंकृत्वाछेदनावकाशस्यद्वयोरन्तरयोःशनैर्गृहीत्वातीक्ष्णेनरौक्मराजतायसानांछेदनानामन्यतमेनोर्द्धधारेणछेदयेत्तामग्रेसूत्रेणोपनिबध्यकण्ठेचास्यशिथिलमवसृजेत् ॥ ६६ ॥

इसके उपरान्त नाल काटनेकी विधि कही जाती है जैसे, नाभिसे लेकर आठ अँगुल छोड़के जहां पर नालको काटनाहो वहां दोनों तरफ पकड़के सोने, चांदी अथवा लोहेके तीक्ष्ण ऊर्ध्वधार शस्त्रके द्वारा धीरे धीरे काटै और काटकर नालके अग्रभाग में सूत्र बांधके बालकके कण्ठमें ढीला ढीला बांधदे ॥९६॥

तस्यचेन्नाभिःपच्येत्तांलोध्रमधुकप्रियंगुदारुहरिद्राकल्कसिद्धेनतैलेनाभ्यज्यादेषामेवतैलौषधानांचूर्णेनावचूर्णयेदेषनाडीकल्पनविधिरुक्तःसम्यक् ॥ ६७ ॥

यदि बालक की नाभि पकै तो लोध, मुलहठी, प्रियंगु तथा दारुहल्दी इनके कल्कके साथ पाक कियागया तैल नाभिमें लगावे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और इन्हीं औषधियों का चूर्ण नाभि पर बुरकावे इस प्रकार नालकाटने की विधि भली भांति कहीगई ॥ ९७ ॥

असम्यक्कल्पेनहिनाड्याआयामव्यायामोत्तुण्डितपिण्डालिकाविनामिकाविजृम्भिकाबाधेभ्योभयम् ॥ ९८ ॥

नालके अच्छे प्रकार न काटने से उत्तुण्डित, पिंडालिका, विनामिका तथा विजृम्भिका इन रोगोंके होनेका भयरहताहै॥९८॥

तत्राविदाहिभिर्वात–पित्त–प्रशमनैरभ्यङ्गोत्सादन–परिषेकैःसर्पिर्भिश्चोपक्रमेतगुरुलाघवमभिसमीक्ष्य कुमारस्य ॥ ९९ ॥

यदि यह रोग होजायँ तो रोगोंकी अधिकता तथा न्यूनताको देखकर वात पित्तनाशक विदाहरहित अभ्यङ्ग (तैल मलना) उत्सादन (उवटना) तथा परिषेक (सींचना) के द्वारा और घीके द्वारा चिकित्सा करै॥ ९९ ॥

प्रागतोजातकर्मकार्य्यंततोमधुसर्पिषीमन्त्रोपमन्त्रितेयथान्यायंप्राशितुमस्मैदद्यात् । स्तनमतऊर्द्धमनेनैवविधिनादक्षिणंपातुंपुरस्तात्प्रयच्छेत् । अथातः शीर्षतःस्थापयेदुदकुम्भंमन्त्रोपमन्त्रितम् ॥ १०० ॥

नाल काटने के पहिलेही जातकर्म्म करले तदनन्तर वेदोक्तविधिके अनुसार मन्त्रों से अभिमन्त्रित घी तथा शहद उस बालक को चटावे इसके उपरान्त विधिपूर्वक पहिले दहिना स्तन बालक को पिलावे तदनन्तर मंत्रोंसे अभिमंत्रित जलपूर्ण घट बालक की शिरकी ओर रक्खै ॥ १०० ॥

अथास्यरक्षांविदध्यादादानीखदिरकर्कन्धूपीलुपरूषकशाखाभिरस्यागृहंभिषक्समन्ततः परिवारयेत् । सर्वतश्चसूतिकागारस्यसर्षपातसीतण्डुलकणकणिकाःप्रकिरेत् । तथातण्डुलबलिमङ्गलहोमःसततमुभयकालंक्रियतेप्राङ्नामकर्मणोर्द्धरेचमुसलमनुतिरश्चीनंन्यस्तंकुर्य्यात् । वचाकुष्ठक्षौमकहिंगुसर्षपातसीलशुनकणकणिकानांरक्षोघ्नसमाख्यातानाञ्चऔषधीनांपोट्टलिकांबद्धासूतिकागारस्योत्तरदेहल्यामासृजेत् तथासूतिकायाःकण्ठेसपुत्रायाःस्थाल्युदककुम्भपर्य्यङ्केष्वपि तथैवचद्वयोर्द्वारपक्षयोःसकणकुम्भकेन्धनाग्निस्तिन्दुककाष्ठेन्धनश्चाग्निःसूतिकागारस्याभ्यन्तरतोनित्यं स्यात् । स्त्रियश्चैनां यथोक्तगुणाःसुहृदश्चानुजागृयुर्दशाहंद्वादशाहंवानुपरतप्रदानमङ्गलाशीःस्तुतिगीतवादित्रमन्नपानाविशदमनुरक्तप्रहृष्टजनसम्पूर्णंतद्वेश्मकार्य्यम् । ब्राह्मणश्चाथर्ववेदवित्सततमुभयकालंशान्तिंजुहुयात्स्वस्त्यय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विहता॒ारस्यतथासूतिकायाइत्ये लिकाशूं॒मुक्तम् ॥ १०१ ॥

द्यश्चेष्टंस्या॒त बालककी रक्षा करै आदा नात्तत्तस्॒ पीलू तथा फालसा इनकी भड़के ग॒ृह की सब तरफ रखदेवे, स- जानेपर ॒। तथा चावलके कण सूतिका- कार्य ॒ड़कवादेवे और नामकरणपर्य्यन्त प॒ ॒ाल तथा सायँकाल चावलों की बलि म॒ाल तथा होम नित्यप्रति करै सूतिकागृह के द्वारपर टेढ़ा मूशल रखदे, बच, कूट, क्षौम (रेशमी वस्त्र) हींग, सरसों, अलसी, लह- शुन तथा चावलके कण राक्षसों के नाशकर- नेवाली यह सब औषध पोटली में बांधकर सूतिकागृह के उत्तर ओर देहली में बांध दे और सूतिका (जच्चा) के कण्ठमें बालकके कण्ठमें स्थाली (बटलोही) में, जल के घटमें तथा पलँगमें और द्वारके दोनों ओर भी वही पोटली बांधदे सूतिकागृहमें चावलके कण, जलपात्र, इन्धन, अग्नि तथा तेन्दूके काष्ठ की अग्नि यह सब वस्तु नित्य रहनी चाहिये पूर्वोक्त गुणयुक्त प्रियस्त्रियां दशदिन अथवा बारहदिन पर्य्यन्त सूतिकाके निकट जागरण करैं दान, मंगल, आशीर्वाद, स्तुति, गीत तथा वाद्य (बाजन) से सूतिकागृह नित्य- युक्त रहै शुद्ध अन्न तथा जल सूतिकागृह में रहै अनुरक्त तथा प्रसन्नलोग सूतिकागृह में सदैव रहैं और अथर्ववेद का जानने वाला ब्राह्मण सदैव सायँकाल तथा प्रातःकाल बालक तथा सूतिका के कल्याण के निमित्त शान्तिहोम करै इसप्रकार रक्षाकी विधि क- ही गई ॥ १०१ ॥

सूतिकान्तुखलुबुभुक्षितांविदित्वास्नेहंपाययेत्प्रथमं परमयाशक्त्यासर्पिस्तैलं वसांमज्जानंवासात्म्यीभावमभिसमीक्ष्यभिषक् । पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृङ्गवेरचूर्णसहितंस्नेहं पीतवत्याश्चसर्पिस्तैलाभ्यामभ्यज्यवेष्टयेदुदरंमहतावाससातथातस्यानवायुरुदरेविकृतिमुत्पादयत्यनवकाशत्वात् । जीर्णेतुस्नेहेपिप्पल्यादिभिरेवसिद्धांयवागूंसुस्निग्धांद्रवांमात्रशः पाययेतोभयकालञ्चोष्णोदकेनपरिषेचयेत्प्राक्स्नेहयवागूपानाभ्याम् । एवंपञ्चरात्रंसप्तरात्रञ्चानुपाल्यततःक्रमेणाप्ययेत्स्वस्थवृत्तमेतत्सूतिकायाः ॥ १०२ ॥

सूतिका (जच्चा) के क्षुधित होने पर घी, तैल चर्बी तथा मज्जा इन स्नेहोंमें से जौन सा स्नेह उसको सात्म्य हो वही उसको शक्ति- के अनुसार वैद्य पिलावे, पीपल, पिपलामूल चव्य, चीता तथा सोंठि इनके चूर्ण के साथ स्नेह गार्भिणी के पान कराके उदरमें घी तथा तैल मलके एक बड़ा वस्त्र उदरमें लपेटदे ऐ- सा करने से अवकाश न होने के कारण उस के उदरमें वायु विकारको नहीं उत्पन्न करती है स्नेहके पचजाने पर पिप्पल्यादिगणके सा- थ पाक कीगई स्नेहयुक्त यवागू सायँकाल त- था प्रातःकाल मात्राके अनुसार पिलावे और स्नेह तथा यवागू पिलानेके पहिलेही गर्मजल सूतिका पर छिड़कै इसप्रकार पांच दिन अ- थवा सात दिन इन नियमों के साथ व्यतीत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके क्रमसे आप्यायन (तरावट) करनेवाले पदार्थोंका सेवन करावे, सूतिकाके स्वस्थरखने का यह क्रम कहागया ॥ १०२ ॥

तस्यास्तुखलुयोव्याधिरुत्पद्यतेसकृच्छ्रसाध्योभवत्यसाध्योवा। गर्भवृद्धिक्षयितशिथिलसर्वशरीरधातुत्वात्प्रवाहणवेदनाक्लेदनरक्तनिःस्रुतिविशेषशून्यशरीरत्वाच्चतस्मात्तांयथोक्तेनविधिनोपचरेद्भौतिकजीवनीयबृंहणीयमधुरवातहरसिद्धैरभ्यङ्गोत्सादनपरिषेकावगाहनान्नपानविधिभिर्विशेषतश्चोपचरेद्विशेषतोहि शून्यशरीराःस्त्रियः प्रजाताभवन्ति ॥ १०३ ॥

गर्भकी वृद्धिसे शरीर की सम्पूर्ण धातुओं के शिथिल तथा क्षीण होजानेके कारण और प्रसव के लिये बल करने की पीड़ासे क्लेदन से तथा रुधिर निकलने से शरीर के विशेष शून्य होजाने के कारण सूतिका (जच्चा) के जो रोग होता है वह कष्टसाध्य अथवा असाध्य होजाता है इससे पूर्वोक्तविधिके अनुसार सूतिका (जच्चा) का सेवन करना चाहिये और भौतिक, जीवनीय, बृंहणीय, मधुर तथा वातहरगणके द्वारा सिद्ध अभ्यङ्ग (तैलमर्दन) उत्सादन (उबटन) परिषेक (सींचना) अवगाहन (भँभाना) तथा अन्नपान सूतिका को देना चाहिये क्योंकि प्रसव होनेसे स्त्रियों का शरीर बहुत शून्य होजाताहै ॥ १०३ ॥

दशम्यांनिशयतीतायांसपुत्रास्त्रीसर्वगन्धौषधैर्गौरसर्षपलोध्रैश्चस्नाता लघ्वहतवस्त्रंपरिधायपवित्रेष्टलघुविचित्रभूषणवतीसंस्पृश्य मङ्गलान्युचितामर्चयित्वा च देवतांशिखिनः शुक्लवाससो व्यङ्गाश्चब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयित्वाकुमारमहतेनशुचिवाससाच्छादयेत्। प्राक्शिरसमुदक्शिरसंवासंवेश्यदेवतापूर्वं द्विजातिभ्यः प्रणमतीत्युक्त्वाकुमारस्यपितानामनीकारयेत्नाक्षत्रिकंनामाभिप्रायिकञ्च। तत्राभिप्रायिकंनाम घोषवदाद्यन्तस्थान्तमुष्मान्तञ्चवृद्धं त्रिपुरुषान्तरमनवप्रतिष्ठितम्। नाक्षत्रिकन्तुनक्षत्रदेवतासंयुक्तंकृतंद्व्यक्षरंचतुरक्षरंवा ॥ १०४ ॥

दशदिनके व्यतीत होनेजानेपर ग्यारहवें दिन पुत्रसहित स्त्री सम्पूर्ण सुगन्धित औषध श्वेत सरसों तथा लोध इनका उबटन लगाकर स्नानकरै तदनन्तर हलके तथा समूचे वस्त्र पहनकर पवित्र, प्रिय तथा हलके आभूषण पहनकर मंगल वस्तुओं का स्पर्श करके इष्ट देवता का पूजन करके शिखा तथा श्वेत वस्त्र धारी सुन्दर अंगवाले ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवाके बालक को अखण्डित श्वेतवस्त्र से ढकदेवे तदनन्तर बालक को पूर्वकी ओर अथवा उत्तर की ओर शिरकर के लिटाके पहिले देवताओं को तदनन्तर ब्राह्मणोंको नमस्कार है यह कहके पिता बालकके दो नाम रक्खे एक नाक्षत्रिक (जो नक्षत्रके अनुसार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्खाजाय) नाम और एक अभिप्रायिक (जो अभिप्रायके अनुसार रक्खाजाय) नाम इनमें से अभिप्रायिक नामके आदिका अक्षर पाँचोंवर्गोंके अंतिम तीन २ अक्षरोंमेंसे कोई होना चाहिये और अन्तका अक्षर य र ल व श ष स ह इनमें से कोई होना चाहिये और वह नाम पिता पितामह तथा प्रपितामह के नाम से अलग होना चाहिये और नाक्षत्रिक नाम जन्म नक्षत्र के देवता के अनुसार दो अथवा चार अक्षरका होना चाहिये ॥ १०४ ॥

कृतेचनामकर्मणिकुमारंपरीक्षितुमुपक्रामेदायुषःप्रमाणज्ञानहेतोः । तत्रेमानिआयुष्मतांकुमाराणांलक्षणानिभवन्ति। तद्यथा,-एकैकजामृद्वोऽल्पाःस्निग्धाःसुबद्धमूलाःकृष्णाःकेशाःप्रशस्यंते । स्थिराबहलात्वक्प्रकृत्याकृतिसुसम्पन्नमीषत्प्रमाणातिरिक्तमनुरूपमातपत्रोपमं शिरःप्रशस्यते । व्यूढंदृढंसमंसुश्लिष्टशङ्खसन्ध्यूर्द्धव्यञ्जनमुपचितंबलिनमर्द्धचन्द्राकृतिललाटंबहलौविपुलसमपीठौसमौनीचौवृद्धौपृष्ठतोऽवनतौसुश्लिष्टकर्णपुटकौमहाच्छिद्रौकर्णौईषत्प्रलम्बिन्यावसङ्गतेसमेसंहतेमहत्यौभ्रुवौ । समेसमाहितदर्शनेव्यक्तभागविभागेबलवतितेजसोपपन्नेस्वाङ्गापाङ्गेचक्षुषी । ऋज्वीमहोच्छ्वासावंशसम्पन्नेषदवनताग्रानासिकामहदृजुसुनिविष्टदन्तमास्यमायामविस्तरोपपन्नाश्लक्ष्णातन्वीप्रकृतियुक्तापाटलवर्णाजिह्वा । श्लक्ष्णंयुक्तोपचयमुष्मोपपन्नंरक्तंतालुमहानदीनःस्निग्धोऽनुनादीगम्भीरसमुत्थोधीरःस्वरः । नातिस्थूलौनातिकृशौविस्तारोपपन्नावास्यप्रच्छादनौरक्तावोष्ठौ । महत्यौहनूवृत्तौनातिमहतीग्रीवाव्यूढमुपचितमुरोदृढंजत्रुपृष्ठवंशश्च । विकृष्टान्तरौस्तनौअंसपातिनीस्थिरेपार्श्वे वृत्तपरिपूर्णायतौबाहूसक्थिनीअंगुलयश्चमहदुपचितंपाणिपादम् । स्थिरावृत्ताःस्निग्धस्ताम्रास्तुङ्गाःकूर्माकाराःकरजाः । प्रदक्षिणावर्त्तासोत्सङ्गाचनाभी । नाभ्युरस्त्रिभागहीनासमासमुपचितमांसाकटीवृत्तौस्थिरोपचितमांसौनात्युन्नतौनात्यवनतौस्फिचावनुपूर्ववृत्तोउपचययुक्तावूरू। नात्युपचितेनात्युपचितेएणीपदे प्रगूढशिरास्थिसन्धीजङ्घे । नात्युपचितौनात्यपचितौ गुल्फौपूर्वोपदिष्टगुणौपादौकूर्माकारौ। प्रकृतियुक्तानिवातमूत्रपुरीषगुह्यानितथास्वप्नजागरणयासस्मितरुदितस्तन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहणानियच्चकिञ्चिदन्यदपिअनुक्तमस्तितदपि सर्वंप्रकृतिसम्पन्नमिष्टं विपरीतंपुनरनिष्टमिति दीर्घायुर्लक्षणानि ॥ १०५ ॥

नामकर्म के उपरान्त बालककी आयुजानने लिये परीक्षा करने को बालकके निकट जाय दीर्घायु बालकों के यह लक्षण होते हैं जैसे अलग अलग उत्पन्न हुये कोमल स्वल्प स्निग्ध पुष्ट तथा कृष्णवर्ण बालश्रेष्ठ होते हैं स्थिर तथा घनी त्वचा श्रेष्ठ होती है प्रकृति से सुडौल शरीरके प्रमाण की अपेक्षा कुछ बड़ा छतुरी के समान बनाहुआ शिर श्रेष्ठ होताहै आधे चन्द्रमा के समान आकृतियुक्त दृढ़ सम बृहत् (बड़ा) सुन्दर शंख के अर्द्धभाग के समान शोभायुक्त उपचित (मांसयुक्त) तथा रेखायुक्त ललाट श्रेष्ठ होता पीछे की ओर बड़े सम नीचे बड़े पीछेकी ओर झुके-हुये बड़े छिद्रयुक्त कान श्रेष्ठ होते हैं कुछलम्बी परस्पर नहीं मिलीहुई सम घनी तथा बड़ी भौंहैं श्रेष्ठ होती हैं सम देखने में समर्थ सम्पूर्ण भागोंमें अच्छीप्रकार विभक्त बलवान् तेजयुक्त तथा सुन्दर कोरवाले नेत्र श्रेष्ठ होते हैं सीधी दीर्घ श्वासयुक्त अग्रभागमें कुछ झुकीहुई तथा बड़े बाँसेसे युक्त नासिका श्रेष्ठ होती है सीधा बड़ा तथा सुन्दर दाँतोंके स्थान से युक्त मुख श्रेष्ठ होता है लम्बी चौड़ी चिकनी पतली विकाररहित तथा रक्तवर्ण जिह्वा श्रेष्ठ होती है चिकना न बहुत नीचा न बहुत ऊंचा तथा रक्तवर्ण तालुश्रेष्ठ होता है गम्भीर बड़ा, दीनतारहित स्निग्ध प्रतिध्वनियुक्त धीर स्वर श्रेष्ठ होताहै न बहुत मोटे न बहुत पतले विस्तारयुक्त रक्तवर्ण तथा मुख को ढकनेवाले ओष्ठ श्रेष्ठ होते हैं बड़े जावड़े श्रेष्ठ होते हैं न बहुत छोटी न बहुत बड़ी गोल ग्रीवा श्रेष्ठ होती है विशाल तथा पुष्ट वक्षस्थल श्रेष्ठ होता है मांससे ढकीहुई हसुली तथा पीठकी रीढ़ श्रेष्ठ होतीहै मध्यमें बहुत अन्तर युक्त स्तन श्रेष्ठ होते हैं स्थिर पसुली श्रेष्ठ होती हैं गोल दीर्घ तथा पुष्ट भुजा जंघा तथा अंगुली श्रेष्ठ होती हैं बड़े तथा पुष्ट हाथ पैर श्रेष्ठ होते हैं स्थिरगोल स्निग्ध उन्नत रक्तवर्ण तथा कछुवे के समान आकृतियुक्त नख श्रेष्ठ होते हैं दक्षिण की ओर घूमीहुई गम्भीर नाभि श्रेष्ठ होतीहै नाभि तथा वक्षस्थल के मध्य में जो स्थान उसके तीन भागोंमें से एक भाग के समान परिमाणयुक्त सम तथा मांसयुक्त कटि श्रेष्ठ होती है गोल स्थिर मांसयुक्त न बहुत ऊंचे न बहुत नीचे कूले श्रेष्ठ होते हैं क्रमसे गोल (गावदुम) तथा मांसयुक्त जांघें श्रेष्ठ होती हैं न बहुत मोटी न बहुत पतली तथा मृगीके पैर के समान पिंडुली श्रेष्ठ होती हैं पिंडुलियों की शिरा हड्डी तथा संधि मांस से ढकीहुई श्रेष्ठ होती हैं न बहुत मोटे न बहुत पतले टखने श्रेष्ठ होते हैं पूर्वोक्त गुणयुक्त तथा कछुवेके समान आकृतिवाले पैर श्रेष्ठ होते हैं वायु मूत्र विष्ठा गुह्यस्थान स्वप्न जागरण हँसना रोना तथा स्तनोंको पीना यह सब प्रकृतिके अनुसार श्रेष्ठ होतेहैं और जिस जिसका यहाँ वर्णन नहीं हुआ है वह सब प्रकृतिके अनुसार श्रेष्ठ होता है इन लक्षणों से विपरीत लक्षण होयँ तो बालक को अल्पायु जानना चाहिये इस प्रकार दीर्घायु के लक्षण कहे गये॥१०५॥

धात्रीपरीक्षा।

अतोधात्रीपरीक्षामुपदेक्ष्यामः१०६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस के उपरान्त धात्री की परीक्षा कही जाती है ॥ १०६ ॥

अथब्रूयाद्धात्रीमानयेतिसमानवर्णांयौवनस्थांनिभृताननातुरामव्यङ्गामव्यसनामविरूपामजुगुप्सितांदेशजातीयामक्षुद्रामक्षुद्रकर्मिणींकुलेजातांवत्सलामरोगजीवद्वत्सांपुंवत्सांदोग्ध्रीमप्रमत्तामशायिनीमनुच्चारशायिनीमनन्तावशायिनींकुशलोपचारांशुचिमशुचिद्वेषिणीं स्तन्यसम्पदुपेतामिति ॥ १०७ ॥

वैद्य धात्री (धाय) को बुलानेकी आज्ञादे वह धात्री ऐसी होनी चाहिये जैसे समानवर्ण (अपने समानवर्णवाली) युवती नम्र रोग-रहित सम्पूर्ण अंगों से युक्त काम क्रोधादि दोषरहित सुन्दररूपवाली, निन्दारहित अपने देशमें उत्पन्न हुई क्षुद्रतारहित श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुई स्नेहयुक्त पुत्रवती जीते हुये संतानवाली दुग्ध देनेवाली सावधान बहुत नहीं सोनेवाली चतुरता से उपचार करनेवाली पवित्र अपवित्रतासे द्वेष करनेवाली और श्रेष्ठ स्तन तथा दुग्धवाली धाय होनी चाहिये ॥ १०७ ॥

तत्रेयंस्तनसम्पन्नात्यूर्द्ध्वौनातिलम्बौअनतिकृशौअनतिपीनौयुक्तपिप्पलकौसुखप्रपानौचेतिस्तनसम्पत् ॥ १०८ ॥

न बहुत ऊंचे न बहुत लम्बे न बहुत मोटे न बहुत पतले घुंडियों से युक्त और सुखपूर्वक पीने के योग्य स्तन श्रेष्ठ कहलाते हैं ॥ १०८ ॥

स्तन्यसम्पत्तुप्रकृतिवर्णगन्धरसस्पर्शंनुदपात्रेचयद्दुह्यमानंदुग्धमुदकंव्येतिप्रकृतिभूतत्वात्तत्पुष्टिकरमारोग्यकरञ्चेतिस्तन्यसम्पदतोऽन्यथाव्यापन्नंज्ञेयम् ॥ १०९ ॥

जो दुग्ध स्वाभाविक वर्ण गन्ध रस तथा स्पर्शसे युक्त हो और जल के पात्र में दुहनेसे जलमें मिलजाय वह दुग्ध श्रेष्ठ कहलाता है वह दुग्ध विकारयुक्त न होने के कारण पुष्टता तथा आरोग्य को उत्पन्न करता है और जो दुग्ध विपरीत गुणयुक्त हो उसे दोषी जानना चाहिये ॥ १०९ ॥

तस्यविशेषाःश्यावारुणवर्णंकषायानुरसंविशदमनतिलक्ष्यगन्धंरूक्षंद्रवंफेनिलंलघुअतृप्तिकरंकर्षणंवातविकाराणांकर्तृवातोपसृष्टंक्षीरमभिज्ञेयम् ॥ ११० ॥

उस दोषी दुग्धकी विशेषता यहहै जैसे कपिश वर्ण अरुणवर्ण कुछ कषैला गन्धरहित रूखा बहुत पतला फेनायुक्त हलका तृप्ति को नहीं उत्पन्न करनेवाला और वातजरोगों को उत्पन्नकरनेवाला जो दूध उसे वातयुक्त जानना चाहिये ॥ ११० ॥

कृष्णनीलपीतताम्रावभासंतिक्ताम्लकटुकानुरसंकुणपरुधिरगन्धिभृशोष्णंपित्तविकाराणांकर्तृपित्तोपसृष्टंक्षीरमभिज्ञेयम् ॥ १११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काला नीला पीला ताम्रवर्ण कुछ तिक्त कुछ खट्टा कुछ कडुवा मुर्दे के रुधिरकी सी गन्धि से युक्त बहुत उष्ण और पित्तज रोगों को उत्पन्न करनेवाला जो दूध उसे पित्तयुक्त जानना चाहिये ॥ १११ ॥

अत्यर्थशुक्लमतिमाधुर्य्योपपन्नंलवणानुरसंघृततैलवसामज्जगन्धिपिच्छिलंतन्तुमदुदकपात्रेऽवसीदति श्लेष्मविकाराणांकर्तृश्लेष्मोपसृष्टं क्षीरमभिज्ञेयम् ॥ ११२ ॥

बहुत श्वेत बहुत मधुर कुछ नमकीन घी तैल चर्बी तथा मज्जाकी सी गन्धि से युक्त पिच्छलवर्ण जलके पात्र में डालनेसे जलमें नहीं मिलनेवाला तन्तुमत्(जिसमें डोरे २ से मालूम पड़ें)और कफज रोगों को उत्पन्न करने वाला जो दुग्ध उसे कफयुक्त जानना चाहिये ॥ ११२ ॥

तेषान्तुत्रयाणामपिक्षीरदोषाणांप्रकृतिविशेषमभिसमीक्ष्ययथास्वंयथादोषञ्चवमनविरेचनास्थापनानुवासनानिविभज्यकृतानिप्रशमनायभवन्ति ॥ ११३ ॥

इन तीनोंप्रकार के दुग्धों की प्रकृति की विशेषता को देखकर अपने २ दोषके अनुसार विचारपूर्वक वमन विरेचन आस्थापन तथा अनुवासन देने से दोष शान्त होजाते हैं ॥ ११३ ॥

पानाशनविधिस्तुदुष्टक्षीरायायवगोधूमशालिषष्टिकमुद्गहरेणुककुलत्थसुरासौवीरकतुषोदकमैरेयमेदकलशुनकरञ्जप्रायःस्यात् ११४ ॥

जिस स्त्री का दूध दूषित हो उसको यव गेहूं शालिधान सांठी हरेणु मूंग कुल्थी सुरा(मद्यविशेष)सौवीर (मद्यविशेष)तुषोदक (मद्यविशेष) मैरेय (मद्यविशेष) मेदक (मद्यविशेष) लहशुन तथा कञ्जा यही वस्तु प्रायः आहारपान में व्यवहार करनी चाहिये ॥ ११४ ॥

क्षीरदोषविशेषांश्चावेक्ष्यावेक्ष्यतत्तद्विधानंकार्य्यंस्यात् ॥ ११५ ॥

दुग्ध के दोषों की विशेषता को देख देख कर उसका यत्न करना चाहिये ॥ ११५ ॥

पाठामहौषध–सुरदारु–मुस्तमुर्वागुडूची–वत्सकफल–किराततिक्तकटुकरोहिणीशारिवाकषायाणाञ्चपानंप्रशस्यते।तथान्येषांतिक्तकषायकटुकमधुराणांद्रव्याणांप्रयोगः। इतिक्षीरशोधनान्युक्तानिभवन्ति । क्षीरविकारविशेषानभिसमीक्ष्यमात्राकालञ्चेतिक्षीरविशोधनानि ११६॥

पाढ़र सोंठि देवदारु मोथा मिरोड़फली गिलोय इन्द्रयव चिरायता कुटकी तथा सांई इन के काढ़ेको पीने से और अन्यतिक्त कषैली कटु तथा मधुर वस्तुओं के सेवनसे दुग्ध शुद्ध होता है दुग्ध के विकारों की विशेषता को देखकर मात्रा तथा काल के अनुसार इन औषधियों का व्यवहार करना चाहिये इसप्रकार दूध शुद्ध करने की औषध कही गई ॥ ११६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षीरजननानि तुमद्यानिसीधुवर्ज्या निग्राम्यानूपौदकानिचशाकधान्य मांसानिद्रवमधुराम्लभूयिष्ठाश्चाहा राःक्षीरिण्यश्चौषधयःक्षीरपानञ्चाना यासश्चेतिवीरणषष्टिशालिकेक्षुबा लिकादर्भकुशकाशगुन्द्रोत्कटमूल कषायाणाञ्च पानमितिक्षीरजनना न्युक्तानि ॥ ११७ ॥

सीधुको छोड़कर सम्पूर्ण मद्य ग्राम अनूप देश तथा जल में उत्पन्न हुये शाक अन्न तथा इन्हीं देशों में उत्पन्न हुये जीवों का मांस अधिक अधिक द्रव मधुर तथा अधिक खट्टे भोजन दूधवाली औषध दुग्ध पान परिश्रम न करना गांडर सांठी शालिधान तालमखाना कुश काश दर्भ नागरमोथा तथा उत्कट इनकी जड़का काढ़ा पीना यह सब दुग्ध के उत्पन्न करनेवाले हैं ॥ ११७ ॥

धात्रीतुयदास्वादुबहुलशुद्धदुग्धा स्यात्तदास्नातानुलिप्ताशुक्लवस्त्रंप रिधायैन्द्रींब्राह्मींशतवीर्य्यांसहस्रवी र्य्याममोघामव्यथांशिवामरिष्टांवाट्य पुष्पींविष्वक्सेनकान्तामितिबिभ्र त्यौषधीःकुमारंप्राङ्मुखंप्रथमंदक्षिणं स्तनंपाययेदितिधात्रीकर्म ॥ ११८ ॥

जब धात्री (धाय) का दुग्ध मधुर तथा शुद्ध होजाय तब उबटन लगाकर स्नानकरके शरीर में चन्दन आदि सुगन्धित लेप लगाकर और इन्द्रायण ब्राह्मी श्वेतदूर्वा दूर्वा पाढ़र हड़ आंवला नीब बरियारा प्रियंगु तथा रेणुका इन औषधियों को धारणकरके धात्री बालक को पूर्व मुख करके पहिले दहिनास्तन पिलावे इसप्रकार धात्री का कर्म्म कहागया ॥ ११८ ॥

कुमारागारविधिः ।

अतोऽनन्तरं कुमारागारविधिमनु व्याख्यास्यामः । वास्तुविद्याकुश लःप्रशस्तंरम्यमतमस्कंनिवातंप्रवा तैकदेशंदृढमपगतश्वापदपशुदंष्ट्रि मूषिकपतङ्गंसुसंविभक्तसलिलोदूख लमूत्रवर्च्चःस्थानस्नानभूमिमहानस मृतुसुखं यथर्तुशयनासनास्तरणस म्पन्नंकुर्य्यात् । तथासुविहितरक्षावि धानबलिमङ्गलहोमप्रायश्चित्तंशुचि वृद्धवैद्यानुरक्तजनसम्पूर्णमिति । कु मारागारविधिः ॥ ११९ ॥

इसके उपरान्त सौर से निकलेहुये बालक के रहने के लिये गृह बनाने की विधि कही जाती है वास्तुविद्या (इंजीनियरी) में चतुर पुरुष प्रशस्त रमणीय अंधकाररहित किसी एकस्थान में वायु से युक्त दृढ़ हिंसक पशु शूकर आदिक दाढ़वाले पशु मूष तथा पतंग आदिजीवों से रहित जल ऊखल मूत्र मल रसोई तथा स्नानके स्थानों से युक्त और ऋतुके अनुसार शय्या आसन तथा बिछौनों से युक्त गृह बनवावे उस गृह में रक्षाविधि मंगल बलि होम तथा प्रायश्चित्त अच्छे प्रकारसे करना चाहिये और पवित्र वृद्ध वैद्य तथा प्रियलोग रखने चाहिये इसप्रकार बालकके लिये गृहकी विधि कहीगई ॥ ११९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शयनास्तरणप्रावरणानिकुमारस्य मृदुलघुशुचिसुगन्धीनिस्युःस्वेदमलजन्तुमन्तिमूत्रपुरीषोपसृष्टानिच वर्ज्यानिस्युः ॥ १२० ॥

बालक का बिछौना शय्या तथा ओढ़ना कोमल हलका पवित्र तथा सुगन्धित होना चाहिये स्वेद मल तथा कीटों से युक्त और मूत्र तथा विष्ठा से भरेहुये वस्त्र बालक के लिये वर्ज्जित हैं ॥ १२० ॥

असतिसम्भवेऽन्येषांतान्येव च सुप्रक्षालितोपधानानिसुधूपितानिसुशुद्धशुष्काण्युपयोगंगच्छेयुः॥१२१॥

यदि अन्य शुद्ध वस्त्र न होयँ तो स्वेदादि से युक्त वस्त्रों को ही अच्छेप्रकार से धोकर सुगन्धित धूपसे बसाकर तथा सुखाकर व्यवहारमें लावे ॥ १२१ ॥

धूपनानिपुनर्वाससां शयनास्तरणप्रावरणानाञ्चयवसर्षपातसी–हिंगु–गुग्गुलु–वचाचोरकवयःस्थागोलोमीजटिला–पलङ्कषाशोकरोहिणी सर्पनिर्मोकाणि घृतसम्प्रक्तानि स्युः ॥ १२२ ॥

यव सरसों अलसी हींग गुग्गुल वच शंखकौड़ी हड़ दूर्वा जटामासी गोखुरू अशोक कुटकी तथा सांप की केंचुल इनसबको घीमें मिलाकर बालक के ओढ़ना बिछौना आदि में धूप देनी चाहिये ॥ १२२ ॥

मणयश्चधारणीयाः कुमारस्यखड्गरुरुगवयवृषभाणांजीवतामेवदक्षिणेभ्यो विषाणेभ्योऽग्राणिगृहीतानि स्युः । मन्त्राद्याश्चौषधयोजीवकर्षभकौचयान्यपिअन्यानिब्राह्मणाःप्रशंसेयुः ॥ १२३ ॥

गैंडा रुरु (मृगविशेष) गवय (गौ के समान पशुविशेष) तथा बैल इन पशुओं के दहिने कान के अग्रभाग और कोई रत्न बालक को पहिनाना चाहिये और मंत्रादिक और औषध जीवक तथा ऋषभक इन के सिवाय अन्य जो वस्तु ब्राह्मण कहैं वह भी बालक को पहिनानी चाहिये ॥ १२३ ॥

क्रीडनकानिखल्वस्यतुविचित्राणि घोषवन्त्यभिरामाणि अगुरुण्यतीक्ष्णाग्राणिअनास्यप्रवेशी निअप्राणहराणिअवित्रासनानिस्युः १२४॥

बालक के खिलौने विचित्र शब्दयुक्त मनोहर हलके नहीं तीक्ष्ण अग्रभाग वाले मुख में नहीं जाने के योग्य प्राणों के नहीं हरने वाले और भय को नहीं उत्पन्न करने वाले होने चाहिये ॥ १२४ ॥

नहिअस्य वित्रासनंसाधुतस्मात्तस्मिन्रुदत्यभुञ्जानेवाअन्यत्रविधेयतामगच्छति राक्षसपिशाचपूतनाद्यानांनामान्याह्वयताकुमारस्य वित्रासनार्थंनामग्रहणंनकार्य्यंस्यात्१२५

बालकको किसी प्रकार से भी डरवाना नहीं चाहिये इसीसे जब बालक रोताहो या खेल में पड़कर भोजन न करना चाहताहो अथवा अन्य कोई आवश्यक कार्य्य न करना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहता हो तब उसके डरवाने के लिये राक्षस पिशाच तथा पूतना आदिकों को नाम लेकर बुलाना न चाहिये ॥ १२५ ॥

यदितुआतुर्य्यं किञ्चित्कुमारमागच्छेत्तत्प्रकृतिनिमित्तपूर्वरूपलिङ्गोपशयविशेषैस्तत्त्वतोनुबुध्यसर्वविशेषानातुरौषधदेशकालश्रयानवेक्षमाणश्चिकित्सितुमारभेतैनंमधुरमृदुलघुसुरभिशीतसङ्करंकर्म प्रवर्त्तयेन्नेवंसात्म्याहिकुमाराभवन्ति तथाते शर्मलभन्तेअचिरायरोगेतुअरोगवृत्तमातिष्ठेद्देशकालात्मगुणविपर्य्ययेणवर्त्तमानः ॥ १२६ ॥

यदि बालक को कोई रोग होय तो प्रकृति निदान पूर्वरूप चिह्न तथा उपशय की विशेषता के द्वारा रोग की विशेषता को जान कर रोगी औषध देश काल तथा आश्रय का विचार करके चिकित्सा करने का प्रारम्भ करै मधुर मृदु हलकी सुगन्धित तथा कुछ शीतयुक्त औषध बालक के लिये उचित है क्योंकि ऐसी ही वस्तु बालक को सात्म्य होती हैं और ऐसी ही वस्तुओं से बालकों को शीघ्रही सुख प्राप्त होता है जब बालक नीरोगहोय तब देश काल तथा प्रकृति के गुणों से विपरीत वस्तुओं का सेवन उसको कराना चाहिये ॥ १२६ ॥

क्रमेणासात्म्यानि परिवर्ज्योपयुञ्जानःसर्वाणिअहितानिवर्ज्जयेत्तथाबलवर्णशरीरायुषां सम्पदमवाप्नोतीति ॥ १२७ ॥

क्रम से असात्म्य वस्तुओं को छुड़ाकर सम्पूर्ण अहित वस्तुओं को वर्जित करके बालक को भोजन देनाचाहिये ऐसा करने से बल वर्ण शरीर तथा आयुकी वृद्धि होती है ॥ १२७ ॥

एवमेनंकुमारमायौवनप्राप्तेर्धर्मार्थकुशलागमनाच्चानुपालयेदिति पुत्राशिषांसमृद्धिकरंकर्मव्याख्यातम् । तदाचरन्यथोक्तैर्विधिभिःपूजांयथेष्टं लभतेऽनसूयकइति ॥ १२८ ॥

जबतक बालक युवा न होले और धर्मार्थ में चतुर न होजाय तबतक इसी रीतिसे उस की पालना करै इसप्रकार पुत्र के निमित्त शुभाकांक्षा करनेवाले पुरुषों के लिये हितकारी कर्म्म कहागया असूया (गुणोंमें दोष लगाना) न करके इस कर्म्म को यथोक्त विधिसे करने वाले पुरुषको यथेष्ट संतानकी प्राप्ति होती है ॥ १२८ ॥

तत्रश्लोकौ ।

पुत्राशिषांकर्मसमृद्धिकारकं यदुक्तमेतन्महदर्थसंहितम् । तदाचरञ्ज्ञो विधिभिर्यथातथंपूजांयथेष्टंलभतेऽनसूयकः ॥ शरीरंचिन्त्यतेसर्वं दैवमानुषसम्पदा । सर्वभावैर्यतस्तस्माच्छारीरंस्थानमुच्यते ॥ १२९ ॥

शारीरस्थानं समाप्तम् ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिस में यह दो श्लोक हैं। पुत्रकी इच्छा करने वालों के लिये हितकारी जो यह श्रेष्ठ कर्म्म कहागया है इस कर्म्म को बुद्धिमान् पुरुष असूया न करके विधिपूर्वक यथावत् करके यथेष्ट संतानको प्राप्त करता है इस स्थान में दैवीसम्पत्ति तथा मानुषीसम्पत्ति से सबप्रकार सम्पूर्ण शरीरका विचार किया जाता है इस से इस को शारीरस्थान कहते हैं ॥ १२९ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंजातिसूत्रीय नामआठवांशारीराध्यायसमाप्तहुआ ॥ ८ ॥

इतिआचार्य्यचरकमुनिविरचितसंहितामें शारीरस्थानसमाप्तहुआ ॥

इन्द्रियस्थानम्।

पहिला अध्याय॥

वर्णस्वरीयम्।

इहखलुवर्णश्चस्वरश्चगन्धश्च रसश्च स्पर्शश्चचक्षुश्चश्रोत्रञ्चघ्राणञ्चरसनञ्च स्पर्शनञ्चसत्त्वञ्चभक्तिश्चशौचञ्चशीलञ्चाचारश्चस्मृतिश्चाकृतिश्चबलञ्च ग्लानिश्चतन्द्राचारम्भश्चगौरवञ्चलाघवञ्चआहारश्चविहारश्चाहारपरिणामश्चोपायश्चापायश्चव्याधिश्चव्याधिपूर्वरूपञ्चवेदनाश्चोपद्रवाश्चछायाच प्रतिच्छायाचस्वप्नदर्शनञ्च दूताधिकारश्चपथिचौत्पातिकञ्चातुरकुलेभावावस्थान्तराणिचभेषजसंवृत्तिश्चभेषजविकारयुक्तिश्चेतिपरीक्ष्याणिप्रत्यक्षानुमानोपदेशैरायुषःप्रमाणविशेषंजिज्ञासमानेनभिषजा ॥ १ ॥

इसके उपरान्त वर्णस्वरीय नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

जो वैद्य आयुके प्रमाण की विशेषता को जाननेकी इच्छा करै उसको प्रत्यक्ष अनुमान तथा उपदेश के द्वारा वर्ण स्वर गन्ध रस स्पर्श नेत्र कर्ण नासिका जिह्वा त्वचा सत्त्व भक्ति शौच शील आचार स्मृति आकृति बल ग्लानि तन्द्रा आरम्भ गौरव लघुता आहार विहार आहारका पचना उपाय अपाय रोग रोगका पूर्वरूप पीड़ा उपद्रव छाया प्रतिच्छाया स्वप्न देखना दूताधिकार मार्ग में होनेवाले उत्पात रोगी के गृहकी अवस्था औषधिकी प्रवृत्ति तथा औषधिके विकारकी युक्ति इनसबकी परीक्षा करनी चाहिये ॥ १ ॥

तत्रतुखल्वेषांपरीक्ष्याणांकानिचित्पुरुषमनाश्रितानि कानिचित्पुरुषसंश्रयाणि। तत्रयानिपुरुषमनाश्रितानितानिउपदेशतोयुक्तितश्च परीक्षेत । पुरुषसंश्रयाणिपुनःप्रकृतितश्चविकृतितश्च॥ २ ॥

इन में से कुछ पुरुषके आश्रित हैं और कुछ पुरुषके आश्रित नहीं हैं जो पुरुषके आश्रित नहीं हैं उनकी परीक्षा उपदेश तथा युक्ति के द्वारा करनी चाहिये और जो पुरुष के आश्रितहैं उनकी परीक्षा प्रकृति तथा विकृति के द्वारा करनी चाहिये ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्रप्रकृतिर्जातिप्रसक्ताकुलप्रसक्ता चदेशानुपातिनीच कालानुपाति नीचवयोऽनुपातिनीचप्रत्यात्मनि यताचेति । एतावज्जातिकुलदे शकालवयःप्रत्यात्मनियताहि ते षांतेषांपुरुषाणांतेतेभावविशेषाभ वन्ति ॥ ३ ॥

इन में से प्रकृति जाति के आश्रित कुल के आश्रित देश के अनुसार होनेवाली काल के अनुसार होनेवाली अवस्था के अनुसार होनेवाली तथा प्रतिआत्मा में नियत होती है क्योंकि जाति कुल देश काल वय तथा प्रत्येक आत्मा के द्वारा नियत होकर प्रत्येक पुरुषके प्रत्येक भाव की विशेषता होती है ॥३॥

विकृतिःपुनर्लक्षणनिमित्ताचलक्ष्य निमित्ताच निमित्तानुरूपाच। तत्र लक्षणनिमित्तानामसायस्याःशरी रेलक्षणान्येवहेतुभूतानिभवन्ति । लक्षणानिहिकानिचिच्छरीरोपनि बद्धानिभवन्ति। यानिहि तस्मिं स्तस्मिंस्तत्राधिष्ठानमासाद्यतांतां विकृतिमुत्पादयन्ति ॥ ४ ॥

विकृति लक्षणनिमित्ता लक्ष्यनिमित्ता तथा निमित्तानुरूपा होती है लक्षणनिमित्ता विकृति वह कहलाती है जिसके शरीरमें हुये लक्षणही हेतु होते हैं क्योंकि शरीर में कुछ लक्षण ऐसे होते हैं जो समय समयपर शरीर में उत्पन्न होकर विकारों को उत्पन्न करते हैं ॥ ४ ॥

लक्ष्यनिमित्तातुसायस्याउपलभ्य तेनिमित्तंयथोक्तंनिदानेषु ॥ ५ ॥

लक्ष्यनिमित्त विकृति वह कहलाती है जिसका हेतु निदानमें कहाहुआ पाया जाता है ॥ ५ ॥

निमित्तानुरूपातुनिमित्तार्थानुका रिणीयातामनिमित्तांनिमित्तमायु षःप्रमाणज्ञानस्येच्छन्तिभिषजोभू यश्चायुषःक्षयनिमित्तांप्रेतालिङ्गानु रूपांयामायुषोऽन्तर्गतस्यज्ञानार्थमु पदिशन्तिधीराः ॥ ६ ॥

निमित्तानुरूपा विकृति वह कहलाती है जो निमित्तके प्रयोजनको सिद्ध करती है इस विकृतिका कोई निमित्त नहीं मालूम होता वैद्यलोग इस विकृतिको आयुका प्रमाण जानने का निमित्त मानते हैं और धीर लोग अन्तर्गत आयु के जानने के लिये प्रेतों के लक्षणों के अनुरूप तथा आयु के क्षय की निमित्तरूप इस विकृति का उपदेश करते हैं ॥ ६ ॥

यामधिकृत्यपुरुषसंश्रयाणिमुमूर्ष तांलक्षणानिउपदेक्ष्यामः । इत्यु देशः । तद्विस्तरेणानुव्याख्या स्यामः ॥ ७ ॥

इस विकृति का अवलम्बन करके मुमूर्षु(जो मरनेचाहताहो) लोगों के पुरुषाश्रित पुरुषों में होनेवाले) लक्षण उपदेश किये जाते हैं यहां संक्षेप से यह विषय कहागया है आगे विस्तारपूर्वक कहा जाता है ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्रादितएववर्णाधिकारस्तद्यथा—कृष्णःकृष्णश्यामःश्यामावदातोऽवदातश्चइतिप्रकृतिवर्णाः शरीरस्य ॥ ८ ॥

उन लक्षणोंमें से पहिले वर्णका अधिकार कहा जाताहै जैसे कृष्ण (काला) कृष्ण श्याम कृष्णावदात (गोहुआरंग) तथा अवदात (गौरवर्ण) यह शरीरके स्वाभाविक वर्ण हैं ॥ ८ ॥

यांश्चापरानुपेक्षमाणोविद्यादनूकतोऽन्यथावापिनिर्दिश्यमानांस्तज्ज्ञैः ॥ ६ ॥

इन के सिवाय अन्य जो वर्ण देखने से जानेजायँ तथा तिस के जानने वालों से जो निर्देश किये जावैं उसे स्वाभाविक जानना चाहिये ॥ ९ ॥

नीलश्यामताम्रहरितशुक्लाश्चवर्णाः शरीरस्यवैकारिकाभवन्ति । यांश्चापरानुपेक्षमाणोविद्यात्प्राग्विकृतानभूत्वोत्पन्नानितिप्रकृतिविकृतिवर्णाभवन्त्युक्ताःशरीरस्य ॥ १० ॥

नील श्याम ताम्र हरित तथा शुक्ल यह शरीर के वैकारिक वर्ण हैं जो वर्ण शरीर के जन्ममें न हो औ बीच में उत्पन्न होजाय उसे भी अस्वाभाविक जानना चाहिये इसप्रकार शरीर के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक वर्ण कहे गये ॥ १० ॥

तत्रप्रकृतिवर्णोऽर्द्धशरीरेविकृतिवर्णोऽर्द्धशरीरेद्वावपिवर्णौमर्य्यादाविभक्तौदृष्ट्वायद्येनंसव्यदक्षिणविभागेनयद्येवंपूर्वपश्चिमविभागेनयद्युत्तराधरविभागेनयद्यन्तर्बहिर्विभागेणआतुरस्यारिष्टमितिविद्यात् ॥ ११ ॥

जो सीमा (हद)के अनुसार आधे शरीर में स्वाभाविक तथा आधे शरीरमें अस्वाभाविक वर्ण विभक्तहो अर्थात् यदि दहिने तथा बांयें भागमें आगे तथा पीछे के भागमें ऊपर तथा नीचे के भागमें और बाहर तथा भीतर के भागमें स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक वर्ण का विभाग देखाजाय तो रोगी को अरिष्ट(जिस लक्षण के होनेसे मनुष्य मरजाताहै) हुआ जानना चाहिये ॥ ११ ॥

एवमेववर्णभेदोमुखेऽप्यन्यतावर्त्तमानोमरणायभवति ॥ १२ ॥

इसी प्रकार यदि मुखमें भी वर्ण का भेद होय तो रोगीकी मृत्यु होजातीहै ॥ १२ ॥

वर्णभेदेनग्लानिहर्षरौक्ष्यस्नेहाव्याख्याताः ॥ १३ ॥

वर्णभेदके वर्णन से ग्लानि, हर्ष, रूक्षता तथा स्नेहभेद का भी वर्णन कियागया जानना चाहिये अर्थात् शरीरके एक भाग में ग्लानि तथा एक भागमें हर्ष एक भाग रूक्षता तथा एक भागमें स्नेह होय तो रोगीकी मृत्यु होगी यह जानलेना चाहिये ॥ १३ ॥

तथापिप्लुव्यंगतिलकालकपिडकानामन्यतमस्याननेजन्मातुरस्यैवमेवअप्रशस्तंविद्यात् ॥ १४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लहसुन व्यंग तिल तथा फुंसी इनमें से कोई भी जो रोगीके मुखमें उत्पन्न हों तो अरिष्ट हुआ जानना चाहिये ॥ १४ ॥

नखनयनवदनमूत्रपुरीषहस्तपादौ ष्ठादिष्वपिच वैकारिकोक्तानां वर्णगामन्यतमस्यप्रादुर्भावोहीनबलवर्णेन्द्रियेषुलक्षणमायुषःक्षयस्यभवति। यच्चान्यदपिकिञ्चिद्वर्णवैकृतमभूतपूर्वंसहसोत्पद्येतानिमित्तमेववर्द्धमानस्यातुरस्यतच्चारिष्टमितिवर्णाधिकारः ॥ १५ ॥

नख, नेत्र, मुख, मूत्र, विष्ठा, हाथ, पैर, तथा ओष्ठ आदि अङ्गों में जो अस्वाभाविक वर्णों में से कोई वर्ण प्रकट होय और बल, वर्ण तथा इन्द्रिय की हीनता होगई होय तो रोगी की मृत्यु होगी यह जानना चाहिये इस के सिवाय जो अन्य कोई अपूर्व अस्वाभाविक वर्ण सहसा विना कारणकेही उत्पन्न होजाय और रोगी क्षीण होताजाय तो रोगी की मृत्यु होनेवाली है यह जानना चाहिये इस प्रकार वर्णका अधिकार कहागया ॥ १५ ॥

स्वराधिकारः।

स्वराधिकारस्तुहंसक्रौञ्चनेमिदुन्दुभिकलविंककाककपोतझर्झरानुकराःप्रकृतिस्वराः। यांश्चापरानुपेक्षमाणोऽपिविद्यादनूकतोऽन्यथा वापिनिर्दिश्यमानांस्तज्ज्ञैः॥१६॥

अब स्वराधिकार कहाजाता है जैसे हंस, क्रौञ्च (कराकुल) नेमि (रथके पहियेकी धार) नगाड़ा, गौरैया, काक, कबूतर तथा झर्झर (एक तरह का बाजा) इनके शब्दों के सदृश स्वरको स्वाभाविक जानना चाहिये इनके सिवाय अन्य जो कोई शब्द स्वरके जाननेवाले कहैं उसके समान स्वरको भी स्वाभाविकही जानना चाहिये और स्वाभाविक स्वरों के समान जो स्वरहैं उनको भी स्वाभाविकही जानना चाहिये ॥ १६ ॥

एडकग्रस्ताव्यक्तगद्गदक्षामदीनानुकीर्णास्तु आतुराणांस्वरावैकारिकाः। यांश्चापरानुपेक्षमाणोऽपिविद्यात्प्राग्विकृतानभूत्वोत्पन्नानितिप्रकृतिविकृतिस्वराव्याख्याताः॥१७॥

भेंड़के शब्द के समान अप्रकट, गद्गद, क्षीण, दीनतायुक्त तथा फटा हुआ स्वर अस्वाभाविक कहाजाता है और इसीप्रकार के अन्यस्वर भी अस्वाभाविक होते हैं और पहिले के स्वरकी अपेक्षा जो कोई अपूर्व स्वर उत्पन्न होजाय उसे भी अस्वाभाविक जानना चाहिये इसप्रकार स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक स्वर कहेगये ॥ १७ ॥

तत्रप्रकृतिवैकारिकाणांस्वराणामाशुभिनिर्वृत्तिः स्वरानेकत्वमेकस्य चानेकत्वमप्रशस्तमितिस्वराधिकारः इतिवर्णस्वराधिकारौयथावदुक्तौ मुमूर्षतांज्ञानार्थमिति ॥ १८ ॥

स्वाभाविक, अस्वाभाविक स्वरोंका बहुत शीघ्र उत्पन्न होजाना एक स्वरके अनेक प्रकार के स्वर होजाना तथा अनेक प्रकारके स्वर होना यह अरिष्ट लक्षण हैं इस प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र मरने वाले पुरुषों की आयुके जानने के लिये स्वर तथा वर्णका अधिकार यथावत् कहागया ॥ १८ ॥

तत्रश्लोकाः।

यस्यवैकारिकोवर्णः शरीरउपजायते। अर्द्धेवायदिवाकृत्स्नेऽनिमित्तंनचनास्तिसः ॥ १६ ॥

तहां यह श्लोक हैं। जिसके आधे शरीर में अथवा सम्पूर्ण शरीरमें विना कारणकेही अस्वाभाविक वर्ण उत्पन्न होजाय वह मर जाताहै ॥ १९ ॥

नीलंवायदिवाश्यावंताम्रंवायदिवारुणम्। मुखार्द्धमन्यथावर्णो मुखार्द्धेऽरिष्टमुच्यते ॥ २० ॥

नील, धूसर, ताम्र अथवा अरुणवर्ण आधे मुखमें होजाना और आधे मुखमें स्वाभाविक वर्ण होना यह अरिष्टलक्षण हैं ॥ २० ॥

स्नेहोमुखार्द्धेसुव्यक्तोरौक्ष्यमर्द्धमुखेभृशम्। ग्लानिरर्द्धेतथाहर्षोमुखार्द्धेप्रेतलक्षणम् ॥ २१ ॥

जिसके आधे मुखमें चिकनाहट होय तथा आधे मुखमें रूखापन होय और आधे मुखमें म्लानता तथा आधे मुखमें प्रसन्नताहो वह नहीं जीता है ॥ २१ ॥

तिलकापिप्लवोव्यङ्गाराजयश्च पृथग्विधाः। आतुरस्याशुजायन्तेमुखेप्राणान्मुमुक्षतः ॥ २२ ॥

तिल, लहशुन, व्यंग तथा अनेक प्रकार की रेखा जिस रोगीके मुखमें शीघ्रही उत्पन्न होजायँ वह शीघ्रही मरजाताहै ॥ २२ ॥

पुष्पाणिनखदन्तेषु पङ्कोवादन्तसंस्थितः। चूर्णकोवापिदन्तेषुलक्षणंमरणस्यतत् ॥ २३ ॥

नख तथा दांतों में पुष्प (पुष्पकासा चिह्न) का उत्पन्न होना अथवा दांतोंमें मलया चूर्ण का उत्पन्न होना मृत्युका लक्षणहै ॥ २३ ॥

ओष्ठयोःपादयोःपाण्योरक्ष्णोर्मूत्रपुरीषयोः। नखेष्वपिचवैवर्ण्यमेतत्क्षीणबलेऽन्तकृत् ॥ २४ ॥

बलके क्षीण होजाने पर ओष्ठ, पैर, हाथ, नेत्र, मूत्र, विष्ठा तथा नखोंके वर्णका बदल जाना मृत्युका लक्षणहै ॥ २४ ॥

यस्यनीलावुभावोष्ठौपक्वजाम्बवसन्निभौ। मुमूर्षुरितितंविद्यान्नरोधीरोगतायुषम् ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके दोनों ओष्ठ पकी जामुन के समान नीले होजायँ उसको बुद्धिमान् पुरुष गतायु जानै ॥ २५ ॥

एकोवायदिवानेकोयस्यवैकारिकःस्वरः। सहसोत्पद्यतेजन्तोर्हीयमानस्यनास्तिसः ॥ २६ ॥

जिस क्षीणपुरुष के एकाएकी एक प्रकार का अथवा अनेक प्रकारका अस्वाभाविक स्वर उत्पन्न होजाय वह नहीं जीताहै ॥ २६ ॥

यच्चान्यदपिकिंचित्स्याद्वैकृतंस्वरवर्णयोः। बलमांसविहीनस्यतत्सर्वंमरणोदयम् ॥ २७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके सिवाय क्षीण बल तथा मांस वाले जिस पुरुष के स्वर तथा वर्णके विकार की उत्पत्तिहो वह नहीं जीताहै ॥ २७ ॥

इतिवर्णस्वरावुक्तौलक्षणार्थमुमूर्षताम्। यस्तुसम्यग्विजानातिनायुर्ज्ञानेसमुह्यति ॥ २८ ॥

इति वर्णस्वरीयमिंद्रियम् ॥ १ ॥

इसप्रकार मुमूर्षु (जो मरने चाहताहो) के लक्षण जाननेकेलिये वर्ण तथा स्वरका वर्णन कियागया जो वैद्य वर्ण तथा स्वरके विषयको अच्छे प्रकारसे जानताहै वह आयुर्दाय के ज्ञानमें मोहित नहीं होताहै ॥ २८ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें वर्णस्वरीयनामप्रथमइन्द्रियाध्याय समाप्त हुआ ॥

दूसरा अध्याय ॥

पुष्पितम्।

पुष्पंयथापूर्वरूपं फलस्येहभविष्यतः। तथालिङ्गमरिष्टाख्यंपूर्वरूपमरिष्यतः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त पुष्पित नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

जैसे उत्पन्न होनेवाले फलका पुष्प पूर्वरूप होताहै उसीप्रकार मरनेवाले का अरिष्ट नाम लक्षण पूर्वरूप होताहै ॥ १ ॥

अप्येवन्तुभवेत्पुष्पंफलेनाननुबन्धियत्। फलञ्चापिभवेत्किञ्चिद्यस्यपुष्पंनपूर्वजम् ॥ २ ॥

चाहै ऐसा कोई पुष्प हो जिसमें फल न लगै और ऐसा फलहो जिसके पहिले पुष्प न हुआहो ॥ २ ॥

नत्वरिष्टस्यजातस्यनाशोऽस्तिमरणादृते। मरणञ्चापितन्नास्तियन्नारिष्टपुरःसरम् ॥ ३ ॥

परन्तु ऐसा अरिष्ट नहीं है जो मृत्युके विना निवृत्त होजाय और ऐसी मृत्युभी नहींहै जो विना अरिष्टके हो ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टञ्चाप्यसम्बुद्धमेतत्प्रज्ञापराधजम् ॥ ४ ॥

कोई कोई अज्ञानी लोग अज्ञानके कारण अरिष्ट के समान कोई लक्षण देखकर उसको अरिष्टही मानलेते हैं और कहीं कहीं यथार्थ अरिष्टको भी नहीं जानते हैं ॥ ४ ॥

ज्ञानसम्बोधनार्थन्तुलिङ्गैर्मरणवर्जनैः। पुष्पितानुपदेक्ष्यामोनरान्बहुविधाञ्छृणु ॥ ५ ॥

उनके ज्ञानके लिये मृत्युके पहिले होनेवाले लक्षणों से अनेक प्रकारके पुष्पित पुरुषों का वर्णन किया जाताहै तुम श्रवणकरो ॥ ५ ॥

नानापुष्पोपमोगन्धोयस्यवातिदिवानिशम्। पुष्पितस्यवनस्येवनानाद्रुमलतावतः ॥ ६ ॥

अनेक प्रकारके वृक्ष तथा लताओं से युक्त पुष्पितवनके समान जिस पुरुष के शरीर से सदैव अनेक प्रकारके पुष्पों कीसी सुगन्ध आवे ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तमाहुःपुष्पितं धीरानरंमरणलक्षणैः। सवैसंवत्सराद्देहंजहातीतिविनिश्चयः॥ ७॥

उस पुरुषको बुद्धिमान् लोग मृत्युके लक्षणों से पुष्पित कहते हैं वह पुरुष एक वर्षके भीतर अवश्य मरजाताहै॥ ७॥

एवमेकैकशःपुष्पैर्यस्यगन्धःसमो भवेत्।इष्टैर्वायदिवानिष्टैःसचपुष्पितउच्यते॥ ८॥

जिस पुरुषके शरीरसे दुर्गन्धित अथवा सुगन्धित एकएक पुष्पकीसी गन्ध आती है उस पुरुष को भी पुष्पित (अरिष्टलक्षण से युक्त) कहते हैं॥ ८॥

समासेनाशुभान्गन्धानेकत्वेनाथ वापुमान्।आजिघ्रेद्यस्यगात्रेषुतं विद्यात्पुष्पितंभिषक्॥ ९॥

वैद्य जिसके शरीरमें अनेक अथवा एक प्रकार की दुर्गन्धि का अनुभव करै उसको पुष्पित जानै॥ ९॥

आप्लुतानाप्लुतेकायेयस्यगन्धाःशुभाशुभाः। व्यत्यासेनानिमित्ताः स्युःसचपुष्पितउच्यते॥ १०॥

स्नान कियेहुये अथवा नहीं स्नान कियेहुये जिस पुरुषके शरीरसे किसी कारणके विना ही सुगन्धि अथवा दुर्गंधि विपर्य्यय से उत्पन्न हो उसे पुष्पित कहते हैं॥ १०॥

तद्यथाचन्दनंकुष्ठंतगरागुरुणीमधु। माल्यंमूत्रपुरीषेत्रामृतानिकुणपानिवा॥ ११॥ येचान्येविविधात्मानोगन्धाविविधयोनयः। तेऽप्यनेनानुमानेनविज्ञेयाविकृतिंगताः॥ १२॥

चन्दन, कूट, तगर, अगर, पुष्परस, माला, मूत्र, विष्ठा तथा मुर्दा और इनके सिवाय अन्य जो सुगन्धित तथा दुर्गन्धित वस्तुहैं उनकी सुगन्धि तथा दुर्गन्धि अनुमानके द्वारा जान लेनी चाहिये॥ ११। १२॥

इदञ्चाप्यतिदेशार्थंलक्षणंगन्धसंश्रयम्। वक्ष्यामोयदभिज्ञायभिषङ्मरणमादिशेत्॥ १३॥

अतिदेशके निमित्त गन्धके जानने का यह लक्षण कहाजाताहै जिसको जानकर वैद्य मृत्युको कहसकताहै॥ १३॥

वियोनिर्विंद्रुरोयस्यगन्धोगात्रेषुदृश्यते। इष्टोवायदिवानिष्टोनसजीवतितांसमाम्॥ १४॥

जिस पुरुषके शरीरसे किसी कारणके विना सुगन्धि अथवा दुर्गन्धि आनेलगै वह एक वर्षसे अधिक नहीं जीता॥ १४॥

एतावद्गन्धविज्ञानंरसज्ञानमतःपरम्। आतुराणांशरीरेषुवक्ष्यामो विधिपूर्वकम्॥ १५॥

इस प्रकार गन्धके द्वारा मृत्यु का ज्ञान कहागया इसके उपरान्त रोगियों के शरीर में रसके द्वारा मृत्यु का ज्ञान विधिपूर्वक कहा जाता है॥ १५॥

योरसःप्रकृतिस्थानांनराणांदेहस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्भवः। सएपांचरमेकालेविकारा न्भजतेद्वयम् ॥ १६ ॥

स्वस्थ मनुष्योंके शरीरमें जैसा रस होताहै वह मृत्युके समय दो प्रकारसे विकारको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

कश्चिदेवास्यवैरस्यमत्यर्थमुपपद्यते। स्वादुत्वमपरश्चापिविपुलंभजतेरसः ॥ १७॥

कोई कोई रस बहुत दुस्स्वादु होजाता है और कोई कोई रस अत्यन्त स्वादु (मधुर) होजाता है ॥ १७ ॥

तमनेनानुमानेनविद्याद्विकृतिमागतम्। मनुष्योऽथमनुष्यस्यकथंरसमवाप्नुयात् ॥ १८ ॥

मनुष्य मनुष्यके शरीरके रसको कैसे जानसकैं इस लिये कहाजाता है कि विकार को प्राप्त हुये रसको अनुमान के द्वारा जानना चाहिये ॥ १८ ॥

मक्षिकाश्चैवयूकाश्चदंशाश्चमशकैःसह। विरसादपसर्पन्तिजन्तोःकायान्मुमूर्षतः ॥ १९ ॥

जिस मुमूर्षु पुरुषके शरीरका रस दुस्स्वादु होजाता है उसके शरीरसे मक्खी, जुवें, डांस तथा मच्छर चलेजाते हैं ॥ १९ ॥

अत्यर्थरसिकंकायंकालपक्वस्यमक्षिकाः। अपिस्नातानुलिप्तस्य भृशमायान्तिसर्वशः ॥ २० ॥

और जिस मुमूर्षु पुरुषके शरीर का रस बहुत मधुर होजाताहै वह चाहे अच्छी प्रकार से उबटन लगाकर स्नान भी करै परन्तु उस के शरीरपर मक्खियां बहुत बैठती हैं ॥ २० ॥

तत्र श्लोकः।

यान्येतानिमयोक्तानिलिङ्गानिरसगन्धयोः। पुष्पितस्यनरस्यैतैःफलंमरणमादिशेत् ॥ २१ ॥

इति पुष्पितकमिंद्रियंसमाप्तम् ॥ २ ॥

तिसमें यह श्लोक है। रस तथा गन्ध के यह जो लक्षण हमने कहे उन लक्षणों से पुष्पित मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥२१॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्र में पुष्पितकनामद्वितीयइन्द्रियाध्याय समाप्तहुआ ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

परिमर्षणीयम्।

वर्णेस्वरेचगन्धेचरसेचोक्तंपृथक्पृथक्। लिङ्गंमुमूर्षतांसम्यक्स्पर्शेष्वपिनिबोधत ॥ १ ॥

इसके उपरान्त परिमर्षणीय नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

पहिले मुमूर्षु लोगोंके वर्ण, स्वर, गन्ध तथा रस में जो लक्षण होते हैं वह अलग अलग कहे गये अब स्पर्श में होनेवाले लक्षण कहे जाते हैं ॥ १ ॥

स्पर्शप्राधान्येनआतुरस्यायुषःप्रमाणविशेषंजिज्ञासुःप्रकृतिस्थेनपाणि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाकेवलमस्यशरीरंस्पृशेत्। परिमर्पयेद्वान्येन ॥ २ ॥

स्पर्श के द्वारा रोगी की आयु के प्रमाण को जानने की इच्छा करनेवाला वैद्य स्वाभाविक हाथ के द्वारा रोगीके सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करै अथवा किसी अन्य से स्पर्श करावै ॥ २ ॥

परिमृषतातुखलुआतुरशरीरमिमे भावास्तत्रतत्राववोद्धव्याः। तद्यथा—सततंस्पन्दनानांशरीरदेशानांस्तम्भः। नित्योष्मणांशीतीभावः। मृदूनांदारुणत्वम्। श्लक्ष्णानांखरत्वम्। सतामसद्भावः सन्धीनांस्रंसभ्रंशच्यवनानि। मांसशोणितयोर्वीतीभावः। दारुणत्वंस्वेदानुबन्धः स्तम्भोवायच्चान्यदपिकिञ्चिद्भृशविकृतमनिमित्तं स्यादितिलक्षणंस्पृश्यानांभावानाम्॥ ३ ॥

रोगी को स्पर्श करने में अंग अंग में यह बातें जाननी चाहिये जैसे शरीर के जो जो स्थान सदैव फरका करते हैं उनका स्तब्ध(नहीं फड़कतेहुये) होना जो सदैव उष्ण रहते हैं उनका शीत होजाना जो सदैव मृदु रहते हैं उनका भयानक होजाना जो सदैव चिकने रहते हैं उनका खुरखुरा होजाना जो सदैव वर्त्तमान रहते हैं उनका न रहना संधियों का शिथिल होजाना गिरजाना तथा गलित होजाना मांस तथा रुधिर का निस्सार होजाना दारुण होजाना निरन्तर स्वेद निकलना अथवा जकड़ जाना और अन्य अकारण विकार यह सब स्पर्श करने के योग्य स्थानों के अशुभ लक्षण हैं॥ ३ ॥

तद्व्यासतोऽनुव्याख्यास्यामः। तस्यचेत्परिमृश्यमानंपृथक्त्वेनपादजङ्घोरुस्फिगुदरपार्श्वपृष्ठपिण्डिकापाणिग्रीवाताल्वोष्ठललाटंस्विन्नंशीतंप्रस्तब्धंदारुणंवीतमांसशोणितंवास्यात्परासुरयंपुरुषोनचिरात्कालंकरिष्यतीतिविद्यात्॥ ४ ॥

अब स्पर्श करनेके योग्य अंगोंका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है यदि रोगी के अंग अलग अलग स्पर्श करनेसे पैर पिंडुली जंघा कूला उदर पसुली रीढ़ हाथ ग्रीवा तालु ओष्ठ तथा ललाट स्वेदयुक्त शीतल स्तब्ध (जकड़ाहुआ) दारुण अथवा मांस तथा रुधिर से रहित मालूम होय तो जानना चाहिये कि यह रोगी शीघ्रही मरजायगा ॥ ४ ॥

तस्यचेत्परिमृश्यमानानिपृथक्त्वेनगुल्फजानुवंक्षणगुदवृषणमेढ्रनाभ्यंसस्तनमणिकहनुस्पर्शकानासिकाकर्णाक्षिभ्रूशंखादीनिस्रस्तानिव्यस्तानिच्युतानिस्थानेभ्यःस्युःपरासुरयंपुरुषोनचिरात्कालंकरिष्यतीतिविद्यात्॥ ५ ॥

यदि रोगीके अंगोंको अलग अलग स्पर्श करने से टखने घुटने वंक्षण (जांघकीसंधि)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुदा अण्डकोश नाभि कंधे स्तन मणिक (हाथ तथा भुजाकी संधि) जाबड़ा नासिका कान नेत्र भृकुटी तथा शंख (मस्तक की हड्डी) आदिक अंग शिथिल व्यस्त (अलग अलग होगये) तथा च्युत (गिरेहुये) मालूम होयँ तो जाननाचाहिये कि यह रोगी शीघ्रही मरजायगा ॥ ५ ॥

तथास्योच्छ्वासमन्यादन्तपक्ष्मचक्षुःकेशलोमोदरनखांगुलीरालक्षयेत्। तस्यचेदुच्छ्वासेऽतिदीर्घअतिह्रस्वोवास्यात्परासुरितिविद्यात्। तस्यचेन्मन्येपरिद्दश्यमाने नस्पन्देयातांपरासुरितिविद्यात्। तस्यचेद्दन्ताःप्रतिकीर्णाश्वेतजातशर्कराःस्युःपरासुरितिविद्यात्। तस्यचेत्पक्ष्माणिजटाबद्धानिस्युःपरासुरितिविद्यात्। तस्यचेच्चक्षुषीप्रकृतिहीनेविकृतियुक्तेअभ्युत्पिण्डितेअतिप्रविष्टेअतिजिह्मेअतिविषमेअतिप्रस्रुतेअतिविमुक्तबन्धनेसततोन्मेषितेसततनिमेषितेनिमेषोन्मेषातिप्रवृत्तविभ्रान्तदृष्टिकेविपरीतदृष्टिके हीनदृष्टिकेऽव्यस्तदृष्टिकेनकुलान्धेकपोतान्धेअलातवर्णेकृष्णनीलपीतश्यावताम्रहरितहारिद्रशुक्लवैकारिकाणां वर्णानामन्यतमेनाभिसंप्लुतेवास्यातांपरासुरितिविद्यात् ॥ ६ ॥

रोगी की श्वास मन्या (गलेके पीछे की नस) दंत पलक नेत्र केश रोम उदर नख तथा अंगुली देखै यदि रोगी की श्वास बहुत अधिक अथवा बहुत हीन होय तो जानना चाहिये कि यह रोगी मरजायगा यदि रोगी के गले के पीछे के तरफ की नसैं स्पर्श करने से चलती हुई न मालूम पड़ैं तो जाननाचाहिये कि यह रोगी मरजायगा यदि रोगी के दांत मैलसे लिपे हुये श्वेत तथा शर्करायुक्त होयँ तो जानना चाहिये कि रोगी मरजायगा यदि रोगी की पलकैं जटासी बँध जायँ तो जानना चाहिये कि रोगी मरजायगा यदि रोगी के नेत्र प्रकृतिरहित विकारयुक्त बहुत निकले हुये बहुत घुसे हुये बहुत टेढ़े बहुत विषम बहुत अश्रुयुक्त बहुत शिथिल सदैव खुलेहुये सदैवबन्द बहुत अधिक खुलते हुये तथा बन्द होते हुये भ्रान्तियुक्त दृष्टिवाले विपरीतदृष्टि वाले हीनदृष्टिवाले व्याकुलदृष्टिवाले नकुलान्ध (दिन में सब पदार्थों को श्वेत देखने वाले) कपोतान्ध (दिनमें सब वस्तुओं को श्याम देखनेवाले) अंगारवर्ण और कृष्ण नील पीत धूसर ताम्र हरित हारिद्र तथा शुक्ल इनवर्णोंमें से किसी वर्ण से युक्त होयँ तो जानना चाहिये कि यह रोगी मरजायगा ॥ ६ ॥

अथास्यकेशलोमान्यायच्छेत। तस्यचेत्केशलोमान्यायम्यमानानिप्रलुच्येरन्नचेद्वेदयेत्परासुरितिविद्यात् ॥ ७ ॥

यदि रोगी के केश तथा लोम [illegible] उखाड़ने से उखड़ आवैं और रोगी को न जानपड़े तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाननाचाहिये कि रोगी मरजायगा ॥ ७ ॥

तस्यचेदुदरेशिराःप्रदृश्येरन् । श्यावताम्रनीलहारिद्रशुक्लावास्युःपरासुरितिविद्यात् ॥ ८ ॥

यदि रोगी के उदर में धूसर ताम्र नील हारिद्र (हल्दीका सा वर्ण) तथा शुक्लवर्ण नसैं दिखलाई पड़ैं तो जाननाचाहिये कि रोगी मरजायगा ॥ ८ ॥

तस्यचेन्नखावीतमांसशोणिताःपक्वजाम्बववर्णाःस्युः परासुरितिविद्यात् ॥ ६ ॥

यदि रोगी के नख मांस तथा रुधिर से हीन हों और पक्की जामुन के समान वर्ण युक्त हों तो जानना चाहिये कि रोगी मर जायगा ॥ ९ ॥

अथास्यांगुलीरायच्छेत्तस्यचेदंगुलयआयम्यमानानचेत्स्फुटेयुःपरासुरितिविद्यात् ॥ १० ॥

यदि रोगी की अँगुली चिटकानेसे न चिटकैं तो जाननाचाहिये कि रोगी मरजायगा॥१०॥

भवतिचात्र।

एतान्स्पृश्यान्बहून्भावान्यः स्पृशन्नावबुध्यते। आतुरेनससम्मोहमायुर्ज्ञानस्यगच्छति ॥ ११ ॥

इति परिमर्शनीयमिंद्रियं समाप्तम् ॥ ३ ॥

इस में यह श्लोक है जो वैद्य स्पर्श करने के योग्य इन अंगों को स्पर्श करके जानता है वह आयुर्दाय के ज्ञान में मोहित नहीं होता ॥ ११ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंपरिमर्षणीय नामतीसराइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

इन्द्रियानीकम् ।

इन्द्रियाणियथाजन्तोःपरीक्षेतविशेषवित्। ज्ञातुमिच्छन्भिषङ्मानमायुषस्तन्निबोधमे ॥ १ ॥

इसके उपरान्त इन्द्रियानीक नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

विशेषज्ञ वैद्य आयु के प्रमाण के जानने के लिये जिसप्रकार इन्द्रियों की परीक्षाकरै वह हमसे सुनो ॥ १ ॥

अनुमानात्परीक्षेतदर्शनादीनितत्त्वतः । अद्धाहिविदितंज्ञानमिन्द्रियाणामतीन्द्रियम् ॥ २ ॥

इन्द्रियों का ज्ञान अतीन्द्रिय (इन्द्रियों से नहीं जानने के योग्य) होता है इससे दर्शनादि इन्द्रियों की परीक्षा अनुमान के द्वारा करै ॥ २ ॥

स्वस्थेभ्योविकृतंयस्य ज्ञानमिन्द्रियसम्भवम् । आलक्ष्येतानिमित्तेनलक्षणंमरणस्यतत् ॥ ३ ॥

स्वस्थता की अपेक्षा जिस की इन्द्रियोंका ज्ञान किसी कारण के विनाही विकार को प्राप्तहुआ मालूम पड़ै उसकी मृत्यु होनेवाली है यह जानना चाहिये ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्तंलक्षणंसर्वमिन्द्रियेष्वशुभोद यम् । तदेवतुपुनर्भूयोविस्तरेणनि बोधत ॥ ४ ॥

यह सम्पूर्ण इन्द्रियों का अरिष्टलक्षण संक्षेप से कहा गया अब इस का विस्तार सुनो ॥ ४ ॥

घनीभूतमिवाकाशमाकाशमिवमे दिनीम् । विगीतंह्युभयंह्येतत्पश्य न्मरणमृच्छति ॥ ५ ॥

जो मनुष्य आकाश के समान पृथ्वी को शून्य देखता है और आकाश को पृथ्वी के समान पदार्थों से व्याप्त देखता है उस की मृत्यु होजाती है ॥ ५ ॥

यस्यदर्शनमायातिमारुतोऽम्बरगो चरः । अग्निर्नायातिवादीप्तस्तस्या युःक्षयमादिशेत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्य को आकाश में वायु दिखाई दे और बलती हुई अग्नि न दिखाई दे उस की आयु क्षीणहुई जाननी चाहिये ॥ ६ ॥

जलेसुविमलेजालमजालावततेत था। स्थितेगच्छतिवाद्दृष्ट्वाजीविता त्परिमुच्यते ॥ ७ ॥

जो मनुष्य वहतेहुये अथवा स्थिर निर्मल जालरहित जलमें जालदेखै वह नहीं जीता है ॥ ७ ॥

जाग्रन्पश्यतियः प्रेतान्रक्षांसिविवि धानिच। अन्यद्वाप्यद्भुतंकिंचिन्नस जीवितुमर्हति ॥ ८ ॥

जो मनुष्य जागता हुआ ही प्रेत अनेक प्रकार के राक्षस अथवा अन्य कोई अद्भुत वस्तु देखता है वह मरजाता है ॥ ८ ॥

योऽग्निंप्रकृतिवर्णस्थंनीलंपश्यति निष्प्रभम् । कृष्णंवायदिवाशुक्लंनि शांवसतिसप्तमीम् ॥ ९ ॥

जो मनुष्य स्वाभाविक अग्नि को नील प्रभारहित कृष्ण अथवा श्वेत देखता है वह सातदिन के वाद मरजाता है ॥ ९ ॥

मरीचीनसतोमेघान्मेघान्वाप्यसतोऽ म्बरे । विद्युतोवाविनामेघैःपश्यन्म रणमृच्छति ॥ १० ॥

जो मनुष्य मेघों के न होने में भी आकाश में मेघ देखता है और मेघोंके विना विजली को देखता वह मरजाता है ॥ १० ॥

मृन्मयीमिवयःपात्रींकृष्णाम्बरसमा वृताम् । आदित्यमीक्षतेशुद्धंचन्द्रं वानसजीवति ॥ ११ ॥

जो मनुष्य शुद्ध सूर्य्य तथा चन्द्रमा को कालेवस्त्र से ढके हुये मिट्टीके पात्रके समान देखता है उसकी मृत्यु होजाती है ॥ ११ ॥

अपर्वणियदापश्येत्सूर्य्याचन्द्रमसो ग्रहम् । अव्याधितोव्याधितोवातद न्तंतस्यजीवनम् ॥ १२ ॥

जो मनुष्य अमावस तथा पूर्णिमा के वि-ना ही सूर्य्य तथा चन्द्रमा का ग्रहण देखता है वह रोगी हो चाहै नीरोग हो अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

नक्तंसूर्य्यमहश्चन्द्रमनग्नौधूममुत्थि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तम् । अग्निवानिष्प्रभंरात्रौदृष्ट्वा मरणमृच्छति ॥ १३ ॥

जो मनुष्य रात्रि में सूर्य्य दिनमें चन्द्रमा अग्निरहित पदार्थों में धूम अथवा रात्रि में प्रभारहित अग्नि देखता है वह मरजाता है ॥ १३ ॥

प्रभावतःप्रभाहीनान्निष्प्रभावान्प्रभावतः । नराविलिङ्गान्पश्यन्तिभावान्प्राणाञ्जिहासवः ॥ १४ ॥

जो मनुष्य प्रभायुक्त पदार्थों को प्रभारहित और प्रभारहित पदार्थों को प्रभायुक्त और जिस पदार्थ के जो लक्षण हैं उन से रहित उसको देखता है वह मरजाता है ॥ १४ ॥

व्याकृतानिविवर्णानिविसंख्योपगतानिच । विनिमित्तानिपश्यन्ति रूपाण्यायुःक्षयेनराः ॥ १५ ॥

जो मनुष्य विनाकारणकेही फैले हुये विवर्ण तथा विपरीत संख्या युक्त रूपों को देखता है वह मरजाता है ॥ १५ ॥

यश्चपश्यत्यदृश्यान्वैदृश्यान्यश्चनपश्यति । तावुभौपश्यतःक्षिप्रंयमक्षयमसंशयम् ॥ १६ ॥

जो मनुष्य अदृश्यरूपों को देखता है और जो मनुष्य दृश्यरूपों को नहीं देखता है यह दोनों प्रकारके मनुष्य बहुत शीघ्रही यमालय को देखतेहैं ॥ १६ ॥

अशब्दस्यचयः श्रोताशब्दान्यश्चनबुध्यते । द्वावप्येतौयथाप्रेतौतथाज्ञेयौविजानता ॥ १७ ॥

जो मनुष्य शब्द के विनाही शब्द सुनता है और जो मनुष्य शब्द होनेपर भी नहीं सुनता है यह दोनों प्रकार के मनुष्य मृतकों के तुल्य जानने के योग्य हैं ॥ १७ ॥

संवृत्याङ्गुलिभिः कर्णौज्वालाशब्दंयआतुरः । नशृणोतिगतासुंतंबुद्धिमान्परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

जो मनुष्य रोगी अंगुलियोंसे अपने कानों को बन्द कर के ज्वाला शब्द (कानों को बन्द करने से जो एकप्रकार का शब्द सुनाई देता है वह ज्वालाशब्द कहलाता है) नहीं सुनताहै बुद्धिमान् वैद्य उसरोगीको असाध्य जानकर उस की चिकित्सा न करै ॥ १८ ॥

विपर्य्ययेणयोविद्याद्गन्धानां साध्वसाधुताम् । नवातान्सर्वशोविद्यात्तंविद्याद्विगतायुषम् ॥ १९ ॥

जो रोगी सुगन्धि को दुर्गन्धि और दुर्गन्धि को सुगन्धि जानै अथवा गंधोंको जानही न सकै उस की मृत्यु निकटही जाननी चाहिये ॥ १९ ॥

योरसान्नविजानाति नवाजानातितत्त्वतः । मुखपाकादृतेपक्वंतमाहुःकुशलानरम् ॥ २० ॥

किसी मुखरोग के विनाही जिस रोगी को रसों का ज्ञान न हो अथवा रसों का ठीक ठीक ज्ञान न हो उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ २० ॥

उष्णाञ्छीतान्खराञ्श्लक्ष्णान्मृदूनपिचदारुणान् । स्पर्शान्स्पृष्ट्वाततोऽन्यत्वंमुमूर्षुस्तेषुमन्यते ॥ २१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस रोगीको उष्ण शीत खुर्खुरी चिकनी कोमल तथा दारुण वस्तुओं को स्पर्शकरके विपरीत ज्ञान होय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ २१ ॥

अन्तरेणतपस्तीव्रंयोगंवाविधिपूर्वकम् । इन्द्रियैरधिकंपश्यन्पञ्चत्वमधिगच्छति ॥ २२ ॥

जो मनुष्य तीव्र तप अथवा विधिपूर्वक योगके विना अतीन्द्रिय (जो इन्द्रियों से न जाना जाता हो) पदार्थों को देखता है वह अवश्य शीघ्रही मरजाता है ॥ २२ ॥

इन्द्रियाणामृतेदृष्टेरिन्द्रियार्थान्नपश्यति । विपर्य्ययेणयोविद्यात्तंविद्याद्विगतायुषम् ॥ २३ ॥

किसी दोष के विना भी जो किसी को इन्द्रियों के ज्ञानके विना विषयों का ज्ञानहो उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ २३ ॥

स्वस्थाःप्रज्ञाविपर्य्यासैरिन्द्रियार्थेषु वैकृतम् । पश्यन्तियेसबहुशस्तेषां मरणमादिशेत् ॥ २४ ॥

जो स्वस्थ मनुष्य वुद्धिके विपरीत होजाने से इन्द्रियोंसे ग्रहण करनेके योग्य पदार्थों में विकार देखतेहैं वह शीघ्रही मरजाते हैं॥२४॥

तत्रश्लोकः ।

एतदिन्द्रियविज्ञानंयःपश्यतियथा तथा । मरणंजीवितंचैतत्सभिषक्ज्ञातुमर्हति ॥ २५ ॥

इति इन्द्रियानीकमिन्द्रियं समाप्तम् ॥ ४ ॥

तिस में यह श्लोक है जो वैद्य इन्द्रियों के इस ज्ञानको यथावत् जानता है वह मरण तथा जीवन को जान सकता है ॥ २५ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंइन्द्रियानीकनामचौथाइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४ ॥

पाँचवांअध्याय ॥

पूर्वरूपीयम् ।

पूर्वरूपाण्यसाध्यानांविकाराणांपृथक्पृथक् । भिन्नाभिन्नानिवक्ष्यामो भिषजांज्ञानवृद्धये ॥ १ ॥

इसके उपरान्त पूर्वरूपीयनाम इन्द्रियाध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

वैद्योंके ज्ञानकी वृद्धि के लिये असाध्य रोगोंके भिन्न तथा अभिन्नपूर्वरूप अलग अलग कहेजाते हैं ॥ १ ॥

पूर्वरूपाणिसर्वाणिज्वरोक्तान्यतिमात्रया । यंविशन्तिविशत्येनंमृत्युर्ज्वरपुरःसरः ॥ २ ॥

निदानस्थानमें जो ज्वरके पूर्वरूप कहेगये हैं वह सव पूर्वरूप बहुत अधिकता से जिस पुरुष में प्राप्त होते हैं उसको ज्वरके साथ में मृत्यु प्राप्तहुई जाननी चाहिये ॥ २ ॥

अन्यस्यापिचरोगस्यपूर्वरूपाणियंनरम् । विशन्त्येतेनकल्पेनतस्यापिमरणंध्रुवम् ॥ ३ ॥

इसी प्रकार अन्य रोगोंके भी पूर्वरूप जिस पुरुष को प्राप्त हों उसकी भी मृत्यु अवश्य होने वाली जाननी चाहिये ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वरूपैकदेशांस्तुवक्ष्यामोऽन्यान् सुदारुणान्। येरोगाननुबध्नन्ति मृत्युर्यैरनुबध्यते ॥ ४ ॥

इसके उपरान्त पूर्वरूपों के भयंकर अंश कहेजाते हैं जो अंश रोगोंके साथ पहिले रहते हैं और मृत्यु उनके साथ रहती है ॥ ४ ॥

बलञ्चहीयतेयस्यप्रतिश्यायश्चवर्द्धते । तस्यनारीप्रसक्तस्यशोषोन्तायोपजायते ॥ ५ ॥

जिस पुरुष का बल क्षीण होताजाय और प्रतिश्याय (जुकाम) बढ़ताजाय और वह पुरुष स्त्री प्रसंग करतारहै तो उस पुरुष के शोष (तपेदिक) रोग मृत्यु के लिये उत्पन्न होता है ॥ ५ ॥

श्वभिरुष्ट्रैःखरैर्वापियातियोदक्षिणां दिशम्। स्वप्नेयक्ष्माणमासाद्यजीवितंसविमुञ्चति ॥ ६ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें कुत्ते ऊंट अथवा गधेपर चढ़के दक्षिण दिशाको जाता है उसके तुरन्त ही यक्ष्मारोग होकर प्राणों को हरता है ॥ ६ ॥

प्रेतैःसहपिबेन्मद्यंस्वप्नेयःकृष्यतेशुना। सघोरंज्वरमासाद्यनजीवेन्नच सृज्यते ॥ ७ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें प्रेतोंके साथ मद्य पीता है व कुत्तों से घसीटा जाता है वह घोर ज्वर से मृत्यु को प्राप्त होकर पैदा नहीं होता है ॥ ७ ॥

लाक्षारक्ताम्बराभं यःपश्यत्यम्बरमन्तिकात्। सरक्तपित्तमासाद्यतेनैवान्तायनीयते ॥ ८ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें आकाश को लाख के रंग से रंगेहुये वस्त्र के समान देखता है वह शीघ्रही रक्त पित्त रोगसे मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

रक्तस्रग्रक्तसर्वांगोरक्तवासामुहुर्हसन्। यःस्वप्नेह्रियतेनार्य्यासरक्तंप्राप्यसीदति ॥ ९ ॥

जो मनुष्य स्वप्न में रक्तमाला तथा रक्तवस्त्र पहिनके सम्पूर्ण शरीर में रक्तवर्ण होके वारम्बार हँसताहुआ किसी स्त्रीसे हरा जाता है वह रक्त पित्त रोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

शूलाटोपान्त्रकूजाश्चदौर्बल्यंचातिमात्रया। नखादिषुचवैवर्ण्यंगुल्मेनान्तकरोग्रहः ॥ १० ॥

जिस मनुष्य को शूल आटोप उदर की गड़गड़ाहट दुर्बलता और नखादि अंगों में विवर्णता प्राप्त होय वह मनुष्य गुल्मरोग से मरजाता है ॥ १० ॥

लताकण्टकिनीयस्यदारुणाहृदिजायते। स्वप्नेगुल्मस्तमन्तायक्रूरोविशतिमानवम् ॥ ११ ॥

स्वप्नमें जिस मनुष्य के हृदयमें कांटे युक्त लता उत्पन्न होती है वह मनुष्य गुल्मरोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

कायेऽल्पमपिसंस्पृष्टंसुभृशंयस्यदीर्य्यते। क्षतानिचनरोहन्तिकुष्ठैर्मृत्युर्हिनस्तितम् ॥ १२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस मनुष्य का शरीर साधारण वस्तु के स्पर्शसे ही फटजाता है और घाव होकर सूखता नहीं है वह मनुष्य कुष्ठ के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

नग्नस्याज्यावसिक्तस्यजुह्वतोऽग्निमनर्च्चिषम्। पद्मान्युरसिजायन्तेस्वप्नेकुष्ठैर्मरिष्यतः ॥ १३ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें नग्न होकर शरीर में घृत लगाकर ज्वालारहित अग्नि में हवन करता है और अपने हृदय में कमल उत्पन्न हुये देखता है वह कुष्ठरोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

स्नातानुलिप्तगात्रेऽपियस्मिन्गृध्नन्तिमक्षिकाः। सप्रमेहेणसंस्पर्शंप्राप्यतेनैवहन्यते ॥ १४ ॥

स्नान करके चन्दनादि सुगंधित वस्तुओं का लेप कियेहुये भी जिस मनुष्य के शरीर में मक्खियाँ बहुत बैठती हों वह प्रमेहरोग से युक्त होकर मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

स्नेहंबहुविधंस्वप्नेचण्डालैःसहयःपिबेत्। बुध्यतेसप्रमेहेणस्पृश्यतेऽन्तायमानवः ॥ १५ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें चाण्डालों के साथ अनेक प्रकारके स्नेहको पीकर बन्धन में प्राप्त होताहै वह प्रमेहरोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

ध्यानायासौतथोद्वेगोमोहश्चास्थानसम्भवः। अरतिर्बलहानिश्चमृत्युरुन्मादपूर्वकः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्य को विना कारणके ही ध्यान श्रम उद्वेग (घबड़ाहट) मोह बेचैनी और निर्बलता प्राप्त होय वह उन्मादरोग से मर जाता है ॥ १६ ॥

आहाराद्वेषिणं पश्यँल्लुप्तचित्तमुदर्दितम्। विद्याद्धीरो मुमूर्षुंतमुन्मादेनातिपातिना ॥ १७ ॥

जो मनुष्य आहार से द्वेष करताहो ज्ञान शून्यहो और उदर्द रोगसे युक्त हो वह उन्मादरोग से मरजाता है ॥ १७ ॥

क्रोधनंत्रासबहुलंसकृत्प्रहसिताननम्। मूर्च्छापिपासाबहुलंहन्त्युन्मादः शरीरिणम् ॥ १८ ॥

क्रोधी बहुत डरनेवाला बहुत हँसनेवाला और मूर्च्छा तथा तृषा से बहुत व्याकुल मनुष्य उन्माद रोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

नृत्यन्रक्षोगणैःसार्द्धंयःस्वप्नेऽम्भसिसीदति। सप्राप्यभृशमुन्मादंयातिलोकमतःपरम् ॥ १९ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें राक्षसों के साथ नृत्य करके जल में डूबता है वह उन्मादरोग से शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

असत्तमःपश्यति यः शृणोत्यप्यसतःस्वरान्। बहून्बहुविधाञ्जाग्रत्सोऽपस्मारेणबध्यते ॥ २० ॥

जो जागताहुआ मनुष्य अन्धकार के विनाही अन्धकार देखताहै और शब्दोंके विनाही अनेक प्रकारके शब्दों को सुनता है वह मृगीरोग से मृत्यु को प्राप्त होताहै ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मत्तंनृत्यन्तमाविध्यप्रेतोहरतियंनरम् । स्वप्नेहरतितंमृत्युरपस्मारपुरःसरः ॥ २१ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें उन्मत्त होकर नाचता-हुआ प्रेतोंके द्वारा बाँधकर हराजाता है वह मृगीरोग से मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

स्तुभ्येतेप्रतिबुद्धस्यहनुमन्येतथाक्षिणी । यस्यतंबहिरायामोगृहीत्वाहन्त्यसंशयम् ॥ २२ ॥

सोकर जगेहुये जिस मनुष्य के नेत्र जाबड़ा तथा गले के पीछे की नस जकड़ जाती है वह बहिरा यामनामरोगसे मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

शष्कुलीरप्यपूपान्वैस्वप्नेखादतियोनरः । सचेत्ताहक्छर्दयतिप्रतिबुद्धोनजीवति ॥ २३ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें शष्कुली (तिलकीपीठी) तथा अपूप (आहारविशेष) को खाकर जगके वैसाही वमन करता है वह शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

एतानिपूर्वरूपाणियःसम्यगवबुद्ध्यते । सएषामनुबन्धञ्चफलञ्चज्ञातुमर्हति ॥ २४ ॥

जो वैद्य इन पूर्वरूपों को अच्छेप्रकार जानता है वह इनके अनुबन्ध (बाद होनेवाले रोग) तथा फलको जानसक्ता है ॥ २४ ॥

यइमांश्चापरान्स्वप्नान्दारुणानुपलक्षयेत् । व्याधितानांविनाशायक्लेशायमहतेऽपिवा ॥ २५ ॥

जो वैद्य रोगियों का नाशकरनेवाले तथा अत्यन्त क्लेश देनेवाले इन स्वप्नों को तथा अन्य भयंकर स्वप्नों को जानता है वह अनुबन्ध तथा फलको जानसक्ता है ॥ २५ ॥

यस्योत्तमाङ्गेजायन्तेवंशगुल्मलतादयः । वयांसिचविलीयन्तेस्वप्नेमौण्ड्यमियाच्चयः ॥ २६ ॥

जो मनुष्य स्वप्नमें अपने शिरपर बाँस गुल्म तथा लतादिक उत्पन्न हुई देखता है और पक्षियों को शिरपर बैठे देखता है जो स्वप्नमें शिर मुड़ाता है ॥ २६ ॥

गृध्रोलूकश्वकाकाद्यैः स्वप्नेयःपरिवार्य्यते । रक्षःप्रेतपिशाचस्त्रीचण्डालद्रविडान्धकैः ॥ २७ ॥

जो स्वप्नमें गृद्ध उल्लू कुत्ता तथा काक आदि पशुपक्षियोंसे घेरा जाता है और राक्षस प्रेत पिशाच स्त्री चाण्डाल तथा दैत्य इनसे घेरा जाता है ॥ २७ ॥

वंशवेत्रलतापाशतृणकण्टकसङ्कटे ॥ प्रमुह्यतिहियःस्वप्नेलगतिप्रपतत्यपि ॥ २८ ॥

जो स्वप्नमें बाँस बेत लता पाश तृण तथा काँटों के झुण्ड में गिरता है, फँसता है तथा मोहित होता है ॥ २८ ॥

भूमौपांशूपधानायां वल्मीकेवाथभस्मनि । श्मशानायतनेश्वभ्रेस्वप्नेयःप्रपतत्यपि ॥ २९ ॥

जो स्वप्न में धूलियुक्त पृथ्वी बांबी भस्म श्मशान अथवा गड्ढे में गिरता है ॥ २९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलुषेऽम्भसिपङ्केच कूपेवातमसावृते। स्वप्नेमज्जतिशीघ्रेणस्रोतसाह्रियतेचयः ॥ ३० ॥

जो स्वप्न में गँदले जल कीच अथवा अन्धकारयुक्त कूप में डूबता है और जो स्वप्न में वेगयुक्त स्रोत में बहता है ॥ ३० ॥

स्नेहपानन्तथाभ्यङ्गः स्वप्नेबन्धपराजयौ। हिरण्यलाभःकलहःप्रच्छर्दनविरेचने ॥ ३१ ॥

स्वप्न में स्नेह पानकरना तैलादि लगाना बन्धन में पड़ना हारना सुवर्ण पाना कलह कै होना दस्त आना ॥ ३१ ॥

उपानद्युगनाशश्चप्रपातःपांशुचर्मणोः। हर्षःस्वप्नेप्रकुपितैःपितृभिश्चापिभर्त्सनम् ॥ ३२ ॥

जूते के जोड़े का खोजाना धूलि तथा चमड़े का गिरना प्रसन्नहोना कुपितहुये पितरों से डांटा जाना ॥ ३२ ॥

दन्तचन्द्रार्कनक्षत्रदेवतादीपचक्षुषाम्। पतनंवाविनाशोवास्वप्नेभेदोनगस्यवा ॥ ३३ ॥

दांत चन्द्रमा सूर्य्य नक्षत्र देवता दीपक तथा नेत्रों का गिरना अथवा नष्ट होजाना पर्वत का फटना ॥ ३३ ॥

रक्तपुष्पंवनंभूमिं पापकर्मालयंचिताम्। गुहान्धकारसम्बाधंस्वप्नेयःप्रविशत्यपि ॥ ३४ ॥

रक्तपुष्पों से युक्त वन पापकर्मके गृहोंसे युक्त पृथ्वी तथा अन्धकारयुक्त गुहा में प्रवेश करना ॥ ३४ ॥

रक्तमालीहसन्नुच्चैर्दिग्वासादक्षिणां दिशम्। दारुणामटवींस्वप्नेकपियुक्तःप्रयातिवा ॥ ३५ ॥

लालपुष्पों की माला पहिनकर हँसते हँसते बानरों की सवारीपर चढ़के दक्षिणदिशा में अथवा दारुणवन में जाना ३५ ॥

कषायिणामसौम्यानां नग्नानांदण्डधारिणाम्। कृष्णानांरक्तनेत्राणां स्वप्नेनेच्छन्तिदर्शनम् ॥ ३६ ॥

गेरुये वस्त्रों को पहिने हुये भयंकर स्वरूप वाले नग्न दण्डधारी कृष्णवर्ण तथा रक्त नेत्रवाले पुरुषों को देखना ॥ ३६ ॥

कृष्णापापानिराचारा दीर्घकेशनखस्तनी। विरागमाल्यवसनास्वप्नेकालनिशामता ॥ ३७ ॥

और कृष्णवर्ण पापिनी लम्बे केशवाली बड़े स्तनवाली दीर्घनखवाली निन्दित माला तथा वस्त्र पहिने हुई स्त्रीको देखना ॥ ३७ ॥

इत्यन्येदारुणाःस्वप्ना रोगीयैर्यातिपञ्चताम्। अरोगःसंशयंगत्वाकश्चिदेवविमुच्यते ॥ ३८ ॥

यह भयंकर स्वप्न यदि रोगी देखै तो मरजाय और जो नीरोग पुरुष देखै तो रोग से बहुत व्याकुल होकर बड़े कष्टसे कोई नीरोग होताहै ॥ ३८ ॥

मनोवहानांपूर्णत्वाद्दोषैरतिबलैस्त्रि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भिः। स्रोतसांदारुणान्स्वप्नान्काले पश्यत्यदारुणे ॥ ३९ ॥

अत्यन्त बलवान् वात पित्त तथा कफ इन तीनों दोषों से जब मन के लेचलनेवाले स्रोत पूर्ण होजाते हैं तब मनुष्य को भयंकर स्वप्न दिखाई देते हैं और समयपर सौम्य स्वप्न दिखाई देते हैं ॥ ३९ ॥

नातिप्रसुप्तःपुरुषः सफलानफलानपि ॥ इन्द्रियेशेनमनसास्वप्नान्पश्यत्यनेकधा ॥ ४० ॥

बहुत नहीं सोयाहुआ पुरुष इन्द्रियों के स्वामी मन के द्वारा अनेक प्रकारके सफल तथा निष्फल स्वप्नों को देखता है ॥ ४० ॥

दृष्टंश्रुतानुभूतञ्च प्रार्थितंकल्पितं तथा। भाविकंदोषजंचैव स्वप्नंसप्तविधंविदुः ॥ ४१ ॥

दृष्ट श्रुत अनुभूत प्रार्थित कल्पित भाविक (फलदेनेवाला) और दोषज यह सात प्रकारके स्वप्न होते हैं ॥ ४१ ॥

तत्रपञ्चविधंपूर्वमफलंभिषगादिशेत्। दिवास्वप्नमतिह्रस्वमतिदीर्घंच बुद्धिमान् ॥ ४२ ॥

इन में से पहिले पांच प्रकारके स्वप्न दिन का स्वप्न बहुत छोटा स्वप्न और बहुत बड़ा स्वप्न यह सब निष्फल होते हैं ॥ ४२ ॥

दृष्टःप्रथमरात्रेयः स्वप्नःसोऽल्पफलो भवेत् । नस्वपेद्यःपुनर्दृष्ट्वाससद्यः स्यान्महाफलः ॥ ४३ ॥

जो स्वप्न रात्रि के प्रथमभाग में दिखाई देता है उसका फल स्वल्प होता है जिस स्वप्न को देखकर मनुष्य फिर न सोवै वह स्वप्न महाफलदायक होता है ॥ ४३ ॥

अकल्याणमपिस्वप्नंदृष्ट्वातत्रैवयःपुनः। पश्येत्सोमंशुभाकारंतस्यविद्याच्छुभंफलम् ॥ ४४ ॥

जो मनुष्य अशुभ स्वप्न देखकर फिर उसी समय शुभाकार चन्द्रमाको देखे उसे शुभ फल प्राप्त होता है ॥ ४४ ॥

तत्रश्लोकः।

पूर्वरूपाण्यथस्वप्नान्यइमान्वेत्तिदारुणान् । नसमोहादसाध्येषुकर्माण्यारभतेभिषक् ॥ ४५ ॥

इति पूर्वरूपीयमिन्द्रियं समाप्तम् ॥ ५ ॥

तिसमें यह श्लोक है जो वैद्य पूर्वरूप तथा इन भयंकर स्वप्नोंको जानताहै वह अज्ञान से असाध्य रोगों की चिकित्सा नहीं करता है ॥ ४५ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंपूर्वरूपीय नामपांचवांइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ५ ॥

छठा अध्याय ॥

कतमानिशरीरीयम्।

कतमानिशरीराणिव्याधिमन्तिमहामुने। यानिवैद्यःपरिहरेद्येषुकर्मनसिध्यति ॥ १ ॥

इस के उपरान्तकतमानि शरीरीयनाम इन्द्रियाध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान आत्रेयजीने कहा ॥

अग्निवेश ने भगवान् आत्रेयजीसे पूछा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि हे भगवन् ऐसे कौन रोगी शरीर हैं कि जिनकी चिकित्सा वैद्य न करै और जिनकी चिकित्सा करनेसे कुछ फल नहीं प्राप्त होता है॥ १॥

इत्यात्रेयोऽग्निवेशेनप्रश्नंपृष्टःसुदुर्वचम्। आचचक्षेयथातस्मैभगवंस्तन्निबोधमे॥ २॥

अग्निवेश के इस बहुत ही कठिन प्रश्नको सुनकर भगवान् आत्रेयजीने उसको जिस प्रकारसे उत्तर दिया वह सुनो॥ २॥

यस्यवैभाषमाणस्यरुजत्यूर्ध्वमुरोभृशम्। अन्नञ्चच्यवतेभुक्तंस्थितञ्चापिनजीर्य्यति॥ ३॥

भाषण करने से जिसरोगी के हृदय में बहुत पीड़ाहो खाया हुआ अन्न गिरजाय और जो न भी गिरै तो पचैनहीं॥ ३॥

बलञ्चहीयतेयस्यतृष्णाचाभिप्रवर्द्धते। जायतेहृदिशूलञ्चतंभिषक्परिवर्जयेत्॥ ४॥

बलक्षीण होताजाय तृषा की वृद्धि होय और हृदय में शूल होय ऐसे रोगी की चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्य न करै॥ ४॥

हिक्कागम्भीरजायस्यशोणितञ्चातिसार्य्यते। नतस्मैभेषजंदद्यात्स्मरन्नात्रेयशासनम्॥ ५॥

जिस रोगी को गम्भीरजानाम हिचकी आतीहों और रुधिर के दस्त आतेहों उस रोगी की चिकित्सा आत्रेयजी की आज्ञा का स्मरण करके न करनी चाहिये॥ ५॥

आनाहश्चातिसारश्चयमेतौदुर्बलंनरम्। व्याधितंविशतोरोगौदुर्लभंतस्यजीवितम्॥ ६॥

जिस दुर्बल रोगीके अफरा तथा अतीसार यह दोनों रोग हों उस का जीना दुर्लभ है॥ ६॥

आनाहश्चैवतृष्णाचयमेतौदुर्बलंनरम्। विशतोविजहत्येनंप्राणानतिचिरान्नरम्॥ ७॥

जिस दुर्बल रोगी को अफरा तथा तृषा यह दोनों प्राप्त हों वह शीघ्रही मरजाता है॥ ७॥

ज्वरःपौर्वाह्णिकोयस्यशुष्कःकासश्चदारुणः। ज्वरोयस्यापराह्णेतुश्लेष्मकासश्चदारुणः। बलमांसविहीनस्ययथाप्रेतस्तथैवसः॥ ८॥

जिसको प्रतिदिन प्रातःकाल ज्वरआता हो सूखी खांसी आती हो और सायंकाल ज्वर व दारुण कफ के साथ खांसी आती हो और बल तथा मांस क्षीण होगया हो उसको प्रेतके समान जानना चाहिये॥ ८॥

यस्यमूत्रंपुरीषञ्चग्रथितंसम्प्रवर्त्तते। निरुष्मिणोजठरिणःश्वसनोनसजीवति॥ ९॥

जिस उदररोगी का मूत्र तथा मल ग्रंथियुक्त निकलै शरीर गरम न हो और श्वास आनेलगै वह नहीं जीता है॥ ९॥

श्वयथुर्यस्यकुक्षिस्थोहस्तपादंविस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैति। ज्ञातिसंघंससंक्लिश्यतेनरोगे णहन्यते ॥ १० ॥

जिस रोगीकी कुक्षिमें हुआ शोथ हाथ पैरों में फैलता है वह अपने कुटुम्बियों को क्लेश देकर उसी रोग से मरजाता है ॥ १० ॥

श्वयथुर्यस्यपादस्थस्तथास्रस्तेच पिण्डिके। सीदतश्चाप्युभेजंघेतं भिषक्परिवर्जयेत् ॥ ११ ॥

जिसके पैरोंमें शोथहो पिंडुलियाँ शिथिल होगई हों और दोनों जँघैं शून्य होगई हों उस रोगी की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ११ ॥

शूनहस्तंशूनपादंशूनगुह्योदरंनरम्। हीनवर्णबलाहारमौषधैर्नोपपादयेत् ॥ १२ ॥

जिस रोगी के हाथ पैर गुदा तथा उदर शून (सूजन) युक्त हों और वर्ण बल तथा आहार क्षीण होगया हो उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ १२ ॥

उरोयुक्तोबहुश्लेष्मानीलःपीतःसलोहितः। सततंच्यवतेयस्यदूरात्तं परिवर्जयेत् ॥ १३ ॥

जिस रोगी के हृदय से नीला पीला तथा रक्तवर्ण बहुत कफ सदैव गिरै उस रोगी को दूरहीसे छोड़ देना चाहिये ॥ १३ ॥

हृष्टरोमासान्द्रमूत्रःशूनःकासज्वरार्दितः। क्षीणमांसोनरोदूराद्वर्ज्यो वैद्येनजानता ॥ १४ ॥

जो रोगी रोमांच मूत्र का गाढ़ा होना शून खाँसी ज्वर तथा मांस की क्षीणता इन सब से युक्त हो उस को बुद्धिमान् वैद्य दूरही से छोड़दे ॥ १४ ॥

त्रयःप्रकुपितायस्यदोषाःकोष्ठेऽभिलक्षिताः। कृशस्यबलहीनस्य नास्तितस्यचिकित्सितम् ॥ १५ ॥

जिस दुर्वल तथा कृश रोगी के तीनों दोष कुपित होकर कष्टदायक लक्षणों को उत्पन्न करैं उसकी कोई चिकित्सा नहीं है ॥ १५ ॥

ज्वरातिसारौ शोफान्ते श्वयथुर्वा तयोःक्षये। दुर्बलस्यविशेषेणनरस्यान्तायजायते ॥ १६ ॥

जिस दुर्वल रोगी के शोफ के उपरान्त ज्वर तथा अतीसार उत्पन्न हो अथवा ज्वरातीसार के उपरान्त शोथ उत्पन्न होय वह मर जाता है ॥ १६ ॥

पाण्डूदरःकृशोऽत्यर्थंतृष्णयाभिपरिप्लुतः। डम्बरीकुपितोच्छ्वासःप्रत्याख्येयोविजानता ॥ १७ ॥

जो रोगी उदर में पांडुवर्ण अत्यन्तकृश तृषा से युक्त डम्बरी और कुपित श्वास से युक्त हो उसकी चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्य न करै ॥ १७ ॥

हनुमन्याग्रहस्तृष्णाबलह्रासोऽतिमात्रया। प्राणाश्चोरसिवर्त्तन्तेयस्य तंपरिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

जिस अत्यन्त निर्बल रोगीके जावड़े तथा गले के पीछे की नस जकड़जाय तृषा होय और प्राणवायु हृदय में ही रहै उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताम्यत्यायच्छतेशर्म न किञ्चिदपि विन्दति। क्षीणमांसबलाहारोसुमूर्षुरचिरान्नरः॥ १९॥

जो रोगी म्लानहो आयामयुक्तहो किसी प्रकार चैन न पाता हो और मांस बल तथा आहार की क्षीणता से युक्त हो वह शीघ्रही मरजाता है॥ १९॥

विरुद्धयोनयोयस्यविरुद्धोपक्रमाभृशम्। वर्द्धन्तेदारुणारोगाःशीघ्रंशीघ्रंसहन्यते॥ २०॥

जिस रोगी के परस्पर विरुद्ध कारण वाले रोग उत्पन्न हों और उनकी चिकित्सा भी परस्पर विरुद्धहों और वह भयंकर रोग शीघ्रही बढ़ें तो वह रोगी शीघ्रही मरजाता है॥ २०॥

बलंविज्ञानमारोग्यंग्रहणीमांसशोणितम्। एतानियस्यक्षीयन्तेक्षिप्रंक्षिप्रंसहन्यते॥ २१॥

जिस रोगीका बल ज्ञान आरोग्य ग्रहणी मांस तथा रुधिर शीघ्रही क्षीण होजायँ वह रोगी शीघ्रही मरजाता है॥ २१॥

विकारायस्यवर्द्धन्तेप्रकृतिःपरिहीयते। सहसासहसातस्यमृत्युर्हरतिजीवितम्॥ २२॥

जिस रोगी के विकार बढ़ते जायँ और प्रकृति एकाएकी नष्ट होजाय वह रोगी शीघ्रही मरजाता है॥ २२॥

तत्र श्लोकः

इत्येतानिशरीराणिव्याधिमन्तिविवर्जयेत्। नह्येषुधीराःपश्यन्तिसिद्धिंकाञ्चिदुपक्रमात्॥ २३॥

इति कतमानिशरीरीयमिन्द्रियं समाप्तम्॥६॥

तिसमें यह श्लोक है इन सब रोगी शरीरों की चिकित्सा न करनी चाहिये क्योंकि बुद्धिमान् लोग इनकी चिकित्सा करनेमें कोई फल की सिद्धि नहीं देखते हैं॥ २३॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंकतमा निशरीरीयनामछठाइन्द्रियाध्याय समाप्तहुआ॥ ६॥

सातवाँ अध्याय॥

पन्नरूपीयम्।

द्रष्टव्यांयस्यविजानीयात्पन्नरूपांकुमारिकाम्। प्रतिच्छायामयीमक्ष्णोर्नैनमिच्छेच्चिकित्सितुम्॥ १॥

इसके उपरान्त पन्नरूपीयनाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा॥

जिसके नेत्रोंकी पुतलियों में देखनेसे प्रतिबिम्ब न दिखांईदे उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये॥ १॥

ज्योत्स्नायामातपेदीपेसलिलादर्शयोरपि। अंगेषुविकृतायस्यछायाप्रेतस्तथैवसः॥ २॥

चाँदनी धूप दीपक जल तथा दर्पण में जिसके अंगों का प्रतिबिम्ब विकारयुक्त दिखलाई दे उसको प्रेतके समान जानना चाहिये॥ २॥

छिन्नाभिन्नाकुलाछायाहीनावाप्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धिकापिवा। नष्टातन्वीद्विधाच्छा
याविशिराविस्तृताचया ॥ ३ ॥

छिन्न भिन्न हीन अधिक नष्ट सूक्ष्म दो प्रकारकी शिर रहित तथा विस्तृत छाया॥३॥

एताश्चान्याश्चयाःकाश्चित्प्रतिच्छा
याविगर्हिताः। सर्वामुमूर्षतांज्ञेया
नचेल्लक्ष्यनिमित्तजाः ॥ ४ ॥

और इनके सिवाय अन्य निन्दित छाया यह सब छाया यदि लक्ष्य (जिस स्थान में छाया पड़तीहो) निमित्तक नहों तो मृत्यु का लक्षण जानना चाहिये ॥ ४ ॥

संस्थानेनप्रमाणेनवर्णेनप्रभयात
था। छायाविवर्त्ततेयस्यस्वप्नेऽपिप्रे
तएवसः ॥ ५ ॥

स्वप्नमें भी जिसकी छाया संस्थान प्रमाण वर्ण तथा प्रभाके द्वारा विकारयुक्तहो उसको प्रेतके समान जानना चाहिये ॥ ५ ॥

संस्थानमाकृतिर्ज्ञेयासुषमाविषमा
चया। मध्यमल्पंमहच्चोक्तंप्रमाणंत्रि
विधंनृणाम् ॥ ६ ॥

संस्थान आकृति को कहते हैं आकृति दो प्रकार की होती हैं सुषमा (बराबर) और विषमा प्रमाण तीन प्रकारका होता है मध्य अल्प और महत् ॥ ६ ॥

प्रतिप्रमाणसंस्थानाजलादर्शातपा
दिषु। छायायासाप्रतिच्छायायाच
वर्णप्रभाश्रया ॥ ७ ॥

जल तथा दर्पण आदिकों में प्रमाण तथा संस्थानके अनुसार जो छाया पड़ती है उसे प्रतिच्छाया कहते हैं और वर्ण तथा प्रभाके आश्रित जो छाया (कान्ति) उसे छाया कहते हैं ॥ ७ ॥

खादीनांपञ्चपञ्चानांछायाविविधल
क्षणाः । नाभसीनिर्मलानीला
सस्नेहासप्रभेवच ॥ ८ ॥

आकाशादिक पाँचों महाभूतों की अनेक प्रकारके लक्षणवाली पाँच छाया होती हैं आकाश की छाया निर्मल नील स्निग्ध तथा प्रभायुक्त सी होती है ॥ ८ ॥

रूक्षाश्यावारुणायातुवायवीसाहत
प्रभा । विशुद्धरक्तात्वाग्नेयीदी
प्ताभादर्शनप्रिया ॥ ९ ॥

वायुकी छाया रूखी कपिशवर्ण अरुणवर्ण तथा प्रभारहित होती है अग्नि की छाया शुद्ध रक्त दीप्त तथा देखने में प्रिय होती है ॥ ९ ॥

शुद्धवैदूर्य्यविमलासुस्निग्धाचाम्भ
सीमता । स्थिरास्निग्धाघनाश्ल
क्ष्णाश्यामाश्वेताचपार्थिवी॥१०॥

जलकी छाया शुद्ध वैडूर्यमणि के समान निर्मल तथा अत्यन्त स्निग्ध होती है पृथ्वी की छाया स्थिर स्निग्ध घनी श्लक्ष्ण श्याम तथा श्वेतवर्ण होती है ॥ १० ॥

वायवीगर्हितात्वासां चतस्रःस्युःशु
भोदयाः । वायवीतुविनाशायक्ले
शायमहतेपिवा ॥ ११ ॥

इन पाँचों प्रकारकी छायाओंमें से वायुकी छाया निन्दितहै और शेष चारो छाया सुखदायक होती हैं वायुकी छाया से मृत्यु अथ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वा महाक्लेश की प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

स्यात्तैजसीप्रभासर्वासातुसप्तविधा स्मृता। रक्तापीतासिताश्यावा ह रितापाण्डुरासिता ॥ १२ ॥

सब प्रभा तेज सम्बन्धी होती हैं यह (प्रभा) सात प्रकारकी होती हैं जैसे रक्त पीत श्वेत कपिश हरित पाँडुर तथा कृष्ण ॥ १२ ॥

तासांयाःस्युर्विकासिन्यः स्निग्धाश्चविपुलाश्चयाः। ताःशुभारूक्षमलिनाःसंक्षिप्ताश्चाशुभोदयाः ॥ १३ ॥

इनमें से जो प्रभा प्रकाशयुक्त स्निग्ध तथा विस्तीर्ण होती है वह शुभ है और जो प्रभा रूखी मलिन तथा विस्ताररहित होती है वह अशुभ होती है ॥ १३ ॥

वर्णमाक्रामतिच्छाया भास्तुवर्णप्रकाशिनी। आसन्नालक्ष्यतेछाया भाःप्रकृष्टाप्रकाशते ॥ १४ ॥

छाया और प्रभा में भेद यहहै कि छाया वर्णका आक्रमण (छिपाना) करतीहै और प्रभा वर्ण को प्रकाशित करती है छाया निकटसे लक्षित होती है और प्रभा दूरही से प्रकाशित होती है ॥ १४ ॥

नाच्छायोनाप्रभःकश्चिद्विशेषाश्चिह्नयन्तितु। नृणांशुभाशुभोत्पत्तिंकालेछायाःप्रभाश्रिताः ॥ १५ ॥

कोई भी मनुष्य छाया तथा प्रभा से शून्य नहीं होता है प्रभाके आश्रित छाया समयपर मनुष्यों के शुभाशुभ की उत्पत्ति के चिह्न को उत्पन्न करती हैं ॥ १५ ॥

कामलाक्ष्णोर्मुखंपूर्णं गण्डयोर्मांसता। सन्त्रासश्चोष्णगात्रञ्च यस्यतंपरिवर्जयेत् ॥ १६ ॥

जिसके नेत्रों में कामला (काँवर) हो मुखपूर्ण हो कपोलों में अधिकमांस हो भय मालूमहोता हो और अंगों में अधिक उष्णता होय उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ १६ ॥

उत्थाप्यमानःशयनात्प्रमोहंयातियोनरः। मुहुर्मुहुर्नसप्ताहंसजीवतिविकत्थनः ॥ १७ ॥

जो मनुष्य शय्या परसे उठाए जानेपर वारंवार मोहित होय और बहुत बकता होय वह सात दिनके भीतर मरजाता है ॥ १७ ॥

संसृष्टाव्याधयोयस्य प्रतिलोमानुलोमगाः। व्यापन्नाग्रहणीप्रायःसोऽर्द्धमासंनजीवति ॥ १८ ॥

जिसके संसृष्ट (मिलेहुये) रोग प्रतिलोमग (उलटेचलनेवाले) तथा अनुलोमग (सीधे चलनेवाले) होंय और ग्रहणी दूषित होय वह एक पक्ष के भीतर मरजाता है ॥ १८ ॥

उपद्रुतस्यरोगेणकर्षितस्याल्पमश्नतः। बहुमूत्रपुरीषंस्याद्यस्य तं परिवर्जयेत् ॥ १९ ॥

जो रोगी कृश होकर स्वल्प भोजन करता हो और उसके मूत्र तथा मल अधिक निकलता हो उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ १९ ॥

दुर्बलोबहुभुङ्क्तेयःप्राग्भुक्तादन्नमा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुरः। अल्पमूत्रपुरीषश्चयथाप्रेतस्तथैवसः॥ २०॥

जो रोगी दुर्बल होकरके भी पहिले की अपेक्षा बहुत भोजन करताहो और उसके मल तथा मूत्र स्वल्प होताहो उसको प्रेतके समान जानना चाहिये॥ २०॥

वर्द्धिष्णुगुणसम्पन्नमन्नमश्नातियो नरः। शश्वच्चबलवर्णाभ्यांहीयते नसजीवति॥ २१॥

पुष्टिकारक अन्न का भोजन करनेपर भी जिस मनुष्यका बल तथा वर्ण निरन्तर हीन होताजाय वह नहीं जीता है॥ २१॥

प्रकूजतिप्रश्वसितिशिथिलश्चातिसार्य्यते। बलहीनःपिपासार्त्तःशुष्कास्योनसजीवति॥ २२॥

जो रोगी कूजन (एकतरह का विकृतस्वर) श्वास पतले दस्त निर्बलता तृषा तथा मुख का सूखना इन लक्षणों से युक्त होय वह नहीं जीता है॥ २२॥

ह्रस्वञ्चयःप्रश्वसितिव्याविद्धंस्पन्दतेचयः। मृतमेवतमात्रेयोव्याचचक्षेपुनर्वसुः॥ २३॥

जो रोगी स्वल्प श्वास लेय और टेढ़ा होकर स्पन्दन करै भगवान् आत्रेयजी उसको मृतकके समान कहते हैं॥ २३॥

ऊर्ध्वञ्चयःप्रश्वसितिश्लेष्मणाचाविभूयते। हीनवर्णबलाहारोयोनरो नसजीवति॥ २४॥

वर्ण बल तथा आहार जिसका क्षीण होगयाहो ऐसा रोगी यदि ऊर्ध्वश्वास लेय और कफसे बहुत व्याकुल होय तो वह नहीं जीता है॥ २४॥

ऊर्ध्वाग्रेनयनेयस्यमन्येचानतकम्पने। बलहीनःपिपासार्त्तःशुष्कास्योनसजीवति॥ २५॥

जिस रोगीके नेत्र ऊपर को उठेहों गले के पीछे की नस कुछ झुकीहुई धीरे धीरे कांपती हो बल नष्ट होगयाहो तृषा बहुतहो और मुख सूख गयाहो वह नहीं जीताहै॥ २५॥

यस्यगण्डावुपचितौज्वरकासौचदारुणौ। शूलीप्रद्वेष्टिचाप्यन्नं तस्मिन्कर्म न सिद्ध्यति॥ २६॥

जिस रोगी के कपोल भरेहुये हों दारुण ज्वर तथा खांसी आतीहो शूलहो और अन्न से द्वेषहो उसकी जो चिकित्सा की जाती है वह सफल नहीं होती॥ २६॥

व्यावृत्तमूर्द्धजिह्वाक्षौभ्रुवौयस्यचविच्युते। कण्टकैश्चाचिताजिह्वा यथाप्रेतस्तथैवसः॥ २७॥

जिस रोगीके नेत्र जिह्वा तथा मस्तक उलटी भयीहो भृकुटी झुकगई हों और जिह्वा कांटों से व्याप्तहो वह प्रेतकेसमान है॥ २७॥

शेफश्चात्यर्थमुत्सिक्तंनिसृतौवृषणौभृशम्। अतश्चैवविपर्यासो विकृत्याप्रेतलक्षणम्॥ २८॥

जिस रोगीका लिंग बहुत सिकुड़ गयाहो और अण्डकोश बहुत लटक आयेहों अथवा अण्डकोश बहुत सिकुड़ गयेहों और लिंग ब-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुत लटक आयाहो उसको प्रेतके समान जानना चाहिये ॥ २८ ॥

निचितंयस्यमांसंस्यात्त्वगस्थिचैव दृश्यते। क्षीणस्यानश्नतस्तस्यमासमायुःपरंभवेत् ॥ २९ ॥

जिस रोगीका मांस क्षीण होगयाहो त्वचा हड्डियोंमें चपक गईहो और भोजन करने की सामर्थ्य न रहीहो वह महीने भरसे अधिक नहीं जीता है ॥ २९ ॥

तत्र श्लोकः।

इदंलिङ्गमरिष्टाख्यमनेकमभिजज्ञिवान्। आयुर्वेदविदित्याख्यां लभतेकुशलोनरः ॥ ३० ॥

इति पूर्वरूपीयमिन्द्रियं समाप्तम् ॥ ७ ॥

तिसमें यह श्लोकहै। अरिष्ट नामक अनेक प्रकारके इनलक्षणोंको जो चतुर मनुष्य जानता है वही आयुर्वेदवित् नामको प्राप्त होताहै॥३०॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें पूर्वरूपीयनाम सातवाँइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय॥

अवाक्शिरसीयम्।

अवाक्शिरावाजिह्मावायस्यवा विशिराभवेत्। जन्तोरूपप्रतिच्छाया नैनमिच्छेच्चिकित्सितुम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अवाक्शिरसीयनाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

जिस रोगी की प्रतिच्छाया (परछाहीं) नीचे को शिरवाली टेढ़ी तथा शिर रहितहो उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ १ ॥

जटीभूतानिपक्ष्माणिदृष्टिश्चापि निगृह्यते। यस्यजन्तोर्नतंधीरो भेषजेनोपपादयेत् ॥ २ ॥

जिस पुरुष की पलकों की बिन्नियों में जटासी बँधगईहो और दृष्टिन्यून होगईहो उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ २ ॥

यस्यशूनानिवर्त्मानिनसमायान्ति शुष्यतः। चक्षुषीचोपदह्येतेयथा प्रेतस्तथैवसः ॥ ३ ॥

जिस शुष्क रोगीकी शोथयुक्त पलकें बन्द न हों और नेत्रों में मैल भराहो उसको प्रेतके समान जानना चाहिये ॥ ३ ॥

भ्रुवोर्वायदिवामूर्ध्निसीमन्तावर्त्मकान्बहून्। अपूर्वानकृतान्व्यक्तान्दृष्ट्वामरणमादिशेत् ॥ ४ ॥

जिस रोगीकी भृकुटियों में अथवा मस्तक में अपूर्व तथा अकृत (नहीं बनाया गया) जूड़ा तथा बालोंका चक्रसा दिखाईदे उसकी मृत्यु होजाती है ॥ ४ ॥

त्र्यहमेतेनजीवन्तिलक्षणेनातुरा नराः। अरोगाणांपुनस्त्वेतत्षड्रात्रंपरमुच्यते ॥ ५ ॥

जिस रोगी के यह पूर्वोक्त लक्षणहों वह तीनही दिन जीता है और जो नीरोग पुरुषके यह लक्षणहों वह छः दिन जीता है ॥ ५ ॥

आयम्योत्पाटितान्केशान्योनरोना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वबुध्यते। अनातुरोवारोगीवाषड्रात्रंनातिवर्त्तते॥ ६॥

जिस मनुष्यके बालों को उखाड़ने से उसको न मालूमदे वह रोगीहो वा नीरोगहो छः दिनसे अधिक नहीं जीता है॥ ६॥

यस्यकेशानिरभ्यङ्गाद्दृश्यन्तेऽभ्यक्तसन्निभाः। उपरुद्धायुषंज्ञात्वातंधीरः परिवर्जयेत्॥ ७॥

जिसके बाल तैलके विना लगायेभी तैल लगे से मालूमहों उसको मरणासन्न जानकर उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये॥ ७॥

ग्लायतोनासिकावंशःपृथुत्वंयस्यगच्छति। अशूनःशूनसङ्काशःप्रत्याख्येयःसजानता॥ ८॥

जिसकी नासिका का बाँसा बड़ा मालूमहो और जिसके शोथ न होनेपर भी शोथ मालूमहो बुद्धिमान् वैद्य उसकी चिकित्सा न करै॥ ८॥

अत्यर्थविवृतायस्ययस्यचात्यर्थसंवृता। जिह्मावापरिशुष्कावानासिकानसजीवति॥ ९॥

जिस रोगीकी नासिका बहुत खुलीहुई अथवा बहुत बन्दहो और टेढ़ी अथवा सूखीहुई हो वह नहीं जीता है॥ ९॥

मुखंशब्दंस्रवावोष्ठौशुक्लश्यावातिलोहितौ। विकृतौयस्यवानीलौनसरोगाद्विमुच्यते॥ १०॥

जिस रोगीके कान मुख तथा ओष्ठ शुक्ल कपिश तथा रक्तवर्णहों अथवा नीलवर्ण हों वह रोगसे नहीं छूटता है॥ १०॥

अस्थिश्वेताद्विजायस्यपुष्पिताःपङ्कसंवृताः। विकृत्यानसरोगंतंविहायारोग्यमश्नुते॥ ११॥

जिस रोगीके दांत विकारसे हड्डियोंके समान श्वेत होजायँ पुष्पके समान चिह्नसेयुक्त होजायँ और कीच के समान मैलसेयुक्त होजायँ वह रोगी अच्छा नहीं होता॥ ११॥

स्तब्धानिश्चेतनागुर्वीकण्टकोपचिताभृशम्। श्यावाशुष्काथवाशूनाप्रेतजिह्वाविसर्पिणी॥ १२॥

जिस रोगीकी जिह्वा जकड़ी हुईसी शून्य भारीकांटों सेयुक्त कपिश वर्ण शुष्क विसर्पसे (जहरबात से) युक्त अथवा सूजनसे युक्तहो वह प्रेतजिह्वा है अर्थात् नहीं जीताहै॥ १२॥

दीर्घमुच्छ्वस्ययोह्रस्वंनरोनिश्वस्यताम्यति। उपरुद्धायुषंज्ञात्वातंधीरःपरिवर्जयेत्॥ १३॥

जो रोगी जोरसे श्वास लेकर और धीरेसे श्वास छोड़कर व्याकुल होताहै उसको गतायु जानकर उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये॥ १३॥

हस्तौपादौचमन्येचतालुचैवातिशीतलम्। भवत्यायुःक्षयेक्रूरमथवापिभवेन्मृदु॥ १४॥

आयुके क्षीण होजानेपर मनुष्यके हाथ पैर गलेके पीछेकी नस तथा तालु यह सब अंग बहुत शीतल होजाते हैं कठोर होजाते हैं अथवा बहुत कोमल होजाते हैं॥ १४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घट्टयन्जानुनाजानुपादावुद्धम्यपातयन्। योऽप्यास्यतिमुहुर्वक्रमातुरोनसजीवति॥ १५॥

जो रोगी घुटने से घुटने को रगड़ता है पैर उठा उठाकर पटकता है और वारंवार मुख को बिगाड़ता है वह नहीं जीताहै॥ १५॥

दन्तैश्छिन्दन्नखाग्राणिनखैश्छिन्दन्शिरोरुहान्। काष्ठेनभूमिंविलिखन्नरोगात्परिमुच्यते॥ १६॥

जो रोगी दांतों से नखों को काटताहै नखों से शिरके बालों को नोचता है और काष्ठ से पृथ्वीपर लिखताहै वह रोगसे नहीं छूटता१६॥

दन्तान्खादतियोजाग्रदसाम्नाविरुदन्हसन्। विजानातिनचेद्दुःखंनसरोगाद्विमुच्यते॥ १७॥

जो रोगी जागतेहीमें दांतों को कड़कड़ाता है और अशान्ति से रोता है हँसता है व उसी समयमें यदि किसी प्रकार का दुःखहो उसको नहीं जानता है वह रोगसे नहीं छूटता॥१७॥

मुहुर्हसन्मुहुःक्ष्वेडन्शय्यांपादेनहन्तियः। उच्चैश्छिद्राणिविमृशन्नातुरोनसजीवति॥ १८॥

जो रोगी वारंवार हँसता हुआ केलि करताहै व पैरों से शय्या को ठोकर मारता है और ऊंचे छिद्रों को स्पर्श करता है वह नहीं जीता॥ १८॥

यैर्विन्दतिपुराभावैःसमेतैःपरमांरतिम्। तैरेवारममाणस्यग्लास्नोर्मरणमादिशेत्॥ १९॥

जिस रोगी को पहिले जिन पदार्थों से अत्यन्त प्रीति होतीथी उन्हीं पदार्थों से प्रीति न मालूमहो किन्तु ग्लानि मालूमहो उसकी मृत्यु जाननी चाहिये॥ १९॥

नबिभर्तिशिरोग्रीवांनपृष्ठंभारमात्मनः। नहनूपिण्डमास्यस्थमातुरस्यमुमूर्षतः॥ २०॥

जो रोगी शिर ग्रीवा पीठ तथा अपने शरीर के भार को धारण न करसकै और जिसका जावड़ा मुखमें रक्खेहुये ग्रास को न धारण करसकै उसकी मृत्यु जाननी चाहिये॥ २०॥

सहसाज्वरसन्तापस्तृष्णामूर्च्छाबलक्षयः। विश्लेषणञ्चसन्धीनांमुमूर्षोरुपजायते॥ २१॥

जिस मनुष्यकी मृत्यु निकट होती है उसको एकाएकी ज्वरका संताप तृषा मूर्च्छा निर्बलता तथा संधियों का ढीला होना यह सब लक्षण प्राप्त होते हैं॥ २१॥

गोसर्गेवदनाद्यस्यस्वेदःप्रच्यवतेभृशम्। लेपज्वरोपतप्तस्यदुर्लभंतस्यजीवितम्॥ २२॥

जिस कफज्वरवाले के मुखमें प्रातःकाल बहुतसा पसीना निकलै उसका जीना दुर्लभही होताहै॥ २२॥

नोपैतिकण्ठमाहारोजिह्वाकण्ठमुपैति च। आयुष्यन्तंगतेजन्तोर्बलञ्चपरिहीयते॥ २३॥

आयु के क्षीण होजाने पर मनुष्य के गले से भोजन नहीं उतरता है जिह्वा गले में धँस जाती है और बलहीन हो जाताहै॥ २३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिरोविक्षिपतेकृच्छ्रान्मुञ्चयित्वाप्र पाणिकौ। ललाटप्रस्रुतस्वेदोमुमूर्षुः श्लथबन्धनः॥ २४॥

जो रोगी कलाइयों को चलायमान करके बड़े कष्ट से शिर को चलायमान करै और जिस के मत्थेपर पसीना आवे तथा सन्धियां ढीली होजायँ उस की मृत्यु निकट जाननी चाहिये॥ २४॥

अत्रश्लोकः।

इमानि लिङ्गानि नरेषु बुद्धिमा न्विभावयेतावहितोमुहुर्मुहुः। क्ष णेनभूत्वाह्युपयान्तिकानिचिन्न चाफलंलिङ्गमिहास्तिकिञ्चन २५॥

इत्यवाक्शिरसीयमिंद्रियंसमाप्तम्॥

इस में यह श्लोक है। बुद्धिमान् वैद्य इन पूर्वोक्त लक्षणों को सावधान होकर रोगी में देखता रहै क्योंकि इन लक्षणों में से कोई कोई लक्षण उत्पन्न होकर क्षण भर मेंही नष्ट हो जाता है और इन लक्षणों में कोईभी लक्षण निष्फल नहीं है॥ २५॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें अवाक्शिरसीयनाम आठवां इन्द्रिया-ध्यायसमाप्त हुआ॥ ८॥

नवां अध्याय॥

यस्यश्यावनिमित्तीयम्।

यस्यश्यावेपरिध्वस्तेहारितेचापिद र्शने। आपन्नोव्याधिरन्तायज्ञेयस्त स्यविजानता॥ १॥

इस के उपरान्त यस्यश्यावनिमित्तीयनाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा—

जिस रोग में रोगी के नेत्र कपिशवर्ण परिध्वस्त (गिरेहुये) तथा हरितवर्ण होजायँ वह उसी रोगमें मृत्यु को प्राप्त होताहै॥ १॥

निःसंज्ञःपरिशुष्कास्यःसंविद्धोव्या धिभिश्चयः। उपरुद्धायुषंज्ञात्वातं धीरःपरिवर्जयेत्॥ २॥

जो रोगी रोगों से संविद्ध संज्ञारहित तथा शुष्कमुख (जिस का मुख सूखाहुआ हो) उस को गतायु जानकर बुद्धिमान् वैद्य उस की चिकित्सा न करै॥ २॥

हरिताश्चशिरायस्यलोमकूपाश्चसं वृताः। सोऽम्लाभिलाषीपुरुषःपि त्तान्मरणमश्नुते॥ ३॥

जिस की नसैं हरी होगईहों और रोमकूप बन्द होगये हों वह, पुरुष यदि बहुत खटाई खाने की इच्छा करै तो पित्तजरोगसे उसकी मृत्यु हो जाती है॥ ३॥

शरीरान्ताश्चशोभन्तेशरीरञ्चोपशु ष्यति। बलञ्चहीयतेयस्यराजयक्ष्मा हिनस्तितम्॥ ४॥

जिस के शरीर के अन्त के भाग (हाथ पैर आदिक) शोभित होतेहों और शरीर शुष्क होगया हो तथा बल क्षीण हो गयाहो वह राजयक्ष्मा रोगसे मृत्युको प्राप्तहोताहै॥४॥

अंसाभितापोहिक्काचच्छर्दनंशोणि तस्यच। आनाहःपार्श्वशूलञ्चभव त्यन्तायशोषिणः॥ ५॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कन्धों का जलना, हिचकी, रुधिरकावमन अफरा तथा पशुलियों में पीड़ा यह लक्षण जिस शोषरोगी के हों वह नहीं जीता है॥ ५॥

वातव्याधिरपस्मारीकुष्ठीशोफीत थोदरी । गुल्मीचमधुमेहीचराजय क्ष्मीचयोनरः ॥ ६ ॥

वातव्याधि, मिरगी, कुष्ठ, शोथ, उदर, गुल्म, मधुमेह तथा राजयक्ष्मा वाले रोगियों को॥ ६॥

अचिकित्स्याभवन्त्येतेबलमांसक्षये सति। अन्येष्वपिविकारेषुतान्भिष क्परिवर्जयेत् ॥ ७ ॥

बल तथा मांस के क्षीण हो जाने पर तथा अन्यरोगों के भी होने पर वैद्य चिकित्सा न करै ॥ ७॥

विरेचनहृतानाहोयस्तृष्णानुगतो नरः विरक्तःपुनराध्मातियथाप्रेतस्त थैवसः ॥ ८ ॥

विरेचन (जुल्लाब) के द्वारा अफरा को दूर करने पर भी विरेचन के उपरान्त जो मनुष्य फिर तृषा तथा अफरा से युक्त होताहै उस को प्रेत के समान जानना चाहिये॥ ८॥

पेयंपातुंनशक्नोतिकण्ठस्यचमुखस्य च । उरसश्चविबद्धत्वाद्योनरोनस जीवति ॥ ९ ॥

जो रोगी कण्ठ मुख तथा हृदय के बँध जाने से पीने के योग्य वस्तुओं को पी नहीं सक्ता है वह मरजाता है॥ ९॥

स्वरस्यदुर्बलीभावं हानिंचबलवर्ण योः। रोगवृद्धिमयुक्त्याचदृष्ट्वामरण मादिशेत् ॥ १० ॥

जिस रोगी का स्वर बल तथा वर्णहीन होजाय और रोगकी वृद्धि होतीजाय उसकी मृत्यु जाननी चाहिये॥ १० ॥

ऊर्द्ध्वश्वासंगतोष्माणंशूलोपहतवं क्षणम् । शर्मचानधिगच्छन्तंबुद्धि मान्परिवर्जयेत् ॥ ११ ॥

जिस के ऊर्ध्वश्वास चलती हो शरीर में ऊष्मा न रही हो वंक्षण (जांघकी सन्धि) में शूल होता हो और चैन न पड़ती हो उस रोगी की बुद्धिमान् वैद्य चिकित्सा न करै॥ ११ ॥

अपस्वरंभाषमाणं प्राप्तंमरणमात्म नः। श्रोतारश्चाप्यशब्दस्यदूरतःप रिवर्जयेत् ॥ १२ ॥

जो रोगी बिगड़ेहुये स्वर से मेरा मरण प्राप्त हुआ यह कहता हो अथवा अकस्मात् जिस को यह शब्द सुनाई देताहो उस रोगी को दूरहीसे छोड़दे अर्थात् उस की चिकित्सा न करै॥ १२॥

यंनरंसहसारोगोदुर्बलंपरिमुञ्चति । संशयप्राप्तमात्रेयोजीवितंतस्यम न्यते ॥ १३ ॥

जिस दुर्बल रोगीका रोग एकाएकी शान्त होजाय भगवान् आत्रेयजी के मत से उस के जीने में सन्देह है॥ १३॥

अथचेज्ज्ञातयस्तस्ययाचेरन्प्रणिपा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ततः । रसेनाद्यादितिब्रूयान्नास्मैद द्याद्विशोधनम् ॥ १४ ॥

यदि उस रोगी के घरवाले वैद्य से बहुत नम्रतापूर्व्वक उस की चिकित्सा करने की प्रार्थना करैं तो वैद्य रस के साथ भोजन करने की आज्ञा उस को दे परन्तु किसी प्रकार का विशोधन (जुल्लाव आदि) न दे ॥ १४ ॥

मासेनचेन्नदृश्येतविशेषस्तस्यशोभनः । रसैश्चान्यैर्बहुविधैर्दुर्लभंतस्य जीवितम् ॥ १५ ॥

यदि एक महीने के भीतर अनेक प्रकार के अन्यरसों सेभी कोई उत्तमता न दिखाई दे तो उस रोगी का जीवन दुर्लभ जानना चाहिये ॥ १५ ॥

निष्ठ्यूतञ्चपुरीषञ्च रेतश्चाम्भसिमज्जति । यस्यतस्यायुषःप्रान्तमन्तर्माहुर्मनीषिणः ॥ १६ ॥

जिस का थूंक विष्ठा तथा वीर्य्य जल में डूब जाय बुद्धिमान् लोग उस की आयुर्दाय का अन्त आयाहुआ जानते हैं ॥ १६ ॥

निष्ठ्यूतेयस्यदृश्यन्ते वर्णाबहुविधाःपृथक् । तच्चसीदत्यपःप्राप्यनसजीवितुमर्हति ॥ १७ ॥

जिस रोगीके थूंक में अनेक प्रकार के वर्ण अलग अलग दिखाई दें और वह थूंक जल में डालने से मिलजाय वह रोगी नहीं जीता है ॥ १७ ॥

पित्तमुष्मानुगंयस्यशंखौप्राप्यविमूर्च्छति । सरोगःशंखकोनाम्नात्रिरात्राद्धन्तिजीवितम् ॥ १८ ॥

ऊष्मासहित पित्त मत्थे की हड्डियों में जाकर जो बढ़ता है उस रोग को शंखक कहते हैं यह तीन दिन में मनुष्य को मार डालता है ॥ १८ ॥

सफेनंरुधिरंयस्यमुहुरास्यात्प्रमुच्यते । शूलैश्चतुद्यतेकुक्षिःप्रत्याख्येयःसतादृशः ॥ १९ ॥

जिस के मुख से फेनासहित रुधिर वारंवार गिरै और कुक्षिमें शूल होय उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ १९ ॥

बलमांसक्षयस्तीव्रोरोगवृद्धिररोचकः । यस्यातुरस्यलक्षन्तेत्रीनहांनसजीवति ॥ २० ॥

जिस रोगी का बल तथा मांस बहुतक्षीण होजाय रोग बढ़ताजाय और अरुचि होय वह तीन दिनसे अधिक नहीं जीताहै ॥ २० ॥

तत्र श्लोकौ।

विज्ञानानिमनुष्याणां मरणेप्रत्युपस्थिते । भवन्त्येतानिसम्पश्येदन्यानेवंविधानिच ॥ २१ ॥

तिस में यहदो श्लोकहैं । मनुष्य की मृत्यु निकट होने पर मृत्यु के जानने के लिये पूर्वोक्त लक्षण तथा इसी प्रकारके अन्यलक्षण उत्पन्न होते हैं ॥ २१ ॥

तानिसर्वाणिलक्ष्यन्तेनतुसर्वाणिमानवम् । विशन्तिविनिशिष्यन्तं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तस्माद्बोध्यानिसर्वशः ॥ २२ ॥

इति यस्यश्यावनिमित्तीयमिन्द्रियं समाप्तम् ॥ ९ ॥

यद्यपि यह सब मृत्यु के लक्षण हैं तथापि जिस की मृत्यु निकट होती है उस के यहसब लक्षण नहीं होते इस से इन सब लक्षणों को अच्छे प्रकार जानना आवश्यकहै ॥२२॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रतिसंस्कृततन्त्र में यस्यश्यावनिमित्तीयनाम नवांइन्द्रियाध्याय समाप्त हुआ ॥ ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

सद्योमरणीयम्।

सद्यस्तितिक्षतःप्राणान्लक्षणानिपृथक्पृथक्। अग्निवेश ! प्रवक्ष्यामि संस्पृष्टैर्यैर्नजीवति ॥ १ ॥

इस के उपरान्त सद्योमरणीय नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा—

हे अग्निवेश जिन लक्षणों के होने से मनुष्य शीघ्रही मरजाता है वह लक्षण अलग अलग कहेजाते हैं ॥ १ ॥

वाताष्ठीलाःसुसंवृत्तास्तिष्ठन्तिदारुणाहृदि। तृष्णयाभिपरीतस्यसद्योमुष्णातिजीवितम् ॥ २ ॥

जिसके हृदयमें दारुण वाताष्ठीला (रोगविशेष) अच्छे प्रकार से उत्पन्न हों और तृषा अधिक हो वह शीघ्रही मर जाता है ॥ २ ॥

पिण्डिकेशिथिलीकृत्यजिह्मीकृत्यचनासिकाम् ।वायुःशरीरेविचरन्सद्योमुष्णातिजीवितम् ॥ ३ ॥

जिस के शरीर में पिंडुलियों को शिथिल करके और नासिका को टेढ़ी करके वायु विचरण करती है वह शीघ्रही मर जाता है ॥ ३ ॥

भ्रुवौयस्यच्युतेस्थानादन्तर्दाहश्चदारुणः। तस्यहिक्काकरोरोगःसद्योमुष्णातिजीवितम् ॥ ४ ॥

जिस की भृकुटी अपने स्थान से गिरगई हों और हृदय में बहुत दाह होता हो, हिचकियों को उत्पन्न करनेवाला रोग शीघ्रही उस के प्राणों को हरलेता है ॥ ४ ॥

क्षीणशोणितमांसस्यवायुरूर्द्ध्वगतिश्चरन्। उभेमन्येसमेयस्य सद्योमुष्णातिजीवितम् ॥ ५ ॥

जिस रक्त व मांस के क्षीणवाले मनुष्यकी वायु ऊपर को विचरतीहुई दोनों मन्या बराबर होगई हों वह शीघ्रही प्राणों को त्यागता है ॥ ५ ॥

अन्तरेणगुदंगच्छन्नाभिञ्चसहसानिलः। कृशस्यवंक्षणौगृह्णन्सद्योमुष्णातिर्जीवितम् ॥ ६ ॥

जिस कृश मनुष्य की गुदा में गईहुई वायु सहसा नाभि में प्राप्त होकर वंक्षणों (जंघाओं की संधि) में पीड़ा को उत्पन्न करती है वह शीघ्रही मरजाता है ॥ ६ ॥

वितत्यपर्शुकाग्राणिगृहीत्वोरश्चमारुतः। स्तिमितस्यायताक्षस्यसद्योमुष्णातिर्जीवितम् ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस रोगीको अपना शरीर गीले कपड़े से ढकासा मालूम देता होय नेत्र फैलेहुए होयँ और वायु पशुली की हड्डियों के अग्रभागको फैलाकर हृदयको जकड़े वह शीघ्रही मरजाता है॥ ७॥

हृदयञ्चगुदञ्चोभे गृहीत्वामारुतोबली। दुर्बलस्यविशेषेणसद्योमुष्णातिजीवितम्॥ ८॥

बलवान् वायु दुर्बल रोगी के हृदय तथा गुदा को पीड़ित करके शीघ्रही प्राण हरलेता है॥ ८॥

वंक्षणौचगुदञ्चोभेगृहीत्वामारुतोबली। श्वासंसञ्जनयन्नन्तोःसद्योमुष्णातिजीवितम्॥ ९॥

बलवान् वायु वंक्षण (जांघकी संधि) तथा गुदा को पीड़ित करके और श्वास को उत्पन्न करके मनुष्यको शीघ्रही मार डालता है॥ ९॥

नाभिंवस्तिंशिरोमूत्रं पुरीषञ्चापिमारुतः। विबध्यजनयञ्छूलं सद्योमुष्णातिजीवितम्॥ १०॥

नाभि शिर वस्ति (मूत्राशय) मूत्र तथा विष्ठा को बद्ध (बाँध) करके शूलको उत्पन्न करताहुआ वायु मनुष्यको शीघ्रही मारडालताहै॥ १०॥

भिद्येतवंक्षणौयस्यवातशूलैःसमन्ततः। भिन्नंपुरीषंतृष्णाचसद्यःप्राणाञ्जहातिसः॥ ११॥

जिस रोगीके वंक्षणों (जंघाओंकी संधि) में वातज शूल होय मल फटगया होय और तृषा होय वह शीघ्रही मरजाता है॥ ११॥

आप्लुतंमारुतेनेहशरीरंयस्यकेवलम्। भिन्नंपुरीषंतृष्णाचसद्योजह्यात्सजीवितम्॥ १२॥

जिसका सम्पूर्ण शरीर वायु से व्याप्त हो मल फटाहुआ हो और तृषा हो वह शीघ्रही मरजाता है॥ १२॥

शरीरंशोफितंयस्यवातशोफेनदेहिनः। भिन्नंपुरीषंतृष्णाचसद्योजह्यात्सजीवितम्॥ १३॥

जिसके सम्पूर्ण शरीर में वातज शोथहो मल फटाहुआ हो और तृषा हो वह शीघ्रही मरजाता है॥ १३॥

आमाशयसमुत्थानायस्यस्यात्परिकर्तिका। तृष्णागुदग्रहश्चोग्रःसद्योजह्यात्सजीवितम्॥ १४॥

जिसके आमाशय में परिकर्त्तिका (कैंची से काटने की सी पीड़ा) होय तृषा होय और गुदा में अधिक पीड़ा होय वह शीघ्रही मर जाता है॥ १४॥

पक्वाशयमधिष्ठाय हत्वासंज्ञाञ्चमारुतः। कण्ठेघुर्घुरकंकृत्वासद्योहरतिजीवितम्॥ १५॥

वायु पक्वाशय में स्थित होकर संज्ञा को नष्ट करके और कण्ठमें घरघराहट को उत्पन्न करके शीघ्रही मनुष्य को मारडालता है॥ १५॥

दन्ताःकर्दमचूर्णाभामुखंचूर्णकसन्निभम्। शिप्रायन्तेचगात्राणि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिङ्गंसद्योमरिष्यतः ॥ १६ ॥

दाँतोंमें कीचड़सा लगाहोना मुखमें चूर्णसा लगाहुआ होना और सम्पूर्ण शरीर में पसीना निकलना यह शीघ्रही मरनेवाले के लक्षण हैं ॥ १६ ॥

तृष्णाश्वासशिरोरोगमोहदौर्बल्यकूजनैः। स्पृष्टःप्राणान्जहात्याशुशकृद्भेदेनचातुरः ॥ १७ ॥

तृषा श्वास शिरकी पीड़ा मोह दुर्बलता कूजन (एक तरहका स्वर) तथा मल का फटाहुआ होना इन लक्षणों से युक्त रोगी शीघ्रही मरजाता है ॥ १७ ॥

तत्रश्लोकः।

एतानिखलुलिङ्गानि यःसम्यगवबुध्यते। सजीवितञ्चमर्त्यानांमरणञ्चावबुध्यते ॥ १८ ॥

इति सद्योमरणीयमिंद्रियं समाप्तम् ॥ १० ॥

तिसमें यह श्लोकहै। जो वैद्य इन लक्षणों को अच्छे प्रकार जानता है वह मनुष्यों के जीवन तथा मरण को भी जानताहै ॥ १८ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसद्योमरणीयनामइन्द्रियाध्यायदशवां समाप्तहुआ ॥ १० ॥

ग्यारहवाँ अध्याय ॥

अणुज्योतियम्।

अणुज्योतिरनेकाग्रोदुश्छायोदुर्मनाःसदा। रतिंनलभतेयातिपरलोकंसमान्तरे ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अणुज्योतीयनाम इन्द्रियाध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

मंदाग्नि एकाग्र न रहना कान्तिरहित होना और मन में दुःखित रहना इन लक्षणों से युक्त जिस मनुष्यको कभी चैन नहीं पड़ती है वह एक वर्ष के भीतर मरजाता है ॥ १ ॥

बलिंबलिभुजोयस्यप्रणीतंनोपभुञ्जते। लोकान्तरगतःपिण्डंभुङ्क्तेसंवत्सरेणसः ॥ २ ॥

जिस मनुष्य की दीहुई बलि काक आदि बलिके खानेवाले जीव नहीं खाते हैं वह एक वर्ष में मरकर परलोक में पिण्ड खाता है ॥ २ ॥

सप्तर्षीणांसमीपस्थांयोनपश्यत्यरुन्धतीम्। संवत्सरान्तेजन्तुःससम्पश्यतिमहत्तमः ॥ ३ ॥

जो मनुष्य सप्तऋषियों के निकट उदय होनेवाली अरुन्धती को नहीं देखता है वह एक वर्षके भीतर महाअन्धकार को देखताहै अर्थात् मरजाता है ॥ ३ ॥

विकृत्याविनिमित्तंयःशोभांसुपचयंधनम्। प्राप्नोत्यतोवाविभ्रंशंसमान्तंनसजीवति ॥ ४ ॥

विना किसी कारण के अस्वाभाविक रूप से जिसको शोभा वृद्धि तथा धन प्राप्त होय अथवा नष्ट होजाय वह एक वर्षके भीतर मर जाताहै ॥ ४ ॥

भक्तिःशीलंस्मृतिस्त्यागोबुद्धिर्बल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महेतुकम् । षडेतानिनिवर्त्तन्तेष ड्भिर्मासैर्मरिष्यतः ॥ ५ ॥

भक्ति शील स्मृतित्याग बुद्धि तथा बल यह छः विना कारणकेही जिसके नष्ट होजायँ वह छः महीनेमें मरजाता है ॥ ५ ॥

धमनीनामपूर्वाणांजालमत्यर्थशो भनम् । ललाटेदृश्यतेयस्यषण्मा सान्नसजीवति ॥ ६ ॥

जिसके मत्थेमें अपूर्व नसोंका सुन्दर जाल दिखाईदे वह छः महीने के भीतर मरजाता है ॥ ६ ॥

लेखाभिश्चन्द्रवक्राभिर्ललाटमुपची यते । यस्यतस्यायुषःषड्भिर्मासैरन्तं समादिशेत् ॥ ७ ॥

जिसके मत्थे में चन्द्रमा के समान सुन्दर रेखा उत्पन्न होजायँ वह छः महीनेमें मरजाताहै ॥ ७ ॥

शरीरकम्पःसंमोहोगतिर्वचनमेव च । मत्तस्येवोपलक्ष्यन्तेयस्यमासं नजीवति ॥ ८ ॥

मतवाले के समान जिसके शरीर में कम्प मोह गति तथा वचन पाया जाय वह एक महीने के भीतर मरजाता है ॥ ८ ॥

रेतोमूत्रपुरीषाणियस्यमज्जन्तिचा म्भसि । समासात्स्वजनद्वेष्टामृत्यु वारिणिमज्जति ॥ ९ ॥

जिसका वीर्य्य मूत्र तथा मल जलमें डूब जाताहै अपने मित्रादिकों से द्वेष करनेवाला वह पुरुष महीने भरके भीतर मृत्युरूपी जल में डूब जाता है ॥ ९ ॥

हस्तपादंमुखञ्चोभौविशेषाद्यस्यशु ष्यतः । शूयेतेवाविनादेहात्सचमा संनजीवति ॥ १० ॥

सम्पूर्ण शरीर के सिवाय जिसके हाथ पैर तथा मुख सूखजायँ अथवा स्थूल होजायँ वह एक महीने के भीतर मरजाता है ॥ १० ॥

ललाटेमूर्ध्निवस्तौबानीलायस्यप्रका शते । राजीबालेन्दुकुटिलानसजी वितुमर्हति ॥ ११ ॥

जिसके मस्तक शिर अथवा मूत्राशयमें द्वितीया के चन्द्रमा के समान टेढ़ी तथा नीली रेखा उत्पन्न होय वह नहीं जीसक्ताहै ॥ ११ ॥

प्रबालगुटिकाभासायस्यगात्रेमसू रिकाः । उत्पाद्याशुविनश्यन्तिन चिरात्सविनश्यति ॥ १२ ॥

जिस के शरीर में मूंगे के समान मसूरिका (एकतरहका दाना) उत्पन्न होकर शीघ्रही नष्ट होजाय वह शीघ्रही मरजाता है ॥ १२ ॥

ग्रीवावमर्दोबलवाञ्जिह्वाश्वयथुरेव च । ब्रध्नास्यगलपाकश्चयस्यपक्षं तमादिशेत् ॥ १३ ॥

जिसकी ग्रीवामें बहुत पीड़ा हो जिह्वा में शोथ हो और बद मुख तथा गलापका हो उस को मृत्यु के निकट जानना चाहिये ॥ १३ ॥

संभ्रमोऽतिप्रलापोऽतिभेदोऽस्थ्नाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिदारुणः। कालपाशपरीतस्यत्र यमेतत्प्रवर्त्तते॥ १४॥

सम्भ्रम (घबड़ाहट) बहुत प्रलाप (बकना) और हड्डियों का बहुत टूटना यह तीनों लक्षण कालपाश से बँधे हुये के होते हैं॥ १४॥

प्रमुह्यँल्लुञ्चयेत्केशान्परान्गृह्णात्यतीवच। नरःस्वस्थवदाहारवचनःकालचोदितः॥ १५॥

जो निर्बल मनुष्य मोहित होकर बालों को उखाड़ै और स्वस्थके समान बहुत भोजन करै उस को काल के वशीभूत जानना चाहिये॥ १५॥

समीपेचक्षुषोःकृत्वामृगयेतांगुलीयकम्। स्मयतेऽपिचकालान्धऊर्द्ध्वाक्षोऽनिमिषेक्षणः॥ १६॥

जो मनुष्य नेत्रों के निकट अँगूठी को ले जाकर ढूँढ़ता है ऊपर को नेत्र करके पलकों को विना बन्द कियेही आश्चर्य्यित होता है॥ १६॥

शयनाद्वसनादङ्गात्काष्ठात्कुड्याद्थापिवा। असन्मृगयतेकिंचित्समुह्यन्कालचोदितः॥ १७॥

और शयन वस्त्र अङ्ग काष्ठ तथा दीवाल से फेंककर कोई चीज ढूँढ़तासा है उसको काल से मोहित जानना चाहिये॥ १७॥

अहास्यहसनोमुह्यन्प्रलेढिदशनच्छदौ। शीतपादकरोच्छ्वासोयोनरोनसजीवति॥ १८॥

जो हँसीके कारणके विनाही मोहित होकर हँसता है ओष्ठों को चाटता है और शीतल हाथ पैर तथा श्वास से युक्त होताहै वह नहीं जीता है॥ १८॥

आह्वयन्तंसमीपस्थंस्वजनंजनमेववा। महामोहावृतमनाःपश्यन्नपिनपश्यति॥ १९॥

जिस मनुष्य का मन महामोह (मृत्युसंबन्धी अज्ञान) से आच्छादित होता है वह पुकारतेहुयेभी अपने बन्धु लोगों को तथा अन्य लोगों को देखता हुआ भी नहीं देखता है॥ १९॥

अयोगमतियोगंवा शरीरेमतिमान्भिषक्। खादीनांयुगपद्दृष्ट्वाभेषजंनावचारयेत्॥ २०॥

बुद्धिमान् वैद्य रोगीके शरीरमें एक साथही आकाशादि महाभूतों का अयोग (न होना) अथवा अतियोग (अधिक होना) देखकर चिकित्सा न करै॥ २०॥

अतिप्रवृद्ध्यारोगाणांमनसश्चबलक्षयात्। वासमुत्सृजतिक्षिप्रंशरीरीदेहसंज्ञकम्॥ २१॥

रोगोंके बहुत बढ़ने से और मनके निर्बल होजाने के कारण जीवात्मा शीघ्रही शरीर नामक अपने स्थान को छोड़ देताहै॥ २१॥

वर्णस्वरावग्निबलंवागिन्द्रियमनोबलम्। हीयतेऽसुक्षयेनिद्रानित्याभवतिवानवा॥ २२॥

प्राणोंके क्षीण होजानेपर वर्ण स्वर अग्नि वाणी इन्द्रिय तथा मनका बल हीन होजाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है और निद्रा बहुत आतीहै या आतीही नहीं है ॥ २२ ॥

भिषग्भेषजपानान्नगुरुमित्रद्विषश्च ये । वशगाःसर्वएवैतेबोद्धव्याः समवर्त्तिनः ॥ २३ ॥

वैद्य औषध जल अन्न गुरु तथा मित्रसे द्वेष करनेवाले सब पुरुषों को यमराजके वशीभूत जानना चाहिये ॥ २३ ॥

एतेपुरोगःक्रमते भेषजंप्रतिहन्यते । नैषामन्नानिभुञ्जीतनचोदकमपिस्पृशेत् ॥ २४ ॥

ऐसे पुरुषों का रोग बढ़ता जाता है और औषध गुण नहीं करती है इससे ऐसे पुरुषों का अन्न नहीं खाना चाहिये और उनका जलभी नहीं छूना चाहिये ॥ २४ ॥

पादाःसमेताश्चत्वारः सम्पन्नाःसाधकैर्गुणैः । व्यर्थागतायुषोद्रव्याद्विनानास्तिगुणोदयः ॥ २५ ॥

साधक (कार्य्य को सिद्ध करनेवाले) गुणों से युक्त पूर्वोक्त भेषज के चारों पाद प्राप्त होने पर भी गतायुके लिये सब व्यर्थ ही होते हैं क्योंकि द्रव्यके विना गुणों का उदय नहीं होता है अर्थात् जीवन के हेतु आयु के विना किसी यत्न से भी गुण नहीं प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

परीक्ष्यमायुर्भिषजानीरुजस्यातुरस्य च । आयुर्वेदफलंकृत्स्नमायुर्ह्यनुवर्त्तते ॥ २६ ॥

वैद्य रोगी तथा नीरोगी दोनों की आयुकी परीक्षा करै क्योंकि आयुर्वेद का सम्पूर्ण फल आयुके आधीन है ॥ २६ ॥

तत्र श्लोकः ।

क्रियापथमतिक्रान्ताःकेवलंदेहमाप्लुताः । चिह्नंकुर्वन्तियद्दोषास्तदरिष्टंनिरुच्यते ॥ २७ ॥

इत्यणुज्योतीयमिन्द्रियंसमाप्तम् ॥

तिसमें यह श्लोक है । वातादिक दोष चिकित्साके क्रम को उल्लंघन करके केवल शरीर में व्याप्त होकर जिस चिह्न को उत्पन्न करते हैं उस चिह्न को अरिष्ट कहते हैं ॥ २७ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें अणुज्योतीयनामग्यारहवांइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ ॥ ११ ॥

बारहवांअध्याय ॥

गोमयचूर्णीयम् ।

यस्यगोमयचूर्णाभंचूर्णंमूर्द्धनिजायते । सस्नेहंभ्रश्यतेचैवमासान्तंतस्यजीवितम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त गोमयचूर्णीय नाम इन्द्रियाध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

जिसके शिरमें गोबरके चूर्णके समान चूर्ण उत्पन्नहो और वह चूर्ण तेल लगाने से गिरता होय वह पुरुष एक महीनासे अधिक नहीं जीता है ॥ १ ॥

निर्घर्षन्निवयःपादौ च्युतांसःपरिधावति । विकृत्यानसलोकेऽस्मिंश्चिरंवसतिमानवः ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो मनुष्य विकार से पैरों को रगड़ता हुआसा दौड़े व जिसके कंधोंकी संधि शिथिल होगईहों वह इस लोकमें बहुत कालतक नहीं रहताहै अर्थात् शीघ्रही मरजाता है ॥ २ ॥

यस्यस्नातानुलिप्तस्यपूर्वंशुष्यत्युरो भृशम्। आर्द्रेषुसर्वगात्रेषुसोऽर्द्धं मासंनजीवति ॥ ३ ॥

स्नान करके तथा चन्दन आदि लगाके जिस मनुष्य का हृदय अन्य अंगों की अपेक्षा पहिले सूखे वह एक पक्षके भीतर मरजाता है ॥ ३ ॥

यमुद्दिश्यातुरंवैद्यःसंवर्त्तयितुमौषध म् । यतमानोनशक्नोतिदुर्लभंत स्यजीवितम् ॥ ४ ॥

जिस रोगी के निमित्त वैद्य बहुत यत्न करके भी औषध न तय्यार करसकै उसका जीना दुर्लभ है ॥ ४ ॥

विज्ञातंबहुशःसिद्धं विधिवच्चावचा रितम् । नसिध्यत्यौषधंयस्यनास्ति तस्याचिकित्सितम् ॥ ५ ॥

अनेक बार अनुभव कीगई औषधि को विधिपूर्वक देनेपर भी जिस रोगी को कुछ फल न प्राप्तहो उसकी चिकित्सा नहीं होसक्ती है ॥ ५ ॥

आहारमुपयुञ्जानोभिषजासूपकल्पि तम् । यःफलंतस्यनाप्नोतिदुर्लभं तस्यजीवितम् ॥ ६ ॥

वैद्यकेद्वारा अच्छे प्रकार से बनायेगये आहार को खाकर भी जिस रोगी को कुछ फल न प्राप्तहो उसका जीना दुर्लभ है ॥ ६ ॥

दूताधिकारेवक्ष्यामोलक्षणानिमुमू र्षताम् । यानिदृष्ट्वाभिषक्प्राज्ञःप्र त्याख्येयादसंशयम् ॥ ७ ॥

दूताधिकार में मुमूर्षु (शीघ्र मरनेवाले) लोगों के लक्षण कहेजाते हैं जिन लक्षणों को देखकर बुद्धिमान् वैद्य रोगी की चिकित्सा न करै ॥ ७ ॥

मुक्तकेशेऽथवानग्नेरुदत्यप्रयतेऽथ वा । भिषगभ्यागतंदृष्ट्वादूतंमरण मादिशेत् ॥ ८ ॥

वैद्यके मुक्तकेश (जिसके बाल खुले हों) नग्न तथा अशान्त होकर रोते समय जो दूत आवे तो रोगी की मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ ८ ॥

सुप्तेभिषजियेदूताश्छिन्दत्यपिचभि न्दति । आगच्छन्तिभिषक्तेषां नभर्त्तारमनुव्रजेत् ॥ ९ ॥

जिस समय वैद्य सोताहो किसी चीज को काटताहो अथवा भेदताहो उस समय जो दूत आवै तो वैद्य उसके स्वामी की चिकित्सा करने न जाय ॥ ९ ॥

जुह्वत्यग्निंतथापिंडंपितृभ्योनिर्वप त्यपि । वैद्येदूतायआयान्तितेघ्नन्ति प्रजिघांसवः ॥ १० ॥

जिस समय वैद्य अग्नि में हवन कररहाहो अथवा पितरों को पिण्ड दैरहाहो उस समय जो दूत आवै तो उसके स्वामी की मृत्यु जाननी चाहिये ॥ १० ॥

कथयत्यप्रशस्तानिचिन्तयत्यथवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुनः। वैद्येदूतामनुष्याणामागच्छन्तिमुमूर्षताम् ॥ ११ ॥

जिस समय वैद्य अशुभ बातें करताहो अथवा कुछ चिन्ता करताहो उस समय जिन रोगियों के दूत आवें उनको मृत्युके निकट जानना चाहिये ॥ ११ ॥

मृतदग्धविनष्टानिभजतिव्याहरत्यपि। अप्रशस्तानिचान्यानिवैद्येदूतामुमूर्षताम् ॥ १२ ॥

जिस समय वैद्य मृतदग्ध अथवा नष्ट पदार्थोंका सेवन करताहो अथवा कोई अन्य अशुभ बातें करताहो उस समय जिन रोगियों के दूत आवें उनको मृत्युके निकट जानना चाहिये ॥ १२ ॥

विकारसामान्यगुणेदेशकालेऽथवाभिषक्। दूतमभ्यागतंदृष्ट्वानातुरंतमुपाचरेत् ॥ १३ ॥

रोगके समान गुणवाले देश अथवा काल में जिस रोगी का दूत आवै उसकी चिकित्सा वैद्य को नहीं करना चाहिये ॥ १३ ॥

दीनभीतद्रुतत्रस्तांमलिनामसतींस्त्रियम्। त्रीन्व्याकृतांश्चपिराडांश्चदूतान्विद्यान्मुमूर्षताम् ॥ १४ ॥

जो वैद्यको बुलाने के लिये दीन भीत द्रुत(जल्दी करनेवाला)मलिन दुष्ट स्त्री विकारयुक्त अथवा नपुंसक दूत अथवा एक साथही तीन दूत आवें तो रोगी की मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ १४ ॥

अङ्गव्यसनिनंदूतंलिङ्गिनंव्याधितं

तथा। संप्रेक्ष्यचोग्रकर्माणंनवैद्योगन्तुमर्हति ॥ १५ ॥

जो किसी अंग से हीन या अधिकअंगयुक्त रोगी तथा उग्र कार्य्य करनेवाला दूत वैद्य को बुलाने आवे तो वैद्य को चिकित्सा करने के लिये नहीं जाना चाहिये ॥ १५ ॥

आतुरार्थमनुप्राप्तंखरोष्ट्रमथवाहनम्। दूतंदृष्ट्वाभिषग्विद्यादातुरस्यपराभवम् ॥ १६ ॥

जो वैद्य को बुलाने के लिये दूत ऊँट अथवा गधेपर चढ़ करके आवै तो रोगीकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये ॥ १६ ॥

पलालबुषमांसास्थिकेशलोमनखद्विजान्। मार्जनींमुसलंशूर्पमुपानद्भग्नविच्युते ॥ १७ ॥

जिन रोगियोंके दूत पयार भूसा मांस हड्डी केश रोम नख दाँत बढ़नी मूशल सूप टूटाहुआ जूता जूतेका गिराहुआ चमड़ा ॥ १७ ॥

तृणकाष्ठतुषाङ्गारंस्पृशन्तोलोष्टभस्मच। तत्पूर्वदर्शनेदूताव्याहरन्तिमुमूर्षताम् ॥ १८ ॥

तृण काष्ठ भूसी अंगार लोष्ट (ढेला) तथा भस्म इनमें से किसीका स्पर्श करके पहिले पहिल वैद्य से रोगियोंका वृत्तान्त कहते हैं वह रोगी नहीं जीते हैं ॥ १८ ॥

यस्मिंश्चदूतेब्रुवतिवाक्यमातुरसंश्रयम्। पश्येन्निमित्तमशुभंतञ्चनानुव्रजेद्भिषक् ॥ १९ ॥

जिस समय दूत रोगीका वृत्तान्त कहताहो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उस समय यदि कोई अशुभ निमित्त दिखाई दे तो वैद्य रोगी की चिकित्सा करने न जाय ॥ १९ ॥

यथाव्यसनिनंप्रेतं प्रेतालङ्कारमेव वा । भिन्नंदग्धंविनष्टंवातद्वादीनिव चांसिवा ॥ २० ॥ रसोवाकटुक स्तीव्रोगन्धोवाकौणपोमहान् । स्प र्शोवाविपुलःक्रूरोयद्वान्यदशुभंभवे त्॥ २१ ॥ तत्पूर्वमभितोवाक्यंवा क्यकालेऽथवापुनः । दूतानांव्याह तंश्रुत्वाधीरोमरणमादिशत्॥२२॥

जिस समय दूत रोगीका वृत्तान्त कहताहो उससे पहिले अथवा उसी समय व्यसनी (कामआदि के दोषसेयुक्त) प्रेत प्रेतोंके आभूषण और भिन्न दग्ध तथा नष्ट वस्तुओं का दर्शन अथवा इनके विषय के वाक्यों का श्रवण कटुरस तीव्र गन्ध कठोर स्पर्श अथवा अन्य कोई अशुभ यदि होय तो रोगीकी मृत्यु निकटही जाननी चाहिये॥ २०।२१।२२॥

इतिदूताधिकारोऽयमुक्तःकृत्स्नोमुमू र्षताम् । पथ्यातुरकुलानाञ्चवक्ष्या मौत्पातिकं पुनः ॥ २३ ॥

इस प्रकार मुमूर्षु लोगों का दूताधिकारकहा गया है इसके उपरान्त मार्ग में तथा रोगी के गृह में होनेवाले जो उत्पात हैं वह कहेजाते हैं ॥ २३ ॥

अवक्षुतमथोत्क्रुष्टं स्खलनंपतनंत था । आक्रोशःसंप्रहारोवाप्रतिषे धोविगर्हणम् ॥ २४ ॥

छींक घबड़ाहट का शब्द गिरना ऊँचे से गिरना चिल्लाहट प्रहार निषेध निन्दा ॥२४॥

वस्त्रोष्णीषोत्तरासङ्गच्छत्रोपानद्यु गाश्रयम् । व्यसनंदर्शनञ्चापिमृत व्यसानिनंतथा ॥ २५ ॥

और वस्त्र पगड़ी दुपट्टा छत्र तथा जूतेका जोड़ा इनका गिरना अथवा देखना जिसके घरमें कोई मरगयाहो उसका देखना ॥२५॥

चैत्यध्वजपताकानांचूर्णानांपतना निच । हतानिष्टप्रवादाश्चदर्शनंभ स्मपांसुभिः ॥ २६ ॥

चैत्य ध्वजा तथा पताका का गिरना चूर्णोंका गिरना मरने की खबर सुनना अनिष्ट खबर सुनना भस्म तथा धूलिका उड़ना देखना ॥ २६ ॥

पथच्छेदोविडालेन शुनासर्पेणवा पुनः । मृगद्विजानांक्रूराणांगिरो दीप्तांदिशंप्रति ॥ २७ ॥

बिल्ली कुत्ता अथवा सर्पका मार्ग काटना जिस दिशामें सूर्यहों उस ओर मुख करके शृगाल आदि निन्दित पशु अथवा काक आदि निन्दित पक्षियों का रोना॥ २७॥

शयनासनयानानामुत्तानानांप्रद र्शनम् । इत्येतान्यप्रशस्तानिसर्वा ण्याहुर्मनीषिणः ॥ २८ ॥

और उतानी शय्या आसन तथा सवारी का देखना बुद्धिमान् लोग इन सबको निन्दित कहते हैं ॥ २८ ॥

एतानिपथिवैद्येनपश्यतातुरवर्त्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नि। शृण्वताचनगन्तव्यंतदागारं विपश्चिता ॥ २९ ॥

वैद्य मार्गमें इनको सुनकर अथवा देखकर रोगी के यहाँ न जाय ॥ २९ ॥

इत्यौत्पातिकमाख्यातंपथिवैद्यविगर्हितम् । इमामपिचबुध्येतगृहावस्थांमुमूर्षताम् ॥ ३० ॥

इस प्रकार वैद्यों के लिये मार्गमें जो निन्दित उत्पात हैं वह कहेगये इनको जानकर भी रोगी के घरमें यह उत्पात जानने चाहिये ॥ ३० ॥

प्रवेशेपूर्णकुंभाग्निमृद्बीजफलसर्पिषाम् । वृषब्राह्मणरत्नानांदेवतानांविनिर्गतिम् ॥ ३१ ॥

जिस समय वैद्य रोगीके घरमें जाने लगै उस समय पूर्णकुम्भ अग्नि मृत्तिका बीज फल घी बैल ब्राह्मण रत्न तथा देवता इनका रोगीके घरसे निकलना ॥ ३१ ॥

अग्निपूर्णानिपात्राणिभिन्नानिविशिखानिच । भिषङ्मुमूर्षतांवेश्म प्रविशन्नेवपश्यति ॥ ३२ ॥

और अग्नि से भरेहुये ज्वालारहित टूटेहुये पात्रों का वैद्य को रोगी के गृहमें प्रवेश करतेहुये दिखाई देना रोगीकी मृत्यु का लक्षण है ॥ ३२ ॥

छिन्नभिन्नविदग्धानिभग्नानिमृदितानिच । दुर्बलानिचसेवन्तेमुमूर्षोर्वैश्मिकाजनाः ॥ ३३ ॥

जिस रोगी की मृत्यु होनेवाली होती है उसके घरके लोग कटेहुये फटेहुये जलेहुये टूटेहुये मलेहुये तथा दुर्बल पदार्थों का सेवन करते हैं ॥ ३३ ॥

शयनंवसनंयानं गमनंभोजनंरुतम् । श्रूयतेऽमङ्गलंयस्यनास्तितस्य चिकित्सितम् ॥ ३४ ॥

जिस रोगी के घरमें शयन वस्त्र सवारी गमन तथा भोजन अशुभ हो और अशुभ शब्द सुनाई दे उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ३४ ॥

शयनंवसनंयानमन्यद्वापिपरिच्छदम् । प्रेतवद्यस्यकुर्वन्तिसुहृदःप्रेत एवसः ॥ ३५ ॥

जिस रोगीके मित्र शयन बस्त्र सवारी तथा अन्य सामग्री प्रेतों के समान करते हैं उसको प्रेतही जानना चाहिये ॥ ३५ ॥

अन्नंव्यापद्यतेऽत्यर्थं ज्योतिश्चैवोपशाम्यति । निवातेसेन्धनंयस्यतस्य नास्तिचिकित्सितम् ॥ ३६ ॥

जिस रोगी के लिये पाक कियागया अन्न अच्छे प्रकार से तय्यार नहो और वायुरहित स्थान में इन्धनसहित अग्नि बुझजाय उस रोगीकी कोई चिकित्सा नहीं होसक्ती॥३६॥

आतुरस्यगृहेयस्यभिद्यन्तेवापतन्ति वा। अतिमात्रममत्राणि दुर्लभंतस्यजीवितम् ॥ ३७ ॥

जिस रोगी के घरमें पात्र बहुत गिरते हैं और बहुत फूटते हैं उसका जीना दुर्लभ होता है ॥ ३७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवन्ति चात्र।

यद्द्वादशभिरध्यायैर्व्यासतःपरिकीर्त्तितम्। मुमूर्षतांमनुष्याणांलक्षणंजीवितान्तकृत्॥ ३८॥

इसमें यह श्लोक हैं। मुमूर्षु लोगों के मरनेके जो लक्षण बारह अध्यायों में विस्तारपूर्वक कहेगये हैं॥ ३८॥

तत्समासेनवक्ष्यामिपर्य्यायान्तरमाश्रितम्। पर्य्यायवचनंह्यर्थविज्ञानायोपपद्यते॥ ३९॥

वह अब संक्षेप करके पर्य्यायान्तर (दूसरेक्रम) से कहेजाते हैं क्योंकि दूसरे क्रमसे कहनेपर अर्थ का ज्ञान अच्छे प्रकार से होता है॥ ३९॥

इत्यर्थंपुनरेवेयंविवक्षानोविधीयते। तस्मिन्नेवाधिकरणेयत्पूर्वमभिदर्शितम्॥ ४०॥

यद्यपि यह सब लक्षण पहिलेही अपने अपने अधिकारमें विधिपूर्वक कहेगये हैं तथापि अच्छे प्रकारसे ज्ञान होनेके लियेही अब फिर कहेजाते हैं॥ ४०॥

वसतांचरमेकालेशरीरेषुशरीरिणाम्। अत्युग्राणांविनाशायदेहेभ्यःप्रविवत्सताम्॥ ४१॥ इष्टांस्तितिक्षतांप्राणान्कान्तंवासंजिहासताम्। तन्त्रयन्त्रेषुभिन्नेषुतमोऽन्त्यंप्रविविक्षताम्॥ ४२॥ विनाशायेहरूपाणि यान्यवस्थान्तराणिच। भवन्तितानिवक्ष्यामियथोद्देशंयथागमम्॥ ४३॥

यंत्ररूपी शरीरकी शिरा आदिकों के भिन्न होजानेपर अन्तिम समयमें शरीर में निवास करतेहुये नाशके लिये शरीर से गमन करने की इच्छा करतेहुये प्रिय प्राणोंको त्यागकरते हुये शरीररूपी सुन्दर स्थान को त्याग करते हुये और अन्तिम अन्धकार (मृत्यु) में प्रवेश करने की इच्छा करतेहुये प्राणियों के जो लक्षण होते हैं और जौन जौनसी अवस्थायें बदलती हैं वह सब प्रयोजनसहित शास्त्र के अनुसार वर्णन किया जाताहै॥४१।४२।४३॥

प्राणाःसमुपतप्यन्तेविज्ञानमुपरुध्यते। वमन्तिबलमङ्गानिचेष्टाव्युपरमन्तिच॥ ४४॥

प्राणपीड़ित होते हैं ज्ञान नष्ट हो जाता है अंगोंका बल नष्ट होजाता है चेष्टा नष्ट होजाती है॥ ४४॥

इन्द्रियाणिविनश्यन्तिखिलीभूतेवचेतना। औत्सुक्यंभजतेसत्त्वंचेतोभीराविशत्यपि॥ ४५॥

इन्द्रियां नाश को प्राप्त होती हैं चैतन्यता नष्टसी होजाती है मनमें उत्सुकता तथा भय उत्पन्न होता है॥ ४५॥

स्मृतिस्त्यजतिमेधाचह्रीश्रियौचापसर्पतः। उपप्लवन्तेपाप्मानओजस्तेजश्चनश्यति॥ ४६॥

स्मृति, मेधा (धारणाशक्ति) लज्जा तथा शोभा नष्ट होजाती है पहिले किये हुये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाप क्लेश देते हैं ओज तथा तेजका नाश हो जाताहै ॥ ४६ ॥

शीलंव्यावर्त्ततेऽत्यर्थंभक्तिश्चपरिसर्पते। विक्रियन्तेप्रतिच्छायाश्छायाश्चविकृतिंगताः ॥ ४७ ॥

स्वभाव बदल जाता है भक्ति नहीं रहती है छाया (कान्ति) तथा प्रतिच्छाया (परछाहीं) विकार को प्राप्त होती है ॥ ४७ ॥

शुक्रंप्रच्यवतेस्थानादुन्मार्गंभजतेऽनिलः। क्षयंमांसानिगच्छन्तिगच्छत्यसृगुपक्षयम् ॥ ४८ ॥

वीर्य्य अपने स्थान से गिरजाता है वायु ऊपरको चलती है मांस तथा रुधिर क्षीणहो जाताहै ॥ ४८ ॥

ऊष्माणःप्रलयंयान्तिविश्लेषंयान्तिसन्धयः। गन्धाविकृततांयान्तिभेदंवर्णस्वरौतथा ४९ ॥

ऊष्मा नष्ट होजाती है संधियां अलग अलग होजाती हैं गन्ध विकार को प्राप्त होती है वर्ण तथा स्वर बदल जाताहै ॥ ४९ ॥

वैरस्यंभजतेकायःकायश्छिद्रंविशुष्यति। धूमःसञ्जायतेमूर्ध्निदारुणाख्यश्चचूर्णकः ॥ ५० ॥

शरीर का रस बिगड़ जाता है शरीर के छिद्र शुष्क होजातेहैं मस्तकमें धूम तथा दारुण नाम चूर्ण उत्पन्न होताहै ॥ ५० ॥

सततस्पन्दनादेशाःशरीरेयेऽभिलक्षिताः। तेस्तम्भानुगताःसर्वेनचलन्तिकथञ्चन ॥ ५१ ॥

शरीरके जो जो अङ्ग नाड़ियोंके द्वारा सदैव फड़का करते हैं वह स्तब्ध होकर किसीप्रकार से चलायमान नहीं होते ॥ ५१ ॥

गुणाःशरीरदेशानां शीतोष्णमृदुदारुणाः। विपर्य्यासेनवर्त्तन्तेस्थानेष्वन्येषुतद्विधाः ॥ ५२ ॥

शरीरके स्थान स्थान में शीत उष्ण कोमलता तथा कठोरता यह गुण विपरीत होजाते हैं ॥ ५२ ॥

नखेषुजायतेपुष्पंपङ्कोदन्तेषुजायते। जटाःपक्ष्मसुजायन्तेसीमन्ताश्चापिमूर्द्धनि ॥ ५३ ॥

नखों में पुष्पके समान चिह्न उत्पन्न होते हैं दांतोंमें कीच सा मैल उत्पन्न होताहै नेत्रोंकी बिन्नियों में जटासी बँधजाती हैं शिरमें अकस्मात् जूड़ा बँधजाता है ॥ ५३ ॥

भेषजानिनसंवृत्तिंप्राप्नुवन्तितथारुचिम्। यानिचाप्युपपद्यन्तेतेषांवीर्य्यंनसिध्यति ॥ ५४ ॥

औषध तय्यार करनेसे तय्यार नहीं होती औषधि में रुचि नहीं होती जो औषध दीजाती है उससे कुछ फल नहीं होताहै ॥ ५४ ॥

नानाप्रकृतयःक्रूरविकाराविविधौषधाः ॥ ५५ ॥

अनेक प्रकारके क्रूररोग जिनके लिये अनेक प्रकार की औषधियों की आवश्यकता हो ॥ ५५ ॥

क्षिप्रंसमभिवर्त्तन्तेप्रतिहत्यबलौज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सी । शब्दःस्पर्शौरसोरूपंगन्ध श्चेष्टाविचिन्तितम् ॥ ५६ ॥

वह बल तथा ओज को नष्ट करके और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, चेष्टा तथा विचार को विपरीत करके शीघ्रही उत्पन्न होते हैं ॥ ५६ ॥

उत्पद्यन्तेऽशुभान्येवप्रतिकर्मप्रवृत्तिषु । दृश्यन्तेदारुणाःस्वप्नादौरात्म्यमुपजायते ॥ ५७ ॥

चिकित्सा करने में अनेक प्रकारके अशुभ उत्पन्न होते हैं भयङ्कर स्वप्न दिखाई देते हैं दुष्टता उत्पन्न होजाती है ॥ ५७ ॥

प्रेष्याःप्रतीपतांयान्तिप्रेताकृतिरुदीर्य्यते । प्रकृतिर्हीयतेऽत्यर्थंविकृतिश्चाभिवर्द्धते ॥ ५८ ॥

सेवक लोग विरोधी होजाते हैं प्रेतों की ऐसी चेष्टा होजाती है प्रकृति नष्ट होजाती है विकारकी वृद्धि होती है ॥ ५८ ॥

कृत्स्नमौत्पातिकंघोरमरिष्टमुपलक्ष्यते । इत्येतानिमनुष्याणांभवन्तिविनशिष्यताम् ॥ ५९ ॥

और सम्पूर्ण उत्पातसम्बन्धी घोर अरिष्ट लक्षित होते हैं जिन मनुष्यों की मृत्यु निकट होतीहै उनके यह पूर्वोक्त लक्षण होतेहैं ५९ ॥

लक्षणानियथोद्देशं यान्युक्तानियथागमम् । मरणायेहरूपाणिपश्यतापिभिषग्विदा ॥ ६० ॥

प्रयोजन तथा शास्त्रके अनुसार यह जो लक्षण कहेगये हैं इन लक्षणों को मृत्युके निमित्त जानकर भी बुद्धिमान् वैद्य ॥ ६० ॥

अपृष्टेननवक्तव्यंमरणंप्रत्युपस्थितम् । पृष्टेनापिनवक्तव्यंतत्रयत्रोपघातकम् ॥ ६१ ॥

विना पूँछे रोगीकी मृत्यु होनेवाली है यह न कहै और जहांकोई पूँछै वहां भी मृत्युहोने वाली यह न कहै ॥ ६१ ॥

आतुरस्यभवेद्दुःखमथवान्यस्यकस्यचित । अध्रुवंमरणंयस्यनैनमिच्छेच्चिकित्सितम् । यस्यपश्येद्विनाशायलिङ्गानिकुशलोभिषक् ॥ ६२ ॥

क्योंकि इससे रोगी को तथा रोगीके अन्य किसी सम्बन्धी को बड़ा दुःख होता है और मृत्युका कोई निश्चय भी नहीं है इसीकारण से चतुर वैद्य जिसके मृत्युके लक्षण देखै उस की मृत्यु होनेवाली है यह न कहकर चिकित्सा न करै ॥ ६२ ॥

लिङ्गेभ्योमरणाख्येभ्योविपरीतानि पश्यता । लिङ्गान्यारोग्यमागन्तु वक्तव्यंभिषजाध्रुवम् ॥ हैं चैतन्यता

दूतैरौत्पातिकैर्भावै उत्सुकता तथा भय श्रयैः । अ''४५ ॥

म्पत्तिलक्षणैस्तेमेधाचह्रीश्रियौचा

जिस रोगीमें मृत्र प्रवन्तेपाप्मानओज

क्षण हों उसकी दूत ॥ ४६ ॥

होनेवाले उत्पातों के (गुणाशक्ति) लज्जा शील प्रियवस्तु तथा ओ है पहिले किये हुये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णोंसे परीक्षा करके अवश्य आरोग्यताहोगी यह कहना चाहिये ॥ ६३ । ६४ ॥

स्वाचारंहृष्टमव्यङ्गंयशस्यंशुक्लवाससम् । अमुण्डमजटंदूतंजातिवेषक्रियासमम् ॥ ६५ ॥

सुन्दर आचरण करनेवाले, प्रसन्न, सम्पूर्ण अङ्गों से युक्त, यशके अभिलाषी, श्वेत वस्त्रधारी, शिरको नहीं मुड़वाये हुये, जटाओंको नहीं धारण कियेहुये, जाति, वेष तथा कार्य्यमें सम ॥ ६५ ॥

अनुष्ट्रखरयानस्थमसन्ध्यास्वग्रहेषुच । अदारुणेषुनक्षत्रेष्वनुग्रेषुध्रुवेषुच ॥ ६६ ॥ विनाचतुर्थीनवमी विनारिक्तांश्चतुर्दशीम् । मध्याह्नंचार्द्धरात्रंच्चभूकम्पराहुदर्शनम् ॥६७॥ विनादेशमशस्तंचशस्तौत्पातिकलक्षणम् । दूतंप्रशस्तमव्यग्रंनिर्दिशेदागतंभिषक् ॥ ६८ ॥

ऊँट तथा गधेकी सवारी पर नहीं चढ़ेहुये, संध्यासमय में अशुभ ग्रहोंसे युक्त समय में दारुण, उग्र तथा अध्रुव नक्षत्रों में, चतुर्थी, नवमी, रिक्ता तथा चतुर्दशी तिथिमें, मध्याह्न में, अर्द्धरात्रिमें, भूकम्प में तथा राहुदर्शन (ग्रहण) के समयमें नहीं आयेहुये, अशुभ देशमें नहीं आये हुये, उत्पातके लक्षणों से रहित, सावधान, तथा आज्ञाकारी दूतको शुभ जानना चाहिये ॥ ६६ । ६७ । ६८ ॥

दध्यक्षतद्विजातीनांवृषभाणांनृपस्यच । रत्नानांपूर्णकुम्भानांसितस्यतुरगस्यच ॥ ६९ ॥

दही अक्षत ब्राह्मण बैल राजा रत्न पूर्णकुम्भ श्वेत घोड़ा ॥ ६९ ॥

सुरध्वजपताकानांफलानांयाचकस्यच । कन्यानांवर्द्धमानानांबद्धस्यैकपशोस्तथा ॥ ७० ॥

इन्द्रध्वज पताका फल याचक बढ़तीहुई कन्या बँधाहुआ एकपशु ॥ ७० ॥

पृथिव्याउद्धृतायाश्चवह्नेःप्रज्वलितस्यच । मोदकानांसुमनसांशुक्लानांचन्दनस्यच ॥ ७१ ॥

जोतीहुई पृथ्वी बलतीहुई अग्नि मोदक श्वेत पुष्प चन्दन ॥ ७१ ॥

मनोज्ञस्यान्नपानस्य पूर्णस्यशकटस्यच । नृभिर्धेन्वाःसवत्सायावडवायाःस्त्रियास्तथा ॥ ७२ ॥

मनोहर अन्नपान मनुष्यों से पूर्ण गाड़ी बछड़ायुक्त गौ बछेड़ायुक्त घोड़ी पुत्रयुक्त स्त्री ॥ ७२ ॥

जीवञ्जीवकसिद्धार्थसारसप्रियवादिनाम् । हंसानांशतपत्राणांचाषाणांशिखिनांतथा ॥ ७३ ॥

जीवक सरसों सारस प्रियवादी हंस कमल नीलकण्ठ मोर ॥ ७३ ॥

मत्स्याजद्विजशंखानांप्रियङ्गूनांघृतस्यच । रोचिष्कादर्शसिद्धानांरोचनायाश्चदर्शनम् ॥ ७४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मछली बकरा पक्षी शंख प्रियंगु घृत कान्तियुक्त दर्पण सिद्ध तथा गोरोचन का दर्शन ॥ ७४ ॥

गन्धःसुरभिर्वर्णश्च सुशुक्लोमधुरोरसः । मृगपक्षिमनुष्याणांप्रशस्ताश्चगिरःशुभाः ॥ ७५ ॥

सुगंधित वस्तु श्वेतवर्ण मधुररस मृग पक्षी तथा मनुष्यों की शुभ वाणी ॥ ७५ ॥

छत्रध्वजपताकानामुत्क्षेपणमभिष्टुतिः । भेरीमृदङ्गशंखानांशब्दाः पुण्याहनिस्वनाः ॥ ७६ ॥

छत्र ध्वजा तथा पताका का उठाया जाना नगाड़ा मृदङ्ग तथा शंख का शब्द पुण्याहवाचनका शब्द ॥ ७६ ॥

वेदाध्ययनशब्दाश्च सुखोवायुःप्रदक्षिणः । पथिवेश्मप्रवेशेतुविद्यादारोग्यलक्षणम् ॥ ७७ ॥

वेदाध्ययन का शब्द तथा सुन्दर दक्षिण वायु यह लक्षण मार्गमें तथा रोगी के गृह में जानेके समय होयँ तो रोगी के आरोग्य होने का निश्चय करना चाहिये ॥ ७७ ॥

मङ्गलाचारसम्पन्नःसातुरोवैश्मिकोजनः । श्रद्दधानोऽनुकूलश्चप्रभूतद्रव्यसंग्रहः ॥ ७८ ॥

जहाँ रोगी तथा रोगी के गृहके लोग सब मंगलाचार युक्तहों श्रद्धायुक्तहों अनुकूल हों अनेक प्रकारके द्रव्योंसे युक्तहों ॥ ७८ ॥

धनैश्वर्य्यसुखावाप्तिरिष्टलाभःसुखेनच । द्रव्याणांतत्रयोग्यानांयोजनासिद्धिरेवच ॥ ७९ ॥

और धन ऐश्वर्य्य सुख तथा इष्टवस्तु की प्राप्ति सुखपूर्व्वक हो वहाँ योग्य औषधियों का व्यवहार करने से कार्य्य सिद्ध होता है ॥ ७९ ॥

गृहप्रासादशैलानांनागानांवृषभस्यच । हयानांपुरुषाणाञ्चस्वप्नेष्वधिरोहणम् ॥ ८० ॥

स्वप्नमें गृह महल पर्वत हाथी बैल घोड़ा तथा पुरुषों पर चढ़ना ॥ ८० ॥

सोमार्काग्निद्विजातीनांगवांनृणां यशस्विनाम् । अर्णवानांप्रतरणं वृद्धिःसम्बाधनिःसृतिः ॥ ८१ ॥

चन्द्रमा सूर्य्य अग्नि ब्राह्मण गौ तथा यशस्वी मनुष्यों को देखना समुद्रके पार जाना वृद्धि बाधाका दूरहोना ॥ ८१ ॥

स्वप्नेदेवैःसपितृभिःप्रसन्नैश्चाभिभाषणम् । दर्शनंशुक्लवस्त्राणांह्रदस्यविमलस्यच ॥ ८२ ॥

निर्मल तड़ाग तथा शुक्ल वस्त्रों को देखना प्रसन्न हुये देवता तथा पितरों के साथ सम्भाषण करना ॥ ८२ ॥

मांसमत्स्यविषामेध्यछत्रादर्शपरिग्रहः । स्वप्नेसुमनसाञ्चैवशुक्लानां दर्शनंशुभम् ॥ ८३ ॥

मांस मछली विष अपवित्र वस्तु छत्र तथा दर्प्पण का ग्रहण करना श्वेत पुष्पों को देखना स्वप्नमें शुभ है ॥ ८३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अश्वगोरथयानश्चयानंपूर्वोत्तरेण च। रोदनंपतितोत्थानंद्विषतांश्चावमर्दनम् ॥ ८४ ॥

घोड़े बैल तथा रथपर चढ़कर पूर्व तथा उत्तर दिशाको जाना रोना गिरकर उठना और शत्रुओं को जीतना शुभ है ॥ ८४ ॥

सत्त्वलक्षणसंयोगाभक्तिर्वैद्यद्विजातिषु। साध्यत्वंनचनिर्वेदस्तदारोग्यस्यलक्षणम् ॥ ८५ ॥

जो रोगी अच्छे लक्षणों से युक्त हो वैद्य तथा ब्राह्मणों का भक्तहो और किसी प्रकार की ग्लानि से युक्त नहो उस रोगी को इन आरोग्यलक्षणों से साध्य जानना चाहिये ॥ ८५ ॥

आरोग्याद्बलमायुश्चसुखञ्चलभते महत्। इष्टांश्चाप्यपरान्भावान्पुरुषःशुभलक्षणः ॥ ८६ ॥

शुभलक्षणों से युक्त रोगी नीरोग होकर बल आयु महासुख तथा अन्य अभीष्ट पदार्थों को प्राप्त होता है ॥ ८६ ॥

तत्रश्लोकः।

उक्तंगोमयचूर्णीयेमरणारोग्यलक्षणम्। दूतस्वप्नातुरोत्पातयुक्तिसिद्धिव्यपाश्रयम् ॥ ८७ ॥

तिसमें यह श्लोक है। इस गोमयचूर्णीय नाम अध्यायमें दूत स्वप्न रोगी उत्पात युक्ति तथा सिद्धिके आश्रित मृत्यु तथा आरोग्यके लक्षण कहेगये ॥ ८७ ॥

भवतिचात्र।

इतीदमुक्तंप्रकृतंयथातथातदन्ववेक्ष्यंसततंभिषग्विदा। तथाहिसिद्धश्चयशश्चशाश्वतंससिद्धकर्मालभतेधनानिच ॥ ८८ ॥

इति गोमयचूर्णीयमिन्द्रियं समाप्तम् ॥

इसमें यह श्लोक है। यह सब जो यथावत् कहागया है सो वैद्य को सदैव विचारना चाहिये इस से कार्य्य की सिद्धि स्थिर यश तथा धनकी प्राप्ति होती है ॥ ८८ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंगोमयचूर्णीयनामबारहवाँइन्द्रियाध्यायसमाप्तहुआ १२ ॥

इन्द्रियस्थान समाप्त ॥

इतिचरकसंहिता सटीक प्रथम भाग समाप्त ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चरकसंहिता सटीक के दूसरेभाग का सूचीपत्र ॥

वर्णन
र्णन
वर्णन
गुण

विषय पृष्ठ

चिकित्सितस्थान ॥

पहला अध्याय ॥

अभयामलकीय रसायनपाद का व्याख्यान १
औषध अनौषध के लक्षण और नाम का वर्णन .... ,,
दीर्घायुआदिक रसायन के गुण २
वाजीकरण औषध के पुत्रादि कारक गुणों का वर्णन .... ,,
कुटीमावेशिक रसायन का वर्णन ३
हड़ के कल्याणकारक लक्षण ४
बहुत उमर बढ़ानेवाले पांच पञ्चमूलादिक ब्राह्मरसायन का वर्णन ५
द्वितीय आमलादि ब्राह्मरसायनयोग का वर्णन ७
खांसी आदि रोगों में बिल्वादिच्यवनमाश का वर्णन ८
युवावस्था करनेवाले चतुर्थ आमलकरसायन का वर्णन १०
ज्वरादिकों में पञ्चमहरीतकी रसायनका वर्णन ११
उमर बढ़ानेवाली हड़आदि रसायनका वर्णन १२

इति चि.कित्सितस्थाने अभयामलकीये रसायनपादःप्रथमः ॥ १ ॥

विषय पृष्ठ

प्राणकामीय रसायनपाद का व्याख्यान १२
प्राणकामीय रसायनपा... गुण और किन किन रोगों में प्रयोग ... रने योग्यहै तिसका विस्तारसमेत वर्णन ,,
सौवर्ष तक अजीर्ण अवस्था के करनेवाले आमलादि रसायनयोग १३
सौ वर्षतक युवावस्था करनेवाले आमलकघृत का वर्णन १५
सौवर्षतक युवावस्था करनेवाले आमलकावलेह का वर्णन १५
सौवर्ष तक युवावस्था करनेवाले आमलकचूर्णका वर्णन १६
युवावस्था के करनेवाले विडङ्गावलेह का वर्णन .... ,,
युवावस्था के करनेवाले दूसरे आमलकावलेह का वर्णन .... ,,
युवावस्था के करनेवाले नागवलारसायन का वर्णन १७
युवावस्था करनेवाले भल्लातकक्षीर १८
युवावस्था करनेवाले भल्लातक क्षौद्रका वर्णन २०
युवावस्थाकारक भल्लात...दकों
भल्लातकविधिका वर्ण ६४
भिलावेके गुणागुण व ६४
इति प्राणकामीयेर... .... ६४
ऋतुओं में ज्वर उत्पन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
करप्रचितीय रसा ...दका व्याख्यान	२०
युवावस्थाकारक ...नकायस ब्राह्म रसायन का वर्णन	२०
हजारवर्ष तक युवावस्था करनेवाले केवलामलक रसायनका वर्णन	२२
अ...भघात ...क रोगों में लौहादि रसायन क... ...र्णन	२३
वृद्धावस्थादिक रोगोंमें ऐन्द्री रसायनका वर्णन	२४
उमरके बढ़ानेवाले मेध्य रसायन	२४
खांसी क्षयादिक रोगों में पिप्पली रसायन का वर्णन	२५
पिप्पलीवर्द्धमान रसायन	२५
सब व्याधिं नाश करनेवाले त्रिफलारसायन का वर्णन	२६
दूसरे त्रिफलारसायनका वर्णन	२६
शिलाजीत के प्रयोग लक्षण और शोधने की विधिका वर्णन	२७
शिलाजतु रसायनका वर्णन	२८

इति करप्रचितिकोरसायनपादस्तृतीयः ॥ ३ ॥

विषय	पृष्ठ
आयुर्वेदसमुत्थानीय रसायनपाद का व्याख्यान	२९
समुत्थानीय रसायनपाद का विस्तरसमेत वर्णन	२९
...यन का वर्णन	३१
... रसायन	३१
... रसायनका वर्णन	३३
...रुषोंके गुण	३५
... .	३६
वैद्योंकी पूजाकरने का प्रकार	३६
अश्विनीकुमारों के गुण	३६
वैद्यों के लक्षण और कर्तव्यता	३७

इति चिकित्सितस्थानेआयुर्वेदसमुत्थानीयो रसायनपादश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

इति रसायनाऽध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
संप्रयोगशरमूलीयवाजीकरण पाद का व्याख्यान	३९
वाजीकरण की प्रशंसा और स्त्री के गुणागुण का वर्णन	३९
पुत्ररहित मनुष्य की अप्रशंसा	४१
बहुत प्रजावाले पुरुषकी प्रशंसा	,,
अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक बृंहणी गुटिकाका वर्णन	४२
वाजीकरणघृत का वर्णन	४३
वाजीकरण पिण्डरस का वर्णन	४४
वृष्यरसका वर्णन	,,
अन्यवृष्यरस का वर्णन	,,
वृष्यमांस का वर्णन	४५
वृष्यमाष का वर्णन	,,
वृष्यशुक्ररस का वर्णन	,,
अन्यवृष्यरस का वर्णन	,,
वीर्य्यवर्द्धक योग करनेका प्रकार	,,
आसिक्तक्षीरीय वाजीकरणकाव्याख्यान	४६
पुत्रकारिणी षष्टिकादि गुटिका	,,
वृष्यपूपलिकायोगका वर्णन	४७
अपत्यकर आत्मगुप्तादिस्वरस	,,
खर्जूरादि वृष्यक्षीर का वर्णन	४८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
जीवकादि वृष्यघृत का वर्णन	,,
वृष्यदध्योदन का वर्णन	४९
वृष्य दुग्धादि का वर्णन	,,
नक्राण्डपाकवृष्ययोगका वर्णन	,,
इति चिकित्सितेआसिक्तक्षीरिकेवाजीकरण पादोद्वितीयः ॥ २ ॥	
माषपर्णी तृतीय वाजीकरणपाद का व्याख्यान	५०
वीर्य्य बढ़ानेवाले दुग्धका वर्णन	५०
पुत्रकारक मेदादि औषध	५०
वीर्य्य बढ़ानेवाली पिप्पल्यादि औषधका वर्णन	५१
वीर्य्यवर्द्धक जीवनादि औषधों की पूरी का वर्णन	५१
वीर्य्ययुक्त पुरुष के लक्षण	५२
अभ्यङ्गादिक वीर्य्य बढ़ानेवाले योगका वर्णन	,,
कामदेव के आयुधों का वर्णन	५३
इतिचिकित्सितस्थानेमापपर्णनामतृतीयो वाजीकरणपादः ॥ ३ ॥	
पुमानजातबलादिकवाजीकरणपाद का व्याख्यान	५३
स्त्रियोंमें गमन करने वाले पुरुषों के विस्तारसमेत लक्षण का वर्णन	५४
वृष्या मांसगुटिका का वर्णन	५५
वृष्य माहिषरस का वर्णन	५५
गर्भाधान करनेवाले योग का वर्णन	५५
वृष्य पूपलिकायोगों का वर्णन	५६
वृष्या माषादिपूपलिका का वर्णन	५६
वृष्ययोग का वर्णन	५६

विषय	पृष्ठ
अपत्यकरघृत का वर्णन	५७
वृष्यगुटिका का वर्णन	५७
वृष्या लंपिसकाका वर्णन	५७
वृष्यके लक्षण और गुणागुण ,लग	५८
बूढ़े पुरुषको मैथुनके अवगुण ौर उप-	
हर्षादिक आठ हेतुओं से ?...	९७
सींचा जाता है इत्यादि सद र की क्रिया	९९
चिह्न	१००
विस्तारसमेत वर्णन ... करने और	
इति चिकित्सितस्थानेवाजीकरण द्वितीयःसमाप्तः ॥ २ ॥	१०१

तीसरा अध्याय ॥

विषय	पृष्ठ
ज्वरचिकित्सिताध्याय का व्याख्यान	६०
प्राणियोंके वैरीरूपीज्वर और तिसके प्रकृत्यादि हेतुओं में पुनर्वसुजी से अग्निवेशजी का प्रश्न	६०
पुनर्वसुजी करके अग्निवेशसे ज्वराधिकार का कथन वर्णन	६१
ज्वरके नामों का वर्णन	६१
ज्वरकी प्रकृति के लक्षण	६१
ज्वरकी प्रवृत्तिके लक्षण	६१
ज्वरके प्रभाव का वर्णन	६२
ज्वरके पहले उत्पादक आलस्यादि योग का वर्णन	६३
विधिके भेदसे ज्वरके प्रकार	६३
मनकी ताप के लक्षण	६४
देहकी संताप और शीतज्वरादिकों के लक्षण	६४
अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण	६४
बहिर्वेगज्वरके लक्षण	६४
वसन्तादिक ऋतुओं में ज्वर उत्पन्न	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीलवान्, बुद्धिमान्,युक्तिके जाननेवाले, शास्त्रके पारंगत जो ब्राह्मणजातीय वैद्य उन का गुरुओंके समान मनुष्यों को पूजन करना चाहिये क्योंकि वैद्य को प्राणोंका आचार्य्य कहते हैं॥ २१५॥

विद्यासमाप्तौभिषजोद्वितीयाजाति रुच्यते। अश्नुतेवैद्यशब्दंहिनवैद्यः पूर्वजन्मना॥ २१६॥

विद्याके समाप्त होने पर वैद्य को द्वितीय जातिप्राप्तिहुई कही जाती है प्रथम जन्मसेही वैद्य को वैद्यशब्द नहीं प्राप्त होताहै॥ २१६॥

विद्यासमाप्तौब्राह्मंवासत्त्वमार्य्यम थापिवा। ध्रुवमाविशतिज्ञाना त्तस्माद्वैद्यद्विजःस्मृतः॥ २१७॥

विद्याके समाप्त होनेपर ज्ञान से ब्रह्मसंबंधी अथवा ऋषिसंबन्धी सत्त्व मनुष्य में अवश्य प्रविष्ट होता है इस से वैद्य को द्विज कहते हैं॥ २१७॥

नाभिध्यायेन्नचाक्रोशेदहितंनसमा चरेत्। प्राणाचार्य्यंबुधःकश्चि दिच्छन्नायुरनित्वरम्॥ २१८॥

बुद्धिमान् पुरुष दीर्घायुहोनेकी इच्छाकरके वैद्यके पदार्थोंके लेनेकी इच्छा न करै वैद्यका तिरस्कार न करै, और वैद्य का अहित न करै॥ २१८॥

चिकित्सितस्तुसंश्रुत्य योवासंश्रु त्यमानवः। नोपाकरोतिवैद्याय नास्तितस्येहनिष्कृतिः॥ २१९॥

जो पुरुष चिकित्सा करवाके प्रतिज्ञाकरके अथवा प्रतिज्ञा न करके भी वैद्य के साथ उपकार नहीं करता है वह इस जन्म में वैद्य से उद्धार नहीं होताहै॥ २१९॥

भिषगप्यातुरान्सर्वान्स्वसुतानिव यत्नवान्। आबाधेभ्योहिसंरक्षे दिच्छन्धर्ममनुत्तमम्॥ २२०॥

और वैद्य भी श्रेष्ठ धर्म की इच्छासे पुत्रोंके समान रोगियोंकी सम्पूर्ण रोगों से यत्नपूर्वक रक्षाकरै॥ २२०॥

धर्मार्थश्चार्थकामार्थमायुर्वेदोमहर्षि भिः। प्रकाशितोधर्मपरैरिच्छद्भिः स्थानमक्षरम्॥ २२१॥

धर्मात्मा महर्षि लोगों ने अक्षयस्थान की प्राप्ति के लिये और धर्म्म अर्थ तथा काम के निमित्त आयुर्वेद का प्रकाश कियाहै॥२२१॥

नात्मार्थं नापि कामार्थमथभूतदयां प्रति। वर्त्ततेयश्चिकित्सायांससर्वम तिवर्त्तते॥ २२२॥

जो वैद्य अपने प्रयोजनके निमित्त तथा अन्य किसी कामना से चिकित्सा नहीं करता है किन्तु प्राणियों पर दयाकरके चिकित्सा करताहै वह सबसे श्रेष्ठ होजाताहै॥ २२२॥

कुर्वतेयेतुवृत्त्यर्थंचिकित्सापण्यविक्र यम्। तेहित्वाकाञ्चनंराशिंपांशुरा शिमुपासते॥ २२३॥

जो वैद्य जीविका के निमित्त चिकित्सारूपी सौदे को बेचते हैं वह सुवर्ण के ढेर को छोड़कर धूलके ढेरका सेवन करतेहैं॥ २२३॥

दारुणैःकृष्यमाणानांगदैर्वैवस्वतः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षयम् । छित्त्वावैवस्वतान्पाशाञ्जी वितश्चप्रयच्छति ॥ २२४ ॥

भयंकर रोगोंके द्वारा यमराज के लोक को लिये जातेभये मनुष्यों के यमपाशों को काटकर जो प्राणों की रक्षा करताहै ॥ २२४ ॥

धर्मार्थसदृशस्तस्यदातानेहोपलभ्य ते । नहिजीवितदानाद्धिदानमन्य द्धिशिष्यते ॥ २२५ ॥

उसके समान धर्म तथा अर्थका देनेवाला कोई नहीं है क्योंकि इस लोकमें प्राणदान से बढ़कर कोई दान नहीं है ॥ २२५ ॥

परोभूतदयाधर्मइतिमत्वाचिकित्स या । वर्त्ततेयःससिद्धार्थःसुखमत्य न्तमश्नुते । २२६ ॥

प्राणियों पर दयाकरना महाधर्म्म है यह जानकर जो चिकित्सा करता है वह सम्पूर्ण मनोरथोंसे पूर्णहोकर परमसुख को प्राप्त होताहै ॥ २२६ ॥

तत्र श्लोकौ ।

आयुर्वेदसमुत्थानांदिव्यौषधिविधिः शुभः । अमृताल्पान्तरगुणंसिद्धंर त्नरसायनम् ॥ २२७ ॥ सिद्धेभ्यो ब्रह्मचारिभ्यो यदुवाचामरेश्वरः । आयुर्वेदसमुत्थानेतत्सर्वसम्प्रका शितम् ॥ २२८ ॥

समाप्तश्चरसायनोऽध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

———

तिसमें यह दो श्लोक हैं ॥

इन्द्रने शुद्ध ब्रह्मचारियों से जिस प्रकार आयुर्वेद की उत्पत्ति दिव्य औषधियों की शुभविधि और अमृत के समान गुणकारी सिद्धि रत्नरूपी रसायन कही वह सब आयुर्वेदसमुत्थान नाम इस रसायनपादमें भगवान् आत्रेयजीने प्रकाशितकिया॥२२७।२२८ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंआयुर्वेदसमुत्थानीयनामचौथारसायनपादसमाप्तहुआ ४ ॥
प्रथम अध्यायसमाप्तहुआ ॥

———

दूसराअध्याय ॥

सम्प्रयोगशरमूलीयंवाजीकरणपादम् ॥

वाजीकरणमन्विच्छेत्पुरुषोनित्यमा त्मवान् । तदायत्तौहिधर्मार्थौप्रीति श्चयशएवच ॥ १ ॥

इस के उपरान्त संयोगशरमूलीयनाम वाजीकरणपाद का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

बुद्धिमान् पुरुष सदैव वाजीकरणकी इच्छाकरै क्योंकि धर्म अर्थ प्रीति तथा यश वाजीकरणके आधीनहै ॥ १ ॥

पुत्रस्यायतनंह्येतद्गुणाश्चैतेसुता श्रयाः ॥ वाजीकरणमग्र्यञ्चक्षेत्रं स्त्रीयाप्रहर्षिणी ॥ २ ॥

काहेसे कि वाजीकरण पुत्रोत्पत्तिका कारणहै और धर्म्मादिक गुण पुत्रके आश्रित हैं आनन्ददायिनी स्त्रीही श्रेष्ठ वाजीकरण का क्षेत्र है ॥ २ ॥

इष्टाह्येकैकशोऽप्यर्थाःपरंप्रीतिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राःस्मृताः। किंपुनःस्त्रीशरीरेयेसंघा तेन व्यवस्थिताः॥ ३॥

अभीष्ट एक एक विषयभी अत्यन्त प्रीतिकारी होते हैं और स्त्रीके शरीरमें वह सब विषय एक साथही प्राप्त होते हैं इससे स्त्री प्रीतिकारिणी होती है इसमें कहनाही क्या है॥ ३॥

संघातोहीन्द्रियार्थानांस्त्रीषुनान्यत्र विद्यते। स्त्र्याश्रयोहीन्द्रियार्थोयः सप्रीतिजननोऽधिकः॥ ४॥

सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय केवल स्त्रीमेंही एकसाथ प्राप्त होते हैं अन्यत्र नहीं इससे स्त्रियोंमें जो इन्द्रियोंका विषयहै वह अधिक प्रीतिकारी होताहै॥ ४॥

स्त्रीषुप्रीतिर्विशेषेणस्त्रीष्वपत्यंप्रतिष्ठितम्। धर्मार्थौस्त्रीषुलक्ष्मीश्चस्त्रीषुलोकाःप्रतिष्ठिताः॥ ५॥

विशेष प्रीति संतति धर्म अर्थ लक्ष्मी तथा सम्पूर्णलोक स्त्रियोंमेंही स्थितहै॥ ५॥

सुरूपायौवनस्थायालक्षणैर्याविभूषिता। यावश्याशिक्षितायाचसा स्त्रीवृष्यतमामता॥ ६॥

जो स्त्री सुन्दर रूपवती युवती शुभलक्षणोंसेयुक्त वशीभूत तथा सुशिक्षितहो वह अत्यन्त वृष्य (कामियों को हितकारी) होती है॥ ६॥

नानाभक्तातुलोकस्यदैवयोगाच्चयोषिताम्। तंतंप्राप्यविवर्द्धन्तेनरंरूपादयोगुणाः॥ ७॥

लोक की अनेक प्रकार की रुचिसे और दैवयोगसे स्त्रियोंके रूपआदिक गुण विशेष २ पुरुषों को पाकर बढ़ते हैं॥ ७॥

वयोरूपवचोहावैर्यायस्यपरमाङ्गना। प्रविशत्याशुहृदयंदैवाद्वाकर्मणोऽपिवा॥ ८॥

जो स्त्रीरूप(बचन, अवस्था तथा हाव (स्त्रियों की लीलाविशेष) के द्वारा भाग्य अथवा कर्मवशसे जिस पुरुष के हृदय में शीघ्रही प्रवेशकरै॥ ८॥

हृदयोत्सवरूपायायासमानमनोरमा। समानसत्त्वायावश्यायायस्य प्रीतयेप्रियैः॥ ९॥

जो स्त्री जिस पुरुषके हृदय की उत्सवरूप होय जो स्त्री जिसपुरुषके मनके समान मनवाली होय जिसस्त्री का सत्त्व जिस पुरुष के समान होय जो स्त्री जिसपुरुष के वशीभूत होय जो स्त्री प्रिय वस्तुओंकेद्वारा जिस पुरुष को प्रिय लगती होय॥ ९॥

यापाशभूतासवर्षामिन्द्रियाणांपरैर्गुणैः।ययावियुक्तोनिस्त्रीकमरतिर्मन्यतेजगत्॥ १०॥

जो स्त्री अपने श्रेष्ठ गुणों से जिस पुरुषकी सम्पूर्ण इन्द्रियोंकी पाशरूप होय जिस स्त्रीके वियोगमें जो पुरुष बेचैन होकर सम्पूर्ण संसार को स्त्रियों से रहितसा देखै॥ १०॥

यस्याऋतेशरीरंनाधत्तेशून्यमिवेन्द्रियैः। शोकोद्वेगारतिभयैर्यांदृष्ट्वानाभिभूयते॥ ११॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस स्त्रीके बिना जिस पुरुष को अपना शरीर इन्द्रियोंसे शून्यसा मालूम पड़ै जिस स्त्री को देखकर जो पुरुष शोक उद्वेग बेचैनी तथा भयकेद्वारा पीड़ित न होय ॥ ११ ॥

यातियांप्राप्यविस्रम्भंदृष्ट्वाहृष्यत्यतीवयाम्र। अपूर्वामिवयांयातिनित्यंहर्षातिवेगतः ॥ १२ ॥

जिस स्त्रीको पाकर जो पुरुष विश्वासको प्राप्तहोय जिस स्त्रीको देखकर जो पुरुष अत्यन्त प्रसन्न होय जिस स्त्रीके निकट जो पुरुष हर्षके वेग से सदैव मानो अपूर्व स्त्रीके पासजाय ॥ १२ ॥

गत्वागत्वापिबहुशो यां तृप्तिंनैवगच्छति॥ सास्त्रीवृष्यतमातस्यनानाभावाहिमानवाः ॥ १३ ॥

और जिस स्त्रीके पास वारंवार जाय जायकरभी जो पुरुष तृप्त न होय वह स्त्री उस पुरुषके लिये अत्यन्त वृष्य होती है क्योंकि पुरुषोंके भाव अनेक प्रकारके होते हैं ॥ १३ ॥

अतुल्यगोत्रांवृष्याश्चप्रहृष्टांनिरुपद्रवाम्। शुद्धस्नातांव्रजेन्नारीमपत्यार्थीनिरामयः ॥ १४ ॥

रोगरहित पुरुष संततिकी इच्छासे समान गोत्रमें नहीं उत्पन्नहुई हर्ष उत्पन्न करनेवाली हर्षयुक्त उपद्रवरहित तथा रजोधर्मके उपरान्त शुद्ध स्नान कियेहुई स्त्रीके साथ समागम करै ॥ १४ ॥

अच्छायश्चैकशाखश्चनिष्फलश्चयथाद्रुमः। अनिष्टगन्धश्चैकश्चनिरपत्यस्तथानरः ॥ १५ ॥

जैसे छायारहित एक शाखावाला निष्फल तथा दुर्गन्धियुक्त एक वृक्ष अशोभित होता है उसी प्रकार संतति रहित पुरुषभी अशोभित होताहै ॥ १५ ॥

चित्रदीपःसर शुष्कमधातुर्धातुसन्निभः। निष्प्रजस्तृणपूलीतिज्ञातव्यःपुरुषाकृतिः ॥ १६ ॥

संतानरहित पुरुष को चित्रमें लिखेहुये दीपकके समान सूखेहुये तड़ागके समान सुवर्णादि धातुओंके विना काँचआदिसे बने हुये कृत्रिम सुवर्णादि धातुओंके समान और खेतोंमें पक्षियोंके डरवानेके लिये तृणों से बनेहुये पुरुषके समान जानना चाहिये ॥१६॥

अप्रतिष्ठश्चनग्नश्चशून्यश्चैकेन्द्रियश्चना। मन्तव्योनिष्क्रियश्चैवयस्यापत्यंनविद्यते ॥ १७ ॥

जिस पुरुषके संतति न होय उसे प्रतिष्ठारहित नग्न शून्य एकही इन्द्रियसेयुक्त तथा क्रियारहितसा जानना चाहिये ॥ १७ ॥

बहुमूर्त्तिर्बहुमुखोबहुव्यूहोबहुक्रियः। बहुचक्षुर्बहुज्ञानोबह्वात्माचबहुप्रजः ॥ १८ ॥

जिस पुरुषके बहुत संतति होय उसे अनेकमूर्त्ति अनेकमुख तथा अनेक झुण्डों से युक्त बहुतनेत्रोंसे युक्त बहुत ज्ञानवाला बहुत आत्मावाला तथा बहुत क्रियावाला जानना चाहिये ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मङ्गल्योऽयंप्रशस्तोऽयंधन्योऽयंवी र्य्यवानयम्। बहुशाखोऽयमितिच स्तूयतेनाबहुप्रजः॥ १८॥

जिस पुरुषके बहुत संतति होती है उसको संसारमें मंगलरूप श्रेष्ठ धन्य वीर्यवान् तथा बहुत शाखायुक्त है यह कहकर उसकी प्रशंसा कीजाती है॥ १९॥

प्रीतिर्बलंसुखंवृत्तिर्विस्तारोविभवः कुलम्। यशोलोकाःसुखोदर्कास्तु ष्टिश्चापत्यसंश्रिता॥ २०॥

प्रीति बल सुख वंशका विस्तार जीविका ऐश्वर्य्य कुल यश सुखदायक स्वर्गादिलोक और संतोष यह सब संतान के आधीन हैं॥ २०॥

तस्मादपत्यमन्विच्छन्गुणांश्चापत्य संश्रितान्। वाजीकरणनित्यःस्या दिच्छेत्कामसुखानिच॥ २१॥

इससे संतान संतानके आश्रित गुण और काम सुखोंकी इच्छा करनेवाला पुरुष वाजीकरण का सेवन करै॥ २१॥

उपभोगसुखान्सिद्धान्वीर्य्यापत्यवि वर्द्धनान्। वाजीकरणसंयोगान्प्रव क्ष्याम्यतउत्तरम्॥ २२॥

इसके उपरान्त भोगमें सुख देनेवाले और वीर्य्य तथा संततिके बढ़ानेवाले वाजीकरणके सिद्धयोग कहताहूं॥ २२॥

शरमूलेक्षुमूलानिकाण्डेक्षुंसेक्षुबा लिकम्। शतावरींपयस्यांचविदारीं कण्टकारिकाम्॥ २३॥

सरकण्डाकी जड़ ईखकीजड़ तालमखाना केतारी शतावर क्षीरकाकोली बिलाईकन्द भटकटैया॥ २३॥

जीवन्तींजीवकंमेदांवीराञ्चर्षभकंब लाम्। ऋद्धिंगोक्षुरकंरास्नामात्म गुप्तांपुनर्नवाम्॥ २४॥

जीवन्ती जीवक मेदा और ऋषभक वरियारा ऋद्धि गोखुरू रास्ना किवाँच तथा गदहपूर्णा॥ २४॥

पृथक्त्रिपलिकान्कृत्वामाषाणामा ढकंनवम्। विपाचयेज्जलद्रोणेचतु र्भागञ्चशोषयेत्॥ २५॥

यह सब बारह बारह तोले और नये उर्द दोसौ छप्पन २५६ तोले इन सबको एकहजार चौबीस १०२४ तोले जलमें पकावे जब चौथाई जल बाकीरहै॥ २५॥

तत्रपेष्याणिमधुकंद्राक्षांफल्गूनिपि प्पलीम्। आत्मगुप्तांमधूकानिखर्जू राणिशतावरीम्॥ २६॥

तब उसमें मुलेठी दाख कोठाडूमर पीपल किवाँच महुवा खजूर तथा शतावर को पीसकर मिलावे॥ २६॥

विदार्य्यामलकेक्षूणांरसस्यचपृथक्पृ थक्। सर्पिषश्चाढकंदद्यात्क्षीरद्रोण ञ्चतद्भिषक्॥ २७॥

और बिलाईकन्दका रस दोसौ छप्पन २५६ तोले आँवले का रस दोसौ छप्पन २५६ तोले ईखका रस दोसौ छप्पन २५६ तोले घी दोसौ छप्पन २५६ तोले तथा दूध एक हजार चौबीस १०२४ तोले मिलाकर॥ २७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधयेद्घृतशेषञ्चसपूतंयोजयेत्पुनः। शर्करायास्तुगाक्षीर्य्याश्चूर्णैः प्रस्थोन्मितैर्भिषक् ॥ २८ ॥

पाककरै जब पानी जलजाय घी वाकीरहै तब उतारकर छानले उस घीमें शक्कर चौंसठ ६४ तोले बंशलोचन का चूर्ण चौंसठ ६४ तोले ॥ २८ ॥

पलैश्चतुर्भिर्मागध्याःपलेनमरिचस्यच। त्वगेलाकेशराणाञ्चचूर्णैरर्द्धपलोन्मितैः ॥ २६ ॥

पीपलका चूर्ण सोरह तोले मिर्चका चूर्ण चार तोले इलायची तेजपात तथा नागकेशर का चूर्ण दो २ तोले ॥ २९ ॥

मधुनःकुडवाभ्याञ्चद्वाभ्यांतत्कारयेद्भिषक्। पलिकागुटिकाःकृत्वातायथाग्निप्रयोजयेत् ॥ ३० ॥

और शहद बत्तिस तोले मिलाकर चार चार तोलेकी गोली बाँधले इन गोलियों को अग्निके अनुसार खाय ॥ ३० ॥

एषवृष्यःपरोयोगोबृंहणोबलवर्द्धनः। अनेनाश्वइवोदीर्णोलिङ्गमर्पयतेस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

इति बृंहणीगुटिका।

यह योग बहुत वीर्य्यवर्द्धक धातुवर्द्धक तथा बलकारी होताहै इसकेद्वारा मनुष्य घोड़ेके समान प्रचण्ड होकर स्त्रीके साथ रमण करता है ॥ ३१ ॥

इति बृंहणीगुटिका ॥

माषाणामात्मगुप्तायाबीजानामाढकंनवम्। जीवकर्षभकौवीरांमेदामृद्धिंशतावरीम् ॥ ३२ ॥

नवीन उर्द दोसौ छप्पन २५६ तोले किवाँचके बीज दोसौ छप्पन २५६ तोले जीवक ऋषभक क्षार मेदा ऋद्धि शतावर ॥ ३२ ॥

मधुकञ्चाश्वगन्धांचसाधयेत्कुडवोन्मिताम्। रसेतस्मिन्घृतप्रस्थंगव्यंदशगुणंपयः ॥ ३३ ॥

महुवा तथा असगन्ध सोलह २ तोले इन सबका चौगुने जलमें काढ़ा करके छानले फिर उस काढ़ेमें एकप्रस्थ गौका घी घीका दशगुणा गौका दूध ॥ ३३ ॥

विदारीणांरसप्रस्थंप्रस्थमिक्षुरसस्यच। दत्त्वामृद्वग्निनासाध्यंसिद्धंसर्पिर्निधापयेत् ॥ ३४ ॥

बिलाईकन्द का रस एक प्रस्थ और ईख का रस एक प्रस्थ मिलाकर मंदाग्निमें पाककरै जब पानी जलजाय तब उस घीको उतारकर छानले ॥ ३४ ॥

शर्करायास्तुगाक्षीर्य्याःक्षौद्रस्यचपृथक्पृथक्। भागांश्चतुष्पलांस्तत्रपिप्पल्याश्चावपेत्पलम् ॥ ३५ ॥

फिर उस घीमें बंशलोचन शक्कर तथा शहद सोलह २ तोले और पीपल चार तोले मिलावे ॥ ३५ ॥

पलंपूर्वमतोलीढ्वाततोऽन्नमुपयोज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

येत्। यइच्छेदक्षयंशुक्रंशेफसश्चो त्तमंबलम् ॥ ३६ ॥

इति वाजीकरणंघृतम्।

जो पुरुष अक्षय वीर्य्य तथा लिङ्गमें अत्यन्त बल चाहै वह भोजनके पहिले चार तोले यह औषध चाटै ॥ ३६ ॥

इति बाजीकरणघृत ॥

शर्करामाषविदलास्तुगाक्षीरीपयो घृतम् । गोधूमचूर्णषष्ठीनिसर्पि ष्युत्कारिकांपचेत् ॥ ३७ ॥

शक्कर उर्दकी दाल वंशलोचन दूध गेहूंका आटा इनको घीमें डालकर हलुवा बनावे ३७॥

तांनातिपक्कांमृदिता कौक्कुटेम धुरेरसे। सुगन्धे प्रक्षिपेदुष्णे यथा सान्द्रीभवेद्रसः ॥ ३८ ॥

उस हलुवे को अच्छी प्रकार पाकन करके मुर्गे के मधुर माँस रसमें मर्द्दनकरै जब वह रस उसके मिलने से गाढ़ा होजाय तब उसमें इलायची आदि सुगन्धित बस्तु मिलादे ३८॥

एष पिण्डरसोवृष्यः पौष्टिकोबल वर्द्धनः। अनेनाश्व इवोदीर्णोबली लिङ्गं समर्पयेत् ॥ ३९ ॥

शिखितित्तिरिहंसानामेवं पिण्डरसो मतः ॥

इति वाजीकरणपिण्डरसाः।

यह पिण्डरस वीर्य्यवर्द्धक पुष्टिकारी तथा बलवर्द्धक होताहै इसके सेवनसे मनुष्य घोड़े के समान बलवान् होकर स्त्रीकेसाथ रमण करता है ॥ ३९ ॥

इसी प्रकार मोर तीतर तथा हँसके मांसका रसभी सेवन करना चाहिये ॥

इति बाजीकरणपिण्डरस ॥

घृतं माषान् सवस्ताण्डान् साधयेन्मा हिषेरसे । भर्जयेत्तंरसंपूतंफलाम्लंन वसर्पिषि ॥ ४० ॥

घी उर्द तथा बकरेके अण्डकोश को भैंसे के मांसके रसमें पाककरै उस रसको छानकर नवीन घीमें छौंके फिर उसमें आँवले आदि खट्टे फलोंका रस ॥ ४० ॥

ईषत्सलवणंयुक्तंधान्यजीरकनागरैः। एषवृष्यश्च बल्यश्च बृंहणश्च रसो त्तमः ॥ ४१ ॥

इति वृष्यरसाः।

धनियां जीरा सोंठि तथा थोड़ासा लवण डालकर उसका सेवनकरै यह रसवीर्य्य बल तथा धातुओंका अत्यन्तवर्द्धक होता है ॥ ४१ ॥

चटकांस्तित्तिरिरसेतित्तिरीन्कौक्कुटेर से । कुक्कुटान्बार्हिणरसेहांसेबर्हिण मेवच ॥ ४२ ॥

गौरैया पक्षी के मांस को तीतरके मांसके रसमें तीतरके मांस को मुर्गेके मांसके रसमें मुर्गेके मांस को मोरके मांसके रसमें और मोरके मांस को हँसके मांसकेरस में ॥ ४२ ॥

नवसर्पिषिसन्तप्तान् फलाम्लान्कार येद्रसान् । मधुरान्वायथासात्म्यंग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्धाढ्यान्बलवर्द्धनान् ॥ ४३ ॥

इति अन्यवृष्यरसाः ।

पाक करके नवीन घीमें छौंककर सात्म्य के अनुसार आँवले आदिकी खटाई डालकर अथवा शक्कर आदि मिठाई डालकर और इलायची आदि सुगन्धित वस्तु डालकर सेवनकरै यह मांसरस अत्यन्त बलवर्द्धक होते हैं ॥ ४३ ॥

इति वृष्यरस ॥

तृप्तिंचटकमांसानांगत्वायोऽनुपिबेत्पयः । नतस्यलिङ्गशैथिल्यंस्यान्नशुक्रक्षयोनिशि ॥ ४४ ॥

इति वृष्यमांसाः ।

जो पुरुष गौरैया पक्षीके मांससे तृप्त होके दूध पीताहै रात्रिके समय उसका न लिङ्ग शिथिल होताहै न वीर्य्य गिरताहै ॥ ४४ ॥

इति वृष्यमांस ॥

माषयूषेणयोभुक्त्वाघृताढ्यंषष्टिकौदनम् । पयःपिबतिरात्रिंस कृत्स्नांजागर्ति वेगवान् ॥ ४५ ॥

इति वृष्यमाषः ।

जो पुरुष साँठीके चावलोंका घृतयुक्त भात उर्दकी दालकेसाथ खाकर दूध पीताहै वह कामातुर होकर रात्रिभर नहीं सोताहै ॥ ४५ ॥

इति वृष्यमाष ॥

ननास्वपितिरात्रीषुनित्यस्तब्धेनचशेफसा । तृप्तःकुक्कुटमांसानांभृष्टानांनक्रेतसि ॥ ४६ ॥

इति वृष्यशुक्ररसः ।

मगरके वीर्य्य में मुर्गेके मांस को भूनकर तृप्ति पूर्व्वक खाके मनुष्य कामके वेगसे रात्रि रात्रिभर जागता है और उसका लिङ्ग शिथिल नहीं होताहै ॥ ४६ ॥

इति वृष्यशुक्ररस ॥

निःस्वाव्यमत्स्याण्डरसंभृष्टंसर्पिषिभक्षयेत् । हंसबर्हिणदक्षाणांचैवमण्डानिभक्षयेत् ॥ ४७ ॥

इत्यन्यो वृष्यरसः ।

मछली के अण्डोंका रस निचोड़कर घीमें भूनकर खाने से वीर्य्य की वृद्धि होती है हँस मोर तथा मुर्गेके भी अण्डे इसी प्रकारसे खाने चाहिये ॥ ४७ ॥

इति वृष्यरस ॥

स्रोतःसुशुद्धेष्वमलेशरीरेवृष्यंयदामितमत्तिकाले । वृषायतेतेनपरंमनुष्यस्तद्बृंहणंचैवबलप्रदञ्च ॥ ४८ ॥

स्रोतोंके शुद्ध होनेपर तथा शरीरके निर्मल होनेपर पूर्वोक्त जो वृष्ययोग मनुष्य खाता है उससे अत्यन्त कामातुर होता है और धातु तथा बलकी वृद्धिसे युक्त होताहै ॥ ४८ ॥

तस्मात्पुराशोधनमेवकार्य्यंबलानुरूपंनहिसिद्धियोगाः । सिध्यन्तिदेहेमलिनेप्रयुक्ताः क्लिष्टेयथावाससिरागयोगाः ॥ ४९ ॥

इससे वृष्य औषधियों के सेवनके पहिले बलके अनुसार शोधन (जुल्लाब) करना चाहिये क्योंकि जैसे मलिन वस्त्रमें अच्छे प्रकार से रंग नहीं चढ़ता है उसी प्रकार शरीर के मलिन होनेपर जिन सिद्धयोगों का प्रयोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया जाता है उनका फल नहीं प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥

तत्रश्लोकौ ।

वाजीकरणसामर्थ्यं क्षेत्रंस्त्रीयस्यचैवया । येदोषानिरपत्यानां गुणाः पुत्रवतांश्चये ॥ ५० ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं । वाजीकरण की सामर्थ्य जिसकी जो स्त्री क्षेत्र है संतानरहित पुरुषों के दोष पुत्रवान् पुरुषोंके गुण ॥ ५० ॥

उक्तास्तेशरमूलीयेपादेपुष्टिबलप्रदाः । दशपञ्चसंयोगावीर्य्यापत्यविवर्द्धनाः ॥ ५१ ॥

शरमूलीयेवाजीकरणपादःप्रथमः ।

और पुष्टि बल वीर्य्य तथा संततिके बढ़ानेवाले पन्द्रह योग यह सब भगवान् आत्रेयजीने संयोगशरमूलीयनाम इस वाजीकरण पादमें कहा ॥ ५१ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रेमेंचिकित्सास्थानकासंयोगशरमूलीयनाम प्रथमवाजीकरण पादसमाप्तहुआ ॥ १ ॥

अथातआसिक्तक्षीरीयंद्वितीयंवाजीकरणपादंव्याख्यास्यामइतिहस्माहभगवानात्रेयः ॥ ५२ ॥

इसके उपरान्त आसिक्तक्षीरीयनाम वाजीकरण द्वितीयपादका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ ५२ ॥

आसिक्तक्षीरमापूर्णमशुष्कंशुद्धषष्टिकम् । उलूखलेसमापोथ्यपीड़येत्क्षीरमर्दितम् ॥ ५३ ॥

साँठी के धान जिस समय सूखे न होयँ और दूधसा उनमें भराहो उस समय उनको लेकर दूधमें भिगोके ऊखलमें कूटैं ॥ ५३ ॥

क्षुण्णंविमृदितंक्षीरेपीडयेत्सुसमाहितः । गृहीत्वातंरसंपूतंगव्येनपयसा सह ॥ ५४ ॥

फिर उन कूटेहुवों को गौके दूधमें डालकर छानके उनका रस निकाल लेवे ॥ ५४ ॥

बीजानामात्मगुप्तायाधान्यमाषरसेनच । बलायाः शूर्पपर्ण्योश्चजीवन्त्याजीवकस्यच । ऋद्धयार्षभककाकोलीश्वदंष्ट्रामधुकस्यच ॥ ५५ ॥

तदनन्तर उस रसमें किवाँचके बीज धनिया उर्द बरियारा बनमूँग बनउर्द जीवन्ती जीवक ऋद्धि ऋषभक काकोली गोखुरू मुलेठी ॥ ५५ ॥

शतावर्य्याविदार्य्याश्चद्राक्षाखर्ज्जूरयोरपि । संयुक्तंमात्रयावैद्यःसाधयेत्त्रचावपेत् ॥ ५६ ॥

शतावरि बिलाईकन्द दाख तथा खजूर इन सबके काथ को अलग अलग समभाग लेके मिलाकर मंदाग्निमें पाककरै ॥ ५६ ॥

तुगाक्षीर्य्याःसमाषाणांशालीनांषष्टिकस्यच । गोधूमानाश्चचूर्णानियैःससान्द्रीभवेद्रसः ॥ ५७ ॥

और उसमें बंशलोचन उर्द शालि व सांठी धान तथा गेहूंके चूर्ण को मिलावै जब वह रस गाढ़ा होजाय ॥ ५७ ॥

सान्द्रीभूतश्चतंकुर्य्यात्प्रभूतमधुशर्क

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रम् । गुडिकाबदरैस्तुल्यातांश्चसर्पिषिभर्जयेत् ॥ ५८ ॥

तब उस गाढ़े रसमें बहुतसा शहद तथा शक्कर मिलाके बेरके बराबर गोली बनाके घीमें भून लेवे ॥ ५८ ॥

तायथाग्निप्रयुञ्जानःक्षीरमांसरसाशनः । पश्यत्यपत्यंविपुलंवृद्धोप्यात्मजमक्षयम् ॥ ५९ ॥

इति अपत्यकराषष्टिकादिगुटिका

इन गोलियों को अग्निबल के अनुसार खाके दूध तथा मांसके रसकेसाथ भोजन करने से वृद्ध पुरुषके भी अक्षय बहुत संतति होती है ॥ ५९ ॥

इति अपत्यकराषष्ठिकादिगुटिका ॥

चटकानांसहंसानांदक्षाणांशिखिनांतथा । शिशुमारस्यनक्रस्यभिषक्शुक्राणिसंहरेत् ॥ ६० ॥

गौरैया पक्षी, हंस, मुर्गा, मोर, शिशुमार तथा मगर इनका वीर्य्य वैद्य लेके ॥ ६० ॥

गव्यंसर्पिर्वराहस्यकुलिङ्गस्यवसामपि । षष्टिकानाञ्चचूर्णानिचूर्णंगोधूममेवच ॥ ६१ ॥

और गौका घी शूकर की चर्बी तथा गौरैया पक्षीकी चर्बी सांठी के चांवलों का आटा और गेहूंका आटा ॥ ६१ ॥

एभिःपूपलिकाःकार्य्याः शष्कुल्योवर्त्तिकास्तथा । पूपाधानाश्चविविधाभक्ष्याश्चान्येपृथग्विधाः ॥ ६२ ॥

इन सबके द्वारा पूपलिका (भक्ष्यविशेष) शष्कुली (भक्ष्यविशेष) वर्तिका (भ० वि०) पूपाधान (भ० वि०) और अन्य नाना प्रकार की भक्ष्य वस्तु बनाले ॥ ६२ ॥

एषांप्रयोगाद्भक्ष्याणांस्तब्धेनापूर्णरेतसा । शेफसावाजिवद्यातियाववदिच्छंस्त्रियोनरः ॥ ६३ ॥

इति वृष्यपूपलिकयोगः ।

इस भक्ष्य प्रयोग के खाने से मनुष्य वीर्य्य से भरेहुये लिंगके द्वारा घोड़ेके समान जितनी स्त्रियों से चाहताहै उतनी स्त्रियों के साथ रमण करताहै ॥ ६३ ॥

इति वृष्यपूपलिका योग ॥

आत्मगुप्ताफलंमाषःखर्जूराणिशतावरीम् । शृङ्गाटकानिमृद्वीकांसाधयेत्प्रस्थसम्मिताम् । क्षीरप्रस्थंजलप्रस्थंएतत्प्रस्थावशेषितम् । शुद्धेनवाससापूतं योजयेत्प्रसृतैस्त्रिभिः । शर्करायास्तुगाक्षीर्य्याः सर्पिषोऽभिनवस्यच । तत्पाययेतसक्षौद्रं षष्टिकान्नञ्चभोजयेत् ॥ ६४ । ६५ । ६६ ॥

किवांच के बीज, उर्द, खजूर, शतावर, सिंघाड़ा तथा दाख यह सब एक २ प्रस्थ दूध एक प्रस्थ और जल एक प्रस्थ इनसबको एक में मिलाकर पाककरै जब पानी जलजाय दूध बाकी रहै तब छानकर उस दूधमें शक्कर, वंशलोचन तथा नवीन घी बारह २ तोले मिलावे तदनन्तर शहद डालकर उस दूधको पीवे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सांठी के चावलों का भात खावे ॥ ६४ । ६५ । ६६ ॥

जरापरीतोऽप्यबलोयोगेनानेनविन्दति। नरोऽपत्यंसुविपुलंयुवेवचहृष्यति ॥ ॥ ६७ ॥

इति अपत्यकरःस्वरसः।

इसके सेवनसे दुर्बल वृद्ध पुरुष भी बहुत संतान उत्पन्न करने में समर्थ होजाताहै और युवा के समान रतिमें प्रसन्न होताहै ॥ ६७ ॥

इति अपत्यकर स्वरस ॥

खर्जूरीमस्तकंमाषान्पयस्यांसशतावरीम् । खर्जूराणिमधूकानिमृद्वीकामजडाफलम् ॥ ६८ ॥

खजूरमस्तक, उर्द, क्षीरकाकोली,शतावर, महुवा, दाख तथा किंवाच के बीज ॥ ६८ ॥

पलोन्मितानिमतिमान्साधयेत्सलिलाढके। तेनपादावशेषेणक्षीरप्रस्थंविपाचयेत् ॥ ६९ ॥

इनसब औषधियोंको चार २ तोले लेकर दोसौ छप्पन २५६ तोले जलमें पाककरै जब चौथाई जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे उस काढ़े में चौंसठ तोले दूध मिलाकर पकावे ॥ ६९ ॥

क्षीरशेषेणतेनाद्यादघृताढ्यंषष्टिकौदनम् । सशर्करेणसंयोग एषवृष्यःपरंस्मृतः ॥ ७० ॥

इति वृष्यक्षीरम्।

जब पानी जलजाय और दूध बाकी रहजावे तब उतारकर शक्कर मिलाके उसके साथ सांठी के चावलोंका घृतयुक्त भात खावे यह योग अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है ॥ ७० ॥

इति वृष्यक्षीर ॥

जीवकर्षभकौमेदांजीवन्तींश्रावणीद्वयम् । खर्जूरंमधुकंद्राक्षांपिप्पलींविश्वभेषजम् ॥ ७१ ॥

जीवक, ऋषभक, मेदा, जीवन्ती, मुंडली बड़ी मुंडली, खजूर, महुवा, दाख, पीपल, सोंठि ॥ ७१ ॥

शृङ्गाटकंविदारींचनवंसर्पिःपयोजलम् । सिद्धंघृतावशेषंतच्छर्कराक्षौद्रपादिकम्षष्टिकान्नेनसंयुक्तमुपयोज्यंयथाबलम् । वृष्यंबल्यञ्चवर्ण्यञ्चकण्ठ्यंबृंहणमुत्तमम् ॥ ७२।७३ ॥

इति वृष्यघृतम्।

सिंघाड़ा, बिलाईकन्द,नवीन घी, दूध तथा जल इनसब को एक साथ मिलाकर पाक करै जब केवल घी बाकीरहै तब छानकर उस घी में चतुर्थांश शक्कर तथा शहद मिलाकर अग्निबल के अनुसार सांठी के चावलों के साथ खावे यह घी, वीर्य्य, बल तथा धातुओं को बढ़ाता है और वर्ण तथा कण्ठको उत्तम करता है ॥ ७२ । ७३ ॥

इति वृष्यघृत ॥

दध्नःसरंशरच्चन्द्रसन्निभंदोषवर्जितम् । शर्कराक्षौद्रमरिचैस्तुगाक्षीर्य्याश्चबुद्धिमान् ॥ ७४ ॥

बुद्धिमान् वैद्य शरद्काल के चन्द्रमा के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समान निर्मल दहीकी मलाईमें शक्कर, शहद मिर्च वंशलोचन ॥ ७४ ॥

युक्त्यायुक्तंसुसूक्ष्मैलंनवेकुम्भेशुचौ पटे। मार्जितंप्रक्षिपेच्छीतेघृताढ्ये षष्टिकौदने ॥ ७५ ॥

तथा इलायची का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर महीन कपड़ेमें छानके घृतयुक्त सांठीके चावलों के शीतल भातमें डालके ॥ ७५ ॥

पिबेन्मात्रांरसालायास्तंभुक्त्वाषष्टिकौदनम्। वर्णस्वरबलोपेतःपुमां स्तेनवृषायते ॥ ७६ ॥

इति वृष्यदध्यादि।

उस भातको खाकर मात्राके अनुसार शिखरन पीवे इससे मनुष्य वर्ण स्वर तथा बलसे युक्त होकर अत्यन्त कामातुर होताहै ॥७६॥

इति वृष्यदधि ॥

चन्द्रांशुकल्पंपयसाघृताढ्यंषष्टिकौदनम्। शर्करामधुसंयुक्तंप्रयुञ्जानो वृषायते ॥ ७७ ॥

इतिवृष्यदुग्धादि।

जो मनुष्य चन्द्रमा की किरणों के समान दूध, घी, शक्कर तथा शहद के साथ साँठी के चावलोंका भात खाताहै वह अत्यन्त कामातुर होताहै ॥ ७७ ।

इति वृष्यदूध ॥

ततेसर्पिषिनक्राण्डंताम्रचूडाण्डमिश्रितम्। युक्तंषष्टिकचूर्णेनसर्पिषाभिनवेनच। पक्त्वापूपलिकाःखादेद्वारुणीमण्डपोनरः। यइच्छेदश्ववद्गन्तुं प्रसेक्तुंगजवच्चयः ॥ ७८ । ७९ ॥

इति नक्राण्डपाकवृष्ययोगः।

जो मनुष्य घोड़े के समान रमण करना चाहे और हाथी के समान वीर्य्य का त्याग करना चाहे वह मगर तथा मुर्गे के अण्डोंको गर्म घीमें मिलाकर सांठीके चावलोंके नवीन घृतयुक्त आटे के साथ पूपलिका (भक्ष्य विशेष) बनाके खावे और वारुणी (मद्यविशेष) तथा मण्ड पीवे ॥ ७८ । ७९ ॥

इति नक्राण्डपाकवृष्ययोग ॥

भवन्ति चात्र।

आसिक्तक्षीरिकेपादेयेयोगाःपरिकी र्तिताः। अष्टावपत्यकामैस्तेप्रयोज्य[illegible]र्थिभिः ॥ ८० ॥

इस[illegible] श्लोक हैं। संतान तथा पुरुषार्थ की इ[illegible] करनेवाले मनुष्य आसिक्त क्षीरीय नामं इस पादमें कहेहुये आठ योगोंका सेवन करैं ॥ ८० ॥

एतैःप्रयोगैर्विविधैर्पुष्मान्स्नेहोपपन्नोबलवर्णयुक्तः। हर्षान्वितो वाजिवदष्टवर्षोभवेत्समर्थश्चवराङ्गनासु ॥ ८१ ॥

इन अनेक प्रकारके योगों का सेवन करने से मनुष्य स्निग्ध तथा बल वर्णयुक्त होकर हर्षपूर्वक आठ वर्ष पर्यन्त घोड़े के समान श्रेष्ठ स्त्रियों में रमण करने को समर्थ होता है ॥ ८१ ॥

यद्यच्चकिञ्चिन्मनसःप्रियंस्याद्रम्याव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नान्ताः पुलिनानि शैलाः । इष्टाः स्त्रियो भूषणगन्धमाल्यं प्रियावयस्याश्च तदत्रयोगम् ॥ ८२ ॥

इति चिकित्सिते आशिक्तक्षीरिके वाजीकरणपादो द्वितीयः २ ॥

जो जो वस्तु मनको प्रियहो वह वस्तु, रमणीय वन, नदियोंके तट, पर्वत, प्यारी स्त्रियां आभूषण, सुगंधित माला और प्यारे मित्र यहसब वाजीकरण में योग्यहैं ॥ ८२ ॥

इति अग्निवेशकृत चरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें आसिक्तक्षीरीयनामद्वितीयवाजीकरणपादसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

अथातो माषपर्णभृतीयं वाजीकरणपादं व्याख्यास्यामः इतिहस्माह भगवानात्रेयः ॥ ८३ ॥

इसके उपरान्त माषपर्ण भृतीयनाम बाजीकरण पादका व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥ ८३ ॥

माषपर्णभृतां धेनुं गृष्टिं पुष्टां चतुःस्तनीम् । समानवर्णवत्सां च जीववत्सां च बुद्धिमान् ॥ ८४ ॥

बुद्धिमान् पुरुष उर्दकी पत्तियों को खाकर पुष्ट हुई, एकबार ब्याई हुई, चारों स्तनों से युक्त, अपने वर्णके समान वर्णयुक्त बछडेवाली, जीतेहुये बछड़े वाली ॥ ८४ ॥

रोहिणीमथवाकृष्णामूर्द्धशृङ्गीमदारुणाम् । इक्ष्वादामर्जुनादां वा सान्द्रक्षीरां च धारयेत् ॥ ८५ ॥

श्वेत अथवा कृष्णवर्ण वाली, ऊपर को उठेहुये सींगवाली, सीधे स्वभाव वाली, ईख अथवा अर्जुनकी पत्ती खानेवाली और गाढ़े दूधवाली गौको पाले ॥ ८५ ॥

केवलन्तु पयस्तस्याः शृतं वाशृतमेव वा । शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं तद्वृष्यमुत्तमम् ॥ ८६ ॥

उसका शक्कर, शहद तथा घीयुक्त कच्चा अथवा पक्का दूध अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक होता है ॥ ८६ ॥

शुक्रलैर्जीवनीयैश्च बृंहणैर्बलवर्द्धनैः । क्षीरसञ्जननैश्चैव पयः सिद्धं पृथक्पृथक् । युक्तं गोधूमचूर्णेन सघृतक्षौद्रशर्करम् । पर्य्यायेण प्रयोक्तव्यमिच्छता शुक्रमक्षयम् ८७ । ८८ ॥

जो पुरुष अक्षय वीर्य्य की इच्छा करताहो वह वीर्य्यकारक गण, जीवनीयगण, बृंहणीयगण, बलवर्द्धकगण, और दुग्धवर्द्धक गण के साथ अलग अलग दूध पका करके उसमें गेहूं का आटा घी, शहद तथा शक्कर छोड़कर क्रम से उसका सेवन करै ८७।८८ ॥

मेदां पयस्यां जीवन्तीं विदारीं कण्टकारिकाम् । श्वदंष्ट्रां क्षीरिकां माषान् गोधूमाञ्छालिषष्टिकान् ॥ ८९ ॥

मेदा, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, बिलाईकन्द, भटकटैया, गोखुरू, खिन्नी, उर्द, गेहूं, शालिधान तथा सांठी ॥ ८९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पयस्यर्द्धोदकेपक्वाकार्षिकानाढको न्मिते। विवर्जयेत्पयःशेषंतत्पूतंक्षौद्रसर्पिषा।युक्तंसशर्करंपीत्वावृद्धःसाप्ततिकोऽपिवा। विपुलंलभतेऽपत्यंयुवेवचसहृष्यति॥ ९०। ९१॥

इन सबको तोले२भर लेकर दोसौ छप्पन २५६ तोले दूध तथा एकसौ अट्ठाइस १२८ तोले पानी में मिलाकर पाक करै जव पानी जल जाय केवल दूध वाकीरहै तव छानकर उसमें शहद, शक्कर तथा घी डालकर पीवे इस से सत्तर वर्ष के वृद्धके भी वहुत संतान होती और उसे युवा पुरुषके समान रति में आनन्द प्राप्त होताहै॥ ९०। ९१॥

मण्डलैर्जातरूपस्यतस्याएवपयःशृतम्। अपत्यजननंसिद्धंसघृतक्षौद्रशर्करम्॥ ९२॥

पूर्वोक्त गुण युक्त गौके दूधमें मण्डलाकार सुवर्ण को बुझाकर घी शहद तथा शक्कर डालकर पीनेसे अवश्य संतान होतीहै॥९२॥

त्रिंशत्सुपिष्टाःपिप्पल्यःप्रकुञ्चेतैलसर्पिषोः। भृष्टाःसशर्कराःक्षौद्राःक्षीरधारावदोहिताः॥ ९३॥

तीस पीपलों के चूर्ण को चार तोले घी तथा तेल में भूनकर शहद तथा शक्कर में मिलावै फिर जिस पात्र में गौका दूध दुहा जाताहो उसपात्र के मुखपर एक महीन वस्त्र लपेटकर उस पर पीपलों का वह चूर्ण रखकर दूध दुहै॥ ९३॥

पीत्वायथाबलञ्चोर्ध्वंषष्टिकंक्षीरसर्पिषा। भुक्त्वानरात्रिमस्तब्धंलिङ्गंपश्यतिनाक्षरम्॥ ६॥

उस दूधको अग्निवलके अनुसार पीकर घी तथा दूधके साथ साँठीके चावलोंका भात खावे इस प्रयोग से रात्रि भर लिंग शिथिल नहीं होता और वीर्य्य नहीं गिरताहै॥ ९४॥

श्वदंष्ट्रायाविदार्य्याश्चरसेक्षीरचतुर्गुणे। घृताढ्यःसाधितोवृष्योमाषषष्टिकपायसः॥ ६५॥

गोखुरू तथा विदारीकंद के रसमें और रसके चौगुने दूधमें उर्द तथा साँठी के चावलों की घृत युक्त खीर वनाकर खानेसे वीर्य्य की वहुतवृद्धि होती है॥ ९५॥

फलानांजीवनीयानांस्निग्धानांरुचिकारिणाम्। कुडवश्चूर्णितानांस्यात्स्वयंगुप्ताफलस्यच॥ ६६॥

जीवनीयगण, स्निग्धगण तथा रुचिकारक गण की औषधियों का चूर्ण किवाँच के वीजोंका चूर्ण एक २ कुडव॥ ९६॥

कुडवश्चैवमाषाणांद्वौद्वौचतिलमुद्गयोः। गोधूमशालिचूर्णानांकुडवःकुडवोभवेत्॥ ६७॥

उर्दका चूर्ण एककुडव तिलों का चूर्ण, मूंगका चूर्ण दो२ कुडव गेहूं तथा शालिधानका चूर्ण एक २ कुडव॥ ९७॥

सर्पिषःकुडवश्चैकस्तत्सर्वंक्षीरसंयुतम्। पक्वापूपलिकाःखादेद्बह्व्यःस्युर्यदियोषितः॥ ६८॥

और घी एक कुडव इनसबको लेकर दूध में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिलाकर बहुतसी पूपलिका (भक्ष्य विशेष बनाकर वह पुरुष खाय जिस के बहुत स्त्री हों ॥ ९८ ॥

घृतंशतावरीगर्भंक्षीरेदशगुणेपचेत् । शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तंतद्वृष्यमुत्तमम् ॥ ९९ ॥

शतावरका कल्क (चटनी) डालकर दश गुणे दूधके साथ पाक कियेगये घीमें शक्कर, पीपल तथा शहद डालकर खाने से वीर्यकी बहुत वृद्धि होती है ॥ ९९ ॥

कर्षंमधूकचूर्णस्यघृतक्षौद्रसमांशिकम् । प्रयुङ्क्तेयःपयश्चानुनित्यवेगःसनाभवेत् ॥ १०० ॥

तोलेभर मुलेठीके चूर्णको समान घी तथा शहद में मिलाकर खावे और ऊपर से दूध पीवे इससे मनुष्यको नित्य कामका वेग होता है ॥ १०० ॥

घृतक्षीराशनोनिर्भीर्निर्व्याधिर्नित्यगोयुवा । संकल्पप्रवणोनित्यंनरःस्त्रीषुवृषायते ॥ १०१ ॥

जो मनुष्य नित्य घी तथा दुग्धयुक्त भोजन करताहै और भय तथा रोगोंसे रहित होता है नित्य गमन करताहै और सदैव स्त्रियोंका ध्यान किया करता है वह मनुष्य सदैव स्त्रियों के साथ वृषभके समान गमन करता है ॥१०१॥

कृतैककृत्याःसिद्धार्थयेचान्योन्यानुवर्त्तिनः । कलासुबाह्यायेतुल्याःसत्त्वेनवयसाचये ॥ १०२ ॥

जो मित्र कृतकृत्य सफल मनोरथ वाले परस्पर स्पृहा (डाह) नहीं करनेवाले नृत्य आदि कलाओं में प्रवीण सत्त्व तथा अवस्था में तुल्य ॥ १०२ ॥

कुलमाहात्म्यदाक्षिण्यशीलशौचसमन्विताः । येकामनित्यायेहृष्टायेविशोकागतव्यथाः ॥ १०३ ॥

कुल माहात्म्य चतुरता शील तथा शौच से युक्त नित्य कामातुर प्रसन्न शोक तथा व्यथा से रहित ॥ १०३ ॥

येतुल्यशीलायेभुक्तायेप्रियायेप्रियंवदाः । तैर्नरःसहविश्रब्धःसुवयस्यैर्वृषायते ॥ १०४ ॥

समान स्वभाववाले भोगी प्रिय तथा प्रिय वचन बोलनेवाले होते हैं उन मित्रों के साथ सावधानतापूर्वक वार्त्तालाप करने से पुरुष बहुत कामातुर होता है ॥ १०४ ॥

अभ्यङ्गोत्सादनस्नानगन्धमाल्यविभूषणैः । गृहशय्यासनसुखैर्वासोभिरहतैःप्रियैः ॥ १०५ ॥

अभ्यंग (तैललगाना) उत्सादन (उबटन लगाना) स्नान सुगंधित माला आभूषण सुखदायक गृह व शय्या तथा आसन प्रिय तथा अखण्डित वस्त्र ॥ १०५ ॥

विहङ्गानांरुतैरिष्टैःस्त्रीणाञ्चभरणस्वनैः । संवाहनैर्वरस्त्रीणामिष्टानाञ्चवृषायते ॥ १०६ ॥

पक्षियोंके मनोहर शब्द स्त्रियोंके आभूषणों के शब्द और प्यारी तथा सुन्दर स्त्रियों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाथ पैर दबवाना इन सब कारणों से मनुष्य बहुत कामातुर होता है ॥ १०६ ॥

मत्तद्विरेफाचरिताःसपद्माःसलिलाशयाः । जात्युत्पलसुगन्धीनिशीतगर्भगृहाणिच ॥ १०७ ॥

जिनपर मतवाले भ्रमर गुञ्जार कररहे हैं ऐसे कमलों से युक्त तड़ाग चँबेली तथा कमलों से सुगंधित शीतल गर्भ गृह कोठरी आदि ॥ १०७ ॥

नद्य·फेनोत्तरीयाश्चगिरयोनीलसानवः । उन्नतिर्नीलमेघानांरम्यचन्द्रोदयानिशाः ॥ १०८ ॥

फेनेसे सुशोभित नदी नीले नीले शिखर वाले पर्वत नीले २ मेघों की घनी २ घटा चन्द्रोदय से मनोहर रात्रि ॥ १०८ ॥

वायवःसुखसंस्पर्शाःकुमुदाकारगन्धिनः । रतिभोगक्षमारात्र्यःसङ्कोचागुरुवल्लभाः ॥ १०६ ॥

स्पर्श में सुख देनेवाली कुमुद आदिसे सुगंधित वायु भोग करने के योग्य रात्रि माता पिता आदि गुरुवोंका सँकोच ॥ १०९ ॥

सुखाःसहायाःपरपुष्टयुष्टाःफुल्लावनान्ताविशदान्नपानाः । गान्धर्वशब्दाश्चसुगन्धमाल्याःसत्वंविशालंनिरुपद्रवञ्च ॥ ११० ॥

सुखदायी सहायक कोकिलाओं का शब्द फूलेहुये वन श्रेष्ठ भोजन तथा पीनेकी वस्तु मनोहर गीत सुगंधितमाला उपद्रव रहित विशाल सत्व ॥ ११० ॥

सिद्धार्थताचाभिनवश्चकामःस्त्रीचायुधंसर्वमिहात्मजस्य । वयोनवंजातमदश्चकालोहर्षस्ययोनिःपरमानराणाम् ॥ १११ ॥

मनोरथोंकी सफलता नवीनकाम (अभिलाष) सुंदर स्त्री नवीन अवस्था (नई जवानी) और मदकारी समय यह सब कामदेव के अस्त्र हैं और मनुष्यको हर्ष प्राप्त होने के यह बड़े कारण हैं ॥ १११ ॥

भवतिचात्र ।

प्रहर्षयोनयोयोगाव्याख्यातादशपञ्चच । माषपर्णभृतीयेऽस्मिन्पादेशुक्रबलप्रदाः ॥ ११२ ॥

माषपर्ण नाम तृतीयोवाजीकरण पादः ३॥

इसमें यह श्लोक है भगवान् आत्रेयजीने इस माषपर्ण तृतीयनाम वाजीकरणपाद में हर्षजनक और वीर्य्य तथा बलके बढ़ानेवाले पंद्रह योग कहे हैं ॥ ११२ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकामाषपर्णनामतीसरावाजीकरणपादसमाप्तहुआ ॥ ३ ॥

अथातःपुमाञ्जातबलादिकं चतुर्थवाजीकरणपादंव्याख्यास्यामइतिहस्माहभगवानात्रेयः ॥ ११३ ॥

इसके उपरान्त पुमान्जात बलादिक नाम चौथा वाजीकरणपादका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ ११३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुमान्यथाजातबलोयावदिच्छंस्त्रियोव्रजेत् । यथाचापत्यवान्सद्यो भवेत्तदुपदेक्ष्यते ॥ ११४ ॥

जिस प्रकार पुरुष वलवान होकर जितनी चाहै उतनी स्त्रियों के साथ रमणकरै और शीघ्रही संततिको उत्पन्न करै सो उपदेश कियाजाता है ॥ ११४ ॥

नहिजातबलाःसर्वेनराश्चापत्यभागिनः । बृहच्छरीराबलिनःसन्तिनारीपुदुर्बलाः ॥ ११५ ॥

सम्पूर्ण बलवान् पुरुष संतति युक्त नहींहोतेहैं कोई २ वडे शरीरवाले बलवान् पुरुषभी स्त्रियों के साथ रमण करने में शिथिल होते हैं ॥ ११५ ॥

सन्तिचाल्पायुषःस्त्रीषुबलवन्तोबहुप्रजाः । प्रकृत्याचाबलाःसन्तिसन्तिचामयदुर्बलाः ॥ ११६ ॥

कोई २ पुरुष स्त्रियोंके साथ रमण करने में बलवान् होकर भी तथा बहुत संतति से युक्त होकर भी अल्पायु होते हैं कोई २ पुरुष स्वभावहीसे निर्बल होते हैं कोई २ पुरुष रोगों से निर्वल होजाते हैं ॥ ११६ ॥

नराश्चटकवत्केचिद्व्रजन्तिबहुशःस्त्रियम् । गजवच्चप्रसिञ्चन्तिकेचिन्नबहुगामिनः ॥ ११७ ॥

कोइ कोई पुरुष गौरैया पक्षीके समान अनेक वार मैथुन करते हैं कोई कोई पुरुष अनेक बार मैथुन तो नहीं करते हैं परन्तु मैथुनके समय हाथी के समान बहुत वीर्य्यका त्याग करते हैं ॥ ११७ ॥

कामयोगबलाःकेचित्केचिदभ्यसनध्रुवाः । केचित्प्रयत्नैर्बाह्यंतेवृषाःकेचित्स्वभावतः ११८

कोई कोई पुरुष समयके योगसे मैथुन करने में समर्थ होते हैं कोई कोई पुरुष अभ्यास के कारण मैथुन करसक्ते हैं कोई कोई पुरुष बड़े यत्नोंसे मैथुन करने में समर्थ होते हैं और कोई कोई पुरुष स्वभावसेही अत्यन्त कामी होते हैं ॥ ११८ ॥

तस्मात्प्रयोगान्वक्ष्यामोदुर्बलानांबलप्रदान् । सुखोपभोगान्बलिनांभूयश्चबलवर्द्धनान् ॥ ११९ ॥

इससे दुर्वलों के बलको बढ़ानेवाले और बलवानों को सुख देनेवाले तथा अधिक बल के वढ़ानेवाले योग कहता हूं ॥ ११९ ॥

पूर्वंशुद्धशरीराणांनिरूहान्सानुवासनान् । बलापेक्षीप्रयुञ्जीतशुक्रापत्यादिवर्द्धनान् ॥ १२० ॥

बलकी इच्छा करनेवाला पुरुष वमन तथा विरेचन से शरीर को शुद्ध करके वीर्य्य तथा संतति को बढ़ाने वाली निरूह (एकतरहका अमल) तथा अनुवासन (एकतरहका अमल) वस्तिका प्रयोग करै ॥ १२० ॥

घृततैलरसक्षीरशर्करामधुसंयुताः । वस्तयःसंविधातव्याःक्षीरमांसरसाशिनाम् ॥ १२१ ॥

दूध तथा मांस के रसके साथ भोजन कराके घी तैल मांसरस दूध शकर तथा शहदसेयुक्त वस्ति देनी चाहिये ॥ १२१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिष्ट्वावराहमांसानिदत्त्वामरिचसैन्धवे। कोलवद्गुटिकाःकृत्वातप्तेसर्पिषिभर्जयेत् ॥ १२२ ॥

शूकरके मांसको अच्छीतरह पीसकर उस में मिर्च तथा सैंधव लवणको मिलाकर बेरके वरावर गोली बनाके तप्त घीमें भूनै ॥१२२॥

भर्जनस्तम्भितास्तश्चप्रक्षेप्याः कौक्कुटेरसे। घृताढ्येगन्धपिशुनेदधिदाडिमसाधिते ॥ १२३ ॥

भूनने से पुष्टहुई वह गोली दही घी सुगंध तथा अनारके रससे युक्त मुर्गेके मांसके रसमें डालकर ॥ १२३ ॥

यथानभिन्द्याद्गुटिकास्तथातंसाधयेद्रसम्। तंपिबन्भक्षयंस्ताश्चलभतेशुक्रमक्षयम् ॥ १२४ ॥

इति वृष्यामांसगुटिका।

इस प्रकार से पकावें जिसमें गोली फूटने न पावें इस रसके पीने से और इन गोलियों के खाने से अक्षयवीर्य्य की प्राप्ति होती है ॥ १२४ ॥

इति वृष्यमांस गुटिका ॥

मांसानामेवमन्येषांमेध्यानांकारयेद्भिषक्। गुटिकाःसुरसास्तासांप्रयोगः शुक्रवर्द्धनः ॥ १२५ ॥

इसी मकार वैद्य अन्य पवित्र जीवोंके मांस की गोली रस सहित वनावे उसके खाने से वीर्य्य की वृद्धि होती है ॥ १२५ ॥

माषानांकुरिताञ्छुद्धान्निस्तुषान् साजडाफलान्। घृताढ्येमाहिषरसेदधिदाडिमसाधिते ॥ १२६ ॥

अँकुरित (अंकुर निकलेहुये) उर्द और शुद्ध किवाँच के वीजों की भूसी निकालकर उनको दही घृत तथा अनार के रसके साथ पाक किये गये भैंसे के मांसके रसमें॥१२६॥

प्रक्षिपेन्मात्रयायुक्तंधान्यजीरकनागरैः। पीतोभुक्तश्चसरसःकुरुतेशुक्रमक्षयम् ॥ १२७ ॥

इति वृष्योमाहिषरसः।

डालै फिर उस रसमें मात्राके अनुसार धनियाँ जीरा तथा सोंठि मिलावे उस रसके खाने पीने से अक्षय वीर्य्य उत्पन्न होता है ॥ १२७ ॥

इति वृष्यमाहिषरस ॥

आर्द्राणिमत्स्यमांसानिभृष्टाश्चशफरीश्चना। तप्तेसर्पिषियःखादेत्सगच्छेत्स्त्रीषुनक्षयम् ॥ १२८ ॥

जो मनुष्य मछलियोंका गीला मांस अथवा शफरी मछली तपेहुये घीमें भूनकर खाता है वह स्त्रियों के साथ रमण करने में क्षीण नहीं होता है ॥ १२८ ॥

घृतभृष्टान्रसेछागेरोहितान्फलसाधिते। अनुपीतरसान्सिद्धानपत्यार्थीप्रयोजयेत् ॥ १२९ ॥

इति गर्भाधानकरोयोगः।

संतान की इच्छा करने वाला पुरुष रोहू मछली को घीमें भूनकर अनारके रससे युक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बकड़े के मांस के रसमें भिगो कर पका के खावे ॥ १२९ ॥

इति गर्भाधानकरयोग ॥

कुट्टकंमत्स्यमांसानांहिङ्गुसैन्धव धान्यकैः । युक्तंगोधूमचूर्णेनघृतेपू पलिकाःपचेत् ॥ १३० ॥

मछिलियों के कूटेहुये मांस में हींग सेंधानोन तथा धनियां मिलावै और उस मांसको गेहूंके आटेमें मिलाकर घीके द्वारा पूपलिका (भक्ष्य विशेष) पकावै ॥ १३० ॥

माहिषेचरसेमत्स्यान्स्निग्धाम्ललवणान्पचेत् । रसेचानुगतेमांसंपो थयेत्तत्रचावपेत्‌मरिचंजीरकंधान्य मल्पंहिङ्गुनवंघृतम् । माषपूपलि कानांतद्गर्भार्थमुपकल्पयेत्१३१।१३२

घृत लवण तथा खटाईयुक्त मछलियों को भैंसे के मांसके रसमें डालकर पाककरै जब रस सूख जाय केवल मछलियों का मांस बाकी रहजाय तब उनको कूटकर उन में मिर्च जीरा धनियां थोड़ीसी हींग तथा नवीन घी मिलाकर उर्द के आटेके साथ गर्भके अर्थ पूपलिका बनावे ॥ १३१ । १३२ ॥

एतौपूपलिकायोगौबृंहणौबलवर्द्ध नौ । हर्षसौभाग्यजननौपरंशुक्रा भिवर्द्धनौ ॥ १३३ ॥

इति वृष्यौपूपलिकायोगौ ।

यह दोनों पूपलिका योग धातु बल हर्ष सौभाग्य तथा वीर्यके बढ़ानेवाले हैं ॥ १३३ ॥

इति वृष्यपूपालिका योग ॥

माषात्मगुप्तागोधूमशालिषष्टिकषै ष्टिकम् । शर्करायाविदार्य्याश्चचूर्ण मिक्षुरसस्यच ॥ १३४ ॥

उर्द किवाँच के बीच गेहूं शालिधान तथा साँठी इनकी पीठी शक्कर बिलाईकंदका चूर्ण तथा ईखका रस ॥ १३४ ॥

संयोज्यमसृणेक्षीरेघृतेपूपलिकाःप चेत् । पयोऽनुपानास्ताःशीघ्रंकुर्व तिवृषतांपरम् ॥ १३५ ॥

इति वृष्यामाषादिपूपलिकाः ।

इन सबको उत्तम दूध में मिलाकर घी के द्वारा पूपलिका बनावे इन पूपालिकाओं को खाकर दूध पीने से शीघ्रही वीर्य्य की वृद्धि होती है ॥ १३५ ॥

इति वृष्यमाषादिपूपलिका ॥

शर्करायास्तुलैकास्यादेकागव्यस्य सर्पिषः । प्रस्थोविदार्य्याश्चूर्णस्यपि प्पल्याःप्रस्थएवच ॥ १३६ ॥

शक्कर तथा गौका घी चार चार सौ तोले बिलाईकंद का चूर्ण तथा पीपलका चूर्ण चौंसठ चौंसठ तोले ॥ १३६ ॥

अर्द्धाढकंतुगाक्षीर्य्याःक्षौद्रस्याभिन वस्यच । तत्सर्वंमूर्च्छितंतिष्ठेन्मा र्त्तिकेघृतभाजने ॥ १३७ ॥

और वंशलोचन का चूर्ण एकसौ अट्ठाइस तोले तथा नवीन शहद एकसौ अट्ठाइस तोले इन सबको एकमें मिलाकर जिस मट्टीके पात्रमें घी रक्खा जाताहो उस में रक्खे ॥ १३७ ॥

मात्रामग्निसमांतस्यप्रातःप्रातःप्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योजयेत्। एषवृष्यःपरंयोगोबल्यो बृंहणएवच॥ १३८॥

इति वृष्ययोगः।

प्रातःकाल अग्निबल के अनुसार इस औषधको खावे इसके योगसे बल तथा धातुओं की वृद्धि होती है और मनुष्य बहुतही कामातुर होता है॥ १३८॥

इति वृष्ययोग॥

शतावर्य्याविदार्य्याश्चतथामाषात्मगुप्तयोः। श्वदंष्ट्रायाश्चनिष्काथानश्चलेषुपृथक्पृथक्॥१३९॥ साधयित्वाघृतप्रस्थंपयस्यष्टगुणेपुनः। शर्करामधुसंयुक्तमपत्यार्थीप्रयोजयेत्॥१४०॥

इति अपत्यकरंघृतम्।

संतान की इच्छा करनेवाला पुरुष शतावर बिलाईकंद उर्द किवाँच के बीज तथा गोखुरू इन के एक हजार चौबीस तोले भर काढ़े में अलग अलग चौंसठ तोले घीका पाक करके फिर उस घीका अठगुणे दूधके साथ पाककरै और शक्कर तथा शहद डालकर उस घीका सेवन करै॥ १३९। १४०॥

इति अपत्यकर घृत॥

घृतपात्रंशतगुणेविदारीस्वरसेपचेत्। सिद्धंपुनःशतगुणे गव्येपयसिसाधयेत्॥ १४१॥

बिलाईकंद के सौगुणे रस में तथा गौके सौगुणे दूधमें अलग अलग पाक कियेगये दोसौ छप्पन २५६ तोले घीमें॥ १४१॥

शर्करायास्तुगाक्षीर्य्याःक्षौद्रस्येक्षुरसस्यच। पिप्पल्याःसजडायाश्चभागैःपादांशिकैर्युतम्॥ १४२॥

शक्कर वंशलोचन शहद ईखकारस पीपल तथा किवाँचके बीजोंका चूर्ण चौंसठ २ तोले डालकर॥ १४२॥

गुटिकाःकारयेद्वैद्योयथास्थूलमुदुम्बरम्। तासांप्रयोगात्पुरुषःकुलिङ्गइवहृष्यति॥ १४३॥

इति वृष्यगुटिका।

वैद्य बड़े २ गूलरों के समान गोली बनावे उन गोलियों के सेवनसे मनुष्य गौरैया पक्षी के समान मैथुन करने में हर्षित होताहै॥१४३॥

इति वृष्यगुटिका॥

सितोपलापलशतंतदर्द्धंनवसर्पिषः। क्षौद्रपादेनसंयुक्तंसाधयेज्जलपादिकम्॥ १४४॥

मिश्री चारसौ तोले घी दोसौ तोले शहद सौ तोले तथा जल सौ तोले इन सब को एक में मिलाकर पाककरै॥ १४४॥

सान्द्रंगोधूमचूर्णानांपादंस्तीर्य्येशिलातले। शुचौश्लक्ष्णे समुत्कीर्य्यमर्दनेनोपपादयेत्॥ १४५॥

जब पाक करते २ यह औषध गाढ़ी होजाय तब पवित्र चिकनी शिलापः रक्खेहुये सौ तोले गेहूं के आटे में यह औषध डालकर मले॥ १४५॥

शुद्धाउत्कारिकः कार्य्याश्चन्द्रमण्ड-

लसन्निभाः। तासांप्रयोगाद्गजवन्नारीःसन्तर्पयेन्नरः १४६ ॥

इति वृष्यालप्सिका।

फिर चन्द्रमण्डल के समान शुद्ध उत्कारिका (एक तरहका भक्ष्य) बनावे इन उत्कारिकाओं को खाकर मनुष्य हाथी के समान स्त्रियों को तृप्त करता है ॥ १४६ ॥

इति वृष्यालप्सिका ॥

यत्किञ्चिन्मधुरंस्निग्धंजीवनंबृंहणं गुरु। हर्षणंमनसश्चैवसर्वंतद्वृष्यमुच्यते ॥ १४७ ॥

जो कोई वस्तु मधुर स्निग्ध जीवनवर्द्धक धातुवर्द्धक भारी तथा मनको प्रसन्न करनेवाली हों वह सब वृष्य (कामियों को हित) होती हैं ॥ १४७ ॥

द्रव्यैरेवंविधैस्तस्माद्भावितःप्रमदां व्रजेत्। आत्मवेगेनचोदीर्णःस्त्रीगुणैश्चप्रहर्षितः ॥ १४८ ॥

इससे ऐसी वस्तुओं का सेवन करके अपने वेगसे कामातुर होके और स्त्रीके गुणों से प्रसन्न होके मैथुन करै ॥ १४८ ॥

गत्वास्नात्वापयःपीत्वारसञ्चानुशयीतना। तथास्याप्यायतेभूयःशुक्रञ्चबलमेवच ॥ १४९ ॥

मैथुन के उपरान्त स्नान करके और दूध तथा मांसका रस पीके शयन करै इस प्रकार करने से वीर्य्य तथा बल फिर पुष्ट होजाता है ॥ १४९ ॥

यथामुकुलपुष्पस्यसुगन्धोनोपलभ्यते। लभ्यतेतद्विकासात्तुतथाशुक्रंहिदेहिनाम् ॥ १५० ॥

जैसे पुष्पकी कली में सुगंध नहीं मालूम होती है और पुष्पके फूलने से वह तुरन्त प्रकट होजाती है इसी प्रकार मनुष्यके बाल्यावस्था में वीर्य्य नहीं प्रकट होता है किंतु युवावस्थाके प्रारम्भमें वह प्रकट होता है ॥ १५० ॥

नर्त्तेवैषोडशाद्वर्षात्सप्तत्याःपरतोन च। आयुष्कामोनरःस्त्रीभिःसंयोगं कर्त्तुमर्हति ॥ १५१ ॥

सोलह वर्षकी अवस्था के पहिले और सत्तरवर्ष के उपरान्त दीर्घायु चाहनेवाला मनुष्य मैथुन न करै ॥ १५१ ॥

अतिबालोह्यसम्पूर्णसर्वधातुःस्त्रियो व्रजन्। उपतप्येतसहसातडागमिवकाजलम् ॥ १५२ ॥

क्योंकि अत्यन्त बाल्यावस्था में रसादि सम्पूर्ण धातुओं के पूर्ण न होने के कारण स्त्रियों के साथ रमण करने से मनुष्य स्वल्प जलवाले तड़ागके समान एकाएकी सूखजाता है ॥ १५२ ॥

शुष्करूक्षंयथाकाष्ठंजन्तुजग्धंविजर्जरम्। स्पृष्टमाशुविशीर्य्येततथा वृद्धःस्त्रियोव्रजन् ॥ १५३ ॥

जैसे सूखा रूखा कीड़ों से खायागया जर्जर काष्ठ स्पर्शमात्रसे ही टूटजाता है उसी प्रकार वृद्ध पुरुष मैथुन करने से शीघ्रही नष्ट होजाता है ॥ १५३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जरयाचिन्तयाशुक्रंव्याधिभिःकर्म्मकर्षणात् । क्षयंगच्छत्यनशनात्स्त्रीणाञ्चातिनिषेवणात् ॥ १५४ ॥

वृद्धावस्था चिन्ता रोग परिश्रम उपवास तथा अत्यन्त मैथुन करने से वीर्य्य क्षीणहो-जाता है ॥ १५४ ॥

क्षयाद्भयादविश्रम्भाच्छोकात्स्त्रीदोषदर्शनात् । नारीणामरसज्ञत्वादभिचारादसेवनात् ॥ १५५ ॥

क्षय (वीर्य्यकी क्षीणता) भय विश्रम्भ शोक स्त्री में किसी प्रकार का दोष मालूम होना स्त्रियों के रसको न जानना अभिचार हिंसाकर्म्म बहुतकाल तक मैथुन न करना ॥ १५५ ॥

तृप्तस्यापिस्त्रियोगन्तुंनशक्तिरुपजायते । देहसत्त्वबलापेक्षीहर्षःशक्तिश्चहर्षजा ॥ १५६ ॥

और मैथुन से तृप्त होना इन कारणों से मनुष्य को मैथुन करने में शक्ति नहीं होती है क्योंकि शक्ति हर्ष से होती है और हर्ष शरीर सत्त्व तथा बल के आधीन होता है अर्थात् पूर्वोक्त कारणों से शरीर मन तथा बलके दूषित होजाने से मैथुन करने के लिये हर्ष नहीं होता है और हर्ष न होने से मैथुन करने में शक्ति नहीं होतीहै ॥ १५६ ॥

रसइक्षौयथादध्निसर्पिस्तैलंतिलेयथा । सर्वत्रानुगतंदेहे शुक्रंसंस्पर्शनेतथा ॥ १५७ ॥

जैसे ईखमें रस दहीमें घी और तिलोंमें तैल व्याप्त रहता है उसी प्रकार वीर्य्य स्पर्शन इन्द्रियके साथ सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है ॥ १५७ ॥

तत्स्त्रीपुरुषसंयोगेचेष्टासंकल्पपीडनात् । शुक्रंप्रच्यवतेस्थानाज्जलमार्द्रात्पटादिव ॥ १५८ ॥

स्त्री पुरुषों के संयोग चेष्टा तथा संकल्प केद्वारा पीड़न (दबना) से वीर्य्य अपने स्थान से इस प्रकार टपकता है जैसे गीले बस्त्रसे जल ॥ १५८ ॥

हर्षात्तर्षात्सरत्वाचपैच्छिल्याद्गौरवादपि । अनुप्लवत्वात्सौक्ष्म्याचद्रुतत्वान्मारुतस्यच१५९अष्टाभ्यएभ्योहेतुभ्यःशुक्रंदेहात्प्रसिच्यते । चरतोविश्वरूपस्यरूपंद्रव्यंयदुच्यते ॥ १६० ॥

पुरुषके शरीर में विचरण करतेहुये विश्वरूप परमात्मा का रूप जो द्रव्य कहलाती है वह वीर्य्य है वह वीर्य हर्ष तृष्णा सरत्व पतला होना पिच्छिलिता (चिकनापन) गौरव (भारीपन) चंचलता सूक्ष्मता तथा वायुका शीघ्रकारी होना इनआठ कारणोंकेद्वारा शरीरसे गिरताहै ॥ १५९ । १६० ॥

बहलंमधुरंस्निग्धमविस्रंगुरुपिच्छिलम् । शुक्लंबहुचयच्छुक्रंफलवत्तदसंशयम् ॥ १६१ ॥

जो वीर्य्य घना मधुर स्निग्ध दुर्गंधिरहित भारी पिच्छिल श्वेत तथा बहुत होता है वह निस्संदेह संतान उत्पन्न करने में समर्थ होता है ॥ १६१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

येननारीपुसामर्थ्यंवाजीवल्लभेतन रः। व्रजेच्चाभ्यधिकंयेनवाजीकरण मेवतत् ॥ १६२ ॥

जिसके द्वारा मनुष्य मैथुन करने में घोड़े के समान समर्थ होता है और बहुत वार रमण करसक्ता है उसे वाजीकरण कहते हैं ॥ १६२ ॥

तत्र श्लोकौ।

हेतुर्योगोपदेशस्ययोगाद्वादशचोत्तमाः। यत्पूर्वंमैथुनात्सेव्यंसेव्यंयन्मैथुनादनु ॥ १६३ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। वाजीकरण योगों के उपदेश का हेतु बारह उत्तम योग मैथुन के पहिले जिनवस्तुओं का सेवन करना चाहिये मैथुन के उपरान्त जिनवस्तुओं का सेवन करना चाहिये ॥ १६३ ॥

यदानसेव्याःप्रमदाःकृत्स्नःशुक्रविनिश्चयः। निरुक्तञ्चेहनिर्दिष्टंपुमाञ्जातबलादिके ॥ १६४ ॥

इति वाजीकरणाध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

'ज' स अवस्था में स्त्रियोंका सेवन नहीं करना च॥ ९ ने वीर्य्यका सम्पूर्ण निर्णय और वाजीकरणशब्दक। निरुक्ति (व्युत्पत्तिसे मालूम होनेवाला शब्दार्थ) यह सब विषय भगवान् आत्रेयजी ने इस पुमानूजातबलादिक नाम वाजीकरणपादमें कहाहै॥१६४॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकापुमानूजातबलादिकनाम चौथापादसमाप्तहुआ ॥

द्वितीयाध्यायसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

तीसराअध्याय ॥

ज्वरचिकित्सिताध्यायः।

विज्वरंज्वरसन्देहंपर्य्यपृच्छत्पुनर्वसुम्। विविक्तेशान्तमासीनमग्निवेशःकृताञ्जलिः ॥ १ ॥

ज्वराधिकार ॥

इसके उपरान्त ज्वरचिकित्सित नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

ज्वरके विषय में संदेहयुक्त होकर अग्निवेशने एकान्त में शान्तभावसे बैठेहुये सम्पूर्ण दुःखों से रहित भगवान् आत्रेयजीसे हाथ जोर कर पूछा ॥ १ ॥

देहेन्द्रियमनस्तापीसर्वरोगाग्रजोबली। ज्वरःप्रधानंरोगाणामुक्तोभगवतापुरा ॥ २ ॥

हेभगवन्! शरीर इन्द्रिय तथा मनको संतप्त करनेवाले सम्पूर्ण रोगों में पहिले उत्पन्न हुये बलवान् ज्वरको आपने पहिले सम्पूर्ण रोगों में प्रधान कहा था ॥ २ ॥

तस्यप्राणिसपत्नस्यध्रुवस्यप्रलयोदये। प्रकृतिञ्चप्रवृत्तिञ्चप्रभावंकारणानिच ॥ ३ ॥ ...तजगयाप

अब तिस सम्पूर्ण प्राणियों के शत्रुरूप जन्म तथा मरण के समय अवश्य होनेवाले ज्वरकी प्रकृति प्रवृत्ति प्रभाव कारण ॥ ३ ॥

पूर्वरूपमधिष्ठानंबलकालात्मलक्षणम्। व्यासतोविधिभेदञ्चपृथग्भिन्नस्यचाकृतिम् ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वरूप अधिष्ठान बल काल आत्मलक्षण तथा विस्तारसे प्रकार भेद भिन्न २ ज्वरकी अलग अलग आकृति॥ ४॥

लिङ्गमामस्यजीर्णस्यचौषधंसक्रियाक्रमम्। विमुञ्चतःप्रशान्तस्य चिह्नंयच्चपृथक्पृथक्॥ ५॥

आमज्वर तथा जीर्णज्वर के लक्षण औषध तथा चिकित्साका क्रम छूटेहुये तथा छूटतेहुये ज्वरके अलग २ लक्षण॥ ५॥

ज्वरावशिष्टोरक्ष्यश्चयावत्कालंयतोयतः। प्रशान्तःकारणैर्यैश्चपुनरावर्त्ततेज्वरः॥ ६॥

ज्वरके छूटजाने पर जितने दिनतक जिन जिन वस्तुओं से मनुष्य को रक्षा करनी चाहिये छूटा हुआ ज्वर जिन कारणों से फिर आजाताहै॥ ६॥

याश्चापिपुनरावृत्तिं क्रियाःप्रशमयन्तितम्। जगद्धितार्थंतत्सर्वंभगवन्! वक्तुमर्हसि॥ ७॥

जिस क्रियासे फिर आया हुआ ज्वरछूटताहै हे भगवन् यह सब विषय जगत् के हित के लिये कहिये॥ ७॥

तदग्निवेशस्यवचोनिशम्यगुरुरब्रवीत्। ज्वराधिकारेयद्वाच्यंतत्सौम्य! निखिलंशृणु॥ ८॥

अग्निवेश के यह वचन सुन के भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि हे सौम्य ज्वराधिकार में जो कुछ कहना चाहिये वह सम्पूर्ण तुम सुनो॥ ८॥

ज्वरोविकारोरोगश्च व्याधिरातङ्कएवच। एकार्थनामपर्य्यायैर्विविधैरभिधीयते॥ ९॥

ज्वर विकार रोग व्याधि तथा आतंक यह सब ज्वरके नाम हैं॥ ९॥

तस्यप्रकृतिरुद्दिष्टादोषाःशारीरमानसाः। देहिनंनहिनिर्दोषंज्वरःसमुपसेवते॥ १०॥

शरीर तथा मन के दोषही ज्वरकी प्रकृति कहेगये हैं क्योंकि दोषरहित मनुष्य को ज्वर नहीं आता है॥ १०॥

क्षयस्तमोज्वरःपाप्मामृत्युश्चोक्तोऽयमात्मजः। कर्मभिःक्लिश्यमानानां पञ्चत्वप्रत्ययान्नृणाम्॥ ११॥

ज्वरको ही क्षय तम पाप्मा तथा आत्मज मृत्यु कहते हैं क्योंकि अपने कर्म्मों से क्लेशित हुये मनुष्य ज्वरसे मृत्यु को प्राप्त होते हैं॥ ११॥

इत्यस्यप्रकृतिःप्रोक्ता प्रवृत्तिस्तुपरिग्रहः। निदानेपूर्वमुद्दिष्टारुद्रकोपाच्चदारुणात्॥ १२॥

इस प्रकार ज्वरकी यह प्रकृति कही गई और पहिले निदानस्थान में श्रीशिवजी के भयंकर कोप से ज्वरकी प्रवृत्ति संक्षेप से कही गई है॥ १२॥

द्वितीयेहियुगेशर्वमक्रोधव्रतमास्थितम्। दिव्यंसहस्रंवर्षाणामसुराअभिदुद्रुवुः॥ १३॥ तपोविघ्नंशमीकर्त्तुं तपोविघ्नंमहात्मनाम्। पश्यन्समर्थ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हति। अधिशेतेतथाधातुंदोषःका लेचकुप्यति ॥ ६४ ॥

जैसे पृथ्वी में पड़ाहुआ बीज समय पाकर अंकुरित होता है उसीप्रकार दोष भी धातु में स्थित रहकर समय पर कुपित होता है ॥ ६४ ॥

तेवृद्धिंबलकालञ्चप्राप्यदोषास्तृती यकम्। चतुर्थकञ्चकुर्वन्तिप्रत्यनी कंबलक्षयात् ॥ ६५ ॥

वह कुपित हुये दोष वृद्धि तथा बल के समय को पाकर तृतीयकज्वर को उत्पन्न करते हैं और रोगी के बलके क्षीण होजाने पर चतुर्थक नाम ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ ६५ ॥

कृत्वावेगंगतबलाःश्लेष्मस्थानेऽव वस्थिताः । पुनर्विवृद्धाःस्वेकाले ज्वरयन्तिनरंमलाः ॥ ६६ ॥

एकवार वेगकरके निर्बलहुये मल (दोष) कफ के स्थान में स्थित होजाते हैं और फिर अपने अपने समयपर वृद्धिको प्राप्त होकर मनुष्य को ज्वरित कर देते हैं ॥ ६६ ॥

कफपित्तात्त्रिकग्राहीपृष्ठाद्वातकफा त्मकः । वातपित्ताच्छिरोग्राहीत्रि विधःस्यात्तृतीयकः ॥ ६७ ॥

कफ तथा पित्त के अधिक होनेपर पहिले त्रिकस्थान (रीढ़के नीचे की हड्डी) में वात तथा कफ की अधिकता होनेपर पहिले पीठ में और वात तथा पित्त की अधिकता होनेपर पहिले शिर में तृतीयकज्वर पीड़ा को उत्पन्न करता है इस रीति से यह ज्वर तीन प्रकार का होता है ॥ ६७ ॥

चतुर्थकोदर्शयतिप्रभावंद्विविधंज्व रः । जङ्घाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वंशिर स्तोऽनिलसम्भवः ॥ ६८ ॥

चतुर्थकज्वर दो प्रकार के प्रभाव को प्रकट करता है अर्थात् कफज चतुर्थक ज्वर पहिले दोनों जंघाओं में और वातज चतुर्थक ज्वर पहिले शिर में पीड़ा को उत्पन्न करता है ॥ ६८ ॥

विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थकविपर्य्य यः । त्रिविधोधातुरेकैकोद्विधातु स्थःकरोत्ययम् ॥ ६९ ॥

चतुर्थकज्वर से विपरीत एक अन्य विषमज्वर होता है वातादि तीनप्रकार के दोषों में से एक एक दोष हड्डी तथा मज्जामें स्थित होकर इस ज्वरको उत्पन्न करता है ॥ ६९ ॥

प्रायशःसन्निपातेनदृष्टःपञ्चविधो ज्वरः । सन्निपातेतुयोभूयान्सदो षःपरिकीर्तितः ॥ ७० ॥

प्रायः संतत आदि पांचों विषमज्वर सन्निपात से उत्पन्न होते हैं किन्तु सन्निपात में जो दोष अधिक होता है वहीदोष (दूषितकरने वाला) कहलाता है ॥ ७० ॥

ऋत्वहोरात्रदोषाणांमनसश्चबलाब लात्। कालमर्थवशाच्चैवज्वरस्तंतं प्रपद्यते ॥ ७१ ॥

ऋतु दिन रात्रि दोष तथा मनके बलाबल से और प्राक्तनकर्म के प्रभाव से ज्वर मनुष्यों को प्राप्त होता है ॥ ७१ ॥

गुरुत्वंशीतमुद्वेगःसदनंछर्द्यरोच

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कौ। रसस्थितेबहिस्तापःसाङ्गमर्दो विजृम्भणम् ॥ ७२ ॥

जब ज्वर रसमें स्थित होताहै तब शीत घबड़ाहट शरीर का भारीपन अंगों का टूटना छर्दि अरुचि अंगमर्द शरीर के बाहर ताप और जँभाई यह लक्षण होते हैं ॥ ७२ ॥

रक्तोत्थापिडिकास्तृष्णासरक्तंष्ठीवनं मुहुः। दाहरागभ्रममदाःप्रलापोरक्तसंस्थिते ॥ ७३ ॥

जब रुधिर में ज्वर स्थित होता है तब रक्तजपिड़िका (फुंसी) तृषा वारंवार रुधिर थूकना दाह रक्तवर्ण भ्रम मद तथा प्रलाप (वकना) यह लक्षण होते हैं ॥ ७३ ॥

अन्तर्दाहोऽधिकस्तृष्णाग्लानिःसंसृष्टविट्कता। दौर्गन्ध्यंगात्रविक्षेपोज्वरेमांसस्थितेभवेत् ॥ ७४ ॥

जब मांसमें ज्वर स्थित होता है तब शरीर के भीतर दाह तृषा ग्लानि अतीसार दुर्गंधि और हाथ पैर पटकना यह लक्षण होते हैं ॥ ७४ ॥

स्वेदस्तीव्रापिपासाचप्रलापारत्यभीक्ष्णशः। स्वगन्धास्यासहत्वञ्चमेदःस्थेग्लान्यरोचकौ ॥ ७५ ॥

जब ज्वर मेदा में स्थित होता है तब बहुत स्वेद निकलना तृषा प्रलाप बहुत बेचैनी अपनी दुर्गन्ध को आपही न सहसकना ग्लानि और अरुचि यह लक्षण होते हैं ॥ ७५ ॥

विरेकवमनेचोभेसास्थिभेदंप्रकूजनम्। विक्षेपणञ्चगात्राणांश्वासश्चास्थिगतेज्वरे ॥ ७६ ॥

जब ज्वर हड्डियों में स्थित होता है तब वमन विरेचन हड्डियों में पीड़ा कूजन (एक प्रकारका शब्द) अंगों का पटकना और श्वास यह लक्षण होते हैं ॥ ७६ ॥

हिक्काश्वासस्तथाकासस्तमसश्चातिदर्शनम्। मर्मच्छेदोवहिःशैत्यं दाहोऽन्तश्चैवमज्जगे ॥ ७७ ॥

जब ज्वर मज्जामें स्थितहोताहै तब हिचकी श्वास खाँसी अंधकार सा दिखाई देना मर्मों में पीड़ा और शरीर के ऊपर शीतलता तथा भीतर दाह यह लक्षण होते हैं ॥ ७७ ॥

शुक्रस्थानगतेशुक्रमोक्षंकृत्वाविनाश्यच। प्राणवाय्वग्निसोमैश्चसार्द्धंगच्छत्यसौविभुः ॥ ७८ ॥

जब ज्वरवीर्य्य में स्थित होता है तब यह जीवात्मा वीर्य्य को गिराकर शरीर को नष्ट करके प्राणवायु अग्नि तथा सोम धातुके साथ चलाजाता है ॥ ७८ ॥

रसरक्ताश्रितःसाध्योमेदोमांसगतश्चयः। अस्थिमज्जगतःकृच्छ्रःशुक्रस्थोनैवसिध्यति ॥ ७९ ॥

रस रुधिर मेदा तथा मांस में स्थित ज्वर साध्य होताहै हड्डी तथा मज्जा में स्थितज्वर कष्टसाध्य होताहै और वीर्य में स्थित ज्वर असाध्य होताहै ॥ ७९ ॥

हेतुभिर्लक्षणैश्चोक्तः पूर्वमष्टविधो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रलाप और हड्डी तथा शिर में बहुत पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ ९६ ॥

पर्वभेदोग्निमान्द्यञ्च तृष्णादाहो रुचिर्भ्रमः। कफहीनेवातमध्येलिंगं पित्ताधिकेविदुः ॥ ९७ ॥

जिस सन्निपातज्वर में कफ की न्यूनता वायु की मध्यमता तथा पित्त की अधिकता होती है उसमें पोरुओं की पीड़ा मंदाग्नि तृषा दाह अरुचि तथा भ्रम यह लक्षण होते हैं ॥ ९७ ॥

श्वासकासप्रतिश्याया मुखशोषो तिपार्श्वरुक्। कफहीनेपित्तमध्ये लिंगंवाताधिकेमतम् ॥ ९८ ॥

जिस सन्निपातज्वरमें कफकी हीनता पित्त की मध्यमता और वायु की अधिकता होती है उस में श्वास खाँसी प्रतिश्याय (जुकाम) मुखका सूखना और पसुलियों में बहुत पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ ९८ ॥

सन्निपातज्वरस्योर्ध्वमतोवक्ष्यामि लक्षणम्। क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थि सन्धिशिरोरुजः। सास्रावेकलुषेर क्तेनिर्भुग्नेचापिदर्शने ॥ ९९ ॥

इसके उपरान्त सन्निपातज्वर के सामान्य लक्षण कहेजाते हैं कभी दाह मालूम होना कभी शीत मालूम होना हड्डी संधि तथा शिर में पीड़ा आँसूयुक्त मैले रक्तवर्ण तथा टेढ़े नेत्र होना ॥ ९९ ॥

सस्वनौसरुजौकर्णौ कण्ठःशूकैरि वावृतः। तन्द्रामोहःप्रलापश्चकासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥ १०० ॥

कानों में अकस्मात् शब्द सुनाई देना तथा पीड़ा होना गलेमें कांटेसे पड़जाना तंद्रा मोह प्रलाप खाँसी श्वास अरुचि भ्रम ॥ १०० ॥

परिदग्धाखरस्पर्शा जिह्वास्रस्तांग तापरम्। ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनो न्मिश्रितस्यच ॥ १०१ ॥

जलीहुईसी खुरखुरी जिह्वा होना अंगों का बहुत शिथिल होना कफसहित रुधिर तथा पित्त थूकना ॥ १०१ ॥

शिरसोलोठनंतृष्णा निद्रानाशोहृ दिव्यथा। स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिरा द्दर्शनमल्पशः ॥ १०२ ॥

शिर को रगड़ना तृषा निद्राका नाश हृदय में पीड़ा बहुत देर में स्वेद मूत्र तथा मलका थोड़ा २ निकलना ॥ १०२ ॥

कृशत्वन्नातिगात्राणांप्रततङ्कण्ठकू जनम्। कोठानांश्यावरक्तानांमण्ड लानांचदर्शनम् ॥ १०३ ॥

अंगों में बहुत कृशता न होना बहुत कण्ठ-कूजन (एक तरहका विकारयुक्त शब्द) शरीरमें कपिश तथा रक्तवर्ण चकत्ते तथा मंडल पड़जाना ॥ १०३ ॥

मूकत्वंस्रोतसांपाको गुरुत्वमुदरस्य च। चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपा तज्वराकृतिः ॥ १०४ ॥

वचन बंद होजाना स्रोतोंका पकजाना पेट का भारीहोना, और दोषों का बहुत देर में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पकना यह सन्निपातज्वरके लक्षण हैं।।१०४।।

दोषेविवृद्धेनष्टेऽग्नौसर्वसम्पूर्णलक्षणः। सन्निपातज्वरोऽसाध्यःकृच्छ्रसाध्यस्त्वतोऽन्यथा ॥ १०५ ॥

जिस सन्निपातज्वर में दोष बढ़ेहुये हों अग्निमंद हो और पूर्वोक्त सम्पूर्ण लक्षण हों वह असाध्य होताहै और इससे विपरीत कष्टसाध्य होता है ॥ १०५ ॥

निदानेत्रिविधाप्रोक्ता यापृथक्कज्वराकृतिः। संसर्गसन्निपातानां तथा चोक्तंस्वलक्षणम् ॥ १०६ ॥

निदानस्थान में अलग अलग तीनप्रकार के ज्वरों के लक्षण कहेगये हैं यहां संसर्गज तथा सन्निपातजज्वरके लक्षणकहेगये॥१०६॥

आगन्तुरष्टमोयस्तुसनिर्दिष्टश्चतुर्विधः। अभिघाताभिषंगाभ्यामभिचाराभिशापतः ॥ १०७ ॥

आगन्तु नाम जो आठवां ज्वरहै वह अभिघात अभिषंग, अभिचार तथा अभिशाप भेदसे चारप्रकार का होताहै ॥ १०७ ॥

शस्त्रलोष्टकशाकाष्ठमुष्ट्यरत्नितलद्विजैः। तद्विधैश्चहतेगात्रेज्वरः स्यादभिघातजः ॥ १०८ ॥

शस्त्र लोष्ट(ढीला) कशा काष्ठ मुष्टि(घूंसा) तमाचा तथा दांत और इसी प्रकारकी अन्य वस्तुओं के द्वारा चोट लगने से जो ज्वर उत्पन्न होता है उसे अभिघातज ज्वर कहते हैं ॥ १०८ ॥

तत्राभिघातजोवायुः प्रायोरक्तंप्रदूषयन्। सव्यथाशोफवैवर्ण्यंकरोतिसरुजंज्वरम् ॥ १०९ ॥

चोट लगनेसे कुपितहुआ वायु रुधिर को दूषित करके व्यथा शोथ विवर्णता (वर्णका बिगड़जाना) तथा पीड़ा सहित ज्वर को उत्पन्न करताहै ॥ १०९ ॥

कामशोकभयक्रोधैरभिपक्तस्ययोज्वरः। सोऽभिषंगज्वरोज्ञेयोयश्चभूताभिषंगजः ॥ ११० ॥

काम शोक भय क्रोध तथा भूताभिषंग (भूत लगना) से जो ज्वर उत्पन्न होताहै उसे अभिषंगजज्वर जानना चाहिये ॥ ११० ॥

कामशोकभयाद्वायुःक्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः। भूताभिषङ्गात्कुप्यन्तिभूतसामान्यलक्षणः ॥ १११ ॥

काम शोक तथा भय से वायु कुपित होता है क्रोधसे पित्त कुपित होताहै और भूताभिषंग से वातादि तीनों दोष कुपित होते हैं परन्तु भूताभिषंग से हुये ज्वर में भूतोंहीके लक्षण होतेहैं ॥ १११ ॥

भूताधिकारेव्याख्यातंतदष्टविधलक्षणम्। विषवृक्षानिलस्पर्शात्तथान्यैर्विषसम्भवैः ॥ ११२ ॥ अभिषक्तस्यचाप्याहुर्ज्वरमेकेऽभिषङ्गजम्। चिकित्सयाविषघ्न्यैवप्रशमंलभते नरः ॥ ११३ ॥

भूतोंके आठ प्रकार के लक्षण भूताधिकार में कहेगये हैं किसी किसी आचार्य्य का यह मत है कि विष वृक्षकी वायु के लगने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से अथवा अन्य किसी विषकारी पदार्थ के संग से अभिषंगज ज्वर उत्पन्न होताहै इस ज्वर की शान्ति विषघ्न चिकित्सासेही होती है॥ ११२। ११३॥

अभिचाराभिशापाभ्यांसिद्धानां यःप्रवर्तते । सन्निपातज्वरोघोरःस विज्ञेयः सुदुःसहः॥ ११४॥

सिद्ध लोगोंके अभिचार (हिंसा) तथा अभिशाप(शाप)से जो घोर सन्निपातज ज्वर उत्पन्न होता है उसे अत्यन्त दुस्सह जानना चाहियें॥ ११४॥

सन्निपातज्वरस्योक्तंलिङ्गंयत्तस्यत त्स्मृतम् । चित्तेन्द्रियशरीराणामर्त्त योऽन्याश्चनैकशः॥ ११५॥ प्रयो गस्त्वभिचारस्यदृष्ट्वाशापस्यचैव हि । स्वयंश्रुत्वानुमानेनलक्ष्यते प्रशमेनवा॥ ११६॥

सन्निपात ज्वरमें जो लक्षण कहेगये हैं वही उसमें भी होते हैं चित्त इन्द्रिय तथा शरीरमें अनेक प्रकारकी पीड़ाओंको देखकर सुनकर अनुमान करके अथवा शान्तिके द्वारा अभिचार तथा शापका प्रयोग लक्षित होता है॥ ११५। ११६॥

वैविध्यादभिचारस्यशापस्यचतदा त्मके। यथाकर्मप्रयोगेणलक्षणंस्या त्पृथग्विधम्॥ ११७॥

अभिचार तथा अभिशाप अनेक प्रकारका होता है इस लिये अभिचार तथा अभिशाप से हुए ज्वरों के कर्म्म तथा प्रयोग के अनुसार अलग २ लक्षण होते हैं॥ ११७॥

ध्याननिःश्वासबहुलंलिंगंकामज्व रेस्मृतम् । शोकजेबाष्पबहुलंत्रास प्रायंभयज्वरे॥ ११८॥

चिंता तथा श्वासकी अधिकता कामज्वर का लक्षण होता है शोकज्वर में आँसू बहुत निकलते हैं भयज्वरमें वहुत भय मालूम होता है॥ ११८॥

क्रोधजेबहुसंरम्भंभूतावेशेत्वमानुष म् । मूर्च्छामोहमदग्लानिभूयिष्ठं विषसम्भवे॥ ११९॥

क्रोधज्वर में बहुत संरम्भ होताहै भूतज्वर में अमानुष कर्म्म होते हैं और विषसे हुये ज्वरमें मूर्च्छा मोह मद तथा ग्लानि की अधिकता होती है॥ ११९॥

केषाञ्चिदेषांलिङ्गानांसन्तापोजाय तेपुरः। पश्चात्तुरयन्तुकेषाञ्चिदेषुका मज्वरादिषु॥ १२०॥

कामज आदि ज्वरों के कुछ लक्षणों के साथ कुछ लक्षणों के पीछे और कुछ लक्षणों के पहिले संताप उत्पन्न होता है॥ १२०॥

कामादिजानामुद्दिष्टंज्वराणांयद्वि शेषणम्। कामादिजानांरोगाणाम न्येषामपितत्स्मृतम्॥ १२१॥

कामादि से होनेवाले ज्वरों में जो विशेषता कहीगई है वही कामादि से होनेवाली अन्य रोगों में भी जाननी चाहिये॥ १२१॥

तेपूर्वंकेवलाःपश्चान्निजैर्व्यामिश्रल क्षणाः । हेत्वोषधिविशिष्टाश्चभव न्त्यागन्तवोज्वराः॥ १२२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगंतुजज्वरों में पहिले केवल अपने ही अपने लक्षण प्रकट होते हैं पीछे वातादि दोषोंके लक्षण भी उनमें मिलजाते हैं आगंतुज ज्वरों में हेतु तथा औषध दोनों की विशेषता होती है ॥ १२२ ॥

मनस्यभिद्रुतेपूर्वंकामाद्यैर्नतथाबलम् । ज्वरःप्राप्नोतिकामाद्यैर्मनोयावन्नदूष्यति ॥ १२३ ॥

पहिले कामादिके द्वारा मन अत्यन्त चंचल होने परभी जबतक कामादि के द्वारा मन अत्यन्त दूषित नहीं होताहै तबतक ज्वर अत्यन्त बलको नहीं प्राप्त होता है ॥ १२३ ॥

संसृष्टाःसन्निपतिताःपृथग्वाकुपिता मलाः । रसाख्यंधातुमन्वेत्यपक्तिंस्थानान्निरस्यच ॥ १२४ ॥

संसृष्ट (दोदो मिलेहुये) सन्निपतित (तीनोंमिलेहुये) अथवा अलग अलग कुपित हुये वातादि दोष रसनाम धातु में प्राप्त होकर जठराग्निको पक्वाशय से निकालकर॥१२४॥

स्वेनतेनोष्मणाचैवकृत्वादेहोष्मणेबलम् । स्रोतांसिरुद्ध्वासम्प्राप्ताःकेवलंदेहमुल्बणाः ॥ १२५ ॥

अपनी ऊष्मा से तथा अग्निकी ऊष्मा से शरीरकी ऊष्माके बलको बढ़ाकर और स्रोतों को रोककर सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर ॥ १२५ ॥

सन्तापमधिकंदेहेजनयन्तिनरस्तदा । भवत्यत्युष्णसर्वाङ्गोज्वरितस्तेनचोच्यते ॥ १२६ ॥

जब अधिक संतापको शरीर में उत्पन्नकरते हैं तब मनुष्य का सम्पूर्ण शरीर अत्यन्त उष्ण होजाता है और इससे उस मनुष्य को ज्वर आया है यह कहा जाताहै ॥ १२६ ॥

स्रोतसांसंनिरुद्धत्वात्स्वेदंनानाधिगच्छति । स्वस्थानात्प्रच्युतेचाग्नौ प्रायशस्तरुणेज्वरे ॥ १२७ ॥

प्रायः तरुणज्वर में अग्निके अपने स्थानसे निकल जानेपर स्रोतों के रुकजाने से मनुष्यों के शरीर में स्वेद नहीं निकलताहै ॥ १२७॥

अरुचिश्चाविपाकश्चगुरुत्वमुदरस्य च । हृदयस्याविशुद्धिश्चतन्द्राचालस्यमेवच ॥ १२८ ॥

अरुचि भोजन का न पचना उदरका भारीपन हृदय का शुद्ध न होना तंद्रा आलस्य ॥ १२८ ॥

ज्वरोऽविसर्गी बलवान्दोषाणामप्रवर्त्तनम् । लालाप्रसेकोहृल्लासोक्षुन्नाशोऽविशदंमुखम् ॥ १२९ ॥

ज्वर का निरन्तर पूर्णवेग से बनारहना दोषों का न निकलना लार बहना मतली क्षुधाका नाश मुखका साफ न होना ॥१२९॥

स्तब्धसुप्तगुरुत्वञ्चगात्राणांबहुमूत्रता । नविड्जीर्णानचग्लानिर्ज्वरस्यामस्यलक्षणम् ॥ १३० ॥

अंगों में स्तब्धता (जकड़जाना) सुप्तता (सुन्न होजाना) तथा भारीपन होना मूत्र की अधिकता मलका न पकना और ग्लानि न होना यह आमज्वरके लक्षण हैं॥ १३०॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षुत्क्षामतालघुत्वञ्चगात्राणांज्वरमा र्दवम्। दोषप्रवृत्तिरष्टाहोनिरामज्व रलक्षणम् ॥ १३१ ॥

क्षुधा कृशता अंगोंका हलकापन ज्वरके वेगका कम होना दोषों का निकलना और आठ दिनका व्यतीत होजाना यह आम रहित ज्वरके लक्षण हैं॥ १३१ ॥

नवज्वरेदिवास्वप्नस्नानाभ्यङ्गान्नमैथुनम्। क्रोधप्रवातव्यायामकषायांश्चविवर्जयेत् ॥ १३२ ॥

नवीनज्वर में दिनमें सोना स्नान तैलमर्दन भोजन मैथुन क्रोध तीक्ष्णवायु पूर्वकीवायु व्यायाम और काढ़ा पीना यह सब वर्जित हैं॥ १३२ ॥

ज्वरेलंघनमेवादावुपदिष्टमृतेज्वरात्। क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमोद्भवात् ॥ १३३ ॥

क्षय वायु भय क्रोध काम शोक तथा श्रम से हुये ज्वरके सिवाय अन्य सब ज्वरों में पहिले लंघन करना चाहिये ॥ १३३ ॥

लंघनेनक्षयंनीतेदोषेसन्धुक्षितेऽनले। विज्वरत्वंलघुत्वञ्चक्षुच्चैवास्योपजायते ॥ १३४ ॥

लंघनकेद्वारा दोषों के क्षीण होजाने पर और अग्निके दीप्त होनेपर शरीरका हलकापन क्षुधा होना तथा ज्वरका नाश होता है॥ १३४ ॥

प्राणाविरोधिनाचैनंलंघनेनोपपादयेत्। बलाधिष्ठानमारोग्यंयदर्थोऽयं क्रियाक्रमः ॥ १३५ ॥

रोगी को उतनेही लंघन करावे जिसमें उसके बलका नाश न होवे क्योंकि जिस आरोग्यताके लिये चिकित्सा कीजाती है वह आरोग्यता बलके आश्रित है॥ १३५ ॥

लंघनंस्वेदनंकालोयवाग्वस्तिक्तकोरसः। पाचनान्यविपक्कानांदोषाणां तरुणेज्वरे॥ १३६ ॥

तरुणज्वर में लंघन स्वेदन (स्वेद निकलवाना) समय यवागू तथा तिक्तरस यह नहीं पचेहुये दोषोंके पचानेके कारण हैं॥ १३६॥

तृष्यतेसलिलञ्चोष्णंदद्याद्वातकफज्वरे। मद्योत्थेपैत्तिकेवाथशीतलं तिक्तकैःशृतम् ॥ १३७ ॥

वात कफज्वर में जो रोगी को पियास लगै तो उष्ण जल देना चाहिये और मद्यज अथवा पित्तजज्वरमें जो रोगी को प्यास लगै तो तिक्त औषधियों के साथ पाक कियागया शीतल जल पीने को दे ॥ १३७ ॥

दीपनंपाचनञ्चैवज्वरघ्नमुभयंहितत्। स्रोतसांशोधनंबल्यंरुचिस्वेदकरंशिवम् ॥ १३८ ॥

यह दोनों प्रकारके जल दीपन पाचन ज्वरघ्न स्रोतों को शुद्ध करनेवाले बलकारी रुचिकारी तथा स्वेदकारी मंगलरूपी होते हैं ॥ १३८ ॥

मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गरैः। शृतशीतंजलंदद्यात्पिपासा ज्वरशान्तये ॥ १३९ ॥

नागरमोथा पित्तपापड़ा खस चन्दन सुगन्धबाला तथा सोंठि इनकेसाथ पाक कियेगये शीतल जल को तृषा तथा ज्वरकी शान्तिके लिये देना चाहिये ॥ १३९ ॥

कफप्रधानानुत्क्लिष्टान्दोषानामाशयस्थितान्। बुद्ध्वाज्वरकरान्कालेवम्यानांवमनैर्हरेत् ॥ १४० ॥

आमाशय में स्थित अधिक कफयुक्त ज्वर को उत्पन्न करनेवाले दोषों को उभड़ेहुये जानकर वमन करानेके योग्य पुरुषों को वमनकारक औषध देकर समयपर वमन करावे ॥ १४० ॥

अनुपस्थितदोषाणांवमनंतरुणेज्वरे। हृद्रोगंश्वासमानाहंमोहञ्चजनयेद्भृशम् ॥ १४१ ॥

और जो दोष उभड़ेहुये न हों तो वमन न करावे क्योंकि तरुणज्वरमें वमन कराने से हृदय के रोग श्वास अफरा तथा मोह यह सब रोग बहुत उत्पन्न होते हैं ॥ १४१ ॥

सर्वदेहानुगाःसामाधातुस्थादुःखनिर्हराः। दोषाःफलेभ्यआमेभ्यःस्वरसाइवसात्ययाः ॥ १४२ ॥

जैसे कच्चे फलों से जो रस निकालना चाहो तो रस नहीं निकलता है किन्तु फल नष्ट होजाता है इसी प्रकार सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त धातुओं में स्थित आम दोषों को निकालने में बड़ा क्लेश होताहै ॥ १४२ ॥

वमितंलंघितंकालेयवागूभिरुपाचरेत्। यथास्वौषधसिद्धाभिर्मण्डपूर्वाभिरादितः ॥ १४३ ॥

वमन तथा लंघन कराके ज्वरवाले को समयपर यवागू देनी चाहिये पहिले यथायोग्य औषधोंके साथ पाक कीगई मण्ड (बहुत पतली यवागू)नाम यवागू देनीचाहिये॥१४३॥

यावज्ज्वरमृदूभावात्षडहंवाविचक्षणः। तस्याग्निर्दीप्यतेताभिःसमिद्भिरिवपावकः ॥ १४४ ॥

जबतक ज्वरका वेग न्यून न होजाय अथवा छःदिन पर्य्यन्त बुद्धिमान् वैद्य यवागूदे जैसे समिधोंकेद्वारा अग्नि दीप्त होती है उसी प्रकार यवागूकेद्वारा जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै॥१४४॥

ताश्चभेषजसंयोगाल्लघुत्वाच्चाग्निदीपनाः। वातमूत्रपुरीषाणांदोषाणाञ्चानुलोमनाः ॥ १४५ ॥

औषधियों के सँयोग से तथा हलकेपन से यवागू अग्नि को दीप्त करती हैं और वायु मूत्र मल तथा दोषों को अपने २ मार्गके अनुसार करती हैं ॥ १४५ ॥

स्वेदनायद्रवौष्ण्यत्वाद्द्रवत्वात्तृट्प्रशान्तये। आहारभावात्प्राणायसरत्वाल्लाघवायच ॥ १४६ ॥

उष्ण तथा द्रव (पतली) होने के कारण यवागू स्वेद को उत्पन्न करती है द्रव होने से तृषाको शान्त करतीहै आहाररूप होनेसे बल की रक्षा करती है सर (दस्तावर) होने से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लघुता (हलकापन) को उत्पन्न करती है ॥ १४६ ॥

ज्वरघ्न्योज्वरसात्म्यत्वात्तस्मात्पेया भिरादितः। ज्वरानुपचरेद्धीमान्ऋते मद्यसमुत्थितात् ॥ १४७ ॥

और ज्वर में हितकारी होने से ज्वरको शान्त करती है इससे बुद्धिमान् वैद्य पहिले यवागूके द्वारा ज्वरोंकी चिकित्सा करै परन्तु मद्यज्वर में यवागू न दे ॥ १४७ ॥

मदात्ययेमद्यनित्येग्रीष्मेपित्तकफाधिके। ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचयवागूरहिताज्वरे ॥ १४८ ॥

मदात्यय रोगवाले को नित्य मद्य पीने वाले को ग्रीष्मऋतु में पित्त तथा कफ की अधिकता में और ऊर्ध्वग रक्त पित्तवाले (जिसके मुखसे खून गिरताहो) को ज्वरमें यवागू अहित होती है ॥ १४८ ॥

तत्रतर्पणमेवाग्रेप्रयोज्यंलाजसक्तुभिः। ज्वरापहैःफलरसैर्युक्तंसमधुशर्करम् ॥ १४९ ॥

किन्तु ज्वरको दूर करनेवाले दाखआदि फलोंके रसके साथ शहद तथा शक्कर युक्त खीलोंके सत्तू देने चाहिये इसे लाज तर्पण कहते हैं ॥ १४९ ॥

द्राक्षादाडिमखर्ज्जूरपियालैःसपरूषकैः। तर्पणार्हेषुकर्त्तव्यंतर्पणंज्वरशान्तये ॥ १५० ॥

ज्वरकी शान्तिके निमित्त तर्पणके योग्य पुरुष को दाख दाड़िम खजूर खिन्नी तथा फालसेके द्वारा तर्पण देना चाहिये ॥ १५० ॥

ततःसात्म्यबलापेक्षीभोजयेज्जीर्णेतर्पणम्। तनुनामुद्गयूषेणजाङ्गलानांरसेनवा ॥ १५१ ॥

तदनन्तर तर्पणके पचजाने पर सात्म्य व बलकी अपेक्षा से मूंगके पतले यूष अथवा जांगल जीवों के मांसके रसके साथ भोजन देना चाहिये ॥ १५१ ॥

अन्नकालेषुचाप्यस्मैविधेयंदन्तधावनम्। योऽस्यवक्त्ररसस्तस्माद्विपरीतंप्रियञ्चयत् ॥ १५२ ॥

किन्तु भोजनके पहिले रोगीके मुखमें जौन सा रसहो उसके विपरीत रसवाले काष्ठकी दतून करानी चाहिये ॥ १५२ ॥

तदस्यमुखवैशद्यंप्रकांक्षाञ्चान्नपानयोः। धत्तेरसविशेषाणामभिज्ञत्वंकरोतियत् ॥ १५३ ॥

इससे मुख निर्मल होजाता है भोजन तथा पीने की वस्तुओंमें रुचि होतीहै और सम्पूर्ण रसोंका यथार्थ ज्ञान होता है ॥ १५३ ॥

विशोध्यद्रुमशाखाग्रैरास्यंप्रक्षाल्यचासकृत्। मस्त्विक्षुरसमद्याद्यैर्यथाहारमवाप्नुयात् ॥ १५४ ॥

दतून के उपरान्त बारम्बार वृक्षकी शाखाओंके अग्रभाग से मुख साफ कराना चाहिये भोजन के उपरान्त भोजन के अनुसार दही का तोड़ ईखका रस तथा मद्यआदि पिलाने चाहिये ॥ १५४ ॥

पाचनीयंशमनीयंकषायंपाययना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्। ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नंप्रति भोजयेत् ॥ १५५ ॥

ज्वरवाले को छः दिन के उपरान्त हलका भोजन कराके पाचन अथवा संशमन काढ़ा पिलाना चाहिये ॥ १५५ ॥

स्तभ्यन्तेनविपच्यन्तेकुर्वन्तिविषम ज्वरम्। दोषाबद्धाःकषायेण स्त म्भित्वातरुणज्वरे ॥ १५६ ॥

क्योंकि तरुणज्वर में काढ़ा पीने से दोष रुक जाते हैं और रुकेहुये दोष परिपाक को न प्राप्त होकर विषम ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ १५६ ॥

नतुकल्पनमुद्दिश्यकषायःप्रतिषि ध्यते। यःकषायःकषायःस्यात्सव र्ज्यस्तरुणज्वरे ॥ १५७ ॥

यहां पर नवीनज्वर में कल्पनाके उद्देश से काढ़ा का निषेध नहीं है बल्कि उस काढ़ेका निषेध है जो कषैला हो ॥ १५७ ॥

यूषैरम्लैरनम्लैर्वाजाङ्गलैर्वारसैर्हि तैः। दशाहंतावदश्नीयाल्लघ्वन्नंज्व रशान्तये ॥ १५८ ॥

ज्वरकी शान्तिके लिये खट्टे अथवा खटाई रहित यूषों के साथ अथवा हितकारी जांगल जीवों के मांसके रसके साथ दश दिन तक हल्का अन्न भोजन करै ॥ १५८ ॥

अतऊर्द्ध्वंकफेमन्देवातपित्तोत्तरेज्व रे। परिपक्वेषुदोषेषुसर्पिष्पानंयथा मृतम् ॥ १५९ ॥

इसके उपरान्त कफके न्यूनहोजाने पर वात तथा पित्तके अधिक होनेपर और दोषों के पचजानेपर घी पीना अमृतके समान गुणकारी होता है ॥ १५९ ॥

निर्देशाहमपिज्ञात्वाकफोत्तरमलङ् घितम्। न सर्पिःपाययेद्वैद्यःकषा यैस्तमुपाचरेत् ॥ १६० ॥

परन्तु दश दिनके व्यतीत होजाने पर भी यदि कफकी अधिकता हो और लंघन अच्छी प्रकारसे न हुयेहों तो वैद्य घी न पिलावे किन्तु काढ़ोंके द्वारा चिकित्सा करै ॥ १६० ॥

यावल्लघुत्वादशनंदद्यान्मांसरसेन च। परंह्यलंदोषहरंपरंतच्चबलप्रद म् ॥ १६१ ॥

जबतक शरीर हल्का न होजाय तबतक ज्वरवाले को मांसके रसके साथ भोजन करावे मांसका रस अत्यन्त दोषनाशक तथा अत्यन्तबलकारी होता है ॥ १६१ ॥

दाहतृष्णापरीतस्यवातपित्तोत्तरं ज्वरम्। बद्धप्रच्युतदोषंवानिरामं पयसाजयेत् ॥ १६२ ॥

दाह तथा तृषा युक्त पुरुषके अधिक वात पित्तवाले रुकेहुये अथवा नहीं रुकेहुये दोष वाले आम रहित ज्वरको दूध पिलाकर शान्तकरै ॥ १६२ ॥

क्रियाभिराभिःप्रशमंनप्रयातियदा ज्वरः। अक्षीणबलमांसस्यशमये त्तंविरेचनैः ॥ १६३ ॥

जो इन क्रियाओं से ज्वरशान्त न हो तो नहीं क्षीणहुये बल तथा मांसवाले पुरुष को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विरेचन (जुल्लाब) देकर ज्वरको शान्त करै ॥ १६३ ॥

ज्वरक्षीणस्यनहितंवमनंनविरेचनम् । कामन्तुपयसातस्यनिरूहैर्वाहरेन्मलान् ॥ १६४ ॥

जो रोगी ज्वरसे क्षीण होगया हो उसे वमन तथा विरेचन हित नहीं होता इस से बहुत दूध पिलाकर अथवा निरूह वस्ति (एक मकारका अमल) देकर मल निकालना चाहिये ॥ १६४ ॥

निरूहोवलमग्निश्चविज्वरत्वंमुदंरुचिम् । परिपक्वेषुदोषेषुप्रयुक्तःशीघ्रमावहेत् ॥ १६५ ॥

दोषों के पचजाने पर दीगई निरूह वस्ति वल अग्नि हर्ष तथा रुचिको शीघ्रही बढ़ाती है और ज्वरको नष्ट करती है ॥ १६५ ॥

पित्तंवाकफपित्तंवापित्ताशयगतंहरेत् । स्रंसनंत्रीन्मलान्वस्तिर्हरेत्पक्वाशयस्थितान् ॥ १६६ ॥

पित्ताशय में स्थित पित्तको अथवा कफ पित्त दोनों को विरेचन निकालता है और वस्ति पक्वाशय में स्थित तीनों दोषों को निकालती है ॥ १६६ ॥

ज्वरेपुराणेसंक्षीणेकफपित्तेदृढाग्नये । रूक्षवद्धपुरीषाणांप्रदद्यादनुवासनम् ॥ १६७ ॥

पुराने ज्वरमें कफ तथा पित्तकी क्षीणता होनेपर रूखे तथा वँधेहुये मलवाले और दीप्त अग्निवाले पुरुषों को अनुवासन वस्ति (एक मकारका अमल) देनी चाहिये ॥ १६७ ॥

गौरवेशिरसःशूलेविबद्धेष्विन्द्रियेषुच । जीर्णेज्वरेरुचिकरंकुर्य्यान्मूर्द्धविरेचनम् ॥ १६८ ॥

जीर्णज्वर में शरीरके भारी होनेपर शिर शूल होनेपर और इन्द्रियाँ बँधीहुईसी मालूम होनेपर शिरोविरेचन (नास) देना चाहिये इससे रोगीको भोजनमें रुचिहोतीहै ॥१६८॥

अभ्यङ्गांश्चप्रदेहांश्चसस्नेहान्सावगाहनान् । विभज्यशीतोष्णकृतान्कुर्य्याज्जीर्णज्वरेभिषक् ॥ १६९ ॥

वैद्य जीर्णज्वर में विचारपूर्वक उष्ण अथवा शीत अभ्यंग (तैलआदि लगाना) लेप तथा अवगाहन (जलआदिको मँझाना, करवावै ॥ १६९ ॥

तैराशुहिशमंयातिबहिर्मार्गगतोज्वरः । लभन्तेसुखमङ्गानिवलंवर्णश्चवर्द्धते ॥ १७० ॥

इन उपायों से बाहिरी मार्गों में प्राप्त ज्वर शीघ्रही शान्त होजाता है अंगोंमें सुख प्राप्त होता है और बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है ॥ १७० ॥

धूपनाञ्जनयोगैश्चयान्तिजीर्णज्वराःशमम् । त्वङ्मात्रशेषोयेषाञ्चभवत्यागन्तुरन्वयः ॥ १७१ ॥

जो जीर्णज्वर केवल त्वचामें ही बाकी रहता है अथवा जिसमें आगन्तु कारणों का संवन्ध रहता है वह धूप तथा अंजनके प्रयोग से शान्त होजाता है ॥ १७१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतिक्रियाक्रमःसिद्धोज्वरघ्नःसम्प्र काशितः ॥ १७२ ॥

इस प्रकार ज्वरनाशक अनुभव की हुई क्रियाओं का क्रम प्रकाशित किया गया है ॥ १७२ ॥

येषान्त्वेषक्रमस्तानिद्रव्याण्यूर्द्ध्वम तःशृणु ॥ १७३ ॥

अब इसके उपरान्त जिन वस्तुओंके द्वारा यह क्रम होता है उनको सुनो ॥ १७३ ॥

रक्तशाल्यादयःशस्ताःपुराणाःषष्टि कैःसह । यवाग्वोदनलाजार्थेज्व रितानांज्वरापहाः ॥ १७४ ॥

ज्वरवालोंके लिये यवागू भात तथा खीलैं बनाने के निमित्त पुराने रक्तवर्ण शालिधान तथा साँठीके चावल हित होते हैं क्योंकि ये ज्वरको नष्ट करते हैं ॥ १७४ ॥

अम्लाभिलाषीतामेवदाडिमाम्लां सनागराम् । सृष्टविट्पैत्तिकोवाथ शीतामधुयुतांपिबेत् ॥ १७५ ॥

जिस ज्वरवालेको खटाई खाने की इच्छा हो वह यवागू में दाड़िम तथा सोंठि डालकर खावे जिस ज्वरवाले का मल पतला होवे अथवा पित्त अधिक हो वह शहद डालकर ठण्ढी यवागू पिये ॥ १७५ ॥

लाजपेयांसुखजरां पिप्पलीनागरैः शृताम् । पिबेज्ज्वरीज्वरहरांक्षुद्वान ल्पाग्निरर्दितः ॥ १७६ ॥

जिस मंदाग्नि ज्वरवाले को क्षुधा लगै वह पहिले पीपल तथा सोंठि डालकर पाक की गई, खीलों की पेया (चौदहगुणेजलमें चावल आदि अन्न डालकर जो पतला २ माड़सा बनाया जाता है (उसे पेयाकहते हैं) पिये यह सुखपूर्वक पचती है और ज्वरको नष्ट करती है ॥ १७६ ॥

पेयांवारक्तशालीनांपार्श्वबस्तिशि रोरुजि । श्वदंष्ट्राकण्टकारिभ्यांसि द्धांज्वरहरांपिबेत् ॥ १७७ ॥

जिस ज्वरवाले की पसुली वस्ति तथा शिर में पीड़ा होती हो वह गोखरू तथा भटकटैया के साथ पाक की गई ज्वर के हरनेवाली रक्त शालिधानकी यवागूपिये॥ १७७॥

ज्वरातिसारीपेयांवापिबेत्साम्लांशृ तांनरः । पृश्निपर्णीबलाबिल्वनाग रोत्पलधान्यकैः ॥ १७८ ॥

जिस पुरुषको ज्वरातीसार हो वह पृश्निपर्णी बरियारा बेल सोंठि उत्पल तथा धनियांके साथ पेया पकाकर उस में खटाई डाल कर पीवे ॥ १७८ ॥

शृतांविदारीगन्धाद्यैर्दीपनींस्वेदनीं नरः । कासीश्वासीचहिक्कीचय वागूंज्वरितःपिबेत् ॥ १७९ ॥

जिस ज्वरवाले को श्वास खांसी तथा हिचकी आती हों वह सरिवन के साथ पाक की गई यवागू पीवे यह यवागू स्वेद निकालने वाली तथा दीपन होती है ॥ १७९ ॥

विबद्धवर्च्चाःसयवाः पिप्पल्यामल कैःशृताम् । सर्पिष्मतींपिबेत्पेयांज्व रीदोषानुलोमनीम् ॥ १८० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस ज्वरवाले का मल बँधाहुआ हो वह पीपल तथा आंवलों के साथ यवों की पेया पकाकर घी डालकर पीवे यह यवागू दोषों को अपने २ मार्गके अनुसार करतीहै॥१८०॥

कोष्ठेविबद्धेसरुजिपिबेत्पेयांशृतां ज्वरी। मृद्वीकापिप्पलीमूलचव्या मलकनागरैः॥ १८१॥

जिस रोगी का कोष्ठबद्ध तथा पीड़ायुक्त हो वह दाख पिपलामूल चव्य आमले तथा सोंठिके साथ पेया पकाकर पीवे॥ १८१॥

पिबेत्सबिल्वांपेयांवाज्वरेसपरिकर्त्तिके। बलावृक्षाम्लकोलाम्लकल शीधावनीशृताम्॥ १८२॥

जिस ज्वरवाले की गुदा में कैंची से काटनेकी सी पीड़ा हो वह बेल बरियारा चूका बेर इमली तथा पिठवन के साथ पाक की गई पेया पीवे॥ १८२॥

अस्वेदनिद्रस्तृष्णार्त्तःपिबेत्पेयांस शर्कराम्। नागरामलकैःसिद्धांघृ तभृष्टांज्वरापहाम्॥ १८३॥

जिस ज्वरवाले के स्वेद न निकलता हो निद्रा न आती हो और प्यास बहुब लगती हो वह सोंठि तथा आमलों के साथ पाक की गई पेया में घी तथा शक्कर मिलाकर पीवें यह पेया ज्वरको नष्ट करती है॥ १८३॥

मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थान्समकु ष्ठकान्। यूषार्थेयूषसात्म्यानां ज्व रितानांप्रकल्पयेत्॥ १८४॥

जिन ज्वर वालों को यूष हित हो उनको मूंग मसूर चने कुलथी तथा मोठ का यूष दे॥ १८४॥

पटोलपत्रंसफलंकुलकंपापचेलिका म्। कर्कोटकंकटिल्लञ्चविद्याच्छाकं ज्वरेहितम्॥ १८५॥

परवल के पत्ते परवल मकर तेंदू पाठी खिखसा तथा करेला यह तरकारी ज्वर में हित हैं॥ १८५॥

लावान्कपिञ्जलानेणांश्चकोरानुपच क्रकान्। कुरंगान्कालपुच्छांश्च हरिणान्पृषतान्छशान्॥ १८६॥ प्रदद्यान्मांससात्म्यायज्वरितायज्व रापहान्। ईषदम्लाननम्लान्वारसा न्कालेविचक्षणः॥ १८७॥ कुक्कुटांश्चमयूरांश्च तित्तिरिक्रौञ्चवर्त्त कान्। गुरूष्णत्वान्नशंसन्तिज्वरेके चिच्चिकित्सकाः॥ १८८॥

जिन ज्वरवालों को मांस हित हो उनको लवा सफेद तीतर एण (मृगविशेष) चकोर कुरंग (मृगविशेष) चक्रवाक कालपुच्छ(मृगविशेष) हिरण पृषत (मृगविशेष) तथा खरगोश इन जीवोंका मांस देना चाहिये क्योंकि इन जीवों का मांस ज्वरघ्न होता है बुद्धिमान् वैद्य मुर्गा मोर तीतर कुररी तथा बटेर इन जीवोंके मांसके रसमें खटाई डालकर अथवा न डालकर ज्वरवाले को समय पर पिलावे कोई कोई वैद्य भारी तथा उष्ण होने के कारण ज्वरमें इन जीवों के मांसके रसका देना हित नहींसमझते हैं॥ १८६।१८७।१८८॥

CC-0. Gangamahavidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

लंघनेनानिलबलंज्वरेयद्यधिकंभवे त्। भिषङ्मात्राविकल्पज्ञोदद्यात्ता नपिकालवित्॥ १८६॥

यदि लंघन के द्वारा ज्वर में वायु बढ़जाय तो मात्रा के भेद तथा समय का जाननेवाला वैद्य इन जीवों के मांस का रस भी ज्वर में देवे॥ १८९॥

घर्माम्बुचानुपानार्थंतृषितायप्रदाप येत्।मद्यंवामद्यसात्म्याययथादोषंय थाबलम्॥ १९०॥

ज्वरवाले को भोजन के उपरान्त प्यास लगने पर उष्ण जल पीने को देवे और जो उसको मद्यहित होवे तो दोष तथा बल का विचार करके मद्यपीने को देवे॥ १९०॥

गुरूष्णस्निग्धमधुरकषायांश्चनव ज्वरे। आहारान्दोषपक्त्यर्थंप्राय शःपरिवर्जयेत्॥ १९१॥

नवीन ज्वर में दोषों के पचने के लिये भारी उष्ण स्निग्ध मधुर तथा कषैली वस्तुओं का आहार प्रायः न करै॥ १९१॥

अनुपानक्रमःसिद्धोज्वरेयःसम्प्रका शितः। अतऊर्द्ध्वंप्रवक्ष्यन्तेकषाया ज्वरनाशनाः॥ १९२॥

इसप्रकार ज्वरनाशक अनुपानों का क्रम प्रकाशित कियागया इस के उपरान्त ज्वरनाशक काढ़े कहे जाते हैं॥ १९२॥

पाक्यंशीतकषायंवामुस्तपर्पटकंपि बेत्। सनागरंपर्पटकंपिबेद्वासदुराल भम्॥१९३॥ किराततिक्तकंमुस्तं गुडूचीविश्वभेषजम्। पाठामुशीरं सोदीच्यंपिबेद्वाज्वरशान्तये१९४॥

ज्वरकी शान्ति के निमित्त नागरमोथा तथा पित्तपापड़े का काढ़ा पीवे अथवा नागरमोथा तथा पित्तपापड़े को सायंकाल के समय जल में भिगोकर प्रातःकाल पीवे अथवा सोंठि पित्तपापड़ा तथा जवासे का काढ़ा पीवे अथवा चिरायता नागरमोथा गिलोय सोंठि पाढ़र खस तथा सुगंधबाला इनका काढ़ा पीवे॥ १९३। १९४॥

ज्वरघ्नादीपनाश्चैतेकषायादोषपाच नाः। तृष्णारुचिप्रशमनामुखवैर स्यनाशनाः॥ १९५॥

यह काढ़े दीपन ज्वरघ्न दोषों को पचाने वाले और तृषा अरुचि तथा मुखकी विरसताको नष्ट करनेवाले होते हैं॥ १९५॥

कलिङ्गकाःपटोलस्यपत्रंकटुकरोहि णी। निम्बःपटोलस्त्रिफलामृद्वीका मुस्तवत्सकाः॥ १९६॥

इन्द्रयव परवल की पत्ती तथा कुटकी नींब परवल त्रिफला दाख नागरमोथा तथा इन्द्रयव॥ १९६॥

किराततिक्तममृताचन्दनंविश्वभेष जम्। गुडूच्यामलकंमुस्तमर्द्धश्लो कसमापनाः॥ १९७॥

चिरायता गिलोय लालचन्दन तथा सोंठि और गिलोय आमला तथा नागरमोथा आधे २ श्लोक में समाप्त किये गये॥ १९७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कषायाःशमयन्त्याशुपञ्चपञ्चविधा न्ज्वरान्। सन्ततंसततान्येद्युस्तृती यकचतुर्थकान् ॥ १९८ ॥

इन पांचों योगों के काढ़े क्रमसे संतत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक तथा चतुर्थकज्वर को शीघ्रही नष्ट करते हैं ॥ १९८ ॥

वत्सकारग्वधंपाठांषड्ग्रन्थांकटुरोहि णीम्। मूर्वांसातिविषांनिम्बंपटोलं धन्वयासकम् ॥ १९९ ॥

इन्द्रयव अमलतास पाढ़र कचूर कुटकी मिरोड़फली अतीस नींब की छाल परवल यवासा ॥ १९९ ॥

वचामुस्तमुशीराणिमधुकंत्रिफलां बलाम्। पाक्यंशीतकषायंवापिबे ज्ज्वरहरंनरः ॥ २०० ॥

वच नागरमोथा खस मुलेठी हड़ बहेड़ा आमला और बरियारा इन सबका काढ़ा पीवै अथवा इन सबको भिगोकर छानकर पीवै इससे ज्वरका नाश होता है ॥ २०० ॥

मधूकमुस्तमृद्वीकाकाश्मर्य्याणिप रूषकम्। त्रायमाणामुशीराणित्रि फलांकटुरोहिणीम् ॥ २०१ ॥

मुलेठी नागरमोथा दाख गँभारी के फल फालसा चिरायता के फल खस हड़ बहेड़ा आमला तथा कुटकी ॥ २०१ ॥

पीत्वानिशिस्थितंजन्तुर्ज्वराच्छीघ्रं विमुच्यते ॥ २०२ ॥

इन सबको कूटकर सायंकाल के समय जल में भिगोकर प्रातःकाल छानकर पीने से शीघ्रही ज्वर शान्त होता है ॥ २०२ ॥

बृहत्यौवत्सकंमुस्तं देवदारुमहौषध म्। कोलवल्लीचयोगोऽयंसन्निपात ज्वरापहः ॥ २०३ ॥

दोनों भटकटैया इन्द्रयव नागरमोथा देवदारु सोंठि तथा गजपीपरि इन सबका काढ़ा पीने से सन्निपातज्वर नष्ट होता है ॥ २०३ ॥

जात्यामलकमुस्तानितद्वद्धन्वयवा सकम्। विबद्धदोषोज्वारितःकषायं सगुडंपिबेत् ॥ २०४ ॥

जिस ज्वरवाले के दोष रुके हुये हों वह जायफल आमले नागरमोथा तथा यवासा इनके काढ़े में गुड़डालकर पीवे ॥ २०४ ॥

त्रिफलांत्रायमाणाञ्चमृद्वीकांकटुरो हिणीम्। पित्तश्लेष्महरस्त्वेषकषा योह्यानुलोमिकः ॥ २०५ ॥

हड़ बहेड़ा आमला चिरायते के फल दाख तथा कुटकी इन सबका काढ़ा कफ पित्तको नष्ट करता है और दोषों को अपने अपने मार्ग के अनुसार करता है ॥ २०५ ॥

त्रिवृताशर्करायुक्तःपित्तश्लेष्मज्वरा पहः। शटीपुष्करमूलञ्चव्याघ्रीशृङ्गी दुरालभा। गुडूचीनागरंपाठा किरा तंकटुरोहिणी ॥ २०६ ॥

शक्कर के साथ निशोथ का चूर्ण खाने से पित्तकफज्वरका नाश होता है शटी (कचूर) पुष्करमूल भटकटैया काकड़ासिंगी यवासा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गिलोय सोंठि पाढ़र चिरायता तथा कुट-की ॥ २०६ ॥

एषशठ्यादिकोवर्गःसन्निपातज्वरापहः । कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासतन्द्रासुशस्यते ॥ २०७ ॥

यह शठ्यादि वर्ग कहलाते हैं इसके सेवन से सन्निपातज्वर खांसी हृदय का जकड़ना पसुलियोंकी पीड़ा श्वास तथा तंद्रा इनरोगों का नाश होता है ॥ २०७ ॥

बृहत्यौपुष्करंभार्गीशटीश्रृंगीदुरालभा । वत्सकस्यचबीजानिपटोलंकटुरोहिणी ॥ २०८ ॥

दोनों भटकटैया पुष्करमूल भारंगी कचूर काकड़ासिंगी यवासा इन्द्रयव परवल तथा कुटकी ॥ २०८ ॥

बृहत्यादिर्गणःप्रोक्तःसन्निपातज्वरापहः । कासादिषुचसर्वेषुदद्यात्सोपद्रवेषुच ॥ २०९ ॥

यह बृहत्यादिगण कहलाता है इस के सेवनसे सन्निपातज्वर का नाश होता है और पूर्वोक्त खांसी आदि रोग उपद्रवों में इस को देना चाहिये ॥ २०९ ॥

कषायाश्चयवाग्वश्चपिपासाज्वरनाशनाः । निर्दिष्टाभेषजाध्यायेभिषक्तानपियोजयेत् ॥ २१० ॥

भेषजाध्याय में तृषा तथा ज्वर के नष्ट करनेवाले जो काढ़े तथा यवागू कही गई हैं बुद्धिमान् वैद्य उनका भी यहां व्यवहार करै ॥ २१० ॥

ज्वराःकषायैर्वमनैर्लंघनैर्लघुभोजनैः । रूक्षस्ययेनशाम्यन्तिसर्पिस्तेषांभिषग्जितम् ॥ २११ ॥

जिस रुक्ष पुरुषका ज्वर काढ़े वमन लंघन तथा लघुभोजन (हल्काखाना) से न शान्तहो उसकी औषध घृतहै ॥ २११ ॥

रूक्षंतेजोज्वरकंरतेजसारूक्षितस्यच । यःस्यादनुबलोधातुःस्नेहसाध्यःसचानलः ॥ २१२ ॥

क्योंकि रूखी जठराग्नि ज्वरको उत्पन्न करती है और जठराग्नि के द्वारा रूखेहुये पुरुष की जो धातु (वायु) बढ़ती है वह वायु स्नेहसे साध्य होती है ॥ २१२ ॥

कषायाःसर्वएवैतेसर्पिषासहयोजिताः । प्रयोज्याज्वरशान्त्यर्थमग्निसन्धुक्षणाःशिवाः ॥ २१३ ॥

ज्वरको शान्त करनेकेलिये घीके साथ यह सब काढ़े पीने चाहिये यह सब काढ़े दीपन तथा कल्याणकारी होते हैं ॥ २१३ ॥

पिप्पल्यश्चन्दनंमुस्तमुशीरंकटुरोहिणी । कलिङ्गमस्त्वामलकीशारिवातिविषास्थिरा ॥ २१४ ॥

पीपरि लालचन्दन नागरमोथा खस कुटकी इन्द्रयव भूमिआमला साँई अतीस सरिवन ॥ २१४ ॥

द्राक्षामलकबिल्वानित्रायमाणानिदिग्धिका । सिद्धमेतैर्घृतंसद्योजीर्णज्वरमपोहति ॥ २१५ ॥

दाख आमला बेल चिरायता का फल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा भटकटैया इन औषधियोंके साथ पाक कियागया घी जीर्णज्वर को नाश करता है ॥ २१५ ॥

क्षयंकासंशिरःशूलंपार्श्वशूलंहली मकम् । अंसाभितापमग्निश्चविषमं सन्नियच्छति ॥ २१६ ॥

और क्षय खांसी शिर तथा पसुलियों की पीड़ा हलीमक कन्धोंका जलना तथा अग्नि की विषमता इन सब रोगोंको भी नष्ट करता है ॥ २१६ ॥

वासांगुडूचींत्रिफलांत्रायमाणांयवा सकम् । पक्कातेनकषायेणपयसा द्विगुणेनच ॥ २१७ ॥

रूसा गिलोय त्रिफला चिरायता के फल तथा यवासा इनके काढ़े तथा द्विगुण दूधके साथ ॥ २१७ ॥

पिप्पलीमुस्तमृद्वीकाचन्दनोत्पल नागरैः । कल्कीकृतैश्चविपचेद्घृतं जीर्णज्वरापहम् ॥ २१८ ॥

इति वासाद्यंघृतम् ॥

पीपरि नागरमोथा दाख लालचन्दन उत्पल तथा सोंठि इनका कल्क (चटनी) डाल कर पाक कियागया घी जीर्णज्वर को नष्ट करता है ॥ २१८ ॥

इति वासादिघृत ॥

बलांश्वदंष्ट्रांबृहतीं कलशींधावनीं स्थिराम् । निम्बंपर्पटकंमुस्तंत्रायमाणांदुरालभाम् ॥ २१९ ॥

वरियारा गोखुरू भटकटैया पृश्निपर्णी शालिपर्णी नींबकी छाल पित्तपापड़ा नागरमोथा चिरायताका फल यवासा ॥ २१९ ॥

कृत्वाकषायंपेष्यार्थेदद्यात्तामलकीं शटीम् । द्राक्षांपुष्करमूलञ्चमेदामामलकानिच ॥ २२० ॥ घृतंपयश्चतत्सिद्धंसर्पिर्ज्वरहरंपरम् । क्षयकासशिरःशूलपार्श्वशूलांसताप नुत् ॥ २२१ ॥

इति बलाद्यंघृतम् ।

इनके काढ़े और भूमिआमला कचूर दाख पुष्करमूल मेदा तथा आमले इनके कल्कके साथ और दूधके साथ पाक कियागया घी जीर्णज्वर क्षय खांसी और शिर तथा पसुलियोंकी पीड़ा और कन्धोंका जलना इन सब रोगोंको शीघ्रही नष्ट करता है ॥२२०।२२१॥

इति बलादिघृत ॥

ज्वरिभ्योबहुदोषेभ्यऊर्द्ध्वञ्चाधश्चबुद्धिमान् । दद्यात्संशोधनंकालेकल्पेयदुपदेक्ष्यते ॥ २२२ ॥

जिस ज्वरमें अनेक दोष बढ़ेहुयेहों उस ज्वरमें बुद्धिमान् वैद्य वमन तथा विरेचनका प्रयोग उचित समयमें करै वमन तथा विरेचन का कल्पस्थानमें वर्णन कियाजायगा॥२२२॥

मदनंपिप्पलीभिर्वाकलिङ्गैर्मधुकेन वा । युक्तमुष्णाम्बुनापेयंवमनंज्वर शान्तये ॥ २२३ ॥

इति ज्वरहरंवमनम् ।

ज्वरकी शान्तिके निमित्त पीपरि इन्द्रयव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथवा मुलेठीसहित मैनफल को गर्मजलके साथ पीकर वमनकरै ॥ २२३ ॥

इति ज्वरहरवमन ॥

क्षौद्राम्बुनारसेनेक्षोरथवालवणाम्बुना। ज्वरेप्रच्छर्दनंशस्तंमद्यैर्वातर्पणेनवा ॥ २२४ ॥

ज्वरमें शहदके शर्वत ईखके रस नमकीन जल मद्य अथवा तर्प्पण (दाखआदि फलोंके द्वारा बनाया गया तृप्तिकारक रस) के द्वारा वमन करना श्रेष्ठ होताहै ॥ २२४ ॥

मृद्वीकामलकानांवारसंप्रच्छर्दनंपिबेत्। रसमामलकानांवाघृतभृष्टंज्वरापहम् ॥ २२५ ॥

दाख तथा आमलों का रस पीकर वमन करै अथवा आमलोंके रसको घीमें छौंककर पीके वमनकरै इससे ज्वर का नाश होता है ॥ २२५ ॥

लिह्याद्वात्रैवृतंचूर्णं संयुक्तंमधुसर्पिषा। पिबेद्वाक्षौद्रमासाद्यसघृतंत्रिफलारसम् ॥ २२६ ॥

जिस ज्वरवाले के बहुत दोष बढ़ेहों वह शहद तथा घीके साथ निशोथ के चूर्ण को चाटै तथा त्रिफलाके रसमें शहद तथा घी डालकर पीवे ॥ २२६ ॥

आरग्वधंवापयसा मृद्वीकानांरसेनवा। त्रिवृतांत्रायमाणांवापयसा ज्वरितःपिबेत् ॥ २२७ ॥

अथवा दूध या दाखके रसके साथ अमलतास का सेवनकरै अथवा निशोथ तथा चिरायते के फलों का चूर्ण दूध के साथ पीवे ॥ २२७ ॥

ज्वराद्विमुच्यतेपीत्वा मृद्वीकाभिः सहाभयाम्। पयोऽनुपानमुष्णंवा पीत्वाद्राक्षारसंनरः ॥ २२८ ॥

दाखके साथ हड़का सेवन करने से मनुष्य शीघ्रही ज्वरसे छूट जाताहै हड़सहित दाखके रसको पीकर ऊपर उष्ण दूध पीनेसे॥२२८॥

कासाच्छ्वासाच्छिरःशूलात्पार्श्वशूलाच्चिरज्वरात्। मुच्यतेज्वरितःपीत्वापञ्चमूलशृतंपयः ॥ २२९ ॥

खांसी श्वास शिर और पसुलियोंकी पीड़ा तथा जीर्णज्वर का नाश होता है पंचमूलके साथ पाक कियेगये दूध को पीकर मनुष्य ज्वर से छूट जाताहै ॥ २२९ ॥

एरण्डमूलोत्क्वथितंज्वरात्सपरिकर्त्तिकात्। पयोविमुच्यतेपीत्वातद्वद्विल्वशलाटुभिः ॥ २३० ॥

अरण्ड की जड़ अथवा बेलगिरीके साथ पाककिये गये दूधको पीकर मनुष्य गुदा में कैंची से काटने कीसी पीड़ासहित ज्वर से छूट जाताहै ॥ २३० ॥

त्रिकण्टकबलाव्याघ्रीगुडनागरसाधितम्। वर्च्चोमूत्रविबन्धघ्नंशोफज्वरहरंपयः ॥ २३१ ॥

गोखुरू बरियारा भटकटैया गुड़ तथा सोंठि के साथ पाक कियागया दूध मल तथा मूत्र के विबन्ध (ढँकजानेको) शोथ और ज्वरको नष्ट करता है ॥ २३१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सनागरंसमृद्वीकंसघृतक्षौद्रशर्करम् । शृतंपयःसखर्जूरंपिपासाज्वरनाशनम् ॥ २३२ ॥

सोंठि दाख घी शहद तथा शक्कर और खर्जूर के साथ पाक कियागया दूध तृषा तथा ज्वरको नष्ट करताहै ॥ २३२ ॥

चतुर्गुणेनाम्भसावा शृतंज्वरहरंपयः । धारोष्णंवापयःसद्योवातपित्तज्वरंजयेत् ॥ २३३ ॥

चौगुणे जल के साथ पाक कियागया दूध ज्वरको नष्ट करता है धारोष्ण दूध पीने से शीघ्रही वातपित्त ज्वर का नाश होता है ॥ २३३ ॥

जीर्णज्वराणांसर्वेषांपयःप्रशमनंपरम् । पेयंतदुष्णंशीतंवायथास्वंभेषजैःशृतम् ॥ २३४ ॥

सम्पूर्ण जीर्णज्वर दूध पीने से शान्तहोते हैं इस से जिस जिस ज्वर में जौन जौनसी औषध उचितहैं उनके साथ पाक कियागया उष्ण अथवा शीतल दूध जीर्णज्वरमें पीना चाहिये ॥ २३४ ॥

प्रयोजयेज्ज्वरहरान्निरूहान्सानुवासनान् । पक्वाशयगतेदोषेवक्ष्यन्तेयेचसिद्धिषु ॥ २३५ ॥

जब दोष पक्वाशय में प्राप्त हो तो ज्वरनाशक निरूह तथा अनुवासनवस्ति (अमल) का प्रयोग करै निरूह तथा अनुवासनवस्ति का वर्णन सिद्धिस्थानमें कियाजायगा॥२३५॥

पटोलारिष्टपत्राणिसोशीरश्चतुरंगुलः । ह्रीवेररौहिणंतिक्ताश्वदंष्ट्रामदनानिच ॥ २३६ ॥

परवल नींबकी पत्ती खस अमलतास सुगन्धबाला रौहिण (तृणविशेष) कुटकी गोखुरू मैनफल ॥ २३६ ॥

स्थिराबलाचतत्सर्वंपयस्यर्द्धोदकेशृतम् । क्षीरावशेषंनिर्यूहंसंयुक्तंमधुसर्पिषा ॥ २३७ ॥

सरिवन तथा बरियारा इन सबको आधे जलसहित दूध में डालकर पाक करै जब केवल दूध बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे फिर उसदूधमें शहद घी ॥ २३७ ॥

कल्कैर्मदनमुस्तानांपिप्पल्यामधुकस्यच । वत्सकस्यचसंयुक्तंवस्तिंदद्याज्ज्वरापहम् ॥ २३८ ॥

और मैनफल नागरमोथा पीपरि मुलेठी तथा इन्द्रयवका कल्क मिलाकर निरूहवस्ति देवे इस से ज्वरका नाश होताहै ॥ २३८ ॥

शुद्धेमार्गेहृतेदोषेविप्रसन्नेषुधातुषु । गतांगशूलोलघ्वंगःसद्योभवतिविज्वरः ॥ २३९ ॥

स्रोतोंके शुद्ध होजाने पर दोषोंके निर्मूल होजानेपर और धातुओंके निर्मल होजाने पर शरीर हल्का होजाताहै और शरीरकी पीड़ा तथा ज्वरका नाश होजाता है ॥ २३९ ॥

आरग्वधमुशीराणिमदनस्यफलानिच । चतस्रःपर्णिनीश्चैवनिर्यूहमुपकल्पयेत् ॥ २४० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमिलतास खस मैनफल शालिपर्णी पृष्णिपर्णी मुद्गपर्णी तथा माषपर्णी इनके काढ़े में ॥ २४० ॥

प्रियंगुर्मदनंमुस्तंशताह्वामधुयष्टिका। कल्कःसर्पिर्गुडःक्षौद्रंज्वरघ्नो वस्तिरुत्तमः॥ २४१॥

प्रियंगु मैनफल नागरमोथा सौंफ तथा मुलेठी का कल्क घी गुड़ और शहद मिला कर वस्ति (अमल) देवे इस उत्तमवस्ति से ज्वरका नाश होता है॥ २४१॥

गुडूचींत्रायमाणञ्चचन्दनंमधुकंवृषम्। स्थिरांबलांपृश्निपर्णीमदनञ्चेतिसाधयेत्॥ २४२॥

गिलोय चिरायता के फल लालचन्दन मुलेठी रूसा शालिपर्णी वरियारा पृष्णिपर्णी तथा मैनफल इन के काढ़े में॥ २४२॥

रसंजांगलमांसस्यरसेनसहितंभिषक्। पिप्पलीफलमुस्तानांकल्केनमधुकस्यच॥ २४३॥ ईषत्सलवणंयुक्त्या निरूहंमधुसर्पिषा। ज्वरप्रशमनंदद्याद्बलस्वेदरुचिप्रदम्॥ २४४॥

जांगल जीवों के मांसका रस पीपरि मैनफल नागरमोथा तथा मुलेठी का कल्क और शहद घी तथा कुछ लवण मिलाकर वैद्य वस्ति देवे इस से ज्वर शान्त होता है स्वेद निकलता है और बल तथा रुचिकी वृद्धि होती है॥ २४३।२४४॥

जीवन्तींमधुकंमेदांपिप्पलींमरिचंवचाम्। ऋद्धिंरास्नांबलांविश्वंशतपुष्पांशतावरीम्॥ २४५॥

जीवन्ती मुलेठी मेदा पीपरि मिर्च वच ऋद्धि रास्ना वरियारा सोंठि सौंफ तथा शतावरि॥ २४५॥

पिष्ट्वाक्षीरंजलंसर्पिस्तैलञ्चविपचेद्भिषक्। आनुवासनिकंस्नेहमेतद्विद्याज्ज्वरापहम्॥ २४६॥

वैद्य इन औषधियोंको पीसकर दूध, जल, घी तथा तैल में मिलाकर पाक करै जब केवल तैल तथा घी बाकी रहै तब उतार कर छानलेवे इसके द्वारा अनुवासन वस्ति (अमल) देनेसे ज्वरका नाश होता है॥ २४६॥

पटोलपिचुमर्दाभ्यांगुडूच्यामधुकेनच। मदनैश्चश्रृतःस्नेहोज्वरघ्नमनुवासनम्॥ २४७॥

परवल, नींबकी छाल, गिलोय, मुलेठी तथा मैनफलके साथ पाक कियेगये घी आदि स्नेहके द्वारा अनुवासन वस्ति देने से ज्वरका नाश होताहै॥ २४७॥

चन्दनागुरुकाश्मर्य्यपटोलमधुकोत्पलैः। सिद्धःस्नेहोज्वरहरःस्नेहवस्तिःप्रयुज्यते॥ २४८॥

लालचन्दन, अगर खँभारी के फल, परवल, मुलेठी तथा उत्पल इनके साथ पाक कियेगये घी आदि स्नेहके द्वारा वस्ति देने से भी ज्वरकानाश होताहै॥ २४८॥

यद्दुक्तंभेषजाध्यायेविमानेरोगभेष-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जे। शिरोविरेचनंकुर्य्याद्युक्तिज्ञस्तज्ज्वरापहम् ॥ २४९ ॥

भेषजाध्याय में और विमानस्थानके रोग भिषग्जितीयनाम अध्यायमें जो शिरोविरेचन कहागया है बुद्धिमान् वैद्य ज्वरमें भी उसका व्यवहार करै इस से ज्वर का नाश होता है ॥ २४९ ॥

यच्चनावनिकंतैलंयाश्चप्राग्धूमवर्त्तयः। मात्राशितीयेनिर्दिष्टाःप्रयोज्यास्ताज्ज्वरेष्वपि ॥ २५० ॥

मात्राशितीयनाम अध्यायमें जो नावनिक तैल और धूमवर्त्ति कही गई हैं उनका ज्वरमें भी व्यवहार करना चाहिये ॥ २५० ॥

अभ्यंगांश्चप्रदेहांश्चपरिषेकांश्चकारयेत्। यथाभिलाषंशीतोष्णंविभज्यद्विविधंज्वरम् ॥ २५१ ॥

अभ्यंग (तैलमर्दन) लेप तथा परिषेक (सींचना) इनका व्यवहार शीत तथा उष्ण ज्वर का दो प्रकार विभाग करके इच्छा के अनुसार करना चाहिये ॥ २५१ ॥

सहस्रधौतंसर्पिर्वातैलंवाचन्दनादिकम्। दाहज्वरप्रशमनंदद्यादभ्यञ्जनंभिषक् ॥ २५२ ॥

अथ चन्दनाद्यंतैलमुपदेक्ष्यामः।

हजारवार धोया हुआ घी अथवा चन्दनादि तैल दाहज्वर को नष्ट करता है इससे वैद्य दाहज्वर में इनका अभ्यञ्जन देवे ॥ २५२ ॥

इसके उपरान्त चन्दनादि तैलका उपदेश किया जाता है ॥

चन्दनशैलेयभद्राश्रयकालानुसार्य्यकालीयकपद्मापद्मकोशीरशारिवामधुकप्रपौण्डरीकनागपुष्पोदीच्यचव्यपद्मोत्पलनलिनकुमदसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रविसमृणालशालूकशैवालकशेरुकानन्ताकुशकाशेक्षुदर्भशरनलशालिमूलजम्बुवेत्रवेतसवाणीरगुन्द्राककुभाशनाश्वकर्णस्यन्दनवातपोथशालतालधवतिनिशखदिरकदरकदम्बकाश्मर्य्यफलसर्जप्लक्षवटकपीतनोदुम्बराश्वत्थन्यग्रोधधातकीदूर्वोत्कटकशृङ्गाटकमञ्जिष्ठाज्योतिष्मतीपुष्करबीजक्रौञ्चादनबदरीकोविदारकदलीसंवर्त्तकारिष्टशतपर्वाशीतकुम्भिकाशतावरीश्रीपर्णीश्रावणीमहाश्रावणीरोहिणीशीतपाक्योदनपाकीकालावलापयस्याविदारीजीवकर्षभमेदामहामेदामधुरस्रष्यप्रोक्तातृणशून्यमोचरसारूटरूषकबकुलकुटजपटोलनिम्बशाल्मलीनारिकेलखर्जूरमृद्वीकापियालप्रियंगुधन्वनात्मगुप्तामधुकानामन्येषाञ्चशीतवीर्य्याणांयथालाभमौषधानांकषायंकारयेत्। तेनकषायेणद्विगुणितपयसातेषामेवचकल्केनकषायार्द्ध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मात्रंमृद्वग्निनासाधयेत्तैलम्। एतत्तैलंसद्योदाहज्वरमपनयत्येतैरेवचौषधैःसुश्लक्ष्णपिष्टैःसुशीतैःप्रदेहंकारयेदेतैरेवचशृतशीतंसलिलमवगाहपरिषेकार्थंप्रयुञ्जीत॥ २५३॥

इति चन्दनाद्यंतैलम्।

चन्दन, छरीला, श्वेतचन्दन, पीतचन्दन दारुहल्दी, बछनेठी, पद्माख, खस, सांई, मुलेठी, पुँडरिया, नागकेशर, सुगन्धवाला, चव्य, पद्म, उत्पल, सहस्रपत्र कमल, कोकावेली, रोहिष, सफेद कमल, शतपत्रकमल, कमल की डण्डी, कमल की पतली डण्डी, कमलकी जड़, सिवार, कशेरू, यवासा, कुश काश, ईख, दर्भ, सरकण्डा, नरकट, शालिधान की जड़, जामुनकी छाल, वेत, जलवेत वानीर (वेत विशेष) प्रियंगु, अर्जुन, विजयसार शाल, तेंदुवा, शाखूँ, ताल, धव, तिनिस, कत्था, पपड़िया कत्था, कदम्ब, गँभारी का फल, पीतशाल, पकरिया, बरगद, लोध, गूलर, पीपर, अमरा, धवई, दूब, तज, सिंघाड़ा, मँजीठ, मालकांगनी, कमलगट्टा, घुंघुचिल, बेर, कचनार, केला, नागरमोथा, नींब, शतपर्वा (दूबविशेष) शीत कुम्भिका, शतावर, खँभारी, मुंडली, बड़ी मुंडली, रोहिणी, नील, बरियारा, क्षीरकाकोली, बिलाईकन्द, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, मधुककड़ी, किवांच, चमेली, मोचरस रूसा, मोमशिरी, कुरैया, परवल, रीठा, सेमर, नारियल, खजूर, दाख, चिरौंजी, प्रियंगु, धामिन, किवांच तथा महुआ इन सब औषध तथा अन्य शीतवीर्य्य औषधों में से जो कुछ मिलैं उनको लेकर काढ़ा करै यह काढ़ा, काढ़े का दूना दूध, काढ़े का आधा तैल और इन्हीं औषधियों का कल्क इन सब को एकमें मिलाकर मन्द मन्द आंचमें पकावे जब पानी जल जावे केवल तैल बाकी रहै तब उसको छानकर रखछोड़े इस तैलके मलने से शीघ्रही दाहज्वर का नाश होता है इन्हीं औषधियों को शीतल जलमें पीसकर लेपकरने से दाहज्वर का नाश होता है और इन्हीं औषधियों के द्वारा पाक किये गये शीतल जल में स्नान करने से अथवा इस जल के छिड़कने से दाहज्वर का नाश होता है॥ २५३॥

इति चंदनादि तैल॥

मध्वारनालक्षीरदधिघृतसलिलसेकावगाहाश्चसद्योदाहंज्वरमपनयन्तिशीतस्पर्शत्वादिति॥ २५४॥

शहद कांजी दूध दही घी तथा जलके सींचने से अथवा इनको किसी पात्रमें भरकर उस में स्नानकरने से शीघ्रही दाहज्वरका नाश होता है क्योंकि इन वस्तुओंका स्पर्श शीतल है॥ २५४॥

भवन्तिचात्र। पौष्करेषुसुशीतेषुपद्मोत्पलदलेषुच। कह्लाराणाञ्चपत्रेषुक्षौमेषुविमलेषुच॥ २५५॥

चन्दनोदकशीतेषुसुप्यादाहार्दितः सुखम्। हिमाम्बुसिक्तेसदनेशीतेधारागृहेऽपिवा॥ २५६॥

इसमें यह श्लोक हैं। दाहसे पीड़ित पुरुष पुष्कर ठण्ढे पद्म उत्पल तथा कह्लार (यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सब कमल विशेष हैं) के पत्तोंपर और निर्मल रेशमी वस्त्रोंपर चन्दनका जल छिड़कर सोवे शीतल जलसे छिड़केहुये गृहमें अथवा शीतल फुहारेयुक्त गृहमें रहै ॥२५५।२५६ ॥

हेमशंखप्रवालानांमणीनांमौक्तिक्स्यच । चन्दनोदकशीतानांसंस्पर्शानुरसान्स्पृशेत् ॥ २५७ ॥

सुवर्ण शंख मूंगे मणि तथा मोती इन पर चन्दन का जल छिड़ककर इन का स्पर्श करै ॥ २५७ ॥

स्रग्भिर्नीलोत्पलैःपद्मैर्व्यजनैर्विविधैरपि । शीतवातावहैर्व्यज्येच्चन्दनोदकवर्षिभिः ॥ २५८ ॥

पुष्पोंकी माला पहिरै और चन्दनका जल छिड़ककर उत्पल कमल तथा अनेक प्रकार के पंखों को डुलाकर शीतल वायुका ग्रहण करै ॥ २५८ ॥

नद्यस्तडागाःपद्मिन्योह्रदाश्चविमलोदकाः अवगाहेहितादाहतृष्णाग्लानिज्वरापहाः ॥ २५९ ॥

कमल युक्त निर्मल जलवाली नदी तड़ाग तथा जलाशयों में स्नान करने से दाह तृषा ग्लानि तथा ज्वरका नाश होताहै ॥ २५९ ॥

प्रियाःप्रदक्षिणाचाराःप्रमदाश्चन्दनोक्षिताः । सान्त्वयेयुःपरैःकामैर्मणिमौक्तिकभूषणाः ॥ २६० ॥

श्रेष्ठ आचरणवाली मणि तथा मोतियों से जड़े भये आभूषणों को पहिरेभई और शरीर में चन्दन लगाये भई सुन्दर स्त्रियोंके आलिङ्गनसे दाहज्वरका नाश होता है ॥ २६० ॥

शीतानिचान्नपानानिशीतान्युपवनानिच । वायवश्चन्द्रपादाश्चशीतदाहज्वरापहाः ॥ २६१ ॥

शीतलअन्न पान (पीनेकी वस्तु) शीतल उपवन शीतल वायु और चन्द्रमाकी किरणें दाहज्वरको नष्ट करती हैं ॥ २६१ ॥

अथोष्णाभिप्रायिणांज्वरितानामभ्यङ्गादीनुपक्रमानुपदेक्ष्यामः । अगुरुकुष्ठतगरपत्रनलदशैलेयकध्यामकहरेणुकास्थौणेयकक्षेमिकैलावराङ्गदपूरतमालपत्रभूतीकरोहिष-सरलशल्लकीदेवदार्वग्निमन्थविल्वश्योणाककाश्मर्यपाटलापुनर्नवावृश्चीरकण्टकारिबृहतीशालिपर्णीपृश्निपर्णीमाषपर्णीमुद्गपर्णीगोक्षुरकैरण्डशोभाञ्जनकवरुणार्कचिरिबिल्वतिल्वकशटीपुष्करमूलभाण्डीरोरुबुकपत्तुराक्षीवाश्मान्तकशिग्रुमातुलुङ्गमूलकमूलपर्णीपीलुपर्णीतिलपर्णीमेषभृङ्गीहिंस्रादन्तशठैरावतकभल्लातकास्फोतकण्डीरात्मजकेषीकाकरञ्जधान्यकाजमोदपृथ्वीकासुमुखसुरसकुठेरककण्डीरकालमालकपर्णासक्षवकफणिज्झकभूस्तृणशृंगवेरपिप्पलीसर्षपाश्वगन्धारास्नारुहारोहावचाबलातिबला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुडूचीशतपुष्पाशीतवल्लीनाकुलीगन्धनाकुलीश्वेताज्योतिष्मतीचित्रकाध्यण्डाम्लचाङ्गेरीबदरकुलत्थमाषाणामेवंविधानामन्येषांचोष्णवीर्य्याणांयथालाभमौषधानांकषायंकारयेत्तेनकषायेणतेषामेवचकल्केनसुरासौवीरकतुषोदकमैरयमेदकदधिमण्डारनालकट्वरप्रतिविनीतेनतैलपात्रंविपाचयेत्। तेनसुखोष्णेनतैलेनोष्णाभिप्रायिणंज्वरितमभ्याञ्ज्यात्। तथाशीतज्वरःप्रशाम्यतितैरेवचौषधैःश्लक्ष्णपिष्टैःसुखोष्णैःप्रदेहंकारयेत्। एतेषामेवचसुखोष्णमुत्क्वाथमवगाहनपरिषेकार्थंप्रयुञ्जीतज्वरप्रशमार्थमिति ॥ २६२ ॥

इति शीतज्वरेअगुर्वादितैलम्।

इसके उपरान्त जिन ज्वरवालों को उष्ण वस्तुओं की आकांक्षा होती है उनके लिये अभ्यंग आदिक चिकित्सा का क्रम उपदेश कियाजाता है॥ अगर कूट तगर तेजपात खसखरीला गंधतृण रेणुका थुनेर धनहरी छोटी इलायची त्रिफला तज गुग्गुल तमालपत्र अगियाखर रोहिष सरलकाष्ठ सलई देवदारु गनियार बेलकीछाल सोनपत्ता खँभारीकी छाल पाढ़र गदहपूर्णा दूश्चीर भटकटैया बड़ीभटकटैया शालिपर्णी पृष्णिपर्णी माषपर्णी मुद्गपर्णी गोखुरू अरण्ड सहिंजन वरुण मदार कंजा लोध कचूर पुष्करमूल सिरस अरण्ड पतंग सप्तपर्ण सघन अश्मंतक लालसहिंजन बिजौरानिम्बू मूली मूलपर्णी कुंदुरू लालचन्दन मेढ़ासिंगी हिंस्रा जम्भीरीनींबू ऐरावतक भिलावाँ विष्णुक्रान्ता कण्डीर किवाँच पनिलर कंजा धनियाँ अजमोद कालाजीरा सुमुख सुरसा(तुलसी विशेष) कालीबवई कंडीर कालमालक पर्णास छवक फणिज्झक (मरुवा) भूस्तृण सोंठि पीपरि सरसों असगंध रास्ना दूब रोहितक बच बरियारा ककैया गिलोय सौंफ शीतवल्ली नाई गंधनाकुली सफेद विष्णुक्रान्ता चीता अमलोनिया बेर कुलथी तथा उर्द इन सब औषधोंमें से और अन्य उष्णवीर्य्य औषधोंमें से जो कुछ मिलसकें उनका काढ़ा तथा कल्क और तुषोदक (कांजीविशेष) सुरा सौवीरक (कांजीविशेष) मैरेय (मद्यविशेष) मेदक मद्यविशेष) दहीकातोड़ कांजी तथा कट्वर इन सब के साथ दोसौ छप्पन २५६ तोले तैलका पाककरै जब पानी जल जाय केवल तैल बाकी रहै तब उतारकर छानके रखछोड़े फिर जिस ज्वरवाले को उष्णता की इच्छा हो उसके यह तैल कुछ उष्णकरके मले इससे शीतज्वर का नाश होताहै इन्हीं औषधियों को महीन पीसकर कुछ उष्णलेप करने से शीतज्वरका नाश होताहै और इन्हीं औषधियों का काढ़ा करके कुछ उष्ण काढ़ेके सींचने से अथवा इसी काढ़ेको किसी पात्र में भरकर उस में स्नान करने से शीतज्वर का नाश होता है ॥ २६२ ॥

इति शीतज्वरे अगुर्वादि तैल ॥

भवन्तिचात्र। त्रयोदशविधःस्वेदःस्वेदाध्यायेनिदर्शितः। मात्रा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वि (अमल) के द्वारा क्रमसे कफज पित्तज तथा वातज्वर की चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २७९ ॥

संसृष्टान् सन्निपतितान् बुद्ध्वातरतमैःसमैः। ज्वरान् दोषक्रमापेक्षीय थोक्तैरौषधैर्जयेत् ॥ २८० ॥

द्वन्द्वज तथा सन्निपातज ज्वरों में दोषोंकी समता व अधिकताके क्रम को देखकर पूर्वोक्त औषधोंसे चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २८० ॥

वर्द्धनेनैकदोषस्य क्षपेणेनोच्छ्रितस्यवा। कफस्थानानुपूर्व्या वा सन्निपातज्वरंजयेत् ॥ २८१ ॥

सन्निपातज ज्वरमें जो दोष घटा हुआ हो उसको बढ़ावे और जो दोष बढ़ा हुआहो उसको घटावे और जो तीनों दोष बढ़ेहुये हों तो पहिले कफ फिर पित्त तदनन्तर वायु को शान्त करना चाहिये इस प्रकारसे सन्निपातज ज्वरोंकी चिकित्सा करनी उचितहै ॥ २८१ ॥

सन्निपातज्वरस्यान्ते कर्णमूले सुदारुणः। शोथःसञ्जायतेतेन कश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ २८२ ॥

सन्निपातज्वरके अन्तमें कानोंके मूलमें जो भयंकर शोथ उत्पन्न होता है उससे किसी २ मनुष्यकेही प्राण बचते हैं ॥ २८२ ॥

रक्तावसेचनैःशीघ्रं सर्पिष्पानैश्चतंजयेत्। प्रदेहैःकफपित्तघ्नैर्नावनैःकवलग्रहैः ॥ २८३ ॥

उस शोथ को रक्तावसेचन (जोंक आदि के द्वारा रुधिर निकलवाना) घृतपान कफ पित्त नाशक लेप नस्य तथा कवलग्रह (औषधियों का ग्रास मुख में रखना) से शान्त करै ॥ २८३ ॥

शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्ज्वरोयस्य नशाम्यति। शाखानुसारीरक्तस्य सोऽवसेकात्प्रशाम्यति ॥२८४ ॥

जिस मनुष्य का ज्वर रुधिर में प्राप्त होकर शीत उष्ण स्निग्ध तथा रूक्ष आदि चिकित्सा के द्वारा शान्त नहीं होता वह रक्तावसेक(फस्त खोलना) से शान्त होताहै॥२८४॥

वीसर्पेणाभिघातेनयश्चविस्फोटकैर्ज्वरः। तत्रादौसर्पिषः पानंकफपित्तोत्तरेनचेत् ॥ २८५ ॥

विसर्प (जहरवात) चोट तथा विस्फोटक (फुड़िया) निकलने से आयेभये ज्वर में जो कफ पित्त की अधिकता न होय तो पहले घी पीना चाहिये ॥ २८५ ॥

दौर्बल्याद्देहधातूनांज्वरोजीर्णोऽनुवर्त्तते। बल्यैःसबृंहणैस्तस्मादाहारैस्तमुपाचरेत् ॥ २८६ ॥

शरीर की रसादि धातुओं के निर्बल होने से जीर्णज्वर दूर नहीं होता है इस से बलकारक तथा धातुवर्द्धक आहारों के द्वारा उस की चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २८६ ॥

नकर्मसाधारणंकुर्य्यात्तृतीयकचतुर्थके। आगन्तुरनुबन्धोहि प्रायशो विषमज्वरे ॥ २८७ ॥

तृतीयक तथा चतुर्थक ज्वर में सा[illegible] ज्वरों कीसी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि विषमज्वरों में प्रायः आगन्तु कारणोंका संबन्ध रहता है ॥ २८७ ॥

वातप्रधानंसर्पिर्भिर्वस्तिभिःसानुवासनैः । स्निग्धोष्णैरनुपानश्चशमयेद्विषमज्वरम् ॥ २८८ ॥

जिस विषमज्वर में वायु अधिक हो उस की चिकित्सा घी अनुवासनवस्ति और स्निग्ध तथा उष्ण अनुपानों के द्वारा करनी चाहिये ॥ २८८ ॥

विरेचनेनपयसासर्पिषासंस्कृतेनच। विषमंतिक्तशीतैश्चज्वरंपित्तोत्तरंजयेत् ॥ २८९ ॥

जिस विषमज्वर में पित्त अधिक हो उस की चिकित्सा विरेचन औषधियों के साथ पाक कियेगये दूध तथा घी और तिक्त तथा शीत अनुपानोंकेद्वारा करनीचाहिये॥२८९॥

वमनंपाचनंरूक्षमनुपानंविलंघनम्। कषायोष्णञ्चविषमे ज्वरेशस्तंकफोत्तरे॥ २९० ॥

जि[illegible]षमज्वरमें कफ अधिक हो उसकी चिकि[illegible]न पाचन लंघन काढ़े और रूक्ष तथा उष्[illegible]ग अनुपान के द्वारा करनी श्रेष्ठ होती है॥[illegible] २९० ॥

योगाःप[illegible]स[illegible]राःप्रवक्ष्यन्तेविषमज्वरनाशनाः। [illegible]प्रयोक्तव्यामतिमतादोषादीन्वि[illegible]भिज्यये ॥ २९१ ॥

इस[illegible] उपरान्त विषमज्वरोंको नष्ट करनेवाले [illegible]ोग कहेजाते हैं बुद्धिमान् वैद्य दोषादिकों के बलाबल का विचार करके इनका प्रयोग करै ॥ २९१ ॥

सुरासमण्डपानार्थेभक्ष्यार्थेचरणायुधाः। तित्तिरिश्चमयूरश्चप्रयोज्योविषमज्वरे ॥ २९२ ॥

विषमज्वरमें भोजन के निमित्त मुर्गे तीतर तथा मोर का मांस और पीने के लिये सुरा तथा मण्ड (माड़) हित होताहै ॥ २९२ ॥

पिबेद्वाषट्पलंसर्पिरभयांवाप्रयोजयेत्। त्रिफलायाःकषायंवागुडूच्यारसमेववा ॥ २९३ ॥

विषमज्वर में छः पल घी पीवे अथवा केवल हड़ या त्रिफला का काढ़ा या गिलोय के रसका सेवन करै ॥ २९३ ॥

नीलिनीमजगन्धाञ्चत्रिवृतांकटुरोहिणीम्। पिबेज्ज्वरागमेयुक्त्यास्नेहस्वेदोपपादितः ॥ २९४ ॥

जिस समय विषमज्वर आनेवाला हो उस समय स्नेहन तथा स्वेदन करके नीलिनी (नील) बबई निसोथ तथा कुटकी के काढ़े का पानकरै ॥ २९४ ॥

सर्पिषोमहतींमात्रांपीत्वावाच्छर्दयेत्पुनः। उपयुज्यान्नपानंवाप्रभूतंपुनरुल्लिखेत् ॥ २९५ ॥

अथवा विषमज्वर में बहुतसा घी पीकर वमन करै अथवा भोजन के उपरान्त बहुतसी जलआदि द्रववस्तु पीकर वमनकरै ॥२९५॥

सान्नंमद्यंप्रभूतंवापीत्वास्वप्याज्ज्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रागमे । आस्थापनंयापनंवाकारये द्विषमज्वरे ॥ २६६ ॥

अथवा विषमज्वर आने के समय भोजन के साथ बहुत सी मद्य पीकर शयन करै अथवा आस्थापन या यापन (किसी व्यसन से समय व्यतीत करना) करै ॥ २९६ ॥

पयसावृषदंशस्यशकृद्वातदद्दःपिबेत् । वृषस्यदधिमण्डेनसुरयावाससैन्धवम् ॥ २६७ ॥

जिस दिन विषमज्वर आनेवाला हो उस दिन दूध में बिल्ली की विष्ठा मिलाकर पियै अथवा, दही के तोड़में या मदिरा में गोवर तथा सेंधा लवण मिलाकर पीवे ॥ २९७ ॥

पिप्पल्यास्त्रिफलायाश्च दध्नस्तक्रस्यसर्पिषः । पञ्चगव्यस्यपयसःप्रयोगोविषमज्वरे ॥ २६८ ॥

पीपल त्रिफला दही मट्ठा घी पञ्चगव्य तथा दूधका प्रयोग विषमज्वर में करना चाहिये ॥ २९८ ॥

लशुनस्यसतैलस्यप्राग्भक्तमुपसेवनम् । मेध्यानामुष्णवीर्य्याणामामिषाणाञ्चभक्षणम् ॥ २६६ ॥

विषमज्वर में भोजन के पहिले तिलों के तैलमें लहसुन मिलाकर खानाचाहिये और मेधा को हित तथा उष्णवीर्य्य मांस खाना चाहिये ॥ २९९ ॥

हिंगुतुल्यानुवैयाघ्रीवसानस्यंससैन्धवा । पुराणसर्पिःसिंहस्यवसातद्वत्ससैन्धवा ॥ ३०० ॥

हींग व्याघ्र की चर्बी तथा सैन्धवलवण अथवा सिंहकी चर्बी सैन्धवलवण तथा पुराने घृत की नस्य विषमज्वर में लेनी चाहिये ॥ ३०० ॥

सैन्धवंपिप्पलीनाञ्चतण्डुलाःसमनःशिलाः । नेत्राञ्जनंतैलपिष्टंशस्यते विषमज्वरे ॥ ३०१ ॥

सैन्धवलवण पीपलों के भीतर के दाने तथा मैनशिल इन औषधियों को तैलमें पीस कर अञ्जन लगाने से विषमज्वर का नाश होता है ॥ ३०१ ॥

पलङ्कषानिम्बपत्रंवचाकुष्ठंहरीतकी। सर्षपाःसयवाःसर्पिर्धूपनंज्वरनाशनम् ॥ ३०२ ॥

गुग्गुल नींबकी पत्ती वच कूट हड़ सरसों यव तथा घी इन सब औषधियों की धूप देने से विषमज्वर का नाश होता है ॥ ३०२ ॥

येधूमाधूपनंयच्चनावनञ्चाञ्जनञ्चयत् । मनोविकारेव्याख्यातंकार्य्यंतद्विषमज्वरे ॥ ३०३ ॥

मनके विकारों (उन्मादादि

जो धूम धूप नस्य तथा अञ्जन क

का विषमज्वर में भी प्रयोग करन

ये ॥ ३०३ ॥

मणीनामौषधीनाञ्चमङ्गल्य

स्यच । धारणादगदानाञ्च

भवेज्ज्वरः ॥ ३०४ ॥

मणि औषधि मङ्गलकारी वस्तु

का धारण करनेसे और औषधियों के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से विषमज्वर का नाश होताहै ॥ ३०४ ॥

सोमंसानुचरंदेवंसमातृगणमीश्वरम् । पूजयन्प्रयतःशीघ्रंमुच्यतेविषमज्वरात् ॥ ३०५ ॥

पवित्र होकर गण तथा षोड़शमातृका-समेत भगवान् पार्व्वती परमेश्वर का पूजन करने से शीघ्रही विषमज्वर का नाश होता है ॥ ३०५ ॥

विष्णुंसहस्रमूर्द्धानंचराचरपतिंविभुम् । स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्वानपोहति ॥ ३०६ ॥

चराचरके स्वामी सर्व्वव्यापी सहस्रमूर्द्धा (हज़ार शिरवाले) भगवान् विष्णु की सहस्रनाम पढ़कर स्तुति करनेसे सम्पूर्णज्वरों का नाश होता है ॥ ३०६ ॥

ब्रह्माणमश्विनाविन्द्रंहुतभक्षंहिमाचलम् । गङ्गांमरुद्गणांश्चेष्ट्वापूजयञ्जयतिज्वरान् ॥ ३०७ ॥

ब्रह्मा अश्विनीकुमार इन्द्र अग्नि हिमालय गङ्गा तथा मरुद्गण का पूजन करने से ज्वरों का नाश होता है ॥ ३०७ ॥

[illegible]क्त्यामातापितॄणाञ्चगुरूणांपूजनेन च । ब्रह्मचर्य्येणतपसासत्येननि[illegible] ॥ ३०८ ॥ जपहोमप्रदानेन वेदानांश्रवणेनच । ज्वराद्विमुच्य[illegible] साधूनांदर्शनेनच ॥ ३०९ ॥

[illegible]र्व्वक माता पिता तथा गुरुओं का [illegible]ने से ब्रह्मचर्य्य से तपसे सत्य से [illegible] जप तथा होम करने से दान से वेदों के श्रवण से और साधुओं के दर्शन से शीघ्रही ज्वरोंका नाश होताहै ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥

ज्वरेरसस्थेवमनमुपवासञ्चकारयेत् । सेकप्रदेहौरक्तस्थेतथासंशमनानि च ॥ ३१० ॥

ज्वरके रस धातुमें स्थित होनेपर वमन तथा लंघन कराने चाहिये ज्वर के रुधिरमें स्थित होनेपर सेक (सींचना) लेप तथा संशमन औषधों का प्रयोग करना चाहिये ॥ ३१० ॥

विरेचनंसोपवासंमांसमेदःस्थितेहितम् । अस्थिमज्जगतेदेयानिरूहाःसानुवासनाः ॥ ३११ ॥

ज्वरके मांस तथा मेदामें स्थित होनेपर विरेचन तथा लंघन कराने चाहिये और ज्वरके हड्डी तथा मज्जा में स्थित होने पर निरूह तथा अनुवासनवस्ति (अमल देनी चाहिये ॥ ३११ ॥

शापाभिचाराद्भूतानामभिषंगाच्चयोज्वरः । दैवव्यपाश्रयंतत्रसर्वमौषधमिष्यते ॥ ३१२ ॥

शाप अभिचार (हिंसाकर्म्म) तथा भूतों के आवेश से जो ज्वर आताहै उसमें सम्पूर्ण दैवी औषध (वलिआदि) करनी चाहिये ॥ ३१२ ॥

अभिघातज्वरोनश्येत्पानाभ्यंगेन सर्पिषः । रक्तावसेकैर्मद्यैश्चसात्म्यैर्मांसरसोदनैः ॥ ३१३ ॥

घी पीनेसे शरीर में घी मलने से फस्तखुलाने से मद्यपीने से और सात्म्य मांस के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रसके साथ भात खाने से चोट लगने से हुये ज्वरका नाश होता है ॥ ३१३ ॥

सानाहोमद्यसात्म्यानां मदिरारस भोजनैः । क्षतानांव्रणितानाञ्चक्षत व्रणचिकित्सया ॥ ३१४ ॥

नित्य मद्य पीनेवालों का अफरायुक्त ज्वर मद्य तथा मांसरस के सेवन से नष्ट होताहै क्षत (शस्त्रादिके द्वारा जिनका शरीर कटाहुआ हो) तथा व्रणित (जिनके शरीर में घावहो) पुरुषों का ज्वर क्षत तथा व्रणकी चिकित्सा से शान्त होता है ॥ ३१४ ॥

आश्वासेनेष्टलाभेनवायोःप्रशमनेनच । हर्षणैश्चशमंयान्ति कामशोकभयज्वराः ॥ ३१५ ॥

काम शोक तथा भय से हुये ज्वर आश्वासन (तसल्ली देना) इष्ट वस्तुओं के लाभ वायु की शान्ति तथा हर्ष से शान्त होते हैं ॥ ३१५ ॥

काम्यैरर्थैर्मनोज्ञैश्चपित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः । सद्वाक्यैःशाम्यतिक्षाशु ज्वरःक्रोधसमुत्थितः ॥ ३१६ ॥

क्रोधसे हुआ ज्वर अभीष्ट तथा मनोहर वस्तुओं से पित्तघ्न चिकित्सा से और सद्वाक्योंसे शीघ्रही शान्त होताहै ॥ ३१६ ॥

कामात्क्रोधज्वरोनाशं क्रोधात्कामसमुद्भवः । यातिताभ्यामुभाभ्याञ्च भयशोकसमुत्थितः ॥ ३१७ ॥

काम से हुआ ज्वर क्रोध के द्वारा क्रोधसे हुआ ज्वर कामके द्वारा और भय तथा शोक से हुआ ज्वर काम तथा क्रोध के द्वारा शान्त होता है ॥ ३१७ ॥

ज्वरकालञ्च वेगञ्च चिन्तयन्ज्वर्य्यतेतुयः । तस्येष्टैस्तुविचित्रैश्च विषयैर्नाशयेत्स्मृतिम् ॥ ३१८ ॥

जो मनुष्य ज्वरके समय तथा वेगकी चिन्ता करते करते ज्वरसे व्याकुल होताहै उसकी स्मृतिका, प्रिय तथा विचित्र विषयों से नाश करना चाहिये ॥ ३१८ ॥

ज्वरप्रमोक्षेपुरुषः कूजन्वमतिचेष्टते । श्वसन् विवर्णःस्विन्नाङ्गोवेपते लीयते मुहुः ॥ ३१९ ॥

जिस समय ज्वर छूटनेवाला होता है उस समय पुरुष कूजन (एकप्रकार का शब्द) करता है वमन करताहै चेष्टा श्वास विवर्णता (वर्णका बदलजाना) स्वेद कम्प वारंवार शिथिलता ॥ ३१९ ॥

प्रलपत्युष्णसर्वाङ्गःशीताङ्गश्चभवत्यपि । विसंज्ञोज्वरवेगार्त्तः सक्रोधइववीक्ष्यते ॥ ३२० ॥

मलाप सम्पूर्णशरीरका उष्णहोना [illegible] शीतल होना संज्ञा का नष्ट होना तथ[illegible] के वेगकी अधिकता इन लक्षणोंसे[illegible] उस है और क्रोधी के समान देखताहै [illegible] ॥

सदोषशब्दञ्चशकृद्द्रवं [illegible]वत् । लिङ्गान्येतानि जा[illegible]यशोरमोक्षेविचक्षणः ॥ ३२१ ॥

वेगपूर्वक दोष तथा शब्दस[illegible] मलका त्याग करता है बुद्धिमान् वैद्य [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के छूटने के समय के यह लक्षणजाने॥३२१॥

बहुदोषस्यबलवान्प्रायेणाभिनवो ज्वरः। सक्रियादोषपक्वयाचेद्धिसु अतिसुदारुणम् ॥ ३२२ ॥

बहुत दोष वाले पुरुष का बलवान् तथा नवीन ज्वर जो श्रेष्ठ क्रियाके द्वारा दोषों के पचने से छूटताहै तो इन्हीं भयङ्कर लक्षणोंके प्रकट होनेपर प्रायः छूटताहै ॥ ३२२ ॥

कृत्वादोषवशाद्वेगंक्रमाडुपरमन्ति ये। तेषामदारुणोमोक्षोज्वराणां चिरकारिणाम् ॥ ३२३ ॥

जो ज्वर दोषोंके द्वारा वेगकरके क्रम क्रम से छूटता है उस बहुत काल तक रहनेवाले ज्वरके छूटनेमें कोई भयङ्कर लक्षण नहीं प्रकट होता है ॥ ३२३ ॥

विगतक्लमसन्तापमव्यथंविमलेन्द्रियम्। युक्तंप्रकृतिसत्त्वेनविद्यात्पुरुषमज्वरम् ॥ ३२४ ॥

ज्वरके छूट जानेपर ग्लानि संताप तथा व्यथा का नाश होता है इन्द्रियां निर्मल हो- [illegible] हैं और सत्त्व स्वाभाविक होजाता [illegible]४॥

[illegible]ज्वरमुक्तश्चविदाहीनिगुरूणि [illegible]सात्म्यान्यन्नपानानिविरुद्धा[illegible]येत् ॥ ३२५ ॥

[illegible]नुष्यके ज्वर हो अथवा जिस मनु- [illegible]ज्वर शीघ्रही छूटाहो वह विदाही भा- [illegible] असात्म्य अन्न पान (पीनेकी वस्तु) [illegible] न करै ॥ ३२५ ॥

व्यवायमतिचेष्टाश्चस्नानमत्यशनानिच। तथाज्वरःशमंयातिप्रशान्तो जायतेनच ॥ ३२६ ॥

मैथुन, श्रम, स्नान तथा अधिक भोजन नहीं करै इन नियमों से ज्वर छूटजाता है और छूटा हुआ ज्वर फिर नहीं आता है ॥ ३२६ ॥

व्यायामश्चव्यवायश्च स्नानंचंक्रमणानिच। ज्वरमुक्तोनसेवेत यावन्न बलवान्भवेत् ॥ ३२७ ॥

ज्वर के छूटजाने पर जबतक बल न आवे तबतक व्यायाम, मैथुन, स्नान तथा भ्रमण का त्याग करना चाहिये ॥ ३२७ ॥

असञ्जातबलोयस्तुज्वरमुक्तोनिषेवते। वर्ज्यमेतन्नरस्तस्य पुनरावर्त्तते ज्वरः ॥ ३२८ ॥

जो मनुष्य ज्वर के छूटजाने पर बल के विना आयेही इन त्याज्य विषयों का सेवन करताहै उसे फिर ज्वर आजाताहै ॥३२८॥

दुर्हृतेषुचदोषेषु यस्यवाविनिवर्त्तते। स्वल्पेनाप्यपचारेण तस्यव्यावर्त्ततेपुनः ॥ ३२९ ॥

दोषों के अच्छे प्रकारसे न निकलने पर जिसका ज्वर छूट जाताहै वह पुरुष जो थोड़ा भी अपचार (बदपरहेज़ी) करै तो उसे फिर ज्वर आजाता है ॥ ३२९ ॥

चिरकालपरिक्लिष्टं दुर्बलंदीनचेतसम्। अचिरेणैवकालेन सहन्ति पुनरागतः ॥ ३३० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो पुरुष बहुत दिनों तक ज्वर से पीड़ित होकर दुर्बल तथा दीन होगया है उसे फिर आयाहुआ ज्वर शीघ्रही मारडालताहै॥३३०॥

अथवापिपरीपाकं धातुष्वेवक्रमान्मलाः। यान्तिज्वरमकुर्वन्तस्तेतथाप्यपकुर्वते ॥ ३३१ ॥ दीनतां श्वयथुंग्लानिं पाण्डुतांनान्नकामताम् । कण्डूरुत्कोष्ठपिडिकाःकुर्वन्त्यग्निञ्चतेमृदुम् ॥ ३३२ ॥ एवमन्येऽपिचगदा व्यावर्त्तन्तेपुनर्गताः। अनिर्घातेनदोषाणामल्पैरप्यहितैर्नृणाम् ॥ ३३३ ॥

अथवा धातुओंमें ही क्रम से परिपाक को प्राप्त होकर ज्वर को न उत्पन्न करके भी वातादिक दोष दीनता, शोथ, ग्लानि, पाण्डुता, अन्न में अरुचि, खुजली, चकत्ते, फुड़ियां तथा मन्दाग्नि और इसी प्रकार के अन्य रोगोंको उत्पन्न करते हैं दोषोंके अच्छे प्रकार न निकल जानेपर यह पूर्वोक्त रोग थोड़ेही अपचार (बदपरहेजी) से फिर उत्पन्न होजाते हैं॥ ३३१। ३३२। ३३३॥

निवृत्तेऽपि ज्वरेतस्माद्यथावस्थंयथाबलम्। यथाप्राणंहरेद्दोषंप्रयोगैर्वाशमं नयेत्। ।३३४॥

इससे ज्वर के निवृत्त होजाने पर भी बल तथा अवस्था के अनुसार प्रधान दोष को निकाले अथवा औषधियोंसेशान्तकरै॥३३४॥

मृदुभिःशोधनैः शुद्धिर्यापनावस्त

योहिताः। हिताश्चलघवोयूषाजाङ्गलामिषजारसाः ॥ ३३५ ॥

हल्के वमन विरेचनआदि संशोधनों से दोषोंका निकालना वस्ति हितकारी हल्केयूष और जांगल जीवों के मांसका रस यह सब ज्वर छूटनेपर हितकारी होते हैं ॥ ३३५ ॥

अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नानधूपनाभ्यञ्जनानिच। हितानिपुनरावृत्तेज्वरेतिक्तघृतानिच ॥ ३३६ ॥

फिर आयेहुये ज्वरमें अभ्यंग (तैलादि लगाना) उबटन लगाना स्नान धूप अंजन तथा तिक्तघृत हित होताहै ॥ ३३६ ॥

गुर्व्वभिष्यन्दसात्म्यानांभोजनात्पुनरागते । लंघनोष्णोपचारादिः क्रमःकार्य्यश्चपूर्ववत् ॥ ३३७ ॥

भारी अभिष्यन्दी तथा असात्म्य वस्तुओं के खाने से जो ज्वर फिर आया होय तो पहिले की तरह लंघन उष्ण उपचार आदि क्रम करना चाहिये ॥ ३३७ ॥

किराततिक्तकंतिक्तामुस्तंप[illegible]मृता। घ्नन्तिपीतानिचाभ्यास[illegible]नरावर्त्तकंज्वरम् ॥ ३३८ ॥

चिरायता कुटकी नागरमोथा [illegible] तथा गिलोय इनका काढ़ा कुछ [illegible] स करके पीनेसे फिर आयेहुये [illegible] होता है ॥ ३३८ ॥

तस्यांतस्यामवस्थायांज्वरि[illegible] चक्षणः । ज्वरक्रियाक्रमापे[illegible] य्योंत्तत्रचिकित्सितम् ॥ ३३[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमान् वैद्य ज्वरवालों की विशेष विशेष अवस्थाओं में ज्वरकी चिकित्साके क्रम के अनुसार फिर आयेहुये ज्वरकी चिकित्साकरै ॥ ३३९ ॥

रोगराट्सर्वभूतानामन्तकृद्दारुणो ज्वरः । तस्माद्विशेषतस्तस्ययतेतत्प्रशमंभिषगिति ॥ ३४० ॥

ज्वर सम्पूर्ण रोगोंका राजा अत्यन्त भयानक और सम्पूर्ण प्राणियोंका अन्तकारी होताहै इससे वैद्य ज्वरकी शान्तिके लिये विशेष यत्नकरै ॥ ३४० ॥

भवतिचात्र । यथाक्रमंयथाप्रश्नमुक्तंज्वरचिकित्सितम् । अत्रिजेनाग्निवेशाय भूतानांहितमिच्छता ॥ ३४१ ॥

इतिज्वराध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

इसमें यह श्लोक है । इस ज्वर चिकित्सितनाम अध्याय में सम्पूर्ण प्राणियों का हित चाहनेवाले भगवान् आत्रेयजीने अग्निवेशके प्रश्नके अनुसार क्रमपूर्वक ज्वरकी चिकित्सा कही ॥ ३४१ ॥

[illegible] सचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें चिकित्सा[illegible] ज्वरचिकित्सितनाम तीसराअ[illegible]ध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३ ॥

[illegible]थाअध्याय ॥

[illegible]पित्तचिकित्सितम् ।

[illegible]जितात्मानंपञ्चगंगेपुनर्वसु[illegible]योवाचनिर्मोहमग्निवेशो[illegible]म् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त रक्तपित्त चिकित्सित नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

पंचगंगनाम स्थान में विचरण करतेहुये जितेन्द्रिय मोहरहित तथा अग्निके समान तेजस्वी भगवान् आत्रेयजीसे अग्निवेशने प्रणाम करके कहा कि ॥ १ ॥

भगवन्रक्तपित्तस्यहेतुरुक्तःसलक्षणः । वक्तव्यंयत्परंतस्यवक्तुमर्हसितद्गुरो ॥ २ ॥

हे भगवन् आपने निदानस्थानमें रक्तपित्त का लक्षणसहित निदान कहाथा अब कृपा करके रक्तपित्तके विषयमें और जो कुछ कहना उचित होय सो कहिये ॥ २ ॥

गुरुरुवाच ।

महागदंमहावीर्यमग्निवच्छीघ्रकारिच । हेतुलक्षणविच्छीघ्रंरक्तपित्तमुपाचरेत् ॥ ३ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेय जी बोले कि हे सौम्य यह रक्तपित्त रोग महाबलवान् अग्नि के समान शीघ्रही होनेवाला भयङ्कर और सब रोगों से बड़ा होता है इस से निदान तथा लक्षणोंका जाननेवाला वैद्य शीघ्रही रक्तपित्त की चिकित्सा करै ॥ ३ ॥

तस्योष्णंतीक्ष्णमम्लञ्चकटूनिलवणानिच । घर्मश्चान्नविदाहश्चहेतुःपूर्वंनिदर्शितः ॥ ४ ॥

गरम तीक्ष्ण खट्टी तथा कडुई वस्तु अम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का विदाह लवण और धूप यह रक्तपित्त के हेतु पहिले कहेगये हैं ॥ ४ ॥

तैर्हेतुभिःसमुद्दिष्टंपित्तंरक्तंप्रपद्यते। तद्योनित्वात्प्रपन्नञ्च वर्द्धतेतत्प्रदूषयत् ॥ ५ ॥

इन हेतुओं से कुपितहुआ पित्त रुधिर में प्राप्त होता है और रुधिर पित्तका कारण है इस से रुधिर में प्राप्त होकर पित्त बढ़ता है और रुधिर को दूषित करता है ॥ ५ ॥

तस्योष्मणांद्रवोधातुर्धातोर्धातोःप्रसिच्यते। स्विद्यतस्तेनसंवृद्धिंभूयस्तदधिगच्छति ॥ ६ ॥

फिर पित्त की ऊष्मा से सम्पूर्ण धातुओं का द्रवांश (पतलाहिस्सा) पिघलता है इससे वह पित्त और भी अधिक बढ़ जाता है ॥ ६ ॥

संयोगाद्दूषणात्तत्तुसामान्याद्गन्धवर्णयोः। रक्तस्यपित्तमाख्यातंरक्तपित्तंमनीषिभिः ॥ ७ ॥

रुधिर के संयोगसे रुधिर को दूषित करने से और रुधिर के समान गन्ध तथा वर्ण होने से उस पित्तको बुद्धिमान् लोग रक्तपित्त कहते हैं ॥ ७ ॥

प्लीहानञ्चयकृच्चैव तदधिष्ठायवर्त्तते। स्रोतांसिरक्तवाहीनितन्मूलानिहिदेहिनाम् ॥ ८ ॥

प्लीहा (तिल्ली) तथा यकृत (जिगर) में यह रक्तपित्त स्थित रहताहै और प्लीहा तथा यकृतही पुरुषके रुधिरके ले चलनेवाले स्रोतों के मूल हैं ॥ ८ ॥

सान्द्रंसपाण्डुसस्नेहंपिच्छिलञ्चकफान्वितम्। श्यावारुणंसफेनञ्चतनुरूक्षञ्चवातिकम् ॥ ९ ॥

कफज रक्तपित्त गाढ़ा पाण्डुवर्ण स्निग्ध तथा पिच्छिल (चिकना) होता है वातज रक्तपित्त कपिश अथवा अरुणवर्ण फेनयुक्त पतला तथा रूखा होता है ॥ ९ ॥

रक्तपित्तंकषायाभंकृष्णंगोमूत्रसन्निभम्। मेचकागारधूमाभमञ्जनाभञ्चपैत्तिकम् ॥ १० ॥

पित्तज रक्तपित्त काढ़ेके समान कृष्णवर्ण गोमूत्र के समान कान्तियुक्त मेचकवर्ण घर के धुएं के समान कान्तियुक्त अथवा अञ्जन के समान कान्तियुक्त होताहै ॥ १० ॥

संसृष्टलिङ्गंसंसर्गात्त्रिलिङ्गंसान्निपातिकम्। एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषंयाप्यमुच्यते ॥ ११ ॥

जिस रक्तपित्तमें दो दोषोंके लक्षण मिले हुये हों उसे द्वन्द्वज और जिसमें [illegible] षों के लक्षण मिले हुये हों उसे स[illegible] नना चाहिये एक दोषसे हुआ [illegible] ध्य और दो दोषों से हुआ रक्त[illegible] होता है ॥ ११ ॥

यत्त्रिदोषमसाध्यंतन्मन्दाग्[illegible] गवत्। व्याधिभिःक्षीणदेह[illegible] स्यानश्नतश्चयत् ॥ १२ ॥

तीनों दोषों से हुआ रक्त[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाले पुरुष का रक्तपित्त रोगों से क्षीणशरीर वाले वृद्ध तथा निराहारी पुरुष का रक्तपित्त असाध्य होता है ॥ १२ ॥

गतिरूर्द्धमधश्चैवरक्तपित्तस्यदर्शिता। ऊर्द्धाःसप्तविधाद्धाराद्विद्वारात्वधरागतिः ॥ १३ ॥

ऊर्ध्व (ऊपर) अधः (नीचे) भेदसे रक्तपित्त की गति दो प्रकार की होती है ऊर्ध्वगतिमें सात द्वार होते हैं और अधोगति में दो द्वार होते हैं ॥ १३ ॥

सप्तच्छिद्राणिशिरसिद्वेचाधःसाध्यमूर्द्धगम् । याप्यन्त्वधोगमंमार्गौ द्वावसाध्यंप्रपद्यते ॥ १४ ॥

मुख नासिका के दो छिद्र दो नेत्र तथा दो कान यह सातो छिद्र ऊर्ध्वगतिके द्वार हैं और गुदा तथा लिङ्गके दोनों छिद्र अधोगति के द्वारहैं ऊर्ध्वग रक्तपित्त साध्य होताहै अधोगत रक्तपित्त याप्य (जो रोग रुका रहे किन्तु निर्मूल न हो उसे याप्य कहते हैं) और ऊर्ध्व तथा अधः दोनों मार्गों से जाने वाल- [illegible]पित्त असाध्य होताहै ॥ १४ ॥

[illegible]र्वछिद्रेभ्योरोमकूपेभ्यएव [illegible]तेतामसंख्येयांगतिंतस्या[illegible]स[illegible]मि ॥ १५ ॥

[illegible] छिद्रों से तथा सम्पूर्ण रोमकूपोंसे [illegible]त्त निकलता है उसकी इस अंत[illegible]की असंख्यगति को अत्यन्त असा[illegible]नना चाहिये ॥ १५ ॥

[illegible]भयाभ्यांमार्गाभ्यामतिमात्रं प्रवर्त्तते। तुल्यंकुणपगन्धेनरक्तंकृष्णमतीवच ॥ १६ ॥

जो रक्तपित्त दोनों मार्गोंसे बहुत निकलता है जिसमें मुर्दे कीसी दुर्गन्ध होतीहै जो बहुत काला होताहै ॥ १६ ॥

संसृष्टंकफवाताभ्यां कण्ठसज्जति चापियत् । यच्चाप्युपद्रवःसर्वैर्यथोक्तैःसमभिद्रुतम् ॥ १७ ॥

जो कफ तथा वायु से उत्पन्न होकर गले में आकर फँसता है जो पूर्वोक्त सम्पूर्ण उपद्रवोंसे युक्त होताहै ॥ १७ ॥

हारिद्रनीलहरितताम्रैर्वर्णैरुपद्रुतम्। क्षीणस्यकासमानस्ययच्चतत्चनसिद्ध्यति ॥ १८ ॥

जो हल्दी के समान वर्ण नीलवर्ण हरित वर्ण तथा ताम्रवर्णसेयुक्त होता है और जो क्षीण तथा खांसीवाले पुरुषके होता है उस रक्तपित्त को असाध्य जानना चाहिये ॥१८॥

यद्विदोषानुगंयद्वाशान्तंशान्तंप्रकुप्यति । मार्गान्मार्गंचरेद्यद्वायाप्यं पित्तमसृक्चतत् ॥ १९ ॥

जो रक्तपित्त दो दोषों से उत्पन्न होता है जो शान्त होहोकर फिर फिर कुपित होताहै और जो एकमार्ग से अन्यमार्ग में प्रवृत्त होताहै उस रक्तपित्त को याप्य जानना चाहिये ॥ १९ ॥

एकमार्गबलवतोनातिवेगंनवोत्थितम् । रक्तपित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो रक्तपित्त एकमार्ग से निकलता है बलवान् पुरुषके होताहै बहुत वेगसे नहीं निकलता है और शीतऋतु में उत्पन्न होता है वह उपद्रवरहित नवीन रक्तपित्त साध्य होताहै ॥ २० ॥

स्निग्धोष्णमुष्णरूक्षञ्चरक्तपित्तस्य कारणम्। अधोगस्योत्तरंप्रायःपूर्वं स्यादूर्द्ध्वगस्यतु ॥ २१ ॥

रक्तपित्त के स्निग्धोष्ण तथा रूक्षोष्ण यह दो कारण होते हैं इन में से प्रायः अधोगत रक्तपित्त के रूक्षोष्ण और ऊर्ध्वग रक्तपित्त के स्निग्धोष्ण कारण होते हैं ॥ २१ ॥

ऊर्द्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतानुगम्। द्विमार्गंकफवाताभ्यामुभाभ्यामनुबध्यते ॥ २२ ॥

ऊर्ध्वग रक्तपित्त कफयुक्त अधोगत रक्तपित्त वातयुक्त और दोनों मार्गों से निकलने वाला रक्तपित्त कफ तथा वात दोनों से युक्त होताहै ॥ २२ ॥

अक्षीणबलमांसस्यरक्तपित्तंयदश्नतः। तद्दोषदुष्टमुत्क्लिष्टंनादौस्तम्भनमर्हति ॥ २३ ॥

जिस पुरुष का बल तथा मांस क्षीण न हुआ हो और वह भोजन अच्छी प्रकार से करता हो उसके दोषोंसे दूषित बढ़े हुये रक्तपित्त को पहिलेही न रोकनाचाहिये ॥ २३ ॥

गलग्रहंपूतिनस्यंमूर्च्छायमरुचिंज्वरम्। गुल्मंप्लीहानमानाहंकिलासं कृच्छ्रमूत्रता ॥ २४ ॥ कुष्ठान्यर्शांसिवीसर्पंवर्णनाशंभगन्दरम्। बुद्धीन्द्रियोपरोधञ्चकुर्य्यात्स्तम्भितमादितः ॥ २५ ॥

क्योंकि पहिलेही यह रक्तपित्त रोकने से गलग्रह पूतिनस्य (नासिका का रोगविशेष) मूर्च्छा अरुचि ज्वर गुल्म प्लीहा अफरा सेहुवां मूत्रकृच्छ्र कुष्ठ बवासीर जहरबात वर्णका नाश भगन्दर और बुद्धि तथा इन्द्रियोंकी जड़ता यह रोग उत्पन्न करता है ॥ २४ । २५ ॥

तस्मादुपेक्ष्यंबलिनोबलदोषविचारिणा। रक्तपित्तंप्रथमतःप्रवृद्धंसिद्धिमिच्छता ॥ २६ ॥

इससे बल तथा दोषोंका विचार करनेवाला वैद्य रोगी को नीरोग करनेकी इच्छा से बढ़ेहुये रक्तपित्तको पहिले न रोकै ॥ २६ ॥

प्रायेणहिसमुत्क्लिष्टमामदोषाच्छरीरिणाम्। वृद्धिंप्रयातिपित्तासृक्तस्माल्लङ्घनमादितः ॥ २७ ॥

प्रायः मनुष्यों का उभड़ा हुआ रक्तपित्त आमसहित दोष से वृद्धि को प्रा[illegible] है इससे रक्तपित्त से पहिले लंघन [illegible] चाहिये ॥ २७ ॥

मार्गदोषानुबन्धञ्चनिदानंप्र[illegible] च। लंघनंरक्तपित्तादौतर्प[illegible] जयेत् ॥ २८ ॥

रक्तपित्त की आदिमें मार्ग दोष[illegible] सर्ग तथा निदान को देखकर लंघन [illegible] तर्पण (मुनक्का आदि फलों का वृष्टि[illegible] रस) का प्रयोग करना चाहिये ॥ २[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ह्रीवेरंचन्दनोशीरमुस्तपर्पटकैःशृतम्। केवलंशृतशीतंवादद्यात्तोयंपिपासवे ॥ २९ ॥

जो रक्तपित्तवाले को तृषा लगै तो ह्राऊबेर लाल चन्दन खस नागरमोथा तथा पित्तपापड़ाके साथ पाक किया हुआ जल अथवा किसी औषध के विनाही पाक किया हुआ जल शीतल करके पीनेको दे ॥ २९ ॥

ऊर्द्धगेतर्पणंपूर्वं पेयापूर्वमधोगते। कालसात्म्यानुबन्धज्ञोदद्यात्प्रकृतिकल्पवित् ॥ ३० ॥

समय सात्म्य संसर्ग प्रकृति तथा कल्पका जानने वाला वैद्य ऊर्ध्वग रक्तपित्त में पहिले तर्पण और अधोगत रक्तपित्त में पहिले पेया पीने को दे ॥ ३० ॥

जलंखर्ज्जूरमृद्वीकामधूकैःसपरूषकैः। शृतशीतंप्रयोक्तव्यंतर्पणार्थेसशर्करम् ॥ ३१ ॥

छुहारा दाख मुलेठी तथा फालसों के ... पा[क कि]येगये जलको शीतल करके ... [मिला]कर रक्तपित्तवाले को तर्पण के ... ॥ ३१ ॥

[तर्प]णंस[घृ]तक्षौद्रंलाजाचूर्णैःप्रयोज[ि]तक[म्।] ऊ[र्द्]ध्वगंरक्तपित्तंतत्पीतंकाले [नि]हन्ति ॥ ३२ ॥

... तर्पण में घी शहद तथा खीलोंका ... डालकर रक्तपित्त वाले को पिलावे ... समय में इस तर्पण के पीने से ऊर्ध्वग [रक्तपि]त्तका नाश होताहै ॥ [३२] ॥

मन्दाग्ने[ः] ... [वि]शेष) का मांस रक्तपित्त में ॥ ४८ ॥

...पि[क]ल्पयेत् ...ैःसिद्धंतर्पणाम्लंवाफ... दम्लार्थश्चानुद...ंविदारिगन्धा...

जिस रक्तपित्तवाले ॥ ४६ ॥ ...दहो और जिसको खटाई हितहो ... खटाईसहित तर्पण देना चाहिये किन्तु खटाईके लिये दाड़िम तथा आमलोंही का व्यवहार करना चाहिये ॥ ३३ ॥

शालिषष्टिकनीवारकोरदूषप्रशातिकाः। श्यामाकश्चप्रियंगुश्चभोजनंरक्तपित्तिनाम् ॥ ३४ ॥

रक्तपित्तवालों को भोजन के निमित्त शालिधान साँठीके चावल तीनीके चावल कोदो प्रशातिका साँवाँ तथा ककुनी ये सब अन्न हित होते हैं ॥ ३४ ॥

मुद्गामसूराश्चणकाःसमकुष्ठाढकीफलाः। प्रशस्ताःसूपयूषार्थेकल्पिता रक्तपित्तिनाम् ॥ ३५ ॥

रक्तपित्तवालों को दाल तथा यूषके लिये मूंग मसूर चना मोथी तथा अरहर यह सब अन्न हित होते हैं ॥ ३५ ॥

पटोलनिम्बवेत्राग्रप्लक्षवेतसपल्लवाः। किराततिक्तकंशाकंगण्डीरःसकटिल्लकः ॥ ३६ ॥ कोविदारस्यपुष्पाणिकाश्मर्य्यस्याथशाल्मलेः। अन्नपानविधौशाकंयच्चान्यद्रक्तपित्तनुत् ॥ ३७ ॥ शाकार्थंशाकसा[त्म्या]नांतत्स्यात्[र]क्तपित्तिनाम्।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥विपा॥चि

ो रक्तपित्त एकमार्ग्ग से निकलता है
न् पुरुषके होताहै बहुत वेगसे न
ता है औ॰ ...ीतऋतु में उत्पन्न शाक (तरकारी)
...हत होवें ...वीन रक्त...रवल नींब की पत्ती
वेतका अग्र ... वेतकी पत्ती चिरायता
शाक गण्डीर (...द्दपूर्णा) करेला कचनार
के पुष्प गंभारी के फल सेमरके पुष्प और अन्य रक्तपित्तनाशक शाक हित होते हैं यह सब शाक उवालकर घीमें भूनकर अथवा यूष के समानपाककरकेखाने चाहिये॥३६।३७।३८॥

पारावतान्कपोतांश्चलावान्रक्ताक्षवर्त्तकान्। शशान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्कालपुच्छकान्॥ ३६॥

कवूतर कपोत (कवूतरविशेष) लवा रक्ताक्ष वटेर खरगोश कपिञ्जल एण (मृगविशेष) तथा कालपुच्छक (मृग विशेष)॥३९॥

रक्तपित्तहितान्विद्याद्रसास्तेषांप्रयोजयेत्। ईषदम्लाननम्लान्वाघृतभृष्टान्सशर्करान्॥ ४०॥

इन जीवोंके मांस रक्तपित्तवालों को हित होते हैं इससे इन जीवोंके मांसके रसको घी में छौंक कर कुछ खटाई डालकर अथवा न डालकर कुछ शक्कर मिलाकर रक्तपित्तवाले को सेवन करना चाहिये॥ ४०॥

कफानुगेयूषशाकंदद्याद्वातानुगेरसम्। रक्तपित्तेयवागूनामतःकल्पःप्रवक्ष्यते॥ ४१॥

कफयुक्त रक्तपित्त में यूष तथा शाक और वातयुक्त रक्तपित्त में मांसरस देना चाहिये इसके उपरान्त रक्तपित्तवालों के लिये यवागुवों के बनाने की विधि कही जाती है॥४१॥

पद्मोत्पलानांकिञ्जल्कःपृश्निपर्णीप्रियंगुकाः। जलेसाध्यरसेतस्मिन्पेयास्याद्रक्तपित्तिनाम्॥ ४२॥

कमल तथा नीले कमलकी केशर पृश्निपर्णी तथा प्रियंगु इन सब औषधियों के साथ पाक कियेगये जल में पाककीगई पेया (चौदह गुणेजल में चावलों को पाक करके जो जल तथा चावलोंके मिलने से द्रववस्तु तयार होती है उसे पेया कहते हैं) रक्तपित्तवालों को देनी चाहिये॥ ४२॥

चन्दनोशीरलोध्राणांरसेतद्वत्सनागरे। किराततिक्तकोशीरमुस्तानांतद्वदेवच॥ ४३॥

चन्दन खस लोध तथा सोंठि इन के साथ पाक कियेहुये जल में पाक कीगई पेया चिरायता खस तथा नागरमोथा के साथ पाक किये जलमें पाक कीगई पेया॥ ४३॥

धातकीधन्वयासाम्बुबिल्वानांवारसेश्रृताः। मसूरपृश्निपर्ण्योर्वास्थिल...रामुद्गरसेनवा॥ ४४॥

धवई यवासा सुगन्धवाला ... साथ पाक कियेगये जल में पाक... मसूर तथा पृश्निपर्णी के साथ ज... कीगई पेया शालिपर्णी तथा मूंग ... पाक कियेगये जलमें पाक कीगई पेया॥ ...

रसेहरेणुकानांवासघृतेसबलारसे...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धाःपारावतादीनां रसेवास्युःपृथक् पृथक् ॥ ४५ ॥ इत्युक्तारक्तपित्तघ्नयःशीताःसमधुशर्कराः। यवाग्वःकल्पनाचैषां कार्य्यामांसरसेष्वपि ॥ ४६ ॥

अथवा वरियारा तथा रेणुका के साथ पाक कियेगये घृतसहित जलमें पाक कीगई पेया रक्तपित्तवालों को देनी चाहिये पूर्वोक्त कबूतरआदि जीवों के मांसके रसमें अलग २ पाक कीगई पेया को शीतल करके उस में शहद तथा शक्करडाल के रक्तपित्तवाले को पिलावे इस प्रकार रक्तपित्तनाशक यवागू कहीगई मांसके रसमें भी इनकी कल्पना करके रक्तपित्तवालों को देवे ॥४५। ४६॥

शशःसवास्तुकःशस्तोविबन्धेरक्तपित्तिनाम् । वातोल्बणेतित्तिरिःस्याद्दुम्बररसेशृतः ॥ ४७ ॥

जो रक्तपित्तवालों को विबन्ध (मलमूत्रादिकों का रुकना) होवे तो बथुई के शाक [illegible] साथ खरगोश का मांस हित होताहै जिस [illegible]पित्तमें वायु अधिक होती है उसमें गूलरके [illegible] पाक कियागया तीतरका मांस ॥४७॥

[illegible]निर्यूहेन्यग्रोधस्यचकुक्कु[illegible] [illegible]बिल्वोत्पलादीनांवर्त्तकक्र[illegible] [illegible]ौ ॥ ४८ ॥

[illegible]या के काढ़ामें पाक कियागया मोर [illegible]स और बरगद के काढ़ेमें पाक किया [illegible]मुर्गे का मांस हित होता है बेल तथा उ[illegible]के काढ़ेमें पाक कियागया बटेर तथा क्रकर (तीतरविशेष) का मांस रक्तपित्त में हित होता है ॥ ४८ ॥

तृष्यतेतिक्तकैःसिद्धंतृष्णाघ्नंवाफलोदकम् । सिद्धंविदारिगन्धाद्यैरथवाभृतशीतलम् ॥ ४९ ॥

जिस रक्तपित्तवाले को तृषा अधिक लगतीहो उसे तिक्त औषधियों के द्वारा दाखआदि फलों के द्वारा अथवा विदारिगन्धा (सरिवन) आदि औषधियों के द्वारा पाक किया गया जल पिलाना चाहिये परन्तु वह जल शीतल होनाचाहिये ॥ ४९ ॥

ज्ञात्वादोषावनुबलौबलमाहारमेव च । जलंपिपासवेद्याद्धिसर्गाद्ल्पशोऽपिवा ॥ ५० ॥

अनुबलदोष (जो दोष मुख्य न हो किंतु सहायकमात्रहो उसे अनुबल कहते हैं) बल तथा आहार को जानकर बुद्धिमान् वैद्य तृषित रक्तपित्तवाले को बहुत अथवा थोड़ा जल पीने को देवे ॥ ५० ॥

निदानंरक्तपित्तस्य यत्किञ्चित्संप्रकाशितम् । जीवितारोग्यकामैस्तन्नसेव्यंरक्तपित्तिभिः ॥ ५१ ॥

आरोग्य तथा जीवनकी इच्छा करनेवाला रक्तपित्तरोगी जो कुछ रक्तपित्त के निदान कहेगये हैं उनका सेवन कदापि न करे॥५१॥

इत्यन्नपानंनिर्दिष्टं क्रमशोरक्तपित्तिषु । वक्ष्यतेबहुदोषाणांकार्य्यंबलवताश्रयत् ॥ ५२ ॥

इस प्रकार रक्तपित्तवालों के लिये क्रमसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्। हृद्रोगंविद्रधींशोथंसाधयत्याशु तत्पयः॥ ९१॥

इति लशुनक्षीरम्।

इस दूधके पीने से शीघ्रही बातजगुल्म उदावर्त्त गृध्रसी (बातरोग विशेष) विषमज्वर हृदय के रोग विद्रधि तथा शोथ का नाश होता है॥ ९१॥

इति लशुनक्षीर॥

तैलंप्रसन्नागोमूत्रमारनालंयवाग्रजम्।गुल्मंजठरमानाहंपीतमेकत्रसाधयेत्॥ ९२॥

इति तैलपञ्चकम्।

तैल मद्य गोमूत्र कांजी तथा यवाखार इन सबको एकमें मिलाकर पीने से गुल्म उदर तथा अफरा का नाश होता है॥ ९२॥

इति तैलपञ्चक॥

पञ्चमूलीकषायेणसक्षीरेणशिलाजतु। पिबेत्तस्यप्रयोगेणवातगुल्मात्प्रमुच्यते॥ ९३॥

इति शिलाजतुप्रयोगः।

पञ्चमूल के काढ़े तथा दूधके साथ शिलाजीत का पान करने से बातज गुल्म का नाश होता है॥ ९३॥

इति शिलाजतु प्रयोग॥

वाट्यंयूषेणपिप्पल्यामूलकानांरसेन वा। भुक्त्वास्निग्धमुदावर्त्ताद्वातगुल्माद्विमुच्यते॥ ९४॥

पीपरि युक्त यूष अथवा मूलियों के रसके साथ घृतादि स्नेह युक्त बाह्य अर्थात् यवोंका मण्ड (चौदह गुणे जलमें पाक किये चावल आदि अन्न का पतला जो रस सा तय्यारहोता है उसे मण्ड कहते हैं) पीने से उदावर्त्त तथा वातज गुल्मका नाश होता है॥ ९४॥

शूलानाहविबन्धार्त्तंस्वेदयेद्वातगुल्मिनम्। स्वेदैःस्वेदविधावुक्तैर्नाडीप्रस्तरशङ्करैः॥ ९५॥

जिस वातज गुल्ममें शूल अफरा तथा विबन्ध हो उस में स्वेदाध्यायमें कहेहुये नाड़ीस्वेद प्रस्तरस्वेद और शंकरस्वेद के द्वारा स्वेदन करना चाहिये॥ ९५॥

वस्तिकर्मपरंविद्याद्गुल्मघ्नंतद्धिमारुतम्। स्वेस्थानेप्रथमंजित्वासद्योगुल्ममपोहति॥ ९६॥

वस्तिकर्म्म (अमलदेना) गुल्मका अत्यन्त नाशक होताहै क्योंकि वस्तिकर्म्म पहिले अपने स्थानमें स्थित वायुको जीतकर शीघ्रही गुल्मको दूर करता है॥ ९६॥

तस्मादभीक्ष्णशोगुल्मानिरूहैःसानुवासनैः। प्रयुज्यमानैःशाम्यंति वातपित्तकफात्मकाः॥ ९७॥

इससे बारम्बार निरूह तथा अनुवासन वस्तिका प्रयोग करनेसे वातज पित्तज तथा कफज गुल्मोंका नाश होताहै॥ ९७॥

गुल्मघ्नाविविधादृष्टाःसिद्धाःसिद्धिषुवस्तयः। गुल्मघ्नानिचतैलानिवक्ष्यन्तेवातरोगिके॥ ९८॥

सिद्धिस्थान में गुल्मनाशक अनेक प्रकार की वस्ति कही जायँगी और वात रोगों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सामें गुल्मनाशक तैल कहेजायँगे ९८॥

तानिमारुतगुल्मेषुपानाभ्यङ्गानुवासनैः। प्रयुक्तान्याशुसिध्यन्तितैलंह्यनिलजित्वरम् ॥ ९९॥

इन तैलोंका पान मर्दन तथा अनुवासन वस्ति के द्वारा प्रयोग करने से वातज गुल्मका शीघ्रही नाश होता है क्योंकि प्रायः तैलवातघ्नहोता है ॥ ९९ ॥

नीलिनीचूर्णसंयुक्तंपूर्वोक्तंघृतमेव वा। समलायप्रदेयंस्याच्छोधनं वातगुल्मिने ॥ १०० ॥

वातज गुल्ममें जिसका मल रुका हुआहो उसे नीलिनी (नील) के चूर्णके साथ पूर्वोक्त मल शोधक घृत पिलाना चाहिये॥१००॥

नीलिनीत्रिवृतादन्तीपथ्याकम्पिल्लकैःसह। शोधनार्थंघृतंदेयंसविडक्षारनागरम् ॥ १०१ ॥

नीलिनी निशोथ दन्ती हड़ कम्पिल्लक इन औषधों के साथ विड़ लवण सोंठि युक्त घृत संशोधन के लिये देना चाहिये ॥ १०१ ॥

नीलिनींत्रिफलांरास्नांबलांकटुकरोहिणीम्। पचेद्विडङ्गंव्याघ्रीञ्चपलिकानिजलाढ़के ॥ १०२ ॥

नीलिनी हड़ बहेड़ा आमला रास्ना बरियारा कुटकी बायबिडंग तथा भटकटैया इन सब औषधियों को चार २ तोले लेकर दोसौ छप्पन २५६ तोले जलमें पाककरै ॥ १०२ ॥

तेनपादावशेषेणघृतप्रस्थंविपाचयेत्। दध्नःप्रस्थेनसंयोज्यसुधाक्षीरपलेनच ॥ १०३ ॥

जब चौथाई जल बाकी रहे तब छानकर उस जल के साथ घी चौंसठि ६४ तोले दही चौंसठि ६४ तोले तथा सेहुँड़ेका दूध चार ४ तोले मिलाकर पाककरै ॥ १०३ ॥

ततोघृतपलंदद्याद्यवागूमण्डमिश्रितम्। जीर्णेसम्यग्विरिक्तञ्चभोजयेद्रसभोजनम् ॥ १०४ ॥

जब पानी जलजाय केवल घृत बाकी रहै तब उतारकर रख छोड़े फिर यवागू अथवा मण्डके साथ चार तोले यह घी पीवे घीके पचजाने पर और इस के द्वारा अच्छी तरह विरेचन होजाने पर मांसके रसके साथ भोजन करै ॥ १०४ ॥

गुल्मकुष्ठोदरव्यङ्गशोफपाण्ड्वामयज्वरान्। शिवत्रंप्लीहानमुन्मादंघृतमेतद्व्यपोहति ॥ १०५ ॥

इति नीलिन्याद्यंघृतम्।

इस नीलिन्यादि घृतके सेवनसे गुल्म कुष्ठ उदर व्यंग शोथ पाण्डु ज्वर श्वेत कुष्ठ प्लीहा तथा उन्मादका नाश होता है ॥ १०५ ॥

इति नीलिन्यादिघृत ॥

कुक्कुटाश्चमयूराश्चतित्तिरिक्रौञ्चवर्त्तकाः। शालयोमदिरासर्पिर्वातगुल्मभिषग्जितम् ॥ १०६ ॥

मुर्गा मोर तीतुर कुररी तथा बटेर इन जीवोंका मांस शालिधान मदिरा तथा घी यह सब वातजगुल्मकी औषधि हैं ॥ १०६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हितमुष्णंद्रवंस्निग्धंभोजनंवातगु
ल्मिनाम् । समण्डवारुणीपानंपक्कं
वाधान्यकैर्जलम् ॥ १०७ ॥

वातज गुल्मवालों को उष्ण द्रव तथा स्निग्ध भोजन हित होताहै और मण्ड सहित वारुणी मदिरा अथवा धनियाके साथ पाक कियेहुये जलका पीना हित होताहै ॥ १०७ ॥

मन्देऽग्नौवर्द्धतेगुल्मोदीप्तेचाग्नौ
प्रशाम्यति । तस्मादन्नातिसौहि
त्यंकुर्य्यान्नातिविलङ्घितम् ॥१०८॥

अग्निके मन्द होनेपर गुल्म बढ़ता है और अग्निके दीप्त होनेपर गुल्म शान्त होताहै इससे गुल्मवाले को न बहुत तृप्तिपर्य्यन्त भोजन करावे और न बहुत लंघन करावे १०८॥

सर्वत्रगुल्मेप्रथमेस्नेहस्वेदोपपादि
ते । याक्रियाक्रियतेसिद्धिंसायाति
नविरूक्षिते ॥ १०९ ॥

सम्पूर्ण गुल्मों में पहिले स्नेहन तथा स्वेदन करके जो चिकित्सा कीजाती है वह सफल होती है किन्तु रूक्ष गुल्ममें जो चिकित्सा कीजातीहै वह सफल नहीं होतीहै १०९॥

भिषगात्ययिकंबुद्ध्वापित्तगुल्ममुपा
चरेत् । वैरेचनिकसिद्धेनपयसास
र्पिषापिवा ॥ ११० ॥

वैद्य पित्तज गुल्म को आत्ययिक (शीघ्र हानिकारक) जानकर विरेचनकारक औषधियोंके साथ पाक कियेहुये घी अथवा दूध केद्वारा चिकित्सा करे ॥ ११० ॥

रोहिणीकटुकानिम्बमधुकंत्रिफला
त्वचः । कार्षिकात्रायमाणाचपटो
लत्रिवृतोःपले ॥ १११ ॥

कुटकी नींबकी छाल मुलेठी हड़ बहेड़ा आमला तथा चिरायते के फल यह सब एक एक तोले परवल तथा निशोथ चार चार तोले ॥ १११ ॥

द्विपलञ्चमसूराणांसाध्यमष्टगुणेऽ
म्भसि । शृताच्छेषंघृतसमंसर्पिषश्च
चतुष्पलम् ॥ ११२ ॥

और मसूर आठ तोले इन सबको अठगुणे जलमें मिलाकर पाककरै जब सोलह तोले जल बाकीरहे तब उतारकर छान लेवे इस काढ़ेके साथ सोलह तोले घी ॥ ११२ ॥

पिबेत्संमूर्च्छितंतेनगुल्मःशाम्यति
पैत्तिकः । ज्वरतृष्णाचशूलञ्चभ्रमो
मूर्च्छारुचिस्तथा ॥ ११३ ॥
इति रोहिण्याद्यंघृतम् ।

पीने से पित्तज गुल्म ज्वर तृषा शूल भ्रम मूर्च्छा तथा अरुचिका नाश होताहै॥११३॥
इति रोहिण्यादि घृत ॥

जलेदशगुणेसाध्यंत्रायमाणाचतु
ष्पलम् । पञ्चभागस्थितंपूतंकल्कैः
संयोज्यकार्षिकैः ॥ ११४ ॥ रोहि
णीकटुकामुस्तात्रायमाणादुराल
भा । कल्कैस्तामलकीवीराजीवन्ती
चन्दनोत्पलैः ॥ ११५ ॥ रसस्या
मलकानाञ्चक्षीरस्यचघृतस्य..च ।
पलानिपृथगष्टाष्टौदत्त्वासम्य..वि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाचयेत् ॥ ११६ ॥ पित्तरक्तभवंगुल्मंवीसर्पंपैत्तिकंज्वरम्। हृद्रोगंकामलांकुष्ठंहन्यादेतद्घृतोत्तमम्॥११७॥

इति त्रायमाणाद्यंघृतम्।

दशगुणे जलमें सोलह तोले चिरायते के फलों को डालकर पकावे जब पंचमांश जल बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे फिर इस काढ़ेके साथ कुटकी नागरमोथा चिरायते के फल जवासा भूमि आमला काकोली जीवन्ती लालचन्दन तथा उत्पल इनका कल्क (चटनी) एक एक तोले और आमले का रस दूध तथा घी बत्तिस बत्तिस तोले मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छानके रख छोड़े इस उत्तम घृतके सेवनसे पित्तजगुल्म रक्तजगुल्म जहरवात पित्तजज्वर हृदयकेरोग कामला तथा कुष्ठका नाश होताहै ११४।११५।११६।११७।

इति त्रायमाणादिघृत ॥

रसेनामलकेक्षूणांघृतपादंविपाचयेत्। पथ्यापादंपिबेत्सर्पिस्तत्सिद्धंपित्तगुल्मनुत्॥ ११८ ॥

इति आम्लकाद्यंघृतम्।

आमले तथा ईखके रसके साथ सोलह २ तोले घी तथा हड़का कल्क मिलाकर पाक करे जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रह जाय तब छानकर रख छोड़े इस घीके सेवन से पित्तज गुल्मका नाश होताहै ॥ ११८ ॥

इति आमलकादि घृत ॥

द्राक्षांमधूकंखर्जूरंविदारींसशतावरीम्। परुपकाणित्रिफलांसाधयेत्पलसंमिताम् ॥ ११९ ॥ जलाढके पादशेषेरसमामलकस्यच। घृताम्लक्षुरसंक्षौद्रमभयाकल्कपादिकम्॥ १२० ॥ साधयेत्तद्घृतंसिद्धंशर्कराक्षौद्रपादिकम्। प्रयोगात्पित्तगुल्मघ्नंसर्वपित्तविकारनुत् ॥ १२१ ॥

इति द्राक्षाद्यंघृतम्।

दाख मुलेठी खजूर विलाईकन्द शतावर फालसा हड़ बहेड़ा तथा आमला इन सबको चार चार तोले लेकर दो सौ छप्पन २५६ तोले जल में डालकर पाक करै जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे इस काढ़े के साथ आमले का रस घी ईखका रस शहद हड़का कल्क मिलाकर पाक करै जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे फिर चतुर्थांश शहद तथा शक्कर मिलाकर इस घृत का सेवन करने से पित्तजगुल्म तथा पित्तज सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है॥ ११९। १२०। १२१ ॥

इति द्राक्षादि घृत ॥

वृषंसमूलमापोथ्यपचेदष्टगुणेजले। शेषेऽष्टभागेतस्यैवपुष्पकल्कंप्रदापयेत् ॥ १२२ ॥ तेनसिद्धंघृतंशीतंसक्षौद्रंपित्तगुल्मनुत्। रक्तपित्तज्वरश्वासकासहृद्रोगनाशनम्॥१२३॥

इति वासाघृतम्।

रूसे के पञ्चाङ्ग को कूटकर अठगुणे जल में पाककरै जब अष्टमांश जल बाकी रहे तब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उतारकर छानलेवे फिर उस काढ़ेके साथ रूसे के पुष्पोंका कल्क तथा घी मिलाकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतार कर छानलेवे शहदके साथ इस घृतका सेवन करने से पित्तजगुल्म रक्तपित्तज्वर श्वास खांसी तथा हृदयके रोगोंका नाश होता है॥१२२।१२३॥

इति वासाघृत॥

द्विपलंत्रायमाणायाजलद्विप्रस्थसाधितम्। अष्टभागस्थितंपूतंकोष्णं क्षीरसमंपिबेत्॥ १२४॥

एकसौ अट्ठाइस १२८ तोले जल में आठ तोले चिरायते के फल डालकर पाक करै जब अष्टमांश जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर कुछ उष्ण इस काढ़ेमें समभाग दूध मिलाकर पीवे॥ १२४॥

पिबेदुपरितस्योष्णंक्षीरमेवयथाबलम्। तेननिर्हृतदोषस्यगुल्मःशाम्यतिपैत्तिकः॥ १२५॥

इति त्रायमाणाद्यंघृतम्।

और उसके ऊपर बलके अनुसार उष्ण दूध पीवे इसके द्वारा दोषोंके निकल जाने से पित्तजगुल्मका नाश होता है॥ १२५॥

द्राक्षाभयारसंगुल्मेपैत्तिकेसगुडंपिबेत्। लिह्यात्कम्पिल्यकंवापिवेरेकार्थंमधुद्रवम्॥ १२६॥

पित्तजगुल्म में दाख तथा हड़ के काढ़े में गुड़ डालकर पीवे अथवा कबीले का चूर्ण शहद में मिलाकर विरेचनके लिये चाटे॥ १२६॥

दाहप्रशमनोऽभ्यङ्गःसर्पिषापित्तगुल्मिनाम्। चन्दनाद्येनतैलेनतैलेनमधुकस्यवा॥ १२७॥

पित्तजगुल्ममें जो शूल होताहोय तो घी चन्दनादि तैल अथवा मुलेठीके तैलका मर्दन करै॥ १२७॥

येचपित्तज्वरार्त्तानांसतिक्ताःक्षीरवस्तयः। हितास्तेपित्तगुल्मिभ्योवक्ष्यन्तेयेचसिद्धिषु॥ १२८॥

पित्तजज्वरवालों के लिये जो तिक्त औषधि युक्त दूध की वस्ति कहीगई हैं और सिद्धिस्थानमें जो वस्ति कही जायँगी वह पित्तज गुल्ममें भी हित होती हैं॥ १२८॥

शालयोजाङ्गलंमांसंगव्याज्येपयसीघृतम्। खर्जूरामलकंद्राक्षादाडिमंसपरूषकम्॥ १२९॥

पित्तजगुल्म में शालिधान जांगल जीवों का मांस बकरी तथा गऊका दूध तथा घी खजूर आमला दाख दाड़िम और फालसा॥ १२९॥

आहारार्थेप्रयोक्तव्यंपानार्थेसलिलंशृतम्। बलाविदारीगन्धाद्यैःपित्तगुल्मचिकित्सितम्॥ १३०॥

यह सब वस्तु भोजन के लिये और गर्म किया हुआ जल पीने को देना चाहिये वरियारा तथा बिलाईकन्द आदि के द्वारा पित्तज गुल्मकी चिकित्सा करनीचाहिये॥ १३०॥

आमान्वयेपित्तगुल्मेसामेवा कफवातिके। यवागूभिःषडैर्यूषैः[illegible]क्ष्योऽग्निविलङ्घिते॥ १३१॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आमयुक्त पित्तज कफज तथा वातजगुल्म में लंघनके द्वारा आम दोषको निवृत्त करके यवागू तथा षड्यूषके द्वारा अग्नि को प्रज्व-लितकरै ॥ १३१ ॥

शमप्रकोपौदोषाणांसर्वेषामग्निसंश्रितौ। तस्मादग्निसदारक्षेन्निदानानिचवर्जयेत् ॥ १३२ ॥

सम्पूर्ण दोषों का कुपित होना तथा शान्त होना अग्निके आश्रित है इससे सदैव अग्नि की रक्षा करै और निदानों का त्याग करै ॥ १३२ ॥

वमनार्हायवमनंप्रदद्यात्कफगुल्मिने। स्निग्धस्विन्नशरीरायगुल्मेशैथिल्यमागते ॥ १३३ ॥

जो कफज गुल्मवाला वमन के योग्यहो उसे वमन कराना चाहिये कफज गुल्मवाले को स्नेहन तथा स्वेदन कराके गुल्मके शिथिल होजानेपर ॥ १३३ ॥

परिवेष्ट्यप्रदीप्तांस्तुबल्वजानथवाकुशान्। भिषक्कुम्भेसमावाप्यगुल्मंघटमुखेक्षिपेत् ॥ १३४ ॥

वस्त्रकेद्वारा गुल्म को लपेटदे फिर वैद्य एक घड़ेमें जलतेहुये बल्वज (बगईनाम तृण विशेष) तथा कुश डालकर घड़ेका मुख गुल्म स्थानमें लगाकर दबा देवे ॥ १३४ ॥

संगृहीतोयदागुल्मस्तदाघटमथोद्धरेत्। वस्त्रान्तरंततःकृत्वाभिन्द्याद्गुल्मंप्रमाणवित् ॥ १३५ ॥

जब इस प्रकार करने से गुल्म हाथसे पकड़नेके योग्य उन्नत होजाय तब उस घड़े को हटालेवे तदनन्तर गुल्मके प्रमाणका जानने-वाला वैद्य वस्त्रसे गुल्म को लपेटकर विदीर्ण करदे ॥ १३५ ॥

विमार्गजंयदापश्येद्यथालाभंप्रपीडयेत्। मृद्नीयाद्गुल्ममेवैकंनत्वन्त्रहृदयंस्पृशेत् ॥ १३६ ॥

और गुल्म को विपरीत मार्ग में जब देखे तब जितना हाथमें पकड़सके उतना खूब दबादेवे परन्तु केवल गुल्म कोही दबावै हृदय का स्पर्श न होनेपावे ॥ १३६ ॥

तिलैरेरण्डातसीबीजसर्षपैःपरिलिप्यच। श्लेष्मगुल्ममयःपात्रैःसुखोष्णैःस्वेदयेद्भिषक् ॥ १३७ ॥

तिल एरण्ड अलसी तथा सरसों इनका लेप करके वैद्य कुछ उष्ण लोहेके पात्रोंसे कफजगुल्ममें स्वेदनकरै (स्वेद निकाले) १३७॥

सव्योषक्षारलवणंदशमूलीशृतंघृतम्। कफगुल्मंजयत्याशुसहिंगुविडदाडिमम् ॥ १३८ ॥

इति दशमूलीघृतम्।

सोंठि पीपरि मिर्च जवाखार सैंधव लवण हींग विड़लवण तथा अनार इनके साथ दशमूली घृत (दशमूलके साथ पाक कियाहुआ घी) का सेवन करने से कफज गुल्मका शीघ्रही नाश होता है ॥ १३८ ॥

इति दशमूलीघृत ॥

भल्लातकानांद्विपलंपञ्चमूलंपलो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्मितम्। साध्यंविदारीगन्धाद्यमा पोथ्यसलिलाढ़के॥ १३९॥

भिलावां आठ तोले दशमूलकी दशौं औषध चार चार तोले और विदारी गन्धादि गणकी सब औषध चार चार तोले इन सब औषधियों को कूटकर दोसौ छप्पन २५६ तोले जलमें डालके पाककरै॥ १३९॥

पादशेषेरसेतस्मिन्पिप्पलींनागरंव चाम्। विडङ्गंसैन्धवंहिंगुयावशूकं विडंशटीम्॥ १४०॥

जब चौथाई जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़ेके साथ पीपल सोंठि बच वायबिड़ंग सैंधव लवण हींग जवाखार विड़ लवण कचूर॥ १४०॥

चित्रकंमधुकंरास्नांपिष्ट्वाकर्षसमंभि षक्। प्रस्थञ्चपयसःकृत्वाघृतप्रस्थं विपाचयेत्॥ १४१॥

चीता मुलेठी तथा रासना इन औषधियों का कल्क एक एक तोले दूध चौंसठि तोले और घी चौंसठि तोले मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छान लेवे॥ १४१॥

एतद्भल्लातकघृतंकफगुल्महरंपरम्। प्लीहपाण्ड्वामयश्वासग्रहणीरोगका सनुत्॥ १४२॥

इति भल्लातकाद्यंघृतम्।

इस भल्लातकादि घृतके सेवनसे कफज गुल्म प्लीहा पाण्डुरोग श्वास ग्रहणी दोष तथा खाँसीका नाश होता है॥ १४२॥

इति भल्लातकादिघृत॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकना गरैः। पलिकैःसयवक्षारैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्॥ १४३॥ क्षीरप्रस्थञ्च तत्सर्पिर्हन्तिगुल्मंकफात्मकम्। ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नंप्लीहकासज्वराप हम्॥ १४४॥

इति पञ्चकोलघृतम्।

पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि और यवाखार इन सब औषधियों को चार चार तोले लेकर चौंसठि तोले दूध तथा चौंसठि तोले घीमें मिलाकर पाककरै जब दूध जल जाय केवल घी बाकीरहै तब उतारकर छान लेवे इस घृतके सेवन से कफज गुल्म ग्रहणी दोष पाण्डुरोग प्लीहा खाँसी तथा ज्वर का नाश होता है॥ १४३।१४४॥

इति पंचकोलघृत॥

त्रिवृतांत्रिफलांदन्तींदशमूलंपलो न्मितम्। जलेचतुर्गुणेपक्त्वाचतु र्भागस्थितंरसम्॥ १४५॥

निशोथ हड़ बहेड़ा आमला जमालगोटे की जड़ और दशमूल इन सब औषधियों को चार चार तोले कूटकर चौगुणे जलमें डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे॥ १४५॥

सर्पिरेरण्डजंतैलंक्षीरञ्चैकत्रसाधयेत्। ससिद्धोमिश्रकस्नेहःसक्षौद्रःकफगु ल्मनुत्॥ १४६॥ कफवातविबन्धे... कुष्ठप्लीहोदरेषुच। प्रयोज्योमिश्र... स्नेहोयोनिशूलेषुचाधिकम्॥ १...

इति मिश्रकःस्नेहः।

...anamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर इस काढ़े के साथ समभाग घी रेंडी का तैल तथा दूध मिलाकर पाककरै जब दूध तथा काढ़ा जलजाय केवल घी तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इस मिश्रक नाम स्नेहमें शहद मिलाकर इसका सेवन करने से कफजगुल्म कफवातजविबन्ध कुष्ठ प्लीहा उदररोग तथा योनिशूलका नाश होता है ॥ १४६ । १४७ ॥

इति मिश्रकस्नेह ॥

यदुक्तंवातगुल्मघ्नंस्रंसनंनीलिनीघृतम् । द्विगुणंतद्विरेकार्थंप्रयोज्यंकफगुल्मिनाम् ॥ १४८ ॥

वातजगुल्ममें स्रंसनके निमित्त जो नीलिन्यादि घृत कहागया है वही घृत कफजगुल्म में विरेचन के निमित्त द्विगुण पिलाना चाहिये ॥ १४८ ॥

सुधाक्षीरद्रवेचूर्णंत्रिवृतायाःसुभावितम् । कार्षिकंमधुसर्पिर्भ्यांलीढ्वासाधुविरिच्यते ॥ १४९ ॥

निशोथके चूर्ण को सेंहुड़े के दूधमें घोटकर तोलेभर चूर्ण शहद तथा घीके साथ चाटने से अच्छे प्रकार विरेचन होताहै ॥ १४९ ॥

जलद्रोणेविपक्वव्याविंशतिःपञ्चचाभयाः । दन्त्याःपलानितावन्ति चित्रकस्यतथैवच ॥ १५० ॥

समूची हड़ पच्चीस जमालगोटे की जड़ सौ तोले और चीता सौ तोले इन सबको एक हजार चौबीस १०२४ तोले जलमें डालकर पाककरै ॥ १५० ॥

अष्टभागस्थितंतच्चरसंपूतमधिक्षिपेत् । दन्तीसमंगुडंपूतंक्षिपेत्तत्राभयाश्रताः ॥ १५१ ॥ तैलार्द्धकुडवश्चैव त्रिवृतायाश्चतुष्पलम् । चूर्णितंपलमेकञ्चपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥ १५२ ॥ तत्साध्यंलेहवच्छीतेतस्मिंस्तैलसमंमधु । क्षिपेच्चूर्णपलञ्चैकंत्वगेलापत्रकेशरात् ॥ १५३ ॥

जब अष्टमांश जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़ेमें वही पच्चीस हड़ सौ तोलें गुड़ आठ तोले तिलोंका तैल सोलह तोले निशोथ चार तोले पीपलका चूर्ण और चार तोले सोंठिका चूर्ण मिलाकर पाककरै जब अवलेह कीसी चासनी होजाय तब उतारले फिर शीतल होजानेपर उसमें शहद आठ तोले और दालचीनी छोटी इलायची तेजपात तथा नागकेशर का चूर्ण चार तोले मिलावे ॥ १५१ । १५२ । १५३ ॥

ततोलेहपलंलीढ्वाजग्ध्वाचैकांहरीतकीम् । सुखंविरिच्यतेस्निग्धोदोषप्रस्थमनामयः ॥ १५४ ॥

इसमें से प्रतिदिन एक हड़ खाकर चार तोले अवलेह चाटने से चौंसठि तोले मल विरेचनकेद्वारा निकलता है ॥ १५४ ॥

गुल्मंश्वयथुमर्शांसिपाण्डुरोगमरोचकम् । हृद्रोगंग्रहणीदोषंकामलांविषमज्वरम् ॥ १५५ ॥

और गुल्म शोथ बवासीर पाण्डुरोग अरु-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तोले इन सब का दूना निशोथ और निशोथ की तिगुनी ब्राह्मी इन सब औषधियोंका सेवन करनेसे त्वचा का सुन्न होजाना नष्ट होताहै ॥ ६७ ॥

इति सुप्तिकुष्ठ ॥

नवनीतकप्रयोगोरसेनजात्याःसमाक्षिकःपरमः । सप्तदश कुष्ठघातीमाक्षिकधातुश्चमूत्रेण ॥ ६८ ॥

चमेली के रसमें मक्खन तथा शहद मिलाने से उत्तम प्रयोग होताहै और गोमूत्र में सोनामाखी तथा शहद मिलाकर सेवन करने से सत्रह प्रकारके कुष्ठ नाश होते हैं ॥ ६८ ॥

गन्धकयोगसुवर्णमाक्षिकयोगादेव । सर्वव्याधिविनाशनमद्यात्कुष्ठीरसञ्चनिगृहीतम् ॥ ६९ ॥

कुष्ठ रोगवाला पुरुष सम्पूर्ण रोगोंके नाश करनेवाला रस गन्धक तथा सोनामाखी का योग करके खावे ॥ ६९ ॥

वज्रंशिलाजतुसहितंसहितंवायोगराजेन । सर्वव्याधिहरणार्थमद्यात्कुष्ठी निगृह्यनित्यञ्च ॥ ७० ॥

कुष्ठरोगीको चाहिये कि प्रतिदिन नियमसे योगराजके साथ शिलाजीतका सेवनकरे इस से सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं ॥ ७० ॥

खदिरसुरदारुसारंश्रपयित्वातद्रसेन तोयार्थम् । क्षौद्रप्रस्थेकार्यःकार्य्येते चाष्टपालिकेच ॥ ७१ ॥ ततश्चायश्चूर्णनामष्टपलंप्रक्षिपेत्तथामूलानि । त्रिफलैलेत्वङ्मरिचंपत्रंकनकाक्षकर्षांशम् ॥ ७२ ॥ मत्स्यण्डिकामधुसमातन्मासमायसेभाण्डे । मध्वासवमाचरतःकुष्ठकिलासेशमंयातः ॥ ७३ ॥

इति मध्वासवः ।

कत्था तथा देवदारुके सारका काढ़ा करके उसमें शहद एकसौ अट्ठाइस तोले कत्था तथा देवदारु का सार बत्तिस तोले लोहे का चूर्ण बत्तिस तोले हड़ बहेड़ा आमला छोटीइलायची दालचीनी मिर्च तेजपात तथा धतूरे का चूर्ण एक एक तोले तथा शक्कर एकसौ अट्ठाइस तोले डालकर लोहेके पात्रमें महीने भर रक्खे इसे मध्वासव कहते हैं इसके सेवनसे कुष्ठ तथा सेंहुवेका नाश होताहै ॥ ७१।७२।७३ ॥

इति मध्वासव ॥

खदिरकषायद्रोणंकुम्भेघृतभावितेसमारोप्य । द्रव्याणिचूर्णितानित्वष्टपलिकान्यत्रदेयानि ॥ ७४ ॥ त्रिफलाव्योषविडङ्गरजनीमुस्ताटरूषकेन्द्रयवसौवर्णीश्च । तथात्वक्छिन्नरुहाचेतितन्मासंनिदधीतधान्यमध्ये ॥ ७५ ॥

कत्थे का एक हजार चौबिस तोले काढ़ा जिसमें घी रक्खा जाताहो उस पात्र में रक्खे फिर उसमें हड़ बहेड़ा आमला सोंठि पीपरि मिर्च बायविड्ङ्ग हल्दी नागरमोथा [illegible] इन्द्रयव धतूरा दालचीनी तथा गिलोय [illegible] इन सब औषधियोंका चूर्ण बत्तिस बत्तिस [illegible] तोले डाल कर महीने भरतक अन्नके ढेरमें रक्खे [illegible]

प्रातःप्रातःपिबेत्ततोयुक्त्यामासेनम हाकुष्ठंहन्त्येवाल्पन्तु । पक्षेणार्शः श्वासभगन्दरकासकिलासप्रमेह शोषांश्च । नाभवतिकनकवर्णः पीत्वारिष्टंकनकबिन्दुम् ॥ ७६ ॥

इति कनकबिन्द्वरिष्टम् ॥

तदनन्तर युक्तिपूर्वक प्रातःकाल इसऔषध को पीवे एक महीने भर इस औषध का सेवन करने से महाकुष्ठों का अवश्य नाश होता है पक्षभर सेवन करनेसे क्षुद्र कुष्ठोंका नाश होता है इसके सेवनसे ववासीर श्वास भगन्दर खांसी सेंहुवां प्रमेह तथा शोपका नाश होताहै और इस कनकविन्दु नाम अरिष्टके सेवनसे मनुष्य का वर्ण सुवर्णके समान होजाताहै ॥ ७६ ॥

इति कनकविंदुअरिष्ट ॥

कुष्ठेष्वनिलकफकृतेष्वेवंपेयास्त थापिपित्तेषु । कृतमालक्वाथश्चा प्येषविशेषात्कफकृतेषु ॥ ७७ ॥

वात कफ कुष्ठमें इसकी पेया पीनी चाहिये व पित्तकोष्ठमें कृतमालकाढ़ा और विशेष करके कफकुष्ठमें यह कनकविन्दुअरिष्ट का सेवन करना चाहिये ॥ ७७ ॥

त्रिफलासवश्चगौडःसचित्रकःशिव त्ररोगकुष्ठघ्नः । क्रमुकदशमूलद न्तीवराङ्गमधुयोगसंयुक्तः ॥ ७८ ॥

हड़ बहेड़ा आमला चीता सुपारी दशमूल जमालगोटे की जड़ दालचीनी शहद तथा गुड़ इन सब औषधियों का आसव कुष्ठ तथा श्वेत कुष्ठका नाश करताहै ॥ ७८ ॥

लघूनिचान्नानिहितानिविद्यात्कु ष्ठेषुशाकानिचतिक्तकानि । भल्ला तकैश्चत्रिफलैः सनिम्बैर्युक्तानिचा न्नानिघृतानिचैव ॥ ७९ ॥ पुराण धान्यान्यथजाङ्गलानिमांसानिमुद्गा श्चपटोलयुक्ताः । शस्तानगुर्वम्ल पयोदधीनि नानूपमत्स्यानगुडा स्तिलाश्च ॥ ८० ॥

कुष्ठरोग में हलका अन्न तिक्तशाक और भिलावां त्रिफला तथा नींवयुक्त घृत तथा अन्न और पुराना अन्न जांगल जीवोंका मांस मूंग तथा परवल यह सब वस्तु हित होती हैं और भारी वस्तु खटाई दूध दही अनूपदेशके जीवोंका मांस मछली गुड़ तथा तिल यहसब वस्तु अहित होती हैं ॥ ७९ । ८० ॥

एलाकुष्ठंदार्वीशतपुष्पाचित्रकंवि डंगश्च । कुष्ठालेपनमिष्टञ्चरसाञ्ज नाभयाचैव ॥ ८१ ॥

छोटी इलायची कूट दारुहल्दी सौंफ चीता वायविडङ्ग रसौंत तथा हड़ इन औषधियों का लेप कुष्ठरोग में हित होताहै ॥ ८१ ॥

चित्रकमेलांविम्बींवृषकंत्रिवृदर्कना गरकम् । चूर्णीकृतमष्टाहंभावयित व्यंपलाशस्य ॥ ८२ ॥ क्षारेणग वांमूत्रस्रुतेनतेनास्यमण्डलान्या शु । भिद्यन्तेविलयन्तिचलिप्ता न्यर्काभितप्तानि ॥ ८३ ॥

चीता छोटी इलायची कुंदुरू रूसा निशो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थ मदार तथा सोंठि इनके चूर्णको गोमूत्रके द्वारा टपकाये गये ढाखके क्षार में आठ दिन तक घोटै फिर उसको शरीरमें लेपकरके धूप में बैठे इससे शीघ्रही मण्डलकुष्ठ भिन्नहोकर नष्ट होजाता है ॥ ८२ । ८३ ॥

मांसीमरिचंलवणंरजनीतगरंसुधा गृहधूमः । मूत्रंपित्तंक्षारःपलाशः कुष्ठनुल्लेपः ॥ ८४ ॥

जटामासी मिर्च सैंधवलवण हल्दी तगर सेंहुड़ा घरका धुआं गोमूत्र गौका पित्ता तथा ढाख का क्षार इन औषधियों का लेपकरने से कुष्ठका नाश होताहै ॥ ८४ ॥

त्रपुसीसमयश्चूर्णमण्डलनुत्फल्गु चित्रकबृहती । गोधारसःसलवणं दारुचमूत्रञ्चमण्डलनुत् ॥ ८५ ॥

राँगा सीसा लोहा चीता कठगूलर और भटकटैया इनका लेप करने से मण्डलकुष्ठ का नाश होताहै गोहका रस सैंधव लवण देवदारु तथा गोमूत्र इनका लेप करने से मण्डलकुष्ठ का नाश होता है ॥ ८५ ॥

कदलीपलाशपाटलिनिचुलक्षारा म्भसाप्रसन्नेन । मांसेपुलोयकार्य्य कार्य्यंपिष्टेचकिण्वेच ॥ ८६ ॥

केला ढाख पाढ़र तथा समुद्रफल इन औषधियोंके क्षारके जलमें उर्द तथा किण्व(चावल आदि द्रव्य के औटाने से उठेहुये खँमीर से वना हुआ सुराबीज) को पीसकर ॥८६॥

तैर्मोदकःसुजातःकिण्वैर्जनितप्रले पनंशस्तम् । मण्डलकुष्ठविनाशा नमातपसंस्थेक्रिमिघ्नञ्च ॥ ८७ ॥

लड्डू बनालेवें इन किण्वज लड्डुओं का लेप श्रेष्ठ है और धूप में बैठने से मण्डलकुष्ठ तथा कृमियों का नाश होता है ॥ ८७ ॥

मुस्तंमदनंत्रिफलाकरञ्जआरग्वधं कलिङ्गयवाः। दार्वीससप्तपर्णस्ना नंसिद्धार्थकंनाम ॥ ८८ ॥

नागरमोथा मैनफल हड़ बहेड़ा आमला कंजा अमलतास इन्द्रयव दारुहल्दी छितवन तथा सरसों इन औषधियों के काढ़े के द्वारा स्नान करने से ॥ ८८ ॥

एषकषायोवमनंविरेचनंवर्णकस्त थोद्धर्षः । त्वग्दोषकुष्ठशोफप्रधा वनःपाण्डुरोगघ्नः ॥ ८९ ॥

और इन्हीं के काढ़े को पीकर वमन तथा विरेचन करने से और इन्हीं औषधियों की मालिश करने से वर्ण, श्रेष्ठ होजाता है और त्वचाके दोष कुष्ठ शोथ तथा पाण्डुरोग का नाश होताहै ॥ ८९ ॥

कुष्ठंकरञ्जबीजान्येडगजःकुष्ठसूद नोलेपः । प्रपुन्नाडबीजसैन्धवरसा ञ्जनकपित्थलोध्राश्च ॥ ९० ॥

कूट कंजाके बीज तथा चकवड़ इनका लेप करने से कुष्ठका नाश होता है चकवड़के बीज सैंधव लवण रसौंत कैथा लोध ॥ ९० ॥

करवीरमूलबल्कःकुटजकरञ्जयोः पीपलि लंत्वचोदार्व्याः । सुमनःप्रवालता इन क्तोलेपःकुष्ठापहःसिद्धः ॥ ९१ ॥ इन ...होले हैं ॥

कनेरकी जड़की छाल इन्द्रयव कं... ... विउ ४१ ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हल्दी की छाल और चमेली की पत्ती इन औषधियों का लेप करनेसे अवश्यही कुष्ठका नाश होताहै ॥ ९१ ॥

लोध्रस्यधातकीनांवत्सकबीजस्य नक्तमालस्य। कल्कश्चमालतीनां कुष्ठेषूद्वर्त्तनालेपः ॥ ९२ ॥

लोध धवई इन्द्रयव कंजा तथा चमेली इन औषधियों को एकसाथ पीसकर उबटना लगाने से तथा लेप लगाने से कुष्ठ का नाश होता है ॥ ९२ ॥

शैरीषीत्वक्पुष्पंकार्पास्याराजवृक्षपत्राणि। पिष्टाचकाकमाचीचतुर्विधःकुष्ठनुल्लेपः ॥ ९३ ॥

इतिचत्वारोलेपाः।

सिरस की छाल कपासके पुष्प अमलतास की पत्ती तथा मकोह इन औषधियों को अलग अलग पीसकर कुष्ठ में लेपकरै इस चार प्रकारके लेपसे कुष्ठका नाश होताहै ॥ ९३ ॥

दार्व्यारसाञ्जनस्यचनिम्बपटोलस्य खदिरसारस्य। आरग्वधवृक्षकयोस्त्रिफलायाःसप्तपर्णस्य ॥ ९४ ॥

दारुहल्दी तथा रसौंत का काढ़ा नींबकी छाल तथा परवल का काढ़ा कत्थेके सारका काढ़ा अमलतास तथा इन्द्रयवका काढ़ा त्रिफला का काढ़ा छितवनका काढ़ा ॥ ९४ ॥

इतिषट्कषाययोगाःकुष्ठघ्नानिर्दिष्टाःसप्तमश्चतिनिशस्य। स्नानेपानेचमताःस्तथाष्टमश्चाश्वमारस्य ९५॥

इन छः काढ़ों का योग तथा सातवां तेंदुवा का काढ़ा और आठवां तेंदुवा के सार का काढ़ा यह आठोंकाढ़े कुष्ठनाशक हैं यह पीने चाहिये और इनके द्वारा स्नान करना चाहिये ॥ ९५ ॥

आलेपनंप्रघर्षणमवचूर्णनमेतएव चकषायाः। तैलघृतपाकयोगेचेष्यन्तेकुष्ठशान्त्यर्थम् ॥ ९६ ॥

और कुष्ठको शान्त करने के निमित्त इन्हीं आठों ८ काढ़ों की औषधियां लेप प्रघर्षण (रगड़ना) अवचूर्णन (बुरकाना) और तैल तथा घृत का पाक करना इनकार्य्यों में हित होती हैं ॥ ९६ ॥

त्रिफलानिम्बपटोलमञ्जिष्ठारोहिणी वचारजनी। एषकषायोऽभ्यस्तोहिनास्तिकफपित्तजंकुष्ठम् ॥ ९७ ॥

हड़ बहेड़ा आमला नींबकी छाल परवल मँजीठ कुटकी बच तथा हल्दी इन औषधियों के काढ़े का नित्य सेवन करनेसे कफपित्तज कुष्ठ का नाश होता है ॥ ९७ ॥

एतैरेवचसर्पिःसिद्धंवातोल्बणंजयतिकुष्ठम्। एषचकल्पोदृष्टःखदिरासनदारुनिम्बानाम् ॥ ९८ ॥

और इन्हीं औषधियों के साथ पाक किया गया घी अधिक वातवाले कुष्ठको नष्टकरता है कत्था विजयसार देवदारु तथा नींब इन औषधियों की भी इसीतरह कल्पना करनी चाहिये ॥ ९८ ॥

कुष्ठार्कतुत्थकट्फलमूलकबीजानि रोहिणीकटुका। कुटजफलोत्पल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुस्तंबृहतीकरवीरकासीसम्॥९९॥

कूट मदार तूतिया कायफल मूलीके बीज कुटकी हड़ इन्द्रयव नीलकमल नागरमोथा भटकटैया कनेर कसीस॥ ९९॥

एडगजनिम्बपाठादुरालभाचित्र कोविडङ्गश्च। तिक्तेक्ष्वाकुबीजंक म्पिल्लकसर्षपवचादार्वी॥ १००॥

चकवड़ नींब पाढ़र यवासा चीता बायविड़ंग कडुवी लौकी के बीज कबीला सरसों वच तथा दारुहल्दी॥ १००॥

एतैस्तैलंसिद्धंकुष्ठघ्नंयोगएषवालेपः। उद्धर्त्तनंप्रघर्षणमवचूर्णनमेष एवेष्टः॥ १०१॥

इन औषधियों के साथ पाक कियागया तैल कुष्ठनाशक होता है और इन्हीं औषधियों के द्वारा लेप उवटना प्रघर्षण (रगड़ना) तथा अवचूर्णन (बुरकाना) करनेसे कुष्ठका नाश होता है॥ १०१॥

श्वेतकरवीरकरसोगोमूत्रंचित्रको विडङ्गश्च। कुष्ठेषुतैलयोगःसिद्धो यंसम्मतोभिषजाम्॥ १०२॥

इति श्वेतकरवीराद्यंतैलम्।

श्वेत कनेरकारस गोमूत्र चीता तथा बायविड़ंग इनके साथ पाक कियागया तैल कुष्ठों के नाश करनेमें यह वैद्यलोगोंको बहुत प्रिय है॥ १०२॥

इति श्वेतकरवीरादितैल॥

श्वेतकरवीरपल्लवमूलत्वग्वत्सकवि डङ्गश्च। कुष्ठार्कमूलसर्षपशिग्रुत्वग्रोहिणीकटुका॥ १०३॥

श्वेत कनेर की पत्ती तथा जड़की छाल इन्द्रयव बायविड़ंग कूट मदारकी जड़ सरसों सहिंजनकी छाल तथा कुटकी॥ १०३॥

एतैस्तैलंसाध्यंकल्कैःपादांशिकैर्गवांमूत्रम्। दत्त्वातैलचतुर्गुणमभ्यङ्गःकुष्ठकण्डूघ्नः॥ १०४॥

इति श्वेतकरवीरपत्राद्यंतैलम्।

इन औषधियों के चतुर्थांश (चौथाई) कल्क तथा चतुर्गुण गोमूत्रके साथ पाक कियेगये तैलको शरीरमें मलने से कुष्ठ तथा खुजली का नाश होताहै॥ १०४॥

इति श्वेतकरवीरपत्रादि तैल॥

तिक्तेक्ष्वाकुबीजंद्वेतुत्थेरोचनाहरिद्रे द्वे। बृहतीफलमेरण्डःसविशालश्चित्रकोमूर्वा॥ १०५॥

कडुवी लौकी के बीज दोनों प्रकार का तूतिया गोरोचन हल्दी दारुहल्दी भटकटैया के फल अरण्ड इन्द्रायण चीता मरोरफली॥ १०५॥

कासीसहिंगुशिग्रुत्र्यूषणसुरदारुतुम्बुरुविडङ्गम्। लांगलकंकुटजत्वक्कटुकाख्यारोहिणीचैव॥ १०६॥

कसीस हींग सहिंजन सोंठि पील पीपर देवदारु धनियां बायविड़ंग करिहा[illegible] की छाल कुटकी॥ १०६॥

सर्षपकल्कैरेतैर्मूत्रेचतुर्गुणे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कण्डूकुष्ठविनाशनमभ्यङ्गान्मारुत कफघ्नंतैलम् ॥ १०७ ॥

इति तिक्तेक्ष्वाकुतैलम् ।

और सरसों इनके कल्क तथा चतुर्गुण गोमूत्र के साथ पाक कियेगये तैलको शरीरमें मलने से खुजली कुष्ठ वायु तथा कफ का नाश होताहै ॥ १०७ ॥

इति तिक्तेक्ष्वाकुतैल ॥

कनकक्षीरीशैलाभार्ङ्गीदन्तीफला निमूलञ्च । जातीफलानिप्रवालसर्ष पलशुनविडङ्गकरञ्जत्वक् ॥ १०८ ॥

धनूरा दूधवाले वरगद आदि वृक्ष छरीला भारंगी जमालगोटा जमालगोटे की जड़ जायफल मूंगा सरसों लहसुन वायविड़ंग कंजा की छाल ॥ १०८ ॥

सप्तच्छदार्कपल्लवमूलत्वङ्निम्बचित्रकास्फोताः ॥ गुञ्जैरण्डबृहतीमूलकसुरसार्जकफलानि ॥ १०९ ॥

छितवनकी छाल मदार के पत्ते जड़ तथा छाल नींब की छाल चीता विष्णुकान्ता घुंघची अरण्ड भटकटैया मूली सुरस श्वेत बवई के फल ॥ १०९ ॥

कुष्ठंपाठामुस्तंतुम्बुरुमूर्वावचाःसषड्ग्रन्थाः । एडगजकुटजशिग्रुत्र्यूषण भल्लातकक्षवकाः ॥ ११० ॥

कूट पाढ़र नागरमोथा धनियां मरोरफली वच कचूर चकवड़ कुरैया सहिंजन सोंठि पीपल मिर्च भिलावाँ नकछिकनी ॥ ११० ॥

हरितालमवाक्पुष्पीतुत्थंकम्पिल्ल कोऽमृतासंज्ञः । सौराष्ट्रीकासीसंदार्वीत्वक्सर्जिकालवणम् ॥ १११ ॥

हरताल अवाक्पुष्पी (सौंफ) तूतिया कवीला गिलोय सोरठी मिट्टी सीसा दारुहल्दी की छाल सज्जी तथा सैंधव लवण ॥ १११ ॥

कल्कैरेतैस्तैलंकरवीरमूलकपल्लवकषाये । सार्षपमथवातैलंगोमूत्रचतुर्गुणंसाध्यम् ॥ ११२ ॥

इन औषधियों के कल्क कनेरकी जड़ तथा पत्तियों के काढ़े तथा चतुर्गुण गोमूत्र के साथ कडुवे तैल का पाक करै ॥ ११२ ॥

स्थाप्यंकटुकालाबूनितत्सिद्धंतेना स्यमण्डलान्याशु । भिन्द्याद्वि षगभ्यङ्गात्क्रिमींश्च कण्डूंविनिह न्यात् ॥ ११३ ॥

इतिकनकक्षीरतैलम् ।

फिर उस तैलको कडुवी लौकी में रक्खे इस तैलका मर्दन कराके वैद्य मण्डल खुजली तथा क्रिमियोंका शीघ्रही नाश करे ॥ ११३ ॥

इति कनकक्षीर तैल ॥

कुष्ठंतमालपत्रंमरिचंसमनःशिलंस कासीसम् । तैलेनयुक्तमुचितंसप्ता हंभाजनेताम्रे ॥ ११४ ॥

कूट तेजपात मिर्च मैनशिल तथा कसीस यह सब औषध तैल में मिलाकर सातदिन तक तांबेके पात्र में रक्खे ॥ ११४ ॥

तेनालिप्तंसिध्मंसप्ताहाद्व्येतितिष्ठ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तोघर्मे । मासान्नवंकिलासंस्नानंमु क्त्वाविशुद्धतनोः ॥ ११५ ॥

इति सिध्मलेपः ।

फिर इस तैलको शरीर में लगाकर धूप में बैठे इसप्रकार सातदिन करने से सिध्म कुष्ठका नाश होता है और स्नान न करके महीनेभर शरीर को शुद्ध रखकर इस तैलका लेप करने से नवीन किलास का नाश होता है ॥ ११५ ॥

इति सिध्मलेप ॥

सर्षपकरञ्जकोषातकीनां तैलान्यथेङ्गुदीनाञ्च । कुष्ठेषुहितान्याहुस्तैलं यच्चापिखदिरस्यतैलानि ११६॥

इतितैलानि ।

सरसों कंजा तुरई गोंदी तथा कत्था इनका तैल कुष्ठ में हितकारी होता है ॥ ११६॥

जीवन्तीमञ्जिष्ठादार्वीकम्पिल्लकस्तथातुत्थम् । एषघृततैलपाकःसिद्धःसिद्धेचसर्ज्जरसःक्षेप्यः ॥ ११७ ॥ समधूच्छिष्टोविपादिकानश्यतिव्यासा । चर्मैककुष्ठंकिटिमंकुष्ठंशाम्यत्यलसकञ्च ॥ ११८ ॥

इतिविपादिकायांतैलघृते ।

जीवन्ती मजीठ दारुहल्दी कबीला तथा तूतिया इन सम्पूर्ण औषधियों के साथ एक ही में पाक कियेगये घी तथा तैल में राल तथा मोमडालकर लेपकरने से विपादिका (बेवाँई) चर्मकुष्ठ एककुष्ठ अलसक तथा किटिम कुष्ठका नाश होताहै ॥ ११७।११८॥

इति विपादिकातैलघृत ॥

किण्वंवराहरुधिरंपृथ्वीकासैन्धवञ्च लेपःस्यात् । लेपोयोज्यःकुस्तुम्बुरूणिकुष्ठञ्चमण्डलनुत् ॥ ११९ ॥

इतिमण्डलकुष्ठेलेपः ।

किण्व (सुराबीज) शूकरका रुधिर बड़ी इलायची सैंधव लवण इनका लेप करने से और धनियां तथा कूटका लेप करनेसे मण्डल कुष्ठका नाश होता है ॥ ११९ ॥

इति मण्डलकुष्ठलेप ॥

पूतिकादारुजटिलापक्कसुराक्षौद्रमुद्गपर्ण्यौच । लेपःसकाकणासोमण्डलकुष्ठापहःसिद्धः ॥ १२० ॥

इतिमण्डलकुष्ठेद्वितीयोलेपः ।

पूतिका दारुहल्दी जटामासी पक्कीसुरा शहद मुद्गपर्णी तथा कौवाठोंढ़ी इन औषधियों का लेप करने से मण्डलकुष्ठ का अवश्य नाश होताहै ॥ १२० ॥

इति मण्डलकुष्ठद्वितीयलेप ॥

चित्रकशोभाञ्जनकौगुडूच्यपामार्गदेवदारूणि । खदिरोधवश्चलेपःश्यामादन्तीद्रवन्तीच ॥ १२१ ॥ लाक्षारसाञ्जनैलापुनर्नवाचेतिकुष्ठिनोलेपाः । दधिमण्डयुताःसर्वे पवमारुतकफघ्नाः ॥ १२२ ॥

इतिषट्लेपाः ।

चीता तथा सहिंजन गिलोय लट...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवदारु कत्था तथा धव साईं जमालगोटेकी जड़ तथा बड़े जमालगोटेविशेष की जड़ लाख रसौंत तथा इलायची और गदहपूर्णा इन छहों योगोंको दहीके तोड़ में मिलाकर लेप करनेसे वायु तथा कफ का नाश होता है ॥ १२१ । १२२ ॥

इतिपङ्लेप ॥

एडगजकुष्ठसैन्धवसौवीरकसर्षपैः क्रिमिघ्नैश्च।क्रिमिकुष्ठमण्डलाख्यं दद्रुकुष्ठञ्चशममुपैति ॥ १२३ ॥

इति एडगजादिलेपः ।

चकवड़ कूट सैंधवलवण सौवीरक(कांजी-विशेष) सरसों तथा बायविड़ंग इन औषधियोंका लेप करनेसे क्रिमियुक्तकुष्ठ मण्डलकुष्ठ तथा दद्रु का नाश होताहै ॥ १२३ ॥

इति एडगजादिलेप ॥

एडगजःसर्ज्जरसोमूलकबीजञ्चसिध्मकुष्ठानाम्।काञ्जिकयुक्तन्तुपृथङ्मतमिदमुद्वर्त्तनंक्रमशोलेपाः१२४॥

इति सिध्मकुष्ठेलेपः ।

चकवड़ राल मूलीके बीज इन औषधियों को अलग अलग कांजी में पीसकर क्रम से उबटन लगानेसे तथा लेप करनेसे सिध्मकुष्ठ का नाश होताहै ॥ १२४ ॥

वासात्रिफलापानेस्नानेचोद्वर्त्तनेप्रलेपेच । बृहतीसेव्यपटोलाःसशारिवारोहिणीचैव ॥ १२५ ॥

कुष्ठरोगमें रूसा तथा त्रिफला पान(पीना) स्नान उबटना तथा लेपमें हितहोती है भटकटैया खस परवल साईं कुटकी ॥ १२५ ॥

खदिरावघातककुभारोहीतककुटजधवनिम्बाः । सप्तच्छदकरवीराःशस्यन्तेस्नानपानेषु ॥ १२६ ॥

इतिकुष्ठेस्नानंपानञ्च ।

कत्था अर्जुन रोहितक कुरैया धव नींब छितवन तथा कनेर इन औषधियों का काढ़ा पीना तथा इन्हीं औषधियों के काढ़े के द्वारा स्नान करना कुष्ठमें हित होताहै ॥ १२६ ॥

इति कुष्ठमें स्नान व पान ॥

जलवाप्यलोहकेशरपत्रप्लवचन्दनंमृणालानि । भागोत्तराणिसिद्धंप्रलेपनंपित्तकफकुष्ठे ॥ १२७ ॥

सुगन्धवाला कूट लोहे का चूर्ण नागकेशर तेजपात केवटी मोथा चन्दन तथा कमल की दण्डी इन औषधियों का क्रमसे उत्तरोत्तर एक एक भाग अधिक लेकर सुगन्धवाला एक भाग तथा कूट दो भाग इत्यादि लेकर) लेप करने से पित्तकफजकुष्ठका नाश होता है ॥ १२७ ॥

यष्ट्याह्वलोध्रपद्मकपटोलपिचुमर्दचन्दनरसाश्च । स्नानेपानेचहिताःसुशीतलाःपित्तकुष्ठिभ्यः ॥१२८॥

मुलेठी लोध पद्माख परवल नींब तथा चन्दन इन औषधियों का काढ़ा पीना तथा इन्हीं औषधियों के ठण्डे काढ़ेके द्वारा स्नान करना पित्तज कुष्ठमें हित होताहै ॥ १२८ ॥

आलेपनंप्रियङ्गुर्हरेणुकावत्सकस्यचफलानि । सातिविषाचसेव्यास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चन्दनारोहिणीकटुका । तिक्तघृतैर्धौतघृतैरभ्यङ्गोदह्यमानकुष्ठेषु ॥१२९॥

इतिअभ्यङ्गः ।

दाहयुक्त कुष्ठमें प्रियंगु रेणुका इन्द्रयव अतीस खस चन्दन हड़ तथा कुटकी इन औषधियों का लेप अथवा तिक्त घी या सौबार धोयेहुये घीका मलना हित होताहै ॥१२९॥

इति अभ्यङ्ग ॥

तैलैश्चन्दनमधुकप्रपुण्डरीकोत्पलयुतैश्चाभ्यङ्गः ॥ १३० ॥

इति द्वितीयोऽभ्यङ्गः ।

और चन्दन मुलेठी पुण्डरिया तथा उत्पल इन औषधियों से युक्त तैलका मलना हित होता है ॥ १३० ॥

इति द्वितीय अभ्यङ्ग ॥

क्लेदेप्रपततिचाङ्गेदाहेविस्फोटकेसचर्मदले । शीताः प्रदेहसेकाव्यधविरेचकौघृतंतिक्तम् ॥ १३१ ॥

जिस कुष्ठमें क्लेदहो अंग गलकर गिरतेहों तथा दाहहो उस कुष्ठमें विस्फोटक नाम कुष्ठ में तथा चर्मदलकुष्ठ में शीतल लेप सेक (तरारा देना) शिराव्यधन (फस्त खुलाना) विरेचन तिक्त घृत ॥ १३१ ॥

खदिरघृतंनिम्बघृतंदार्वीघृतमुत्तमंपटोलघृतम् । कुष्ठेपुरक्तपित्तप्रबलेपुभिषग्जितंसिद्धम् ॥ १३२ ॥

खदिरघृत निम्बघृत दार्वीघृत तथा पटोलघृत श्रेष्ठ होताहै जिस कुष्ठमें रुधिर तथा पित्त प्रबल होता है उसमें भी खदिर घृतादि औषध अत्यन्त हितकारी होती हैं ॥ १३२ ॥

त्रिफलात्वचोऽर्द्धपलिकाःपटोलपत्रञ्चकार्षिकाःशेषाः । कटुरोहिणीसनिम्बा यष्ट्याह्वात्रायमाणा च ॥१३३ ॥

त्रिफला की छाल तथा परवल की पत्ती दो दो तोले कुटकी नींब मुलेठी तथा चिरायते के फल एक एक तोले ॥ १३३ ॥

एषकषायःसाध्योदत्त्वाद्विपलंमसूराणाम् । सलिलाढकेऽष्टभागेशेषेपूतोरसोग्राह्यः ॥ १३४ ॥

और मसूर आठ तोले इन सब औषधियों को दोसौ छप्पन तोले पानीमें डालकर पाक करै जब अष्टमांश जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे ॥ १३४ ॥

तेचकषायाष्टपलेचतुष्पलंसर्पिषश्चपक्तव्यम् । यावत्स्यादष्टपलंशेषंपेयंततःकोष्णम् ॥ १३५ ॥

फिर उस बत्तिस तोले काढ़ेमें सोलह तोले घी डालकर पाक करै जब सोलह तोले काढ़ा जल जाय तब उतारकर उसे कुछ गर्म २ पीवे ॥ १३५ ॥

तद्वातपित्तकुष्ठंवीसर्पंवातशोणितंप्रबलम् । ज्वरदाहगुल्मविद्रधिविभ्रमविस्फोटकान्हन्ति ॥ १३६ ॥

इससे वातपित्तज कुष्ठ विसर्प (जहरबाद) प्रबल वातरक्त ज्वर दाह गुल्म विद्रधि भ्रम तथा विस्फोटककुष्ठ का नाश है ॥ १३६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निम्बपटोलंदार्वींदुरालभांतिक्तरोहि
णींत्रिफलाम् । कुर्य्यादर्द्धपलांशं
पर्पटकंत्रायमाणाञ्च ॥ १३७ ॥

नींव की छाल परवल दारुहल्दी जवासा कुटकी हड़ वहेड़ा आमला पित्तपापड़ा तथा त्रायमाण इन औषधियों को दो दो तोले लेकर ॥ १३७ ॥

सलिलाढकसिद्धानांरसेऽष्टभाग
स्थितेक्षिपेत्पूते । चन्दनकिराततिक्त
कमागधिकात्रायमाणाञ्च॥१३८॥

दोसौ छप्पन तोले जलमें डालकर पाक करै जव अष्टमांश जल वाकीरहे तव उतार कर छानलेवे इस काढ़ेके साथ और लालचन्दन चिरायता पीपरि त्रायमाण ॥ १३८ ॥

मुस्तंवत्सकवीजकल्कीकृत्यार्द्धका
र्षिकान्भागान् । नवसर्पिषश्चषट्प
लमेतत्सिद्धंघृतंपेयम् ॥ १३९ ॥

नागरमोथा तथा इन्द्रयव इनके छः २ मासे कल्क के साथ चौबिस तोले नवीन घृत का पाककरै जव काढ़ा जलजाय केवल घी वाकी रहे तब उत्तारकर छानलेवे फिर इस सिद्ध घी को पीवे ॥ १३९ ॥

कुष्ठज्वरगुल्मार्शोग्रहणीपाण्डाम
यश्वयथुहारि । वीसर्पपिण्डकपा
माकण्डूमदगण्डनुत्तिक्तम्॥१४०॥

इतितिक्तषट्पलकंघृतम् ।

इस तिक्तघृतके सेवन से कुष्ठ ज्वर गुल्म ववासीर ग्रहणीदोष पाण्डुरोग शोथ जहरवात पिड़िका पामा कुष्ठ खुजली मद तथा गलगण्ड का नाश होता है ॥ १४० ॥

इति तिक्तषट्पलघृत ॥

सप्तच्छदंप्रतिविषांशम्याकंतिक्तरो
हिणींपाठाम् । मुस्तमुशीरंत्रिफलां
पटोलपिचुमर्दपर्पटकम् ॥ १४१ ॥

छितवन अतीस अमलतास कुटकी पाढ़र नागरमोथा खस त्रिफला परवल नींब की छाल पित्तपापड़ा ॥ १४१ ॥

धन्वयवासंचन्दनमुपकुल्यांपद्मकं
रजन्यौच । षड्ग्रंथांसविशालांश
तावरींशारिवेचोभे ॥ १४२ ॥

जवासा लालचन्दन पीपरि पद्माख हल्दी दारुहल्दी वच इन्द्रायण शतावर दोनों सांई ॥ १४२ ॥

वत्सकवीजंवासांमूर्वाममृतंकिरात
तिक्तञ्च । कल्कान्कुर्य्यान्मातिमान्य
ष्टयाह्वांत्रायमाणाञ्च ॥ १४३ ॥

कल्कस्यचतुर्भागेजलमष्टगुणंरसो
मृतफलानाम् । द्विगुणोघृतात्प्रदेय
स्तत्सर्पिःपाययेत्सिद्धम् ॥ १४४ ॥

बुद्धिमान् वैद्य इन्द्रयव अडूसा मरोरफली गिलोय चिरायता मुलेठी तथा त्रायमाण इन सब औषधियोंके चतुर्थांश (चौथाई) कल्क के साथ अठगुणे जलके साथ और द्विगुण आमले के रसके साथ पाककिया गया घी पान करावे ॥ १४३ । १४४ ॥

कुष्ठानिरक्तपित्तप्रबलान्यर्शांसिरक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाहीनि । वीसर्पमम्लपित्तंवातासृ क्पाण्डुरोगञ्च ॥ १४५ ॥

इसके सेवन से कुष्ठ रक्तपित्त मवल खूनी ववासीर जहरवात अम्लपित्त वातरक्त पाण्डुरोग ॥ १४५ ॥

विस्फोटकान्सपामानुन्मादंकामलां ज्वरंकण्डूम् । हृद्रोगंगुल्मपिडिकाअ सृग्दरंगण्डमालाञ्च ॥ १४६ ॥

विस्फोटक पामाकुष्ठ उन्माद कामला ज्वर खुजली हृदयके रोग गुल्म पिड़िका मदर तथा गण्डमाला को नष्ट करता है ॥ १४६ ॥

हन्यादेतत्सर्पिःपीतंकालेयथाबलंस द्यः । योगशतैरप्यजितान्महाविका रान्महातिक्तम् ॥ १४७ ॥

इति महातिक्तकंघृतम् ।

वलके अनुसार उचित समयमें इस महातिक्त घी को पीनेसे उन महारोगोंका शीघ्रही नाश होताहै जो सैकड़ों औषधियोंसे भी नहीं नष्टहुयेहों ॥ १४७ ॥

इति महातिक्तघृत ॥

दोषेहृतेऽपनीतेरक्तेबाह्यान्तरेकृतेश मने । स्नेहेचकालयुक्तेनकुष्ठमनु वर्त्ततेसाध्यम् ॥ १४८ ॥

दोषों के निकल जानेपर फस्त खुलानेपर बाह्यसंशमन (लेपादि) तथा आभ्यन्तरसंशमन (काढ़ा पीना आदि) करनेपर और योग्य समयमें स्नेहपान करनेपर निवृत्त हुआ साध्य कुष्ठ फिर नहीं उत्पन्न होताहै ॥ १४८ ॥

खदिरस्यतुलाःपञ्चशिंशपाशणयो स्तुले । तुलार्द्धासर्वएवैतेकरञ्जारि ष्टवेतसाः ॥ १४६ ॥

कत्था दोहज़ार तोले सीसम चारसौ तोले विजयसार चारसौतोले कंजा नींब वेत १४९॥

पर्पटःकुटजश्चैववृषःक्रिमिहरस्तथा। हारिद्रेकृतमालश्चगुडूचीत्रिफलात्रि वृत् ॥ १५० ॥ सप्तपर्णश्चसङ्क्षुण्णो दशद्रोणेषुवारिणः । धात्रीरसञ्चतु ल्यांशंसर्पिषश्चाढकंपचेत् ॥ १५१ ॥ अष्टभागावशेषन्तुकषायमवतारये त् । महातिक्तककल्कैस्तुयथोक्तैःप लसम्मितैः ॥ १५२ ॥

पित्तपापड़ा कुरैया रूसा बायविड़ंग हल्दी दारुहल्दी अमलतास गिलोय हड़ बहेड़ा आमला निशोथ तथा छितवन यह सब दोसौ तोले कत्था आदि इन सब औषधियों को अच्छे मकार से कूटकर एक मन ग्यारह सेर सोलह तोले १।ऽ१=।६ जल में डालकर पाककरे जब अष्टमांश जल वाकीरहे तव उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़ेके आमले के दोसौ छप्पन तोले रसके और महातिक्त घृतमें कहीहुई औषधियों के चार २ तोले कल्ककेसाथ दोसौ छप्पन तोले घृतका पाक जब पानी जलजाय केवल आठवां भाग बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे [illegible] १५१ । १५२ ॥

निहन्तिसर्वकुष्ठानिपानाभ्यङ्ग वणात् । महाखदिरमित्येतत्घृ विकारनुत् ॥ १५३ ॥

इतिमहाखदिरंघृतम् ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस घृत को पीनेसे तथा शरीर में मलनेसे सम्पूर्ण कुष्ठों का नाश होताहै यह महाखदिर नाम घृत कुष्ठविकारों का अत्यन्त नाशक होताहै ॥ १५३ ॥

इति महाखदिरघृत ॥

प्रपतत्सुलसीकाप्रसृतेषुगात्रेषुजन्तुजग्धेषु। मूत्रंनिम्बविडङ्गेस्नानंपानंप्रदेहश्च ॥ १५४ ॥

जो कुष्ठरोग में अंग गल गलकर गिरतेहों अंगों से लसीका (धातुविशेष) वहती हो अथवा कीड़े पड़गयेहों तो गोमूत्र नींव तथा वायविड़ंग के द्वारा स्नान पान तथा लेप करना चाहिये ॥ १५४ ॥

वृषकुटजसप्तपर्णाःकरवीरकरञ्जनिम्बखदिराश्च । स्नानेपानेलेपेक्रिमिकुष्ठंनुदःसगोमूत्राः ॥ १५५ ॥

इति वाक्रिमिकुष्ठे।

अड़ूसा कुरैया छितवन कनेर कंजा नींव तथा कत्था इन औषधियों को गोमूत्रमें मिलाकर स्नान पान (पीना) तथा लेपमें प्रयोग करने से क्रिमियुक्त कुष्ठ का नाश होता है ॥ १५५ ॥

इति क्रिमिकुष्ठ ॥

पानाहारविधानेप्रसेचनेधूपनेप्रदेहे च । क्रिमिनाशनंविडङ्गंविशिष्यतेकुष्ठहृत्खदिरः ॥ १५६ ॥

इति वाक्रिमिकुष्ठे।

पान आहार प्रसेक (तरारा) धूप तथा लेपमें वायविड़ंग का प्रयोग करनेसे क्रिमियों का नाश होताहै और इन्हींमें कत्थेका प्रयोग करने से कुष्ठका नाश होताहै ॥ १५६ ॥

इति द्वितीयक्रिमिकुष्ठ ॥

एडगजः सविडङ्गोमूलान्यारग्वधस्यकुष्ठानाम्। उद्दालनंश्वदन्तागोऽश्ववराहोष्ट्रदन्ताश्च ॥१५७॥

चकवड़ वायविड़ंग अमलतासकी जड़ हाथीचिघार और गऊ घोड़ा शूकर तथा ऊंट का दांत इन सबकेद्वारा उवटन लगानेसे कुष्ठ का नाश होताहै ॥ १५७ ॥

एडगजःसविडङ्गोरजनीद्वयराजवृक्षमूलञ्च । कुष्ठोद्दालनमग्र्यंसपिप्पलीपाकलंयोज्यम् । शिवत्राणांप्रशमार्थंप्रयोक्तव्यंसर्वतोविशुद्धानाम् ॥ १५८ ॥

चकवड़ वायविड़ंग हल्दी दारुहल्दी अमलतास की जड़ पीपरि तथा कूट इनका उवटन कुष्ठमें वहुत हित होताहै शिवत्र (सफेद कुष्ठ) में सव प्रकारसे संशोधन करके औषधका प्रयोग करै ॥ १५८ ॥

शिवत्रेस्रंसनमग्र्यंमलपूरसइष्यतेसगुडः। तंपीत्वासुस्निग्धोयथावलंसूर्य्यपादसन्तापम् ॥ १५९ ॥ सेवेतविरिक्तश्चत्र्यहंपिपासुःपिबेत्पेयाम् । शिवत्रेऽङ्गेयेस्फोटाजायन्तेकण्टकेनतान्भिन्द्यात् ॥ १६० ॥

शिवत्रमें कठगूलर के रसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे वहुत श्रेष्ठ विरेचन होताहै कठगूलरके रस को बलके अनुसार पीकर धूपमें बैठे फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विरेचनके उपरान्त तीन दिनतक प्यास लगनेपर पेया (चौदहगुणे जलमें पाक कियेगये चावल आदिका जो पतला रससा तैयार होताहै उसे पेया कहते हैं) पीवे श्वित्ररोगों में जो दाने अंगों में पड़जाते हैं उनको कांटे से छेददेवे ॥ १५९ । १६० ॥

स्फोटेषुविसृतेषुप्रातःप्रातःपिबेत्पक्कम् । मलपूमशनंप्रियङ्गुशतपुष्पाश्चाम्भसासमुत्क्वाथ्य ॥ १६१ ॥

जब वह दाने बहजायँ तब नित्य प्रातःकाल कठगूलर विजयसार भियंगु तथा सौंफका काढ़ा करके पीवे ॥ १६१ ॥

पालाशंवाक्षारंयथाबलंफाणितोपेतम् । यच्चान्यत्कुष्ठघ्नंश्वित्राणांसर्वमेवतच्छस्तम् । खदिरोदकसंयुक्तंखदिरोदकपानमग्र्यम् ॥ १६२ ॥

अथवा रावमें ढाखका क्षार मिलाकर बलके अनुसार पीवे इनके सिवाय और जो कुष्ठघ्न औषध हैं कत्थे के काढ़ेसे युक्त वह सब औषध श्वित्र में हित होती हैं और कत्थे का काढ़ा पीना इसमें अत्यन्त हितकारी होता है ॥ १६२ ॥

समनःशिलंविडङ्गंकासीसंरोचनांकनकपुष्पीम् । श्वित्राणांप्रशमार्थंससैन्धवंलेपनंदद्यात् ॥ १६३ ॥

इति श्वित्रेलेपः ।

मैनशिल बायविडङ्ग कसीस गोरोचन तथा धतूरा इन सब औषधियों को महीन पीसकर सैंधव लवण मिलाकर श्वित्रकुष्ठके नाशहोनेके लिये लेप करावे ॥ १६३ ॥

इति श्वित्रकुष्ठलेप ॥

कदलीक्षारयुतंवाखदिरास्थिदग्धगवांरुधिरयुक्तम् । हस्तिमदाध्युषितंवामालत्याःक्षारकक्षारम् ॥ १६४ ॥

इति लेपः ।

केले का क्षार तथा कत्थे की लकड़ी का क्षार गऊके रुधिर में मिलाकर लेप करनेसे अथवा चमेली के क्षार को हाथी के मदजल में मिलाकर लेप करने से श्वित्र का नाश होता है ॥ १६४ ॥

नीलोत्पलंसकुष्ठंससैन्धवंहस्तिमूत्रपिष्टंवा । मूलकबीजावल्गुजलेपःपिष्टोगवांमूत्रे ॥ १६५ ॥

इति द्वौलेपौ ।

नीलोत्पल कूट तथा सैंधवलवण हाथी के मूत्र में पीसकर लेप करने से अथवा मूली के बीज तथा बकुचीको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरने से श्वित्रका नाश होताहै ॥ १६५ ॥

काकोदुम्बरिकावासावल्गुजचित्रकौगवांमूत्रे । पिष्टामनःशिलावासंयुक्ताबर्हिपित्तेन ॥ १६६ ॥

इति वा द्वौलेपौ ।

कठगूलर रूसा बकुची तथा च[illegible] औषधियों को गोमूत्र में पीसकर ले[illegible] अथवा मैनशिल तथा मोरके पित्ते[illegible] कर लेप करने से श्वित्र का ना[illegible] है ॥ १६६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किलासहन्तामूलान्यवल्गुजानि लाक्षाच। गोपित्तमञ्जनेद्वेपिप्पल्यः काललोहरजः ॥ १६७ ॥

इति श्वित्रप्रलेपः।

मूली के बीज बकुची लाख गौ का पित्ता दोनों प्रकारका सुर्मा पीपल और काले लोहे का चूर्ण इन सब औषधियोंका लेप करने से श्वित्र का नाश होता है ॥ १६७ ॥

शुद्ध्याशोणितमोक्षैर्विरूक्षणैर्भक्षणैश्चसक्तूनाम्। श्वित्रंकस्यचिदेवप्रशाम्यतिक्षीणपापस्य॥१६८॥

वमन विरेचन आदि संशोधन से फस्त खुलाने से रूखी वस्तु खाने से और सत्तू खाने से किसी२ पुण्यात्माही पुरुषका कभी कभी श्वित्र नष्ट होता है ॥ १६८ ॥

दारुणञ्चारुणंश्वित्रं किलासंनामभिस्त्रिभिः। विज्ञेयंत्रिविधंतच्चत्रिदोषंप्रायशश्चतत् ॥ १६९ ॥

दारुण अरुण तथा श्वित्र यह तीन नाम किलास (श्वेतकुष्ठ) के हैं प्रायःकिलास तीनों दोषोंसे उत्पन्न होताहै और तीनप्रकार का होता है ॥ १६९ ॥

दोषेरक्ताश्रितेरक्तंताम्रंमांससमाश्रिते। मेदःश्वेतंश्रितंश्वित्रंगुरुतच्चोत्तरोत्तरम् ॥ १७० ॥

जब वातादिक दोष रुधिर में स्थित होते हैं तब रक्तवर्ण जब मांसमें स्थित होते हैं तब ताम्रवर्ण और जब मेदामें स्थित होते हैं तब श्वेत वर्ण श्वित्र (श्वेत कुष्ठ) उत्पन्न होता है यह तीनों उत्तरोत्तर गुरु (दुस्साध्य) होते हैं ॥ १७० ॥

यत्परस्परतोऽभिन्नंबहुयद्रक्तलोमवत्। यच्चवर्षगणोत्पन्नंतच्छ्वित्रंनैवसिध्यति ॥ १७१ ॥

जो श्वित्र परस्पर भिन्न बहुतसे रक्तवर्णरोमों से व्याप्त और बहुत वर्षोंका पुराना होता है वह असाध्य होताहै ॥ १७१ ॥

वचांस्यतथ्यानिकृतघ्नभावोनिन्दासुराणांगुरुधर्षणञ्च। पापक्रियापूर्वकृतञ्चकर्महेतुःकिलासस्यविरोधिचान्नम् ॥ १७२ ॥

भवन्तिचात्र।

मिथ्याभाषण कृतघ्नता (किसी के उपकार को न मानना) देवताओं की निन्दा माता पिता आदि गुरुवोंका तिरस्कार पापकर्म पूर्वजन्मके कर्म और विरुद्ध आहार यहसब किलासके कारण हैं ॥ १७२ ॥

हेतुर्द्रव्यंलिङ्गंसमासतोदोषनिर्देशात्। साध्यासाध्यंकृच्छ्रंकुष्ठापहाश्रेययोगाः ॥ १७३ ॥ सिद्धाःकिलासहेतुर्लिङ्गंगुरुलाघवंशान्तिः। इतिसंग्रहःप्रणीतोमहर्षिणाकुष्ठनाशनेऽध्याये। स्मृतिबुद्धिवर्द्धनार्थंशिष्यायहुताशवेशाय॥ १७४ ॥

इतिकुष्ठचिकित्सितम्।

इसमें यह श्लोक हैं। इस कुष्ठ चिकित्सित नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने स्मृति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा वुद्धिके वढ़ाने के लिये अपने शिष्य अग्निवेश से कुष्ठरोग के कारण द्रव्य लक्षण साध्यता असाध्यता तथा कुष्ठनाशक अनुभूतयोग और किलास के लक्षण कारण गुरुता लघुता तथा चिकित्सा यह सब विषय कहे ॥ १७३ । १७४ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें चिकित्साअध्यायकाकुष्ठचिकित्सित नामसातवां अध्याय समाप्त हुआ ॥७॥

आठवां अध्याय ॥

राजयक्ष्मचिकित्सितम् ।

दिवौकसांकथयतामृषिभिर्वैश्रुताकथा । कामव्यसनसंयुक्तापौराणीशशिनंप्रति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त राजयक्ष्माचिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

पूर्वसमयमें महर्षिलोगों ने देवतालोगों से चन्द्रमा के कामासक्त होने के विषय में यह पुरानी कथा सुनी थी ॥ १ ॥

रोहिण्यामतिसक्तस्यशरीरंनानुरक्षतः । आजगामाल्पतामिन्दोर्देहःस्नेहपरिक्षयात् ॥ २ ॥

जैसी कि एकसमय रोहिणी में बहुत आसक्त होकर अपने शरीर की नहीं रक्षा करते हुये चन्द्रमाकी देह स्नेह के क्षीण होने के कारण क्षीण होगई ॥ २ ॥

दुहितॄणामसम्भोगाच्छेषणाञ्चप्रजापतेः । क्रोधोनिःश्वासरूपेणमूर्त्तिमान्निःसृतोमुखात् ॥ ३ ॥

दक्षप्रजापति ने रोहिणी के सिवाय अपनी अन्य सत्ताइस कन्याओं के साथ चन्द्रमा को न रमण करते देखकर ऐसा क्रोध किया कि उनके मुख से मूर्त्तिमान् क्रोध श्वासरूप से निकला ॥ ३ ॥

प्रजापतेर्हिदुहितॄरष्टाविंशतिमंशुमान् । भार्यार्थंप्रतिजग्राहनचसर्वास्ववर्त्तत ॥ ४ ॥

चन्द्रमाने दक्षप्रजापतिकी अट्ठाइस कन्याओं के साथ विवाह कियाथा परन्तु उनमें से रोहिणीके सिवाय अन्य किसीसे रमण नहीं करता था ॥ ४ ॥

गुरुणातमबध्यातंभार्य्यास्वसमवर्त्तिनम् । रजोऽन्धमबलंदीनंयक्ष्माशशिनमाविशत् ॥ ५ ॥

दक्षप्रजापति के क्रोध से और सम्पूर्ण स्त्रियोंमें सम दृष्टि न करने से रजोगुण के कारण अन्ध निर्बल तथा दीन चन्द्रमा के शरीर राजयक्ष्मा रोगने प्रवेश किया ॥ ५ ॥

सोऽभिभूतोऽतिगुरुणागुरुक्रोधेन निष्प्रभः । देवदेवर्षिसहितोजगमशरणंगुरुम् ॥ ६ ॥

गुरु (दक्षप्रजापति) के महाक्रोध [illegible] रस्कार किये गये चन्द्रमा की कान्ति हर[illegible] क्षीण होगई—तब चन्द्रमा देवता त[illegible] योंको साथ में लेकर दक्षप्रजापति [illegible]श में गया ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथचन्द्रमसःशुद्धांमतिंबुध्वाप्रजापतिः । प्रसादंकृतवान्सोमस्ततोश्विभ्यांचिकित्सितः ॥ ७॥

चन्द्रमा को शरण में आया हुआ देखकर और उसकी बुद्धि को शुद्धहुई जानकर दक्ष प्रजापति ने उसपर कृपाकी और उनकी कृपा से अश्विनीकुमारने उसकी चिकित्साकी ॥७॥

सविमुक्तग्रहश्चन्द्रो विरराजविशेषतः । तेजसावर्द्धितोऽश्विभ्यांशुद्धंसत्त्वमवापच॥ ८॥

चिकित्सा के द्वारा चन्द्रमा नीरोग होकर पहिले से भी अधिक शोभित हुआ और अश्विनीकुमारकी चिकित्सा से बहुत तेजयुक्त होकर शुद्ध सत्त्वको प्राप्तहुआ ॥ ८॥

क्रोधोयक्ष्माज्वरोरोगएकोऽर्थोदुःखसंज्ञितः । यस्मात्सराज्ञःप्रागासीद्राजयक्ष्माततोमतः ॥ ९ ॥

क्रोध यक्ष्मा ज्वर रोग और दुःख यह एकार्थवाचक शब्द हैं--यह यक्ष्मारोग पहिले राजा (चन्द्रमा) के हुआथा इससे इस को राजयक्ष्मा कहते हैं ॥ ९॥

सयक्ष्माहुङ्कृतोऽश्विभ्यांमानुषंलोकमागतः । लब्ध्वाचतुर्विधंहेतुंसमाविशतिमानवान् ॥ १० ॥

अश्विनीकुमार ने यक्ष्मा को हुंकार कर स्वर्ग से निकाल दिया इससे यह पृथ्वीमें आया--चार प्रकारके कारणों को पाकर यह मनुष्यों के शरीरमें प्रवेश करताहै ॥१०॥

अयथाबलमारम्भंवेगसन्धारणक्षयम् । यक्ष्मणःकारणंविद्याच्चतुर्थंविषमाशनम् ॥ ११ ॥

अयथाबलारम्भ (साहस करना) मल मूत्रादिवेगोंका रोकना धातुओं की क्षीणता तथा विषमाशन यह चार यक्ष्मा के कारण हैं ॥ ११ ॥

युद्धाध्ययनभाराध्वलङ्घनप्लवनादिभिः ॥ पतनैरभिघातैर्वासाहसैर्वातथापरैः ॥ १२ ॥

युद्ध करना जोर से पढ़ना बहुत बोझा ढोना बहुत चलना बहुत तैरना बहुत लंघन करना गिरना चोटलगना तथा अन्य साहस ॥ १२ ॥

अयथाबलमारम्भैर्जन्तोरुरसिविक्षते । वायुःप्रकुपितोदोषावुदीर्योभौविधावति ॥ १३ ॥

और बलसे अधिक कार्य्य करना इन कारणों से मनुष्य के वक्षःस्थलमें क्षत (घाव) होजानेपर कुपित हुई वायु पित्त तथा कफको उभाड़कर शरीर में दौड़ती है ॥ १३ ॥

सशिरःस्थःशिरःशूलंकरोतिगलमाश्रितः । कण्ठोध्वंसञ्चकासञ्चस्वरभेदमरोचकम् ॥ १४ ॥

जब वह वायु शिरमें स्थित होतीहै तब शिरमें पीड़ा होती है जब गले में स्थित होती है तब कण्ठध्वंस खांसी स्वरभंग तथा अरुचि उत्पन्न करती है ॥ १४ ॥

पार्श्वशूलञ्चपार्श्वस्थोवर्चोभेदंगुदे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

स्थितः । जृम्भांज्वरञ्चसन्धिस्थउरस्थश्चोरसोरुजम् ॥ १५ ॥

जब पसुलियोंमें स्थित होती है तब पसुलियोंमें पीड़ा उत्पन्न करती है जब गुदामें स्थित होती है तब मलभेद करती है जब संधियों में स्थित होती है तब जँभाई तथा ज्वर को उत्पन्न करती है और जब वक्षःस्थल में स्थित होतीहै तब वक्षःस्थल में पीड़ा को उत्पन्न करती है ॥ १५ ॥

क्षणनाच्चोरसोरक्तंकासमानःकफानुगम् । जर्जरेणोरसाकृच्छ्रमुरःशूली निरस्यति ॥ १६ ॥

वक्षःस्थलमें घाव होजाने के कारण कफसहित रुधिर खांसने में मुखसे कष्टपूर्वक निकलताहै और वक्षःस्थल जर्जरहोजाताहै॥१६॥

इतिसाहसिकोयक्ष्मारूपैरेतैःप्रपद्यते । एकादशभिरात्मज्ञोभजेत्तस्मान्नसाहसम् ॥ १७ ॥

सहसा करने वाले पुरुष को पूर्वोक्त ग्यारह लक्षणों के द्वारा राजयक्ष्मा रोग प्राप्त होता है उस से बुद्धिमान् पुरुष कभी साहस न करे ॥ १७ ॥

ह्रीमत्वाद्वाघृणित्वाद्वाभयाद्वावेगमागतम् । वातमूत्रपुरीषाणांनिगृह्णातियदानरः ॥ १८ ॥

लज्जा से घृणा से अथवा भय से जब मनुष्य वायु मूत्र तथा मलके उपस्थित हुये वेग को रोकता है ॥ १८ ॥

तदावेगप्रतीघातात्कफःपित्तेसमीरयन् । ऊर्ध्वतिर्यगधःकुर्य्याद्विकारान्कुपितोऽनिलः ॥ १९ ॥

तब कुपित हुई वायु पित्त तथा कफ को ऊपर नीचे तथा इधर उधर लेजाकर रोगों को उत्पन्न करती है ॥ १९ ॥

प्रतिश्यायञ्चकासञ्चस्वरभेदमरोचकम् । पार्श्वशूलंशिरःशूलंज्वरमंसावमर्दनम् ॥ २० ॥

प्रतिश्याय (जुकाम) खाँसी स्वरभंग अरुचि पसुलियों में पीड़ा शिर में पीड़ा ज्वर कंधों में पीड़ा ॥ २० ॥

अङ्गमर्दमुहुश्छर्दिर्वर्चोभेदंत्रिलक्षणम् । रूपाण्येकादशैतानियक्ष्मायैरुच्यतेमहान् ॥ २१ ॥

अंगमर्द वारंवार वमन होना और मलभेद यह ग्यारह राजयक्ष्मा के लक्षण हैं इन लक्षणोंमें तीनों दोषोंका संसर्ग रहताहै इन्हीं लक्षणोंसे राजयक्ष्माको महारोग कहतेहैं॥२१॥

हर्षोत्कण्ठाभयत्रासक्रोधशोकातिकर्षणात् । व्यवायानशनाभ्यांञ्च शुक्रमोजश्चहीयते ॥ २२ ॥

हर्ष उत्कण्ठा भय त्रास (घबर क्रोध तथा शोक के द्वारा बहुत कृश, हुत मैथुन करना और भोजन न क कारणों से वीर्य्य तथा ओज क्षीण है ॥ २२ ॥

ततःस्नेहक्षयाद्वायुर्वृद्धोदो यन् । प्रतिश्यायंज्वरंकास शिरोरुजम् ॥ २३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वीर्य तथा ओजके क्षीण होनेसे शरीरके रूक्ष होजाने के कारण बढ़ीहुई वायु कफ तथा पित्त को उभाड़ कर प्रतिश्याय (जुकाम) ज्वर खांसी अङ्गमर्द शिर में पीड़ा॥ २३॥

श्वासंविड्भेदमरुचिंपार्श्वशूलंस्वरक्षयम्। करोतिचांससन्तापमेकादशमिहाङ्गहृत्॥ २४॥

श्वास मल फटाहुआ होना अरुचि पसुलियों में पीड़ा स्वरका क्षीण होना और कन्धों में सन्ताप होना इन शरीरको क्षीण करनेवाले ग्यारह लक्षणों को उत्पन्न करती है॥ २४॥

लिङ्गान्यावेदयन्त्वेतानेकादशमहागदम्। संप्राप्तंराजयक्ष्माणंक्षयात्प्राणक्षयप्रदम्॥ २५॥

धातुओं की क्षीणतासे प्राणोंको नष्ट करनेवाले महारोग राजयक्ष्मा की प्राप्ति इन्हीं ग्यारह लक्षणों से जानीजाती है॥ २५॥

विविधान्यन्नपानानि वैषम्येणसमश्नतः। जनयन्त्यामयान्घोरान्विषमान्मारुतादयः॥ २६॥

विषमतासे अनेक प्रकारके अन्नपान (पीनेकी वस्तु) का सेवन करनेवाले मनुष्य के वातादिक दोष घोररोगोंको विषमतासे उत्पन्न करते हैं॥ २६॥

स्रोतांसिरुधिरादीनांवैषम्याद्विषमंगताः। रुद्ध्वारोगायकल्पन्तेपुष्यन्तिनधातवः॥ २७॥

वातादिक दोष विषमता को प्राप्त होकर विषमतासे रुधिर आदि धातुओं के स्रोतोंको रोककर रोगों को उत्पन्न करते हैं और रस आदिधातु पुष्ट नहीं होने पाती हैं॥ २७॥

प्रतिश्यायंप्रसेकञ्चकासंछर्दिररोचकम्। ज्वरमंसाभितापञ्चछर्दनंरुधिरस्यच॥ २८॥

प्रतिश्याय (जुकाम) मुखमें बहुत थूक आना खांसी छर्दि अरुचि ज्वर कन्धोंका उष्णरहना रुधिर का वमन होना॥ २८॥

पार्श्वशूलंशिरःशूलंस्वरभेदमथापिवा। कफपित्तानिलकृतंलिङ्गंविद्याद्यथाक्रमम्॥ २९॥

पसुलियों में पीड़ा शिरमें पीड़ा तथा स्वरभङ्ग यह लक्षण उत्पन्न होते हैं इन लक्षणों में से प्रतिश्याय आदि लक्षण कफज ज्वर आदि लक्षण पित्तज और पसुलियोंमें पीड़ा आदि लक्षण वातज होते हैं॥ २९॥

इतिव्याधिसमूहस्यरोगराजस्यहेतुजम्। रूपमेकादशविधंहेतुश्चोक्तश्चतुर्विधः॥ ३०॥

इसप्रकार रोगोंके समूहरूप रोगराज राजयक्ष्मा के हेतुओं से उत्पन्न होनेवाले ग्यारह लक्षण और चारप्रकारके हेतु कहेगये॥ ३०॥

पूर्वरूपंप्रतिश्यायोदौर्बल्यंदोषदर्शनम्। अदोषेष्वपिभावेषुकायेबीभत्सदर्शनम्॥ ३१॥

राजयक्ष्मा के पूर्व्वरूप यह हैं प्रतिश्याय (जुकाम) दुर्बलता दोषरहित पदार्थोंमें भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोष मालूम होना शरीर का घिनौना मालूमहोना ॥ ३१ ॥

घृणित्वमश्नतश्चापिबलमांसपरिक्षयः । स्त्रीमद्यमांसप्रियताप्रियताचावगुण्ठने ॥ ३२ ॥

बहुत घिन मालूम होना अच्छेप्रकार भोजन करनेपर भी वल तथा मांसका क्षीण होना मैथुन मद्य तथा मांसमें बहुत रुचिर होना बहुत ओढ़ने की इच्छाहोना ॥ ३२ ॥

मक्षिकाघुणकेशानांतृणानांपतनानिच । प्रायोऽन्नपानेकेशानांनखानाञ्चाभिवर्द्धनम् ॥ ३३ ॥

भोजनमें प्राय: मक्खी घुन केश तथा तृणों का गिरना केशों तथा नखोंका बहुतबढ़ना ३३॥

पतत्रिभिःपतङ्गैश्चश्वापदैश्चाभिधर्षणम् । स्वप्नेकेशास्थिराशीनांभस्मनश्चाधिरोहणम् ॥ ३४ ॥

और स्वप्नमें पक्षी पतङ्ग तथा हिंसकजीवों से पीड़ित होना केश हड्डी तथा भस्मके ढेर पर चढ़ना ॥ ३४ ॥

जलाशयानांशैलानांवनानांज्योतिषामपि । शुष्यतांक्षीयमाणानांपततांयच्चदर्शनम् ॥ ३५ ॥

सूखतेहुये तड़ाग तथा क्षीण होतेहुये पर्वत व वन देखना और गिरतेहुये सूर्य आदि तेजोंका देखना ॥ ३५ ॥

प्राग्रूपंबहुरूपस्यतज्ज्ञेयंराजयक्ष्मणः । रूपंतस्ययथोद्देशंपरंशृणुसभेषजम् ॥ ३६ ॥

यह अनेक प्रकार के लक्षणवाले राजयक्ष्मारोग के पूर्वरूप हैं अब औषधि सहित तथा उद्देशपूर्वक राजयक्ष्मा रोगके अन्यलक्षण सुनो ॥ ३६ ॥

यथास्वेनोष्मणापाकंशरीरायान्तिधातवः । स्रोतसाचयथास्वेनधातुःपुष्यतिधातुना ॥ ३७ ॥

शरीरकी सम्पूर्ण धातु अपनी अपनी ऊष्मासे परिपाक को प्राप्त होती हैं और अपने अपने स्रोतके द्वारा एक धातु दूसरी धातु से पुष्ट होती है ॥ ३७ ॥

स्रोतसांसंनिरोधाच्चरक्तादीनाञ्चसंक्षयात् । धातूष्मणाञ्चापचयाद्राजयक्ष्माप्रवर्तते ॥ ३८ ॥

स्रोतोंके रुकजाने से रुधिर आदि धातुओं के क्षीण होजाने से और धातुओं की ऊष्मा के हीन होजानेसे राजयक्ष्मा रोगकी उत्पत्ति होती है ॥ ३८ ॥

तस्मिन्कालेपचत्यग्निर्यदन्नंकोष्ठमाश्रितम् । मलीभवतितत्प्रायःकल्पंतेकिञ्चिदोजसे ॥ ३९ ॥

उस समय में अग्नि कोष्ठमें प्राप्तहुये अन्न को परिपक्व करती है उसका बहुत कभाग प्राय: मलरूप होजाता है [illegible] की उत्पत्ति बहुत थोड़ेअंशसे होती [illegible]

तस्मात्पुरीषंसंरक्ष्यंविशेषा[illegible]क्ष्मिणः । सर्वधातुक्षयार्त्त[illegible]स्यहिविड्बलम् ॥ ४० ॥

इससे राजयक्ष्मावाले पुरुषके म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यत्नपूर्व्वक करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण धातुओं की क्षीणतासे पीड़ित वह पुरुष मल के बलसेही बलवान् होता है ॥ ४० ॥

रसःस्रोतःसुरुद्धेषुस्वस्थानस्थोविवर्द्धते । सऊर्द्ध्वंकासवेगेनबहुरूपःप्रवर्त्तते ॥ ४१ ॥

स्रोतोंके रुकजाने पर अपने स्थानपर स्थित रस बढ़ता है और फिर वही रस अनेक प्रकारका होकर खांसीके वेगसे ऊपरको प्रवृत्त होता है ॥ ४१ ॥

जायन्तेव्याधयश्चातःषडेकादशधापुनः । येषांसङ्घातयोगेनराजयक्ष्मेतिकल्प्यते ॥ ४२ ॥

इससे छः अथवा ग्यारह रोग उत्पन्न होते हैं जिन रोगों के समूह को राजयक्ष्मा कहते हैं ॥ ४२ ॥

कासोंऽसतापोवैस्वर्य्यंज्वरःपार्श्वशिरोरुजौ । शोणितश्लेष्मणोश्छर्दिःश्वासःकोष्ठामयोऽरुचिः॥४३॥

खांसी कन्धोंमें जलन होना स्वरभङ्ग ज्वर पसुलियों में पीड़ा शिर में पीड़ा रुधिर तथा कफ का वमन होना श्वास कोष्ठरोग और अरुचि ॥ ४३ ॥

रूपाण्येकादशैतानियक्ष्मिणःषडिमानिवा । कासोज्वरःपार्श्वशूलंस्वरवर्च्चोगदोऽरुचिः ॥ ४४ ॥

यह ग्यारह राजयक्ष्मावालों के लक्षण हैं अथवा खांसी ज्वर पसुलियों में पीड़ा स्वरभङ्ग मल फटाहुआ होना तथा अरुचि यह छः राजयक्ष्मा के लक्षण हैं ॥ ४४ ॥

सर्व्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिङ्गैर्मांसबलक्षये । युक्तोवर्ज्यश्चिकित्स्यस्तुसर्वरूपोऽप्यतोऽन्यथा ॥ ४५ ॥

जिस राजयक्ष्मावालेका बल तथा मांस क्षीण होगया हो उसके चाहे सम्पूर्ण लक्षण हों चाहे आधे लक्षण हों चाहे तीनहीं लक्षण हों परन्तु उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये और जिस राजयक्ष्मावालेका बल तथा मांस क्षीण न हुआहो उसके चाहे सम्पूर्ण लक्षणहों परंतु उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४५ ॥

घ्राणमूलेस्थितःश्लेष्मारुधिरंपित्तमेववा । मारुताध्मातशिरसोमारुतंश्यायतेप्रति ॥ ४६ ॥

शिरके वायु से भरेहुये होनेपर नासिकाके मूल में स्थित कफ पित्त तथा रुधिर वायुकी ओर जाते हैं ॥ ४६ ॥

प्रतिश्यायस्ततोघोरोजायतेदेहकर्शनः । तस्यरूपंशिरःशूलंगौरवंघ्राणविप्लवः ॥ ४७ ॥

इसीसे शरीर को कृश करनेवाला घोरप्रतिश्याय (जुकाम)रोग उत्पन्न होताहै जिसके लक्षण यहहैं शिर में पीड़ा शरीरका भारीपन गन्धका ज्ञान न होना ॥ ४७ ॥

ज्वरःकासःकफोत्क्लेशःस्वरभेदोरुचिःक्लमः । इन्द्रियाणामसामर्थ्यंयक्ष्माचातःप्रवर्त्तते ॥ ४८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्वर खाँसी कफ का उभड़ना स्वरभंग अरुचि ग्लानि तथा इन्द्रियों का असमर्थ होना इस प्रतिश्याय से राजयक्ष्मा रोगकी उत्पत्ति होती है॥ ४८॥

पिच्छिलंबहलंविस्रंहरितंश्वेतपीतकम्। कासमानोरसंयक्ष्मीनिष्ठीवतिकफानुगम्॥ ४९॥

यक्ष्मारोगी पुरुष खाँसी में पिच्छिल (सचिक्कण) गाढ़ा दुर्गंधित और हरा श्वेत अथवा पीतवर्ण तथा कफयुक्त रसथूंकताहै॥४९॥

अंसपार्श्वाभितापश्चतापःपादकरस्यच। ज्वरःसर्वाङ्गगश्चेतिलक्षणं राजयक्ष्मणः॥ ५०॥

कंधे में पसुलियों में हाथों में तथा पैरों में जलन होना और सम्पूर्ण अंगोंमें ज्वर रहना राजयक्ष्मा के लक्षण हैं॥ ५०॥

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्कासवेगात्सपीनसात्। स्वरभेदोभवेद्वाताद्रूक्षःक्षामश्चलःस्वरः॥ ५१॥

वात पित्त कफ रुधिर खाँसी तथा पीनस इनसे राजयक्ष्मा में स्वरभंग उत्पन्न होता है वातज स्वरभंग में रूक्ष कृश तथा चञ्चल स्वर होता है॥ ५१॥

तालुकण्ठपरिप्लोषःपित्ताद्वक्तुमसूयते॥ कफान्मन्दोविबद्धश्चस्वरःखुरखुरायते॥ ५२॥

पित्तज स्वरभंग में कण्ठ तथा तालु में दाह और बोलने में असूया यह लक्षण होते हैं कफज स्वरभंग में मंद बँधाहुआसा तथा खुरखुराशब्द युक्त स्वर होता है॥ ५२॥

सद्योरक्तविबन्धत्वात्स्वरःकृच्छ्रात्प्रवर्त्तते। कासातिवेगात्करुणःपीनसात्कफवातिकः॥ ५३॥

रक्तज स्वरभंग में रक्तके बँधजाने से शीघ्रही स्वर बहुत कष्टसे निकलता है खाँसी से हुये स्वरभंग में स्वरकरुण (घिसाहुआ सा) होजाता है और पीनस से हुये स्वरभंग में कफज तथा वातज स्वरभंग के से लक्षण होते हैं॥ ५३॥

पार्श्वशूलन्त्वनियतंसङ्कोचायामलक्षणम्। शिरःशूलंससन्तापंयक्ष्मिणःस्यात्सगौरवम्॥ ५४॥

राजयक्ष्मा वालेके संकोच तथा आयाम (सिकुड़ना तथा विस्तृत होना) सहित कभी कभी पसुलियों में पीड़ा होती है और संताप तथा गौरव सहित शिरमें पीड़ा होतीहै॥५४॥

अतिस्विन्नेशरीरेतुयक्ष्मिणोविषमाशनात्। कण्ठात्प्रवर्त्ततेरक्तंश्लेष्मा चोत्क्लिष्टसञ्चितः॥ ५५॥

विषम आहार करने से बहुत स्विन्न पसी[ना युक्त]) शरीर वाले यक्ष्मारोगीके क[ण्ठ] से उभड़ा हुआ संचित कफ तथा रुधिर [नि]कलता है॥ ५५॥

रक्तंविबद्धमार्गत्वान्मांसादीन्[...] द्यते। आमाशयस्थमुत्क्लिष्टं[...] त्कण्ठमेतिवा॥ ५६॥

स्रोतोंके रुकजानेसे रुधिर मांसा[...] को पुष्ट नहीं करसक्ता है किन्तु आ[...] स्थित होकर उत्क्लेश को प्राप्त हो[...]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थवा बहुत होने के कारण कण्ठ में आ-जाता है ॥ ५६ ॥

वातश्लेष्मविबन्धत्वादुरसःश्वास मृच्छति। दोषैरुपहतेचाग्नौसपि च्छमतिसार्य्यते ॥ ५७ ॥

वायु तथा कफ के द्वारा यक्ष्मावाले के वक्षस्थलके रुकजाने से श्वास उत्पन्न होता है वातादि दोषोंके द्वारा जठराग्नि के मन्द होजाने से यक्ष्मावाले को फेनायुक्त दस्त आते हैं ॥ ५७ ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैर्वाजिह्वाहृदयसंश्रितैः। जायतेऽरुचिराहारैर्दुष्टैरर्थैश्चमानसैः ॥ ५८ ॥

वातादिक सम्पूर्ण दोषोंके अथवा अलग२ एकही दोष के जिह्वा तथा हृदय में स्थित होने से दूषित आहार करने से और मन में क्रोध शोक आदि विकार होनेसे यक्ष्मावाले को अरुचि होजाती है ॥ ५८ ॥

कषायतिक्तमधुरैर्विद्यान्मुखरसैःक्रमात्। वाताद्यैररुचिंजातांमानसीं दोषदर्शनात् ॥ ५९ ॥

मुख का रस कषैला तिक्त तथा मधुर होने से वातज आदि अरुचि क्रमसे जानना चाहिये अर्थात् वातज अरुचिमें मुख कषैलाहोता है पित्तज में तिक्त होता है तथा कफज में मधुर होताहै और मानस विकारोंको देखकर मानसी अरुचि जानना चाहिये ॥ ५९ ॥

अरोचकात्कासवेगाद्दोषोत्क्लेशाद्भयादपि। छर्दिर्यासाविकाराणामन्येषामप्युपद्रवः ॥ ६० ॥

अरुचि से खांसी के वेगसे वातादि दोषों के उभड़ने से तथा भयसे जो छर्दि उत्पन्नहोती है वह यक्ष्मा तथा अन्यरोगोंकी भी उपद्रव रूप होती है ॥ ६० ॥

सर्वस्त्रिदोषजोयक्ष्मादोषाणान्तुबलाबलम्। परीक्ष्यावस्थितंवैद्यःशोषिणंसमुपाचरेत् ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण यक्ष्मारोग त्रिदोषज होते हैं परंतु वैद्यको चाहिये कि दोषोंके बलाबलको देखकर राजयक्ष्मा रोगीकी चिकित्साकरे॥६१॥

प्रतिश्यायेशिरःशूलेकासेश्वासेस्वरक्षये। पार्श्वशूलेचविविधाःक्रियाःसाधारणीःशृणु ॥ ६२ ॥

प्रतिश्याय (जुकाम) शिरकी पीड़ा खांसी श्वास स्वरभंग तथा पसुलियों की पीड़ा इन रोगोंकी अनेक प्रकार की साधारण चिकित्सा सुनो ॥ ६२ ॥

पीनसेस्वेदमभ्यङ्गंधूममालेपनानि च। परिषेकावगाहांश्चयावकंवाट्यमेवच ॥ ६३ ॥

पीनस में स्वेदन अभ्यङ्ग (तैलादिमर्दन) धूमपान लेप परिषेक (सींचना) स्नान यवों का वाट्य (भक्ष्य विशेष) ॥ ६३ ॥

लवणाम्लकटूष्णांश्चरसान्स्नेहोपसंहितान्। लावतित्तिरिदक्षाणांवर्त्तकानाञ्चकल्पयेत् ॥ ६४ ॥

लवण अम्ल कटु तथा उष्ण रसयुक्त ल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वा तीतर मुर्गा तथा बटेरके मांस का स्नेह युक्त रस की कल्पना करे ॥ ६४ ॥

सपिप्पलीकंसयवंसकुलत्थंसनागरं । दाडिमामलकोपेतंस्निग्धमाजं रसंपिबेत् ॥ ६५ ॥

और पीपँरि यव कुलथी सोंठि अनार आमला तथा घृतादि स्नेहयुक्त बकरे के मांस का रस पीना ॥ ६५ ॥

तेनषड्विनिवर्त्तन्तेविकाराःपीनसादयः । मूलकानांकुलत्थानांयूषैर्वासूपकल्पितैः ॥ ६६ ॥

इन उपायों से पूर्वोक्त पीनस आदि छः रोग नष्ट होते हैं मूली तथा कुलथी के यूष के साथ बनायेहुये ॥ ६६ ॥

यवगोधूमशाल्यन्नैर्यथासात्म्यमुपाचरेत् ॥ पिबेत्प्रसादंवारुण्याजलंवापाञ्चमूलिकम् ॥ ६७ ॥ धान्यनागरसिद्धंवातामलक्याथवाश्रृतम् । पर्णिनीभिश्चतसृभिस्तेनचान्नानि कल्पयेत् ॥ ६८ ॥

यव गेहूं तथा शालिधान के चावलों के पदार्थ सात्म्यके अनुसार खानेसे पीनस आदि रोगोंका नाश होताहै वारुणी मदिराका प्रसाद (ऊपर का निर्म्मल भाग) पीना पंचमूलके साथ धनियां तथा सोंठिके साथ भूमिआमले के साथ अथवा शालिपर्णी पृष्णिपर्णी मुद्गपर्णी तथा माषपर्णी के साथ पाक कियेगये जलका पीना और इसी जलके संयोग से पाक कियेगये अन्नका भोजन करना

पीनस आदि रोगोंमें हित होताहै ॥६७।६८॥

कृसरोत्कारिकामाषकुलत्थयवपायसैः । सङ्करस्वेदविधिनाकण्ठंपार्श्वमुरःशिरः ॥ ६९ ॥

कण्ठ पसुली वक्षस्थल तथा शिरमें कृसर (खिचड़ी) उत्कारिका (भक्ष्यविशेष)उर्द कुलथी यव तथा क्षीरकेद्वारा संकरस्वेद(इसकी विधि सूत्रस्थानके स्वेदाध्यायमें कहीगई) की विधि से ॥ ६९ ॥

स्वेदयेत्पत्रभङ्गेनशिरश्चपरिषेचयेत् । बलागुडूचीमधुकश्रृतैर्वावारिभिस्सुखैः ॥ ७० ॥

स्वेदन करना चाहिये और पत्रभङ्ग से अथवा बरियारा गिलोय तथा मुलेठी के साथ पाक कियेगये कुछ उष्ण जलके द्वारा शिरपर तरारा देना चाहिये ॥ ७० ॥

वस्तमत्स्यशिरोभिर्वानाडीस्वेदैःप्रयोजयेत् । कण्ठेशिरसिपार्श्वेचपयोभिर्वासवातिकैः ॥ ७१ ॥

अथवा भेड़ व मछलीके शिरसे नाड़ी स्वेद करावे अथवा कण्ठ शिर और पसुलियों में वातल जलसे स्वेद करावे ॥ ७१ ॥

औदकानूपमांसानिसलिलंपाञ्चमूलिकम् । सस्नेहमारनालंवानाडीस्वेदंप्रयोजयेत् ॥ ७२ ॥

अथवा जल पथा अनूपदेश के जी[illegible] मांस तथा पञ्चमूल के काढ़ेके द्वारा [illegible]दि स्नेहयुक्त आरनाल (कांजीविशे[illegible] द्वारा नाड़ीस्वेद (सूत्रस्थान का स्वेदा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखो)की विधिसे स्वेदन करना चाहिये॥७२॥

जीवन्त्याःशतपुष्पायाबलायामधुकस्यच । वचायावेशवारस्यविदार्य्यामलकस्यच ॥ ७३ ॥ औदकानूपमांसानामुपनाहाश्चसंस्कृताः। शस्यन्तेचचतुःस्नेहाःशिरःपार्श्वांसशूलिनाम् ॥ ७४ ॥

शिर पसुली तथा कंधोंकी पीड़ा में जीवंती सौंफ वरियारा मुलेठी बच वेशवार(मसाला) विलाईकन्द आमला जलके जीवों का मांस तथा अनूपदेश के जीवोंका मांस इन वस्तुओं का लेप और इन्हीं औषधियों के साथ पाक कियागया चार प्रकारका घृतादि स्नेह हित होता है ७३ । ७४ ॥

शतपुष्पासमधुकंकुष्ठंतगरचन्दनम् । आलेपनंस्यात्सघृतंशिरःपार्श्वांसशूलनुत् ॥ ७५ ॥

सौंफ मुलेठी कूट तगर तथा चन्दन इनसब को घी में मिलाकर लेप करनेसे शिर पसुली तथा कंधोंकी पीड़ा नष्ट होती है ॥ ७५ ॥

बलारास्नातिलाःसर्पिर्मधुकंनीलमुत्पलम् । पलङ्कषादेवदारुचन्दनंकेशरंघृतम् ॥ ७६ ॥

वरियारा रासना तिल घी मुलेठी तथा नीलोत्पल गुग्गुल देवदारु लालचन्दन नागकेशर तथा घी ॥ ७६ ॥

वीराबलाविदारीचकृष्णगन्धापुनर्नवा । शतावरीपयस्याचकत्तृणंमधुकंघृतम् ॥ ७७ ॥

काकोली वरियारा विलाईकन्द सहिंजन तथा गदहपूर्णा और शतावर क्षीरकाकोली रोहिष मुलेठी तथा घी ॥ ७७ ॥

चत्वारएतेश्लोकार्द्धैःप्रदेहाःपरिकीर्त्तिताः । शस्ताःसंसृष्टदोषाणां शिरःपार्श्वांसशूलिनाम् ॥ ७८ ॥

इन चारोंयोगों का लेप जोकि आधे आधे श्लोकमें कहेगये हैं द्वन्द्वज (दो दोषोंसे होने वाली) शिर पसुली तथा कन्धों की पीड़ावाले पुरुषोंको हितकारी है ॥ ७८ ॥

नावनंधूमपानानिस्नेहाश्चोत्तरभक्तिकाः । तैलान्यभ्यङ्गयोगानि वस्तिकर्मतथापरम् ॥ ७९ ॥

शिरादि की पीड़ा में नस्य धूमपान भोजन के उपरान्त स्नेहपान तैलमर्दन और वस्तिकर्म्म (अमल देना) हित होताहै ॥ ७९ ॥

जलौकालाबुशृङ्गैर्वाप्रदुष्टंव्यधनेनवा । शिरःपार्श्वांसशूलेषुरुधिरंतस्यनिर्हरेत् ॥ ८० ॥

शिर पसुली तथा कन्धों में रुधिरके दूषित होने के कारण जो पीड़ा होतीहोय तो जोंक तोंबी सिंगी तथा फस्त खुलानेके द्वारा रुधिर को निकलावे ॥ ८० ॥

प्रदेहःसघृतश्रेष्ठः पद्मकोशीरचन्दनैः । दूर्वामधुकमञ्जिष्ठाकेशरैर्वाघृताप्लुतैः ॥ ८१ ॥

पद्माख खस चन्दन दूब मुलेठी मँजीठ नागकेसर इनका लेप घीके द्वारा हितहै ॥८१॥

प्रपौण्डरीकनिर्गुण्डीपद्मकेशरमुत्प

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लम् । कशेरुकाःपयस्याचससर्पि
ष्कंप्रलेपनम् ॥ ८२ ॥

अथवा पुँडरिया निर्गुण्डी कमलकी केसर उत्पल कसेरू क्षीरकाकोली तथा घीके द्वारा लेप करना शिर आदिकी पीड़ामें हित होता है ॥ ८२ ॥

चन्दनाद्येनतैलेनशतधौतेनसर्पि
षा। अभ्यङ्गःपयसासेकःशस्तश्चम
धुकाम्बुना ॥ ८३ ॥ माहेन्द्रेणसु
शीतेनचन्दनादिशृतेनवा । प
रिषेकःप्रयोक्तव्यइतिसंशमनीक्रि
या ॥ ८४ ॥

इति संशमनीक्रिया।

चन्दनादि तैल तथा सौवार धोयेहुये घी का मलना दूध और मुलेठी का काढ़े के द्वारा वृष्टिके शीतलजल के द्वारा अथवा चन्दनादि तैलमें कहीहुई औषधियोंके साथ पाक कियेगये जलके द्वारा तरारा देना शिर आदिकी पीड़ा में हित होता है इस प्रकार संशमनी क्रिया कहीगई ॥ ८३।८४ ॥

दोषाधिकानांवमनंशस्यतेसविरेच
नम् । स्नेहस्वेदोपपन्नानांसस्नेहंय
न्नकर्षणम् ॥ ८५ ॥

जिन यक्ष्मारोगियों के दोष अधिक हों उनको स्नेहन तथा स्वेदनके उपरान्त स्नेहयुक्त वमन तथा विरेचन कराना चाहिये परन्तु वमन विरेचन ऐसाहो जिसमें रोगी कृश न होजाय ॥ ८५ ॥

शोषीमुञ्चतिगात्राणिपुरीषस्रंसनाद

पि । अबलापेक्षिणींमात्रांकिंपुन
र्योविरिच्यते ॥ ८६ ॥

क्योंकि यक्ष्मारोगी के मलका त्याग करने सेही सम्पूर्णअङ्ग शिथिल होजाते हैं और बलका विचार न करके विरेचन कराने से यक्ष्मावाले का शरीर शिथिल होजाताहै इस में तो कहानाही क्या है ॥ ८६ ॥

योगात्संशुद्धकोष्ठानांकासेश्वासे
स्वरक्षये । शिरःपार्श्वांसशूलेषुसि
द्धानेतान्प्रयोजयेत् ॥ ८७ ॥

खांसी श्वास स्वरभङ्ग और शिर पसुली तथा कन्धेकी पीड़ामें वमन विरेचनकेद्वारा को-ष्ठको शुद्ध करके यक्ष्मावालेको आगे कहेहुये इन सिद्धयोगोंका सेवन करानाचाहिये॥८७॥

बलाविदारिगन्धाद्यैर्विदार्य्यामधुके
नवा। सिद्धंसलवणंसर्पिर्नस्यंस्या
त्स्वर्य्यमुत्तमम् ॥ ८८ ॥

बरियारा विदारी गन्ध आदि गणकी औ-षध बिलाईकन्द मुलेठी तथा सैंधव लवण इन सब के साथ पाक किये गये घीकी नस्य लेनेसे स्वरभंग में उत्तम होता है ॥ ८८ ॥

प्रपौण्डरीकंमधुकंपिप्पलीबृहतीब
ला। क्षीरंसर्पिश्चतत्सिद्धंस्वर्य्यं
न्नावनंपरम् ॥ ८९ ॥

पुँडरिया मुलेठी पीपरि भटकटैया रा तथा दूधके साथ पाक किये ग नस्य स्वरभंग में बहुत उत्तम होता है

शिरःपार्श्वांसशूलघ्नंकासश्वास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बर्हणम् । प्रयुज्यमानंबहुशोघृतञ्चो त्तरभक्तिकम् ॥ ६० ॥

भोजन के उपरान्त घृतपान करनेसे खाँसी श्वास और शिर पसुली तथा कंधों की पीड़ा का नाश होता है ॥ ९० ॥

दशमूलेनपयसासिद्धंमांसरसेनच। बलागर्भंघृतंसद्योरोगानेतान्प्रबाध ते ॥ ६१ ॥

दशमूल दूध मांसरस तथा बरियारा के कल्क के साथ पाक कियागया घी शीघ्रही खाँसी आदि रोगोंका नाशक होता है ॥ ९१ ॥

भक्तस्योपरिमध्येवायथाग्निप्रविचा रितम् । रास्नाघृतंवासक्षीरंसक्षीरंवा बलाघृतम् ॥ ६२ ॥

भोजन के उपरान्त अथवा भोजनके मध्य में अग्निबल के अनुसार रासना के साथ अथवा बरियारा के साथ पाक किये हुये घी को दूध के साथ पीनेसे खाँसी आदि रोगों का नाश होता है ॥ ९२ ॥

लेहान्कासापहान्स्वर्य्यान्श्वासहि क्कानिबर्हणान् । शिरःपार्श्वांसशू लघ्नांस्नेहांश्चातःपरंशृणु ॥९३॥

इसके उपरान्त खाँसी स्वरभंग श्वास हिक्की और के शिर पसुली तथा कंधों की पीड़ा नष्ट कर[illegible]नेवाले अवलेह तथा स्नेहों का [illegible] करो । ॥ ९३ ॥

खर्जूरमू[illegible]रांमृद्वीकाशर्कराक्षौद्रसंयुत सपिप्[illegible]पलीकंवैस्वर्य्यकासश्वा [illegible]बर्हणम् ॥ ६४ ॥

घी खजूर दाख शक्कर शहद तथा पीपरि इन को एकमें मिलाकर चाटने से स्वरभंग खाँसी तथा श्वासका नाश होता है ॥ ९४ ॥

दशमूलशृतात्क्षीरात्सर्पिर्यदुदियान्न वम् । सपिप्पलीकंसक्षौद्रंतत्परंस्वर बोधनम् ॥ ६५ ॥

दशमूल के साथ पाक किये गये दूध से निकले हुये नवीन घी में पीपरि तथा शहद मिलाकर चाटने से स्वरभङ्ग में बहुत उत्तम होता है ॥ ९५ ॥

शिरःपार्श्वांसशूलघ्नंकासश्वासज्व रापहम् । पञ्चभिःपञ्चमूलैर्वाशृताद्य दुदियाद्घृतम् ॥६६॥ पञ्चानांपञ्च मूलानांरसेक्षीरचतुर्गुणे । सिद्धंसर्पि र्जयत्येतद्यक्ष्मणःसप्तकंबलम् ॥६७॥

और खांसी श्वास ज्वर और शिर पसुली तथा कंधोंकी पीड़ा का नाश होता है पांचों पंचमूलोंके साथ पाक कियेगये दूध से निकले हुये घी का पांचों पंचमूलोंके काढ़े तथा चतुर्गुण दूधके साथ विधिपूर्वक पाक करके सेवन करने से यक्ष्मारोगी के स्वरभङ्ग आदि सातो रोगों के बलका नाश होता है ॥ ९६।९७ ॥

खर्जूरंपिप्पलीद्राक्षापथ्याशृङ्गीदुरा लभा । त्रिफलापिप्पलीमुस्तंशृंगा टीगुडशर्कराः ॥ ६८ ॥

खजूर पीपरि दाख हड़ काकड़ाशिंगी तथा जवासा हड़ बहेड़ा आमला पीपरि नागरमोथा सिंघाड़ा तथा गुड़की शक्कर ॥ ९८ ॥

वीराशटीपुष्कराख्यंसुरसःशर्करा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुसार न हों उनको अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ १३० ॥

पिप्पलींमदनंबिल्वंशताह्वांमधुकंवचाम्। कुष्ठंशटींपुष्कराख्यंचित्रकंदेवदारुच ॥ १३१ ॥

पीपरि मैनफल बेल सौंफ मुलेठी बच कूट कचूर पुष्करमूल चीता तथा देवदारु १३१॥

पिष्ट्वातैलंविपक्कव्यंपयसाद्विगुणेनच। अर्शसांमूढवातानांतच्छ्रेष्ठमनुवासनम् ॥ १३२ ॥

इनके कल्क के साथ तथा द्विगुण दूध के साथ पाक कियेगये तैलके द्वारा बवासीरों के वातजविबन्ध में अनुवासनवस्ति देनी श्रेष्ठ है ॥ १३२ ॥

गुदनिःसरणंशूलंमूत्रकृच्छ्रंप्रवाहिकाम्।कट्यूरुपृष्ठदौर्बल्यमानाहंवंक्षणाश्रयम् ॥ १३३ ॥

इसके द्वारा कांच निकलना शूल मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका कटि ऊरु पीठ इनकी दुर्बलता वंक्षण का अफरा ॥ १३३ ॥

पिच्छास्रावंगुदेशोफंवातवर्चोविनिग्रहम्। उत्थानंबहुशोयच्चजयेत्तच्चानुवासनात् ॥ १३४ ॥

पिच्छास्राव गुदामें शोथ वायु तथा मल-का रुकना बारम्बार मल तथा वायु का उप-स्थित होना इन रोगों को इस अनुवासनसे-नाश होताहै ॥ १३४ ॥

आनुवासनिकैःपिष्टैःसुखोष्णैःस्नेहसंयुतैः। दार्वन्तैःस्तब्धशूलानिगुदजानिप्रलेपयेत् ॥ १३५ ॥

पीपरि से आदि लेकर देवदारु पर्य्यन्त जो अनुवासनवस्ति की औषधि कहीगई हैं उन सबको महीन पीसकर कुछ गर्म करके घृतादि स्नेहमें मिलाकर स्तम्भ तथा शूलयुक्त बवा-सीरों में लेपकरै ॥ १३५ ॥

दिग्धातैःप्रस्रवन्त्याशुश्लेष्मपिच्छांसशोणिताः। कण्डूःस्तम्भसरुक्शोफःस्रुतानांविनिवर्तते १३६॥

इस लेपसे बवासीरोंमें से रुधिर तथा कफ शीघ्रही बहजाता है और इनके बहजाने से खुजली स्तम्भ पीड़ा तथा शोथ का नाश हो जाता है ॥ १३६ ॥

निरूहंवाप्रयुञ्जीतसक्षीरंदाशमूलिकम्। समूत्रस्नेहलवणंकल्कैर्युक्तंफलादिभिः ॥ १३७ ॥

अथवा उदावर्त्तादि युक्त बवासीर रोग में दूध दश मूलका काढ़ा गोमूत्र घृतादि स्नेह सैंधवलवण तथा मैनफलादि औषधियों का कल्क इनके द्वारा निरूहवस्ति देवे ॥ १३७॥

हरीतकीनांप्रस्थार्द्धंप्रस्थमामलकस्यच। स्यात्कपित्थाद्दशपलंततोऽर्द्धाचेन्द्रवारुणी ॥ १३८ ॥

हड़ ३२ तोले आमला ६४ तोले कैथा ४० तोले इन्द्रायण २० तोले ॥ १३८ ॥

विडङ्गंपिप्पलीलोध्रंमरिचंसैलवालुकम्। द्विपलांशंजलस्यैतच्चतुर्द्रोणेविपाचयेत् ॥ १३९

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और बायविडंग पीपरि लोध मिर्च एलुवा तथा अंकोल यह सब आठ २ तोले हड़आदि सम्पूर्ण औषधियोंको ४०९६ चार हज़ार छानवे तोले जलमें डालकर पाककरे॥१३९॥

द्रोणशेषेरसेतस्मिन्पूतेशीतेसमावपेत् । गुडस्यद्विशतंतिष्ठेत्तत्पक्षंघृतभाजने ॥ १४० ॥

जब १०२४ एकहज़ार चौबीस तोले जल बाक़ी रहे तब उतारकर छान लेवे फिर उस जलके शीतल होजानेपर उसमें आठसौ तोले गुड़ डालकर पंद्रह दिन घी के पात्र में रक्खे ॥ १४० ॥

पक्षादूर्द्ध्वंभवेत्पेयाततोमात्रांयथाबलम् । अस्याभ्यासादरिष्टस्यनश्यन्तिगुदजानपि ॥ १४१ ॥

एकपक्ष के उपरान्त मात्रा तथा बल के अनुसार उसका पानकरे उसके नित्य सेवन से बवासीर नाश होती हैं ॥ १४१ ॥

ग्रहणीपाण्डुहृद्रोगप्लीहगुल्मोदरापहाः । कुष्ठशोफारुचिहरोबलवर्णाग्निवर्द्धनः ॥ १४२ ॥ सिद्धोयमभयारिष्टःकामलाश्वित्रनाशनः । क्रिमिग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्गराजयक्ष्मज्वरान्तकृत ॥ १४३ ॥

इत्यभयारिष्टः ।

और इससिद्ध अभयारिष्ट से ग्रहणीदोष पाण्डुरोग हृदयके रोग प्लीहा गुल्म उदर कुष्ठ शोथ अरुचि कामला श्वेतकुष्ठ कृमि ग्रंथि अर्बुद व्यंग राजयक्ष्मा तथा ज्वरका नाशहोताहै और बल वर्ण तथा अग्नि की वृद्धि होती है ॥ १४२ । १४३ ॥

इति अभयारिष्ट ॥

दन्तीचित्रकमूलानामुभयोःपञ्चमूलयोः । भागान्पलांशानापोथ्य जलद्रोणेविपाचयेत् ॥ १४४ ॥ त्रिफलायादलानाञ्चप्रक्षिप्यत्रिपलंततः । रसेचतुर्थशेषेतुपूतेशीतेसमावपेत् ॥ १४५ ॥

जमालगोटेकीजड़ चीताकीजड़ दशमूल हड़ बहेड़ा तथा आमला यह सब चार चार तोले इन सब औषधियों को कूट कर एक हज़ार चौबीस तोले जल में डालकर पाककरे जब चतुर्थांश जल बाकीरहै तब उतार कर छान लेवे फिर उस जल के शीतल होजाने पर ॥ १४४ । १४५ ॥

तुलांगुडस्यतत्तिष्ठेत्मासार्द्धंघृतभाजने । तन्मात्रयापिबेन्नित्यमर्शोभ्योऽपिप्रमुच्यते ॥ १४६ ॥

उसमें चारसौ तोले गुड़ डालकर घीके पात्रमें पन्द्रह दिनतक रक्खे फिर पन्द्रह दिनके उपरान्त मात्राके अनुसार नित्य उसका पान करने से बवासीरों से छूट जाताहै ॥ १४६ ॥

ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नंवातवर्चोऽनुलोमनम् । दीपनञ्चारुचिघ्नञ्चदन्त्यरिष्टमिदंविदुः ॥ १४७ ॥

इतिदन्त्यरिष्टम् ।

और ग्रहणीदोष पाण्डुरोग तथा अरुचि का नाश होताहै वायु तथा मल अपने मार्गके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुसार होजाता है और अग्नि दीप्त होतीहै इसको दन्त्यरिष्ट कहते हैं ॥ १४७ ॥

इति दन्त्यरिष्ट ॥

हरीतकीफलप्रस्थंप्रस्थमामलकस्य च । विशालायाद्दधित्थस्यपाठाचि त्रकमूलयोः ॥ १४८ ॥

हड़ तथा आमला चौंसठ चौंसठ तोले इन्द्रायण कैथा पाढ़र की जड़ तथा चीता की जड़ ॥ १४८ ॥

द्वेद्वेपलेसमापोथ्यद्विद्रोणेसाधयेद पाम् । पादावशेषेपूतेचरसेतस्मि न्प्रदापयेत् ॥ १४९ ॥ गुडस्यैकां तुलांवैद्यःसंस्थाप्योघृतभाजने । पक्षस्थितंपिबेदेनंग्रहण्यर्शोविकार वान् ॥ १५० ॥

आठ २ तोले इन सब औषधियों को कूटकर दोहज़ार अरतालिस तोले जलमें डालकर पाककरे जब चतुर्थांश जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर ज़लमें चारसौ तोले गुड़ डालकर घीके पात्रमें पन्द्रह दिन रक्खे तदनन्तर ग्रहणी और बवासीरविकार वाला उसको पानकरे ॥ १४९ । १५० ॥

हृत्पाण्डुरोगंप्लीहानंकामलांविषम ज्वरम् । वर्चोमूत्रानिलकृतान्विब न्धानग्निमार्दवम् ॥ १५१ ॥

इससे हृदयके रोग पाण्डुरोग प्लीहा कामला विषमज्वर मंदाग्नि और मल मूत्र तथा वायुका विबन्ध (रुकना) ॥ १५१ ॥

कासंगुल्ममुदावर्त्तंफलारिष्टोव्यपो हति । अग्निसन्दीपनोह्येषकृष्णा त्रेयेणभाषितः ॥ १५२ ॥

इति फलारिष्टम् ।

खांसी गुल्म उदावर्त इन सबको यह फलारिष्ट नाश करता है और कृष्णात्रेयका कहा हुआ यह अग्निको संदीपन करताहै॥१५२॥

इति फलारिष्ट ॥

दुरालभायाःप्रस्थःस्याच्चित्रकस्यवृ षस्यच । पथ्यामलकयोश्चैवपाठा यानागरस्यच ॥ १५३ ॥

जवासा चौंसठ तोले चीता रूसा हड़ आमला पाढ़र सोंठि ॥ १५३ ॥

दन्त्याश्चद्विपलान्भागाञ्जलद्रोणेवि पाचयेत् । पादावशेषेपूतेचसुशीते शर्कराशतम् ॥ १५४ ॥

तथा जमालगोटे की जड़ आठ २ तोले इन सबको कूटकर एक हज़ार चौबिस तोले जलमें डालकर पाक करे जब चतुर्थांश जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर उस जलमें चारसौ तोले शक्कर ॥ १५४ ॥

प्रक्षिप्यस्थापयेत्कुम्भेमासार्द्धंघृतभा जने । प्रलिप्तेपिप्पलीचव्यप्रियंगुक्षौ द्रसर्पिषा ॥ १५५ ॥

डालकर पीपरि चव्य प्रियंगु शहद तथा घी से लिपेहुये घृतके पात्र में पन्द्रह दिनतक रक्खे ॥ १५५ ॥

तस्यमात्रांपिबेत्कालेशार्करस्ययथा बलम् । अर्शांसिग्रहणीदोषमुदाव र्त्तमरोचकम् ॥ १५६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त तिस शार्कररसको उचित समयपर मात्रा तथा बलके अनुसार पानकरने से ववासीर ग्रहणीदोष उदावर्त अरुचि १.५६॥

शकृन्मूत्रानिलोद्गारविबन्धानग्निमार्दवम्। हृद्रोगंपाण्डुरोगञ्चसर्वमेतेनसाधयेत् ॥ १५७ ॥

इति द्वितीयफलारिष्टम्।

मन्दाग्नि हृदयकेरोग पाण्डुरोग और मल मूत्र वायु तथा डकारका विवन्ध (रुकना) इन सब रोगोंका नाश होताहै ॥ १५७ ॥

इति शर्करारिष्ट ॥

नवस्यामलकस्यैकांकुर्य्याज्जर्जरितांतुलाम्। कुडवांशंविडङ्गानिपिप्पलीमरिचानिच ॥ १५८ ॥

नवीन आमले कुटेहुये चारसौ तोले बायविड़ंग पीपरि तथा मिर्च सोलह२तोले॥१५८॥

पाठांमूलञ्चपिप्पल्याःक्रमुकंचव्यचित्रकौ। मञ्जिष्ठानालुकंलोध्रंपलिकान्युपकल्पयेत् ॥ १५९ ॥

पाढ़र पिपरामूल चव्य सुपारी चीता मजीठ एलुवा तथा लोध चार २ तोले॥१५९॥

कुष्ठंदारुहरिद्राञ्चसुराह्वंशारिवाद्वयम्। इन्द्राह्वंभद्रमुस्तञ्चकुर्यादर्द्धपलोन्मितम् ॥ १६० ॥

कूट दारुहल्दी देवदारु दोनों मकार की साँई इन्द्रयव तथा नागरमोथा दो२तोले ॥ १६० ॥

चत्वारिनागपुष्पस्यपलान्यभिनवस्यच। द्रोणाभ्यामम्भसोद्वाभ्यांसाधयित्वावतारयेत् ॥ १६१ ॥ पादावशेषपूतेचशीतेतस्मिन्समावपेत्। मृद्वीकाढ्याढकरसंशीतंनिर्य्यूहसंमितम् ॥ १६२ ॥

और नवीन नागकेशर सोलह तोले इन सब औषधियों को दो हजार अरतालिस तोले जलमें डालकर पाककरे जब चतुर्थांश जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस जलके शीतल होजानेपर इसमें मुनक्केका काढ़ा पांचसौ बारह तोले ॥ १६१। १६२ ॥

शर्करायाश्चभिन्नायादद्याद्द्विगुणितांतुलाम्। कुसुमस्यरसस्यैकमर्द्धप्रस्थंनवस्यच ॥ १६३ ॥

श्वेत शक्कर आठसौ तोले नवीन शहद वत्तिस तोले ॥ १६३ ॥

त्वगेलाम्बुवपत्राम्बुसेव्यक्रमुककेशरान्। चूर्णयित्वातुमतिमान्कार्षिकान्त्रदापयेत् ॥ १६४ ॥

और दालचीनी इलायची केवटी मोथा तेजपात सुगन्धबाला खस सुपारी तथा नागकेशर इनका चूर्ण एक २ तोले बुद्धिमान् वैद्य डाले ॥ १६४ ॥

तत्सर्वंस्थापयेत्पक्षंशुचौचघृतभाजने। प्रलिप्तेसर्पिषाकिञ्चिच्छर्करागुरुधूपिते ॥ १६५ ॥

और घीसे लिपेहुये पवित्र व कुछ शक्कर तथा अगरसे धूपित घृतके पात्रमें पन्द्रहदिनतक रक्खे ॥ १६५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक्षादूर्ध्वमरिष्टोऽयंकनकोनामविश्रुतः। पेयःस्वादुरसोहृद्यःप्रयोगाद्भक्तरोचनः ॥ १६६ ॥

यहकनकारिष्ट पीने योग्य मधुर हृदयको हित तथा भोजनमें रुचिकारी होता है ॥ १६६ ॥

अर्शांसिग्रहणीदोषमानाहमुदरंज्वरम्। हृद्रोगंपाण्डुतांशोषंगुल्मवर्चोविनिग्रहम् ॥ १६७ ॥

इसका पान करने से बवासीर ग्रहणीदोष अफरा उदररोग ज्वर हृदयकेरोग पाण्डुरोग शोष गुल्म मलका रुकना ॥ १६७ ॥

कासंश्लेष्मामयांश्चोग्रान्सर्वानेवापकर्षति। वलीपलितखालित्यंदोषजंचव्यपोहति ॥ १६८ ॥

इति कनकारिष्टः।

खांसी कफज सम्पूर्ण रोग झुरीं बालोंकी श्वेतता और गंजापन इन सब रोगोंका नाश होता है ॥ १६८ ॥

इति कनकारिष्ट ॥

पत्रभङ्गोदकैःशौचंकुर्य्यादुष्णेनचाम्भसा। इतिशुष्कार्शसांसिद्धमुक्तमेतच्चिकित्सितम् ॥ १६९ ॥

शुष्क बवासीरोंमें तेजपातके साथ पाककिये गये जलकेद्वारा अथवा उष्णजलकेद्वारा शौच करना चाहिये इस प्रकार शुष्क बवासीरों की यह सिद्ध चिकित्सा कहीगई ॥ १६९ ॥

चिकित्सितमिदंसिद्धंस्राविणांशृणुतःपरम्। तत्रानुबन्धोद्विविधःश्लेष्मणोमारुतस्यच ॥ १७० ॥

इसके उपरान्त स्रावी (बहनेवाले) बवासीरों की चिकित्सा कहीजाती है स्रावी बवासीरों में दो प्रकारका अनुबन्ध होता है एक कफका अनुबन्ध दूसरा वायुका का अनुबन्ध ॥ १७० ॥

विट्श्यावंकठिनंरूक्षञ्चाधोवायुर्नवर्त्तते। तनुचारुणवर्णंचफेनिलञ्चासृगर्शसाम् ॥ १७१ ॥

जिन बवासीरों में मलका कपिशवर्ण कठिन तथा रूक्ष होना अधोवायु का न निकलना रुधिरका अरुणवर्ण पतला तथा फेनायुक्त होना ॥ १७१ ॥

कट्यूरुगुदशूलश्चदौर्बल्यंयदिवाधिकम्। तत्रानुबन्धोवातस्यहेतुर्यदिविरूक्षणम् ॥ १७२ ॥

कटि जाँघ तथा गुदामें शूल होना और बहुत दुर्बलता यह लक्षणहों और जो बवासीर रूक्षता से उत्पन्नहुयेहों उन बवासीरोंमें वायु का अनुबन्ध जानना चाहिये ॥ १७२ ॥

शिथिलंश्वेतपीतञ्चविट्स्निग्धंगुरुशीतलम्। यद्यर्शसांघनञ्चासृक्तन्तुमत्पाण्डुपिच्छिलम् ॥ १७३ ॥

जिन बवासीरों में मलका शिथिल श्वेतवर्ण पीतवर्ण स्निग्ध भारी तथा शीतल होना रुधिरका गाढ़ा तन्तुमत् सूतसी वस्तुओंसेयुक्त पाण्डुवर्ण तथा पिच्छिल होना ॥ १७३ ॥

गुदंसपिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धञ्चकारणम्। श्लेष्मानुबन्धोविज्ञेय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA / eGangotri

स्तत्ररक्तार्शसांबुधैः ॥ १७४ ॥

और गुदाका पिच्छिल तथा स्तिमित (गीले कपड़े से ढकी हुईसी) होना यह लक्षण हों और जो बवासीर भारी तथा स्निग्ध वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न हुयेहों उनमें तथा रक्त ववासीरों में बुद्धिमान् वैद्यों को कफका अनुबन्धं जानना चाहिये ॥ १७४ ॥

स्निग्धशीतंहितंवातेरूक्षशीतंकफानुगे। चिकित्सितमिदंतस्मात्सम्प्रधार्य्यप्रयोजयेत् ॥ १७५ ॥

जिस ववासीर में वायुका अनुबन्धहो स्निग्ध तथा शीतल और जिस ववासीरमें कफ का अनुबन्धहो उसमें रुक्ष तथा शीतल वस्तु हित होती हैं इससे इस बातका विचार करके दोनों प्रकारके ववासीरों की चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १७५ ॥

पित्तश्लेष्माधिकंमत्वा शोधनेनोपपादयेत्। स्रवणञ्चाप्युपेक्षेतलङ्घनैर्वासमाचरेत् ॥ १७६ ॥

ववासीरों में पित्त तथा कफकी अधिकता में वमनादि शोधन अथवा स्राव (रुधिरआदि बहने) की उपेक्षा अथवा लंघनकेद्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १७६ ॥

प्रवृत्तमादावर्शोभ्यो योनिगृह्णात्यबुद्धिमान्। शोणितंदोषमलिनंतद्रोगाञ्जनयेद्बहून् ॥ १७७ ॥

जो मूर्ख वैद्य ववासीर से पहिलेही प्रवृत्त हुये दोषों से मलिन रुधिर को रोक देताहै तो उस रुधिरसे बहुत रोग पैदा होते हैं १७७॥

रक्तपित्तंज्वरन्तृष्णामग्निनाशमरोचकम्। कामलांशवयथुंशूलंगुदवङ्क्षणसंश्रयम् ॥ १७८ ॥

रक्तपित्त ज्वर तृषा मन्दाग्नि अरुचि कामला शोथ गुदा तथा वंक्षणमें शूल॥१७८॥

कण्डूरुःकोठपिडिकाः कुष्ठंपाण्ड्वामयंगदम्। वातमूत्रपुरीषाणांविबन्धंशिरसोरुजम् ॥ १७९ ॥

खुजली चकत्ते पिड़िका कुष्ठ पाण्डुरोग वायु मूत्र तथा मलका रुकना शिरमें पीड़ा॥१७९॥

स्तैमित्यंगुरुगात्रत्वं तथान्यान्रक्तजान्गदान्। तस्मात्स्रुतेदुष्टरक्तेरक्तसंग्रहणम्मतम् ॥ १८० ॥ हेतुलक्षणकालज्ञोबलशोणितवर्णवित्। कालन्तावदुपेक्षेतयावन्नात्ययमाप्नुयात् ॥ १८१ ॥

शरीरका गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना शरीरका भारीपन और अन्य बहुतसे रक्तज रोग उत्पन्न होते हैं इससे दूषित रुधिरके बहिजानेपर हेतु लक्षण समय बल तथा रुधिरके वर्णका जाननेवाला वैद्य रुधिर को रोंके जबतक किसी विशेष दोषके उत्पन्न होनेका सम्भव न हो तबतक रुधिर को बहने देवे॥ १८०। १८१ ॥

अग्निसन्दीपनार्थञ्च रक्तसंग्रहणाय च। दोषाणांपाचनार्थञ्चपरंतिक्तैरुपाचरेत् ॥ १८२ ॥

तदनन्तर अग्निकी दीप्तिके लिये रुधिरके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोकनेके लिये और दोषोंके परिपाकके लिये तिक्त औषधियोंके द्वारा चिकित्साकरै१८२॥

यत्तुप्रक्षीणदोषस्यरक्तंवातोल्बणस्य च। वर्त्ततेस्नेहसाध्यन्तत्पानाभ्य ङ्गानुवासनैः॥ १८३॥

जिस ववासीर वाले के दोष क्षीण होगये हों तथा वायु प्रवल हो उसका रुधिर स्नेहपान तैलादिमर्दन तथा अनुवासनवस्ति के द्वारा साध्य होता है॥ १८३॥

यत्तुपित्तोल्बणंरक्तं घर्मकालेप्रवर्त्तते। स्तम्भनीयंतदेकान्तान्नचेद्वात कफानुगम्॥ १८४॥

ग्रीष्मऋतु में पित्तकी प्रवलतासे ववासीर वालों के जो रुधिर गिरताहै उसमें यदि वायु तथा कफ की सहायता नहो तो वह रुधिर अवश्य शीघ्रही वन्द करदेनाचाहिये॥१८४॥

कुटजत्वङ्निर्य्यूहःसनागरःस्निग्ध रक्तसंग्रहणः। त्वग्दाडिमस्यतद्वत् सनागरश्चन्दनरसश्च॥ १८५॥

कुरैया की छालके काढ़ेमें अनार की छाल के काढ़े में और लालचन्दन के काढ़े में सोंठि का चूर्ण डालकर पीनेसे स्निग्ध रुधिर रुकजाता है॥ १८५॥

चन्दनकिराततिक्तकधन्वयवासाःस नागराःक्वथिताःरक्तार्शसांप्रशमना दार्वीत्वगुशीरनिम्बाश्च॥ १८६॥

लालचन्दन चिरायता जवासा सोंठि दारुहल्दी तज खस तथा नींवकी छाल इन का काढ़ा पीने से खूनी ववासीर शान्त होजाती है॥ १८६॥

सातिविषाकुटजत्वक् फलञ्चसरसाञ्जनम्। मधुयुतंहिरक्तापहंप्रदद्यात्पिपासवेतण्डुलजलेन॥ १८७॥

अतीस कुरैया की छाल इन्द्रयव तथा रसौंत इन औषधियों को शहदके साथ चावलों के धोवनमें मिलाकर पीने से खूनी ववासीर तथा खूनी ववासीर वालों की तृषा का नाश होताहै॥ १८७॥

कुटजत्वचोविपाच्यं पलशतार्द्रंमेघ सलिलेन। यावत्स्याद्गतरसंसतद्द्रव्यं पूतोरसस्ततोग्राह्यः॥ १८८॥

कुरैया की सौ तोले गीली छाल को वर्षा के जल में डालकर पाक करे जव छाल का रस निकलकर पानीमें आजाय तव उतारकर छानलेवे॥ १८८॥

मोचरसःससमङ्गः फलिनीचसमांशिकैस्त्रिभिस्तैश्चवत्सकबीजंतुल्यं चूर्णितमत्रप्रदातव्यम्॥ १८९॥

फिर इस रसमें मोचरस लजालू तथा प्रियंगु यह तीनों समभाग और इन्हीं तीनों के समान इन्द्रयव इन सब का चूर्ण मिलाकर पाक करे॥ १८९॥

पूतःक्वथितःसरसोदार्व्वीलेपोततःसमवतार्य्य। मात्राकालोपहितारस क्रियैषाजयतिरक्तम्॥ १९०॥

जब यह रस कल्छीमें लगने लगे तव उतार कर मात्रा तथा समयके अनुसार इसका सेवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने से खूनी ववासीर वाले का रुधिर वन्द होजाता है ॥ १९० ॥

छागलीपयसापीता पेयामण्डेनवा यथाग्निबलम् । जीर्णौषधश्चशाली न्पयसाछागेनभुञ्जीत् ॥ १९१ ॥

और अग्निवलके अनुसार वकरी के दूध के साथ अथवा मण्ड के साथ इसका सेवन करना चाहिये और इसके पचजाने पर वकरी के दूधके साथ शालिधानोंके चावलोंका भात खाना चाहिये ॥ १९१ ॥

रक्तार्शांस्यतीसारंरक्तंसासृक्रुजोनि हन्याशु । बलवच्चरक्तपित्तंरसक्रियैषाजयत्युभयभागम् ॥ १९२ ॥

इति कुटजादिरसक्रिया ।

यह रसक्रिया खूनी ववासीर रक्तातीसार रुधिर के रोग और दोनों मार्गों से निकलने वाले प्रवल रक्तपित्तको नष्ट करतीहै॥१९२॥

इति कुटजादिरसक्रिया ॥

नीलोत्पलं समङ्गामोचरसश्चन्दनं तिलालोध्रम् । पीत्वाछागलीपयसा भोज्यंपयसैवशाल्यन्नम् ॥ १९३ ॥

नीलोत्पल लजालू मोचरस लालचन्दन तिल तथा लोध इन औषधियों को वकरीके दूध के साथ पीकर इनके पचजाने पर वकरी के दूध के साथ शालिधानों के चावलों का भात खाना चाहिये इससे खूनीववासीर शांत होती है ॥ १९३ ॥

छागलीपयःप्रयुक्तं निहन्तिरक्तंसवा स्तुकरसश्च । धन्वविहङ्गमृगाणांर सोनिरम्लःकदम्लोवा ॥ १९४ ॥

वकरी का दूध और वथुई के रस से युक्त मरुदेश के पशु तथा पक्षियोंके मांसका खटाई-रहित अथवा कुछ खटाईयुक्त रस खूनी ववासीरको शान्त करताहै ॥ १९४ ॥

पाठवत्सकबीजं रसाञ्जनंनागरंयमान्यश्च । बिल्वमितिचार्शसैश्चूर्णितानिपेयानिसशूलेषु ॥ १९५ ॥

पाढ़र इन्द्रयव रसौंत सोंठि अजवाइन तथा बेल इनके चूर्ण का वकरी के दूध के साथ पान करने से ववासीरवालों के शूलका नाश होताहै ॥ १९५ ॥

दार्वीकिराततिक्तंमुस्तं दुस्पर्शकश्च करुधिरघ्नम् । रक्तेऽतिवर्त्तमानेशूले चघृतंविधातव्यम् ॥ १९६ ॥

दारुहल्दी चिरायता मोथा तथा जवासा इनके चूर्ण के सेवनसे खूनी ववासीर शान्त होती है और ववासीर में वहुत रुधिर गिरने पर तथा शूल होने पर इन्हीं औषधियों के साथ पाक कियागया घी पीनाचाहिये १९६॥

कुटजफलवल्ककेशरनीलोत्पललोध्रधातकीकल्कैः । सिद्धंघृतंविधेयं शूलेरक्तार्शसाम्भिषजा ॥ १९७ ॥

इन्द्रयव कुरैयाकी छाल नागकेशर नीलोत्पल लोध तथा धवई इनके कल्क के साथ पाक कियागया घी बुद्धिमान् वैद्य खूनीववासीरवालों को शूलमें देवे ॥ १९७ ॥

सर्पिःसदाडिमरसं सयावशूकंजय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्याशु। रक्तंसशूलमथवानिदिग्धिकासिद्धम् ॥ १९८ ॥

अनार के रस तथा जवाखारके साथ पाक कियागया अथवा भटकटैया तथा दूधिया जड़ी के साथ पाक कियागया घी शूल सहित खूनी ववासीरको शीघ्रही शान्त करताहै ॥१९८॥

लाजाःपेयापीताचुक्रिकाकेशरोत्पलैःसिद्धा। हन्त्याशुरक्तरोगंतथाबलापृश्निपर्णीभ्याम् ॥ १९९ ॥

खट्टी पालक नागकेशर तथा उत्पल के साथ अथवा बरियारा तथा पृश्निपर्णी के साथ पाक कीगई खीलों की पेया खूनी ववासीरों को शीघ्रहीं नष्ट करती है ॥ १९९ ॥

ह्रीबेरबिल्वनागरनिर्य्यूहे साधितांसनवनीताम्। वृक्षाम्लदाडिमाम्लामम्लीकाम्लांसकोलाम्लाम् ॥ २०० ॥ गृञ्जनकसुरासिद्धांभृष्टांयमकेनवापिबेत्पेयाम्। रक्तातिसारशूलप्रवाहिकाशोथनिग्रहणीम् ॥ २०१ ॥

सुगंधवाला बेल तथा सोंठि इन के साथ पाककीगई मक्खनयुक्त पेया को पीने से अथवा गाजर तथा मद्यके साथ पाक कीगई पूर्वोक्त यमक स्नेहसे छौंकीगई और तिंतिड़ीक दाड़िम इमली या खट्टेबेरों से खट्टी कीगई पेया को पीने से रक्तातीसार शूल प्रवाहिका (अतीसारविशेष) तथा शोथका नाश होता है ॥ २०० । २०१ ॥

काश्मर्य्यामलकानां सकर्बुदारकलाम्लानाम्। गृञ्जनकशाल्मलीनांक्षीरिण्याश्चुक्रिकायाश्च ॥२०२॥ न्यग्रोधशुङ्गकानां खडांस्तथाकोविदारपुष्पाणाम्। दध्नःसरेणसिद्धान्दद्याद्रक्तेऽप्रवृत्तेऽति ॥ २०३ ॥

बवासीर में बहुत रुधिर बहने पर खँभारी आमला श्वेत कचनार के फूल अनारआदि खट्टे फल गाजर सेमर खिन्नी खट्टीपालक बरगद के अंकुर और लाल कचनार के पुष्प इनके यूषोंमें दहीकी मलाई मिलाकर इनका पान करना चाहिये ॥ २०२ । २०३ ॥

सिद्धम्पलाण्डुशाकञ्च तक्रेणोपोदिकांसबदराम्लाञ्चारुधिरस्रवेप्रदद्यान्मसूरसूपञ्चतक्राम्लम् ॥ २०४ ॥

बवासीर में बहुत रुधिर बहने पर पियाज का शाक और पोय तथा बेर इनका मट्ठे में पाक करके सेवन करना चाहिये और मसूर कीदालमें मट्ठा मिलाकर खानाचाहिये२०४॥

पयसाभृतेनयूषैर्मसूरमुद्गाढकीमकुष्ठानाम्। भोजनमद्यादम्लैःशालिश्यामाककोद्रवजम् ॥ २०५ ॥

खूनी ववासीरमें गर्म कियेहुये दूधके साथ और मसूर मूंग अरहर तथा मोठके खट्टे यूप के साथ शालिधान साँवाँ तथा कोदोंका भात खाना चाहिये ॥ २०५ ॥

शशहरिणलावमांसैःकपिञ्जलैणेयैःसुसिद्धैश्च। भोजनमद्यादम्लैर्मधुरैरीषत्समरिचैर्वा ॥ २०६ ॥

और खरगोश हिरण लवा कपिञ्जल तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एण (मृगविशेष) इनके मांसको खटाई मधुररस तथा कुछ मिर्च डालकर पाक करके उसके साथ भोजन करना चाहिये ॥ २०६ ॥

दक्षशिखितित्तिरिरसैर्द्विककुदलोपाकजैश्चमधुराम्लैः। अद्यादर्शैरतिप्रहेश्वर्शःस्वनिलोल्बणशरीरः२०७॥

वात प्रकृति पुरुष खूनी ववासीरों से बहुत रुधिर गिरने पर मुर्गा मोर तीतर ऊंट तथा लोपाक इन जीवों के मांसके खट्टे तथा मधुर रसके साथ भोजनकरे ॥ २०७ ॥

रसखडयूषयवागूसंयुक्तः केवलोऽथवाजयति। रक्तमतिवर्त्तमानंवातञ्चपलाण्डुरुपयुक्तः॥ २०८॥

यूष के साथ तथा यवागू के साथ पियाज खानेसे अथवा केवलही पियाज खानेसे बहुत बहतेहुये रुधिरवाले खूनी ववासीर तथा वायु का नाश होता है॥ २०८ ॥

छागान्तराधितरुणंसरुधिरमुपसाधितंबहुपलाण्डु। व्यत्यासान्मधुराम्लंविट्शोणितसंक्षयेदेयम् २०९॥

जो बवासीरमें मल तथा रुधिर बहुत क्षीण होजाय तो बहुतसे प्याजके साथ पाक किया गया वकरेके मध्यभाग के रुधिर सहित मांस का खट्टा अथवा मधुररस देनाचाहिये२०९॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात्। दधिसरमथिताभ्यासादर्शांस्यपयान्तिरक्तानि२१०॥

मक्खन तथा तिलोंका नित्य सेवन करने से नागकेसर मक्खन तथा शक्कर का नित्य सेवन करने से और दहीकी मलाई तथा मक्खनयुक्त मट्ठेका नित्य सेवन करने से खूनी ववासीरोंका नाश होता है ॥ २१० ॥

नवनीतंघृतंछागंमांसंसपष्टिकःशालिः। तरुणश्चसुरामण्डस्तरुणाचसुरानिहन्त्यजस्त्रम् ॥ २११ ॥

मक्खन घी बकरेका मांस साँठीके चावल शालिधानों के चावल नवीन सुरामण्ड और नवीन सुरा इनका सेवन करने से खूनी बवासीरोंका नाश होता है ॥ २११ ॥

प्रायेणवातबहुलान्यर्शांसिभवन्त्यतिस्रुतेरक्ते। दुष्टेऽपिकफपित्तेतस्मादनिलोऽधिकोज्ञेयः ॥ २१२ ॥

प्रायः बहुत रुधिर गिरने पर ववासीरों में वायु प्रवल होजाती है इससे कफ तथा पित्त के दूषित होनेपर भी वायु कोही अधिक जानना चाहिये ॥ २१२ ॥

दृष्टातुरक्तपित्तंप्रवलंकफवातलिङ्गमल्पञ्च। शीताःक्रियाःप्रयोज्यायथेरितावक्ष्यतेचान्या ॥ २१३ ॥

ववासीर में रुधिर तथा पित्तकी प्रवलता देखकर और कफ तथा वायुके लक्षण स्वल्प देखकर पहिले कहीहुई तथा आगेकही जाने वाली शीतल चिकित्सा करनीचाहिये२१३॥

मधुकंसपञ्चवल्कंबदरीत्वगुडुम्बरंधवपटोलम्। परिषेचनेविदध्याद्वृषककुभयवासनिम्बांश्च ॥ २१४ ॥

मुलेठी बर्गद गूलर पकरिया पीपल तथा वेतकी छाल बेर की छाल गूलर धव परवल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अडूसा अर्जुन जवासा तथा नींब इनका काढ़ा ववासीरों पर सींचना चाहिये ॥ २१४ ॥

रक्तेऽतिवर्त्तमानेदाहेक्लेदेचगाहये च्चापि । मधुकमृणालपद्मकचन्दन कुशकाशनिःक्काथे ॥ २१५ ॥ इक्षुरसमधुकवेतसानिर्य्यूहेशीतलेप यसिवातम् । अवगाहयेत्प्रदिग्धंपू र्वेशिशिरेणतैलेन ॥ २१६ ॥

ववासीरमें बहुत रुधिर गिरनेपर और दाह तथा क्लेदहोने पर इन्हीं औषधियों के काढ़े में रोगी को गोता लगवाना चाहिये अथवा रोगीके संपूर्ण शरीरमें शीतल तैल मलवाकर मुलेठी कमलकी दण्डी पद्माख चन्दन कुश तथा कासके काढ़ेमें या ईखकें रस और मुलेठी तथा वेतके काढ़ेमें या शीतल दुग्धमें गोता लगवाना चाहिये ॥ २१५ । २१६ ॥

दत्त्वाघृतंसशर्करमुपस्थदेशेगुदेत्रि कदेशे । शिशिरजलस्पर्शसुखाधा राप्रस्तम्भनीयोज्या ॥ २१७ ॥

लिङ्ग गुदा तथा त्रिक (रीढ़के नीचे की हड्डी) में शक्कर युक्त घी मलकर शीतल सुखदायक जलके द्वारा तरारा देने से रुधिर वंद होजाता है २१७ ॥

कदलीदलैरभिनवैःपुष्करपत्रैश्चशी तजलसिक्तैः । प्रच्छादनंमुहुर्मुहुरि ष्टंपद्मोत्पलदलैश्च ॥ २१८ ॥

ववासीरों पर शीतल जलसे सींचेहुये केले के नवीन पत्ते पुष्कर के पत्ते और पद्म तथा उत्पल के पत्ते बारम्बार ढकने से हित होता है ॥ २१८ ॥

दूर्वाघृतप्रदेहःशतधौतसहस्रधौतम पिसर्पिः । व्यजनपवनश्चशीतोरक्त स्रावंजयत्याशु ॥ २१९ ॥

दूबके साथ पाक कियेगये सौवार धोयेगये अथवा हजारवार धोयेगये घीका लेप करने से और शीतल पंखा डुलानेसे ववासीरों का रुधिर वन्द होजाता है ॥ २१९ ॥

समङ्गामधुकाभ्यांतिलमधुकाभ्यांर साञ्जनघृताभ्याम् । सर्जरसघृता भ्यांवानिम्बघृताभ्यांमधुघृताभ्या म् ॥ २२० ॥

लजालू तथा मुलेठी तिल तथा मुलेठी रसौंत तथा घी राल तथा घी नींव तथा घी शहद तथा घी ॥ २२० ॥

दार्वीत्वक्सर्पिर्भ्यांसचन्दनाभ्याम थोत्पलघृताभ्याम् । दाहेक्लेदेगुदभ्रं शेगुदजाःप्रतिसारिणीयाःस्युः २२१

दारुहल्दीकी छाल तथा घी अथवा लाल चन्दन उत्पल तथा घी ववासीरों में इनकी मालिश करनेसे दाह क्लेद तथा गुदभ्रंशका नाश होता है ॥ २२१ ॥

आभिःक्रियाभिरथवाशीताभिर्य स्यतिष्ठति न रक्तम् । तंकालेस्नि ग्धोष्णैर्मांसैस्तर्पयेन्मतिमान् २२२॥

इस शीतल चिकित्सा के द्वारा जिस ववासीर वाले का रुधिर न वन्द होता हो बुद्धिमान् वैद्य उसको उचितसमय में स्निग्ध तथा उष्ण मांस खिलाकर पुष्टकरे ॥ २२२॥

अवपीडकसर्पिर्भिःकोष्णैर्घृततैलि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कैस्तथाभ्यङ्गैः । क्षीरघृततैलसेकैः कोष्णैःसमुपाचरेद्दाशु ॥ २२३ ॥

और अवपीड़क घृत के द्वारा कुछ उष्ण घृत तथा तैलकी मालिश के द्वारा और दूध घी तथा तैल सींचनेके द्वारा शीघ्र चिकित्सा करै ॥ २२३ ॥

कोष्णेनवातप्रबलेघृतमण्डेनानुवासयेच्छीघ्रम् । पिच्छावस्तिंदद्याद्वस्तिकालेतस्याथवासिद्धम् २२४॥

और वायु की अधिकता होने पर कुछ उष्ण घृत मण्ड के द्वारा शीघ्रही अनुवासन वस्ति देवे या समयपर पिच्छावस्ति या सिद्धवस्ति देवे ॥ २२४ ॥

यवासकुशकाशानांमूलंपुष्पञ्चशाल्मलम् । न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशुङ्गाश्चद्विपलोन्मिताः ॥ २२५ ॥

जवासा कुश तथा काश की जड़ सेमर के पुष्प और वर्गद गूलर तथा पीपलके अंकुर इन सब औषधियोंको आठ आठ तोले लेकर ॥ २२५ ॥

त्रिप्रस्थेसलिलस्यैतत्क्षीरप्रस्थंचसाधयेत् । क्षीरशेषंकषायञ्चपूतंकल्कैर्विमिश्रयेत् ॥ २२६ ॥ कल्काः शाल्मलिनिर्यासमङ्गाचन्दनोत्पलम् । वत्सकस्यचबीजानिप्रियंगुः पद्मकेशरम् ॥२२७॥ पिच्छावस्तिरयंसिद्धःसघृतक्षौद्रशर्करः । प्रवाहिकागुदभ्रंशरक्तस्रावज्वरापहः २२८॥ इति पिच्छावस्तिःसिद्धवस्तिश्च ।

१९२ तोले जल तथा ६४ तोले दूध में डालकर पाककरें जब पानी जलजाय केवल दूध बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे फिर उस दूध में मोचरस लजालू चन्दन उत्पल इन्द्रयव प्रियंगु घी शहद शक्कर तथा कमल की केसर इनका कल्क मिलाकर वस्ति देवे इसको पिच्छावस्ति कहते हैं यह सिद्धवस्ति है इस से प्रवाहिका गुदभ्रंश रक्तस्राव (रुधिरबहना) तथा ज्वर का नाश होता है ॥ २२६ । २२७ । २२८ ॥

इति पिच्छावस्ति ॥

प्रपौण्डरीकंमधुकंपिच्छावस्तौयथेरितम् । पिष्ट्वानुवासनंस्नेहंक्षीरद्विगुणितंपचेत् ॥ २२९ ॥

पुँडरिया मुलेठी और पिच्छावस्ति में कही हुई औषधियों को पीसकर इनके कल्क के साथ और द्विगुण दूध के साथ अनुवासन वस्ति देने के लिये घृतादि स्नेह का पाक करे ॥ २२९ ॥

ह्रीवेरमुत्पलंलोध्रंसमङ्गाचव्यचन्दनम् । पाठासातिविषाबिल्वंधातकीदेवदारुच ॥ २३० ॥

सुगंधवाला उत्पल लोध लजालू चव्य चंदन पाढ़र अतीस वेल धवई देवदारु २३०॥

दार्वीत्वङ्नागरंमांसीमुस्तंक्षारोयवाग्रजः । चित्रकश्चेतिपेष्याणिचाङ्गेरीस्वरसेघृतम् ॥ २३१ ॥ ऐकध्यंसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धयेत्सर्वं तत्सर्पिः परमौषधम् । अर्शोऽतिसारग्रहणीपाण्डुरोगज्वरारुचौ ॥ २३२ ॥

दारुहल्दी की छाल सोंठि जटामांसी नागरमोथा जवाखार तथा चीता इन औषधियों के कल्क के साथ और अमलोनिया के रस के साथ पाक कियागया घी अत्यन्तश्रेष्ठ औषध है इस घी का सेवन बवासीर अतीसार ग्रहणी दोष पाण्डुरोग ज्वर अरुचि ॥ २३१ । २३२ ॥

मूत्रकृच्छ्रे गुदभ्रंशे वस्त्यानाहप्रवाहणे । पिच्छास्रावेऽर्शसां शूले योज्यमेतत्त्रिदोषनुत् ॥ २३३ ॥

इति ह्रीवेरादिघृतम् ।

मूत्रकृच्छ्र गुदभ्रंश वस्ति स्थान में अफरा प्रवाहिका बवासीरों का पिच्छास्राव तथा शूल इन रोगों में करना चाहिये यह घृत तीनों दोषों को नष्ट करता है ॥ २३३ ॥

इति ह्रीवेरादिघृत ॥

अवाक्पुष्पीवलादार्वीपृश्निपर्णीत्रिकण्टकः । न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशुङ्गाश्च द्विपलोन्मिताः ॥ २३४ ॥

सौंफ वरियारा दारुहल्दी पृष्णिपर्णी गोखुरू वर्गद गूलर तथा पीपलके अंकुर आठ २ तोले ॥ २३४ ॥

कषायएषांपेष्यास्तुजीवन्तीकटुरोहिणी । पिप्पलीपिप्पलीमूलंनागरं सुरदारुच ॥ २३५ ॥

इन सब औषधियों के काढ़ा में पीसकर जीवन्ती कुटकी पीपरि पिपरामूल सोंठि देवदारु ॥ २३५ ॥

कलिङ्गाः शाल्मलंपुष्पंवीराचन्दनमुत्पलम् । कट्फलंचित्रकंमुस्तंप्रियंग्वतिविषास्थिराः ॥ २३६ ॥

इन्द्रयव सेमर के पुष्प काकोली लालचन्दन कायफल चीता नागरमोथा प्रियंगु अतीस शालिपर्णी ॥ २३६ ॥

पद्मोत्पलानांकिञ्जल्कंसमङ्गासनिदिग्धिका । बिल्वंमोचरसःपाठाभागाःकर्षसमन्विताः ॥ २३७ ॥

कमल तथा उत्पलकी केसर लजालू भटकटैया बेल मोचरस तथा पाढ़र यह सब एक २ तोलेभर ॥ २३७ ॥

चतुःप्रस्थेशृतंप्रस्थंकषायमवतारयेत् । त्रिंशत्पलानिप्रस्थोऽत्रविज्ञेयोद्विपलाधिकः ॥ २३८ ॥

१२८ तोले जल में डालकर पाककरै जब चतुर्थांश जल बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे यहांपर ३२ पल का एकप्रस्थ जानना चाहिये ॥ २३८ ॥

सुनिषण्णकचाङ्गेर्याःप्रस्थौद्वौस्वरसस्यच । सर्वैरेतैर्यथोद्दिष्टैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ २३९ ॥

फिर उस में मिरियारी का रस ३२ तोले अमलोनिया का रस ३२ तोले और घी ३२ तोले मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे ॥ २३९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एतदर्शःस्वतीसारेरक्तस्रावेत्रिदोषजे। प्रवाहणेगुदभ्रंशेपिच्छासुविविधासुच ॥ २४० ॥ उत्थानेचातिबहुशःशोथशूलेगुदाश्रये । मूत्रग्रहेमूढवातेमन्देऽग्नावरुचावपि ॥२४१॥ प्रयोज्यं विधिवत्सर्पिर्बलवर्णाग्निवर्द्धनम् । विविधेष्वन्नपानेषुकेवलंवा निरत्ययमिति ॥ २४२ ॥

इति सुनिषण्णकचाङ्गेरीघृतम् ।

अनेक प्रकार के अन्न पान (पीनेकीवस्तु) के साथ इस घृत का सेवन करने से अथवा केवल ही इसघृतका सेवन करने से अतीसार खूनी ववासीर त्रिदोषज प्रवाहिका गुदभ्रंश अनेकप्रकार का पिच्छास्राव बारम्बार वायु तथा मलका वेग होना गुदाका शोथ तथा शूल मूत्राघात मूढ़वात मंदाग्नि तथा अरुचि इन रोगों का नाश होता है और बल वर्ण तथा अग्नि की वृद्धि होती है और इस घृतके सेवन से किसी प्रकारकी हानि नहीं होती है॥ २४०। २४१। २४२ ॥

भवन्तिचात्र ।

व्यात्यासान्मधुराम्लानि शीतोष्णानिचयोजयेत् । नित्यमग्निबलापेक्षीजयत्यर्शःकृतान्गदान् ॥२४३॥

इस में यह श्लोक हैं बवासीर में मधुर तथा अम्ल वस्तु और शीत तथा उष्ण वस्तुओं का उलट पलट कर व्यौहार करना चाहिये अग्निबलपर सदैव दृष्टि रखने से बवासीरसे होनेवाले रोग नष्ट होजातेहैं॥२४३॥

त्रयोविकाराःप्रायेण येपरस्परहेतवः। अर्शांसिचातिसारश्चग्रहणीदोषएवच ॥ २४४ ॥

क्योंकि प्रायः परस्पर एक दूसरे के हेतुभूत बवासीर अतीसार तथा ग्रहणीदोष ॥२४४॥

एषामग्निबलेहीने वृद्धिर्वृद्धेपरिक्षयः । तस्मादग्निबलंरक्ष्यमेषुत्रिषु विशेषतः ॥ २४५ ॥

इन तीनों रोगों में अग्निबल के क्षीणहोने पर इनकी वृद्धि होती है और अग्निबल की वृद्धि होनेपर इन की क्षीणता होती है इससे इनतीनों रोगों में अग्निबल की रक्षा विशेषतासे करनी चाहिये ॥ २४५ ॥

भृष्टैःशाकैर्यवागूभिर्यूषैर्मांसरसैःखडैः । क्षीरतक्रप्रयोगैश्चविचित्रैर्गुदजान्जयेत् ॥ २४६ ॥

अनेकप्रकार के भूनेहुये शाक यवागू मांस रस दूध तथा मट्ठे के प्रयोग से बवासीरको शान्त करना चाहिये ॥ २४६ ॥

यद्वायोरानुलोम्याय यदग्निबलवृद्धये । अन्नपानौषधंद्रव्यन्तत्सेव्यं नित्यमर्शसैः ॥ २४७ ॥

जिस अन्नपान तथा औषधि के द्वारा वायु अपने मार्ग के अनुसार हो जाती है और अग्निबलकी वृद्धि होती है उसी अन्नपान तथा औषध का सेवन बवासीरवाले को करना चाहिये ॥ २४७ ॥

यदतोविपरीतंस्यान्निदानेयत्प्रदर्शि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तम्। गुदजाभिपरीतेनतत्सेव्यंन कथञ्चन ॥ २४८ ॥

और जो वस्तु इन गुणोंसे विपरीतहों तथा ववासीरों के निदानों में कहीगई हों उनका सेवन ववासीरवालों को कदापि नहीं करना चाहिये ॥ २४८ ॥

तत्रश्लोकाः।

अर्शसांद्विविधंजन्म पृथगायतनानिच। स्थानसंस्थानलिङ्गानिसाध्यासाध्यविनिश्चयः ॥ २४६ ॥

तिस में यह श्लोक हैं इस अर्शसांचिकित्सित नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने ववासीरोंका दो प्रकार से जन्म अलग २ कारण स्थान लक्षण तथा आकृति ववासीरों की साध्यता तथा असाध्यताका निश्चय २४९॥

अभ्यङ्गाःस्वेदनंधूमाः सावगाहाःप्रलेपनाः। शोणितस्यावसेकश्च योगादीपनपाचनाः २५० ॥

अभ्यङ्ग स्वेदन धूम अवगाहन लेप रक्तमोक्षण दीपन पाचन योग ॥ २५० ॥

पानान्नविधिरग्र्यश्च वातवर्चोऽनुलोमनाः। योगाःसंशमनीयाश्चसर्पींषिविविधानिच ॥ २५१ ॥

वायु तथा मलको मार्ग के अनुसार करनेवाली श्रेष्ठ अन्नपानविधि संशमनयोग, अनेक प्रकारके घृत ॥ २५१ ॥

वस्तयस्तक्रयोगाश्च वरारिष्टाःसशर्कराः। शुष्काणामर्शसांशस्ताःस्राविणांलक्षणानिच ॥ २५२ ॥

वस्ति मट्ठे के योग शुष्क ववासीरोंमें हित शर्करायुक्त श्रेष्ठ अरिष्टस्रावी ववासीरों के लक्षण ॥ २५२ ॥

द्विविधंसानुबन्धानांतेषाञ्चेष्टंयदौषधम्। रक्तसंग्रहणायोगाःपेष्याश्चविविधात्मकाः ॥ २५३ ॥

अनुबन्ध वाले ववासीरों की दो प्रकारकी औषधि रुधिर को रोकनेवाले योग अनेक प्रकारकी पेया ॥ २५३ ॥

स्नेहपानविधिश्चाग्र्योविधिःपानान्नयोश्चयः। परिषेकावगाहाश्चप्रदेहाःप्रतिसारणम् ॥ २५४ ॥ अतिवृत्तस्यरक्तस्यविधातव्यंयदुत्तरम्। तत्सर्वमिहनिर्दिष्टंगुदजानांचिकित्सितम् ॥ २५५ ॥

इत्यर्शसां चिकित्सिते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

स्नेहपानकी श्रेष्ठविधि अन्नपान की विधि और रुधिर के बहुत बहने पर परिसेंक(सींचना) अवगाहन (गोतालगाना) लेप तथा मालिश करना आदि जो उचित है यह सब विषय भगवान् आत्रेयजी ने वर्णन किया है ॥ २५४ । २५५ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकाअर्शसांचिकित्सितनामनववांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

अतीसारचिकित्सितम्।

भगवंतंखलुआत्रेयंकृताह्निकंकृताग्निहोत्रमासीनमृषिगणपरिवृतमु

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्तरेहिमवतःपार्श्वेविनयादुपेत्यअभिवाद्यअग्निवेशउवाचभगवन् ! अतीसारस्यप्रागुत्पत्तिनिमित्तलक्षणोपशमनानिप्रजानुग्रहार्थमाख्यातुमर्हसीति ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अतीसार चिकित्सित नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

हिमालय पर्वत के उत्तर तटपर सम्पूर्ण आह्निक तथा अग्निहोत्र करके ऋषियों के मध्य में सुखपूर्वक बैठेहुये भगवान् आत्रेयजी के निकट जाकर अग्निवेश ने प्रणाम करके नम्रतापूर्वक कहा कि हे भगवन् प्रजाओं पर दया करके आप अतीसार के पूर्वरूप निदान लक्षण तथा यत्न कहिये ॥ १ ॥

अथभगवानात्रेयःतदग्निवेशवचनमनुनिशम्योवाच। श्रूयतामग्निवेश ! सर्वमेतदखिलेनव्याख्यायमानम् ॥ २ ॥

अग्निवेश के वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश सुनो मैं यह सब विषय अच्छे प्रकारसे कहताहूं ॥ २ ॥

आदिकालेखलुयज्ञेषुपशवःसमालभनीया बभूवुर्नारम्भायप्रक्रियन्तेस्म। ततोदक्षयज्ञप्रत्यवरकालंमनोःपुत्राणांमरिष्यन्नाभागेक्ष्वाकुकुविड़चर्य्येत्यादीनाञ्चक्रतुषुपशूनामेवअभ्यनुज्ञानात्पशवः प्रोक्षणमवापुः। अतश्चप्रत्यवरकालंपृषध्रेण दीर्घसत्रेणयजमानेनपशूनामलाभाद्गवामालम्भःप्रावर्त्तितः । तंदृष्ट्वाप्रव्यथिताभूतगणास्तेषाञ्चोपयोगाद्उपकृतानांगवांगौरवादौष्ण्याद सात्म्यत्वादशस्तोपयोगाच्चोपहताग्नीनामुपहतमनसामतीसारःपूर्व्वमुत्पन्नःपृषध्रयज्ञे ॥ ३ ॥

पूर्व समय में यज्ञों के निमित्त पशुओं के मारने की विधि तो थी परन्तु पशुओंके मारने का प्रारम्भ नहीं कियागया था तदनन्तर दक्षप्रजापति के यज्ञ के उपरान्त मरिष्यन् नाभाग इक्ष्वाकु तथा कुविड़चर्य्य आदिक मनुके पुत्रोंके यज्ञोंमें पशुओंकी ही अनुमति(सलाह) से पशू मारेगये इसके उपरान्त बहुतकाल तक यज्ञ करने वाले पृषध्र नाम यजमान ने अन्य पशुओं के न मिलने के कारण यज्ञ में गौवों के मारने का प्रारम्भ किया यह देखकर सम्पूर्ण प्राणी गौवोंके गुणों का ध्यान करके अत्यन्त दुःखीहुये और मारीगई गौवों के मांसके भारी उष्ण तथा असात्म्य होनेके कारण और अनुचितरीतिसे उसका व्यवहार करनेके कारण नष्ट होगये हैं मन और अग्नि जिनके ऐसे गो मांसखानेवालों के पहिले पृषध्रके यज्ञमें अतीसार उत्पन्न हुआ ॥ ३ ॥

अथापरंकालंवातलस्यवातातपव्यायामातिमात्रनिषेविणोरूक्षाल्पप्रमिताशिनःतीक्ष्णमद्यव्यवायनित्यस्यउदावर्त्तयतश्चवेगाद्वायुःप्रको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पमापद्यतेपक्वाचोपहन्यतेसवायुःकुपितोऽग्नाउपहतेमूत्रस्वेदौपुरीषाशयमुपहृत्यताभ्यांपुरीषंद्रवीकृत्य अतीसारायप्रकल्पते ॥ ४॥

इसके उपरान्त वायु धूप तथा व्यायामका अत्यन्त सेवन करनेवाले रूक्ष स्वल्प तथा मित भोजन करनेवाले उदावर्तरोगवाले तीक्ष्ण मद्य तथा मैथुन का नित्य सेवन करनेवाले और मल मूत्रादि वेगोंके रोंकनेवाले वातप्रकृति पुरुषका वायु समयपर कुपित होता है और जठराग्नि नष्ट होजाता है फिर कुपित वायु अग्निके नष्ट होजानेपर मूत्र तथा स्वेद को पक्वाशय में लेजाकर इन दोनोंसे मल को पतला करके अतीसारको उत्पन्न करताहै॥४॥

तस्यरूपाणिविड्जलमामविप्लुतमवसादितंरूक्षंद्रवंसशब्दमशब्दंवा विबद्धमूत्रवातमतिसार्य्यतेपुरीषंवायुश्चान्तःकोष्ठस्यसशब्दशूलःतिर्य्यक्चरतिविबद्धइतिआमातिसारः५

तिसके यह रूप हैं कि वातज आमातीसारमें पनिहा आमयुक्त शिथिल रूक्ष द्रव शब्दसहित अथवा शब्दरहित और वायु तथा मलके विबन्ध से युक्त मल निकलता है और शब्द तथा शूलयुक्त वायु रुककर कोष्ठके भीतर तिरछी घूमती है ॥ ५ ॥

वातात्पक्वंविबद्धमल्पाल्पंसशब्दंसशूलपिच्छापरिकर्त्तिकंहृष्टरोमाविनिश्वसन्शुष्कमुखः कट्यूरुत्रिकजानुपृष्ठपार्श्वशूलीभ्रष्टगुदोमुहुर्मुहुर्विग्रथितमुपवेश्यते पुरीषंवातात्तमाहुः अनुग्रन्थमित्येकेवातानुग्रन्थितवर्चस्त्वात् ॥ ६ ॥

वातज पक्वातीसार में विबन्धयुक्त थोड़ा २ शब्दसहित शूल तथा परिकर्त्तिका (कैंचीके काटनेकीसी पीड़ा) युक्त मल बारंवार ग्रन्थियुक्त निकलता है और रोमांच श्वास मुख का सूखना कटि जाँघ रीढ़के नीचेकी हड्डी घुटने पीठ तथा पसुलियों में शूल और गुदभ्रंश यह लक्षण होते हैं कोई कोई आचार्य वायुकेद्वारा मलमें गाँठैंसी पड़जानेके कारण इस अतीसार को अनुग्रन्थ कहते हैं ॥ ६ ॥

पित्तलस्यपुनरम्ललवणकटुकक्षारोष्णतीक्ष्णातिमात्रनिषेविणःप्रतताग्निसूर्य्यसन्तापोष्णमारुतोपहतगात्रस्यक्रोधेर्ष्याबहुलस्यपित्तंप्रकोपमापद्यते । तत्प्रकुपितंद्रवत्वादूष्माणमुपहत्यपुरीषाशयमाश्रितमौष्ण्याद्द्रवत्वात्सरत्वाच्चभित्त्वापुरीषमतिसारायप्रकल्पते ॥ ७॥

अम्ल लवण कटु क्षार उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तुओंका अत्यन्त सेवन करनेवाले तीक्ष्ण अग्नि धूप तथा उष्ण वायुसे पीड़ित शरीरवाले और अत्यन्त क्रोध तथा ईर्षायुक्त पित्तप्रकृति पुरुषका पित्त कुपित होकर द्रव होनेके कारण जठराग्नि को नष्ट करके मलाशय में जाकर उष्णद्रव तथा सर (दस्तावर) होनेके कारण मल को भिन्न भिन्न करके (फाड़कर) अतीसार को उत्पन्न करताहै ॥ ७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तस्यरूपाणिहरिद्रहरितनीलकृष्ण पित्तोपहितमतिदुर्गंधमतिसार्य्यते पुरीषंतृष्णादाहस्वेदमूर्च्छाशूलत्र ध्नसन्तापपाकपरीतः ॥ ८ ॥

इति पित्तातिसारः।

पित्तातीसार में हरा पीला नीला कृष्णवर्ण पित्तयुक्त तथा अत्यन्त दुर्गंधित मलनिकलता है और तृषा दाह स्वेद मूर्च्छा शूल वद संताप तथा स्रोतों का पकना यह लक्षण होते हैं ॥ ८ ॥

श्लेष्मलस्यतुगुरुमधुरशीतस्निग्धोपसेविनःसम्पूरकस्याचिन्तयतोदिवास्वप्नपरस्यालसस्यश्लेष्माकोपमापद्यते। सस्वभावाद्गुरुमधुरशीतस्निग्धःस्रस्तोऽग्निमुपहत्यसौम्यस्वभावात्पुरीषाशयमुपहत्योपक्लेद्य पुरीषमतिसारायकल्पते ॥ ९ ॥

भारी मधुर शीतल तथा स्निग्ध वस्तुओं का अधिक सेवन करनेवाले अधिक भोजन करनेवाले चिन्तारहित दिनमें सोनेवाले तथा आलस्ययुक्त कफप्रकृति पुरुषका कफ कुपित होताहै फिर वह कुपित कफस्वभावसेही भारी मधुर शीतल स्निग्ध शिथिल तथा सौम्य होनेके कारण जठराग्निको नष्ट करके पक्काशय में जाकर मलको क्लेदयुक्त करके अतीसार को उत्पन्न करता है ॥ ९ ॥

तस्यरूपाणिस्निग्धंश्वेतंपिच्छिलंतन्तुमदामंगुरुदुर्गन्धश्लेष्मोपहितमनुबन्धशूलमल्पाल्पमभीक्ष्णमतिसार्य्यतेसप्रवाहिकंगुरूदरगुदवस्तिवंक्षणोदेशःकृतापकृतसङ्गोभवतिसलोमहर्षःसोत्क्लेशोनिद्रालस्यपरीतःसादनोऽन्नद्वेषीचेतिश्लेष्मातिसारः ॥ १० ॥

कफातीसार में स्निग्ध श्वेत सचिक्कण सूत्रसी रेखाओं से युक्त आम दुर्गंधित भारी तथा कफयुक्त थोड़ा थोड़ा बारम्बार शूल सहित मल निकलता है प्रवाहिका (अतीसारविशेष) होती है गुदा उदरवस्ति तथा वंक्षण यह अंग भारी मालूम होते हैं मलकभी बँधाहुआ या कभी पतला होता है और रोमांच क्लेश निद्रा आलस्य कफका मुख में बहुत आना यह लक्षण होते हैं ॥ १० ॥

अतिशीतस्निग्धरूक्षोष्णगुरुखरकठिनविषमविरुद्धासात्म्यभोजनादभोजनात्कालातीतभोजनाद्यत्किञ्चिदभ्यवहरणाद्दुष्टमद्यपानीयपानादतिमद्यपानादसंशोधनात्प्रतिकर्म्मणांविषमगमनादनुपचाराज्ज्वलनादित्यपवनसलिलातिसेवनादस्वप्नादतिस्वप्नाद्वेगविधारणादृतुविपर्य्ययादयथाबलमारम्भाद्भयशोकचित्तोद्वेगातियोगात्क्रिमिशोषज्वरार्शोविकारातिकर्शनाद्वाविपन्नाग्नेस्त्रयोदोषाप्रकुपिताभूयएवाग्निमुपहत्यपक्काशयमनुप्रविश्यअतीसारंसर्वदोषलिङ्गंजनयन्ति॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्तशीतल स्निग्ध रूक्ष उष्ण भारी कर्कश तथा कठिन वस्तुओंके सेवनसे विषम भोजनसे परस्पर विरुद्ध वस्तुओं को मिला-करखाने से असात्म्य वस्तुके खानेसे भोजन समय के व्यतीत होजाने पर भोजन करने से स्वल्प भोजन करने से दूषित मद्य तथा जल पीने से वहुत मद्य पीने से उचित समय पर वमन आदि संशोधन न करने से वमन विरे-चनादि पञ्चकर्म्मों के विषम होजाने से वमन विरेचनादि पंचकर्म्मों में अपचार (वदपर-हेजी) करने से अग्नि धूप वायु तथा जलके वहुत सेवन से निपट न सोने से बहुत सोने से मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से ऋतुओं के विपर्य्ययसे वलकी अपेक्षा अधिक कार्य्यकर-ने से वहुत शोक भय तथा घवड़ाहट होने से और क्रिमि शोष ज्वर तथा ववासीर रोग के द्वारा शरीरके वहुत कृश होजाने से मंदाग्नि वाले पुरुषके तीनों दोष कुपित होकर अग्नि को और भी मन्द करके पक्काशय में जाकर तीनों दोषोंके लक्षणों से युक्त अतीसार को उत्पन्न करते हैं ॥ ११ ॥

अपिच। शोणितादीन्धातूनतिप्रदुष्टान्दूषयन्तोधातुदोषस्वभावकृतानतीसारवर्णानुपदर्शयन्ति । तत्र शोणितादिषुधातुषुअतिप्रदुष्टेषुहारिद्रहरितनीलमाञ्जिष्ठमांसधावनसन्निकाशंरक्तंकृष्णंश्वेतंवराहमेदःसदृशमनुबद्धवेदनमवेदनंवासमासव्यत्यासादुपवेश्यतेशकृद्ग्रथितमामंसकृत्सकृदपिपक्कमनतिक्षीणमांसशोणितबलोमन्दाग्निर्विहतमुखरसस्तादृशमातुरंकृच्छ्रसाध्यंविद्यात् । एभिर्वर्णैरतिसार्य्यमाणंसोपद्रवमातुरमसाध्योऽयमितिप्रत्याचक्षीत । तद्यथा—क्वाथशोणिताभंयकृत्पिण्डोपमंमांसोदकसन्निकाशंदधिघृतमज्जातैलवसाक्षीरवेशवाराभमतिनीलमतिरक्तमतिकृष्णमुदकमिवाच्छंपुनर्मेचकाभमतिस्निग्धंहरितनीलकषायवर्णंकर्बुरमाविलंतन्तुमदामंचन्द्रकोपगतमतिकुणपपूतिपूयगन्धमाममत्स्यगन्धिमक्षिकाक्रान्तंक्कथितवहुधातुद्रवमल्पपुरीषमपुरीषंवातिसार्य्यमाणंतृष्णादाहज्वरभ्रमतमकहिक्काश्वासानुबन्धमतिवेदनमवेदनंवास्रस्तपक्कगुदंपतितगुदवलिंमुक्तनालमतिक्षीणबलमांतशोणितंसर्वपार्श्वास्थिशूलिनमरोचकातिप्रलापसंमोहपरीतंसहसोपरतविकारमतिसारिणमचिकित्स्यंविद्यादितिसन्निपातातिसारः ॥ १२ ॥

और अत्यन्त दूषित रुधिर आदि धातुओं को दूषित करतेहुये अतीसारमें धातु दोषों के स्वभाव से होने वाले वर्णों को उत्पन्न करते हैं इस अतीसार में जो रुधिरआदि धातु अ-त्यन्त दूषित होंय तो मलका वर्ण पीला ह-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रित नीला मँजीठ के काढ़े के समान मांसके धोवन के समान लाल कृष्ण श्वेत तथा शूकरकी चर्बीके समान होताहै इस अतीसारमें कभी पीड़ा होती है कभी नहीं भी होती है और यह लक्षण कहीं सम्पूर्ण अथवा कहीं स्वल्पभी होते हैं इस अतीसार में ग्रंथियुक्त कभी आम तथा कभी पक्वमल निकलता है इस अतीसार में जो रोगी का मांस रुधिर तथा बल बहुत क्षीण न हुआहो अग्नि मंदहोय और मुख का रस विगड़ गयाहो तो इस को कष्टसाध्यजानना चाहिये इन (कहे जानेवाले) वर्णों से युक्त मलवाले और सम्पूर्ण उपद्रवों से युक्त अतीसारवाले रोगी को असाध्य जानना चाहिये जैसे कि क्वाथ रुधिर यकृत्पिण्ड (जिगर) मांसका धोवन दही घी मज्जा तैल चर्बी दूध तथा वेसवार (मशाला) इनके समान वर्णसेयुक्त अत्यन्त नीलवर्ण अत्यन्तरक्तवर्ण अत्यन्त कृष्णवर्ण जलके समान निर्मल मोरके पंखों के समान कान्तियुक्त अत्यन्त स्निग्ध हरित नील तथा कषायवर्ण कीसी कान्तियुक्त चित्र वर्ण गंदला तंतुमत् (डोरेके समान रेखाओं से युक्त) आमयुक्त मोरके पङ्खकेसे चिह्नों से युक्त पीप कच्ची मछली तथा मुर्दे के समान अत्यन्त दुर्गन्धित मक्खियों से व्याप्त और कुपित बहुतसी धातुओं के द्रवसे युक्त थोड़े २ मलके दश्त आना अथवा केवल धातुओं के द्रवकेही दश्त आना तृषा दाह ज्वर भ्रम तमक श्वास हुचकी श्वास पीड़ा का बहुत होना अथवा न होना गुदा का निकलना तथा पकना गुदा की वलियों का निकल पड़ना लार बहना बल मांस तथा रुधिर का अत्यन्त क्षीण होना सम्पूर्ण पसुलियों की हड्डियों में शूल होना अरुचि मलाप मोह और एकाएकी रोगका निवृत्ति होजाना इन लक्षणों से युक्त अतीसारवाले को असाध्य जानना चाहिये यह सन्निपातज अतीसार के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

तमसाध्यतामसंप्राप्तंचिकित्सेत्यथा प्रधानोपक्रमेणहेतूपशयदोषविशेषपरीक्षयाचेति ॥ १३ ॥

अतीसार के असाध्य होजाने के पहिलेही हेतु उपशय (हितकारी आहार विहार) तथा दोषविशेष की परीक्षा करके जो दोष मुख्य हो उसीकी चिकित्सा अतीसारमें करे ॥ १३ ॥

आगन्तूद्वावतीसारौमानसौभयशोकजौ। तत्तयोर्लक्षणंवायोर्यदतीसारलक्षणम् ॥ १४ ॥

भय तथा शोकसे दो प्रकारके आगन्तुज अतीसार होते हैं जो लक्षण वातातीसार में कहेगये हैं वही इन दोनोंमें भी होते हैं ॥ १४ ॥

मारुतोभयशोकाभ्यांशीघ्रंहिपरिकुप्यति। तयोःक्रियावातहराहर्षणाश्वासनानिच ॥ १५ ॥

क्योंकि भय तथा शोकसे वायु शीघ्रही कुपित होती है इससे इन दोनों अतीसारों में वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और हर्षण (सुख करना) तथा आश्वासन (तसल्ली देना) करना चाहिये ॥ १५ ॥

इत्युक्ताःषडतीसाराःसाध्यानांसाधनन्त्वतः। प्रवक्ष्याम्यानुपूर्व्येण यथावत्तन्निबोधत ॥ १६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस रीति से छः प्रकारके अतीसार कहेगये इसके उपरान्त साध्य अतीसारों की चिकित्सा क्रमसे कहीजाती है तुम सावधान होकर सुनो ॥ १६ ॥

दोषाःसन्निचितायस्यविदग्धाहारमूर्च्छिताः। अतीसारायकल्पन्तेभूयस्तान्संप्रवर्त्तयेत् ॥ १७ ॥

आहार के भलीभांति न पचने से जिसके संचित दोष कुपित होकर अतीसारको उत्पन्न करते हैं उसके दोषों को औषधियों के द्वारा फिर भी निकालना चाहिये ॥ १७ ॥

नतुसंग्रहणंदेयंपूर्वमामातिसारिणे। विबध्यमानाःप्राग्दोषाजनयन्त्यामयान्बहून् ॥ १८ ॥

किन्तु आमातीसारवाले को पहिले ग्राही औषध नहीं देनी चाहिये क्योंकि पहिलेही दोषों को रोंकने से वहुत से रोग पैदा होते हैं ॥ १८ ॥

दण्डकालसकाध्मानग्रहण्यर्शोगदांस्तथा। शोथपाण्ड्वामयप्लीहकुष्ठगुल्मोदरज्वरान् ॥ १९ ॥

दण्डक (दण्डेके समान शरीर को जकड़ जाना) अलसक अफरा ग्रहणी दोष बवासीर शोथ पाण्डुरोग प्लीहा कुष्ठ गुल्म उदर तथा ज्वरादिक अनेकरोग उत्पन्न होते हैं १९॥

तस्मादुपेक्षेतोत्क्लिष्टान्वर्तमानान्स्वयंमलान्। कृच्छ्रंवावहतान्दद्यादभयांसंप्रवर्तिनीम् ॥ २० ॥

इससे अपने आपही निकलते हुये उमड़े हुये कष्टदायक वातयुक्त मलों को रोंकना न चाहिये किंतु उन मलोंको निकालने के लिये हड़ देनी चाहिये ॥ २० ॥

तयाप्रवाहितेदोषेप्रशाम्यत्युदरामयः। जायतेदेहलघुताजठराग्निश्चवर्द्धते ॥ २१ ॥

क्योंकि हड़के द्वारा दोषोंके निकल जाने पर उदरके रोग शान्त होजाते हैं देह हलकी होजाती है और जठराग्नि की वृद्धि होती है ॥ २१ ॥

प्रमथ्यांमध्यदोषाणांदद्यादीपनपाचनीम्। लङ्घनञ्चाल्पदोषाणांप्रशस्तमतिसारिणीम् ॥ २२ ॥

मध्यमदोषवाले अतीसार में दीपन पाचन प्रमथ्या देनी चाहिये और स्वल्पदोषवाले अतीसार में लंघन कराना श्रेष्ठहै ॥ २२ ॥

पिप्पलीनागरंधान्यंभूतीकमभयावचा। ह्रीवेरंभद्रमुस्तानिबिल्वंनागरधान्यकम् ॥ २३ ॥

पीपरि सोंठि धनियां रोहिष हड़ तथा बच सुगन्धबाला नागरमोथा बेलगिरी सोंठि तथा धनियां ॥ २३ ॥

पृश्निपर्णीश्वदंष्ट्राचसमांशाकण्टकारिका। तिस्रःप्रमथ्याविहिताःश्लोकार्द्धेष्वतिसारिणाम् ॥ २४ ॥

पृष्णिपर्णी गोखुरू जटामासी तथा भटकटैया इन तीनों योगों के द्वारा बनाईगई तीन प्रकार की प्रमथ्या जोकि आधे २ श्लोक में कहीगई हैं अतीसार वालों को हित होती है ॥ २४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वचाप्रतिविषाभ्यांवामुस्तपर्पटकेन वा। ह्रीवेरशृङ्गवेराभ्यांपक्वंवापाय येज्जलम् ॥ २५ ॥

अतीसार रोगमें बच तथा अतीस के साथ अथवा नागरमोथा तथा पित्त पापड़ाके साथ अथवा सुगन्धवाला तथा सोंठिके साथ पाक कियागया जल पीने को देना चाहिये॥२५॥

युक्तेऽन्नकालेक्षुत्क्षामंलघून्यन्नानि भोजयेत्। तथासशीघ्रमाप्नोतिरु चिमग्निबलंबलम् ॥ २६ ॥

अतीसारवाले को क्षुधा से पीड़ित जानकर भोजनके समयमें हल्के अन्न भोजन करावे ऐसा करनेसे शीघ्रही रुचि अग्नि तथा बल की वृद्धि होती है ॥ २६ ॥

तक्रेणावन्तिसोमेनयवाग्वातर्पणे नवा। सुरयामधुनाचादौयथासा त्म्यमुपाचरेत् ॥ २७ ॥

मट्ठा कांजी यवागू तर्पण (दाख आदि फलों का धातुवर्द्धक रस) सुरा तथा शहदके द्वारा अतीसारवाले की सात्म्य चिकित्सा पहले करनी चाहिये ॥ २७ ॥

यवागूभिर्विलेपीभिःखडैर्यूषैरसौद नैः। दीपनग्राहिसंयुक्तैःक्रमश्चस्या दतःपरम् ॥ २८ ॥

तदनन्तर दीपन तथा पाचन औषधयुक्त यवागू विलेपी (यवागूविशेष) यूष और मांसके रस के साथ भात भोजनके निमित्त देना चाहिये ॥ २८ ॥

शालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतींकण्टका रिकाम्। बलांश्वदंष्ट्रांबिल्वानिपा ठांनागरधान्यकम् ॥ २९ ॥

शालिपर्णी पृष्णिपर्णी भटकटैया बड़ी भटकटैया वरियारा गोखुरू बेलगिरी पाढ़र सोंठि धनियां ॥ २९ ॥

शटींपलाशंहपुषांवचांजीरकपिप्प लीम्। यमानींपिप्पलीमूलंचित्रकं हस्तिपिप्पलीम् ॥ ३० ॥

कचूर ढाख हाऊबेर बच जीरा पीपरि अजवाइन पिपरामूल चीता गजपीपरि ॥ ३०॥

वृक्षाम्लंदाडिमाम्लञ्चसहिंगुविडसै न्धवम्। प्रयोजयेदन्नपानेविधिना सूपकल्पितम् ॥ ३१ ॥

चूका खट्टा अनार हींग विड़लवण तथा सैंधवलवण इन सब औषधियों को विधिपूर्वक बनाकर पान (पीने की वस्तु) में मिलावे ॥ ३१ ॥

वातश्लेष्महरोह्येषगणोदीपनपाच नः। ग्राहीबल्योरोचनश्चतस्माच्छ स्तोऽतिसारिणाम् ॥ ३२ ॥

क्योंकि यह शालिपर्णी आदिकगण वातकफनाशक दीपन पाचन ग्राही बलकारी तथा रुचिकारी होताहै इससे अतीसारवालों को अत्यन्त हितकारी होताहै ॥ ३२ ॥

आमेपरिणतेयस्तुविबन्धमतिसार्य ते। सशूलपिच्छमल्पाल्पंबहुशः सप्रवाहिकम् ॥ ३३ ॥

आमके पचजाने पर जिस अतीसार वाले के विबन्ध शूल प्रवाहिका तथा पिच्छासहित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वारम्बार थोड़ा २ मल गिरता है ॥ ३३ ॥

तंमूलकानांयूषेणबदराणामथापि वा । उपोदिकायाःक्षीरिण्यायमान्यावास्तुकस्यवा ॥ ३४ ॥

उसको मूली या वेरके यूषके साथ भोजन करावे अथवा दही तथा अनार के साथ पाक कियेगये वहुत स्नेहयुक्त पोय दूधिया जड़ी अजवाइन वथुई ॥ ३४ ॥

सुवर्चलायाश्चश्चोर्वाशाकेनावल्गुजस्यवा । शट्याःकर्कारुकाणांवा जीवन्त्याश्चिर्भटस्यवा ॥ ३५ ॥ लोणीकायाःसपाठायाःशुष्कशाकेनवापुनः । दधिदाडिमसिद्धेनबहुस्नेहेनभोजयेत् ॥ ३६ ॥

हुरहुर या अरण्ड के शाकके साथ अथवा दही तथा खट्टे अनार के साथ पाक कियेगये वहुत घृतादि स्नेहयक्त वकुचा कचूर कुम्हड़ा जीवन्ती गुरम्ही अमलोनिया या पाढ़र के शुष्कशाक के साथ भोजन करावे॥३५।३६॥

कल्कःस्याद्बालबिल्वानांतिलकल्कश्चतत्समः । दध्नःसरोऽम्लस्नेहाद्यःखडोहन्यात्प्रवाहिकाम् ॥ ३७ ॥

कच्चे वेल तथा तिलों का कल्क समभाग और दही की मलाई खटाई तथा घृत आदि स्नेह इनकें द्वारा वनायागया यूष प्रवाहिकाको नष्ट करता है ॥ ३७ ॥

यवानांमुद्गमाषाणांशालिनाञ्चतिलस्यच । कोलानांबालबिल्वानांधान्य यूषंप्रकल्पयेत् ॥ ३८ ॥ ऐकध्यंयमकेभृष्टंदधिदाडिमसाधितम् । वर्चःक्षयेशुष्कमुखंशाल्यन्नंतेनभोजयेत् ॥ ३९ ॥

मलके क्षीण होजाने से शुष्कमुखवाले अतीसार रोगीको दही तथा अनार के साथ पाक कियेगये और घी तथा तैलसे छौंकेगये यव मूंग उर्द शालिधान तिल वेर कच्चे वेल तथा धनियां के यूप के साथ भात खिलावे ॥ ३८।३९ ॥

दध्नःसरंवायमकेभृष्टंसगुडनागरम् । सुरांवायमकेभृष्टांव्यञ्जनार्थेप्रदापयेत् ॥ ४० ॥

अथवा गुड़ तथा सोंठि सहित दहीकी मलाई को घी तथा तैलमें भूनकर उसके साथ या घी तथा तैलसे छौंकीगई सुराके साथ भोजन करावे ॥ ४० ॥

फलाम्लंयमकेभृष्टंयूषंगृजनकस्य वा । लोपाकरसमम्लंवास्निग्धाम्लंकच्छपस्यवा ॥ ४१ ॥

अथवा मलके क्षीण होजाने पर अनार आदि फलोंकी खटाई से युक्त औ घी तथा तैलसे छौंकेगये गाजरके यूषके साथ या लोपाकके मांसके स्निग्ध तथा खट्टे रसकेसाथ अथवा कछुवे के मांसके स्निग्ध तथा खट्टे रसके साथ भोजन कराना चाहिये ॥ ४१ ॥

वर्हितित्तिरिदक्षाणांवर्त्तकानांतथा रसः । स्निग्धाम्लाःशालयश्चाग्र्या वर्चःक्षयरुजापहाः ॥ ४२ ॥

मोर तीतुर मुर्गा तथा वटेर के मांस के रस के साथ शालिधान के श्रेष्ठ चांवलों का स्निग्ध तथा खट्टा भात खाने से मल के क्षीण होनेसे हुयेरोगोंका नाश होता है॥ ४२॥

अन्तराविरसंपूत्वारक्तंमेषस्यचोभयम्। पचेद्दाडिमसाराम्लंसधान्यस्नेहनागरम्॥ ४३॥

भेड़के मध्यभागके रस तथा रुधिरको छान कर खट्टे अनार के रस धनियां घृतादि स्नेह तथा सोंठिके साथ पाककरे॥ ४३॥

भोजनंरक्तशालीनांतेनाद्यात्प्रपिबेचतत्। तथावर्चःक्षयकृतैर्व्याधिभिर्विप्रमुच्यते॥ ४४॥

और उसके साथ लाल शालिधानों के चांवलों का भात खावे और उसी को पीवे इस से मलकी क्षीणता से हुये रोगों का नाश होताहै॥ ४४॥

गुदानिःसरणेशूलेपानमम्लस्यसर्पिषः। प्रशस्यतेनिरामाणामथवाप्यनुवासनम्॥ ४५॥

आमरहित अतीसारवालोंको कांच निकलने में तथा शूल में खट्टी औषधियों के साथ पाक कियेगये घीका पीना और अनुवासन (एक तरहका अमल) हित होताहै॥ ४५॥

चाङ्गेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम्। घृतमुत्कथितंपेयंगुदभ्रंशरुजापहम्॥ ४६॥

इति चाङ्गेरीघृतम्।

अमलोनिया वेर दही खटाई सोंठि तथा यवाखार इन के साथ पाक कियेगये घी को पीने से गुदभ्रंशका नाश होताहै॥ ४६॥

सचव्यपिप्पलीमूलंसव्योपविडदाडिमम्। पेयमम्लंघृतंयुक्त्यासधान्याजाजिचित्रकम्॥ ४७॥

इति गुदभ्रंशेचव्यादिघृतम्।

चव्य पिपरामूल सोंठि पीपरि मिर्च विड़लवण खट्टाअनार धनियां जीरा तथा चीता इन के साथ पाककियेगये घृतका युक्तिपूर्वक पान करने से कांच का निकलना वन्द होजाता है॥ ४७॥

दशमूलोपसिद्धंवासबिल्वमनुवासनम्। शताह्वाशटिबिल्वैर्वावचयाचित्रकेणवा। स्तब्धभ्रष्टगुदेपूर्वंस्नेहस्वेदौप्रयोजयेत्॥ ४८॥

इति गुदभ्रंशेऽनुवासनम्।

दशमूल तथा वेलके साथ पाक कियेगये सौंफ कचूर तथा वेलके साथ पाक कियेगये अथवा वच तथा चीताके साथ पाक कियेगये घी के द्वारा अनुवासनवस्ति देना चाहिये कांच निकल आने पर और जकड़ी सी होजाने पर पहिले स्नेहन तथा स्वेदन करना चाहिये॥ ४८॥

सुस्विन्नश्चमृदुभूतंपिचुनासंप्रवेशयेत्। विबन्धवातवर्चास्तुबहुशूलप्रवाहिकः॥ ४९॥

अच्छे प्रकार से स्वेदन से कांचके कोमल होजाने पर रूईके द्वारा उसको भीतर प्रविष्ट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर देवे वायु तथा मलके विबन्ध से युक्त बहुत शूल तथा प्रवाहिकायुक्त ॥ ४९ ॥

सरक्तपिच्छतृष्णार्त्तःक्षीरसौहित्यमर्हति। यमकस्योपरिक्षीरंधारोष्णंवा पिबेन्नरः ॥ ५० ॥

रुधिरस्राव पिच्छा तथा तृषासे पीड़ित पुरुषको तृप्तिपूर्व्वक दूध पिलाना चाहिये अथवा पूर्व्वोक्त यमकस्नेह के ऊपर धारोष्ण दूध पिलाना चाहिये ॥ ५० ॥

शृतमैरण्डमूलेनबालबिल्वेनवापयः। एवंक्षीरप्रयोगेणरक्तंपिच्छा वशाम्यति॥ शूलंप्रवाहिकाचैव विबन्धश्चोपशाम्यति ॥ ५१ ॥

अथवा अरण्ड की जड़ या कच्चे बेल के साथ पाक कियागया दूध पिलाना चाहिये इस प्रकार दूधका प्रयोग करने से रुधिर पिच्छा शूल प्रवाहिका तथा विबन्ध यहसबशान्त होते हैं ॥ ५१ ॥

पित्तातिसारंपुनर्निदानोपशयाकृतिभिरामान्वयमुपलभ्ययथाबलंलङ्घनपाचनाभ्यामुपाचरेत् ॥ ५२ ॥

पित्तातीसार में निदान उपशय हितकारी आहार विहार) तथा लक्षणों के द्वारा आम का सम्बन्ध जानकर बलके अनुसार लंघन तथा पाचन के द्वारा चिकित्सा करै ॥ ५२॥

तृष्यतस्तुमुस्तपर्पटकोशीरशारिवा चन्दनकिराततिक्तकोदीच्यवारिभिरुपचारः ॥ ५३ ॥

जो पित्तातीसारवाले को तृषा अधिक लगे तो नागरमोथा पित्तपापड़ा खस साँई चन्दन चिरायता तथा सुगन्धवाला इन औषधियोंके साथ पाक कियागया जल पीने को देवे॥५३॥

लङ्घितस्यचाहारकालेबलातिबलासूर्प्यशालपर्णीपृश्निपर्णीबृहती-कण्टकारिकाशतावरीश्वदंष्ट्रानिर्यूहसंयुक्तेनयथासात्म्यंयवागूमण्डादिनातर्पणादिनावाक्रमेणोपचारः ५४

और लंघनके उपरान्त भोजनके समय बरियारा कंकैया शालपर्णी पृश्निपर्णी भटकटैया बड़ी भटकटैया शतावर गोखुरू तथा दाल इनके क्वाथसेयुक्त यवागू मण्ड (यवागू विशेष) तथा तर्पण (दाख आदि फलोंका धातुवर्द्धक रस) आदिक भोजन सात्म्य के अनुसार क्रमसे देना चाहिये ॥ ५४ ॥

मुद्गमसूरहरेणुमकुष्ठकयूषैर्वालावकपिञ्जलशशहरिणैणेयकालपुच्छकरसैरीषदम्लैरनम्लैर्वाक्रमशोऽग्निसन्धुक्षयेत् ॥ ५५ ॥

मूंग मसूर रेणुका तथा मोठके यूष को अथवा लवा कपिञ्जल खरगोश हिरन एण (मृगविशेष) तथा कालपुच्छ (मृगविशेष) इनके मांसके रस को कुछ खटाईयुक्त करके अथवा खटाई न डालकर क्रम से अग्नि को दीप्तकरे ॥ ५५ ॥

अनुबन्धत्वेतुअस्यदीपनीयपाचनीयोपशमनीयसंग्रहणीयान्योगान्प्रयोजयेदिति ॥ ५६ ॥

इन उपायों से यदि अतीसार शान्त न हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो दीपन पाचन संशमन तथा ग्राही योगोंके-द्वारा चिकित्सा करे ॥ ५६ ॥

भवन्तिचात्र ।

सक्षौद्रातिविषंपिष्टंवत्सकस्यफलत्वचम् । पिबेत्पित्तातिसारघ्नंतण्डुलोदकसंयुतम् ॥ ५७ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। अतीस इन्द्रयव तथा कुरैया की छाल इनको पीसकर शहद तथा चावलों के धोवन में मिलाकर पीनेसे पित्ता-तीसार का नाश होताहै ॥ ५७ ॥

किराततिक्तकंमुस्तंवत्सकःसरसाञ्जनः । बिल्वंदारुहरिद्राश्चत्वग्ह्रीबेरंदुरालभाम् ॥ ५८ ॥

चिरायता नागरमोथा इन्द्रयव तथा रसौत वेल दारुहल्दी तज सुगन्धबाला तथा जवा-सा ॥ ५८ ॥

चन्दनञ्चमृणालञ्चनागरंलोध्रमुत्पलम् । तिलामोचरसोलोध्रंसमङ्गाकमलोत्पलम् ॥ ५९ ॥

लालचन्दन कमल की दण्डी सोंठि लोध तथा उत्पल तिल मोचरस लोध लजालू कमल तथा उत्पल ॥ ५९ ॥

उत्पलंधातकीपुष्पंदाडिमत्वक्महौषधम् । कट्फलंनागरंपाठाजम्ब्वाम्रास्थिदुरालभाः ॥ ६० ॥

उत्पल धव्वईके फूल अनार की छाल तथा सोंठि कायफल सोंठि पाढ़र जामुन की गुठ-ली आमकी बिजली तथा जवासा ॥ ६० ॥

योगाःषडेतेसक्षौद्रास्तण्डुलोदकसंयुताः । पेयाःपित्तातिसारघ्नाःश्लोकार्द्धेननिदर्शिताः ॥ ६१ ॥

इन आधे २ श्लोकोंमें कहेहुये छहों योगों को अलग २ पीसकर शहद तथा चावलोंके धोवनके साथ पीने से पित्तातीसारका नाश होता है ॥ ६१ ॥

जीर्णौषधानांशस्यन्तेयथायोगंप्रकल्पितैः । रसैःसांग्राहिकैर्युक्ताःपुराणारक्तशालयः ॥ ६२ ॥

पित्तातीसार में औषध पचने के उपरान्त यथायोग्य ग्राही औषधियोंके साथ पाक कियेगये मांसके रसके साथ पुराने शालिधानों के चावलों का भात खाना चाहिये ॥ ६२ ॥

पित्तातिसारोदीप्ताग्नेःक्षिप्रंसमुपशाम्यति । अजाक्षीरप्रयोगेणबलंवर्णश्चवर्द्धते ॥ ६३ ॥

बकरीका दूध पीने से दीप्ताग्नि पुरुष का अतीसार शीघ्रही शान्त होजाता है और बल तथा वर्णकी वृद्धि होती है ॥ ६३ ॥

बहुदोषस्यदीप्ताग्नेःसप्राणस्यनतिष्ठति । पैत्तिकोयद्यतीसारःपयसातंविरेचयेत् ॥ ६४ ॥

यदि बहुत दोषवाले बलवान् दीप्ताग्नि पुरुष का पित्तातीसार औषधियों से शान्त न होताहो तो दूध पिलाकर उसको विरेचन कराना चाहिये ॥ ६४ ॥

पलाशफलनिर्य्यूहंपयसापाययेत्ततम् । ततोऽनुपाययेत्कोष्णंक्षीरमेवयथाबलम् ॥ ६५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ढाखके फलों के काढ़े को दूधमें मिलाकर उस पित्तातीसारवाले को पिलावे और इसके उपरान्त कुछ उष्ण दूध बलके अनुसार पिलावे ॥ ६५ ॥

प्रवाहितेतेनमलेप्रशाम्यत्युदरामयः । पलाशवत्प्रयोज्यावात्रायमाणाविशोधिनी ॥ ६६ ॥

इसकेद्वारा मलके निकल जानेसे अतीसार शान्त होजाता है ढाखके फलोंके समान त्रायमाण का प्रयोग करने से भी मल शुद्ध होजाता है ॥ ६६ ॥

संसर्ग्यांक्रियमाणायांशूलंयद्यनुवर्त्तते । स्नुतदोषस्यतंशीघ्रंयथावदनुवासयेत् ॥ ६७ ॥

इस प्रकार चिकित्सा करने से दोषोंके निकल जानेपर भी जो शूल बनारहे तो शीघ्रही अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ६७ ॥

शतपुष्पावरीभ्याञ्चपयसामधुकेन च । तैलपादंघृतंसिद्धंसबिल्वमनुवासनम् ॥ ६८ ॥

सौंफ शतावर दूध मुलेठी बेल इनके साथ पाक कियेगये घी तथा घीके चौथाई तैलकेद्वारा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ६८ ॥

कृतानुवासनस्यापिकृतसंसर्जनस्य च । वर्त्ततेयद्यतीसारःपिच्छावस्तिरतःपरम् ॥ ६९ ॥

अनुवासन तथा विरेचन करनेपर भी जो अतीसार शान्त न हो तो पिच्छावस्ति देनी चाहिये ॥ ६९ ॥

परिवेष्ट्यकुशैरार्द्रैरार्द्रवृन्तानिशाल्मलेः । कृष्णमृत्तिकयालिप्यस्वेदयेद्गोमयाग्निना ॥ ७० ॥

गीले कुशों से सेमरके कच्चे वृन्तों (टिंमुना) को लपेटकर और उनपर काली मिट्टी लेसकर बिनुवाँ कण्डोंकी आँचमें डाले ७० ॥

सुशुष्कांमृत्तिकांज्ञात्वातानिवृन्तानिशाल्मलेः । शृतेपयसिमृन्द्वीयादापोथ्योलूखलेततः ॥ ७१ ॥

जब मृत्तिका सूखजाय तब निकालकर वृन्तों को उखली में कूटकर तथा पीसकर उसमेंसे चार तोले लेकर गर्म कियेहुये दूधमें डालकर मले ॥ ७१ ॥

पिष्टंमुष्टिसमंप्रस्थेतत्पूतंतैलसर्पिषा । योजितंमात्रयायुक्तंकल्केनमधुकस्य च ॥ ७२ ॥

फिर उस मूठी के बराबर पीसेहुये में ६४ तोले तैल तथा घी मिलाकर मुलेठीके कल्कसे युक्तकरे ॥ ७२ ॥

वस्तिमभ्यक्तगात्रायदद्यात्प्रत्यागतेततः । स्नात्वाभुञ्जीतपयसाजाङ्गलानांरसेनवा ॥ ७३ ॥

और उसकेद्वारा तैलाभ्यङ्ग कियेहुये पुरुष को वस्ति देवे तदनन्तर वस्ति के निकल जानेपर स्नान कराके दूधके साथ तथा जांगल जीवों के मांसके रसके साथ भोजन करवावे ॥ ७३ ॥

पित्तातिसारज्वरशोथगुल्मांजीर्णातिसारग्रहणीप्रदोषान् । जयत्ययं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्रमतिप्रवृद्धान्विरेचनास्थापन योश्चबस्तिः ॥ ७४ ॥

इस वस्तिकेद्वारा पित्तातीसार ज्वर शोथ गुल्म अजीर्ण अतीसार ग्रहणी दोष और विरेचन तथा स्थापनसे अत्यन्त बढ़ेहुये रोगोंका नाश होता है ॥ ७४ ॥

पित्तातिसारीयस्त्वेतांक्रियांमुक्त्वा निषेवते।पित्तलान्यन्नपानानितस्य पित्तंमहाबलम् ॥ ७५ ॥

जो पित्तातीसारवाला पुरुष इस क्रम को छोड़कर पित्तकारक अन्न पानका सेवन करता है उसका महाबलवान्‌पित्त ॥ ७५ ॥

कुर्य्याद्रक्तातिसारन्तुरक्तमाशुप्रदूषयत्। तृष्णांशूलंविदाहञ्चगुदपाकञ्चदारुणम् ॥ ७६ ॥

शीघ्रही रुधिर को दूषित करके रक्तातीसार तृषा शूल विदाह तथा गुदा का पकना इन दारुणरोगों को उत्पन्न करताहै ॥७६॥

छागंतत्रपयःशस्तंशीतंसमधुशर्करम् । पानार्थेऽयञ्जनार्थेचगुदप्रक्षालनंतथा ॥ ७७ ॥

ऐसी अवस्था में शहद तथा शक्कर युक्त बकरी का ठण्ढा दूध पान व्यंजन तथा गुद प्रक्षालन (सींचना) में हित होताहै ॥ ७७ ॥

भोजनंरक्तशालीनांपयसातेनभोजयेत्। रसैःपारावतादीनांघृतभृष्टैःसशर्करैः ॥ ७८ ॥

और इसी दूधकेसाथ लालशालिधानोंका भात खाना हित होताहै और ऐसी अवस्थामें कबूतरआदि पक्षियोंके मांसके घीसे छौंकेगये तथा शक्कर युक्त रसके साथ ॥ ७८ ॥

शशपक्षिमृगाणाञ्चशीतानांवनचारिणाम् । रसैरनम्लैःसघृतैर्भोजयेत्तंसशर्करैः ॥ ७९ ॥

अथवा शीतलमांसवाले वनचारी खरगोश पक्षी तथा मृगों के मांसके खटाई रहित घी तथा शक्करयुक्त रसके साथ भोजन कराना चाहिये ॥ ७९ ॥

रुधिरंमार्गमाजंवाघृतभृष्टंप्रशस्यते। काश्मर्य्याःफलयूषोवाकिञ्चिदम्लःसशर्करः ॥ ८० ॥

और ऐसी अवस्थामें मृग तथा बकरेका घी से छौंकाहुआ रुधिर अत्यन्त हितकारी होता है अथवा गँभारीके फलका शर्करायुक्त कुछ खट्टा यूष हित होता है ॥ ८० ॥

नीलोत्पलंमोचरसोसमङ्गापद्मकेशरम् । अजाक्षीरयुतंदद्याज्जीर्णेचपयसौदनम् ॥ ८१ ॥

अथवा नीलोत्पल मोचरस लजालू कमलकी केसर इनको बकरी के दूध में मिलाकर पीवे और औषधके पचजानेपर दूधभात खावे ॥ ८१ ॥

दुर्बलंपाययित्वावातस्यैवोपरिभोजयेत् । प्रागुक्तंनवनीतंवादद्यात्समधुशर्करम् ॥ ८२ ॥

और यदि रोगी दुर्बलहो तो औषध पीकर उसके ऊपर ही भोजन करले अथवा पूर्वोक्त मक्खन शहद तथा शक्कर मिलाकरखावे ॥८२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राश्यक्षीरोत्थितंसर्पिःकपिञ्जलरसाशनः । त्र्यहादारोग्यमाप्नोतिपयसाक्षीरभुक्तथा ॥ ८३ ॥

दूधसे निकला हुआ घी चाटकर कपिञ्जल पक्षीके मांसके रसके साथ भोजन करनेसे या दूध तथा घी के साथ भोजन करने सें रक्तातीसार आदि रोगों से तीन दिनमें आरोग्य होता है ॥ ८३ ॥

पीत्वाशतावरीकल्कंपयसाक्षीरभुक्जयेत् । रक्तातिसारंपीत्वावातथासिद्धंघृतंनरः ॥ ८४ ॥

दूध में शतावर का कल्क मिलाकर पीके दूध के साथ भोजन करने से या शतावर के कल्कके साथ पाक कियेगये घीको पीकर दूध के साथ भोजन करनेसे रक्तातीसार का नाश होता है ॥ ८४ ॥

घृतंयवागूमण्डेनकुटजस्यफलैःशृतम् । पेयंतस्यानुपातव्यापेयारक्तोपशान्तये ॥ ८५ ॥

इन्द्रयवों के साथ पाक कियेगये घीको यवागू तथा मण्डके साथ पीकर पेयाका पान करनेसे रक्तातीसार शान्त होता है ॥ ८५ ॥

त्वक्चदारुहरिद्रायाःकुटजस्यफलानिच । पिप्पलीशृङ्गवेरञ्चद्राक्षाकटुकरोहिणी ॥ ८६ ॥

दारुहल्दी की छाल इन्द्रयव पीपरि सोंठि दाख तथा कुटकी ॥ ८६ ॥

षड्भिरेतैर्घृतंसिद्धंपेयामण्डावचारितम् । अतीसारंजयेच्छीघ्रंत्रिदोषमपिदारुणम् ॥ ८७ ॥

इन छः के साथ पाक कियेगये घीको पेया तथा मण्ड के साथ पीने से भयंकर सन्निपातज अतीसारका भी शीघ्रही नाश होताहै ॥ ८७ ॥

कृष्णमृन्मधुकंशंखंकेशरंतण्डुलोदकम् ॥ पीतमेकत्रसक्षौद्रंरक्तसंग्रहणंपरम् ॥ ८८ ॥

कृष्ण मृत्तिका मुरेठी शंख तथा केसर इनको शहद तथा चावलों के धोवनमें मिलाकर पीने से रक्तातीसारका नाश होताहै ॥ ८८ ॥

पीतःप्रियंगुकाकल्कःसक्षौद्रस्तण्डुलाम्भसा । रक्तस्रावंजयेच्छीघ्रंधन्वमांसरसाशिनः ॥ ८९ ॥

प्रियंगु के कल्कको शहद तथा चावलों के धोवनमें मिलाकर पीने से और उसके ऊपर मरुदेशके जीवोंके मांसके रसके साथ भोजन करने से रक्तातीसार का शीघ्रही नाश होता है ॥ ८९ ॥

कल्कस्तिलानांकृष्णानांशर्करापञ्चभागिकः । आजेनपयसापीतःसद्योरक्तंनियच्छति ॥ ९० ॥

काले तिलोंके कल्कमें पांचवां भाग शक्कर मिलाकर बकरी के दूध में पीने से शीघ्रही रक्तातीसार का नाश होता है ॥ ९० ॥

पलंवत्सकबीजस्यश्रपयित्वारसंपिबेत् । योरसाशीजयेच्छीघ्रंसपैत्तंजठरामयम् ॥ ९१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चारतोले इन्द्रयवों का काढ़ा पीकर मांस के रसके साथ भोजन करने से उदरवाले पित्तज रोगों का शीघ्रही नाश होताहै ॥ ९१ ॥

पीत्वासशर्कराक्षौद्रंचन्दनंतण्डुलाम्भसा। दाहतृष्णाप्रमेहेभ्योरक्तस्रावाद्विमुच्यते ॥ ९२ ॥

चावलों के धोवनमें शक्कर शहद तथा लालचन्दन मिलाकर पीने से दाह तृषा प्रमेह तथा रक्तातीसार का नाश होता है ॥ ९२ ॥

गुदोबहुभिरुत्थानैर्यस्यपित्तेनपच्यते । सेचयेत्तंसुशीतेनपटोलमधुकाम्बुना ॥ ९३ ॥

बहुत दस्तआने से पित्त के द्वारा जिसकी गुदा पकगई हो उसकी गुदा को परवल तथा मुलेठी के शीतल काढ़ा से सींचे ॥ ९३ ॥

पञ्चवल्कमधूकानांरसैरिक्षुरसैर्घृतैः। छागैर्गव्यैःपयोभिर्वाशर्कराक्षौद्रसंयुतैः ॥ ९४ ॥ प्रक्षालनानांकल्कैर्वासस र्पिष्कैःप्रलेपयेत्। एषांवासुकृतैश्चूर्णैस्तंगुदंप्रतिसारयेत् ॥ ९५ ॥

अथवा शक्कर तथा शहद युक्त पंचवल्कल तथा मुलेठी के काढ़े से सींचे अथवा ईख के रससे सींचे घीसे सींचे अथवा शहद तथा शक्कर युक्त गौ या बकरीके दूध तथा घीसे सींचे अथवा इन्हीं औषधियों के कल्कको घीमें मिलाकर गुदामें लेपकरे अथवा इन्हीं औषधियों का चूर्ण ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

धातकीलोध्रचूर्णैर्वासमांशैःप्रतिसारयेत्। तथातत्रस्रवत्यस्रंगुदंतैःप्रतिसारितम् ॥ ९६ ॥

या धाई के फूल तथा लोध समभाग इन दोनों का चूर्ण गुदामें मले इसप्रकार गुदाके मलनेसे गुदासे रुधिर वहने लगता है ॥ ९६ ॥

पक्वताप्रशमंयातिवेदनाचोपशाम्यति । यथोक्तैःसेचनैःशीतैःशोणितेनिःस्रवत्यपि। गुदंवंक्षणकट्यूरुसेचयेद्घृतभावितम् ॥ ९७ ॥

जिस से गुदाका पकना नष्ट होकर पीड़ा शान्त होजाती है और रुधिर वहने पर भी गुदा वंक्षण कटि तथा जाँघों में घी मलकर पूर्वोक्त शीतल क्वाथआदि से सींचे ॥ ९७ ॥

चन्दनाद्येनतैलेनशतधौतेनसर्पिषा। कार्पाससहयोगेनसेचयेद्गुदवंक्षणौ ॥ ९८ ॥

और गुदा तथा वंक्षण में चन्दनादि तैल तथा सौबार धोयाहुआ घी रुई के द्वारा छिड़के ॥ ९८ ॥

अल्पाल्पंबहुशोरक्तंसशूलमुपवेश्यते । यदावायुर्विबद्धश्चकृच्छ्रंचरतिवानवा ॥ ९९ ॥

जब शूल सहित थोड़ा २ रुधिर वारम्बार गिरताहो और रुकी हुई वायु बहुत कष्ट से चलायमान होतीहो या न चलायमान होती हो ॥ ९९ ॥

पिच्छावस्तिंतदातस्ययथोक्तमुपकल्पयेत् । प्रपौण्डरीकसिद्धेनसर्पिषाचानुवासयेत् ॥ १०० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब यथोक्त पिच्छावस्ति देनी चाहिये और पुँडरिया के साथ पाक कियेगये घी के द्वारा अनुवासन वस्ति देनी चाहिये॥१००॥

प्रायशोदुर्बलगुदाश्चिरकालातिसारिणः। तस्मादभीक्ष्णशस्तेषांगुदस्नेहंप्रयोजयेत् ॥ १०१ ॥

जिनको बहुत दिन तक दस्तआते हैं उनकी गुदा प्रायः निर्बल होजाती है इस से बारम्वार उनकी गुदामें स्नेह का प्रयोग करना चाहिये॥ १०१ ॥

पवनोतिप्रवृत्तोहिस्वेस्थानेलभतेऽधिकम्। बलन्तस्यसपित्तस्यजयार्थेवस्तिरुत्तमः॥ १०२ ॥

बहुत दस्तआनेपर वायु अपने स्थान में अत्यन्त वलवान् होजाती है इस से पित्त सहित उस वायुको जीतने के लिये वस्ति देना श्रेष्ठ होता है॥ १०२ ॥

रक्तंविट्सहितंपूर्वंपश्चाद्वायोऽतिसार्यते। शतावरीघृतंतस्यलेहार्थमुपकल्पयेत् ॥ १०३ ॥

जिस पुरुषके पहिले रुधिर सहित मल गिरता हो और पीछे दस्त आता हो उसको शतावरि के साथ पाक कियागया घी चटाना चाहिये ॥ १०३ ॥

शर्करार्द्धांशिकंलीढंनवनीतंनवोद्धृतम्। क्षौद्रपादंजयेच्छीघ्रंतंविकारंहिताशिनः॥ १०४ ॥

अर्द्धांश शर्करा तथा चतुर्थांश शहद युक्त ताजा मक्खन चाट कर हित वस्तुखानेसे भी इस रोग का शीघ्रही नाश होता है ॥१०४॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशुङ्गानापोथ्यवासयेत्। अहोरात्रंजलेतप्तेघृतंतेनाम्भसापचेत् ॥ १०५ ॥

बर्गद गूलर तथा पीपल के टिंभुनों को कूटकर एक रात्रिदिन उष्णजलमें भिगोवे फिर उसी जलके साथ पाक कियेहुये घीमें१०५॥

तदर्द्धंशर्करायुक्तंलिह्यात्सक्षौद्रपादिकम्। अधोवायदिवाप्यूर्द्धंयस्यरक्तंप्रवर्त्तते ॥ १०६ ॥ यस्त्वेवंदुर्बलोमोहात्पित्तलान्येवसेवते। शीघ्रंविपद्यतेप्राप्यबलीपाकंसुदारुणम् १०७ ॥

अर्द्धांश शक्कर तथा चतुर्थांश शहद मिलाकर चाटने से भी इस रोग का नाश होता है अधोभाग अथवा ऊर्ध्वभाग से रुधिरके गिरने पर जो दुर्बल पुरुष अज्ञान से पित्तकारक वस्तुओं का सेवन करता है वह पुरुष शीघ्रही अत्यन्त भयंकर वली पाक (गुदाके चक्रोंका पकजाना) को पाकर मरजाताहै१०६।१०७॥

श्लेष्मातिसारेप्रथमं हितंलंघनपाचनम्। योज्यश्चामातिसारघ्नोयथोक्तोदीपनोगणः॥ १०८ ॥

कफज अतीसार में पहिले लंघन तथा पाचन हित होताहै तदनन्तर पूर्वोक्त आमातीसारनाशक दीपनगणका प्रयोग करना चाहिये॥ १०८ ॥

लङ्घितस्यानुपूर्व्याञ्च कृतायांननिवर्त्तते। कफजोयद्यतीसारःकफघ्नैस्तमुपाचरेत् ॥ १०९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लंघन आदि क्रमके अच्छे प्रकारसे किये-जानेपर भी जो कफज अतीसार शान्त न होय तो कफघ्न औषधियों के द्वारा उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १०९ ॥

बिल्वकर्कटिकामुस्तमभयाविश्वभेषजम् । वचाविडंगंभूतीकंधान्यकंदेवदारुच ॥ ११० ॥

बेलगिरी ककड़ी नागरमोथा हड़ तथा सोंठि वच वायविड़ंग रोहिष धनियां तथा देवदारू ॥ ११० ॥

कुष्ठंसातिविषापाठाचव्यंकटुकरोहिणी । पिप्पलीपिप्पलीमूलंचैत्रकंहस्तिपिप्पली ॥ १११ ॥

कूट अतीस पाढ़र चव्य तथा कुटकी पीपरि पिपरामूल चीता तथा गजपीपरि ॥ १११ ॥

योगान्श्लोकार्द्धविहितांश्चतुरस्तान्प्रयोजयेत् । श्रृतान्श्लेष्मातिसारेषुकायाग्निबलवर्द्धनान् ॥ ११२ ॥

इन चारोंयोगों का जोकि आधे आधे श्लोकमें कहेगये हैं अलग अलग काढ़ा कर के कफातीसारमें बुद्धिमान् वैद्यको देना चाहिये इन योगों से जठराग्नि की वृद्धि होती है ॥ ११२ ॥

अजाजींससितांपाठांनागरंमरिचानिच । धातकीद्विगुणंदद्यान्मातुलुङ्गरसाप्लुतम् ॥ ११३ ॥

जीरा शकर पाढ़र सोंठि मिर्च यह सब समभाग और धवई के फूल दो भाग इन सब के चूर्णको बिजौरा निम्बूके रसमें मिलाकर पीनेसे कफातीसारका नाश होताहै ॥ ११३ ॥

रसाञ्जनंसातिविषंकुटजस्यफलानिच । धातकीद्विगुणंदद्यात्पातुंसक्षौद्रनागरम् ॥ ११४ ॥

रसौत अतीस इन्द्रयव तथा सोंठि यह सब समभाग और धवई के फूल दो भाग इनका चूर्ण शहद में मिलाकर कफातीसार में पीना चाहिये ॥ ११४ ॥

धातकीनागरंबिल्वंलोध्रंपद्मस्यकेशरम् । जम्बुत्वङ्नागरंधान्यंपाठामोचरसंबला ॥ ११५ ॥

धवई के फूल सोंठि बेलगिरी लोध तथा कमल की केसर जामुन की छाल सोंठि धनियां पाढ़र मोचरस तथा बरियारा ११५ ॥

समङ्गाधातकीबिल्वमध्यंजम्ब्वाम्रयोस्त्वचा । कपित्थानिविडङ्गानिनागरंमरिचानिच ॥ ११६ ॥

लजालू धवई के फूल बेलगिरी जामुनकी छाल तथा आम की छाल कैथा वायविड़ंग सोंठि तथा मिर्च ॥ ११६ ॥

चाङ्गेरीकोलतक्राम्लांश्चतुरस्तान्कफातुरे । श्लोकार्द्धविहितान्दद्यात्सस्नेहलवणान्खडान् ॥ ११७ ॥

इन आधे श्लोक में कहेहुये चारोंयोगोंको अमलोनिया बेर तथा मट्ठेके साथ स्नेह तथा लवणयुक्त यूष बनाकर बुद्धिमान् वैद्य कफातीसारमें देवे ॥ ११७ ॥

कपित्थमध्यंलीढ्वातुसव्योषक्षौद्रशर्करम् । कटुफलंमधुयुक्तंवामुच्यतेजठरामयात् ॥ ११८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कैथेका गूदा सोंठि पीपरि मिर्च तथा शक्कर इनको शहद में मिलाकर चाटनेसे अथवा शहद में कायफलका चूर्ण मिलाकर चाटने से उदर के रोग नष्ट होजाते हैं ॥११८॥

कणांमधुयुतांपीत्वातक्रंपीत्वासचित्रकम् । जग्ध्वात्राबालबिल्वानिमुच्यतेजठरामयात् ॥ ११६ ॥

शहदमें पीपर मिलाकर चाटने से मट्ठे में चीता मिलाकर चाटने से अथवा कच्चेबेल खानेसे उदरके रोगोंका नाश होताहै॥११९॥

बालबिल्वंगुडंतैलंपिप्पलींविश्वभेषजम् । लिह्याद्वातेप्रतिहतेसशूलः सप्रवाहिकः ॥ १२० ॥

कच्चा बेल गुड़ तैल पीपरि तथा सोंठि इन को एकमें मिलाकर चाटने से वायु के शान्त होजानेपर शूल तथा प्रवाहिका का नाश होजाता है ॥ १२० ॥

भोज्यंमूलकषायेणवातघ्नैश्चोपसेवनैः । वातातिसारविहितैर्यूषैर्मांससैः खडैः ॥ १२१ ॥

कफातीसार में मूलके काढ़े के साथ वातघ्न व्यंजनोंके साथ और वातातीसार में कहेहुये यूष तथा मांस रसों के साथ भोजन करना चाहिये ॥ १२१ ॥

पूर्वोक्तमम्लसर्पिर्वाषट्पलंवायथाबलम् । पुराणंवाघृतंदद्याद्यवागूमण्डमिश्रितम् ॥ १२२ ॥

कफातीसार में पूर्वोक्त अम्लघृत षट्पल घृत अथवा पुराना घी यवागू तथा मण्ड में

मिलाकर बलके अनुसार देनाचा...

वातश्लेष्मविबन्धेवाकफे...त्यपि । शूलेप्रवाहिकायां...वस्तिंप्रयोजयेत् ॥ १२३

कफ तथा वायु के विबन्ध या ... हुत गिरना या शूल तथा प्रव... अतीसारमें पिच्छावस्ति देनीचाहिये ॥ १२...

पिप्पलीबिल्वकुष्ठानांशताह्वावचयोरपि । कल्कैःसलवणैर्युक्तंपूर्वोक्तंसन्निधापयेत् ॥ १२४ ॥

यहां पर पूर्वोक्त पिच्छावस्ति में पीप... बेल कूट सौंफ बच तथा सैंधवलवण इन कल्क मिलाकर पिच्छावस्ति देनी चा...ये ॥ १२४ ॥

प्रत्यागतेसुखेस्नातंकृताहारंदि...त्यये । बिल्वतैलेनमतिमान्...ष्णेनानुवासयत् ॥ १२५ ...वचान्तैरथवाकल्कैस्तैलंपक्...सयेत् । बहुशःकफवातार्त्तस्...सलभतेसुखम् ॥ १२६ ॥

और वस्तिकर्म्म के होजाने पर... वैद्य सुखपूर्वक स्नान करवाके भो... फिर अपराह्न में कुछ उष्ण बेल... द्वारा अथवा पूर्वोक्त पीपरि से आ... वच पर्य्यन्त औषधियोंके साथ पाक... तैलके द्वारा कफ तथा वायु से पीड़ि... को बारम्बार अनुवासनवस्ति देवे... रोगीको सुख प्राप्त होताहै ॥ १२५। १२६

स्वस्थानमारुतोऽवश्यंवर्द्धतेक...

...ानापोथ्य ...सिघृतंतेना ...मुनों को कू... भिगोवे फिर ...च्छीमें १०... ...ला... ...सा है ...गिरने ...रक व- ...शीघ्रही ...रोगोंका ...१०७॥ ...क पा ...ीयथो ...तथा पा- ...मातीसार ...ना चा- ...नि ...धे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...जो । सवृद्धःसहसाहन्यात्तस्मात्तं ...याजयेत् ॥ १२७ ॥

...फके क्षीण होजाने पर वायु अपने स्थान ...ढ़कर रोगीको नष्ट करदेती है इससे शीघ्र ...स वढ़ीहुई वायु को शान्त करना चा- ... ॥ १२७ ॥

वातस्यानुजयेत्पित्तंपित्तस्यानुजयेत्कफम् । त्रयाणांवाजयेत्पूर्वंयोभवेद्बलवत्तमः ॥ १२८ ॥

वायु के उपरान्त पित्त को शान्त करना चाहिये और पित्तके उपरान्त कफको शान्त करना चाहिये अथवा इन तीनोंमें से जो अधिक वलवान्हो उसीको पहिले शान्त करना चाहिये ॥ १२८ ॥

तत्र श्लोकः ।

प्रागुत्पत्तिनिमित्तानिलक्षणंसाध्यतातथा । क्रियाचावस्थिकीसिद्धा निर्दिष्टाह्यतिसारिणाम् ॥ १२९ ॥

इत्यतीसारचिकित्सितेदशमोऽध्यायः ॥१०॥

तिस में यह श्लोक है । इस अतीसार चिकित्सित नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजी ने अतीसार के पहिले उत्पन्न होने के कारण लक्षण साध्यता और अवस्था के अनुसार सिद्धचिकित्सा यह सब विषय कहा ॥१२९॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें
अतीसारचिकित्सितनामदशवां
अध्याय समाप्तहुआ १० ॥

ग्यारहवांअध्याय ॥

विसर्पचिकित्सितम् ।

कैलासेकिन्नराकीर्णेबहुप्रस्रवणौषधे । पादपैर्विविधैःस्निग्धैर्नित्यंकुसुमसम्पदैः ॥१॥ वहद्भिर्मधुरान्गन्धान्सर्वतःस्त्वभ्यलंकृते। विहरन्तंजितात्मानमात्रेयमृषिवन्दितम् ॥ २ ॥ महर्षिभिःपरिवृतंविभुंभूतहितेरतम्। अग्निवेशोगुरुंकालेविनयादिदमुक्तवान् ॥ ३ ॥ भगवन् ! दारुणंरोगमाशीविषविषोपमम् । विसर्पन्तंशरीरेषुदेहिनामुपलक्षये ॥ ४ ॥ सहसैवनरास्तेनपरीताःशीघ्रकारिणा। विनश्यन्त्यनुपक्रान्तास्तत्रनःसंशयोमहान् ॥ ५ ॥ सनाम्नाकेन विज्ञेयःसंज्ञितःकेनहेतुना । कतिभेदाःकियद्धातुःकिंनिदानःकिमाश्रयः ॥६॥ सुखसाध्यःकृच्छ्रसाध्योज्ञेयोयश्चानुपक्रमः । कथंकैर्लक्षणैःकिञ्चभगवन् ! सस्यभेषजम् ॥७॥

इसके उपरान्त विसर्पचिकित्सितनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

किन्नरों से व्याप्त अनेक झरने तथा औषधियों से युक्त और सघन छायावाले सदैव पुष्पोंसेयुक्त रहनेवाले तथा अत्यन्त मधुर सुगन्ध का विस्तार करनेवाले अनेक प्रकारके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृक्षों से विभूषित कैलासनाम पर्वतपर विहार करतेहुये जितेन्द्रिय सम्पूर्ण प्राणियों के हितकारी ऋषियों से वन्दना कियेगये महर्षियों से घिरेहुये भगवान् आत्रेयजीसे उचित समयपर! अग्निवेशने नम्रतापूर्वक कहा कि हे भगवन् मनुष्यों के शरीर में एक रोग सर्पके विषके समान फैलता है और उस शीघ्रकारी रोगकी शीघ्रही चिकित्सा न करने से एकाएकी मनुष्य मरजाते हैं उस रोगके विषय में हमको बड़ासँदेह है इससे उस रोगका नाम नामका कारण उसके भेद किन धातुओं का अवलम्वन करके वह उत्पन्न होता है उसके निदान आश्रय सुखसाध्यता कष्टसाध्यता तथा असाध्यता किस प्रकार किन लक्षणोंसे जानीजाती है और उसकी चिकित्सा यह सब कृपा करके कहिये ॥ १ । ७ ॥

तदग्निवेशस्यवचःश्रुत्वात्रेयः पुनर्वसुः । यथावदखिलंसर्वंप्रोवाचमुनिसत्तमः ॥ ८ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर मुनियों में श्रेष्ठ भगवान् आत्रेयजीने इन सब विषयों का यथावत् वर्णन किया ॥ ८ ॥

विविधंसर्पतियतोविसर्पस्तेनसस्मृतः । परिसर्पोऽथवानाम्नासर्वतःपरिसर्पणात् ॥ ९ ॥

यह रोग (वि) अर्थात् अनेक प्रकार से (सर्पति) अर्थात् फैलताहै इससे विसर्प और (परि) अर्थात् सबओर से (सर्पति) अर्थात् फैलता है इससे परिसर्प कहलाता है ॥ ९ ॥

सचसप्तविधोदोषैर्विज्ञेयःसप्तधातुकः । पृथक्त्रयस्त्रिभिश्चैकोविसर्पोद्वन्द्वजास्त्रयः ॥ १० ॥

दोषों के भेदसे विसर्प (जहरवात) सात प्रकार का होताहै और सात धातुओंका अवलम्वनकरके उत्पन्न होताहै इन सातों प्रकार के विसर्पोंमें से वातादि दोषोंसे अलग अलग उत्पन्न हुये तीन प्रकारके विसर्प तथा द्वंद्वज (वातादि दो दो दोषों से उत्पन्नहुये) तीन प्रकारके विसर्प होते हैं और तीनों दोषों से एक प्रकारका विसर्प होताहै ॥ १० ॥

वातिकःपैत्तिकश्चैव कफजःसान्निपातिकः । चत्वारएतेवीसर्पावक्ष्यन्ते द्वन्द्वजास्त्रयः ॥ ११ ॥

वातिक पैत्तिक तथा कफज यह तीनों प्रकार के विसर्प वातादि दोषों से अलग २ उत्पन्न होते हैं और तीनों दोषोंसे सन्निपातिक विसर्प उत्पन्न होता है यह चार प्रकारके विसर्प कहेगये द्वंद्वज तीन प्रकारके विसर्प आगे कहे जाते हैं ॥ ११ ॥

आग्नेयोवातपित्ताभ्यांग्रन्थाख्यःकफवातजः । यस्तुकर्दमकोघोरःसपित्तकफसम्भवः ॥ १२ ॥

जैसे वातपित्तज विसर्प को आग्नेय कफवातज विसर्प को ग्रंथि और कफपित्तज भयंकर विसर्प को कर्दमक कहते हैं ॥ १२ ॥

रक्तंलसीकात्वङ्मांसं दूष्यंदोषास्त्रयोमलाः । विसर्पाणांसमुत्पत्तौविज्ञेयाःसप्तधातवः ॥ १३ ॥

रुधिर लसीका (धातुविशेष) त्वचा तथा मांस यह चारों दूष्य (दूषित होनेवाले) हैं

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वात पित्त तथा कफ यह तीनों दोष (दूषितकरने वाले) हैं इन्हीं सातों धातुओं का अवलम्बन करके विसर्प (जहरवात) उत्पन्न होताहै ॥ १३ ॥

लवणाम्लकटूष्णानांरसानामतिसेवनात्। दध्यम्लमस्तुशुक्तानांसुरासौवीरकस्यच ॥ १४ ॥

लवण अम्ल तथा कटु इन उष्ण रसोंका बहुत सेवन दही दही का खट्टा तोर सिरका सुरा सौवीरक (कांजीविशेष) ॥ १४ ॥

व्यापन्नबहुमद्यौष्णरागषाडवसेवनात्। शाकानांहरितानाञ्चसेवनाच्चविदाहिनाम् ॥ १५ ॥

दूषित बहुत मद्य रागषाड़व शाक अदरख आदि हरित वस्तु विदाही वस्तु के सेवन से ॥ १५ ॥

कूर्चिकानांकिलाटानांसेवनान्मन्दकस्यच । दध्नःशाण्डाकिपूर्वाणामासुतानाञ्चसेवनात् ॥ १६ ॥

कूर्चिका किलाट (फटेहुये दूध को पकाने से पानीके जलजाने से जो पिण्डसा वनजाता है उसे किलाट कहते हैं) मन्दक दही शाण्डाकी आदि आश्रुतके सेवनसे ॥ १६ ॥

तिलमाषकुलत्थानांतैलानांपैष्टिकस्यच। ग्राम्यानूपौदकानाञ्चमांसानांलशुनस्यच ॥ १७ ॥

तिल उर्द कुल्थी तैल पिट्ठी ग्राम के पशुपक्षियों का मांस जलके जीवों का मांस लहशुन ॥ १७ ॥

प्रक्लिन्नानामसात्म्यानांविरुद्धानाञ्चसेवनात्। अत्यादानाद्दिवास्वप्नादजीर्णाध्यशनात्क्षतात् ॥१८॥

सड़ी हुई वस्तु असात्म्य वस्तु तथा एकमें मिली हुई विरुद्ध वस्तु इनका बहुत सेवन करना बहुत भोजन करना दिनमें सोना अजीर्ण में भोजन करना पहिले वार के भोजन के विना पचेही भोजन करलेना घाव ॥१८॥

वधबन्धप्रपतनाद्धर्मकर्मातिसेवनात्। विषवाताग्निदोषाच्चविसर्पाणांसमुद्भवः ॥ १९ ॥

चोट लगना गिरना बहुत धूप का सेवन करना बहुत श्रम करना और विषसे दूषित वायु तथा अग्निका सेवन करना इन कारणों से विसर्प (जहरवात) उत्पन्न होताहै १९ ॥

एतैर्निदानैर्व्यामिश्रैःकुपितामारुतादयः। दूष्यंसंदूष्यरक्तादिविसर्पन्त्यहिताशिनाम् ॥ २० ॥

इन मिलेहुये कारणों से कुपित वातादि दोष अहित वस्तु खानेवाले पुरुषों के रुधिर आदि दूष्योंको दूषित करके विसर्प (जहरवात) को उत्पन्न करते हैं ॥ २० ॥

बहिःश्रितःश्रितश्चान्तस्तथाचोभयसंश्रितः। विसर्पोबलमेतेषांज्ञेयंगुरुयथोत्तरम् ॥ २१ ॥

शरीर का बाहिरी भाग शरीर का भीतरी भाग तथा दोनों भाग विसर्प (जहरवात) के आश्रय हैं बहिर्भागाश्रित (बाहिरी भागमें होनेवाले) अन्तर्भागाश्रित (भीतरी भागमें होनेवाले) तथा उभय भागाश्रित दोनों भागों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में होनेवाले) विसर्प उत्तरोत्तर अधिक बलवान् होते हैं अर्थात् बहिर्भागाश्रित विसर्प की अपेक्षा अन्तर्भागाश्रित विसर्प अधिक बलवान् होताहै इत्यादि ॥ २१ ॥

बहिर्मार्गाश्रितंसाध्यमसाध्यमुभयाश्रितम् । विसर्पंदारुणंविद्यात्सुकृच्छ्रन्त्वन्तराश्रयम् ॥ २२ ॥

बहिर्भागाश्रित विसर्प साध्य अन्तर्भागाश्रित भयङ्कर विसर्प कष्टसाध्य और उभय भागाश्रित विसर्प असाध्य होताहै ॥ २२ ॥

अन्तःप्रकुपितादोषाविसर्पन्त्यन्तराश्रये । बहिर्बहिःप्रकुपिताःसर्वत्रोभयसंश्रिताः ॥ २३ ॥

अन्तर्भाग में कुपित हुये दोष अन्तर्भागाश्रित बहिर्भाग में कुपित हुए दोष बहिर्भागाश्रित और दोनों भागों में कुपित हुये दोष उभय भागाश्रित विसर्पको उत्पन्न करतेहैं२३॥

मर्मोपघातात्संमोहादयनानांविघट्टनात् । तृष्णातियोगाद्वेगानांविषमाणांप्रवर्त्तनात् ॥ २४ ॥

मर्मों का नष्ट होजाना मोह नेत्र आदि इन्द्रियों का फड़कना बहुत प्यास लगना मल मूत्रादि वेगोंका विषमतासे प्रवृत्त होना २४॥

विद्याद्विसर्पमन्तर्यदाशुचाग्निबलक्षयात् । अतोविपर्य्ययाद्बाह्यमन्यैर्विद्यात्स्वलक्षणैः ॥ २५ ॥

और शीघ्रही अग्निके बलका नष्ट होजाना यह अन्तर भागाश्रित विसर्प के लक्षण हैं इन लक्षणों से विपरीत विसर्प (जहरवात) के अन्यलक्षणोंके द्वारा बहिर्भागाश्रित विसर्प (जहरवात) जानना चाहिये ॥ २५ ॥

यस्यलिङ्गानिसर्वाणिबलवद्यस्यकारणम् । यस्यचोपद्रवाःकष्टामर्मगोयश्चहन्तिसः ॥ २६ ॥

जिस विसर्प में सम्पूर्णलक्षणहों जिसकी उत्पत्ति बलवान् कारण से हो जिसमें कष्टकारी उपद्रव हों और जो मर्ममें स्थितहो वह विसर्प मनुष्यको अवश्य मारडालताहै॥२६॥

रूक्षोष्णैःकेवलोवायुःपूरणैर्वासमाचितः । प्रदुष्टोदूषयन्दूष्यंविसर्पतियथाबलम् ॥ २७ ॥

रूक्ष तथा उष्ण वस्तुवों के सेवनसे अथवा बहुत भोजन करने से संचित वायु दूषितहोकर रुधिर आदि दूष्यों को दूषित करके बल के अनुसार विसर्प (जहरवात) को उत्पन्न करता है ॥ २७ ॥

तस्यस्वरूपाणि ।

भ्रमदवथुपिपासानिस्तोदशूलाङ्गमर्दोद्वेष्टनकम्पज्वरतमककासास्थिसन्धिभेदविश्लेषणवेपनारोचकाविपाकाश्चक्षुषोराकुलत्वमस्रागमनंपिपीलिकासञ्चारइवचाङ्गेषुयस्मिंश्चावकाशेविसर्पोविसर्पतिसोऽस्यकाशःश्यावारुणावभासःश्वयथुमान्निस्तोदभेदशूलायाससङ्कोचहर्षस्फुरणैरतिमात्रंप्रपीड्यते । अनुपक्रान्तश्चोपचीयतेशीघ्रंभेदैःस्फोटकै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्तनुभिररुणाभैःश्यावैर्वातनुविषमदारुणाल्पास्रावैर्विबद्धवातमूत्रवर्चस्तानिनिदानोक्तानिचास्यनोपशेरतेविपरीतानिचोपशेरतइतिवातविसर्पः ॥ २८ ॥

वातज विसर्प के लक्षण–जैसे–भ्रम संताप तृषा सुई गड़नेकी सी पीड़ा शूल अङ्गमर्द ऐंठन कम्प ज्वर तमक श्वास खांसी हड्डियों का अलग२ होजाना संधिभेद संधियों का कांपना अरुचि भोजन का न पचना नेत्रों का मलिन रहना आंसू बहना तथा शरीरमें चीटियां चढ़ीं हुई सी मालूम होना और शरीर के जिस स्थान में विसर्प (जहरवात) हो उस स्थान का कपिश तथा अरुणवर्ण होना शोथयुक्त होना और सुई गड़ने कीसी पीड़ा भेद शूल आयास संकोच रोमांच तथा स्फुरन (फड़कना) से अत्यन्त पीड़ित होना यह लक्षण वातज विसर्प में होते हैं यदि इस की चिकित्सा न कीजाय तो यह शीघ्रही भेद (त्वचा का फटजाना) और सूक्ष्म कपिश तथा अरुणवर्ण छालों से व्याप्त होजाता है और उन छालों से श्वेत तथा अरुण वर्ण थोड़ा २ पतला पीव सा बहताहै और रोगी के वायु मूत्र तथा मलका विबन्ध (रुकना) होजाता है और इस विसर्पमें निदानमें कही हुई वस्तु अहितकारी तथा उन से अन्य वस्तु हितकारी होती हैं ॥ २८ ॥

इति वातविसर्प ॥

पित्तमुष्णोपचारादिविदाह्यम्लाशनैश्चितम् । दूष्यंसंदूष्यमार्गांश्चपूरयन्वैविसर्पति ॥ २९ ॥

उष्ण उपचार आदिक और विदाही तथा बहुत खट्टी वस्तुवों के सेवनसे संचित पित्त रुधिर आदि दूष्यों को दूषित करके और स्रोतों को पूर्ण करके विसर्प (जहरवात, को उत्पन्न करताहै ॥ २९ ॥

तस्यरूपाणि-ज्वरस्तृष्णामूर्च्छामोहश्छर्दिररोचकोऽङ्गभेदःस्वेदोऽतिमात्रमन्तर्दाहःप्रलापःशिरोरुक्चक्षुषोराकुलत्वमस्वप्नमरतिर्भ्रमःशीतवातवारितर्षोऽतिमात्रंहरितनेत्रमूत्रवर्चस्त्वक्तेषांहरितहारिद्ररूपदर्शनंयस्मिंश्चावकाशेविसर्पोऽनुसर्पतिसोऽवकाशस्ताम्रहारितहारिद्रनीलकृष्णरक्तानांवर्णानामन्यतमंपश्यति । सोत्सेधैश्चातिमात्रंदाहसम्भेदनपरीतैःस्फोटकैरुपचीयतेतुल्यवर्णास्रावैरचिरपाकैर्निदानोक्तानिनोपशेरतेविपरीतानिचोपशेरतइतिपित्तविसर्पः ॥ ३० ॥

पित्तज विसर्पके लक्षण–जैसे ज्वर तृषा मूर्च्छा मोह छर्दि अरुचि अंगों में टूटनेकीसी पीड़ा स्वेद शरीरके भीतर बहुत दाह प्रलाप शिरमें पीड़ा नेत्रोंका मलिन होना निद्रा न आना भ्रम बेचैनी शीतल वायु तथा शीतल जल की बहुत इच्छा नेत्र मूत्र मल तथा त्वचाका हरित या पीत होजाना और सम्पूर्ण वस्तु हरी तथा पीली दिखाई देना यह लक्षण होते हैं और शरीरके जिस २ स्थानमें विसर्प (जहरवात) फैलता है उस २ स्थानका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ण हरित पीत नील कृष्ण अथवा रक्त होजाताहै उस स्थानमें बहुत शोथ होताहै और दाह तथा स्वेदयुक्त बहुत छाले उत्पन्न होते हैं और वह छाले बहुत जल्दी पकजाते हैं और छालोंका जैसा वर्ण होताहै वैसाही पीव उनमें से निकलता है और निदान में कहीहुई वस्तु अहितकारी होती हैं तथा इन वस्तुओं से विपरीत वस्तु हितकारी होती हैं ॥ ३० ॥

इति पित्तविसर्प ॥

स्वाद्वम्ललवणस्निग्धगुर्वन्नस्वप्नसञ्चितः । कफःसंदूषयन्दूष्यंकृच्छ्रमङ्गेविसर्पति ॥ ३१ ॥

मधुर अम्ल लवण स्निग्ध तथा भारी अन्न खानेसे और बहुत सोनेसे संचित कफ दूषित होकर रुधिर आदि दूष्यों को दूषित करके कष्टदायक विसर्प (जहरवात) को उत्पन्न करता है ॥ ३१ ॥

तस्यरूपाणि-शीतकःशीतकज्वरोगौरवंनिद्रातन्द्रारोचकोमधुरास्यत्वमास्योपलेपोनिष्ठीविकाच्छर्दिरालस्यंस्तैमित्यमग्निनाशोदौर्बल्यंयस्मिंश्चावकाशेविसर्पतिसोऽवकाशःश्वयथुमान्पाण्डुमान्नातिरक्तस्नेहःसुप्तिस्तम्भगौरवैरन्वितोऽल्पवेदनःकृच्छ्रपाकैश्चिरकारिभिर्बहुलत्वगुपलेपैःस्फोटैःश्वेतपाण्डुभिरनुबध्यतेप्रभिन्नस्तुश्वेतंपिच्छिलंतन्तुमद्घनमनुबद्धंस्निग्धमास्रावंस्रवत्यूर्ध्वश्चगुरुभिःस्निग्धैर्जलवत्तैस्त्वि-ग्धैर्बहुलत्वगुपलेपैर्व्रणैरनुबध्यतेनुबध्यतेनुषङ्गीश्वेतनखनयनवदनत्वङ्मूत्रवर्चस्तानिनिदानोक्तानिनोपशेरतेविपरीतानिचोपशेरतइतिश्लेष्मविसर्पः ॥ ३२ ॥

कफज विसर्पके लक्षण-जैसे शीत शीतज्वर शरीर का भारी मालूम होना अधिक निद्रा आना तन्द्रा अरुचि मुखका मधुर तथा कफ से लिपाहुआसा मालूम होना बहुत थूकना छर्दि आलस्य शरीरका गीले कपड़े से ढका-हुआसा मालूम होना मंदाग्नि तथा दुर्बलता यह लक्षण होते हैं और जिन २ स्थानोंमें विसर्प (जहरवात) फैलता है वह वह स्थान शोथयुक्त पाण्डुवर्ण कुछ रक्तवर्ण सुन्न स्तब्ध भारी तथा स्वल्प पीड़ायुक्त होते हैं और कष्ट से पकनेवाले बहुत कालमें उपद्रवों को उत्पन्न करनेवाले त्वचामें लिपेहुये से श्वेतवर्ण तथा पाण्डुवर्ण छालों से युक्त होते हैं जब वह स्थान फटते हैं तब उनमें से श्वेत पिच्छिल तन्तुमत् (सूतसी रेखाओं से युक्त) गाढ़ा तथा स्निग्ध पीव बहता है और उन स्थानों पर भारी स्निग्ध जल से व्याप्त त्वचामें लिपे हुये से घाव पड़जाते हैं और रोगीके नख नेत्र मुख त्वचा मूत्र तथा मल ये सब श्वेत होजाते हैं और निदान में कही हुई वस्तु अहितकारी तथा इनसे विपरीत वस्तु हितकारी होती हैं ॥ ३२ ॥

इति कफजविसर्प ॥

वातपित्तंप्रकुपितमतिमात्रंस्वहेतुभिः । परस्परंलब्धबलंदहद्गात्रंविसर्पति ॥ ३३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने अपने कारणों से कुपित वायु तथा पित्त एक दूसरे के संयोग से बलवान् होकर शरीरमें दाहपूर्वक विसर्प (जहरवात) को उत्पन्न करते हैं ॥ ३३ ॥

तदुपतापादातुरःसर्वशरीरमङ्गारैरिवाकीर्य्यमाणंमन्यते। छर्द्यतीसारमूर्च्छादाहमोहज्वरतमकारोचकास्थिसन्धिभेदतृष्णाविपाकाङ्गभेदादिभिश्चाभिभूयते। यंयंचावकाशं विसर्पोऽनुसर्पतिसोऽवकाशः शान्ताङ्गारप्रकाशोऽतिरिक्तोवाभवत्यग्निदग्धप्रकारैश्चस्फोटैरुपचीयतेस शीघ्रगत्वादाशुएवमर्मानुसारीभवतिमर्मणिचोपतप्तपवनोऽतिबलोभिनत्तिंअङ्गानिअतिमात्रंप्रमोहयति संज्ञांहिक्काश्वासौजनयतिनाशयतिनिद्रांसनष्टनिद्रः प्रमूढसंज्ञोव्यथितचेतानक्वचनसुखमुपलभतेअरतिपरीतःस्थानादासनाच्छय्यांक्रान्तुमिच्छतिक्लिष्टभूयिष्ठश्चाशुनिद्रां भजतिअबलोदुःखप्रबोधश्चतमेवंविधमग्निविसर्पपरीतमचिकित्स्यं विद्यात् ॥ ३४ ॥

इस विसर्पके संतापसे रोगी को अपना शरीर अंगारों से व्याप्तसा मालूम होताहै छर्दि अतीसार मूर्च्छा दाह मोह ज्वर तमक श्वास अरुचि हड्डी तथा सन्धियोंमें टूटनेकीसी पीड़ा तृषा अन्नका न पचना तथा अंगों में टूटनेकीसी पीड़ा यह लक्षण इस विसर्प में होते हैं जिस २ स्थानमें यह विसर्प फैलता है वह २ स्थान कैलेके समान अथवा कैलेसे भी अधिक काला होजाता है और उस स्थानमें जैसे अग्नि से जलनेमें छाले पड़ते हैं वैसेही छाले पड़ते हैं यह विसर्प बहुत जल्दी फैलताहै इससे शीघ्रही मर्म्मोंमें पहुँच जाता है और मर्म्ममें वायुके कुपित होने के कारण अत्यन्त बलवान् होकर अंगोंमें पीड़ा को उत्पन्न करताहै संज्ञा को नष्ट करदेता है हिचकी तथा श्वास को उत्पन्न करताहै और निद्रा को नष्ट करदेताहै इससे रोगी निद्रा तथा संज्ञारहित और व्याकुल चित्त होकर कहीं बात करने भरको भी सुख नहीं पाता है और बेचैन होकर एक स्थान से दूसरे स्थानपर एक आसनसे दूसरे आसनपर तथा एक शय्यासे दूसरी शय्यापर जाना चाहता है और इस प्रकार बहुत क्लेशित होकर तथा दुर्ब्बल होकर शीघ्रही सो जाताहै और फिर बहुत कष्टसे जागताहै ऐसे पुरुष को अग्नि विसर्पसेयुक्त होनेके कारण असाध्य जानना चाहिये ॥ ३४ ॥

कफपित्तंप्रकुपितंबलवत्स्वेनहेतुना ॥ विसर्पत्येकदेशन्तुप्रक्लेदयतिदेहिनः ॥ ३५ ॥

अपने २ कारणों से कुपित कफ तथा पित्त बलवान् होकर शरीरके किसी एक स्थान में क्लेद तथा विसर्प उत्पन्न करते हैं ॥ ३५ ॥

तद्विकाराः—शीतज्वरःशिरोगुरुत्वं दाहःस्तैमित्यमङ्गावसादनंनिद्रातन्द्रामोहोऽन्नद्वेषःप्रलापोऽग्निनाशो दौर्बल्यमस्थिभेदोमूर्च्छापिपासास्रो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तसांप्रलेपोजाड्यमिन्द्रियाणांप्रायो
पवेशनमंगविक्षेपोऽङ्गमर्दोऽरतिरौ
त्सुक्यञ्चउपजायतेप्रायश्चामाशये
विसर्पत्येकदेशग्राहीयस्मिंश्चावका
शेविसर्पतिसोऽवकाशोरक्तपीतपा
ण्डुपीडकापकीर्णइवमेचकाभः का
लोमलिनःस्निग्धोबहूष्मागुरुःस्ति
मितवेदनःश्वयथुमान्गम्भीरपाकः
निरास्रावःशीघ्रक्लेदःस्विन्नक्लिन्न
पूतिमांसत्वक्क्रमेणाल्परुक्परामृष्टो
ऽवदीर्य्यतेकर्दमइवावपीडितोऽनन्त
रंप्रयच्छत्युपक्लिन्नपूतमांसत्यागी
शिरास्नायुसंदर्शीकुणपगन्धीचभ
वतिसंज्ञास्मृतिहन्तातंकर्दमविसर्प
परीतमचिकित्स्यंविद्यात् ॥ ३६ ॥

तिसके विकार यह हैं । शीतज्वर शिर में भारीपन दाह शरीर का गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना अंगों में शिथिलता निद्रा तंद्रा मोह अरुचि प्रलाप मंदाग्नि दुर्बलता हड्डियों में टूटनेकीसी पीड़ा मूर्च्छा तृषा स्रोतों का लिपाहुआसा मालूम होना इन्द्रियों की जड़ता आमगिरना हाथ पैर पटकना अंगमर्द बेचैनी तथा उत्सुकता यह लक्षण इस विसर्प (जहरवात) में होतेहैं प्रायः यह विसर्प आमाशय में उत्पन्न होताहै धीरे२ फैलताहै और एकही स्थानमें रहता है जिस स्थानमें यह विसर्प होता है वह स्थान रक्त पीत तथा पाण्डुवर्ण पिड़िकाओं से युक्तसा स्निग्ध श्याम कान्तियुक्त कृष्णवर्ण मलिन स्निग्ध अत्यन्त उष्ण भारी गीलेकपड़े से ढकाहुआ सा पीड़ा तथा शोथयुक्त गम्भीर पाक (मांसके भीतर बहुत दूरतक पकनेवाला) पीव रहित शीघ्रही क्लेदयुक्त होनेवाला और शोथ क्लेद तथा दुर्गंधियुक्त मांस तथा त्वचावाला होताहै उसकी पीड़ा क्रम २ से घटती जाती है वह छूने से फटजाता है जो उसे दबावो तो कीचके समान दबजाताहै फिर उसमें से क्लेदयुक्त दुर्गंधित मांस निकलता है उसकी शिरा तथा स्नायु दिखाई पड़नेलगती हैं और उस में से मुर्देकी दुर्गंधि आतीहै इस विसर्प में संज्ञा तथा स्मृति नष्ट होजाती है इसको कर्दम विसर्प कहते हैं इसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

स्थिरगुरुकठिनमधुरशीतस्निग्धान्न
पानाभिष्यन्दिसेविनामव्यायामसे
विनामप्रतिकर्मशालिनांश्लेष्मावा
युश्चप्रकोपमापद्येतेतावुभौदुष्टप्रवृ
द्धौअतिबलौप्रदूष्यदूष्यं विसर्पाय
कल्पेते । तत्रवायुःश्लेष्मणावि
बद्धमार्गस्तमेवश्लेष्माणमनेकधा
भिन्दन्क्रमेणग्रन्थिमालांकृच्छ्रपा
कसाध्यांकफाशयेसंजनयतिउत्स
न्नरक्तस्यवाप्रदूष्यरक्तं शिरास्नायु
मांसत्वगाश्रितंग्रन्थिविसर्पंकुरुतेती
व्ररुजाग्रन्थीनांस्थूलानामणूनांदी
र्घवृत्तरक्तानांतदुपतापाज्ज्वरातीसा
रकासहिक्काश्वासशोषप्रमेहवैवर्ण्या
रोचकाविपाकच्छर्दिमूर्च्छाङ्गभङ्गनि

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

अथवा विसर्प में विरेचन के निमित्त त्राय-माण के साथ पाक कियागया विसर्पनाशक दूध पिलाना चाहिये ॥ ६४ ॥

त्रिफलारससंयुक्तं सर्पिस्त्रिवृतया सह । प्रयोक्तव्यंविरेकार्थंविसर्प ज्वरनाशनम् ॥ ६५ ॥

त्रिफला के रस तथा निशोथ के चूर्ण के साथ घी पिलाकर विरेचन कराने से विसर्प तथा ज्वरका नाश होता है ॥ ६५ ॥

रसमामलकानांवाघृतमिश्रंप्रदाप येत् । सएवगुरुकोष्ठायत्रिवृच्चूर्ण युतोहितः ॥ ६६ ॥

विसर्प तथा ज्वरके नाशके निमित्त आम-लोंके रसके साथ घी मिलाकर पिलाना चा-हिये और यदि रोगी का कोष्ठ भारीहो तो उस में निशोथ का चूर्ण भी मिलादेना चा-हिये ॥ ६६ ॥

दोषेकोष्ठगतेभूयएतत्कुर्य्याच्चिकि त्सितम् । शाखादुष्टेतुरुधिरेरक्तमेवा दितोहरेत् ॥ ६७ ॥

दोषके कोष्ठ में प्राप्त होनेपर यही चिकि-त्सा करनी चाहिये और हाथ पैरादि शाखा-ओं में रुधिरके दूषित होनेपर पहिले रुधिर निकलवानाही उचित है ॥ ६७ ॥

भिषग्वातान्वितंरक्तंविषाणेनाभिनि र्हरेत् । पित्तान्वितंजलौकोभिःकफा न्वितमलाम्बुभिः ॥ ६८ ॥

बुद्धिमान् वैद्य वातयुक्त रुधिरको सींगी के द्वारा पित्तयुक्त रुधिर को जोंकों के द्वारा और कफयुक्त रुधिर को तोंबी के द्वारा नि-काले ॥ ६८ ॥

यथासन्नंविकारस्यव्यधयेदाशुवासि नाम् । त्वङ्मांसस्नायुसंक्लेदोरक्तक्ले दाद्धिजायते ॥ ६९ ॥

अथवा शरीरके जिस अंगमें विसर्प (जह-रवात) हो उसके निकट की शिरा (नस) को शस्त्रके द्वारा छिदाकर रुधिर निकलवावे क्योंकि रुधिर में क्लेद होने से त्वचा मांस तथा स्नायुमें भी क्लेद उत्पन्न होताहै॥६९॥

अन्तःशरीरेसंशुद्धेदोषेत्वङ्मांससं श्रिते । आदितःस्वल्पदोषाणांक्रि याबाह्याप्रवक्ष्यते ॥ ७० ॥

शरीरके भीतरी भागके शुद्ध होने से दोष के त्वचा तथा मांस में स्थित होने पर स्वल्प दोषवाले पुरुषोंके लिये विसर्प में पहिले बा-ह्य चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ७० ॥

उडुम्बरत्वङ्मधुकंपद्मकिञ्जल्कमुत्प लम् । नागपुष्पंप्रियंगुश्चप्रदेहःस घृतोहितः ॥ ७१ ॥

गूलर की छाल मुलेठी कमलकी केसर उ-त्पल नागकेसर तथा प्रियंगु इनके चूर्ण को घीमें मिलाकर लेप करने से विसर्प में हित होता है ॥ ७१ ॥

न्यग्रोधपादास्तरुणाःकदलीगर्भसं युताः । बिसग्रन्थिश्चलेपःस्याच्छत धौतघृताप्लुतः ॥ ७२ ॥

वर्गदकी नवीन जटा केले के वृक्षका भीत-रीभाग कमलकी जड़ और सौबार का धोया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ घी इन सबका लेप विसर्प में हित होता है ॥ ७२ ॥

कालीयंमधुकंहेमबल्यंचन्दनपद्म कम् । एलामृणालंफलिनीप्रलेपः स्याद्घृताप्लुतः ॥ ७३ ॥

पीतचन्दन मुलेठी केतकी लालचन्दन पद्माख छोटी इलायची कमलकी दण्डी तथा प्रियंगु इनका चूर्ण घीमें मिलाकर लेप करने से विसर्प (जहरवात) शान्त होताहै॥७३॥

शाद्वलश्चमृणालश्चशंखचन्दनमुत्पलम् । वेतसस्यचमूलानिप्रदेहःस्यात्सतण्डुलः ॥ ७४ ॥

दूब कमलकी दण्डी शंख चन्दन उत्पल वेतकी जड़ और तण्डुल इनका लेप विसर्प में हित होता है ॥ ७४ ॥

शारिवापद्मकिञ्जल्कमुशीरंनीलमुत्पलम् । मञ्जिष्ठाचन्दनंलोध्रमभयाचप्रलेपनम् ॥ ७५ ॥

सांई कमलकीकेसर खस नीलोत्पल मँजीठ चन्दन लोध तथा हड़ इनका लेप विसर्प में हित होता है ॥ ७५ ॥

नलदश्चहरेणुश्चलोध्रंमधुकपद्मकौ। दूर्वासर्जरसश्चैवसघृतंस्यात्प्रलेपनम् ॥ ७६ ॥

खस रेणुका लोध मुलेठी पद्माख दूब राल तथा घी इन सबका लेप विसर्प में हित होता है ॥ ७६ ॥

यावकाःसक्तवश्चैवसर्पिषासहयोजिताः । प्रदेहोमधुकंवीरासघृतायवसक्तवः ॥ ७७ ॥

लाख तथा सत्तू घी में मिलाकर अथवा मुलेठी क्षीरकाकोली तथा यवके सत्तू घी में मिलाकर विसर्पमें लेप करना चाहिये॥७७॥

बलामुत्पलशालूकंवीरामगुरुचन्दनम् । कुर्य्यादालेपनंवैद्योमृणालश्चबिसान्वितम् ॥ ७८ ॥

बरियारा उत्पल कमलकी जड़ क्षीरकाकोली अगर चन्दन कमल की दण्डी तथा कमलकी दण्डीके भीतर का सूत इनका लेप वैद्यको विसर्प में कराना चाहिये ॥ ७८ ॥

यवचूर्णंसमधुकंसघृतञ्चप्रलेपनम् । हरेणवोमसूराश्चसमुद्गाःश्वेतशालयः । पृथक्पृथक्प्रदेहाःस्युःसर्वेवासर्पिषासह ॥ ७९ ॥

यवोंका चूर्ण मुलेठी तथा घी इनका लेप विसर्पमें हित होता है रेणुका मसूर मूंग श्वेत शालिधान इन सबको अलग २ घी में मिलाकर विसर्पमें लेप करना चाहिये ॥ ७९ ॥

पद्मिनीकर्दमःशीतोमौक्तिकंपिष्टमेववा । शंखःप्रवालःशुक्तिर्वागैरिकोवाघृताप्लुतः ॥ ८० ॥

कमलनीका शीतल कीच पिसेहुये मोती शंख मूंगा सीपी अथवा गेरू घीमें मिलाकर विसर्पमें लेप करना चाहिये ॥ ८० ॥

प्रपौण्डरीकंमधुकंबलाशालूकमुत्पलम् । न्यग्रोधपत्रंदुग्धीकासघृतंस्यात्प्रलेपनम् ॥ ८१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुंडरिया मुलेठी बरियारा कमल की जड़ उत्पल बर्गदके पत्ते तथा दुधिया इन सबको घीमें मिलाकर लेप करने से विसर्प शान्त होताहै ॥ ८१ ॥

बिसानिचमृणालञ्चसघृताचकशेरुका। शतावर्य्याविदार्य्योश्चकन्दौधौतघृताप्लुतौ॥ ८२ ॥

कमल की दण्डीके भीतरका सूत कमल की दण्डी तथा कसेरू को घी में मिलाकर और शतावर तथा विलाईकन्द को धोयेहुये घी में मिलाकर विसर्प में लेप करना चाहिये ॥ ८२ ॥

शैवालंनलमूलानिगोजिह्वावृषकर्णिका। इन्द्राणीशाकंसघृतंशिरीषत्वग्बलाघृतम् ॥ ८३ ॥

सिवार नरकुल की जड़ गोजिह्वा (गावजबाँ) वृषकर्णी तथा म्योड़ी इनको घी में मिलाकर और सिरसकी छाल तथा बरियाराको घी में मिलाकर लेप करने से विसर्प शान्त होते हैं ॥ ८३ ॥

न्यग्रोधोदुम्बरप्लक्षवेतसाश्वत्थपल्लवैः। त्वक्कल्कैर्बहुसर्पिष्कैस्तैरेवालेपनंहितम् ॥ ८४ ॥

बर्गद गूलर पकरिया बेत और पीपल इन सबके पत्ते तथा छालके कल्कमें घी मिलाकर विसर्पमें लेप करना हित है ॥ ८४ ॥

प्रदेहाःसर्वएवैतेवातपित्तोल्बणेशुभाः। सकफेतुप्रवक्ष्यामिप्रलेपानपराञ्छुभान् ॥ ८५ ॥

यह सम्पूर्ण लेप वातपित्तज विसर्पमें हित होते हैं इसके उपरान्त कफजविसर्प में हितकारी अन्य लेप कहताहूं ॥ ८५ ॥

त्रिफलांपद्मकोशीरंसमङ्गांकरवीरकम्। नलमूलान्यनन्तञ्चप्रदेहमुपकल्पयेत् ॥ ८६ ॥

हड़ बहेड़ा आमला पद्माख खस लजालू कनैर नरकुल की जड़ तथा कपूरीजड़ी इन का लेप विसर्पमें करना चाहिये ॥ ८६ ॥

खदिरंसप्तपर्णंचमुस्तमारग्वधंधवम्। कुरण्टकंदेवदारुदद्यादालेपनंभिषक् ॥ ८७ ॥

कत्था छितवन मोथा अमलतास धव बाणपुष्प तथा देवदारु इनका लेप विसर्पमें वैद्य को कराना चाहिये ॥ ८७ ॥

आरग्वधस्यपत्राणित्वचंश्लेष्मान्तकस्यच। इन्द्राणीशाकंकाकाह्वांशिरीषकुसुमानिच ॥ ८८ ॥

अमलतासके पत्ते लसोड़ाकी छाल म्योड़ी मकोय सिरसके फूल ॥ ८८ ॥

शैवालंनलमूलानिवीरागन्धप्रियंगुकौ। त्रिफलांमधुकंवीरांशिरीषकुसुमानिच ॥ ८९ ॥

सिवार नरकुल की जड़ काकोली गन्धप्रियंगु हड़ बहेड़ा आमला मुलेठी केला सिरस के फूल ॥ ८९ ॥

प्रपौण्डरीकंह्रीबेरंदार्वीत्वङ्मधुकंबलाम्। पृथगालेपनंकुर्य्याद्द्वन्द्वशःसर्वशोऽपिवा ॥ ९० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुँडरिया सुगन्धवाला दारुहल्दी की छाल महुआके फूल तथा बरियारा इन सब औषधियोंमेंसे एक २ औषध को दो २ औषधियों को अथवा सब औषधियों को ॥ ९० ॥

प्रदेहाःसर्वएवैतेदेयाःस्वल्पघृतायुताः । वातपित्तोल्बणेयेतुप्रदेहास्तेघृताधिकाः ॥ ९१ ॥

थोड़े से घीमें मिलाकर विसर्पमें लेप करना चाहिये वात पित्तज विसर्पोंमें हितकारी जो लेप कहेगये हैं उनमें अधिक घी मिलाना चाहिये ॥ ९१ ॥

प्रदेहाःसर्वएवैतेकर्त्तव्याःसंप्रसादनाः । क्षणेक्षणेयुज्यमानापूर्वमुद्धृत्यलेपनम् ॥ ९२ ॥

यह सम्पूर्ण लेप रुधिर को शुद्ध करनेवाले हैं लेप लगानेवाले को चाहिये कि थोड़े २ समयके उपरान्त पुराने लेप को छुड़ाकर नवीन लेप को लगावे ॥ ९२ ॥

घृतेनशतधौतेनप्रदिह्यात्केवलेनच । घृतमण्डेनशीतेनपयसामधुकाम्बुना ॥ ९३ ॥

सौवार धोयाहुआ घी विसर्प (जहरबात) में लगाने से हित होता है घृत मण्ड शीतल दुग्ध मुलेठी के क्वाथ ॥ ९३ ॥

पञ्चवल्ककषायेणसेचयेच्छीतलेनवा । वातासृक्पित्तबहुलंविसर्पंबहुशोभिषक् ॥ ९४ ॥

अथवा पंचवल्कके शीतल क्वाथकेद्वारा वैद्य को वात रुधिर तथा पित्त प्रबल विसर्प (जहरबात) को वारंवार सींचना चाहिये ॥ ९४ ॥

सेचनास्तेप्रदेहायेतएवघृतसाधनाः । तेचूर्णयोगावीसर्पचूर्णानामवचूर्णनाः ॥ ९५ ॥

पहिले घीके साथ जो लेप लगाने को कहे गये हैं उनकी औषधियों का क्वाथ करके विसर्पों पर सींचना चाहिये और उन्हींका चूर्ण करके विसर्पोंपर बुरकाना चाहिये ॥ ९५ ॥

दूर्वास्वरससिद्धञ्चघृतंस्याद्व्रणरोपणम् । दार्वीत्वङ्मधुकंलोध्रंकेसरञ्चावचूर्णनम् ॥ ९६ ॥

दूवके रसके साथ पाक कियेगये घी जो व्रणों में लगानेसे व्रण भरजाते हैं दारुहल्दी की छाल मुलेठी लोध तथा नागकेसर इनका चूर्ण विसर्पों (जहरबातों पर बुरकाना चाहिये ॥ ९६ ॥

पटोलःपिचुमर्दस्तुत्रिफलामधुकोत्पले । एतत्प्रक्षालनंसर्पिर्व्रणचूर्णप्रलेपनम् ॥ ९७ ॥

परवल नींब हड़ बहेड़ा आमला मुलेठी तथा उत्पल इन औषधियों का काढ़ा करके विसर्प (जहरबात) धोने चाहिये और इन्हीं औषधियों के साथ पाक कियेगये घी का विसर्प में सेवन करना चाहिये इन्हीं औषधियों का चूर्ण व्रणों में बुरकाना चाहिये और इन्हीं औषधियों का लेप विसर्प में करना चाहिये ॥ ९७ ॥

प्रदेहाःसर्वएवैतेकर्त्तव्याःसंप्रसादनाः । क्षणेक्षणेप्रयोक्तव्याःपूर्वमुद्धृत्यलेपनम् ॥ ९८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह सम्पूर्ण लेप रुधिरको शुद्ध करनेवाले हैं लेपलगानेवाले को चाहिये कि थोड़े २ समयके उपरान्त पुराने लेपको छुड़ाकर नवीन लेपको लगावे ॥ ९८ ॥

अनवीनेघृतेपूर्वेप्रदेहाबहुशोधनाः। देयाःप्रदेहाःकफजेपर्य्याधानोद्धृते घनाः ॥ ९९ ॥

बहुत शुद्ध करने वाले पहिले लेप पुराने घीमें मिलाकर लगाने चाहिये कफज विसर्प को बहुत साफ़ करके उसमें गाढ़ा लेप लगाना चाहिये ॥ ९९ ॥

त्रिभागांगुष्ठमात्रःस्यात्प्रलेपःकल्कपेषितः।नातिस्निग्धोनरूक्षश्च नपिण्डोनद्रवःसमः ॥ १०० ॥

लेपकी औषधियोंको चटनीके समान पीस कर अंगूठे का तृतीयांश (तिहाई) मोटा लेप लगाना चाहिये लेपन बहुत चिकना न रूखा न गाढ़ा न पतला होना चाहिये किन्तु सम (औसत दर्जाका) होना चाहिये १००॥

नचपर्युषितंलेपंकदाचिदवचारयेत्। नचतेनैवलेपेन पुनर्जातुप्रलेपयेत् ॥ १०१ ॥

बासी लेप और एकबार का छुटाया हुआ लेप कदापि नहीं लगाना चाहिये ॥ १०१ ॥

क्लेदवीसर्पशूलानिसोष्णभावात्प्रवर्त्तयेत्। लेपोह्युपरिपट्टस्यकृतःस्वेदयतिव्रणम् ॥ १०२ ॥

क्योंकि वह लेप उष्ण होजाने के कारण क्लेद विसर्प तथा शूलको उत्पन्न करदेता है घावपर वस्त्र रखके उसपर लेप करने से घाव में स्वेद निकलने के कारण ॥ १०२ ॥

स्वेदजाःपीडकास्तस्यकण्डूश्चैवोपजायते। उपर्य्युपरिलेपस्यलेपोयद्यवचार्य्यते ॥ १०३ ॥

स्वेद से पैदा हुई खुजली तथा पिड़िका उत्पन्न होती हैं लेपके ऊपर लेप लगाने से भी ॥ १०३ ॥

तानेवदोषाञ्जनयेत्पट्टस्योपरियान्कृतः। अतिस्निग्धोऽतिद्रवश्चलेपोयद्यवचार्य्यते ॥ १०४ ॥

वही दोष होते हैं जो वस्त्रपर लगाने से होते हैं बहुत चिकना तथा बहुत पतला लेप ॥ १०४ ॥

त्वचिनश्लिष्यतेसम्यङ्नदोषंशमयत्यपि। तन्वालिप्तंनकुर्वीतसंशुष्कोह्यापुटायते ॥ १०५ ॥

त्वचा में अच्छे प्रकार नहीं चिपकता है और दोषको भी नहीं शान्त करता है बहुत पतला लेप न लगाना चाहिये क्योंकि पतला लेप शीघ्रही सूख जाता है और लेपके सूखने पर उसमें पपड़े पड़जाते हैं ॥ १०५ ॥

नचौषधिरसोव्याधिंप्राप्नोत्यपिचशुष्यति। तन्वालिप्तेनयेदोषास्तानेवजनयेद्भृशम्। संशुष्कःपीडयेद्व्याधिंनिस्नेहोह्यवचारितः ॥ १०६ ॥

और औषधियों का रस रोग में नहीं पहुँचता बल्कि सूख जाता है और रूखा लेप लगानेसे भी यही दोष होते हैं जोकि पतले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेपके लगाने से होते हैं और लेपके सूखजाने पर बहुत पीड़ा होती है ॥ १०६ ॥

अन्नपानानिवक्ष्यामिविसर्पाणांनि निवृत्तये। लंघितेभ्योहितोमन्थोरूक्षःसक्षौद्रशर्करः ॥ १०७ ॥

अब विसर्प्पोंकी निवृत्तिके लिये अन्न पान (पीने की वस्तु) कहेजाते हैं विसर्पवाले को लंघन के उपरान्त रूखा शहद तथा शक्करयुक्त मन्थ (घोलेहुये पतले सत्तू) हित होता है ॥ १०७ ॥

मधुरःकिञ्चिदम्लोवादाडिमामलकान्वितः। सपरूषकमृद्धीकः सखर्जूरःशृताम्बुना ॥ १०८ ॥

यह मन्थ मधुर अथवा अनार तथा आमलों के योग से कुछ खट्टा होनाचाहिये विसर्प्परोग में फालसा दाख तथा खजूरके काढ़े के द्वारा ॥ १०८ ॥

तर्पणैर्यवशालीनांसस्नेहावावलेहिका। जीर्णेपुराणशालीनांयूषैर्भुञ्जीतभोजनम् ॥ १०९ ॥

तर्पण (तृप्तिकारीरस) बनाकर खिलाना चाहिये अथवा यव तथा शालिधानोंका स्नेह सहित अवलेह चटाना चाहिये और इस के पचजाने पर यूष के साथ पुराने शालिधानों के चांवलों का भात खिलाना चाहिये १०९॥

मुद्गान्मसूरांश्चणकान्यूषार्थमुपकल्पयेत्। अनम्लान्दाडिमाम्लान्वापटोलामलकैःसह ॥ ११० ॥

मूंग मसूर तथा चनों का परवल तथा आमलों के साथ खटाईरहित अथवा अनारकी खटाईयुक्त यूष विसर्प्पमें देना चाहिये ११०॥

जांगलानाञ्चमांसानांरसांस्तस्योपकल्पयेत्। रूक्षान्परूषकद्राक्षादाडिमामलकान्वितान् १११ ॥

विसर्प्प (जहरवात) रोग में जांगल जीवोंके मांस का रस देना चाहिये परन्तु उस रसमें घृतादि कोई स्नेह नहीं छोड़ना चाहिये और फालसा दाख अनार तथा आमलों के साथ रसका पाक करना चाहिये ॥ १११ ॥

रक्ताःश्वेतामहाह्वाश्चशालयःषष्टिकैःसह। भोजनार्थेप्रशस्यन्तेपुराणाःसुपरिस्रुताः ॥ ११२ ॥

पुराने रक्तशालि श्वेतशालि महाशालि धान और सांठी के चांवलों का अच्छेप्रकार से बनायाहुआ मांड़ विसर्प्प (जहरवात) वाले को भोजनके लिये हित होताहै ११२॥

यवगोधूमशालीनांसात्म्यान्येवप्रदापयेत्। येषांनात्युचितःशालिर्नरायेचकफाधिकाः ॥ ११३ ॥

परन्तु जिनको कि यव गेहूं शालिधान खाने का अभ्यास हो उन्हीं को देना चाहिये और जिनको शालिधान खाने का अभ्यास न हो और जिनके कफ बहुत अधिकहो ११३

विदाहीन्यन्नपानानिविरुद्धंस्वपनंदिवा। क्रोधव्यायामसूर्य्याग्निप्रवातांश्चविवर्जयेत् ॥ ११४ ॥

उनको दूध तथा गेहूं आदि जिन हित वस्तुवों का अभ्यास हो वही देना चाहिये विदाही अन्न पान परस्पर मिली हुई वि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूद्ध वस्तु दिनमें सोना क्रोध व्यायाम धूप अग्नि का संताप तथा तीक्ष्ण वायु यह सब विसर्प (जहरवात) में वर्जित हैं ॥ ११४ ॥

कुर्य्याच्चिकित्सितान्यस्माच्छीतप्रायाणिपैत्तिके। रूक्षप्रायाणिकफजेस्नैहिकान्यनिलात्मके ॥ ११५ ॥

पित्तजविसर्प में प्रायः शीतलचिकित्सा कफजविसर्प्प में प्रायः रूक्षचिकित्सा और बातविसर्प में प्रायः स्निग्धचिकित्सा करनी चाहिये ॥ ११५ ॥

वातपित्तप्रशमनमग्निवीसर्पणेहितम् । कफपित्तप्रशमनंप्रायःकर्दमसंज्ञिते ॥ ११६ ॥

अग्निविसर्प में वातपित्तनाशक और कर्दम विसर्प में कफपित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ११६ ॥

रक्तपित्तोत्तरंदृष्ट्वाग्रन्थिवीसर्पमादितः। रूक्षणैर्लंघनैःसेकैःप्रदेहैःपाञ्चवल्किकैः ॥ ११७ ॥

ग्रन्थिविसर्प में रुधिर तथा पित्त की भी अधिकता देखकर पहिले रूक्षताकारक लंघन पंचवल्कल के काढ़ेका सेक (सींचना) तथा पंचवल्कल का लेप ॥ ११७ ॥

शिरामोक्षैर्जलौकाभिर्वमनैःसविरेचनैः। घृतःकषायतिक्तैश्चकालज्ञैःसमुपाचरेत् ॥ ११८ ॥

फस्त खुलाना जोंकोंके द्वारा रुधिर निकलवाना वमन विरेचन और कषाय तथा तिक्त औषधियों के साथ पाक कियागया घी इनके द्वारा समय का जानने वाला वैद्य चिकित्सा करे ॥ ११८ ॥

ऊर्द्ध्वञ्चाधश्च शुद्धाय रक्तंचाप्यत्र सेचिते । वातश्लेष्महरंकर्मग्रन्थिवीसर्पिणेहितम् ॥ ११९ ॥

वमन तथा विरेचनके द्वारा शरीरके ऊर्ध्वभाग तथा अधोभाग दोनों के शुद्ध होजाने पर और जोंक आदिके द्वारा रुधिर निकलवा चुकने पर ग्रंथि विसर्पवाले को वात कफनाशक चिकित्सा हित होतीहै ॥ ११९ ॥

उत्कारिकाभिरुष्णाभिरुपनाहःप्रशस्यते । स्निग्धाभिर्वेशवारैर्वाग्रन्थिवीसर्पशूलिनः ॥ १२० ॥

ग्रन्थिविसर्प में शूल होनेपर उष्ण स्निग्ध उत्कारिका (भक्ष्यविशेष) का अथवा वेसवार (मशाला) का बन्धन श्रेष्ठ होता है ॥ १२० ॥

दशमूलोपसिद्धेनतैलेनोष्णेनसेचयेत् ॥ १२१ ॥

ग्रन्थिविसर्प (जहरवात) में दशमूल के साथ पाक कियागया उष्ण तैल सींचना चाहिये ॥ १२१ ॥

कुष्ठतैलेनचोष्णेनयवक्षारयुतेन च। गोमूत्रैःपत्रनिर्य्यूहैरुष्णैर्वापरिषेचयेत् ॥ १२२ ॥

कूटके साथ पाक किया उष्ण तैल जवाखारयुक्त तैल गोमूत्र अथवा तेजपातका उष्ण काढ़ा सींचना चाहिये ॥ १२२ ॥

सुखोष्णयाप्रदिह्याद्वापिष्टयाचाश्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गन्धया। शुष्कमूलककल्केननक्त मालत्वचापिवा ॥ १२३ ॥

अथवा पीसीहुई सुखोष्ण असगन्ध सूखी मूली का कल्क या कंजाकी छाल का लेप करना चाहिये ॥ १२३ ॥

बिभीतकस्यवाग्रन्थिकल्केनोष्णेन सेचयेत्। बलांनागबलांपथ्यांभूर्ज ग्रन्थिंबिभीतकम् ॥ १२४ ॥

अथवा ग्रन्थिविसर्प में बहेड़ेके उष्ण कल्क का सेचन करना चाहिये बरियारा गुलशक्करी हड़ भोजपत्र की ग्रंथि बहेड़ा ॥ १२४ ॥

वंशपत्राण्यग्निमन्थंकुर्य्याद्ग्रन्थि प्रलेपनम्। दन्तीचित्रकमूलत्वक्सु धार्केपयसीगुडः ॥ १२५ ॥

वांसकी पत्ती तथा गनियार इनका लेप ग्रंथिविसर्प में करना चाहिये जमालगोटे की जड़की छाल तथा चीतेके जड़की छाल सेंहुड़ा तथा मदार का दूध गुड़ ॥ १२५ ॥

भल्लातकास्थिकासीसंलेपोभिन्द्या च्छिलामपि। बहिर्मार्गस्थितंग्रन्थिं किंपुनःकफसम्भवम् ॥ १२६ ॥

भिलावां की मींगी और कसीस इनका लेप करने से शिला भी फटजाती है फिर शरीर के ऊपर स्थित कफसे उत्पन्न हुई ग्रन्थि इस से नष्ट होजायगी इस में कहनाही क्या है ॥ १२६ ॥

दीर्घकालस्थितंग्रन्थिंभिन्द्याद्दाभेष जैरिमैः। मूलकानांकुलत्थानांयूषैः सक्षारदाडिमैः ॥ १२७ ॥

बहुत काल का हुआ ग्रन्थिविसर्प इन आगे कही हुई औषधों से नष्ट होता है मूली तथा कुल्थीके जवाखार तथा अनारयुक्त यूषों के सेवनसे ॥ १२७ ॥

गोधूमान्नैर्यवान्नैर्वासशीधुमधुश र्करैः। सक्षौद्रैर्वारुणीमण्डैर्मातु लुङ्गरसान्वितैः ॥ १२८ ॥

शीधु (मद्यविशेष) शहद तथा शक्करयुक्त गेहूं तथा यवके पदार्थोंके सेवनसे शहद तथा विजौरा निम्बूके रससे युक्त वारुणी मण्डके सेवनसे ॥ १२८ ॥

त्रिफलायाःप्रयोगैश्चपिप्पलीक्षौद्रसं युतैः। मुस्तभल्लातसक्तूनांप्रयोगै र्माक्षिकस्यच ॥ १२९ ॥

पीपरि तथा शहदयुक्त त्रिफलाके प्रयोगसे नागरमोथा भिलावां तथा सत्तुवों के प्रयोगसे शहद के प्रयोगसे ॥ १२९ ॥

देवदारुगुडूच्योश्चप्रयोगैर्गिरिजस्य च। धूमैर्विरेकैःशिरसःपूर्वोक्तैर्गुल्म भेदनैः ॥ १३० ॥

देवदारु तथा गिलोय के प्रयोगसे और शिलाजीतके प्रयोगसे पहिले कहेहुये गुल्मको नष्ट करनेके लिये जो धूम शिरोविरेचन १३० ॥

अयोलवणपाषाणहेमताम्रप्रपीड नैः। आभिःक्रियाभिःसिद्धाभि र्विविधाभिर्बलीस्थिरः ॥ १३१ ॥

और लोह लवण पाषाण सुवर्ण तथा तांबे से प्रपीड़न (दबाना) इन सिद्ध क्रियाओंके द्वारा बलवान् स्थिर ॥ १३१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रन्थिःपाषाणकठिनोयदानैवोपशाम्यति। अथास्यदाहःक्षारेणशरैर्लोहेनवाहितः ॥ १३२ ॥

तथा पाषाणके समान कठोर ग्रन्थि यदि शान्त न होय तो क्षार शर अथवा लोहे के द्वारा ग्रन्थिका जलाना हित होताहै ॥ १३२॥

पाकिभिःपाचयित्वावापाटयित्वासमुद्धरेत्। मोक्षयेद्बहुशश्चास्यरक्तमुत्क्लेशमागतम् ॥ १३३ ॥

अथवा जिन औषधियों के द्वारा फुड़िया पकती है उन्हीं औषधियोंसे ग्रंथिको पकाकर फाड़के निकाले और उसमें से जो रुधिर निकलनेवालाहोउसकोवारंवारनिकाले॥१३३॥

पुनश्चापहृतेरक्तेवातश्लेष्मजिदौषधम्। धूमोविरेकःशिरसःस्वेदनंपरिमर्दनम् ॥ १३४ ॥

फिर रुधिरके निकलजाने पर वात कफनाशक औषध धूम शिरोविरेचन स्वेदन तथा मर्दन करे ॥ १३४ ॥

अपशाम्यतिदोषेचपाचनंवाप्रशस्यते। प्रक्लिन्नेदाहपाकाभ्यांभिषक्शोधनरोपणैः ॥ १३५ ॥

पुरानी तथा कठोर ग्रन्थिमें दाह तथा पकाना हित होताहै दाह तथा पकाने से जो ग्रन्थि क्लेदयुक्त होजाय तो शोधन (घावको शुद्ध करने वाली) तथा रोपण (घावको पूरने वाली) औषधियों के साथ पाक किये हुये तैलके द्वारा ग्रंथिके व्रणकी चिकित्सा वैद्यको करनी चाहिये ॥ १३५ ॥

बाह्यैश्चाभ्यन्तरश्चैवव्रणवत्समुपाचरेत्। कम्पिल्यकंविडंगानिदार्वीकारञ्जकंफलम्। पिष्टातैलंविपक्वंव्यं ग्रन्थिव्रणचिकित्सितम् ॥ १३६ ॥

बाह्य तथा आभ्यन्तर चिकित्साओं से व्रण के समान ग्रन्थि का उपचार करना चाहिये कवीला वायविडङ्ग दारुहल्दी तथा कञ्जा इनको पीसके तथा इनकेसाथ पाक कियेगये तैल के द्वारा ग्रंथिके व्रणकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १३६ ॥

द्विव्रणीयोपदिष्टेनकर्मणाचाप्युपाचरेत्। देशकालविभागज्ञोव्रणग्रन्थिविसर्पवित् ॥ १३७ ॥

इति ग्रन्थिविसर्पचिकित्सा।

देश तथा कालके विकार का जाननेवाला और व्रण तथा ग्रन्थिविसर्प (जहरवात) का जानने वाला वैद्य द्विव्रणाधिकारमें कही हुई विधिके द्वारा ग्रंथिविसर्प की चिकित्सा करे॥ १३७॥

यएवविधिरुद्दिष्टोग्रन्थीनांविनिवृत्तये। सएवगलगण्डानांकफजानांनिवृत्तये ॥ १३८ ॥

ग्रन्थियों के नाशके निमित्त जो विधि कही गई है वही विधि कफज गलगण्डोंके नाशके लिये भी जाननी चाहिये ॥ १३८ ॥

गलगण्डास्तुवातोत्थायेकफानुगतानृणाम्। घृतक्षीरकषायाणामभ्यासान्नभवन्तिते ॥ १३९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन वातज गलगण्डों में कफ का सम्बन्ध होताहै वह घी क्षीर तथा कषायरस के सेवन से नष्ट होजाते हैं ॥ १३९ ॥

यानीहोक्तानिकर्माणिविसर्पाणां निवृत्तये । एकतस्तानिसर्वाणि रक्तमोक्षणमेकतः ॥ १४० ॥

यहां विसर्पों के नाशके लिये जितनी चिकित्सा कहीगई है वह सब एक ओर है और रुधिर निकलवाना एक ओर है अर्थात् विसर्प की सम्पूर्ण चिकित्साओंमें रुधिर निकलवाना सबसे बढ़के है ॥ १४० ॥

विसर्पोनह्यसंसृष्टो रक्तपित्तेनजायते । तस्मात्साधारणंसर्वमुक्तमेत चिकित्सितम् ॥ १४१ ॥

क्योंकि रुधिर तथा पित्तके संसर्ग बिना कोई विसर्प नहीं उत्पन्न होताहै इससे संपूर्ण विसर्पों के लिये यह सामान्य चिकित्सा कही गई है ॥ १४१ ॥

विशेषोदोषवैषम्यान्नचनोक्तःसमासतः । समासव्यासनिर्दिष्टांक्रियां विद्वानुपाचरेत् ॥ १४२ ॥

यहां दोषोंके विषम होने के कारण विशेषता संक्षेपपूर्वक कहीगई है विद्वान् वैद्य संक्षेप तथा विस्तारपूर्वक कहीहुई विधिसे चिकित्सा करे ॥ १४२ ॥

भवन्ति चात्र ।

निरुक्तंनामभेदाश्चदोषादूष्याणिहेतवः । आश्रयोमार्गतश्चैवविसर्प गुरुलाघवम् ॥ १४३ ॥

इसमें यह श्लोक हैं । विसर्प की निरुक्ति (नामार्थ) नाम भेद दोष दूष्य हेतु तथा आश्रय मार्गोंके अनुसार विसर्प की गुरुता तथा लघुता ॥ १४३ ॥

लिंगान्युपद्रवायेच यल्लक्षणउपद्रवाः । साध्यत्वंनचसाध्यानांसाध नञ्चयथाक्रमम् ॥ १४४ ॥

विसर्प के लक्षण तथा उपद्रव उपद्रवों का लक्षण साध्यविसर्प असाध्यविसर्प और साध्यविसर्पोंकी क्रमपूर्वक चिकित्सा ॥ १४४ ॥

इतिपिप्रच्छवेसिद्धिमग्निवेशायधीमते । उक्तंभगवताह्येतद्विसर्पाणां चिकित्सिते ॥ १४५ ॥

इतिविसर्पचिकित्सिते एकादशोध्यायः ॥ ११ ॥

यह सम्पूर्ण विषय इस विसर्पचिकित्सित नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजी ने पूछने की इच्छा करतेहुये अग्निवेश से वर्णन किया है ॥ १४५ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें विसर्पचिकित्सितनामग्यारहवां अध्याय समाप्तहुआ ॥ ११ ॥

बारहवांअध्याय ॥

मदात्ययचिकित्सितम् ।

सुरैःसुरेशसहितैर्यासुरापरिपूजिता । सौत्रामण्यांहूयतेयाकर्मभिर्याप्रतिष्ठिता ॥ १ ॥

इसके उपरान्त मदात्ययचिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रसहित देवतागणों ने जिस मद्यका पूजन कियाथा यज्ञमें जिस मद्यका हवन किया जाता है गुणकारी कर्मों से जो मद्य प्रतिष्ठित है ॥ १ ॥

यज्ञेहियाचशक्रस्यसोमोऽतिपतितो यया। नीरजस्तमसाविष्टस्तस्माद्दुर्गात्समुद्धृतः ॥ २ ॥

इन्द्रकी यज्ञमें जिस मद्यसे घृणा करके चन्द्रमा अत्यन्त पतित हुआ और इसीलिये रजोगुण व तमोगुण से रहित महात्माओं ने क्लेशसे मद्य को निकाला ॥ २ ॥

विधिभिर्वेदविहितैर्यायजद्भिर्महात्मभिः। दृश्यास्पृश्याप्रकल्प्याचयज्ञियायज्ञसिद्धये ॥ ३ ॥

वेदमें कहीहुई विधिके अनुसार यज्ञ करते हुये महात्मालोग यज्ञ की सिद्धिके निमित्त जिस यज्ञ विहित मद्यका दर्शन स्पर्शन तथा कल्पन करते हैं ॥ ३ ॥

योनिसंस्कारनामाद्यैर्विशेषैर्बहुधाचया। भूत्वाभवत्येकविधासामान्यान्मदलक्षणात् ॥ ४ ॥

हेतु संस्कार तथा नामादिकों की विशेषता से अनेक प्रकारकीहोकरभी जो मद्य केवल मदकारक सामान्यगुणसे एक प्रकार की होती है ॥ ४ ॥

यादेवानमृतंभूत्वास्वधाभूत्वापितॄंश्चया। सोमोभूत्वाद्विजातीन्यायुङ्क्तेश्रेयोभिरुत्तमैः ॥ ५ ॥

जो मद्य अमृत होकर देवता लोगों को स्वधा होकर पितरों को और सोम होकर ब्राह्मण लोगों को अत्यन्त कल्याण से युक्त करती है ॥ ५ ॥

आश्विनंयामहत्तेजोवीर्य्यंसारस्वतञ्चया। बलमैन्द्रञ्चयासोमेसौत्रामण्याञ्चयामता ॥ ६ ॥

जो मद्य अश्विनीकुमारका महातेजहै जो मद्य सरस्वती का बल है जो मद्य इन्द्र का बल है जो मद्य यज्ञमें सोमहै ॥ ६ ॥

शोकारतिभयोद्वेगनाशिनीयामहाबला। याप्रीतिर्यारतिर्यावाग्यापुष्टिर्याचनिर्वृतिः ॥ ७ ॥

जो मद्य शोक अरति (बेचैनी) भय तथा उद्वेग (घबड़ाहट) को नष्ट करती है और बल को बढ़ाती है जो मद्य प्रीति रति वाणी पुष्टता तथा निवृत्तिरूप है ॥ ७ ॥

यासुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानुषैः। रतिःसुरेत्यभिहितातांसुरांविधिनापिबेत् ॥ ८ ॥

और जिस मद्य को देवता दैत्य गन्धर्व यक्ष राक्षस तथा मनुष्यगणोंने रति और सुरा नामों से कहाहै वह मद्य विधिपूर्व्वक पीनी चाहिये ॥ ८ ॥

शरीरकृतसंस्कारःशुचिरुत्तमगन्धवान्। प्रावृतोनिर्मलैर्वस्त्रैर्यथर्त्तूद्दानगन्धिभिः ॥ ९ ॥

शरीरका संस्कार करके पवित्र होकर उत्तम सुगन्ध निर्मल वस्त्र ऋतुके अनुसार सुगन्धित पुष्पों से युक्त ॥ ९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विचित्रविविधस्रग्वीरत्नाभरणभूषितः । देवद्विजातीन्संपूज्य स्पृष्ट्वा मङ्गलमुत्तमम् ॥ १० ॥

विचित्र माला तथा रत्नजटित आभूषणोंका धारण करके देवता तथा ब्राह्मणों का पूजन करके मांगलिक वस्तुओंका स्पर्शकरके॥१०॥

देशेयथर्त्तुकेशस्तेकुसुमप्रकरीकृते। संवाससंमतेमुख्येधूपसंमोदबोधिते ॥ ११ ॥

ऋतुके अनुसार श्रेष्ठपुष्पों से आच्छादित धूप से सुगन्धित तथा बैठने के योग्य मुख्य स्थानमें ॥ ११ ॥

सोपधानेसुसंस्तीर्णेविहितेशयनासने । उपविष्टोऽथवातिर्य्यक्स्वशरीरसुखेस्थितः ॥ १२ ॥

अच्छे प्रकारसे बिछेहुये तकियायुक्त बिछौनेपर अथवा शय्यापर तिरछा या जिस प्रकार से इच्छाहो उस प्रकार से सुखपूर्वक बैठकर ॥ १२ ॥

सौवर्णैराजतैश्चापितथामणिमयैरपि । भाजनैर्विमलैश्चान्यैःसुकृतैश्चपिबेत्सदा ॥ १३ ॥

सुवर्ण चांदी तथा रत्नोंके पात्रों से अथवा अन्य निर्म्मल सुन्दर पात्रों से निरन्तर मद्य पीनी चाहिये ॥ १३ ॥

स्त्रीभिर्यौवनमत्ताभिःशिक्षिताभिर्यथर्त्तुकैः । वस्त्राभरणमाल्यैश्चभूषिताभिर्विभूषितः ॥ १४ ॥

शौचानुरागयुक्ताभिःप्रमदाभिरितस्ततः । संबाह्यमानइष्टाभिःपिबेन्मद्यमनुत्तमम् ॥ १५ ॥

ऋतुके अनुसार वस्त्र आभूषण तथा माला पहिनेहुई पवित्र प्रेमयुक्त तथा शिक्षित मनोहर युवावस्थासे मतवाली स्त्रियों से हाथ पैरोंको मलवाताहुआ पुरुष श्रेष्ठ मद्यपीवे॥१४।१५॥

पिबेन्मद्यानुकूलैर्वाफलैर्हरितकैःशुभैः । लवणैर्गन्धपिशुनैरवदंशैर्यथर्त्तुकैः ॥ १६ ॥ भृष्टैर्मांसैर्बहुविधैर्भूजलाम्बरचारिणाम् । पौरोगवर्गविहितैर्भक्ष्यैश्चविविधात्मकैः॥१७॥

मद्य के अनुकूल फल अदरख आदि हरित वस्तु लवण तथा सुगन्ध युक्त आकाशचारी जलचारी तथा स्थलचारी जीवों के अनेक प्रकारके भूनेहुये मांस तथा अनेक प्रकारकी भक्ष्यवस्तुओं का ऋतु के अनुसार अवदंश (गजक) करके मद्य पीनी चाहिये ॥ १६ । १७ ॥

पूजयित्वासुरान्पूर्वमाशिषःप्राक्प्रयुज्यच । प्रदायसजलंमद्यमादितोवसुधातले ॥ १८ ॥

पहिले देवता लोगों को पूजन करके ब्राह्मणों के आशीर्व्वाद ग्रहण करके जल सहित कुछ मद्य पृथ्वीपर डालकर मद्य पीनी चाहिये ॥ १८ ॥

अभ्यङ्गोत्सादनस्नानवासोधूपानुलेपनैः । स्निग्धोष्णैर्भावितैश्चान्नैर्यान्तिकोमद्यमाचरेत् ॥ १९ ॥

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीरमें तैल मलवाकर उबटन लगवाकर स्नान करके वस्त्र पहिनकर धूप तथा चन्दन आदि सुगन्धित वस्तु शरीर में लगाकर स्निग्ध तथा उष्ण अन्नके साथ मात्राके अनुसार वातल मनुष्य को मद्य पीनी चाहिये॥१९॥

शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः। पैत्तिकोभावितश्चान्नैःपिबेन्मद्यंनसीदति ॥ २० ॥

अनेक प्रकारके शीतल उपचार करके मधुर स्निग्ध तथा शीतल अन्नके साथ पैत्तिक मनुष्य को मद्यपान करने से क्लेश नहीं होताहै ॥ २० ॥

उपचारैरशिशिरैर्यवगोधूमभुक्पिबेत्। श्लैष्मिकैर्धन्वजैर्मांसैर्मद्यंमरिचकैःसह ॥ २१ ॥

कफकी अधिकता में उष्ण उपचार करके यव तथा गेहूंके पदार्थ और मरुदेश के जीवों के मिर्चयुक्त मांसके साथ मद्य पीनी चाहिये ॥ २१ ॥

विधिर्वसुमतामेषभविष्यद्विभवाश्रये। यथोपपत्तिकैर्मद्यंपातव्यंमात्रयाहितम् ॥ २२ ॥

जिन मनुष्यों के पास धन है और जिनके पास धन होगा वह लोग पूर्वोक्तविधि के अनुसार प्रमाणपूर्वक हित मद्यका पानकरें२२॥

वातिकेभ्योहितंमद्यंप्रायोगौडिकपैष्टिकम्। कफपित्ताधिकेभ्यस्तुफालमाधवशार्करम् ॥ २३ ॥

प्रायः वातप्रकृतिवाले पुरुषों को गुड़ तथा पिष्टीकी मद्य हित होती है और कफप्रकृति तथा पित्तप्रकृतिवाले पुरुषों को फल शहद तथा शक्करकी मद्य हित होती है॥ २३ ॥

बहुद्रवंबहुगुणंबहुकर्मप्रदात्मकम्। गुणैर्दोषैश्चतन्मद्यमुभयञ्चोपलक्ष्यते॥ २४॥

मद्य बहुत द्रव बहुत गुणयुक्त तथा बहुत कार्य्योंको सिद्ध करनेवाली होतीहै अबमद्यके गुण तथा दोष दोनों आगे कहेजाते हैं॥२४॥

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा ॥ २५ ॥

विधिपूर्वक मात्रा तथा बलके अनुसार जो मनुष्य हितकारी अन्न के साथ प्रसन्नतापूर्वक मद्य पीता है उसको मद्य अमृतके समान गुण करती है ॥ २५ ॥

यथोपेतंपुनर्मद्यंप्रसङ्गाद्येनपीयते।रूक्षव्यायामनित्येनविषवद्यातितस्यतत् ॥ २६ ॥

और जो मनुष्य नित्य व्यायाम करता है तथा स्निग्ध वस्तु नहीं खाता है वह यदि विधिके विनाही बहुत मद्य पीता है तो उसको मद्य विषके समान अहितकारी होतीहै ॥२६॥

मद्यंहृदयमाविश्यस्वगुणैरोजसोगुणान्। दशभिर्दशसंक्षोभ्यचेतोनयतिविक्रियाम् ॥ २७ ॥

मद्य हृदयमें प्रवेश करके अपने दश गुणों से ओजके दशों गुणोंको नष्ट करके चित्त में विकारको उत्पन्न करती है ॥ २७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लघूष्णतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवायाशुगमेवच । रूक्षंविकाशिविशदंमद्यंदशगुणंस्मृतम् ॥ २८ ॥

लघुता (हलकापन) उष्णता तीक्ष्णता सूक्ष्मता खटाई व्यवायिता (शरीर में अपने गुणोंको फैलाकर परिपाक को प्राप्त होना) आशुगता (शरीर में शीघ्रही व्याप्त होना) रूक्षता विकाशिता (संधिके बंधनोंको शिथिल करके रसादि धातुओं से उत्पन्न हुये वीर्य्य को क्षीण करना) तथा विशदता (क्लेदको नष्ट करके घावों को भरना) यह दशमद्य के गुण हैं ॥ २८ ॥

गुरुशीतंमृदुश्लक्ष्णंबहलंमधुरंस्थिरम् । प्रसन्नंपिच्छिलंस्निग्धमोजोदशगुणंस्मृतम् ॥ २९ ॥

गुरुता (भारीपन) शीतलता मृदुता (कोमलता) श्लक्ष्णता (स्नेहके विना कठिन तथा सचिक्कण होना) गाढ़ा होना मधुरता स्थिरता निर्मलता पिच्छिलता (लसीलेतार से निकलना) तथा स्निग्धता यह दश गुण ओजके हैं ॥ २९ ॥

गुरुत्वंलाघवाच्छैत्यञ्चौष्ण्यादम्लस्वभावतः । माधुर्य्यंमार्दवंतैक्ष्ण्यात्प्रसादञ्चाशुभावनात् ॥ ३० ॥

मद्य अपनी लघुता से ओजकी गुरुता को उष्णतासे शीतलता को खटाई से मधुरताको तीक्ष्णता से मृदुता को आशुगतासे निर्मलता को ॥ ३० ॥

रौक्ष्यात्स्नेहंव्यवायित्वात्स्थिरत्वंश्लक्ष्णतामपि । विकासिभावात्पैच्छिल्यंवैशद्यात्सान्द्रतांतथा ॥ ३१ ॥

सौक्ष्म्यान्मद्यंनिहन्त्येवमोजसःस्वगुणैर्गुणान् । सत्त्वंतदाश्रयञ्चाशुसंक्षोभ्यजनयेन्मदम् ॥ ३२ ॥

रूक्षता से स्निग्धताको व्यवायितासे स्थिरताको विकाशितासे श्लक्ष्णताको विशदतासे पिच्छिलता को और सूक्ष्मता से गाढ़पन को नष्ट करके ओजके आश्रयरूप मनको शीघ्रही क्षुभित करके मदको उत्पन्नकरतीहै ३१।३२॥

रसधात्वादिमार्गाणांसत्त्वबुद्धीन्द्रियात्मनाम् । प्रधानस्यौजसश्चैवहृदयंस्थानमुच्यते ॥ ३३ ॥

हृदय रसादि धातुओंके मार्गोंका मन बुद्धि इन्द्रिय तथा आत्माका और प्रधान धातु ओजका स्थान कहलाता है ॥ ३३ ॥

अतिपीतेनमद्येनविहतेनौजसाचतत् । हृदयंयातिवैकृत्यंतत्रस्थायेचधातवः ॥ ३४ ॥

बहुत मद्य पीनेसे ओजधातु के नष्ट होजाने के कारण हृदय तथा हृदयमें स्थित धातु विकार को प्राप्त होती हैं ॥ ३४ ॥

ओजस्यविहतेपूर्वोहृदिचप्रतिबोधिते । मध्यमोविहतेऽल्पेचविहतेतूत्तमोमदः ॥ ३५ ॥

मद्यके जिस मदसे ओज नष्ट न होय तथा हृदय स्वस्थ बनारहे उसे पूर्वमद कहते हैं जिस मदसे ओज धातु कुछही नष्ट हो उसे मध्यम मद कहते हैं और जिस मदसे ओज धातु ति-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पट नष्ट होजाय उसे उत्तममद कहते हैं॥३५॥

नैवंविघातंजनयेन्मद्यंपैष्टिकमोजसः। विकाशरूक्षविशदागुणास्तत्रहिनोल्बणाः॥ ३६॥

पिष्टीकी मद्य ओजका अत्यन्त नाशनहीं करती है क्योंकि उसमें विकाशिता रूक्षता तथा विशदता यह गुण प्रबल नहीं होते हैं॥ ३६॥

हृदिमद्यगुणाविष्टेहर्षस्तर्षोरतिःसुखम् । विकाराश्चयथासत्त्वंचित्राराजसतामसाः॥ ३७॥ जायन्तेमोहनिद्रान्तामद्यस्यातिनिषेवणात्। समद्यविभ्रमोनाम्नामदइत्यभिधीयते॥ ३८॥

हृदयमें मद्यके गुणोंका आवेश होजानेपर हर्ष तृषा राति तथा सुख होता है और मद्य के बहुत सेवन से सत्त्व के अनुसार मोह तथा निद्राआदिक अनेक प्रकार के राजस तथा तामसविकार उत्पन्न होते हैं ऐसे मदको मद्यविभ्रम कहते हैं॥ ३७। ३८॥

पीयमानस्यमद्यस्यविज्ञातव्यास्त्रयोमदाः। प्रथमोमध्यमोऽन्त्यश्चलक्षणैस्तान्प्रवक्ष्यते॥ ३९॥

जो मद्य पीजाती है उस के प्रथम मध्यम तथा आन्तिम यह तीन प्रकार के मद जानने चाहिये अब इन तीनों प्रकारके मदों के लक्षण कहेजाते हैं॥ ३९॥

प्रहर्षणःप्रीतिकरःपानान्नगुणदर्शकः। वाद्यगीतप्रहासानांकथानाञ्चप्रवर्त्तकः॥ ४०॥

प्रथम मद हर्ष तथा प्रीतिकारी अन्नपान के गुणों को प्रकट करनेवाला वाद्य गीत हास्य तथा कथाओंमें प्रवृत्ति करानेवाला॥ ४०॥

नचबुद्धिस्मृतिहरोविषयेषुनचाक्षमः। सुखनिद्राप्रबोधश्चप्रथमःसुखदोमदः॥ ४१॥

बुद्धि तथा स्मृतिको नहीं नष्ट करनेवाला विषयों में समर्थता को नहीं नष्ट करने वाला और सुखकारी होता है इस मदमें सुखपूर्वक निद्रा आती है तथा खुलती है॥ ४१॥

मुहुःस्मृतिर्मुहुर्मोहोऽव्यक्तासज्जतिवाङ्मुहुः। युक्तायुक्तप्रलापश्चप्रपलायनमेवच॥ ४२॥

मध्यममद में वारंवार स्मृति होना वारंवार मोह होना वारंवार वाणी का रुकजाना उचित अनुचित प्रलाप करना शरीर का चलायमान होना॥ ४२॥

स्नानपानान्नसांकथ्येयोजनासविपर्य्यया। लिङ्गान्येतानिजानीयादाविष्टेमध्यमेमदे॥ ४३॥

और स्नान पान भोजन तथा वार्त्तालापमें विपरीत व्यवहार करना यह लक्षण मध्यम मदके प्रविष्ट होनेमें जानने चाहिये॥ ४३॥

मध्यमंमदमुत्क्रम्यमदमप्राप्यचोत्तमम् । नकिञ्चिन्नाशुभंकुर्य्युर्नराराजसतामसाः॥ ४४॥

राजस तथा तामस लोग उत्तममदको न पाकर मध्यममद से युक्त होकर ऐसा कौन अशुभ कार्य्यहै जिसको नहीं करते हैं॥४४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोमदंतादृशंविद्वानुन्मादमिवदारुणम्। गच्छेदध्वानमस्वन्तंबहुदोषमिवाध्वगः ॥ ४५ ॥

इससे बहुत दोषयुक्त माणनाशक मार्ग को पथिक के समान कौन विद्वान् पुरुष भयंकर उन्मादरूप इस प्रकारके दारुण मदका सेवन करे ॥ ४५ ॥

तृतीयन्तुमदंप्राप्यभग्नदार्विवनिष्क्रियः। मदमोहावृतमनाजीवन्नपिमृतैःसमः ॥ ४६ ॥

मनुष्य तृतीय अन्तिममद में प्राप्त होके टूटेहुये काष्ठके समान जड़होकर मद्यसे उत्पन्न हुये मोहके द्वारा मन के आच्छादित होजाने के कारण जीवता हुआ भी मृतक के समान होजाता है ॥ ४६ ॥

रमणीयान्सविषयान्नवेत्तिनसुहृज्जनम्। यदर्थंपीयतेमद्यंरतिंतांश्चनविन्दति ॥ ४७ ॥

मनोहर विषयों को तथा मित्रों को नहीं पहिचानता है जिस आनन्दके लिये मद्य पीजाती है उस आनन्द को नहीं पाता है ॥ ४७ ॥

कार्य्याकार्य्यंसुखंदुःखंलोकेयच्चहिताहितम्। यदवस्थोनजानातिकोऽवस्थांतांव्रजेद्‌बुधः ॥ ४८ ॥

और लोक में कार्य्य अकार्य्य सुख दुःख तथा हित अहितको नहीं जानताहै जिस अवस्था में ऐसी जड़ता होजाती है उस अवस्था में कौन बुद्धिमान् पुरुष जाना चाहेगा ॥ ४८ ॥

सदूष्यःसर्वभूतानांनिन्द्यश्चाग्राह्यएवच। व्यसनित्वादुदर्केचसदुःखंव्याधिमश्नुते ॥ ४९ ॥

इस अन्तिममदसे युक्त पुरुष सम्पूर्ण लोगोंमें दूषित निन्दनीय तथा अग्राह्य होजाता है और मद्यके व्यसनसे अन्तमें अत्यन्त दुःखदायी रोगों को प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥

प्रेत्यचेहचयच्छ्रेयःश्रेयोमोक्षश्चयत्परम्। मनःसमाधौतत्सर्वमायत्तंसर्वदेहिनाम् ॥ ५० ॥

मनुष्यों को इस लोकमें तथा परलोक में जो सुख होता है और परमसुखरूप जो मोक्ष है यह सब मन की समाधि (एकाग्रता) के आधीन है ॥ ५० ॥

मद्येनमनसश्चास्यसंक्षोभःक्रियतेमहान्। महामारुतवेगेनतटस्थस्येवशाखिनः ॥ ५१ ॥

जैसे महावायु (आंधी) के वेगसे नदी के तटपर स्थितवृक्ष अत्यन्त चलायमान होता है उसी प्रकार मद्य के द्वारा मनमें अत्यन्त क्षोभ उत्पन्न होताहै ॥ ५१ ॥

मद्यप्रसङ्गमज्ञात्वामहादोषंमहागदम्। सुखमित्यधिगच्छन्तिरजोमोहपराजिताः ॥ ५२ ॥

रजोगुण तथा तमोगुण के आधीन मनुष्य के बहुत मद्यसेवन में बहुत दोष तथा बहुतरोग होते हैं परन्तु इस बातको न जानकर उसको सुख समझते हैं ॥ ५२ ॥

मद्योपहतविज्ञानावियुक्ताःसात्त्विकै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुणैः । श्रेयोनिर्विप्रयुज्यन्तेमदान्धामदलालसाः ॥ ५३ ॥

मदान्ध तथा मद के लोभी पुरुष मद्य के द्वारा विज्ञान तथा सात्त्विक गुणों से रहित होकर सम्पूर्ण कल्याणों से हीन हो जाते हैं ॥ ५३ ॥

मद्येमोहोभयंशोकःक्रोधोमृत्युश्च संश्रितः । सोन्मादमदमूर्च्छाद्याः सापस्मारापतानकाः ॥ ५४ ॥

मोह भय शोक क्रोध मृत्यु उन्माद मद मूर्च्छा अपस्मार (मिरगी) तथा अपतानक यहसब दोष मद्यसे होते हैं ॥ ५४ ॥

यत्रैकःस्मृतिविभ्रंशस्तत्रसर्वमसाधुवत् । इत्येवमद्यदोषज्ञामद्यंगर्हन्तियत्नतः ॥ ५५ ॥

जिस वस्तु से बुद्धि नष्ट होजाती है उस में सब दोष होसक्ते हैं मद्यके दोषों के जानने वाले लोग इस प्रकार मद्य की निन्दा करते हैं ॥ ५५ ॥

सत्यमेतेमहादोषामद्यस्योक्तानसंशयः । अहितस्यातिमात्रस्यपीतस्यविधिवर्जनम् ॥ ५६ ॥

और विधिको छोड़कर अहित मद्यका अधिक सेवन करने से यह दोष ठीक ठीक होते हैं इसमें कोई सन्देहभी नहीं है ॥ ५६ ॥

किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम् । अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तं यथामृतम् ॥ ५७ ॥

किन्तु मद्य स्वभाव सेही अन्न के समान हितकारी होती है परन्तु युक्तिके विना सेवन कीगई मद्य रोगों की कारण होती है और युक्तिपूर्व्वक सेवन कीगई मद्य अमृतके समान गुणकारी होती है ॥ ५७ ॥

प्राणाःप्राणभृतामन्नंतदयुक्त्यानिहन्त्यसून् । विषंप्राणहरंतच्चयुक्तियुक्तंरसायनम् ॥ ५८ ॥

देखो सम्पूर्ण प्राणियों का अन्न प्राणरूप है परन्तु यदि उसी अन्न का युक्तिपूर्व्वक सेवन न कियाजाय तो वह प्राणोंको नष्ट करदेताहै और विष यद्यपि प्राणनाशक होता है तथापि युक्तिपूर्व्वक सेवन करने से रसायन होजाताहै ॥ ५८ ॥

हर्षमूर्जोमदंपुष्टिमारोग्यंपौरुषंपरम् । युक्त्यापीतंकरोत्याशुमद्यंमदसुखावहम् ॥ ५९ ॥

युक्तिपूर्व्वक मद्यका पान करने से हर्ष ऊर्जे मद पुष्टता आरोग्य तथा पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है और मद्य मद से सुख देनेवाली होती है ॥ ५९ ॥

रोचनंदीपनंहृद्यंस्वरवर्णप्रसादनम् । प्रीणनंबृंहणंबल्यंभयशोकश्रमापहम् ॥ ६० ॥

मद्य रुचिकारी दीपन हृदय को हित स्वर तथा वर्ण को श्रेष्ठ करनेवाली प्रीतिकारी धातु तथा बल को बढ़ानेवाली भय शोक तथा श्रमको नष्ट करनेवाली है ॥ ६० ॥

स्वापनंनष्टनिद्राणांमूकानांवाग्विबोधनम् । बोधनञ्चातिनिद्राणां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विबद्धानांविबन्धनुत् ॥ ६१ ॥

जिनकी निद्रा नष्ट होगई है उनको सुलाने वाली मूकों को वाक्यशक्ति देनेवाली जिन को बहुतनिद्रा आती है उनकी निद्राको न्यून करनेवाली विबन्ध को नष्ट करनेवाली॥६१॥

वधबन्धपरिक्लेशदुःखानाञ्चविमोहनम् । मद्योत्थानाञ्चरोगाणांमद्यमेवप्रबाधकम् ॥ ६२ ॥

और चोट तथा बन्धन आदि क्लेशसेहुये दुःख को निवृत्त करनेवाली होती है मद्य से हुये रोगोंको मद्यही शान्त करती है ॥६२॥

रतिविषयसंयोगेप्रीतिसंयोगवर्द्धनम् । अतिप्रवयसांमद्यमुत्सवामोदकारकम् ॥ ६३ ॥

मद्य के द्वारा रति तथा विषय में संयोग होता है प्रीतिकी वृद्धि होती है और अत्यन्त वृद्धपुरुषों के भी उत्साह तथा आनन्द की वृद्धि होती है ॥ ६३ ॥

पञ्चस्वर्थेषुकान्तेषुयारतिःप्रथमेमदे । यूनांवास्थविराणांवातस्य नास्त्युपमाभुवि ॥ ६४ ॥

पूर्व्वोक्त प्रथम मदके द्वारा तरुण अथवा वृद्धपुरुषों को पांचों विषयों में जैसा आनन्द प्राप्त होता है संसार में उस की उपमा नहीं है ॥ ६४ ॥

बहुदुःखकृतस्यास्यशोकेनोपहतस्य च । विश्रामोजीवलोकस्यमद्यंयुक्त्यानिषेवितम् ॥ ६५ ॥

युक्तिपूर्व्वक सेवन कीगई मद्य ही अनेक प्रकार के दुःख तथा शोकोंसे व्याकुल पुरुषों के लिये विश्रामस्थान है ॥ ६५ ॥

अन्नपानवयोव्याधिबलकालत्रिकाणिषट् । त्रीन्दोषांस्त्रिविधंसत्त्वंज्ञात्वामद्यंपिबेत्सदा ॥ ६६ ॥

तीन तीन प्रकारके अन्न पान अवस्था रोग बल तथा समय यह छः को तीनों दोषों को और तीन प्रकार के सत्त्वको जानकर सदैव मद्य पीनी चाहिये ॥ ६६ ॥

तेषांत्रिकाणामष्टानांयोजनायुक्तिरुच्यते । यथायुक्त्यापिबेन्मद्यंमद्यदोषैर्नयुज्यते ॥ ६७ ॥

इन तीन२प्रकारके अन्नादि आठोंका यथावत् व्यवहार करना ही युक्ति कहलावती है युक्तिपूर्व्वक मद्य पीने से मद्य के दोष नहीं प्राप्त होते ॥ ६७ ॥

मद्यस्यचगुणान्सर्वान्यथोक्तान्समश्नुते । धर्मार्थयोरपीडार्थैर्नरः सत्त्वगुणोच्छ्रितः ॥ ६८ ॥

और धर्म्म तथा अर्थ को नहीं नष्ट करनेवाले मद्य के सम्पूर्ण पूर्व्वोक्त गुण अधिकसत्त्ववाले पुरुष को प्राप्त होते हैं ॥ ६८ ॥

सत्त्वानितुप्रबुध्यन्तेप्रायशःप्रथमेमदे । द्वितीयेऽव्यक्ततांयान्तिमदेचोत्तममध्ययोः ॥ ६९ ॥

प्रायः प्रथममद में उत्तमप्रकृतिवाले तथा मध्यमप्रकृतिवाले पुरुषों के सत्त्व चैतन्यता को प्राप्त होते हैं और मध्यममदमें प्रकट हो जाते हैं ॥ ६९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्त्वसंबोधकंहर्षं मोहप्रकृतिदर्शक म् । हुताशःसर्व्वसत्त्वानांमद्यन्तू भयकारकम् ॥ ७० ॥

सत्त्वका वोध करनेवाले हर्ष मोह प्रकृतिके प्रकट करनेवाले सम्पूर्णसत्त्वोंको अग्नि और मद्य यही दोनों करनेवाले हैं ॥ ७० ॥

प्रधानावरमध्यानांरुक्माणांव्यक्ति साधकः। यथाग्निरेवंसत्त्वानांमद्यं प्रकृतिदर्शकम् ॥ ७१ ॥

जैसे अग्निके द्वारा उत्तम मध्यम तथा अधम सुवर्णके भेद प्रकट होजाते हैं उसीप्रकार मद्य के द्वारा उत्तम मध्यम तथा अधमसत्त्व की प्रकृति प्रकट होजाती है ॥ ७१ ॥

सुगन्धिमाल्यगन्धैर्व्वासुप्रणीतम नाकुलम् । मिष्टान्नपानविशदंस दामधुरसंकथम् ॥ ७२ ॥

सात्त्विक पुरुष मद्यका सेवन करके सुगन्धितमाला तथा सुगन्धित वस्तुओंका धारण करते हैं व्याकुल नहीं होते हैं मधुर स्वच्छ वनायाहुआ अन्नपान का सेवन करते हैं सदैवमधुरभाषण करते हैं ॥ ७२ ॥

सुखप्रपानंसुमदंहर्षप्रीतिविवर्द्धन म् । स्वन्तंसात्त्विकमापानंनचो त्तममदप्रदम् ॥ ७३ ॥

उनके हर्ष तथा प्रीति की वृद्धि होती है मदके परिणाम में उनको किसी प्रकार का क्लेश नहीं प्राप्त होता और उनको वहुत मद भी नहीं चढ़ता है किन्तु उतनाही मद रहता है जिसमें सुखप्राप्त होता है ॥ ७३ ॥

वैगुण्यंसहसायान्ति मद्यदोषैर्नसा त्त्विकाः । मद्यंहिबलवत्सत्त्वंगृह्णा तिसहसानतु ॥ ७४ ॥

सात्त्विक पुरुष मद्यके दोषों से सहसा विकारको नहीं प्राप्तहोते हैं क्योंकि वलवान् सत्त्व को मद्य सहसा ग्रहण नहीं करसक्ती है ॥७४॥

सौम्यासौम्यकथाप्रायंविशदाविश दंक्षणात् । चित्रंराजसमापन्नंप्रा येणास्वन्तकाकुलम् ॥ ७५ ॥
हर्षप्रीतिकथोपेतमतुष्टंपानभोजने। सम्मोहक्रोधनिद्रान्तमापानंताम संस्मृतम् ॥ ७६ ॥

राजसपुरुष मद्यपान करके कभी सौम्य तथा कभी उद्दंडता की वातें करते हैं कभी सावधान तथा कभी असावधानहोते हैं व्याकुल रहते हैं हर्ष तथा प्रीतियुक्त रहते हैं वहुत बोलते हैं अन्नपान से संतुष्ट नहीं होते हैं और मदके अन्तमें उनको क्लेश प्राप्त होता है तामस पुरुष मद्य पीकर मोह क्रोध तथा निद्रा से पीड़ित होते हैं ॥ ७५ । ७६ ॥

आपानेसात्त्विकान्बुद्ध्वातथाराजस तामसान्। जह्यात्सहायान्यैःपीत्वा सहदोषानुपाश्नुते ॥ ७७ ॥

मद्यपीने के स्थानमें सात्त्विक राजस तथा तामस साथियोंको जानकर जिनके साथ मद्य पीने से दोष प्राप्त हो उन का साथ छोड़ देवे ॥ ७७ ॥

सुखशीलाःसुसम्भाषाः सुमुखाःस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्मताःसताम् । कलासुवाक्यविश दाविषयप्रवणाश्रये ॥ ७८ ॥

जो पुरुष सुखदायी स्वभाववाले सुन्दर भाषण करनेवाले सुमुख सज्जनों के सम्मत कलाओं में प्रवीण निर्मल विषयों में आसक्त ॥ ७८ ॥

परस्परविधेयायेयेषामैक्यंसुहृत्तया। प्रहर्षप्रीतिमाधुर्य्यैरापानंवर्द्धयन्ति ये ॥ ७६ ॥

आपसमें एक दूसरे के वशीभूत सुहृद होने के कारण ऐक्यता करनेवाले हर्ष प्रीति तथा मधुरता से आपान (मद्य पीनेकास्थान) में उत्सव को वढ़ानेवाले ॥ ७९ ॥

उत्सवाद्दुत्सवतरंयेषामन्योन्यदर्श नम् । तेसहायाःसुखाःपानेतैःपिब न्सहमोदते ॥ ८० ॥

और आपसमें एक दूसरे को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होनेवाले हों वही पुरुष मद्यपीने में सुखदायक साथी होसक्ते हैं और उन्हीं के साथ मद्यपीनेसे आनन्द प्राप्तहोताहै ॥ ८० ॥

रूपगन्धरसस्पर्शैःशब्दैश्चापिमनो रमैः । पिबन्तिसुसहायायेतेवैसुकृ तिभिःसमाः ॥ ८१ ॥

जो मनुष्य सुखदायी साथियों के साथ मनोहर रूप रस गंध स्पर्श तथा शब्द का अनुभव करके मद्यपान करते हैं वह पुण्यात्मा पुरुष हैं ॥ ८१ ॥

पञ्चभिर्विषयैरिष्टैरुपेतैर्मनसःप्रियैः।

देशेकालेपिबेन्मद्यंप्रहृष्टेनान्तरात्म ना ॥ ८२ ॥

मनोहर पांचों विषयों का अनुभव कर करके उचित देश तथा उचित समय में प्रसन्नचित्त होकर मद्यपीनी चाहिये ॥ ८२ ॥

स्थिरसत्त्वशरीरायेपुराणामद्यपान्व याः । बहुमद्योचितायेचमाद्यन्ति सहसानते ॥ ८३ ॥

जिन पुरुषों का मन तथा शरीर स्थिर होताहै प्राचीन मद्यपों के वंशमें जो उत्पन्न होते हैं और जिनको बहुत मद्यपीने का अभ्यास होता है वह पुरुष मद्यपीने से एकाएकी मतवाले नहीं होते हैं ॥ ८३ ॥

प्राङ्मद्यात्क्षुत्पिपासार्त्तादुर्व्वलावात पैत्तिकाः । रूक्षाल्पप्रमिताहाराविं स्तब्धाःसत्त्वदुर्बलाः ॥ ८४ ॥

जो मनुष्य क्षुधा तथा तृषा से व्याकुल होकर भोजनके पहिले ही मद्य पीलेते हैं जो पुरुष दुर्बल वातप्रकृति पित्तप्रकृतिरूक्ष स्वल्प भोजन करनेवाले दुर्बलचित्तवाले स्तब्ध ॥८४॥

क्रोधिनोऽनुचिताःक्षीणाःपरिश्रा न्तामदक्षताः। स्वल्पेनापिमदंशी घ्रंयान्तिमद्येनमानवाः ॥ ८५ ॥

क्रोधी मद्यपीने के अभ्यास से रहित क्षीण थकेहुये और मदक्षत रोगवाले होते हैं उन को थोड़ी ही मद्य पीने से शीघ्रही बहुत मद चढ़ता है ॥ ८५ ॥

ऊर्द्धमदात्ययस्यातःसम्भवंस्वस्वल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षणम् । अग्निवेश ! चिकित्साञ्चप्र वक्ष्यामियथाक्रमम् ॥ ८६ ॥

हे अग्निवेश ! इस के उपरान्त मदात्यय रोगका निदान लक्षण तथा यत्नक्रमपूर्व्वक हम कहते हैं ॥ ८६ ॥

स्त्रीशोकभयभाराध्वकर्मभिर्योऽति कर्षितः । रूक्षाल्पप्रमिताशीवायः पिबत्यतिमात्रया ॥ ८७ ॥ रूक्षंप रिणतंमद्यंनिशिनिद्रांविहत्यच । करोतितस्यतच्छीघ्रंवातप्रायंमदा त्ययम् ॥ ८८ ॥

स्त्रीसंसर्ग शोक भय भार(बोझा)ढोना तथा बहुत चलना इन कार्य्यों से अत्यन्त कृश रूक्ष स्वल्प भोजन करनेवाले एकही प्रकारकी वस्तु खानेवाले और रात्रि में जागनेवाले जो पुरुष रूक्ष तथा पुरानी मद्य बहुत पीते हैं उनको वह मद्य वातज मदात्यय रोग को शीघ्रही उत्पन्न करती है॥ ८७।८८ ॥

हिक्काश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्र जागरैः । विद्याद्बहुप्रलापस्यवात प्रायंमदात्ययम् ॥ ८९ ॥

हिचकी खांसी शिरका कांपना पसुलियों में शूल निद्राका नाश तथा बहुत बकना यह वातज मदात्यय के लक्षण हैं ॥ ८९ ॥

तीक्ष्णोष्णंमद्यमम्लंवायोऽतिमात्रं निषेवते । अम्लोष्णतीक्ष्णभोजी चक्रोधनोऽग्न्यातपप्रियः ॥ ९० ॥

जो पुरुष तीक्ष्ण उष्ण अथवा खट्टी मद्यका बहुत सेवन करते हैं खट्टी उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तु खाते हैं बहुत क्रोधी होते हैं और अग्नि तथा धूपका बहुत सेवन करते हैं ॥ ९० ॥

तस्योपजायतेपित्ताद्विशेषेणमदा त्ययः । सतुवातोल्वणस्याशुप्रश मंयातिहन्तिवा ॥ ९१ ॥

उनके विशेष करके पित्तजमदात्यय रोग होता है यह पित्तजमदात्यय रोग यदि वातप्रकृतिवाले पुरुष के होता है तो शीघ्रही शान्त होजाता है अथवा शीघ्रही प्राणों को नष्ट कर देताहै ॥ ९१ ॥

तृष्णादाहज्वरस्वेदमूर्च्छातीसार विभ्रमैः । विद्याद्धरितवर्णस्यपि त्तप्रायंमदात्ययम् ॥ ९२ ॥

तृषा दाह ज्वर स्वेद मूर्च्छा अतीसार भ्रम तथा शरीर का वर्ण हरा हो जाना यह पित्तजमदात्यय के लक्षण हैं ॥ ९२ ॥

तरुणंमधुरप्रायंगौडंपैष्टिकमेववा । मधुरस्निग्धगुर्वाशीयः पिबत्यति मात्रया ॥ ९३ ॥

जो पुरुष मधुर स्निग्ध तथा भारी वस्तु खाताहै गुड़ अथवा पिट्ठीकी मधुर तथा नवीनमद्य मात्रासे अधिक पीता है ॥ ९३ ॥

अव्यायामदिवास्वप्रशय्यासनसु खेरतः । मदात्ययंकफप्रायंसशी घ्रमधिगच्छति ॥ ९४ ॥

व्यायाम नहीं करताहै दिनमें सोताहै और प्रायः लेटा तथा बैठा रहताहै उसके कफजमदात्यय रोग शीघ्रही होजाता है ॥ ९४ ॥

छर्द्यरोचकहृल्लासतन्द्रास्तैमित्यगौ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रवैः। विद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रा यंमदात्ययम् ॥ ९५ ॥

छर्दि अरुचि मतली तन्द्रा शरीर का गीले कपड़े से ढका हुआ सा मालूम होना शरीर का भारीपन और शीतलगना यह कफज मदात्ययके लक्षण हैं ॥ ९५ ॥

विषस्ययेगुणादृष्टाःसन्निपातप्रको पणाः। तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतु बलवत्तराः ॥ ९६ ॥

विषमें सन्निपात के कुपित करने वाले जो गुण होते हैं वही गुण मद्यमें भी होते हैं परंतु भेद यह है कि मद्यकी अपेक्षा वह गुण विष में अधिक बलवान् होते हैं ॥ ९६ ॥

हन्त्याशुहिविषंकिञ्चित्किञ्चिद्रोगा यकल्पते। यथाविषंतथैवान्त्योज्ञे योमद्यकृतोमदः ॥ ९७ ॥

कोई २ विष शीघ्रही प्राणोंको नष्ट करता है और कोई २ विष रोगों को उत्पन्न करता है मद्यके अन्तिम मदको विषके समानही जानना चाहिये ॥ ९७ ॥

तस्मात्रिदोषजंलिङ्गंसर्वत्रापिमदा त्यये। दृश्यतेरूपवैशेष्यात्पृथक्त्व ञ्चास्यलक्ष्यते ॥ ९८ ॥

इसीसे सम्पूर्ण मदात्ययों में तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं परन्तु लक्षणोंकी विषमतासे मदात्ययोंमें भेद लक्षित होताहै ॥ ९८ ॥

शरीरदुःखंबलवत्सम्मोहोहृदयव्य था। अरुचिःप्रततातृष्णाज्वरः शीतोष्णलक्षणः ॥ ९९ ॥

शरीरमें बहुत पीड़ा मोह हृदय में व्यथा अरुचि बहुत तृषा शीत तथा उष्ण ज्वर ९९॥

शिरःपार्श्वास्थिसंधीनांविद्युत्तुल्या चवेदना। जायतेऽतिबलाजृम्भा स्फुरणंवेपनंश्रमः ॥ १०० ॥

शिर पसुली तथा हड्डियों की संधियों में बिजलीकीसी बहुत पीड़ा बहुत जँभाई अङ्गों का फड़कना कम्प श्रम ॥ १०० ॥

उरोविबन्धःकासश्चहिक्काश्वासः प्र जागरः। शरीरकम्पःकर्णाक्षिमुख रोगस्त्रिकग्रहः ॥ १०१ ॥

वक्षस्थल का जकड़ना खांसी हिचकी श्वास निद्रा का नाश शरीर का कांपना कर्ण रोग नेत्ररोग मुखरोग रीढ़की हड्डियों का जकड़ना ॥ १०१ ॥

छर्द्यतीसारमुत्क्लेशोवातपित्तकफा त्मकः। भ्रमःप्रलापोरूपाणामस ताञ्चैवदर्शनम् ॥ १०२ ॥

छर्दि अतीसार वायु पित्त तथा कफ का उभड़ना भ्रम प्रलाप अनुपस्थित रूपों का दिखाई देना ॥ १०२ ॥

तृणभस्मलतापर्णपांशुभिश्चावपू रणम्। प्रधर्षणंविहङ्गैश्चभ्रान्तचे ताःसमन्यते ॥ १०३ ॥

और चित्तके भ्रमसे तृण भस्म लतापत्ते तथा धूलिके द्वारा अपनेको ढकाहुआ सामानना तथा पक्षियों से अपने को घेरागया सा मानना ॥ १०३ ॥

व्याकुलानामशस्तानांस्वप्नानांद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्शनानिच। मदात्ययस्यरूपाणि सर्वाण्येतानिलक्षयेत्॥ १०४॥

और व्याकुलता कारक तथा अशुभ स्वप्न देखना यहसब मदात्ययके लक्षणहैं१०४॥

सर्वंमदात्ययंविद्यात्त्रिदोषमधिकन्तु यत्। दोषंमदात्ययेपश्येत्तस्यादौप्रतिकारयेत्॥ १०५॥

सम्पूर्ण मदात्यय त्रिदोषज होते हैं किन्तु जिस दोषकी अधिकता देखे उसीकी पहिले चिकित्सा करनी चाहिये॥ १०५॥

कफस्थानानुपूर्व्याचक्रियाकार्य्या मदात्यये। पित्तमारुतपर्य्यंतःप्रायेणहिमदात्ययः॥ १०६॥

मदात्यय रोग में पहिले कफस्थानकी तदनन्तर पित्तस्थान तथा वातस्थानकी चिकित्सा करनी चाहिये॥ १०६॥

मिथ्यातिहीनपीतेनयोव्याधिरुपजायते। समपीतेनतेनैवसमद्येनोपशाम्यति॥ १०७॥

अनुचित रीति से मद्य पीने के कारण अधिक मद्यके पीने के कारण अथवा न्यून मद्य पीने के कारण जो मदात्यय रोग उत्पन्न होता है वह मात्राके अनुसार मद्य पीनेसे शान्त होजाता है॥ १०७॥

जीर्णाममद्यदोषायमद्यमेवप्रदापयेत्। प्रकांक्षालाघवेजातेयद्यदस्मै हितंभवेत्॥ १०८॥ सौवर्चलानुसंविद्धंशीतंसविडसैन्धवम्। मातुलुङ्गार्द्रकोपेतंजलयुक्तंप्रमाणवित्॥ १०६॥

जिसका मद्यज आमदोष पचगयाहो उसको आकांक्षा की लघुता होने पर जौन जौनसी मद्य हितहो वह मद्य शीतल सोचर नोन विड़नोन सैंधवनोन विजौरा निंबू तथा अदरखसे युक्त करके जलके साथ प्रमाणके अनुसार पिलानी चाहिये॥ १०८। १०९॥

तीक्ष्णोष्णेनातिमात्रेणपीतेनाम्लविदाहिना। मद्येनान्नरसक्लेदोविदग्धःक्षारतांगतः॥ ११०॥

तीक्ष्ण उष्ण अम्ल तथा विदाही मद्य बहुत पीने से अन्नके रसका क्लेद विदग्ध तथा क्षाररूप होकर॥ ११०॥

अन्तर्दाहंज्वरंतृष्णांप्रमोहंविभ्रमंमदम्। जनयत्याशुतच्छान्त्यैमद्यमेवप्रदापयेत्॥ १११॥

अन्तर्दाह, ज्वर तृषा मोह भ्रम तथा मद को शीघ्रही उत्पन्न करता है इसकी शान्तिके लिये मद्यही पिलानी चाहिये॥ १११॥

क्षारोहियातिमाधुर्य्यंशीघ्रमम्लोपसंस्कृतः। श्रेष्ठमम्लेषुमद्यञ्चयैर्गुणैस्तान्परंशृणु॥ ११२॥

क्योंकि क्षार वस्तु खट्टी वस्तुके साथ मिलकर शीघ्रही मधुर होजाती है जिन गुणों से मद्य सम्पूर्ण खट्टी वस्तुवों में श्रेष्ठ समझी जाती है वह कहे जाते हैं तुम सुनो॥ ११२॥

मद्यस्याम्लस्वभावस्यचत्वारोऽनुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साऽस्मृताः । मधुरश्चकषायश्चति क्तःकटुकएवच ॥ ११३ ॥

मद्य स्वभावसेही खट्टी होती है उसमें मधुर कषाय तिक्त तथा कटु यह चार अनुरस (सूक्ष्म रस) होते हैं ॥ ११३ ॥

गुणाश्चदशपूर्वोक्तास्तैश्चतुर्दशभिर्गुणैः । सर्वेषांमद्यमम्लानामुपर्य्युपरितिष्ठति ॥ ११४ ॥

यह चारों अनुरस और पूर्वोक्त दशगुण इन चौदहों गुणों के द्वारा मद्य सम्पूर्ण खट्टी वस्तुवों में श्रेष्ठ होती है ॥ ११४ ॥

मद्योत्क्लिष्टेनदोषेणरुद्धःस्रोतःसुमारुतः । करोतिवेदनांतीव्रांशिरस्यस्थिपुसन्धिषु ॥ ११५ ॥

मद्यसे उभड़े हुये दोषके द्वारा स्रोतों में रुकीहुई वायु शिर हड्डी तथा संधियोंमें तीव्र पीड़ाको उत्पन्न करती है ॥ ११५ ॥

दोषविष्यन्दनार्थहितस्मैमद्यंविशेषतः । व्यवायितीक्ष्णोष्णतयादेयमम्लेषुसत्स्वपि ॥ ११६ ॥

ऐसी अवस्था में दोषको चलायमान करने के लिये अन्य खट्टी वस्तुवों के होने पर भी व्यवायी (शरीर में अपने गुणों को व्यास करके परिपाक को प्राप्त होनेवाली) तीक्ष्ण तथा उष्ण होनेके कारण विशेष करके मद्यही देनी चाहिये ॥ ११६ ॥

स्रोतोविबन्धमुन्मध्यमारुतस्यानुलोमनम् । रोचनंदीपनञ्चाग्नेरभ्यासात्सात्म्यमेवच ॥ ११७ ॥

मद्य स्रोतोंके विबन्ध को दूरकरके वायुको मार्ग के अनुसार करदेती है रुचिको उत्पन्न करतीहै अग्निको दीप्त करतीहै और अभ्यास से हितकारी होती है ॥ ११७ ॥

रसस्रोतःस्वरुद्धेषुमारुतेचानुलोमिते । निवर्त्तन्तेविकाराश्चशाम्यन्त्यस्यमदोदयाः ॥ ११८ ॥

रस के स्रोतों के शुद्ध होजाने से वायु के मार्गके अनुसार होजाने पर मदसे हुये संपूर्ण रोग निवृत्त होजाते हैं और मदात्यय रोग शान्त होजाते हैं ॥ ११८ ॥

बीजपूरकवृक्षाम्लकोलदाडिमसंयुतम् । यमानीहपुषाजाजीशृङ्गबेरावचूर्णितम् ॥ ११९ ॥

बिजौरा निंबू तिंतिड़ीक बेर दाड़िम अजवाइन हाऊबेर जीरा तथा सोंठि इनके चूर्णसे ॥ ११९ ॥

सस्नेहैःसक्तुभिर्युक्तमद्धर्दशैशिरोत्थितम् । दद्यात्सलवणंमद्यंपैष्टिकंवातशान्तये ॥ १२० ॥

तथा घृतादि स्नेह से युक्त सत्तुवोंके साथ पिट्ठी की लवणयुक्त पुरानी मद्य वायु को शान्त करने के लिये देनी चाहिये ॥ १२० ॥

दृष्ट्वावातोल्बणंलिङ्गंरसैश्चैनमुपाचरेत् । लावतित्तिरदक्षाणांस्निग्धाम्लैःशिखिनामपि ॥ १२१ ॥

पक्षिणांमृगमत्स्यानामानूपानाञ्चसंस्कृतैः । भूशयप्रसहानाञ्चरसैःशाल्यादनंनच ॥ १२२ ॥ स्निग्धो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्णलवणाम्लैश्चवेशवारैर्मुखप्रियैः। चित्रैर्गोधूमिकैश्चान्नैर्वारुणीमण्ड संयुतैः ॥ १२३ ॥ पिशितार्द्रकग र्भाभिःस्निग्धाभिर्धूपवर्त्तिभिः । मा षपूपलिकाभिश्चवातिकंसमुपाचरे त्। १२४ ॥

मदात्ययरोग में वायु की अधिकता देख-कर लवा तीतुर मुर्गा मोर भूमिशय (गोह मूस आदि) प्रसह (काक चील्ह आदि) जीवों के अनूपदेश के पक्षी तथा पशुओं के और मछलियों के मांसके स्निग्ध तथा उष्ण खट्टे रसोंकेद्वारा स्निग्ध उष्ण नमकीन तथा खट्टे स्वादिष्ठ वेसवारों (मशालों) केद्वारा शालिधानों के भातकेद्वारा वारुणी मद्यके म-ण्डसे युक्त गेहूंके अनेक प्रकारके पदार्थों के द्वारा मांस तथा अदरख से युक्त स्निग्ध धूप वर्त्तियोंकेद्वारा और उर्दकी पूपलिकाओं (भ-क्ष्यविशेष) के द्वारा वायु को शान्त करना चाहिये ॥ १२१ । १२२ । १२३ । १२४ ॥

नातिस्निग्धंनचाम्लेनयुक्तंसमरिचा र्द्रकम् । मध्येप्राशुदितंमांसंदाडिम स्वरसेनवा ॥ १२५ ॥

न अत्यन्त स्निग्ध न अम्लसेयुक्त मिर्च समेत अदरख से मध्यमें युक्त पूर्वोक्त मांस को अनारके स्वरस के द्वारा देवे ॥ १२५ ॥

पृथक्त्रिजातकोपेतसधान्यमरिचा र्द्रकम् । रसप्रलेपिसंपूपैःसुखोष्णैः सम्प्रदापयेत् ॥ १२६ ॥

वातज मदात्यय में धनियां अदरख तथा मिर्च इन तीनोंका अलग २ रस मलेप करके कुछ उष्ण अपूप (भक्ष्यविशेष) खाने को देने चाहिये ॥ १२६ ॥

भक्तेनवारुणीमण्डंदद्यात्पातुंपिपा सवे । दाडिमस्यरसंवाथजलंवापा ञ्चमूलिकम् ॥ १२७ ॥

वातज मदात्यय रोगमें यदि भोजन के उ-परान्त तृषा लगे तो वारुणी मदिरा का म-ण्ड (मदिराके ऊपरका थिराया हुआ जल) अनारका रस पंचमूलका क्राथ ॥ १२७ ॥

धान्यनागरस्तोयञ्चदधिमण्डमथापि वा । अम्लकाञ्जिकमण्डंवाशुक्तोद कमथापिवा ॥ १२८ ॥

धनियां तथा सोंठिके साथ पाक कियागया जल दहीका तोड़ कांजीके ऊपर का थिराया हुआ जल अथवा सिरके के ऊपरका थिरा-या हुआ जल पीनेको देना चाहिये ॥ १२८ ॥

कर्मणानेनसिद्धेनविकारउपशाम्य ति । मात्राकालप्रयुक्तेनबलंवर्णश्च वर्द्धते ॥ १२९ ॥

मात्रा तथा समयके अनुसार यह सिद्ध चिकित्सा करनेसे वातज मदात्यय रोग शांत होता है और बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है ॥ १२९ ॥

रागषाडवसंयोगैर्विविधैर्भक्तरोचनैः। पिशितैर्बहुपिष्टान्नैर्यवगोधूमशालि भिः ॥ १३० ॥

खाने में रुचि बढ़ानेवाले रागषाड़व युक्त अनेक प्रकारके मांस पिट्ठीके वनेहुये पदार्थ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और यव गेहूं तथा शालिधानके बनेहुये पदार्थ इनका भोजन ॥ १३० ॥

अभ्यङ्गोत्सादनैःस्नानैरुष्णैःप्रावरणैर्घनैः । घनैरगुरुपङ्केश्वधूपैश्चागरुजैर्घनैः ॥ १३१ ॥

तैलमर्दन उबटन लगाना स्नान करना उष्ण तथा भारीवस्त्र ओढ़ना अगरका गाढ़ा लेप लगाना अगरकी धूप ॥ १३१ ॥

नारीणांयौवनोष्णानांनिर्दयैरवगूहनैः । श्रोण्यूरुकुचभारैश्चसंरोधोष्णसुखावहैः ॥ १३२ ॥

बड़े नितम्ब जंघा तथा स्तनवाली युवती स्त्रियों का सुखदायक निर्दय उष्णालिङ्गन करना ॥ १३२ ॥

शयनाच्छादनैरुष्णैरूक्षैश्चान्तर्गृहैः सुखैः । मारुतप्रबलःशीघ्रंप्रशाम्यतिमदात्ययः ॥ १३३ ॥

उष्ण शय्या उष्ण ओढ़ना और सुखदायक उष्ण कोठरियों में रहना इन उपायोंकेद्वारा शीघ्रही वातज मदात्यय नष्ट होजाता है ॥ १३३ ॥

मद्यंखर्जूरमृद्वीकापरूषकरसैर्युतम् । सदाडिमरसंशीतंसक्तुभिःस्ववचूर्णितम् ॥ १३४ ॥ सशर्करंशार्करंवामाध्वीकमथवापरम् । दद्याद्धृदकंकालेपातुंपित्तमदात्यये ॥१३५॥

खजूर दाख तथा फालसा अनारके रससे युक्त और सत्तू तथा शर्करासे युक्त शक्करकी मद्य माध्वीक मद्य अथवा अन्य कोई शीतल मद्य बहुतसे जलमें मिलाकर पित्तज मदात्ययमें पीने को देनी चाहिये ॥१३४।१३५॥

शशान्कपिञ्जलानेणाल्लावानासितपुच्छकान् । मधुराम्लान्प्रयुञ्जीत भोजनेशालिषष्टिकान् ॥ १३६ ॥

खरगोश कपिञ्जल पक्षी एण (मृगविशेष) लवा तथा कालपुच्छ (मृगविशेष) इनके मांसका मधुर तथा अम्लरस शालिधान तथा साँठीके चावलोंका भात ॥१३६॥

पटोलयूषमिश्रंवाच्छागलंकल्पयेद्रसम् । सतीनमुद्गमिश्रंवादाडिमामलकान्वितम् ॥ १३७ ॥

अथवा परवल के यूष या किराव तथा मूंग या अनार तथा आमले से युक्त बकरेके मांस का रस ॥ १३७ ॥

द्राक्षामलकखर्जूरपरूषकरसेनवा । कल्पयेत्तर्पणान्यूषान्रसांश्चविविधात्मकान् ॥ १३८ ॥

अथवा दाख आमला खजूर तथा फालसों के रसकेद्वारा बनेहुये तर्पण (तृप्तिकारी रस) यूप तथा अनेक प्रकारके रस पित्तज मदात्ययमें भोजनके निमित्त देवे ॥ १३८ ॥

आमाशयस्थमुत्क्लिष्टंकफपित्तमदात्यये । विज्ञायबहुदोषस्यदह्यमानस्यतृष्यते ॥ १३९ ॥

कफ पित्तज मदात्ययमें बहुत दोषवाले दाह तथा तृषायुक्त पुरुषके आमाशयमें स्थित दोष को उभड़ा जानकर ॥ १३९ ॥

मद्यंद्राक्षारसंतोयंदत्त्वातर्पणमेववा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निःशेषंवामयेच्छीघ्रमेवंरोगाद्विमुच्यते ॥ १४० ॥

मद्य दाखका रस जल अथवा तर्पण पिलाकर निश्शेष (बिल्कुल) वमन करावे ऐसा करनेसे शीघ्रही रोग शान्त होजाताहै १४०॥

कालेपुनस्तर्पणाढयंक्रमंकुर्य्यात्प्रकांक्षिते। तेनाग्निर्दीप्यते तस्यदोषशेषान्नपाचनः ॥ १४१ ॥

फिर क्षुधाके समयमें क्षुधा लगनेपर तर्पण युक्त भोजन देवे इससे अग्निके दीप्त होने के कारण वाकी दोष तथा अन्नका परिपाक होताहै ॥ १४१ ॥

कासेसरक्तनिष्ठीवेपार्श्वस्तनरुजोस्तथा। तृष्यतेसविदाहेचसोत्क्लेशेहृदयोरसि ॥ १४२ ॥

खाँसी रुधिर थूकना पसुली तथा स्तनों में पीड़ा तृषा विदाह और हृदय तथा वक्षस्थल में दोषोंका उभड़ना इन रोगों से युक्त मदात्ययमें ॥ १४२ ॥

गुडूचीभद्रमुस्तानांपटोलस्याथवाभिषक्। रसंसनागरंदद्यात्तित्तिरिप्रतिभोजनम् ॥ १४३ ॥

गिलोय नागरमोथा अथवा परवलके काढ़े में सोंठि मिलाकर वैद्य पीने को देवे और तीतुर के मांसके साथ भोजन करावे॥१४३॥

तृष्यतेचातिबलवद्वातपित्तसमुद्धते। दद्याद्द्राक्षारसंपातुंशीतंदोषानुलोमनम् ॥ १४४ ॥

मदात्यय रोग में वायु तथा पित्तके बहुत प्रबल होनेपर तृषायुक्त पुरुष को दोषों को मार्ग के अनुसार करनेके लिये दाखका शीतल काढ़ा पीनेको देवे ॥ १४४ ॥

जीर्णेसमधुराम्लेनछागमांसरसेनतम्। भोजनंभोजयेन्मद्यस्यानुतर्षञ्चपाययेत् ॥ १४५ ॥ अनुतर्षस्यमात्रासाययानोहन्यतेमनः। तृष्यतेमद्यमल्पाल्पंप्रदेयंस्याद्बहूदकम् ॥ १४६ ॥

और काढ़ेके पचजाने पर वकरेके मांस के मधुर तथा खट्टे रसके साथ भोजन करावे और भोजन के उपरान्त मद्य पिलावे परन्तु वह मद्य इतनी होनी चाहिये जिस से मनमें विकार न उत्पन्नहोवे इसके उपरान्त फिर भी प्यास लगनेपर वहुत से जल में थोड़ी थोड़ी मद्य मिलाकर पीनेको देवे ॥ १४५।१४६ ॥

तृष्णायेनचसंशाम्येन्मदंयेनचनाप्नुयात्। परूषकाणांपीलूनांरसंशीतमथापिवा ॥ १४७ ॥

परन्तु वह मद्य इतनीही हो जिस से तृषा शान्त होजाय और मदन उत्पन्नहो अथवा तृषाको शान्त करनेके लिये फालसे तथा पीलूका शीतल काढ़ा ॥ १४७ ॥

पर्णिनीनांचतसृणांपिवेद्वाशिशिरंजलम्। मुस्तदाडिमलाजानांतृष्णाघ्नंवापिवेद्रसम् ॥ १४८ ॥

या पृष्णिपर्णी शालिपर्णी· मुद्गपर्णी तथा माषपर्णी का शीतल काढ़ा या तृषाका नाश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेवाला नागरमोथा अनार तथा खीलोंका शीतल काढ़ा पीनेको देवे ॥ १४८ ॥

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रीकाचुक्रिकारसः । पञ्चाम्लकोमुखालेपःसद्यस्तृष्णांनियच्छति ॥ १४९ ॥

बेर अनार तिंतिड़ीक चूका तथा खट्टीपालक इन पाँचों खट्टी वस्तुओंका मुख के भीतर लेप करने से शीघ्रही तृषा का नाश होताहै ॥ १४९ ॥

शीतलान्यन्नपानानिशीतशय्यासनानिच । शीतवातजलस्पर्शःशीतान्युपवनानिच ॥ १५० ॥

शीतल अन्नपान शीतल शय्या शीतल आसन शीतल वायु तथा जलका स्पर्श शीतल उपवन ॥ १५० ॥

क्षौमपद्मोत्पलानाञ्चमणीनांमौक्तिकस्यच । चन्दनोदकशीतानांस्पर्शश्चन्द्रांशुशीतलाः ॥ १५१ ॥

चंदन के जल से शीतल रेशमी वस्त्र कमल उत्पल मणि तथा मोती इन का स्पर्श चंद्रमा की शीतल किरणोंका स्पर्श ॥ १५१ ॥

हेमराजतकांस्यानांपात्राणांशीतवारिभिः । पूर्णानांहिमपूर्णानांदृतानांपवनाहताः ॥ १५२ ॥ संस्पर्शाश्चन्दनार्द्राणांनारीणाञ्चसमारुताः । चन्दनानाञ्चमुख्यानांशस्ताःपित्तमदात्यये ॥ १५३ ॥

सुवर्ण चांदी तथा कांसे के शीतल जलसे भरेहुये पात्रों का स्पर्श हिमसे भरीहुई दृत (मशक) का स्पर्श जिस स्थान में वायु आतीहो उस स्थानमें चन्दन लगाएहुई स्त्रियों का स्पर्श और श्रेष्ठ चन्दनका लेप यह सब पित्तज मदात्यय में हित हैं ॥ १५२।१५३ ॥

कुमुदोत्पलपत्राणांसिक्तानांचन्दनाम्बुना । हिताःस्पर्शामनोज्ञानांदाहेमद्यसमुत्थिते ॥ १५४ ॥

मद्यसे हुये दाह में चन्दनके जल के छिड़केहुये मनोहर कोकाबेली तथा उत्पलके पत्तों का स्पर्श हित होता है ॥ १५४ ॥

कथाश्चविविधाःशस्ताःशब्दाश्चशिखिनांशिवाः । तोयदानाञ्चशब्दाहिशमयन्तिमदात्ययम् ॥ १५५ ॥

अनेक प्रकार की श्रेष्ठ कथा मोरों के शुभ शब्द और मेघों के शब्द मदात्यय को शान्त करते हैं ॥ १५५ ॥

जलयन्त्राभिवर्षीणिवातयन्त्रगृहाणिच । कल्पनीयानिभिषजादाहे धारागृहाणिच ॥ १५६ ॥

बुद्धिमान् वैद्य दाह में फुहारोंसे युक्त तथा यन्त्रों के द्वारा जिनमें वायु आतीहो ऐसे धारागृह (जिनमें यन्त्रोंके द्वारा जल गिरताहो ऐसेगृह) बनवावे ॥ १५६ ॥

फलिनीसेव्यलोध्राम्बुहेमपत्रंकुटन्नटम् । कालीयकरसोपेतंदाहेशस्तंप्रलेपनम् ॥ १५७ ॥

प्रियंगु खस लोध सुगंधवाला हेम पत्र तथा केवटीमोथा इन सबको पीत चन्दनके रसमें

CC-0. ...ection. Digitized by eGangotri

मिलाकर लेप करना दाह में हित होता है ॥ १५७ ॥

बदरीपल्लवोत्थाश्चतथैवारिष्टकोद्भवाः । फेनिलायाश्चयःफेनस्तैर्दाहे लेपनंशुभम् ॥ १५८ ॥

बेरकीपत्ती अथवा रीठोंको जल में भिगोकर मलै उस से निकलेहुये फेनेका लेप दाह में हित होता है ॥ १५८ ॥

सुरासमण्डादध्यम्लंमातुलुङ्गरसोमधु । सेकप्रदेहेशस्यन्तेदाहघ्नाःसाम्लकाञ्जिकाः ॥ १५९ ॥

सुरा सुराका मण्ड (ऊपरका थिरायाहुआ जल) खट्टा दही बिजौरा निंबूका रस शहद तथा खट्टी कांजी इनके द्वारा लेप करने से तथा परिषेक (सींचना) करने से दाह शान्त होता है ॥ १५९ ॥

परिषेकावगाहेषुव्यञ्जनानाञ्चसेवने । शस्यतेशिशिरंतोयंदाहतृष्णाप्रशान्तये ॥ १६० ॥

दाह तथा तृषा को शान्त करने के लिये परिषेक अवगाह(मँझाना)तथा व्यञ्जनों के सेवन में शीतलजल श्रेष्ठ होताहै ॥ १६० ॥

मात्राकालप्रयुक्तेनकर्मणानेनशाम्यति । धीमतोवैद्यवश्यस्यशीघ्रंपित्तमदात्ययम् ॥ १६१ ॥

समय तथा मात्राके अनुसार यह पूर्वोक्त चिकित्सा करने से वैद्यके वशीभूत बुद्धिमान् रोगी का पित्तज मदात्यय शीघ्रही शान्त होताहै ॥ १६१ ॥

उल्लेखनोपवासाभ्यांजयेत्कफमदात्ययम् । तृष्यतेसलिलञ्चास्मैदद्याद्ह्रीवेरसाधितम् ॥ १६२ ॥ बलायाःपृश्निपर्ण्यावाकण्टकार्य्याथवाशृतम् । सनागराभिःसर्वाभिर्जलंवाशृतशीतलम् ॥ १६३ ॥

वमन तथा उपवास के द्वारा कफज मदात्यय शान्त करना चाहिये कफज मदात्यय में तृषा लगने पर सुगंधवाला या वरियारा तथा पृश्निपर्णी या भटकटैया के साथ पाक कियागया जल अथवा सोंठि सहित इन सब औषधियों के साथ पाक कियागया शीतल जल पीनेको देना चाहिये ॥ १६२।१६३ ॥

दुःस्पर्शितेनमुस्तेनमुस्तपर्पटकेनवा । जलंमुस्तैःशृतंवापिदद्याद्दोषविपाचनम् ॥ १६४ ॥

जवासा तथा नागरमोथा या नागरमोथा तथा पित्तपापड़ा या केवल नागरमोथाके साथ पाक कियागया जल दोष के परिपाक के निमित्तकफजमदात्ययमें देनाचाहिये।।१६४।।

एतदेवचपानीयंसर्वत्रापिमदात्यये । निरत्ययंपीयमानंपिपासाज्वरनाशनम् ॥ १६५ ॥

और सम्पूर्ण मदात्ययोंमें भी यह जल पिलाना चाहिये इस के पीनेसे कोई क्लेश नहीं होता और तृषा तथा ज्वरका नाश होता है ॥ १६५ ॥

निरामंकांक्षितंकालेसक्षौद्रंपाययेत्तु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तम् । शार्करंमधुवाजीर्णमरिष्टंशी धुमेववा ॥ १६६ ॥

आमदोषरहित कफज मदात्ययवाले को इच्छा होनेपर समय के अनुसार शहदयुक्त शक्कर की मद्य पुराना अरिष्ट अथवा शीधु (मद्यविशेष)पिलाना चाहिये ॥ १६६ ॥

रूक्षतर्पणसंयुक्तंयमानीनागरान्वि तम् । यवगोधूमिकंचान्नंरूक्षयूषेण भोजयेत् ॥ १६७ ॥

और रूक्ष तर्पण (तृप्तिकारीरसं) अजवाइन तथा सोंठियुक्त यव तथा गेहूं के पदार्थ रूखे यूष के साथ भोजन करावे ॥ १६७ ॥

कुलत्थानांसुशुष्काणांमूलकानांर सेनवा । तनुनाल्पेनलघुनाकट्वम्ले नाल्पसर्पिषा ॥ १६८ ॥

पतले स्वल्प हल्के कडुवे खट्टे तथा स्वल्प घृत युक्त कुल्थी के यूपके साथ अथवा सूखीमूली के रसके साथ खिलाने चाहिये ॥ १६८ ॥

व्योषयूषमथाम्लंवायूषंवासाम्लवे तसम् । छागमांसरसंरूक्षमम्लंवा जाङ्गलंरसम् ॥ १६९ ॥

अथवा खटाईयुक्त सोंठि पीपरि तथा मिर्चका यूष या अमलवेतयुक्त यूष या बकरेके मांस का रूखा तथा खट्टा रस या जांगलजीवों के मांस का रूक्ष तथा खट्टा रस कफज मदात्यय में पिलाना चाहिये ॥ १६९ ॥

स्थाल्यांवाथकपालेवाभृष्टंनिर्द्रवव र्त्तितम् । कट्वम्ललवणंमांसंभक्षय न्पायान्मधु ॥ १७० ॥

अथवा बटलोही या खपरे में भूनागया जलादि द्रववस्तुरहित कडुवा खट्टा तथा नमकीन मांस खायकर कफज मदात्यय में मद्य पीनी चाहिये ॥ १७० ॥

व्यक्तमारीचकंमांसंमातुलुङ्गरसान्वि तम् । भृष्टंदाडिमसाराम्लमुष्णयू षोपवेष्टितम् ॥ १७१ ॥ यथाग्नि भक्षयेत्कालेप्रभूतार्द्रकपेषितम् । पिबेच्चनिगदंमद्यंकफप्रायेमदात्य ये ॥ १७२ ॥

कफज मदात्यय में बहुत सी मिर्चे तथा बिजौरा निंबू के रस से युक्त मांस को भून कर उस में खट्टाअनार मिलाकर उष्ण यूष तथा पिसीहुई बहुत सी अदरख के साथ वह मांस अग्नि के अनुसार उचित समयमें खाना चाहिये और माध्वीक मद्य पीनी चाहिये ॥ १७१ । १७२ ॥

सौवर्चलमजाजीचवृक्षाम्लंसाम्ल वेतसम् । त्वगेलामरिचार्द्धांशंश र्कराभागयोजितम् ॥ १७३ ॥

सोचर नोन जीरा तिंतिड़ीक तथा अमलवेत एक २ भाग छोटी इलायची दालचीनी तथा मिर्च आधे आधे भाग और शक्कर एक भाग इन सब को एक में मिलाकर सेवन करने से ॥ १७३ ॥

एतल्लवणमष्टाङ्गमग्निसन्दीपनंपर म् । मदात्ययेकफप्रायेदद्यात्स्रोतो विशोधनम् ॥ १७४ ॥

अग्नि दीप्त होती है और कफज मदात्यय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वालेके स्रोत शुद्ध होजाते हैं इस योगको अ-ष्टाङ्गलवण कहते हैं ॥ १७४ ॥

एतदेवपुनर्युक्त्यामधुराम्लैर्द्रवीकृतम् । गोधूमान्नयवान्नानांमांसानाञ्चातिरोचनम् ॥ १७५ ॥

इसीयोग को मधुर तथा अम्ल वस्तुओं के द्वारा द्रव करके गेहूं के पदार्थ यवके पदार्थ तथा मांसके साथ सेवन करने से भोजन में अत्यन्त रुचि होती है ॥ १७५ ॥

पेषयेत्कटुकैर्युक्तांश्वेतांबीजविवर्जिताम् । मृद्वीकांमातुलुङ्गस्यदाडिमस्यरसेनवा ॥ १७६ ॥

मिर्च आदि कडुवी वस्तुओं से युक्त श्वेत गदहपूर्णा तथा बीजरहित मुनक्कोंको विजौरा निंबूके अथवा अनारके रसमें पीसकर कफज-मदात्यय में पिलावे ॥ १७६ ॥

सौवर्चलैलामरिचैरजाजीभृङ्गदीप्यकैः । सरागःक्षौद्रसंयुक्तःश्रेष्ठोरोचनदीपनः ॥ १७७ ॥

सोचर नोन छोटी इलायची मिर्च जीरा तज तथा अजवाइन इन सबको रागषाड़व (एक तरह का गुड़म्वा) तथा शहदमें मिलाकर खाने से भोजनमें रुचि होती है और अग्निकी दीप्ति होती है ॥ १७७ ॥

मृद्वीकानांविधानेनकारयेत्कारवीमपि । युक्तमत्स्याण्डिकोपेतंरागंदीपनपाचनम् ॥ १७८ ॥

मुनक्कों के समान सौंफ को बिजौरा निंबू अथवा अनार के रसमें पीसकर राब तथा रागषाड़व के साथ मिलाकर कफजमदात्यय में खाने से अग्निकी दीप्ति होतीहै और अन्न पचताहै ॥ १७८ ॥

आम्रामलकपेशीनांरागान्कुर्य्यात्पृथक्पृथक् । धान्यसौवर्चलाजाजीकारवीमरिचान्वितान् १७९॥

आमकी गुठली तथा आंवले की गुठलीके अलग २ धनियां सोचर नोन जीरा अजमोद मिर्च ॥ १७९ ॥

गुडेनमधुयुक्तेनव्यक्ताम्ललवणीकृतान् । तैरन्नंरोचतेदिग्धंसम्यग्भुक्तंविजीर्य्यति ॥ १८० ॥

गुड़ तथा शहद के साथ खट्टे तथा नमकीन रागषाड़व (गुड़म्बे के समान पाक किया गया द्रवपदार्थ) वनावे इनके साथ भोजन करने से अन्नमें वहुत रुचि होती है और वह अन्न बहुत जल्दी पचता है ॥ १८० ॥

रूक्षोष्णेनान्नपानेनस्नानेनाशिशिरेणच । व्यायामलंघनाभ्याञ्चयुक्ताभ्यांजागरेणतु ॥ १८१ ॥

रूक्ष तथा उष्ण अन्नपान का सेवन करना उष्ण जलसे स्नान करना उचित व्यायाम तथा लंघन जागरण ॥ १८१ ॥

कालयुक्तेनरूक्षेणस्नानेनोद्वर्त्तनेनच । स्नानवर्णकवासानांप्रहर्षाणाञ्चसेवया ॥ १८२ ॥

उचितसमय में रूखी वस्तुओंके साथ पाक कियेगये जलसे स्नान करना रूखी वस्तुओं का उबटन लगाना रूक्ष वस्तुओंका लेप रूक्ष वस्त्र हर्षकारी वस्तुओंका सेवन ॥ १८२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणवर्णकराणाञ्चगुरूणामगुरोर पि। सकामोष्णसुखाङ्गीनामङ्ग नानाञ्चसेवया॥ १८३॥

प्राण तथा वर्णकारक भारी वस्त्र पहिनना शरीरमें अगर लगाना उष्ण तथा सुखदायक अङ्गवाली कामकी वाधायुक्त स्त्रियों का सेवन॥ १८३॥

सुखशिक्षितहस्तानांस्त्रीणांसंवाह नेनच। मदात्ययःकफप्रायःशी घ्रमेवोपशाम्यति॥ १८४॥

और हाथ पैर दवाने में चतुर स्त्रियोंके द्वारा हाथ पैर दबवाना इन उपायोंसे कफज मदात्यय तुरतही शान्त होजाता है॥ १८४॥

यदिदंकर्मनिर्दिष्टंपृथग्दोषबलंप्र ति। सन्निपातेदशविधेतद्विक ल्पंभिषग्विदा॥ १८५॥

तीनों दोषोंके वलके अनुसार यह जो चिकित्सा अलग २ कही गई है बुद्धिमान् वैद्य दश प्रकारके सन्निपातज मदात्ययमें भी इसी चिकित्सामें से जहांपर जौन चिकित्सा योग्यहो वहांपर वह चिकित्सा करे॥ १८५॥

यस्तुदोषविकल्पज्ञोयश्चौषधिविक ल्पवित्। ससाध्यान्साधयेद्व्याधी न्साध्यासाध्यविभागवित्॥ १८६॥

जो वैद्य दोष तथा औषधियों की अंशांश कल्पना और रोगोंकी साध्यता तथा असाध्यता के विभागको जानता है वही साध्यरोगों की चिकित्सा करसक्ता है॥ १८६॥

वनानिरमणीयानिसपद्मानिसलिला शयाः। विशदान्यन्नपानानिसहा याश्चप्रहर्षणाः॥ १८७॥

रमणीयवन कमलिनी तड़ाग आदि जलाशय शुद्ध अन्नपान प्रसन्नता करनेवाले सहायक (साथी)॥ १८७॥

माल्यानिगन्धयोगाश्चवासांसि विमलानिच। गान्धर्वशब्दाःका न्ताश्चगोष्ठ्यश्चहृदयप्रियाः॥१८८॥

माला सुगन्ध निर्म्मल वस्त्र गानके प्रिय शब्द हृदयको प्रिय गोष्ठी॥ १८८॥

सङ्कथाहास्यगीतानांविशदाश्चैव योजनाः। प्रियाश्चानुगतानार्यो नाशयन्तिमदात्ययम्॥ १८९॥

हास्यकी वातें मनोहर गीत मनोहर कथा और अपने अनुकूल प्यारी स्त्री यह सब मदात्यय के नाशक हैं॥ १८९॥

नाक्षोभ्यंहिमनोमद्यंशरीरमवहत्य च। कुर्य्यान्मदात्ययंतस्मादेष व्याहर्षणीक्रिया॥ १९०॥

शरीर को विना क्षीण किये और मनको विना क्षोभित किये मद्य मदात्यय को नहीं उत्पन्न करती है इससे मदात्यय रोगमें हर्षकारक चिकित्सा करनी चाहिये॥ १९०॥

आभिःक्रियाभिःसिद्धाभिःशमंया तिमदात्ययः। नचेन्मद्यविधिंहि त्वाक्षीरमस्यप्रयोजयेत्॥ १९१॥

यदि इन सिद्ध चिकित्साओंके द्वारा मदात्यय रोग शान्त न होतो मद्य की विधि को छोड़कर दूध पिलाना चाहिये॥ १९१॥

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

लङ्घनैःपाचनैश्चैवदोषसंशोधनैरपि। विमद्यस्यकफेक्षीणेजातेदौर्बल्यलाघवे॥ १९२॥

लंघन पाचन तथा वमन आदि संशोधन केद्वारा मदरहित पुरुषके कफके क्षीण होजानेपर और दुर्बलता तथा लघुता (हल्कापन) होजानेपर॥ १९२॥

तस्यमद्यविदग्धस्यवातपित्ताधिकस्यवा। ग्रीष्मोपतप्तस्यतरोर्यथावर्षंतथापयः॥ १९३॥

मद्यसे विदग्ध (खट्टी डकार तृषा तथा हृदयमें दाहयुक्त) अथवा अधिक वात पित्तवाले रोगी को दूध ऐसा हितकारी होता है जैसे ग्रीष्मसे संतप्त वृक्ष को वृष्टि हितकारी होती है॥ १९३॥

पयसाभिहतेरोगेबलेजातेनिवर्त्तयेत्। क्षीरप्रयोगंमद्यञ्चक्रमेणाल्पाल्पमाचरेत्॥ १९४॥

दूधके सेवन से रोगके निवृत्त होनेसे और बलके उत्पन्न होजानेपर दूध छुड़ाकर क्रमसे थोड़ी २ मद्य देनी चाहिये॥ १९४॥

विच्छिन्नमद्यःसहसायोऽतिमद्यंनिषेवते। ध्वंसकोविट्क्षयश्चैवरोगस्तस्योपजायते॥ १९५॥

मद्य को छोड़कर जो पुरुष एकाएकी बहुत मद्यका सेवन करताहै उसके ध्वंसक तथा विट्क्षय यह दो रोग उत्पन्न होते हैं॥ १९५॥

व्याध्युपक्षीणदेहस्यदुश्चिकित्स्यौतु मौमतौ। तयोर्लिङ्गंचिकित्साञ्चयथावदुपदेक्ष्यते॥ १९६॥

रोगसे क्षीण शरीरवाले पुरुषके यह दोनों रोग अत्यन्त दुस्साध्य होते हैं इन दोनों रोगोंके लक्षण तथा यत्न यथावत् आगे कहेजाते हैं॥ १९६॥

श्लेष्मप्रकोपःकण्ठस्यशोषःशब्दासहिष्णुता। तन्द्रानिद्राभियोगश्चज्ञेयंध्वंसकलक्षणम्॥ १९७॥

कफका कोप कण्ठका सूखना शब्द को न सहसकना तन्द्रा तथा अधिक निद्रा यह ध्वंसके लक्षण हैं॥ १९७॥

हृत्कण्ठरोगःसम्मोहश्छर्दिरङ्गरुजाज्वरः। तृष्णाकासःशिरःशूलमेतद्विट्क्षयलक्षणम्॥ १९८॥

हृदयके रोग कण्ठके रोग मोह छर्दि शरीरमें पीड़ा ज्वर तृषा खाँसी तथा शिरमें शूल यह विट्क्षय के लक्षण हैं॥ १९८॥

तयोःकर्म्मतदेवेष्टं वातिकेयन्मदात्यये। तौहिप्रक्षीणदेहस्यजायेतेदुर्बलस्यवा॥ १९९॥

इन दोनों रोगों में वही चिकित्सा करनी चाहिये जो वातजमदात्यय में कहीगई है क्योंकि यह दोनों रोग क्षीणशरीरवाले अथवा दुर्बल पुरुषकेही होते हैं॥ १९९॥

वस्तयःसर्पिषःपानंप्रयोगःक्षीरसर्पिषोः। अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नानान्यनुपानञ्चवातनुत्॥ २००॥

वस्तिकर्म्म (अमल देना) घृतपान दूध

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

तथा घी दोनोंको एकमें मिलाकर पीना तैल-मर्दन उबटन लगाना स्नान वातनाशक अन्नपान (पीनेकी वस्तु) ॥ २०० ॥

ध्वंसकोविट्क्षयश्चैवकर्मणानेनशाम्यति । युक्तमद्यस्यमद्योत्थोनव्याधिरुपजायते ॥ २०१ ॥

इन उपायोंके द्वारा ध्वंसक तथा विट्क्षय रोगका नाश होताहै युक्तिपूर्वक मद्यके सेवन करनेवाले पुरुषके मद्यज रोग नहीं होते हैं ॥ २०१ ॥

निवृत्तःसर्वमद्येभ्योनरोयःस्याज्जितेन्द्रियः । शरीरमानसैर्धीमान्विकारैर्नसयुज्यते ॥ २०२ ॥

और जो जितेन्द्रिय पुरुष सम्पूर्ण मद्यों से निवृत्त रहता है वह बुद्धिमान् पुरुष शारीरक तथा मानसिक किसी रोगसे भी युक्त नहीं होताहै ॥ २०२ ॥

भवन्तिचात्र ।

यत्प्रभावाभगवतीसुरापेयायथाचसा । यद्द्रव्यायस्ययाचेष्टायोगश्चापेक्षतेयथा ॥ २०३ ॥

इसमें यह श्लोक हैं । भगवती मदिराके प्रभाव जिस प्रकारसे मद्य पीनी चाहिये जिस वस्तुकी मद्य जिसको हित होतीहै जिस प्रकार के योगकी मद्यमें अपेक्षा होती है ॥ २०३ ॥

यथायथामदयते यैश्चयुक्तामहागुणैः । योमदोमदभेदाश्चयेत्रयःस्वस्वलक्षणाः ॥ २०४ ॥

जिन महागुणों से युक्त मद्य जिस प्रकार से मदको उत्पन्न करती है मद जो वस्तुहै मदके लक्षणसहित तीन भेद ॥ २०४ ॥

येचमद्यकृतादोषागुणायेचमदात्मकाः । यच्चत्रिविधमापानंयथासत्त्वञ्चलक्षणम् ॥ २०५ ॥

मद्यके दोष मदके गुण तीन प्रकारके मद्य पीनेवाले सत्त्वके अनुसार उनके लक्षण २०५॥

येसहायाःसुखायेचचिरक्षिप्रमदानराः । मदात्ययस्ययोहेतुर्लक्षणंयद्यथाचयत् ॥ २०६ ॥

सुखदायक सहायक जिन मनुष्यों को देर में तथा जिन मनुष्यों को शीघ्रही मद चढ़ता है मदात्ययके हेतु तथा लक्षण ॥ २०६ ॥

मद्यंमद्योत्थितान्रोगान्हन्तियश्चक्रियाक्रमः । सर्वंतदुक्तमखिलंमदात्ययचिकित्सिते ॥ २०७ ॥

इतिमदात्ययचिकित्सितेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

जिस मद्यके सेवनसे जिस प्रकार मदात्यय रोगोंका नाश होताहै और मदात्यय की चिकित्साका क्रम यह सबविषय इस मदात्यय-चिकित्सित नाम अध्याय में भगवान् आत्रेय जीने कहा है ॥ २०७ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें चिकित्सास्थानका मदात्ययचिकित्सितनाम बारहवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ १२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेरहवांअध्याय ॥

द्विव्रणीयचिकित्सितम्।

परावरज्ञमात्रेयंगतमानमदव्यथम्। अग्निवेशोगुरुंकालेविनयादिदसुक्तवान् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त द्विव्रणीयचिकित्सित नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

परावरके जानने वाले मान मद तथा व्यथारहित गुरु भगवान् आत्रेयजीसे उचितसमय में अग्निवेशने विनयपूर्वक यह कहाकि॥ १ ॥

भगवन्! पूर्वमुद्दिष्टौद्वौव्रणौरोगसंग्रहे। तयोर्लिङ्गंचिकित्साञ्चवक्तुमर्हसिशर्म्मद ॥ २ ॥

हे भगवन्! आपने पहिले रोगसंग्रह में जो दो प्रकार के व्रण कहेथे उनके लक्षण तथा यत्न हेकल्याणकारिन्! कृपापूर्वक कहिये॥२॥

इत्यग्निवेशस्यवचोनिशम्यगुरुरब्रवीत्। यौव्रणौपूर्वमुद्दिष्टौनिजश्चागन्तुरेवच ॥३ ॥ श्रूयतांविधिवत्सौम्यतयोर्लिङ्गञ्चभेषजम्। निजःशरीरदोषोत्थआगन्तुर्बाह्यहेतुजः ॥४॥

अग्निवेशके यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि हे सौम्य! पहिले जो निज तथा आगन्तु यह दो प्रकारके व्रण मैंने कहे थे उनके लक्षण तथा यत्न विधिपूर्वक सुनो शरीर के दोषों से उत्पन्न हुए व्रणको निज और बाहरी हेतुओंसेहुए व्रणको आगन्तु कहते हैं ॥ ३ । ४ ॥

वधबन्धप्रपतनाद्दंष्ट्रादन्तनखक्षतात्। आगन्तवोव्रणास्तद्वद्विषस्पर्शाग्निशस्त्रजाः ॥ ५ ॥

चोटबन्धन गिरना दाढ़ दांत तथा नख लगना विषका स्पर्श अग्नि तथा शस्त्र इन हेतुओं से आगन्तु व्रण उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥

मन्त्रागदप्रलेपाद्यैर्भेषजैर्हेतुभिश्चते। लिङ्गैःकदेशैर्निर्दिष्टाविपरीतानिजैर्व्रणाः ॥ ६ ॥

इस प्रकार आगन्तु व्रणोंके लिये मंत्र रोग दूर करनेवाली लेपआदि चिकित्सा हेतु तथा लक्षण संक्षेपसे दिखलायेगये और यह आगन्तु व्रण निज व्रणों से विपरीत होते हैं ॥ ६ ॥

व्रणानांनिजहेतूनामागन्तूनामसाध्यताम् ॥ कुर्य्याद्दोषबलापेक्षी निजानामौषधंयथा ॥ ७ ॥

आगन्तु व्रणोंमें निज व्रणोंके से असाध्यता के हेतु जानने चाहिये और दोष तथा बल का विचार करके वैद्य निज व्रणोंकी सी चिकित्सा करे ॥ ७ ॥

यथास्वैर्हेतुभिर्दुष्टावातपित्तकफान्नृणाम्। बहिर्मार्गंसमाश्रित्यजनयन्तिनिजान्व्रणान् ॥ ८ ॥

अपने २ कारणोंसे दूषित वात पित्त तथा कफ मनुष्योंके शरीरमें बाहिरी मार्ग का आश्रय करके निज व्रणोंको उत्पन्न करते हैं ८ ॥

स्तब्धःकठिनसंस्पर्शोमन्दस्रावोतितीव्ररुक्। तुद्यते स्फुरतिश्यावोव्रणोमारुतसम्भवः ॥ ९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातजव्रण स्तब्ध (तना हुआ) स्पर्श में कठोर मन्दस्राव (जिससे थोड़ा पीव बहता हो) बहुत पीड़ायुक्त तोद (सुई गड़ने की सी पीड़ा) से युक्त स्फुरण (फड़कना) युक्त तथा कपिशवर्ण होताहै॥ ९॥

संपूरणैःस्नेहपानैः स्निग्धैःस्वेदोप नाहनैः। प्रदेहैःपरिषेकैश्चवातव्रण मुपाचरेत्॥ १०॥

सम्पूरण (त्वको भरना) स्नेहपान स्निग्ध स्वेद उपनाह (पुल्टिस) लेप तथा परिषेक (सींचना) के द्वारा वातज व्रणकी चिकित्सा करनी चाहिये॥ १०॥

तृष्णामोहज्वरस्वेददाहदुष्टावदार णैः। व्रणंपित्तकृतंविद्याद्गन्धस्रावैः सपूतिकैः॥ ११॥

पित्तज व्रणमें तृषा मोह ज्वर स्वेद दाह अवदारण (फटना) दुर्गंधि और दुर्गंधित पीव बहना यह लक्षण होते हैं॥ ११॥

शीतलैर्मधुरैस्तिक्तैःप्रदेहपरिषेचनैः। सर्पिःपानैर्विरेकैश्चपैत्तिकंशमयेद्व्र णम्॥ १२॥

शीतल मधुर तथा तिक्तलेप तथा परिषेक (सींचना) घृतपान और विरेचन इन के द्वारा पित्तजव्रणकी चिकित्सा करनी चाहिये॥ १२॥

बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धःस्तिमितोम न्दवेदनः। पाण्डुवर्णोऽल्पसंक्लेद श्चिरकारीकफव्रणः॥ १३॥

कफजव्रण बहुत पिच्छायुक्त भारी स्निग्ध गीले कपड़ेसे ढका हुआ सा स्वल्पपीड़ायुक्त पांडुवर्ण स्वल्पक्लेदयुक्त और बहुत काल तक रहनेवाला होताहै॥ १३॥

कषायकटुरूक्षोष्णैःप्रदेहपरिषेच नैः। कफव्रणंप्रशमयेत्तथालंघन पाचनैः॥ १४॥

कषाय कटु रूक्ष तथा उष्ण लेप तथा परिषेक और लंघन तथा पाचन इनके द्वारा कफज व्रणकी चिकित्सा करनी चाहिये॥१४॥

तौद्वौनानात्वभेदेननिरुक्ताविंशति र्व्रणाः। तेषांपरीक्षात्रिविधाप्रदुष्टा द्वादशस्मृताः॥ १५॥

निज तथा आगन्तु यह दोनों व्रण अनेक भेदोंसे युक्त होने के कारण बीस प्रकार के होते हैं इन व्रणों की परीक्षा तीन प्रकार की होती है यह व्रण दूषित होकर बारह प्रकार के होवे हैं॥ १५॥

स्थानान्यष्टौतथागन्धाःपरिस्रावाश्च तुर्दश। षोडशोपद्रवादोषाश्चत्वारो विंशतिस्तथा॥ १६॥

इनके आठ स्थान होते हैं इनकी आठ प्रकार की गन्ध होती है इनमें चौदह प्रकार के स्राव (पीव आदि बहना) होते हैं इनके सोलह उपद्रव होते हैं तथा चौबीस प्रकारके दोष होते हैं॥ १६॥

तथाचोपक्रमाःसिद्धाःषट्त्रिंशतस मुदाहृताः। विभाव्यमानाःशृणुता न्सर्वानेवयथेरितान्॥ १७॥

और इनकी चिकित्सा छत्तिस प्रकार की होती है इन सब का वर्णन मैं करताहू तुम सुनो॥ १७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृत्योत्कृत्यस्तथादुष्टस्तथामर्मस्थितोनवः। संवृतोदारुणःस्रावीसविषो विषमस्थितः॥ १८॥

कृत्योत्कृत्य दुष्ट नवीन मर्मस्थित संवृत (ढका हुआ) दारुण (भयङ्कर) स्रावी (जिससे पीवआदि वहताहो) सविष विषमस्थित॥ १८॥

त्वक्संग्युत्सन्नएषाञ्चव्रणान्विद्याद्धिपर्य्ययात्। इतिनानात्वभेदेननिरुक्ताविंशतिर्व्रणाः॥ १९॥

त्वक्संगी उत्सन्न अकृत्योत्कृत्य अदुष्ट प्राचीन मर्मस्थित असंवृत अदारुण अस्रावी अविष अविषमस्थित अत्वक्संगी तथा अनुत्सन्न इसप्रकार अनेक भेदोंसे व्रण वीसप्रकार के होते हैं॥ १९॥

दर्शनप्रश्नसंस्पर्शैःपरीक्षात्रिविधा स्मृता। वयोवर्णशरीराणामिन्द्रियाणाञ्चदर्शनात्॥ २०॥

दर्शन प्रश्न तथा स्पर्शसे व्रणोंकी परीक्षा तीन प्रकारकी होती है दर्शनसे अवस्था वर्ण शरीर तथा इन्द्रियों की॥ २०॥

हेत्वर्त्तिसात्म्याग्निबलंपरीक्ष्यंवचनाद्बुधैः। स्पर्शान्मार्दवशैत्येचपरीक्ष्येसविपर्य्यये॥ २१॥

प्रश्नसे हेतु पीड़ा सात्म्य तथा अग्निबल की और स्पर्श से कोमलता शीत कठोरता तथा उष्णताकी परीक्षाकरनी चाहिये॥२१॥

श्वेतोपसन्नवर्त्मातिस्थूलवर्त्मातिपिञ्जरः। नीलःश्यावोऽतिपिडिको रक्तकृष्णोऽतिपूतिकः॥ २२॥

श्वेतवर्त्मा उपसन्नवर्त्मा अतिस्थूलवर्त्मा अतिपिञ्जर नीलवर्ण कपिशवर्ण वहुत पिड़िकायुक्त रक्तवर्ण कृष्णवर्ण अत्यन्त दुर्गन्धित॥ २२॥

रौप्यःकुम्भीमुखश्चेतिप्रदुष्टाद्वादशव्रणाः। कल्पेनानेनदोषाणांचतुर्विंशतिरुच्यते॥ २३॥

रौप्य तथा कुम्भीमुख यह वारह प्रकारके दुष्ट व्रण होते हैं और इसी प्रकारसे व्रणोंके चौवीस दोष होते हैं॥ २३॥

त्वक्शिरामांसमेदोऽस्थिस्नायुमर्मान्तराश्रयाः। व्रणस्थानानिनिर्दिष्टान्यष्टावेतानिसंग्रहे॥ २४॥

त्वचा शिरा मांस मेदा हड्डी स्नायु मर्म्म तथा अन्तर (भीतरी भाग) यह आठ व्रणों के स्थान हैं॥ २४॥

सर्पिस्तैलवसापूयरक्तश्यावाम्लपूतिकाः। व्रणानांव्रणगन्धज्ञैरष्टौगन्धाःप्रकीर्त्तिताः॥ २५॥

व्रणोंकी गन्ध जाननेवाले वैद्योंने घी तैल चर्बी पीव रुधिर मछली खटाई तथा कंजा इन आठोंकीसी आठ प्रकारकी गन्ध व्रण में कही है॥ २५॥

लसीकाजलपूयासृक्हरितारुणपिञ्जराः। कषायनीलहरितस्निग्धरूक्षसितासिताः॥ २६॥

लसीका (धातुविशेष) जल पीव रुधिर हरितवर्ण अरुणवर्ण पिंजर कषायवर्ण नी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लवर्ण पलासवर्ण स्निग्ध रूक्ष श्वेतवर्ण तथा कृष्णवर्ण ॥ २६ ॥

इतिरूपैःसमुद्दिष्टैर्व्रणस्रावाश्चतुर्दश। विसर्पःपक्षघातश्चशिरास्तम्भोपता नकाः ॥ २७ ॥

यह चौदह प्रकारके स्राव व्रणों में होते हैं विसर्प (जहरबात) पक्षाघात शिरस्तम्भ अपतानक ॥ २७ ॥

मोहोन्मादव्रणरुजोज्वरस्तृष्णाहनु ग्रहः । कासश्छर्दिरतीसारोहिक्का श्वासःसवेपथुः ॥ २८ ॥

मोह उन्माद व्रणमें पीड़ा ज्वर तृषा जबड़ोंका जकड़ना खांसी छर्दि अतीसार हिचकी श्वास तथा कम्प ॥ २८ ॥

षोडशोपद्रवाःप्रोक्ताव्रणानांव्रणचि न्तकैः । स्नायुक्लेदाच्छिराक्लेदाद्गा म्भीर्य्यात्क्रिमिदर्शनात् ॥ २९ ॥

यह सोलह उपद्रव व्रणोंमें व्रणके चिन्तकों ने कहे हैं स्नायुका क्लेदयुक्त होना शिराका क्लेदयुक्त होना बहुत गहिरा होना कीड़े पड़ना ॥ २९ ॥

अस्थिभेदात्सशल्यत्वात्सविषत्वा च्चसर्पणात् । नखकाष्ठप्रभेदाच्चचर्म लोमातिघट्टनात् ॥ ३० ॥

हड्डी का फूटजाना शल्य (कील) युक्त होना विषयुक्त होना फैलना नख तथा काष्ठ केद्वारा फटजाना त्वचा तथा रोवों का बहुत रगड़जाना ॥ ३० ॥

मिथ्याबन्धादतिस्नेहादतिभैषज्य कर्षणात् । अजीर्णादतिभुक्ताच्च विरुद्धासात्म्यभोजनात् ॥ ३१ ॥

अच्छी प्रकारसे बन्धन न होना बहुत स्निग्ध होना औषधियों के द्वारा बहुत कृश होना अजीर्ण बहुत भोजन परस्पर विरोधी वस्तुओं को मिलाकर खाना असात्म्यभोजन ॥ ३१ ॥

शोकात्क्रोधाद्दिवास्वप्नाद्व्यायामा न्मैथुनात्तथा । व्रणानप्रशमंया न्तिनिष्क्रियत्वाच्चदेहिनाम् ॥ ३२ ॥ परिस्रावाच्चगन्धाच्चदोषश्चोपद्रवैःस ह । व्रणानांबहुदोषाणांकृच्छ्रत्वश्चो पजायते ॥ ३३ ॥

शोक क्रोध दिनमें सोना व्यायाम मैथुन स्राव तथा कोई कार्य्य न करना इन चौबीस दोषों से उपद्रवों से और दुर्गन्धियों से व्रण शान्त नहीं होते हैं बहुत दोषयुक्त व्रण कष्टसाध्य होते हैं ॥ ३२ । ३३ ॥

त्वङ्मांसजःसुखेदेशेतरुणस्यानुप द्रवः । धीमतोऽभिनवःकालेसुखसा ध्यःस्मृतोव्रणः ॥ ३४ ॥

बुद्धिमान् युवापुरुष के मर्म्मरहित त्वचा तथा मांस में उत्पन्न हुआ उपद्रवरहित नवीन व्रण उचित समयमें चिकित्सा करनेसे सुखसाध्य होताहै ॥ ३४ ॥

गुणैरन्यतमैर्हीनस्ततःकृच्छ्रतमः स्मृतः । सर्वैर्विहीनोविज्ञेयस्त्वसा ध्योनिरुपक्रमः ॥ ३५ ॥

इन गुणोंमें से कुछ गुणों के न होनेपर कष्टसाध्य होताहै और इन सबके न होनेपर अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साध्य होता है ऐसे व्रण की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ३५ ॥

व्रणानामादितःकार्य्यंयथासन्नंविशोधनम् । ऊर्द्ध्वभागैरधोभागैःशस्त्रैर्वस्तिभिरेवच ॥ ३६ ॥

व्रणों में पहिले वमन विरेचन शस्त्र तथा वस्तिकर्म्मकेद्वारा यथायोग्य संशोधन करना चाहिये ॥ ३६ ॥

सद्यःशुद्धशरीराणांप्रशमंयान्तिहिव्रणाः । यथाक्रममतश्चोर्द्ध्वंशृणुसर्वानुपक्रमान् ॥ ३७ ॥

क्योंकि शुद्ध शरीरवाले पुरुषों के व्रण शीघ्रही शान्त होजाते हैं इसके उपरान्त क्रम के अनुसार व्रणों की सम्पूर्ण चिकित्सा सुनो ॥ ३७ ॥

शोफघ्नंषड्विधञ्चैवशस्त्रकर्मावपीडनम् । निर्वापणंससन्धानंस्वेदःशमनमेषणा ॥ ३८ ॥

शोथ का नाश करना छः प्रकारका शस्त्रकर्म्म अवपीड़न निर्वापन संधान स्वेद शमन एषणा ॥ ३८ ॥

शोधनौरोपणीयौचकषायौसप्रलेपनौ । द्वौस्नेहौतद्गुणौपत्रच्छेदनेद्वेचबन्धने ॥ ३९ ॥

दो प्रकार के शोधनकषाय दो प्रकार के रोपणकषाय दो प्रकार का शोधनलेप दो प्रकारका रोपणलेप दो प्रकारके शोधनस्नेह दो प्रकारके रोपणस्नेह दो प्रकार का पत्रच्छेदन दो प्रकारका बंधन ॥ ३९ ॥

भोज्यमुत्सादनंदाहोद्विविधःसावसादनः । काठिन्यमार्दवकरेधूपनेलेपनेशुभे ॥ ४० ॥

भोजनकी विधि उत्सादन दो प्रकारका दाह दो प्रकारका अवसादन कठोर तथा कोमलताकारक धूप कठिनता तथा कोमलताकारक शुभ लेप ॥ ४० ॥

व्रणावचूर्णनंव्रण्यंलेपनंलोमरोपणम् । इतिषट्त्रिंशदुद्दिष्टाव्रणानांसमुपक्रमाः ॥ ४१ ॥

व्रणावचूर्णन व्रणको हितलेप और लोमरोपण यह छत्तीस प्रकारकी चिकित्सा व्रणों की कहीगई है ॥ ४१ ॥

पूर्वरूपंभिषग्बुद्ध्वाव्रणानांशोफमादितः । रक्तावसेचनंकुर्य्यादजातव्रणशान्तये ॥ ४२ ॥

बुद्धिमान् वैद्य व्रणके पूर्वरूप (व्रण होने के पहिलेहुये) शोथ को जानकर व्रण न उत्पन्नहो इसलिये पहिले रुधिरनिकाले॥४२॥

शोधयेद्बहुदोषांस्तुस्वल्पदोषान्विलङ्घयेत् । पूर्वकषायैःसर्पिर्भिर्जयेद्वामारुतोत्तरम् ॥ ४३ ॥

और जो दोषों की अधिकता हो तो वमन आदि संशोधन और जो स्वल्प दोष हो तो लंघन करावे अथवा जो वायु की अधिकता हो तो पहिले काढ़े तथा घृतकेद्वारा शोथ को शान्त करे ॥ ४३ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ल्कलाः। ससर्पिष्कःप्रलेपःस्या च्छोफनिर्वापणंपरम् ॥ ४४ ॥

बर्गद गूलर पीपर पकरिया तथा वेत इन की छाल को पीसकर घी में मिलाकर लेप करनेसे शोथका नाश होताहै ॥ ४४ ॥

विजयामधुकंवीराबिसग्रन्थिःशतावरी। नीलोत्पलंनागपुष्पंप्रदेहः स्यात्सचन्दनः ॥ ४५ ॥

हड़ मुलेठी काकोली कमल की जड़ शतावर नीलोत्पल नागकेसर तथा चन्दन इन का लेप शोथमें हित होताहै ॥ ४५ ॥

सक्तवोमधुकंसर्पिःप्रदेहःस्यात्सशर्करः। अविदाहीनिचान्नानिशोफे भेषजमुत्तमम् ॥ ४६ ॥

सत्तू मुलेठी घी तथा शक्कर इनका लेप शोथमें हित होताहै विदाहरहित अन्न शोथ की श्रेष्ठ औषध है ॥ ४६ ॥

सचेदेवमुपक्रान्तःशोफोनप्रशमंव्रजेत्। तस्योपनाहैःपक्वस्यपाटनंहि तमुच्यते ॥ ४७ ॥

इस प्रकार चिकित्सा करने से यदि शोथ शान्त न होय तो शोथ को पुलिटिसकेद्वारा पकाकर चीरना हित होताहै ॥ ४७ ॥

तैलेनवासर्पिषावाताभ्यांवासक्तुपिण्डिका। सुखोष्णाशोफपाकार्थमुपनाहःप्रशस्यते ॥ ४८ ॥

तैल अथवा घीकेद्वारा अथवा तैल तथा घी दोनोंकेद्वारा सत्तुओंकी पिंडिया बनाकर कुछ गर्म करके शोथपर बांधे यह शोथ के लिये हित होती है ॥ ४८ ॥

सतिलासातसीबीजदध्यम्लपिण्डिका। सकिण्वकुष्ठलवणा शस्तास्याडुपनाहने ॥ ४९ ॥

तिल अलसी खट्टा दही सत्तू सुराबीज तथा लवण इन सबकी पिंडिया बनाकर शोथपर बांधने से शोथ पकजाता है ॥ ४९ ॥

रुग्दाहरागतोदैश्चविदग्धंशोफमादिशेत्। जलवस्तिसमस्पर्शंसंपक्वं पिण्डितोन्नतम् ॥ ५० ॥

पीड़ा दाह रक्तवर्ण तथा सूजी गड़नेकीसी पीड़ा इन लक्षणों से शोथ को विदग्ध (अधपका) जानना चाहिये पकाहुआ शोथ जलसे भरीहुई मशकके समान स्पर्शयुक्त सिमिटाहुआ तथा उन्नत होताहै ॥ ५० ॥

उमाथोगुग्गुलुःसौधंपयोदक्षकपोतयोः। विट्पलाशभवःक्षारोहेमक्षीरीमकूलकः ॥ ५१ ॥

अलसी गुग्गुल चूना दूध मुर्गे तथा कबूतर की विष्ठा ढाकका क्षार चोक तथा जमालगोटेकी जड़ ॥ ५१ ॥

इत्युक्तोभेषजगणःपक्वशोथप्रभेदनः। सुकुमारस्यकृच्छ्रस्यशस्त्रन्तु परमुच्यते ॥ ५२ ॥

यह सब औषध पकेहुये शोथ को फोड़ने वाली हैं सुकुमार तथा कष्टदायक व्रणमें शस्त्र का प्रयोग (चीरना) ही श्रेष्ठ होताहै ॥ ५२ ॥

पाटनंव्यधनञ्चैवछेदनंलेपनंतथा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...नंसीवनञ्चैवषड्विधंशस्त्रक
र्म ।। ५३ ।।

...न व्यधन छेदना लेपन प्रच्छन तथा यह छः प्रकारके शस्त्रकर्म हैं ।। ५३ ।।

...व्रणाःपक्वशोथास्तथाक्षतगुदरम् । अन्तःशल्याश्चयेशोफाः पाट्यास्तेतद्विधाश्चये ।। ५४ ।।

नाड़ीव्रण (नासूर) पका हुआ शोथ क्षतगुदोदर (गुदा तथा उदर का घाव) अन्तःशल्य (जिसके भीतरकील आदि होवे) यह तथा इनके समान अन्य रोग पाटनीय(फाड़ने के योग्य) होते हैं ।। ५४ ।।

दकोदराणिसंपक्वागुल्मायेयेचरक्तजाः । व्यध्याःशोणितरोगाश्चविसर्पपिडिकादयः ।। ५५ ।।

जलोदर(जलंधर) पकेहुये गुल्म रक्तजगुल्म और विसर्प तथा पिड़िका आदिक रक्तज-रोग व्यधन करने के योग्य होते हैं ।। ५५ ।।

उद्वृत्तान्स्थूलपर्य्यन्तानुत्सन्नान्कठिनान्व्रणान् । अर्शःप्रभृत्यधीमांसंछेदनेनोपपादयेत् ।। ५६ ।।

ऊंचे गोल व्रण ऊंचे किनारों वाले व्रण उन्नतव्रण कठोरव्रण और बवासीर आदिक अधिमांस (मस्सा) यह सब छेदनेके योग्य होते हैं ।। ५६ ।।

किलासानिसकुष्ठानिलिखेल्लेख्यानिबुद्धिमान् । वातासृग्ग्रन्थिपिडिकाःसकोठारक्तमण्डलाः ।। ५७ ।।

किलास (श्वेतकुष्ठ) तथा कुष्ठ यह लेखन (खरोंचने) के योग्य होते हैं वातरक्त ग्रंथि पिड़िका चकत्ते रक्तमण्डल ।। ५७ ।।

कुष्ठान्यभिहताङ्गांश्चशोथांश्चप्रच्छयेद्भिषक् । सीव्यंकुक्ष्युदराद्यन्तुगम्भीरंयद्विपाटितम् ।। ५८ ।।

कुष्ठ चोटयुक्त अङ्ग तथा शोथ यह सब प्रच्छन (पाछने) के योग्य होते हैं कुक्षि तथा उदरआदिक जो अंग बहुत गहिरे चीरेजाते हैं वह सीने के योग्य होते हैं ।। ५८ ।।

इतिषड्विधमुद्दिष्टंशस्त्रकर्ममनीषिभिः । सूक्ष्माननाःकोषवन्तोयेव्रणास्तान्प्रपीडयेत् ।। ५९ ।।

इस प्रकारसे छः प्रकारके शस्त्रकर्म्म बुद्धिमान् लोगों ने कहे हैं अब जिन व्रणोंका मुख छोटा हो और उनके भीतर पीवआदि भराहो वह पीड़न (दवाना)के योग्यहोते हैं।।५९।।

कलायाश्चमसूराश्चगोधूमाःसहरेणवः । कल्कीकृताःप्रशस्यन्तेनिःस्नेहाव्रणपीडने ।। ६० ।।

मटर मसूर गेहूं तथा रेणुका इनका स्नेहरहित कल्क व्रणोंके पीड़न के लिये हित होता है ।। ६० ।।

शाल्मलीत्वग्बलामूलंतथान्यग्रोधपल्लवाः । न्यग्रोधादिकमुद्दिष्टंबलादिकमथापिवा।आलेपनंनिर्वपणंतद्धिधान्यैश्चसेचनम् ।। ६१ ।।

सेमरकी छाल बरियाराकी जड़ तथा बर्गद के पत्ते इनके द्वारा बर्गदआदिगणके द्वारा बरियाराआदिगणके द्वारा अथवा इसी प्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारके अन्य गणोंके द्वारा व्रणों में लेप तथा सेचन करने से निर्वापन होताहै ॥ ६१ ॥

सर्पिषाशतधौतेनपयसामधुकाम्बुना। निर्वापयेत्सुशीतेनरक्तपित्तोत्तरान्व्रणान् ॥ ६२ ॥

जिन व्रणों में रक्तपित्तकी अधिकता हो उन व्रणोंमें सौवार धोयेहुये घीके द्वारा तथा मुलेठी के साथ पाक कियेगये शीतल दूधके द्वारा निर्वापन करना चाहिये ॥ ६२ ॥

लम्बानिव्रणमांसानिप्रलिप्यमधुसर्पिषा। संदधीतसमंवैद्योबन्धनैश्चोपपादयेत् ॥ ६३ ॥

व्रणोंके निकलेहुये मांसमें शहद तथा घी का लेपकरै औरउसका सम संधान (जोड़ना) करके अच्छे प्रकारसे बन्धन करै ॥ ६३ ॥

तान्समान्सुस्थितान्ज्ञात्वाफलिनीलोध्रकट्फलैः। समङ्गाधातकीयुक्तैश्चूर्णितैरवचूर्णयेत् ॥ ६४ ॥

पञ्चवल्कलचूर्णैर्वाशुक्तिचूर्णसमायुतैः। धातकीलोध्रचूर्णैर्वातथारोहन्तितेव्रणाः ॥ ६५ ॥

फिर व्रणोंके मांसके समहोजाने पर प्रियंगु लोध कायफल लजालू तथा धवई का चूर्ण अथवा पंचवल्कल तथा सीपका चूर्ण अथवा धवई तथा लोधका चूर्ण उसपर बुरकावे ऐसा करनेसे घावपूर्ण होजाते हैं ॥ ६४।६५ ॥

अस्थिभग्नंच्युतंसन्धिंसंदधीतसमंपुनः। समेनसममङ्गेनकृत्वान्येनविचक्षणः ॥ ६६ ॥

टूटी हुई हड्डी तथा संधिको सम अ... समकरके बुद्धिमान्वैद्य बराबर जोड़े...

स्थिरैःकवलिकाबन्धैःकुशि... संस्थितम्। पट्टैःप्रभूतसर्पि... याद्बलंसुखम्। अविदाहि... पैष्टिकैस्तमुपाचरेत् ॥ ६७ ॥ ६८...

फिर स्थिर कवलिकाबन्ध तथा कुशि... का (लोहे की तख्ती आदि) ओंके द्वा... उसको स्थित करके बहुत घृतयुक्त रेशमी व... हल्के हाथसे धीरे धीरे उसपर बांधे और अ... दाही (खट्टे डकार हृदयमें दाह तथा दे... पचनाआदिसे रहित) अन्न तथा पीठीके पद... उस रोगीको भोजनके निमित्तदेवे॥६७।६...

ग्लानिर्हिनहितातस्यसन्धिविश्ले... कारिका। विच्युताभिहताङ्गानां... सर्पादीनुपद्रवान्। उपाचरेद्यथाकालं कालज्ञःस्वचिकित्सितात् ॥ ६९ ॥

क्योंकि ग्लानिके द्वारा जुड़ीहुई संधि अलग होजाती हैं इस से उसको ग्लानि हित नहीं होती है जिनके अङ्ग टूटगये हों या जिन के अङ्गों में चोट लगी हो उनके यदि विसर्प (जहरवात) आदि उपद्रव उत्पन्न होजावें तो बुद्धिमान् वैद्य उन्हीं रोगोंके अधिकार में कहीहुई चिकित्सा समयके अनुसारकरे॥६९॥

शुष्कामहारुजःस्तब्धायेव्रणमारुतोत्तराः। स्वेद्याःसङ्करकल्पेनतेस्युःकृसरपायसैः ॥ ७० ॥ ग्राम्यवैलाम्बुजानूपैर्वेशवारैश्चसंस्कृतैः । उ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्कारिका[...]भिरुष्णाभिःसुखीस्याद्व्रणि तस्तदा कौ ॥ ७१ ॥

शुष्क (धंस[...]ूखेहुये) महापीड़ायुक्त तथा स्त-ब्ध जो अ[...] पुरा[...]क वायु वाले व्रण उनमें सङ्कर स्वेदकी विधि[...]व (स्वेदाध्याय देखो) के अनुसार कृसरा पाक (खिचड़ी) खीर ग्राम नदी के तट जल[...]था अनूपदेश में होनेवाले जीवोंके वेस[...]ारयुक्त मांस और उष्ण उत्कारिका इनके द्वारा स्वेदन करना चाहिये इससे व्रण की पीड़ा शान्त होजाती है ॥ ७० । ७१ ॥

सदाहवेदनावन्तोयेव्रणामारुतोत्तराः । येषांतिलानुमाश्चैवभृष्टान्पयसिनिर्वृतान् ॥ ७२ ॥

अधिक वायु वाले जिन व्रणोंमें दाह तथा पीड़ाहो उनमें भुनेहुये तिल तथा अलसीको दूधमें भिगोकर ॥ ७२ ॥

तेनैवपयसापिष्ट्वाकुर्य्यादालेपनंभिषक् । बलागुडूचीमधुकंपृश्निपर्णीशतावरी ॥ ७३ ॥

और उसी दूधके साथ उनको पीसकर लेप करना चाहिये वरियारा गिलोय मुलेठी पृश्निपर्णी शतावरि ॥ ७३ ॥

जीवन्तीशर्कराक्षीरंतैलमत्स्यवसाघृतम् । संसिद्धासमधूच्छिष्टाशूलघ्नीस्नेहशर्करा ॥ ७४ ॥

जीवन्ती शक्कर दूध तैल मछली की चर्वी घी तथा मोम इन सबको एकसाथ मिलाकर पाक करके व्रणमें लेप करना चाहिये इससे शूल का नाश होता है उसे स्नेहशर्करा कहते हैं ॥ ७४ ॥

द्विपञ्चमूलक्कथितेनाम्भसापयसाथवा । सर्पिषावासतैलेनकोष्णेनपरिषेचयेत् ॥ ७५ ॥

दशमूलके काढ़े दशमूल के साथ पाक कियेगये कुछ उष्ण जल दूध घी अथवा तैल के द्वारा व्रणको सींचना चाहिये ॥ ७५ ॥

यवचूर्णंसमधुकंसतैलंसहसर्पिषा । दद्यादालेपनंकोष्णंदाहशूलोपशान्तये ॥ ७६ ॥

व्रणके दाह तथा शूलको शान्त करने के लिये यवोंका चूर्ण मुलेठीका चूर्ण तैल तथा घी इन सबको एक में मिलाकर लेप करना चाहिये ॥ ७६ ॥

उपनाहश्चकर्त्तव्यःसतिलोमुद्गपायसः । रुग्दाहयोःप्रशमनोव्रणेष्वेषुविधिर्हितः ॥ ७७ ॥

व्रणकी पीड़ा तथा दाहको शान्त करने के लिये तिल तथा मूंगकी खीर करके उसकी पुलटिस बांधना चाहिये यह विधि सब व्रणों में हित होती है ॥ ७७ ॥

सूक्ष्माननाबहुस्रावाःकोषवन्तश्चयेव्रणाः । नचमर्माश्रितास्तेषामेषणंहितमुच्यते ॥ ७८ ॥

जिन व्रणोंका मुख छोटाहो जिनसे अनेक प्रकार का बहुत स्राव पीब आदि निकलता हो जिनके भीतर गुप्तरूप से पीब भरा रहता हो और जो मर्म में स्थित न हों उनमें एषणा (किसी वस्तुको भीतर डालकर घुमाना) हित होती है ॥ ७८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्विविधामेषणांविद्यान्मृद्वीञ्चकठिनामपि। उद्भिदैर्मृदुभिर्नालैर्लोहानांवाशलाकया ॥ ७९ ॥

मृदु तथा कठिनभेद से एषणा दो प्रकार की होती है कोमल कमलआदि के दण्डियों के द्वारा जो एषणा की जाती है वह मृदु और जो लोहेकी शलाकाके द्वारा एषणा कीजाती है वह कठिन कहलाती है ॥ ७९ ॥

गम्भीरमांसगेदेशेपार्श्वेलौहशलाकया । एष्यंविद्यादव्रणंनालैर्विपरीतमतोभिषक् ॥ ८० ॥

गहिरे मांसवाले स्थानमें तथा पसुलियों में लोहेकी शलाका के द्वारा एषणा करनी चाहिये और इनसे अन्य स्थानों में कमलआदि दण्डी के द्वारा व्रणोंकी एषणा करनी चाहिये ॥ ८० ॥

पूतिगन्धान्विवर्णांश्चबहुस्रावान्महारुजः । व्रणानशुद्धान्विज्ञाय शोधनैःसमुपाचरेत् ॥ ८१ ॥

दुर्गंधित विवर्ण (विगड़ेहुये वर्णवाले) बहुत वहनेवाले अत्यन्त पीड़ायुक्त तथा अशुद्ध व्रणोंकी चिकित्सा शोधन (साफकरना) के द्वारा करनी चाहिये ॥ ८१ ॥

त्रिफलाखदिरोदार्वीन्यग्रोधादिर्बलाकुशः । निम्बकोलकपत्राणि कषायाःशोधनामताः ॥ ८२ ॥

हड़ बहेड़ा आमला कत्था दारुहल्दी वर्गद ककैहा कुश नींब की पत्ती, तथा बेरी की पत्ती इनके काढ़े व्रणोंको शुद्धकरते हैं॥८२॥

तिलकल्कःसलवणोद्वेहरि[...]तम् । मधुकंनिम्बपत्राणि[...]णशोधनः ॥ ८३ ॥

तिल सैंधवलवण हल्दी दारु[...] थ घी मुलेठी तथा नींब की पत्ती[...] करने से व्रण शुद्ध होता है ॥ ८[...]

नातिरक्तोनातिपाण्डुर्नातिश्याव[...] नचातिरुक् । नचोत्सन्नोनचोत्स[...]ङ्गीशुद्धोरोप्यःपरंव्रणः ॥ ८४ ॥

जो व्रण न बहुत लाल न बहुत पाण्डुव[र्ण] न बहुत कपिशवर्ण न बहुत पीड़ायुक्त न लाहुआ और न बहुत पीब आदि से युक्त उसको शुद्ध जानना चाहिये और फिर[...] में रोपण (घावका भरना) करना च[ाहि]ये ॥ ८४ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थकदम्बप्लक्षवेत[...]साः । करवीरार्ककुटजाःकषायार[ो]पणाःस्मृताः ॥ ८५ ॥

वर्गद गूलर पीपर कदम्ब पकरिया वेत कनैर मदार तथा कुरैया इनके काढ़े व्रणों को पूर्ण करनेवाले होते हैं ॥ ८५ ॥

चन्दनंपद्मकिञ्जल्कंदार्वीत्वङ्नीलमुत्पलम् । मेदांमूर्वांसमङ्गाञ्चयष्ट्याह्वांव्रणरोपणम् ॥ ८६ ॥

चन्दन कमलकी केसर दारुहल्दीकी छाल नीलोत्पल मेदा मरोरफली लजालू तथा मुलेठी इनके द्वारा व्रण पूर्ण होता है ॥ ८६ ॥

प्रपौण्डरीकंजीवन्तींगोजिह्वांधात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कीं बलाम्। रोपणं सतिलं दद्यात्प्रलेपं सघृतं व्रणे ॥ ८७ ॥

पुण्डरिया जीवन्ती गोजिह्वा (गावजवाँ) धवई वरियारा तथा तिल इन सब को घी में मिलाकर लेपकरनेसे घाव भरजाताहै॥८७॥

कम्पिल्लकं विडङ्गानि वत्सकं त्रिफलां बलाम्। पटोलं पिचुमर्दञ्च लोध्रं मुस्तं प्रियंगुकम् ॥ ८८ ॥

कवीला वायविडंग इन्द्रयव हड़ बहेड़ा आमला वरियारा परवल नींव लोध नागर मोथा प्रियंगु ॥ ८८ ॥

खदिरं धातकीं सर्जमेलामगुरुचन्दने। पिष्ट्वा साध्यं भवेत्तैलं तत्परं व्रणशोधनम् ॥ ८९ ॥

कत्था धवई शाल इलायची छोटी अगर तथा चन्दन इन औषधियोंको पीसकर इनके साथ पाक कियागया तैल व्रणोंको अत्यन्त शुद्ध करता है ॥ ८९ ॥

प्रपौण्डरीकं मधुकं काकोल्यौ द्वे च चन्दने। सिद्धमेतैः समैस्तैलं तर्पणं व्रणरोपणम् ॥ ९० ॥

पुँडरिया मुलेठी काकोली क्षीरकाकोली तथा चन्दन इनके साथ पाक कियागया तैल तृप्तिकारी और घावों का भरनेवाला होता है ॥ ९० ॥

दूर्वास्वरससिद्धं वा तैलं कम्पिल्लकेन वा। दार्वीत्वचश्च कल्केन प्रधानं व्रणरोपणम् ॥ ९१ ॥

दूबके रसके साथ या कवीलेके साथ अथवा दारुहल्दी की छालके कल्कके साथ पाक कियागया तैल घावोंके भरने के लिये अत्यन्त श्रेष्ठ होता है ॥ ९१ ॥

येनैव विधिना तैलं घृतं तेनैव साधयेत्। रक्तपित्तोत्तरं दृष्ट्वा रोपणीयं घृतं तथा ॥ ९२ ॥

जिन औषधियों के साथ तैलका पाक करना कहागया है उनके साथ पाक कियाहुआ घी अधिक रक्तपित्तवाले व्रणको पूर्ण करने के लिये देना चाहिये ॥ ९२ ॥

कदम्बार्जुननिम्बानां पाटल्याः पिप्पलस्य च। व्रणप्रच्छादने विद्वान्पत्राण्यर्कस्य चादिशेत् ॥ ९३ ॥

कदम्ब अर्जुन नींब पाढ़र पीपर तथा मदार इनकी पत्ती व्रणोंपर ढकने के लिये श्रेष्ठ होती है ॥ ९३ ॥

राङ्कोऽथ वादरश्चैव पट्टो व्रणहितः स्मृतः। बन्धश्च द्विविधः शस्तो व्रणानां सव्यदक्षिणः ॥ ९४ ॥

रांक (मृगों के रोमसे बनाहुआ वस्त्र) बादर (सूती वस्त्र) तथा रेशमी वस्त्र व्रणों में बाँधने के लिये हित होते हैं व्रणों में वाम तथा दक्षिण दो प्रकार का बन्धन श्रेष्ठ होता है ॥ ९४ ॥

लवणाम्लकटूष्णानि विदाहीनि गुरूणि च। वर्जयेदन्नपानानि व्रणी मैथुनमेव च ॥ ९५ ॥

लवण अम्ल कटु उष्ण विदाही (जो दस्तु खट्टी डकार तृषा तथा हृदय में दाह उत्पन्न करके बहुत देरमें पचे उसे विदाही कहते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं) तथा भारी अन्नपान और मैथुन व्रणवाले को त्याग देना चाहिये ॥ ९५ ॥

नातिशीतगुरुस्निग्धमविदाहियथाक्रमम् । अन्नपानंव्रणहितंहितञ्चास्वपनंदिवा ॥ ९६ ॥

न बहुत शीतल न बहुत भारी तथा न बहुत स्निग्ध और अविदाही अन्नपान और दिन में न सोना व्रणोंमें हित होता है ॥९६॥

स्तन्यानिजीवनीयानिबृंहणीयानियानिच । उत्सादनार्थनिम्नानांव्रणानांतानिकल्पयेत् ॥ ९७ ॥

दुग्धवर्द्धक औषध जीवनीयगण में कहीहुई औषध और बृंहणीयगण में कहीहुई औषध निम्नव्रणों में उवटन के लिये हित होती है ॥ ९७ ॥

भूर्जग्रन्थ्यश्मकासीसमधोभागानिगुग्गुलुः । व्रणावसादनंतद्वत्कलविङ्ककपोतविट् ॥ ९८ ॥

भोजपत्र गँठिवन पाषाण भेद (हजरतजहूर) कसीस तथा गुग्गुल और गौरैयापक्षी तथा कबूतर की बीट इन के द्वारा अवसादन (फोडना) करना चाहिये ॥ ९८ ॥

रुधिरेऽतिप्रवृद्धेतुछिन्नेच्छेद्येऽधिमांसके । कफग्रन्थिषुगण्डेषुवातस्तम्भानिलार्त्तिषु ॥ ९९ ॥

काटने के योग्य मसोंके काटने से बहुत रुधिर निकल ने पर कफ ग्रंथियों में गलगण्डों में वातस्तम्भोंमें वात की पीड़ाओंमें ॥९९॥

गूढपूयलसीकेषुगम्भीरेषुस्थिरेषुच । क्लिन्नेषुचाङ्गदेशेषुकर्माग्नेः संप्रशस्यते ॥ १०० ॥

और छिपेहुये पीब तथा लसीकावाले गहिरे स्थित तथा क्लेदयुक्त व्रणों में अग्निकर्म्म (जलाना) श्रेष्ठ होता है ॥ १०० ॥

मधूच्छिष्टेनतैलेनमज्जाक्षौद्रवसाघृतैः । तप्तैर्वाविविधैर्लोहैर्दहेद्दाहविशेषवित् ॥ १०१ ॥

दाहकी विशेषताका जाननेवाला वैद्य उष्ण मोम तैल मज्जा शहद चर्बी तथा घी के द्वारा अथवा तपायेहुये लोहे के द्वारा व्रणों को जलावे ॥ १०१ ॥

रूक्षाणांसुकुमाराणांगम्भीरान्मारुतोत्तरान् । दहत्स्नेहैर्मधूच्छिष्टैर्लोहैःक्षौद्रैस्ततोघृतैः ॥ १०२ ॥

रूक्ष सुकुमार गम्भीर तथा अधिक वात युक्त व्रणों का घृतादि स्नेह तथा मोम के द्वारा जलावे और इनसे अन्यव्रणोंको शहद तथा लोहे के द्वारा जलावे ॥ १०२ ॥

बालदुर्बलवृद्धानांगर्भिण्यारक्तपित्तिनाम् । तृष्णाज्वरपरीतानामबलानांविषादिनाम् ॥ १०३ ॥

बालक वृद्ध दुर्बल गर्भिणी रक्तपित्त रोगी ज्वररोगी अतीसाररोगी तृषा से व्याकुल तथा बहुत दुःखी ॥ १०३ ॥

नाग्निकर्मोपदेष्टव्यंस्नायुमर्मव्रणेषुच । सविषेषुचशल्येषुनेत्रकुष्ठव्रणेषुच ॥ १०४ ॥

इनका अग्निकर्म्म हित नहीं होता स्नायु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा मर्ममेंहुये व्रण विषयुक्त व्रणशल्य युक्त (जिसके भीतर कांटाआदि हो) व्रण नेत्रों में हुये व्रण तथा कोष्ठ में हुये व्रण में अग्निकर्म वर्जित है ॥ १०४ ॥

रोगदोषबलापेक्षीमात्राकालाग्नि कोविदः । शस्त्रकर्माग्निकृत्येषुक्षारमप्यवचारयेत् ॥ १०५ ॥

मात्रा समय तथा अग्निबलका जाननेवाला वैद्य रोग दोष तथा बलका विचार करके शस्त्रकर्म्म तथा अग्निकर्म्म के योग्य व्रणों में क्षारका भी प्रयोग करे ॥ १०५ ॥

कठिनत्वंव्रणायान्तिगन्धैःसारैश्चधूपिताः । सर्पिर्मज्जावसाधूपैःशैथिल्यंयान्तिहिव्रणाः ॥ १०६ ॥

सुगन्धित वस्तु तथा वृक्षों के सारोंकेद्वारा धूप देने से व्रण कठोर होजाते हैं और घी मज्जा तथा चर्बीकेद्वारा धूप देने से व्रण शिथिल होजाता है ॥ १०६ ॥

रुजःस्रावाश्चगन्धाश्चक्रिमयश्चव्रणाश्रिताः । शैथिल्यंमार्दवंचापिधूपनेनोपशम्यति ॥ १०७ ॥

व्रणोंमें धूप देने से पीड़ा स्राव दुर्गन्ध तथा क्रिमि नष्ट होजाते हैं और शिथिलता अथवा कोमलता शान्त होती है ॥ १०७ ॥

लोध्रंन्यग्रोधशुङ्गानिखदिरंत्रिफलाघृतम् । प्रलेपोव्रणशैथिल्यंसौकुमार्यप्रबोधनः ॥ १०८ ॥

लोध वर्गदके टिंभुने कत्था त्रिफला तथा घी इनका लेप करने से व्रणों में सुकुमारता तथा शिथिलता होती है ॥ १०८ ॥

सरुजःकठिनाःस्तब्धानिरास्रावाश्चयेव्रणाः । यवचूर्णैःससर्पिष्कैर्बहुशस्तान्प्रलेपयेत् ॥ १०९ ॥

पीड़ायुक्त कठोर स्तब्ध तथा स्रावरहित व्रणोंमें घृतयुक्त यवोंके चूर्णका लेप बारम्बार करना बहुत श्रेष्ठ है ॥ १०९ ॥

मुद्गषष्टिकशालीनांपायसैर्वायथाक्रमम् । सघृतैर्जीवनीयैर्वातर्पयेत्तानभीक्ष्णशः ॥ ११० ॥

मूंग सांठीके चावल तथा शालिधानों की खीरकेद्वारा अथवा घृतयुक्त जीवनीयगणके द्वारा उनको बारम्बार तृप्त करना चाहिये ११०

ककुभोदुम्बराश्वत्थलोध्रजाम्बवकट्फलैः । त्वचमारवेवगृह्णन्तित्वक्चूर्णैश्चूर्णिताव्रणाः ॥ १११ ॥

अर्जुन गूलर पीपर लोध जामुन तथा कायफल इनकी छालके चूर्ण को व्रणपर बुरकाने से व्रणमें शीघ्रही त्वचा उत्पन्न होती है ॥ १११ ॥

मनःशिलैलामञ्जिष्ठालाक्षाचरजनीद्वयम् । प्रलेपःसघृतःक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरःपरः ॥ ११२ ॥

मैनशिल छोटी इलायची मँजीठ लाख हल्दी दारुहल्दी घी तथा शहद इनका लेप करनेसे व्रणकी त्वचा शुद्धहोजाती है॥ ११२॥

अयोरजःसकासीसंत्रिफलाकुसुमानिच । करोतिलेपःकृष्णत्वंसद्यएवनवत्वचि ॥ ११३ ॥

लोहेका चूर्ण कसीस त्रिफला तथा पुष्प

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विक्षेपणरोदनानि । पारुष्यकार्श्या रुणवर्णताचजीर्णेबलञ्चानिलजस्य रूपम् ॥ ८ ॥

अवसरके बिनाही हँसना मुसक्याना गाना नाचना बोलना हाथ पैर चलाना तथा रोना रूक्षता कृशता अरुणवर्ण होना और भोजन के पचजाने पर रोगका बढ़ना यह वातज उन्मादके लक्षणहैं ॥ ८ ॥

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् । उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्यहृदिश्रितंपूर्ववदेवकुर्यात् ॥ ९ ॥

अजीर्ण में भोजन करना और कड़ुई खट्टी विदाही) जो वस्तु खट्टी डकार तृषा तथा हृदय में दाह उत्पन्न करके बहुत देरमें पचती है उसे विदाही कहते हैं) तथा उष्ण वस्तु खाना इन कारणों से संचित हुआ पित्त उभड़ कर हृदयमें स्थितहो के स्वल्प सत्त्वगुणवाले पुरुषकी बुद्धि तथा स्मृतिको शीघ्रही नष्टकर के घोर उन्मादको उत्पन्न करताहै ॥ ९ ॥

अमर्षसंरम्भविनग्नभावाःसन्तर्जनाभिद्रवणौष्ण्यरोषाः । प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषःपीताचभःपित्तकृतस्यलिङ्गम् ॥ १० ॥

अमर्ष (सह न सकना) घबड़ाहट नग्न रहना तर्जना (डांकना) दौड़ना उष्णता क्रोध पीली कान्ति और छाया शीतल भोजन तथा शीतल जलकी इच्छा यह पित्तज उन्माद के लक्षण हैं ॥ १० ॥

संपूरणैर्मन्दविचेष्टनैश्चसोष्माकफो मर्मणिसम्प्रवृद्धः । बुद्धिंस्मृतिञ्चाप्युपहत्यचित्तंप्रमोहयन्सञ्जनयेद्विकारम् ॥ ११ ॥

बहुत भोजन करना तथा श्रम न करना इन कारणों से कफ पित्त के साथ हृदय में बहुत बढ़कर बुद्धि तथा स्मृति को नष्ट करके और चित्त को मोहित करके उन्मादको उत्पन्न करता है ॥ ११ ॥

वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्चनारीविविक्तप्रियतातिनिद्रा । छर्दिश्चलालाचबलञ्चभुङ्क्तेनखादिशौक्ल्यञ्चकफात्मकेस्यात् ॥ १२ ॥

स्वल्प बोलना हाथ पैरआदि बहुत न चलाना अरुचि स्त्रियोंमें रुचि एकान्त में रुचि बहुत सोना छर्दि लारबहना भोजनके उपरान्त रोग का बढ़ना और नखआदिका श्वेत होजाना यहकफज उन्मादके लक्षणहैं ॥१२॥

यःसन्निपातप्रभवोऽतिघोरःसर्वैःसमस्तैःसतुहेतुभिःस्यात् । सर्वाणिरूपाणिबिभर्त्तितादृग्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः ॥ १३ ॥

सन्निपातज उन्माद तीनों दोषों के निदानों से उत्पन्न होता है उस में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं और वह परस्पर विरोधी चिकित्सा के योग्य होने के कारण असाध्य होताहै ॥ १३ ॥

देवर्षिगन्धर्वपिशाचयक्षरक्षःपितॄणामभिधर्षणाधि । आगन्तुहेतुर्नियमव्रतादिमिथ्याकृतंकर्मचपूर्वदेहे ॥१४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवता ऋषि गंधर्व पिशाच यक्ष राक्षस तथा पितर इन का अनादर और पूर्वजन्म में अनुचितरीति से कियेगये नियम व्रतादि कर्म यह आगन्तुक उन्माद के कारणहैं ॥१४॥

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्य्यचेष्टाज्ञानादिविज्ञानबलादिभिर्य्यः । उन्मादकालोऽनियतश्चयस्यभूतोत्थमुन्मादमुदाहरेत्तम् ॥ १५ ॥

जिस उन्मादमें मनुष्य का बल वाणी वीर्य्य चेष्टा ज्ञान विज्ञान तथा विक्रम मनुष्यों कासा न होय और जिस उन्माद का कोई समय नियत (मुकर्रर) न होय उसे भूतज उन्माद जानना चाहिये ॥ १५ ॥

अदूषयन्तःपुरुषस्यदेहंदेवादयःस्वैश्चगुणप्रभावैः । विशन्त्यदृश्यास्तरसायथैवछायातपौदर्पणसूर्य्यकान्तौ ॥ १६ ॥

जैसे प्रतिबिम्ब तथा सूर्य्य का तेज दर्पण तथा सूर्य्यकान्तमणि (आतसीसीसा) में प्रवेश करते हैं उसी प्रकार देवता आदिक मनुष्यके शरीर में कोई दोष न उत्पन्न करके अदृश्यरूप से अपने २ गुणोंके तथा प्रभावके द्वारा प्रवेश करते हैं ॥ १६ ॥

आयातकालोहिसपूर्वरूपःप्रोक्तोनिदानेऽस्यपरंसुराद्यैः । उन्मादरूपाणिपृथङ्निबोधकालञ्चगम्यान्पुरुषांश्चतेषाम् ॥ १७ ॥

पहिले निदान स्थान में देवता आदिकोंके प्रवेश का समय और देवता आदिकों से होने वाले उन्मादके पूर्वरूप कहेगये हैं अब यहां पर उन्मादके लक्षण और समयसहित देवता आदिकोंके प्रवेशके योग्य पुरुष कहे जाते हैं तुम सुनो ॥ १७ ॥

तद्यथा,–सौम्यदृष्टिंगम्भीरमप्रधृष्यमकोपनमस्वप्नभोजनाभिलाषिणमल्पस्वेदमूत्रपुरीषवातंशुभगन्धंफुल्लपद्मवदनमितदेवोन्मत्तं विद्यात् ॥ १८ ॥

जैसे सौम्य दृष्टि गम्भीर अप्रधृष्य (जिस पर कोई दबाव न डालसके) क्रोध तथा निद्रा रहित भोजन में अभिलाषा न करनेवाले स्वल्प स्वेद मूत्र मल तथा वाणी वाले सुगंध युक्त और प्रफुल्लित कमलके समान मुखवाले उन्मत्त पुरुष को देवताओं के द्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ १८ ॥

गुरुवृद्धसिद्धर्षीणामभिशापाभिचाराभिध्यानानुरूपाहारचेष्टाव्याहारंतैरुन्मत्तंविद्यात् ॥ १९ ॥

गुरुवृद्ध सिद्ध तथा ऋषियोंके अनादरसे हुये उन्मादमें पुरुषके आहार आचार चेष्टा तथा व्यवहार गुरु आदिकोंके समानहोतेहैं ॥१९॥

अप्रसन्नदृष्टिमपश्यन्तंनिद्रालुंप्रतिहतवाचमनन्नाभिलाषारोचकाविपाकपरीतंपितृभिरुन्मत्तंविद्यात् ॥ २० ॥

शान्ति रहित मलीन दृष्टियुक्त बहुत सोने वाले बोलने में असमर्थ अन्नमें नहीं इच्छा करने वाले और अरुचि तथा अविपाक (अन्न का न पचना) युक्त पुरुष को पितरों के द्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चण्डंसाहसिकंतीक्ष्णंगम्भीरमप्रधृष्यंसुखवाद्यनृत्यगीतान्नपानस्नानपानमाल्यधूपगन्धरक्तवस्त्रबलिकर्महास्यकथायोगप्रियंशुभगन्धमितिगन्धर्वोन्मत्तंविद्यात् ॥ २१ ॥

चण्ड (अत्यन्तक्रोधी) साहसी तीक्ष्ण गम्भीर अप्रधृष्य (जिसपर कोई दबाव न डालसके) और मुखवाद्य (मुखसे बाजासा बजाना) नृत्य गीत अन्न पान स्नान माला धूप सुगन्ध बलिकर्म्म हास्य तथा कथामें अत्यन्त रुचियुक्त उन्मत्त पुरुष को गन्धर्वों के द्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ २१ ॥

असकृत्स्वप्नरोदनहास्यंनृत्यगीतवाद्यकथान्नपानस्नानमाल्यधूपगन्धरतिंरक्तविप्लुताक्षंद्विजातिवैद्यपरिवादिनंरहस्यभाषिणमितियक्षोन्मत्तंविद्यात् ॥ २२ ॥

बारम्बार सोना रोना हँसना गाना नाचना बजाना कथा भोजन पान (पीनेकी वस्तु) स्नान माला धूप तथा सुगन्धमें अत्यन्त रुचियुक्त रक्त तथा चञ्चल नेत्रवाले ब्राह्मण तथा वैद्योंकी निन्दा करने वाले और गुप्त वातोंके कहनेवाले उन्मत्त पुरुषको यक्षों के द्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ २२ ॥

नष्टनिद्रमन्नपानद्वेषिणमनाहारमप्रतिबलिनंशस्त्रशोणितमांसरक्तमाल्याभिलाषिणंसन्तर्जकमितिराक्षसोन्मत्तंविद्यात् ॥ २३ ॥

निद्रारहित भोजन तथा पान (पीने की वस्तु)से द्वेष करनेवाले लंघन करनेवाले महाबलवान् तर्जन (डाटनेवाले) और शस्त्र रुधिर मांस तथा रक्तवर्ण मालाओंमें रुचियुक्त उन्मत्त पुरुष को राक्षसोंकेद्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ २३ ॥

प्रहासनृत्यप्रधानंदेवविप्रवैद्यद्वेषावज्ञाभिष्टुतिवेदमन्त्रशास्त्रोदाहरणैःकाष्ठादिभिरात्मपीडनेनचब्रह्मराक्षसोन्मत्तंविद्यात् ॥ २४ ॥

बहुत हँसनेवाले बहुत नाचनेवाले देवता ब्राह्मण तथा वैद्योंसे द्वेष करनेवाले अनादर करनेवाले स्तोत्र वेदमंत्र तथा शास्त्रोंका उदाहरण देनेवाले और काष्ठ आदिकेद्वारा अपने शरीर को पीड़ित करनेवाले उन्मत्त पुरुष को ब्रह्मराक्षसकेद्वारा उन्मत्त जानना चाहिये ॥ २४ ॥

अस्वस्थचित्तंस्थानमलभमानंनृत्यगीतहासिनंबद्धाबद्धप्रभाषिणंसङ्कटकूटमलिनरथ्याचेलतृणेष्वारोहणरतिंसंभिन्नवर्णरूक्षस्वरंनग्नंविधावन्तंनैकत्रतिष्ठन्तंदुःखानिआवेदयन्तंनष्टस्मृतिंपिशाचोन्मत्तंविद्यात् ॥ २५ ॥

व्याकुल चित्तवाले कहींपर स्थिर होकर नहीं बैठनेवाले नृत्य गान तथा हास्यसे युक्त बद्धाबद्ध भाषण करनेवाले कूड़ा मार्ग के मलिन वस्त्र तथा तृणोंके ढेरपर चढ़नेकी इच्छा करनेवाले बिगड़ेहुये वर्णवाले रूखे स्वरवाले नग्न दौड़तेहुये अपने बैठनेके योग्य स्थान को कहीं नहीं पातेहुये दुःखों को प्रकट क-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रतेहुये और स्मृतिरहित उन्मत्त पुरुष को पिशाचों के द्वारा उन्मत्त जानना चाहिये २५॥

तत्रशौचाचारंतपःस्वाध्यायकोविदंनरंप्रायःशुक्लप्रतिपदित्रयोदश्याञ्चदेवाः धर्षयन्ति ॥ २६ ॥

तिसमें शौच आचार तप तथा स्वाध्याय में प्रवीण पुरुष के शरीर देवतालोग दोषको देखकर प्रायः शुक्लपक्षकी प्रतिपदा तथा त्रयोदशीके दिन आवेश करते हैं॥ २६ ॥

स्नानशुचिविविक्तसेविनंधर्मशास्त्रश्रुतिकाव्यकुशलंप्रायःषष्ठीनवम्योर्ऋषयः धर्षयन्ति ॥ २७ ॥

स्नान तथा पवित्र निर्जनस्थान का सेवन करनेवाले और धर्मशास्त्र वेद तथा काव्य में प्रवीण पुरुषके शरीरमें प्रायः ऋषिलोग षष्ठी तथा नवमी के दिन दोष देखकर आवेश करते हैं॥ २७॥

मातृपितृगुरुवृद्धसिद्धाचार्य्योपसेविनंप्रायोदशम्याममावास्यायाञ्चपितरः धर्षयन्ति ॥ २८ ॥

माता पिता गुरु वृद्ध सिद्ध तथा आचार्य्य का सेवन करने वाले पुरुषके शरीर में दोष देखकर प्रायः दशमी तथा अमावास्या के दिन पितर आवेश करते हैं॥ २८॥

गन्धर्वास्तुस्तुतिगीतवादित्ररतिंपरदारगन्धमाल्यप्रियंशौचाचारंद्वादश्यांचतुर्दश्याञ्चधर्षयन्ति ॥ २९ ॥

स्तुति गीत तथा वाद्य (बाजा) में रुचियुक्त परस्त्री तथा सुगन्धित मालाओं को चाहने वाले और शौच तथा आचारयुक्त पुरुष के शरीरमें दोष देखकर प्रायः द्वादशी तथा चतुर्दशीके दिन गन्धर्व आवेश करतेहैं॥२९॥

सत्त्वबलरूपगर्वशौर्य्ययुक्तंमाल्यानुलेपनंहास्यप्रियमतिवाक्करणंप्रायःशुक्लैकादश्यांसप्तम्याञ्चयक्षाः धर्षयन्ति ॥ ३० ॥

सत्त्व बल रूप अभिमान तथा शूरतायुक्त माला तथा चन्दनादि लेपमें रुचिवाले बहुत हास्य करने वाले और बहुत बोलने वाले पुरुषके शरीरमें दोष देखकर प्रायः शुक्लपक्ष की एकादशी तथा सप्तमी के दिन यक्षलोग आवेश करते हैं॥ ३० ॥

स्वाध्यायतपोनियमोपवासव्रतचर्य्यादेवयतिगुरुपूजारतिंभ्रष्टशौचंब्राह्मणमब्राह्मणंवाब्रह्मवादिनंशूरमानिनंदेवतागारसलिलक्रीडनरतिंप्रायःशुक्लपञ्चम्यांपूर्णचन्द्रदर्शनेचब्रह्मराक्षसाःधर्षयन्ति ॥ ३१ ॥

स्वाध्याय तप नियम उपवास व्रत देव यतियों की पूजा तथा गुरुओंकी पूजामें निरत शौचरहित ब्रह्मवादी शूरमानी (अपने को वीर मानने वाले) और देवताओं के मन्दिरों में तथा जलमें क्रीड़ा करने वाले ब्राह्मण अथवा किसी अन्यवर्ण वाले पुरुषके शरीर में दोष देखकर प्रायः शुक्लपक्ष की पञ्चमी तथा पौर्णमासी के दिन ब्रह्मराक्षस आवेश करते हैं॥ ३१ ॥

रक्षःपिशाचास्तुहीनसत्त्वपिशुनस्त्रैणलुब्धंप्रायोद्वितीयातृतीयाष्टमीषु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषंछिद्रमवेक्ष्यअभिधर्षयन्ति। इतिअपरिसंख्येयानां ग्रहाणामाविष्कृततयाह्यष्टावेतेव्याख्याताः ३२॥

हीनसत्त्व पिशुन (चुगुलखोर) स्त्रैण तथा लोभी पुरुषों के शरीर में दोष देखकर मायः द्वितीया तृतीया तथा अष्टमी के दिन राक्षस तथा पिशाच आवेश करते हैं इस प्रकार असंख्यग्रहों (आवेश करनेवालों)मेंसे यह बहुत मसिद्ध आठग्रह यहांपर कहेगये ३२॥

सर्वेषुअपितुखलुएषुयोहस्तावुद्यम्यरोषसंरम्भान्निःसंज्ञमन्येषु आत्मनिवापातयेत्सहिअसाध्योज्ञेयस्तथायःसाश्रुनेत्रोमेढ्रप्रवृत्तरक्तःक्षतजिह्वःप्रस्रुतनासिकश्छिद्यमानमर्माप्रतिहन्यमानपाणिःसततंविकूजन्दुर्वर्णस्तृषार्त्तःपूतिगन्धिश्चहिंसार्थीउन्मत्तोज्ञेयस्तंपरिवर्जयेत्॥ ३३॥

इन आठों मकारके उन्माद वालोंमें से जो रोगी अपने हाथों को उठाकर क्रोधके वेग से संज्ञारहित होकर अपने ऊपर या दूसरों के ऊपर फेंकता है उसे असाध्य जानना चाहिये जिस उन्मादवाले के नेत्रों से आँसू बहतेहों लिङ्गसे रुधिर बहताहो जिह्वा फटगईहो नासिका से जल बहताहो जो अपने मर्मोंको अपने हाथ से काटता हो हाथ पटकताहो लगातार कीकताहो जिसका वर्ण बिगड़गयाहो जो तृषासे व्याकुल हो जिसके शरीर से दुर्गंध आतीहो व जिसकी हिंसामें रुचिहो उसको असाध्य जानकर चिकित्सा न करे॥ ३३॥

रत्यर्चनकामोन्मादिनौतुभिषगभिचाराभिशापाभ्यांबुद्ध्वातदङ्गोपहारबलिश्रमेणमन्त्रभैषज्यविधिनाउपक्रमेत्॥ ३४॥

बुद्धिमान् वैद्य अभिशाप तथा आचार के द्वारा पूजन से उन्मत्त हुये तथा कामसे उन्मत्त हुये पुरुष को जानकर भेट वलि मंत्र तथा औषधिके द्वाराविधिपूर्वक चिकित्साकरे ३४॥

तत्रद्वयोरपिनिजागन्तुनिमित्तयोरुन्मादयोःसमासाविस्ताराभ्यांभेषजविधिंव्याख्यास्यामः॥ ३५॥

अब निज (वातादिदोष) तथा आगन्तु कारणोंसे होनेवाले दोनों मकार के उन्मादों की चिकित्सा संक्षेप तथा विस्तारपूर्वक कही जाती है॥ ३५॥

उन्मादेवातजेपूर्वंस्नेहपानंविशेषवित्। कुर्य्यादावृतमार्गेतुसस्नेहंमृदुशोधनम्॥ ३६॥

विशेषज्ञ वैद्य वातज उन्मादमें पहिले स्नेहपान करावे और जो स्रोत रुकेहुये हों तो स्नेहयुक्त मृदुशोधन(विरेचन) करावे॥३६॥

कफपित्तभवेप्यादौवमनंसविरेचनम्। स्निग्धस्विन्नस्यकर्त्तव्यंशुद्धेसंसर्जनक्रमः॥ ३७॥

कफज तथा पित्तज उन्माद में भी पहिले स्नेहन तथा स्वेदन कराके वमन तथा विरेचन करावे फिर शरीर के शुद्ध होजाने पर पथ्यका क्रम करके॥ ३७॥

निरूहणस्नेहवस्तीशिरसश्चविरेच

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नम् । ततःकुर्य्याद्यथादोषंतेषांभूयस्त्वमाचरेत् ॥ ३८ ॥

निरूहवस्ति स्नेहवस्ति (एकमकारका अमल) तथा शिरोविरेचन करावे दोषों के अनुसार वमन आदिकी अधिकता करनी चाहिये ॥ ३८ ॥

हृदिन्द्रियशिरःकोष्ठेसंशुद्धेवमनादिभिः । मनःप्रसादमाप्नोतिस्मृतिं संज्ञाञ्चविन्दति ॥ ३९ ॥

यहां वमन आदिके द्वारा हृदय इन्द्रिय शिर तथा कोष्ठ के शुद्ध होजाने पर मन प्रसन्न होजाता है और स्मृति तथा संज्ञा प्राप्त होती है ॥ ३९ ॥

शुद्धस्याचारविभ्रंशेतीक्ष्णंनावनमञ्जनम् । ताडनञ्चमनोबुद्धिदेहसंतर्जनंहितम् ॥ ४० ॥

यदि शरीर के शुद्ध होनेपर भी रोगी के आचरण ठीक नहीं तो तीक्ष्ण नस्य अंजन ताड़ना और मन बुद्धि तथा शरीर की तर्जना कराना हित होता है ॥ ४० ॥

यःशक्तोविनयेत्पट्टैःसंयम्यसुदृढैःसुखैः । अपेतलोष्टकाष्ठाद्यैःसंरोध्यश्चतमोगृहे ॥ ४१ ॥

यदि रोगी बलवान् होतो उसको पुष्ट कोमल वस्त्रों के द्वारा बांधकर ढले तथा काष्ठ आदि से रहित अँधेरी कोठरी में बन्दकरके सावधान करे ॥ ४१ ॥

तर्जनंत्रासनंदानंसान्त्वनंहर्षणंभयम् । विस्मयोविस्मृतेर्हेतोर्नयन्तिप्रकृतिंमनः ॥ ४२ ॥

तर्जन (डाटना) त्रासन (घवड़वाना) दान सान्त्वन (समझाना) प्रसन्न करना भय तथा विस्मय यह स्मृति के हेतु हैं इन से मन सावधान होजाता है ॥ ४२ ॥

प्रदेहोत्सादनाभ्यङ्गधूमपानञ्चसर्पिषः । प्रयोक्तव्यंमनोबुद्धिस्मृतिसंज्ञाप्रबोधनम् ॥ ४३ ॥

लेप उवटना अभ्यङ्ग (तैलआदिमर्दन) धूमपान तथा घृतपान इन के प्रयोग से मन बुद्धि स्मृति तथा संज्ञाका प्रकाश होताहै४३॥

सर्पिःपानादिरागन्तोर्मन्त्रादिश्चेष्यतेविधिः । अतःसिद्धतमान्योगाञ्छृणून्मादविनाशनान् ॥ ४४ ॥

आगन्तुक उन्माद की चिकित्सा में घृत पान आदि तथा मंत्र प्रयोग आदि विधिहित होती है इस्से अब उन्माद के नष्ट करनेवाले अत्यन्त सिद्ध (अजमायेहुये) योग कहे जाते हैं सुनो ॥ ४४ ॥

हिंगुसौवर्चलव्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम् । चतुर्गुणेगवांमूत्रेसिद्धमुन्मादनाशनम् ॥ ४५ ॥

हींग सोंचरनोन सोंठि पीपरि तथा मिर्च आठ २ तोले इन औषधियों के कल्क तथा चतुर्गुण गोमूत्र के साथ २५६ तोले घीका पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे इस घी के सेवन से उन्माद का नाश होता है ॥ ४५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विशालात्रिफलाकौन्ती देवदार्वेल वालुकम् । स्थिरानन्तारजन्यौद्वेशा रिवेद्वेप्रियंगुकम् ॥ ४६ ॥

इन्द्रायण त्रिफला रेणुका देवदारु एलुवा शालिपर्णी यवासा हल्दी दारुहल्दी काली सांई श्वेतसांई ॥ ४६ ॥

नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तीदाडिम केसरम् । तालीशपत्रंबृहतीमाल त्याःकुसुमंनवम् ॥ ४७ ॥

नीलोत्पल प्रियंगु छोटी इलायची मँजीठ जमालगोटे की जड़ अनार नागकेसर तालीसपत्र भटकटैया चमेली के नयेफूल ॥ ४७ ॥

विडङ्गंपृश्निपर्णीचकुष्ठंचन्दनपद्म कौ । कल्कैःकर्षसमैरेतैर्विंशत्यष्टा भिरेवच ॥ ४८ ॥

बायविडंग पृश्निपर्णी कूट चन्दन तथा पद्माख इन अट्ठाइस औषधियोंके तोले २ भर कल्क ॥ ४८ ॥

चतुर्गुणेजलेपक्त्वाघृतप्रस्थंविपाचये त् । अपस्मारेज्वरेकासेश्वासेमन्देऽ नलक्षये ॥ ४९ ॥

और चौगुणे जलके साथ चौंसठ तोले घी का पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे मिरगी ज्वर खांसी श्वास मन्दाग्नि क्षय ॥ ४९ ॥

वातरोगेप्रतिश्यायेतृतीयकचतुर्थ के । छर्द्यर्शोमूत्रकृच्छ्रेचविसर्पोपह तेषुच ॥ ५० ॥

वातरोग प्रतिश्याय तृतीयकज्वर चतुर्थक ज्वर छर्दि ववासीर मूत्रकृच्छ्र विसर्प चोट५०॥

कण्डुपाण्ड्वामयोन्मादविषमेहगदे षुच । भूतोपहतचित्तानांगद्गदाना मचेतसाम् ॥ ५१ ॥

खुजली पाण्डुरोग उन्माद विषज रोग (विषसे होनेवाले रोग) प्रमेह इन रोगों में इस घृतका व्यवहार करना चाहिये जिन के भूतलगाहो जिनके वचन गद्गदहों ॥ ५१ ॥

शस्तंस्त्रीणाञ्चबन्ध्यानांधन्यमायुर्व लप्रदम् । अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंसर्वग्रह विनाशनम् । कल्याणकमिदंसर्पिःश्रे ष्ठंपुंसवनेषुच ॥ ५२ ॥

इति कल्याणकंघृतम् ।

जिनका वीर्य्य क्षीण होगया हो और बन्ध्या स्त्री इनसब को यह घृत बहुत हितकारी होता है इसके सेवन से आयु तथा वलकी वृद्धि होतीहै और अलक्ष्मी पाप राक्षस तथा सम्पूर्ण ग्रहों का नाश होता है इस घृत को कल्याणक कहते हैं इसके सेवन से स्त्रियों के पुत्रही होते हैं कन्यानहीं होती हैं ॥ ५२ ॥

इति कल्याणकघृत ॥

एभ्यएवस्थिरादीनिजलेपक्त्वैकविं शतिम् । रसेतस्मिन्पचेत्सर्पिर्गृष्टि क्षीरचतुर्गुणे ॥ ५३ ॥ वीराद्विमाष काकोलीस्वयंगुप्तर्षभकर्द्धिभिः(?)। मेदयाचसमैःकल्कैस्तत्स्यात्कल्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एकंमहत्।बृंहणीयंविशेषेणसन्निपा तहरंपरम् ॥ ५४ ॥

इति महाकल्याणकंघृतम् ।

कल्याणक घृतमें कहीहुई शालिपर्णी आदिक इक्कीस औषधियोंके काढ़े एकवार व्याई हुई गऊके चौगुणे दूध और पृश्निपर्णी उर्द राजमाष काकोली किवाँच ऋषभक ऋद्धि तथा मेदा इनके समभाग कल्कके साथ पाक कियेगये घी को महाकल्याण कहते हैं यह घी धातुवर्द्धक और विशेष करके सन्निपात का अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ५३ । ५४ ॥

इति महाकल्याणकघृत ॥

जटिलांपूतनांकेशींचारटींमर्कटींव चाम् । त्रायमाणांजयांवीरांचोरकं कटुरोहिणीम् ॥ ५५ ॥

जटामासी हड़ शतावर कपिला किवाँच वच त्रायमाण गनियार क्षीरकाकोली चोरक कुटकी ॥ ५५ ॥

कायस्थांशूकरीं छत्रामतिच्छत्रांप लङ्कषाम् । महापुरुषदन्तांश्चवयःस्थां नाकुलीद्वयम् ॥ ५६ ॥

काकोली वाराहीकन्द सौंफ अगियाखर गुग्गुल माचिका गुर्च दो प्रकारकीनाई॥५६॥

कटम्भरांवृश्चिकालींस्थिराञ्चाहृत्यतै र्घृतम् । सिद्धंचातुर्थकोन्मादग्रहाप स्मारनाशनम् ॥ ५७ ॥

सोमपत्ता वृश्चिकाली तथा शालिपर्णी इनके साथ पाक कियागया घी चतुर्थकज्वर उन्माद ग्रहदोष तथा मिरगी को नष्ट करता है ॥ ५७ ॥

महापैशाचिकंनामघृतमेतद्यथामृत म् । बुद्धिस्मृतिकरञ्चैवबालानाञ्चा ङ्गवर्द्धनम् ॥ ५८ ॥

इति महापैशाचिकंघृतम् ।

इसको महापैशाचिक घृत कहते हैं यह अमृतके समान गुणकारी होताहै बुद्धि तथा स्मृतिको उत्पन्न करता है और बालकों के अंगों को बढ़ाता है ॥ ५८ ॥

इति महापैशाचिकघृत ॥

लशुनानांशतंत्रिंशदभयात्र्यूषणा त्पलम् । गवांचर्ममसीप्रस्थोद्व्याढकं क्षीरमूत्रयोः ॥ ५९ ॥

लहशुन १०० हड़ ३० सोंठ पीपरि तथा मिर्च चार चार तोले गौके चमड़े की स्याही ६४ तोले गौका दूध २५६ तोले गोमूत्र २५६ तोले ॥ ५९ ॥

पुराणसर्पिषःप्रस्थमेभिःसिद्धंप्रयोज येत् । हिंगुचूर्णपलंशीतेदत्त्वाचम धुमाणिकाम् ॥ ६० ॥

और पुराना घी ६४ तोले इन सबको एक में मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहजाय तब उतारकर छान लेवे फिर शीतल होजानेपर चार तोले हींग का चूर्ण तथा ३२ तोले शहद इसमें मिलावे ॥ ६० ॥

तद्दोषागन्तुसम्भूतानुन्मादान्विष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मज्वरान्। अपस्मारांश्चहन्त्याशुपानाभ्यञ्जननावनैः॥ ६१॥

इति लशुनाद्यंघृतम्।

पान अभ्यङ्ग तथा नस्यकेद्वारा इस घृतके सेवन से आगन्तुक उन्माद दोषज उन्माद विषमज्वर तथा मिरगी का शीघ्रही नाश होताहै॥ ६१॥

इति लशुनादिघृत॥

लशुनस्याविनष्टस्यतुलार्द्धंनिस्तुषीकृतम्। तदर्द्धंदशमूलस्यद्वयाढकेऽपांविपाचयेत्॥ ६२॥

छिलाहुआ लहशुन २०० तोले तथा दशमूल १०० तोले इनको ५१२ तोले जलमें डालकर पाककरे॥ ६२॥

पादशेषेघृतप्रस्थंलशुनस्यरसंतथा। कोलमूलकवृक्षाम्लमातुलुङ्गार्द्रकैरसैः॥ ६३॥ दाडिमाम्लसुरामस्तुकाञ्जिकाम्लैस्तदर्द्धिकैः। साधयेत्त्रिफलादारुलवणव्योषदीप्यकैः॥ ६४॥

जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतार के छानलेवे फिर उस जलमें चौंसठ तोले घी चौंसठ तोले लहशुन का रस बेर मूली तिंतिड़ीक बिजौरा निम्बू अदरख तथा अनार का रस बत्तिस २ तोले सुरा दही का तोड़ तथा कांजी बत्तिस २ तोले और त्रिफला दारुहल्दी सैंधव लवण सोंठि पीपरि मिर्च अजमोद॥ ६३। ६४॥

यमानीचव्यहिङ्ग्वम्लवेतसैश्चपलद्धिकैः। सिद्धमेतत्पिबेच्छूलगुल्मार्शोजठरापहम्॥ ६५॥ ब्रध्नपाण्ड्वामयप्लीहयोनिदोषज्वरक्रिमीन्। वातश्लेष्मामयान्सर्वानुन्मादश्चापकर्षति॥ ६६॥

इति द्वितीयलशुनाद्यंघृतम्॥

अजवाइन चव्य हींग तथा अमलवेत यह सब दो २ तोले मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इस घृत को पीने से शूल गुल्म बवासीर उदररोग बद्ध पाण्डुरोग पिलही योनिदोष ज्वर क्रिमि वात कफजरोग और सम्पूर्ण उन्माद इन सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है॥ ६५। ६६॥

इति द्वितीयलशुनादिघृत॥

हिंगुनाहिंगुपर्ण्याचसकायस्थावयःस्थया। सिद्धंसर्पिर्हितंतद्वद्वयःस्थाहिंगुरोचकैः॥ ६७॥

हींग हिंगुपर्णी काकोली तथा ब्राह्मी इनके साथ पाक कियागया घी उन्मादमें हित होता है ब्राह्मी हींग तथा भटयूरके साथ पाक कियागया घी॥ ६७॥

केवलंसिद्धमेभिर्वापुराणंपाययेतद्घृम्। पाययित्वोत्तमांमात्रांश्वभ्रेरुन्ध्याद्गृहेऽपिवा॥ ६८॥

अथवा किसी औषधके विनाही पाक कियागया पुराना घी उन्मादवाले को पिलावे और घी पिलाकर उसको किसी गड्ढेमें अथवा कोठरीमें बन्दकरे॥ ६८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विशेषतः पुराणञ्च घृतंतंपाययेद्भिषक्। त्रिदोषघ्नंपवित्रत्वाद्विशेषाद्ग्रहमोक्षणम् ॥ ६९ ॥

पुराना घी त्रिदोषनाशक तथा पवित्र होने के कारण विशेष करके ग्रहों को छुटाताहै इससे उन्मादवाले को पुराना घी विशेष करके वैद्य को पिलाना चाहिये ॥ ६९ ॥

गुणकर्माधिकंस्थानादास्वादात्कटुतिक्तकम् । उग्रगन्धंपुराणंस्याद्दशवर्षस्थितंघृतम् ॥ ७० ॥

नवीन घृतकी अपेक्षा पुराना घृत गुण तथा कर्ममें अधिक होता है जो घी कटु तिक्त तीक्ष्ण गन्धयुक्त दशवर्ष का पुराना ॥ ७० ॥

लाक्षारसनिभंशीतंतद्धिसर्वग्रहापहम् । मेध्यंविरेचनेष्वग्र्यंप्रपुराणमतःपरम् ॥ ७१ ॥

लाखके रसके समान वर्णयुक्त तथा शीतल होताहै उसे पुराणघृत कहते हैं और वह सम्पूर्ण ग्रहों को नाश करता है पुराणघृत मेधा को हित तथा विरेचनके लिये बहुत श्रेष्ठ होता है दशवर्ष से अधिक पुराने घीको प्रपुराण घृत कहते हैं ॥ ७१ ॥

नासाध्यंनामतस्यास्तियत्स्याद्वर्षशतास्थितम् । दृष्टंस्पृष्टमथाघ्रातंतद्धिसर्वग्रहापहम् । अपस्मारग्रहोन्मादवतांशस्तंविशेषतः ॥७२॥

एकसौ वर्षके पुराने घीके सेवन से ऐसा कोई रोग नहीं है जो शान्त न हो उसके देखने से स्पर्श करने से तथा सूंघने से सम्पूर्ण ग्रहों का नाश होता है मिरगी तथा देवता आदि ग्रहों के आवेश से होनेवाले उन्मादके लिये यह घी बहुतही श्रेष्ठ होताहै ॥ ७२ ॥

एतैरौषधवर्गैर्वाविधेयत्वंसगच्छति। अञ्जनोन्मादनालेपान्नावनादींश्च योजयेत् ॥ ७३ ॥

इन औषधियों द्वारा उन्मादवाले का उन्माद शान्त होजाता है जैसे अञ्जन उबटन लेप तथा नस्यआदि का प्रयोग उन्माद में करना चाहिये ॥ ७३ ॥

शिरीषोमधुकंहिंगुलशुनंतगरंवचाम् । कुष्ठञ्चबस्तमूत्रेणपिष्टंस्यान्नावनाञ्जनम् ॥ ७४ ॥

इति नस्याञ्जनम्।

सिरस मुलेठी हींग लहशुन तगर वच तथा कूट इनको बकरेके मूत्रमें पीस कर नस्य तथा अञ्जन में इनका प्रयोगकरे ॥ ७४ ॥

तद्वद्व्योषंहरिद्रेद्वेमञ्जिष्ठाहिंगुसर्षपाः । शिरीषबीजञ्चोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ७५ ॥

सोंठि पीपरि मिर्च हल्दी दारुहल्दी मजीठ हींग सरसों तथा सिरस के बीज इनको बकरे के मूत्र में पीसकर अञ्जन तथा नस्यमें इनका व्यवहार करने से उन्माद ग्रह तथा मिरगी का नाश होता है ॥ ७५ ॥

पिष्ठातुल्यमपामार्गहिंगुलंहिंगुपत्रिकाम् । वर्त्तिःस्यान्मरिचार्द्धांशापित्ताभ्यांगोश्रृगालयोः ॥ ७६ ॥

लटजीरा शिंगरफ तथा हिंगुपत्री ग्रह सम-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाग तथा मिर्च अर्द्धभाग इन सब का गऊ तथा शृगाल के पित्ते में मिलाकर बत्ती सी बना लेवे ॥ ७६ ॥

तथाञ्जयेदपस्मारभूतोन्मादज्वरार्दितान् । भूतार्त्तानमरार्त्तांश्चनरार्त्तांश्चैवगोमये ॥ ७७ ॥ मरिचश्चातपेमांससपित्तंस्थितमञ्जनम् । वैकृतंपश्यतःकार्य्यंदोषभूतहतस्मृतेः७८॥

इति अञ्जनम् ।

इस बत्ती को घिसकर मिरगी भूतोन्माद ज्वर भूतावेश देवतावेश तथा प्रेतावेश में अञ्जन लगावे भूतों के द्वारा जिसकी स्मृति नष्ट होगईहो और जिसको विकारयुक्त वस्तु दिखलाई देतीहों उसको गौके पित्ते में एक महीने तक धूपमें घोटींगई मिर्चों का अञ्जन हित होता है ॥ ७७ । ७८ ॥

सिद्धार्थकोवचाहिंगुकरञ्जेदेवदारु च । मञ्जिष्ठात्रिफलाश्वेताकटभीत्वक्कटुत्रिकम् ॥ ७९ ॥

सरसों वच हींग कञ्जा देवदारु मँजीठ त्रिफला श्वेतदूब मालकाङ्गनी की छाल॥७९॥

समांशानिप्रियंगुश्चशिरीषोरजनीद्वयम् । बस्तमूत्रेणपिष्टोऽयमगदःपानमञ्जनम् ॥ ८० ॥

सोंठि पीपरि मिर्च प्रियंगु सिरस के बीज हल्दी तथा दारुहल्दी इन औषधियों को बकरेके मूत्र में पीसकर पान अञ्जन ॥ ८० ॥

नस्यमालेपनञ्चैवस्नानमुद्वर्त्तनंतथा । अपस्मारविषोन्मादकृत्यालक्ष्मीज्वरापहः ॥ ८१ ॥

नस्य लेप स्नान तथा उबटन के द्वारा इन का सेवन करने से मिरगी विष उन्माद अलक्ष्मी ज्वर ॥ ८१ ॥

भूतेभ्यश्चभयंहन्तिराजद्वारेचशस्यते । सर्पिरेतेनसिद्धंवासगोमूत्रंतदर्थकृत् ॥ ८२ ॥

तथा भूतोंके भयका नाश होता और राजद्वारमें जाने से मनोरथ सिद्धहोते हैं इन्हीं औषधियों तथा गोमूत्रके साथ पाक कियेहुये घृत में भी यही गुण होते हैं ॥ ८२ ॥

प्रसेकेपीनसेगन्धैर्धूमवर्त्तिकृतांपिबेत् । वैरेचनिकधूमोक्तैःश्वेताद्यैर्वासहिंगुभिः ॥ ८३ ॥

उन्मादवाले के प्रसेक (नासिका से जल बहना) तथा पीनसरोग में अगरआदि सुगंधित वस्तुओं के द्वारा अथवा विरेचनकारी धूममें कहीहुई श्वेता आदि औषधि तथा हींग के द्वारा बत्ती बनाकर उस का धूम पिलाना चाहिये ॥ ८३ ॥

शल्लकोलूकमार्जारजम्बूकवृकबस्तजैः । मूत्रपित्तशकृल्लोमनखैश्चर्मभिरेवच ॥ ८४ ॥

स्याही उल्लू बिलार शृगाल भेड़िया तथा बकरा इन जीवों के मूत्र पित्ते मल रोम नख तथा चर्मके द्वारा ॥ ८४ ॥

सेकाञ्जनंप्रधमनंनस्यंधूमञ्चकारये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्। वातश्लेष्मात्मकेप्रायःपैत्तिकेच प्रशस्यते ॥ ८५ ॥ तिक्तकंजीवनीयञ्चसर्पिःस्नेहश्चमिश्रकः। शीतानि चान्नपानानिमधुराणिमृदूनिच॥८६॥

सेक (सींचना) अञ्जन धूप नस्य तथा धूमपान कराना चाहिये वात कफज तथा पित्तज उन्माद में प्रायः तिक्तकघृत जीवनीयगणकी औषधियों के साथ पाक किया गया घी पूर्वोक्त मिश्रक स्नेह और शीतल मधुर तथा कोमल अन्नपान हित होते हैं॥८५।८६॥

शंखकेशान्तसन्धौवामोक्षयेज्ज्ञो भिषक्शिराम्। उन्मादेविषमेचैव ज्वरेऽपस्मारएवच ॥ ८७ ॥

बुद्धिमान् वैद्य उन्माद विषमज्वर तथा मिरगीमें शंख (मत्थेकी हड्डी) तथा केशान्त संधिकी नस को चिरवाकर रुधिर निकलवावे ॥ ८७ ॥

घृतमांसवितृप्तंवानिवातेस्थापयेत्सुखम्। त्यक्त्वामतिस्मृतिभ्रंशंसंज्ञां लब्ध्वाप्रबुध्यते ॥ ८८ ॥

उन्मादवाले को घी तथा मांस तृप्तिपूर्वक खिलाकर वायुरहित स्थान में सुखपूर्वक [रख]दे ऐसा करने से रोगी बुद्धि तथा स्मृतिके (भ्रष्टहोजाना) को त्याग करके संज्ञा कर उन्माद रहित होजाता है ॥ ८८ ॥

[आ]श्वासयेत्सुहृद्वातंवाक्यैर्धर्मार्थहेतैः। ब्रूयादिष्टविनाशंवादर्शनेदद्भुतानिवा ॥ ८९ ॥

उन्मादवाले को मित्रलोग धर्मार्थयुक्त बातों से समझावें अथवा उन्मादवाले से प्रिय वस्तु का नाश कहदेवे या अद्भुत वस्तु दिखावे ॥ ८९ ॥

बद्धासर्षपतैलाक्तंन्यसेद्वोत्तानमातपे। कपिकच्छ्वाथवातप्तैर्लौहतैलजलैःस्पृशेत् ॥ ९० ॥

या उसके शरीर में सरसों का तैल लगाकर बांधकर धूप में उताना करके उसको लिटावें अथवा किवाँच की फली या उष्णलोह तैल तथा जलका स्पर्श उसे करावे ॥ ९० ॥

कशाभिस्ताडयित्वावासुबद्धंविजनेगृहे। रुन्ध्याच्चेतोहिविभ्रान्तंव्रजत्यस्यथाशमम् ॥ ९१ ॥

अथवा कोड़ोंसे उसे पीटकर बान्धकर निर्जन गृह में बन्दकरे ऐसा करने से उस का भ्रान्ति युक्त चित्त शान्तिको प्राप्तहोताहै ९१॥

सर्पेणोद्धृतदंष्ट्रेणदान्तैःसिंहैर्गजैश्चतम्। त्रासयेच्छस्त्रहस्तैर्वातस्करैःशत्रुभिस्तथा ॥ ९२ ॥

जिसकी दाढ़ उखाड़ली गई हो ऐसे सर्प वशीभूत सिंह तथा हाथी शस्त्रधारी चोर अथवा शस्त्रधारी शत्रुओं के द्वारा उन्मादवाले को डरवावे ॥ ९२ ॥

अथवाराजपुरुषाबहिर्नीत्वासुसंयतम्। त्रासयेयुर्वधेनैनंतर्जयन्तोनृपाज्ञया ॥ ९३ ॥

अथवा राजाकी आज्ञासे राजाके सिपाही उन्मत्त पुरुष को घरके बाहरलेजाकर बाँधके डाँटें और मारडालने का भय दिखावें ९३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देहदुःखभयेभ्योहिपरंप्राणभयंमहत् । तेनयातिशमंतस्यसर्वतोविप्लुतंमनः ॥ ९४ ॥

क्योंकि शरीर के दुःख तथा भय से प्राणों का भय बहुत अधिक होता है उस भयसे उन्मात्त पुरुषका चञ्चलमन सब ओर से हटकर शांति को प्राप्त होता है ॥ ९४ ॥

इष्टद्रव्यविनाशात्तुमनोयस्योपहन्यते । तस्यतत्सदृशप्राप्तिशान्त्याश्वासैःशमंनयेत् ॥ ९५ ॥

जिसका मन किसी प्रियवस्तु के नाश से बिगड़ गयाहो उसको वैसेही वस्तु देकर समझाके शान्तकरे ॥ ९५ ॥

कामशोकभयक्रोधहर्षेर्ष्यालोभसम्भवान् । परस्परप्रतिद्वन्द्वैरेभिरेवशमंनयेत् ॥ ९६ ॥

काम शोक भय हर्ष क्रोध ईर्षा तथा लोभ से उत्पन्न हुये उन्मादों को परस्पर विरोधी इन्हीं कामादिकों के द्वारा शान्त करै अर्थात् कामज उन्माद को शोकके द्वारा तथा शोकज उन्मादको काम के द्वारा शान्त करे इत्यादि ॥ ९६ ॥

बुद्ध्वादेशंवयःसात्म्यंदोषंकालंबलाबलम् । चिकित्सितमिदंकुर्य्यादुन्मादेभूतदोषजे ॥ ९७ ॥

बुद्धिमान् वैद्य भूतज उन्माद में देश अवस्था सात्म्य दोष समय तथा बलाबलका विचार करके यह (पूर्वोक्त) चिकित्सा करे९७॥

देवर्षिपितृगन्धर्वैरुन्मत्तस्यतुबुद्धिमान् । वर्जयेदञ्जनादीनितीक्ष्णानिक्रूरकर्मच ॥ ९८ ॥

देवता ऋषि पितर तथा गंधर्वोंके द्वारा उन्मत्त हुये पुरुष के लिये तीक्ष्ण अञ्जनआदि तथा ताड़नादि क्रूर कर्म्म हित नहीं होता है ॥ ९८ ॥

सर्पिष्पानादितस्येहमृदुभैषज्यमाचरेत् । पूजांबल्युपहारांश्चमन्त्राञ्जनविधींस्तथा ॥ ९९ ॥ शान्तिकर्मेष्टिहोमांश्चजप्यस्वस्त्ययनानि च । वेदोक्तान्नियमांश्चापिप्रायश्चित्तानिचाचरेत् ॥ १०० ॥

उनके लिये घृतपान आदि मृदु चिकित्सा पूजा बलि भेंट मंत्र अञ्जन विधि शान्तिकर्म यज्ञ होम जप स्वस्त्ययन वेदोक्तनियम तथा प्रायश्चित्त करने चाहिये ॥ ९९ । १०० ॥

भूतानामधिपंदेवमीश्वरंजगतःप्रभुम् । पूजयन्प्रयतोनित्यंजयत्युन्मादजंभयम् ॥ १०१ ॥

भूतोंके अधिपति जगत् के प्रभु श्री शिवजी का पवित्र होकर नित्य पूजन करनेसे उन्माद का भय नहीं होता है ॥ १०१ ॥

रुद्रस्यप्रमथानामगणालोकेचरन्तिये । तेषांपूजाञ्चकुर्वाणउन्मादेभ्यःविमुच्यते ॥ १०२ ॥

रुद्र देवता के प्रमथनामगण सम्पू[र्ण] तथा सार में विचरण करते हैं उनका पूजन [कर]नेसे उन्माद का नाश होता है ॥ १०२ ॥

बलिभिर्मङ्गलैर्होमैरौषध्यगदधार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐः। सत्याचारतपोज्ञानप्रदान नियमव्रतैः॥ १०३॥

बलि मंगल होम औषध विषनाशक औषधियोंका धारण सत्य आचार तप ज्ञान दान नियम व्रत॥ १०३॥

देवगुह्यकविप्राणांगुरूणांपूजनेन च। आगन्तुःप्रशमंयातिसिद्धैर्मन्त्रौषधैस्तथा॥ १०४॥

और देवता गुह्यक ब्राह्मण तथा गुरुवोंका पूजन और सिद्ध मंत्र तथा सिद्ध औषध इन के द्वारा आगन्तुक उन्माद का नाश होता है॥ १०४॥

यच्चोपदेक्ष्यतेकिञ्चिदपस्मारेचिकित्सिते। उन्मादेतच्चकर्त्तव्यंसामान्याद्धेतुदूष्ययोः॥ १०५॥

मिरगी की चिकित्सा में जो कुछ उपदेश किया जायगा वह उन्माद में भी करना चाहिये क्योंकि उन्माद तथा मिरगी के कारण और दूष्य (दूषित होनेवाले) समान होते हैं॥ १०५॥

निवृत्तामिषमद्योयोहिताशीप्रयतः शुचिः। निजागन्तुभिरुन्मादैःसत्त्ववान्नसयुज्यते॥ १०६॥

जो पुरुष मांस तथा मद्य का सेवन नहीं करताहै हित वस्तु खाताहै और निर्मल तथा पवित्र रहता है वह सत्ववान् पुरुष निज तथा आगन्तुक इन दोनों प्रकारके उन्मादोंसे युक्त नहीं होता॥ १०६॥

प्रसादश्चेन्द्रियार्थानांबुद्ध्यात्ममनसांतथा। धातूनांप्रकृतिस्थत्वंविगतोन्मादलक्षणम्॥ १०७॥

इन्द्रिय विषय बुद्धि आत्मा तथा मन की प्रसन्नता और धातुओं का स्वाभाविक होना यह उन्माद नष्ट होने के लक्षण हैं॥ १०७॥

तत्रश्लोकः।

उन्मादानांसमुत्थानंलक्षणंसचिकित्सितम्। निजागन्तुनिमित्तानामुक्तवान्भिषगुत्तमः॥ १०८॥

इत्युन्मादचिकित्सितेचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

तिसमें यह श्लोक है। इस उन्माद चिकित्सितनाम अध्याय में वैद्यवर भगवान् आत्रेयजी ने निज तथा आगन्तुज उन्मादों के निदान लक्षण तथा यत्न कहे हैं॥ १०८॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें चिकित्सास्थानकाउन्मादचिकित्सितनाम चौदहवांअध्याय समाप्तहुआ॥ १४॥

पन्द्रहवांअध्याय॥

अपस्मारचिकित्सितम्।

स्मृतेरपगमंप्राहुरपस्मारंभिषग्विदः। तमःप्रवेशबीभत्सचेष्टंधीसत्त्वसंप्लवात्॥ ३॥

इसके उपरान्त अपस्मार चिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान आत्रेयजीने कहा॥

बुद्धिमान् वैद्य बुद्धि तथा मनके भ्रष्ट होजाने से जिस रोगमें स्मृतिका नाश अन्धकारसा मालूम होना और निन्दित चेष्टा यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लक्षण होते हैं उस रोग को अपस्मार (मिरगी) कहते हैं ॥ १ ॥

विभ्रान्तबहुदोषाणामहिताशुचिभोजिनाम् । रजस्तमोभ्यांविहतेसत्त्वेदोषावृतेहृदि ॥ २ ॥

भ्रान्तियुक्त बहुत दोषवाले और अपवित्र तथा अहित भोजन करनेवाले पुरुषोंके रजोगुण तथा तमोगुण से सत्त्वके नष्ट होजानेपर दोषोंकेद्वारा हृदयके ढकजानेपर ॥ २ ॥

चिन्ताकामभयक्रोधशोकोद्वेगादिभिस्तथा । मनस्यभ्याहतेनॄणामपस्मारःप्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

और चिन्ता काम भय क्रोध शोक तथा उद्वेग (घबड़ाहट) आदिकेद्वारा मनके विह्वल होजानेपर मनुष्यों के अपस्मार (मिरगी) रोग उत्पन्न होताहै ॥ ३ ॥

धमनीभिःश्रितादोषाहृदयंपीडयन्तिहि । सम्पीड्यमानोव्यथतेमूढोभ्रान्तेनचेतसा ॥ ४ ॥

अपस्मार रोगमें वातादि दोष नाड़ियों के द्वारा हृदयका आश्रय करके रोगी को पीड़ित करते हैं इससे वह पीड़ित मनुष्य चित्तके भ्रांत होजाने के कारण मोह तथा व्यथा से युक्त होता है ॥ ४ ॥

पश्यत्यसन्तिरूपाणिपततिप्रस्फुरत्यपि । जिह्वाक्षिभ्रूसवक्त्रालोहस्तौपादौचविक्षिपन् ॥ ५ ॥

अविद्यमान रूपों को देखता है पृथ्वी में गिरपड़ता है हाथ पैर पटकताहै उसकी जिह्वा नेत्र तथा भृकुटी फड़कती हैं और उसके मुख से लार बहती है ॥ ५ ॥

दोषवेगेचविगतेसुप्तवत्प्रतिबुद्ध्यते । पृथग्दोषैःसमस्तैश्चवक्ष्यतेसचतुर्विधः ॥ ६ ॥

फिर कुछकालमें दोषोंके वेगके निवृत्त होजानेपर वह स्वस्थके समान उठ बैठताहै वातज पित्तज कफज तथा सन्निपातज इन भेदों से अपस्मार चार प्रकारका होताहै ॥ ६ ॥

कम्पतेदशतेदन्तान्फेनोद्वामीश्वसित्यपि । परुषाणिचकृष्णानिपश्येद्रूपाणिचानिलात् ॥ ७ ॥

काँपना दाँतकड़कड़ाना मुखसे फेना निकलना श्वास और कठोर तथा काले स्वरूप दिखाई देना यह वातज अपस्मार के लक्षण हैं ॥ ७ ॥

पीतफेनाङ्गवक्त्राक्षःपीतासृग्रूपदर्शनः । सतृष्णश्चानलव्याप्तलोकदर्शीचपैत्तिकः ॥ ८ ॥

फेना अंग मुख तथा नेत्रोंका पीतवर्ण होना पीले तथा लालरूप दिखाई देना तृषा और सम्पूर्ण संसार अग्निसे व्याप्तसा मालूम होना यह पित्तज अपस्मार के लक्षण हैं ॥ ८ ॥

शुक्लफेनाङ्गवक्त्राक्षःशीतहृष्टाङ्गजोगुरुः । पश्यञ्छुक्लानिरूपाणिश्लैष्मिकोमुच्यतेचिरात् ॥ ९ ॥

फेना अंग मुख तथा नेत्रोंका श्वेत होना शीत रोमांच शरीर का भारीपन और श्वेत रूप दिखादेना यह कफज अपस्मार के लक्षण हैं अन्य अपस्मारों की अपेक्षा कफज अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पस्मार का वेग देरमें शान्त होता है॥ ९॥

सर्वैरेतैःसमस्तैस्तुलिंगैर्ज्ञेयस्त्रिदोषजः। अपस्मारःसचासाध्योयःक्षीणस्यानवश्चयः॥ १०॥

वातज आदि तीनों अपस्मारों के लक्षण जिसमें हों उसे सन्निपातज अपस्मार जानना चाहिये सन्निपातज अपस्मार क्षीणपुरुषका अपस्मार और पुराना अपस्मार असाध्य होता है॥ १०॥

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः। अपस्मारायकुर्वन्ति वेगंकिञ्चिदथान्तरम्॥ ११॥

कुपित वातादि दोष पंद्रह दिनके उपरान्त बारह दिनके उपरान्त अथवा महीने भर के उपरान्त अपस्मार के वेग को उत्पन्न करते हैं अथवा इस समय से कुछ अधिक तथा कुछ न्यून समय में भी अपस्मार के वेगको उत्पन्न करते हैं॥ ११॥

तैरावृतानांहृत्स्रोतो मनसांसम्प्रबोधनम्। तीक्ष्णैरादौभिषक्कुर्यात्कर्मभिर्वमनादिभिः॥ १२॥

दोषों के द्वारा ढकेहुये हृदय स्रोत तथा मनको चैतन्य करने के लिये पहिले बुद्धिमान् वैद्य तीक्ष्ण वमन आदि के द्वारा चिकित्साकरे॥ १२॥

वातिकंवस्तिभूयिष्ठैः पैत्तंप्रायोविरेचनैः। श्लैष्मिकंवमनप्रायैरपस्मारंसमाचरेत्॥ १३॥

वातज अपस्मार में प्रायः वस्ति पित्तज अपस्मार में प्रायः विरेचन और कफज अपस्मार में प्रायः वमनका प्रयोग करना चाहिये॥ १३॥

सर्वतःसुविशुद्धस्यसम्यगाश्वासितस्यच। अपस्मारविमोक्षार्थंयोगान्संशमनाञ्छृणु॥ १४॥

सब प्रकार से शुद्ध शरीरवाले और अच्छी प्रकार आश्वासित (तसल्ली दियेगये) पुरुषके अपस्मार (मिरगी) को नष्टकरनेके लिये संशमन योग कहे जाते हैं तुम सुनो १४॥

गोशकृद्रसदध्यम्लक्षीरमूत्रैःसमैर्घृतम्। सिद्धंपिबेदपस्मारकामलाज्वरनाशनम्॥ १५॥

इति पञ्चगव्यंघृतम्।

समभाग गौके गोबरके रस खट्टे दही दूध तथा मूत्रके साथ पाक कियागया घी अपस्मार कामला तथा ज्वरको नष्टकरताहै १५॥

इति पंचगव्यघृत॥

द्वेपंचमूलेत्रिफलारजन्यौ कुटजत्वचम्। सप्तपर्णमपामार्गं नीलिनींकटुरोहिणीम्॥ १६॥

दशमूल त्रिफला हल्दी दारुहल्दी कुरैया कीछाल छितवन लटजीरा नील कुटकी १६॥

सम्पाकम्फल्गुमूलंच पौष्करंसदुरालभम्। द्विपलानिजलद्रोणेपक्त्वापादावशेषिते॥ १७॥

आमिलतास कठगूलर की जड़ पुष्करमूल तथा जवासा आठ २ तोले इन सब औषधियों को लेकर एकहजार चौबीस तोले जलमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालके पाककरे जब चौथाई जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर उस काढ़ेमें १७॥

भार्गींपाठांत्रिकटुकां त्रिवृतांनिचुलानिच । श्रेयसींमाढकींमूर्वांदन्तींभूनिम्बचित्रकौ ॥ १८ ॥

भारंगी पाढ़र सोंठि पीपरि मिर्च निशोथ समुद्र फल गजपीपरि अरहर मरोरफली जमालगोटे की जड़ चिरायता चीता ॥ १८ ॥

द्वेशारिवेरोहिषञ्च भूतीकंमदयन्तिकाम् । क्षिपेत्पिष्ट्वाक्षमात्राणितेनप्रस्थंघृतात्पचेत् ॥ १६ ॥

दोनों प्रकारकी साईं रोहिष अगियाखर तथा चमेली तोले २ भर इन सब औषधियों का कल्क गऊका घी ६४ तोले ॥ १९ ॥

गोशकृद्रसदध्यम्लक्षीरमूत्रैश्चतत्समैः । पञ्चगव्यमितिख्यातंमहत्तदमृतोपमम् ॥ २० ॥

गऊके गोबरका रस ६४ तोले गऊका खट्टा दही ६४ तोले गऊका दूध ६४ तोले और गोमूत्र ६४ तोले मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे इसे महापंचगव्य घृत कहते हैं यह अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ २० ॥

अपस्मारेतथोन्मादे श्वयथावुदरेषु च । गुल्मार्शःपाण्डुरोगेषुकामलासुभगन्दरे । अलक्ष्मीग्रहरोगघ्नंचातुर्थिकविनाशनम् ॥ २१ ॥

इति महापञ्चगव्यंघृतम् ।

इसके सेवन से अपस्मार उन्माद शोथ उदर गुल्म बवासीर पाण्डुरोग कामला भगन्दर अलक्ष्मी ग्रह दोष तथा चातुर्थिक ज्वर का नाश होता है ॥ २१ ॥

इति महापंचगव्यघृत ॥

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठशङ्खपुष्पीभिरेव च । पुराणंघृतमुन्मादालक्ष्म्यपस्मारपाप्मजित् ॥ २२ ॥

ब्राह्मी के रस बच कूट तथा शंखपुष्पी इनके साथ पाक कियेगये पुराने घीका सेवन करने से उन्माद अलक्ष्मी मिरगी तथा पामा का नाश होता है ॥ २२ ॥

घृतंसैन्धवहिंगुभ्यां वार्षेबास्तेचतुर्गुणे । मूत्रेसिद्धमपस्मारहृद्ग्रहामयनाशनम् ॥ २३ ॥

सैंधव लवण हींग और वर्षाके चतुर्गुण जल तथा गोमूत्र के साथ पाक कियागया घी मिरगी तथा हृद्ग्रह (हृदयका जकड़जाना) को नष्टकरता है ॥ २३ ॥

वचासम्पाककैटर्य्यवयःस्थाहिंगुरोचकैः । सिद्धंपलङ्कषायुक्तैर्वातश्लेष्मात्मकेघृतम् ॥ २४ ॥

वच अमिलतास कायफल हड़ हींग भंटिउर तथा गुग्गुल के साथ पाक कियागया घी वात कफज मिरगी को नष्टकरता है ॥ २४ ॥

तैलप्रस्थंघृतप्रस्थं जीवनीयैःपलोन्मितैः । क्षीरद्रोणेपचेत्सिद्धमपस्मारविनाशनम् ॥ २५ ॥

जीवनीयगण की चार २ तोले सम्पूर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

औषधियों के साथ एकहजार चौबीस तोले दूध ६४ तोले तैल तथा ६४ तोले घीका पाककरे जब दूध जलजाय केवल घी तथा तैल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे इस घी के सेवन से मिरगी का नाश होताहै ॥ २५ ॥

कंसेक्षीरेक्षुरसयोःकाश्मर्य्येऽष्टगुणे रसे। कार्षिकैर्जीवनीयैश्च घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ २६ ॥

दूध १२८ तोले ईखरस १२८ तोले अठगुना खँभारीका रस और जीवनीयगण की तोले २ भर सब औषधि इनके साथ ६४ तोले घीका पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी वाकी रहे तब उतारकर छानलेवे ॥ २६ ॥

वातपित्तोद्भवंक्षिप्रमपस्मारंनियच्छति। तद्वत्काशविदारीक्षुकुशक्वाथशृतंघृतम् ॥ २७ ॥

इस घृतके सेवन से वात पित्तज अपस्मार का शीघ्रही नाश होता है तिसी प्रकार काश बिलाईकन्द ईख तथा कुशके काढ़े और जीवनीयगण के कल्कके साथ पाक कियागया घी वात पित्तज अपस्मार को नष्ट करताहै२७

मधुकद्विपलेकल्केद्रोणेचामलकीरसात्। तद्वत्सिद्धोघृतप्रस्थःपित्तापस्मारभेषजम् ॥ २८ ॥

आठ तोले मुलेठी के कल्क तथा एकहजार चौबीस तोले आमलों के रसके साथ पाक कियागया ६४ तोले घी पित्तज अपस्मार को नष्ट करता है ॥ २८ ॥

अभ्यङ्गःसार्षपंतैलंबस्तमूत्रेचतुर्गुणे। सिद्धंस्याद्गोशकृन्मूत्रैस्स्नानोत्सादनमेवच ॥ २९ ॥

अपस्मार रोगमें वकरेके चौगुने मूत्रके साथ पाक कियेगये कडुवे तैलका मर्दन गोवरका उवटन और गोमूत्र से स्नान करना चाहिये ॥ २९ ॥

कटभिनिम्बकट्वङ्गमधुशिग्रुत्वचांरसे। सिद्धंमूत्रसमंतैलमभ्यङ्गार्थेप्रशस्यते ॥ ३० ॥

मालकाङ्गनी नींव सरिवन मुलेठी सहिंजन तथा वच इनके काढ़े और गोमूत्र के साथ पाक कियेगये समभाग तैलका मर्दन अपस्मारमें हित होताहै ॥ ३० ॥

पलङ्कषावचापथ्यावृश्चिकाल्यर्कसर्षपैः ॥ जटिलापूतनाकेशीनाकुलीहिंगुचोरकैः ॥ ३१ ॥

गुग्गुल बच हड़ वृश्चिक मदार सरसों जटामाँसी हड़ शतावर रास्ना हींग चोरक ३१॥

लशुनातिरसाचित्राकुष्ठैर्विड्भिश्च पक्षिणाम्। मांसाशिनांयथालाभं बस्तमूत्रेचतुर्गुणे ॥ ३२ ॥

लहशुन अतिरसा चीता कूट तथा मांस खानेवाले पक्षियों की यथालाभ (जितनी मिलसके) विष्ठा और बकरेके चतुर्गुण मूत्र के साथ ॥ ३२ ॥

सिद्धमभ्यञ्जनंतैलमपस्मारविनाशनम्। एतैश्चैवौषधैःकार्य्यंधूपनंसम्प्रलेपनम् ॥ ३३ ॥

पाक कियागया तैलमर्दन करनेसे मिरगी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को नष्ट करताहै और इन्हीं औषधियोंकेद्वारा धूप तथा लेपभी अपस्मारवालेको हितहै ३ ३॥

पिप्पलींलवणंशिग्रुहिंगुहिंगुशिवाटिकाम् । काकोलींसर्षपान्काकनासांकैटर्य्यचन्दने ॥ ३४ ॥

पीपरि सैंधव लवण सहिंजन हींग वंशपत्री काकोली सरसों कौवाठोढ़ी कायफल चन्दन ॥ ३४ ॥

शुनःस्कन्धास्थिनखरान्पर्शुकांश्चेतिपेषयेत् । बस्तमूत्रेणपुष्यर्क्षेप्रदेहःस्यात्सधूपनः ॥ ३५ ॥

और कुत्तेके कन्धे की हड्डी नख तथा पशुली की हड्डी इन सबको बकरेके मूत्रमें पुष्यार्क (पुष्य नक्षत्र युक्त इतवार) के दिन पीसकर अपस्मारवाले के शरीर में लेप लगाना चाहिये तथा धूप देनी चाहिये ॥ ३५ ॥

अपेतराक्षसीकुष्ठपूतनाकेशिचोरकैः । उत्सादनंमूत्रपिष्टैर्मूत्रैरेवावसेचनम् ॥ ३६ ॥

तुलसी कूट हड़ काकमाँची तथा शंख कौड़ी इनको गोमूत्रमें पीसकर अपस्मारवाले के शरीर में उबटन लगवाकर गोमूत्र से सिंचावे ॥ ३६ ॥

जलौकाशकृतातद्वद्दग्धैर्वाबस्तलोमभिः । खरास्थिभिर्हस्तिनखैस्तथागोपुच्छलोमभिः ॥ ३७ ॥

चिमगोदरकी विष्ठा बकरेके रोमोंकी भस्म गधेकी हड्डी हाथीके नख तथा गौके पूंछके रोमोंकेद्वारा अपस्मारमें लेप करना चाहिये ३७

कपिलानांगवांमूत्रंनावनंपरमंहितम् । श्वशृगालविडालानांसिंहादीनाञ्चशस्यते ॥ ३८ ॥

श्वेत गौके मूत्रकी नस्य लेना अपस्मार में बहुत हित है और कुत्ता शृगाल बिलार तथा सिंह आदिके मूत्रकी नस्य लेना अपस्मार में हित है ॥ ३८ ॥

भार्गीवचानागदन्तीश्वेताश्वेताविषाणिका । ज्योतिष्मतीनागदन्तीपादोत्थामूत्रपेषिताः ॥ ३९ ॥

योगास्त्रयोऽतःषड्बिन्दून्पञ्चवानावयेद्भिषक् । त्रिफलाठ्योषपीतद्रुयवक्षारफणिज्झकैः ॥ ४० ॥

भारंगी वच तथा नागदन्ती १ श्वेत विष्णुकान्ता श्वेत दूब तथा काकड़ासिंगी २ मालकांगनी तथा नागदन्ती इन तीनों योगों में से किसी को गोमूत्र में पीसकर पांच अथवा छः बूँदकी नस्य लेनी चाहिये त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च सरल काष्ठ जवाखार मरुआ ॥ ३९ । ४० ॥

श्यामापामार्गकारञ्जफलैर्मूत्रेऽथबस्तजे । साधितंनावनंतैलमपस्मारविनाशनम् ॥ ४१ ॥

कालीसांई लटजीरा कंजाके फल तथा बकरेका मूत्र इनके साथ पाक कियेगये तैलकी नस्य लेनेसे अपस्मारका नाश होताहै ॥४१॥

पिप्पलीवृश्चिकालीचकुष्ठञ्चलवणानिच । भार्गीचचूर्णितंनस्तःकार्य्यंप्रधमनंपरम् ॥ ४२ ॥

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीपरि वृश्चिकाली कूट सैंधव लवण तथा भारंगी इनका चूर्ण अपस्मारवाले की नासिकामें छोड़ना चाहिये ॥ ४२ ॥

कायस्थाञ्छारदान्मुद्गान्मुस्तोशीर यवांस्तथा । सव्योषान्बस्तमूत्रेण पिष्ट्वावर्त्तीःप्रकल्पयेत् ॥ ४३ ॥

काकोली शरदृऋतु की मूंग नागरमोथा खस यव सोंठि पीपरि तथा मिर्च इन सब औषधियों को वकरे के मूत्रमें पीसकर बत्ती वनावे ॥ ४३ ॥

अपस्मारेतथोन्मादेसर्पदष्टेतथार्दिते । विषपीतेजलमृतेचैताःस्युरमृतोपमाः ॥ ४४ ॥

यह वत्तियां मिरगी उन्माद सर्पका काटना अर्दित (वातरोगविशेष) विषपीना तथा जलमें डूबकर मरणासन्न होजाना इन रोगों में अंजन लगानेसे अमृतके समान गुणकारी होती हैं ॥ ४४ ॥

मुस्तंवयःस्थांत्रिफलांकायस्थांहिंगुशाद्वलम्। व्योषंमाषान्यवान्मूत्रैर्वस्तिमेषर्षभैस्त्रिभिः ॥ ४५ ॥

नागरमोथा ब्राह्मी त्रिफला काकोली हिंगुपत्री सोंठि पीपरि मिर्च उर्द तथा यव इन औषधियों को बकरे के भेंड़े के तथा बैल के मूत्रमें ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वाकृत्वाचतांवर्त्तिमपस्मारेप्रयोजयेत् । किलासेषुतथोन्मादेज्वरेषुविषमेषुच ॥ ४६ ॥

पीसकर बत्ती बनावे यह वत्ती अपस्मार श्वेतकुष्ठ उन्माद तथा विषमज्वर में अञ्जन केद्वारा वहुत हितकारी होती हैं ॥ ४६ ॥

पुष्योद्धृतंशुनःपित्तमपस्मारघ्नमञ्जनम् । तदेवसर्पिषायुक्तंधूपनंपरमंमतम् ॥ ४७ ॥

पुष्य नक्षत्रमें कुत्ते का पित्ता निकालकर अञ्जन लगाने से अपस्मारका नाश होता है और उस पित्ते को घीमें मिलाकर धूप देनेसे भी अपस्मार का नाश होताहै ॥ ४७ ॥

नकुलोलूकमार्जार गृध्रकीटाहिकाकजैः । तुण्डैःपक्षैःपुरीषैश्चधूपनंकारयेद्भिषक् ॥ ४८ ॥

नकुल उल्लू विलार बीछ कीटाहि (कीटविशेष) तथा कौवा इन जीवोंकी टोंट पक्ष तथा विष्ठा की धूप अपस्मार रोगमें वैद्य को देनी चाहिये ४८ ॥

आभिःक्रियाभिःसिद्धाभिर्हृदयंसंप्रबुध्यते । स्रोतांसिचापिशुध्यन्तितःसंज्ञांसविन्दति ॥ ४९ ॥

इन सिद्ध चिकित्साओंके द्वारा हृदय प्रफुल्लित होजाता है और स्रोत शुद्ध होजाते हैं और फिर इसीसे संज्ञा प्राप्त होती है ॥ ४९ ॥

यस्यानुबन्धन्त्वागन्तुर्दोषलिङ्गाधिकाकृतिम् । पश्येत्तस्यभिषक्कुर्यादागन्तून्मादभेषजम् ॥ ५० ॥

जिस अपस्मार रोग में आगन्तुक कारणों का सम्बन्ध हो और लक्षणों की अधिकताके कारण दोष अधिक मालूम होताहो उसमें वैद्य को आगन्तुक उन्माद कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनन्तरमुवाचेदमग्निवेशः कृतांजलिः। भगवन्! प्राक्समुद्दिष्टश्लोकस्थानेमहागदः ॥ ५१ ॥ अतत्त्वाभिनिवेशश्चतस्यव्यक्तिरिहोच्यताम्। शुश्रूषवेवचःश्रुत्वाशिष्यायाहपुनर्वसुः ॥ ५२ ॥

इसके उपरान्त अग्निवेशने हाथ जोड़कर भगवान् आत्रेयजीसे कहा कि हे भगवन् आपने सूत्रस्थान में अतत्त्वाभिनिवेश तथा महागदनाम रोग कहाथा यहांपर कृपाकरके उसका स्पष्टता से वर्णन कीजिये सुननेकी है इच्छा जिनके ऐसे अपने शिष्य अग्निवेश के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि ॥ ५१ । ५२ ॥

महागदंसौम्य! शृणुसहेत्वाकृतिभेषजम्। मलिनाहारशीलस्यवेगान्प्राप्तान्निगृह्णतः। शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्हेतुभिश्चातिसेवितैः ५३॥

हे सौम्य महागद के लक्षण निदान तथा यत्न सुनो जो पुरुष मलिन आहार करता है मल मूत्रादि वेगों को रोंकता है बहुत शीतल उष्ण स्निग्ध तथा रूक्ष आदि वस्तुओंका सेवन करता है ॥ ५३ ॥

हृदयंसमुपाश्रित्यमनोबुद्धिवहाःशिराः। दोषाःसंदूष्यतिष्ठन्तिरजोमोहावृतात्मनः ॥ ५४ ॥

उस रजोगुण तथा तमोगुण से व्याप्त पुरुष के वातादि दोष कुपित होकर हृदयमें प्राप्त होके मन तथा बुद्धिकी नाड़ियों को दूषित करके स्थित होते हैं ॥ ५४ ॥

रजस्तमोभ्यांवृद्धाभ्यां बुद्धौमनसि चावृते। हृदयेव्याकुलेदोषैरथमूढोल्पचेतनः ॥ ५५ ॥

फिर बहुत बढ़ेहुये रजोगुण तथा तमोगुण से बुद्धि तथा मनके आच्छादित होजानेपर और दोषोंकेद्वारा हृदयके व्याकुल होनेपर स्वल्प चेतनायुक्त मूढ़ पुरुष ॥ ५५ ॥

करोतिविषमांबुद्धिंनित्यानित्येहिताहिते। अतत्त्वाभिनिवेशंतमाहुराप्तामहागदम् ॥ ५६ ॥

नित्य अनित्य और हित अहित कार्य्योंमें विपरीत बुद्धि करता है शिष्टलोग इसी को अतत्त्वाभिनिवेश तथा महागद कहते हैं ५६॥

स्नेहस्वेदापपन्नंतंसंशोध्यवमनादिभिः। कृतसंसर्जनंमेध्यैरन्नपानैरुपाचरेत् ॥ ५७ ॥

महागदवाले रोगी को स्नेहन तथा स्वेदन कराके वमन आदि के द्वारा संशोधन करावे फिर पथ्यका क्रम ठीक २ करके मेधावर्द्धक अन्नपान का सेवन करावे ॥ ५७ ॥

ब्राह्मीस्वरससंयुक्तंपञ्चगव्यमुदाहृतम्। तत्सेव्यंशङ्खपुष्पीचयच्चसेव्यंरसायनम् ॥ ५८ ॥

महागद में ब्राह्मी के रससेयुक्त पंचगव्य घृत शंखपुष्पी तथा रसायनों का सेवन कराना चाहिये ॥ ५८ ॥

सुहृदश्चानुकूलास्तं स्वाप्तधर्मार्थ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वादिनः । संयोजयेयुर्विज्ञानधैर्य्य स्मृतिसमाधिभिः ॥ ५९ ॥

शास्त्रोक्त धर्मार्थ का उपदेश करनेवाले प्यारे मित्र महागदवाले रोगी को ध्यान धैर्य ज्ञान स्मृति तथा समाधि (चित्तकी एकाग्रता) से युक्त करे ॥ ५९ ॥

प्रयुञ्ज्यात्तैललशुनंपयसावाशताव वरीम् । ब्राह्मीरसंकुष्ठरसंवचांवामधु संयुताम् ॥ ६० ॥

महागदमें तैलके साथ लहशुन का अथवा दूधके साथ शतावर ब्राह्मीके रस कूटके रस या शहद युक्त वचका सेवन करना चाहिये ॥ ६० ॥

दुश्चिकित्स्योह्यपस्मारश्चिरकारीकृतास्पदः । तस्माद्रसायनैरेनंप्राय शःसमुपाचरेत् ॥ ६१ ॥

अपस्मार (मिरगी) रोग कृतास्पद (शरीरमें जमाहुआ) होकर दुःसाध्य और चिरकारी (बहुत कालतक रहनेवाला) होजाताहै इस से प्रायः रसायन के द्वारा अपस्मार की चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ६१ ॥

जलाग्निद्रुमशैलेभ्योविषमेभ्यश्च तंसदा । रक्षेदुन्मादिनश्चैवसद्यःप्राणहराहिते ॥ ६२ ॥

जल अग्नि वृक्ष पर्वत तथा ऊंचे नीचे स्थानोंसे अपस्मार तथा उन्मादवाले की रक्षा सदैव करनी चाहिये क्योंकि जलआदिके द्वारा अपस्मारवाले तथा उन्मादवाले शीघ्रही मर जाते हैं ॥ ६२ ॥

तत्रश्लोकौ ।

हेतुंकुर्वन्त्यपस्मारं दोषाःप्रकुपिता यथा । सामान्यतःपृथक्त्वाच्चलिङ्गं तेषाञ्चभेषजम् ॥ ६३ ॥ महागद समुत्थानं लिङ्गञ्चोवाचमौषधम् । मुनिर्व्याससमासाभ्यामपस्मारचिकित्सिते ॥ ६४ ॥

इत्यपस्मारचिकित्सिते पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

तिस में यह दोश्लोक हैं । इस अपस्मार चिकित्सित नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने अपस्मार के हेतु कुपितदोष जिस प्रकारसे अपस्मार को उत्पन्न करते हैं अपस्मरके सामान्य तथा जुदे २ लक्षण अपस्मार की चिकित्सा और महागद रोग के निदान लक्षण तथा यत्न यह सब विषय विस्तार तथा संक्षेप से कहे ॥ ६३ । ६४ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकाअपस्मारचिकित्सितनामपंद्रहवाँअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १६ ॥

सोलहवाँअध्याय ॥

क्षतक्षीणचिकित्सितम् ।

उदारकीर्त्तिर्ब्रह्मर्षिरात्रेयःपरमार्थवित् । क्षतक्षीणचिकित्सार्थमिदमाह चिकित्सितम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त क्षतक्षीण चिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परमतत्त्व के जाननेवाले महायशस्वी ब्रह्मर्षि भगवान् आत्रेयजी ने क्षत तथा क्षीण रोगके नष्ट करनेकेलिये यह (आगेकहीजानेवाली) चिकित्साकही ॥ १ ॥

धनुषायस्यतोऽत्यर्थं भारमुद्वहतोगुरुम्। पततोविषमोच्चेभ्योयुध्यमानस्यचाधिकैः ॥ २ ॥

बहुत श्रमके करके धनुष चढ़ाना बहुतभारी भार उठाना विषम (ऊंचे नीचे) तथा ऊंचे स्थानोंसे गिरना अपने से अधिक बलवानों के साथ युद्ध करना ॥ २ ॥

वृषंहयंवाधावन्तं दम्यंवान्यंनिगृह्णतः। शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान् ॥ ३ ॥

दौड़तेहुये बैल तथा घोड़े आदि पशुओंको रोंकना शिला काष्ठ पाषाण तथा निर्घात (अस्त्रविशेष) फेंककर शत्रुओंको मारना ॥ ३ ॥

अधीयमानस्यात्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम् । महानदींवातरतोगजैर्वासहधावतः ॥ ४ ॥

बहुत उच्चस्वर से पढ़ना बहुत दूरतक दौड़कर चलना बहुत बड़ी नदियों में तैरकर पारजाना हाथियोंके साथ दौड़ना ॥ ४ ॥

सहसोत्पततोदूरंतूर्णञ्चातिप्रनृत्यतः। तथान्यैःकर्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यवा। विक्षतेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्य्यते ॥ ५ ॥

इति क्षतनिदानम् ।

एकाएकी बहुत उछलना तथा जल्दी २ बहुत नाचना इन और इसी प्रकारके अन्य क्रूर कर्म्मों के द्वारा वक्षस्थल के क्षत (घायल) होजाने पर बलवान् रोग उत्पन्न होता है ॥ ५ ॥

स्त्रीषुचातिप्रसक्तस्य रूक्षाल्पप्रमिताशिनः । उरोनिरुज्यतेतस्यभिद्यतेऽथविदह्यते ॥ ६ ॥

इति क्षीणरोगनिदानम् ।

फिर बहुत स्त्रीप्रसंग करनेसे और रूक्ष तथा स्वल्पभोजन करने से उस पुरुष का हृदयपीड़ित होता है विदीर्ण होजाताहै और विदाह (जलन) को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

पीड्यतेचततःपार्श्वे शुष्यत्यङ्गंप्रवेपते । क्रमाद्वीर्य्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते ॥ ७ ॥

और पशुलियों में पीड़ा अंगोंका सूखना कम्प क्रमसे वीर्य बल वर्ण रुचि तथा अग्नि का क्षीण होना ॥ ७ ॥

ज्वरोव्यथामनोदैन्यं विड्भेदोग्निवधस्तथा। दुष्टःश्यावःसदुर्गन्धःपीतोविग्रथितोबहुः ॥ ८ ॥ कासमानस्यचश्लेष्मासरक्तःसंप्रवर्त्तते । सक्षतःक्षीयतेऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात् ॥ ९ ॥

ज्वर व्यथा मनमें दीनता विड्भेद (मल का फटना) मंदाग्नि और खाँसने से दूषित कपिशवर्ण दुर्गंधित पीतवर्ण गाँठि युक्त तथा बहुत रुधिर सहित कफ गिरना यह लक्षण होते हैं वह क्षत (घायल) पुरुष अत्यन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षीण होजाताहै और वीर्य तथा ओजके क्षयसे पुरुष क्षीण होजाता है ॥ ८। ९ ॥

अव्यक्तंलक्षणंतस्य पूर्व्वरूपमिति स्मृतम् । उरोरुक्शोणितच्छर्दिः कासोवैशेषिकःक्षते ॥ १० ॥ क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटिग्रहः। अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेःसाध्योबलवतोनरः । गतेसंवत्सरेयाप्यःसर्वलिंगन्तुवर्जयेत् ॥ ११ ॥

लक्षणोंका अच्छे प्रकारसे प्रकट न होनाही क्षत तथा क्षीणका पूर्वरूप है वक्षस्थल में में पीड़ा रुधिरका वमन होना तथा खाँसी यह क्षतके और रुधिर सहित मूत्र आना पशुली पीठ तथा कमरका जकड़सा जाना यह क्षीण के विशेष लक्षण हैं जिस क्षत तथा क्षीणपुरुष की अग्नि मंद न हुई हो पूर्वोक्त लक्षणों की न्यूनता हो और बल न घटा हो वह साध्य होताहै एक वर्ष के व्यतीत होजाने पर क्षत तथा क्षीणपुरुष याप्य (जिसका रोग निर्मूल न हो किन्तु औषधके बलसे दबारहे) हो जाताहै और पूर्वोक्त सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्त क्षततथा क्षीणपुरुष असाध्य होताहै१०।११॥

उरोमत्वाक्षतंलाक्षां पयसामधुसंयुताम्। सद्यएवपिबेज्जीर्णेपयसाद्यात्सशर्करम् ॥ १२ ॥

वक्षस्थल को क्षत (घायल) हुआ जानकर दूधमें लाख तथा शहद मिलाकर शीघ्रही पीवे और इसके पचजाने पर दूध तथा शक्कर के साथ भात खावे॥ १२॥

पार्श्वबस्तिरुजश्चाल्पपित्ताग्निस्तां सुरायुताम्। भिन्नविट्कःसमुस्तातीविषांपाठांसवत्सकाम् ॥ १३ ॥

यदि क्षतवाले पुरुषकी पशुली तथा बस्तिमें पीड़ाहोतीहो और पित्त तथा अग्निकीन्यूनता हो तो वह सुरामें लाख मिलाकर पीवे क्षतरोगमें जिस पुरुषका मल फटगयाहो और अग्नि दीप्तहो वह नागरमोथा अतीस पाढ़र इन्द्रयव॥ १३॥

लाक्षांसर्पिर्मधूच्छिष्टंजीवनीयगणंसिताम्। त्वक्क्षीरीसम्मितंक्षीरेपक्त्वादीप्तानलःपिबेत् ॥ १४ ॥

लाख घी मोम जीवनीयगणकी सब औषध शक्कर तथा वंशलोचनको दूधमें डालकर पाककर के पीवे ॥ १४॥

इक्ष्वालिकबिसग्रन्थिपद्मकेशरचन्दनैः। शृतंपयोमधुयुतंसन्धानार्थंपिबेत्क्षती ॥ १५ ॥

क्षतरोग में कुश कमल की जड़ कमल की केसर तथा चन्दन के साथ पाक कियेगये दूधमें शहद डालकर पीवे इस से घाव पूर्ण होजाताहै ॥ १५ ॥

यवानांचूर्णमादाय क्षीरसिद्धंघृतप्लुतम् । ज्वरदाहेसिताक्षौद्रसक्तून्वापयसापिबेत् ॥ १६ ॥

क्षतरोगमें ज्वर तथा दाह होनेपर दूधके साथ यवोंके चूर्णका पाककर के घी मिलाकर खावे अथवा दूध में शक्कर शहद तथा सत्तू मिलाकर पीवे ॥ १६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कासीपर्वास्थिशूलीच लिह्यात्सघृतमाक्षिकाः। मधूकमधुकद्राक्षात्वक्क्षीरीपिप्पलीबला॥ १७॥

क्षतरोगमें खाँसी तथा पर्व की हड्डियों में पीड़ा होनेपर मुलेठी महुवा दाख वंशलोचन पीपरि तथा बरियारा का चूर्ण घी तथा शहद में मिलाकर चाटे॥ १७॥

एलापत्रत्वचोऽर्द्धाक्षाःपिप्पल्यर्द्धपलन्तथा। सितामधूकखर्जूरमृद्धीकाश्चपलोन्मिताः॥ १८॥

छोटी इलायची, तेजपात तथा दालचीनी छः २ मासे पीपल दो तोले और शक्कर मुलेठी, खजूर तथा दाख चारचारतोले॥१८॥

संचूर्ण्यमधुनायुक्तागुलिकाःसंप्रकल्पयेत्। अक्षमात्रांततश्चैकांभक्षयेन्नादिनेदिने॥ १९॥

इन सब औषधियों को कूटकर शहद में मिलाकर तोला २ भरकी गोली बनावे एक गोली नित्य प्रातःकाल खावे॥ १९॥

कासंश्वासंज्वरंहिक्कां छर्दिंमूर्च्छांमदंभ्रमम्। रक्तनिष्ठीविनंतृष्णांपार्श्वशूलमरोचकम्॥ २०॥

खाँसी श्वास ज्वर हिचकी छर्दि मूर्च्छा भ्रम मद थूकमें रुधिर आना तृषा पशुलियों में पीड़ा अरुचि॥ २०॥

शोषप्लीहाढ्यवातांश्चस्वरभेदंक्षतंक्षयम्। गुलिकातर्पणीवृष्यारक्तपित्तञ्चनाशयेत्॥ २१॥

इति एलादिगुटिका।

शोष प्लीहा अढ्यवात स्वरभेद क्षतक्षय तथा रक्त पित्त इन रोगोंका नाश होताहै और यह गोली तर्पणकारी तथा धातुवर्द्धक होतीहै॥ २१॥

इति एलादिगुटिका॥

रक्तेतिऽवृत्तेदक्षाण्डं यूषैस्तोयेनवापिबेत्। चटकाण्डरसंवापिरक्तंवाछागजांगलम्॥ २२॥

क्षतरोग में जिस पुरुष के वहुत रुधिर गिरता हो वह यूषके साथ अथवा जलके साथ मुर्गे के अण्डेका रस पीवे या गौरैया पक्षी के अण्डेका रस पीवे अथवा वकरेके या जांगल जीवों के रुधिर का पानकरे॥ २२॥

चूर्णंपौनर्नवंरक्तशालितण्डुलशर्करम्। रक्तष्ठीवीपिबेत्सिद्धंद्राक्षारसपयोघृतैः॥ २३॥

जिस क्षतवाले के थूकके साथ रुधिर गिरताहो वह गदह पूर्णाका चूर्ण लालशालिधानोंके चावल शक्कर दाखका रस दूध तथा घी इनसबको एक साथ पाककरके पीवे॥२३॥

मधूकमधुकक्षीरसिद्धंवातण्डुलीयकम्। मूढवातस्त्वजामेदःसुराभृष्टंससैन्धवम्॥ २४॥

अथवा मुलेठी महुवा दूध तथा चौराई का साग एकसाथ पाककर के पीवे क्षतवाले के मूढ़वात (वायुका गुमहोजाना) होनेपर बकरे चर्बीको मदिरा में भूनकर सैंधवलवण मिलाकर खावे॥ २४॥

क्षामःक्षीणःक्षतोरस्कस्त्वनिद्रःसब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेऽनिले। शृतक्षीररसेनाद्यात्सक्षौद्रघृतशर्करम् ॥ २५ ॥

कृशक्षीण तथा क्षतपुरुष निद्राके नष्टहोजाने पर किन्तु अग्निके सबलहोनेपर पाक कियेहुये दूध मांसरस शहद घी तथा शक्कर के साथ भोजनकरे ॥ २५ ॥

शर्कराज्ञ्यवक्षौद्रजीवकर्षभकोमधु। शृतक्षीरानुपानंवालिह्यात्क्षीणःक्षतःकृशः ॥ २६ ॥

अथवा क्षतक्षीण तथा कृशपुरुष शक्कर यव शहद जीवक ऋषभक तथा मुलेठी इनको एक में मिलाकर चाटके ऊपर से पक्का दूध पीवे ॥ २६ ॥

क्रव्यादमांसनिर्य्यूहं घृतभृष्टंपिबेच्चसः। पिप्पलीक्षौद्रसंयुक्तंमांसशोणितवर्द्धनम् ॥ २७ ॥

और मांस खानेवाले जीवों के मांसके रस को घीसे छौंककर उसमें पीपल तथा शहद मिलाकर पीने से मांस तथा रुधिर की वृद्धि होतीहै ॥ २७ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षशालिप्रियंगुभिः। तालमस्तकजम्बूत्वक्प्रियालैश्चसपद्मकैः ॥ २८ ॥

वर्गद गूलर पीपर पकरिया शाल प्रियंगु ताल की फुनगी तथा जामुन की छाल और चिरौंजी पद्माख ॥ २८ ॥

साश्वकर्णैःशृतात्क्षीराद्द्याज्जातेन सर्पिषा।शाल्योदनंक्षतोरस्कःक्षीणशुक्रश्चमानवः ॥ २९ ॥

तथा अश्वकर्ण (सालभेद) इनके साथ पाक कियेगये दूधसे घी निकाल कर उस के साथ क्षत तथा क्षीणपुरुष शालिधानों के चावलों का भात खाय ॥ २९ ॥

यष्ट्याह्वानागवलयोः क्काथेक्षीरसमं घृतम्। पयस्यापिप्पलीवांशीकल्कसिद्धंक्षतेशुभम् ॥ ३० ॥

मुलेठी तथा गुलशकरीके काढ़ेमें समभाग दूध तथा घी और क्षीरकाकोली पीपरि तथा वंशलोचन का कल्क मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी वाकीरहे तब उतार कर छानलेवे यह घी क्षतमें बहुत हित होता है ॥ ३० ॥

कोललाक्षारसेतद्वत्क्षीराष्टगुणसाधितम्। कल्कैःकटुम्लदार्वीत्वग्वत्सकत्वक्फलैर्घृतम् ॥ ३१ ॥

बेर तथा लाख के काढ़ेके सोनपत्ता दारुहल्दी की छाल कुरैया की छाल तथा इन्द्रयव इनके कल्कके और अठगुने दूधके साथ पाक कियागया घी क्षत में बहुत हितकारी होता है ॥ ३१ ॥

जीवकर्षभकौवीरां जीवन्तींनागरं शटीम्। चतस्रःपर्णिनीर्मेदेकाकोल्यौद्वेनिदिग्धिके ॥ ३२ ॥

जीवक ऋषभक काकोली जीवन्ती सोंठि कचूर शालपर्णी पृष्णिपर्णी माषपर्णी मुद्गपर्णी काकोली क्षीरकाकोली मेदा महामेदा भटकटैया बड़ीभटकटैया ॥ ३२ ॥

पुनर्नवेद्वेमधुकेसात्मगुप्तांशतावरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म् । ऋद्धिंपरूषकंभार्गींमृद्वीकांबृहतींतथा ॥ ३३ ॥

श्वेत गदहपूर्णा लाल गदहपूर्णा मुलेठी किवाँच शतावर ऋद्धि फालसा भारंगी दाख वनभाँटा ॥ ३३ ॥

शृङ्गांटकींतामलकींपयस्यांपिप्पलींवलाम् । बदराक्षोटखर्जूरवातामाभिषुकारयपि ॥ ३४ ॥

सिंघाड़ा भूमिआमला क्षीरकाकोली पीपरि वरियारा वेर अखरोट खजूर बदाम तथा चिलगोजा ॥ ३४ ॥

फलानिचैवमादीनि कल्कान्कुर्वीकार्षिकान् । धात्रीरसविदारीक्षुच्छागमांसरसंपयः ॥ ३५ ॥

और अन्य मेधाकारी फल यह सब तोले २ भर लेकर इनके कल्क और आमलेके ६४ तोले रस बिलाईकन्दके ६४ तोले रस बकरीके मांस के ६४ तोले रस और ६४ तोले दूधके साथ ॥ ३५ ॥

कुर्य्यात्प्रस्थोन्मितंतेन घृतप्रस्थंविपाचयेत् । प्रस्थार्द्धंमधुनःशीतेशर्करार्द्धतुलांतथा ॥ ३६ ॥

६४ तोले घी का पाककरे जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस घृतके शीतल होजानेपर इसमें वत्तिस तोले शहद २०० तोले शक्कर ३६॥

द्विकार्षिकाणिपत्रैला हेमत्वङ्मरिचानिच । चूर्णितानिविनीयास्माल्लिह्यान्मात्रांसदानरः ॥ ३७ ॥

और दो दो तोले तेजपात छोटी इलायची नागकेसर तज तथा मिर्च का चूर्ण मिलावे फिर मनुष्य मात्राके अनुसार इसको निरंतर चाटे ॥ ३७ ॥

अमृतप्राशमित्येतन्नराणाममृतंघृतम् । सुधामृतरसंप्राश्यक्षीरमांसरसाशिना ॥ ३८ ॥

इस घृत को अमृतप्राश कहते हैं यह मनुष्योंके लिये अमृतके समान हित होताहै अमृतकेसमान इसकारस होताहै इस घीको चाटकर दूध तथा मांसके रसके साथ भोजन करना चाहिये ॥ ३८ ॥

नष्टशुक्रक्षतक्षीण दुर्बलव्याधिकर्षितान् । स्त्रीप्रसक्तान्कृशान्वर्णस्वरहीनांश्चबृंहयेत् ॥ ३९ ॥

नष्टशुक्र (जिसका वीर्य्य नष्ट होगयाहो) क्षतक्षीण दुर्बल रोगोंसे कृश बहुत मैथुन करनेवाले कृश हीनवर्णवाले तथा हीन स्वरवाले पुरुषों के लिये यह अत्यन्त धातुवर्द्धक होताहै ॥ ३९ ॥

कासहिक्काज्वरश्वासदाहतृष्णाम्लपित्तनुत् । पुत्रदंवमिमूर्च्छाहृयोनिमूत्रामयापहम् ॥ ४० ॥

इति अमृतप्राशघृतम् ।

खांसी हिचकी ज्वर श्वास दाह तृषा रक्तपित्त छर्दि मूर्च्छा योनिरोग तथा मूत्ररोग इन सबका इस घृतके सेवन से नाश होताहै और इस घृतके सेवनसे मनुष्यके पुत्र होताहै॥४०॥

इति अमृतप्राशघृत ॥

श्वदंष्ट्रोशीरमञ्जिष्ठाबलाकाश्मर्य्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कचूर्णम् । दर्भमूलं पृथक्पर्णीपला शर्षभकौस्थिराम् ॥ ४१ ॥

गोखुरू खस मँजीठ बरियारा खँभारी के फल रोहिष कुशकी जड़ पिठवन दाख ऋषभक तथा शालपर्णी ॥ ४१ ॥

पालिकंसाधयेत्तेषां रसेक्षीरचतुर्गुणे । कल्कैःस्वगुप्ताजीवन्तीमेदकर्षभजीवकैः ॥ ४२ ॥

इन सब चार २ तोलेभर औषधियोंके काढ़ेमें चौगुना दूध डालकर किवाँच जीवन्ती मेदा ऋषभक जीवक ॥ ४२ ॥

शतावर्य्यृद्धिमृद्वीका शर्कराश्रावणीबिसैः । प्रस्थःसिद्धोघृताद्वातवित्तहृद्द्रवशूलनुत् ॥ ४३ ॥

शतावर, ऋद्धि दाख शक्कर मुँडली तथा कमलकी दण्डी इनका कल्क और ६४ तोले सिद्ध किया हुआ घृत डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतार कर छानलेवे यह घी वातपित्त द्रवशूल को नाश करता है ॥ ४३ ॥

मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःकासशोषक्षयापहः । धनुःस्त्रीमद्यभाराध्वखिन्नानां बलमांसदः ॥ ४४ ॥

इति श्वदंष्ट्रादिघृतम् ।

और मूत्रकृच्छ्र प्रमेह बबासीर खांसी शोष तथा क्षय इनको नष्ट करता है और धनुष स्त्री मद्य भार तथा बहुत चलनेसे क्षीण पुरुषोंके बल तथा मांस को बढ़ाता है ॥ ४४ ॥

मधुकाष्टपलंद्राक्षाप्रस्थक्वाथेघृतंपचेत् । पिप्पल्यष्टपलेकल्केप्रस्थंसिद्धेचशीतले ॥ ४५ ॥

६४ तोले दाखके काढ़ेमें वत्तिस तोले पीपरि तथा वत्तिस तोले मुलेठीका कल्क और ६४ तोले घी डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर घृतके शीतल होजानेपर ॥ ४५ ॥

पृथगष्टपलंक्षौद्रंशर्कराभ्यांविमिश्रयेत् । समंसक्तुक्षतक्षीणरक्तगुल्मेषुतद्धितम् ॥ ४६ ॥

इतिसक्तुप्रयोगः ।

वत्तिस तोले शहद वत्तिस तोले शक्कर और घीके समान सत्तू मिलावे यह सत्तू क्षतक्षीण तथा रक्तगुल्म में हित होते हैं ॥ ४६ ॥

धात्रीफलविदारीक्षुजीवनीयरसाद्घृतात् । छागगोपयसोश्चैवसप्तप्रस्थान्पचेद्भिषक् ॥ ४७ ॥

आमला बिलाईकन्द ईख तथा जीवनीयगण की औषध इनके रस चौंसठि २ तोले बकरी तथा गौ का दूध चौंसठि २ तोले और घी ६४ तोले इन सबको एकमें मिलाकर पाककरे जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे ॥ ४७ ॥

सिद्धशीतेसिताक्षौद्रद्विप्रस्थंविनयेत्ततः । यक्ष्मापस्मारपित्तासृक्कासमोहक्षयापहम् ॥ ४८ ॥

फिर शीतल होजानेपर इस घृतमें ६४ तोले शहद तथा ६४ तोले शक्कर मिलावे इस घृतका पानकरने से राजयक्ष्मा मिरगी रक्त-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्त खाँसी मोह तथा क्षयका नाशहोताहै ४८॥

वयःस्थापनमायुष्यंमांसशुक्रबलप्रदम्। घृतन्तुपित्तेऽभ्यधिकेलिह्याद्वातेऽधिकेपिबेत्॥ ४६॥

अवस्था स्थिर होती है और आयु बल वीर्य की वृद्धि होतीहै पित्तकी अधिकता में घी चाटना चाहिये और वायु की अधिकता में घी पीना चाहिये॥ ०९॥

लीढंनिर्वापयेत्पित्तमल्पत्वाद्धन्ति नानिलम्। आक्रामत्यनिलंपीतमुष्माणंनिरुणद्धिच॥ ५०॥

क्योंकि चाटा हुआ घी स्वल्प होनेके कारण पित्तको तो शान्त करताहै परन्तु वायुको नष्ट नहीं करसक्ता और पिया हुआ घी वायुको दबाताहै और पित्तको भी शान्तकर देता है॥ ५०॥

क्षामक्षीणकृशाङ्गानामेतान्येवघृतानिच। त्वक्क्षीरीशर्करालाजचूर्णैः पानानियोजयेत्॥ ५१॥ सर्पिर्गुडान्समध्वंशाञ्जग्ध्वादद्यात्पयोनुच। रेतोवीर्य्यबलंपुष्टिंतैराशुतरमाप्नुयात्॥ ५२॥

कृश क्षीण तथा क्षत पुरुषों के लिये यही (पूर्वोक्त) घृत हित होते हैं इन पूर्वोक्त घृतों में वंशलोचन शक्कर तथा खीलोंका चूर्ण और शहद मिलाकर गोली वनाकर खावे और उसके ऊपर से दूध पीवे इससे वीर्य प्रभाव बल तथा पुष्टताकी शीघ्रही वृद्धि होतीहै ॥५१।५२॥

बलांविदारींह्रस्वाञ्चपञ्चमूलींपुनर्नवाम्। पञ्चानांक्षीरिवृक्षाणांशुङ्गांमुष्ट्यंशकामपि॥ ५३॥

बरियारा बिलाईकन्द लघुपंचमूल गदहपूर्णा तथा बर्गद आदि दूधवाले पाँचों वृक्षों के टिंभुने इन सब चार २ तोले॥ ५३॥

एषांकषायेद्विक्षीरेविदार्य्याजरसांशिके। जीवनीयैःपचेत्कल्कैरक्षमात्रैर्घृताढकम्॥ ५४॥

औषधियों के काढ़ेमें बकरी का दूध गौका दूध बिलाईकन्दका रस बकरीके मांसका रस जीवनीयगणकी एक २ तोले सब औषधियों का कल्क और २५६ तोले घी डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतार कर छानलेवे॥ ५४॥

सितापलानिपूतेऽस्मिञ्छीतेद्वात्रिंशतंक्षिपेत्। गोधूमपिप्पलीवांशीचूर्णंशृङ्गाटकस्यच॥ ५५॥

फिर शीतल होजाने पर इस घी में १२८ तोले शक्कर और सोलह २ तोले गेहूं पीपरि वंशलोचन तथा सिंघाड़े का चूर्ण॥ ५५॥

सक्षौद्रंकुडवांशेनतत्सर्वंखजमूर्च्छितम्। स्त्यानंसर्पिर्गुडान्कृत्वाभूर्जपत्रेणवेष्टयेत्॥ ५६॥

और सोलहतोले शहद मिलाकर तथा खरलमें घोटकर लड्डू वना लेवे और इन लड्ओंको भोजपत्रमें बाँधकर रखछोड़े॥ ५६॥

ताञ्जग्ध्वापलिकान्क्षीरंमद्यंवानुपिबेत्कफे। शोषेकासेक्षतेक्षीणेश्रमस्त्रीभारकर्षिते॥ ५७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनमें से चार तोले लड्डू खाकर श्वेत गौ का दूध पीवे और जो कफ की अधिकताहो तो मद्य पीवे इनके सेवन से शोष खाँसी क्षतक्षीण श्रम मैथुन तथा भारसे हुई कृशता ५७॥

रक्तनिष्ठीवनेतापेपीनसेचोरसिस्थिते । शस्ताःपार्श्वशिरःशूलेविभेदे स्वरवर्णयोः ॥ ५८ ॥

इतिसर्पिर्गुडः ।

रुधिर थूंकना दाह पीनस पशुलियों की पीड़ा शिरकी पीड़ा स्वरभंग और वर्ण का विगड़ जाना इन रोगोंका नाश होताहै॥५८॥

इतिसर्पिर्गुड़ ॥

त्वक्क्षीरीश्रावणीद्राक्षामूर्वर्षभजीवकैः । वीरर्द्धिक्षीरकाकोलीबृहती कपिकच्छुभिः ॥ ५९ ॥

वंशलोचन मुंडली दाख मिर्रफली ऋषभक जीवक काकोली ऋद्धि क्षीरकाकोली बनभांटा किवाँच ॥ ५९ ॥

खर्जूरफलमेदाभिःक्षीरपिष्टैःफलोन्मितैः । धात्रीविदारीक्षुरसप्रस्थैःप्रस्थं घृतात्पचेत् ॥ ६० ॥

खजूर तथा मेदा इन सब चार चार तोले भर औषधियों को दूधके साथ पीसकर इन के कल्कके साथ चौंसठ २ तोले आमला वि लाईकन्द के रस ईखके रस तथा घृत का पाक करे जब पानी जल जाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छान लेवे ॥ ६० ॥

शर्करार्द्धतुलांशीतेक्षौद्रार्द्धप्रस्थमेव च । क्षिप्त्वासर्पिर्गुडान्कुर्य्यात्कासहिक्काज्वरापहान् ॥ ६१ ॥ यक्ष्माणं तमकंश्वासंरक्तपित्तंहलीमकम् । शुक्रनिद्राक्षयंतृष्णांहन्युःकार्श्यसकामलम् ॥ ६२ ॥

इतिसर्पिर्गुडकः ।

फिर शीतल होजाने पर इस घृतमें २०० तोले शक्कर तथा वत्तिस तोले शहद मिलाकर लड्डू वनावे इन लड्डुओं के सेवन से खाँसी हिचकी ज्वर यक्ष्मा तमक श्वास रक्तपित्त हलीमक वीर्य्य की क्षीणता निद्रा का नाश तृषा तथा कामला इन रोगों का नाश होता है ॥ ६१ । ६२ ॥

द्राक्षांनवामामलकीमात्मगुप्तांपुनर्नवाम् । शतावरींविदारीञ्चसमांशांपिप्पलींतथा॥६३॥ पृथग्दशपलान्भागान्पलान्यष्टौचनागरात् । यष्ट्याह्वसौवर्चलयोर्द्विपलंमरिचस्यच॥६४॥

दाख नवीन आमला किंवाच गदहपूर्णा शतावर विलाईकन्द तथा पीपरि यह सब चालिस २ तोलें सोंठि बत्तिस तोले और मुलेठी सोंचर नोन तथा मिर्च आठ २ तोले ॥ ६३ । ६४ ॥

क्षीरतैलघृतानाञ्चत्र्याढकेशर्कराशते । क्वथितेतानिचूर्णानिदत्वाबिल्वसमान्गुडान् ॥ ६५ ॥

इन सबके काढ़े में २५६ तोले दूध २५६ तोले तैल तथा २५६ तोले घी डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी तथा तैल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर शीतल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होजाने पर इसमें पूर्वोक्त औषधियों का चूर्ण मिलाकर बेलके बराबर लड्डू बनावे॥ ६५॥

कुर्य्यात्तान्भक्षयेत्क्षीणःक्षतशुष्कश्च मानवः। तेनसद्योरसादीनांवृद्धया पुष्टिंसविन्दति ॥ ६६ ॥

इतितृतीयसर्पिर्गुडकः।

इन लड्डुओं के खाने से क्षीणक्षत तथा शुष्कपुरुष रसादि धातुओं के बढ़ने से शीघ्रही पुष्टहोजाताहै॥ ६६॥

गोक्षीराढ्याढकंसर्पिःप्रस्थमिक्षुरसाढकम्। विदार्य्याःस्वरसात्प्रस्थंरसात्प्रस्थञ्चतैत्तिरात्॥ ६७॥

गौका दूध ५१२ तोले घी ६४ तोले ईख का रस २५६ तोले बिलाईकन्द का रस ६४ तोले तथा तितुर के मांसका रस ६४ तोले॥ ६७॥

दद्यात्सिध्यतितस्मिंस्तुपिष्टानिक्षुरसैरिमान्। मधूकपुष्पंकुडवंपियालकुडवंतथा ॥ ६८ ॥ तुनाक्षीर्य्यर्द्धकुडवांखर्जूराणिचविंशतिम्। पृथग्विभीतकानक्षःपिप्पल्याश्चचतुर्थिकाम्॥ ६९ ॥ त्रिंशत्पलानिखण्डाच्चमधुकात्कर्षमेवच। तथार्द्धपलिकान्यत्रजीवनीयानिचावपेत्॥ ७० ॥

इन सबको एकमें मिलाकर पाककरे जब पाक तयार होने के निकट हो तब महुआ के पुष्प सोलह तोले चिरौंजी सोलह तोले वंशलोचन आठ तोले छुहारे २० बहेड़ा एकतोला पीपरि चारतोले शक्कर १२० तोले मुलेठी एक तोला और जीवनीयगणकी सब औषधि दो २ तोले इन सबको ईख के रसके साथ पीसकर उसमें मिलावे॥ ६८।६९।७०॥

सिद्धेऽस्मिन्कुडवंक्षौद्रंशीतेक्षिप्त्वाथ मोदकान्। कारयेन्मरिचाजाजीपलचूर्णावचूर्णितान्॥ ७१॥

इसके उपरान्त जब पाक तैयार होजाय और शीतल होजाय तब उसमें सोलह तोले शहद और चार ४ तोले मिर्च तथा जीरेका चूर्ण मिलाकर लड्डू बनावे॥ ७१॥

वातासृक्पित्तरोगेषुक्षतकासक्षयेषु च। शुष्यतांक्षीणशुक्राणांरक्तेचोरसिसंस्थिते॥ ७२॥

इन लड्डुओं का सेवन करने से वातरक्त पित्तजरोग क्षत खाँसी क्षय शोष वीर्य्यकी क्षीणता तथा वक्षःस्थल में रुधिर का जमजाना इन रोगों का नाशहोताहै॥ ७२॥

कृशदुर्बलवृद्धानांपुष्टिवर्णबलार्थिनाम्। योनिदोषक्षतस्रावहतानाञ्चापि योषिताम् ॥ ७३ ॥ गर्भार्थिनीनांगर्भश्चस्रवेद्यासांम्रियेतवा। धन्याबल्याहितास्ताभ्यःशुक्रशोणितवर्द्धनाः॥ ७४॥

चतुर्थसर्पिर्मोदकम्।

और कृश दुर्बल तथा वृद्ध पुरुषों के बल वर्ण तथा पुष्टता की वृद्धि होतीहै यह मोदक योनिदोषवाली स्त्रियों के लिये जिन स्त्रियों की से दूषित रुधिर आदि बहताहो तथा जिनकी योनिमें घावहो उनकेलिये वन्ध्यास्त्रियों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के लिये जिन स्त्रियों का गर्भ गिरजाता हो उनके लिये और जिन स्त्रियों की संतान मरजाती हो उनके लिये अत्यन्त हित होते हैं और बल वीर्य्य तथा रुधिर की वृद्धि करते हैं ॥ ७३ । ७४ ॥

बस्तिदेशेविकुर्वाणेस्त्रीप्रसक्तस्यमारुते । वातघ्नान्बृंहणान्वृष्यान्योगांस्तस्यप्रयोजयेत् ॥ ७५ ॥

बहुत मैथुन करनेवाले; पुरुष की वस्ति में यदि वायु कुपित हो तो वातनाशक धातुवर्द्धक तथा वीर्य्यवर्द्धक योगोंका सेवन करना चाहिये ॥ ७५ ॥

शर्करापिप्पलीचूर्णैःसर्पिषामाक्षिकेणवा । संयुक्तंवाशृतंक्षीरंपिबेत्कासज्वरापहम् ॥ ७६ ॥

शक्कर तथा पीपरिके चूर्णके साथ अथवा घीके साथ या शहदके साथ पका दूध पीनेसे खांसी तथा ज्वरका नाश होताहै ॥ ७६ ॥

फलाम्लंसर्पिषाभृष्टं विदारीक्षुरसेशृतम् । स्त्रीप्रसक्तक्षीणःपिबेद्यूषंजीवनंबृंहणम्परम् ॥ ७७ ॥

बहुत मैथुन करने से क्षीणहुआ पुरुष बिलाईकन्द तथा ईखके रसकेद्वारा यूष बनाकर घीसे छौंककर और खट्टे अनार आदि फलों की खटाई से युक्त करके पीवे इससे धातुओं की तथा आयुकी वृद्धि होती है ॥ ७७ ॥

सक्तूमांवस्त्रपूतानांमन्थंक्षौद्रघृतान्वितम् । यवान्नसात्म्योदीप्ताग्निःक्षतक्षीणःपिबेन्नरः ॥ ७८ ॥

क्षत तथा क्षीणपुरुष अग्निके दीप्त होनेपर और यव खानेका अभ्यास होनेपर पतले सत्तुओं में शहद तथा घी मिलाकर पीवे ॥ ७८ ॥

जीवनीयोपसिद्धंवा घृतभृष्टन्तुजाङ्गलम् । रसंप्रयोजयेत्क्षीणेव्यञ्जनार्थेसशर्करम् ॥ ७९ ॥

क्षीणपुरुष जीवनीयगणकी औषधियों के साथ जांगल जीवोंके मांसका रस पकाकर घी से छौंककर और उसमें शक्कर मिलाकर उसीके साथ भोजनकरे ॥ ७९ ॥

गोमहिषाश्वनागाजैःक्षीरैर्मांसरसैस्तथा । यथाग्निभोजयेद्यूषैःफलाम्लैर्घृतसंस्कृतैः ॥ ८० ॥

अथवा गौ भैंस घोड़ी हथिनी तथा बकरी के दूधके साथ मांसके रसोंके साथ या अनार आदि खट्टे फलोंसेयुक्त तथा घीसे छौंकेहुये यूषोंकेसाथ अग्निके अनुसार भोजनकरे ॥ ८० ॥

दीप्तेग्नौविधिरेषःस्यान्मन्देदीपनपाचनः । यक्ष्मिणांविहितोग्राहीभिन्नेशकृतिचेष्यते ॥ ८१ ॥

यह विधि अग्निके दीप्त होनेपर हित होती है और अग्निके मन्द होनेपर दीपन तथा पाचन औषध देनी चाहिये क्षतरोग तथा क्षीणरोगमें मलभेद (मल फटाहुआ) होनेपर यक्ष्मारोग में जो ग्राही औषध कहीगई हैं वही देनी चाहिये ॥ ८१ ॥

पलिकंसैन्धवंशुण्ठी द्वेचसौवर्चलेपले । कुडवांशानिवृक्षाम्लंदाडिमंपत्रसर्जकात् ॥ ८२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैंधव लवण तथा सोंठि चार २ तोले सोंचरनोन आठ तोले तिंतिड़ीक दाड़िम तेजपात विजयसार चार २ तोले ॥ ८२ ॥

एकैकंमरिचाजाज्योर्धान्यकाद्धेचतुर्थिके । शर्करायाःपलान्यत्रदशद्धेचप्रदापयेत् ॥ ८३ ॥

मिर्च तथा जीरा चार २ तोले धनियां आठ तोले और शक्कर ४८ तोले ॥ ८३ ॥

कृत्वाचूर्णमतोमात्रामन्नपानेप्रयोजयेत् । रोचनंदीपनंबल्यंपार्श्वार्त्तिश्वासकासनुत् ॥ ८४ ॥

इति सैन्धवादिचूर्णम् ।

इन सबका चूर्ण करके मात्राके अनुसार अन्नपानके साथ सेवनकरे यह चूर्ण रुचिकारी दीपन बलकारी और पशुलियों की पीड़ा श्वास तथा खांसीका नाशक है ॥ ८४ ॥

एकाषोडशिकाधान्याद्विद्वेऽजाज्यजमोदयोः । ताभ्यांदाडिमवृक्षाम्लद्विर्द्विःसौवर्चलात्पलम् ॥ ८५ ॥

धनियां जीरा तथा अजमोद तोले २ भर दाड़िम तथा तिंतिड़ीक दो २ तोले सोंचरनोन चार तोले ॥ ८५ ॥

शुण्ठ्याःकर्षदधित्थस्य मध्यात्पञ्चपलानिच । तच्चूर्णंषोडशपलेशर्करायाविमिश्रयेत् । षाडवोऽयंप्रदेयःस्यादन्नपानेषुपूर्ववत् ॥ ८६ ॥

इतिषाडवः ।

सोंठि एक तोले तथा कैथकी गूदा २० तोले इन सबके चूर्ण में ६४ तोले शक्कर मिलावे इसे षाडव कहते हैं इस का अन्नपान के साथ सेवन करना चाहिये ॥ ८६ ॥

इतिषाड़व ॥

पिबेन्नागबलामूलस्यार्द्धकर्षविवर्द्धनम् । पलंक्षीरयुतंमासंक्षीरवृत्तिरनन्नभुक् ॥ ८७ ॥

गुलशकरी की जड़ को छः मासे से लेकर चार तोले पर्य्यन्त दूधके साथ महीनेभर पीवे अर्थात् पहिले दिन छः मासे दूसरे दिन तोले भर इस क्रमसे छः २ मासे रोज बढ़ाकर जब चार तोले होजायँ तब महीने भरतक चार२ तोले भरही पीतारहै और अन्न न खावे केवल दूधही पीवे ॥ ८७ ॥

एषप्रयोगःपुष्ट्यायुर्बलारोग्यकरःपरः । मण्डूकपर्ण्याःकल्पोऽथशुण्ठीमधुकयोस्तथा ॥ ८८ ॥

इस प्रकार गुलशकरी का प्रयोग करने से पुष्टता आयु बल तथा आरोग्यकी बहुतवृद्धि होती है इसी प्रकार मँजीठ सोंठि तथा मुलेठी का भी कल्क करना चाहिये ॥ ८८ ॥

यद्यत्संतर्पणंशीतमविदाहिहितंलघु । अन्नपानंनिषेव्यन्तत्क्षतक्षीणैःसुखार्थिभिः ॥ ८९ ॥

जो२ अन्नपान तृप्तिकारी शीतल विदाहरहित हितकारी तथा हल्के होते हैं उन्हीं अन्नपानोंका सेवन सुख चाहनेवाले क्षत तथा क्षीण पुरुष को करना चाहिये ॥ ८९ ॥

यच्चोक्तंयक्ष्मिणांपथ्यं कासिनांरक्तपित्तिनाम् । तच्चकुर्यादपेक्ष्याग्निं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्याधिंसात्म्यबलांस्तथा ॥ ९० ॥

राजयक्ष्मा खाँसी तथा रक्तपित्त वालों के लिये जो पथ्य कहागयाहै अग्नि रोग वल तथा सात्म्यका विचार करके क्षत तथा क्षीण पुरुषको उसी का सेवन करना चाहिये॥९०॥

उपेक्षितोभवेत्तस्मिन्ननुबन्धोहियक्ष्मणः। प्रागेवागमनात्तस्यतस्मात्तंत्वरयाजयेत् ॥ ९१ ॥

क्षत तथा क्षीणरोग की चिकित्सा में शिथिलता करने से राजयक्ष्मा होजाती है इस से राजयक्ष्मा होने के पहिलेही बहुत शीघ्रतापूर्वक क्षत तथा क्षीणकी चिकित्साकरे९१॥

तत्रश्लोकौ ।

क्षतक्षयसमुत्थानं सामान्यपृथगाकृतिम् । असाध्ययात्यसाध्यत्वंसाध्यानांसिद्धिमेवच ॥ ९२ ॥ उक्तवान्ज्येष्ठशिष्याय क्षतक्षीणचिकित्सिते । तत्त्वार्थविद्वीतरजस्तमोदोषःपुनर्वसुः ॥ ९३ ॥

इतिचिकित्सितस्थानेक्षतक्षीणचिकित्सितो षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं । इस क्षतक्षीणचिकित्सित नाम अध्याय में तत्त्वके जानने वाले रजोगुण तथा तमोगुणसे रहित भगवान् आत्रेयजी ने अपने मुख्य शिष्य अग्निवेश से क्षत तथा क्षीण का निदान सामान्य तथा अलग २ लक्षण साध्यता याप्यता तथा असाध्यता और साध्यों की चिकित्सा यह सब विषय कहा ॥ ९२।९३ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सा स्थानकाक्षतक्षीणनामसोलहवाँअध्याय समाप्तहुआ ॥

सत्रहवांअध्याय ॥

श्वयथुचिकित्सितम् ।

भिषग्वरिष्ठंसुरसिद्धजुष्टं मुनीन्द्रमत्र्यात्मजमग्निवेशः । महागदस्य श्वयथोर्यथावत्प्रकोपरूपप्रशमानपृच्छत् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त श्वयथुचिकित्सितनाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

देवता तथा सिद्धलोगों से सेवन कियेगये मुनीश्वर तथा वैद्यों में श्रेष्ठ भगवान् आत्रेय जीसे अग्निवेशने महारोग शोथ के निदान लक्षण तथा यत्न यथावत् पूँछे ॥ १ ॥

तस्मैजगादागदवेदसिन्धुप्रवर्त्तनाद्रिप्रवरोऽत्रिजस्तान् । वातादिभेदात्रिविधस्यसम्यङ्निजानिजैकाङ्गजसर्वजस्य ॥ २ ॥

आयुर्वेदरूपी नदीके उत्पन्न करनेके लिये महापर्वतरूप भगवान् आत्रेयजीने अग्निवेश के प्रश्न सुनकर वातादि भेदोंसे तीन प्रकारके निजानिज (दोषोंसे होनेवाले) एकाङ्गज (शरीरके एक अङ्गमें होनेवाले) तथा सर्वज (सम्पूर्ण शरीर में होनेवाले) शोथ के निदान लक्षण तथा यत्नकहे ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुद्धयामयाभक्तकृशाबलानां क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा । दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणञ्च ॥ ३ ॥

वमनआदि संशोधन रोग व भोजनकेद्वारा कृश तथा दुर्बल होना क्षार खट्टी तीक्ष्ण उष्ण तथा भारी वस्तुओंका सेवन दही कच्ची वस्तु मट्टी शाक (तरकारी) परस्पर मिलने से विरुद्ध होनेवाली वस्तु तथा दूषित विषयुक्त अन्नका सेवन ॥ ३ ॥

अर्शांस्यचेष्टा न च देहशुद्धिर्मर्म्मोपघातो विषमाप्रसूतिः। मिथ्योपचारः प्रतिकर्म्मणाञ्च निजस्य हेतुः श्वयथोः प्रदिष्टः ॥ ४ ॥

बवासीर कोई कार्य्य न करना शरीर का शुद्ध न होना मर्मोका पीड़ित होना विषमता से प्रसव होना और वमन आदि कार्य्यों का विगड़जाना यह निज (वातादि दोषोंसे होनेवाले) शोथ के कारण हैं ॥ ४ ॥

बाह्यास्त्वचो दूषयिताभिघातः काष्ठाश्मशस्त्राग्न्यशनीविषाद्यैः । आगन्तुहेतुस्त्रिविधो निजश्च सर्व्वार्द्धगात्रावयवाश्रितत्वात् ॥ ५ ॥

काष्ठ पाषाण शस्त्र अग्नि वज्र तथा विष इनकेद्वारा अभिघात (चोट लगना) बाह्य (बाहिरी) त्वचाको दूषित करके आगन्तुक शोथका कारण होता है निज शोथ सर्वाङ्गज अर्द्धाङ्गज तथा एकाङ्गज भेदसे तीन प्रकारका होताहै ॥ ५ ॥

बाह्याः शिराः प्राप्य यदा कफासृक्पित्तानि संदूषयतीह वायुः । तैर्बद्धमार्गः स तदा विसर्पन्नुत्सेधलिङ्गं श्वयथुं करोति ॥ ६ ॥

जब वायु बाहिरी नाड़ियों में प्राप्त होकर कफ पित्त तथा रुधिर को दूषित करता है तब उन्हीं कफादिकोंके द्वारा मार्गके रुकजाने से वह वायु फैलकर उत्सेधलिङ्ग (ऊंचाई ही है लक्षण जिसका ऐसे) शोथ (सूजन) को उत्पन्न करता है ॥ ६ ॥

उरःस्थितैरूर्द्ध्वमधस्तु वायोः स्थानस्थितैर्मध्यगतैस्तु मध्ये। सर्वाङ्गगैः सर्वगतैः क्वचित्स्थैर्दोषैः क्वचित्स्याच्छ्वयथुस्तदाख्यः ॥ ७ ॥

यदि कफ आदि दोष वक्षःस्थल में स्थित हो तो शरीर के ऊर्ध्वभागमें जो पक्वाशयमें स्थित हों तो शरीर के अधोभाग (नीचेका हिस्सह) में जो मध्यभाग में स्थित हों तो शरीर के मध्यभाग में जो सम्पूर्ण अङ्गों में स्थित हो तो सर्वाङ्गमें और जो किसी एक अङ्गमें स्थित हों तो एकही अङ्गमें शोथ उत्पन्न होताहै शोथके नाम अङ्गोंके अनुसार होते हैं अर्थात् एक अङ्गमें हुआ शोथ एकाङ्गज तथा सम्पूर्ण अङ्गों में हुआ शोथ सर्वज कहलाता है इत्यादि ॥ ७ ॥

ऊष्मा तथा स्याद्दवथुः शिराणामायासइत्येव च पूर्वरूपम् । सर्वस्त्रिदोषोऽधिकदोषलिङ्गैस्तत्संज्ञमभ्येति भिषग्जितञ्च ॥ ८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊष्मा संताप तथा शिराओं का आयाम (नसोंका तनजाना) यह शोथ के पूर्वरूप हैं यद्यपि सम्पूर्ण शोथ त्रिदोषज होते हैं तथापि जिस शोथ में जिस दोष की अधिकता होती है उसी के अनुसार उसका नाम तथा चिकित्सा होती है अर्थात् जिस शोथमें वायुकी अधिकता होती है उसे वातज कहते हैं और उसमें वातनाशक चिकित्सा कीजातीहै ॥८॥

सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमुष्णाथशिरातनुत्वम् । सलोमहर्षाङ्गविवर्णताचसामान्यलिङ्गंश्वयथोः प्रदिष्टम् ॥ ९ ॥

भारीपन अनवस्थितत्त्व (कभी घटना कभी बढ़ना) ऊंचाई नसों का पतला होना उष्णता रोमाञ्च और वर्णका विगड़जाना यह शोथके सामान्यलक्षण हैं ॥ ९ ॥

चलस्तनुत्वक्परुषोऽरुणोशितःसुषुप्तिहर्षार्त्तियुतोऽनिमित्ततः ।प्रशाम्यतिप्रोन्नमतिप्रपीडितोदिवाबली चश्वयथुःसमीरणात् ॥ १० ॥

एकही स्थानमें स्थिर न रहना त्वचा पतली होना खुरखुरापन अरुण तथा कृष्ण वर्ण सुन्न होजाना रोमाञ्च विना कारणकेही शान्त होजाना दवानेसे उन्नत होना और दिनमें अधिक होना यह वातज शोथके लक्षण हैं ॥ १० ॥

मृदुःसगन्धोऽसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः । यउष्यते स्पर्शसहोऽक्षिरागकृत्सपित्तशोथो भृशदाहपाकवान् ॥ ११ ॥

कोमलता गंधयुक्त होना कृष्ण पीत तथा रक्त वर्ण होना भ्रम ज्वर स्वेद तृषा मद तथा दाह स्पर्श का न सहसकना और नेत्रोंकी रक्तता (लाल होना) से रोगी का पीड़ित होना और ताप तथा पकना यह पित्तज शोथके लक्षण हैं ॥ ११ ॥

गुरुःस्थिरःपाण्डुररोचकान्वितःप्रसेकनिद्रावमिवह्निमान्द्यकृत् । सुकृच्छ्रजन्मप्रशमोनिपीडितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफान्वितः ॥ १२ ॥

भारीपन कठोरता पाण्डुवर्ण अरुचि प्रसेक (नासिका से जल बहना) निद्राकी अधिकता छर्दि तथा मंदाग्नि से रोगी का पीड़ित होना बहुत देरमें उत्पन्न होकर धीरे २ शान्तहोना दवाने से उन्नत न होना तथा रात्रि में अधिक होना यह कफज शोथ के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

कृशस्यरोगैरबलस्ययोभवेदुपद्रवैर्वावमिपूर्वकैर्युतः । महार्त्तिमर्मानुगतोऽथराजिमान्परिस्रवन्भीमबलश्च सर्वशः ॥ १३ ॥

रोगोंके द्वारा निर्बल तथा कृश पुरुषके जो शोथ छर्दि आदि उपद्रवोंसे युक्त अत्यन्त पीड़ा युक्त मर्म में प्राप्त रेखा तथा स्रावयुक्त और भयंकर होता है उसे सन्निपातज जानना चाहिये ॥ १३ ॥

अहीनमांसस्ययएकदोषजोनवोबलस्तस्यसुखःससाधने । निदानदोषर्त्तुविपर्य्ययक्रमैरुपाचरेत्संबलदोषकालवित् ॥ १४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस पुरुषका बल तथा मांस क्षीण न हुआहो उसके जो एक दोषज शोथ उत्पन्न होता है वह सुख साध्य होता है बल दोष तथा समयका जाननेवाला वैद्य निदान दोष तथा ऋतुके विपरीत क्रमसे उसकी चिकित्सा करे॥ १४॥

अथामजंलङ्घनपाचनक्रमैर्विशोधनैरुल्बणदोषमादितः। शिरोगतंशीर्षविरेचनैरधोविरेचनैरूर्ध्वहरैस्तथोर्ध्वजम्॥ १५॥

आमदोष से उत्पन्न हुये शोथमें जिसदोषकी अधिकताहो पहिले उसी दोषकी चिकित्सा लंघन पाचन तथा वमन आदि शोधन के द्वाराकरे शिरमें प्राप्त दोषको शिरोविरेचन के द्वारा शरीरके ऊर्ध्वभागमें प्राप्त दोषको वमनके द्वारा और शरीर के अधोभाग में प्राप्त दोषको विरेचन के द्वारा निकाले॥ १५॥

उपाचरेत्स्नेहगतंविरूक्षणैःप्रकल्पयेत्स्नेहविधिञ्च रूक्षजे। विबद्धविट्केऽनिलजेनिरूहणं घृतन्तुपित्तानिलजेसतिक्तकम्॥ १६॥

शोथ में जो स्निग्धता (चिकनाहट) मालूम होय तो विरूक्षण (रुखाई उत्पन्नकरना) के द्वारा और रूक्षता मालूम होय तो स्नेहन के द्वारा चिकित्साकरे जो वातज शोथ में मल रुकाहुआ हो तो निरूहवस्ति देनी चाहिये वात पित्तज शोथमें तिक्त औषधियों के साथ पाककिया हुआ घी पिलाना चाहिये॥ १६॥

पयश्चमूर्च्छारतिदाहतर्षितेविशोधनीयेतुसमूत्रमिष्यते। कफोत्थितंक्षारकटूष्णसंयुतैःसमूत्रतक्रासवयुक्तिभिर्जयेत्॥ १७॥

मूर्च्छा बेचैनी दाह तथा तृषायुक्त शोथ में दूध पिलाना चाहिये शोधनके योग्य शोथ में गोमूत्रसहित दूध पिलाना चाहिये और कफज शोथ में क्षार कटु तथा उष्ण औषधियों से युक्त गोमूत्र मट्ठा तथा आसव के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये॥ १७॥

ग्राम्यानूपंपिशितलवणंशुष्कशाकंनवान्नंगौडंपिष्टंदधितिलकृतंविज्जलंमद्यमम्लम्। धानावल्लूरमशनमथोगुर्वसात्म्यंविदाहिस्वप्नंरात्रौश्वयथुगदवान्वर्जयेन्मैथुनञ्च १८।

शोथ में ग्राम तथा अनूप देशके जीवों का मांस लवण सूखा शाक नवीन अन्न गुड़की बनीहुई वस्तु पिट्ठीकी वस्तु दही तिलकी वस्तु बहुत पनीली वस्तु खट्टी वस्तु मद्य भुनेहुये यव सूखा मांस बहुत सी वस्तुओं को एक मिलाकर खाना भारी वस्तु असात्म्य वस्तु विदाही (हृदय में जलन पैदाकरके देरमें पचनेवाली) वस्तु दिनमें सोना और मैथुन यह सब वर्जित हैं॥ १८॥

व्योषंत्रिवृत्तिक्तकरोहिणीचसायोरजस्कात्रिफलारसेन। पीतंकफोत्थंशमयेत्तुशोफंमूत्रेणगव्येनहरीतकीवा॥ १९॥

सोंठि पीपरि मिर्च निशोथ कुटकी तथा लोहेका चूर्ण इन सबको त्रिफला के रस में मिलाकर पीने से अथवा गोमूत्र में हड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण मिलाकर पीने से कफज शोथका नाश होताहै ॥ १९ ॥

हरीतकीनागरदेवदारुसुखाम्बुयुक्तंसपुनर्नवंवा। सर्वंपिबेत्त्रिष्वपिमूत्रयुक्तंस्नातश्चजीर्णेपयसान्नमद्यात् ॥ २० ॥

वातज आदि तीनों प्रकारके शोथों में हड़ सोंठि देवदारु तथा गदहपूर्णा इनके चूर्णको कुछ उष्ण जलमें अथवा गोमूत्र में मिलाकर पीवे और औषधके पचजानेपर स्नानकरके दूध भात खावे ॥ २० ॥

पुनर्नवानागरमुस्तकल्कान्प्रस्थेन धीरःपयसोऽक्षमात्रान्। मयूरकंमागधिकांसमूलांसनागरांवाप्रपिबेत्स वाते ॥ २१ ॥

वातजशोथमें गदहपूर्णा सोंठि तथा नागरमोथा इनका तोले २ भर कल्क अथवा लटजीरा पीपरि पिपरामूल तथा सोंठिका तोले २ भर कल्क चौंसठ तोले दूधके साथ पीवे ॥ २१ ॥

दन्तीत्रिवृत्त्र्यूषणचित्रकैर्वापयःशृतं दोषहरंपिबेन्ना। द्विप्रस्थमात्रञ्चपलार्द्धिकैस्तैरर्द्धावशिष्टंपवनेसपित्ते २२

शोथमें जमालगोटे की जड़ निशोथ सोंठि पीपरि मिर्च तथा चीता इनके साथ पाककिया गया दूधपीवे इससे दोष निकल जातेहैं वात पित्तज शोथमें दो २ तोले इन्हीं सब औषधियों के साथ १२८ तोले दूधका पाककरै जब आधा दूध जलजाय तब छानकरपीवे २२॥

सशुण्ठिपीतद्रु रसंप्रयोज्यंश्यामोरुबूकोषणसाधितंवा। त्वग्दारुवर्षाभुमहौषधैर्वागुडूचिकानागरदन्तिभिर्वा ॥ २३ ॥

वातजशोथमें सोंठि तथा सरल काष्ठ का या काले निशोथ अरण्डकी जड़ सोंठि पीपरि तथा मिर्चका या तज देवदारु गदहपूर्णा तथा सोंठि का अथवा गिलोय सोंठि तथा जमाल गोटे की जड़का काढ़ा देना चाहिये ॥ २३ ॥

सप्ताहमौष्ट्रंयदिवापिमासंपयःपिबेद्भोजनवारिवर्जी। गव्यंसमूत्रंमहिषीपयोवाक्षीराशनंमूत्रमथोगवां वा ॥ २४ ॥

सात दिनतक अथवा महीने भरतक अन्न जल का त्याग करके ऊंटका दूध पीने से अथवा गोमूत्र सहित गौका दूध अथवा भैंसका दूध अथवा केवल गोमूत्र पीकर केवल दूध काही आहार करने से शोथ का नाश होता है ॥ २४ ॥

तक्रंपिबेद्वागुरुभिन्नवर्चाःसव्योषसौवर्चलमाक्षिकंवा। गुडाभयांवागुडनागरंवासदोषभिन्नामविबद्धवर्चाः ॥ २५ ॥

शोथ में मलभेद होने पर सोंठि पीपरि मिर्च सोचर नोन तथा शहद एक में मिलाकर खावे अथवा मट्ठा पीवे और आम दोष सहित मलके रुकजाने पर हड़ या सोंठि को गुड़में मिलाकर खावे ॥ २५ ॥

विड्वातसङ्गेपयसारसैर्वाप्राग्भुक्तम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

याद्रुरूकतैलम् । स्रोतोविबन्धेऽग्निरुचिप्रणाशेमद्यान्यरिष्टांश्चपिबेत्सुजातान् ॥ २६ ॥

और वायु तथा मल दोनों के रुकजानेपर भोजन के पहिले दूध अथवा मांस के रस के साथ रेंड़ी का तैल पीवे और स्रोतों के रुक जाने पर अग्नि तथा रुचिके नष्ट होजाने पर श्रेष्ठ मद्य तथा अरिष्ट पीना चाहिये ॥ २६ ॥

कण्डीरभल्लातकचित्रकांश्चव्योषंविडङ्गंबृहतीद्वयञ्च । द्विप्रस्थिकंगोमयपावकेनद्रोणेपचेत्कूर्चिकमस्तुनस्तु ॥ २७ ॥

कण्डीर भिलावाँ चीता सोंठि पीपरि मिर्च वायविडंग भटकटैया तथा बड़ी भटकैया दो २ प्रस्थ (चौंसठ २ तोले) इन औषधियों को लेकर ५१२ तोले कूर्चिक (दूध का विकारविशेष) तथा ५१२ तोले दही के तोड़में डालकर बिनवां कंडों की आँच में पकावे ॥ २७ ॥

त्रिभागशेषञ्चसुपूतशीतंद्रोणेनतस्त्राकृतमस्तुनाच । सितोपलायाश्चशतेनयुक्तंलिप्तेघटेचित्रकपिप्पलीनाम् ॥ २८ ॥

जब तिहाई रस बाकी रहे तब उतारकर छानले फिर यह शीतल काढ़ा १०२४ तोले दहीका तोड़ और ४०० तोले मिश्री एकमें मिलाकर चीता तथा पीपरिसे लिपेहुये घटमें डालकर ॥ २८ ॥

वैहायसेस्थापितमादशाहात्प्रयोजयंस्तद्विनिहन्तिशोफान् । भगन्दरार्शःक्रिमिकुष्ठमेहान्वैवर्ण्यकार्श्यानिलहिक्कनञ्च ॥ २९ ॥

इति गण्डीराद्यरिष्टः ।

दश दिनतक शून्यस्थान में रक्खे तदनंतर मात्राके अनुसार इसका सेवन करनेसे शोथ भगन्दर ववासीर क्रिमि कुष्ठ प्रमेह विवर्णता (वर्णका बिगड़ जाना) कृशता तथा वातज हिचकी इन सब रोगोंका नाश होताहै ॥ २९ ॥

काश्मर्य्यधात्रीमरिचाभयानांद्राक्षाफलानाञ्चसपिप्पलीनाम् । शतंशतंजीर्णगुडात्तुलाञ्चसंक्षुद्यकुम्भेमधुनाप्रलिप्ते ॥ ३० ॥ सप्ताहमुष्णेद्विगुणन्तुशीतेस्थितंजलद्रोणयुतंपिबेन्ना । शोफान्विबन्धान्कफवातजांश्चसहन्त्यरिष्टोऽष्टशतोऽग्निकृच्च ॥ ३१ ॥

इति अरिष्टः ।

खँभारी के फल आमले मिर्च हड़ दाख तथा पीपरि यह सब एक २ सौ लेकर एक साथ कूटै फिर इनके चूर्ण ४०० तोले गुड़ और एकहज़ार चौबीस तोले जल इन सब को एकमें मिलाकर शहद से लिपेहुये घड़ेमें डालकर सात दिनतक उष्ण (धूप आदि से युक्त) स्थान में और १५ दिनतक शीतल (जल आदि से युक्त) स्थान में रक्खे तदनन्तर मात्राके अनुसार इसका सेवन करनेसे कफ वातज विबन्ध (मल मूत्रका रुकना) तथा शोथोंका नाश होता है और अग्नि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृद्धि होती है इसे अष्टशत अरिष्ट कहते हैं ॥ ३० । ३१ ॥

इति अष्टशतारिष्ट ॥

पुनर्नवेद्वेचबलेसपाठेदन्तींगुडूचीमथचित्रकञ्च । निदिग्धिकाञ्चत्रिपलानिपक्त्वाद्रोणार्द्धशेषेसलिलेतत्तम् ॥ ३२ ॥

श्वेत गदहपूर्णा लाल गदहपूर्णा बरियारा गुलशकरी पाढ़र जमालगोटेकी जड़ गिलोय चीता तथा भटकटैया बारह २ तोले यह सब औषध लेकर १०२४ तोले जलमें डालकर पाककरे जब आधा जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे ॥ ३२ ॥

पूत्वारसंद्वेचगुडात्पुराणात्तुलेमधुप्रस्थयुतंसुशीतम् । मासंनिदध्याद्घृतभाजनस्थंपलेयवानांपरितस्तुमाषान् ॥ ३३ ॥

फिर इसकाढ़ेमें ८०० तोले गुड़ मिलाकर तथा चौंसठ तोले शहद मिलाकर घीके पात्रमें डालकर महीनेभरतक यवोंके ढेरमें रक्खे और उसके चारोंओर उड़द डालदेवे ॥३३॥

चूर्णीकृतैरर्द्धपलांशिकैस्तंपत्रत्वगेलामरिचाम्बुलोहैः । गन्धान्वितंक्षौद्रघृतप्रदिग्धैर्जीर्णेपिबेद्व्याधिबलंसमीक्ष्य ॥ ३४ ॥

तदनन्तर इसमें तज तेजपात छोटी इलायची मिर्च सुगन्धवाला तथा लोहचूर्ण इनको घी तथा शहदके साथ पीसकर मिलावे और रोग तथा बलकेअनुसार इसकासेवनकरे ३४॥

हृत्पाण्डुरोगंश्वयथुंप्रवृद्धंप्लीहभ्रमारोचकमेहगुल्मान् । भगन्दरंषड्जठराणिकासंश्वासंग्रहण्यामयकुष्ठकण्डूः ॥ ३५ ॥ शाखानिलंबद्धपुरीषताञ्चहिक्कांकिलासञ्चहलीमकञ्च । क्षिप्रंजयेद्वर्णबलायुरोजस्तेजोन्वितोमांसरसान्नभोक्ता ॥३६॥

इतिपुनर्नवाद्यरिष्टः ।

इसके सेवन से हृदयके रोग पाण्डुरोग बहुत बढ़ाहुआ शोथ प्लीहा भ्रम अरुचि प्रमेह गुल्म भगन्दर छः प्रकारका उदररोग खांसी श्वास ग्रहणीदोष कुष्ठ खुजली हाथ पैरोंके वातज रोग मलका रुकना हिचकी श्वेतकुष्ठ तथा हलीमक इन सब रोगोंका शीघ्रही नाश होताहै और वर्ण बल आयु ओज तथा तेज की वृद्धि होती है इस औषधका सेवन करनेवाला पुरुष मांस के रस के साथ भात खावे ॥ ३५ । ३६ ॥

फलत्रिकंदीप्यकचित्रकौचसपिप्पलीलोहरजोविडङ्गम् । चूर्णीकृतंक्षौद्रविकंद्धिरंशंक्षौद्रंपुराणस्यतुलांगुडस्य । मासंनिदध्याद्घृतभाजनस्थंयवेषुतानेवनिहन्तिरोगान् ३७॥

इतित्रिफलाद्यरिष्टः ।

हड़ बहेड़ा आमला अजवाइन चीता पीपरि लोहका चूर्ण तथा वायविड़ंग इन सबका चूर्ण सोलह २ तोले शहद ३२ तोले और पुराना गुड़ ४०० तोले इन सबको घीके पात्रमें रखकर महीनेभरतक यवोंके ढेरमें रक्खे तदनन्तर मात्राके अनुसार इसका सेवन करे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके सेवन से भी पूर्वोक्त सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है ॥ ३७ ॥

येचार्शसाम्पाण्डुविकारिणाञ्चप्रो क्ताःशुभाःशोफिषुतेऽप्यरिष्टाः । कृ ष्णासपाठागजपिप्पलीचनिदिग्धि काचित्रकनागरेच ॥ ३८ ॥

बवासीर तथा पाण्डुरोग में जो अरिष्ट कहेगये हैं वह शोथ में भी हित होते हैं पीपरि पाढ़र गजपीपरि भटकटैया चीता सोंठि ३८॥

सपिप्पलीमूलरजन्यजाजीमुस्तञ्च चूर्णंमुखतोयपीतम् । हन्यात्रिदोषं चिरजञ्चशोफंकल्कश्चभूनिम्बमहौ षधस्य ॥ २९ ॥

पिपरामूल हल्दी जीरा तथा नागरमोथा इनका चूर्ण और चिरायता तथा सोंठि का कल्क कुछ उष्ण जलके साथ पीनेसे त्रिदोषज तथा बहुत पुराने शोथ का नाश होता है ॥ ३९ ॥

अयोरजस्त्र्यूषणयावशूकंचूर्णञ्चपी तंत्रिफलारसेन । क्षारद्वयंस्याल्लव णानिचत्वार्य्ययोरजोव्योषफलत्रि कञ्च ॥ ४० ॥

लोहेकी रेत सोंठि पीपरि मिर्च तथा यवाखार इनका चूर्ण त्रिफलाके रसके साथ पीने से त्रिदोषज तथा पुराने शोथका नाश होता है यवाखार सज्जी सोंचर लवण सैंधव लवण विड्लवण खारीलवण लोहेकी रेत सोंठि पीपरि मिर्च हड़ बहेड़ा आमला ॥ ४० ॥

सपिप्पलीमूलविडङ्गसारंमुस्ताजमो दामरदारुबिल्वम् । कलिङ्गकाश्चि त्रकमूलपाठंसयष्टिकञ्चातिविषंपलां शम् ॥ ४१ ॥

पिपरामूल बायबिड़ंग नागरमोथा अजमोद देवदारु बेल इन्द्रयव चीता पाढ़र मुलेठी तथा अतीस चार २ तोले ॥ ४१ ॥

सहिंगुकर्षन्त्वनुसूक्ष्मचूर्णंद्रोणंयथा मूलकशुण्ठिकानाम् । स्याद्भस्मन स्तत्सलिलेनसाध्यमालोड्ययावद्ध नमप्रदग्धम् ॥ ४२ ॥

हींग तोलेभर इन सबका महीन चूर्णकरे फिर मूली तथा सोंठि की एक हज़ार चौबीस तोले भस्मकेद्वारा क्षार जल बनाकर उस में यवाखार आदि का चूर्ण छोड़कर पाककरे जब पकते २ वह जल गाढ़ा होजाय तब उतारले और इस रीति से पाककरे जिसमें औषधियां जलने न पावें ॥ ४२ ॥

स्त्यानंततःकोलसमान्तुमात्रांकृ त्वासुशुष्कांविधिनाभजेत । प्लीहोदरश्वित्रहलीमकांस्तुपाण्ड्वाम यारोचकशोषशोफान् । विषूचिका गुल्मगराश्मरीश्चसश्वासकासाःप्र गुदेत्सकुष्ठाः ॥ ४३ ॥

इति क्षारगुटिका ।

तदनन्तर उसकी छः २ माशेभर की गोली बनाकर सुखाके विधिपूर्वक खावे यह गोली प्लीहा उदररोग श्वेत कुष्ठ हलीमक पाण्डुरोग अरुचि शोष शोथ विसूचिका गुल्म गरदोष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथरी श्वास खांसी तथा कुष्ठ इन सब रोगों को नष्ट करती हैं ॥ ४३ ॥

इति क्षारगुटिका ॥

प्रयोजयेदार्द्रकनागरंवातुल्यंगुडेनाद्धपलाभिवृद्ध्या । मात्रापलंपञ्चपलानिमासंजीर्णेपयोयूषरसान्नभोक्ता ॥ ४४ ॥

अदरख अथवा सोंठि को समभाग पुराने गुड़में मिलाकर पहिले दिन दो तोले खावे फिर क्रमसे दो २ तोले बढ़ाता जावे २० तोले से अधिक न बढ़ावे जब २० तोले होजायँ तब महीनेभरतक उतनीही औषध खावे और औषधके पचजानेपर दूध यूष तथा मांसके रसके साथ भात खावे ॥ ४४ ॥

गुल्मोदरार्शःश्वयथुप्रमेहान्श्वासप्रतिश्यालसकाविपाकान् । सकामलांशोषमनोविकारान्कासंकफञ्चैवजयेत्प्रयोगः ॥ ४५ ॥

इति गुडार्द्रकप्रयोगः ।

इस प्रयोग से वायुगोला बवासीर शोथ प्रमेह श्वास प्रतिश्याय (जुकाम) अलसक अन्नका न पचना कामला शोष मनके विकार खांसी तथा कफ इन सबका नाशहोताहै ४५॥

रसस्तथैवार्द्रकनागरस्यपेयोऽथजीर्णेपयसान्नमद्यात् । जत्वश्मजञ्चत्रिफलारसेनहन्यात्रिदोषंश्वयथुंप्रसह्य ॥ ४६ ॥

इति शिलाजतुप्रयोगः ।

अदरख अथवा सोंठिके रसको पीकर उसके पचजानेपर दूध भात खावे इससे भी पूर्वोक्तगुण होते हैं त्रिफलाके रसमें शिलाजीत मिलाकर पीने से त्रिदोषज शोथका नाश होताहै ॥ ४६ ॥

द्विपञ्चमूलस्यपचेत्कषायेकंसोऽभयानाञ्चशतंगुडस्य । लेहेसुसिद्धेचविनीयचूर्णंव्योषंत्रिसौगन्ध्यमुषांस्थितेच ॥ ४७ ॥ प्रस्थार्द्धमात्रंमधुनःसुशीतेकिञ्चिच्चचूर्णादपियावशूकात् । एकाभयांप्राश्यततश्चलेहाच्छुक्तिंनिहन्तिश्वयथुंप्रवृद्धम् ॥ ४८ ॥ श्वासज्वरारोचकमेहहिक्काप्लीहत्रिदोषोदरपाण्डुरोगान् । कार्श्यामवातानसृगम्लपित्तंवैवर्ण्यमूत्रानिलशुक्रदोषान् ॥ ४९ ॥

इति कंसहरीतकी ।

दशमूलके २५६ तोले काढ़े में १०० हड़ और ४०० तोले गुड़ डालकर पाककरे जब अवलेह के योग्य पाक होजाय तब उतारले फिर उस शीतल पाकमें सोंठि पीपरि मिर्च दालचीनी छोटी इलायची तेजपात तथा यवाखारका चार २ तोलेभर चूर्ण और बत्तिस तोले शहद मिलावे तदनन्तर उसमें से एक हड़ तथा दो तोले अवलेह लेकर हड़को खाकर अवलेह को चाट लेवे इससे बहुत बढ़ाहुआ शोथ श्वास ज्वर अरुचि प्रमेह हिचकी प्लीहा त्रिदोषज उदररोग पाण्डुरोग कृशता आमवात रक्तपित्त अम्लपित्त विवर्णता (वर्णका विगड़ना) और मूत्र वायु तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर्यके दोष इन सबका नाश होताहै ४७४९॥

इति कंसहरीतकी ॥

पटोलमूलासुरदारुदन्तीत्रायन्ति पिप्पल्यभयाविशालाः। यष्ट्याह्वि कातिक्तकरोहिणीचसचन्दनास्या न्निचुलानिदार्वी ॥ ५० ॥ कर्षो त्थितैस्तैःक्वथितःकषायोघृतस्यपेयः कुडवेनयुक्तः। विसर्पदाहज्वरसन्नि पातांस्तृष्णांविषाणिश्वयथुंनिह न्ति ॥ ५१ ॥

इति पटोलमूलाद्यघृतम्।

परवल की जड़ देवदारु जमालगोटे की जड़ त्रायमाण पीपरि हड़ इन्द्रायण मुलेठी कुटकी चन्दन समुद्रफल तथा दारुहल्दी तोले२ भर इन सब औषधियोंके काढ़ेमें सोलह तोले घी डालकर पीनेसे विसर्प (जहरवात) दाह ज्वर सन्निपात तृषा विष दोष तथा शोथ इन सबका नाश होता है ॥ ५० । ५१ ॥

इति पटोलमूलादिघृत ॥

सचित्रकंधान्ययवान्यजाजीसौवर्च लंत्र्यूषणवेतसाम्लम्। बिल्वात्फलं दाडिमयावशूकौसपिप्पलीमूलम थोऽपिचव्यम् ॥ ५२ ॥ पिष्ट्वाक्षमा त्राणिजलाढकेनपक्त्वाघृतप्रस्थम थोप्रयुंज्यात्। अर्शांसिगुल्मंश्वय थुञ्चदुःखंतद्धन्तिवह्निञ्चकरोतिदीप्त म् ॥ ५३ ॥

इति चित्रकाद्यघृतम्।

चीता धनियां अजवाइन जीरा सांचरनोन सोंठ पीपरि मिर्च अमलबेत बेल उत्पल दाड़िम यवाखार पिपरामूल तथा चव्य इन सब तोले २ भर औषधियों को २५६ तोले जल में पीसकर ६४ तोले घी के साथ पाक करै जब पानी जल जाय केवल घी बाकीरहै तब उताकर छान लेवे इस घृत के सेवन से ववासीर गुल्म तथा दुःखदायी शोथका नाश होता है और अग्नि दीप्त होतीहै ॥ ५३ ॥

इति चित्रकादिघृत ॥

पिबेद्घृतंवाष्टगुणाम्बुसिद्धंसचित्र कक्षारमुदारवीर्य्यम्। कल्याणकंवा पिसपञ्चगव्यंतिक्तंमहद्वाप्यथतिक्त कंवा ॥ ५४ ॥

इति चित्रकादिघृतम्।

चीता के क्षार तथा अठगुने जल के साथ पाक कियाहुआ घी पूर्वोक्त कल्याणघृत पञ्च गव्यघृत महातिक्तकघृत अथवा तिक्तकघृत शोथ में हित होता है ॥ ५४ ॥

क्षीरंघटेचित्रककल्कलिप्तेदध्यागतं साधुविमथ्यतेच। तज्जंघृतंचित्रक मूलगर्भंतक्रेणसिद्धंश्वयथुघ्नमग्र्य म् ॥ ५५ ॥

चीताके कल्क से लिपेहुए घट में दही ज माकर मथके उसका घी निकाले फिर चीता के कल्क तथा मट्ठेके साथ उस घी का पाक करै जब मट्ठा जलजाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे यह घी अत्यन्त शो थनाशक है ॥ ५५ ॥

अर्शोऽतिसारानिलगुल्ममेहांश्चैता

CC-0. Sangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्निहन्त्यग्निबलप्रदश्च । तक्रेणवा द्यात्सघृतेनतेनभोज्यानिसिद्धामथ वायवागूम् ॥ ५६ ॥

इति चित्रकघृतम् ।

और ववासीर अतीसार वायगोला तथा प्रमेह का नाशक और अग्नि के बलका बढ़ाने वाला होता है अथवा चीताके कल्क से लिपे हुये घड़े में जमायेगये दहीके मट्ठेके साथ भोजन करे अथवा उसी मट्ठे के साथ पाक की गई यवागू खावे इस से पूर्वोक्त गुण होते हैं ॥ ५६ ॥

जीवन्त्यजाजीशटिपुष्कराह्वैःसकाखीचित्रकबिल्वमध्यैः । सयावशूकैर्बदरप्रमाणैर्वृक्षाम्लयुक्ताघृततैलभृष्टाः ॥ ५७ ॥

जीवन्ती जीरा कचूर पुष्करमूल कालाजीरा चीता बेलगिरी यवाखार तथा तिंतिड़ीक इन सब छः २ मासे औषधियों के साथ यवागू बनवाकर घी तथा तैलसे छौंके॥५७॥

अर्शोऽतिसारानिलगुल्मशोफहृद्रोगमन्दाग्निहितायवागूः । यापञ्चकोलैर्विधिनैवतेनसिद्धाभवेत्साच समातयैव ॥ ५८ ॥

इस यवागू को पीने से ववासीर अतीसार बायगोला शोथ हृदयके रोग तथा मन्दाग्नि इन सबका नाश होता है इसी प्रकार पंचकोल(पीपरि पिपरामूल चव्य चीता तथा सोंठि छः २ मासे) के साथ पाक कीगई यवागूमें भी गुण होते हैं ॥ ५८ ॥

कुलत्थयूषश्चसपिप्पलीकोमौद्गश्चसव्यूषणयावशूकः । रसस्तथाविष्किरजाङ्गलानांसकूर्मगोधाशिखिशल्लकानाम् ॥ ५९ ॥

पीपरिसहित कुल्थी का यूप सोंठि पीपरि मिर्च तथा यवाखारसहित मूंग का यूप विष्किर (बखेटकर खानेवाले) जीवों के मांस का रस कछुवा गोह मोर तथा स्याही के मांसकारस जांगल जीवोंके मांसका रस ॥५९॥

सुवर्चिकागृञ्जनकंपटोलंसवायसीमूलकनेत्रनिम्बम् । शाकार्थिनांशाकमतिप्रशस्तंभोज्यंपुराणश्चयवःसशालिः ॥ ६० ॥

हुरहुर गाजर परवल काकमाची मूली वेत तथा नींबका शाक और पुराने यव तथा पुराने चावल यह सब शोथमें शाकार्थी पुरुष को हित होते हैं ॥ ६० ॥

आभ्यन्तरंभेषजमुक्तमेतद्बहिर्हितंयच्छृणुतद्यथावत् । स्नेहान्प्रदेहान्परिषेचनानिस्वेदांश्चवातप्रबलांश्च कुर्य्यात् ॥ ६१ ॥

इस प्रकार आभ्यन्तर(भीतरी अर्थात् खाने पीने से गुण करनेवाली) औषधें कही गई अब बाह्य (बाहरी अर्थात् लेप आदिसे गुण करनेवाली, औषध कही जाती हैं वह तुमसुनो वातज शोथ में स्नेहन लेप परिषेक (सींचना) तथा स्वेदन करना चाहिये ॥ ६१ ॥

शैलेयकुष्ठागुरुदारुकौन्तीत्वक्पद्मकैलाम्बुपलाशमुस्तैः । प्रियंगुस्थौ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐयकहेममांसीतालीशपत्रप्लवपत्र धान्यैः ॥ ६२ ॥

छरीला कूट अगर देवदारु रेणुका दालचीनी पद्माख छोटी इलायची सुगंधबाला ढाख नागरमोथा प्रियंगु थुनेर नागकेसर जटामासी तालीस केवटी मोथा तेजपात धनियां ॥ ६२ ॥

श्रीवेष्टकध्यामकपिप्पलीभिःस्पृक्कानखैश्चैवयथोपलाभम् । वातान्वितेऽभ्यङ्गमुषन्तितैलंसिद्धंसुपिष्टैरपिचप्रदेहम् ॥ ६३ ॥

इति शैलेयाद्यंतैलम् ।

गंधापिरोजा रोहिष पीपरि स्पृक्का तथा नखी इनमें से जितनी औषधें मिलसकें उनके साथ पाक किया गया तैल वातज शोथ में मलना चाहिये और इन औषधियों का लेप भी लगाना चाहिये ॥ ६३ ॥

इति शैलेयादितैल ॥

जलैश्चवासार्ककरञ्जशिग्रुकाश्मर्य्यपत्राजकजैश्चसिद्धैः । स्विन्नोमृदूष्णोरवितप्ततोयस्नातश्चगन्धैरनुलेपनीयः ॥ ६४ ॥

जिस पुरुषके वातज शोथ हो वह रूसा मदार कंजा सहिंजन खँभारी के फल तेजपात तथा श्वेत बवई के साथ पाक कियेगये जल के द्वारा स्वेदन करके धूपके द्वारा उष्ण हुये जल से स्नान करके सुगंधित वस्तुओंका लेप शरीर में लगावे ॥ ६४ ॥

सवेतसाःक्षीरवतांद्रुमाणांत्वचः स मञ्जिष्ठलतामृणालाः । सचन्दनाःपद्मकबालकौचपैत्तेप्रदेहस्तुसतैलपाकः ॥ ६५ ॥

बेत दूधवाले बर्गद आदि वृक्षों की छाल मंजीठ प्रियंगु कमलकी दएडी चन्दन पद्माख तथा सुगंधबाला इन का लेप और इन्हीं के साथ पाक कियेगये तैल का मर्दन पित्तजशोथ में हित होता है ॥ ६५ ॥

आक्तस्यतेनाम्बुरविप्रतप्तंसचन्दनंसाभयपद्मकञ्च । स्नानेमतंक्षीरवतांकषायःक्षीरोदकंचन्दनलेपनञ्च ॥ ६६ ॥

और इसी तैलको शरीरमें मलकर सूर्यकी किरणोंसे उष्ण चन्दन हड़ तथा पद्माखयुक्त जल दूधवाले वृक्षोंका काढ़ा तथा दूधके द्वारा स्नान करके शरीर में चन्दन का लेप लगावे ॥ ६६ ॥

कफेतुकृष्णासिकतापुराणपिण्याकशिग्रुत्वगुमाप्रलेपः । कुलत्थशुण्ठीजलमूत्रसेकश्चरण्डागुरुभ्यामनुलेपनञ्च ॥ ६७ ॥

पीपरि बालू पुरानापीना सहिंजनकी छाल तथा अलसी इनका लेप कफजशोथ में हित होता है कुल्थी तथा सोंठि के काढ़ेके द्वारा अथवा गोमूत्रकेद्वारा कफजशोथ सींचनाचाहिये और कमला गुएडी तथा अगरुका लेप कफज शोथ में करना चाहिये ॥ ६७ ॥

बिभीतकानांफलमध्यलेपःसर्वेषुदाहार्त्तिहरःप्रलेपः । यष्ट्याह्वमुस्तैः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकपित्थपत्रैःसचन्दनैस्ततिपिडिका सुलेपः ॥ ६८ ॥

सब प्रकारके शोथों में बहेड़े की मींगी का लेप करने से दाह तथा पीड़ाका नाश होता है मुलेठी नागरमोथा कैथेकी पत्ती तथा चन्दन इनका लेप शोथ में हुई पिड़िकाओं पर करना चाहिये ॥ ६८ ॥

रास्नावृषार्कत्रिफलाविडङ्गाशिग्रुत्वचोमूषिककर्णिकाच । निम्बार्जकौंऽयाघ्रनखःसदूर्वासुवर्चलातिक्तकरोहिणीच ॥ ६९ ॥

रासना रूसा त्रिफला वायविड़ंग सहिंजन की छाल मुसली नींब श्वेतबवई बघनखी दूब हुरहुर कुटकी ॥ ६९ ॥

सकाकमाचीबृहतीसकुष्ठापुनर्नवाचित्रकनागरेच । उन्मर्दनंशोफिषुमूत्रपिष्टंशस्तस्तथामूलकतोयसेकः ॥ ७० ॥

काकमाची वड़ी भटकटैया कूट गदहपूर्णा चीता तथा सोंठि इन सब को गोमूत्र में पीस कर शोथ में मालिश करनी चाहिये और मूली के काढ़े के द्वारा शोथ को सीचना चाहिये ॥ ७० ॥

शोफास्तुगात्रावयवाश्रितायेतेस्थानदूष्याकृतिनामभेदात् । अनेकसंख्याःकतिचिच्चतेषां निदर्शनार्थंशृणुचोच्यमानात् ॥ ७१ ॥

शरीर के जुदे २ अंगों में जो शोथ होते हैं वह स्थानदूष्य (दूषित होनेवाले) लक्षण तथा नामके भेदसे अनेक होते हैं उनमेंसे दृष्टान्त के लिये कुछ यहाँ पर कहे जाते हैं तुम सुनो ॥ ७१ ॥

दोषास्त्रयःस्वैःकुपितानिदानैःकुर्वन्तिशोफाञ्छिरसःसुघोरान् । अन्तर्गलेघुर्घुरिकान्वितञ्चशालूकमुच्छ्वासनिरोधनानि ॥ ७२ ॥

अपने २ निदानोंसे कुपित हुये तीनों दोष शिरमें घोर शोथोंको उत्पन्न करते हैं वातादि दोष गलेके भीतर घर्घरशब्द युक्त शोथ उत्पन्न करते हैं उस शोथ से श्वास रुकजाती है उस शोथ को शालूक कहते हैं ॥ ७२ ॥

गलस्यसन्धौचिबुकेगलेचसदाहरागश्वसनासुचोग्रः । शोफोभृशार्त्तिस्तुविडालिकास्याद्धन्याद्गलेचेद्वलयिकृतास्यात् ॥ ७३ ॥

गलेकी संधि ठुड्ढी तथा गलेमें तीनों दोषों के कोप से दाह रक्तवर्ण तथा श्वासयुक्त शोथ उत्पन्न होता है इस शोथ को सूच्यग्र कहते हैं गले में अत्यन्त पीड़ायुक्त जो शोथ होता है उसे विड़ालिका कहते हैं जो यह विड़ालिका नाम शोथ मण्डलाकार होतो बहुत शीघ्रही रोगी मरजाता है ॥ ७३ ॥

स्यात्तालुविद्रध्यपिदाहरागैर्युताभवेत्तालुनिसात्रिदोषात् । जिह्वोपरिष्टादुपजिह्विकास्यात्कफादधस्तादधिजिह्विकाच ॥ ७४ ॥

तालुमें रक्तवर्ण तथा दाहयुक्त जो त्रिदोषजदोष होताहै उसे तालुविद्रधि कहते हैं जि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ह्वा के ऊपर उपजिह्विका नाम कफजशोथ और जिह्वाके नीचे अधिजिह्विका नाम कफज शोथ उत्पन्न होता है ॥ ७४ ॥

योदन्तमांसेषुतुरक्तपित्तात्पाकोभवेत्सोपकुशःप्रदिष्टः । स्याद्दन्तविद्रध्यपिदन्तमांसेशोफःकफाच्छोणितसञ्चयोत्थः ॥ ७५ ॥

दांतों के मूलमें रक्त तथा पित्त से जो पका हुआ शोथ उत्पन्न होता है उसे उपकुश कहते हैं दांतों के मांसमें कफ तथा संचित रुधिर से जो शोथ होता है उसे दंतविद्रधि कहते हैं ॥ ७५ ॥

गलस्यपार्श्वेगलगण्डएकःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगण्डैः । साध्याः स्मृताःपीनसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुतास्त्वसाध्याः ॥ ७६ ॥

गले के किनारे पर जो शोथ की गांठिसी उत्पन्न होती है उसे गलगण्ड कहते हैं और जो बहुत सी गांठें उत्पन्न होती हैं उन्हें गंडमाला कहते हैं यह सब शोथ साध्य होते हैं और जो पीनस पशुलियों की पीड़ा खाँसी ज्वर तथा छर्दि इन उपद्रवों से युक्त होतो असाध्य होते हैं ॥ ७६ ॥

येषांशिराकायशिरोविरेकोधूमःपुराणस्यघृतस्यपानम् । सलंघनंवक्त्रभवेषुचापिप्रहर्षणंस्यात्कवलग्रहश्च ॥ ७७ ॥

इन शोथोंमें शिरोविरेक (फस्त खुलाना विरेचन शिरोविरेचन धूमपान तथा पुराने घी का पीना हित होताहै मुखमें हुये शोथों में लंघन महर्षण तथा कवलग्रह (औषधियों का ग्रास बनाकर मुख में रखना) हित होता है ॥ ७७ ॥

अङ्गैकदेशेष्वनिलादिभिःस्यात्स्वरूपधारीस्फुरणःशिराभिः । ग्रन्थिर्महान्मांसभवस्त्वनर्त्तिर्मेदोभवःस्निग्धतमश्चलश्च ॥ ७८ ॥

शरीर के किसी स्थान में कुपित हुये वायु आदिके द्वारा वायु आदिदोषों के लक्षणों से युक्त ग्रंथि उत्पन्न होती है शिराओं के द्वारा वह ग्रंथि फड़का करती है जो मांस से ग्रन्थि हो तो बहुत बड़ी तथा पीड़ारहित होती है और जो मेदासे हो तो अत्यन्त स्निग्ध तथा चञ्चल होती है ॥ ७८ ॥

तंशोधितंस्वेदितमश्मकाष्ठैःसांगुष्ठदण्डैर्विनयेदपक्वम् । विपाट्यचोद्धृत्यभिषक्सकोषंशस्त्रेणदग्ध्वाव्रणवच्चिकित्सेत् ॥ ७९ ॥

कच्ची ग्रंथि में पहिले शोधन तथा स्वेदन करे फिर पाषाण काष्ठ अंगुष्ठ तथा दण्ड के द्वारा उसको दबाकर नर्म करै तदनन्तर शस्त्र के द्वारा चीरकर कोष (मांस की झिल्ली जिसमें ग्रंथि रहती है) सहित ग्रंथिको निकालकर उस स्थानको जलाकर व्रणकीसी चिकित्साकरे ॥ ७९ ॥

अदग्धईषत्परिशोषितश्चप्रयातिभूयोऽपिशनैर्विवृद्धिम् । तस्मादशेषःकुशलैःसमन्ताच्छेद्योभवेद्वीक्ष्यशरीरदेशान् ॥ ८० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि ग्रंथिका स्थान जलाया न जाय और कुछ ग्रन्थि बाकी रहजाय तो ग्रंथि धीरे २ फिरि वढ़िआती है इससे बुद्धिमान् वैद्य शरीर के स्थानों का विचार करके चीरकर सम्पूर्ण ग्रंथि निकाल डाले ॥ ८० ॥

शेषेकृते पाकवशेन शीर्य्येत्ततः क्षतोत्थः प्रसरेद्धिसर्पः । उपद्रवंतंप्र तिवार्य्यतज्ज्ञःस्वैर्भेषजैःपूर्वतरैर्यथो क्तैः ॥ ८१ ॥

यदि कुछ ग्रंथि बाकी रहजाती है तो पक कर गलजाती हैं और उस घाव से विसर्प (जहरबात) उत्पन्न होताहै इससे बुद्धिमान् वैद्य पहिले विसर्परोगमें कही हुई औषधियों से विसर्पके उपद्रवोंको रोंककर॥ ८१ ॥

ततःक्रमेनास्ययथाविधानं व्रणंव्र णज्ञस्त्वरयाचिकित्सेत् । विवर्जये त्कुक्ष्युदराश्रितश्चतथागलेमर्मणिसं श्रितश्चास्थूलःखरश्चापिभवेद्धिवर्ज्यो यश्चापिबालस्थविराबलानाम् ८२ ॥

क्रमसे विधिपूर्वक शीघ्रही व्रणकीसी चिकित्सा करे कुक्षि उदर कण्ठ तथा मर्मस्थानों में उत्पन्न हुई और अत्यन्त स्थूल तथा खरखरी ग्रंथि असाध्य होती है उसको चीरकर निकाले और बालक वृद्ध तथा निर्बल पुरुष की भी ग्रंथि असाध्य होती है उसे भी नहीं निकालना चाहिये ॥ ८२ ॥

ग्रन्थ्यर्बुदानाञ्चयतोऽविशेषःप्रदेश हेत्वाकृतिदोषदूष्यैः ॥ ८३ ॥

ग्रन्थि तथा अर्बुदरोगमें स्थान हेतु लक्षण दोष तथा दूष्यों के द्वारा कोई विशेषता नहीं होती है ॥ ८३ ॥

ततश्चिकित्सेद्भिषगर्बुदानिविधान विद्ग्रन्थिचिकित्सितेन । ताम्रास शूलांपिडिकाभवेद्यासात्वालजीना मपरिस्नुताग्रा ॥ ८४ ॥

इससे बुद्धिमान् वैद्य ग्रन्थि रोगकी चिकित्सा की विधिके अनुसार अर्बुदरोगकी चिकित्साकरे शरीरमें ताम्रवर्ण तथा शूलयुक्त जो पिड़िका उत्पन्न होती है उसे अलजी कहते हैं उसके अग्रभाग से कुछ २ पीब बहता है ॥ ८४ ॥

शोफःकृतश्चर्मनखान्तरेस्यान्मांसा सृग्दूषीभृशशीघ्रपाकः । ज्वरान्वि तावंक्षणकक्षजायावर्तिर्निरर्तिःकठि नायताच ॥ ८५ ॥

त्वचा तथा नखों के मध्यमें जो शोथ उत्पन्न होताहै उसमें मांस तथा रुधिर दूषित होता है और वह बहुत शीघ्र पकजाता है वङ्क्षण (जांघोंकी सन्धि) तथा बगलमें जो पीड़ारहित कठोर चौड़ा तथा ज्वरसहित बत्ती के समान शोथ उत्पन्न होता है ॥ ८५ ॥

विदारिकासाकफमारुताभ्यांतेषांय थादोषमुपक्रमःस्यात् । विस्रावणं पिण्डिकयोपनाहःपक्केषुचैवव्रणव च्चिकित्सा ॥ ८६ ॥

उसे विदारिका कहते हैं वह विदारिका कफ तथा वायु से उत्पन्न होती हैं दोषके अनुसार उनकी चिकित्सा करनी चाहिये यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण शोथ यदि पकजायँ तो उनको बहावै फिर उनमें पुलटिस बांधै और व्रणकीसी चिकित्साकरे ॥ ८६ ॥

विस्फोटकाःसर्वशरीरजाःस्युःस्फोटास्तुरागज्वरतर्षयुक्ताः । यज्ञोपवीतप्रतिमाःप्रभूताःपित्तानिलाद्धाजनिभास्तुकक्षाः ॥ ८७ ॥

सम्पूर्ण शरीर में जो फुंसियोंकासा शोथ उत्पन्न होताहै उसे विस्फोटक कहते हैं विस्फोटकका वर्ण लाल होता है और रोगी ज्वर तथा तृषासे पीड़ित होताहै शरीरमें वायु तथा पित्तके कोप से यज्ञोपवीत के समान खीलों कीसी कान्तिसे युक्त जो बहुत शोथ होताहै उसे कक्षा कहते हैं ॥ ८७ ॥

याश्चापराःस्युःपिडिकाःप्रकीर्णाःस्थूलाणुमध्याअपिपित्तजास्ताः । सर्वत्रगात्रेषुमसूरमात्रयोमसूरिकाःपित्तकफात्प्रदिष्टाः ॥ ८८ ॥

शरीरमें पित्तके कोपसे जो स्थूल तथा मध्यमें सूक्ष्म पिड़िका होती हैं उनको प्रकीर्णा कहते हैं पित्त तथा कफके कोपसे सम्पूर्ण शरीरमें मसूरके समान जो पिड़िका उत्पन्न होती हैं उनको मसूरिका कहते हैं ॥ ८८ ॥

विसर्पशान्त्यैविहिताक्रियायातांतासुकुष्ठेषुहितांविदध्यात् । ब्रध्नानिलाद्यैर्वृषणेस्वलिङ्गैरन्त्रान्निरेतिप्रविशेन्मुहुश्च ॥ ८९ ॥

विसर्प तथा कुष्ठके नाशके लिये जो चिकित्सा कहीगई है वह इनमें भी करनी चाहिये वङ्क्षण में स्थित वातादि दोष वारंवार आंत से अण्डकोष में जाते हैं और फिर अपने स्थानमें चलेआते हैं जो दोष आंतसे अण्डकोष में जाताहै उसके सम्पूर्ण लक्षण अण्डकोष के शोथमें प्रकट होते हैं ॥ ८९ ॥

मूत्रेणपूर्णंमृदुमेदसातुस्निग्धश्चविद्यात्कठिनञ्चशोथम् । विरेचनाभ्यङ्गनिरूहलेपाःपक्केषुचैवव्रणवच्चिकित्सा ॥ ९० ॥

अण्डकोषों का जो शोथ कोमल होताहै उसे मूत्रकेद्वारा उत्पन्न हुआ जानना चाहिये और जो शोथ स्निग्ध तथा कठोरहो उसे मेदाकेद्वारा उत्पन्न हुआ जानना चाहिये अण्डकोष के शोथों की चिकित्सा विरेचन अभ्यङ्ग (तैलआदिमर्दन) निरूहवस्ति तथा लेपकेद्वारा करनी चाहिये और जो शोथ पक जाय तो व्रणोंकीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ९० ॥

स्यान्मूत्रसेकःकफजंविपाट्यविशोध्यसीव्यंव्रणवच्चपक्कम् । क्रिम्यस्थिसूक्ष्मक्षणनव्यवायप्रवाहनान्युत्कटुकाश्वपृष्ठैः ॥ ९१ ॥

अण्डकोष के कफज शोथ को मूत्रसे सींचै और पकेहुए शोथ को चीरकर शुद्ध करके व्रण के समान सीं देवे क्रिमि हड्डी तथा तृण आदिके द्वारा विदीर्ण होजाना मैथुन प्रवाहण (कांखना) उकड़ूं बैठना तथा घोड़े पर चढ़ना इन कारणों से ॥ ९१ ॥

गुदस्यपार्श्वेपिडिकाभृशार्तिःपक्वप्रभिन्नातुभगन्दरःस्यात् । विरेचनञ्चै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षणपाटनञ्चविशुद्धमार्गस्यचतैलदाहः ॥९२॥ स्यात्क्षारसूत्रेणसुपाचितेनछिन्नस्यचास्यव्रणवच्चिकित्सा । जंघासुपिण्डीप्रपदोपरिष्टात्स्याच्छ्लीपदंमांसकफास्रदोषात् ॥ ९३ ॥

गुदा के किनारे पर बहुत पीड़ा युक्त पिड़िका उत्पन्न होती है वह पिड़िका पककर फट जाती है इसीको भगन्दर कहते हैं भगन्दर में विरेचन एषणा (लोहे की शलाका आदि डालकर व्रणको साफकरना) तथा पाटन (काटना) हितहोताहै मार्गोंके शुद्धहोनेपर अच्छे प्रकार से पकाये हुये खार तथा मूत्रसहित तैलके द्वारा भगन्दरको जलाना चाहिये और चीरे हुये भगन्दर में व्रणकीसी चिकित्सा करनी चाहियें मांस कफ तथा रुधिर के दूषित होने से पिण्डुलियों में तथा पैरों के ऊपर जो शोथ उत्पन्न होता है उसे श्लीपद (फीलपाँव) कहतेहैं ॥ ९२।९३ ॥

शिराकफघ्नश्चविधिःसमग्रस्तत्रेष्यतेसर्षपलेपनञ्च । मन्दास्तुपित्तप्रबलाःप्रदिष्टादोषाःसुतीव्रंतनुरक्तपाकम् ॥ ९४ ॥ कुर्वन्तिशोथंज्वरतर्षयुक्तंविसर्पणंजालकगर्दभाख्यम् । विलंघनंरक्तविमोक्षणञ्चविरूक्षणंकायविरेचनञ्च ॥ ९५ ॥

इस रोगमें शिराओंके कफको दूरकरनेवाली विधि करनीचाहिये और सरसों का लेपकरनाचाहिये वातादि दोष अत्यन्त प्रबलहोकर अत्यन्त तीव्र सूक्ष्म रक्तवर्ण तथा पाक (पकना) युक्त शोथ को उत्पन्न करते हैं यह शोथ जहरबातकी तरह फैलता है इसमें रोगी ज्वर तथा तृषा से पीड़ित होताहै इसे जालगर्दभ कहते हैं लंघन रक्तमोक्षण (फस्तखुलाना) विरूक्षण (रूक्षताउत्पन्नकरना) विरेचन ॥ ९४ । ९५ ॥

धात्रीप्रयोगाञ्छिशिरान्प्रदेहान्कुर्यात्सदाजालकगर्दभस्य । एवंविधांश्चाप्यपरान्निशम्यशोथप्रकारानन्निलादिलिङ्गैः ॥ ९६ ॥ शान्तिंनयेद्दोषहरैर्यथास्वमालेपनच्छेदनभेददाहैः । प्रायोऽभिघातादनिलःसरक्तःशोथंसरागंप्रकरोतितत्र । वीसर्पनुन्मारुतरक्तनुच्चकार्यंविषघ्नंविषजेचकर्म ॥ ९७ ॥

आमले के प्रयोग तथा सदैव शीतल लेप यह उपाय जालगर्दभ रोगमें करने चाहिये इन कहेहुये शोथोंके सिवाय अन्य शोथोंमें वातादि दोषोंके लक्षणों को देखकर दोषके अनुसार लेप छेदन भेदन तथा दाहके द्वारा चिकित्साकरे प्रायः किसी प्रकारकी भी चोट लगने से रुधिरसहित वायु कुपित होकररक्तवर्ण के शोथों को उत्पन्न करती है इस शोथ में विसर्पनाशक तथा वातरक्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और विषजशोथ में विषनाशक चिकित्साकरनीचाहिये ९६।९७॥

भवतिचात्र । त्रिविधस्यदोषभेदात्सर्वार्द्धावयवगात्रभेदाच्च । श्वय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थोर्द्विविधस्यतथालिङ्गानिचिकित्सितञ्चोक्तम् ॥ ६८ ॥

इति चिकित्सितस्थाने शोथचिकित्सितः सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

इसमें यह श्लोक है। इस श्वयथुचिकित्सितनाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने दोषोंके भेदसे तीन प्रकारके सर्वाङ्ग अर्द्धाङ्ग तथा एकाङ्ग और निज तथा आगन्तु भेद से दो प्रकारके शोथके लक्षण तथा यत्नकहे ९८॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें चिकित्सास्थानका श्वयथुचिकित्सितनाम सत्रहवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ १७ ॥

अठारहवांअध्याय ॥

उदरचिकित्सितम् ।

सिद्धविद्याधराकीर्णेकैलासेनन्दनोपमे । तप्यमानंतपस्तीव्रंसाक्षाद्धर्ममिवस्थितम् ॥ १ ॥ आयुर्वेदविदांश्रेष्ठंभिषग्विद्याप्रवर्त्तकम् । पुनर्वसुंजितात्मानमग्निवेशोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

इसके उपरान्त उदरचिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

सिद्ध तथा विद्याधर लोगों से व्याप्त नन्दन वनके समान रमणीय कैलास पर्वतमें तीव्र तप करतेहुये आयुर्वेदके जाननेवालों में श्रेष्ठ आयुर्वेद विद्याके प्रवृत्त करनेवाले साक्षात् धर्मके समान स्थित जितेन्द्रिय भगवान् आत्रेयजीसे अग्निवेशने नम्रतापूर्वक कहा कि १।२

भगवन्नुदरैर्दुःखैर्दृश्यन्तेह्यर्दितानराः । शुष्कवक्त्राःकृशैर्गात्रैराध्मातोदरकुक्षयः ॥ ३ ॥

हे भगवन् दुःखदायी उदररोगसे युक्त पुरुषोंके मुख सूखजाते हैं सम्पूर्ण अङ्ग कृश होजाते हैं उदर तथा कुक्षिमें अफरा होताहै ॥३॥

प्रनष्टाग्निबलाहाराःसर्वचेष्टास्वनीश्वराः । दीनाः प्रतिक्रियाभावाजहतोऽसूननाथवत् ॥ ४ ॥

और अग्नि बल तथा आहार नष्ट होजाताहै वह पुरुष सब प्रकारकी शारीरक तथा मानिसिक चेष्टाओंमें असमर्थ होजाते हैं दीन होजाते हैं और चिकित्साके अभावसे अनाथके समान मरजाते हैं ॥ ४ ॥

तेषामायतनंसंख्यांप्राग्रूपाकृतिभेषजान् । यथावज्ज्ञातुमिच्छामिगुरुणासम्यगीरितम् ॥ ५ ॥

इससे आप कृपा करके उदर रोगोंके कारण संख्या लक्षण तथा औषध यथावत् कहिये मैं आपके मुखारविन्द से अच्छी प्रकार सुनना चाहताहूं ॥ ५ ॥

सर्वभूतहितार्यर्षिःशिष्येणैवंप्रचोदितः । सर्वभूतहितंवाक्यंव्याहर्तुमुपचक्रमे ॥ ६ ॥

सम्पूर्ण प्राणियों के हितके लिये अग्निवेशके यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजीने सम्पूर्ण प्राणियों के हितकारी वचनों को कहना प्रारम्भ किया ॥ ६ ॥

अग्निदोषान्मनुष्याणांरोगसङ्घाः

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृथग्विधाः। मलवृद्ध्याप्रवर्त्तन्ते विशेषेणोदराणितु ॥ ७॥

अग्निके मन्द होने से मलकी वृद्धि होनेके कारण मनुष्यों के अनेक प्रकारके रोग होते हैं किन्तु इस कारण से उदररोग विशेष करके होते हैं ॥ ७ ॥

मन्देऽग्नौमलिनैर्भुक्तैरपाकाद्दोषसञ्चयः। प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यमार्गान्बद्ध्वोत्तरोत्तरान् ॥ ८ ॥

दूषित भोजनकेद्वारा अग्निके मन्द होजानेपर परिपाक के न होने से संचितहुये दोष प्राणवायु अग्नि तथा अपानवायु को दूषित करके उत्तरोत्तर स्रोतों को बन्द करके ॥ ८ ॥

त्वङ्मांसान्तरमागम्यकुक्षिमाध्मापयन्भृशम्। जनयत्युदरंतस्यहेतुं शृणुसलक्षणम् ॥ ९ ॥

त्वचा तथा मांसके मध्यमें आकर कुक्षिमें बहुत अफरा उत्पन्न करके उदररोग को उत्पन्न करते हैं अब उस उदररोग के हेतु तथा लक्षण सुनो ॥ ९ ॥

अत्युष्णलवणक्षारविदाह्यम्लरसाशनात्। मिथ्यासंसर्जनाद्रूक्षविरुद्धाशुचिभोजनात् ॥ १० ॥

अत्यन्त उष्ण लवण क्षार विदाही (हृदयमें जलन पैदा करके बहुत देरमें पचनेवाली वस्तु) तथा खट्टी वस्तु खाने से वमन आदि संशोधन के उपरान्त पथ्यके बिगड़ जाने से रूखी विरुद्ध तथा अपवित्र वस्तु खानेसे ॥ १० ॥

प्लीहार्शोग्रहणीदोषकर्षणात्कर्मविभ्रमात्। क्लिष्टानामप्रतीकाराद्रौक्ष्याद्वेगविधारणात् ॥ ११ ॥

पिलही बवासीर तथा ग्रहणीदोषके द्वारा बहुत पीड़ित होने से वमन आदि पंचकर्म्मों के बिगड़जानेसे उत्पन्नहुये रोगोंकी चिकित्सा न करने से रूक्षता से मल मूत्रादि वेगोंके रोकने से ॥ ११ ॥

स्रोतसांदूषणादामात्संक्षोभादतिपूरणात्। अर्शोवलिशकृद्रोधादन्त्रस्फुटनभेदनात् ॥ १२ ॥

स्रोतों के दूषित होने से आमसे क्षोभसे बहुत भोजन करनेसे बवासीरकेद्वारा वायु तथा मलके रुकने से और आँतोंके टूटजाने से तथा फटजाने से ॥ १२ ॥

अतिसञ्चितदोषाणांपापंकर्मचकुर्वताम्। उदराण्युपजायन्तेमन्दाग्नीनांविशेषतः ॥ १३ ॥

बहुत संचितहुये दोषवाले पापकर्म करनेवाले और विशेष करके मन्दाग्निवाले पुरुषों के उदररोग होते हैं ॥ १३ ॥

क्षुन्नाशःस्यादतिस्निग्धगुर्वन्नंपच्यतेचिरात्। भुक्तंविदाह्यतेसर्वंजीर्णाजीर्णंनवेत्तिच ॥ १४ ॥

क्षुधाका नाश अत्यन्त स्निग्ध तथा भारी अन्नका बहुत देरमें पचना भोजन का विदाह होना (हृदयमें जलन पैदा करके देरमें पचना) भोजन पचाया नहीं पचा इस बातका न मालूम पड़ना ॥ १४ ॥

सहतेनातिसौहित्यमीषच्छोफश्चपाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योः । शश्वद्बलक्षयोऽल्पेऽप्यव्या यामेश्वासमृच्छति ॥ १५ ॥

अधिक भोजन न करसकना पैरों में कुछ शोथ होना निरन्तर बलकी क्षीणता थोड़ा व्यायाम करनेपरभी बहुत श्वास आना १५॥

पुरीषनिचयोवृद्धिरुदावर्त्तकृताचरुक् । वस्तिसन्धौरुगाध्मानंवर्द्धते पाव्यतेऽपिच ॥ १६ ॥आतन्यते चजठरमपिलघ्वल्पभोजनात् । राजीजन्मवलीनाशइतिलिङ्गंभविष्यताम् ॥ १७ ॥

मलका संचित होना तथा बढ़ना उदावर्त्त से हुई पीड़ा वस्ति की संधि में पीड़ा होना बहुत स्वल्प भोजन करनेसेभी उदरमें अफरा फटनेकीसी पीड़ा तथा तनाव होना और उदरमें रेखाओं का उत्पन्न होना तथा वलियों का नष्ट होना यह उदररोग के पूर्व्वरूप हैं ॥ १६ । १७ ॥

रुध्वास्वेदाम्बुवाहानिदोषाःस्रोतांसिसञ्चिताः । प्राणापानान्हिसंदूष्यजनयन्त्युदरंनृणाम् ॥ १८ ॥

संचितदोष स्वेद तथा जलके स्रोतों को रोंककर और प्राणवायु तथा अपानवायु को दूषित करके मनुष्यों के उदर रोग को उत्पन्न करते हैं ॥ १८ ॥

कुक्षेराध्मानमाटोपःशोफःपादकरस्यच । मन्दोऽग्निःश्लक्ष्णगण्डत्वं कार्श्यञ्चोदरलक्षणम् ॥ १९ ॥

कुक्षिमें अफरा आटोप हाथ पैरों में शोथ मन्दाग्नि कपोलों का चिकना होना और कृशता यह उदररोग के सामान्य लक्षण हैं ॥ १९ ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चप्लीहबन्धक्षतोदकैः । सम्भवन्त्युदराण्यष्टतेषांलिङ्गं पृथक्शृणु ॥ २० ॥

वातोदर पित्तोदर कफोदर सन्निपातोदर प्लीहोदर बद्धगुदोदर क्षतोदर तथा जलोदर यह आठ प्रकार के उदर रोग होते हैं इनके लक्षण अलग २ सुनो ॥ २० ॥

रूक्षाल्पभोजनायासवेगोदावर्त्तकर्शनैः । वायुःप्रकुपितःकुक्षिहृद्वस्तिगुदमार्गगः ॥ २१ ॥

रूक्ष तथा स्वल्प भोजन परिश्रम मल मूत्र आदि वेगों का रोंकना तथा उदावर्त्तरोग से पीड़ित होना इन कारणों से कुपितहुई वायु कुक्षि हृदय वस्ति गुदा तथा स्रोतोंमेंजाकर २१॥

हत्वाग्निंकफमुद्धूयतेनरुद्धगतिस्तथा । आचिनोत्युदरंजन्तोस्त्वङ्मांसान्तरमाश्रितः ॥ २२ ॥

अग्नि को मन्द करके कफ को उभाड़ती है फिर उसी कफकेद्वारा रुककर त्वचा तथा मांसके मध्यमें स्थित होके मनुष्यके उदर को फुलाती है ॥ २२ ॥

तस्यरूपाणिकुक्षिपाणिपादवृषणश्वयथूदरविपाटनमनियतौचवृद्धिह्रासौकुक्षिपार्श्वशूलोदावर्त्ताङ्गमर्दपर्वभेदशुष्ककासकार्श्यदौर्बल्यारोचकाविपाकाअधोगुरुत्वंवातवर्चो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रसङ्गःश्यावारुणत्वंनखनयनवदनत्वङ्मूत्रवर्चसामपिचोदरंतनुअसितराजीशिरासन्ततमाहतमाध्मातद्दतिशब्दवद्भवति । वायुश्चोर्द्धमधस्तिर्य्यक्चसशूलसशब्दश्चरति एतद्वातोदरंविद्यात् ॥ २३ ॥

तिसके रूप यह हैं । कुक्षि हाथ पैर तथा अण्डकोषों में शोथ उदरमें फटनेकीसी पीड़ा उदर के घटने बढ़नेका कुछ नियम न होना कुक्षि तथा पशुलियोंमें शूल उदावर्त्त अङ्गमर्द पोरुओं में टूटनेकीसी पीड़ा सूखी खांसी कृशता दुर्बलता अरुचि अन्नका न पचना शरीरके अधोभाग (नीचेके हिस्से) का भारी होना वायु मल तथा मूत्रका रुकना नख नेत्र मुख त्वचा मूत्र तथा मलका कपिश तथा अरुणवर्ण होना उदर में पतली तथा कृष्णवर्ण रेखा तथा शिराओं का व्याप्त होना उदरपर मारने से वायुसे भरीहुई मशककासा शब्द होना और ऊपर नीचे तथा तिरछी ओर शब्द तथा शूलसहित वायुका विचरण करना यह वातोदर के लक्षण हैं ॥ २३ ॥

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णाग्न्यातपसेवनैः । विदाह्यध्यशनाजीर्णैश्चाशुपित्तंसमाचितम् ॥ २४ ॥

कटु खट्टी लवण अत्यन्त उष्ण तथा अत्यन्त तीक्ष्ण वस्तु खाने से अग्नि तथा धूप का सेवन करने से विदाही (हृदयमें जलन पैदा करके देरमें पचनेवाली) वस्तु खानेसे भोजनपर भोजन करने से और अजीर्ण से शीघ्रही संचित हुआ पित्त ॥ २४ ॥

प्राप्यानिलकफौरुद्धामार्गमुन्मार्गमास्थितम् । निहत्यामाशयेवह्निंजनयत्युदरंततः ॥ २५ ॥

वायु तथा कफसे मिलकर मार्गको रोकके उन्मार्ग (अनुचित मार्ग) में प्राप्त होकर और आमाशय में जाकर अग्निको नष्ट करके उदररोग को उत्पन्न करता है ॥ २५ ॥

तस्यरूपाणि—दाहज्वरतृष्णामूर्च्छातीसारभ्रमाःकटुकास्यत्वंहरितहारिद्रत्वंनखनयनवदनत्वङ्मूत्रवर्चसामपिचोदरंनीलपीतहारितताम्रराजीशिरावनद्धंदह्यात्दूयतेधूप्यतेऊष्मायतेस्विद्यतेक्लिद्यतेमृदुस्पर्शंक्षिप्रपाकञ्चभवतिएतत्पित्तोदरंविद्यात् ॥ २६ ॥

तिसके रूप यह हैं । दाह ज्वर तृषा मूर्च्छा अतीसार भ्रम मुखका कटुहोना नख नेत्र मुख त्वचा मूत्र तथा मलका हरित या पीत होना उदरमें नीली पीली हल्दीके समान या ताम्र वर्णवाली रेखा तथा शिराओंका व्याप्त होना उदर में दाह संताप धुआँसा निकलना स्वेद तथा क्लेद होना स्पर्श करने से उदर का कोमल मालूम होना और उदरका शीघ्रही पकजाना यह पित्तोदरके लक्षण हैं २६॥

अव्यायामदिवास्वप्नस्वाद्वतिस्निग्धपिच्छिलैः । दधिदुग्धोदकानूपमांसैश्चात्युपसेवितैः ॥ २७ ॥

व्यायाम न करना दिनमें सोना मधुर बहुत स्निग्ध तथा लसीली वस्तुओं को खाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दहा दूध तथा जलके और अनूपदेश के जीवोंका मांस बहुत खाना ॥ २७ ॥

क्रुद्धेनश्लेष्मणास्रोतःस्वाहतेष्वावृतोऽनिलः । तमेवपीडयन्कुर्य्यादुदरंबहिरन्त्रगः ॥ २८ ॥

इन कारणों से कुपित हुये कफ के द्वारा स्रोतों के बन्द होजाने से रुकाहुआ वायु उस कफकोही पीड़ित करके बाहिरी आँतों में स्थित होकर उदररोग को उत्पन्न करता है ॥ २८ ॥

तस्यरूपाणि—गौरवारोचकाविपाकाङ्गमर्दसुप्तिपाणिपादमुष्कोरुशोफोत्क्लेशनिद्राकासश्वासाःशुक्लत्वञ्चनखनयनवदनत्वङ्मूत्रवर्चसामपिचोदरंशुक्लराजीशिरासन्ततंगुरुस्तिमितस्थिरंकठिनञ्चभवतिएतच्छ्लेष्मोदरंविद्यात् ॥ २९ ॥

तिसके रूप यह हैं । शरीरका भारीपन अरुचि अन्न का न पचना अङ्गमर्द सुन्न हाथ पैर तथा मुख में शोथ मतली निद्रा की अधिकता खाँसी श्वास नख नेत्र त्वचा मूत्र तथा मल का श्वेत होना उदरमें श्वेत रेखा तथा शिराओं का व्याप्तहोना और उदरका भारी स्तिमित (गीले कपड़े से ढकाहुआ सा) स्थिर तथा कठोर होना यह कफोदर के लक्षण हैं ॥ २९ ॥

दुर्बलाग्नेरपथ्यामविरोधिगुरुभोजनात् । स्त्रीदत्तैश्चरजोरोमविरमूत्रास्थिनखादिभिः ॥ ३० ॥

अग्नि के मंदहोने पर अपथ्य कच्चा विरोधी तथा भारी वस्तुखाने से वशीकरण आदि के निमित्त स्त्रियों के दियेहुये रज रोम विष्ठा मूत्र हड्डी तथा नख आदिकों के खाने से ॥ ३० ॥

विषैश्चमन्दैर्वाताद्याःकुपिताःसञ्चिताम्रयः । शनैःकोष्ठेप्रकुर्वन्तोजनयन्त्युदरंनृणाम् ॥ ३१ ॥

और मंद वेगवाले विषों के सेवन से कुपितहुये वात आदि दोष संचित होकर धीरे धीरे कोष्ठ में विकृत होकर मनुष्यों के उदररोग को उत्पन्न करते हैं ॥ ३१ ॥

तस्यरूपाणि—सर्वेषामेवदोषाणांसमस्तानिलिङ्गान्युपलभ्यन्तेवर्णाश्चनखादिषुउदरमपिनानावर्णराजीशिरासन्ततंभवतिएतत्सन्निपातोदरंविद्यात् ॥ ३२ ॥

तिसके रूप यह हैं । पूर्वोक्त वातोदर आदि तीनों उदरों के लक्षण होना नखआदिकों में अनेकवर्ण होना और उदरमें अनेक वर्णवाली रेखाओं तथा शिराओं का व्याप्त होना यह सन्निपातोदरके लक्षण हैं ॥ ३२ ॥

अशितस्यातिसंक्षोभाद्यानयानाभिचेष्टितैः । अतिव्यवायभाराध्ववमनव्याधिकर्शनैः ॥ ३३ ॥

भोजन के उपरान्त घोड़े आदि सवारीपर चढ़ने से तथा हाथ पैर आदि अंगों के द्वारा बहुत चेष्टा करनेसे बहुत मैथुन करने से बहुत बोझा ढोनेसे बहुत चलने से बहुत वमन क-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रने से तथा ज्वरआदि रोगों के द्वारा बहुत कृश होजाने से ॥ ३३ ॥

वामपार्श्वाश्रितःप्लीहाच्युतःस्थानात्प्रवर्द्धते। शोणितंवारसादिभ्योविवृद्धंतंविवर्द्धयेत् ॥ ३४ ॥

बाईं पशुलीमें स्थित प्लीहा अपने स्थान से गिरकर बढ़ती है अथवा रसादि धातुओं से बहुत बढ़ाहुआ रुधिर प्लीहाको बढ़ाताहै ३४॥

इतितस्यप्लीहाकठिनोऽष्ठीलेवादौवर्द्धमानःकच्छपसंस्थानउपलभ्यते सचोपेक्षितःक्रमेणकुक्षिंजठरमग्न्यधिष्ठानञ्चपरिक्षिपन्नुदरमभिनिवर्त्तयति ॥ ३५ ॥

पहिले वह प्लीहा ढीले के समान बढ़कर कठोर होके कछुवे के समान मालूम होती है यदि उस समय उसकी चिकित्सा न कीजाय तो वह क्रम से कुक्षि उदर तथा जठराग्नि के स्थान को घेरकर उदररोगको उत्पन्न करती है ॥ ३५ ॥

तस्यरूपाणि—दौर्बल्यारोचकाविपाकवर्चोमूत्रग्रहतमः। पिपासाङ्गमर्दच्छर्दिमूर्च्छाङ्गसादकासश्वासमृदुज्वरानाहाग्निनाशकार्श्यास्यवैरस्यपर्वभेदकोष्ठवातशूलान्यपिचोदरमरुणवर्णंविवर्णंवानीलहरितहारिद्रराजिमद्भवतिएवमेवयकृदपिदक्षिणपार्श्वस्थंकुर्य्यात्तुल्यहेतुलिङ्गौषधत्वात्तस्यप्लीहजठरएवावरोधइत्येतद्यकृत्प्लीहोदरंविद्यात् ॥ ३६ ॥

तिसके रूप यह हैं। दुर्बलता अरुचि अन्न का न पचना मल मूत्रका रुकजाना अंधकार दिखाई देना तृषा अङ्गमर्द छर्दि मूर्च्छा अंगों का शिथिल होना खांसी श्वास हल्काज्वर अफरा मंदाग्नि कृशता मुखका विरस होना पोरुओं में पीड़ा कोष्ठ में वातशूल उदरका रक्त अथवा विवर्ण होना और नीली हरी तथा पीली रेखाओं से उदर का व्याप्तहोना यह प्लीहोदर के लक्षण हैं इसी प्रकार दहिनी पशुली में स्थित यकृत् भी बढ़कर उदर को उत्पन्न करती है हेतु लक्षण तथा चिकित्सा के समान होने के कारण यकृत् का अलग वर्णन नहीं कियागया यकृत से होनेवाले उदरको प्लीहोदर में ही जानलेना चाहिये ३६॥

पक्ष्मबालैःसहान्नेनभुक्तैर्बद्धायनेगुदे। उदावर्त्तैस्तथार्शोभिरन्त्रसंमूर्च्छनेनवा ॥ ३७ ॥

अन्न के साथ पलक अथवा बालखाजाने से उदावर्त्त से बवासीर से अथवा आँतों के शिथिलहोजाने से ॥ ३७ ॥

अपानोमार्गसंरोधाद्धत्वाग्निंकुपितोऽनिलः। वर्चःपित्तकफान्रुद्ध्वाजनयत्युदरंततः ॥ ३८ ॥

अपानवायु अपने मार्ग के रुकने से कुपित होकर अग्नि को मन्दकरके मल पित्त तथा कफको रोक के उदररोग को उत्पन्न करता है ॥ ३८ ॥

तस्यरूपाणि—तृष्णादाहज्वरमुखतालुशोषोरुसादकासश्वासदौर्ब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्यारोचकाविपाकवर्चोमूत्रसङ्ग ध्मानच्छर्दिक्षवथुशिरोहृन्नाभिगुद शूलान्यपिचोदरंमूढवातंस्थिरमरुणं नीलराजिशिरावनद्धमराजिकंवा प्रायोनाभ्युपरिगोपुच्छवदभिनिव र्त्ततइत्येतद्बद्धगुदोदरंविद्यात् ३९ ॥

तिसके रूप यह हैं तृषा दाह ज्वर मुख तथा तालुका सूखना जाँघों का शिथिल होना खाँसी श्वास दुर्वलता अरुचि अन्नका न पचना मल मूत्र का रुकना अफरा छर्दि छींक शिर हृदय नाभि तथा गुदा में शूल उदर में वायु का गुमहोना और उदर का स्थिर अरुण वर्ण तथा नीली रेखाओं से या शिराओं से व्याप्तहोना और प्रायः नाभिके ऊपर गोपुच्छके समान क्रम से बढ़ना यह बद्धगुदोदर के लक्षण हैं ॥ ३९ ॥

शर्करातृणकाष्ठास्थिकण्टकैरन्नसं युतैः। भिद्येतान्त्रंयदाभुक्तैर्जृम्भय त्यशनेनवा ॥ ४० ॥ इयात्पाकर सस्तेभ्यश्छिद्रेभ्यःप्रस्रवद्बहिः। पूर यन्गुदमन्त्रञ्चजनयत्युदरंततः॥४१॥

भोजनके साथ कंकड़ तृण काष्ठ हड्डी तथा कांटाखाजानेसे जँभाईसे अथवा वहुत भोजन से जब आंत फटजाती है तब भोजन का रस आंतों के छिद्रों से बाहर वहआकर गुदा तथा आंत को पूर्णकरके उदररोगको उत्पन्न करता है ॥ ४० । ४१ ॥

इतितदधोनाभ्याःप्रायोऽभिनिवर्त्त मानमुदकोदरस्यचयथाबलञ्चदोषा णांरूपाणिदर्शयत्यपिचातुरःसलो हितनीलपीतपिच्छिलकुणपगन्धा मवर्चउपवेशतेहिक्काश्वासकासतृ ष्णाप्रमेहारोचकाविपाकदौर्बल्यप रीतश्चभवतिएतच्छिद्रोदरंविद्यात्४२

वह उदर नाभिके नीचे प्रायः बढ़ताहै और वातादि दोषों में से जो दोष अधिक हो उसी के लक्षणों से युक्त होताहै इस उदररोग में रोगी के रक्त नील पीत लबलबा मुर्दे कीसी गन्ध से युक्त तथा आम मल निकलता है और हिचकी श्वास खाँसी तृषा प्रमेह अरुचि अविपाक (अन्नका न पचना) तथा दुर्बलता से रोगी युक्त होताहै यह छिद्रोदर के लक्षण हैं ॥ ४२ ॥

स्नेहपीतस्यमन्दाग्नेःक्षीणस्याति कृशस्यवा। अत्यम्बुपानान्नष्टेऽग्नौ मारुतःक्लोम्निसंस्थितः ॥ ४३ ॥

घृतादिस्नेह का पान किये हुये मंदाग्नि क्षीण अथवा अत्यन्त कृश पुरुष यदि बहुत जल पीताहै तो अग्नि के नष्टहोजाने से वायु क्लोम (तृषास्थान) में स्थित होताहै ॥४३॥

स्रोतःसुरुद्धमार्गेषुकफश्चोदकमू र्च्छितः। वर्द्धयेतांतदेवाम्बुस्वस्था नादुदरायतौ ॥ ४४ ॥

और स्रोतोंके रुकजाने से कफ जलके द्वारा बढ़ताहै फिर वायु तथा कफ अपने स्थान से उदरमें आकर उस जलको बढ़ाते हैं ॥ ४४ ॥

तस्यरूपाणि। अनन्नकांक्षापिपासा गुदस्रावशूलश्वासकासदौर्बल्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्यपिचोदरंनानावर्णराजिशिरास न्ततमुदकपूर्णदृतिक्षोभसंस्पर्शंभव तिएतदुदकोदरंविद्यात् ॥ ४५ ॥

तिसके रूप यह हैं अन्न में अनिच्छा तृषा गुदा से जल बहना शूल श्वास खाँसी दुर्बलता उदर में अनेक वर्ण वाली रेखा तथा शिराओं का व्याप्त होना और जल से भरीहुई मशकके समान उदर का स्पर्श होना यह जलोदर के लक्षण हैं ॥ ४५ ॥

तत्रअचिरोत्पन्नमनुपद्रवमनुदकम प्राप्तमुदरंत्वरमाणश्चिकित्सेदुपेक्षिता नांह्येषांदोषाःस्वस्थानादपावृत्ताअ परिपाकाद्द्रवीभूताःसन्धीन्स्रोतांसि चोपक्लेदयन्तिस्वेदश्चबाह्येषु स्रोतः सुप्रतिहतगतिस्तिर्य्यगवतिष्ठमान स्तदेवोदकमाप्याययति ॥ ४६ ॥

सम्पूर्ण उदररोगों में से शीघ्रही उत्पन्न हुये उपद्रवरहित और जिसमें जल न उत्पन्नहुआ हो उस उदररोगकी शीघ्रही चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि उदररोगमें शीघ्रहीचिकित्सा न करने से वातआदि दोष अपने २ स्थानसे हटकर परिपाक न होनेके कारण द्रव (पतले) होकर संधि तथा स्रोतों को क्लेदयुक्त करते हैं और बाहिरी स्रोतों के रुकजाने से रुका हुआ स्वेद लौटकर उसीद्रवको बढ़ाताहै॥४६॥

तत्रपिच्छोत्पत्तौमण्डलमुदरंगुरु स्तिमितमाकोठितमशब्दंमृदुस्पर्श मपगतराजिकमाक्रान्तंनाभ्यांसर्प तीति । ततोऽनन्तरंउदकप्रादुर्भा वः । —तस्यरूपाणिकुक्षेरतिमात्रवृ द्धिःशिरान्तर्द्धानगमनमुदकपूर्णदृ तिसंक्षोभस्पर्शत्वञ्च ॥ ४७ ॥

यदि उस द्रवमें पिच्छा उत्पन्न होजाती है तो उदर भारी स्तिमित (गीले कपड़े से ढका हुआ सा मालूम होना) कोठयुक्त शब्दरहित स्पर्श करने में कोमल रेखारहित तथा दबाने से नाभि के ओट बढ़ने वाला होताहै इस अवस्था के उपरान्त जल उत्पन्न होताहै और उसके यह लक्षण होते हैं जैसे कुक्षिका बहुत बढ़ना शिराओं का न दिखाई देना और उदर का स्पर्श भरीहुई मशक के समान होना ॥ ४७ ॥

तदातुरमुपद्रवाःस्पृशन्तिछर्द्यतीसा रतमकतृष्णाश्वासकासहिक्कादौर्ब ल्यपार्श्वशूलारुचिस्वरभेदमूत्रसङ्गा दयस्तथाविधमचिकित्स्यंविद्यादि ति ॥ ४८ ॥

तदनन्तर छर्दि अतीसार तमक तृषा श्वास खाँसी हिचकी दुर्बलता पशुलियोंमें पीड़ा अरुचि स्वरभंग तथा मूत्रका रुकना इत्यादिक उपद्रव उत्पन्न होते हैं उपद्रवों से युक्त उदररोगवाले को असाध्य जानना चाहिये ॥ ४८ ॥

भवति चात्र ।

वातात्पित्तात्कफात्प्लीह्नःसन्निपाता त्तथोदकात् । परस्परंकृच्छ्रतरमुदरं भिषगादिशेत् ॥ ४९ ॥

इस में यह श्लोक हैं वातोदर पित्तोदर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफोदर प्लीहोदर सन्निपातोदर तथा जलोदर इनमें से एककी अपेक्षा एक उत्तरोत्तर कष्टसाध्य हैं अर्थात् वातोदर की अपेक्षा पित्तोदर अधिक कष्टसाध्य है और पित्तोदर की अपेक्षा कफोदर अधिक कष्टसाध्य होता है इत्यादि ॥ ४९ ॥

पक्षाद्बद्धगुदन्तूर्द्ध्वंसर्वंजातोदकंयथा। प्रायोभवत्यभावायछिद्रान्त्रञ्चोदरं नृणाम् ॥ ५० ॥

जिनमें जल उत्पन्न होगया है ऐसे सम्पूर्ण उदर पक्ष भरके उपरान्त बद्धगुदोदर और क्षतोदर प्रायः यह सब उदर मनुष्य को मारडालते हैं ॥ ५० ॥

शूनाक्षंकुटिलोपस्थमपक्लिन्नतलुत्वचम्। बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणञ्चसंत्यजेत् ॥ ५१ ॥

उदररोग में जिसके नेत्रों में शोथ लिङ्ग का टेढ़ापन त्वचा में क्लेद त्वचाकी कृशता और बल रुधिर मांस तथा अग्नि की क्षीणता यह लक्षण हों उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ५१ ॥

श्वयथुःसर्वमर्मोत्थःश्वासोहिक्कारुचिःसतृट्। मूर्च्छाछर्द्यतिसारश्चनिहन्त्युदरिणंनरम् ॥ ५२ ॥

सम्पूर्ण मर्मों में शोथ श्वास हिचकी अरुचि तृषा मूर्च्छा छर्दि तथा अतीसार इन लक्षणोंसे युक्त उदररोगवाला मरजाताहै ५२॥

जन्मनैवोदरंसर्वंप्रायःकृच्छ्रतमंमतम्। बलिनस्तदजाताम्बुयत्नसाध्यं नवोत्थितम् ॥ ५३ ॥

सम्पूर्ण उदररोग प्रायः उत्पन्न होतेही से कष्टसाध्य होते हैं बलवान् पुरुषका जलरहित तथा नवीन उदर बहुत यत्नपूर्वक चिकित्सा करने से साध्य होता है ॥ ५३ ॥

अजातजललक्षणमाह।

अशोथमरुणाभासंसशब्दंनातिभारिकम्। सदागुडगुडायन्तंशिराजालगवाक्षितम् ॥ ५४ ॥

जिस उदर में शोथका न होना अरुण वर्ण मारने से शब्द होना बहुत भारी न हो सदैव गड़गड़ाहट होना नसोंको जालसे यु[illegible] होना ॥ ५४ ॥

नाभिंविष्टभ्यपायौतुवेगंकृत्वाप्रणश्यति। हृन्नाभिवंक्षणकटीगुदप्रत्येकशूलिनः ॥ ५५ ॥

नाभि से उत्पन्नहुये वेगका गुदामें जाक[illegible] नष्ट होजना हृदय नाभि जाँघोंकी संधि कमर तथा गुदा में शूल होना ॥ ५५ ॥

कर्कशंसृजतोवातंनातिमन्देचपावके। मूत्रेऽल्पेसंहतविषिलालयाविरसेमुखे ॥ ५६ ॥

कष्टसे वायु निकलना अग्निका बहुत मन्द न होना थोड़ा मूत्र निकलना दोष का गाढ़ा होना तथा लार के द्वारा मुखका विरस हो[illegible]ना ॥ ५६ ॥

अजातोदकमित्येतैर्लिङ्गैर्विज्ञाय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्त्वतः। उपक्रमेद्भिषग्दोषबलका लविशेषवित् ॥ ५७ ॥ वातोदरे बलवतःपूर्वंस्नेहैरुपाचरेत् । स्निग्धायस्वेदिताङ्गायदद्यात्स्नेहविरेचनम् ॥ ५८ ॥

यह लक्षण जिस उदररोगमें हों उस में जल नहीं उत्पन्न हुआ है ऐसा जानना चाहिये दोष बल तथा समयकी विशेषता का जाननेवाला वैद्य वातोदर में बलवान् पुरुष की स्नेहन के द्वारा पहिले चिकित्सा करे स्नेहन के उपरान्त स्वेदन करावे और स्वेदन के उपरान्त स्नेहयुक्त विरेचनदेवे॥५७।५८॥

हृतेदोषेपरिम्लानंवेष्टयेद्वाससोदरम् । तथास्यानवकाशत्वाद्वायुर्नाध्मापयेत्पुनः ॥ ५९ ॥

इस प्रकार दोषके निकलजाने पर पटकेहुये पेटको वस्त्रसे लपेट देवे क्योंकि उदर को लपेटने से अवकाशके न होनेके कारण वायु उदर को फिर नहीं फुलासक्ती है ॥ ५९ ॥

दोषातिमात्रोपचयात्स्रोतसांसन्निरोधनात् । सम्भवन्त्युदराण्येवमतो नित्यंविशोधयेत् ॥ ६० ॥

दोषोंके बहुत बढ़ने से स्रोतों के रुकजाने के कारण उदररोग उत्पन्न होते हैं इस से उदररोगको वमन आदिके द्वारा सदैव शुद्ध करना चाहिये ॥ ६० ॥

शुद्धंसंसृज्यचक्षीरंबलार्थंपाययेत्तुतम् । प्रागुतक्लेशान्निवर्त्यंचबलेलब्धे क्रमात्पयः ॥ ६१ ॥

शुद्धहुये उदररोग में पथ्यका क्रम करके बलके निमित्त दूध पिलाना चाहिये और बल आजानेपर क्रमसे दूध छुड़ा देना चाहिये क्योंकि बहुत दूध पीनेसे दोषों के उभड़ने का सम्भव होता है ॥ ६१ ॥

यूषैरसैर्वामन्दाम्ललवणैरेधितानलम् । सोदावर्त्तंपुनःस्निग्धंस्विन्नमास्थापयेन्नरम् ॥ ६२ ॥

उदररोग में मंदाग्नि तथा उदावर्त्त होने पर स्नेहन तथा स्वेदन कराके कुछखटाई तथा लवणयुक्त यूष अथवा मांसरस के द्वारा आस्थापनवस्ति देवे ॥ ६२ ॥

स्फुरणाक्षेपसन्ध्यस्थिपार्श्वपृष्ठत्रिकार्त्तिषु । दीप्ताग्निंबद्धविड्वातंरूक्षमप्यनुवासयेत् ॥ ६३ ॥

अंगोंका फड़कना संधि हड्डी पशुली पीठ तथा रीड़के नीचेकी हड्डियों में पीड़ा मल तथा वायुका रुकना अग्निका दीप्तहोना और रूक्षता इनसे युक्त उदररोग में अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ६३ ॥

तीक्ष्णाधोभागयुक्तःस्यान्निरूहोदाशमूलिकः । वातघ्नाम्लश्रृतैरण्डतिलतैलानुवासनः ॥ ६४ ॥

उदररोग में यदि अधोभाग तीक्ष्ण होवे तो दशमूल के काढ़े के द्वारा निरूहवस्ति और वातघ्न औषध तथा कांजी के साथ पाक कियेगये रेंडीके तथा तिलके तैलके द्वारा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ६४ ॥

अविरेच्यन्तुयंविद्यादुर्बलंस्थविरं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिशुम् । सुकुमारंप्रकृत्याल्पदोषं वातोल्बणानिलम् ॥ ६५ ॥

दुर्बल वृद्ध बालक सुकुमार स्वभावसे ही स्वल्पदोषयुक्त अथवा अधिकवातयुक्त पुरुष-को विरेचन के अयोग्य जानकर ॥ ६५ ॥

तंभिषक्शमनैःसर्पिर्यूषमांसरसौद नैः । वस्त्यभ्यङ्गानुवासैश्चक्षीरैश्चो पाचरेद्बुधः ॥ ६६ ॥

उदररोगमें बुद्धिमान् वैद्य दोषों को शान्त करनेवाले घृत यूष मांसरस भात वस्ति अभ्यङ्ग (तैलआदिमर्दन) अनुवासनवस्ति तथा दूधके द्वारा चिकित्साकरे ॥ ६६ ॥

पित्तोदरेतुबलिनंपूर्वमेवविरेचयेत् । दुर्बलन्त्वनुवास्यादौशोधयेत्क्षीरव स्तिना ॥ ६७ ॥

पित्तोदरमें यदि रोगी बलवान् होतो पहिलेही विरेचन करावै और यदि रोगी दुर्बल होतो पहिले अनुवासनवस्ति देकर दूध की वस्तिसे संशोधन करावे ॥ ६७ ॥

संजातबलकायाग्निंपुनःस्निग्धंवि रेचयेत् । पयसासत्रिवृत्कल्केनोरुबू कशृतेनवा ॥ ६८ ॥ सातलात्रा यमाणाभ्यांशृतेनारग्वधेनवा । सकफेत्रासमूत्रेणसवातेतिक्तसर्पि षा ॥ ६९ ॥

फिर बल तथा अग्नि की वृद्धि होनेपर निशोथ के कल्कके साथ रेंडीकेसाथ सेंहुड़ा तथा त्रायमाण के कल्क के साथ अथवा अमलतास के साथ पाक कियगय दूधकेद्वारा विरेचन करावे जो पित्तोदर में कफका कुछ सम्बन्ध होतो दूधमें गोमूत्र मिलालेवे और जो वायुका सम्बन्ध होतो पूर्वोक्त तिक्त घी मिला लेवे ॥ ६८ । ६९ ॥

पुनःक्षीरप्रयोगश्चवस्तिकर्मविरेचन म् । क्रमेणध्रुवमातिष्ठन्युक्तःपित्तो दरंजयेत् ॥ ७० ॥

पित्तोदर में क्रमसे इसी प्रकार वारंवा[र] दूधका प्रयोग वस्तिकर्म तथा विरेचन करा[वे] युक्तिपूर्वक पित्तोदर को नष्टकरे ॥ ७० ॥

स्निग्धंस्विन्नंविशुद्धन्तुकफोदरिण मातुरम् । संसर्जयेत्कटुक्षारयुक्तैरन्नैः कफापहैः ॥ ७१ ॥

कफोदरवाले रोगी को स्नेहन स्वेदन [और] संशोधन कराके कफनाशक कटु तथा क्षा[र] युक्त अन्नकेद्वारा पथ्यका क्रमकरे ॥ ७१ ॥

गोमूत्रारिष्टपानैश्चचूर्णायस्कृतिभि स्तथा ॥ सक्षारैस्तैलपानैश्चशम[ये]त्तुकफोदरम् ॥ ७२ ॥

गोमूत्र अरिष्ट लोह चूर्ण और क्षारयुक्त तैल इनका सेवन कराके कफोदर को शान्त करे ॥ ७२ ॥

सन्निपातोदरेसर्वायथोक्ताः कारये त्क्रियाः । सोपद्रवन्तुनिर्वृत्तंप्रत्या ख्येयंविजानता ॥ ७३ ॥

वातोदर आदि उदरोंमें जो चिकित्सा क[ही] गई है वह सम्पूर्ण चिकित्सा सन्निपातो-दर में करनी चाहिये उपद्रवयुक्त उदररोग की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ७३ ॥

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्तरुगानाहैर्दाहमोहतृषाज्वरैः। गौरवारुचिकाठिन्यैश्चानिलादीन्यथाक्रमम् ॥ ७४ ॥ लिङ्गैःप्लीहोदरान्दृष्ट्वा रक्तंत्रापिस्वलक्षणैः। चिकित्सांसंप्रकुर्वीतयथादोषंयथाबलम् ॥ ७५ ॥

प्लीहोदर में उदावर्त्त पीड़ा तथा अफरासे वायुकी दाह मोह तृषा तथा ज्वरसे पित्तकी भारीपन अरुचि तथा कठोरता से कफ की और रुधिरके लक्षणोंसे रुधिर की अधिकता को जानकर दोष तथा बलके अनुसार चिकित्सा करे ॥ ७४ । ७५ ॥

स्नेहंस्वेदंविरेकञ्चनिरूहमनुवासनम्। समीक्ष्यकारयेद्बाहौवामेवाव्यधयेच्छिराम् ॥ ७६ ॥

प्लीहोदर में स्नेहन स्वेदन विरेचन निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्ति का विचारपूर्वक प्रयोग करे अथवा बायें हाथ की फस्त खुलावे ॥ ७६ ॥

षट्पलंवापिबेत्सर्पिःपिप्पलीर्वाप्रयोजयेत्। सगुडामभयांवापिक्षारारिष्टगणांस्तथा ॥ ७७ ॥

या पूर्वोक्त षट्पल घृत पिलावे या पीपरि का प्रयोग करे या गुड़सहित हड़ खावे या क्षार तथा अरिष्टोंका सेवन करे ॥ ७७ ॥

पिप्पलीनागरंदन्तीचित्रकंद्विगुणाभयम्। विडङ्गांशयुतंचूर्णमेतदुष्णाम्बुनापिबेत् ॥ ७८ ॥

पीपरि सोंठि जमालगोटेकी जड़ तथा चीता समभाग हड़ दो भाग इन सब का चौथाई वायविड़ङ्ग इन सब औषधियोंका चूर्ण करके उष्णजल के साथ पीवे इससे प्लीहोदर का नाश होताहै ॥ ७८ ॥

विडङ्गंचित्रकंशुण्ठींसघृतांसैन्धवंवचाम्। दग्ध्वाकपालेपयसागुल्मप्लीहापहंभवेत् ॥ ७९ ॥

वायविड़ङ्ग चीता सोंठि घी सैंधव लवण तथा वच इन सबको खपरेमें भूनकर दूध के साथ पीने से गुल्म तथा प्लीहोदर का नाश होता है ॥ ७९ ॥

रोहीतकलतानान्तु काण्डकाः साभयाजले। मूत्रेवाशृतमेतच्चसप्तरात्रस्थितंपिबेत् ॥ ८० ॥

लाल कंजाकी एक शाखा को काटकर हड़ों के साथ जलमें अथवा गोमूत्रमें पकाकर सात दिनतक रखछोड़े फिर उस जल या गोमूत्र का पान करे ॥ ८० ॥

कामलागुल्ममेहार्शःप्लीहसर्वोदरक्रिमीन्। तद्धन्याज्जाङ्गलरसैर्जीर्णेस्याच्चात्रभोजनम् ॥ ८१ ॥

इससे कामला गुल्म प्रमेह बवासीर प्लीहा सब प्रकारके उदररोग तथा क्रिमि इन सबका नाश होताहै इस औषधके पचजाने पर जांगल जीवोंके मांसके रसके साथ भोजन करना चाहिये ॥ ८१ ॥

रोहीतकत्वचःकृत्वापलानांपञ्चविंशतिम्। कोलद्विप्रस्थसंयुक्तंकषायमुपकल्पयेत् ॥ ८२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाल कञ्जाकी १०० तोले छाल तथा १२८ तोले बेरका काढ़ा करे ॥ ८२ ॥

पालिकैःपञ्चकोलैस्तुतैःसर्वैश्चापितुल्यया। रोहीतकत्वचापिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ८३ ॥

फिर उसकाढ़ेमें सोंठि चीता पीपरि पिपरामूल तथा चव्य चार चार तोले लाल कंजाकी छाल २० तोले इन सबको पीसकर मिलाकर उस काढ़ेके साथ ६४ तोले घी का पाक करे जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे इस घृत के सेवन से ॥ ८३ ॥

प्लीहातिवृद्धिंशमयत्येतदाशुप्रयोजितम्। तथागुल्मोदरश्वासक्रिमिपाण्डुत्वकामलाः ॥ ८४ ॥

बहुत वढ़ीहुई प्लीहा गुल्म उदररोग श्वास क्रिमि पाण्डुरोग तथा कामला का नाश होताहै ॥ ८४ ॥

अग्निकर्मचकुर्वीतभिषग्वातकफोल्वणे। पैत्तिकेजीवनीयानिसर्पींषिक्षीरवस्तयः ॥ ८५ ॥

बुद्धिमान् वैद्य प्लीहोदर में वायु तथा कफ की प्रबलता होनेपर अग्निकर्म (जलना) करे और पित्त की प्रबलता में जीवनीयगणकी औषधियों के साथ पाक किये गये घी दुग्ध वस्ति ॥ ८५ ॥

रक्तावसेकःसंशुद्धिःक्षीरपानञ्चशस्यते। यूषैर्मांसरसैश्चापिदीपनीयसमायुतैः ॥ ८६ ॥ लघून्यन्नानि संसृज्यभजेत्प्लीहोदरीनरः। स्विन्नायबद्धोदरिणेमूत्रतीक्ष्णौषधान्वितम् ॥ ८७ ॥

रक्तावसेक संशोधन तथा दुग्धपान[...] द्वारा चिकित्सा करे प्लीहोदर में विरेचन[...] उपरान्त पथ्यका क्रम बँधजानेपर अग्नि[...] दीप्त करनेवाली औषधियोंसे युक्त यूष त[...] मांसरस के साथ हलका अन्न खाना चा[...] बद्धगुदोदरवाले को स्वेदन कराके मूत्र[...] क्ष्ण औषध ॥ ८६ । ८७ ॥

सतैललवणंदद्यान्निरूहंसानुवासनम्। परिस्रंसीनिचान्नानितीक्ष्णञ्चैवविरेचनम् ॥ ८८ ॥

सैंधवलवण तथा तैलयुक्त अनुवासन[...] निरूहवस्ति देवे बद्ध गुदोदरमें स्रंसी [...] लको पतला करनेवाले) अन्न तीक्ष्ण [...] चन ॥ ८८ ॥

उदावर्त्तहरंकर्मकार्य्यंवातघ्नमेवच[...] छिद्रोदरमृतेस्वेदाच्छ्लेष्मोदरवद[...] रेत् ॥ ८९ ॥

और उदावर्त्तनाशक तथा वातनाशक चिकित्सा हित है छिद्रोदर में स्वेदके सिवाय सम्पूर्ण चिकित्सा कफोदरकी ऐसीकरे ८९॥

जातंजातंजलंस्राव्यमेवंतत्पातयेद्भिषक्। तृष्णाकासज्वरार्त्तन्तुक्षीणमांसाग्निभोजनम् ॥ ९० ॥ वर्जयेच्छ्वासिनंतद्वच्छूलिनंदुर्बलेन्द्रियम्। अपांदोषेग्रहण्यादौविद्ध्याद्दकोदरे ॥ ९१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदर रोगमें जो जल उत्पन्न होतो उसको निकलवाता जाय इस प्रकारसे वह शान्त रहता है तृषा खांसी ज्वर मांसकी क्षीणता मन्दाग्नि भोजनकी अल्पता श्वास शूल तथा इन्द्रियों की दुर्बलता इन उपद्रवों से युक्त उदररोगवाले की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये जलोदरमें ग्रहणी आदि में जलदोष के प्राप्त होनेपर ॥ ९० । ९१ ॥

मूत्रयुक्तानितीक्ष्णानिविविधक्षारवन्तिच। दीपनीयैःकफघ्नैश्चतमाहारैरुपाचरेत् ॥ ९२ ॥

गोमूत्र तथा अनेक प्रकारके क्षारोंसे युक्त तीक्ष्ण औषध देनी चाहिये और अग्नि को दीप्त करनेवाले तथा कफनाशक भोजन देने चाहिये ॥ ९२ ॥

द्रवेभ्यश्चोदकादिभ्योनियच्छेदनुपूर्वशः। सर्वमेवोदरंप्रायोदोषसङ्घातजंमतम् ॥ ९३ ॥

सम्पूर्ण उदररोगों में जलआदि पतली वस्तु नहीं देनी चाहिये प्रायः सम्पूर्ण उदररोग तीनों दोषों के संसर्ग से उत्पन्न होते हैं ॥ ९३ ॥

तस्मात्रिदोषशमनींक्रियांसर्वेषुकारयेत् । दोषैःकुक्षौहिसंपूर्णेवह्निर्मन्दत्वमृच्छति ॥ ९४ ॥

इससे उदररोग में त्रिदोषनाशक चिकित्सा करनी चाहिये दोषोंकेद्वारा उदरके पूर्ण होजाने से उदररोग में अग्नि मन्द होजाती है ॥ ९४ ॥

तस्माद्भोज्यानियोज्यानिदीपनानिलघूनिच । रक्तशालीन्यवान्मुद्गाञ्जाङ्गलांश्चमृगद्विजान् ॥ ९५ ॥

इससे हल्के तथा दीपन भोजन उदररोगमें देने चाहिये लाल शालिधान यव मूंग जांगल देशके पशु पक्षियोंका मांस ॥ ९५ ॥

पयोमूत्रासवारिष्टान्मधुशीधूंस्तथासुराम् । यवागूमोदनंवापियूषैरद्याद्रसैरपि ॥ ९६ ॥ मन्दाम्लस्नेहकटुभिर्यच्चमूलोपसाधितैः । औदकानूपजंमांसंशाकंपिष्टकृतंतिलान् ॥ ९७ ॥

दूध गोमूत्र आसव अरिष्ट शहद सीधु सुरा यवागू और कुछ खटाई स्नेह तथा कटुरसयुक्त मूलीके साथ पाक कियेगये यूष या मांसरसोंके साथ भात यह सब उदररोग में हित हैं जल तथा अनूप देशके जीवोंका मांस शाक पिट्ठीकी वस्तु तिल ॥ ९६ । ९७ ॥

व्यायामाध्वदिवास्वप्नंयानयानश्चवर्जयेत् । तथोष्णलवणाम्लानिविदाहीनिगुरूणिच ॥ ९८ ॥

व्यायाम बहुत चलना दिनमें सोना घोड़े आदि सवारीपर चढ़ना उष्ण वस्तु लवण खटाई विदाही (हृदयमें जलन पैदा करके देरमें पचनेवाली वस्तु) तथा भारी अन्न ९८॥

नाद्यादन्नानिजठरीतोयपानश्चवर्जयेत्। नातिसान्द्रंमतंपानेस्वादुतक्रमपेलवम् ॥ ९९ ॥ त्र्यूषणक्षारलवणैर्युक्तन्तुनिचयोदरी । वातोद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रीपिबेत्तक्रंपिप्पलीलवणान्वितम् ॥ १०० ॥

और अन्न तथा जलपान यह सब उदररोगमें वर्जित हैं सन्निपातज उदररोग में कुछ गाढ़ा मधुर अलेपन (जो अंगुली बोरने से उसमें लगता न हो) और सोंठि पीपरि मिर्च क्षार तथा लवणयुक्त मट्ठा पीनाचाहिये वातज उदर में पीपरि सैंधव लवणयुक्त मट्ठा पीना चाहिये ॥ ९९ । १०० ॥

शर्करामधुकोपेतं स्वादुपित्तोदरी पिबेत् । यमानीसैन्धवाजाजीव्योषयुक्तंकफोदरी । पिबेन्मधुयुतंतक्रंव्यक्ताम्लंनातिपेलवम् ॥ १०१ ॥

पित्तोदरमें शक्कर तथा मुलेठीयुक्त मधुर मट्ठा पीना चाहिये कफोदर में अजवाइन सैंधव लवण जीरा सोंठि पीपरि मिर्च तथा शहदयुक्त खट्टा और कुछ पतला मट्ठा पीना चाहिये ॥ १०१ ॥

मधुतैलवचाशुण्ठीशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः युक्तंप्लीहोदरीजातंसव्योषन्तूदकोदरी ॥ १०२ ॥

प्लीहोदरमें शहद तैल बच सोंठि सौंफ कूट तथा सैंधव लवणयुक्त मट्ठा पीना चाहिये जलोदरमें सोंठि पीपरि तथा मिर्चयुक्त मट्ठा पीना चाहिये ॥ १०२ ॥

बद्धोदरीतुहवुषायमान्यजाजीसैन्धवैः । पिबेच्छिद्रोदरीतक्रंपिप्पलीक्षौद्रसंयुतम् ॥ १०३ ॥

बद्धगुदोदर में हाऊबेर अजवाइन जीरा तथा सैंधव लवणयुक्त मट्ठा पीना चाहिये और छिद्रोदरमें पीपरि तथा शहदयुक्त मट्ठा पीना चाहिये ॥ १०३ ॥

गौरवारोचकार्त्तानांसमंदाग्न्यतिसारिणाम् । तक्रंवातकफार्त्तानाममृतत्वायकल्पते ॥ १०४ ॥

शरीर का भारीपन अरुचि मन्दाग्नि अतीसार और वातकफजरोग इन सबमें मट्ठा अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ १०४ ॥

शोफानाहार्तितृण्मूर्च्छापीडितेकारभंपयः । शुद्धानांक्षामदेहानांगव्यंछागंसमाहिषम् ॥ १०५ ॥

शोथ अफरा तृषा तथा मूर्च्छासे पीड़ित पुरुषको उटनी का दूध और वमनआदि शोधन के उपरान्त क्षीण शरीरवाले पुरुषको गौ बकरी तथा भैंसका दूध हित होताहै ॥ १०५ ॥

देवदारुपलाशार्कहस्तिपिप्पलिशिग्रुकैः । साश्वगन्धैःसगोमूत्रैःप्रदिह्यादुदरंसमैः ॥ १०६ ॥

देवदारु ढाख मदार गजपीपरि सहिंजन तथा असगन्ध इन सबको समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर उदररोग में लेपकरे ॥ १०६ ॥

वृश्चिकालींवचांकुष्ठंपञ्चमूलांपुनर्नवाम्भूतीकांनागरंधान्यंजलेपक्त्वावसेचयेत् ॥ १०७ ॥

वृश्चिकाली वच कूट पंचमूल गदहपूर्णा रोहिष सोंठि तथा धनियां इनका काढ़ा करके उदर रोग को सींचे ॥ १०७ ॥

पलाशंकत्तृणंरास्नातद्वत्पक्त्वावसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चयेत्। मूत्राण्यष्टावुदरिणांसेकेपा नेचयोजयेत्॥ १०८॥

उसी प्रकार दाख रोहिष तथा रास्ना का काढ़ा करके उदररोगमें सींचै सूत्रस्थान में कहेहुये आठो प्रकारके मूत्रोंका उदररोग में पीने के लिये तथा सींचने के लिये व्यवहार करना चाहिये॥ १०८॥

रूक्षाणांबहुवातानांतथासंशोधनार्थिनाम्। दीपनीयानिसर्पींषिजठरघ्नानिवक्ष्यते॥ १०९॥

रूक्ष बहुत वातवाले तथा संशोधनके योग्य उदररोगवालों के लिये दीपन तथा उदररोगनाशक घी अब कहेजाते हैं॥ १०९॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः॥ ११०॥

पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि॥११०॥

सक्षारैरर्द्धपलिकैर्द्धिप्रस्थंसर्पिषःपचेत्। कल्कैर्द्विपञ्चमूलस्यतुलार्द्धस्यरसेनच॥ १११॥ दधिमण्डातकोपेतंतत्सर्पिर्जठरापहम्। श्वयथुंवातविष्टम्भंगुल्मार्शांसिचनाशयेत्॥ ११२॥

इति पञ्चकोलघृतम्।

तथा यवाखार इन सब दो २ तोले औषधियों के कल्कके दहीके तोड़के और दशमूलके दोसौ तोले काढ़ेके साथ १२८ तोले घीका पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाक़ीरहे तब उतारकर छानलेवे इस घृत के सेवन से उदररोग शोथ वातज विष्टम्भ बायगोला तथा बवासीर का नाश होताहै॥ १११। ११२॥

इति पंचकोलादिघृत॥

नागरत्रिफलाप्रस्थंघृततैलात्तथाढकम्। मस्तुनःसाधयित्वैतत्पिबेत्सर्वोदरापहम्। कफमारुतसम्भूते गुल्मेचैतत्प्रशस्यते॥ ११३॥

इति नागरघृतम्।

सोंठि हड़ बहेड़ा तथा आमला इनके कल्कके साथ और २५६ तोले दहीके तोड़के साथ ६४ तोले घी तथा तैलका पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी तथा तैल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे इसके सेवनसे सब प्रकारके उदर तथा कफवातज गुल्म का नाश होताहै॥ ११३॥

इति नागरादिघृत॥

चतुर्गुणेजलेमूत्रेद्विगुणेचित्रकात्पले। कल्केसिद्धंघृतप्रस्थंसक्षारंजठरीपिबेत्॥ ११४॥

इति चित्रकघृतम्।

चौगुणे जल दुगुणे गोमूत्र तथा आठ तोले चीताके कल्कके साथ चौंसठ तोले घी का पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस घी में यवाखार मिलाकर पीवे इससे उदररोग का नाश होताहै॥ ११४॥

इति चित्रकघृत॥

यवकोलकुलत्थानांपञ्चमूलरसेन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

च । सुरासौवीरकाभ्याञ्चसिद्धंवा पिपिबेद्घृतम् ॥ ११५ ॥

इति यवाद्यघृतम् ।

यव बेर कुल्थी तथा पंचमूल के काढ़ेके सुराके (मद्यविशेष्के) तथा सौवीरक (काँजी विशेष) के साथ पाक कियागया घी उदररोग में हित होताहै ॥ ११५ ॥

एभिःस्निग्धायसंजातेबलेशान्तेच मारुते। स्रस्तेदोषाशयेदद्यात्कल्प दृष्टंविरेचनम् ॥ ११६ ॥

इन घृतोंकेद्वारा स्नेहन करनेसे बल उत्पन्न होनेपर वायुके शान्त होनेपर और दोषस्थानके शिथिल होजानेपर कल्पस्थानमें कहाहुआ विरेचन देना चाहिये ॥ ११६ ॥

पटोलमूलरजनीविडङ्गत्रिफलात्वचम्।काम्पिल्यकोनीलिनीचत्रिवृताचेतिचूर्णयेत् ॥ ११७ ॥ षडाद्यान्कार्षिकानन्त्यांस्त्रींश्चद्वित्रिचतुर्गुणान् । कृत्वाचूर्णमतोमुष्टिंगवांमूत्रेणवापिबेत् ॥ ११८ ॥

परवल की जड़ हल्दी बायबिड़ंग त्रिफला की छाल कवीला नील तथा निशोथ इनमें से परवल की जड़से आदि लेकर त्रिफला की छालपर्य्यन्त सब औषध तोले २ भर और पिछली तीन औषध क्रम से दो तोले तीन तोले तथा चार तोले इन सबका चूर्ण एकसाथ करे फिर गोमूत्रके साथ चार तोले यह चूर्ण पीवे ॥ ११७ । ११८ ॥

विरिक्तोमृदुभुञ्जीतभोजनंजाङ्गलैर सैः । मण्डपेयाञ्चपीत्वावासव्योषं षडहंपयः ॥ ११९ ॥ शृतंपिबेत्तत श्चूर्णंपिबेदेवंपुनःपुनःहन्तिसर्वोदराण्येतच्चूर्णंजातोदकान्यपि । कामलांपाण्डुरोगञ्चश्वयथुञ्चापकर्षति ॥ १२० ॥

इति पटोलाद्यंचूर्णम् ।

इससे विरेचन होजानेपर जांगल जीवोंके मांसके रसके साथ हल्का अन्न खावे मण्ड (माड़) तथा पेया पीवे और सोंठि पीपरि तथा मिर्चके साथ पाक कियाहुआ दूध पीवे इस प्रकारसे छः दिन करके फिर चूर्ण खावे यही विधि करे इस रीति से वारंवार इस चूर्ण का सेवन करने से जिनमें जल उत्पन्न होचुकाहो ऐसे भी सम्पूर्ण उदरों का नाश होताहै और कामला पाण्डुरोग तथा शोथ भी इस चूर्ण से नष्ट होताहै ॥ ११९।१२० ॥

इति पटोलाद्यचूर्ण ॥

गवाक्षींशंखिनींदन्तींतिल्वकस्यत्वचंवचाम् । पिबेद्राक्षाम्बुगोमूत्रकोलकर्कन्धुशीधुभिः ॥ १२१ ॥

जेठरू ककड़ी शंख कौड़ी जमालगोटे की जड़ निशोथ की छाल तथा बच इनके चूर्ण को लाखके काढ़े गोमूत्र और कोल (बेरविशेष) तथा कर्कंधू (बेरविशेष) की शीधु(मद्यविशेष)के साथ उदररोगमें पीवे१२१॥

यमानीहवुषाधान्यंत्रिफलाचोपकुञ्चिका । कारवीपिप्पलीमूलमजगन्धाशटीवचा ॥ १२२ ॥

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

अजवाइन हाऊबेर धनियां त्रिफला का- लाजीरा कलौंजी पिपरामूल बवई कचूर वच ॥ १२२ ॥

शताह्वाजीरकंव्योषंस्वर्णक्षीरीस चित्रका। द्वौक्षारौपौष्करंमूलंकुष्ठं लवणपञ्चकम् ॥ १२३ ॥

सौंफ जीरा सोंठि पीपरि मिर्च चोक चीता यवाखार सज्जी पुष्करमूल कूट सैंधव लवण सोचरलवण विड्लवण समुद्रलवण खारी लवण ॥ १२३ ॥

विडङ्गस्यसमांशानिदन्त्याभागास्त्र यस्तथा। त्रिवृद्विशालयोर्द्वौद्वौशा तलास्याश्चतुर्गुणा ॥ १२४ ॥

वायविड़ंग इन सबका एक २ भाग जमा- लगोटे की जड़ तीन भाग निशोथ दो भाग इन्द्रायण दो भाग और सेंहुड़ चार भाग१२४

एतन्नारायणंनामचूर्णरोगगणाप हम्। नैतत्प्राप्यातिवर्त्तन्तेरोगा विष्णुमिवासुराः ॥ १२५ ॥

इन सबका एक साथ चूर्णकरे इसको ना- रायण चूर्ण कहते हैं जैसे दैत्यलोग विष्णु को देखकर नहीं ठहर सक्के हैं उसी प्रकार इस चूर्णसे सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं १२५॥

तक्रेणोदरिभिःपेयंगुल्मिभिर्बदरा म्बुना। आनद्धवातेसुरयावातरो गेप्रसन्नया॥ १२६ ॥

उदररोग में मट्ठे के साथ गुल्मरोगमें बेरके काढ़ेके साथ अफरेमें सुरा के साथ वातरोगों में प्रसन्ना (मद्यविशेष) के साथ ॥ १२६॥

दधिमण्डेनविट्सङ्गेदाडिमाम्बुभि रर्शसैः। परिकर्त्तेसवृक्षाम्लमुष्णा म्बुभिरजीर्णके ॥ १२७ ॥

मलबन्ध (कब्ज) में दहीके तोड़के साथ बवासीर में अनारके काढ़ेके साथ गुदामें कैं- चीके काटनेकीसी पीड़ा होने में तिंतिड़ीकके साथ अजीर्णमें उष्ण जलके साथ॥ १२७॥

भगन्दरेपाण्डुरोगेश्वासेकासेगल ग्रहे। हृद्रोगेग्रहणीदोषेकुष्ठेमन्देऽन लेज्वरे ॥ १२८ ॥

भगन्दर पाण्डुरोग श्वास खांसी गलग्रह हृदय के रोग ग्रहणीदोष कुष्ठ मन्दाग्नि ज्वर ॥ १२८ ॥

दंष्ट्राविषेमूलविषे सगरेकृत्रिमेवि षे। यथार्हंस्निग्धकोष्ठेनपेयमेत द्विरेचनम् ॥ १२९ ॥

इति नारायणचूर्णम्।

साँप आदिके विष सिंगिया आदिक विष गरदोष तथा कृत्रिम विषमें रोगीके कोष्ठ को स्निग्ध करके विरेचन के निमित्त यथायोग्य अनुपान के साथ इस चूर्णका प्रयोग करना चाहिये ॥ १२९ ॥

इति नारायणचूर्ण ॥

हवुषाकाञ्चनाक्षीरीत्रिफलाकटुरो हिणी। नीलिनीत्रायमाणा च शा तलात्रिवृतावचा॥ १३० ॥

हाऊबेर हल्दी हड़ बहेड़ा आमला कुटकी नील त्रायमाण सेंहुड़ निशोथ वच ॥१३०॥

सैन्धवंकाललवणंपिप्पलीचेतिचूर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कंभिषक् । पित्तंज्ञात्वाविरेकेणनि र्हरेद्वमनेनवा ॥ १२० ॥

अपने स्थानमें स्थित पित्त उभड़कर अग्नि को बुझाता है यह जानकर बुद्धिमान् वैद्य विरेचन अथवा वमन के द्वारा शीघ्रही पित्त को निकालकर ॥ १२० ॥

अविदाहिभिरन्नैश्चलघुभिस्तिक्तसं युतैः । जाङ्गलानांरसैर्यूषैर्मुद्गादीनां खडैरपि ॥ १२१ ॥ दाडिमाम्लैः ससर्पिष्कैर्दीपनग्राहिसंयुतैः । त स्याग्निंदीपयेच्चूर्णैःसर्पिर्भिर्वासति क्तकैः ॥ १२२ ॥

तिक्त औषधियों से युक्त अविदाही तथा हलके अन्न के द्वारा जांगलजीवों के मांस के रसके द्वारा अनार घृत दीपन औषधि तथा ग्राही औषधियों से युक्त मूंग आदिके यूषके द्वारा चूर्णों के द्वारा अथवा तिक्त औषधियों के साथ पाक कियेगये घृत के द्वारा अग्निको दीप्त करे ॥ १२१ । १२२ ॥

चन्दनंपद्मकोशीरंपाठांमूर्वांकुटन्न टम् । षड्ग्रन्थाशारिवास्फोतासप्त पर्णाटरूषकान् ॥ १२३ ॥

चन्दन पद्माख खस पाढ़र मिरोरफली केवटी मोथा वच साँई श्वेत अकवन छितवन रूखा ॥ १२३ ॥

पटोलोदुम्बराश्वत्थवटप्लक्षकपीत नान् । कटुकरोहिणींमुस्तंनिम्बञ्च द्विपलांशिकम् ॥ १२४ ॥

परवर गूलर पीपर बरगद पकरिया अमरा कुटकी नागरमोथा तथा नींब आठ २ तोले ॥ १२४ ॥

द्रोणेऽपांसाधयेत्पादशेषेप्रस्थंघृता त्पचेत् । किराततिक्तेन्द्रयवनवीरामा गधिकोत्पलैः ॥ १२५ ॥ कल्कै रक्षसमैःपेयंतत्पित्तग्रहणीगदे । ति क्तकंयद्घृतञ्चोक्तंकौष्ठिकेतच्चदाप येत् ॥ १२६ ॥

इति चन्दनाद्यंघृतम् ।

इन सब औषधियों को १०२४ तोले पानी में डालकर पाक करे जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर उस काढ़े में चिरायता इन्द्रयव काकोली पीपरि तथा उत्पल इनका कल्क और ६४ तोले घी डालकर पाक करै जब काढ़ा जल जाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे पित्तज ग्रहणीरोग में यह घी पीना चाहिये और कुष्ठकी चिकित्सा में जो तिक्तक घी कहागया है वह भी पीना चाहिये ॥ १२५ । १२६ ॥

इति चन्दनादि घृत ॥

नागरातिविषेमुस्तंधातकींसरसा ञ्जनम् । वत्सकत्वक्फलंबिल्वंपाठां कटुकरोहिणीम् ॥ १२७ ॥

सोंठि अतीस नागरमोथा धवई रसौत कुरैया की छाल इन्द्रयव बेल पाढ़र तथा कुटकी ॥ १२७ ॥

पिबेत्समांशंतच्चूर्णंसक्षौद्रंतण्डुला म्बुना । पैत्तिकेग्रहणीदोषेरक्तंयच्चो पवेश्यते ॥ १२८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन सबका चूर्ण करके शहद तथा चावलों के धोवन में मिलाके पीवे इससे पित्तजग्रहणी दोष दस्तोंमें रुधिर आना ॥ १२८ ॥

अर्शांसिचगुदेशूलंजयेच्चैवप्रवाहिकाम्। नागराद्यमिदंचूर्णंकृष्णात्रेयेणपूजितम् ॥ १२९ ॥

इति नागराद्यंचूर्णम्।

बवासीर गुदाका शूल तथा प्रवाहिका इनका नाश होता है इस चूर्णको नागरादि कहते हैं महर्षि कृष्णात्रेयजीने इसका बड़ा आदर किया है ॥ १२९ ॥

इति नागरादिचूर्ण ॥

भूनिम्बंकटुकंव्योषंमुस्तमिन्द्रयवान्समान्। द्वौचित्रकाद्वत्सकत्वग्भागान्षोडशचूर्णयेत् ॥ १३० ॥ गुडशीताम्बुनापीतंग्रहणीदोषगुल्मनुत्। कामलाज्वरपाण्डुत्वमेहारुच्यतिसारनुत् ॥ १३१ ॥

इति भूनिम्बाद्यंचूर्णम्।

चिरायता कुटकी सोंठि पीपरि मिर्च नागरमोथा तथा इन्द्रयव यह सब एक २ भाग चीता दो भाग और कुरैया की छाल सोलह भाग इन सबका चूर्ण करके गुड़के ठंढे शर्बत के साथ पीवे इससे ग्रहणीदोष गुल्म कामला ज्वर पाण्डुरोग प्रमेह अरुचि तथा अतीसार का नाश होता है ॥ १३० । १३१ ॥

इति भूनिम्बादिचूर्ण ॥

वचामतिविषांपाठांसप्तपर्णंरसाञ्जनम्। श्योणाकोदीच्यकटुङ्गत्वक्वत्सकत्वग्दुरालभाः ॥ १३२ ॥

बच अतीस पाढ़र छितवन रसौंत सरिवन सुगंधवाला सोनपत्ता कुरैयाकी छाल जवासा ॥ १३२ ॥

दार्वीपर्पटकंमूर्वायमानींमधुशिग्रुकम्। पटोलपत्रंसिद्धार्थान्यूथिकंजातिपल्लवान् ॥ १३३ ॥

दारुहल्दी पित्तपापड़ा मिरोरफली अजवाइन मुलेठी सहिंजन परवल की पत्ती श्वेत सरसों जूही चमेली की पत्ती ॥ १३३ ॥

जम्ब्वाम्रबिल्वमध्यानिनिम्बशाकफलानिच। तद्रोगशममन्विच्छन्भूनिम्बाद्येनयोजयेत् ॥ १३४ ॥

जामुन आँब तथा बेलका मध्यभाग और नींबकी पत्ती तथा फल इन सब के चूर्ण को भूनिंबादि चूर्ण में मिलाकर खानेसे ग्रहणी दोष आदि रोगोंका नाश होताहै ॥ १३४ ॥

किराततिक्तंषड्ग्रन्थात्रायमाणाकटुत्रिकम्। चन्दनंपद्मकोशीरंदार्वीत्वक्कटुरोहिणी ॥ १३५ ॥

चिरायता बच त्रायमाण सोंठि पीपरि मिर्च चन्दन पद्माख खस दारुहल्दी की छाल कुटकी ॥ १३५ ॥

कुटजत्वक्फलंमुस्तंयमानीदेवदारुच। पटोलनिम्बपत्रैलासौराष्ट्रातिविषात्वचः ॥ १३६ ॥

कुरैया की छाल इन्द्रयव कुटकी नागरमोथा अजवाइन देवदारु परवर नींबकीपत्ती छो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

टीइलायची सोरठी मिट्टी अतीस तज॥१३६॥

मधुशिग्रोश्चबीजानिमूर्वापर्पटकां स्तथा । तच्चूर्णंमधुनालेह्यंपेयंम द्यैर्जलेनवा ॥ १३७ ॥

मुलेठी सहिंजन के बीज मिरोरफली तथा पित्तपापड़ा इन सब का चूर्ण करके शहद में मिलाकर चाटे अथवा मद्य या जल में मिलाकर पीवे ॥ १३७ ॥

हृत्पाण्डुग्रहणीरोगगुल्मशूलारुचि ज्वरान् । कामलांसन्निपातञ्चमुख रोगांश्चनाशयेत् ॥ १३८ ॥

इति किराताद्यंचूर्णम् ।

इससे हृदय के रोग पाण्डुरोग ग्रहणी रोग गुल्म शूल अरुचि ज्वर कामला सन्निपात और मुखरोग इन सबका नाश होताहै १३८॥

इति किरातादिचूर्ण ॥

ग्रहण्यांश्लेष्मदुष्टायांवमितस्यय थाविधि । कट्वम्ललवणक्षारैस्ति क्तैश्चाग्निंविवर्द्धयेत् ॥ १३९ ॥

कफज ग्रहणी दोष में बिधिपूर्वक बमनकराके कटु अम्ल लवणक्षार तथा तिक्त वस्तुओं के द्वारा अग्नि को बढ़ावै ॥ १३९ ॥

पलाशंचित्रकंचव्यंमातुलुङ्गंहरीत कीम् । पिप्पलींपिप्पलीमूलंपाठां नागरधान्यकम् ॥ १४० ॥ का र्षिकाण्युदकप्रस्थेपक्त्वापादावशे षितम् । पानीयार्थंप्रयुञ्जीतयवा गूंतैश्चसाधिताम् ॥ १४१ ॥

ढाख चीता चव्य बिजौरानींबू हड़ पीपरि पाढ़र पिपरामूल सोंठि तथा धनियां तोले २ भर यह सब औषधियाँ ६४ तोले जल में डालकर पकावे जब चौथाई जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे यह जल कफज ग्रहणीवाले को पीनेको देवे और इसीके द्वारा पाककी गई यवागू खाने को देवे ॥ १४० ॥ १४१ ॥

शुष्कमूलकयूषेणकौलत्थेनाथवा पुनः । कट्वम्लक्षारपटुनालघ्वन्नं निभोजयेत् ॥ १४२ ॥

और सूखी मूलीके कडुवे खट्टे क्षार युक्त तथा नमकीन यूष के साथ अथवा कुल्थी के कडुवे खट्टेक्षार युक्त तथा नमकीन यूषके साथ हल्का अन्न खाने को देवे ॥ १४२ ॥

अम्लश्चानुपिबेत्तक्रंतक्रारिष्टमथापि वा । मदिरांमध्वरिष्टान्वानिगदं शीधुमेववा ॥ १४३ ॥

भोजन के उपरान्त खट्टा मट्ठा तक्रारिष्ट मदिरा मध्वारिष्ट अथवा सीधु पिलावे१४३॥

द्रोणंमधूकपुष्पाणांविडङ्गानांततो ऽर्द्धतः । चित्रकस्यततोऽर्द्धंस्यात्त थाभल्लातकाढकम् ॥ १४४ ॥

महुवा के फूल १०२४ तोले वायविडंग ५१२ तोले चीता२५६तोले भिलावाँ २५६ तोले ॥ १४४ ॥

मञ्जिष्ठात्रिपलञ्चैव त्रिद्रोणेऽपांवि पाचयेत् । द्रोणशेषेतुतच्छीतंमध्व र्द्धाढकसंयुतम् ॥ १४५ ॥

और मँजीठ१२ तोले इनसबको३०७२ तोले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जल में डालकर पाककरै जब १०२४ तोलें जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे फिर इस जलके शीतल होजाने पर इसमें १२८ तोले शहद डालकर ॥ १४५ ॥

एलामृणालागुरुभिश्चन्दनेनचरूषिते । कुम्भेमासस्थितंजातमासवंतं प्रयोजयेत् ॥ १४६ ॥

इलायची कमलकी दण्डी अगर तथा चन्दन से लिपेहुये घड़ेमें इसको महीने भरतक रखछोड़ै तदनन्तर इस आसव का पान करै ॥ १४६ ॥

ग्रहणींदीपयत्येष बृंहणःकफपित्तजित् । शोथंकुष्ठंकिलासञ्चप्रमेहांश्चप्रणाशयेत् ॥ १४७ ॥

इति मध्वासवः ।

इससे अग्नि दीप्त होतीहै धातुवों की वृद्धि होती है और कफ पित्त शोथ कुष्ठ श्वेतकुष्ठ तथा प्रमेहका नाश होता है ॥ १४७ ॥

इतिमद्ध्वासव ॥

मधूकपुष्पस्वरसं शृतमर्द्धक्षयीकृतम् । क्षौद्रपादयुतंशीतंपूर्ववत्सन्निधापयेत् । तंपिबन्ग्रहणीदोषान्जयेत्सर्वान्हिताशनः ॥ १४८ ॥

इति आसवः ।

महुवा के पुष्पों के रसको अधौटा करके शीतल होजाने पर चतुर्थांश शहद मिलाकर मद्ध्वासव के समान महीने भरतक रक्खै तदनन्तर इसका पानकरै और हित भोजन करै इससे सम्पूर्ण ग्रहणीदोषों का नाश होता है ॥ १४८ ॥

तद्वद्द्राक्षेक्षुखर्जूरस्वरसानासुतान्पिबेत् ॥ १४९ ॥

इति द्वितीयासवः ।

इसीप्रकार दाख ईख तथा खजूर के रसों के आसव बनाके पीने से ग्रहणी दोष का नाश होता है ॥ १४९ ॥

प्रस्थौदुरालभायाद्वौप्रस्थमामलकस्यच । षष्ठीचित्रकदन्त्योर्द्वेप्रत्यग्रञ्चाभयाशतम् ॥ १५० ॥

जवासा १२८ तोले आमला ६४ तोले चीता तथा जमालगोटेकी जड़ आठ २ तोले और ताजीहड़ एकसौ ॥ १५० ॥

चतुर्द्रोणेऽम्भसःपक्त्वा शीतंद्रोणावशेषितम् । सगुडद्विशतंपूतंमधुनःकुडवायुतम् ॥ १५१ ॥

इन सबको ४०९६ तोले जलमें डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे फिर जब वह जल शीतल होजाय तब उसमें ८०० तोले गुड़ १६ तोले शहद ॥ १५१ ॥

तद्वत्प्रियंगोःपिप्पल्या विडंगानांचचूर्णितैः । कुडवैर्घृतकुम्भस्थंपक्षाज्जातंततःपिबेत् ॥ १५२ ॥

और सोलह २ तोले प्रियंगु पीपरि तथा वायविडंग का चूर्ण मिलाकर घीके पात्र में १५ दिनतक रखछोड़े तदनन्तर इसका पानकरे ॥ १५२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहणीपाण्डुरोगार्शःकुष्ठत्रीसर्पमेह नुत्। स्वरवर्णकरश्चैषरक्तपित्तकफापहः॥ १५३॥

इति दुरालभासवः।

इस से ग्रहणी दोष पाण्डुरोग बवासीर कुष्ठ जहरवात प्रमेह रक्तपित्त तथा कफ का नाश होता है और स्वर तथा वर्ण की वृद्धि होती है॥ १५३॥

हरिद्रापञ्चमूलेद्वे वीरकर्षभजीवकम्। एषांपञ्चपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसःपचेत्॥ १५४॥

हल्दी दशमूल काकोली जीवक तथा ऋषभक बीस २ तोले इन सब औषधियों को ४०९६ तोले जलमें डालकर पाककरै १५४

द्रोणशेषेरसेपूते गुडस्यद्विशतंभिषक्। चूर्णितान्कुडवार्द्धांशान्प्रक्षिपेचसमाक्षिकान्॥ १५५॥

जब चौथाई जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे जब यह जल शीतल होजाय तब इस जल में ८०० तोले गुड़ ८ तोले शहद॥ १५५॥

प्रियंगुमुस्तमञ्जिष्ठा विडंगमधुकप्लवान्। लोध्रंशावरकञ्चैवमासार्द्धं स्थापयेत्ततः॥ १५६॥

और आठ २ तोले प्रियंगु नागरमोथा मँजीठ बायबिड़ंग मुलेठी केवटी मोथा लोध तथा शावर (लोध विशेष) का चूर्ण मिलाकर घृतके पात्रमें १५ दिनतकरक्खे॥१५६॥

एषमूलासवःसिद्धो दीपनोरक्तपित्तजित्। आनाहकफहृद्रोगपाण्डुरोगांगसादनुत्॥ १५७॥

इति मूलासवः।

इसको मूलासव कहते हैं इसका पान करने से अग्नि दीप्त होती है और रक्त पित्त अफरा कफ हृदय के रोग पाण्डु रोग तथा शरीरकी शिथिलता इन सबका नाश होता है॥१५७॥

इति मूलासव॥

प्रास्थिकंपिप्पलींपिष्ट्वा गुडंमध्यंबिभीतकात्। उदकप्रस्थसंयुक्तंयवपल्लेनिधापयेत्॥ १५८॥

पीपरि गुड़ तथा बहेड़े की गिरी चौंसठ २ तोले इन तीनों औषधियों को पीसकर ६४ तोले जलमें मिलाके घड़ेमें भरकर यवोंकेढेर में महीने भरतक रक्खे॥ १५८॥

तस्मात्पलंसुजातात्तुसलिलाञ्जलिसंयुतम्। पिबेत्पिण्डासवोह्येषरोगानीकविनाशनः॥ १५९

तदनन्तर उसमें से चार तोले औषध लेकर १६ तोले जल में मिलाकर पीवे इस से सम्पूर्ण रोगोंका नाश होताहै इसको पिण्डासव कहते हैं॥ १५९॥

स्वस्थोऽप्येनंपिबेन्मासं नरःसिद्धंरसायनम्। इच्छंस्तेषामनुत्पत्तिंरोगाणांयेप्रकीर्त्तिताः॥ १६०॥

इति पिण्डासवः।

यदि स्वस्थ पुरुष महीने भरतक इस सिद्ध रसायन का सेवन करे तो जितने रोग कहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गये हैं उन में से उस के कोई रोग नहीं होता है॥ १६०॥

इति पिण्डासव॥

नवेपिप्पलिमध्वाक्तेऽकलशेगुरुधूपिते । मध्वाढकंजलसमंचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ १६१ ॥

पीपरि तथा शहद से लिपेहुये और अगर से बसायेहुये घड़े में २५६ तोले शहद तथा २५६ तोले जल डालकर इन चूर्णों को डाले॥ १६१॥

कुडवार्द्धविडंगानां पिप्पल्याःकुडवंतथा । चतुर्थकांशान्त्वक्क्षीर्य्याः केशरंमरिचानिच ॥ १६२ ॥

बायविड़ंग ८ तोले पीपरि १६ तोले वंशलोचन४तोले और नागकेसरि मिर्च॥१६२॥

त्वगेलापत्रकशटी क्रमुकातिविषाघनम् । हरेणवेनुकेतजोह्वापिप्पलीमूलचित्रकान् ॥ १६३ ॥

तज छोटी इलायची तेजपात कचूर सुपारी अतीस रेणुका तेजबल पिपरामूल तथा चीता॥ १६३॥

कार्षिकांस्तान्स्थितंमासमतऊर्ध्वंप्रयोजयेत् । मन्दंसन्दीपयत्यग्निंकरोतिविषमंसमम् ॥ १६४ ॥

तोले २ भर इनसबका चूर्ण मिलावे और महीने भरतक रख छोड़े तदनन्तर इसका सेवन करनेसे मंद अग्नि दीप्त होतीहै विषम अग्नि सम होती है॥ १६४॥

हृत्पाण्डुग्रहणीरोग कुष्ठार्शःश्वयथुज्वरान् । वातश्लेष्मामयांश्चान्यान्मध्वरिष्टोऽपोहति ॥ १६५ ॥

इति मध्वरिष्टः ।

और हृदय के रोग पाण्डुरोग ग्रहणीरोग कुष्ठ ववासीर शोथ ज्वर वातजरोग कफज रोग तथा अन्य सम्पूर्ण रोगोंका नाश होताहै इसे मद्ध्वासव कहते हैं॥ १६५॥

इतिमद्ध्वासव॥

समूलांपिप्पलींक्षारौ द्वौपञ्चलवणानिचमातुलुङ्गाभयारास्नाशटीमरिचनागरम् ॥ १६६ ॥

पीपरि पिपरामूल सज्जी जवाखार पाँचों लवण बिजौरा निम्बू हड़ रास्ना कचूर मिर्च तथा सोंठि॥ १६६॥

कृत्वासमांशंतच्चूर्णं पिबेत्प्रातःसुखाम्बुना । श्लेष्मिकेग्रहणीदोषेबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥ १६७ ॥

इनसब औषधियों का चूर्ण करके प्रातःकाल कुछ उष्ण जलके साथ पीवे इससे कफजग्रहणी दोषका नाश होता है और बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धि होती है॥ १६७॥

एतैरेवौषधैःसिद्धं सर्पिःपेयंसमारुते । गौल्मिकेषट्पलंप्रोक्तंभल्लातकघृतञ्चयत् ॥ १६८ ॥

जिस कफज ग्रहणी में वायुका भी सम्बन्ध हो उसमें इन्हीं औषधियोंके साथ पाक किया गया घी गुल्म की चिकित्सा में कहाहुआ षट्पलघी तथा भल्लातकघी पीनाचाहिये१६८

विडंकालोत्थलवणं सर्जिकायवशू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कजम् । सप्तलाकण्टकारीचचित्र कश्चेतिदाहयेत् ॥ १६९ ॥

वायविड़ंग लवण सज्जी यवाखार सेंहुड़ भटकटैया तथा चीता इनको भस्मकरे॥१६९॥

सप्तकृत्वःस्रुतस्यास्य क्षारस्यद्व्याढकेनतु । आढकंसर्पिषःपक्त्वापिबेदग्निविवर्द्धनम् ॥ १७० ॥

इति क्षारघृतम् ।

फिर इन के क्षार से सातवार टपकायेहुये ५१२ तोले जल के साथ २५६ तोले घी का पाक करै जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतार कर छान लेवे इस घृत का पान करनेसे अग्नि की वृद्धि होती है ॥१७०॥

इति क्षारघृत ॥

समूलांपिप्पलींपाठां चव्येन्द्रयवनागरम् । चित्रकातिविषेहिंगुश्वदंष्ट्रां कटुरोहिणीम् ॥ १७१ ॥

पीपरि पिपरामूल पाढ़र चव्य इन्द्रयव सोंठि चीता अतीस हींग गोखुरू कुटकी॥१७१॥

वचाञ्चकार्षिकंपञ्चलवणानांपलानि च । दध्नःप्रस्थद्वयेतैलसर्पिषोःकुडवद्वये॥ १७२ ॥ चूर्णीकृतानिनिष्काथ्य शनैरन्तर्गतेरसे । अन्तर्धूमंततो दग्ध्वाचूर्णंकृत्वाघृतास्रुतम्॥१७३॥

तथा वच एक २ तोले और पाँचों लवण चार २ तोले इन सब को चूर्ण करके १२८ तोले दही १६ तोले तैल तथा सोलह तोले घी में डालकर पाक करै पाक करते २ पानी के जलजाने पर इन सब वस्तुओं को इस प्रकार जलावे जिस में धुआँ न निकलने पावे ॥ १७२ । १७३ ॥

पिबेत्पाणितलंतस्मिन्जीर्णेस्यान्मधुराशनः । वातश्लेष्मामयान्सर्वान्हन्याद्विषगरांश्चसः ॥ १७४ ॥

फिर औषधियों के भस्म होजानेपर उस में से तोलेभर लेकर घी में मिलाकर पीवे और उस घी के पचजाने पर मधुर भोजनकरै इस से वात कफज सम्पूर्ण रोग विषदोष और गरदोष इन सबका नाश होता है ॥ १७४ ॥

भल्लातकंत्रिकटुकं त्रिफलांलवणत्रिकम् । अन्तर्धूमंद्विपलिकंगोपुरीषाग्निनादहेत् ॥ १७५ ॥

भिलावाँ सोंठि पीपरि मिर्च त्रिफला सोंचरलवण सैंधवलवण तथा विड्लवण आठ२ तोले इनसब औषधियों को विनवाँ कण्डों की आँच में इसप्रकार से जलावे जिसमें धुआँ न निकलै ॥ १७५ ॥

सक्षारःसर्पिषापीतोभोज्योवाप्यवचूर्णितः । हृत्पांडुग्रहणीदोषगुल्मोदावर्त्तशूलनुत् ॥ १७६ ॥

फिर इन औषधियों के क्षार को पीसकर घीमें मिलाकर पीवे या भोजन में इस चूर्ण को मिलाकर खावे इस से हृदय के रोग पाण्डुरोग ग्रहणीदोष गुल्म उदावर्त्त तथा शूल का नाश होता है ॥ १७६ ॥

दुरालभांकरञ्जौद्वौसप्तपर्णंसवत्सकम् । षड्ग्रन्थांमदनंमूर्वांपाठामारग्वधतथा ॥ १७७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यवासा कंजा छितवन कुरैया वच मैनफल मिरोरफली पाढ़र तथा अमलतास॥ १७७॥

गोमूत्रेणसमांशानिकृत्वाचूर्णानि दाहयेत् । दग्ध्वाचतंपिबेत्क्षारंग्रह णीबलवर्द्धनम् ॥ १७८ ॥

इति क्षारः ।

इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करके गोमूत्र में मिलाकर जलालेवे फिर इस क्षार को पीवे इस से ग्रहणी के बलकी वृद्धि होती है॥ १७८॥

भूनिम्बंरोहिणींतिक्तांपटोलंनिम्बप र्पटम् । दहेन्माहिषमूत्रेणक्षारएषोऽ ग्निवर्द्धनः ॥ १७६ ॥

इति द्वितीयक्षारः ।

चिरायता कुटकी परवर नींब तथा पित्त-पापड़ा इनको भैंसेके मूत्रमें मिलाकर जला-कर क्षारकरके पीवे इससे अग्नि की वृद्धि होती है॥ १७९॥

द्वेहरिद्रेवचाकुष्ठंचित्रकःकटुरोहि णी। मुस्तञ्चबस्तमूत्रेणसिद्धःक्षारो ग्निवर्द्धनः॥ १८० ॥

इति तृतीयक्षारः ।

हल्दी दारुहल्दी बच कूट चीता कुटकी तथा नागरमोथा इनसब को पीसकर बकरे के मूत्र में मिलाकर जला के क्षारकरै इसको पीनेसे अग्निकी वृद्धि होती है॥ १८० ॥

चतुष्पलंसुधाकाण्डात्त्रिपलंलवण त्रयात्। वार्त्ताकीकुडवञ्चार्कादष्टौ द्वेचित्रकात्पले॥ १८१ ॥

सेंहुड़ १६ तोले सोंचरलवण सैंधवलवण तथा विड्लवण चार चार तोले वनभांटा १६ तोले मदार ३२ तोले और चीता ८ तोले॥ १८१ ॥

दग्धानिवार्ताकुरसेगुलिकाभोज नोत्तराः। भुक्तंभुक्तंपचत्याशुकास श्वासार्शसांहिताः। विषूचिकाप्र तिश्यायःहृद्रोगशमनाश्चताः॥१८२॥

इति क्षारगुडिका।

इन सबको जलाकर क्षार करके वनभांटा के रसमें गोलीबनाकर भोजनके उपरांत खावे इन गोलियों के सेवनसे भोजन करतेही अन्न का परिपाक होताहै और खांसी श्वास बवा-सीर विषूचिका जुकाम तथा हृदयके रोगोंका नाश होताहै॥ १८२॥

वत्सकातिविषेपाठांदुःस्पर्शंहिंगुचि त्रकम्। चूर्णीकृत्यपलाशानांक्षारे मूत्रस्रुतेपचेत्॥ १८३॥ आयसे भाजनेसान्द्रात्तस्मात्कोलंसुखाम्बु ना। मद्यैर्वाग्रहणीदोषेशोथार्शः पाण्डुमान्पिबेत्॥ १८४॥

इति चतुर्थक्षारः।

कुरैया अतीस पाढ़र यवासा हींग तथा चीता इन सबका चूर्ण करके ढाखके अग्रभाग के क्षार के जलमें मिलाके लोहे के पात्र में डालकर पाक करे जब पाक करते २ गाढ़ा होजाय तब उतारकर उसमें से तोले भर ले-कर कुछ उष्ण जलके साथ अथवा मद्यके साथ पीवे इससे ग्रहणी दोष शोथ बवासीर तथा पाण्डुरोग का नाश होताहै॥१८३॥१८४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिफलांकटभींचव्यंबिल्वमध्यमयोरजः। रोहिणींकटुकांमुस्तंकुष्ठंपाठांश्चहिंगुच ॥ १८५ ॥

त्रिफला मालकांगनी चव्य बेलगिरी लोहचूर्ण कुटकी मोथा कूट पाढ़र हींग ॥१८५॥

मधुकंमुष्ककयवक्षारौत्रिकटुकंवचाम्। विडंगंपिप्पलीमूलंस्वर्जिकांनिम्बचित्रकौ ॥ १८६ ॥

मुलेठी काली पाढ़र जवाखार सोंठि पीपरि मिर्च वच बायबिडङ्ग पिपरामूल सज्जी नींब चीता ॥ १८६ ॥

मूर्वाजमोदेन्द्रयवान्गुडूचींदेवदारु च। कार्षिकंलवणानाञ्चपञ्चानांपलिकान्पृथक् ॥ १८७ ॥

मिरोरफली अजमोद इन्द्रजव गिलोय तथा देवदारु तोले २ भर पांचों लवण चार चार तोले ॥ १८७ ॥

भागान्दध्नित्रिकुडवेघृततैलेनमूर्च्छितान्। अन्तर्धूमंशनैर्दग्ध्वातस्मात्पाणितलंपिबेत्। सर्पिषाकफवाताशोंग्रहणीपांडुरोगवान्॥१८८॥

इन सबमें घी तथा तैल लगाकर इन को ४८ तोले दहीमें डालकर धीरे २ इस रीतिसे जलाकर क्षार करलेवे जिसमें धुआं न निकलै फिर तोले भर क्षार घीमें मिलाकर खावे इससे कफ वातज बवासीर ग्रहणीदोष पाण्डुरोग ॥ १८८ ॥

प्लीहमूत्रग्रहश्वासहिक्काकासक्रिमिज्वरान्। शोषातिसारौश्वयथुंप्रमेहानाहहृद्ग्रहान् ॥ १८९ ॥

प्लीहा मूत्रकृच्छ्र श्वास हिचकी खांसी क्रिमि ज्वर शोष अतीसार शोथ प्रमेह अफरा हृदयके रोग ॥ १८९ ॥

हन्यात्सर्वविषञ्चैवक्षारोऽग्निजननोवरः। जीर्णैरसैर्वामधुरैरन्नंस्यात्पयसापिवा ॥ १९० ॥

इति पञ्चमक्षारः।

तथा सम्पूर्ण विषदोष इन सबका नाश होताहै और अग्निकी वृद्धि होती है इस औषधके पचजानेपर मांसके मधुर रस अथवा दूध के साथ भात खाना चाहिये ॥ १९० ॥

त्रिदोषेविधिवद्वैद्यःपञ्चकर्माणिकारयेत्। घृतक्षारासवारिष्टान्दद्याच्चाग्निविवर्द्धनान् ॥ १९१ ॥

बुद्धिमान् वैद्य सन्निपातज ग्रहणीदोष में वमन आदि पंचकर्म्म कराके अग्निवर्द्धक घृत क्षार आसव तथा अरिष्टोंका प्रयोगकरै १९१

क्रियायाचानिलादीनांनिर्दिष्टाग्रहणींप्रति। व्यत्यासात्तांसमस्ताञ्च कुर्य्याद्दोषविशेषवित् ॥ १९२ ॥

और वातज आदि ग्रहणीदोष में जो चिकित्सा कहीगई है उसी को उलट पलटकर करै ॥ १९२ ॥

स्नेहनंस्वेदनंशुद्धिर्लङ्घनंदीपनञ्च यत्। चूर्णानिलवणक्षारमध्वरिष्टसुरासवाः ॥ १९३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहणीदोषवाले पुरुष स्नेहन स्वेदन संशोधन लंघन दीपन चूर्ण लवण क्षार शहद अरिष्ट सुरा आसव ॥ १९३ ॥

विविधास्तक्रयोगाश्चदीपनानाञ्च सर्पिषाम्। ग्रहणीरोगिभिःसेव्याः क्रियाश्चात्रस्थिकींशृणु ॥ १९४ ॥

अनेक प्रकार के तक्र योग और अग्नि दीपक घृत इनसब का सेवन करैं अत्र ग्रहणी दोष में जिस अवस्थामें जो चिकित्साकरनी चाहिये सो सुनो ॥ १९४ ॥

ष्ठीवनंश्लैष्मिकेरूक्षंदीपनंतिक्तसंयुतम्। सकृद्रूक्षंसकृत्स्निग्धंकृशेबहुकफेहितम् ॥ १९५ ॥

कफज ग्रहणीदोष में जब बहुत कफ सहित थूक आताहो तब रूक्ष दीपन तथा तिक्त वस्तु हित होता है जो बहुत कृशपुरुष के कफ की वृद्धि होय तो कभी स्निग्ध तथा कभी रूक्ष वस्तु देनी चाहिये ॥ १९५ ॥

परीक्ष्यामंशरीरस्यदीपनंस्नेहसंयुतम्। दीपनंबहुपित्तस्यतिक्तंमधुरसंयुतम् ॥ १९६ ॥

शरीर की अच्छी प्रकारसे परीक्षा करके स्नेहयुक्त दीपन वस्तु देनी चाहिये जिसके ग्रहणीदोष में पित्त बहुत होय उसको मधुर रसयुक्त अग्निदीपक तिक्त वस्तु देनी चाहिये ॥ १९६ ॥

बहुवातस्यतुस्नेहलवणाम्लयुतेहितम्। सन्धुक्षतियदावह्निःपरेषांविधिनेन्धनैः ॥ १९७ ॥

जिसके ग्रहणीरोगमें वायु बहुत हो उसको स्नेह लवण तथा खटाईयुक्त वस्तु हित होती है इस प्रकार विधिपूर्वक दीपन वस्तुरूपी इन्धनके सेवनसे अग्नि दीप्त होती है ॥ १९७ ॥

स्नेहमेवपरंविद्याद्दुर्बलानलदीपनम्। नालंस्नेहसमिद्धस्यशमायान्नंसुगुर्वपि ॥ १९८ ॥

स्नेहके प्रयोगकोही दुर्बल अग्नि को दीप्त करने के लिये मुख्य समझना चाहिये क्योंकि स्नेहकेद्वारा दीप्तहुई अग्नि को बहुत भारी अन्न भी नहीं बुझासक्ता है ॥ १९८ ॥

मन्दाग्निरपिपक्वन्तुपुरीषंयोऽतिसार्यते। दीपनीयौषधैर्युक्तांघृतमात्रांपिबेत्तसः ॥ १९९ ॥

अग्निके मन्द होनेपर भी जिसको पक्के मलके दस्त आतेहों वह दीपन औषधियों से युक्त घी मात्राके अनुसार पीवे ॥ १९९ ॥

तयासमानःपवनःप्रसन्नोमार्गमाश्रितः। अग्नेःसमीपचारित्वादाशुप्रकुरुतेबलम् ॥ २०० ॥

उस घीसे समान वायु निर्म्मल होकर अपने मार्गके अनुसार होके समीपचारी होनेके कारण अग्नि के बल को शीघ्रही बढ़ाती है ॥ २०० ॥

काठिन्याद्यःपुरीषन्तुकृच्छ्रान्मुञ्चतिमानवः। सघृतंलवणैर्युक्तंनरोऽन्नावग्रहंपिबेत् ॥ २०१ ॥

मलके सूखजाने के कारण जिस ग्रहणीदोषवाले पुरुष को बहुत कष्टसे मलका त्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होताहो वह अन्न न खाकर सैंधवलवणयुक्त घृत पीवे ॥ २०१ ॥

रौक्ष्यान्मन्देपिबेत्सर्पिस्तैलंवादी पनैर्युतम् । अतिस्नेहाच्चुमन्देऽग्नौ चूर्णारिष्टासवाहिताः ॥ २०२ ॥

रूक्षता से अग्निके मन्द होजानेपर अग्निदीपक औषधियों से युक्त घृत अथवा तैल पीना चाहिये बहुत स्नेहके सेवन से अग्निके मन्द होजानेपर चूर्ण अरिष्ट तथा आसव हित होते हैं ॥ २०२ ॥

भिन्नेगुदेऽवलेहास्तुविडतैलसुरास वाः । उदवर्त्ताच्चुमन्देऽग्नौनिरूहाःस्नेहबस्तयः ॥ २०३ ॥

ग्रहणीदोष में गुदाके उपलेप से मल फट जानेपर तैल सुरा तथा आसव हित होते हैं उदावर्त्तके द्वारा अग्निके मन्द होजाने पर निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्ति हित होती है ॥ २०३ ॥

दोषवृद्ध्यातुमन्देऽग्नौशुद्धोदोष विधिंचरेत् । व्याधियुक्तस्यमन्देतु सर्पिरेवाग्निदीपनम् ॥ २०४ ॥

दोषोंके बढ़ने से अग्निके मन्द होजानेपर वमन आदि संशोधन के उपरान्त दोषनाशक औषध करनी चाहिये रोगी पुरुष की अग्नि के मन्द होजानेपर घृतही अग्नि को दीप्त करने को श्रेष्ठ होताहै ॥ २०४ ॥

उपवासाच्चमन्देऽग्नौयवागूभिःपिबेद्घृतम् । अन्नावपीडितेचालंदीप नंबृंहणञ्चतत् ॥ २०५ ॥

लंघन से अग्निके मन्द होजानेपर यवागूके साथ घी पीना चाहिये और अन्न से पीड़ित पुरुष को घृतही दीपन तथा बृंहण होता है ॥ २०५ ॥

दीर्घकालप्रसङ्गात्तुक्षामक्षीणकृशा न्नरान् । प्रसहानांरसैःसाम्लैर्भोज येत्पिशिताशिनाम् ॥ २०६ ॥

बहुत मैथुन करनेसे क्षीण तथा कृश पुरुषों को मांस खानेवाले प्रसह जीवोंके मांसके खट्टे रसके साथ भोजन करावे ॥ २०६ ॥

लघुतीक्ष्णोष्णशोधित्वाद्दीपय न्त्याशुतेऽनलम् । मांसोपचितमां सत्वात्तथाशुतरबृंहणाः ॥ २०७ ॥

क्योंकि यह मांसका रस हलका उष्ण तीक्ष्ण तथा शोधक होने के कारण शीघ्रही अग्निको दीप्त करताहै और इन जीवोंका मांस मांसही खानेसे बढ़ता है इससे इनके मांसका रस शीघ्रही धातुओं को बढ़ाताहै ॥ २०७ ॥

नाभोजनेनकायाग्निर्दीप्यतेनाति भोजनात् । यथानिरिन्धनोवह्निर ल्पोवातीन्धानावृतः ॥ २०८ ॥

जैसे अग्नि इन्धन न होने से इन्धन स्वल्प होने से तथा इन्धन बहुत होनेसे प्रज्वलित नहीं होती है इसी प्रकार जठराग्नि भी भोजन न करने से स्वल्पभोजन से तथा अधिक भोजन करने से दीप्त नहीं होतीहै ॥ २०८ ॥

स्नेहान्नविधिभिश्चित्रैश्चूर्णारिष्टसु रासवैः । प्रयुक्तैर्भिषजासम्यग्बलमग्नेःप्रवर्द्धते ॥ २०९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमान् वैद्य से प्रयोग कियेगये स्नेहयुक्त अनेक प्रकार के अन्न चूर्ण अरिष्ट सुरा तथा आसवोंकेद्वारा अग्निका बल बढ़जाता है ॥ २०९ ॥

यथाहिसारदार्वग्निःस्थिरःसन्तिष्ठतेचिरम्। स्नेहान्नविधिभिस्तद्वदन्तरग्निर्भवेत्स्थिरः ॥ २१० ॥

जैसे सार (हीर) युक्त काष्ठका अग्नि स्थिरता से बहुत; देरतक ठहरता है उसी प्रकार स्नेहयुक्त अन्नके विधिपूर्व्वक प्रयोग से बढ़ाहुआ जठराग्नि भी स्थिर होताहै २१०॥

हितंजीर्णेमितञ्चाश्नंश्चिरमारोग्यमश्नुते। अवैषम्येनधातूनामग्निवृद्धौयतेतवा ॥ २११ ॥

जो पुरुष भोजनके पचजानेपर हित तथा मित (प्रमाण सहित) भोजन करता है वह बहुत कालतक नीरोग रहता है बुद्धिमान् पुरुष सम्पूर्ण धातु विषम न होवें ऐसी रीति से अग्निके बढ़ानेका यत्नकरै ॥ २११ ॥

समैर्दोषैःसमोमध्येदेहस्योष्माग्निसंस्थितः। पचत्यन्नंतदारोग्यपुष्ट्यायुर्बलवृद्धये ॥ २१२ ॥

क्योंकि सम दोषोंकेद्वारा समता को प्राप्त ऊष्माही शरीर के मध्यमें अग्नि कहलाताहै वही ऊष्मा आरोग्य पुष्टि आयु तथा बलकी वृद्धिके लिये अन्न को पचाता है ॥ २१२ ॥

दोषैर्मन्दोऽतिवृद्धोवाविषमैर्जनयेद्गदान्। पाच्यंमन्दस्यतत्रोक्तमतिवृद्धस्यवक्ष्यते ॥ २१३ ॥

और विषम दोषोंकेद्वारा मन्दहुआ अथवा बहुत बढ़ाहुआ वही ऊष्मारोगों को उत्पन्न करता है इनमें से मन्द ऊष्मा का परिपाक तो कहागया अब बहुत बढ़ेहुये ऊष्माका परिपाक कहा जाता है ॥ २१३ ॥

नरेक्षीणकफेपित्तंकुपितंमारुतानुगम्। स्वोष्मणापावकस्थानेबलमग्नेःप्रयच्छति ॥ २१४ ॥

मनुष्यके कफके क्षीण होजानेपर कुपित हुआ पित्त वायुके साथ होकर अपनी ऊष्मा से अग्निस्थान में अग्नि के बल को बढ़ाता है ॥ २१४ ॥

तथालब्धबलोदेहेविरूक्षेसानिलोऽनलः ॥ परिभूयपचत्यन्नंतैक्ष्ण्यादाशुमुहुर्मुहुः ॥ २१५ ॥

कफके क्षीण होने से रूखे शरीरमें इस प्रकारसे बढ़ाहुआ बलवान् वायुसहित अग्नि तीक्ष्णता से वारंवार शीघ्रही अन्नका परिपाक करता है ॥ २१५ ॥

पक्वान्नंसततंधातूञ्छोणितादीन् पचत्यपि। ततोदौर्बल्यमातङ्कान्मृत्युञ्चोपनयेन्नरम् ॥ २१६ ॥

और अन्नके पचजानेपर रुधिर आदि धातुओं को पचाती है इससे दुर्बलता अनेक प्रकारके रोग तथा मृत्युभी होजाती है २१६ ॥

भुक्तेऽन्नेलभतेशान्तिंजीर्णमात्रेप्रताम्यति। तृट्श्वासदाहमूर्च्छाद्याव्याधयोऽत्यग्निसम्भवाः॥ २१७॥

अग्नि के तीक्ष्ण होनेपर अर्थात् भस्मक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोग में भोजन करने से शान्ति होती है और भोजन के पचजानेपर ग्लानि होती है इस में तृषा श्वास दाह तथा मूर्च्छा आदिक रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१७ ॥

तमत्यग्निंगुरुस्निग्धशीतैर्मधुरविज्जलैः। अन्नपानैर्नयेच्छान्तिंदीप्तमग्निमिवाम्बुभिः॥ २१८॥

जैसे बहुत प्रचण्ड अग्नि जलकेद्वारा शांत कीजाती है इसी प्रकार बहुत तीक्ष्णहुई जठराग्नि को भारी स्निग्ध शीतल मधुर तथा मन्दाग्नि करनेवाले अन्नपानसे शांतकरै २१८

मुहुर्मुहुरजीर्णेऽपिभोज्यान्यस्योपहारयेत्। निरिन्धनोऽन्तरंलब्ध्वायथैनंनविपादयेत्॥ २१९ ॥

भस्मकरोगवाले को अजीर्ण में भी बारम्बार भोजन करावे जिससे अग्नि इन्धन रहित होकर अवकाश पाके रोगी को नष्ट न करे ॥ २१९ ॥

पायसंकृसरांस्निग्धंपैष्टिकंगुडवैकृतम्। अद्यात्तथौदकानूपपिशितानिघृतानिच॥ २२०॥

भस्मकरोगमें खीर घृतादि स्नेहयुक्त खिचरी पीठीकी वस्तु गुड़की वस्तु जल तथा अनूपदेशके जीवोंका मांस घी॥ २२०॥

मत्स्यान्विशेषतःश्लक्ष्णान्स्थिरतोयचरांस्तथा। आविकंसघृतंमांसमद्यादत्यग्निनाशनम्॥२२१॥

और रुकेहुए जलवाले बहुत की चिकण मछली यह सब वस्तु खानी चाहिये भेड़का घृतयुक्त मांस खाने से अत्यग्नि (भस्मकरोग) का नाश होताहै ॥ २२१ ॥

यवागूंसमधूच्छिष्टांघृतंवाक्षुधितःपिबेत्॥ २२२ ॥

मोम सहित यवागू अथवा घी क्षुधा लगने पर भस्मकरोगमें पीना चाहिये ॥ २२२ ॥

पयोवाशर्करांसर्पिर्जीवनीयौषधैःशृतम्। फलानांतैलयोनीनामुत्कुञ्चाश्चसशर्कराः॥ २२३ ॥

अथवा जीवनीयगणकी औषधियोंके साथ पाक कियागया शक्कर तथा घृतयुक्त दूध पीना चाहिये जिन फलों से तैल निकलता है उन फलों की उत्कुञ्चा शक्कर के साथ खाने से ॥ २२३ ॥

मार्दवंजनयन्त्यग्नेःस्निग्धान्मांसरसांस्तथा। पिबेच्छीताम्बुनासर्पिर्मधूच्छिष्टेनवायुतम्॥ २२४॥

और मांसका स्नेहयुक्त रस पीने से बहुत तीक्ष्ण अग्नि शांत होजाती है शीतल जल अथवा मोम मिलाकर घी पीनेसे॥ २२४॥

गोधूमचूर्णंपयसासर्पिष्कंपिबेन्नरः। आनूपरससिद्धान्वात्रीन्स्नेहांस्तैलवर्जितान्॥ २२५ ॥

गोधूमचूर्णमन्थंवाऽप्यधयित्वाशिरांपिबेत्। पयसासम्मितांश्चापिघनांत्रिस्नेहसंयुताम्॥ २२६॥

अथवा घृतयुक्त गोधूमचूर्ण (आटा) दूध में मिलाकर पीने से अथवा फरुवलाकर अनूपदेश के जीवों के मांस के रस के साथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाक कियेगये तैल वर्ज्जित तीनों स्नेह (घी चर्वी तथा मज्जा) या गेहूं के पतले सत्तूपीने से अथवा तैल वर्ज्जित तीन स्नेहों से युक्त नागरमोथा को दूध में मिलाकर पीने से ॥ २२५ । २२६ ॥

नारीस्तन्येनसंयुक्तांपिबेदौदुम्बरीं त्वचम् । आभ्यांवापायसंसिद्धम द्यादत्यग्निशान्तये ॥ २२७ ॥

अथवा स्त्रीके दूधमें गूलरकी छाल मिलाकर पीने से अथवा गूलर की छाल तथा स्त्री के दूधके द्वारा पाक कीगई खीर खाने से अत्यग्नि (भस्मकरोग) का नाश होता है ॥ २२७ ॥

श्यामात्रिवृद्धिपक्कंवापयोदद्याद्वि रेचनम् । असकृत्पित्तशान्त्यर्थं पायसप्रतिभोजनम् । प्रसमीक्ष्य भिषक्प्राज्ञस्तस्मै दद्याद्विधान वित् ॥ २२८ ॥

तीक्ष्ण अग्निको शान्त करने के लिये काले निशोथके साथ पाक कियेगये दूधके द्वारा विरेचन कराना चाहिये और पित्तको शान्त करनेके लिये वारंवार खीर खिलानी चाहिये विधिका ज्ञाता बुद्धिमान् वैद्य देखकर रोगीको देवे ॥ २२८ ॥

यत्किञ्चिन्मधुरंमेध्यंश्लेष्मलंगुरु भोजनम् । तदत्यग्निहितंसर्वंभुक्त्वा प्रस्वपनंदिवा ॥ २२९ ॥

जो कोई भोजन मधुर मेधा को हित कफकारी तथा भारीहो वह भोजन और दिन में भोजन करके सोना तीक्ष्ण अग्नि में हित होता है ॥ २२९ ॥

मेध्यान्यन्नानियोऽत्यग्नावप्रलान्तः समश्नुते । नतन्निमित्तंव्यसनंल भतेपुष्टिमेवच ॥ २३० ॥

जो पुरुष अग्निके तीक्ष्ण होनेपर मेधाको बढ़ानेवाले अन्न निरन्तर खाता है उसको तीक्ष्णाग्नि से होनेवाले रोग नहीं होते किन्तु पुष्टता होती है ॥ २३० ॥

कफेवृद्धेजितेपित्तेमारुतेचानलःस मः । समधातोःपचत्यन्नंपुष्ट्यायुर्ब लवृद्धये इति ॥ २३१ ॥

भस्मकरोग में कफ के बढ़नेपर पित्त तथा वायु के शान्त होजाने पर अग्निसम होकर समधातुवाले पुरुषकी पुष्टता आयु तथा बल को बढ़ानेके लिये अन्नको पचाताहै ॥ २३१ ॥

भवन्तिचात्र ।

पथ्यापथ्यमिहैकत्रभुक्तंसमशनंम तम् । विषमंबहुवाल्पंवाप्यप्राप्तातीतकालयोः ॥ २३२ ॥

इसमें यह श्लोक है । यहाँ (वैद्यकशास्त्र में) पथ्य तथा अपथ्य वस्तुओं को एक में मिलाकर खाने को समशन कहते हैं भोजन समय के पहिले अथवा उपरान्त वहुत अथवा स्वल्प भोजन करनेको विषमाशन कहते हैं ॥ २३२ ॥

भुक्तंपूर्वान्नशेषेतुपुनरध्यशनंमतम् । त्रीण्यप्येतानिमृत्युंवाघोरान्व्याधी न्सृजन्तिवा ॥ २३३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और पहिले खायेहुये अन्न के विना पचेही भोजन करने को अध्यशन कहते हैं यह तीनों (शमशन विषमाशन तथा अध्यशन) मृत्यु अथवा घोर रोगों को उत्पन्न करते हैं २३३॥

प्रातराशेत्वजीर्णेऽपिसायमाशोन दुष्यति। दिवाप्रबुध्यतेऽर्केणहृदयं पुण्डरीकवत्॥ २३४॥

प्रातःकाल कियेहुये भोजनके न पचनेपर भी सायँकाल भोजन करनेका निषेध नहीं है क्योंकि दिनमें सूर्य्यके किरणों के द्वारा हृदय कमल के समान प्रफुल्लित होताहै॥ २३४॥

तस्मिन्विबुद्धेस्रोतांसिस्फुटत्वंया न्तिसर्वशः। व्यायामाच्चविचाराच्च विक्षिप्तत्वाच्चचेतसः॥ २३५॥

हृदयके प्रफुल्लित होने से सम्पूर्ण स्रोतखुले रहते हैं इससे और व्यायाम करने से विचरण करने से तथा कार्य्यों में चित्तके व्यग्रहोनेसे॥ २३५॥

उत्क्लेदमपगच्छन्तिदिवातेनास्य धातवः। अक्लिन्नेष्वन्नमासिक्तमन्य त्तेषुनदुष्यति॥ २३६॥ अविद ग्धइवक्षीरेक्षीरमन्यद्विमिश्रितम्। रात्रौतुहृदयेम्लानेसंवृतेष्वयनेषु च॥ २३७॥

दिन में सम्पूर्ण धातु क्लेद को नहीं प्राप्त होतीहैं इसहेतुसे जैसे अविदग्ध (नहींपके) दूधमें डाला गया दूध दूषित नहीं होताहै इसी प्रकार क्लेदरहित धातुओं में डालागया अन्न दूषित नहीं होता है परन्तु रात्रि में हृदय के म्लान होजानेपर और सम्पूर्ण स्रोत तथा कोष्ठ के बन्द होजानेपर॥ २३६। २३७॥

यान्तिकोष्ठेचविक्लेदंसंवृतेदेहधात वः। क्लिन्नेष्वन्यदपक्केषुतेष्वासिक्तं प्रदुष्यति। विदग्धेषुपयःस्वन्यत्प यस्तप्तेष्विवार्पितम्॥ २३८॥

शरीर की सम्पूर्ण धातु क्लेद को प्राप्त होती हैं इससे जैसे विदग्ध (अधपके) उष्ण दूधमें अन्यदूध डालने से दूषित होजाता है उसी प्रकार धातुओं के क्लेदयुक्त होनेपर नहीं पचेहुये अन्न में डालागया अन्य अन्न दूषित होजाता है॥ २३८॥

नैशेष्वाहारजातेषुनापिपक्केषुबुद्धि मान्। तन्मादन्यत्समश्नीयात्पाल यिष्यन्बलायुषी॥ २३९॥

इससे बुद्धिमान् पुरुष बल और आयु को चाहता हुआ रात्रि में कियेहुये भोजनके अच्छे प्रकार विना पचे भोजन न करै॥२३९॥

तत्र श्लोकाः।

अन्तरग्निगुणेदेहंयथाधारयतेत्र सः। यथान्नंपच्यतेयांश्चयथाहारः करोत्यपि॥ २४०॥

तिसमें यह श्लोक हैं। जठराग्नि के गुण जिस प्रकार जठराग्नि शरीर को धारण करता है जिस प्रकार से अन्न पचता है जिस प्रकार के आहार से जो वस्तु उत्पन्न होती हैं॥ २४०॥

येग्नयोयांश्चपुष्यन्तियावन्तोयेपच

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्तियात् । रसादीनांक्रमोत्पत्तिर्मलानांतेभ्यएवच ॥ २४१ ॥

जो अग्नि जिनको पुष्टकरते हैं जितने अग्नि हैं जो जिनको पचाते हैं रसादि धातुओं की क्रमसे उत्पत्ति रसआदि धातुओं से मलों की उत्पत्ति ॥ २४१ ॥

तृष्णानामाशुकृद्धेतुर्धातुकालोद्भवक्रमः। रोगैकदेशकृद्धेतुरन्तरग्निर्यथाधिकः ॥ २४२ ॥

तृष्णा के शीघ्रकारी होनेका कारण धातुओं के उत्पन्न होने के समयका क्रम रोगों के एकस्थानमें होने का कारण सम्पूर्ण अग्नियों में जठराग्नि जैसे अधिकहै ॥ २४२ ॥

सन्दुष्यतियथादुष्टोयान्रोगान्जनयत्यपि। ग्रहणीयायथावच्चग्रहणीदोषलक्षणम् ॥ २४३ ॥

जिस प्रकार से जठराग्नि दूषित होता है दूषित जठराग्नि जिन रोगों को उत्पन्न करताहै ग्रहणीका लक्षण ग्रहणीदोपका यथावत् लक्षण ॥ २४३ ॥

पूर्वरूपंपृथक्चैवव्यञ्जनंसचिकित्सितम् । चतुर्विधस्यनिर्दिष्टंतथाचावस्थिकीक्रिया ॥ २४४ ॥

ग्रहणीदोषका पूर्वरूप चार प्रकारके ग्रहणीदोष के अलग २ लक्षण तथा चिकित्सा ग्रहणीदोष में जिस अवस्था में जो क्रिया करनी चाहिये ॥ २४४ ॥

जायतेचयथात्यग्निर्यच्चतस्याचिकित्सितम् । उक्तवानिहतत्सर्वंग्रहणीदोषकेमुनिः ॥ २४५ ॥

इति ग्रहणीचिकित्सिते एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

जिस प्रकारसे अत्यग्नि (भस्मकरोग) उत्पन्न होता है और अत्यग्निकी चिकित्सा यह सब विषय इस ग्रहणीरोग चिकित्सित अध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने कहे हैं२४५॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकाग्रहणीरोगचिकित्सितनामउन्नीसवाँअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १९ ॥

बीसवाँ अध्याय ॥

पाण्डुरोगचिकित्सितम् ।

पाण्डुरोगाःस्मृताःपञ्चवातपित्तकफैस्त्रयः । चतुर्थःसन्निपातेनपञ्चमोभक्षणान्मृदः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त पाण्डुरोग चिकित्सितनाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

पाण्डुरोग पाँच प्रकार के होते हैं जैसे एक वातज दूसरा पित्तज तीसरा कफज चौथा सन्निपातज और पाँचवाँ मिट्टी खाने से होताहै ॥ १ ॥

दोषाःपित्तप्रधानास्तुयस्यकुप्यन्तिधातुषु । शैथिल्यंतस्यधातूनांगौरवञ्चोपजायते ॥ २ ॥

जिसकी धातुओं में पित्तप्रधान (पित्तजिनमें मुख्य है ऐसे) दोष कुपित होते हैं उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की धातुओं में शिथिलता तथा भारीपन उत्पन्न होता है ॥ २ ॥

ततोवर्णबलस्नेहायेचान्येऽप्योजसोगुणाः। व्रजन्तिक्षयमत्यर्थंदोषदूष्यप्रदूषणात् ॥ ३ ॥

तदनन्तर दोष (दूषित करनेवाले) तथा दूष्यों (दूषित होने वाले) के दूषित होने से बल वर्ण स्नेह तथा ओजके अन्य गुण अत्यन्त क्षीण होजाते हैं ॥ ३ ॥

सोऽल्परक्तोऽल्पमेदस्कोनिःसारःशिथिलेन्द्रियः । वैवर्ण्यंभजतेतस्यहेतुंशृणुसलक्षणम् ॥ ४ ॥

इससे वह पुरुष स्वल्परुधिरवाला स्वल्प मेदावाला निस्सार तथा शिथिल इन्द्रिय वाला होकर विवर्णता (वर्णका बिगड़जाना) को प्राप्त होताहै अब आगे इस रोग के हेतु तथा लक्षण सुनो ॥ ४ ॥

क्षाराम्ललवणात्युष्णविरुद्धासात्म्यभोजनात् । निष्पावमाषपिण्याकतिलतैलनिषेवणात् ॥५॥

क्षार अम्ल लवण अत्यन्त उष्ण विरुद्ध तथा असात्म्य वस्तु खाने से निष्पाव (अन्न विशेष) उर्द पीना तथा तिलोंके तैलके सेवन से ॥ ५ ॥

विदग्धेऽन्नेदिवास्वप्नाद्व्यायामान्मैथुनात्तथा। प्रतिकर्मर्तुवैषम्याद्वेगानाञ्चविधारणात् ॥ ६ ॥

अन्न के विदग्ध (अधपके) होने पर दिन दूषित होने से व्यायाम करने से तथा मैथुन करने से वमन आदि पंचकर्मों के बिगड़जाने से मलमूत्र आदि वेगोंके रोकने से ॥ ६ ॥

कामचिन्ताभयक्रोधशोकोपहतचेतसः । समुदीर्णंयथापित्तंहृदयेसमवस्थितम् ॥ ७ ॥

और काम चिन्ता भय क्रोध तथा शोक के द्वारा चित्तके व्याकुल होने से उभड़ा हुआ पित्त हृदयमें स्थित होकर ॥ ७ ॥

वायुनाबलिनाक्षिप्तं स्रोतोभिर्दशभिःसृतम् । प्रपन्नंकेवलंदेहंत्वङ्मांसान्तरमाश्रितम् ॥ ८ ॥

तथा बलवान् वायुसे क्षिप्त (फेंका गया) होकर स्रोतोंमें प्राप्त होकर सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर त्वचा तथा मांसके मध्यमें आश्रय करके ॥ ८ ॥

प्रदूष्यकफवातसृक्त्वङ्मांसानिकरोतितत् । वर्णान्हरितहारिद्रान्पाण्डून्बहुविधांस्त्वचि ॥ ९ ॥

और कफ वायु रुधिर त्वचा तथा मांसको दूषित करके त्वचा में हरित पीत तथा पाण्डु आदि अनेक प्रकारके वर्णों को उत्पन्न करता है ॥ ९ ॥

सपाण्डुरोगइत्युक्तः तस्यलिंगंभविष्यतः। हृदयस्पन्दनंरौक्ष्यंस्वेदाभावःश्रमस्तथा ॥ १० ॥

इसी को पाण्डुरोग कहते हैं हृदयका फड़कना रूक्षता स्वेदन निकलना तथा विना परिश्रम किये भी श्रम मालूम होना यह पाण्डु रोगके पूर्वरूप हैं ॥ १० ॥

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्भूतेस्मिन्भवेत्सर्वेः कर्णक्ष्वेडोहतानलः। दुर्बलःसदनोन्निद्रश्रमभ्रमनिपीडितः॥ ११॥

पाण्डु रोगके होने पर कानों में अकारण शब्द सुनाई देना मंदाग्नि दुर्वलता शिथिलता निद्रा का उचटना श्रम भ्रम॥ ११॥

गात्रशूलज्वरश्वासगौरवारुचिमान्नरः। मृदितैरिवगात्रैश्च पीडितोन्मथितैरिव॥ १२॥

अङ्गों में शूल ज्वर श्वास शरीर का भारीपन अरुचि सम्पूर्ण अङ्ग मले हुये दबाये हुये तथा रगड़ेहुये से होना॥ १२॥

शूनाक्षिकूटोहरितःशीर्णलोमाहतप्रभः। कोपनःशिशिरद्वेषीनिद्रालुःष्ठीवनोऽल्पवाक्॥ १३॥

आंखों के पोटों में शोथ होना हरावर्ण रोमों का गिरना प्रभाका नाश क्रोध की अधिकता शीत से द्वेष निद्राकी अधिकता वहुत थूंकना कम बोलना॥ १३॥

पिण्डिकोद्वेष्टकट्यूरुपादरुक्सदनानिच। भवन्त्यारोहणायासैर्विशेषश्चात्रवक्ष्यते॥ १४॥

और ऊंचे स्थानपर चढ़ने से तथा श्रमकरने से पिण्डुलियों में ऐंठन कमर जांघ तथा पैरोंमें पीड़ा और शिथिलता यह लक्षण होते हैं अब पांचों पाण्डु रोगों में जो विशेषता है वह कहीजाती है॥ १४॥

आहारैरुपचारैश्च वातलैःकुपितोऽनिलः। जनयेत्कृष्णपाण्डुत्वंतथारूक्षारुणांगताम्॥ १५॥

वायुवर्द्धक आहार तथा उपचारों से कुपितहुए वायुके द्वारा जो पाण्डु रोग उत्पन्न होता है उसमें कृष्ण पाण्डु तथा अरुणवर्ण अङ्गों का रूक्ष होना॥ १५॥

अङ्गमर्दरुजंतोदं कम्पंपार्श्वशिरोरुजम्। शकृच्छोषास्यवैरस्यशोफानाहवलक्षयान्॥ १६॥

अङ्गमर्द पीड़ा सुई गड़ने की सी पीड़ा कंप पशुली तथा शिर में शूल मलका सूखना मुख की विरसता शोथ अफरा और बलकी क्षीणता यह लक्षण होते हैं॥ १६॥

पित्तलस्याचितंपित्तं यथोक्तैःस्वैःप्रकोपनैः। दूषयित्वातुरक्तादीन्पाण्डुरोगायकल्पते॥ १७॥

पित्तको कुपित करनेवाली वस्तुवोंसे पित्त प्रकृति पुरुष का कुपित हुआ पित्त रुधिर आदि धातुओं को दूषित करके पाण्डुरोगको उत्पन्न करताहै॥ १७॥

सपीतोहरिताभोवाज्वरदाहसमन्वितः। तृष्णामूर्च्छापरीतस्तुपीतमूत्रशकृन्नरः॥ १८॥

पित्तज पाण्डुरोगमें पीत अथवा हरितवर्ण ज्वर दाह तृषा मूर्च्छा मूत्र तथा मलका पीत वर्ण होना॥ १८॥

स्वेदनःशीतकामश्च नचान्नमभिनन्दति। कटुकास्योनचास्योष्णमुपशेतेऽम्लमेववा॥ १९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वेद शीतकी इच्छा अन्नमें अनिच्छा मुख का कटु होना उष्ण तथा खट्टी वस्तुका हित न होना ॥ १९ ॥

उद्गारोऽम्लोविदाहश्च विदग्धेऽन्नेऽस्यजायते । दौर्गंध्यंभिन्नवर्चस्त्वं दौर्बल्यंतमएवच ॥ २० ॥

खट्टी डकार अन्न का अच्छी प्रकारसे न पचना और अन्न के विदग्ध होनेपर दुर्गंधि मल भेद दुर्बलता तथा अन्धकार दिखाई देना यह लक्षण होते हैं ॥ २० ॥

विवृद्धैःश्लेष्मलैःश्लेष्मा पाण्डुरोगंसपूर्ववत् । करोतिगौरवंतन्द्रांछर्दिंश्वेतावभासताम् ॥ २१ ॥

कफकारी वस्तुओं के द्वारा बढ़ाहुआ कफ कुपित होकर रुधिर आदि धातुओं को दूषित करके पाण्डुरोग को उत्पन्न करता है कुपित पाण्डुरोग में शरीर का भारीपन तन्द्रा छर्दि श्वेत वर्ण ॥ २१ ॥

प्रसेकंलोमहर्षञ्च सादंमूर्च्छांभ्रमंक्लिमम् । श्वासकासौतथालस्यमरुचिंवाक्स्वरग्रहम् ॥ २२ ॥

मुख से बहुत लार बहना रोमांच दाह मूर्च्छा भ्रम ग्लानि श्वास खांसी आलस्य अरुचि वाणी का रुकना स्वरभङ्ग ॥ २२ ॥

शुक्लमूत्राक्षिवर्चस्त्वं कटुरूक्षोष्णकामता । श्वयथुर्मधुरास्यत्वमिति पाण्ड्वामयःकफात् ॥ २३ ॥

मूत्र मल तथा नेत्रों का श्वेत होना कड़वी रूखी तथा उष्ण वस्तुवों की इच्छा होना शोथ और मुखका मधुर होना यह लक्षण होते हैं ॥ २३ ॥

सर्वान्नसेविनःसर्वैर्दुष्टादोषास्त्रिदोषजम् । त्रिदोषलिङ्गंकुर्वन्तिपाण्डुरोगंसुदुःसहम् ॥ २४ ॥

सम्पूर्ण दोषों को कुपित करने वाले अन्नों के सेवन से कुपित हुये वात आदि तीनोंदोष दुःसह सन्निपातज पाण्डुरोग को उत्पन्न करते हैं इसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं ॥२४॥

मृत्तिकादनशीलस्य कुप्यत्यन्यतमोमलः । कषायामारुतंपित्तमूषरा मधुराकफम् ॥ २५ ॥

सदैव मृत्तिका खानेवाले पुरुषके वातादि तीनों दोषोंमें से कोई एक दोष कुपित होता है कषैली मट्टी खाने से बायु ऊषरकी मिट्टी खाने से पित्त और मधुर मिट्टी खाने से कफ कुपित होताहै ॥ २५ ॥

कोपयेन्मृद्रसादींश्च रौक्ष्याद्भुक्तंविरूक्षयेत् । पूरयत्यविपक्वैवस्रोतांसि निरुणद्धिच ॥ २६ ॥

मिट्टी रूक्षतासे रस आदि धातुओंको तथा भोजन को रूक्ष करती है परिपाक को विना प्राप्त हुये ही स्रोतों को भरकर बन्द करदेती है ॥ २६ ॥

इन्द्रियाणांबलंतेज ओजोवीर्य्यंनिहत्यच । पाण्डुरोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥ २७ ॥

और इन्द्रियों के बल तेज ओज तथा वीर्य्य को नष्टकरके पाण्डुरोगको शीघ्रही उत्पन्नकर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ती है मृत्तिका खानेसे हुये पाण्डु रोगमें बल वर्ण तथा अग्नि का नाश होताहै ॥ २७ ॥

शूनगण्डाक्षिकूटभ्रू नाभिपादाग्रमेहनः। क्रिमिकोष्ठेतिसार्य्येतमलं सासृक्कफान्वितम् ॥ २८ ॥

कपोल नेत्र भृकुटी नाभि पैर तथा लिङ्गमें शोथ होता है कोष्ठमें क्रिमि उत्पन्न होते हैं और रुधिर तथा कफ सहित पतले दस्त आते हैं ॥ २८ ॥

पाण्डुरोगश्चिरोत्पन्नः खरीभूतोनसिध्यति। कालप्रकर्षाच्छूनोनायश्च पीतानिपश्यति ॥ २९ ॥

बहुत पुराना पाण्डु रोग सम्पूर्ण धातुओं के बहुत रूक्ष होजाने पर असाध्य होजाता है बहुत काल से हुये पाण्डुरोगमें जो सूजन उत्पन्न हो या रोगीको सम्पूर्ण वस्तु पीली दिखाईदें तो उसे असाध्य जानना चाहिये॥२९॥

बद्धाल्पविट्कंसकफं हरितंयोतिसार्य्यते। दीनःश्वेतातिदिग्धाङ्गश्छर्दिमूर्च्छातृषार्दितः ॥ ३० ॥

जिस पाण्डु रोग वाले के हरा कफ सहित बँधाहुआ थोड़ा २ मल निकले वह असाध्य है जो पाण्डुरोगी बहुत दीन स्वेद के द्वारा लिपेहुये से शरीर वाला और छर्दि मूर्च्छा तथा तृषा से व्याकुल हो वह असाध्य होता है ॥ ३० ॥

सनास्त्यसृक्क्षयाद्यश्च पांडुःश्वेतत्वमाप्नुयात्। इतिपंचविधस्योक्तं पाण्डुरोगस्यलक्षणम् ॥ ३१ ॥

और जो पाण्डु रोगी रुधिर के क्षीण होने से श्वेत वर्ण होजाता है वह भी असाध्य होताहै इसप्रकार पाँचों पाण्डु रोगों के लक्षण कहे गये ॥ ३१ ॥

पाण्डुरोगीयुतोऽत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते। तस्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वारोगायकल्पते ॥ ३२ ॥

पित्तकारी वस्तुवों के बहुत सेवन से बहुत बढ़ाहुआ पित्त पाण्डु रोगवाले के रुधिर तथा मांसको दूषित करके कामला रोग को उत्पन्न करताहै पाण्डु (रोग वालेकेही कामला रोग होताहै यह नियम नहींहै किन्तु कामला अपने आपभी होताहै)॥ ३२ ॥

हारिद्रनेत्रसुभृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। रक्तपीतशकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेन्द्रियः ॥ ३३ ॥

कामला रोगमें नेत्र त्वचा नख तथा मुख का हल्दी के समान अत्यन्त पीला होना मल मूत्रका रक्त वर्ण अथवा पीत वर्ण होना बड़े मेंढक के समान सम्पूर्ण शरीर का वर्ण होना इन्द्रियों की शक्तिका नाश ॥ ३३ ॥

दाहाविपाकदौर्बल्य सदनारुचिकर्षितः। कामलाबहुपित्तैषाकोष्ठशाखाश्रयामता ॥ ३४ ॥

दाह भोजनका न पचना दुर्बलता शिथिलता और अरुचि यह लक्षण होते हैं बहुत पित्तवाला यह कामला रोग दोप्रकार का होता है एक कोष्ठाश्रय और दूसरा शाखाश्रय ॥ ३४ ॥

कालान्तरात्खरीभूतात्कृच्छ्रास्यात्कु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्भकामला। कृष्णपीतशकृन्मूत्रो भृशंशूनश्चमानवः ॥ ३५ ॥ संरक्ताक्षिमुखच्छर्दिर्विण्मूत्रोयश्चताम्यति। दाहारुचितृषानाहतन्द्रामोहसमन्वितः ॥ ३६ ॥

बहुत कालका पुराना कामला रोग रुक्ष होकर कुम्भ कामला कहलाता है यह बहुत कष्ट साध्य होता है मल मूत्रका काला पीला अथवा लाल होना नेत्र मुख तथा छर्दि का रक्त वर्ण होना शोथ और मोह इन लक्षणों से युक्त कामला रोग असाध्य होता है दाह अरुचि तृषा अफरा तन्द्रा मोह ॥ ३५। ३६॥

प्रनष्टाग्निर्विसंज्ञश्च निर्यात्याशुसकामली। साध्यानामितरेषान्तुभेषजंसम्प्रवक्ष्यते ॥ ३७ ॥

मंदाग्नि और विसंज्ञता (बेहोशी) इन लक्षणोंसे युक्त कामला रोग वाला असाध्य होता है ऊपर कहे हुये असाध्य पाण्डु रोगों के सिवाय अब सम्पूर्ण पाण्डु रोगोंकी चिकित्सा कहीजाती है ॥ ३७॥

तत्रपाण्ड्वामयीस्निग्धस्तीक्ष्णैरूर्द्ध्वानुलोमिकैः। संशोध्योमृद्वभिस्तिक्तैःकामलीतुविरेचनैः॥३८॥

पाण्डु रोग में पहिले स्नेहन कराके तीक्ष्ण तथा उष्ण ऊद्ध्वानुलोमिक वस्तुवों के द्वारा संशोधन कराके मृदु तथा तिक्त औषधियों के द्वारा विरेचन कराना चाहिये ॥ ३८॥

ताभ्यांसंशुद्धकोष्ठाभ्यां पथ्यान्यन्नानिदापयेत्। शालयोयवगोधूमपुराणायूषसंस्कृताः ॥ ३९ ॥ मुद्गाढकमसूरैश्चजाङ्गलैश्चरसैर्हिताः। यथादोषंविशिष्टश्चतयोर्भैषज्यमाचरेत् ॥ ४० ॥

और वमन तथा विरेचन के द्वारा कोष्ठ के शुद्ध होजानेपर पथ्य अन्न भोजन के निमित्त देने चाहिये मूंग अरहर तथा मसूर के यूष के साथ और जांगल जीवों के मांस के रसके साथ पुराने शालिधान यव तथा गेहूं के बने हुये पदार्थ पाण्डु तथा कामला रोग में हित होतेहैं पाण्डु तथा कामलारोगमें जिसदोष की विशेषता हो उसीके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३९। ४०॥

पञ्चगव्यंमहातिक्तंकल्याणकमथापिवा। स्नेहनार्थंघृतंदद्यात्कामलापाण्डुरोगिणे ॥ ४१ ॥

पाण्डु तथा कामला रोगवाले को पंच गव्यघृत महातिक्त घृत अथवा कल्याणक घृत स्नेहनके लिये देनाचाहिये ॥ ४१ ॥

दाडिमात्कुडवोधान्यात्कुडवार्द्धंपलंपलम्। चित्रकाच्छृङ्गवेराच्चपिप्पल्यष्टमिकातथा ॥ ४२ ॥

अनार १६ तोले धनियाँ ८ तोले चीता तथा सोंठि चार २ तोले और पीपरि २ तोले ॥ ४२ ॥

तैःकल्कैर्विंशतिपलंघृतस्यसलिलाढके। सिद्धंहृत्पाण्डुरोगार्शःप्लीहवातकफार्तिनुत ॥ ४३ ॥ दीपनं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वासकासघ्नंमूढवातेचशस्यते। दुःखप्रसविनीनाञ्चवन्ध्यानाञ्चैवगर्भदम् ॥ ४४ ॥

इति घृतम्।

इन सबके कल्क को अस्सी तोले घी तथा २५६ तोले जलमें मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे इस घृतके सेवनसे हृदय के रोग पाण्डु रोग बवासीर प्लीहा वात कफज रोग श्वास खाँसी तथा मूढ़वात इन रोगोंका नाश होता है अग्नि दीप्त होती है दुःख प्रसविनी (संतान होने में बड़े क्लेश को प्राप्त होनेवाली) स्त्रियों के सुखसे प्रसव होता है और वन्ध्या स्त्रियोंके गर्भ रहताहै ॥४३।४४॥

कटुकारोहिणीमुस्तंहरिद्रेवत्सकात्पलम्। पटोलंचन्दनंमूर्वात्रायमाणादुरालभा ॥ ४५ ॥

कुटकी नागरमोथा हल्दी दारुहल्दी तथा कुरैया की छाल चार २ तोले परवर चन्दन मिरोरफली त्रायमाण यवासा ॥ ४५ ॥

कृष्णापर्पटकोनिम्बोभूनिंबोदेवदारुच। तैःकार्षिकैर्घृतप्रस्थःसिद्धःक्षीरचतुर्गुणः ॥ ४६ ॥

पीपरि पित्तपापड़ा नींब चिरायता तथा देवदारु तोले २ भर इन सबके कल्कके और चौगुणे दूध के साथ ६४ तोले घीका पाक करे जब दूध जलजाय केवल घी बाकी रहजाय तब उतारकर छानलेवे ॥ ४६ ॥

रक्तपित्तंज्वरंदाहंश्वयथुंसभगन्दरम्। अर्शांस्यसृग्दरञ्चैवहन्तिविस्फोटकांस्तथा ॥ ४७ ॥

इति कटुकाद्यंघृतम् ॥

इस घृत के सेवनसे रक्त पित्त ज्वर दाह शोथ भगन्दर बवासीर प्रदर पाण्डु रोग तथा विस्फोटक का नाश होताहै ॥ ४७ ॥

पथ्याशतरसेपथ्यावृन्तार्द्धशतकल्कवान्। प्रस्थःसिद्धोघृतात्पेयःसपाण्ड्वामयगुल्मनुत् ॥ ४८ ॥

इति पथ्याघृतम्।

सौ हड़ों के काढ़े और पचास हड़ोंकी दण्डियों के कल्क के साथ ६४ तोले घीका पाककरे इस घृतके सेवन से पाण्डु रोग तथा गुल्मका नाश होता है ॥ ४८ ॥

दन्त्याश्चतुष्पलरसेपिष्टैर्दन्तीशलाटुभिः। तद्वत्प्रस्थोघृतात्सिद्धःप्लीहपाण्डुर्तिशोफजित् ॥ ४९ ॥

इति दन्तीघृतम्।

दंती (जमालगोटेका वृक्ष) के १६ तोले काढ़े और दंतीके कच्चे फलोंके कल्क के साथ ६४ तोले घीका पाक करे इस घृतके सेवनसे प्लीहा पाण्डु रोग तथा शोथ का नाश होता है ॥ ४९ ॥

पुराणसर्पिषःप्रस्थोद्राक्षार्द्धप्रस्थसाधितः। कामलागुल्मपाण्डुर्तिज्वरमेहोदरापहः ॥ ५० ॥

इति द्राक्षाघृतम्।

३२ तोले दाख के साथ पाक कियागया ६४ तोले पुराना घी कामला गुल्म पाण्डु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोग ज्वर प्रमेह तथा उदर रोग इन सबका नाश होता है ॥ ५० ॥

हरिद्रात्रिफलानिम्बबलामधुकसाधितम् । सक्षीरंमाहिषंसर्पिःकामलाहरमुत्तमम् ॥ ५१ ॥

इति हरिद्रादिघृतम् ।

हल्दी त्रिफला नींव बरियारा तथा मुलेठी के कल्क और दूधके साथ पाक कियागया भैंसका घी कामला रोगका अत्यन्तनाशक होता है ॥ ५१ ॥

गोमूत्रेद्विगुणेदार्व्याःकल्काक्षद्वयसाधितम् । दार्व्याःपञ्चपलक्काथेकल्केकालीयकेपरः ॥ ५२ ॥ माहिषात्सर्पिषःप्रस्थःपूर्वःपूर्वेपरेपरः । स्नेहैरेभिरुपक्रम्यस्निग्धंमत्वाविरेचयेत् । पयसामूत्रयुक्तेनबहुशःकेवलेनवा ॥ ५३ ॥

द्विगुण गोमूत्र तथा दो तोले दारुहल्दी के कल्क के साथ पाक कियागया ६४ तोले भैंसका घी कोष्ठाश्रित कामला में हित होताहै और दारुहल्दी के २० तोले क्काथ तथा पीत चन्दन के कल्क के साथ पाक कियागया भैंसका ६४ तोले घी शाखाश्रित कामला में हित होताहै इन पूर्वोक्त घृतोंसे पाण्डुरोग वाले तथा कामला रोग वाले को स्निग्ध करके और अच्छीप्रकारस्नेहनहुआ है यह जानकर के गोमूत्र युक्त दूध अथवा केवल दूधके द्वारा कईवार विरेचन करावै ॥ ५२ । ५३ ॥

दन्तीफलरसेकोष्णेकाश्मर्य्याञ्जलिनाभृतम् ॥ ५४ ॥ द्राक्षाञ्जलिंमृदित्वावादद्यात्पाण्ड्वामयापहम् । द्विशर्करंत्रिवृच्चूर्णंपलार्द्धंपैत्तिकःपिबेत् ॥ ५५ ॥

जमाल गोटेके कुछ उष्ण काढ़ेमें १६ तोले दाख अथवा खँभारी के फल डालकर विचार पूर्वक पाण्डुरोग वाले को पिलावे पित्तज पाण्डुरोग में २ तोले निशोथ के चूर्ण को द्विगुण शक्करके साथ उष्ण जलमें मिलाकर पीवे ॥ ५४ । ५५ ॥

कफपाण्डुस्तुगोमूत्रक्लिन्नयुक्तांहरीतकीम् । आरग्वधंरसेनेक्षोर्विदार्य्यामलकस्यच ॥ ५६ ॥ सत्र्यूषणंबिल्वपत्रंपिबेन्नाकामलापहम् । दन्त्यर्द्धपलकल्कंवाद्विगुडंशीतवारिणा ॥ ५७ ॥

कफज पाण्डु रोग में गोमूत्र के साथ हड़ पीवे ईख बिलाई कन्द तथा आमलों के रसमें सोंठि पीपरि मिर्च तथा बिल्वपत्र सहित चार तोले अमिलतास मिलाकर पीने से कामला का नाश होता है कामला रोगवाला पुरुष द्विगुण गुड़ सहित २ तोले जमालगोटे का कल्क शीतल जलमें मिलाकरपीवे॥५६।५७॥

कामलीत्रिवृतांवापित्रिफलायारसैःपिबेत् । त्रिशालात्रिफलामुस्तकुष्ठदारुकलिङ्गकान् ॥ ५८ ॥

अथवा त्रिफला के रस में निशोथ का कल्क मिलाकर पीवे इन्द्रायण त्रिफला नागर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोथा कूट देवदारु तथा इन्द्रयव ॥ ५८ ॥

कार्षिकानर्द्धकर्षांशान्कुर्य्यादतिविषांतथा। कर्षौमधुरसायाद्वौसर्वमेतत्सुखाम्बुना ॥ ५९ ॥ मृदितंतंरसंपूतंपीत्वा।लिह्याच्चमध्वनु। कासंश्वासंज्वरंदाहंपाण्डुरोगमरोचकम् ॥ ६० ॥

तोले २ भर अतीस ६ मासे और दाख २ तोले इन सबको उष्ण जलमें भिगोकर मल कर छानके रस निकालकर पीवे और ऊपर से शहद चाटै इससे खांसी श्वास ज्वर दाह पाण्डुरोग अरुचि ॥ ५९। ६० ॥

गुल्मानाहामवातांश्चरक्तपित्तञ्चनाशयेत् । त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिम्बस्यवारसम् ॥ ६१ ॥ शीतंमधुयुतंप्रातःकामलार्त्तःपिबेन्नरः। क्षीरंमूत्रंपिबेत्पक्षं गव्यंमाहिषमेव वा ॥ ६२ ॥

गुल्म अफरा आमवात तथा रक्तपित्तका नाश होताहै कामला रोग वाला पुरुष प्रातःकाल के समय त्रिफला गिलोय दारुहल्दी अथवा नींबके शीतल रसमें शहद मिलाकर पीवे पांडुरोगी पुरुष एक पक्षभर गौ अथवा भैंस का दूध तथा मूत्र पीवे ॥ ६१। ६२ ॥

पाण्डुर्गोमूत्रसिद्धंवासप्ताहंत्रिफलारसम् । तरुजाञ्ज्वलितान्मूत्रेनिर्वाप्यामृद्यचांकुरान् ॥ ६३ ॥ मातुलुङ्गस्यतत्पूतंपाण्डुशोथहरंपिबेत् । स्वर्णक्षीरींत्रिवृच्छ्यामेभद्रदारुसनागरम् ॥ ६४ ॥

अथवा सात दिन गोमूत्रके द्वारा सिद्ध (तय्यार हुआ) त्रिफलाका काढ़ा पीवे बिजौरा निम्बूके अंकुरोंको जलाकर गोमूत्र में बुझावे और मलकर छानलेवे उस मूत्रको पीने से पाण्डुरोग तथा शोथ का नाश होता है चोक काला निशोथ श्वेत निशोथ देवदारु तथा सोंठि ॥ ६३। ६४ ॥

गोमूत्राञ्जलिनापिष्टंमूत्रेवाक्वथितंपिबेत् । क्षीरमेभिःश्रृतंवापिपिबेद्दोषानुलोमनम् ॥ ६५ ॥

इन सब को सोलह तोले गोमूत्रमें पीसकर अथवा गोमूत्रमें इन का काढ़ा करके पीवे अथवा इन्हीं औषधियों के साथ पाक किया गया दूध पीवे इससे वात आदि दोष अपने मार्गके अनुसार होजाते हैं ॥ ६५ ॥

हरीतकींप्रयोगेणगोमूत्रेणाथवापिबेत् । जीर्णेक्षीरेणभुञ्जीतरसेनमधुरेणवा ॥ ६६ ॥

हड़ों का प्रयोग करै अथवा गोमूत्रके साथ हड़ों का पान करे और हड़ोंके पचजाने पर दूध के अथवा मधुर रसके साथ भोजन करै इस से पाण्डुरोग शान्त होताहै ॥ ६६ ॥

सप्तरात्रंगवांमूत्रेभावितंवाप्ययोरजः । पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थंपयसापाययेद्भिषक् ॥ ६७ ॥

पाण्डुरोग को शान्त करने के लिये सात दिन तक गोमूत्र में घोटागया लोहेकाचूर्ण दूध के साथ वैद्य पिलावे ॥ ६७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तंविडङ्गंचित्रकाः समाः । नवायोरजसोभागास्तच्चूर्णंक्षौद्रसर्पिषा ॥ ६८ ॥ भक्षयेत्पाण्डुहृद्रोगकुष्ठार्शःकामलापहम् । नवायसमिदंचूर्णंकृष्णात्रेयेणभाषितम् ॥ ६९ ॥

इति नवायसचूर्णम् ।

सोंठि पीपरि मिर्च त्रिफला नागरमोथा वायविडंग तथा चीता यह सब समभाग और लोहेका चूर्ण ९ भाग इन सब के चूर्ण को एक में मिलाकर शहद तथा घी के साथ चाटने से हृदय के रोग कुष्ठ बवासीर पाण्डुरोग तथा कामला इन सब का नाश होताहै यह कृष्णात्रेयजी का कहाहुआ है और इस का नवायस नाम है ॥ ६८ । ६९ ॥

इति नवायसचूर्ण ॥

गुडनागरमण्डूरतिलांशान्मानतः समान् । पिप्पलीद्विगुणांकुर्याद्गुटिकांपाण्डुरोगिणे ॥ ७० ॥

गुड़ सोंठि मंडूर (लोहेके मैलकाचूर्ण) तथा तिल समभाग और पीपरि २ भाग इन सब को एक में मिलाकर गोली बनाके पाण्डुरोग वालेको खिलावे ॥ ७० ॥

त्रिफलात्र्यूषणंमुस्तंविडङ्गंचव्यचित्रकौ । दार्वीत्वङ्माक्षिकोधातुग्रन्थिकोदेवदारुच ॥ ७१ ॥

त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च नागरमोथा वायविडंग चव्य चीता दारुहल्दी की छाल सोनामकखी पिपरामूल तथा देवदारु ॥ ७१ ॥

एतान्द्विपलिकान्भागांश्चूर्णंकुर्यात्पृथक्पृथक् । मण्डूरंद्विगुणंचूर्णाच्छुद्धमञ्जनसन्निभम् ॥ ७२ ॥ गोमूत्रेऽष्टगुणेपक्त्वातस्मिंस्तत्प्रक्षिपेत्ततः । उदुम्बरसमान्कृत्वावटकांस्तान्यथाग्निना ॥ ७३ ॥ उपयुञ्जीत तक्रेण सात्म्यं जीर्णेचभोजनम् । मण्डूरवटकाह्येतेप्राणदाः पाण्डुरोगिणाम् ॥ ७४ ॥

इन सबका चूर्ण आठ ८ तोले सब चूर्णका दूना शुद्ध अंजनके समान महीन मण्डूर को अठगुणे गोमूत्र में पाककरके त्रिफलाआदि के चूर्ण को छोड़कर तोले २ भरके वड़ेबनावे फिर अग्नि बलके अनुसार यह वड़े मट्ठेके साथ खाय और वड़ों के पचजाने पर पथ्य भोजन करे यह मण्डूर वड़े पाण्डुरोग वालों को प्राणदेने वाले होते हैं ॥ ७२।७३।७४ ॥

कुष्ठान्यजीर्णकं शोथमूरुस्तम्भंकफामयान् । अर्शांसिकामलांमेहं प्लीहानं शमयन्ति च ॥ ७५ ॥

इति मण्डूरवटकाः ।

और कुष्ठ अजीर्ण शोथ ऊरुस्तम्भ कफरोग बवासीर कामला प्रमेह तथा प्लीहा का नाश करते हैं ॥ ७५ ॥

इति मण्डूरवटक ॥

ताप्याद्रिजतुरूप्यायोमलाःपञ्चपलाःपृथक् । चित्रकत्रिफलाव्योषविडङ्गैःपालिकैःसह ॥ ७६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोनामक्खी शिलाजीत रूपेका मैल तथा मण्डूर बीस २ तोले चीता त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च तथा वायविडंग चार२तोले७६॥

शर्कराष्टपलोन्मिश्राश्चूर्णितामधुनाप्लुताः। अभ्यस्यास्त्वक्षमात्राहिजीर्णेनियमिताशिना॥७७॥ कुलत्थकाकमाच्यादिकपोतपरिहारिणा॥ ७८॥

और शक्कर ३२ तोले इन सबका चूर्ण करके शहदमें मिलाकर तोले २ भर रोज खावे और औषधके पचजानेपर पथ्य भोजनकरे और जबतक इस औषधका सेवन करै तबतक कुल्थी काकमाची आदि शाक और कबूतरोंका मांस न खावे॥ ७७। ७८॥

त्रिफलायास्त्रयोभागास्त्रयस्त्रिकटुकस्यच। भागश्चित्रकमूलस्यविडङ्गानांतथैवच। पञ्चाश्मजतुनोभागास्तथारूप्यमलस्यच॥ ७९॥ माक्षिकस्यचशुद्धस्यलोहस्यरजसस्तथा। अष्टौभागाःसितायाश्चतत्सर्वंसूक्ष्मचूर्णितम्॥ ८०॥

हड़ बहेड़ा आमला सोंठि पीपरि मिर्च चीता तथा बायविड़ंग एक २ भाग शिलाजीत चांदीका मैल शुद्ध सोनामक्खी तथा लोहेका चूर्ण पांच २ भाग और शक्कर आठ भाग इन सबका महीन चूर्ण करके॥७९।८०॥

माक्षिकेणाप्लुतंस्थाप्यमायसेभाजनेशुभे। उदुम्बरसमांमात्रांततःखादेद्यथाग्निना॥ ८१॥ दिनेदिने प्रयुञ्जीतजीर्णेभोज्यंयदीप्सितम्। वर्जयित्वाकुलत्थानिकाकमाचीकपोतकम्॥ ८२॥

शहद में घोलकर लोहेके शुद्ध पात्रमें रक्खे फिरअग्निबलका विचार करके गूलर के बराबर यह औषध रोज खावे और औषधके पच जानेपर कुल्थी काकमाची तथा कबूतरों के मांस को छोड़कर यथेच्छ भोजन करे॥ ८१। ८२॥

योगराजइतिख्यातो योगोऽयममृतोपमः। रसायनमिदंश्रेष्ठंसर्वरोगहरंशिवम्॥ ८३॥

इसको योगराज कहते हैं यह अमृतके समान गुणकारी सर्वरोगनाशक श्रेष्ठ रसायन है॥ ८३॥

पाण्डुरोगंविषंकासं यक्ष्माणंविषमज्वरम्। कुष्ठान्यजीर्णकंमेहंशोषंश्वासमरोचकम्। विशेषाद्धन्त्यपस्मारंकामलांगुदजानिच॥ ८४॥

इति योगराजः।

इसके सेवन से पाण्डुरोग विष खांसी राजयक्ष्मा विषमज्वर कुष्ठ अजीर्ण प्रमेह शोष श्वास अरुचि मिर्गी कामला तथा बवासीर का नाश होता है॥ ८४॥

इतियोगराज॥

कोटजत्रिफलानिम्बपटोलघननागरैः। भावितानिदशाहानिरसैर्द्वित्रिगुणानिवा॥ ८५॥

इन्द्रयव त्रिफला नींब परवल नागरमोथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा सोंठि इनके काढ़ेमें दश दिन बीस दिन अथवा तीस दिनतक घोटी गई ॥ ८५ ॥

शिलाजतुपलान्यष्टौतावतींसितशर्कराम् । त्वक्क्षीरीपिप्पलीधात्रीकर्कटाख्यापलोन्मिता ॥ ८६ ॥

शिलाजीत ३२ तोले शक्कर ३२ तोले और वंशलोचन पीपरि आमला तथा काकड़ासिंगी चार चार तोले ॥ ८६ ॥

निदिग्ध्याःफलमूलाभ्यां पलंयुक्त्यात्रिगन्धिकम् । चूर्णितंमधुरं कुर्यात्रिपलेनाक्षिकान्गुडान्॥८७॥ दाडिमाम्बुपयःपक्षिरसतोयसुरासवान् । पिबेत्तुभक्षयित्वातान्निरन्नोभुक्तएववा ॥ ८८ ॥

भटकटैया की जड़ तथा फल दोनों मिलाकर ४ तोले और दालचीनी इलायची तथा तेजपात ४ तोले इन सबका चूर्ण करके १२ तोले शहद में मिलाकर तोले २ भरकी गोली बनावे इन गोलियों को मात्राके अनुसार खाकर भोजन करके अथवा भोजन विना कियेही अनार का रस दूध पक्षियोंके मांस का रस जल सुरा तथा आसवपीवे॥८७॥८८॥

पाण्डुकुष्ठज्वरप्लीहतमकार्शोभगन्दरान् । पूतिहृच्छुक्रमूत्राग्निदोषशोषगरोदरान् ॥ ८९ ॥

इन गोलियों के सेवन से पाण्डुरोग कुष्ठ ज्वर प्लीहा तमक श्वास बवासीर भगंदर दुर्गंधि हृदयके रोग वीर्यदोष मूत्रदोष अग्निदोष शोष गरदोष उदररोग ॥ ८९ ॥

कासासृग्दरपित्तासृक्शोथगुल्मगरामयान् । तेचसर्वव्रणान्हन्युःसर्वरोगहराःशिवाः ॥ ९० ॥

इति शिलाजतुवटिकाः ॥

खांसी प्रदर रक्तपित्त शोथ गुल्म गरदोष तथा सब प्रकारके व्रण इन रोगों का नाश होताहै यह गोली प्रायः सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करनेवाली तथा कल्याण करनेवाली होती हैं ॥ ९० ॥

इति शिलाजतुवटिका ॥

पुनर्नवात्रिवृद्व्योषविडङ्गंदारुचित्रकम् । कुष्ठंहरिद्रेत्रिफलादन्तीचव्यंकलिङ्गकाः ॥ ९१ ॥

गदहपूर्णा निशोथ सोंठि पीपरि मिर्च वायबिड़ंग देवदारु चीता कूट हल्दी दारुहल्दी त्रिफला जमालगोटे की जड़ चव्य इन्द्रयव ॥ ९१ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमुस्तञ्चेतिपलोन्मितम् । मण्डूरंद्विगुणंचूर्णाद्गोमूत्रेद्व्याढकेपचेत् ॥ ९२ ॥

पीपरि पिपरामूल तथा नागरमोथा इन सबका चूर्ण चार २ तोले मण्डूर (लोहे के मल) का चूर्ण सब चूर्णोंका द्विगुण इन सब को एकमें मिलाकर ५१२ तोले गोमूत्र में डालकर पाककरे ॥ ९२ ॥

कोलवद्गुडिकाःकृत्वातक्रेणालोड्यनापिबेत् । ताःपाण्डुरोगान्प्लीहानमर्शांसिविषमज्वरम् । श्वय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थुंग्रहणीदोषंहन्युःकुष्ठंक्रिमींस्त था ॥ ६३ ॥

इति पुनर्नवामण्डूरम् ।

और छः छः मासे भरकी गोली बनाकर मट्ठेमें घोलकर पीवे यह गोलियां पाण्डुरोग प्लीहा ववासीर विषमज्वर शोथ ग्रहणीदोष कुष्ठ तथा क्रिमियोंका नाश करती हैं॥ ९३॥

इति पुनर्नवामण्डूर ॥

दार्वीत्वक्त्रिफलाव्योषंविडङ्गमयसो रजः । मधुसर्पिर्युतंलिह्यात्कामला पाण्डुरोगवान् ॥ ६४ ॥

दारुहल्दी की छाल त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च बायबिड़ंग तथा लोहेका चूर्ण इन सबको महीन पीसकर शहद तथा घीमें मिलाकर चाटने से कामला तथा पाण्डुरोगका नाश होता है ॥ ९४ ॥

तुल्याअयोरजःपथ्याहरिद्राःक्षौद्रस र्पिषा । चूर्णितःकामलीलिह्यादगु डक्षौद्रेणवाभयाः ॥ ९५ ॥

कामलारोगमें लोहेका चूर्ण और हल्दी तथा हड़का चूर्ण शहद तथा घीमें मिलाकर चाटना चाहिये अथवा हड़का चूर्ण गुड़ तथा शहद में मिलाकर चाटना चाहिये॥ ९५ ॥

त्रिफलाद्वेहरिद्रेचकटुरोहिण्ययोर जः । चूर्णितंक्षौद्रसर्पिर्भ्यांसलेहः कामलापहः ॥ ६६ ॥

त्रिफला हल्दी दारुहल्दी कुटकी तथा लोहेका चूर्ण इन सबको महीन पीसकर शहद तथा घीमें मिलाकर चाटने से कामलारोग का नाश होता है ॥ ९६ ॥

द्विपलांशांतुगाक्षीरींनागरंमधुय ष्टिकाम् । प्रास्थिकींपिप्पलींद्राक्षां शर्कराद्धतुलांशुभाम् ॥ ६७ ॥

वंशलोचन सोंठि तथा मुलेठी आठ २ तोले पीपरि तथा दाख चौंसठि २ तोले और शक्कर २०० तोला ॥ ९७ ॥

धात्रीफलरसद्रोणेसुपिष्टंलेहवत्पचे त् । शीतांमधुप्रस्थयुतांलिह्यात्पा णितलंततः । हन्त्येषकामलांपित्तं पाण्डुंकासहलीमकम् ॥ ६८ ॥

इति धात्र्यवलेहः ।

इन सबको अच्छे प्रकार पीसकर आंवलों के १०२४ तोले रसमें डालकर पाककरै जब अवलेह के योग्य पाक तैयार होजाय तब उतार लेवे फिर शीतल होजानेपर उसमें ६४ तोले शहद मिलावे इसमें से एक तोलेभर रोज चाटनेसे कामला पित्त पाण्डुरोग खांसी तथा हलीमक का नाश होताहै ॥ ९८ ॥

इति धात्र्यवलेह ॥

त्र्यूषणंत्रिफलाचव्यंचित्रकोदेवदा रुच । विडङ्गानिसमांशानिचित्रक श्चेतिचूर्णयेत् ॥ ६६ ॥ मण्डूरतुल्यं तच्चूर्णंगोमूत्रेऽष्टगुणेपंचेत् । श नैःसिद्धास्तथाशीताःकार्य्याःकर्ष समागुडाः ॥ १०० ॥ यवाग्निभक्ष णीयास्तेप्लीहपाण्ड्वामयापहाः । प्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इत्यर्शोनुदश्चैवतक्रवाट्याशिनः स्मृताः ॥ १०१ ॥

इति मण्डूरवटिकाः ।

सोंठि पीपरि मिर्च त्रिफला चव्य चीता देवदारु बायविडंग नागरमोथा तथा कुरैया इन सबका चूर्ण और इन सबके चूर्णके समान मण्डूर का चूर्ण अठगुणे गोमूत्र में डाल कर धीरे २ पाककरै जब गोली बनानेके योग्य पाक होजाय तब उतारले और शीतल होजानेपर तोले २ भरकी गोली बना लेवे अग्निके अनुसार इन गोलियों को खावे और मट्ठा तथा यवों के मण्डका पथ्यकरै इससे प्लीहा पाण्डुरोग ग्रहणीदोष तथा बवासीर का नाश होता है ॥ ९९।१००।१०१ ॥

इति मण्डूरवटिका ॥

मञ्जिष्ठारजनीद्राक्षाबलामूलान्ययोरजः । लोधश्चैतेषुगौडःस्यादरिष्टः पाण्डुरोगिणाम् ॥ १०२ ॥

इति गौडोऽरिष्टः ।

मँजीठ हल्दी दाख बरियारा की जड़ लोहेका चूर्ण और लोध इनके साथ बनाया गया गुड़का अरिष्ट पाण्डुरोगवालों को हित होताहै ॥ १०२ ॥

इतिगौडोऽरिष्ट ॥

बीजकात्षोडशपलंत्रिफलायाश्चविंशतिः । द्राक्षायाःपञ्चलाक्षायाःसप्त द्रोणेजलस्यतत् ॥ १०३ ॥ साध्यंपादावशेषेतुपूतशेषेसमावपेत् । शर्करायास्तुलाप्रस्थंमाक्षिकस्यच कार्षिकम् ॥ १०४ ॥ व्योषंत्वग्ब्रनखोशीरंक्रमुकंशैलवालुकम् । मधूकंकुष्ठमित्येतच्चूर्णितंघृतभाजने । यवेषुदशरात्रंतद्ग्रीष्मेद्विःशिशिरेस्थितम् ॥ १०५ ॥

जीरा ६४ तोले त्रिफला ८० तोले मुनक्का २० तोले तथा लाख २८ तोले इन सब को १०२८ तोले जल में डालकर पाककरे जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़े में ४०० तोले शक्कर ६४ तोले शहद और तोले २ भर सोंठि पीपरि मिर्च बघनखी खस सुपारी एलुवा मुलेठी तथा कूटका चूर्ण मिलाकर घृतके पात्रमें भरकर यदि गर्मी होतो दश दिन तक और जो शीतकाल होतो बीसदिन तक यवोंके ढेर में रक्खे ॥ १०३।१०४।१०५ ॥

पिबेत्तद्ग्रहणीपाण्डुरोगार्शशोथगुल्मनुत् । मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामलासन्निपातनुत् । बीजकारिष्टए वैषआत्रेयेणप्रकीर्तितः ॥ १०६ ॥

इति बीजकारिष्टः ।

तदनन्तर इसका सेवन करै इससे ग्रहणीदोष पाण्डुरोग बवासीर शोथ गुल्म मूत्रकृच्छ्र पथरी प्रमेह कामला तथा सन्निपात का नाश होता है आत्रेयजीका कहाहुआ इसका बीजकारिष्ट नाम है ॥ १०६ ॥

इतिबीजकारिष्ट ॥

धात्रीफलसहस्रेद्वेपीडयित्वारसन्तुतम् ॥ क्षौद्राष्टांशेनसंयुक्तंकृष्णार्द्धकुडवेनच ॥ १०७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२००० हजार आँवलों को कूटकर रस निचोड़े फिर इस रसमें अष्टमांश शहद आठतोले पीपरि का चूर्ण ॥ १०७ ॥

शर्कराद्धतुलोन्मिश्रंपक्षंस्निग्धघटे स्थितम् । प्रपिबेन्मात्रयाप्रातर्जीर्णेमितहिताशनः ॥ १०८ ॥

और २०० तोले शक्कर मिलाकर पाक करके चीकने घड़ेमें पंद्रहदिन रक्खे और इस में से मात्राके अनुसार नित्यलेकर प्रातःकाल पीवे और इसके पचजाने पर प्रमाणके अनुसार हित भोजन करै ॥ १०८ ॥

कामलापाण्डुहृद्रोगवातासृग्विषमज्वरान् । कासहिक्कारुचिश्वासां श्चैषोऽरिष्टःप्रणाशयेत् ॥ १०६ ॥

इति धात्र्यरिष्टः ।

इस अरिष्ट के सेवन से कामला पाण्डुरोग हृदय के रोग वातरक्त विषमज्वर खाँसी हिचकी अरुचि तथा श्वास इन सब का नाश होता है ॥ १०९ ॥ इतिधात्र्यरिष्ट ॥

स्थिरादिभिःशृतंतोयंपानाहारेप्रशस्यते । पाण्डूनांकामलार्त्तानांमृद्वीकामलकीरसः ॥ ११० ॥

शालिपर्णीआदिगण के साथ पाक किया गया जल आहारपान में पाण्डुरोगों के लिये हित होता है और मुनक्का तथा आँवलों का रस पाण्डु तथा कामला रोगवालों के लिये आहार पान में हित होता है ॥ ११० ॥

पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थमितिप्रोक्तंमहर्षिणा । विकल्प्यमेतद्भिषजापृथग्दोषबलंप्रति ॥ १११ ॥

भगवान् आत्रेयजीने पाण्डुरोग को शान्त करने के लिये यह सामान्य चिकित्सा कहीहै बुद्धिमान् वैद्य अलग २ दोषों के बलको देख कर इस में घटाव वढ़ाव करै ॥ १११ ॥

वातिकेस्नेहभूयिष्ठंपैत्तिकेतिक्तशीतलम् । श्लेष्मिकेकटुतिक्तोष्णंविमिश्रंसान्निपातिके ॥ ११२ ॥

वातज पाण्डुरोग में अधिक स्नेहयुक्त पित्तज पाण्डुरोग में तिक्त तथा शीतल कफज पाण्डुरोग में कटु तिक्त तथा उष्ण और सन्निपातज पाण्डुरोग में मिलीहुई औषध देनी चाहिये ॥ ११२ ॥

निष्पातयेच्छरीरात्तुमृत्तिकांभक्षितां भिषक् । युक्तिज्ञःशोधनैस्तीक्ष्णैःप्रसमीक्ष्यबलाबलम् ॥ ११३ ॥

बुद्धिमान् वैद्य बलावल का विचार करके युक्तिपूर्वक तीक्ष्ण शोधनों के द्वारा रोगी के शरीरसे खाईहुई मृत्तिकाको निकाले॥११३॥

शुद्धकायस्यसर्पींषिबलाधानानि योजयेत् ॥ ११४ ॥

और शरीर के शुद्ध होजाने पर वलकारक घी पिलावे ॥ ११४ ॥

व्योषंबिल्वंहरिद्रेद्वेत्रिफलाद्वेपुनर्नवे । मुस्तान्ययोरजःपाठाविडङ्गंदेवदारुच । वृश्चिकालीचभार्ङ्गीचसक्षीरैस्तैःसमैर्घृतम् ॥ ११५ ॥

साधयित्वापिबेद्युक्त्यानरोमृद्दोषपीडितः । तद्वत्केसरयष्ट्याह्वपिप्पलीमूलशाद्वलैः ॥ ११६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोंठि पीपरि मिर्च बेल हल्दी दारुहल्दी त्रिफला श्वेत गदहपूर्णा लालगदहपूर्णा नागरमोथा लोहेका चूर्ण पाढ़र बायबिड़ंग देवदारु वृश्चिकाली तथा भारंगी इनके कल्क और दूधके साथ पाक कियागया घी मृत्तिका खाने से हुये पाण्डुरोग में युक्तिपूर्वक पीना चाहिये और इसी प्रकार नागकेसर मुलेठी पिपरामूल तथा बालतृण इन के साथ पाक किया गया घी मट्टी खाने से हुये पाण्डुरोग में हित होता है ॥ ११५ । ११६ ॥

मृद्भक्षणादातुरस्यलोभादविनिवर्त्तिनः । द्वेष्यार्थंभावितांकामंदद्यात्तद्दोषनाशनैः ॥ ११७ ॥

मृत्तिका खाने से हुये पाण्डुरोगवाला यदि मृत्तिका खाने से निवृत्त न होताहो तो मिट्टी छुटाने के लिये उसको इसी रोगको नष्ट करनेवाली औषधियों के काढ़ेमें घोटीगई मिट्टी खाने को देवे ॥ ११७ ॥

विडङ्गैलातिविषयानिम्बपत्रेणपाठया । वार्त्ताकैःकटुरोहिण्याकौटजैर्मूर्वयापिवा ॥ ११८ ॥ यथादोषंप्रकुर्वीतभैषज्यंपाण्डुरोगिणाम् । क्रियाविशेषएषोऽस्य मतोहेंतुविशेषतः ॥ ११९ ॥

बायविड़ंग अतीस नींबकी पत्ती पाढ़र बनभाँटा कुटकी कुरैया अथवा मिरोरफली के काढ़ेमें घोटीगई मृत्तिका मृत्तिकाखाने से हुये पाण्डुरोगवाले को मिट्टीका अभ्यास छुटाने के लिये देनी चाहिये पाण्डुरोग में दोषों के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और यह चिकित्सा की विशेषता हेतुविशेष से कही गई है ॥ ११८ । ११९ ॥

तिलपिष्टनिभंयस्तुवर्चःसृजतिकामली । श्लेष्मणारुद्धमार्गंतत्पित्तंकफहरैर्जयेत् ॥ १२० ॥

जिस कामला रोगवालेको पिसेहुये तिलों के समान दस्त आतेहों उसके पित्तको कफके द्वारा रुकाहुआ जानकर कफघ्न औषधियोंके द्वारा पित्त को निवृत्त करै ॥ १२० ॥

रूक्षशीतगुरुस्वाद्वव्यायामैर्वेगनिग्रहैः । कफसंमूर्च्छितोवायुःस्थानात्पित्तंक्षिपेद्बली ॥ १२१ ॥

वायु शीतल भारी रूक्ष तथा मधुर पदार्थों के सेवन से व्यायामसे और मल मूत्र आदि वेगों के रोकने से कफके साथ मिलकर पित्त को पित्ताशय से निकालकर बाहर फेंकती है ॥ १२१ ॥

हारिद्रनेत्रमूत्रत्वक्श्वेतवर्चास्तदानरः । भवेत्साटोपविष्टम्भोगुरुणाहृदयेनच ॥ १२२ ॥

इस से नेत्र मूत्र तथा त्वचाका हल्दी के समान पीलाहोना मल का श्वेतहोना पेटमें गड़गड़ाहट विष्टम्भ (कब्ज) हृदय का भारी होना ॥ १२२ ॥

दौर्बल्याल्पाग्निपार्श्वार्त्तिहिक्काश्वासारुचिज्वरैः । क्रमेणाल्पेनसज्येतपित्तेशाखासमाश्रिते ॥ १२३ ॥

दुर्बलता मन्दाग्नि पशुलियों में पीड़ा हिचकी श्वास अरुचि तथा ज्वर यह लक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्त के शाखाओं में स्थित होने पर क्रम से होते हैं ॥ १२३ ॥

बर्हितित्तिरिदक्षाणांरूक्षाम्लैःकटुकैरसैः । शुष्कमूलककौलत्थैर्यूषैश्चान्नानिभोजयेत् ॥ १२४ ॥

मोर तित्तिर तथा मुर्गेके मांसके रूखे खट्टे तथा कडुवे रसके साथ और सूखी मूली तथा कुल्थी के यूपके साथ इस रोग में अन्नखाना चाहिये ॥ १२४ ॥

मातुलुङ्गरसंक्षौद्रंपिप्पलीमरिचान्वितम् । सनागरंपिबेत्पित्तंतथास्यैतिस्वमाशयम् ॥ १२५ ॥

बिजौरा निम्बूके रसमें शहद और सोंठि पीपरि तथा मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से पित्त अपने स्थान में चलाजाताहै ॥ १२५ ॥

तृषाम्लैःकटुरूक्षोष्णैर्लवणैश्चाप्युपक्रमः । आपित्तरोगाचकुतोवायोश्चाप्रशमाद्भवेत् ॥ १२६ ॥

वायु के शान्त न होनेपर और मलमें पित्त का वर्ण न होनेपर बहुत खट्टी कडुवी रूखी उष्ण तथा नमकीन वस्तुओं के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १२६ ॥

स्वस्थानमागतेपित्तेपुरीषेपित्तरञ्जिते । निवृत्तोपद्रवस्यास्यपूर्वःकामलिकोविधिः ॥ १२७ ॥

पित्तके अपने स्थानमें प्राप्त होनेसे और मलमें पित्तका वर्ण होनेसे उपद्रव निवृत्त हुये जानकर कामला में कही हुई चिकित्सा करै ॥ १२७ ॥

यदातुपाण्डोर्वर्णःस्याद्धरितश्यावपीतकः । बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्वरः ॥ १२८ ॥

जब पाण्डु रोग वालेका वर्ण हरा कपिश तथा पीला हो बल तथा उत्साह क्षीणहो तन्द्रा मन्दाग्नि मंदज्वर ॥ १२८ ॥

स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्चश्वासस्तृष्णारुचिर्भ्रमः । हलीमकंतदातस्यविद्यादनिलपित्ततः ॥ १२९ ॥

मैथुनमें अनिच्छा अङ्गमर्द श्वास तृषा अरुचि तथा भ्रमहो तब वायु तथा पित्तके द्वारा हलीमक रोगहुआ जानना चाहिये ॥ १२९ ॥

गुडूचीस्वरसक्षीरसाधितंमाहिषंघृतम् । सपिबेत्त्रिवृतांस्निग्धरसेनामलकस्यतु ॥ १३० ॥

गिलोयके रस तथा दूधके साथ पाक किये गये भैंसके घीको पीकर स्नेहन होजाने पर आमलेके रसमें निशोथ का चूर्ण मिलाकर इस रोगमें पीवे ॥ १३० ॥

विरिक्तोमधुरप्रायंभजेत्पित्तानिलापहम् । द्राक्षालेहंचपूर्वोक्तंसर्पींषिमधुराणिच ॥ १३१ ॥ यापनान्क्षीरवस्तिंश्चशीलयेत्सानुवासनान् । मार्द्वीकारिष्टयोगांश्चपिबेद्युक्त्याग्निवृद्धये ॥ १३२ ॥

और विरेचन होजानेपर मधुर वस्तुओंका सेवन करे इससे वायु तथा पित्तकी शान्ति होती है हलीमकरोग में पूर्वोक्त द्राक्षावलेह मधुर घृत और माणरक्षक दूधकी वस्ति तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुवासनवस्ति का सेवन करना चाहिये और अग्नि की वृद्धिके लिये मुनक्का के अरिष्ट आदि योगों का सेवन करना चाहिये ॥ १३१ । १३२ ॥

कासिकश्चाभयालेहंपिप्पलींमधुकंबलाम् । पयसाचप्रयुञ्जीतयथादोषंयथाबलम् ॥ १३३ ॥

और दोष तथा बलके अनुसार खाँसीकी चिकित्सा में कहे हुये अभयावलेह का सेवन अथवा दूध के साथ पीपरि मुलेठी तथा वरियारा का सेवन करना चाहिये ॥ १३३ ॥

तत्रश्लोकौ ।

पाण्डोःपञ्चविधस्योक्तंहेतुलक्षणभेषजम् । कामलाद्विविधाचैवसाध्यासाध्यत्वमेवच ॥ १३४ ॥ तेषांविकल्पोयश्चान्योमहाव्याधिर्हलीमकः । तस्यचोक्तंसमासेनव्यञ्जनंसचिकित्सितम् ॥ १३५ ॥

इति चिकित्सितस्थानेपाण्डुरोगचिकित्सितः विंशोध्यायः ॥ २० ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं । इस पाण्डुरोगचिकित्सित नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने पाँचों प्रकार के पाण्डु रोगों के हेतु लक्षण तथा यत्न दो प्रकार की कामला पाण्डु रोग तथा कामला की साध्यता तथा असाध्यता पाण्डुरोग तथा कामलारोगके विकल्प और संक्षेपपूर्वक लक्षण तथा चिकित्सासहित महारोग हलीमक यह सब विषय कहा है ॥ १३४ । १३५ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमें चिकित्सास्थानकापाण्डुरोगचिकित्सितनामबीसवाँ अध्यायसमाप्तहुआ ॥ २० ॥

इक्कीसवाँअध्याय ॥

हिक्काश्वासचिकित्सितम् ।

वेदलोकार्थतत्त्वज्ञमात्रेयमृषिमुत्तमम् । अपृच्छत्संशयंधीमानग्निवेशःकृताञ्जलिः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त हिक्काश्वासचिकित्सित नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ वैदिक तथा लौकिक तत्त्व के जाननेवाले महर्षि आत्रेयजी से बुद्धिमान् अग्निवेश ने हाथ जोड़कर कहा कि ॥ १ ॥

यइमेद्विविधाःप्रोक्तास्त्रिदोषास्त्रिप्रकोपणाः । रोगानानात्मकास्तेषांकस्कोभवतिदुर्जयः ॥ २ ॥

हे भगवन् आपने अलग २ दोषों के कोप से होनेवाले तथा तीनों दोषों के कोपसे होनेवाले दो प्रकार के अनेक रोग कहे हैं उनमें से कौन २ रोग बहुत दुस्साध्य होता है ॥ २ ॥

अग्निवेशस्यतद्वाक्यंश्रुत्वामतिमतांवरः । उवाचपरमप्रीतःपरमार्थविनिश्चयम् ॥ ३ ॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ परमार्थ के जाननेवाले भगवान् आत्रयजीने प्रसन्नहोकर कहा कि ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कामंप्राणहरारोगाबहवोनतुतेतथा। यथाश्वासश्चहिक्काचप्राणानाशुनिकृन्ततः ॥ ४ ॥

यद्यपि प्राणों को नष्टकरनेवाले बहुत से रोग हैं तथापि जैसे हिचकी और श्वास यह दोनों रोग प्राणों को शीघ्रही नष्ट करते हैं वैसे वह रोग नहीं नष्ट करते हैं ॥ ४ ॥

अन्यैरप्युपसृष्टस्यरोगैर्जन्तोःपृथग्विधैः । अन्तेसञ्जायतेहिक्काश्वासोवातीव्रवेदनः ॥ ५ ॥

अनेक प्रकार के रोगों मेंसे किसी रोग से भी युक्त पुरुषके अन्तसमय में अत्यन्त कष्टदायक हिचकी अथवा श्वास उत्पन्न होती है ॥ ५ ॥

कफवातात्मकावेतौपित्तस्थानसमुद्भवौ। हृदयस्यरसादीनांधातूनाञ्चोपशोषणौ ॥ ६ ॥

यह दोनों रोग वात कफज होते हैं पित्त के स्थानसे उत्पन्न होतेहैं और हृदय तथा रसादि धातुवोंको सुखाते हैं ॥ ६ ॥

तस्मात्साधारणावेतौमतौसम्मसुदुर्जयौ । मिथ्योपचरितौक्रुद्धौहतावाशीविषाविव ॥ ७ ॥

इससे यह दोनों रोग हमारे मतसे स्वाभाविक दुस्साध्य होते हैं उपचार के बिगड़जाने से यह दोनों रोग दण्डेसे मारे गये सर्पके समान कुपित होते हैं ॥ ७ ॥

पृथक्पञ्चविधावेतौनिर्दिष्टौरोगसंग्रहे । तयोःशृणुसमुत्थानंलिङ्गञ्चसभिषग्जितम् ॥ ८ ॥

यह दोनों रोग रोगसंग्रह में पाँच २ प्रकार के कहे गये हैं अब इन रोगों के निदान लक्षण तथा यत्न कहेजाते हैं वह सुनो ॥ ८ ॥

रजसाधूमवाताभ्यांशीतस्थानाम्बुसेवनात्। व्यायामातिव्यवायाध्वरूक्षान्नविषमाशनात् ॥ ९ ॥

धूलि धूम वायु शीतलस्थान तथा शीतल जल का सेवन व्यायाम बहुत मैथुन बहुत चलना रूखा अन्नखाना विषमाशन ॥ ९ ॥

आमप्रदोषादानाहाद्रौक्ष्यादत्यपतर्पणात । दौर्बल्यान्मर्मणोघाताद्द्वन्द्वाच्छुद्ध्यतियोगतः ॥ १० ॥

आम दोष अफरा रूक्षता बहुत लंघन दुर्बलता मर्म में चोट लगना वमन विरेचन आदि संशोधन की अधिकता ॥ १० ॥

अतीसारज्वरच्छर्दिप्रतिश्यायक्षतक्षयात् । रक्तपित्तादुदावर्त्ताद्विषूच्यलसकादपि ॥ ११ ॥

अतीसार ज्वर छर्दि प्रतिश्याय (जुकाम) क्षयक्षत रक्तपित्त उदावर्त्त विषूचिका अलसक ॥ ११ ॥

पाण्डुरोगाद्विषाच्चैवप्रवर्त्तेतेगदाविमौ। निष्पावमाषपिण्याकतिलतैलनिषेवणात् ॥ १२ ॥

पाण्डुरोग तथा विष इन कारणों से हिचकी तथा श्वास यह दोनों रोग उत्पन्न होते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं निष्पाव (अन्नविशेष) उर्द पीना तिलों का तैल ॥ १२ ॥

पिष्टशालूकविष्टम्भिविदाहिगुरुभोजनात् । जलजानूपपिशितदध्यामक्षीरसेवनात् ॥ १३ ॥

पिट्ठी कमल की जड़ विष्टम्भी विदाही तथा भारी वस्तु इनके सेवनसे जलके जीवोंका तथा अनूपदेश के जीवों का मांस खाने से दही तथा कच्चे दूध के सेवनसे ॥ १३ ॥

अभिष्यन्द्युपचाराच्चश्लेष्मलानाञ्च सेवनात् । कण्ठोरसोःप्रतीघाताद्विबन्धैश्चपृथग्विधैः ॥ १४ ॥

अभिष्यन्दी तथा कफकारी वस्तुवों के सेवनसे कण्ठ तथा वक्षस्थल में चोट लगने से और अनेक प्रकारके विवन्धों से ॥ १४ ॥

मारुतःप्राणवाहीनिस्रोतांस्याविश्यकुप्यति । उरःस्थःकफमुद्धूय हिक्काश्वासान्करोतिसः ॥ घोरान्प्राणोपरोधायप्राणिनांपञ्चपञ्च च ॥ १५ ॥

वायु प्राणके स्रोतों में प्रवेश करके कुपित होता है और हृदयमें स्थित कफको उभाड़ कर प्राणों को व्याकुल करने के लिये पांच२ प्रकारकी भयंकर हि की तथा श्वासको उत्पन्न करता है ॥ १५ ॥

उभयोःपूर्वरूपाणिशृणुवक्ष्याम्यतःपरम् । कण्ठोरसोर्गुरुत्वञ्चवदनस्य कषायता ॥ १६ ॥

इसके उपरान्त इन दोनों रोगोंके पूर्वरूप कहताहूं उसे सुनो कण्ठ तथा हृदय का भारीपन मुखका कषैला होना ॥ १६ ॥

हिक्कानांपूर्वरूपाणिकुक्षेराटोपएव च । आनाहः पार्श्वशूलञ्च पीडनं हृदयस्यच ॥ १७ ॥

तथा कुक्षिमें गड़गड़ाहट होना यह हिचकी के पूर्वरूप हैं और अफरा पशुलियों में शूल हृदयमें पीड़ा ॥ १७ ॥

प्राणस्यचविलोमत्वंश्वासानांपूर्वलक्षणम् । प्राणोदकान्नवाहीनिस्रोतांसिसकफोनिलः ॥ १८ ॥

तथा प्राणवायु का उल्टा होना यह श्वास के पूर्वरूप हैं कफ सहित वायु प्राण जल तथा अन्नके स्रोतोंको ॥ १८ ॥

हिक्काःकरोतिसंरुध्यतासांलिङ्गंपृथक्शृणु । क्षीणमांसबलप्राणतेजसःसकफोऽनिलः ॥ १९ ॥

रोंक कर हिचकियों को उत्पन्न करता है अब हिचकियों के लक्षण अलग २ सुनो क्षीण हुये मांस बल प्राण तथा तेजवाले पुरुष का कफ सहित वायु ॥ १९ ॥

गृहीत्वासहसाकण्ठमुच्चैर्घोषवतीभृशम् । करोतिसततंहिक्कामेकद्वित्रिगुणांतथा ॥ २० ॥

एकाएकी कण्ठमें आकर बहुत शब्द युक्त हिचकीको उत्पन्न करताहै यह हिचकी एक२ बार दो२ बार तथा तीन२ बार आतीहै॥२०॥

प्राणःस्रोतांसिमर्माणिसंरुध्योष्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एमेवच । संज्ञांमुष्णातिगात्रेचस्त म्भंसञ्जनयत्यपि ॥ २१ ॥

इन हिचकियोंके होने पर प्राण वायु स्रोतों को मर्मों को तथा ऊष्माको रोंककर संज्ञाको नष्ट करके देहमें स्तम्भको उत्पन्न करताहै २१

मार्गंश्चैवान्नपानानांरुणद्ध्यपहृत स्मृतेः । साश्रुविप्लुतनेत्रस्यस्तब्ध शंखच्युतभ्रुवः ॥ २२ ॥

और संज्ञारहित पुरुषके अन्न पानको ले चलने वाले स्रोतोंको रोकता है रोगी के नेत्र व्याकुल तथा अश्रुयुक्त होते हैं मत्थेकी हड्डी जकड़ती जाती हैं भृकुटी लटक पड़ती हैं२२॥

सक्तजल्पप्रलापस्यनिर्वृतिंनाधिग च्छतः । महातेजामहावेगामहाश ब्दामहाबला। महाहिक्केतिसानृणां सद्यःप्राणहरामता ॥ २३ ॥

इति महाहिक्का ।

बोलने की तथा बकने की शक्ति नहीं होती किसी प्रकारसे सुख नहीं मिलता यह हिचकी बहुत तेजवाली बहुत वेगवाली बहुत शब्द युक्त तथा बहुत बलवती होती है इस को महाहिक्का कहतेहैं यह शीघ्रही मनुष्यों के प्राणों को हरती है ॥ २३ ॥

इति महाहिक्का ॥

हिक्कतेयःप्रवृद्धस्तुकृशोदीनमनान रः । जर्जरेणोरसाकृच्छ्रंगम्भीरमनु नादयन् ॥ २४ ॥

जिस कृश तथा दीन पुरुष को गम्भीर शब्दयुक्त जर्जर हृदय से कष्टपूर्वक बहुत वेग युक्त हिचकी आती हैं ॥ २४ ॥

संजृम्भन्संक्षिपंश्चैवतथाङ्गानिप्रसार यन् । पार्श्वेचोभेसमायम्यकूजन्स्त म्भरुगर्दितः ॥ २५ ॥

जँभाई आती हैं जो अङ्गों को पटकता है तथा फैलाता है दोनों पशुलियों को फैलाकर कीकता है तथा स्तम्भ से पीड़ित होता है ॥ २५ ॥

नाभेःपक्वाशयाद्वापिहिक्काचास्योप जायते । क्षोभयन्तीभृशंदेहंनामय न्तीवताम्यतः ॥ २६ ॥

जिसकों नाभि अथवा पक्वाशय से हिचकी आतीहै सम्पूर्ण शरीरको झुकाती है विकल ता उत्पन्न करती है ॥ २६ ॥

रुणद्ध्युच्छ्वासमार्गन्तुप्रनष्टबलचेत सः । गम्भीरनामासातस्यहिक्काप्रा णान्तिकीमता ॥ २७ ॥

इति गम्भीराहिक्का ।

और नष्ट हुये बल तथा चेतना वाले पुरुष के श्वास मार्ग को रोंकती है उसकी हिचकी को गम्भीरा कहते हैं यह प्राणोंको नष्ट करदेती है ॥ २७ ॥

इति गम्भीराहिक्का ॥

व्यपेताजायतेहिक्कायान्नपानेचतुर्वि धे । आहारपरिणामान्तेभूयश्चलभ तेबलम् ॥ २८ ॥

जो हिचकी चार प्रकारके अन्न पान के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नष्ट होने से उत्पन्न होती है भोजनके पचजाने पर जो बहुत बढ़ती है ॥ २८ ॥

प्रलापवम्यतीसारतृष्णार्त्तस्यविचेतसः। सजृम्भस्यप्लुताक्षस्यशुष्कास्यस्यविनामिनः ॥ २६ ॥

जिसमें मलाप वमन अतीसार तृषा वेहोशी जँभाई नेत्रोंका बिगड़ना मुख का सूखना विनाम (बातज रोग विशेष) ॥ २९ ॥

पर्य्याध्मातस्यहिक्कायाजत्रुमूलादसन्तता । साव्यपेतेतिविज्ञेयाहिक्काप्राणोपरोधनी ॥ ३० ॥

इति व्यपेतावायमिकाहिक्का।

तथा अफरा यह लक्षण होते हैं और जो हिचकी हसुवेके मूल से निरन्तर नहीं उत्पन्न होती है उसको व्यपेता कहते हैं वह प्राणोंको नष्ट करती है ॥ ३० ॥

इति व्यपेताहिक्का ॥

क्षुद्रवातोयदाकोष्ठाद्व्यायामपरिघट्टितः। कण्ठेप्रपद्यतेहिक्कांतदाक्षुद्रांकरोतिसः ॥ ३१ ॥

जब क्षुद्र वायु व्यायाम के द्वारा कोष्ठ में विघट्टित होकर (टक्कर खाकर) कण्ठ में प्राप्त होता है तब क्षुद्रानाम हिचकीको उत्पन्न करती है ॥ ३१ ॥

अतिदुःखानसाचोरःशिरोमर्मप्रबोधिनी । नचोच्छ्वासान्नपानानांमार्गमावृत्यतिष्ठति ॥ ३२ ॥

क्षुद्रा हिचकी बहुत दुःखदायी नहीं होती है वक्षस्थल शिर तथा मर्मों में पीड़ा नहीं उत्पन्न करती है श्वास तथा अन्नपानके स्रोतोंको नहीं रोकती है ॥ ३२ ॥

वृद्धिमायस्यतोयातिभुक्तमात्रेचमार्दवम्। यतःप्रवर्त्ततेपूर्वंततएवनिवर्त्तते ॥ ३३ ॥

श्रम करनेसे बढ़ती है भोजन करनेसे कम होजाती है जिससे उत्पन्न होती है उसी से शान्त होती है ॥ ३३ ॥

हृदयंक्लोमकण्ठञ्चतालुकञ्चसमाश्रिता। मृद्वीसाक्षुद्रहिक्केतिनृणांसाध्याप्रकीर्त्तिता ॥ ३४ ॥

इति क्षुद्रहिक्का।

और हृदय क्लोम (तृषास्थान) कण्ठ तथा तालु का आश्रय करती है इसको मृद्वी तथा क्षुद्रहिक्का कहते हैं यह साध्य होतीहै ३४॥

इति क्षुद्रहिक्का ॥

सहसात्यभ्यवहृतैःपानान्नैःपीडितोनिलः। ऊर्ध्वंप्रपद्यतेकोष्ठान्मद्यैर्वातिमदप्रदैः ॥ ३५ ॥

एकाएकी बहुत खायेगये अन्नपान से अथवा बहुत मदकारी मद्यों से पीड़ित वायुकोष्ठ से ऊपर को जाताहै ॥ ३५ ॥

तथातिरोषभाष्याध्वभारातिपरिवर्त्तनैः। वायुःकोष्ठगतोधावन्पानभोज्यप्रपीडितः ॥ ३६ ॥ उरःस्रोतःसमाविश्यकुर्य्याद्धिक्कांततोऽन्नजाम् । तथाशनैरसम्बन्धंक्षुवंश्चापिसहिक्कते ॥ ३७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा बहुत क्रोध करने से बहुत बोलने से बहुत चलने से बहुत बोझा उठाने से तथा बहुत लौटने पौटने से तथा दौड़ते हुये अन्नपानकरनेसे पीड़ितहुआ वायु कोष्ठसे वक्षस्थल के स्रोत में जाकर अन्नजानाम हिचकी को उत्पन्न करता है यह हिचकी धीरे धीरे छींकें आकर उत्पन्न होती है॥ ३६। ३७॥

नमर्मबाधाजननीनेन्द्रियाणांप्रबोधिनी। हिक्कापीतेतथाभुक्तेशमंयातिचसान्नजा॥ ३८॥

इति अन्नजाहिक्का।

मर्मों तथा इन्द्रियोंमें पीड़ाको नहीं उत्पन्न करती है और कुछ खाने पीने से शान्त होजाती है॥ ३८॥

इति अन्नजाहिक्का॥

अतिसञ्चितदोषस्यभक्तच्छेदकृशस्यच। व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः॥ ३९॥

बहुत संचित दोषवाले भोजन न करने से कृश शरीर वाले रोगों से क्षीण शरीर वाले वृद्ध और बहुत मैथुन करनेवाले॥ ३९॥

आसांयासासमुत्पन्नाहिक्काहन्त्याशुजीवितम्। यमिकाचप्रलापार्तितृष्णामोहसमन्वितः॥ ४०॥

ऐसे पुरुषके जो हिचकी उत्पन्न होती है वह शीघ्रही प्राणों को नष्ट करती है प्रलाप (बकना) पीड़ा तृषा तथा मोहयुक्त यमिका (दो दो बार आनेवाली) हिचकी शीघ्रही प्राणों को नष्ट करती है॥ ४०॥

अक्षीणश्चाप्यदीनश्चस्थिरधात्विन्द्रियश्चयः। तस्यसाधयितुंशक्यायमिकाहन्त्यतोन्यथा॥ ४१॥

जो पुरुष क्षीण तथा दीन नहो और जिसकी धातु तथा इन्द्रिय स्थिरहों उसको जो यमिका हिचकी आती है वह साध्य होती है और इसके सिवाय जो अन्य पुरुषको यमिका हिचकी आती है वह असाध्य होतीहै॥४१॥

इति यमिकाहिक्का॥

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतःकफपूर्वकः। विश्वग्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासान्करोतिसः॥ ४२॥

जब कफ सहित वायु स्रोतों को रोंककर और आप भी रुककर अपने मार्गोंके सिवाय सब ओर घूमता है तब श्वास रोगको उत्पन्न करता है॥ ४२॥

उद्धूयमानवातोयःशब्दवद्दुःखितोनरः। उच्चैःश्वसितिसंरुद्धोमत्तर्षभइवानिशम्॥ ४३॥

जो मनुष्य वायु से कम्पायमान तथा संरुद्ध होकर मतवाले बैलके समान निरन्तर शब्द करता हुआ दुःख से ऊपरको श्वास छोड़ता है॥ ४३॥

प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथाविभ्रान्तलोचनः। विकृताक्षाननोबद्धमूत्रवर्चाविशीर्णवाक्॥ ४४॥

तथा जिसका ज्ञान विज्ञान नष्ट होगया हो नेत्र चंचलहों नेत्र तथा मुखमें विकारहो मलमूत्र बंध गयाहो वाणी शिथिलहो॥४४॥

दीनःप्रश्वसितञ्चास्यदूराद्विज्ञायते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भृशम् । महाश्वासोपसृष्टःसक्षिप्र मेवप्रपद्यते ॥ ४५ ॥

इति महाश्वासः ।

दीनतापूर्वक दूरसेही श्वास का लेना मालूम हो इन लक्षणोंसे युक्त पुरुषको महा श्वास हुई जाननी चाहिये महाश्वासवाला शीघ्रही मरजाता है ॥ ४५ ॥

इति महाश्वास ॥

दीर्घंश्वसितियस्तूर्द्ध्वंनचप्रत्याहर त्यधः । श्लेष्मावृतमुखस्रोतःक्रुद्ध गन्धवहार्दितः ॥ ४६ ॥

जो मनुष्य ऊपरको अत्यन्त श्वास छोड़ै नीचेको श्वास न खींच सकै कफके द्वारा मुख तथा स्रोतोंके वन्द होजाने से कुपितहुये वायु के द्वारा पीड़ित होय ॥ ४६ ॥

ऊर्द्ध्वदृष्टिर्विपश्यंश्चविभ्रान्ताक्षइत स्ततः । प्रमुह्यन्वेदनार्त्तश्चशुष्का स्योरतिपीडितः ॥ ४७ ॥

ऊपर दृष्टिवाला तथा भ्रमयुक्त नेत्रवाला होकर इधर उधर देखै मोह पीड़ा बेचैनी तथा मुखके सूखने से पीड़ित होय उसके ऊर्ध्व श्वास हुआ जानना चाहिये ॥ ४७ ॥

ऊर्द्ध्वश्वासेप्रवृत्तेचयश्चाधःश्वासरो धभाक् । मुह्यतस्ताम्यतश्चार्द्ध्वश्वा सस्तस्यैवहन्त्यसून् ॥ ४८ ॥

इति ऊर्द्ध्वश्वासः ।

ऊर्ध्वश्वास के कुपित होनेपर नीचेको ओर श्वास नहीं जाती है मोह तथा ग्लानि युक्त मनुष्य को ऊर्ध्वश्वास मारडालती है ॥ ४८ ॥

इति ऊर्ध्वश्वास ॥

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेन पीडितः । नवाश्वसितिदुःखार्त्तोम र्म्मच्छेदरुगार्दितः ॥ ४९ ॥

जो मनुष्य पीड़ित होकर पूरे बलसे ठहर ठहरकर श्वास लेवे अथवा न लेवे कष्टसे युक्त होय मर्मस्थल में छेदने कीसी पीड़ासे युक्त होय ॥ ४९ ॥

आनाहस्वेदमूर्च्छार्त्तोदह्यमानेनब स्तिना । विप्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वस न्रक्तैकलोचनः ॥ ५० ॥

अफरा स्वेद तथा मूर्च्छासे पीड़ित होय मूत्राशय में दाह से व्याकुल होय अश्रुपूर्ण तथा रक्तवर्ण नेत्रोंसे युक्त होय ॥ ५० ॥

विचेताःपरिशुष्कास्योविवर्णःप्रल पन्नरः । छिन्नश्वासेनसंछिन्नःसशी घ्रंप्रजहात्यसून् ॥ ५१ ॥

इति छिन्नश्वासः ।

उद्विग्न चित्तहोय और मुखका सूखना विवर्णता तथा मलापसे युक्त होय उसको छि न्न श्वास से पीड़ित जानना चाहिये छिन्न श्वासवाला शीघ्रही मरजाता है ॥ ५१ ॥

इति छिन्नश्वास ॥

प्रतिलोमंयदावायुःस्रोतांसिप्रतिप द्यते । ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणं समुदीर्यच ॥ ५२ ॥

जब वायु उल्टी होकर स्रोतों में प्राप्त होवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है और ग्रीवा तथा शिरमें पीड़ा उत्पन्न करके कफ को बढ़ाकर ॥ ५२ ॥

करोतिपीनसंतेन रुद्धोघुर्घुरकं तथा। अतीवतीव्रवेगञ्चश्वासंप्राणप्रपीडकम् ॥ ५३ ॥

पीनस (नासिका से जल बहना) को उत्पन्न करता है तब कफसे रुककर बहुत तीव्र वेगके साथ गलेमें घुर्घुर शब्द और हृदय में पीड़ाकारी श्वासरोग को उत्पन्न करताहै ५३॥

प्रताम्यत्यतिवेगाच्चकासतेसन्निरुध्यते। प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः ॥ ५४ ॥

इससे युक्त होकर मनुष्य अन्धकारमें घुसा हुआसा चेष्टारहित तथा अत्यन्त खांसी से युक्त होताहै वारंवार खांसने से मोह को प्राप्त होताहै ॥ ५४ ॥

श्लेष्मण्यमुच्यमानेच भृशंभवति दुःखितः। तस्यैवचविमोक्षान्तेमुहूर्त्तंलभतेसुखम् ॥ ५५ ॥

कफके न निकलने से बहुत दुःखित होता है कफके निकलजाने से कुछ देर सुख को प्राप्त होताहै ॥ ५५ ॥

अथास्योर्द्ध्वंसतेकण्ठःकृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुम्। नचापिनिद्रांलभते शयानः श्वासपीडितः ॥ ५६ ॥

कण्ठमें पीड़ासे युक्त होताहै बहुत कष्ट से बोलसक्ता है श्वाससे पीड़ित होनेके कारण शयन करनेसे निद्रा को नहीं प्राप्त होताहै ५६

पार्श्वेतस्यावगृह्णातिशयानस्यसमीरणः। आसीनोलभतेसौख्यमुष्णञ्चैवाभिनन्दति ॥ ५७ ॥

सोने से वायुकेद्वारा पशुलियों में पीड़ा से युक्त होताहै बैठने से कुछ सुख पाताहै उष्णताकी इच्छा करता है ॥ ५७ ॥

उच्छ्रिताक्षोललाटेनस्विद्यताभृशमर्तिमान्। विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते ॥ ५८ ॥

नेत्रोंमें सूजन तथा शिरमें पसीने से युक्त होताहै मुखके सूखने से तथा वारंवार श्वास आनेसे पीड़ित होताहै और वारंवार हाथीपर सवारहुये के समान काँपता है ॥ ५८ ॥

मेघाम्बुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चाभिवर्द्धते। सयाप्यस्तमकःश्वासः साध्योवास्यान्नवोत्थितः ॥ ज्वरमूर्च्छापरीतस्य विद्यात्प्रतमकन्तुतम् ॥ ५९ ॥

इति तमकश्वासः।

मेघ जल शीत पुरवाई हवा और कफकारी वस्तुओं से यह रोग बढ़ता है इसको तमकश्वास कहते हैं यह याप्य होता है और नवीन होतो कभी कभी साध्य भी होता है तमकश्वासवाले को जो ज्वर और मूर्च्छा होवे तो प्रतमक श्वास जाननाचाहिये॥५९॥

इति तमक तथा प्रतमक श्वास॥

उदावर्त्तरजोऽजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः ॥ ६० ॥ तमसावर्द्धतेऽत्यर्थंशीतैश्चाशुप्रशाम्यति। मज्जा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तस्तमसीवास्यविद्यात्सन्तमकन्तु तत् ॥ ६१ ॥

इति गतमकसन्तमकश्वासौ ।

उदावर्त रोग नासिकामें धूल जाना अजीर्ण वृद्धावस्था तथा मल आदि वेगोंके रोकने से जो तमकश्वास उत्पन्न होता है उसमें रोगी अपने को सदैव अंधकारमें घुसाहुआसाजानताहै इस तमकश्वास को संतमक कहते हैं यह अंधकार से बहुत बढ़तीहै और शीतल वस्तुओंसे शान्त होती है ॥ ६० । ६१ ॥

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेक्षुद्रवातउदीरयन् । क्षुद्रश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनाङ्गप्रबाधकः ॥ ६२ ॥

रूखी वस्तुओं के सेवनसे और परिश्रम से कोष्ठमें रहनेवाला वायु ऊर्ध्वगामी होकर थोड़े निदान तथा लक्षण वाले क्षुद्रश्वास को उत्पन्न करता है यह क्षुद्रश्वास शरीर में अत्यन्त क्लेशकारीपीड़ानहीं उत्पन्न करताहै॥६२॥

निहन्तिनसगात्राणिनचदुःखीयथेतरे । नचभोजनपानानांनिरुणद्ध्युचितांगतिम् ॥ ६३ ॥

शरीर को हीन नहीं करता है अन्य श्वासोंके समान दुःखदायी नहीं होताहै अन्न पानकी यथोचित गतिको नहीं रोकता ॥ ६३ ॥

नेन्द्रियाणांव्यथांनापिकाञ्चिदुत्पादयेद्रुजम् । ससाध्यउक्तोबलिनःसर्वेचाव्यक्तलक्षणाः ॥ ६४ ॥

और इन्द्रियों में पीड़ा तथा अन्य रोगोंको नहीं उत्पन्न करताहै यह श्वास साध्यहै और बलवान् पुरुषों के महाश्वास आदिक सम्पूर्ण श्वास जो अप्रकट लक्षण वाले होवें तो साध्य हैं ॥ ६४ ॥

इति क्षुद्रश्वास॥

इतिश्वासाःसमुद्दिष्टाहिक्काश्चैवस्वलक्षणैः । एषांप्राणहरावर्ज्याघोरास्तेह्याशुकारिणः ॥ ६५ ॥

इस प्रकार अपने २ लक्षणों के अनुसार हिचकी तथा श्वास कही गई इनमेंसे जो हिचकी तथा श्वास प्राणनाशक कही गई हैं उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह अत्यन्त भयंकर तथा शीघ्रही प्राणनाशक होती हैं ॥ ६५ ॥

भेषजैःसाध्ययाप्यांस्तुक्षिप्रंभिषगुपाचरेत् । उपेक्षितादहेयुर्हिशुष्कंकक्षमिवानलाः ॥ ६६ ॥

जो हिचकी तथा श्वास साध्य और याप्यकही गई हैं उनकी शीघ्रही चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि शीघ्रही चिकित्सा न करने से वह सूखे तृण को अग्नि के समान शरीर को नष्ट करदेती हैं ॥ ६६ ॥

कारणस्थानमूलैक्यादेकमेवचिकित्सितम् । द्वयोरपियथादृष्टमृषिभिस्तन्निबोधत ॥ ६७ ॥

हिचकी तथा श्वास के कारण मूल तथा स्थान एकही हैं इस से महर्षिलोगों ने इनकी चिकित्सा एकही प्रकारकी कही है वह तुम सुनो ॥ ६७ ॥

हिकाश्वासार्दितंस्निग्धैरादौस्वेदै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुपाचरेत् । अक्तंलवणतैलेनना डीप्रस्तरसङ्करैः ॥ ६८ ॥

हिचकी तथा श्वास से पीड़ित पुरुषके शरीरमें पहिले लवणयुक्त तैल मलवाकर नाड़ी मस्तर तथा संकरस्वेद (इन स्वेदों का वर्णन स्वेदाध्याय में किया गया है) देना चाहिये ॥ ६८ ॥

तैरस्यग्रथितःश्लेष्मास्रोतःस्वभिवि लीयते । खानिमार्दवमायान्तिततो वातानुलोमता ॥ ६९ ॥

इन स्वेदों के द्वारा स्रोतोंमें जमाहुआ कफ पिघल जाता है इन्द्रिय कोमल होजाती हैं और इसी से वायु अपने मार्गके अनुसार होजाती है ॥ ६९ ॥

यथाद्रिकुञ्जेष्वर्कांशुतप्तंविष्यन्दतेहि मम् । स्थिरःश्लेष्माशरीरस्थःस्वेदै र्विष्यन्दतेतथा ॥ ७० ॥

जैसे पर्वतोंके कुञ्जों में जमीहुई वर्फ सूर्य्य की किरणों से संतप्त होकर पिघलती है उसी प्रकार शरीरमें स्थित गाढ़ाकफ स्वेदके द्वारा संतप्त होकर पिघलता है ॥ ७० ॥

स्विन्नंज्ञात्वाततस्तूर्णंभोजयेत्स्नि ग्धमोदनम् । मत्स्यानांशूकराणां वारसैर्दध्युत्तरेणवा ॥ ७१ ॥

तदनन्तर अच्छेप्रकारसे स्वेदन हुआजान कर मछली या शूकर के मांसके रसके साथ घृतआदि स्नेहयुक्त भात खिलावे या दही के साथ खिलावे ॥ ७१ ॥

ततःश्लेष्मणिसंरुद्धेवमनंपाययेत्तु तम् । पिप्पलीसैन्धवक्षौद्रैर्युक्तंवाता विरोधियत् ॥ ७२ ॥

फिर कफ के रुकने पर वायु को नहीं कुपित करनेवाली और पीपरि सैंधव लवण तथा शहदयुक्त वमनकारी औषध पिलावे ॥ ७२ ॥

निर्हृतेसुखमाप्नोति सकफेदुष्टविग्रहे। स्रोतःसुचविशुद्धेषुचरत्यनिहतोऽनि लः ॥ ७३ ॥

इससे दूषित कफके निकलजानेपर रोगीको सुख प्राप्त होता है और शुद्ध हुये स्रोतों में वायु स्वच्छन्द होकर विचरण करतीहै॥७३॥

लीनश्चेद्दोषशेषःस्याद्धूपैस्तंनिर्हरे द्बुधः । हरिद्रापत्रमैरण्डमूलंला क्षांमनःशिलाम् ॥ ७४ ॥

जो वमन के उपरान्त भी कुछ दोष बाकी रहजाय तो उसको धूपों के द्वारा निकाले हल्दी तेजपात अरण्ड की जड़ लाख मैनशिल ॥ ७४ ॥

मांसींसदेवदार्वेलांपिष्ट्वावर्त्तिंप्रक ल्पयेत् । तांघृताक्तांपिबेद्धूमंयवैर्वा घृतसंयुतैः ॥ ७५ ॥

जटामांसी देवदारु तथा छोटी इलायची इनको पीसकर बत्ती बनावे और उस बत्ती को घी में डुबोकर उसका धूमपीवे अथवा घी से मिलेहुये यवोंका धूमपीवे ॥ ७५ ॥

मधूच्छिष्टंसर्जरसंघृतंमल्लकसंपुटे । कृत्वाधूमंपिबेच्छृङ्गंबालंवास्नायुवा गवाम् ॥ ७६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोम राल तथा घी अथवा गौके सींग बाल या स्नायु को चिलम में रखकर धूमपान करे ॥ ७६ ॥

श्योणाकवर्द्धमानानांनाडीशुष्कां कुशस्यवा । पद्मकंगुग्गुलंलोध्रंश ल्लकींवाघृताप्लुताम् ॥ ७७ ॥

सरिवन अरण्ड तथा कुश की सूखी जड़ को अथवा पद्माख गुग्गुल लोध तथा शाल को घीमें डुबोकर चिलम में रखके धूमपान करे ॥ ७७ ॥

स्वरक्षीणातिसारासृक्पित्तदाहानु बन्धजान् । मधुरस्निग्धशीताद्यै र्हिकाश्वासानुपाचरेत् ॥ ७८ ॥

स्वरक्षीण अतीसार रक्तपित्त तथा दाहके सम्बन्धसे हुई हिचकी तथा श्वासकी चिकित्सा मधुर स्निग्ध तथा शीतल आदि वस्तुओं केद्वारा करनी चाहिये ॥ ७८ ॥

नस्वेद्याःपित्तदाहार्त्तारक्तस्वेदाति वर्तिनः । क्षीणधातुबलारूक्षाग र्भिण्यश्चापिपित्तलाः ॥ ७९ ॥

पित्त तथा दाहसे पीड़ित रक्तस्वेदातिवर्त्ती क्षीण धातुवाले क्षीणबलवाले तथा रूखे पुरुष गर्भिणी स्त्री और पित्तप्रकृति पुरुष यह सब स्वेदन के योग्य नहीं हैं ॥ ७९ ॥

कोष्णैःकाममुरःकण्ठंस्नेहसेकैः सशर्करैः । उत्कारिकोपनाहैश्च स्वेदयेन्मृदुभिःक्षणम् ॥ ८० ॥

यदि इनको भी स्वेद देना आवश्यकहो तो कुछउष्ण तथा शर्करायुक्त स्नेहोंके परिषेक (सींचना) के द्वारा और कोमल उत्कारिका (भक्ष्यविशेष) तथा उपनाह (पुलटिस) के द्वारा वक्षःस्थल तथा कण्ठ में क्षणभर स्वेदन करै ॥ ८० ॥

तिलोमामाषगोधूमचूर्णैर्वातहरैः सह । स्नेहैश्चोत्कारिकासाम्लैःस क्षीरैर्वाकृताहिता ॥ ८१ ॥

तिल अलसी उर्द तथा गेहूं इनका चूर्ण और कांजी अथवा क्षारसहित वातनाशक स्नेहको मिलाकर कीगई उत्कारिका स्वेदन के लिये बहुत हित होतीहै ॥ ८१ ॥

नवज्वरामदोषेषुरूक्षस्वेदंविलङ्घन म् । समीक्ष्योल्लेखनंवापिकारयेल्ल वणाम्बुना ॥ ८२ ॥

नवीनज्वर तथा आमदोष में रूक्षस्वेद लंघन अथवा विचारपूर्वक नमकीन जलकेद्वारा वमनकराना चाहिये ॥ ८२ ॥

अतियोगोद्धतंवातंदृष्ट्वावातहरैर्भि षक् । रसाद्यैर्नातिशीतोष्णैरभ्यङ्गै श्चशमंनयेत् ॥ ८३ ॥

बुद्धिमान् वैद्य वमन तथा विरेचनकी अधिकतासे कुपितहुई वायुको न बहुत शीत तथा न बहुतउष्ण वातनाशक मांसरस तथा अभ्यंग (तैलआदिमर्दन) के द्वारा शान्त करै ॥ ८३ ॥

उदावर्त्तेतथाध्मानेमातुलुङ्गाम्लवेत सैः । हिंगुपीलुविडैश्चान्नंयुक्तंस्याद नुलोमनम् ॥ ८४ ॥

उदावर्त्त तथा अफरा में अमलवेत हींग बिजौरा निम्बू पीलू तथा बिड़लवण इनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

युक्त अन्नखानेसे वायु अपने मार्गके अनुसार होजाती है॥ ८४ ॥

हिक्काश्वासामयीह्येकोबलवान्दुर्बलोऽपरः। कफाधिकस्तथैवैकोरूक्षबद्धनिलोऽपरः॥ ८५॥

हिचकी तथा श्वासरोगवाले मनुष्य कोई बलवान् होते हैं तथा कोई दुर्बल होते हैं और कोई अधिक कफवाले होते हैं तथा कोई रूक्षताके कारण वायुके विबन्ध से युक्तहोते हैं॥ ८५॥

कफाधिकेबलस्थेचवमनंसविरेचनम्। कुर्य्यात्पथ्याशिनेधूमलेहादिशमनंततः॥ ८६॥

जो रोगी अधिक कफवाला तथा बलवान् हो उसको वमन तथा विरेचनकराके पथ्य भोजन करानाचाहिये और धूम तथा अवलेह आदि संशमन औषधका प्रयोग करना चाहिये॥ ८६॥

वातिकान्दुर्बलान्बालान्वृद्धांश्चानिलसूदनैः। तर्पयेदेवशमनैःस्नेहयूषरसादिभिः॥ ८७॥

जो रोगी अधिक वातवाला दुर्बल बालक तथा वृद्धहोय उसको वातनाशक स्नेह यूष तथा मांसरसआदि संशमन के द्वारा तृप्त करै॥ ८७॥

अनुत्क्लिष्टकफास्विन्नदुर्बलानांविशोधनात्। वायुर्लब्धास्पदोमर्मसंशुष्याशुहरेदसून्॥ ८८॥

जिसका कफ न उभड़ाहो जिसको स्वेदन न करायागयाहो और जोदुर्बलहो उसको वमन विरेचन आदि संशोधन कराने से वायु अवकाशपाकर मर्मोंको सुखाके शीघ्रही प्राणोंको नष्ट करती है॥ ८८॥

दृढान्बहुकफांस्तस्माद्रसैरानूपवारिजैः। तृप्तान्विशोधयेत्स्विन्नान्बृंहयेदितरान्भिषक्॥ ८९॥

इससे बलवान् तथा बहुत कफवाले पुरुष को अनूपदेश के तथा जलके जीवोंके मांसके रसके द्वारा तृप्तकरके संशोधन करावे और अन्य रोगियों को स्वेदन कराके धातुवर्द्धक औषधदेवे॥ ८९॥

बर्हितित्तिरिदक्षाश्चजाङ्गलाश्चमृगद्विजाः। दशमूलीरसेसिद्धाःकौलत्थेवारसेहिताः॥ ९०॥

दशमूल अथवा कुल्थीके काढ़ेमें पाककिया गया मोर तीतर मुर्गा तथा जांगलदेशके पशु पक्षियों का मांस श्वास तथा हिचकी में हित होताहै॥ ९०॥

निदिग्धिकांबिल्वमध्यंकर्कटाख्यांदुरालभाम्। त्रिकण्टकंगुडूचीञ्चकुलत्थांश्चसचित्रकान्॥ ९१॥

भटकटैया बेलगिरी काकड़ासिंगी यवासा गोखुरू गिलोय कुल्थी तथा चीता॥ ९१॥

जलेपक्त्वारसःपूतोपिप्पलीघृतभर्जितः। सनागरःसलवणःस्याद्यूषोभोजनेहितः॥ ९२॥

इनको जलमें पाककरके छानकर रस निकाललेवे फिर उसरस में सोंठि पीपरि तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैंधवलवण मिलाकर उसको घीसे छौंके यह यूष हिचकी तथा श्वास रोगवालों के लिये भोजनमें अत्यन्त हितकारी होताहै ॥ ९२ ॥

रास्नांबलांपञ्चमूलंह्रस्वंमुद्गान्सचित्रकान्। पक्त्वाम्भसिरसेतस्मिन्यूषः साध्यश्चपूर्ववत् ॥ ९३ ॥

रास्ना बरियारा छोटापंचमूल मूंग तथा चीता इनको भी जल में डालकर पाककरके रसनिकालकर पूर्वोक्त रीतिसे यूष बनावे यह यूष हिचकी तथा श्वासमें हितहोताहै ॥९३॥

पल्लवान्मातुलुङ्गस्यनिम्बस्यकुलकस्यच। पक्त्वामुद्गांश्चसव्योषान्क्षारयूषान्विपाचयेत् ॥ ९४ ॥ दत्त्वास लवणंक्षारंशिग्रूणिमरिचानिच। युक्त्यासंसाधितोयूषोहिकाश्वास विकारनुत् ॥ ९५ ॥

बिजौरा निम्बू नींब तथा कुरैयाकी पत्ती और मूंग सोंठि पीपरि तथा मिर्च इनको पानीमें डालकर पाककरके रस निकाले फिर उस रसमें सैंधवलवण यवाखार सहिंजन तथा मिर्च मिलाकर पाक करलेवै यह यूष हिचकी तथा श्वासरोगको नष्टकरताहै९४।९५॥

कासमर्दकपत्राणांयूषःशोभाञ्जनस्यच। शुष्कमूलकयूषश्चहिकाश्वासनिवारणः ॥ ९६ ॥

कसौंदी के अग्रभाग तथा पत्तों का यूष सहिंजनका यूष और सूखीमूलीका यूष हिचकी तथा श्वासरोग को नष्टकरताहै ॥ ९६ ॥

सदधिव्योषसर्पिष्कोयूषोवार्त्ताकजोहितः। शालिषष्टिकगोधूमयवान्नान्यनवानिच ॥ ९७ ॥

दही सोंठि पीपरि मिर्च तथा घृतयुक्त बैंगनका यूष हिचकी तथा श्वास में हितहोताहै पुराने शालिधान पुराने साँठीके चावल पुराने गेहूं तथा पुराने यव भोजन के लिये हिचकी तथा श्वास में हित होतेहैं ॥ ९७ ॥

हिंगुसौवर्च्चलाजाजीबिडपौष्करचित्रकैः। सकर्कटाह्वयैःसिद्धायवागूःश्वासहिक्किनाम् ॥ ९८ ॥

हींग सोंचरनोन जीरा बिड्लवण पुष्करमूल चीता तथा काकड़ासिंगी इनके साथ पाककीगई यवागू हिचकी तथा श्वासरोगवालोंको हित होती हैं ॥ ९८ ॥

दशमूलंशटीरास्नापिप्पलीमूलपौष्करैः। शृङ्गीतामलकीभार्ङ्गीगुडूचीनागराम्बुभिः ॥ ९९ ॥

दशमूल कचूर रास्ना पिपरामूल पुष्करमूल काकड़ासिंगी भूमिआँवला भारंगी गिलोय तथा सोंठि इनके पानीमें ॥ ९९ ॥

यवागूंविधिनासिद्धांकषायंवापिबेन्नरः। कासहृद्ग्रहपार्श्वार्त्तिहिक्काश्वासप्रशान्तये ॥ १०० ॥

पाक कीगई यवागू अथवा इनका काढ़ा पीने से खाँसी हृदय की पीड़ा पशुलियों की पीड़ा हिचकी तथा श्वास का नाश होताहै ॥ १०० ॥

सदधिव्योषसर्पिष्कोयूषोवार्त्ताक

पुष्कराह्वशटीव्योषमातुलुङ्गाम्लवे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तसैः । योजयेदन्नपानानिसर्पिर्विडहिंगुभिः ॥ १०१ ॥

पुष्करमूल कचूर सोंठि पीपरि मिर्च बिजौरानिम्बू अमलवेत घी विड्लवण तथा हींग इन सब को हिक्का तथा श्वासरोग में अन्नपानके साथ सेवनकरना चाहिये॥१०१॥

दशमूलस्यवाक्काथमथवादेवदारुणः । तृषितोमदिरांवापिहिक्काश्वासीपिबेन्नरः ॥ १०२ ॥

हिचकी तथा श्वासरोग वाला यदि तृषा से पीड़ितहो तो दशमूल का काढ़ा देवदारु का काढ़ा अथवा मदिरा पीवे ॥ १०२ ॥

पाठांमधुरसांरास्नांसरलंदेवदारुच । प्रक्षाल्यजर्जरीकृत्यसुरामण्डेनिधापयेत् ॥ १०३ ॥

पाढ़र भिरोरफली रास्ना सरलकाष्ठ तथा देवदारु इन सबको धोकर कूटके मदिरा के ऊपर थिरायेहुये जल में भिगोवे ॥ १०३ ॥

तंमन्दलवणंकृत्वाभिषक्प्रसृतसम्मितम् । पाययेत्ततोहिक्काश्वासश्चैवोपशाम्यति ॥ १०४ ॥

और फिर उसमें कुछ लवण मिलाकर आठ तोलेभर वैद्य पिलावे इससे हिचकी तथा श्वासका नाश होता है ॥ १०४ ॥

हिङ्गुसौवर्चलंकोलंसमङ्गांपिप्पलींबलाम् । मातुलुङ्गरसेपिष्टमारनालेनवापिबेत् ॥ १०५ ॥

हींग सोचरलवण बेर मूंग पीपरि तथा बरियारा इनको बिजौरानिम्बू के रसमें अथवा कांजीमें पीसकर पीवे इससे हिचकी तथा श्वास का नाश होता है ॥ १०५ ॥

सौवर्चलंनागरञ्चभार्ङ्गींद्विशर्करायुतम् । उष्णाम्बुनापिबेदेतद्धिक्काश्वासविकारनुत् ॥ १०६ ॥

सोंचरलवण सोंठि तथा भारंगी इन का चूर्ण एक एक भाग और शक्कर दो भाग इन सबको एकमें मिलाकर उष्णजल के साथ पीने से हिचकी तथा श्वास का नाश होता है ॥ १०६ ॥

भार्ङ्गीनागरयोःकल्कंमरिचक्षारयोस्तथा । पीतद्रुचित्रकास्फोतामूर्वाणांचाम्बुनापिबेत् ॥ १०७ ॥

भारंगी तथा सोंठि के कल्क मिर्च तथा यवाखार के कल्क और सरलकाष्ठ चीता जंगली वेला तथा मिरोरफलों के कल्क को जल में मिलाकर पीने से हिचकी तथा श्वास का नाश होता है ॥ १०७ ॥

मधूलिकातुगाक्षीरीनागरंपिप्पलीतथा । उत्कारिकाघृतेसिद्धाश्वासेपित्तानुबन्धजे ॥ १०८ ॥

यदि श्वासरोग में पित्तका अनुबन्धहो तो मुलहठी वंशलोचन सोंठि पीपरि इनकी उत्कारिका घी में पकाकर खावे ॥ १०८ ॥

श्वाविधःशशमांसञ्चशल्लकस्यचशोणितम् । पिप्पलीघृतसिद्धानिश्वासेवातानुबन्धजे ॥ १०९ ॥

यदि श्वासरोग में वायु का अनुबन्ध (सिलसिला) होतो कुत्ता खरगोश तथा स्याही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का मांस और रुधिर पीपरि इन सबको घीके साथ पाक करके खावे॥ १०९॥

सुवर्चलारसोदुग्धंघृतंत्रिकटुकायुतम् । शाल्योदनस्यानुपानंवातपित्तानुगेहितम् ॥ ११० ॥

जो हिंचकी तथा श्वासरोग में वायु तथा पित्तका अनुबन्धहो तो शालिधानों के चावलों का भातखाकर हुर्हुर के रस दूध तथा घी में सोंठि पीपरि मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीवे॥ ११०॥

शिरीषपुष्पस्वरसःसप्तपर्णस्यवापुनः । पिप्पलीमधुसंयुक्तःकफपित्तानुगेमतः ॥ १११ ॥

जो हिचकी तथा श्वासरोग में कफ तथा पित्तका अनुबन्ध होतो सिरसाके पुष्पोंके रस में अथवा छितवन के रसमें पीपरि का चूर्ण तथा शहद मिलाकर पीवे॥ १११॥

मधुकंपिप्पलीमूलंगुडोगोऽश्वशकृद्रसः । घृतंक्षौद्रंहिक्काकासश्वासाभिष्यन्दिनांशुभम् ॥ ११२ ॥

मुलेठी पिपरामूल गुड़ तथा गौ व घोड़ेकी लीदका रस घी तथा शहद इन सब को एक में मिलाकर चाटने से हिचकी खाँसी श्वास तथा अभिष्यन्द का नाश होता है॥ ११२॥

खराश्वोष्ट्रवराहाणांमेषस्यचगजस्य च । शकृद्रसंबहुकफेचैकैकंमधुना पिबेत् ॥ ११३ ॥

जो हिचकी तथा श्वासरोग में कफकी अधिकता हो तो गधा घोड़ा ऊंट शूकर भेड़ा तथा हाथी इनमें से एक २ की लीद के रस को शहद में मिलाकर पीवे॥ ११३॥

क्षारञ्चाप्यश्वगन्धायालेहयेत्क्षौद्रसर्पिषा । मयूरपादंनालंवाशकलंशल्लकस्यवा ॥ ११४ ॥

और असगंध के क्षारको घी तथा शहद में मिलाकर चाटे अथवा मोरके पैर या नाल या स्याही के किसी अंगका खण्ड॥११४॥

श्वाविज्जाण्डकचाषाणांरोमाणिकुररस्यवा । शृङ्गयेकद्विशफानांवाचर्मास्थीनिक्षुरांस्तथा ॥ ११५ ॥

अथवा स्याहीं जाण्डक नीलकण्ठ तथा कुरैया के रोयें अथवा सींगवाले फटेहुये खुर वाले तथा नहीं फटेखुरवाले पशुओं की त्वचा हड्डी तथा खुर॥ ११५॥

सर्वाण्येकैकशोवापिदग्ध्वाक्षौद्रघृतान्वितान् । चूर्णंलीढ्वाजयेत्कासंहिक्कांश्वासञ्चदारुणम् ॥ ११६ ॥

इन सबको अथवा इनमें से किसी एक को जलाकर चूर्ण करके शहद तथा घी में मिलाकर चाटे इससे दारुण खाँसी हिचकी तथा श्वास का नाश होता है॥ ११६॥

एतेहिकफसंरुद्धगतिप्राणप्रकोपजा । तस्मात्तन्मार्गशुद्ध्यर्थंकासेलेहाननिष्कफे ॥ ११७ ॥

कफसे मार्गके रुकजाने के कारण कुपित हुई प्राणवायु से उत्पन्नहुई खाँसी हिचकी तथा श्वास में वायु के मार्गको शुद्ध करने के लिये इन चूर्णों को चाटना चाहिये और जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन रोगों में कफकी अधिकता न होतो यह चूर्ण चाटना न चाहिये ॥ ११७ ॥

कासिनेच्छर्दनंदद्यात्स्वरभङ्गेचबुद्धिमान् । वातश्लेष्महरैर्युक्तंतमकेतुविरेचनम् ॥ ११८ ॥

श्वासरोगवालेके यदि खाँसी तथा स्वरभंग हुआहो तो बुद्धिमान् वैद्य वातकफघ्न औषधियों के द्वारा वमन करावे और तमकश्वास में वातकफघ्न औषधियों के द्वारा विरेचन करावे ॥ ११८ ॥

उदीर्य्यतेभृशतरंमार्गरोधाद्बृहज्जलम् । यथातथानिलस्तस्यमार्गंनित्यंविशोधयेत् ॥ ११९ ॥

जैसे वहतेहुये जल के मार्गको रोकने से जल बहुत वढ़ताहै उसी प्रकार कफ के द्वारा मार्गके रुकने से वायु बहुत वढ़ती है इस से वायु के मार्ग को सदैव शुद्ध करै ॥ ११९ ॥

शटीचोरकजीवन्तीत्वङ्मुस्तंपुष्कराह्वयम् । सुरसंतामलक्येलापिप्पल्यगुरुनागरम् ॥ १२० ॥

कचूर चोरक जीवन्ती तज नागरमोथा पुष्करमूल सुरस भूमिआँवला छोटी इलायची पीपरि अगरू सोंठि ॥ १२० ॥

बालकञ्चसमंचूर्णंकृत्वाष्टगुणशर्करम् । सर्वथातमकेश्वासेहिक्कायाञ्चप्रयोजयेत् ॥ १२१ ॥

तथा सुगंधबाला इन सबका चूर्ण समभाग और शकर आठ भाग एक में मिलाकर तमकश्वास तथा हिचकी में खावे ॥ १२१ ॥

मुक्ताप्रवालवैडूर्य्यशंखस्फटिकमञ्जनम् । ससारगन्धकाचार्कसूक्ष्मैलालवणद्वयम् ॥ १२२ ॥

मोती मूंगा वैडूर्य्य (मणिविशेष) शंख स्फटिक (बिल्लौर) सुरमा गंध काच मदार छोटी इलायची सैंधवलवण सोंचरलवण ॥ १२२ ॥

ताम्रायोरजसीरूप्यंससौगन्धिककशेरुकम् । जातीफलंशणाद्बीजमपामार्गस्यतण्डुलाः ॥ १२३ ॥

तांवेकी भस्म लोहेकी भस्म चांदी गंधक कसेरू चँवेली सनकेबीज और लटजीरा के चावल ॥ १२३ ॥

एषांपाणितलंचूर्णंतुल्यानांक्षौद्रसर्पिषा । हिक्कांश्वासञ्चकासञ्चलीढमाशुनियच्छति ॥ १२४ ॥

इन सब को महीन पीसकर चूर्णकरै इसमें से तोलेभर लेकर शहद तथा घी में मिलाकर चाटे इससे हिचकी श्वास तथा खाँसीका शीघ्रही नाश होता है ॥ १२४ ॥

अञ्जनात्तिमिरंकाचंनीलिकंपुष्पकंतमः । पैल्यंकण्डुमभिष्यन्दमन्दञ्चतत्प्रणाशयेत् ॥ १२५ ॥

इति मुक्ताद्यंचूर्णम् ।

और इस चूर्ण का सुरमा लगानेसे तिमिर काच नीलिक पुष्पक तम पैल्य खुजुली अभिष्यन्द तथा मन्द इन सम्पूर्ण नेत्र रोगों का नाश होता है ॥ १२५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शटीपुष्करमूलानांचूर्णमामलकस्यच । मधुनासंयुतंलेह्यंचूर्णंवा काललोहजम् ॥ १२६ ॥

कचूर पुष्करमूल तथा आँवलों के चूर्णको अथवा कालेलोहेकी भस्म को शहद के साथ चाटने से हिचकी तथा श्वासका नाश होता है ॥ १२६ ॥

सशर्करांतामलकींद्राक्षांगोऽश्वशकृद्रसम् । तुल्यंगुडंनागरञ्चप्राशयन्नावयेत्तथा ॥ १२७ ॥

भूमिआँवला शक्कर दाख और गौ तथा घोड़े की लीदका रस इनको चाटने से या समभाग सोंठि तथा गुड़ को चाटने से और इनकी नासलेने से श्वास तथा हिचकी का नाश होता है ॥ १२७ ॥

लशुनस्यपलाण्डोर्वामूलंगृञ्जनकस्यवा । नावयेच्चन्दनंवापिनारीक्षीरेणसंयुतम् ॥ १२८ ॥

लहसुन पियाज गाजर अथवा चन्दन को स्त्रीके दूध में पीसकर नस्य लेनेसे हिचकी तथा श्वास का नाश होताहै ॥ १२८ ॥

सुखोष्णंघृतमण्डंवासैन्धवेनावचूर्णितम् । नावयेन्मक्षिकाविष्ठामलक्तकरसेनवा ॥ १२९ ॥

कुछ उष्ण घृतयुक्त मण्डमें सैंधवलवण मिलाकर अथवा महावरके रस में मक्खीकी विष्ठा मिलाकर नस्य लेनेसे हिचकी तथा श्वासका नाशहोताहै ॥ १२९ ॥

स्त्रियाःस्तन्येनासिद्धंवासर्पिर्मधुरकैरपि । पीतंनस्तोनिषिक्तंवासद्योहिक्कांनियच्छति ॥ १३० ॥

स्त्रीके दूधकेसाथ अथवा मधुरगणकी औषधियों के साथ पाक कियेगये घी को पीनेसे या उस घीका नास लेनेसे अथवा सींचने से शीघ्रही हिचकी का नाशहोताहै ॥ १३० ॥

सकृदुष्णंसकृच्छीतंव्यत्यासाद्धिक्किनांपयः । पानेनस्तःक्रियायांवाशर्करामधुसंयुतम् ॥ १३१ ॥

एकवार उष्ण तथा एकबार शीतल दूध में शक्कर तथा शहद डालकर उलटपलटकर पीवे अथवा नासलेवे इससे हिचकी का शीघ्रही नाशहोताहै ॥ १३१ ॥

अधोभागेघृतंसिद्धंसद्योहिक्कांनियच्छति । पिप्पलीमधुयुक्तौवारसौधात्रीकपित्थयोः ॥ १३२ ॥

आंवला तथा कैथेके रसमें पीपरिका चूर्ण आधाघीमें पकाया हुआ और आधा बिना पकायाहुआ शहद में मिलाकर चाटनेसे हिचकी का नाश होताहै ॥ १३२ ॥

लाजालाक्षामधुद्राक्षापिप्पल्यश्वशकृद्रसान् । लिह्यात्कोलंमधुद्राक्षापिप्पलीनागराणिवा ॥ १३३ ॥

खील लाख शहद दाख पीपरि तथा घोड़े की लीदका रस इनको मिलाकर चाटने से अथवा बेर शहद दाख पीपरि तथा सोंठि इनको मिलाकर चाटने से हिचकी का नाश होताहै ॥ १३३ ॥

शीताम्बुसेकःसहसात्रासोविस्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्नंभयम् । क्रोधहर्षप्रियोद्वेगाहि
क्काप्रच्यवनामताः ॥ १३४ ॥

एकाएकी शीतल जल छिड़कने से डाटने से आश्चर्य करानेसे भयसे क्रोधसे हर्षसे प्रिय वस्तु मिलनेसे और घवराहट से हिचकीका नाश होताहै ॥ १३४ ॥

हिक्काश्वासविकाराणांनिदानंयत्र
कीर्तितम् । वर्ज्यमारोग्यकामैस्त
द्धिक्काश्वासविकारिभिः ॥ १३५

हिचकी तथा श्वासरोगके जो निदान कहे गये हैं उनको आरोग्यका चाहनेवाला हिचकी तथा श्वासरोगी त्यागदेवे ॥ १३५ ॥

हिक्काश्वासानुबन्धायेशुष्कोरःकण्ठ
तालुकाः । प्रकृत्यारूक्षदेहाश्चसर्पि
र्भिस्तानुपाचरेत् ॥ १३६ ॥

जिनपुरुषों के हिचकी तथा श्वासरोग होनेका खटका हो और जिनके वक्षःस्थल कण्ठ तथा तालु सूखेहुयेहों और स्वभावसेही जिनका शरीर रूखाहो उनकी चिकित्सा घी के द्वारा करनी चाहिये ॥ १३६ ॥

दशमूलरसेसर्पिर्दधिमण्डेचसाधये
त् । कृष्णासौवर्चलक्षारवयःस्थाहि
ङ्गुचोरकैः । कायस्थयाचसंसिद्धं
हिक्काश्वासौप्रणाशयेत् १३७ ॥

इति दशमूलाद्यघृतम्।

दशमूलके काढ़े तथा दही के तोड़ में पीपरि सोंचरलवण जवाखार क्षीरकाकोली हींग चोरक तथा हड़ इनका कल्क तथा घी डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे इस घी के सेवनसे हिचकी तथा श्वासका नाश होता है ॥ १३७ ॥

इति दशमूलादिघृत ॥

तेजोवत्यभयाकुष्ठंपिप्पलीकटुरो
रोहिणी । भूतीकंपौष्करंमूलंपला
शश्चित्रकःशटी ॥ १३८ ॥

तेजबल हड़ कूट पीपरि कुटकी रोहिष पुष्करमूल ढाख चीता कचूर ॥ १३८ ॥

सौवर्चलंतामलकीसैन्धवंबिल्वपे
शिका। तालीशपत्रंजीवन्तीवचा
तैरक्षसम्मितैः ॥ १३९ ॥ हिंगुपा
देर्घृतप्रस्थंपचेत्तोयेचतुर्गुणे । ए
तद्यथाबलंपीत्वाहिक्काश्वासौजये
न्नरः। शोथानिलार्शोग्रहणीहृत्पा
र्श्वरुजएववा ॥ १४० ॥

इति तेजोवत्यादिघृतम् ।

सोंचरलवण भूमिआँवला सैंधवलवण बेलगिरी तालीसपत्र जीवन्ती वच तथा हींग तोले २ भर इन सब औषधियों के कल्कके और चौगुणे जलके साथ ६४ तोले घी का पाक करे जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे इस घी का बलके अनुसार पान करने से हिचकी श्वास शोथ वात बवासीर ग्रहणी हृदयकी पीड़ा तथा पशुलियों की पीड़ा इन सब का नाश होता है ॥ १३९ । १४० ॥

इति तेजवत्यादिघृत ॥

मनःशिलासर्जरसलाक्षारजनिपद्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कैः। मञ्जिष्ठैलैश्चकर्षांशैःप्रस्थःसि द्धोघृताद्धितः ॥ १४१ ॥

इति मनःशिलादिघृतम्।

मैनशिल लाख राल हल्दी पद्माख मँजीठ तथा छोटी इलायची इन औषधियों के तोले २ भर कल्क के साथ पाक कियागया ६४ तोले घी हिचकी तथा श्वास में हित होता है ॥ १४१ ॥

इति मनःशिलादिघृत ॥

जीवनीयोपसिद्धंवासक्षौद्रंलेहयेद्घृ तम्। त्र्यूषणंदधिकंवापिपिबेद्वासा घृतंतथा ॥ १४२ ॥

जीवनीयगण के साथ पाक कियागया घी शहद के साथ चाटनेसे हिचकी तथा श्वास का नाश होताहै सोंठि पीपरि तथा मिर्च के साथ पाककियागया घी दही के साथ पाक किया गया घी अथवा रूसाके साथ पाक कियागया घी हिचकी तथा श्वास में हितहोताहै ॥ १४२ ॥

यत्किञ्चित्कफवातघ्नमुष्णंवातानुलो मनम्। भेषजंपानमन्नंवातद्धितं श्वासहिक्किने ॥ १४३ ॥

जो कोई औषध तथा अन्न पान कफ वात नाशक वायुको मार्गके अनुसार करने वाले तथा उष्णहोवैं वह श्वास तथा हिचकी में हित होते हैं ॥ १४३ ॥

वातकृद्वाकफहरंकफकृद्वानिलापह म्। कार्य्यंनैकान्तिकंताभ्यांप्रायःश्रे योऽनिलापहम् ॥ १४४ ॥

जो चिकित्सा कफनाशक तथा वातकारक हो अथवा जो चिकित्सा कफकारक तथा वातनाशक हो केवल वही चिकित्सा हिचकी तथा श्वासमें न करनी चाहिये किन्तु प्रायःइनमें वातघ्नचिकित्साहित होती है १४४॥

सर्वेषांबृंहणेह्यल्पःशक्यश्चप्रायशोभ वेत्। नात्यर्थंशमनोपायोभृशोऽश क्यश्चकर्शने ॥ १४५ ॥

धातुवर्द्धक से सबके लिये प्रायःअल्प शक्य होताहै और कृशता में संशमन उपाय करना श्रेष्ठ नहीं है ॥ १४५ ॥

तस्माच्छुद्धानशुद्धांश्चशमनैर्बृंहणै रपि। हिक्काश्वासार्दिताञ्जन्तून्प्राय शःसमुपाचरेत् ॥ १४६ ॥

तत्रश्लोकः।

इससे वमनआदिके द्वारा शुद्ध अथवा नहीं शुद्धहुये हिचकी तथा श्वासवाले रोगियोंकी चिकित्सा प्रायः संशमन (दोषोंकोशान्तकरनेवाली) तथा बृंहण (धातुवर्द्धक) औषधियों के द्वारा करनी चाहिये ॥ १४६ ॥

दुर्जयत्वेसमुत्पत्तौक्रियैकत्वेचकार णम्। लिङ्गंपथ्यञ्चहिक्कानांश्वासा नाञ्चेहदर्शितम् ॥ १४७ ॥

इति हिक्काश्वासचिकित्सितंएकविंशो ऽध्यायः ॥ २१ ॥

तिसमें यह श्लोकहै ॥ इस अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने हिचकी तथा श्वास की दुस्साध्यता उत्पत्ति और हिचकी तथा श्वासइनदोनों की एकही प्रकार की चिकि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्सा होनेका कारण लक्षण और पथ्य यह सब विषय कहाहै ॥ १४७ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंचिकित्सास्थानकाहिकाश्वासचिकित्सितनाम इक्कीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २१ ॥

बाईसवांअध्याय

कासचिकित्सितम्।

तपसायशसाधृत्याधियाचपरयान्वितः। आत्रेयःकासशान्त्यर्थंसिद्धंप्राहचिकित्सितम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त कासचिकित्सित नाम अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

तपस्वी यशस्वी धैर्यवान् तथा महाबुद्धिमान् भगवान् आत्रेयजीने खांसी की शान्ति के लिये आगे कही जानेवाली सिद्ध चिकित्साकही है ॥ १ ॥

वातादिभ्यस्त्रयोयेचक्षतजःक्षयजस्तथा। स्युःपञ्चैतेनृणांकासावर्द्धमानाःक्षयप्रदाः ॥ २ ॥

वातज कफज पित्तज क्षतज तथा क्षयज यह पांचप्रकार की खांसी मनुष्योंके होती हैं इन पांचोंप्रकार की खांसियों के बढ़ने से क्षयरोग होजाताहै ॥ २ ॥

पूर्वरूपंभवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता। कण्ठेकण्डूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ॥ ३ ॥

गलेमें कांटेसे पड़जाना मुखमें कांटेसे पड़जाना गलेमें खुजली होना और भोजनकरने के समय गलेमें अवरोध यह खांसी के पूर्वरूपहैं ॥ ३ ॥

अधःप्रतिहतोवायुरूर्द्धस्रोतःसमाश्रितः। उदानभावमापन्नःकण्ठेसक्तस्तथोरसि ॥ ४ ॥

वायु नीचे से टकराकर ऊपरके स्रोतों का आश्रयकरके कण्ठ तथा वक्षस्थलमें प्राप्तहोने के कारण उदान (कण्ठकी वायुको उदान कहते हैं) भाव को प्राप्तहोके ॥ ४ ॥

आविश्यशिरसःखानिसर्वाणिप्रतिपूरयन्। आभञ्जन्नाक्षिपन्देहंहनुमन्येतथाक्षिणी ॥ ५ ॥ नेत्रेपृष्ठमुरःपार्श्वेनिर्भुज्यस्तम्भयंस्ततः। शुष्कोवासकफोवापिकसनात्कासउच्यते ॥ ६ ॥

मस्तकके सम्पूर्ण छिद्रोंमें प्रवेशकरके उनको पूर्ण करती है और शरीर को भग्न (टूटाहुआ) सा तथा आक्षिप्त (फेंकाहुआ)सा करतीहुई जाबड़े गलेके पीछेकी नस नेत्र पीठ वक्षस्थल तथा पशुलियों को भग्न तथा स्तम्भितकरके सूखी अथवा कफ सहित कसन (निकलना) को प्राप्त होती है इसीसे कास (खांसी) कहलाती है ॥ ५ । ६ ॥

प्रतिघातविशेषेणतस्यवायोःसरंहसः। वेदनाशब्दवैषम्यंकासानामुपजायते ॥ ७ ॥

कासरोग में प्रतिघात (टकराना) की विशेषता से वेगयुक्त वेगवाली वायुकीपीड़ा तथा शब्दों में विशेषता होती है ॥ ७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूक्षशीतकषायाल्पप्रमितानशनं स्त्रियः । वेगधारणमायासोवातका सप्रवर्त्तकाः ॥ ८ ॥

रूखी शीतल तथा कषैली वस्तुओं का बहुत सेवन करना स्वल्प भोजन करना एकही रसखाना बहुत लंघन करना बहुत मैथुनकरना मल मूत्रआदि वेगोंको रोकना और बहुत श्रम करना यह वातज खांसी के कारणहैं ८॥

हृत्पार्श्वोरःशिरःशूलस्वरभेदकरोभृशम् । शुष्कोरःकण्ठवक्त्रास्यहृष्टलोम्नःप्रताम्यतः ॥ ९ ॥

हृदय पशुली वक्षस्थल तथा शिरमें शूल होना स्वरभंग वक्षस्थल कण्ठ तथा मुखका सूखना रोमांच म्लानता ॥ ९ ॥

निर्घोषदैन्यक्षामस्यदौर्बल्यक्षयमोहकृत् । शुष्ककासःकफंशुष्कंकृच्छ्रान्मुक्त्वाल्पतांव्रजेत् ॥ १० ॥

मेघोंकासा भारी शब्द दीनता दुर्बलता क्षोभ मोह सूखी खांसी बहुत कष्टसे कुछ सूखे कफ के निकलजाने पर खांसी का कम होजाना ॥ १० ॥

स्निग्धाम्ललवणोष्णैश्चभुक्तमात्रेप्रशाम्यति । ऊर्ध्ववातस्यजीर्णेऽन्नेवेगवान्मारुतोभवेत् ॥ ११ ॥

स्निग्ध खट्टी नमकीन तथा उष्ण वस्तुखाने से खांसीका कमहोना वायुका ऊपरकी ओर चढ़ना और भोजन के पचजानेपर खांसीका बढ़ना यह वातज खांसीके लक्षणहैं ॥ ११ ॥

कट्वोष्णविदाह्यम्लक्षाराणामति सेवनम् । पित्तकासकरंक्रोधःसन्तापश्चाग्निसूर्य्यजः ॥ १२ ॥

कड़ुवी उष्ण विदाही खट्टी तथा क्षारवस्तुवों का बहुतखाना क्रोध और अग्नि तथा सूर्य का संताप यह पित्तज खांसीके कारणहैं १२ ॥

पीतनिष्ठीवनाक्षत्वंतिक्तास्यत्वंस्वरामयः । उरोधूमायनंतृष्णादाहो मोहोऽरुचिर्भ्रमः ॥ १३ ॥

थूक तथा नेत्रों का पीलाहोना मुखका तीताहोना स्वरभंग वक्षस्थल में धुआंसा भरा होना तृषा दाह मोह अरुचि भ्रम ॥ १३ ॥

प्रततंकासमानश्चज्योतींषीवचपश्यति । श्लेष्माणंपित्तसंसृष्टंनिष्ठीवतिचपैत्तिके ॥ १४ ॥

लगातार खांसी आना खांसने के समय चिनगीसी दिखाईदेना और पित्तसहित कफ थूकना यह पित्तज खांसीके लक्षणहैं ॥ १४ ॥

गुर्वभिष्यन्दिमधुरस्निग्धस्वप्नाविचेष्टनैः । वृद्धःश्लेष्मानिलंरुद्ध्वाकफकासंकरोतिहि ॥ १५ ॥

भारी अभिष्यन्दी मधुर तथा स्निग्धवस्तुवों का बहुत खाना बहुतसोना और कोई कार्य न करना इनकारणों से बढ़ाहुआ कफ वायुको रोंककर कफज खांसी को उत्पन्नकरताहै ॥ १५ ॥

मन्दाग्नित्वारुचिच्छर्दिपीनसोत्क्लेशगौरवैः । लोमहर्षास्यमाधुर्य्यक्लेदसंसदनैर्युतम् ॥ १६ ॥

मंदाग्नि अरुचि छर्दि नासिकासे जल टः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पकना कफका उभड़ना शरीरका भारीहोना रोमांच मुखका मधुरहोना क्लेद शिथिलता ॥ १६ ॥

बहुलंमधुरंस्निग्धंनिष्ठीवतिघनंकफम् । कासमानोऽतिरुग्वक्षःसम्पूर्णमिवमन्यते ॥ १७ ॥

खांसनेके समय हृदय में पीड़ाहोना वक्षस्थल में कफ भराहुआसा मालूम होना और मधुर स्निग्ध तथा गाढा कफ थूंकना यह कफजखाँसी के लक्षण हैं ॥ १७ ॥

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजविग्रहैः । रूक्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ॥ १८ ॥

बहुत मैथुन करना, बहुत भारी बोझा ढोना बहुत चलना, युद्धकरना और हाथी घोड़े आदि पशुओं से लड़ना इन कारणों से रूक्ष पुरुष के, वक्षस्थल में हुये क्षत (घाव) का अवलम्बन करके वायु क्षतज खाँसी को उत्पन्न करती है ॥ १८ ॥

सपूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् । रुजमानेनकण्ठेनविरुग्णेनैवचोरसा ॥ १६ ॥

पहिले सूखी खाँसी आकर रुधिर थूकना, गले में पीड़ा होना, वक्षस्थल में व्यथा ॥ १९ ॥

सूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना । दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीडाभितापिना ॥ २० ॥

तीक्ष्ण सुइयाँ चुभोने कीसी पीड़ा, स्पर्श को न सह सकना, शूल, पशुली आदि स्थानों में टूटनेकी सी पीड़ा तथा संताप होना, २०॥

पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्य्यपीडितः । पारावतइवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात् ॥ २१ ॥

पोरुओं में टूटनेकी सी पीड़ाहोना, ज्वर, श्वास, तृषा, स्वरभङ्ग और कबूतरके समान कीकना यह क्षतज खाँसी के लक्षण हैं २१॥

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् । घृणिनांशोचतांनॄणांव्यापन्नेऽग्नौत्रयोमलाः ॥ २२ ॥

विषमाशन (भोजन समय के पहिले अथवा पीछे स्वल्प अथवा अधिक भोजन करना) असात्म्यभोजन बहुत मैथुन करना तथा मल मूत्र आदिवेगों का रोकना इन कारणों से घृणा करने वाले तथा बहुत शोच करने वाले मनुष्यों की अग्नि के मन्दके होजाने पर तीनों दोष॥ २२ ॥

कुपिताःक्षयजंकासंकुर्य्युर्देहक्षयप्रदम् । दुर्गन्धंहरितंरक्तंष्ठीवेत्पूयोपमंकफम् ॥ २३ ॥

कुपितहोकर शरीर के नष्ट करने वाली क्षयज खाँसी को उत्पन्न करते हैं दुर्गंधित, हरा, रक्त वर्ण तथा पीब के समान कफ थूंकना ॥ २३ ॥

स्थानादुत्कासमानश्चहृदयंमन्यतेच्युतम् । अकस्मादुष्णशीतार्त्तोबहाशीदुर्बलःकृशः ॥ २४ ॥

खाँसने के समय हृदय अपने स्थान से टूटा हुआ सा मालूम होना, किसी कारण के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनाही शीत तथा उष्ण से व्याकुल होना बहुत खानेसे भी दुर्वलता, कृशता ॥ २४ ॥

स्निग्धाच्छमुखवर्णत्वक्श्रीमद्दर्शन लोचनैः। पाणिपादतलौश्लक्ष्णौ सततासूयकोघृणी ॥ २५ ॥

मुख वर्ण तथा त्वचाका स्निग्ध तथा निर्मल होना, दांत तथा नेत्रों का बहुत सुशोभितहोना, हाथ पैरोंका सचिक्कण होना, सदैव असूयाकरना (गुणों में दोषलगाना) घृणा करना ॥ २५ ॥

ज्वरोमिश्राकृतिस्तस्यपार्श्वरुक्पीनसोऽरुचिः। भिन्नसङ्घातवर्चस्त्वंस्वरभेदोऽनिमित्ततः ॥ २६ ॥

ज्वर, पशुलियों में पीड़ा नासिका से जल टपकना, अरुचि मलभेद तथा मलका वहुत गाढ़ा होना और विना कारण के ही स्वर-भङ्ग होजाना ॥ २६ ॥

इत्येषक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः। याप्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ २७ ॥

यह क्षयजखाँसी के लक्षणहैं यह खाँसीक्षीण पुरुषों के शरीरों को नष्ट करदेती है और वलवान् पुरुषोंके यदि यह खाँसीहो तो याप्य होती है क्षतज खाँसी याप्यही होती है २७॥

कदाचिदपिसिध्येतामेतौपादगुणान्वितौ। स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्त्तितः ॥ २८ ॥

यदि भेषजके वैद्य आदि चारोंपाद गुणयुक्त होयँ तो कदाचित् क्षतज तथा क्षयज खाँसी साध्य होती हैं वृद्धपुरुषों के जो वृद्धावस्था के कारण खाँसी उत्पन्न होती है वह सब याप्य होती है ॥ २८ ॥

त्रीन्साध्यान्साधयेत्पूर्वान्पथ्यैर्याप्यांश्चयापयेत्। चिकित्सामतऊर्ध्वन्तुशृणुकासनिबर्हिणीम् ॥ २९ ॥

वातज, कफज तथा पित्तज यह तीनों खाँसी साध्य होती हैं इन की चिकित्सा करनी चाहिये और याप्य खाँसियों को पथ्यके द्वारा रोंकना चाहिये इसके उपरान्त खाँसी के नष्ट करने वाली चिकित्सा कही जाती है उसको सुनो ॥ २९ ॥

रूक्षस्यानिलजंकासमादौस्नेहैरुपाचरेत्। सर्पिर्भिर्बस्तिभिःपेयायूषक्षीररसादिभिः ॥ ३० ॥

रूक्षपुरुष की खाँसी की चिकित्सा पहिले स्नेह के द्वारा करनी चाहिये, घी, वस्ति, वातज औषधियोंके साथ पाककीगई पेया, यूष, दूध तथा मांसरस आदिक के द्वारा ॥ ३० ॥

वातघ्नसिद्धैःस्नेहाद्यैर्धूमैर्लेहैश्चयुक्तितः। अभ्यङ्गैःपरिषेकैश्चस्निग्धैःस्वेदैश्चबुद्धिमान् ॥ ३१ ॥

वातनाशक स्नेह आदि से युक्त धूमपानके द्वारा और अवलेह, अभ्यङ्ग (तैल आदिका मर्द्दन) परिषेक (सींचना) तथा स्निग्ध स्वेदनके द्वारा बुद्धिमान् वैद्य युक्तिपूर्वक रूखे पुरुषकी वातज खाँसी की चिकित्सा करे ३१॥

बस्तिभिर्बद्धविड्वातंशुष्कोर्ध्वञ्चोर्द्ध्वभक्तिकैः। घृतैःसपित्तंसकफंजयेत्स्नेहविरेचनैः ॥ ३२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि वातज खाँसी वाले का मल सूखाहो तो उसको वस्ति (अमल, देनीचाहिये जिस वातज खाँसीवाले के शरीरके ऊपरीभागमें शुष्कताहो तो उसको भोजन के उपरान्त घी पिलाना चाहिये और जिस वातजखाँसी वालेके पित्त तथा कफका सम्बन्धहोय उसको स्नेह युक्त विरेचन देना चाहिये ॥ ३२ ॥

कण्टकारीगुडूचीभ्यांपृथक्त्रिंशत्पलाद्रसे। प्रस्थःसिद्धोघृताद्वातकासनुद्वह्निदीपनः॥ ३३ ॥

इति कण्टकारीघृतम्।

भटकटैया तथा गिलोय के तीस २ पल (चारतोले का एक पलहोता है) काढ़े के साथ पाक किया गया ६४ तोले घृत वातज खाँसी को नष्ट करता है और अग्निको दीप्त करता है॥ ३३ ॥

इति कण्टकारिघृत॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः। धान्वपाठवचारास्नायष्ट्याह्वक्षारहिंगुभिः॥ ३४ ॥

पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि धनि-ां पाढ़र वच रास्ना मुलेठी जवाखार तथा हींग॥ ३४॥

कोलमात्रैर्घृतप्रस्थाद्दशमूलीरसाढके। सिद्धांचतुर्थिकांपीत्वापेयामण्डंपिबेदनु॥ ३५॥

इन के तोले २ भर कल्क के साथ और २५६ तोले दशमूलके काढ़े के साथ पाक किये गये ६४ तोले घी में से चार तोले भर घी पीकर पेया मण्ड पीवे॥ ३५॥

तच्छ्वासकासहृत्पार्श्वग्रहणीदोषगुल्मनुत्। पिप्पल्याद्यंघृतञ्चैतदात्रेयेणप्रकीर्त्तितम्॥ ३६॥

इति पिप्पल्यादिघृतम्।

इससे श्वास खाँसी हृदय के रोग पशुलियों की पीड़ा ग्रहणी दोष तथा गुल्मका नाशहोताहै यह आत्रेयजी का कहा हुआ पिप्पल्यादि घृत कहाता है॥ ३६॥

इति पिपल्यादिघृत॥

त्र्यूषणंत्रिफलांद्राक्षांकाश्मर्य्याणिपरूषकम्। द्वेपाठेदेवदार्व्वृद्धिंस्वगुप्तांचित्रकंशटीम्॥ ३७॥

सोंठि पीपरि मिर्च त्रिफला दाख खँभारी के फल फालसा दोनों प्रकारकी पाढ़र देवदारु भटकटैया, किंवाँच चीता कचूर॥ ३७॥

ब्राह्मींतामलकींमेदांकाकनासांशतावरीम्। त्रिकण्टकांविदारींचपिष्टाकर्षसमंघृतात्॥ ३८॥ प्रस्थंचतुर्गुणक्षीरंसिद्धंकासहरंपिबेत्। ज्वरगुल्मारुचिप्लीहशिरोहृत्पार्श्वशूलनुत्॥ ३९॥ कामलार्शोऽनिलाष्ठीलाक्षतशोषक्षयापहम्। त्र्यूषणंनामविख्यातमेतद्घृतमनुत्तमम्॥ ४०॥

इति त्र्यूषणाद्यंघृतम्।

ब्राह्मी भूमिआँवला मेदा कौवाठोंठी शतावरि गोखुरू तथा बिलाईकन्द इनके तोले २ भर कल्क के और चौगुणे दूध के साथ पाक किये गये ६४ तोले घीका सेवन करने से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्वर गुल्म अरुचि प्लीहा शिर हृदय तथा पशुलियोंका शूल कामला बवासीर वातष्ठीला घाव शोष तथा क्षय इनका नाश होता है इसघी को त्र्यूषण कहते हैं यह बहुत श्रेष्ठ घी होताहै ॥ ३८।३९।४० ॥

इति त्र्यूषणादिघृत।

द्रोणेऽपांसाधयेद्रास्नांदशमूलींश तावरीम्। पलिकान्माणिकांशांस्तु कुलत्थान्बदरान्यवान् ॥ ४१ ॥

एक हजार चौबीस तोले जलमें रास्ना दशमूल तथा शतावरि चार २ तोले कुल्थी बेर तथा यव बत्तिस २ तोले ॥ ४१ ॥

तुलार्द्धञ्चाजमांसस्यपादशेषेणतेन च । घृताढकंसमक्षीरंजीवनीयैःप लोन्मितैः ॥ ४२ ॥ सिद्धंतद्दश भिःकल्कैर्नस्यपानानुवासनैः । स मीक्ष्यवातरोगेषुयथावस्थंप्रयोज येत् ॥ ४३ ॥

और बकरे का मांस २०० तोले डालकर पाक करे जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतार कर छानलेवे फिर इस काढ़े में जीवनीयगण की औषधियों का चार २ तोले कल्क सम भाग दूध तथा २५६ तोले घी डालकर पाक करे जबपानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छान लेवे फिर वातजरोग में अवस्था के अनुसार विचारपूर्वक नस्यपान तथा अनुवासन में इस घी का प्रयोग करै ॥ ४२।४३ ॥

पञ्चकासाञ्छिरःकम्पंशूलंवंक्षणयो

निजम् । सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्चसप्लीहो र्द्ध्वानिलाञ्जयेत् ॥ ४४ ॥

इति रास्नाघृतम् ।

इससे पांच मकारकी खाँसी शिरका कांपना वंक्षण कः शूल योनिका शूल सर्वाङ्गतथा एकाङ्गिक रोग प्लीहा तथा ऊर्ध्ववात इन सब का नाश होताहै ॥ ४४ ॥

इति रासनाघृत ।

विडङ्गंनागरंरास्नांपिप्पलीहिंगुसैन्ध वैः । भार्ङ्गीक्षारश्चतच्चूर्णंपिबेद्वाघृत मात्रया ॥ ४५ ॥

वायविडङ्ग सोंठि रासना पीपरि हींग सैंन्धव लवण तथा भारंगीका क्षार इनकाचूर्ण मात्रा के अनुसार घृतके साथ पीने से ॥४५॥

सकफेऽनिलजेकासेश्वासहिक्काह ताग्निषु । द्वौक्षारौपञ्चकोलानिपञ्चै वलवणानिच ॥ ४६ ॥

कफसहित वातज खाँसी श्वास हिचकी तथा मन्दाग्निका नाश होता है यवाखार सज्जी पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि पांचों लवण ॥ ४६ ॥

शटीनागरकोदीच्यकल्कंवावस्त्रगा लितम् । पाययेतघृतोन्मिश्रंवातका सनिबर्हणम् ॥ ४७ ॥

कचूर सोंठि तथा सुगन्धबाला इनको पानी में पीसकर वस्त्रके द्वारा छानकर इनका रस निकालकर घी मिलाके पीवे इससे वातज खाँसी का नाश होताहै ॥ ४७॥

कुलीरमांसंशटींद्राक्षांशृङ्गवेरंसितोप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाम् । लिह्यात्कर्कटशृङ्गीञ्चकासेतै लेनवातजे ॥ ४८ ॥

जवासा कचूर दाख सोंठि मिसरी तथा काकड़ासींगी इन का चूर्ण करके वातजखांसीमें तैलके साथ चाटै ॥ ४८ ॥

दुःस्पर्शांपिप्पलींमुस्तंभार्ङ्गींकर्कट कींशटीम् । पुराणगुडतैलाभ्यांचूर्णितंवापिलेहयेत् ॥ ४९ ॥

अथवा रेंगनी पीपरि नागरमोथा भारंगी काकड़ासींगी तथा कचूर इनका चूर्ण पुराने गुड़ तथा तैल में मिलाकर चाटे ॥ ४९ ॥

विडङ्गंसैन्धवंकुष्ठंव्योषंहिंगुमनःशिलाम् । मधुसर्पिर्युतंकासहिक्काश्वासंजयेल्लिहन् ॥ ५० ॥

सैन्धवलवण बायबिडंग कूट सोंठि पीपरि मिर्चे हींग मैनशिल इनके चूर्ण को शहद तथा घी में मिलाकर चाटने से खांसी हिचकी तथा श्वास का नाश होताहै ॥ ५० ॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंव्योषंहिंगुदुरालभाम् । शटींपुष्करमूलञ्चश्रेयसींसुरसांवचाम् ॥ ५१ ॥

चीता पीपरामूल सोंठि पीपरि मिर्चे हींग जवासा कचूर पुष्करमूल गजपीपरि सुरसा वच ॥ ५१ ॥

भार्ङ्गींछिन्नरुहांरास्नांशृङ्गींद्राक्षाञ्च कार्षिकान् । कल्कानर्द्धतुलाक्काथे निदिग्ध्याःपञ्चविंशतिम् ॥ ५२ ॥

दत्त्वामत्स्यण्डिकायाश्चघृताच्चकुड वंपचेत् । सिद्धंशीतंप्रियक्षौद्रपिप्पलीकुडवान्वितम् ॥ ५३ ॥ चतुष्पलंतुगाक्षीर्य्याश्चूर्णितंतत्रदापयेत् । लेहयेत्कासहृद्रोगश्वासगुल्मनिवारणम् ॥ ५४ ॥

इति चित्रकादिलेहः ।

भारंगी गिलोय रास्ना काकड़ासींगी तथा दाख इनके तोले २ भर कल्क १०० तोले गुड़ और १६ तोले घी भटकटैयाके २०० तोले काढ़ेमें डालकर पाककरै जब अवलेहके योग्य पाक होजाय तब उतारलेवे और शीतल होजानेपर उस पाक में शहद पीपरिका चूर्ण तथा वंशलोचनका चूर्ण सोलह२ तोले डालकर मिलावै इस अवलेहको चाटने से खांसी हृदयके रोग श्वास तथा गुल्मका नाश होता है ॥ ५२।५३।५४ ॥

दशमूलींस्वयंगुप्तांशंखपुष्पींशटींबलाम् । हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकान् ॥ ५५ ॥

दशमूल केवांच शङ्खपुष्पी कचूर बरियारा गजपीपरि लटजीरा पिपरामूल चीता ५५ ॥

भार्ङ्गींपुष्करमूलञ्चद्विपलांशंयवाढकम् । हरीतकीशतञ्चैकंजलपञ्चाढकेपचेत् ॥ ५६ ॥

भारंगी तथा पुष्करमूल आठ२ तोले यव दोसौछप्पन तोले और हड़ एकसौ इन सब को बारहसौ अस्सी तोले जल में डालकर पाककरै ॥ ५६ ॥

यवेस्विन्नेकषायंतंपूतंतच्चाभयाशत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म् । पचेद्गुडतुलांदत्वाकुडवञ्चपृथग्घृतात् ॥ ५७ ॥

जब यव गलजायं तब उतारकर छानलेवे फिर इसकाढ़ेमें वही एकसौ हड़ और चारसौ तोले गुड़ सोलह तोले घी ॥ ५७ ॥

तैलात्सपिप्पलीचूर्णात्सिद्धशीतेच माक्षिकात् । लिह्याद्वेचाभयेनित्यमतःखादेद्रसायनात् ॥ ५८ ॥

सोलहतोले तैल तथा सोलह तोले पीपरि का चूर्ण डालकर पाककरै जब अवलेह के योग्य पाक होजाय तब उतारलेवे फिर इस के शीतल होजानेपर इसमें सोलह तोले शहद मिलाकर इसमेंसे दो हड़ तथा थोड़ा सा अवलेह लेकर नित्यखाय इस रसायन के सेवनकरने से ॥ ५८ ॥

तद्वलीपलितंहन्तिवर्णायुर्बलवर्द्धनम् । पञ्चकासान्क्षयंकासंहिकांसविषमज्वराम् ॥ ५९ ॥

बलवर्ण तथा आयुकी वृद्धि होती है और भुरींवालों का श्वेत होना पांच प्रकार की खांसी क्षयज खांसी हिचकी विषमज्वर ५९॥

हन्यात्तथार्शोग्रहणीहृद्रोगारुचिपीनसान् । अगस्त्यविहितंश्रेष्ठंरसायनमिदंशुभम् ॥ ६० ॥

इति अगस्त्यहरीतकी ।

बवासीर ग्रहणीदोष हृदयके रोग अरुचि तथा पीनस इन सबका नाश होता है महर्षि अगस्त्यजी की कहीहुई यह अत्यन्त श्रेष्ठ रसायन है ॥ ६० ॥

इति अगस्त्यहरीतकी ॥

सैन्धवंपिप्पलींभार्ङ्गींशृङ्गवेरंदुरालभाम् । दाडिमाम्लेनकोष्णेनभार्ङ्गींनागरमम्बुना ॥ ६१ ॥

सैन्धवलवण पीपरि भारंगी सोंठि तथा जवासा इनके चूर्ण को कुछ गर्म खट्टे अनारसे युक्त जलमें मिलाकर पीने से भारंगी तथा सोंठिके चूर्ण को खट्टे अनारके रससे युक्त कुछ गर्मजलके साथ पीने से ॥ ६१ ॥

पिबेत्खदिरसारंवामदिरादधिमस्तुभिः । अथवापिप्पलीकल्कंघृतभृष्टंससैन्धवम् ॥ ६२ ॥

बेरके चूर्ण को मदिरा दही तथा दही के तोड़में मिलाकर पीनेसे अथवा पीपरि की चटनी को घीमें भूनकर सैन्धवलोन मिलाकर खाने से खांसी का नाश होताहै ॥ ६२ ॥

शिरसःसदनेस्रावेनासायाहृदितास्यति । कासप्रतिश्यायवतांधूमंवैद्यःप्रयोजयेत् ॥ ६३ ॥

शिरकी शिथिलता नासिका से जल बहना हृदयकी म्लानता खांसी तथा प्रतिश्याय (जुकाम) होनेपर बुद्धिमान् वैद्य धूमपान करावै ॥ ६३ ॥

दशाङ्गुलोन्मितांनाडींअथवाष्टाङ्गुलोन्मिताम् । शरावसंपुटच्छिद्रेकृत्वाजिह्मांविचक्षणः ॥ ६४ ॥

दश अंगुल अथवा आठ अंगुलकी लम्बी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नली को सकोरों के सम्पुट के छिद्रमें लगाकर ॥ ६४ ॥

वैरेचनंमुखेनैवकासवान्धूममापिबेत् । तमुरःकेवलंप्राप्तंमुखेनैवोद्वमेत्पुनः ॥ ६५ ॥

मुखकेद्वारा विरेचनकर (कफ को निकालनेवाला) धूम पीवै और जब वह धूम हृदयतक पहुंचै तब मुखकेद्वाराही उसका त्याग करै ॥ ६५ ॥

सह्यस्यतैक्ष्ण्याद्विक्षिप्यश्लेष्माणमुरसिस्थितम् । निष्कृष्यशमयेत्कासंवातश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ ६६ ॥

इससे वह धुवां हृदयमें स्थित कफ को फाड़कर बाहर निकालके वात कफज खांसी को शान्त करदेता है ॥ ६६ ॥

मनःशिलालमधुकमांसीमुस्तेंगुदैः पिबेत् । धूमंतस्यानुचक्षीरंसुखोष्णं सगुडंपिबेत् ॥ ६७ ॥

मैनशिल हरताल मुरेठी जटामांसी नागरमोथा तथा गोंदी इनका धूम पीकर ऊपर से गुड़ सहित कुछ गर्म दूध पीवै ॥ ६७ ॥

एषकासान्पृथग्दोषसन्निपातोद्भवाञ्जयेत् । प्रसह्यापरिसंसिद्धानन्यैर्योगशतैरपि ॥ ६८ ॥

इससे कफज वातज पित्तज तथा सन्निपातज वह खांसी जो कि सैकड़ों उपायोंसे भी नहीं अच्छीहुई है अवश्य नष्ट होजाती है ६८

प्रपौण्डरीकंमधुकंशार्ङ्गेष्टासमनःशिलाम् । मरिचंपिप्पलींद्राक्षामेलांसुरसमञ्जरीम् ॥ ६९ ॥

पुंडरिया मुरेठी हरतार मैनशिल मिर्च पीपरि मुनक्का छोटी इलायची तथा तुलसीकी मञ्जरी ॥ ६९ ॥

कृत्वावर्तिंपिबेद्धूमंक्षौमचेलानुवर्त्तिताम् । घृताक्तामनुचक्षीरंगुडोदकमथापिवा ॥ ७० ॥

इनको पानीके साथ पीसकर रेशमी कपड़े में लेसके वत्ती बनालेवै और उस वत्ती को घीमें बोरकर उसका धूम पीके ऊपर से दूध अथवा गुड़का शर्बत पीवै इससे खांसी का नाश होता है ॥ ७० ॥

मनःशिलैलामरिचक्षाराञ्जनकुटन्नटैः । वंशलोचनशैवालक्षौमलक्तकरोहिषैः ॥ ७१ ॥

मैनशिल छोटी इलायची मिर्च जवाखार सुरमा केवटी मोथा बंशलोचन सिवार रेशमीवस्त्र कंजा तथा रोहिष ॥ ७१ ॥

पूर्वकल्पेनधूमोऽयंसानुपानोविधीयते । आलंमनःशिलातद्वत्पिप्पलीनागरैःसह ॥ ७२ ॥

इन वस्तुओंका धूम पूर्वोक्त विधिसे पीवै इससे खांसीका नाश होताहै हरताल मैनशिल पीपरि सोंठि ॥ ७२ ॥

त्वगैङ्गुदीबृहत्यौद्वेतालमूलंमनःशिला । कार्पासास्थ्यश्वगन्धाचधूमःकासविनाशनः ॥ ७३ ॥

दालचीनी गोंदी भटकटैया बड़ी भटकटैया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तालकीजड़ मैनशिल कपासके बीज तथा असगंध इनका धूम पीने से खांसी का नाश होता है ॥ ७३ ॥

ग्राम्यानूपौदकैःशालियवगोधूमषष्टिकान्। रसैर्माषात्मगुप्तानांयूषैर्वादापयेद्धितान् ॥ ७४ ॥

ग्राम अनूपदेश तथा जलके जीवों के मांस के रसके साथ अथवा उर्द तथा केवाँच के यूष के साथ शालिधान यव गेहूं तथा सांठी के चावलों के पदार्थ खांसी में खाने चाहिये ॥ ७४ ॥

यमानीपिप्पलीबिल्वमध्यनागरचित्रकैः। रास्नाजाजीपृथक्पर्णीपलाशशटिपौष्करैः ॥ ७५ ॥

वातज खाँसी में अजवायन पीपरि बेलगिरी सोंठि चीता रास्ना जीरा पिथिवन ढाक कचूर तथा पुष्करमूल ॥ ७५ ॥

स्निग्धाम्ललवणांसिद्धांपेयामनिलजेपिबेत्। कटीहृत्पार्श्वकोष्ठार्त्तिश्वासहिक्काप्रणाशनीम् ॥७६॥

इनके साथ स्निग्ध खट्टी तथा नमकीन पेया बनाकर पीवै इससे कमर हृदय पशुली तथा कोष्ठ की पीड़ा श्वास और हिचकी का नाश होता है ॥ ७६ ॥

दशमूलरसेतद्वत्पञ्चकोलगुडान्विताम्। सिद्धांसमतिलांदद्यात्क्षीरेवापिससैन्धवाम् ॥ ७७ ॥

इसी प्रकार दशमूल के काढ़े में पाक की गई पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि तथा गुड़युक्त पेया पीने से अथवा दूधमें पाक की गई समभाग तिल तथा सैन्धवलवण युक्त पेया पीने से वातज खांसी का नाश होता है ॥ ७७ ॥

मत्स्यकुक्कुटवाराहैरामिषैर्वाघृतान्वितैः। सिद्धाससैन्धवांपेयांवातकासीपिबेन्नरः ॥ ७८ ॥

जिस पुरुषको वातजखांसी आती हो वह पुरुष मछली मुरगा तथा शूकर के मांस के साथ पाक कीगई घृत तथा सैन्धवलवणयुक्त स्निग्ध पेया पीवै ॥ ७८ ॥

वास्तुकंवायसीशाकंमूलकंसुनिषण्णकम्। स्नेहास्तैलादयोभक्ष्याः क्षीरेक्षुरसगौडिकाः ॥ ७९ ॥

वातज खांसीमें बथुई काकमाँची मूरी तथा विसखरिया का शाक तैलादिक स्नेह दूध ईषकारस तथा गुड़के बनेहुये भक्ष्य पदार्थ ॥ ७९ ॥

दध्यारनालाम्लफलप्रसन्नापानमेव च। शस्यतेवातकासेतुस्वाद्वम्ललवणानिच ॥ ८० ॥

इति वातकासचिकित्सा।

दही काँजी तथा खट्टे फलों की प्रसन्ना (मद्यविशेष) आदिपेया (पीनेकी वस्तु) और मधुर खट्टी तथा नमकीन वस्तु ये सब वातजखांसी में हित हैं ॥ ८० ॥

इति वातकासचिकित्सा ॥

पैत्तिकेसकफेकासेवमनंसर्पिषाहितम्। तथामदनकाश्मर्य्यमधूकक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थितैर्जलैः ॥ ८१ ॥ यष्ट्याह्वफल कल्कैर्वाबिदारीक्षुरसायुतैः। हृतदोषस्ततःशीतंमधुरञ्चक्रमंभजेत्॥८२॥

जिस पित्तज खांसी में कफ का सम्बन्ध हो उसमें घीके द्वारा अथवा मैनफल खँभारी के बीज तथा मुरेठी के काढ़े के द्वारा अथवा बिलाईकन्द तथा ईष के रस से युक्त मुरेठी तथा मैनफल के कल्क के द्वारा बमन करावै फिर बमनके द्वारा दोषों के निकल जानेपर शीतल तथा मधुर पेया आदिका क्रमसे सेवन करावै ॥ ८१ । ८२ ॥

पैत्तेतनुकफेकासेत्रिवृतांमधुरैर्युताम् । दद्याद्घनकफेतिक्तैर्विरेकार्थंयुतांभिषक् ॥ ८३ ॥

पित्तज खांसीमें यदि कफ पतला होय तो मधुर ओषधियों से युक्त निशोथ का चूर्ण और जो कफ गाढ़ा होय तो तिक्त ओषधियों से युक्त निशोथ का चूर्ण विरेचन के निमित्त देना चाहिये ॥ ८३ ॥

स्निग्धशीतस्तनुकफेरूक्षशीतःकफेघने । क्रमःकार्य्यःपरंभोज्यैःस्नेहैर्लेहैश्चशस्यते ॥ ८४ ॥

विरेचन के उपरान्त पतले कफ में स्निग्ध तथा शीतल और गाढ़े कफ में रूक्ष तथा शीतल पेया आदि क्रमसे देनी चाहिये तदनन्तर भोजन के पदार्थ घृतादि स्नेह तथा अवलेह देने चाहिये ॥ ८४ ॥

शृङ्गाटकंपद्मबीजंनीलीसाराणिपिप्पली । पिप्पलीमुस्तयष्ट्याह्वद्राक्षामूर्वामहौषधम् ॥ ८५ ॥

सिंघाड़ा कमलगट्टा नील लोहसार तथा पीपरि नागरमोथा मुरेठी मुनक्का मिरोड़फली तथा सोंठि ॥ ८५ ॥

लाजामृतफलद्राक्षात्वक्क्षीरीपिप्पलीसिता । पिप्पलीपद्मकोद्राक्षाबृहत्याश्चफलाद्रसः ॥ ८६ ॥

खील आँवला मुनक्का तज वंशलोचन पीपरि तथा शक्कर पीपरि पद्माक मुनक्का तथा भटकटैया के फल का रस ॥ ८६ ॥

खर्जूरंपिप्पलीवांशीश्वदंष्ट्राचेतिपञ्चते । घृतक्षौद्रयुतालेहाःश्लोकार्द्धैःपित्तकासिनाम् ॥ ८७ ॥

छुहारा पीपरि बंशलोचन तथा गोखुरू इन पांचों योगोंमें से जोकि आधे २ श्लोक में कहे हैं किसी को घी तथा शहद में मिलाकर चाटनेसे पित्तजखांसीका नाश होताहै ८७॥

शर्कराचन्दनद्राक्षामधुधात्रीफलोत्पलैः । पैत्तेसमुस्तमरिचःसकफेसघृतोऽनिले ॥ ८८ ॥

शक्कर लालचन्दन मुनक्का शहद आँवला तथा उत्पल इन सबको यदि पित्तज खाँसीमें कफ का सम्बन्ध होतो नागरमोथा तथा मिर्चके साथ चाटै और जो वात का सम्बन्ध हो तो घीके साथ चाटै ॥ ८८ ॥

मृद्वीकार्द्धशतंत्रिंशत्पिप्पलीशर्करापलम् । लेहयेन्मधुनागौर्वाक्षीरपस्यशकृद्रसम् ॥ ८९ ॥

पित्तज खाँसी में दोसौ तोले मुनक्का एकसौबीस तोले पीपरि तथा एकसौबीस तोले शक्कर इनको शहद में मिलाकर मात्राके अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नुसार चाटै अथवा गोबर का रस पीकर गौ का दूधही पियै ॥ ८९ ॥

त्वगेलाव्योषमृद्वीकापिप्पलीमूल पौष्करैः। लाजामुस्तशटीरास्ना धात्रीफलविभीतकैः ॥ ९० ॥

तज छोटी इलायची सोंठि मिर्च पीपरि मुनक्का पिपरामूल पुष्करमूल खील नागरमोथा कचूर रास्ना आँवला तथा बहेड़ा॥९०॥

शर्कराक्षौद्रसर्पिर्भिर्लेहः कासविनाशनः। श्वासंहिकांक्षयञ्चैवहृद्रोगञ्चप्रणाशयेत् ॥ ९१ ॥

इन सबके चूर्ण को शक्कर शहद तथा घी के साथ चाटने से खांसी श्वास हिचकी क्षय तथा हृदय के रोग इन सब का नाश होता है॥ ९१ ॥

पिप्पल्यामलकंद्राक्षांलाक्षांलाजान्सितोपलाम्। पिबेद्धामधुसंयुक्तं पित्तकासहरंपरम् ॥ ९२ ॥

पीपरि आँवला मुनक्का लाख खील तथा मिश्री इनको शहदमें मिलाकर पीनेसे पित्तज खांसी का नाश होताहै॥ ९२ ॥

विदारीक्षुमृणालानांरसान्क्षीरंसितोपलम्। पिबेद्धामधुसंयुक्तंपित्तकासहरंपरम् ॥ ९३ ॥

बिलाईकन्द ईख कमल की दंडी इनसब का रस दूध मिश्री शहद के साथ पीने से पित्तजखांसी का नाश होताहै॥ ९३ ॥

मधुरैर्जाङ्गलरसैःश्यामाकयवकोद्रवाः। मुद्गादियूषैःशाकैश्चतिक्तकैर्मात्रयाहिताः। घनश्लेष्मणिलेहास्तुतिक्तकामधुसंयुताः ॥ ९४ ॥

पित्तजखांसी में यदि कफ गाढ़ा होय तो जांगल जीवोंके मांसके मधुर रसके साथ मूंग आदि के यूषके साथ तथा तिक्तशाकों के के साथ सावां यव तथा कोदों के पदार्थ मात्राके अनुसार खाने चाहिये और तिक्त अवलेह शहदके साथ चाटने चाहिये ॥ ९४ ॥

शालयःस्युस्तनुकफेषष्टिकाश्चरसादिभिः ॥ ९५ ॥

और जो पित्तजखांसी में कफ पतला तो शालिधान तथा सांठीके चावलोंका भा मांसके रस आदिके साथ खाना चाहिये ९५॥

शर्कराम्भोऽनुपानार्थेद्राक्षेक्षूणांरसान्पयः। सर्वञ्चमधुरंशीतमविदाहि प्रशस्यते ॥ ९६ ॥

पित्तज खांसी में भोजनके उपरान्त शक्कर का शर्बत मुनक्का तथा ईखका रस और दूध पीना चाहिये इसमें सम्पूर्ण मधुर शीतल तथा अविदाही (जो वस्तु हृदयमें जलन न पैदा करके शीघ्रही पचै उसे अविदाही कहो हैं) वस्तु हित होती है॥ ९६ ॥

काकोलीबृहतीमेदायुग्मैःसवृषनागरैः। पित्तकासेरसान्क्षीरंयूषांश्चाप्युपकल्पयेत् ॥ ९७ ॥

काकोली भटकटैया मेदा महामेदा रूसा तथा सोंठि इनके द्वारा मांस रस यूष तथा दूधका पाक करके पित्तजखांसी में प्रयोग करै॥ ९७ ॥

शरादिपञ्चमूलस्यपिप्पलीद्राक्षयो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्तथा। कषायेणशृतंक्षीरंपिबेत्स मधुशर्करम् ॥ ९८ ॥

सर आदि पंचमूल पीपरि तथा मुनक्का इन के काढ़े के साथ पाक कियेगये दूध में शहद तथा शक्कर डालकर पीनेसे पित्तजखांसीका नाश होता है॥ ९८॥

स्थिरासितापृश्निपर्णीश्रावणीबृहती युगैः। जीरकर्षभकाकोलीतामल क्यृद्धिजीरकैः॥ ९९॥

शालिपर्णी शक्कर पृष्णिपर्णी मुँडरिया भट कटैया बड़ी भटकटैया जीवक ऋषभक काकोली भूमिआंवला ऋद्धि तथा जीरा॥ ९९॥

शृतंपयःपिबेत्कासीज्वरीदाहीक्षत क्षयी। तज्जंवासाधयेत्सर्पिःस क्षीरेक्षुरसंभिषक्॥ १०० ॥

जीवकाद्यैर्मधुरकैःफलैश्चाभिषुका दिभिः। कल्कैस्त्रिकार्षिकैःसिद्धे पूतशीतेप्रदापयेत् ॥ १०१ ॥

शर्करापिप्पलीचूर्णस्त्वक्क्षीर्य्योमरि चस्यच। शृङ्गाटकस्यचावाप्यक्षौद्र गर्भान्पलोन्मितान् ॥ १०२ ॥

गुडान्गोधूमचूर्णेनकृत्वाखादेद्धिता शनः। शुक्रासृग्दोषशोषेषुकासे क्षीणक्षतेषुच॥ १०३ ॥

इनके साथ पाक कियागया दूध पीने से खांसी ज्वर दाह तथा क्षतक्षीण इन सब का नाश होताहै अथवा इसी दूध से घी निकाल कर दूध ईषका रस और जीवकादिगण मधुरगण तथा अभिषुक आदिक फलोंके तीन २ तोले कल्क (चटनी) के साथ पाक करै जब पानी जल जाय केवल घी बाकी रहजाय तब उतारकर छानलेवै फिर शीतल होजाने पर इस घीमें शक्कर पीपरि वंशलोचन मिर्च तथा सिंघाड़े का चूर्ण शहद और गेहूंका आटा मात्रा के अनुसार मिलाकर लड्डू बना लेवै इन लड्डुओं को खाकर पथ्य भोजनकरे इससे वीर्य्य तथा रुधिर के दोष शोष खांसी तथा क्षतक्षीण इन सब रोगों का नाश होता है॥ १००। १०१। १०२। १०३॥

शर्करानागरोदीच्यंकण्टकारींशटीं समाम्। पिष्ट्वारसंपिबेत्पूतंवस्त्रेणघृ तमूर्च्छितम्॥ १०४॥

शक्कर सोंठि सुगन्धबाला भटकटैया तथा कचूर इन सबको पानी में पीसकर कपड़े में छानकर इनका रस निकाललेवै फिर उसरस को घी में छौंककर पियै इससे पित्तज खांसी का नाश होताहै॥ १०४॥

महिष्यजाविगोक्षीरधात्रीफलरसैः समैः। सर्पिःसिद्धंपिबेद्युक्त्यापित्त कासनिबर्हणम्॥ १०५॥

इति पित्तकासचिकित्सा।

भैंसका दूध बकरीका दूध भेड़ीकादूध गौकादूध तथा आँवलेकारस समभाग इनकेसाथ पाक कियागया घृत युक्तिपूर्वक पीनेसे पित्तज खांसी का नाश होता है॥ १०५॥

इति पित्तकासचिकित्सा॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातेवमनैरादौशोधयेत्कफकासि

क्षयजखांसी में मूत्रकी विवर्णता (बदरंग होना) तथा मूत्रकृच्छ्र होनेपर बिलाईकंद कदम्ब तथा ताड़फलके साथ पाक कियागया घी तथा दूध पीना चाहिये ॥ १५२ ॥

शूनेसवेदनेमेढ्रेपायौसश्रोणिवंक्षणे । घृतमण्डेनमधुनाऽनुवास्यो मिश्रकेणवा ॥ १५३ ॥

क्षयजखांसी में लिंग गुदा नितम्ब तथा वंक्षण (जांघोंकी सन्धि)में शोथ तथा पीड़ा होनेपर घृतयुक्त मण्ड अथवा पूर्वोक्त मिश्रक स्नेह के द्वारा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ १५३ ॥

जाङ्गलैःप्रतिभुक्तस्यवर्त्तकाद्याबिलेशयाः।क्रमशःप्रसहाश्चैवप्रयोज्याः पिशिताशिनः ॥ १५४ ॥

तदनन्तर जाङ्गल जीवों के मांसके रसके साथ भोजन कराके बटेर आदि जीव बिलेशय (गोह आदि)जीवप्रसह (काकउल्लू) जीव तथा मांसखानेवाले (व्याघ्रादि) जीवोंके मांसकारस क्रमसे देना चाहिये॥१५४॥

औष्ण्यात्प्रमाथिभावाच्चस्रोतोभ्यश्च्यावयन्तिते । कफैःशुद्धैश्चतैः पुष्टिंकुर्य्यात्सम्यग्वहन्रसः ॥१५५॥

क्योंकि इन जीवों के मांस उष्ण तथा प्रमाथी (स्रोतों से सम्पूर्ण दोषों के निकालने वाले) होनेके कारण स्रोतों से कफको निकालदेते हैं और फिर शुद्ध हुये स्रोतों के द्वारा बहताहुआ रस पुष्टता को उत्पन्न करता है ॥ १५५ ॥

चविकात्रिफलाभार्ङ्गीदशमूलैःसचित्रकैः । कुलत्थपिप्पलीमूलपाठाकोलयवैर्जले ॥ १५६ ॥

चव्य त्रिफला भारंगी दशमूल चीता कुलथी पिपरामूल पाढ़र बेर तथा यव इन के काढ़ेमें ॥ १५६ ॥

शृतैर्नागरदुःस्पर्शापिप्पलीशटिपौष्करैः । कल्कैःकर्कटशृङ्ग्याचसमैः सर्पिर्विपाचयेत् ॥ १५७ ॥

सोंठि गोखुरू पीपरि कचूर पुष्करमूल तथा काकड़ासींगी इन सब समभाग ओषधियोंकाकल्क तथा घी डालकर पाककरै॥ १५७॥

सिद्धेऽस्मिंश्चूर्णितौक्षारौद्वौपञ्चलवणानिच । दत्त्वायुक्त्यापिबेन्मात्रांक्षयकासनिपीडितः ॥ १५८ ॥

इति द्विपञ्चमूलादिघृतम् ।

जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहजाय तब उतारकर छानलेय फिर इस घीमें सज्जी जवाखार पांचों लवण मिलाकर युक्तिपूर्वक मात्राके अनुसार पिये इससे क्षयज खांसीका नाश होता है ॥ १५८ ॥

इति पंचमूलादिघृत ॥

गुडूचींपिप्पलींमूर्वांहरिद्रांश्रेयसींवचाम् । निदिग्धिकांकासमर्दंपाठां चित्रकनागरम् ॥ १५९ ॥

गिलोय पीपरि मिरोड़फली हल्दी गजपीपरि वच भटकटैया कसौंदी पाढ़र चीता तथा सोंठि ॥ १५९ ॥

जलचतुर्गुणेपक्त्वापादशेषेणतत्सम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म् । सिद्धंसर्पिःपिबेद्गुल्मश्वासा तिक्षयकासनुत् ॥ १६० ॥

इति गुडूच्यादिघृतम् ।

इनसबको चौगुने जलमें डालकर पाककरै जब चौथाई जल रहै तब उतारकर छानलेवै फिर इस जलके साथ समभाग घीका विधिपूर्वक पाक करलेवै इस घीके सेवन से श्वास गुल्म तथा क्षयजखांसी का नाश होता है ॥ १६० ॥

इति गुडूच्यादिघृत ॥

कासमर्दाभयामुस्तपाठाकट्फलना गरैः । पिप्पल्याकटुकाद्राक्षाकाश्म र्य्यैःसुरसेनच ॥ १६१ ॥

कसौंदी हड़ नागरमोथा पाढ़र कायफल सोंठि पीपरि कुटकी दाख खंभारी के बीज तथा तुलसी ॥ १६१ ॥

अक्षमात्रैर्घृतप्रस्थंक्षीरद्राक्षारसाढ के । पचेच्छोषज्वरप्लीहसर्वकास हरंशिवम् ॥ १६२ ॥

इन सब तोले २ भर ओषधियों के कल्क के २५६ दोसौ छप्पन तोले दूधके और दोसौ छप्पन तोले मुनक्काके रसके साथ चौंसठ तोले घीका पाककरै जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै इससे शोष ज्वर प्लीहा तथा सबप्रकार की खांसी का नाश होता है ॥ १६२ ॥

धात्रीफलैःक्षीरसिद्धैःसर्पिर्वाप्यवचू र्णितम् । द्विगुणेदाडिमरसेपक्वं व्योषसंयुतम् ॥ १६३ ॥ पिबेदप रिभक्तस्ययवक्षारघृतंनरः । पि प्पलीगुडसिद्धंवाच्छागक्षीरयुतंघृ तम् ॥ १६४ ॥

भोजन के उपरान्त दूधमें उबाले गये आंवलों के चूर्ण से युक्त घी अथवा अनार के द्विगुण रसके साथ पाक कियागया सोंठि पीपरि तथा मिर्च युक्त घी अथवा जवाखार के साथ पाक कियागया घी अथवा पीपरि गुड़ तथा बकरी के दूध के साथ पाक कियागया घी पीना चाहिये ॥ १६३।१६४ ॥

एतान्यग्निविवृद्ध्यर्थंसर्पींषिक्षयका सिनाम् । स्युर्दोषबन्धकोष्ठोरःस्रो तसाञ्चविशुद्धये ॥ १६५ ॥

यह घी क्षयज खांसी में अग्निकी वृद्धि करते हैं और दोषोंसे बद्धकोष्ठ वक्षस्थल तथा स्रोतों को शुद्ध करते हैं ॥ १६५ ॥

हरीतकीर्यवक्काथद्व्याढकेविंशतिंप चेत् । स्विन्नाम्मृदित्वातास्तस्मिन्पु राणंगुडषट्पलम् ॥ १६६ ॥

यवों के दोसौ छप्पन तोले काढ़े में बीस हड़ डालकर उबालै जब हड़ गलजायँ तब हड़ों को निकालकर पीसके उसी काढ़ेमें मिलावै और २४ तोले पुराना गुड़ ॥ १६६ ॥

दद्यान्मनःशिलाकर्षंकर्षार्द्धञ्चरसा ञ्जनात् । कुडवार्द्धञ्चपिप्पल्याःसले हःश्वासकासनुत् ॥ १६७ ॥

इति हरीतकीलेहः ।

तोले भर मैनशिल ६ मासे सुरमा तथा ८ तोले भर पीपरि का चूर्ण मिलाकर अव-

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

लेह बनावै इसके सेवनसे श्वास तथा खांसी का नाश होताहै ॥ १६७॥

इति हरीतकी अवलेह ॥

श्वाविधःसूचयोदग्धाःसघृतक्षौद्रश र्कराः। श्वासकासहराबर्हिःपादोवा क्षौद्रसर्पिषा ॥ १६८ ॥

साही के कांटों को जलाकर घी शक्कर तथा शहद में मिलाकर चाटने से अथवा मोर के पैरको जलाकर शहद तथा घीमें मिलाकर चाटने से श्वास तथा खांसी का नाश होता है ॥ १६८ ॥

एरण्डपत्रक्षारंवाव्योषतैलंगुडान्वि तम् । लिह्यादेतेनविधिनासुरसैर ण्डपत्रजम् ॥ १६९ ॥

अथवा अरण्डके पत्तों के क्षारको सोंठि पीपरि मिर्च तैल तथा गुड़के साथ चाटने से अथवा तुलसी तथा रेंडी के पत्तोंके क्षार को घीमें मिलाकर विधिपूर्वक चाटनेसे १६९॥

द्राक्षापद्मकवार्त्ताकपिप्पलीःक्षौद्रस र्पिषा । लिह्यात्त्र्यूषणचूर्णं वा पु राणं गुडसर्पिषा ॥ १७० ॥

अथवा मुनक्का पद्माख बनभांटा तथा पीपरि के चूर्णको शहद तथा घीमें मिलाकर चाटने से अथवा सोंठि पीपरि तथा मिर्च के चूर्णको पुराने गुड़ तथा घीके साथ चाटनेसे ॥१७०॥

चित्रकं त्रिफलाजाजी कर्कटाख्यंक टुत्रिकम् । द्राक्षाञ्चक्षौद्रसर्पिर्भ्या लिह्यादद्यादगुडेन वा ॥ १७१ ॥

अथवा चीता त्रिफला जीरा काकड़ासींगी सोंठि पीपरि मिर्च तथा मुनक्का इनको शहद तथा घीमें मिलाकर चाटने से या इन्हीं ओषधियों को गुड़में मिलाकर खानेसे खांसी तथा श्वासका नाश होता है ॥ १७१ ॥

पद्मकं त्रिफलांव्योषं विडङ्गंसुरदा रु च । बलांरास्नाञ्चतुल्यानि सूक्ष्मं चूर्णानि कारयेत् ॥ १७२ ॥

पद्माख त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च बायविडंग देवदारु बरियारा तथा रास्ना इन सब समभाग ओषधियों का सूक्ष्म चूर्णकरै १७२॥

सर्वैरेभिः समं चूर्णं पृथक्क्षौद्रघृतं सिताम् । विमथ्यलेहयेल्लेहंसर्वका सहरंशिवम् ॥ १७३ ॥

इति पद्मकादिलेहः ।

और सब चूर्ण के समान शक्कर शहद तथा घी को घोटकर चाटै इससे सब प्रकार की खांसियों का नाश होताहै ॥ १७३ ॥

जीवन्तींमधुकंपाठांत्वक्क्षीरींत्रिफ लांशटीम् । मुस्तैलेपद्मकंद्राक्षाद्बृ हत्यौवितुन्नकम् ॥ १७४ ॥

जीवन्ती मुलेहठी पाढर बंशलोचन त्रिफला कचूर नागरमोथा छोटी इलायची पद्माख मुनक्का भटकटैया बड़ी भटकटैया धनियां१७४॥

शारिवांपौष्करंमूलंकर्कटाख्यंरसाञ्ज नम् । पुनर्नवांलोहरजस्त्रायमाणां यमानिकाम् ॥ १७५ ॥

सांई पुष्करमूल काकडासींगी रसौंत गदह पूर्णा लोहेका चूर्ण त्रायमाण अजवाइन१७५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भार्ङ्गीतामलकीमृद्धिंविडङ्गंधन्वयासकम्। क्षारचित्रकचव्याम्लवेतसव्योपदारु च ॥ १७६ ॥

भारंगी भूमिआँवला ऋद्धि वायविडंग जवासा जवाखार चीता चव्य अमलवेत सोंठि पीपरि मिर्च तथा देवदारु ॥ १७६ ॥

चूर्णीकृत्यसमांशानि लेहयेत्क्षौद्रसर्पिषा। चूर्णात्पाणितलंपञ्चकासानेषव्यपोहति ॥ १७७ ॥

इन सबका सूक्ष्म चूर्णकरै इसमें से तोले भर चूर्ण लेकर शहद तथा घी में मिलाकर चाटने से पांचो प्रकार की खांसियों का नाश होता है ॥ १७७ ॥

लिह्यान्मरिचचूर्णवासघृतक्षौद्रशर्करम्। सर्वकासहरंश्रेष्ठंलेहंकासार्दितोनरः ॥ १७८ ॥

मिर्चके चूर्ण को घी शहद तथा शक्कर के साथ चाटने से सब प्रकार की खांसी नाश होती हैं और श्रेष्ठ है ॥ १७८ ॥

बदरीपत्रकल्कंवाघृतभृष्टंससैन्धवम्। स्वरभेदेचकासेचलेहमेतत्प्रयोजयेत् ॥ १७९ ॥

अथवा बेरकी पत्तियों को पीसकर सैन्धवलवण तथा घी के साथ चाटने से स्वरभंग तथा खांसी का नाश होता है ॥ १७९ ॥

पत्रकल्कंघृतैर्भृष्टंतिल्वकस्यसशर्करम्। पेयाचोत्कारिकाच्छर्दिस्तृट्कासामातिसारनुत् ॥ १८० ॥

लोधकी पत्तियों को पीसकर घी में भूनकर शक्कर मिलाके पेया तथा उत्कारिका (भक्ष्य विशेष) बनाकर सेवन करने से छर्दि तृषा खांसी तथा आमातीसार का नाश होता है ॥ १८० ॥

गौरसर्षपगण्डीरविडङ्गव्योषचित्रकान्। साभयान्साधयेत्तोयेयवागूं तेनचाम्भसा ॥ १८१ ॥ ससर्पिर्लवणांकासेहिक्काश्वासेसपीनसे। पाण्ड्वामयेक्षयेशोथेकर्णशूले च शस्यते ॥ १८२ ॥

श्वेत सरसों गांडर वायविडंग सोंठि पीपरि मिर्च चीता तथा हड इनके काढे में सैंधवलवण तथा घृत युक्त यवागू बनावै खांसी हिचकी श्वास पीनस पाण्डुरोग क्षय शोथ तथा कर्णशूल में यह यवागू हित होती है ॥ १८१ । १८२ ॥

कण्टकारीरसेसिद्धोमुद्गयूषःसुसंस्कृतः। सगोरामलकःसाम्लःसर्वकासभिषग्जितम् ॥ १८३ ॥

भटकटैया के रसमें पाक कियागया श्वेत आंवले तथा खट्टे अनार आदि खट्टाई से युक्त मूंगका यूष सब प्रकारकी खांसियों को नष्ट करता है ॥ १८३ ॥

वातघ्नौषधनिष्क्वाथंक्षीरंयूषान्रसानपि। वैष्किरप्रतुदादीनांदापयेत्क्षयकासिने ॥ १८४ ॥

क्षयज खांसी में वातघ्न औषधियों का काढा दूध यूष और विष्किर (बखेरकरखानेवाले बत्तक आदि जीव) प्रतुद (टोंट मारकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खानेवाले कबूतर आदिजीव) जीवों के मांसके रस देने चाहिये ॥ १८४ ॥

क्षतकासेचयेधूमाःसानुपानानिदर्शिताः। क्षयकासेऽपितानेवयथावस्थंप्रयोजयेत् ॥ १८५ ॥

क्षतज खांसीमें जो धूम अनुपान सहित कहेगये हैं अवस्थाके अनुसार क्षयज खांसी में भी उनका प्रयोग करना चाहिये ॥ १८५ ॥

दीपनंबृंहणञ्चैवस्रोतसाञ्चविशोधनम्। व्यत्यासात्क्षयकासिभ्योबल्यंसर्वमितंहितम् ॥ १८६ ॥

दीपन धातुवर्द्धक तथा स्रोतों को शुद्ध करनेवाली सम्पूर्ण वस्तु क्षयजखांसीमें मात्रा के अनुसार सेवन करने से बलकारी तथा हित होती हैं ॥ १८६ ॥

सन्निपातभवोऽप्येषक्षयकासःसुदारुणः। सन्निपातहितंतस्मात्सदाकार्यंभिषग्जितम् ॥ १८७ ॥

सन्निपात से हुई क्षयज खांसी अत्यन्त भयंकर होती है इस से इसमें सम्पूर्ण चिकित्सा ऐसी करनी चाहिये जो सन्निपात में हित होय ॥ १८७ ॥

दोषानुबलयोगाच्चहरेद्रोगबलाबलम्। कासेष्वेषुगरीयांसंजानीयादुत्तरोत्तरम् ॥ १८८ ॥

तीनोंदोषों में से किस दोषका बल अधिक है तथा किसका बल न्यून है यह विचारकर रोग के बलाबल को देखकर चिकित्सा करनी चाहिये पहिले कहीहुई वातजआदि खांसियां उत्तरोउत्तर बलवान् जाननी चाहिये अर्थात् वातज खांसी की अपेक्षा पित्तज खांसी अधिक बलवान् होती है तथा पित्तजकी अपेक्षा कफज अधिक बलवान् होती है इत्यादि ॥ १८८ ॥

तत्र श्लोकौ।

भोज्यंपानानिसर्पींषिलेहाःपाचनकानिच। क्षीरंसर्पिर्गुडाधूमाःकासभैषज्यसंग्रहः ॥ १८६ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। भोज्य (भोजनके योग्य वस्तु) पान (पीनेके योग्य वस्तु) घृत अवलेह पाचन दूध घृत के मोदक तथा धूम यह सब खांसी की ओषधियों का संग्रह (संक्षेप) है ॥ १८९ ॥

संस्थानिमित्तंरूपाणिसाध्यसाध्यत्वमेवच। कासानांभेषजंप्रोक्तंगरीयस्त्वञ्चकासिनः ॥ १९० ॥

इति कासचिकित्सितेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

इस कासचिकित्सित नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने खांसी की संख्या निदान लक्षण साध्यता असाध्यता चिकित्सा तथा गुरुता यह सब विषय कहा है॥ १९० ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सास्थानकाकासचिकित्सितनामबाईसवां अध्यायसमाप्तहुआ ॥ २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

छर्दिचिकित्सितम्।

यशस्विनंव्रतपोद्युतिभ्यांज्वलन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मग्न्यर्कसमप्रभावम् । पुनर्वसुंभूत हितोनिविष्टंपरिपप्रच्छ शिष्योऽत्रिजम ग्निवेशः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त छर्दि चिकित्सितनामक अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

यशस्वी वेद तथा तप तथा ज्योतिसे प्रकाशित सूर्य तथा अग्निके तुल्य प्रभाववाले प्राणियों के हित चाहनेवाले अत्रिके पुत्र पुनर्वसुजीसे अग्निवेश शिष्यने पूछा कि ॥ १ ॥

याश्छर्दयःपञ्चपुरात्वयोक्तारोगाधि कारेभिषजांवरिष्ठ । तासांचिकि त्सांसनिदानलिङ्गांयथावदाचक्ष्व नृणांहितार्थम् ॥ २ ॥

हे वैद्यों में श्रेष्ठ आपने रोगाधिकार में जो पांच प्रकारकी छर्दिका वर्णन किया उसके निदान लक्षण तथा चिकित्सा भूतों के हित के लिये कहिये ॥ २ ॥

तदग्निवेशस्यवचोनिशम्यप्रीतोभि षक्श्रेष्ठइदंजगाद । याश्छर्दयःप ञ्चपुरामयोक्तास्ताविस्तरेणब्रुवतोनि बोध ॥ ३ ॥

इस अग्निवेश के वचन को सुनकर प्रसन्न होकर वैद्यों में श्रेष्ठ भगवान् आत्रेयजी यह बोले कि जो पांच प्रकार की छर्दि मैंने पहले कही हैं उनको मैं विस्तारपूर्व्वक कहताहूं सुनो ॥ ३ ॥

दोषैःपृथक्त्रिप्रभवाश्चतस्रोद्विष्टार्थ योगादपिपञ्चमीस्यात । तासांहृद

त्क्लेशकफप्रसेकोद्वेषोऽशनेचैवहि पूर्वरूपम् ॥ ४ ॥

वातज पित्तज कफज सन्निपातज तथा द्विष्टार्थ योगज यह पांच प्रकार की छर्दि होती हैं हृदयमें उत्क्लेश (उबकाई आनी हृदयमें पीड़ा होनी और कै न होना) कफ औ पानी मुखसे छूटना और अन्नसे द्वेष यह छर्दिके पूर्वरूप हैं ॥ ४ ॥

व्यायामतीक्ष्णौषधशोकरोगभयो पवासाद्यतिकर्षितस्य । क्रुद्धोमहा स्रोतसिमातरिश्वादोषान्समुत्क्लि श्यतदूर्द्धमस्यन् । आमाशयोद्रे ककृताश्चमर्मप्रपीडयञ्छर्दिमुदीरये च्च ॥ ५ ॥

व्यायाम (कसरत वगैरः) तीक्ष्ण औषध शोक रोग भय उपवास आदि से अति कार्षित मनुष्य के महास्रोतमें कुपित वायु आमाशयमें एकट्ठा भये सब दोषों को उभाड़कर मर्म्मों में पीड़ा तथा छर्दि को उत्पन्न करती है ॥ ५ ॥

हृत्पार्श्वपीडामुखशोषमूर्द्धनाभ्य र्तिकासस्वरभेदतोदैः ॥ ६ ॥

उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंविच्छिन्नकृ ष्णंतनुकंकषायम् । कृच्छ्रेणचाल्पं महताचवेगेनार्त्तोऽनिलाच्छर्दयती हदुःखम् ॥ ७ ॥

वातजछर्दि में हृदय पसुली मस्तक तथा नाभिमें पीड़ा मुखका सूखना खांसी स्वरभंग सुई चुभोनेकीसी पीड़ा बहुत शब्द केसाथ उ

CC-0. Gangamahal Math Collection. Digitized by eGangotri

कार और अत्यन्त कष्ट तथा वेग सहित फेने समेत उष्ण कसैले पतले पदार्थ की थोड़ीसी वमन होती है॥ ६।७॥

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैरामाशयेपित्तमुदीर्णवेगम्। रसायनीभिर्विसृतंप्रपीड्यमर्मोर्द्ध्वमागम्यवमिं करोति॥ ८॥

अजीर्ण कडुवे खट्टे विदाही तथा उष्ण आदि पदार्थों से आमाशय में बढ़ाहुआ पित्त रसवहा नाड़ियों से फैलकर मर्म्मों को पीड़ा देता हुआ ऊपर आकर वमन को उत्पन्न करता है॥ ८॥

मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसन्तापतमोभ्रमार्त्तः। पित्तंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूम्रञ्चपित्तेनवमेत्सदाहम्॥ ९॥

पित्त की छर्दि में मूर्च्छा तृषा मुख का सूखना अन्धकारसा मालूम होना भ्रम मस्तक तालु तथा नेत्रों में दाह और अत्यन्त उष्ण हरित तिक्त धूम्रवर्ण दाह सहित वमन होती है॥ ९॥

स्निग्धातिगुर्वामविदाहिभोज्यैःस्वपादिभिश्चैवकफोऽतिवृद्धः। उरःशिरोमर्मरसायनीश्चसर्वाःसमावृत्यवमिं करोति॥ १०॥

अतिस्निग्ध अतिगुरु अपक्क तथा विदाही भोजनों से तथा अतिस्वप्नादि से बढ़ा कफ हृदय शिर मर्म्म तथा रसवहा नाड़ियों को ढककर वमन उत्पन्न करता है॥ १०॥

तन्द्रास्यमाधुर्य्यकफप्रसेकसन्तोषनिद्रारुचिगौरवार्त्तः। स्निग्धंघनं स्वादुकफंविशुद्धंसलोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु॥ ११॥

कफकी छर्दि में तन्द्रा मुखकी मधुरता कफका बहना तृप्ति निद्राकी अधिकता रोमांच अरुचि तथा शरीर में भारीपन होता है और थोड़ी पीड़ा सहितस्निग्ध घने तथा मधुररस युक्त श्वेतपदार्थ की वमन होती है॥ ११॥

समश्नतःसर्वरसान्प्रसक्तमामप्रदोषर्त्तुविपर्य्ययैश्च। सर्वेप्रकोपंयुगपत्प्रपन्नाच्छर्दिंत्रिदोषां जनयन्तिदोषाः॥ १२॥

अत्यन्त सब रसोंके सेवन तथा ऋतु विपरीत सेवन से आम दोषसे कुपित सब दोषोंके युगपत् (एकसंग या एकाएक) प्रकाश होने से त्रिदोषज छर्दि उत्पन्न होती है॥ १२॥

शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलाप्रसक्तम्। छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्लनीलसान्द्रोष्णरक्तं वमतांनृणांस्यात्॥ १३॥

त्रिदोषज छर्दिमें शूल भोजन का न पचना अरुचि दाह तृषा श्वास तथा मोह होता है और घने उष्ण नील तथा रक्तवर्ण लवण तथा अम्ल रसयुक्त पदार्थ की सदैव वमन होती है॥ १३॥

विट्स्वेदमूत्राम्बुवहानिवायुःस्रोतांसिसंरुध्ययदोर्द्ध्वमेति। उत्सन्नदोष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्यतदाचितंतंदोषंसमुद्धूयनरस्यकोष्ठात् ॥ १४ ॥

जब वायु विष्ठा स्वेद मूत्र तथा जलवहा नाड़ियों को रोककर ऊपर को जाती है तब दोषयुक्त मनुष्य के कोष्ठसे संचित दोषों को लेकर ॥ १४ ॥

विण्मूत्रयोस्तत्समवर्णगन्धंतृट्श्वासहिक्कार्त्तियुतंप्रसक्तम् । प्रच्छर्दयेद्दुष्टमिहातिवेगाद्भयार्दितश्चाशुविनाशमेति ॥ १५ ॥

विष्ठा तथा मूत्रके तुल्य गन्धयुक्त वमन को बड़े वेगसे उत्पन्न करती है और तृषा श्वास हिचकी तथा पीड़ासे युक्त करतीहै इससे भय से व्याकुल होकर मनुष्य बहुत शीघ्र मरजाता है ॥ १५ ॥

द्विष्टप्रतीपाशुचिपूत्यमेध्यबीभत्सगन्धाशनदर्शनैश्च । यच्छर्दयेत्तप्तमनामनोघ्नैर्द्विष्टार्थसंयोगभवामता सा ॥ १६ ॥

द्विष्ट (जैसे चीज को एकदफे खाकर नफरत होजावै) जो अपने अनुकूल न होवै अपवित्र दुर्गन्धियुक्त अमेध्य (धारणा शक्ति को नष्ट करनेवाले) तथा जिसको देखके घिन आवै ऐसे गन्धयुक्त भोजन करने से अथवा देखने से व्याकुल चित्त मनुष्य को जो वमन होती है उसको द्विष्टार्थ योगज छर्दि कहते हैं ॥ १६ ॥

क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रवृद्धासोपद्रवाशोणितपूययुक्ता । सचन्द्रिकंतांप्रव-दन्त्यसाध्यांसाध्याचिकित्सेदनुपद्रवाञ्च ॥ १७ ॥

जो क्षीण पुरुष को उपद्रव सहित रुधिर तथा पीवसे मिलीहुई मोरके पूंछके समान वर्णयुक्त सदैव वमन होय वह असाध्य है और जो उपद्रव सहित न होय तो साध्य है और उसकी चिकित्सा करनीभी योग्यहै ॥ १७ ॥

आमाशयोत्क्लेशभवाहिसर्वाश्छर्द्योमतालङ्घनमेवतस्मात् । प्राक्कारयेन्मारुतजांविमुच्यसंशोधनंवाकफपित्तहारि ॥ १८ ॥

सब प्रकारकी छर्दि आमाशयमें दोषके इकट्ठे होने से उत्पन्न होती हैं इसलिये इसमें लंघन कराना चाहिये परन्तु वातजछर्दिमें लंघन न कराना चाहिये इसके उपरान्त कफपित्त नाशक संशोधन औषध देना चाहिये ॥१८॥

चूर्णानिलिह्यान्मधुनाभयानांहृद्यानिवायानिविरेचनानि । मद्यैःपयोभिश्चयुतानियुक्त्यानयन्त्यधोदोषमुदीर्णमूर्द्धम् ॥ १९ ॥

छर्दिरोग में हड़ और शहद अथवा जो हृदय को अच्छे लगें ऐसे विरेचन देवै अथवा युक्तिसे मद्य वा जलसे युक्त विरेचन देवै जो कि ऊपर को आयेहुये दोषों को नीचे लेजाते हैं ॥ १९ ॥

वल्लीफलाद्यैर्वमनंपिबेद्वायोदुर्बलस्तंशमनैश्चिकित्सेत् । रसैर्मनोज्ञैर्लघुभिर्विशुष्कैर्भक्ष्यैःसभोज्यैर्विविधैश्चपानैः ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथवा छर्दिरोग में अजमोद औ मैनफल के द्वारा वमन करावै और जो रोगी दुर्बल होय तो उसको अच्छे लगनेवाले रस लघु और शुष्क भोजन तथा भोजनके साथ नाना प्रकारके पानकेद्वारा रोगकी शान्तिकरै॥२०॥

सुसंस्कृतास्तित्तिरिबर्हिलावरसाव्य पोहन्त्यनिलप्रवृत्ताम्। छर्दिंतथाकोलकुलत्थधान्यबिल्वादिमूलाम्लयवैश्चयूषः॥ २१॥

वातजनित छर्दिमें तीतर बटेर और मोर के मांसका रस तथा बेर कुलथी धनियां बिल्वादि मूल तथा यव इन का यूष देवै ॥२१॥

वातात्मकेहृद्द्रवकासयुक्तोनरःपिबेत्सैन्धववद्घृतंतु। सिद्धंतथाधान्यकनागराभ्यांदध्नाचतोयेनचदाडिमस्य॥ २२॥व्योषेणयुक्तांलवणैस्त्रिभिश्चघृतस्यमात्रामथवाविदध्यात्। स्निग्धानिहृद्यानिचभोजनानि रसैःसयूषैर्दधिदाडिमाम्लैः॥ २३॥

जब वातात्मक छर्दि हृद्रोग तथा कास से युक्त होवे तो सैंधवलवण और घी पीवे अथवा धनियां सोंठ दही और दाड़िम का रस तीनों निमक औ सोंठ मिरच पीपलके साथ सिद्ध कियागया घी मात्राके अनुसार पीवै और चिकने तथा हृद्य पदार्थों का दही वा दाड़िमके रससे अम्ल मांसके रस तथा यूष के साथ भोजन करै॥ २२।२३॥

पित्तात्मिकायामनुलोमनार्थंद्राक्षाविदारीक्षुरसैस्त्रिवृत्स्यात्। कफाशयस्थन्त्वतिमात्रवृद्धंपित्तंहरेत्स्वादुभिरूर्द्ध्वमेव॥ २४॥

पित्तजनित छर्दि में अनुलोमन के अर्थ (दोषों को मार्गके अनुसार करनेके लिये) दाख भुइकोहड़ा तथा ऊंखके रसके साथ विधारा देवै बहुत बढ़ेहुये कफाशय में स्थित पित्त को मधुर पदार्थोंकेद्वारा ऊपर को निकालै॥ २४॥

शुद्धायकालेमधुशर्कराभ्यांलाजैश्चमन्थंयदिवापिपेयाम्। प्रदापयेन्मुद्गरसेनवापिशाल्योदनंजाङ्गलजैरसैर्वा॥ २५॥

जब वमनकेद्वारा शुद्ध होजाय तब शहद शक्कर और खीलोंके साथ मन्थ (पतले सत्तू) यापेया देवै अथवा मूंगका रस या जंगली जीवोंके मांसके रसके साथ शालिधानका भात देवै॥ २५॥

सितोपलामाक्षिकपिप्पलीभिः कुल्माषलाजायवशक्तुगृञ्जान्। खर्जूरमांसान्यथनारिकेलंद्राक्षामथोवाबदराणिलिह्यात्॥ २६॥

मिश्री शहद औ पीपलके साथ कां (एक प्रकारका मांड़ बीमारों को दिया जाता है) खील या जौके सत्तू और गा जर खजूर की छाल या नारियल या दाख या बेर चाटै॥ २६॥

स्रोतोजलाजोत्पलकोलमज्जचूर्णानिलिह्यान्मधुनाभयाञ्च। कोलास्थिमज्जाञ्जनमाक्षिकाविट्लाजासि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तामागधिकाकणावा ॥ २७ ॥

अथवा शहदके साथ बेंत खील कमल खील बेरकी मज्जा (मींगी) का चूर्ण अथवा हड़का चूर्ण चाटै या बेरकी अस्थिकी मज्जा अञ्जन मक्षिकाकी विष्ठा खील सफेद पीपल या केवल पीपल चाटै ॥ २७ ॥

द्राक्षारसंवापिपिबेत्सुशीतंमृदभृष्टलोष्ठप्रभवंजलंवा। जम्ब्वाम्रयोःपल्लवजं कषायंपिबेत्सुशीतंमधुसंयुतंवा॥२८॥

अथवा दाख का शीतल काथ पीवै या मट्टी अथवा गरम करेहुये कंकड़का पानी पियै या जामुन और आमके पत्तोंका शीतल काढ़ा शहदके साथ पीवै ॥ २८ ॥

निशिस्थितंवारिसमुद्गकृष्णंसोशीरधान्यंचणकोदकंवा। गवेधुकामूलजलंगुडूच्याजलंपिबेदिक्षुरसंपयोवा ॥ २९ ॥

वासी पानी मूंग पीपल खस धनियां और चनेका पानी गरेडुवाकी जड़का पानी या गुरचका रस ऊखका रस या दूध ॥ २९ ॥

सेव्यंपिबेत्काञ्चनगैरिकंवासबालकं तण्डुलधावनेन। धात्रीरसेनोत्तम चन्दनंवातृष्णावमिघ्नानिसमाक्षिकाणि॥ ३० ॥

अथवा चावलका पानी और शहद या सुवरन गेरू या सुगन्धबाला या आंवले का रस और सफ़ेद चन्दन का रस शहदयुक्त पीवै ये सब औषध तृष्णा तथा वमन का नाश करने वाली हैं॥ ३० ॥

कल्कंतथाचन्दनचव्यमांसीद्राक्षोत्तमाबालकगैरिकाणाम्। शीताम्बुनागैरिकशालिचूर्णमूर्वातथातण्डुलधावनेन ॥ ३१ ॥

अथवा चन्दन चव्य जटामांसी दाख सुगंधवाला गेरू इनके कल्क को शीतल जल से अथवा गेरू शालिधानका चूर्ण मिरोरफली को चावलों के धोवन से पीवे ॥ ३१ ॥

कफात्मिकायांवमनंप्रशस्तंसपिप्पलीसर्षपनिम्बतोयैः। पिण्डीतकैःसैन्धवसम्प्रयुक्तैर्वम्यांकफामाशयशोधनार्थम् ॥ ३२ ॥

कफजनित छर्दिमें वमन कराना अच्छाहै इससे कफाशय तथा आमाशय के शुद्ध करने के लिये पीपल सरसों तथा नीमका काढ़ा देवै या सेंधानिमक और मैनफल देवै ॥३२॥

गोधूमशालीन्सयवान्पुराणान्यूषैःपटोलामृतचित्रकाणाम्। व्योषस्य निम्बस्यचतक्रसिद्धैर्यूषैःफलाम्लैःकटुभिस्तथाद्यात् ॥ ३३ ॥

अथवा परवल गिलोय चीता सोंठ मिरच पीपल नीम इन सबको मट्ठेमें पकाकर त्रिकटु के द्वारा कटुकरके अथवा दाड़िम या बिजौरा-नींबूके द्वारा खट्टा करके पुराने गेहूं शालिधान के चावल या जौंकेसाथ खावे॥ ३३ ॥

रसांश्चशूल्यानिचजाङ्गलानांमांसानिजीर्णान्मधुशीधुरिष्टान्। रागांस्तथाषाडवपानकानिद्राक्षाकपित्थैःफलपूरकैश्च ॥ ३४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मांसकारस जांगलजीवों के मांस का कवाव पुराने मधु (मद्यविशेष) शीधु तथा अरिष्ट रागषाडव (गुडंवा) और मुनक्का कैथा तथा बिजौरानींबू कफजछर्दि में हित होते हैं ॥ ३४ ॥

मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कलायान्भृष्टान्युतान्नागरमाक्षिकाभ्याम् । लिह्यात्तथैवत्रिफलाविडङ्गचूर्णंविडङ्गप्लवयोरसंवा ॥ ३५ ॥

मूंग मसूर चना मटर भुनाकर शहद और सोंठ के साथ खाय अथवा त्रिफला और वायविडंग का चूर्ण अथवा केंवटी मोथा और वायविडंग का चूर्ण खाय ॥ ३५ ॥

सजाम्बवंवाबदरस्यचूर्णंमुस्तायुतांकर्कटकस्यशृङ्गीम् । दुरालभांवामधुसम्प्रयुक्तांलिह्यात्कफच्छर्दिविनिग्रहार्थम् ॥ ३६ ॥

अथवा वेर और जामुनका चूर्ण खाय अथवा मोथा और काकंडासिंगी का चूर्णखाय या जवासा शहद के साथ चाटै इस से कफ की छर्दिका नाश होता है ॥ ३६ ॥

मनःशिलायाःफलपूरकस्य रसैःकपित्थस्यचपिप्पलीनाम् । क्षौद्रेणचूर्णंमरिचैश्चयुक्तंलिहञ्जयेच्छर्दिमुदीर्णवेगाम् ॥ ३७ ॥

अत्यन्त तीक्ष्ण छर्दि भी बिजौरे का रस मैनसिल कैथा पीपल और मिरचका चूर्ण शहदके साथ चाटने से शान्त होजातीहै ३७॥

यैपापृथक्त्वेनमयाक्रियोक्तातांसन्निपातेऽपिसमीक्ष्यबुद्ध्या । दोषर्त्तुरोगाग्निबलान्यवेक्ष्यप्रयोजयेच्छास्त्रविदप्रमत्तः ॥ ३८ ॥

जो मैंने यह छर्दिकी चिकित्सा पृथक् २ कही उसही चिकित्सा को शास्त्रज्ञ वैद्य सावधानता से बुद्धिसे विचार कर और दोषऋतु अग्निबल को देखकर सन्निपात में भी करै ॥ ३८ ॥

मनोऽभिघातेतुमनोऽनुकूलावाचःसमाश्वासनहर्षणानि । लोकप्रसिद्धाःश्रुतयोवयस्याःशृङ्गारिकाश्चैवहिताविहाराः ॥ ३९ ॥

मनोऽभि घातजन्य छर्दि में मनके अनुकूल वाणी समझाना प्रसन्न करना लोक प्रसादव श्रुति मित्रगण तथा शृंगारसम्बन्धी विहार अत्यन्त हित हैं ॥ ३९ ॥

गन्धाविचित्रामनसोऽनुकूलामृत्पुष्पशुक्ताम्लफलादिकानाम् । शाकानिभोज्यान्यथपानकानिसुसंस्कृताःषाडवरागलेहाः ॥ ४० ॥

मनोऽभिघातज छर्दि में मनके अनुनानाप्रकारके गन्ध मृत्तिका तथा पुष्पकी शुक्लाम्लफल (तिंतिडीक) आदिकश भोज्य पान खाड़व (एक प्रकार का गा चुवाव या गुरंवा दवा पड़ाहुआ) रागषाड व तथा लेह अच्छे होते हैं ॥ ४० ॥

यूषारसाकाम्बलिकाखडाश्चमांसानिधानाविविधाश्चभक्ष्याः । फलानि

मूलानिचगन्धवर्णरसैरुपेतानिवमिं जयन्ति ॥ ४१ ॥

गन्धरस तथा वर्णसे युक्त फल और मूल तथा नानाप्रकार के भक्ष्य जौके सत्तू मांस खड़ (यूषविशेष) काम्बलिक रस और यूष यह वमन को जीतते हैं ॥ ४१ ॥

गन्धंरसंस्पर्शमथापिशब्दंरूपञ्चय द्यत्प्रियमप्यसात्म्यम् । तदेवकु र्यात्प्रशमायतस्यास्तज्जोहिरोगः सुखमेवजेतुम् ॥ ४२ ॥

गन्ध रस स्पर्श शब्द तथा रूप यद्यपि रोगी को असात्म्य हो परन्तु प्रियहोंतो देवै क्यों- कि मनोऽभिघातज छर्दि में मनोऽनुकूल प- दार्थही से रोग का जय होता है ॥ ४२ ॥

छर्द्युत्थितानाञ्चचिकित्सितात्स्वाच्चि कित्सितंकार्य्यमुपद्रवाणाम् । अ तिप्रवृत्तासुविरेचनस्यकर्मातियोगे विंहितंविधेयम् ॥ ४३ ॥

वमनजन्य उपद्रवों में वमनोक्त चिकित्सा करनी चाहिये यदि वमन अत्यन्त बढ़जाय तो विरेचन के अतियोगमें जो विधि कही है वह करनी चाहिये ॥ ४३ ॥

वमिप्रसङ्गात्पवनोऽप्यवश्यंधातुक्षया द्वृद्धिमुपैतितस्मात । चिरप्रवृत्ता स्वनिलापहानिकार्य्याण्युपस्तम्भन बृंहणानि ॥ ४४ ॥

वमनमें धातुक्षय होने से वायु बढ़जाता है इससे यदि वमन बहुत दिनका होजाय तो वायुके शान्त करनेवाली स्तम्भन तथा बृंहण औषध देनी चाहिये ॥ ४४ ॥

सर्पिर्गुडाःक्षीरविधिर्घृतानिकल्याण कत्र्यूषणजीवनानि । वृष्यास्तथा मांसरसाःसलेहाश्चिरप्रसक्ताञ्चवमिंज यन्ति इति ॥ ४५ ॥

घी गुड़ क्षीरविधि कल्याणक घृत त्र्यूषणा- दि घृत जीवनीयघृत वृष्यपदार्थ मांस रस तथा लेह यह सब वस्तु दीर्घकालीन छर्दि को भी जीतती हैं ॥ ४५ ॥

तत्रश्लोकः ।

संख्याहेतुंलक्षणमुपद्रवान्साध्यताञ्च योगांश्च । छर्दीनांप्रशमार्थंप्राहचि कित्सितंमुनिवर्य्यः ॥ ४६ ॥

इति छर्दिचिकित्सितंत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

तिसमें यह श्लोक है। मुनिवर आत्रेयजी ने छर्दिकी शान्तिके अर्थ छर्दिरोगकी संख्या हेतु लक्षण उपद्रव साध्यता तथा योगों को कहा ॥ ४६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंछर्दिचिकि त्सितनामतेईसवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ २३ ॥

चौबीसवांअध्याय ॥

तृष्णाचिकित्सितम् ।

ज्ञानप्रशमतपोभिःख्यातोऽत्रिसुतो जगद्धितेऽभिरतः । तृष्णानांप्रश मार्थंचिकित्सितंप्राहपञ्चानाम् १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब तृष्णाचिकित्सितनामक अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय-जीने कहा ॥

ज्ञान शान्ति तथा तपमें प्रसिद्ध संसार के हितमें लगेभये भगवान् आत्रेयजी पांच प्रकार तृष्णा की शान्ति के लिये चिकित्सा कहते भये ॥ १ ॥

क्षोभाद्भयाच्छ्रमादपिशोकात्क्रोधाद्विलङ्घनान्मद्यात् । क्षाराम्ललवणकटुकोष्णरूक्षशुष्कान्नसेवाभिः २॥

क्षोभ भय श्रम शोक क्रोध लंघन मद्य सेवन क्षार खट्टे निमकीन कडुवे उष्ण रूखे सूखे अन्न का खाना ॥ २ ॥

धातुक्षयगदकर्षणवमनाद्यतियोगसूर्य्यसन्तापैः । पित्तानिलौप्रवृद्धौ सौम्यान्धातूंश्चशोषयतः ॥ ३ ॥

धातुक्षयरोग से अतिकृशना वमनादिका अतियोग तथा घाम इन कारणों से पित्त और वायु बढ़कर सौम्यधातुको सुखाकर ३॥

रसवाहिनीश्चनालीर्जिह्वामूलगलतालुक्लोम्नः । संशोष्यनृणांदेहेकुरुतस्तृष्णांमहाबलावेतौ ॥ ४ ॥

रसवहानाड़ी जिह्वा मूल कंठ तालु तथा क्लोम (पेटमें जहां पानी रहताहै और प्यासलगती है) को भी सुखाकर मनुष्य के देह में तृष्णाको उत्पन्न करते हैं और महाबलवान् पित्त और वायु ॥ ४ ॥

पीतंपीतंहिजलंशोषयतस्तमतोनयातिशमम् । घोरव्याधिकृशानांप्रभवत्युपसर्गभूतासा ॥ ५ ॥

पिये हुये जलको सुखादेते हैं इससे तृष्णा नहीं शान्त होतीहै इस तृष्णारूपी भयानक रोग से कृश मनुष्यों को तृष्णा उपसर्गरूप अर्थात् उत्पात होजाती है ॥ ५ ॥

प्राग्रूपंमुखशोषंस्वलक्षणंसर्वदाम्बुकामित्वम् । तृष्णानांसर्वासांलिङ्गानांलाघवमपायः ॥ ६ ॥

सब तृष्णाका पूर्वरूप मुहका सूखना है और प्रतिक्षण जलकी इच्छा तथा लघुताका नाश तृष्णाका लक्षण है ॥ ६ ॥

मुखशोषस्वरभेदभ्रमसन्तापप्रलापसंस्तम्भान् । ताल्वोष्ठकण्ठजिह्वाकर्कशतांचित्तनाशञ्च ॥ ७ ॥

पांच प्रकारकी तृष्णा उत्पन्न होकर मुख शोष स्वरभंग भ्रम सन्ताप बकना संस्तम्भ तालु ओष्ठ कंठ तथा जिह्वाकी कर्कशता चित्त बिगड़ना ॥ ७ ॥

जिह्वानिर्गममरुचिंबाधिर्य्यंमर्मदूयनंसादम् । तृष्णोद्भूताकुरुते पञ्चविधालिङ्गतःशृणुताम् ॥ ८ ॥

जिह्वा निर्गम (जिह्वाका निकल पड़ना अरुचि बधिरता मर्म्मोंमें सन्ताप तथा अवसाद (गिरासा पड़ना या टूटना) को उत्पन्न करती है अब उनके पांच प्रकारके लक्षण सुनो ॥ ८ ॥

अब्धातुंदेहस्थंकुपितः पवनोयदाविशोषयति । तस्मिञ्छुष्केशुष्यत्यबलस्तृष्यत्यथविशुष्यन् ॥ ९ ॥

वातजतृष्णामें कुपित वायु जब देहके जलसम्बन्धी धातुओं को सुखाती है तब धातु-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओंके शुष्क होने से दुर्बल मनुष्य शुष्क होकर तृष्णारोगमें ग्रस्त होता है ॥ ९ ॥

निद्रानाशःशिरसोभ्रमस्तथाशुष्कविरसमुखताच । स्रोतोऽवरोधइतिचस्याल्लिङ्गंवाततृष्णायाः ॥ १० ॥

निद्रानाश शिरका घूमना मुखका विरस होना और सूखना तथा स्रोतों का उपरोध (रुकना) यह लक्षण वातजतृषा में होते हैं ॥ १० ॥

पित्तंमतंकुपितमाग्नेयंकुपितंतापयत्यपांधातुम् । सन्तप्तःसहिजनयेत्तृष्णांदाहोल्बणांनृणाम् ॥ ११ ॥

कुपित पित्त अग्निरूप होकर जलीयधातुओं को तप्त करताहै यह तप्त धातु दाहयुक्त तृष्णाको उत्पन्न करती हैं ॥ ११ ॥

तिक्तास्यत्वंशिरसोदाहःशीताभिनन्दतामूर्च्छा । पीताक्षिमूत्रवर्चस्त्वमाकृतिःपित्ततृष्णायाः ॥ १२ ॥

मुखमें कटुता शिरमें दाह शीतकी इच्छा मूर्च्छा और आंख मूत्र तथा मल में पीतता यह पित्तज तृष्णा के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

तृष्णायाऽहम्प्रभवासाप्याग्नेय्यामपित्तजनितत्वात् । लिङ्गंतस्याश्चारुचिराध्मानकफप्रसेकौच ॥ १३ ॥

जो तृष्णा आमसे (पदार्थों के न पक होनेसे) उत्पन्न होतीहै वह भी आग्नेयी तृष्णा है क्योंकि वह आम तथा पित्तसे उत्पन्न होती है अरुचि पेटका फूलना तथा मुख से कफ का बहना यह उसके लक्षण हैं ॥ १३ ॥

देहोरसजोऽम्बुभवोरसश्चतस्यक्षयाच्चतृष्येत्तु । दीनस्वरःप्रताम्यन्संशुष्कहृदयगलतालुः ॥ १४ ॥

देह रससे और रसजल से उत्पन्न होता है जब जल तथा रसका क्षय भया तब मनुष्य को दीनस्वर ग्लानि हृदय कंठ तथा तालुका सूखना यह रसक्षयजतृष्णा कहलातीहै १४॥

भवतिखलुसोपसर्गातृष्णासाशोषिणीकष्टा । ज्वरमेहक्षयशोषश्वासाद्युपसृष्टदेहानाम् ॥ १५ ॥ सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रसक्तानाम् । घोरोपद्रवयुक्तास्तृष्णामरणायविज्ञेयाः ॥ १६ ॥

यदि रसक्षयज तृष्णा में उपद्रव होंतो कष्टसाध्य है ज्वर प्रमेह क्षय शोष तथा श्वासआदि रोग युक्त मनुष्य और रोग कृश तथा छर्दियुक्त मनुष्यों को उपद्रवयुक्त तृष्णा मारही डालती है ॥ १५ । १६ ॥

नाग्निंविनाहितर्षःपवनाद्वातौहिशोषणेहेतू । अब्धातोरतिवृद्धावपांक्षयेतृष्यतेनरोहि ॥ १७ ॥

अग्नि या तृषा वायु के विना नहीं होती क्योंकि वहुत वढ़कर वह ही दोनों जलीय धातुओंको सुखासक्त हैं जलीयधातुओं के सूखनेसे मनुष्यको तृष्णा उत्पन्न होतीहै॥१७॥

गुर्वन्नपयःस्नेहैःसंमूर्च्छद्भिर्विदाहकालेच । यस्तृष्येत्कृतमार्गेतत्राप्यनिलानलौहेतू ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारी अन्न दूध तथा घी के परिपाक के स-

मय बढ़ने से जब वायु तथा अग्नि रुकजाती है तब तृष्णा उत्पन्न होती है यहांपर भी यह-ही दोनों तृष्णा में हेतु हैं ॥ १८ ॥

तीक्ष्णोष्णरूक्षभावान्मद्यंपित्तानिलौप्रकोपयति। शोषयतोऽपांधातुंतावेवमद्यशीलानाम् ॥ १९ ॥

तप्तास्त्रिवसिकतासुहितोयमाशुष्यतिक्षिप्तम्। तेषांसन्तप्तानांहिमजलपानाद्भवतिशर्म ॥ २० ॥

तीक्ष्ण उष्ण तथा रूक्ष होने के कारण मद्य पित्त तथा वायु को कुपित करती है कुपितवात और पित्त जलीय धातुओं को तप्त वालूकी नाई सुखा देते हैं इससे सन्ताप युक्त मनुष्यों को ठंढापानी बहुत शीघ्र कल्याण-कारक होता है ॥ १९। २० ॥

शिशिरस्नातस्योष्मारुद्धःकोष्ठंप्रपद्यतर्षयति। तस्मान्नोष्णःक्लान्तोभजेतसहसाजलंशीतम् ॥ २१ ॥

शिशिरजल के स्नान करने से शरीर की ऊष्मा रुककर कोष्ठमें प्राप्त होकर तृष्णा को उत्पन्न करती है इससे उष्ण तथा क्लान्त मनुष्य सहसा शीतल जलसे स्नान न करै॥२१॥

लिङ्गंसर्वास्वेतास्वनिलक्षयात्पित्तजंभवत्यथतु। पृथगागमाच्चिकित्सितमतःप्रवक्ष्यामितृष्णानाम्॥२२॥

वायुके क्षय होनेसे इन सबमें पित्तके लक्षण होते हैं अब सब तृष्णाओं की चिकित्सा पृथक् २ कहताहूं ॥ २२ ॥

अपांक्षयाद्धितृष्णासंशोष्यनरंप्रणाशयेदाशु। तस्मादैन्द्रंतोयंसमधुपिबेत्तद्गुणंवान्यत् ॥ २३ ॥

जलके क्षय होनेसे तृष्णा मनुष्य को सुखाकर शीघ्रही नष्ट करदेती है तिससे ऐन्द्र जल मधु सहित पीवै अथवा ऐसेही गुणवाला अन्य कोई जल पीवै ॥ २३ ॥

किञ्चित्तुवरानुरसंतत्रलघुशीतलंसुगन्धिसुरसम्। अनभिष्यन्दिचयत्तत्क्षितिगतमप्यैन्द्रवज्ज्ञेयम् ॥ २४ ॥

जो पृथिवी का जल अतिन्यून कसैला हो लघु शीतल सुगन्धित सुस्वाद और अनभिष्यन्दी हो वह ऐन्द्र जलके तुल्यहै॥२४॥

शृतंशीतंससितोपलमथवाशरपूर्वपञ्चमूलेन। लाजासक्तून्सिताक्तान्मधुयुतमैन्द्रेणवामन्थम् ॥ २५ ॥

अथवा शरादि पञ्चमूल का क्काथ शृत (पकाने से जब आधा पानी रहजाय) तथा शीतल करके मिश्री मिलाकर ऐन्द्र जलके तुल्य होता है लाजा (शाल्यादि अन्न भूनने से लाजा कहलाते हैं) के सत्तू मिश्री और शहद मिलाकर मन्थ (जवके सत्तू घी मिले औ शक्कर मिले न बहुत गाढ़े न बहुत पतले) ऐन्द्र जलमें देवै ॥ २५ ॥

वाट्यंवामयवानांशीतंमधुशर्करायुतंदद्यात्। पेयांवाशालीनांदद्याद्वाकोरदूषाणाम् ॥ २६ ॥

अथवा शहद शक्कर मिलाकर ठंढे पानी में कच्चे जौका वाट्य (जवों को दलके यवागूकी तरह पकाया गया) देवै अथवा कोदौं या शालयन्न की पेया (चौदहगुने जलमें पकाया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भया पदार्थ पेया कहलाता है) देवै ॥ २६ ॥

पयसाशृतेनभोजनमथवामधुशर्करायुतंभोज्यम् । पारावतादिकरसैर्घृतभृष्टैर्वाप्यलवणाम्लैः ॥ २७ ॥

शृत दुग्ध के साथ भोजन अथवा शर्करा और शहद के साथ भोजन अथवा अनम्ल तथा अलवण पारावतादिके रस घीमें भूनकर भोजनमें देवै ॥ २७ ॥

तृणपञ्चमूलमुञ्जातकैःपियालैश्चजाङ्गलाःसुकृताः । शस्तारसाःपयोवातैःसिद्धंशर्करामधुमत् ॥ २८ ॥

तृण पञ्चमूल सरकी चिरौंजी के साथ सिद्धकरे हुए जाङ्गल मांसरस अथवा इन्हीं औषधोंकेद्वारा सिद्ध दुग्ध शर्करा और मधु मिलाकर देवै ॥ २८ ॥

शतधौतघृतेनाक्तःपयःपिबेच्छीततोयमवगाह्य । मुद्गमसूरचणकजारसास्तुभृष्टाघृतेदेयाः ॥ २९ ॥

शतबार धोयेहुये घृत को शरीर में मलकर ठंढे पानीमें स्नान करके दुग्ध पियै घृतमें सिद्धकरे भये मूंग मसूर तथा चनों के यूष को पियै ॥ २९ ॥

मधुरैःसंजीवनीयैःशीतैश्चसतिक्तकैः शृतंक्षीरम् । पानाभ्यञ्जनसेकेष्विष्टं मधुशर्करायुक्तम् ॥ ३० ॥

मधुरगण जीवनीयगण तिक्तक (परवर या इगुनी)तथा ठंढे द्रव्योंके द्वारा सिद्ध दुग्ध मधु तथा शर्करा युक्त पान अंजन तथा सेकमें हित है ॥ ३० ॥

तज्जंवाघृतमिष्टंपानाभ्यङ्गेषुनस्यमपिचस्यात् । नारीपयःसशर्करमुष्ट्र्या अपिनस्यमिक्षुरसः ॥ ३१ ॥

अथवा पूर्वोक्त औषधद्वारा सिद्ध घृत पान अभ्यंग तथा नस्यमें हितहै शर्करायुक्त स्त्रीका दूध अथवा ऊंटनीका दूध व ऊख का रस नस्यमें तृष्णावाले को हितकारी है ॥ ३१ ॥

क्षीरेक्षुरसगुडोदकसितोपलाद्यैःक्षौद्रशीधुमाध्वीकैः । वृक्षाम्लमातुलुङ्गैर्गण्डूषास्तालुशोषघ्नाः ॥ ३२ ॥

दुग्ध ऊंखका रस गुडोदक मिश्री आदि शहद शीधु (शराब) माध्वीक (शहद) तिंतिड़ीक तथा बिजौरा निंबूद्वारा गंडूष (कुल्ले) करने से तालुशोष नष्ट होताहै ॥ ३२ ॥

जम्ब्वाम्रातकबदरीवेतसपञ्चपल्लवैश्चाम्लाः । हृन्मुखशिरःप्रलेपाःसघृतामूर्च्छाभ्रमतृष्णाघ्नाः ॥ ३३ ॥

जामुन अमला बेर वेत नरई पञ्चपल्लव तथा घृत इनका हृदय मुख तथा शिरमें लेप करने से भ्रम मूर्च्छा तथा तृष्णा का नाश होता है ॥ ३३ ॥

दाडिमदधित्थलोध्रैःसविदारीबीजपूरकैःशिरसः । प्रलेपोगौरामलकैर्घृतारनालायुतैश्चहितः ॥ ३४ ॥

दाड़िम कैथा लोध बिलाईकन्द बिजौरा निंबू सफेद सरसों घृत तथा आंवला इनका शिरमें लेप हितकारी है ॥ ३४ ॥

शैवलपङ्कजलजैःसाम्लैःसघृतै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वसनकमलमणिहारसंस्पर्शाः ३५॥ शिशिराम्बुचन्दनार्द्रस्तनतटपाणि तलसंस्पर्शाः । क्षौमार्द्रवसनानांव राङ्गनानांप्रियाणाञ्च ॥ ३६ ॥

सिवार पङ्कक कमल तथा अमलवेतका लेप तथा घृत सहित सत्तूका लेप तृष्णामें हित है दहीके तोड़ अथवा अन्नके सिरकेकेद्वारा भिगोया वस्त्र कमल मणि हार शीतल जल चन्दन लिप्तस्तन पाणितल (हथेली) रेशमी तथा गीले वस्त्र पहिने भयी श्रेष्ठ स्त्री प्रियास्त्री इनका स्पर्श हित है ॥ ३५ । ३६ ॥

हिमवद्दरीवनसरित्सरोऽम्बुजपवने न्दुपादशिशिराणाम् । रम्यशिशिरोदकानांस्मरणञ्चकथाश्चतृष्णाघ्नाः ॥ ३७ ॥

हिमालय की कन्दरा वन नदी सरोवर पद्म वायु चन्द्रमाकी किरण शिशिरऋतु तथा शिशिरऋतुके रम्य जलोंका स्मरण और कथा यह तृष्णा रोगके नाशक हैं ॥ ३७ ॥

वातघ्नमन्नपानंमृदुलघुशीतञ्चवाततृष्णायाः । क्षतकासनुद्घृतक्षीरमूर्ध्वं वाततृष्णाघ्नम् ॥ ३८ ॥

वातज तृष्णामें वातनाशक मृदु लघु तथा शीतल अन्न और पान हित हैं क्षत तथा कास नाशक घृत और दुग्ध ऊर्ध्व वातक्षय तथा तृष्णाके नाशक होते हैं ॥ ३८ ॥

स्याज्जीवनीयसिद्धंक्षीरघृतंवातपित्तजेतर्षे । पैत्तेद्राक्षाचन्दनखर्जूरोशीरमधुयुतंतोयम् ॥ ३९ ॥

वात पित्तज तृष्णा में जीवनीयगणकेद्वारा सिद्ध दुग्ध और घृत हित है पित्तजतृष्णामें दाख चन्दन खजूर (छोहारा) खस तथा मधुयुक्त जल हित है ॥ ३९ ॥

लोहितकशालितण्डुलाःखर्जूरपरूषकोत्पलद्राक्षाः । मधुपक्कलोष्टमेवच जलेभृतंशीतलंपेयम् ॥ ४० ॥

रक्तधान के चावल छोहारा फालसा कमल दाख जेठीमधु तथा पक्कलोष्ठ (पकायाहुआ ढेला) जलमें सिद्धकर ठंढा करके पीवै ४०॥

लोहितशालितण्डुलप्रस्थःसलोध्रमधुकाञ्जनोत्पलः । पक्कामलोष्टमधुजलसमायुतोमृन्मयेपेयः ॥ ४१ ॥

एक प्रस्थ लाल चावल लोध मुलेठी सुवर्ण उत्पल पक्कलोष्ट आम (कच्चा) लोष्ट मधु तथा जल इन सबको मृत्तिकाके बर्तन में धरके पानकरै ॥ ४१ ॥

वटमातुलुङ्गवेतसपल्लवकुशकाशमूलयष्ट्याह्वैः । सिद्धेऽम्भस्यग्निनिभाःकृष्णमृदःकृष्णसिकतावा॥४२॥ तप्तानिनरकपालान्यथवानिर्वाप्यपाययेताच्छम् । अल्पपक्कशर्करामृतवल्ल्युदकंवातृषंहन्ति ॥ ४३ ॥

बट विजौरा तथा वेंतके पत्ते कुश तथा काशकी जड़ और मुलेठी में सिद्ध करेभये जल में कालीमट्टी अथवा कालीबालू अथवा नवीन ठिकरे को अग्निके तुल्य लाल करके बुझावै और छानके पिलावै गुर्चका रस शर्करा में थोड़ा पाक कियाभया तृषा को शान्त करताहै ॥ ४२ । ४३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षीरवतांमधुराणांशीतानांशर्करामधुविमिश्राः। शीतकषायामृद्भृष्टसंयुताःपित्ततृष्णाघ्नाः ॥ ४४ ॥

दुग्धयुक्त तथा मधुर और शीतल पदार्थों का शीतल कषाय शर्करा और मधुके सहित अग्निके तुल्य रक्तवर्ण मृत्तिकाका बुझाया भया पित्तज तृष्णाका नाशक है ॥ ४४ ॥

व्योषवचाभल्लातकतिक्तकषायास्तथामतृष्णायाम्। यच्चोक्तंकफजायांवम्यांतच्चैवकार्य्यंस्यात् ॥ ४५ ॥

आमज तृषामें सोंठ मिरच पीपल वच भिलावां तथा तिक्त कषाय देने चाहिये और कफजवमनमें जो उपाय कहे हैं वेभी करने चाहिये ॥ ४५ ॥

स्तम्भारुच्यविपाकालस्यच्छर्दिषुकफानुगांतृष्णाम्। ज्ञात्वादधिमधुतर्पणलवणोष्णजलैर्वमनमिष्टम्४६

स्तम्भ अरुचि अविपाक तथा आलस्यके द्वारा तृष्णा को कफज जानकर उष्ण जल और लवणकेद्वारा वमन तथा मधु और दही से तर्पणकरै ॥ ४६ ॥

दाडिममदनफलंवाप्यन्यतमकषायमथलेहम्। पेयमथवाहरिद्राम्बुशर्कराक्षौद्रसंयुक्तम् ॥ ४७ ॥

कसैले द्रव्य लेह लवण अम्ल रसयुक्त दाड़िम चाटने चाहिये अथवा हरिद्राका काथ मधु तथा शर्करा सहित पीवै ॥ ४७ ॥

क्षयकासेनतुतुल्याक्षयतृष्णागरीयसीयान्नृणाम्। क्षीणशतशोषहितैस्तस्मात्ताभेषजैःशमयेत् ॥ ४८ ॥

क्षयजतृष्णा क्षय और कासके तुल्य मनुष्यों को कठिन होती है इससे क्षीणक्षत तथा शोषमें जो हित औषध हैं उनका सेवन कराके वैद्य नाशकरे ॥ ४८ ॥

पानतृष्णार्त्तःपानन्त्वर्द्धोदकमम्ललवणगन्धाढ्यम्। शिशिरस्नातःपानंमद्याम्बुगुडाम्बुवातृषितः॥४९॥

मद्यजतृष्णा में आधे जल आधे मद्यको अम्ल लवण तथा सुगन्धियुक्त करके पानकरै अथवा शीतल जलसे स्नान करके मद्य सहित जल पीवै या गुड़ाम्बु (गुड़का शर्बत) पियै ॥ ४९ ॥

भक्तोपरोधतृषितःस्नेहतृषार्त्तोऽथवातनुयवागूम्। अपिबेद्गुरुणातृषितोभुक्तेनोद्धरेद्भुक्तम् ॥ ५० ॥

अन्न भोजनके उपरोध से तथा स्नेह पानसे जो तृष्णा होय तो बहुत पतली यवागू पियै यदि गुरु अन्नके सेवन से तृष्णा होय तो वमन करावै ॥ ५० ॥

मद्याम्बुवाम्बुचोष्णंबलवांस्तृषितःसमुल्लिखेत्पीत्वा। मागधिकाविशदमुखःसशर्करंवापिबेन्मन्थम् ॥५१॥

यदि रोगी बलवान् होय तो आधा मद्य आधा उष्ण जल पीकर वमनकरै अथवा पीपलसे मुख शुद्ध करके शर्करा मिलाकर मन्थ (पतले सत्तू) पानकरै ॥ ५१ ॥

बलवांस्तुतालुशोषेपिबेद्धृतंवृष्यम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नुमद्यश्च । सर्पिर्भृष्टंक्षीरंमांसरसां श्वाबलः स्निग्धान् ॥ ५२ ॥

तालु शोषमें वलवान् रोगी घृत तथा वृष्य अन्न व मद्यका सेवनकरै यदि निर्व्वल होय तो घृतका छौंका दुग्ध तथा स्निग्ध मांसरस पियै ॥ ५२ ॥

अतिरूक्षदुर्बलानांतर्षंशमयेन्नृणामिहाशुपयः । छागोवाघृतभृष्टःशीतो मधुरोरसोहृद्यः ॥ ५३ ॥

जो रोगी अत्यन्त रूक्ष और दुर्बल हों वह दुग्धका सेवन करैं अथवा घृत में भूँजा भया शीतल मधुर हृदय को आनन्ददायी छागके मांस का रस पियैं ॥ ५३ ॥

स्निग्धेऽन्नेभुक्तेयातृष्णास्यात्तांगुडाम्बुनाशमयेत् । तर्षंमूर्च्छाभिहतस्य रक्तपित्तापहैर्हन्यात् ॥ ५४ ॥

चिकने अन्न के सेवन से जो तृष्णा उत्पन्न होय तो उसको गुडाम्बु (गुड़के शर्बत) से शान्तकरे मूर्च्छा से जो तृष्णा उत्पन्नहो उसे रक्तपित्त की नाशक औषधोंसे हटावै ॥ ५४ ॥

शीतमुष्णञ्च जलंकुत्रदेयंवर्ज्यंवाकुत्रेत्याह। छर्द्यम्लदाहमूर्च्छातमःक्लममदात्ययास्रविषपित्ते। शस्तं स्वभावशीतंशृतशीतंसन्निपातेऽम्भः॥५५॥

वमन अम्ल पित्त दाह शीतल और उष्ण जल कहां देना चाहिये और कहां न देना चाहिये उसको कहते हैं मूर्च्छा-तम क्लम मदात्यय रक्तपित्त विष तथा पित्त में स्वभाव शीतल जल अच्छा है और सन्निपात में शृत (पहिले गरम करके पीछे ठंढा किया) जल अच्छा है ॥ ५५ ॥

हिक्काश्वासनवज्वरपीनसघृतपीतपार्श्वगलरोगे । कफवातकृतेस्त्यानेसद्यःशुद्धेहितमुष्णम् ॥ ५६ ॥

हिचकी श्वास नवीन ज्वर पीनस घृतपान पशुली तथा गलेके रोगों में कफ तथा वात से उत्पन्न स्थानमें वमन विरेचनसे जो मनुष्य शुद्ध किया गया हो इन में उष्ण जल हित है ॥ ५६ ॥

पाण्डूदरपीनसमेहगुल्ममन्दातिसारेषु । प्लीह्निचतोयंहितंकाममशक्यंपिबेदल्पम् ॥ ५७ ॥

पाण्डुरोग उदर पीनस प्रमेह गुल्मरोग मन्दाग्नि अतीसार तथा प्लीहा में जल अहित है यदि न रहाजाय तो थोड़ासा जल पियै ५७।

पूर्वामयातुरःसंदीनस्तृष्णार्दितोजलंकाङ्क्षन् । नलभेतसचेन्मरणमाश्वेवाप्नुयाद्दीर्घरोगंवा ॥ ५८ ॥

यदि रोग से पीड़ित मनुष्य जो दीन होरहा है तृषा से व्याकुल होकर जल चाहता है यदि वह जल न पावे तो मरजायगा अथवा किसी दीर्घ रोगको प्राप्त होयगा ॥ ५८ ॥

तस्माद्धान्याम्बुपिबेत्तृष्यन्रोगीसशर्कराक्षौद्रम् । यद्वातस्यान्यत्स्यात्सात्म्यंरोगस्यतच्चेष्टम् ॥ ५९ ॥

इस से शर्करा और मधुमिलाकर धनियें में पकाया भया जल पियै अथवा रोग के अनुसार जो सात्म्य वस्तु होंय उनके द्वारा जल सिद्ध करके पियै ॥ ५९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

तस्यांविनिवृत्तायांतज्जन्योपद्रवःसुखंजेतुम् । तस्मात्तृष्णांपूर्वंजयेद्बहुभ्योऽपिरोगेभ्यः ॥ ६० ॥

तृष्णाके निवृत्त होने से तृष्णाजन्य उपद्रव बहुत शीघ्र नष्ट होसक्ते हैं इससे यद्यपि बहुत रोग होंय तब भी तृष्णाका उपाय पहले करै ॥ ६० ॥

तत्रश्लोकः ।

हेतुर्यथाग्निपवनौकुरुतःसोपद्रवश्चपञ्चानाम् । तृष्णानांपृथगाकृतिरसाध्यतासाध्यतासाधनञ्चोक्तम् ॥ ६१ ॥

इति तृष्णाचिकित्सितेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

तिसमें यह श्लोक है । जिस रीतिसे अग्नि और वायु तृष्णा में हेतुहैं जिस रीतिसे ये तृष्णा को उत्पन्न करते हैं और तृष्णा के उपद्रव तृष्णा के पांचप्रकार तथा पृथक् २ लक्षण साध्यता असाध्यता तथा तृष्णा के उपाय कहेगये ॥ ६१ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंतृष्णाचिकित्सितनामचौबीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २४ ॥

पच्चीसवांअध्याय ॥

विषचिकित्सितम् ।

प्रागुत्पत्तिंगुणान्योनिंवेगान्लिङ्गान्युपक्रमान् । विषस्यब्रुवतःसम्यगग्निवेशनिबोधमे ॥ १ ॥

इसके उपरान्त विषचिकित्सितनामक अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

हे अग्निवेश मैं विषकी पूर्व्वोत्पत्ति गुण योनिवेग लक्षण तथा चिकित्सा कहताहूं तुम सुनो ॥ १ ॥

अमृतार्थं समुद्रे तु मथ्यमानेसुरासुरैः । जज्ञेप्रागमृतोत्पत्तेःपुरुषोघोरदर्शनः ॥ २ ॥ दीप्ततेजाश्चतुर्दंष्ट्रोहरिकेशोऽनलेक्षणः । जगद्विषण्णंतंदृष्ट्वातेनासौविषसंज्ञितः ३॥

देवता और राक्षस अमृतके अर्थ जब समुद्र मथरहे थे उस समय अमृत उत्पन्न होने के प्रथमही एक भयानक तेजस्वी चार दाढ़वाला हरे बाल और अग्निके तुल्य लाल आंखवाला पुरुष उत्पन्न हुआ उसको देखकर संसार को विषाद हुआ इससे उसका नाम विष भया ॥ २ । ३ ॥

जङ्गमस्थावरायांतद्योनौब्रह्मान्ययोजयत् । तदम्बुसम्भवंतस्माद्द्विविधंपावकोपमम् ॥ ४ ॥

उस अग्नि के तुल्य तथा जलसे उत्पन्न विष को दो प्रकार करके अर्थात् जंगम तथा स्थावर योनिमें ब्रह्माने नियुक्त किया ॥ ४ ॥

अष्टवेगंदशगुणंचतुर्विंशत्युपक्रमम् । तद्वर्षास्वम्बुयोनित्वात्सक्लेदंगुडवद्गतम् ॥ ५ ॥

और उसके आठ वेग दश गुण तथा चौबीस उपक्रम (उपाय) हैं वह जलसे उत्पन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

होने के कारण वर्षाऋतु में गुड़कीनाई गलके बहने लगता है ॥ ५ ॥

सर्पत्यम्बुधरापायेतदगस्त्योहिनस्तिच । प्रयातिमन्दवीर्य्यत्वंविषंतस्माद्धनात्यये ॥ ६ ॥

मेघोंके न रहनेपर उसको अगस्त्य हीन वीर्य्य करदेते हैं इसहीसे वर्षाके अन्तमें विष हीन वीर्य्य होजाते हैं ॥ ६ ॥

सर्पाःकीटोन्दुरालूतावृश्चिकागृहगोधिकाः । जलौकामत्स्यमण्डूकाःशलभाःसकुकण्टकाः ॥ ७ ॥

सर्प कीट मूषक मकड़ी बीछी गोह जोंक मछली मेढक टींड़ी कुकण्टक (केंकड़ा) ७ ॥

श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः । दंष्ट्रिणोऽमीविषंतेषांदंष्ट्रोत्थंजङ्गमंमतम् ॥ ८ ॥

कुत्ता सिंह व्याघ्र सियार तरक्षु (भेड़िया) तथा नकुल आदि जो दाढ़वाले जीव हैं उनकी दाढ़से निकला विष जंगम कहाता है ॥ ८ ॥

मुस्तकंपौष्करंक्रौञ्चंवत्सनाभंबलाहकम् । कर्कटंकालकूटेन्द्रकरवीरकसंज्ञकम् ॥ ९ ॥

मोथा पोहकरमूल क्रौंच बच्छनाग बलाहक काकड़ासिंगी कालकूट कनेर ॥ ९ ॥

गालवेन्द्रायुधंतैलंमेघकंकुशपुष्पकम् । रोहिषंपुण्डरीकाक्षंलाङ्गलव्यञ्जनाभकम् ॥ १० ॥

गालव इन्द्रायुध तेलिया मेघक कुशपुष्पक रोहिष पुण्डरीकाक्ष लांगलकी अञ्जनाभ १०

सङ्कोचंमर्कटंशृङ्गीविषंहालाहलंतथा । एवमादीनिचान्यानिमूलजानिस्थिराणिच ॥ ११ ॥

संकोच मर्कट सींगिया हालाहल आदि तथा अन्य विष जो मूलज हैं स्थावर कहाते हैं ॥ ११ ॥

गरंसंयोगजञ्चान्यद्गरसंज्ञंगदप्रदम् । कालान्तरविपाकित्वान्नतदाशुहरत्यसून् ॥ १२ ॥

दो या अधिक पदार्थों के संयोग से जो विष उत्पन्न होता है वह गर कहाता है इसका परिपाक बहुत कालमें होता है इससे यह शीघ्रही प्राण नहीं लेता परन्तु रोग उत्पन्न करता है ॥ १२ ॥

निद्रांतन्द्रांक्लमंदाहंसपाकंलोमहर्षणम् । शोफंचैवातिसारञ्चजनयेज्जङ्गमंविषम् ॥ १३ ॥

जंगम विषसे निद्रा तन्द्रा क्लम दाह पाक रोमांच शोथ तथा अतीसार उत्पन्न होते हैं ॥ १३ ॥

स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदन्तहर्षंगलग्रहम् । फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्चजनयेद्विषम् ॥ १४ ॥

स्थावर विषसे ज्वर हिचकी दांतोंका कटकटाना गलग्रह मुखसे फेना बहना वमन अरुचि श्वास तथा मूर्च्छा यह लक्षण होते हैं ॥ १४ ॥

जङ्गमंस्यादधोभागमूर्ध्वभागंतुमूल

जम्। तस्माद्दंष्ट्रिविषंमौलंहन्तिमौलंचदंष्ट्रिजम् ॥ १५ ॥

जंमम विष नीचे को जाता है और स्थावर विष ऊपर को इससे स्थावर विष जंगम विष को और जंगम विष स्थावर विष को नष्ट करता है ॥ १५ ॥

तृण्मोहदन्तहर्षप्रसेकवमथुक्लमाभवन्त्यादौ । वेगेरसप्रदोषादसृक्प्रदोषाद्द्वितीयेच ॥ १६ ॥

विषके प्रथम वेगमें रसमें दोष होनेके कारण तृष्णा मोह दन्तहर्ष प्रसेक (मुखमें पानी भरआना) वमन तथा क्लम (ग्लानि) यह लक्षण होते हैं रुधिर में दोष होने के कारण द्वितीय वेगमें ॥ १६ ॥

वैवर्ण्यभ्रमवेपथुमूर्च्छाजृम्भाङ्गचिमिचिमातमकाः । दुष्टपिशितात्तृतीयेमण्डलकण्डूश्वयथुकोठाः १७

वैवर्ण्य (रंग बदलजाना) भ्रम कँपकँपी मूर्च्छा जमुहाई अंगों में चिमचिमाहट तथा तमक श्वास यह लक्षण होते हैं मांसके दूषित होने से तृतीय वेगमें वात आदिसे उत्पन्न मंडल (एक प्रकारके चकत्ते) खुजली शोथ तथा कोठ यह लक्षण होते हैं ॥ १७ ॥

वातादिजाश्चतुर्थेछर्दिर्दाहाङ्गशूलमूर्च्छाद्याः । नीलादीनांतमसश्चदर्शनंपञ्चमवेगेच ॥ १८ ॥

चतुर्थ वेगमें, वातादि से उत्पन्न वमन दाह अंगमें पीड़ा तथा मूर्च्छा आदि होते हैं पंचम वेगमें नील आदि तथा अन्धकार दिखाई देता है ॥ १८ ॥

षष्ठेहिक्काभङ्गःस्कन्धेस्यात्तुसप्तमेऽष्टमेमरणंनृणाम् । चतुष्पादादीनांस्याच्चतुर्विधःपक्षिणांत्रिविधः १९ ॥

षष्ठ वेगमें हिचकी सप्तमवेगमें स्वरभंग तथा अष्टम वेगमें मनुष्योंकी मृत्यु होती है विषका वेग चौपायों को चार प्रकारका और पक्षियों को तीन प्रकारका होता है ॥ १९ ॥

सीदत्याद्येभ्रमतिचचतुष्पादोवेपतेततःशून्यः । मन्दाहारश्चततोम्रियतेश्वासेनहिचतुर्थे ॥ २० ॥

चौपायों को विषके प्रथमवेगमें अवसाद (शिथिलता) प्राप्त होता है द्वितीयवेग में भ्रम तथा कँपकँपी तृतीयवेगमें शोथ तथा आहार की अल्पता और चतुर्थवेगमें श्वास तथा मृत्यु होती है ॥ २० ॥

ध्यायतिविहगःप्रथमेवेगेप्रभ्राम्यतिद्वितीयेतु । स्रस्तांगश्चतृतीयेविषवेगेयातिपञ्चत्वम् ॥ २१ ॥

पक्षी विषके प्रथमवेगमें ध्यान करता है द्वितीयवेगमें भ्रम तथा अंगोंकी शिथिलता को प्राप्त होता है और तृतीयवेगमें मृत्यु को प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥

लघुरुक्षमाशुविशदंव्यवायितीक्ष्णंविकासिसूक्ष्मञ्च । उष्णमनिर्देश्यरसंदशगुणमुक्तंविषंतज्ज्ञैः ॥ २२ ॥

विषके ज्ञाता पण्डित विष को लघु रूक्ष आशुकारी विशद (क्लेदनाशक) व्यवायी (जो बहुत शीघ्र व्याप्त होवै) तीक्ष्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के रसादि धातुओं को सुखानेवाला) सूक्ष्म उष्ण तथा अनिर्देश्य रस इन गुणों से दशगुणवाला कहते हैं ॥ २२ ॥

रौक्ष्याद्वातमशैत्यात्पित्तंसौक्ष्म्यादसृक्प्रकोपयति । कफमव्यक्तरसत्वादन्नरसांश्चानुवर्त्ततेशीघ्रम् ॥ २३

विष रुक्षता से वात उष्णता से पित्त तथा सूक्ष्मता से रुधिर को दूषित करता है अव्यक्त रस होने से कफ को कुपित करके बहुत शीघ्र अन्नरस का साथी होजाता है ॥ २३ ॥

शीघ्रंव्यवायिभावादाशुव्याप्नोतिकेवलंदेहम् । तीक्ष्णत्वान्मर्मघ्नंप्राणघ्नंतद्विकासित्वात् ॥ २४ ॥

व्यवायी होने से बहुत शीघ्र सारे शरीरमें व्याप्त होता है तीक्ष्ण होने से मर्म्म तथा प्राणका नाशक विकासी होने से ॥ २४ ॥

दुरुपक्रमंलघुत्वाद्वैशद्यात्स्यादसक्तगतिदोषम् । दोषस्थानप्रकृतीःप्राप्यान्यतमंह्युदीरयति ॥ २५ ॥

जिसका उपाय नहीं होसक्ता लघु तथा विशद होने से असक्त गतिदोष (दोषों की गतिको नहीं रोकनेवाला) होताहै विष दोषों के स्थानमें प्रकृतियों को पायकर (कफ प्रकृतिवालेका कफ वातप्रकृतिवाले का वात तथा पित्तप्रकृतिवाले का पित्त बढ़ाताहै) कफ वा वात वा पित्त को उभाड़ता है ॥ २५ ॥

स्याद्वातिकस्यवातस्थानेकफपित्तलिङ्गमीषत्तु । तृण्मूर्च्छारुचिमोहगलग्रहच्छर्दिफेनादि ॥ २६ ॥

वातप्रकृति मनुष्यके वायुके स्थानमें स्थित होकर तृषा मूर्च्छा अरुचि मोह गलग्रह छर्दि तथा फेना आदि को उत्पन्न करता है कफ तथा पित्तके चिह्न बहुत कम होते हैं ॥ २६ ॥

पित्ताशयस्थितंपैत्तिकस्यकफवातयोर्विषंतद्वत् । तृट्कासज्वरवमथुक्लमदाहतमोऽतिसारादि ॥ २७ ॥

पित्तप्रकृतिवाले के पित्तस्थान में स्थित होकर तृष्णा कास वमन ज्वर क्लम दाह तम तथा अतीसार आदि को उत्पन्न करता है कफ तथा वायु के चिह्न बहुत कम होते हैं ॥ २७ ॥

कफदेशगतञ्चकफस्यदर्शयेद्वातपित्तयोश्चैतत् । लिङ्गंश्वासगलग्रहकण्डूलालावमथ्वादि ॥ २८ ॥

कफप्रकृतिवाले मनुष्य के कफस्थानमें स्थित होकर श्वास गलग्रह खुजली राल बहना तथा वमन आदि को उत्पन्न करता है वायु और पित्त के लक्षण बहुत कम होते हैं ॥ २८ ॥

दूषीविषंतुशोणितदुष्टाकिटिभकोठादिरक्तलिङ्गञ्च । विषमेकैकंदोषंसन्दूष्यहरत्यसूनेवम् ॥ २९ ॥

परन्तु दूषीविषमें रक्तके दोष किटिम तथा कोठादि से दुष्ट रुधिर के जो लक्षण होते हैं वे पायेजाते हैं विष पूर्वोक्त रीतिसे दोषों को पृथक् २ दूषित करके मनुष्यों के प्राण लेता है ॥ २९ ॥

क्षरतिविषतेजसासृक्तत्खानिनिरुध्यमारयतिजन्तुम् । पीतंमृतस्यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दितिष्ठतिदष्टविद्धयोर्दंशदेशेस्यात् ॥ ३० ॥

विषके प्रभावसे रुधिर बहने लगताहै और विष समस्त द्वारों का रोध करके मनुष्यों को मारता है यदि विष पिया जाय तो मनुष्य के मरण के अनन्तर हृदयमें स्थित होताहै यदि दष्ट अथवा विद्ध मनुष्य होय तो काटने वा वेधने के स्थान में मरणके उपरान्त रहता है ॥ ३० ॥

नीलौष्ठदन्तशैथिल्यकेशपतनाङ्गभङ्गविक्षेपाः । शिशिरैर्नलोमहर्षोनाभिहतेदण्डराजीच ॥ ३१ ॥

नीले ओष्ठ दांतों की शिथिलता केशपतन अङ्गभङ्ग विक्षेप ठंढे पदार्थोंसे रोमांच न होना अभिघात (चोट) करने से चिह्न न बनना ॥ ३१ ॥

क्षतजंक्षताच्चनायात्युक्तान्येतानिमरणलिङ्गानि । एभ्योऽन्यथाचिकित्सातेषाञ्चोपक्रमान्शृणुमे ॥ ३२ ॥

और काटने के स्थानसे रुधिर का न बहना यह मृत्युके चिह्न हैं जिनके यह चिह्न न होंय उनकी चिकित्सा करनी चाहिये अब विषकी चिकित्सा मुझसे सुनो ॥ ३२ ॥

मन्त्रारिष्टोत्कर्त्तननिष्पीडनचूषणाग्निपरिषेकाः । अवगाहनरक्तमोक्षणवमनविरेकोपधानानि ॥ ३३ ॥

मन्त्र अरिष्ट उत्कर्तन निष्पीडन चूषण अग्निकर्म परिषेक अवगाहन रक्तमोक्षण वमन विरेचन उपधान ॥ ३३ ॥

हृदयावरणाञ्जननस्यधूमलेहौषधप्रशमनानि । प्रतिसारणंप्रतिविषंसंज्ञासंस्थापनंलेपः ॥ ३४ ॥

हृदयावरण अञ्जन नस्य धूम लेह औषध प्रशमन प्रतिसारण प्रतिविष (विपरीत विष देना) संज्ञा स्थापन लेप ॥ ३४ ॥

मृतसञ्जीवनमेवचविंशतिरेतेचतुर्भिरधिकाः । स्युरुपक्रमायथायत्रयोज्याःशृणुतथातान् ॥ ३५ ॥

तथा मृतसञ्जीवन यह चौबीस उपक्रम कहां किस रीति से काममें लाये जाने चाहिये यह मैं तुमसे कहताहूं तुम उनको सुनो ३५॥

दंशात्तुविषंदष्टस्यविसृतंवैलिकांभिषक्बध्वा । निष्पीडयेद्भृशंदंशमुद्धरेन्मर्मवर्जंवा ॥ ३६ ॥

यदि डंसे हुए स्थानसे रुधिर न निकलै तो वैद्य वैलिका (एक प्रकार की रस्सी जिस्से विष फैलने न पावै) को बांधकर दष्ट स्थान को अत्यन्त पीड़ित करै अथवा उस दष्टस्थान का उत्कर्तन (काटना) करै मर्मस्थल को छोड़कर पीड़न वा उत्कर्तन करै ॥ ३६ ॥

तंदंशंवाचूषेन्मुखेनयवचूर्णपांशुपूर्णेन । प्रच्छन्वेधजलौकःशृङ्गैःस्राव्यंततोरक्तम् ॥ ३७ ॥

अथवा दंशको मुख यवचूर्ण वा रेहूमट्टीके चूर्णद्वारा चूषित (चूसना) करै तत्पश्चात् गुप्त वेध करनेवाली जोंक तथा सिंगियों के द्वारा रुधिर निकलवावै ॥ ३७ ॥

रक्तेविषप्रदुष्टेदुष्येत्प्रकृतिंततस्त्यजे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्प्राणान्। तस्मात्प्रघर्षणैरसृग्वर्त्त मानंप्रवर्त्त्यस्यात्॥ ३८॥

रक्त के दूषित होने से विष वात पित्त तथा कफ को दूषित करताहै तब मनुष्य की मृत्यु होती है इस कारण से यदि रुधिर जम गया हो तो प्रघर्षण (मालिश) के द्वारा रुधिर को प्रवृत्त करै॥ ३८॥

त्रिकटुगृहधूमरजनीपञ्चलवणाःस वार्ताकाः। वर्षणमतिप्रवृत्तेवटादि भिःशीतलैर्लेपः॥ ३९॥

सोंठ, मिरच, पीपरि, गृहधूम, हल्दी, पांचों नमक, तथा वैंगन इन के चूर्ण के द्वारा घर्षण करै यदि रुधिर अधिक बहनेलगै तो वटादि शीतल पदार्थों का लेप करै॥ ३९॥

रक्तंहिविषाधानंवायुरिवाग्नेःप्रदेहसे कैस्तत्। शीतैःस्कन्दतितस्मिन्स्क न्नेव्ययंयातिविषवेगः॥ ४०॥

वायु जैसे अग्नि का सहायकहै वैसाही रुधिर विषका सहायकहै इसकारणसे शीतल लेप तथा सेकके द्वारा रुधिर स्कन्दित (एक प्रकार का सूखना) हो तो विष का वेग नष्ट होजाताहै॥ ४०॥

विषवेगान्मदमूर्च्छाविषादहृदयद्रवाः प्रवर्त्तन्ते। शीतैर्निर्वर्त्तयेत्तान्नवीज्यै श्चलोमहर्षःस्यात्॥ ४१॥

विषके वेग से मद मूर्च्छा विषाद तथा हृदयकी आर्द्रता होती है इनको शीत उपचार के द्वारा शान्त करै परन्तु पंखा न हांकै क्योंकि उस से रोमहर्ष (रोमांच) होताहै॥ ४१॥

तरुरिवमूलच्छेदाद्दंशच्छेदान्नवृद्धि मुपयातिविषम्। आचूषणमानय नंजलस्यसेतुर्यथातथारिष्टाः ४२॥

जसे मूलके छेद से वृक्ष नहीं बढ़ता वैसेही दंश के छेद से विष नहीं बढ़ता जैसे सेतु जल की गति को रोकते हैं तैसेही चूषण के द्वारा रुधिर का निकालना और अरिष्ट विष को रोकते हैं॥ ४२॥

त्वङ्मांसगतोदाहोदहतिविषंस्राव णंहरतिरक्तात्। पीतंवमनैःसद्योहरे द्विरेकैर्द्वितीयेतु॥ ४३॥

त्वचा तथा मांसगत विषको दाह दग्धकरता है रुधिरगत विषको स्रावण क्रिया के द्वारा दूरकरै प्रथम वेगमें पीत विष को वमन के द्वारा निकालै द्वितीय वेग में विरेचन द्वारा निकालै॥ ४३॥

आदौहृदयंरक्ष्यंतस्यावरणंपिबेद्य थालाभम्। मज्जानंमधुघृतंगैरि कमथगोमयरसंवा॥ ४४॥

प्रथम हृदयकी रक्षाके लिये आवरण जहां तक मिलसकैं पियै नवीन दुग्ध मधु घृत तथा गेरू अथवा गोमय का रस॥ ४४॥

इक्षुंसुपक्कमथवाकाकंनिष्पीड्यतद्र संवलम्। छागादीनांवासृक्भस्म मृदंवापिबेदाशु॥ ४५॥

वा विष का नाशक सुपक्क ईख का रस अथवा छाग आदि का रुधिर भस्म वा मृत्तिका शीघ्रही पियै॥ ४५॥

क्षारोऽगदस्तृतीयेशोफहरैर्लेखनंस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मध्वम्बु । गोमयरसश्चतुर्थेवेगेसक पित्थमधुसर्पिर्भिः ॥ ४६ ॥

अथवा क्षार के द्वारा चिकित्सा करै तृतीय वेगमें शोथनाशक द्रव्य तथा जल सहित मधु के द्वारा लेखन (वमन वा विरेचन) करै चतुर्थवेग में गोमय रस कैथा मधु तथा घृतका पान करै ॥ ४६ ॥

काकाण्डशिरीषाभ्यांस्वरसेना। श्च्योतनमञ्जनेनस्यम्। स्यात्पञ्चमेऽथषष्ठेसंज्ञायाःस्थापनंकार्यम् ॥ ४७ ॥

पंचमवेगमें काकाण्ड तथा शिरीष के स्वरसके द्वारा आश्च्योतन नस्य तथा अञ्जन पष्ठवेग में संज्ञाका स्थापन ॥ ४७ ॥

गोपित्तयुतारजनीमञ्जिष्ठामरिच पिप्पलीपानम् । विषपानंदष्टानां विषपीतेदंशनञ्चान्ते ॥ ४८ ॥

गोरोचन हल्दी मजीठ मिरच तथा पीपरि पान के द्वारा करै अन्तमें डंसे हुवों को विष पिलावै और विष पिये हुये मनुष्यों को डंसावै ॥ ४८ ॥

शिखिपित्तार्द्धयुतंस्यात्पलाशबीज मगदोमृतेषुमतः। वार्त्ताकुफाणिता गारधूमगोपित्तनिम्बंवा ॥ ४९ ॥

विष द्वारा मृत तुल्य मनुष्य को अर्द्धभाग मयूर का पित्त तथा पलाश बीज एक भागदेवै अथवा वार्त्ताकु (बैंगन) फाणित (क्षुद्र गुड़) गृहधूम गोरोचन तथा नीम देवै ४९ ॥

गोपित्तयुतैर्गुलिकाःसुरसाग्रन्थिद्धि रजनीमधुककुष्ठैः । शस्तामृतेनतु शिरीषपुष्पकाकाण्डकरसैर्वा ५० ॥

अथवा गोरोचन रासन वच दोनों हल्दी गुरच तथा कूट इनकी गोली बनावै शिरीष पुष्प और काकाण्डके रससेगोली बनावै ५० ॥

काकाण्डसुरसगवाक्षीपुनर्नवावायसीशिरीषफलैः। उद्बद्धविषजलमृतेलेपौषधनस्यपानानि ५१ ॥

बन्धन (जैसे फांसी लगाना) विष तथा जल के द्वारा आसन्नमरण मनुष्य को काकाण्ड रासन गवाक्षी (जेठऊ ककरी या इनारुन) गदहपूरना सफेद वायसी (काक जङ्घा कवैया अरार) तथा शिरीष फल इनके द्वारा लेप औषध नस्य तथा पान करावै ॥ ५१ ॥

पृक्काप्लवस्थौणेयकाकाक्षीशैलेयरोचनास्तगरम्। ध्यामककुंकुममांसीसुरसाग्रैलालकुष्ठघ्न्यः ॥ ५२ ॥

स्पृक्का (अस्परक या अस्पर) केंवटी मोथा कुकरौंधा काक्षी (अरहर) शैलेय (छरीला या सिलाजीत) गोरोचन तगर ध्यामक (रोहिष वा सुगन्ध तृण)केसर जटामांसी रासन वच छोटी इलायची कूट नागरमोथा ॥५२॥

बृहतीशिरीषपुष्पंश्रीवेष्टकपद्मचारटिविशालाः । सुरदारुपद्मकेशरशावरकमनःशिलाकौन्त्यः ५३ ॥

भटकटैया शिरीष के पुष्प गन्धाविरोजा पद्म चारटी (स्थलकमलिनी या कपिला) विशाला (जेठऊ ककरी या इनारुन एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकारका) देवदारु पद्मकेसर शाबर (लोध) मैनसिल रेणुका ॥ ५३ ॥

जात्यर्कपुष्परसरजनीद्वयहिङ्गुपिप्पलीलाक्षाः। जलमुद्गपर्णिचन्दनमधुकमदनसिन्धुवाराश्च ॥ ५४ ॥

जायफल मदारके फूल का रस दोनों हल्दी हींग पीपल लाख सुगन्धबाला वनमूंग चन्दन गुरच मैनफल स्यौंड़ी ॥ ५४ ॥

शम्पाकलोध्रमयूरकगन्धफलीनाकुलीविडङ्गाश्च । पुष्येसंहृत्यसमंपिष्टागुलिकाविधेयाःस्युः ॥५५॥

शम्पाक लोध लटजीरा अगर प्रियंगु रासना तथा वायविड़ङ्ग इन औषधोंको पुष्यनक्षत्र में लायके समभाग लेके पीसके गोली बनावै ॥ ५५ ॥

सर्वविषघ्नोजयकृद्विषमृतसञ्जीवनोज्वरनिहन्ता । घ्रेयविलेपनधारणधूमग्रहणैर्गृहस्थश्च ॥ ५६ ॥

यह योग सब प्रकार के विषों का नाश करता है जय देताहै विषसे आसन्न मरण मनुष्यों को जीवन देताहै ज्वरघ्न है यह योग सूंघना लेप धारण धूमग्रहण तथा घरमें रखने के द्वारा ॥ ५६ ॥

भूतविषजन्त्वलक्ष्मीकार्मणमन्त्राग्न्यशन्यरीन्हन्यात्। दुःस्वप्नस्त्रीदोषानकालमरणाम्बुचौरभयम् ५७॥

भूतविष जन्तु अलक्ष्मी कार्मण मन्त्र अग्निवज्र शत्रुदोष दुःस्वप्न स्त्रीदोष अकालमृत्यु जलभय चौरभय को नष्ट करता है ॥ ५७ ॥

धनधान्यकार्य्यसिद्धिःश्रीपुष्ट्यायुर्विवर्द्धनोधन्यः। मृतसञ्जीवनएषप्रागमृतादब्रह्मणाविहितः ५८॥

इति मृतसञ्जीवनी।

धन धान्य तथा कार्य्यों को सिद्ध करताहै तथा श्री पुष्टि आयुको बढ़ाता है और धन्य- यह योग ब्रह्माजी ने अमृतके निकलने के प्रथम बनाया था और इसका नाम मृतसञ्जीवन है ॥ ५८ ॥

मन्त्रैर्धमनीबन्धोऽपामार्जनंकार्य्यमात्मरक्षाच। दोषस्यविषंयस्यस्थानेस्यात्तंजयेत्पूर्वम् ॥ ५९ ॥

मन्त्रों के द्वारा पृथ्वी को बांधै अपामार्जन करै और अपनी रक्षाकरै और जिस दोषके स्थान में विषहो उस को पहिलेही शान्त करै ॥ ५९ ॥

वातस्थानेस्वेदोदध्नानतकुष्ठकल्कपानञ्च। घृतमधुपयोऽम्बुपानावगाहसेकाश्चपित्तस्थे ॥ ६० ॥

यदि विष वायुके स्थानमें हो तो स्वेददेवै तथा तगर और कूटका कल्क पिलावै यदि विष पित्तके स्थानमें होतो घृत मधु दुग्ध तथा जलका पान तथा जलका अवगाहन तथा परिषेक करै ॥ ६० ॥

क्षारागदःकफस्थानगतेस्वेदस्तथाशिराव्यधनम्। दूषीविषेऽथरक्तस्थेशिराकर्मपञ्चविधम् ॥ ६१ ॥

यदि विष कफके स्थानमें होतो क्षारसे वमन स्वेद तथा नाड़ी वेधकरै यदि दूषीविष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुधिरमें स्थित हो तो पांच प्रकार के उपाय तथा नाड़ीवेध (नस्तरदेके या जोंक वगैरह से खून निकलवाना) करै ॥ ६१ ॥

भेषजमेवंकल्प्यंभिषग्विदासर्वदाल च्यंसर्वम् । स्थानंजयेच्चपूर्वंस्थान स्थस्याविरुद्धश्च ॥ ६२ ॥

विद्वान् वैद्यको उचितहै कि विष जिस दोष के स्थान में स्थितहो उसको जीतकर स्थान में स्थित दोषके अविरुद्ध (मुवाफिक) चिकित्सा पूर्वोक्त रीतिसे करै और सब वातों पर सदैव ध्यान रक्खै ॥ ६२ ॥

विषदूषितकफमार्गःस्रोतःसंरोधरुद्ध वायुश्च । मृतइवश्वसेन्मर्त्यःस्याद साध्यलिङ्गैर्विहीनश्च ॥ ६३ ॥

यदि विषके द्वारा कफके मार्ग अर्थात् स्रोत रुकजावैं और स्रोतों के, रुकने से वायु भी रुकजाय और मनुष्य मरासा जानपड़ै परन्तु असाध्य के ऐसे लक्षण न होवें तो ॥ ६३ ॥

चर्मकषायाःकल्कंबिल्वसमंमूर्द्धिका कपदमस्य । कृत्वाकुर्यात्कटभींक टुकट्फलप्रधमनञ्च ॥ ६४ ॥

वेलके तुल्य काकजंघा तथा चर्मकषाका कल्क मनुष्य के शिरपर रक्खै और मालकांगनी कुटकी तथा कौरैआका मधमन करै (नाकमें फूकना) ॥ ६४ ॥

छागगव्यमाहिषाविककौक्कुटाजमांसम् । दद्यात्काकपदोपरिमत्तेविषे पैवसहसा ॥ ६५ ॥

यदि एकाएकी विषसे मतवाला हो गया होवै तो बकरा वैल भैंसा भेड़ा तथा मुरगा के मांस को देवै ॥ ६५ ॥

घ्राणाक्षिकर्णजिह्वाकण्ठनिरोधेषुक र्णनस्तःस्यात् । वार्त्ताकुबीजपूरक ज्योतिष्मत्यादिभिःपिष्टैः ॥ ६६ ॥

यदि नासिका आंख कान जीभ तथा कण्ठका निरोध होजाय तो नासिकाके द्वारा कर्म करने चाहिये वनभांटा बिजौरानींबू तथा मालकांगनी को पीसकर सुंघावै ॥ ६६ ॥

अञ्जनमक्ष्युपरोधेकर्त्तव्यंबस्तमूत्रपिष्टैस्तु । दारुव्योषहरिद्राकरवीरकरञ्ज सुरसैस्तु ॥ ६७ ॥

यदि नेत्रका उपरोधहोय तो बकरे के मूत्र में दारुहल्दी सोंठ मिरच पीपल हल्दी कनेर करञ्ज तथा रासन इनको पीसकर अञ्जन देवै ॥ ६७ ॥

श्वेतावचाश्वगन्धाहिंग्वमृताकुष्ठ सैन्धवलशुनम् । सर्षपकपित्थमध्यं टुण्टुककरञ्जबीजानि ॥ ६८ ॥

सफेदवच असगन्ध हींग गुरच कूट सेंधा निमक लशुन सरसों कैथाका गूदा टुण्टुक (सरिवन) करञ्ज के बीज ॥ ६८ ॥

व्योषंशिरीषपुष्पंद्विरजनींवंशलोच नञ्चसमम् । पिष्ट्वाह्यजस्यमूत्रेणगो ऽश्वपित्तेनसप्तकृत्वः ॥ ६९ ॥

सोंठ मिरच पीपल शिरीष के फूल हल्दी दारुहल्दी तथा वंशलोचन ये सब समभाग बकरेके मूत्रमें पीसकर फिर सप्तवार गोरोचन में ॥ ६९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यत्यासभावितोऽयंनिहन्तिशिरसि स्थितंविषंक्षिप्रम्। सर्वज्वरभूतग्रहवि षूचिकाजीर्णमूर्च्छार्त्तिम् ॥ ७० ॥

भावना देकर शिर में रखने से बहुत शीघ्र विष सर्वप्रकारके ज्वर ,भूतग्रह विसूचिका अजीर्ण मूर्च्छा पीड़ा ॥ ७० ॥

उन्मादापस्मारौकाचपटलनीलिका शिरोदोषान्। शुष्काक्षिपाकपिल्लार्बु दार्मकण्डूतमोदोषान् ॥ ७१ ॥

उन्माद मिरगी काच पटल नीलिका शिरोदोष शुष्क नेत्रपाक पिल्लार्बुद अर्म खजुली तमदोष ॥ ७१ ॥

क्षयदौर्बल्यमदात्ययपाण्डुगदांश्चा अनात्तथामोहान्। लेपाद्दिग्धक्षत लीढदष्टविषपीतविषघाती॥७२ ॥

क्षय दौर्बल्य मदात्यय तथा पाण्डुरोगका नाश होता है और इसके अञ्जनसे प्रमेह नष्ट होता है और इसके लेपके द्वारा दग्धक्षत लीढ (चाटाहुआ) दष्टविष तथा पीतविष नष्ट होता है ॥ ७२ ॥

अर्शःस्त्रारुद्धेषुचगुदलेपोयोनिले पनंस्त्रीणाम्। मूढगर्भेदुष्टेललाटले पःप्रतिश्याये ॥ ७३ ॥

इसका ववासीर तथा मलरोधमें गुदामें लेप करना चाहिये स्त्रियोंकी योनिमें लेपकरै योनिदोष तथा मूढ़गर्भ में प्रतिश्याय (जुकाम) में ललाट में लेप करै ॥ ७३ ॥

दद्रुकण्डूकिटिमेकुष्ठेश्वित्रेपुचविच र्चिकादिपुलेपः। गजइवतरूनिग दान्निहन्त्यगदगन्धहस्त्येषः ७४ ॥

इति गन्धनामाअगदहस्ती।

दाद खुजली किटिभ कुष्ठ सफेद कुष्ठ तथा विचर्चिका में लेप करना चाहिये यह अगदगन्धहस्तीनाम औषध हाथी जैसे वृक्षों को तोड़ डालता है वैसेही रोगों को नष्ट करती है ॥ ७४ ॥

पत्रागुरुमुस्तैलानिर्यासःपञ्चचन्दनं तथापृक्का। त्वङ्नलदोत्पलबालक हरेणुकोशीरव्याघ्रनखाः ॥ ७५ ॥

तेजपात अगर मोथा इलायची निर्यास पांचोंचन्दन असमर दालचीनी कमल सुगन्धबाला रेणुका जटामांसी खस व्याघ्रनखी॥७५॥

सुरदारुकनककुंकुमध्यामककुष्ठप्रि यङ्गवस्तगरम्। पञ्चाङ्गानिशिरीषा द्व्योषैलामनःशिलाजाज्यः॥७६॥

देवदारु कनक केसर सुगन्ध तृणकूट प्रियंगु तगर शिरीपके मूल छालपत्र पुष्प तथा फल सोंठि मिरच पीपल बड़ी इलायची मैनसिल जीरा ॥ ७६ ॥

श्वेतकटभीकरञ्जौरक्षोघ्नीसिन्धुवा रिकारजनी। सुरसाञ्जनगैरिकमञ्जि ष्ठानिम्बनिर्यासाः ॥ ७७ ॥

श्वेतकटभी (एक प्रकारकी मालकांगनी) करञ्ज तुलसी स्योंड़ी हल्दी रासन रसोंत गेरू मंजीठ नीमका गोंद ॥ ७७ ॥

वंशत्वगश्वगन्धाहिंगुदधित्थाम्ल वेतसंलाक्षा। मधुमधूकसोमराजी वचारुहारोचनातगरान् ॥ ७८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वंशलोचन दालचीनी असगन्ध हींग कैथा अम्लवेतस लाख शहद मुलेठी सोमराजी बच गुरच गोरोचन तथा तगर ॥ ७८ ॥

अगदोऽयंवैश्रवणाख्यातस्त्र्याम्बकेणषट्यङ्गः । अप्रतिहतप्रभावःख्यातोमहागन्धहस्तीति ॥ ७९ ॥

यह साठ अंगवाली औषध महादेवजी ने कुबेर से कही इसका प्रभाव कभी हत नहीं होता और इसकानाम महागन्धहस्तीहै॥७९॥

पित्तेनगवांपेष्यागुलिकाःकार्य्यास्तुपुष्ययोगेन । पानाञ्जनप्रलेपैः प्रसाधयेत्सर्वकर्माणि ॥ ८० ॥

इसकी पुष्य नक्षत्रमें गोरोचनके द्वारा गोली बनावै यह पान अञ्जन तथा प्रलेपसे सर्व कार्य्यों को साधती है ॥ ८० ॥

पैल्यंकराडूंतिमिरंरात्र्यान्ध्यंकाचमर्बुदंपटलम् । हन्तिसततंप्रयोगाद्धितमितपथ्याशिनांपुंसाम् ॥ ८१ ॥ विषमज्वरानजीर्णान्दद्रुकराडूविषूचिकाश्चोपहन्तिनृणाम् । विषंमूषिकलतानांसर्वेषांपन्नगानाञ्च । आशुविषंनाशयतिसमूलजमथकन्दजंसर्वम् ॥ ८२ ॥

यदि हित परिमित तथा पथ्याशी होकर मनुष्य इस औषधका सेवन करै तो पैल्य खुजली तिमिर रतौंधी काच (नेत्ररोगविशेष) अर्बुद पटल (आंखके रोग) विषमाजीर्ण विषमज्वर दाद खाज विसूचिकाप्रभृति रोगों का नाश होताहै और मूषक मकड़ी और सब सर्पों का विष तथा चर्मजविष समूल नष्ट हो जाता है ॥ ८१ । ८२ ॥

एतेनलिप्तगात्रःसर्पान्गृह्णातिभक्षयेच्चविषम् । कालपरीतोऽपिनरोजीवतिनित्यंनिरातङ्कः ॥ ८३ ॥

यदि इसका लेपकरले तो सर्पको पकड़ सक्ता है और विष पीसक्ता है यदि मृत्यु अत्यन्त आसन्न हो तथापि इस औषधके सेवन से नीरोग होके जीसक्ता है ॥ ८३ ॥

आनद्धेगुदलेपोयोनिलेपश्चमूढगर्भाणाम् । मूर्च्छार्तिषुचललाटेप्रलेपनमाहुःप्रधानतमम् ॥ ८४ ॥

मलवद्ध में इसका गुदामें लेप करना चाहिये मूढगर्भ होने से योनि में लेप करना चाहिये मूर्च्छा तथा शिरकी पीड़ा में शिरमें लेप करना उचित है ॥ ८४ ॥

भेरीमृदङ्गपटहाश्छत्राण्यमुनातथा ध्वजपताकाः । लिप्ताहिविषनिरस्तेप्रध्वनयेद्दर्शयेन्मतिमान् ॥ ८५ ॥

बुद्धिमान् मनुष्य विष के नाशके अर्थ इस औषध के द्वारा लिप्त भेरी मृदंग तथा पटहको बजावै और छत्र ध्वज पताका दिखावै॥८५॥

यत्रचसन्निहितोऽयंनतत्रबालग्रहानरक्षांसि । नचकार्मणवेतालावहन्तिनाथर्वणामंत्राः ॥ ८६ ॥ सर्वग्रहानतत्रप्रभवन्तिनचाग्निशस्त्रनृपचौराः । लक्ष्मीश्चतत्रभजतेयत्रमहागन्धहस्त्यस्ति ॥ ८७ ॥

जहां यह औषध रहता है वहां बालग्रह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राक्षस कार्मण (जादूवगैरह) वेताल आथर्वण मन्त्र (जिनकेद्वारा षट्प्रयोग होते हैं) सर्वग्रह अग्नि शस्त्र राजा तथा चोर इनका भय नहीं होता और लक्ष्मी का वास रहता है ॥ ८६ । ८७ ॥

पिष्यमाणइमञ्चात्रसिद्धंमंत्रमुदीरयेत् । मममाताजयानामविजयोनाममेपिता ॥ ८८ ॥

इसके पीसनेमें इस सिद्ध मन्त्रको पढ़ै ॥ मममाताजयानामविजयोनाममेपिता ८८॥

सोऽहंजयोजयापुत्रोविजयोऽथजयामिच । नमःपुरुषसिंहायविष्णवेविश्वकर्मणे ॥ ८९ ॥

सोऽहञ्जयोजयापुत्रो विजयोऽथजयामि च । नमःपुरुषसिंहाय विष्णवेविश्वकर्मणे ॥८९॥

सनातनायकृष्णायभवायविभवायच । तेजोवृषाकपेःसाक्षात्तेजोब्रह्मेन्द्रयोर्यमे ॥ ९० ॥

सनातनायकृष्णाय भवायविभवायचातेजो वृषाकपेःसाक्षात्तेजोब्रह्मेन्द्रयोर्यमे ॥ ९० ॥

यथाहंनाभिजानामिवासुदेवपराजयम् । मातुश्चपाणिग्रहणंसमुद्रस्यचशोषणम् ॥ ९१ ॥

यथाहन्नाभिजानामि वासुदेवपराजयम् मातुश्चपाणिग्रहणंसमुद्रस्यचशोषणम् ॥ ९१ ॥

अनेनसत्यवाक्येनसिध्यतामगदोह्ययम् । हिलिमिलिसंस्पृष्टेरक्षसर्वभेषजेतुमे ॥ ९२ ॥

अनेनसत्यवाक्येनसिध्यतामगदोह्ययम् । हिलिमिलिसंस्पृष्टेरक्षसर्वभेषजेतुमेस्वाहा ॥ ९२ ॥

इति महागन्धहस्तीनामागदः ।

ऋषभकजीवकभार्गीमधुकोत्पलधान्यकेशराजाज्यः । ससितगिरिकोलमध्याःपेयाःश्वासज्वरादिहराः ॥ ९३ ॥

ऋषभक जीवक वमनेठी गुरच कमल धनियां नागकेसर जीरा शर्करा गेरू बेरकागूदा यह सब औषध पान करनेसे श्वास तथा ज्वर आदिका नाश करती हैं ॥ ९३ ॥

हिंगुचकृष्णायुक्तंकपित्थरसमुग्रलवणञ्च । समधुसितोपातव्योज्वरहिक्काश्वासकासघ्नौ ॥ ९४ ॥

हींग पीपल कैथेका रस सैन्धव लवण मधु तथा शर्करा इनके पीनेसे ज्वर श्वास खांसी तथा हिक्काका नाश होता है ॥ ९४ ॥

लेहःकोलास्थ्यञ्जनलाजोत्पलमधुघृतैर्वम्याम् । बृहतीद्वयाढकीपत्रधूमवर्त्तिस्तुहिक्काघ्नी ॥ ९५ ॥

बेरका मध्य रसौत खील कमल मधु तथा घृतका अवलेह वमन में देना चाहिये भटकटैया बड़ी भटकटैया अरहर तथा तेजपात इनके द्वारा धूम तथा वर्त्तिका से हिक्काका नाश होता है ॥ ९५ ॥

शिखिबर्हिबलाकास्थीनिसर्षपाश्चन्दनंचघृतयुक्तम् । धूमोगृहशयनासनवस्त्रादिषुशस्यतेविषनुत् ॥ ९६ ॥

मोरकी पूंछ बककी अस्थि सरसों लालचन्दन तथा घृतके द्वारा धूमगृह श

ष्या आसन तथा वस्त्र आदिके विषको नष्ट करता है ॥ ९६ ॥

घृतयुक्तेनतकुष्ठेभुजगपतिशिरःशिरीषपुष्पश्च । धूमागदःस्मृतोऽयंसर्वविषघ्नःश्वयथुहृच्च ॥ ९७ ॥

कूट घृत कपूरी जड़ी तथा शिरीष पुष्प इन का धूम सर्व प्रकार के विष तथा शोथ को नष्ट करता है इसका धूमागदनाम है ॥ ९७ ॥

जतुसेव्यपत्रगुग्गुलुभल्लातककककुभपुष्पसर्जरसाः । श्वेताधूमाउरगाकुकीटवस्त्रक्रिमिहराःस्युः ॥ ९८ ॥

लाख खस तेजपात गूगल भिलावां अर्जुन के फूल गन्धापिरोजा तथा सफेद पाड़ली इनके धूम से सर्प चूहा कीट तथा वस्त्रकीट (जूं वगैरह) का नाश होता है ॥ ९८ ॥

तरुणपलाशक्षारस्नुतंपचेच्चूर्णितैःसहसमांशैः । लोहितमृद्रजनीद्वयशुक्लसुरसमञ्जरीमधुकैः ॥ ९९ ॥

नवीन ढांकके क्षाररस में गेरू दोनों हल्दी श्वेततुलसी की मञ्जरी गुर्च ॥ ९९ ॥

लाक्षासैन्धवमांसीहरेणुहिंगुद्विशारिवाकुष्ठैः । सव्योषैर्वाह्लीकैर्दर्वीलेपेनघट्टयेद्यावत् ॥ १०० ॥

लाख सैन्धवलवण जटामांसी रेणुका हींग श्यामालता कालाशाम्ब कूट सोंठ मिरच पीपल तथा केसर ये सब समभाग चूर्ण करके छोड़ै और जबतक कड़छुल में न लगने लगै तबतक घोटता और पकाताजाय॥ १०० ॥

सर्वविषशोथगुल्मत्वग्दोषार्शोभगन्दरप्लीह्नः । शोथापस्मारक्रिमिभूतस्वरभेदकण्डूपाण्डुगदान् ॥ १०१ ॥ मन्दाग्नित्वंकासंसोन्मादंनाशयेन्नृणामाशु । गुलिकाश्छायाशुष्काःकोलसमास्ताःसमुपयुक्ताः ॥ १०२ ॥

इति क्षारागदः ।

अन्त में बेरके बराबर गोली छायामें सुखाकर बनावै अर्थात् इसको धूप न दिखावै इसके सेवनसे सर्व प्रकार के विष शोथ गुल्म चर्मके रोग बवासीर भगन्दर पिलही क्षय मिरगी क्रिमिभूत स्वरभेद खजुली पाण्डुरोग मन्दाग्नि खांसी तथा उन्माद बहुत शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ १०१ । १०२ ॥

विषपीतदष्टविद्धेष्वेतादिग्धेचवाच्यमुद्दिष्टम् । सामान्यतःपृथक्त्वान्निर्देशमतःशृणुयथावत् ॥ १०३ ॥

यहांतक सामान्य रीति से विष पीत दष्ट विद्ध तथा दिग्ध की औषध कही अब मैं उन की औषध पृथक् २ कहूंगा सो सुनो॥ १०३॥

रिपुयुक्तेभ्योनृभ्यःस्त्रेभ्यःस्त्रीभ्योथवाभयंनृपतेः । आहारविहारगतस्तस्मात्प्रेष्यान्परीक्षेत् ॥ १०४ ॥

रिपुके द्वारा भेजेगये मनुष्यों से तथा अपनी स्त्रियोंसे राजाको भय होताहै तिस से आहार तथा विहार में भेजेहुये मनुष्यों तथा पदार्थों को अच्छी रीतिसे जांचै ॥ १०४ ॥

अत्यर्थशङ्कितःस्याद्बहुवागथवाल्पवाग्विगतलक्ष्मीः । प्रासःप्रकृतिविकारोविषप्रदातानराज्ञेयः ॥ १०५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विष देनेवाला मनुष्य अत्यन्त शङ्कित बहुत असङ्गत बोलनेवाला लक्ष्मीरहित तथा अपने स्वभाव से चलित होजाता है ॥ १०५ ॥

दृष्ट्वैवंनतुसहसाभोज्यंनस्येत्तदग्रमग्नौतु । सविषंहिप्राप्यान्नंबहून्विकारान्भजत्यग्निः ॥ १०६ ॥ शिखिबर्हविचित्रार्चिस्तीक्ष्णाल्परूक्षकुणपधूमश्च । स्फुटतिचसशब्दमशब्दमेकावर्त्तोविहितार्चिरपिस्यात् ॥ १०७ ॥

ऐसा देखकर सहसा भोजन न करै उसको अग्नि में डालै अग्निसे विष अन्नको पायकर मोर की पूंछ की तरह चित्र विचित्र ज्वाला दरसाती है तथा विकारको प्राप्त होती है और अग्नि से तीक्ष्ण रूक्ष तथा शवकीसी गन्धवाला धूम निकलता है और अग्नि शब्द के साथ अथवा विना शब्द के स्फुटित होती है (चिटकती है) एकावर्त होतीहै अथवा निस्तेज होजाती है ॥ १०६ । १०७ ॥

पात्रस्थश्चविवर्णंभोज्यंस्यान्मक्षिकाश्चमारयति । क्षामस्वरांश्चकाकान्कुर्य्याद्विरजेच्चकोराक्षि ॥ १०८ ॥

पात्र में रखने से अन्नका वर्ण बिगड़ जाताहै और मक्षिकाभी उसपर बैठने से मरजाती हैं कौवोंका स्वर क्षीण होजाता है तथा चकोरों के चक्षु विवर्ण होजाते हैं ॥ १०८ ॥

पानेनीलाराजीवैवर्ण्यंस्वाञ्चनेक्षतेच्छायाम् । विकृतामथवापश्यतिलवणाक्तेफेनमालास्यात् ॥१०९॥

यदि पीने के पदार्थों में विष होता है तो नीलिमा तथा विवर्णता होती है और अपनी छाया उसमें नहीं दिखाई पड़ती अथवा अपनी छाया विकारयुक्त मालूम होती है और यदि उसपानी में लवण छोड़ै तो फेन उठता है ॥ १०९ ॥

पानान्नयोःसविषयोःविरसोगन्धेनरुक्हादिच । मूर्च्छास्यपाणिशोथःसुप्त्यङ्गुलिदाहतोदनखभेदाः११०

यदि सविष अन्न वा पान का व्यवहार कियाजाय तो उसकी गंधिसे विरसता हृदयमें पीड़ा तथा मूर्च्छा होती है और दोनों हाथों में शोथ अंगुलियों में सुन्नदाह तथा नखभेद ॥ ११० ॥

मुखताल्वोष्ठचिमिचिमाजिह्वाशूलवतीजडाविवर्णास्यात् । द्विजहर्षहनुस्तम्भास्यदाहलालागलविकाराः ॥ १११ ॥

मुख तालु तथा ओष्ठों में चिमचिमाहट जिह्वा में शूल जड़ता तथा विवर्णता दन्तहर्ष हनुस्तंभ मुखमें दाह रालबहना तथा कण्ठ में रोग होते हैं ॥ १११ ॥

आमाशयंप्रविष्टेवैवर्ण्यंस्वेदसदनमुत्क्लेदः । दृष्टिहृदयोपरोधोबिन्दुशतैश्चीयतेचाङ्गम् ॥ ११२ ॥

विषके आमाशय में प्राप्त होजाने पर विवर्णता स्वेद अवसाद (अङ्गका गिरासा पड़ना) तथा उत्क्लेद दृष्टि तथा हृदय का उपरोध और शरीर में सैकड़ों बिन्दु उत्पन्न होते हैं ॥ ११२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक्काशयन्तुयातेमूर्च्छामदमोहदाह बलनाशाः। तन्द्राकार्श्यश्चविषेपा गडुत्वञ्चोदरस्थेस्यात् ॥ ११३ ॥

विषके पक्काशयमें प्राप्त होनेपर मूर्च्छा मद मोह दाह तथाबलका नाशहोताहै विषके उदर में प्राप्त होनेपर तन्द्रा कृशता तथा पाण्डुता होती है ॥ ११३ ॥

दन्तपवनस्यकूर्चोविशीर्य्यतेदन्तो ष्ठमांसशोफश्च। केशच्युतिःशिरो ग्रन्थयश्चसविषेशिरोभ्यङ्गे॥११४॥

दतून में विष होनेसे उसकी कूंची टूटजाती है और दांत तथा ओष्ठके मांसमें शोथ होता है यदि तैल आदिमें विष होय तो बालटूटते हैं और शिरमें ग्रन्थियां उत्पन्न होती हैं। १४॥

दुष्टेऽञ्जनेऽक्षिदाहःस्रावाद्युपदेहशोथ रागाश्च। आद्यैरादौकोष्ठःस्पृश्यै स्त्वग्दूष्यतेदुष्टैः॥ ११५ ॥

विषयुक्त अञ्जनसे चक्षुमें दाह स्राव आदि उत्पन्न होते हैं और शोथ तथा रक्तता होती है भोजन के द्रव्यों के विषयुक्त होनेसे कोष्ठमें तथा स्पर्शकेपदार्थोंके दुष्ट होनेसे त्वचा में रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ११५ ॥

स्नानाभ्यङ्गोत्सादनवस्त्रालङ्कारकै र्दुष्टैः। कण्ड्वार्त्तिलोमहर्षाःकोठपिड काश्चिमिचिमाःशोथाः॥ ११६ ॥

स्नानके पदार्थ तैल उत्सादन वस्त्र और अलङ्कारके विषयुक्त होनेसे खुजली रोमाञ्च कोठ पिड़िका चिमचिमा शोथ ॥ ११६ ॥

एतेकरचरणदाहतोदक्लमाङ्गविपा काश्च। भूपादुकाश्वगजचर्मकेतु शयनासनैर्दुष्टैः॥ ११७ ॥

हस्त तथा पादों में दाह तोद क्लम तथा अङ्गोंका पकना होता है पृथ्वी खड़ाऊं घोड़ा हाथी पताका बखतर शयन तथा आसन इन के विषयुक्त होनेसे ॥ ११७ ॥

माल्यमगन्धंम्लायतिशिरसोरुजा लोमहर्षकरम्। स्तम्भयतिखानिद र्शनमुपहन्तिचनासिकांधूमः॥११८॥

मालामें सुगन्धि नहीं रहती और कुम्हला जाती है शिरमें पीड़ा तथा रोमहर्ष होता है यदि धूम विषयुक्त होय तो गन्ध ग्रहणकी शक्ति नष्ट होजाती है और दृष्टि तथा अन्य इन्द्रियां स्तम्भित होजाती हैं ॥ ११८ ॥

कूपतडागादिजलंदुर्गन्धंसकलुषंवि वर्णञ्च। पीतंश्वयथुंकोठान्पिडिकांश्च करोतिमरणञ्च ॥ ११९ ॥

कूप तथा तड़ाग आदिका जल विषयुक्त होनेसे दुर्गन्धित मैला तथा विवर्ण होजाता है यदि पियाजाय तो शोथ कोठ पिड़िका तथा मरण होता है ॥ ११९ ॥

आदावामाशयगेवमनंत्वक्स्थेप्रदे हसेकादि। कुर्य्याद्भिषक्चिकित्सां दोषबलञ्चैवहिसमीक्ष्य ॥ १२० ॥

विषके आमाशयगत होनेपर वमन त्वचा में प्राप्त होनेपर प्रदेह (लेप) तथा सेक दोष के बलको देखकर वैद्य करावै ॥ १२० ॥

इतिमूलविषविशेषाः प्रोक्ताःशृणु जङ्गमस्यातः। सविशेषचिकित्सि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तमेवादौतत्रोच्यतेतुसर्पाणाम्१२१॥

यहांतक स्थावरविषों की चिकित्सा कही अब जङ्गमविषकी चिकित्सा सुनो उस में से पहले सर्पोंकी विशेष चिकित्सा कहताहूं ॥ १२१ ॥

इहदर्वीकरःसर्पोमण्डलीराजिमानिति। त्रयोयथाक्रमंवातपित्तश्लेष्मप्रकोपणाः॥ १२२॥

दर्वीकर मण्डली राजिमान् यह तीनसर्प वात पित्त तथा कफको क्रमसे कुपित करते हैं॥ १२२ ॥

दर्वीकरःफणीज्ञेयोमण्डलीमण्डलाःफणाः। बिन्दुलेखोविचित्राङ्गःपन्नगःस्यात्तुराजिमान् ॥ १२३ ॥

जिसके फणा होय उसको दर्वीकर जिसके फण मण्डलाकार होय उसको मण्डली जिसका शरीर चित्र विचित्र होय और चित्तीदार होय उसको राजिमान् कहतेहैं१२३॥

विशेषाद्रूक्षकटुकमम्लोष्णंस्वादुशीतलम् । विषंयथाक्रमंतेषांतस्माद्वातादिकोपनम् ॥ १२४ ॥

विशेष करके दर्वीकर का विष रूक्ष तथा कटु होता है इससे वायुकी मण्डलीका विष अम्ल तथा उष्ण होता है इससे पित्तको राजिमान् का विष स्वादु और शीतल होता है इससे कफ को बढ़ाता है ॥ १२४ ॥

दर्वीकरकृतोदंशःसूक्ष्मदंष्ट्रापदोषितः । निरुद्धरक्तःकूर्माभोवातव्याधिकरोमतः॥ १२५॥

दर्वीकर का दंश सूक्ष्म दंष्ट्रासे दूषित होने के कारण रुधिर नहीं बहाता इससे कूर्म्म के तुल्य होता है और वातव्याधि को उत्पन्न करता है ॥ १२५ ॥

पृथ्वर्पितःसशोथश्चदंशोमण्डलिभिःकृतः । पीताभःपीतरक्तश्च सर्वपित्तविकारकृत् ॥ १२६ ॥

मण्डली का दंश फैला शोथयुक्त पीताभ तथा पीतरक्त और सर्व प्रकारके पित्तके विकारों को करनेवाला होता है ॥ १२६ ॥

कृतोराजिमतादंशःपिच्छिलःस्थिरशोफकृत । स्निग्धःपाण्डुश्चसान्द्रासृक्श्लेष्मव्याधिसमीरणः॥१२७॥

राजिमान् का दंश पिच्छिल स्थिर शोथ का करनेवाला स्निग्ध पाण्डुवर्ण गाढ़े रुधिर को बहानेवाला और कफ की व्याधियों को उत्पन्न करता है ॥ १२७ ॥

वृत्तभोगीमहाकायःश्वसन्मूर्द्धेक्षणःपुमान् । स्थूलमूर्द्धासमङ्गाश्चस्त्रीत्वतःस्याद्विपर्य्ययात् ॥ १२८ ॥

इनमें जिनका शरीर गोलहोय शरीर तथा फणा बड़ी होय ऊपर को आंखें होयँ मस्तक स्थूल तथा सब अंग समहोयँ ऐसे पुरुष(...नी) जातीय होते हैं इसके विपरीत लक्षण स्त्री(...त गे-) जातिके सर्प में होते हैं ॥ १२८ ॥

क्लीबःस्रस्तस्त्वधोदृष्टिःस्वरहीनःप्रकम्पते । स्त्रियादष्टोविपर्य्ययस्तैरेतैःपुंसोनरोमतः ॥ १२९ ॥

स्रस्तअंग वाला अधोदृष्टिवाला स्वरहीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा कांपने वाला नपुंसक जातिका सर्प होताहै स्त्रीके द्वारा डंसेहुए मनुष्यको चिह्न पुरुष के डंसनेके विपरीत पुरुषके डंसनेके चिह्न स्त्री के डंसने के विपरीत होते हैं ॥ १२९ ॥

व्यामिश्रलिङ्गैरेतैस्तुक्लीबदष्टंनरंवदेत् । इत्येतदुक्तंसर्पाणांस्त्रीपुंक्लीबनिदर्शनम् ॥ १३० ॥

यदि दोनों के चिह्न होंय तो नपुंसक का डंसाजानै यह सर्पोंके स्त्री पुरुष तथा नपुंसक का वर्णन कियागया ॥ १३० ॥

पाण्डुवक्त्रस्तुगर्भिण्याशूनोष्ठोऽप्यसितेक्षणः । जृम्भाक्रोधोपजिह्वार्त्तः सूतयारक्तमूत्रवान् ॥ १३१ ॥

गर्भिणी सर्पिणी के डंसने से मुख पाण्डु वर्ण ओष्ठ शोथयुक्त नेत्र कृष्णवर्ण जृम्भा क्रोध तथा उपजिह्व रोगयुक्त होता है प्रसूता सर्पिणी के डंसने में रुधिर मूतता है ॥ १३१ ॥

सर्पोगौधेरकोनामगोधाख्यःस्याच्चतुष्पदः । कृष्णसर्पेणतुल्यःस्यान्नानास्युर्मिश्रजातयः ॥ १३२ ॥

और एक चतुष्पद वा गोधानामका गोधेरक (बिसखोंपर) सर्प होताहै यह कृष्णसर्पके तुल्य है और मिश्रित जातिके बहुत से सर्प हैं ॥ १३२ ॥

गूढसम्पादितंवृत्तंपीडितंलम्बितार्पितम् । सर्पितश्चभृशाबाधंदंशायेऽन्येनतेभृशाः ॥ १३३ ॥

इनकी दंष्ट्रा छिपीहुई गोल पीड़ितसी लम्बायमान फैली हुई अधिक बाधादेनेवाली होती हैं इनके सिवाय जो अन्य सर्पोंकी दंष्ट्रा हैं वह बहुत बाधा देनेवाली नहीं होती हैं ॥ १३३ ॥

तरुणाःकृष्णसर्पास्तुगोनसाःस्थविरास्तथा । राजिमन्तोवयोमध्येभवन्त्याशीविषोपमाः ॥ १३४ ॥

युवा कालेसर्प वृद्ध गोनस सर्प तथा अधवयसू राजिमान सर्प आशीविषके तुल्य होते हैं ॥ १३४ ॥

सर्पदंष्ट्राश्चतस्रस्तुतासांवामाधराःसिताः । पीतावामोत्तरादंष्ट्रारक्तश्यावाधरोत्तरा ॥ १३५ ॥

सर्पकी चार दंष्ट्रा (दाढ़) होती हैं उनमें वामाधरा श्वेतवर्ण वामोत्तरा पीतवर्ण तथा अधरोत्तरा रक्त कपिशवर्ण होती हैं १३५

यन्मात्रःपततेबिन्दुर्गोबालात्सलिलोद्धृतात् । वामाधरायांदंष्ट्रायांतन्मात्रंस्यादहेर्विषम् ॥ १३६ ॥

गऊके बालको पानीमें डालकर निकालनेसे जितना जल गिरता है उतनाही विष सर्पकी वामाधरा दंष्ट्रा में होता है ॥ १३६ ॥

एकद्वित्रिचतुर्वृद्धिविषभागोत्तरोत्तराः । सवर्णास्तत्कृतादंशाबहूत्तरविषाभृशाः ॥ १३७ ॥

वामोत्तरा में इसका द्विगुण अधरा में इसका त्रिगुण तथा उत्तरा में इसका चतुर्गुण विष होता है इन दंष्ट्राओं के दंश एकवर्ण के होते हैं और क्रमशः एक दूसरे से भयानक होते हैं ॥ १३७ ॥

सर्पाणामेवविरमूत्रात्कीटाःस्युःकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यथैवेहकफानिलाभ्याम् । कार्याश्मरीभेदनपातनायविशेषयुक्तंभृणुकर्मसिद्धम् ॥ ५७ ॥

अथ पथरी चिकित्सा ॥

कफज तथा वातज मूत्रकृच्छ्र में जो चिकित्सा कहीगई है वह पथरी तथा शर्करामें भी करनी चाहिये पथरी को फोड़ने के लिये तथा गिराने के लिये विशेष सिद्ध चिकित्सा अब तुम सुनो ॥ ५७ ॥

पाषाणभेदंवृषकंश्वदंष्ट्रापाठाभयाव्योषशटीनिकुम्भाः । हिंस्राखराश्वासितिमारकाणामेर्व्वारुकाणांत्रपुषस्यबीजम् ॥ ५८ ॥

पाषाणभेद रूसा गोखुरू पाढर हड़ सोंठि पीपरि मिर्च कचूर जमालगोटे की जड़ हिंस्री अजमोद सौंफ खीरा ककड़ी के बीज ५८ ॥

उत्कुञ्चिकाहिङ्गुसवेतसाम्लंस्याद्वेबृहत्यौहवुषावचाच । चूर्णपिबेदश्मरिभेदपक्वंसर्पिश्चगोमूत्रचतुर्गणंतैः ॥ ५९ ॥

बड़ी इलायची हींग अमलवेत भटकटैया बड़ी भटकटैया हाऊबेर तथा वच इनके चूर्णको चतुर्गुण गोमूत्रके साथ पाक कियेगये घी के साथ पीवै इससे पथरी फूटजातीहै ॥५९॥

मूलंश्वदंष्ट्रेक्षुरकोरुबूकात्क्षीरेणपिष्टंबृहतीद्वयञ्च । आलोड्यदध्नामधुरेणपेयंदिनानिसप्ताश्मरिभेदनाय ॥ ६० ॥

गोखुरू तालमखाना अरण्डकी जड़ भटकटैया तथा बड़ी भटकटैया इन सबको दूध के साथ पीसकर मीठे दहीमें मिलाकर ७ दिन पीवै इससे पथरी फूटजाती है ॥ ६० ॥

पुनर्नवायोरजनीश्वदंष्ट्राफल्गुप्रवालाश्चसदर्भपुष्पाः । क्षीराम्बुमद्येक्षुरसैःसुपिष्टंपेयंभवेदश्मरिशर्करासु ॥ ६१ ॥

गदहपूर्णा लोहचूर्ण हल्दी गोखुरू कठगूलर मूंगा तथा कुशके पुष्पोंको दूध जल मद्य तथा ईखके रसके साथ पीसकर पीवै इससे पथरी तथा शर्करा का नाश होताहै ॥ ६१ ॥

त्रुटिंसुराह्वंलवणानिपञ्चयवाग्रजंकुन्दुरुकाश्मभेदौ । कम्पिल्लकंगोक्षुरकस्यबीजमेर्वारुबीजंत्रपुषस्यबीजम् ॥ ६२ ॥

छोटी इलायची देवदारु पांचो लवण जवाखार कुंदरू पाषाणभेद कबीला गोखुरू के बीज खीरा ककड़ी के बीज ॥ ६२ ॥

चूर्णीकृतंचित्रकहिङ्गुमांसीयमानितुल्यंत्रिफलाद्विभागम् । अम्लैःसशुक्तैरसमद्ययूषैःपेयंहिगुल्माश्मरिभेदनार्थम् ॥ ६३ ॥

चीता हींग जटामांसी तथा अजवाइन एक २ भाग और हड़ बहेड़ा तथा आंवला दो २ भाग इनके चूर्णको सिरकायुक्त खट्टे मांसरस मद्य तथा यूषके साथ पीने से गुल्म तथा पथरी का भेदन होताहै ॥ ६३ ॥

शिग्रोस्तुयूषोमृदुमूलकल्कान्द्विल्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रमाणेघृततैलभृष्टः । शीतोश्म भित्स्याद्धिमण्डयुक्तःपेयःप्रकामं लवणेनयुक्तः ॥ ६४ ॥

सहिंजन की चार तोले कोमल जड़ को पीसकर घी तथा तैलमें भूनकर यूष बनावै और उस शीतल यूषमें दही का तोड़ तथा लवण मिलाकर जीभर के पीवै इससे पथरी का नाश होताहै ॥ ६४ ॥

जलेनशोभाञ्जनमूलकल्कःशीतो हितश्चाश्मरिशर्कराभ्याम्। सितो पलावासमयावशूकाःकृच्छ्रेषुसर्वे ष्वपिभेषजंस्यात् ॥ ६५ ॥

सहिंजनकी जड़के कल्कको जलमें मिलाकर पाक करके ठंढा होनेपर पीने से पथरी तथा शर्करा का नाश होता है मिसरी रूसा तथा जवाखार को समभाग मिलाकर फांकने से सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्रों का नाश होताहै ॥ ६५ ॥

पीत्वाचमद्यंनिगदंरथेनहयेनवाशी घ्रजवेनयायात् । तैःशर्कराप्रच्यव तेऽश्मरीतुशाम्येन्नचेच्छल्यविदुद्धरे त्ताम् ॥ ६६ ॥

निगद मद्यको पीकर बहुत वेगयुक्त रथ अथवा घोड़े पर चढ़के घूमै इससे शर्करा गिरजाती है यदि पूर्वोक्त उपायों से पथरी का नाश न होय तो शस्त्रकर्म का जानने वाला वैद्य शस्त्र के द्वारा पथरीको निकालै ॥ ६६ ॥

रेतोविघातप्रभवेतुकृच्छ्रेसमीक्ष्यदो षंप्रतिकर्मकुर्यात् । कार्पासमूलंवृष काश्मभेदौवलास्थिरादीनिगवेधु काच ॥ ६७ ॥ वृश्चीरऐन्द्रीचपुनर्न वाचशतावरीमध्वशनाखुपर्ण्यौ । तत्क्काथसिद्धंपवनेनरस्यपित्तेऽधि केक्षीरमथापिसर्पिः ॥ ६८ ॥

वीर्य के रुकने से हुए मूत्रकृच्छ्र में दोषोंके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये यदि वीर्य के रुकनेसे हुए मूत्रकृच्छ्र में वायुकी अधिकता होय तो कपास की जड़ रूसा पाषाणभेद वरियारा सरिवन आदिगण गरडुवा वृश्चीर इन्द्रायण गदहपूर्णा शतावर मुलहठी विजयसार तथा मूसापर्णी इनके काढ़ेके साथ पाक कियागया घी पीना चाहिये यदि पित्त अधिक होय तो दूध तथा घी पीना चाहिये ६७।६८॥

कफेचयूषादिकमन्नपानंसंसर्गजेस र्वहितःक्रमःस्यात् । एवंनचेच्छाम्य तितस्ययुञ्ज्यात्सुरांपुराणांमधुकं सर्ववा ॥ ६९ ॥

यदि कफ अधिक होय तो यूष आदि अन्न पान का सेवन करना चाहिये और जो तीनों दोषोंका कोप होय तो तीनों दोषों के लिये जो चिकित्सा कहीगई है वह सब करनी चाहिये यदि इन उपायों से यह मूत्रकृच्छ्र शान्त न होय तो पुरानी मद्य तथा मध्वासव पिलाना चाहिये ॥६९ ॥

विहङ्गमांसानिचबृंहणायवस्तीश्चशु क्राशयशोधनार्थम् । शुद्धस्यतृप्त स्यचवृष्ययोगैःप्रियानुकूलाःप्रमदा विधेयाः ॥ ७० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बृंहणके निमित्त पक्षियों का मांस खिलाना चाहिये और वीर्यके स्थान को शुद्धकरने के लिये वस्ति देनी चाहिये फिर वीर्य के स्थानके शुद्ध होजाने पर वृष्य (काम वर्धक) योग खिलाकर प्रिय तथा अनुकूल स्त्रियों के साथ रमण कराना चाहिये ॥ ७० ॥

रक्तोद्भवेतूत्पलनालतालकाशेक्षुबालेक्षुकशेरुकाणि । पिबेत्सिताक्षौद्रयुतानिखादेदिक्षुंविदारींत्रपुषाणि चैव ॥ ७१ ॥

रक्तज मूत्रकृच्छ्र में नीलोत्पल की डण्डी ताड़काश तालमखाना ईख तथा कसेरू इनके काढ़ेमें शहद तथा मिसरी डालकर पीवै ईख चूसै और बिलाईकन्द तथा खीराखाय ७१

घृतंश्वदंष्ट्रास्वरसेनसिद्धंक्षीरेणचैवाष्टगुणेनपेयम् । स्थिरादिकानांकतकादिकानामेकैकशोवाविधिनैव तेन ॥ ७२ ॥

गोखरू के रस तथा अठगुणे दूधके साथ पाक कियेगये घीको पीने से रक्तज मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है सरिवन आदिगण मकर तेंदू तथा निर्मली आदिगण इन सबको अथवा इन में से एकको पूर्वोक्तविधि से सेवन करने से रक्तजमूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै ७२

क्षीरेणवस्तिर्मधुरौषधैःस्यात्तैलेनवा स्वादुफलोत्थितेन। यन्मूत्रकृच्छ्रेविहितन्तुपैत्तेकार्य्यन्तुतच्छोणितमूत्र कृच्छ्रे ॥ ७३ ॥

रक्तज मूत्रकृच्छ्र में दूध मधुर औषध अथवा मधुर फलों से उत्पन्न भये तैलके द्वारा वस्ति देनी चाहिये और पित्तज मूत्रकृच्छ्र में जो चिकित्सा कहीगई है वह करनी चाहिये ॥ ७३ ॥

व्यायामसन्धारणशुष्कभक्ष्यपिष्टान्नवातार्ककरव्यवायान् । खर्जूरशालूककपित्थजम्बूबिसंकषायञ्चर संभजेन्न ॥ ७४ ॥

इति अश्मरीचिकित्सा ।

व्यायाम मल मूत्रादि वेगों का रोकना शुष्क भक्ष्य पदार्थ पिट्ठी के पदार्थ वायु धूप मैथुन खजूर कमलकी जड़ कैथा जामुन बिस तथा कषायरस यह सब मूत्रकृच्छ्र तथा पथरी में वर्जित हैं ॥ ७४ ॥

इति मूत्रकृच्छ्राश्मरीचिकित्सा ॥

अथ हृद्रोगचिकित्सा ।

व्यायामतीक्ष्णातिविरेकवस्तिचिन्ताभयत्रासमदातिचाराः। छर्द्यामसन्धारणकर्षणानिहृद्रोगकर्तॄणितथाभिघातः ॥ ७५ ॥

अथ हृद्रोगचिकित्सा ॥

व्यायाम तीक्ष्ण बहुत विरेचन वस्ति चिन्ता भय घबड़ाहट मद हिंसाकर्म छर्दि आम मल मूत्रादि वेगों का रोकना कर्षण तथा चोट इनकारणों से हृद्रोग (हृदयकेरोग) की उत्पत्ति होती हैं ॥ ७५ ॥

वैवर्ण्यमूर्च्छाज्वरकासहिक्काश्वासास्यवैरस्यतृषाःप्रमोहाः । छर्दिः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफोत्क्लेशरुजोऽरुचिश्चहृद्रोगजाः स्युर्विविधास्तथान्ये ॥ ७६ ॥

हृद्रोग में विवर्णता (वर्णकाविगड़जाना) मूर्च्छा ज्वर खांसी हिचकी श्वास मुख की विरसता तृषा मोह छर्दि कफ का उभड़ना पीड़ा तथा अरुचि यह और अन्य इसीप्रकार के रोग हृद्रोग से होते हैं ॥ ७६ ॥

हृच्छून्यभावद्रवशोषभेदस्तम्भाःस मोहाःपवनाद्विशेषः । पित्तात्त मोदूयनदाहमोहाःसन्त्रासतापज्व रपीतभावाः ॥ ७७ ॥

वातज हृद्रोग में हृदय का शून्यहोना द्रव शोष भेद स्तम्भ तथा मोह यह विशेष लक्षण होते हैं पित्तज हृद्रोग में अंधकार दिखाईदेना ताप दाह मोह घबड़ाहट खेद ज्वर तथा पीत वर्ण यह विशेष लक्षण होते हैं ॥ ७७ ॥

स्तब्धंगुरुःस्यात्स्तिमितञ्चमर्मकफा त्प्रसेकज्वरकासतन्द्राः । विद्यात्रि दोषन्त्वपिसर्वलिङ्गंतीव्रार्त्तितोदंकृ मिजंसकण्डूम् ॥ ७८ ॥

कफजहृद्रोग में स्तब्धता भारीपन मर्मोंका स्तिमित नासिका से जल बहना ज्वर खांसी तथा तन्द्रा यह विशेष लक्षण होते हैं सन्नि-पातजहृद्रोग में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं क्रमिजहृद्रोग में बहुत तीक्ष्ण पीड़ा सुई चुभोनेकी सी पीड़ा तथा खुजली यह विशेष लक्षण होते हैं ॥ ७८ ॥

तैलंससौवीरकमस्तुतक्रंवातेप्रपेयं लवणंसुखोष्णम् । मूत्राम्बुसिद्धं लवणैश्चतैलमानाहगुल्मार्तिहृदाम यघ्नम् ॥ ७९ ॥

वातजहृद्रोग में कुछ उष्ण तैल सौवीरक दही का तोड़ तथा मट्ठा लवण मिलाकर पीनाचाहिये लवण गोमूत्र तथा जलके साथ पाक कियागया तैल पीनेसे अफरा गुल्म तथा हृद्रोग का नाश होता है ॥ ७९ ॥

पुनर्नवांदारुसपञ्चमूलेरास्नांयवा न्बिल्वकुलत्थकोलम् । पक्काजले तेनविपाच्यतैलमभ्यङ्गपानेऽनिल हृद्गदोऽयम् ॥ ८० ॥

गदहपूर्णा देवदारु पंचमूल रास्ना यव बेल कुल्थी तथा बेर इनके काढ़ेके साथ पाक कियेगये तैलको शरीर में मलने से तथा पीने से वातजहृद्रोग का नाश होता है ॥ ८० ॥

हरीतकीनागरपुष्कराह्वैर्वयःक्कयस्था लवणैश्चकल्कैः । सहिङ्गुभिःसा धितमग्र्यसर्पिर्गुल्मेसहृत्पार्श्वगदेऽ निलोत्थे ॥ ८१ ॥

हड़ सोंठि पुष्करमूल क्षीर काकोली का-कोली सैंधवलवण तथा हींग इनके कल्क के साथ पाक कियागया घी पीने से गुल्म वातज हृद्रोग तथा पसुलियों की पीड़ाका नाश होता है ॥ ८१ ॥

सपुष्कराह्वंफलपूरमूलंमहौषधंशट्य भयाचकल्काः । क्षाराम्बुसर्पिर्लवणै र्विमिश्राःस्युर्वातहृद्रोगविकर्त्तिका घ्नाः ॥ ८२ ॥

पुष्करमूल बिजौरानिम्बूकी जड़ सोंठि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कचूर हड़ क्षारजल घी तथा सैंधवलवण इनको मिलाकर पीने से वातजहृद्रोग और गुदा में कैंची के काटने की सी पीड़ाका नाश होता है ॥ ८२ ॥

क्वाथःकृतःपौष्करमातुलुङ्गपलाशभूतीशकटीसुराह्वैः । सशुण्ठ्यजाजीद्विवचायमानीसक्षारउष्णोलवणश्चपेयः ॥ ८३ ॥

पुष्करमूल बिजौरानिम्बू ढाख रोहिष कचूर देवदारु सोंठि जीरा वच श्वेतवच तथा अजवाइनके कुछ उष्णकाढ़ेमें जवाखार तथा सैंधवलवण मिलाकर पीने से वातज हृद्रोग का नाश होता है ॥ ८३ ॥

पथ्याशटीपुष्करपञ्चकोलान्समातुलुङ्गायमकेनकल्कः । गुडप्रसन्नालवणैश्चभृष्टोहृत्पार्श्वगुल्मोदरयोनिशूले ॥ ८४ ॥

हड़ कचूर पुष्करमूल पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि तथा बिजौरा निम्बू इनके कल्कको घी तथा तैलमें भूनकर गुड़ प्रसन्ना (मद्यविशेष) तथा लवण के साथ सेवन करने से हृद्रोग पसुलियोंकी पीड़ा गुल्म उदर रोग तथा योनि शूलका नाश होताहै ८४ ॥

स्यात्त्र्यूषणंद्वेत्रिफलेसपाठेनिदिग्धिकागोक्षुरकौबलेद्वे । ऋद्धिस्त्रुटिस्तामलकीस्वगुप्तामेदेमधूकंमधुकंस्थिराच ॥ ८५ ॥

सोंठि पीपरि मिर्च त्रिफला पाढ़र भटकटैया गोखरु वरियारा गुलशकरी ऋद्धि छोटी इलायची भूमि आमला किवांच मेदा महामेदा मुलहठी महुआ शालपर्णी ॥ ८५ ॥

शतावरीजीवकपृश्निपर्ण्यौद्विकर्षैरिभैरक्षसमैःसुपिष्टैः । प्रस्थंघृतस्येहपचेद्विधिज्ञःप्रस्थेनदध्नस्त्वथमाहिषस्य ॥ ८६ ॥

शतावर जीवक तथा पृष्णिपर्णी एक एक तोले इन सब औषधियों को महीन पीसकर चौंसठ २ तोले घी तथा भैंस के दहीमें मिलाकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे ॥ ८६ ॥

मात्रांपलञ्चार्द्धपलंपिचुंवाप्रयोजयेन्माक्षिकसंप्रयुक्तम् । श्वासेसकासेत्वथपाण्डुरोगेहलीमकेहृद्ग्रहणीप्रदोषे ॥ ८७ ॥

इति त्र्यूषणाद्यंघृतम् ।

फिर इसमें से चार तोले दो तोले अथवा एक तोले भर घी लेकर शहद में मिलाकर चाटे इससे श्वास खांसी पाण्डुरोग हलीमक हृद्रोग तथा ग्रहणी दोषका नाश होताहै ॥

शीताःप्रदेहाःपरिषेचनञ्चतथाविरेकोहृदिपित्तदुष्टे । द्राक्षासिताक्षौद्रपरूषकैःस्याच्छुद्धेतुपित्तापहमन्नपानम् ॥ ८८ ॥

पित्तजहृद्रोग में शीतल लेप तरारा तथा विरेचन हित होताहै मुनक्का शक्कर शहद तथा फालसा के द्वारा शरीर के शुद्ध होने पर पित्तनाशक अन्नपान का सेवन करना चाहिये ॥ ८८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यष्ट्याह्विकातिक्तकरोहिणीभ्यां कल्कं पिबेद्वापि सिताजलेन । क्षतेषु सर्पींषि हितानि सर्पिर्गुडाश्चयेतान्प्रसमीक्ष्य सम्यक् ॥ ८९ ॥ दद्याद्भिषक् धन्वरसांश्च गव्यक्षीराशिनां पित्तहृदामयेषु । तैरेवसर्वे प्रशमं प्रयान्ति पित्तामयाः शोणितसंश्रया ये ॥ ९० ॥

मुलेठी तथा कुटकी के कल्क को शरवतमें मिलाकर पीनेसे पित्तज हृद्रोगका नाश होता उरःक्षतरोग में जो घृत तथा घृतके मोदक कहेगये हैं वह घी तथा मोदक और मरुदेश के जीवोंके मांसका रस विचारपूर्वक वैद्य को पित्तज हृद्रोग में देना चाहिये और गऊका दूध पिलाना चाहिये इसके सेवन से सम्पूर्ण रुधिर सम्बन्धी पित्तजरोगों का नाश होता है॥ ८९। ९० ॥

द्राक्षाबलाश्रेयसिशर्कराभिः खर्जूरवीरर्षभकोत्पलैश्च । काकोलिमेदायुगजीवकैश्च क्षीरेचसिद्धं माहिषीघृतं स्यात् ॥ ९१ ॥

मुनक्का बरियारा गजपीपरि शक्कर खजूर काकोली ऋषभक नीलकमल क्षीरकाकोली मेदा महामेदा तथा जीवक इनके कल्क और दूधके साथ पाक कियागया भैंसका घी पित्तजहृद्रोग को नष्ट करता है॥ ९१ ॥

कशेरुकाशैवलशृङ्गवेरप्रपौण्डरीकं मधुकं बिसस्य । ग्रन्थिश्चसर्पिः पयसापचेत्तैः क्षौद्रान्वितं पित्तहृदामयघ्नम् ॥ ९२ ॥

कसेरू शिवार सोंठि पुण्डरिया मुलेठी तथा कमल की दण्डीकी ग्रंथि इनके कल्क और दूधके साथ शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज हृद्रोगका नाश होता है॥ ९२ ॥

स्थिरादिकल्कैः पयसा च सिद्धं द्राक्षारसेनेक्षुरसेन वापि । सर्पिर्हितं स्वादुफलेक्षुजाश्च रसाः सुशीता हृदि पित्तदुष्टे ॥ ९३ ॥

पित्तज हृद्रोग में शालपर्णी आदि गणके कल्क के साथ दूधके साथ मुनक्कों के रसके साथ अथवा ईखके रसके साथ पाक किया गया घी और मधुर फलों का शीतल काढ़ा हित होता है॥ ९३ ॥

स्विन्नस्य वान्तस्य विलङ्घितस्य क्रियाकफघ्नी कफमर्मरोगे । कौलत्थधान्यैश्च रसैर्यवान्नैः पानानि तीक्ष्णानि च शर्कराणि ॥ ९४ ॥

कफज हृद्रोग में स्वेदन वमन तथा लंघन कराके कफनाशक चिकित्सा करनी चाहिये कफज हृद्रोग में कुल्थी तथा धनियां के यूष यव के पदार्थ और शक्करके तीक्ष्णपान (पना) देने चाहिये॥ ९४ ॥

मूत्रेशृताः कट्फलशृङ्गवेरपीतद्रुपथ्यातिविषाः प्रदेयाः । कृष्णाशटीपुष्करमूलरास्नावचाभयानागरचूर्णकश्च ॥ ९५ ॥

कायफल सोंठि सरलकाष्ठ हड़ तथा अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीस इनका गोमूत्रमें काढ़ा करके कफज हृद्रोगमें पीना चाहिये पीपरि कचूर पुष्करमूल रास्ना वच हड़ तथा सोंठि इनका चूर्ण कफजहृद्रोग में हित होता है॥ ९५॥

उदुम्बराश्वत्थवटार्जुनाख्येपलाशरोहीतकखादिरेच। क्काथेत्रिवृत्त्र्यूषणचूर्णसिद्धोलेहःकफघ्नोऽशिशिराम्बुयुक्तः॥ ९६॥

गूलर पीपर बरगद अर्जुन ढाख लालकंजा तथा कत्था इनके काढ़े में निशोथ सोंठि पीपरि तथा मिर्च के चूर्ण को मिलाकर अवलेहका पाक करलेवे इन अवलेह को शीतल जल में मिलाकर पीनेसे कफजहृद्रोगका नाश होता है॥ ९६॥

शिलाह्वयंवाभिषगप्रमत्तःप्रयोजयेत्कल्पविधानदृष्टम्। प्राश्यातथागस्त्यहरीतकीचरसायनंब्राह्म्यमथामलक्याः॥ ९७॥

बुद्धिमान् वैद्य कफजहृद्रोगमें सावधानतापूर्वक शिलाजीत का कल्पस्थान में कहीहुई विधिसे प्रयोग करै अगस्त्यावलेह ब्राह्मरसायन तथा आमलकी रसायन कफजहृद्रोगमें देनी चाहिये॥ ९७॥

त्रिदोषजेलङ्घनमादितःस्यादन्नञ्चसर्वत्रहितंविधेयम्। हीनातिमध्यत्वमवेक्ष्यचैवकार्य्यंत्रयाणामपिकर्मशस्तम्॥ ९८॥

सन्निपातजहृद्रोग में पहिले लंघन कराना चाहिये और फिर त्रिदोषनाशक अन्न देना चाहिये सन्निपातज हृद्रोगमें दोषों की हीनता अधिकता तथा मध्यमता को जानकर तीनों दोषों के लिये हितकारी चिकित्सा करनी चाहिये॥ ९८॥

भुक्तेऽधिकंजीर्य्यतिशूलमल्पंजीर्णेस्थितंचेत्सुरदारुकुष्ठम्। सतिल्वकंद्वेलवणेविडङ्गमुष्णाम्बुनासातिविषंपिबेत्सः॥ ९९॥

यदि भोजन करनेपर हृदयमें अधिक शूल होताहो भोजनका परिपाक होते समय थोड़ा शूल होताहो और भोजनके पचजानेपर शूल रुकजाता होय तो देवदारु कूट लोध सैंधवलवण सोंचरलवण बायविडंग तथा अतीस इनका चूर्ण करके उष्ण जलके साथ पीना चाहिये॥ ९९॥

जीर्णेऽधिकेस्नेहविरेचनंस्यात्फलैर्विरेच्योयदिजीर्य्यमाणे। त्रिष्वेषुकालेष्वधिकेतुशूलंतीक्ष्णंहितंमूलविरेचनंस्यात्॥ १००॥

यदि भोजनके पचजानेपर शूल अधिक होताहो तो स्नेहयुक्त विरेचन देना चाहिये और जो भोजनके पचजाने के समय शूल अधिक होता होय तो फलोंकेद्वारा विरेचन कराना चाहिये और जो भोजन करनेपर भोजन के पचते समय तथा भोजनके पचजानेपर तीनों समयोंमेंही शूल अधिक होता होय तो तीक्ष्ण मूल विरेचन देना चाहिये॥ १००॥

प्रायोऽनिलोरुद्धगतिःप्रकुप्यत्यामाशयेशोधनमेवतस्मात्। कार्य्यं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथालङ्घनपाचनञ्चसर्वंक्रिमिघ्नंक्रिमिहृद्रोगेच ॥ १०१ ॥

इति हृद्रोगचिकित्सा।

क्रिमिंजहृद्रोग में प्रायः मार्गके रुकजानेसे आमाशय में वायु कुपित होती है इससे शोधन लंघन तथा पाचन कराके क्रिमिनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १०१ ॥

इति हृद्रोगचिकित्सा ॥

अथपीनसनासारोगनिदानम्।

सन्धारणाजीर्णरजोऽतिभाष्यक्रोधर्तुवैषम्यशिरोऽभितापैः। प्रजागरातिस्वपनाम्बुशीतैरवश्ययामैथुनबाष्पधूमैः ॥ १०२ ॥ संस्त्यानदोषेशिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेत्तु। घ्राणार्त्तितोदैः क्षवथुर्जलाभःस्रावोऽनिलासस्वरमूर्द्धरोगः ॥ १०३ ॥

अथ पीनसरोगनिदान ॥

मल मूत्र आदि वेगों को रोकना अजीर्ण नासिका में धूलि जाना बहुत बोलना क्रोध ऋतुओं की विषमता शिरका संतप्त होना जागना बहुत सोना शीत जल पाला बहुत मैथुन करना बाष्प धूम और शिरमें कफ का इकट्ठा होना इन कारणों से बढ़ीहुई वायु प्रतिश्याय (जुकाम) को उत्पन्न करती है वातज प्रतिश्याय में नासिकामें सुई गड़नेकीसी पीड़ा होना शोथ जलके समान पतली नाक बहना और शब्दसहित शिरमें पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ १०२। १०३ ॥

नासाग्रपाकज्वरवक्त्रशोषतृष्णोष्णपीतस्रवणानिपित्तात्। कासारुचिस्रावघनप्रसेकाःकफाद्गुरुःस्रोतसिचापिकण्डूः ॥ १०४ ॥

नासिकाके अग्रभाग का पकना ज्वर मुख का सूखना तृषा और उष्ण तथा पीली नाक बहना यह पित्तजपीनस रोगके लक्षणहैं खांसी अरुचि गाढ़ी नाक बहना शिरका भारी होना और गले आदि स्रोतोंमें खुजली होना यह कफज पीनस रोग के लक्षण हैं ॥ १०४ ॥

सर्वाणिरूपाणितुसन्निपातात्स्युःपीनसेतीव्ररुजेऽतिदुःखे। सर्वोऽतिवृद्धोऽहितभोजनात्तुदुष्टप्रतिश्यायउपेक्षितःस्यात् ॥ १०५ ॥

सन्निपातज पीनसरोग में बहुत तीक्ष्ण दुःखदायी पीड़ा और वात आदि तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं अहित भोजन करने से संपूर्ण प्रतिश्याय बहुत बढ़जाते हैं उस समय यदि उनकी चिकित्सा न कीजाय तो वह दुष्ट होजाते हैं ॥ १०५ ॥

ततश्चरोगाःक्षवथुःसनासाशोषःप्रतीनाहपरिस्रवौच। घ्राणस्यपूतित्वमपीनसश्चसपाकशोथार्बुदपूयरक्ताः ॥ १०६ ॥

फिर छींक नासिका का सूखना प्रतीनाह (वायुसहित कफ नासिकाके छिद्रको जो रोंकता है उसे प्रतीनाह कहते हैं) नासिका से पीत अथवा श्वेतवर्ण और गाढ़ा अथवा पतला दोष बहना मुख तथा नासिका से दुर्गन्ध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आना पीनस पाकयुक्त शोथ अर्बुद पीब तथा रुधिरबहना ॥ १०६ ॥

अरूंषिमूत्रश्रवणाक्षिरोगखालित्यहर्ष्यर्जुनलोमभावाः । तृट्श्वासकासज्वररक्तपित्तवैस्वर्य्यशोषाश्चततोभवन्ति ॥ १०७ ॥

व्रण मूत्रस्राव नेत्ररोग कर्णरोग गंजापन रोमांच रोमों को श्वेत होजाना तृषा श्वास खांसी ज्वर रक्तपित्त स्वरभंग तथा शोष यह रोग होते हैं ॥ १०७ ॥

रोधाभिघातस्रवशोषपाकैर्घ्राणंयुतंयश्चनवेत्तिगन्धम् । दुर्गन्धिचास्यंबहुशःप्रकोपिदुष्टप्रतिश्यायमुदाहरेत्तम् ॥ १०८ ॥

जिस प्रतिश्याय में नासिका बन्द होजाय नासिका में चोटसी लगी होय नासिका से नाक बहै नासिका सूखै तथा पकजाय और मुखसे दुर्गन्ध आवे और वारंवार रोग का वेग बढ़ै उसको दुष्टप्रतिश्याय (जुकाम) जानना चाहिये ॥ १०८ ॥

संस्पृश्यमर्माण्यनिलस्तुमूर्द्धिविश्वक्पथस्थःक्षवथुंकरोति । क्रुद्धःससंशोष्यकफन्तुनासाशृङ्गाटकाघ्राणविशोषणञ्च ॥ १०९ ॥

वायु मस्तकमें मर्मों का स्पर्श करके संपूर्ण शिराओं में स्थित होके छींकको उत्पन्न करती है वायु कुपित होकर नासिका के कफको सुखाकर शृङ्गाटक नाम रोग को उत्पन्न करती है ॥ १०९ ॥

उच्छ्वासमार्गन्तुकफःसवातोरुन्ध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् । घ्राणाद्घनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् ॥ ११० ॥

इसरोग में नासिका सूखती है कफ सहित वायु श्वास के मार्ग को रोंकती है इसको प्रतीनाह कहते हैं नासिका से गाढ़ा अथवा पतला और पीला अथवा श्वेत दोष बहता है इसको स्राव कहते हैं ॥ ११० ॥

योमस्तुलुङ्गाद्घनपीतपक्वःकफःस्रवेद्वाढमपीनसःसः । वैवर्ण्यदौर्गन्ध्यमुपेक्षयातुस्यात्पूतिनस्यंश्वयथुर्भ्रमश्च ॥ १११ ॥

मस्तुलुंग से जो पीड़ा पका तथा गाढ़ा कफ बहता है उसे पीनस कहते हैं प्रतिश्याय की चिकित्सा न करने से विवर्णता दुर्गंधि शोथ तथा श्रम होता है इसको पूतिनस्य कहते हैं ॥ १११ ॥

आनह्यतेयस्यविशुष्यतेचप्रक्लिद्यतेधूप्यतियस्यनासा । नवेत्तियोगन्धरसांश्चजन्तुर्जुष्टंव्यवस्येत्तमपीनसेन ॥ ११२ ॥

जिस मनुष्य की नासिका में अफरा शोष क्लेद तथा संताप होता है और किसी गन्ध तथा रसको नहीं जानता उसे अपीनस कहते हैं ॥ ११२ ॥

सदाहरागःश्वयथुःसपाकःस्याद्घ्राणपाकोऽपिचरक्तपित्तात् । घ्राण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रितासृक्प्रभृतीन्प्रदूष्यकुर्वन्तिना साश्वयथुंमलाश्च ॥ ११३ ॥ घ्रा णेतथोच्छ्वासगतिंनिरुध्यमांसास्रदो षादपिचार्बुदानि । घ्राणात्स्रवेद्वा श्रवणान्मुखाद्वापित्ताक्तमस्रन्त्वपि पूयरक्तम् ॥ ११४ ॥

नासिका में दाह रक्तवर्ण तथा पाक (पकना) युक्त जो शोथ होता है उसे रक्तपित्त से हुआ घ्राण पाक कहते हैं वात आदि दोष कुपित होकर नासिका में स्थित रुधिर आदि को दूषित करके और श्वास की गति को रोंककर नासिका में, शोथ को उत्पन्न करते हैं इसको अर्बुद कहते हैं केवल रुधिर तथा मांसके दूषित होने से अर्बुद उत्पन्न होते हैं नासिका कान अथवा मुख से पित्तयुक्त रुधिर बहताहै इसको पूयरक्त कहते हैं ११३।११४॥

कुर्य्यात्सपित्तःपवनस्त्वगादीन्संदूष्यचारूंषिसपाकवन्ति । नासाप्र दीप्तेवनरस्ययस्यदीप्तंतुतंरोगमुदाह रन्ति ॥ ११५ ॥

पित्त सहित वायु त्वचा आदि को दूषित करके पाकयुक्त व्रणों को उत्पन्न करती है जिस मनुष्य की नाक प्रदीपित रहती है उसे दीप्तरोग कहते हैं ॥ ११५ ॥

इति नासारोगनिदान॥

इति पीनसनासारोगनिदानम् ।

अथ पीनसनासारोगचिकित्सा ।

वातात्सकासवैस्वर्य्यंसक्षारंपीनसे घृतम् । पिबेद्रसंपयश्चोष्णंस्नैहि कंधूममेववा ॥ ११६ ॥

अथ पीनसरोग चिकित्सा॥

खांसी तथा स्वरभंग युक्त वातज पीनस रोग में जवाखार युक्त घृत मांसरस उष्ण दुग्ध और स्निग्ध धूमपान हित होता है ११६

शताह्वात्वग्बलामूलंश्योणाकैरण्ड बिल्वजम् । सारग्वधांपिबेद्वर्त्तिं मधुच्छिष्टवसाघृतैः ॥ ११७ ॥

सौंफ दालचीनी वरियारा की जड़ सारिवन अरण्ड बेलकी छाल तथा अमिलतास इनको मोम चर्बी तथा घी में मिलाकर बत्ती बनाकर धूमपान करै ॥ ११७ ॥

अथवासघृतान्सक्तून्कृत्वामल्लकस म्पुटे । नवप्रतिश्यायवतांधूमंवैद्यः प्रकल्पयेत् ॥ ११८ ॥

घृतयुक्त सत्तुओं को चिलम में रखकर नवीन प्रतिश्याय वालों को धूमपान कराना चाहिये ॥ ११८ ॥

शङ्खमूर्द्धललाटार्त्तौपाणिस्वेदोप नाहनम् । स्वभ्यक्तेक्षवथुस्रावरोधा दौसंकरादयः ॥ ११९ ॥

मत्थे की हड्डी मस्तक तथा ललाट में जो पीड़ा होती होय तो हाथ गर्म करके सेंक कर स्वेद निकालै तथा लेपलगावै जो छींक तथा नाक बहना बन्द होगया होय तो अच्छी प्रकार से तैल लगाकर संकर आदि स्वेद (सूत्र स्थान का स्वेदाध्याय देखो)देवे११९ ॥

प्रेयाश्चरौहिषाजाजीवचातर्कारिचो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रकाः । त्वक्पत्रमरिचैलानांचूर्णैं र्वासोपकुञ्चिकैः ॥ १२० ॥

रोहिष जीरा वच अरनी तथा शङ्ख कौड़ी अथवा तज तेजपात मिर्च छोटी इलायची तथा कालाजीरा इनका चूर्ण करके प्रतिश्याय में सूंघना चाहिये ॥ १२० ॥

स्रोतःशृङ्गाटनासाक्षिशोषेतैलंसनावनम् । प्रभाव्याजेतिलान्क्षीरे तेन पिष्टांस्तदूष्मणा ॥ १२१ ॥

स्रोत शृङ्गाटक (नासिका के भीतर का मर्म्म) नासिका तथा नेत्र इनके सूखने में तैल तथा नस्य का प्रयोग करना चाहिये बकरी के दूध में तिलों को भिगोकर बकरी के दूध के साथ पीसकर कुछ गर्म करके ॥१२१॥

मन्दस्विन्नान्सयष्ट्याह्वचूर्णांस्तेनैवपीडयेत् । दशमूलस्यनिष्क्वाथे रास्नामधुककल्कवत् ॥ १२२ ॥
सिद्धंसैन्धवंतैलंदशकृत्वोनुतत्स्मृतम् ! स्निग्धस्यास्थापनैर्दोषंनिर्हरेद्वातपीनसे ॥ १२३ ॥

दबाकर तैल निकाले फिर दशमूलके काढ़े और रास्ना मुलेठी तथा सैंधव लवण के कल्क के साथ दशबार इस तैलका पाक कर के वातज प्रतिश्याय में इस तैलके द्वारा स्नेह न कराके स्थापन वस्ति देकर दोषों को निकाले ॥ १२२ । १२३ ॥

स्निग्धामलोष्णैश्चलघ्वन्नंग्राम्यादीनांरसैर्हितम् । उष्णाम्बुनास्नानपानेनिवातोष्णप्रतिश्रयः ॥ १२४ ॥

और बकरे आदिके मांसके स्निग्ध अम्ल तथा उष्ण रसके साथ हलका अन्न खिलावे उष्ण जलसे स्नान करना उष्ण जल पीना और वात रहित तथा उष्ण स्थानमें निवास करना वातज प्रतिश्यायमें हितहै ॥ १२४ ॥

चिन्ताव्यायामवाक्चेष्टाव्यवायविरतोभवेत् । वातजेपीनसेधीमानिच्छन्नेवात्मनोहितम् ॥ १२५ ॥

चिन्ता व्यायाम बहुत बोलना बहुत कार्य करना तथा बहुत मैथुन करना वातज पीनस रोग में बुद्धिमान् मनुष्य यदि अपनी आत्मा का हित चाहे तो वर्जिदेवे ॥ १२५ ॥

पैत्तेसर्पिःपिबेत्सिद्धंशृङ्गवेरशृतंपयः पाचनार्थंपिबेत्पक्वेकार्य्यंमूर्द्धविरेचनम् ॥ १२६ ॥

पित्तज पीनस रोगमें पित्तनाशक औषधियों के साथ पाक कियागया घी और सोंठिके साथ पाक कियागया दूध पचाने के लिये पीना चाहिये और पकजाने पर शिरोविरेचन देना चाहिये ॥ १२६ ॥

पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः । दन्त्याचसाधितंतैलंनस्यंसम्पक्वपीनसे ॥ १२७ ॥

पाढ़र हल्दी दारुहल्दी मिरोरफली पीपरि जावित्री तथा जमालगोटे की जड़ इनके साथ पाक कियेगये तैलकी नस्य पकेहुये पित्तज पीनसरोग में देनी चाहिये ॥ १२७ ॥

पूयास्रेरक्तपित्तघ्नःकषायानावनानि च । पाकदाहाद्यरूक्षेषुशीतालेपाः ससेचनाः ॥ १२८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो पीनसरोग में नासिका से पीब तथा रुधिर बहता होय तो रक्त पित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और कषाय रस तथा लवण रस का प्रयोग करना चाहिये जो पीनस रोग में पके हुये तथा दाहयुक्त व्रण होयँ तो शीतल लेप लगाना चाहिये शीतल तरारा देना चाहिये ॥ १२८ ॥

स्नेहनस्योपचाराश्चकषायाःस्वादुशीतलाः । मन्दपित्तेप्रतिश्याये स्निग्धैःकुर्याद्विरेचनम् ॥ १२६ ॥

कषैली मधुर तथा तिक्त वस्तु सूंघनी चाहिये और कषैली मधुर तथा शीतल वस्तुओं की नस्य लेनी चाहिये जो पित्तज प्रतिश्याय बहुत वेगयुक्त न होय तो स्निग्ध विरेचन देना चाहिये ॥ १२९ ॥

घृतंक्षीरंयवाःशालिर्गोधूमाजाङ्गलारसाः । शीताम्लास्तिक्तशाकानियूषामुद्गादिभिर्हिताः ॥ १३० ॥

घी दूध यव शालिधान गेहूं जांगल जीवों के मांस का रस शीतल खट्टे तथा तिक्त शाक और मूंग आदिका यूष यह सब पित्तज पीनस रोगमें हित हैं ॥ १३० ॥

गौरवारोचकेष्वादौलङ्घनंकफपीनसे । स्वेदाःसेकाश्चपाकार्थंलिप्तेशिरसिसर्पिषा ॥ १३१ ॥

कफज पीनसरोग में जो भारीपन तथा अरुचि होय तो पहिले लंघन कराके पकाने के लिये शिरमें घी मलकर स्वेद तथा तरारा देना चाहिये ॥ १३१ ॥

लशुनंमुद्गचूर्णेनव्योषक्षारघृतैर्युतम् । देयंकफघ्नंवमनमुत्क्लिष्टश्लेष्मणेहितम् ॥ १३२ ॥

कफज पीनसरोगमें जो कफ उभड़ा होय तो लहशुन मूंगका चूर्ण सोंठि पीपरि मिर्च तथा यवाखार के द्वारा वमन कराके कफको नष्ट करना चाहिये ॥ १३२ ॥

अपीनसेपूतिनस्येघ्राणस्रावेसकण्डुके । धूमःशस्तोऽवपीडश्चकटुभिःकफपीनसे ॥ १३३ ॥

कफज पीनसरोग में जो अपीनस पूतिनस्य घ्राण स्राव तथा खुजली होय तो कडुवी औषधियोंकेद्वारा धूमपान करना चाहिये और अवपीड़न कराना चाहिये ॥ १३३ ॥

मनःशिलावचाव्योषंविडङ्गंहिङ्गुगुग्गुलुः । चूर्णंप्रायःप्रधमनंकटुभिश्चफलैस्तथा ॥ १३४ ॥

मैनशिल वच सोंठि पीपरि मिर्च बायबिडंग हींग तथा गुग्गुल और कडुवेफल इनका चूर्ण कफज पीनस रोगवालों को नासिका में रखकर फूंकना चाहिये ॥ १३४ ॥

भार्ङ्गीमदनतर्कारीसुरसादिविपाचितम् । तैलंसर्षपजंबल्यंकफपीनसशान्तये ॥ १३५ ॥ आर्त्तकालवचालंवाविडङ्गंकुष्ठपिप्पली । कृत्वाकल्कंकरञ्जंचतैलंतैःसार्षपंपचेत् ॥ पाकान्मुक्तेघनेनस्यमेतन्मेदोऽन्वितेकफे ॥ १३६ ॥

भारंगी मैनफल अरनी तथा सुरसआदि गणके साथ पाक कियेगये गोमूत्र में लाख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बच कडुवी लौकी बायविडंग कूट पीपरि तथा कंजा इनका कल्क और सरसोंका तैल डालकर पाक करे जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे फिर कफ के पकजाने पर और कफ चर्बीके समान गाढ़ा होने पर इस तैल की नस्य लेनी चाहिये ॥ १३५ । १३६ ॥

स्निग्धस्यव्याहतेवेगेछर्दनंकफपीनसे । वमनीयशृतक्षीरतिलमाषयवागुभिः ॥ १३७ ॥

कफज पीनस में कफका वेग न्यून होजाने पर स्नेहन कराके वमन कारक औषधियों के साथ पाक कियेगये दूध और तिल तथा उर्दों की यवागू के द्वारा वमन कराना चाहिये ॥ १३७ ॥

वार्त्ताककुलकव्योषकुलत्थाढकिमुद्गजाः । यूषाःकफघ्नमन्नञ्चशस्तमुष्णाम्बुसेचनम् ॥ १३८ ॥

बैंगन बेर सोंठि पीपरि मिर्च कुलथी अरहर तथा मूंग इनके यूष कफघ्न अन्न और उष्ण जल सींचना यह कफज पीनस में हित हैं ॥ १३८ ॥

सर्वजित्पीनसेदुष्टेकार्य्यंशोफेचशोफजित् । क्षारोऽर्बुदाधिमांसेषुक्रियाःसर्वेष्ववेक्ष्यच ॥ १३९ ॥

इति पीनसनासारोगचिकित्सा ।

दुष्ट पीनसमें त्रिदोषनाशक चिकित्सा करनी चाहिये नासिका में शोथ होने पर शोथ नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और छींक अर्बुद तथा अधिमांसमें दोषों के अनुसार देखकर चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १३९ ॥

इति पीनसरोगचिकित्सा ॥

अथ शिरोरोगनिदानम् ।

भृशार्त्तिशूलंस्फुरतीहवातात्पित्तात्सदाहार्त्तिकफाद्गुरुःस्यात् । सर्वैस्त्रिदोषंक्रिमिभिस्तुकण्डूदौर्गन्ध्यतोदार्त्तियुतंशिरःस्यात् ॥ १४० ॥

इति शिरोरोगनिदानम् ।

अथ शिरोरोगनिदान ॥

वातज शिरोरोगमें बहुत पीड़ा शूल तथा स्फुरण (फड़कना) यह लक्षण होते हैं पित्तज शिरोरोगमें दाह तथा पीड़ा होती है कफज शिरोरोगमें शिरभारी मालूम होता है सन्निपातज शिरो रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं और कृमिज शिरोरोग में खुजली दुर्गन्ध सुई चुभोनेकीसी पीड़ा तथा व्यथा होती है ॥ १४० ॥

इति शिरोरोगनिदान ॥

अथ शिरोरोगचिकित्सा ।

वातिकेशिरसोरोगेस्नेहान्स्वेदान्सनावनान् । पानान्नमुपनाहांश्चकुर्य्याद्वातामयापहान् ॥ १४१ ॥

अथ शिरोरोगचिकित्सा ॥

वातज शिरोरोग में वातरोगनाशक स्नेह स्वेद नस्य अन्नपान तथा लेपका प्रयोग करना चाहिये ॥ १४१ ॥

तैलभृष्टैरगुर्वाद्यैःसुखोष्णैश्चोपनाहनम् । जीवनीयैःसुमनसामत्स्यैर्मांसैश्चशस्यते ॥ १४२ ॥

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तैल में भूनी हुई अगुर्वादि गणकी कुछ गर्म औषध जीवनीयगणकी औषध चमेली मछली और मांस इनकी पुलटिस वातज शिरोरोग में हित होती है ॥ १४२ ॥

रास्नास्थिरादिभिःसिद्धंसक्षीरंनस्य मर्त्तिनुत् । तैलंरास्नाद्धिकाकोली शर्कराभिरथापिवा ॥ १४३ ॥

रास्ना तथा शालपर्णी आदिगण की औषधि दूधके साथ पाक कियेगये अथवा रास्ना काकोली क्षीरकाकोली तथा शर्कराके साथ पाककियेगये तैल की नस्य लेनेसे वातज शिरोरोग का नाश होता है ॥ १४३ ॥

बलामधूकयष्ट्याह्वविदारीचन्दनोत्पलैः । जीवकर्षभकद्राक्षाशर्कराभिश्च साधितः ॥ १४४ ॥ प्रस्थस्तैलस्य सक्षीरोजाङ्गलार्द्धतुलारसे । नस्यंसर्वोर्द्ध्वजत्रूत्थवातपित्तामयापहम् ॥ १४५ ॥

बरियारा महुआ मुलेठी विलाईकन्द चन्दन उत्पल जीवक ऋषभक मुनक्का तथा शकर इनके कल्क और जांगल जीवों के मांस के २०० तोले रस तथा दूधके साथ ६४ तोले तैल का पाक करे जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहे तब उतारकर छान लेवे इस तैलकी नस्य लेने से हँसवे के ऊपर होनेवाले सम्पूर्ण वातपित्तज रोगों का नाश होता है ॥ १४४ । १४५ ॥

दशमूलबलारास्नात्रिफलामधुकैः सह । मयूरंपक्षपित्तान्त्रशकृत्तुण्डांघ्रिवर्जितम् ॥ १४६ ॥ जलेपक्त्वा घृतप्रस्थंतस्मिन्क्षीरसमंपचेत् । मधुरैःकार्षिकैःकल्कैःशिरोरोगार्दितापहम् ॥ १४७ ॥

दशमूल बरियारा रास्ना त्रिफला तथा मुलेठी और मोरके विष्ठा चोंच तथा पैर रहित पक्ष पित्ता तथा आंत आदि सम्पूर्ण अंग इन सब का क्वाथ करके उसमें ६४ तोले दूध ६४ तोले घी तथा मधुरगणकी तोले २ भर औषधियोंका कल्क डालकर पाक करे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरह जाय तब उतार कर छान लेवे इस घृतके सेवन से शिरोरोग और अर्दितका नाश होताहै ॥ १४६ । १४७ ॥

कर्णाक्षिनासिकाजिह्वाताल्वास्यगलरोगनुत् । मायूरमितिविख्यातमूर्द्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ १४८ ॥

इति मायूरघृतम् ।

कर्णरोग नेत्ररोग नासिकारोग जिह्वारोग तालुरोग मुखरोग तथा कण्ठरोग का नाश होता है इस को मायूर घृत कहते हैं यह हँसुवे के ऊपर होनेवाले सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करता है ॥ १४८ ॥

एतेनैवकषायेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनदुग्धेनकल्कैरेभिश्च कार्षिकैः ॥ १४९ ॥ जीवन्तीत्रिफलामेदामधूकर्द्धिपरूषकैः । समङ्गाचविकाभार्ङ्गीकाश्मरीसुरदारुभिः ॥ १५० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मायूरघृतमें कहेहुये काढ़े में २५६ तोले दूध ६४ तोले घी और जीवन्ती त्रिफला मेदा मुलेठी ऋद्धि फालसा लजालू चव्य भारंगी खँभारी देवदारु॥ १४९ । १५० ॥

आत्मगुप्तामहामेदातालखर्जूरमस्तकैः । मृणालविसशालूकशृङ्गीजीवकपद्मकैः ॥ १५१ ॥

किवाँच महामेदा ताल खजूर कमलकी दण्डी कमलकी दण्डी के भीतर का सूत्र कमलकी जड़ काकड़ासिंगी जीवक पद्माख॥ १५१ ॥

शतावरीविदारीक्षुबृहतीशारिवायुगैः । मूर्वाश्वदंष्ट्र्षभकशृङ्गाटककशेरुकैः ॥ १५२ ॥

शतावर बिलाईकन्द ईख भटकटैया दोनों साँव मिरोरफली गोखरू ऋषभक सिंघाड़ा कसेरू॥ २५२ ॥

रास्नास्थिरातामलकीसूक्ष्मैलाशटिपुष्करैः । पुनर्नवातुगाक्षीरीकाकोलीधन्वयासकैः ॥ १५३ ॥

रास्ना सरिवन भूमि आमला छोटी इलायची कचूर पुष्करमूल गदहपूर्णा वंशलोचन काकोली जवासा ॥ १५३ ॥

मधूकाक्षोटवातामसुञ्जाताभिषुकैरपि । द्रव्यैरेभिर्य्यथालाभंपूर्वकल्केनसाधितम् ॥ १५४ ॥ तत्पक्कंनावनेऽभ्यङ्गपानेवस्तौप्रयोजयेत् । शिरोरोगेषुसर्वेषुकासेश्वासेचदारुणे॥ १५५ ॥

महुवा अखरोट वदाम सरकी तथा अभिषुक (फलविशेष) इनमें से जितनी औषधै मिलसकैं उनका कल्क डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल घी बाकीरहे तब उतार कर छान लेवे नस्यमर्दन पान तथा वस्तिके द्वारा इस घृत का सेवन करने से सम्पूर्ण शिरोरोग खाँसी भयंकर श्वास ॥१५४॥१५५॥

मन्यापृष्ठग्रहेशोषेस्वरभेदेतथार्दिते । योन्यसृक्शुक्रदोषेषुशस्तंबन्ध्यासुतप्रदम् ॥ १५६ ॥

गलेके पीछेकी नस तथा पीठका जकड़ना शोष स्वरभंग अर्दित योनि दोष रुधिर दोष तथा वीर्य्यदोष इन सबका नाश होता है वन्ध्याके पुत्र होता है ॥ १५६ ॥

ऋतुस्नातातथानारीपीत्वापुत्रंप्रसूयते । महामायूरमित्येतद्घृतमात्रेयपूजितम् ॥ १५७ ॥

इति महामायूरघृतम् ।

ऋतुस्नाता स्त्री इसको पीकर पुत्रको उत्पन्न करती है इसको महामायूर घृत कहते हैं भगवान् आत्रेयजी को यह बहुत प्रिय है ॥ १५७ ॥

आखुभिःकुक्कुटैर्हंसैःशशैश्चापिहिबुद्धिमान् । कल्पेनानेनविपचेत्सर्पिरूर्द्ध्वगदापहम् ॥ १५८ ॥

बुद्धिमान् वैद्य इस महामायूर घृत में कही हुई औषधियों के कल्क और मूस मुर्गा हंस तथा खरगोश इन के मांस के काढ़े के साथ घृत का पाक करे यह घी हँसुवे के ऊपर होने वाले सम्पूर्ण रोगोंका नाश करताहै १५८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैत्तेघृतंपयःसेकाःशीतालेपाःसनावनाः । जीवनीयानिसर्पींषिपानान्नञ्चापिपित्तनुत् ॥ १५९ ॥

पित्तज शिरोरोगमें घी दूध तरारा शीतल लेप नस्य जीवनीयगण की औषधियों के साथ पाक कियागया घी और पित्तनाशक अन्नपान हित होता है ॥ १५९ ॥

चन्दनोशीरयष्ट्याह्वबलाव्याघ्रनखोत्पलैः। क्षीरपिष्टैःप्रदेहःस्याच्छृतैर्वापरिषेचनम् ॥ १६० ॥

चन्दन खस मुलेठी बरियारा बघनखी तथा नीलकमल इन को दूध में पीसकर लेप लगाने से अथवा इनका काथ करके तरारा देने से पित्तज शिरोरोग का नाश होता है ॥ १६० ॥

त्वक्पत्रशर्कराकल्कःसुपिष्टस्तण्डुलाम्बुना । कार्य्योऽत्रपीडःसर्पिश्च नस्यंतत्स्यात्तुपैत्तिके ॥ १६१ ॥

तज तेजपात तथा शक्कर इनको चावलोंके धोवन में पीसकर लेप लगाना चाहिये इनके द्वारा पाक कियेहुये घी की नस्य लेनी चाहिये इससे पित्तज शिरोरोग का नाश होता है ॥ १६१ ॥

यष्ट्याह्वचन्दनानन्ताक्षीरसिद्धंघृतं शुभम् । नावनंशर्कराद्राक्षामधुकैर्वापिपित्तजे ॥ १६२ ॥

मुलेठी चन्दन जवासा तथा दूध के साथ पाक किये गये घी अथवा शक्कर मुनक्का तथा मुलेठी इन के साथ पाककिये गये घी की नस्य लेने से पित्तज शिरोरोग का नाश होता है ॥ १६२ ॥

कफजेस्वेदितंधूमनस्यप्रधमनादिभिः । शुद्धंप्रलेपपानान्नैःकफघ्नैः समुपाचरेत् ॥ १६३ ॥ पुराणसर्पिषःपानैस्तीक्ष्णैर्वस्तिभिरेवच । कफानिलोत्थितेदाहःशोषयोरक्तमोक्षणम् ॥ १६४ ॥

कफज शिरोरोग में स्वेद धूम नस्य तथा प्रधमन (नासिका में चूर्णआदि फूंकना) आदिके द्वारा शरीर को शुद्धकरके लेप कफघ्न अन्नपान पुराने घीका पीना तथा तीक्ष्ण वस्ति के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये कफज तथा वातज शिरोरोग में दाह और पित्तज तथा रक्तज शिरोरोग में रक्त मोक्षण (फस्तखुलाना) हित होता है १६३।१६४॥

एरण्डनलदक्षौमगुग्गुल्वगुरुचन्दनैः।।धूमवर्त्तिंपिबेद्गन्धैःसकुष्ठतगरैस्तथा ॥ १६५ ॥

अरण्ड खस रेशम गुग्गुल अगर चन्दन कूट तथा तगर इनकी बत्ती बनाकर धूमपान करने से कफज शिरोरोग का नाश होता है ॥ १६५ ॥

सन्निपातभवेकार्य्यासन्निपातहिता क्रिया । क्रिमिजेचैवकर्त्तव्यंतीक्ष्णमूर्द्धविरेचनम् ॥ १६६ ॥

सन्निपातज शिरोरोग में वातजआदि तीनों शिरोरोगों की सी सम्पूर्ण चिकित्सा करनी चाहिये कृमिज शिरोरोग में तीक्ष्ण शिरोविरेचन देना चाहिये ॥ १६६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्वग्दन्तीव्याघ्रकरजविडङ्गनवमालिका। अपामार्गफलंबीजंनक्तमालशिरीषयोः। क्षवकोश्मन्तकोबिल्वंहरिद्राहिङ्गुयूथिका॥ १६७॥

तज जमालगोटे की जड़ बघनखी वायबिडंग नवमालिका (बसन्तीनेवार) लटजीरा के फल कंजा तथा शिरसके बीज नकछिकनी अश्मंतक बेल हल्दी हींग जूही॥ १६७॥

फणिज्झकश्चतैस्तैलमविमूत्रेचतुर्गुणे। सिद्धंस्यान्नावनंचूर्णञ्चैषांप्रधमनंहितम्॥ १६८॥

तथा दवना इनके कल्क तथा चतुर्गुण भेंड़ी के मूत्र के साथ पाक किये गये तैलकी नस्य लेनी चाहिये और इन औषधियों का चूर्ण नासिका में फूकना चाहिये॥ १६८॥

फलंशिग्रुकरञ्जाभ्यांसव्योषञ्चावपीडकम्। कषायःस्वरसःक्षारश्चूर्णं कल्कोऽवपीडकः॥ १६९॥

इति शिरोरोगचिकित्सा।

सहिंजन तथा कंजाके फल सोंठि पीपरि और मिर्च इनका चूर्ण करके नस्य लेनीचाहिये काढ़े क्षार चूर्ण कल्क तथा नस्यके द्वारा शिरोरोग का नाश होता है॥ १६९॥

इति शिरोरोगचिकित्सा॥

अथ मुखरोगनिदानम्।

मुखामयेमारुतजेतुशोषकार्कश्यरौक्ष्याणिचलारुजश्च। कृष्णारुणंनिष्पतनंसशीतंप्रस्रंसनस्पन्दनतोदभेदाः॥ १७०॥

वातज मुखरोग में शुष्कता कर्कशता रूक्षता चंचल पीड़ा (पीड़ाका कभी होना कभी न होना) कृष्णवर्ण अथवा रक्तवर्ण तथा शीतल स्राव होना स्रंसन सरसराहट सुई चुभोनेकीसी पीड़ा तथा फटनेकीसी पीड़ा यह लक्षण होते हैं॥ १७०॥

तृष्णाज्वरस्फोटकतालुदाहाधूमायनञ्चाप्यवदीर्णताच। पित्तात्समूर्च्छाविविधारुजश्चवर्णाश्चशुक्लारुणवर्णवर्ज्याः॥ १७१॥

पित्तज मुखरोग में तृषा ज्वर छाले तालु में दाह धुआँसा निकलना फटना मूर्च्छा अनेक प्रकारकी पीड़ा और श्वेत तथा रक्त रहित वर्ण होना यह लक्षण होते हैं॥ १७[१]॥

कण्डुर्गुरुत्वंसितविज्जलत्वंस्वेदोऽरुचिर्जाड्यकफप्रसेकौ। उत्क्लेशमन्दानलताचतन्द्रारुजश्चमन्दाःकफवक्त्ररोगे॥ १७२॥

कफजमुखरोग में खुजली भारीपन श्वेत वर्ण लसलसापन स्वेद अरुचि जड़ता मुख से कफ गिरना मतली मंदाग्नि तन्द्रा तथा स्वल्प पीड़ा यह लक्षण होते हैं॥ १७२॥

सर्वाणिरूपाणितुवक्त्ररोगेभवन्तियस्मिन्सतुसर्वजःस्यात्। संस्थानदूष्याकृतिनामभेदाच्चैतेचतुःषष्टिविधाभवन्ति॥ १७३॥

सन्निपातज मुखरोगमें वातज आदि तीनों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुख रोगोंके लक्षण होते हैं लक्षण दूष्य आकृति तथा नामभेद से मुखरोग ६४ प्रकारके होते हैं ॥ १७३ ॥

शालाक्यतन्त्रेविहितानितेषां निमित्तरूपाकृतिभेषजानि । यथाप्रदेशन्तुचतुर्विधस्यक्रियांप्रवक्ष्यामिमुखामयस्य ॥ १७४ ॥

इति मुखरोगनिदानम् ॥

इनके निदान लक्षण आकृति तथा उपाय शालाक्य तन्त्र में कहेगये हैं हम यहां वातज आदि चार प्रकारके मुखरोगोंकीही चिकित्सा कहेंगे ॥ १७४ ॥

इति मुखरोगनिदान ॥

अथ मुखरोगचिकित्सा।

शुक्तितिक्तकटुक्षौद्रकषायैःकवलग्रहः। धूमःप्रधमनंशुद्धिरधश्छर्दनलङ्घनम् । भोज्यञ्चमुखरोगेषुयथास्वंदोषनुद्धितम् ॥ १७५ ॥

अथ मुखरोगचिकित्सा ॥

मुखरोग में सिरका तिक्त कटु तथा कषाय वस्तु और शहद का कवलग्रह (ग्रास मुखमेंरखना) धूमपान प्रधमन विरेचन वमन लंघन और जिसदोषसे मुखरोग हुआहो उस को नष्ट करनेवाला अन्न हित होता है १७५ ॥

पिप्पल्यगुरुदार्वीत्वग्यवक्षारोरसाञ्जनम् । पाठांतेजोवतींपथ्यांसमभागंसुचूर्णितम् ॥ १७६ ॥

पीपरि अगर दारुहल्दी तज जवाखार रसौत पाढ़र तेजबल तथा हड़ इन समभाग औषधियों का सूक्ष्म चूर्णकरके ॥ १७६ ॥

मुखरोगेषुसर्वेषुसक्षौद्रंतद्विधारयेत् । शीधुमाधवमाध्वीकैःश्रेष्ठोऽयंकवलग्रहः ॥ १७७ ॥

शहद शीधु माधव (मद्यविशेष) तथा माध्वीक (मद्यविशेष) में मिलाकर मुखरोग वाला मुख में रक्खे यह श्रेष्ठ कवलग्रह है ॥ १७७ ॥

तेजोह्वामभयामेलांसमङ्गांकटुकांघनम् । पाठांज्योतिष्मतींलोध्रंदार्वींकुष्ठञ्चचूर्णयेत्। दन्तानांघर्षणाद्रक्तस्रावकण्डूरुजापहम् ॥१७८॥

तेजबल हड़ छोटीइलायची लजालू कुटकी नागरमोथा पाढ़र मालकांगनी लोध दारुहल्दी तथा कूट इनका चूर्ण करके दांतों में रगड़ने से स्राव (मुखसे लारबहना) खुजली तथा पीड़ाका नाश होता है ॥ १७८॥

पञ्चकोलकतालीशपत्रैलामरिचत्वचः ॥ १७९ ॥ पलाशमुष्कककक्षारयवक्षाराश्चचूर्णिताः । गुडेपुराणेद्विगुणेक्वथितेगुडिकाःकृताः ॥१८०॥ कर्कन्धुमात्राःसप्ताहंस्थितामुष्ककभस्मनि । कण्ठरोगेषुसर्वेषुधार्य्याःस्युरमृतोपमाः ॥ १८१ ॥

चव्य चीता पीपरि पिपरामूल सोंठि तालीशपत्र छोटी इलायची मिर्च तज ढाख कठपांडर का क्षार तथा जवाखार इनका सूक्ष्म चूर्ण करके द्विगुण पुराने गुड़ में मिला कर पाककरके बेर के बराबर गोली बनालेवे फिर सातदिनतक इन गोलियोंको कठपांडर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की भस्म में रक्खे सम्पूर्ण कण्ठरोगों में इन गोलियों को मुखमें रखने से अमृतके समान गुण होते हैं ॥ १७९ । १८० । १८१ ॥

गृहधूमोयवक्षारपाठाव्योषंरसाञ्जनम्। तेजोह्वात्रिफलालोध्रंचित्रकश्चेतिचूर्णितम् ॥१८२॥ सक्षौद्रंधारयेदेतद्गलरोगंविनाशनम् । कालकंनाम तच्चूर्णंदन्तास्यगलरोगनुत्॥१८३॥

इति कालकचूर्णम् ।

गृहधूम जवाखार पाढ़र सोंठि पीपरि मिर्च रसौंत तेजबल त्रिफला लोध तथा चीता इन का चूर्ण करके शहद में मिलाकर मुख में रक्खे इस से कण्ठरोग का नाश होता है यह कालकनाम चूर्ण दांत मुख तथा गलेके रोगों को नष्ट करता है ॥ १८२ । १८३ ॥

इतिकालकचूर्ण ॥

मनःशिलायवक्षारोहरितालंससैन्धवम् । दार्वीत्वक्चेतितच्चूर्णंमाक्षिकेणसमायुतम् ॥ १८४ ॥ मूर्च्छितंघृतमण्डेनकण्ठरोगेषुधारयेत् । मुखरोगेषुचश्रेष्ठंपीतकंनामकीर्तितम् ॥१८५॥ इति पीतकचूर्णम् ।

मैनशिल जवाखार हरताल सैंधवलवण तथा दारुहल्दी की छाल इनका चूर्णकरके शहद घी तथा माड़ में मिलाकर कण्ठरोगों को नष्ट करने के लिये मुख में रक्खे यह पीतक नाम चूर्ण मुखरोगों में भी हित होता है ॥ १८४ । १८५ ॥

इतिपीतकचूर्ण ॥

मृद्धीकाकटुकाव्योषंदार्वीत्वक्त्रिफलाघनम् । मूर्च्छितंघृतमण्डेनकण्ठरोगेषुधारयेत् ॥ १८६ ॥

इति मृद्धीकादिचूर्णम् ।

मुनक्का कुटकी सोंठि पीपरि मिर्च तथा दारुहल्दी की छाल त्रिफला नागरमोथा इनके चूर्णको घृतयुक्त माड़में मिलाकर कण्ठरोगों को नष्ट करनेकेलिये मुखमें रक्खे ॥ १८६ ॥

इतिमृद्धीकादिचूर्ण ॥

पाठांरसाञ्जनंमूर्वांतेजोह्वेतिचचूर्णितम् । क्षौद्रयुक्तंविधातव्यंगलरोगेभिषग्जितम् । योगास्त्वेतेत्रयःप्रोक्तावातपित्तकफापहाः ॥ १८७ ॥

पाढ़र रसौंत मरोरफली तथा तेजबल के चूर्णको शहद में मिलाकर मुख में रक्खे से कण्ठरोगोंका नाश होताहै कालकआदि यहतीनयोग क्रमसे वात पित्त तथा कफ नष्ट करनेवाले कहे गये हैं ॥ १८७ ॥

कटुकातिविषापाठादार्वीमुस्तकलिङ्गकाः । गोमूत्रक्वथिताःपेयाःकण्ठरोगविनाशनाः ॥ १८८ ॥

कुटकी अतीस पाढ़र दारुहल्दी नागरमोथा इन्द्रयव इनको गोमूत्र में काढ़ाकरके पीने से कंठरोगों का नाश होता है ॥ १८८ ॥

स्वरसःक्वथितोदार्व्याघनीभूतोरसक्रिया । सक्षौद्रमुखरोगासृग्दोषनाडीव्रणापहा ॥ १८९ ॥

दारुहल्दी के रसको पकाकर गाढ़ा करके शहद मिलाकर मुखमें रक्खे इस से मुखरो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्तदोष तथा नाड़ीव्रण (नसूर) का नाश होता है ॥ १८९ ॥

तालुशोषेस्तृष्णास्यसर्पिषोत्तरभक्तिकम् । नावनंमधुराःस्निग्धाःशीताश्चैवरसाहिताः ॥ १९० ॥

तालुके सूखनेमें जो तृषा न होय तो भोजनके उपरान्त घी पीना चाहिये नस्यलेनी चाहिये और मधुर स्निग्ध तथा शीतलरस पीनेचाहिये॥ १९० ॥

मुखपाकेशिराकर्म्मशिरःकायविरेचनम् । मूत्रतैलघृतक्षौद्रक्षीरैश्च कवलग्रहः ॥ १९१ ॥

मुख के पकजानेपर फस्त खुलाना शिरोविरेचन विरेचन और गोमूत्र तैल घी शहद तथा दूधका कवलग्रह (ग्रासमुखमेंरखना) हित होता है ॥ १९१ ॥

सक्षौद्रास्त्रिफलापाठामृद्धीकाजातिपल्लवाः । कषायतिक्तकाःशीताः क्वाथाश्चमुखधावनाः ॥ १९२ ॥

त्रिफला पाढ़र मुनक्का चमेली की पत्ती मुख में रखने से और कषैले तीते तथा शीतलकाथ के द्वारा मुखधोने से मुखका पकना अच्छा होता है॥ १९२ ॥

तुलांखादिरसारस्यद्वितुलामरिमेदसः । प्रक्षाल्यजर्जरीकृत्यचतुर्द्रोणेऽम्भसःपचेत् ॥ १९३ ॥

४०० तोले कत्थे तथा ८०० तोले दुर्गंधित कत्थे की लकड़ी को धोकर कूटके ४०९६ तोले जलमें डालकर पाक करे ॥ १९३ ॥

द्रोणशेषंकषायंतंपक्त्वाभूयःपचेच्छनैः । ततस्तस्मिन्घनीभूतेचूर्णीकृत्याक्षभागिकम् ॥ १९४ ॥

जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे और फिर उस जलको अग्नि पर चढ़ावे जब वह पकतेर गाढ़ा होजाय तब उस में तोले २ भर ॥ १९४ ॥

चन्दनंपद्मकोशीरंमञ्जिष्ठाधातकीघनम् । प्रपौण्डरीकंयष्ट्याह्वत्वगेलापद्मकेसरम् ॥ १९५ ॥

चन्दन पद्माख खस मँजीठ धवई नागरमोथा पुण्डरिया मुलेठी तज छोटी इलायची तेजपात नागकेसर ॥ १९५ ॥

लाक्षारसाञ्जनंमांसीत्रिफलालोध्रवालकम् । रजन्यौफलिनीमेलांसमङ्गांकट्फलंवचाम् ॥ १९६ ॥

लाख रसौंत जटामांसी त्रिफला लोध सुगन्धबाला हल्दी दारुहल्दी प्रियंगु एलुआ लजालू कायफल वच ॥ १९६ ॥

यवासागुरुपत्तङ्गगैरिकाञ्जनमावपेत् । लवङ्गनखकक्कोलजातिकोशान्पलोन्मितान् ॥ १९७ ॥

जवासा अगर पतङ्ग गेरू तथा सुर्मा इन का चूर्ण मिलाकर उतारले फिर शीतल हो जाने पर उसमें लवङ्ग नखी कङ्कोल मिर्च तथा जायफलका चूर्ण चार २ तोले ॥१९७॥

कर्पूरकुडवञ्चापिपुनःशीतेऽवतारिते। ततस्तुगुलिकाःकार्य्याःशुष्काश्चास्येनधारयेत् ॥ १९८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और कपूर १६ तोले मिलाकर गोली बनाकर सुखावे इन गोलियों को मुखमें रखना चाहिये ॥ १९८ ॥

तैलञ्चानेनकल्केनकषायेणचसाधयेत् । दन्तानांचलनंभ्रंशंसौषिर्य्यक्रिमिरोगनुत् ॥ १९९ ॥ मुखपाकास्यदौर्गन्ध्यजाड्यारोचकनाशनम् । स्रावोपलेपपैच्छिल्यवैस्वर्य्यगलरोगनुत् । दन्तास्यगलरोगेषु सर्वेषांतत्परायणम् ॥ २०० ॥

इति खदिरादिगुटिकातैलञ्च ।

इन्हीं औषधियों के कल्क के साथ तथा काढ़े के साथ तैल का भी पाक करना चाहिये इन गोलियोंके तथा तैलके सेवन से दांतों का हिलना दांतों का गिरना दांतोंमें छिद्रहो जाना दांतोंमें कीड़े पड़ना मुखका पकना तथा दुर्गंधित होना मुखका जड़ होजाना अरुचि लार बहना मुखका लिपा हुआ सा बना रहना मुखका लसलसा रहना स्वरभङ्ग तथा कण्ठरोग इन सबका नाश होता है दांत मुख तथा कण्ठ के सम्पूर्ण रोगों में यह परमहितकारी है ॥ १९९ । २०० ॥

इति खदिरादिगुटिकातैल ॥

वातादिभिःशोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनगन्धरूपैः । अरोचकाः स्युःपरिहृष्टदन्तकषायवक्त्रस्यमतोऽनिलेन ॥ २०१ ॥

वात आदि दोष शोक भय अत्यन्त लोभ क्रोध नहीं रुचनेवाली वस्तुका खाना मन नेवाली गन्ध सूंघना और अनिष्टरूप देखना इन कारणों से पांच प्रकारका अरुचिरोग होता है वातज अरुचिमें दन्तहर्ष (दांत गोंठले होजाना) तथा मुखका कषैला होना यह लक्षण होते हैं ॥ २०१ ॥

कट्वम्लमुष्णंविरसञ्चपूतिपित्तेनविद्याल्लवणञ्चवक्त्रम् । माधुर्य्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यविबन्धसंबद्धयुतंकफेन ॥ २०२ ॥

पित्तज अरुचि में मुख कडुवा खट्टा उष्ण विरस दुर्गन्धित तथा नमकीन होता है कफाज अरुचि में मुख मधुर लसलसा भारी शीतल स्रावरहित तथा स्तब्ध होता है ॥ २०२ ॥

अरोचकेशोकभयातिलोभक्रोधाद्यहृद्याशयगन्धजेस्यात् । स्वाभाविकश्चास्यरसोऽरुचिश्चत्रिदोषजंनैकरसंभवेत्तु ॥ २०३ ॥

इत्यरोचकनिदानम् ।

शोक भय अत्यन्त लोभ क्रोध और अनिष्टभोजन गन्ध का सेवन करना इन कारणोंसे हुये अरुचिरोग में मुखका रस स्वाभाविकही रहता है और सन्निपातज अरुचिरोग में मुख का रस अनेक प्रकार का होता है ॥ २०३ ॥

इत्यरुचिनिदान ॥

अथ अरोचकचिकित्सा ।

अरुचौकवलग्राहाधूमाःसमुखधावनाः । मनोज्ञमन्नपानञ्चहर्षणाश्वासनानिच ॥ २०४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथ अरुचिचिकित्सा ॥

अरुचि में कवलग्रह (किसी वस्तुको मुख में रखना) धूम मुखधावन (औषधियों के काढ़े आदि से मुख धोना) मनोहर अन्नपान हर्ष और आश्वासन (तसल्ली देना) यह सब हित होते हैं ॥ २०४ ॥

कुष्ठसौवर्च्चलाजाजीशर्करामरिचंविडम् । धात्र्येलापद्मकोशीरपिप्पल्युत्पलचन्दनम् ॥ २०५ ॥

कूट सोचर लवण जीरा शक्कर मिर्च तथा विडलवण धवई छोटीइलायची पद्माख खस पीपरि उत्पल तथा चन्दन ॥ २०५ ॥

लोध्रंतेजोवतीपथ्यात्र्यूषणंसयवाग्रजम् । आर्द्रदाडिमनिर्य्यासाश्चाजाजीशर्करायुताः ॥ २०६ ॥

लोध तेजबल सोंठि पीपरि मिर्च तथा जवाखार अदरख अनार का रस जीरा तथा शक्कर ॥ २०६ ॥

सतैलमाक्षिकास्त्वेतेचत्वारःकवलग्रहाः । चतुरोऽरोचकान्हन्युर्वाताद्येकजसर्वजान् ॥ २०७ ॥

इन चारों योगों में से किसी एकको तैल तथा शहदमें मिलाकर मुखमें रखनेसे वातज पित्तज कफज तथा सन्निपातज इन चारों प्रकार के अरुचि रोगों का नाश होताहै॥२०७॥

कारवीमरिचाजाजीद्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् । सौवर्चलंगुडंक्षौद्रंसर्वारोचकनाशनम् ॥ २०८ ॥

काला जीरा मिर्च जीरा मुनक्का चूका खट्टा अनार सोचर लवण गुड़ तथा शहद इन को मिलाकर सेवन करने से सब प्रकार की अरुचि का नाश होताहै ॥ २०८ ॥

वस्तिःसमीरणेपित्तेविरेकंवमनंकफे । कुर्य्याद्धृद्यानुकूलानिहर्षणञ्चमनोघ्नजे ॥ २०९ ॥

इत्यरोचकचिकित्सा ।

वातज अरुचि में वस्ति पित्तज अरुचिमें विरेचन तथा कफज अरुचिमें वमन करना चाहिये मनकी विकलता से हुये अरुचिरोग में मनोहर तथा प्रियवस्तु और हर्षण (खुश करना) हित होताहै ॥ २०९ ॥

इत्यरुचिचिकित्सा ॥

अथ कर्णरोगनिदानम् ।

नादोऽतिरुक्कर्णमलस्यशोषःस्रावस्तनुश्चाश्रवणञ्चवातात् । शोफःसरागोदरणंविदाहःसपीतपूतिश्रवणञ्चपित्तात् ॥ २१० ॥

अथ कर्णरोगनिदान ॥

वातज कर्णरोगमें निष्कारण शब्द होना बहुत पीड़ा मैलका सूखना और पतला स्राव होना अथवा स्राव न होना यह लक्षण होते हैं पित्तज कर्णरोग में रक्तवर्ण शोथ विदीर्ण होना दाह और पीला पीब बहना यह लक्षण होते हैं ॥ २१० ॥

वैश्रुत्यकण्डूस्थिरशोफशुक्लस्निग्धाश्रुतिःश्लेष्मभवेऽल्परुक्च । सर्वाणिरूपाणितुसन्निपातात्स्रावश्चतत्राधिकदोषवर्गः ॥ २११ ॥

इति कर्णरोगनिदानम् ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज कर्णरोग में और का और सुनाई देना खुजली स्थिर शोथ श्वेतवर्ण तथा स्निग्धस्राव और स्वल्प पीड़ा यह लक्षण होते हैं सन्निपातज कर्णरोग में सम्पूर्ण दोषों के लक्षण होते हैं और स्रावमें दोषोंके वर्णकी अधिकता होती है ॥ २११ ॥

इति कर्णरोगनिदान ॥

अथ कर्णरोगचिकित्सा ।

कर्णशूलेतुवातघ्नीहितापीनसवत्क्रिया । प्रदेहाःपूरणंनस्यंपाकस्रावे व्रणक्रिया ॥ २१२ ॥

अथ कर्णरोगचिकित्सा ॥

कर्णशूल में पीनस रोगके समान वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये लेप पूरण (कान में तैलआदि भरना) तथा नस्य देना कर्णशूल में हित है जो कान पकजाय तथा बहता होय तो व्रणके समान चिकित्सा करै ॥ २१२ ॥

भोज्यानिचयथादोषंकुर्यात्स्नेहांश्च पूरणान्। हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिस्तैलंचसार्षपंपचेत् । एतद्धिपूरणंश्रेष्ठंकर्णशूलनिवारणम् ॥ २१३ ॥

दोषके अनुसार भोजन करै और कानों में स्नेह भरै हींग धनियां तथा सोंठि इनके साथ सरसोंके तैलको पकाकर कानोंमें धरै यह कानों के शूलको दूर करने में अत्यन्त श्रेष्ठ है ॥ २१३ ॥

देवदारुवचाशुण्ठीशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः । तैलंसिद्धंबस्तमूत्रेकर्णशूलनिवारणम् ॥ २१४ ॥

देवदारु बच सोंठि सौंफ कूट सैंधवलवण भेंड़ी के मूत्र में तथा तैलमें इनका पाक करके कानोंमें छोड़नेसे शूलकानाश होताहै ॥ २१४ ॥

वराटकान्समाहृत्यदहेन्मृद्भाजनेनवे । तद्भस्मच्योतयेत्तेनगन्धतैलंविपाचयेत् ॥ २१५ ॥ रसाञ्जनस्य शुण्ठ्याश्चकल्काभ्यांकर्णशूलनुत्। शुष्कमूलकशुण्ठीनांक्षारोहिङ्गुमहौषधम् ॥ २१६ ॥

कौड़ियों को लाकर नवीन मट्टीके पात्रमें भरकर जलावे फिर कौड़ियों की भस्मका क्षारजल बनाकर उसमें रसौंत और सोंठिका कल्क तथा तैल डालकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इस तैल को कानमें छोड़ने से कर्णशूलका नाश होताहै सूखी मूली तथा सोंठि का क्षार हींग सोंठि ॥ २१५ । २१६ ॥

शतपुष्पावचाकुष्ठंदारुशिग्रुरसाञ्जनम् । सौवर्चलयवक्षारस्वर्जिकोद्भिदसैंधवम् ॥ २१७ ॥

सौंफ बच कूट देवदारु सहिंजन रसौंत सोचरलवण जवाखार सज्जी उद्भिजलवण सैंधवलवण ॥ २१७ ॥

भूर्जग्रन्थिविडंमुस्तंमधुशुक्तंचतुर्गुणम् । मातुलुङ्गरसश्चैवकदल्यारसएव च ॥ २१८ ॥ सर्वैरेतैर्यथोद्दिष्टैःक्षारतैलंविपाचयेत् । बाधिर्य्यकर्णनादश्चपूयस्रावश्चदारुणः ॥ २१९ ॥

भोजपत्र पिपरामूल विड़लवण तथा नाग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमोथा इनके कल्क और चतुर्गुण शहद सिरका विजौरानिम्बू के रस तथा केलेके रसके साथ तैलका पाककरै इस तैल को कानमें डालने से वधिरता कर्णनाद (कानोंमें शब्द होना) कानोंसे बहुत पीव बहना२१८।२१९॥

क्रिमयःकर्णशूलश्चपूरणादस्यनश्यति। मुखकर्णाक्षिरोगेषुयथोक्तंपीनसेविधिम्। कुर्य्याद्भिषक्समीक्ष्यादौदोषकालबलाबलम्॥ २२०॥

इति कर्णरोगचिकित्सा।

क्रिमि तथा कर्णशूल इन सबका नाश होता है बुद्धिमान् वैद्य प्रतिश्याय (जुकाम) में जो विधि कहीगई है वही विधि दोष तथा समयके बलाबल को विचारकर मुख कान तथा नेत्रके रोगोंमेंभी करै॥ २२०॥

इति कर्णरोगचिकित्सा॥

अथ नेत्ररोगनिदानम्।

अल्पास्रुरागाऽनुपदेहताचप्रस्पन्दतोदातिरुजश्चवातात्। पित्तात्सुदाहार्त्तिरुजोऽतिरागाःपीतोपदेहःसुभृशोष्णमस्रम्॥ २२१॥

अथ नेत्ररोगनिदान।

वातज नेत्ररोगमें थोड़े आंसू बहना रक्तवर्ण नेत्र लिपेहुये से न होना फड़कना सुई चुभनेकीसी पीड़ा और बहुत पीड़ा यह लक्षण होते हैं पित्तज नेत्ररोग में दाह अत्यन्त पीड़ा अत्यन्त रक्तवर्ण नेत्रोंका पीले कीचर से लिपाहुआ होना और अत्यन्त उष्ण आंसू बहना यह लक्षण होते हैं॥ २२१॥

शुक्लोपदेहोबहुपिच्छिलास्रुनेत्रस्य खेटाद्गुरुतासकण्डूः। सर्वाणिरूपाणितुसन्निपातान्नेत्रामयाःषण्णवतिस्तुभेदात्॥ २२२॥

कफज नेत्ररोगमें नेत्रोंका श्वेत कीचरसे लिपाहुआ होना बहुत लसलसे आंसू बहना भारीपन तथा खुजली यह लक्षण होते हैं सन्निपातज नेत्ररोगमें वातज आदि तीनों नेत्ररोगोंके लक्षण होते हैं नेत्ररोग ९६ प्रकार के होते हैं॥ २२२॥

तेषामभिव्यक्तिरभिप्रदिष्टाशालाक्यतन्त्रेषुचिकित्सितञ्च। पराधिकारेतुनविस्तरोक्तिःशस्तेतितेनात्रननःप्रयासः॥ २२३॥

इति नेत्ररोगनिदानम्।

इनके लक्षण तथा चिकित्सा का वर्णन शालाक्य तन्त्रमें कियागया है एक अधिकार में दूसरेका बहुत विस्तार करना उचित नहीं है इस लिये हमने यहां सम्पूर्ण नेत्ररोगोंका वर्णन नहीं किया है॥ २२३॥

इति नेत्ररोगनिदान॥

अथ नेत्ररोगचिकित्सा।

नेत्ररोगेसमुत्पन्नेतरुणेतुविडालकः। कार्य्योदाहोपदेहाश्रुशोफरोगनिवारणः॥ २२४॥

अथ नेत्ररोगचिकित्सा॥

नबीन तथा तरुण नेत्ररोगमें विडालक (नेत्रोंके ऊपर बरोनियों को छोड़कर लेप करने को विडालक कहते हैं) करना चाहिये इस से नेत्रों के दाह उपदेह नेत्रों का कीचड़ से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिपा हुआसा होना) आंसू तथा शोथ इन रोगोंका नाश होता है ॥ २२४ ॥

नागरसैन्धवंसर्पिर्मण्डेनचरसक्रिया । निघृष्टंवातिकेतद्वन्मुस्तसैन्धवगैरिकम् ॥ २२५ ॥

वातज नेत्ररोगमें सोंठि तथा सैंधवलवण को घृतयुक्त मण्डमें मिलाकर रसक्रिया करनी चाहिये वातज नेत्ररोगमें नागरमोथा सैंधवलवण तथा गेरू को घिसकर ॥ २२५ ॥

तथाशावरकंलोध्रंघृतभृष्टंविडालकः । कार्य्याहरीतकीतद्वद्घृतभृष्टा रुजापहा ॥ २२६ ॥

अथवा शावर नाम लोध को घीमें भूनकर विड़ालक लेप लगाना चाहिये हड़ को घीमें भूनकर विड़ालक लेप लगाने से पीड़ा का नाश होता है ॥ २२६ ॥

पैत्तिकेचन्दनानन्तामञ्जिष्ठाभिर्विडालकः । कार्य्यःपद्मकयष्ट्याह्वमांसीकालीयकैस्तथा ॥ २२७ ॥

पित्तज: नेत्ररोगमें चन्दन जवासा तथा मँजीठकेद्वारा और पद्माख मुलेठी जटामासी तथा पीतचन्दनकेद्वारा विड़ालक लेप लगाना चाहिये ॥ २२७ ॥

गैरिकंसैन्धवंमुस्तंरोचनाचरसक्रिया । कफेकार्य्यस्तथाक्षौद्रप्रियंगुःसमनःशिलः ॥ २२८ ॥

गेरू सैंधव लवण नागरमोथा तथा गोरोचनके द्वारा रसक्रिया करनी चाहिये कफज नेत्ररोगमें शहद मियंगु तथा मैनशिलके द्वारा विड़ालक लेप लगाना चाहिये ॥२२८॥

सन्निपातेतुसर्वैःस्याद्बहिरक्ष्णोःप्रलेपनम् । पक्ष्मण्यस्पृश्यताकार्यं सम्पाकेत्वञ्जनंत्र्यहात् ॥ २२९ ॥

सन्निपातज नेत्ररोग में पूर्वोक्त सम्पूर्ण लेप नेत्रों के बाहर लगाने चाहिये नेत्रों के पकने में तीनदिन के उपरान्त नेत्रों में इसप्रकार से अंजन लगाना चाहिये कि वह बरोनियों में न छूजावे ॥ २२९ ॥

आश्च्योतनंमारुतजेक्वाथोबिल्वादिभिःशुभः । कोष्णःसैरण्डतर्कारीबृहतीमधुशिग्रुभिः ॥ २३० ॥

वातज नेत्ररोगमें बेल आदि पञ्चमूल अरण्ड जाही भटकटैया शहद तथा सहिंजन इनके कुछ उष्ण काढ़े के द्वारा आश्च्योतन (खुलेहुये नेत्रोंमें क्वाथ दूध स्नेह अथवा अन्य पतले पदार्थके बूंद टपकानेको आश्च्योतन कहते हैं) करना चाहिये ॥ २३० ॥

द्राक्षादार्वीसमञ्जिष्ठालाक्षाह्विमधुकोत्पलैः । क्वाथःसशर्करःशीतःपूरणंरक्तपित्तनुत् ॥ २३१ ॥

मुनक्का दारुहल्दी मँजीठ लाख मुलेठी जलकी मुलेठी तथा नीलोत्पल इनके शीतल काढ़े में शक्कर मिलाकर नेत्रोंमें भरनेसे रुधिर तथा पित्त से हुये नेत्ररोगों का नाश होता है ॥ २३१ ॥

नागरंत्रिफलामुस्तनिम्बवासारसःकफे । कोष्णमाश्च्योतनंमिश्रैरौषधैःसन्निपातके ॥ २३२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोंठि त्रिफला नागरमोथा नींब तथा रूसा के कुछ उष्ण काढ़े के द्वारा कफज नेत्ररोगमें आश्च्योतन करना चाहिये सन्निपातज नेत्ररोग में वातज आदि नेत्ररोगोंके लिये कहेगये तीनों काढ़ोंके द्वारा आश्च्योतन करना चाहिये ॥ २३२ ॥

बृहत्येरण्डमूलत्वक्शिग्रोःपुष्पंससैन्धवम् । अजाक्षीरेणपिष्टंस्याद्वर्त्तिर्वाताक्षिरोगनुत् ॥ २३३ ॥

भटकटैया अरण्ड की जड़की छाल सहिंजन के फूल और सेंधव लवण इनको बकरी के दूधमें पीसकर वत्ती बनावे इस वत्ती को घिसकर लगाने से वातज नेत्ररोग का नाश होता है ॥ २३३ ॥

सुमनःक्षारकाःशंखास्त्रिफलामधुकंबला । पित्तरक्तापहावर्त्तिःपिष्टादिव्येनवारिणा ॥ २३४ ॥

चमेली क्षार शंख त्रिफला मुलेठी तथा खरियारा इनको वर्षाके जलमें पीसकर बत्ती बनावे इस बत्तीको घिसकर लगानेसे रुधिर तथा पित्त से होनेवाले नेत्ररोगों का नाश होता है ॥ २३४ ॥

सैन्धवंत्रिफलाव्योषंशंखनाभिःसमुद्रजः । फेनःशैलेयकंसर्जोवर्त्तिःश्लेष्माक्षिरोगनुत् ॥ २३५ ॥

सैंधव लवण त्रिफला सोंठि पीपरि मिर्च शंखनाभि समुद्रफेन छरीला तथा राल इन को पीसकर बत्ती बनावे इस बत्तीको घिस कर लगाने से कफज नेत्ररोगों का नाश होता है ॥ २३५ ॥

प्रपौण्डरीकंयष्ट्याह्वंदार्वीचाष्टपलांशिकाम् । जलेपक्त्वारसेपूतेपुनःपक्वेरसेघने ॥ २३६ ॥

पुण्डरिया मुलेठी तथा दारुहल्दी इनको बत्तिस ३२ तोले लेकर जलमें डालकर काढ़ा करके छानलेवे फिर इसकाढ़े का पाक करे जब काढ़ा गाढ़ा होजाय तब उसमें ॥ २३६ ॥

कर्षश्चश्वेतमरिचाद्द्रोणीपुष्पान्नवोत्पलम् । चूर्णंक्षिप्त्वाकृतावर्त्तिःसर्वनेत्रप्रसादनी ॥ २३७ ॥

सहिंजन के बीज गूमा तथा नवीन उत्पल इनका तोले २ भर चूर्ण डालकर बत्ती बनावे इस बत्ती को घिसकर लगाने से सम्पूर्ण नेत्ररोगों का नाश होता है और नेत्र निर्मल होते हैं ॥ २३७ ॥

अमृतामधुकंनिम्बपटोलंछागलंशकृत् । वासाप्रपौण्डरीकञ्चदार्वीकालानुसारिणी ॥ २३८ ॥

गिलोय मुलेठी नींब परवल बकरेकी लेंड़ी रूसा पुँडारिया दारुहल्दी तथा तगर ॥ २३८ ॥

एषामष्टपलान्भागान्सुधौतान्जर्जरीकृतान् । तोयेपक्त्वारसेपूतेभूयःपक्वेघनेरसे ॥ २३९ ॥ सितामरिचयोःकर्षंजातिपुष्पान्नवोत्पलम् । चूर्णंकृत्वाकृतावर्त्तिःसर्वनेत्रप्रसादनी ॥ २४० ॥

इन सब को आठ पल लेकर तथा धोकर कूटकर जलमें डालकर काढ़ा करके छानलेवे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर इसकाढ़ेको पाककरे जब काढ़ा गाढ़ा होजाय तब इसमें शक्कर मिर्च चमेली के फूल तथा नवीन उत्पल इनका एक २ तोले भर चूर्ण मिलाकर बत्ती बनावे इस बत्तीको घिस कर लगानेसे सम्पूर्ण नेत्ररोगों का नाश होता है और नेत्र निर्मल होतेहैं ॥ २३९।२४० ॥

शंखप्रवालवैडूर्य्यलौहताम्रप्लवास्थिभिः । स्रोतोऽजश्वेतमरिचैर्वर्त्तिःसर्वाक्षिरोगनुत् ॥ २४१ ॥

शंख मूंगा वैडूर्य्यमणि लोहा तांबा तथा हारिलकी हड्डी श्याम सुर्म्मा तथा सहिंजन के बीज इनकी बत्ती बनाकर घिसकर लगाने से सम्पूर्ण नेत्ररोगोंका नाशहोताहै॥२४१॥

शाणार्द्धमरिचाद्द्वौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः । शाणार्द्धंसैन्धवाच्छाणंनवसौवीरकाञ्जनात् ॥ २४२ ॥

मिर्च १॥ मासे पीपरि ६ मासे समुद्रफेन ६ मासे सैंधव लवण १॥ मासे और सफेद सुर्म्मा २॥ तोले ॥ २४२ ॥

पिष्टंसुसूक्ष्मंचित्रायांचूर्णाञ्जनमिदंशुभम् । कण्डूकाचकफार्त्तानांमलानाञ्चविशोधनम् ॥ २४३ ॥

इन सबको चित्रानक्षत्र में महीन पीसकर नेत्रों में लगावे इस से नेत्रोंकी खुजली काच(नेत्ररोगविशेष) तथा कफज पीड़ाका नाश होताहै और नेत्रोंकामलशुद्ध होजाताहै।।२४३।।

बस्तमूत्रेत्र्यहंस्थाप्यमेलाचूर्णंसुभावितम् । चूर्णाञ्जनञ्चतैमिर्य्यक्रिमिपैल्यमलापहम् ॥ २४४ ॥

छोटी इलायची के चूर्ण को तीन दिनतक बकरे के मूत्रमें घोटकर भिगोरक्खे फिर इस को नेत्रों में लगावे इससे तिमिर (धुँधला दिखाई देना) कृमिपैल्य (नेत्ररोगविशेष) तथा मैलका नाश होताहै ॥ २४४ ॥

सौवीरमञ्जनंतुत्थंताप्योधातुर्मनःशिला । चक्षुष्यंमधुकंलोहमणयःपौष्पमञ्जनम् ॥ २४५ ॥

सफेद सुर्म्मा सोनामक्खी मैनशिल ला सुर्म्मा मुलेठी लोह और मोती आ मणि इन सबको महीन पीसकर नेत्रों अञ्जन लगाना चाहिये इसको पौष्पांजन ते हैं ॥ २४५ ॥

सैन्धवंशौकरीदंष्ट्राकतकश्चाञ्जनम् । तिमिरादिषुचूर्णंवावर्तिर्वानुत्तमा ॥ २४६ ॥

सैंधवलवण शूकरकी दाढ़ तथा नि इनका अंजन तिमिरआदि रोगोंमें बहु तकारी होता है इनका चूर्ण अथवा बत्ती बनाकर घिसके लगाना यह दोनों होते हैं ॥ २४६ ॥

कतकस्यफलंशङ्खःसैन्धवंत्र्यूषणंसिता । फेनोरसाञ्जनंक्षौद्रंविडङ्गानिमनःशिला ॥ २४७ ॥

निर्म्मली शंख सैंधवलवण सोंठि मिर्च पीपरि शक्कर समुद्रफेन रसौंत शहद बायबिडंग मैनशिल ॥ २४७ ॥

कुक्कुटाण्डकपालञ्चवर्तिरेषाव्यपोहति । तिमिरंपटलंकाचंमलञ्चाशमखावती ॥ २४८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा मुर्गेके अण्डोंके छिलके इनको पीस कर वत्ती बनावे इस वत्ती को घिसकर लगाने से तिमिर पटल काच तथा मैलका शीघ्रही नाश होता है इस वत्ती को सुखावती कहते हैं ॥ २४८ ॥

त्रिफलाकुक्कुटाण्डत्वक्कासीससमयोरजः। नीलोत्पलंविडङ्गानिफेनञ्चसरितांपतेः ॥ २४९ ॥

त्रिफला मुर्गे के अण्डे की छाल कसीस लोहेका चूर्ण नीलोत्पल वायविड़ंग तथा समुद्रफेन ॥ २४९ ॥

आजेनपयसापिष्ट्वाभावयेत्ताम्रभाजने। सप्तरात्रंस्थितंभूयःपिष्ट्वाक्षीरेणवर्तयेत्। एषादृष्टिप्रदावर्त्तिरन्धस्याभिन्नचक्षुषः ॥ २५० ॥

इति दृष्टिप्रदावर्त्तिः।

इन सबको बकरी के दूधमें पीसकर तांबे पात्र में घोटकर सात दिनतक रखछोड़े र पीसकर बकरे के दूधमें मिलाकर वत्ती नावे इस बत्ती को घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे सके कि नेत्र नहीं विदीर्णहुये हैं ऐसा अंधा खने लगता है ॥ २५० ॥

इति दृष्टिप्रदावर्ति ॥

वदनेकृष्णसर्पस्यनिहितंमासमञ्जनम्। ततस्तस्मात्समुद्धृत्यसशुष्कंचूर्णयेद्बुधः ॥ २५१ ॥

काले सर्पके मुखमें महीने भरतक काला सुर्म्मा रक्खे फिर निकालकर अच्छे प्रकार से सुखावे और बुद्धिमान् वैद्य महीन पीस कर ॥ २५१ ॥

सुमनःक्षारकैःशुष्कैरर्द्धांशैःसैन्धवेनच। एतन्नित्यांजनंकार्य्यंतिमिरघ्नमनुत्तमम् ॥ २५२ ॥

अर्द्धभाग सूखाहुआ चमेलीका क्षार तथा सैंधवलवण मिलाकर नित्य अंजन लगावे इससे तिमिरका नाश होताहै ॥ २५२ ॥

पिप्पल्यःकिंशुकरसोवसासर्पस्यसैन्धवम्। जीर्णंघृतञ्चसर्वाक्षिरोगघ्नीस्यादुपक्रिया ॥ २५३ ॥

पीपरि ढाकका रस सर्पकी चर्बी सैंधवलवण तथा पुराना घी इन सबको मिलाकर लगाने से सम्पूर्ण नेत्ररोगों का नाश होता है ॥ २५३ ॥

कृष्णसर्पवसाक्षौद्रंरसोधात्र्यारसक्रिया। शस्तासर्वाक्षिरोगेषुकाचार्बुदमलेषुच ॥ २५४ ॥

काले सर्पकी चर्बी शहद तथा आमले का रस इनकेद्वारा रसक्रिया करने से नेत्रके काच अर्बुद तथा मल आदि सम्पूर्ण रोगोंका नाश होता है ॥ २५४ ॥

धात्रीरसाञ्जनक्षौद्रसर्पिर्भिस्तुरसक्रिया। पित्तरक्ताक्षिरोगघ्नीतैमिर्यपटलापहा ॥ २५५ ॥

आमले का रस रसौंत शहद तथा घृत इनकेद्वारा रसक्रिया करने से रक्तपित्तज नेत्ररोग पटल तथा तिमिर का नाश होता है ॥ २५५ ॥

धात्रीसैन्धवपिप्पल्यःस्युरल्पमरि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाःसमाः । क्षौद्रयुक्तानिहन्त्या न्ध्यंपटलञ्चरसक्रिया ॥ २५६ ॥

इति नेत्ररोगचिकित्सा ।

आमला सैंधवलवण तथा पीपरि समभाग और थोड़ीसी मिर्चें इन सबको शहदमें मिलाकर रसक्रिया करने से अंधता तथा पटल का नाश होता है ॥ २५६ ॥

इति नेत्ररोगचिकित्सा ॥

अथ खालित्यरोगनिदानम् ।

तेजोऽनिलाद्यैःसहकेशभूमिंदग्ध्वा शुकुर्य्यात्खलितंनरस्य । किञ्चित्तुद ग्ध्वापलितानिकुर्य्याद्धरित्प्रभत्वञ्च शिरोरुहाणाम् ॥ २५७ ॥

अथ खालित्यरोगनिदान ॥

तेज वायु आदिकों के साथ मिलकर केशोंके स्थानको जलाकर शीघ्रही खालित (गंजा) को उत्पन्न करता है और जो केशों के स्थान को स्वल्पही जलाता है तो बालों को श्वेत तथा हरित कांतियुक्त करताहै ॥२५७॥

इत्यूर्द्ध जत्रूत्थगदैकदेशःप्रोक्तश्चिकित्सान्तुपरांनिबोध । विस्तारतःसंग्रहतश्चसम्यग्यथाक्रमंसौम्य ! मयोच्यमानाम् ॥ २५८ ॥

इति खालित्यनिदानम् ॥

हे सौम्य अग्निवेश इस प्रकार हंसुवे के ऊपरके स्थानों में होनेवाले रोग कहेगये अब विस्तार तथा संक्षेप से इनकी चिकित्सा क्रमपूर्वक सुनो मैं कहताहूं ॥ २५८ ॥

इति खालित्यनिदान ॥

अथ खालित्यचिकित्सा ।

खालित्येपलितेवल्यांहरिल्लोम्निच शोधितम् । नस्यैस्तैलैःशिरोवक्त्रप्रलेपैश्चाप्युपाचरेत् ॥ २५९ ॥

अथ खालित्यचिकित्सा ॥

गंजापन बालोंका श्वेत होना झुर्री परना तथा रोयें हरे होजाना इन रोगोंमें वमन आदि संशोधन कराके नस्य तैल और शिर, मुख में लेप लगाना इनके द्वारा चिकि[illegible] करै ॥ २५९ ॥

सिद्धंविदारीगन्धाद्यैर्जीवनीयैश्[illegible] पिच । नस्यंस्यादनुतैलंवाखा[illegible] त्यपलितापहम् ॥ २६० ॥

बिलाईकन्द आदि गणकेद्वारा अथवा जीवनीयगणकेद्वारा पाक कियेगये तैल[illegible] थवा पूर्वोक्त अणु तैलकी नस्य लेने से [illegible] पन तथा बालोंका श्वेत होना इन दो[illegible] का नाश होता है ॥ २६० ॥

नस्यंस्याद्भिषजासम्यक्योजितं[illegible] तापहम् । क्षीरात्सहचराद्भृङ्गर[illegible] च्चसुरसात्रसात् ॥ २६१ ॥ प्र[illegible] स्तुकुडवस्तैलाद्यष्ट्याह्वपलकल्कि[illegible] तः । सिद्धःशैलासनेभाण्डेमेषशृं[illegible] चसंस्थितः ॥ २६२ ॥

दूध झिंटीका रस भांगरेका रस तथा [illegible]लसी का रस चौंसठ २ तोले तैल १६ तोले और मुलेठी का कल्क ४ तोले इन सबको एकमें मिलाकर पकावे जब पानी जलजावे केवल तैल बाकी रहजावे तब छानकर मेढे [illegible] सींग में रक्खै फिर दूधमें इस तैल को मि[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर नस्य लेवै इससे वालों की श्वेतता का नाश होता है ॥ २६१ । २६२ ॥

भिषजात्क्षीरपिष्टैर्वाद्दुग्धिकाकरवीरकौ। उत्पाट्यपलितंदेयौतावुभौपलितापहौ ॥ २६३ ॥

शिरके श्वेत वालों को उखाड़कर दुधिया तथा कनेर की जड़ को पीसकर शिरमें लेप करै इससे वालों की श्वेतता का नाश होता है ॥ २६३ ॥

मार्कवस्वरसात्क्षीराद्विप्रस्थंमधुकात्पलम् । तैःपचेत्कुडवंतैलात्तन्नस्यंपलितापहम् ॥ २६४ ॥

भंगरेका रस ६४ तोले दूध ६४ तोले तथा मुलेठी का कल्क चार तोले इन सबके साथ १६ तोले तैलका पाककरे इस तैलकी नस्य लेने से बालों की श्वेतता का नाश होता है ॥ २६४ ॥

आदित्यवल्ल्यामूलानिकृष्णशैरेयकस्यच । सुरसस्यचपत्राणिपत्रंकृष्णशणस्यच । २६५ ॥

सूर्यवल्ली की जड़ कटसरैया की जड़ तुलसीकी पत्ती काले सनके पत्ता ॥ २६५ ॥

मार्कवंकाकमाचीचमधूकंदेवदारुच । पृथग्दशपलांशानिपिप्पल्यस्त्रिफलाञ्जनम् ॥ २६६ ॥

भंगरा काकमाची मुलेठी तथा देवदारु चालिस २ तोले पीपरि त्रिफला सुर्मा॥२६६॥

प्रपौण्डरीकंमञ्जिष्ठालोध्रंकृष्णागुरूत्पलम्। आम्रास्थिकर्दमःकृष्णो

मृणालीरक्तचन्दनम् ॥ २६७ ॥

पुँडरिया मँजीठ लोध काला अगर नील कमल आमकी विजली काले धान कमलकी दण्डी लालचन्दन ॥ २६७ ॥

नीलीभल्लातकास्थीनिकासीसमदयन्तिकाः । सोमराज्यसनःशस्तंकृष्णंतिरण्डीतचित्रकौ ॥ २६८ ॥

नील भिलावां की मींगी कसीस मल्लिका बकुची शाल कालालोहा मैनफलचीता२६८॥

पुष्करार्जुनकाश्मर्य्याण्याम्रजम्बूफलानिच । पृथक्पञ्चपलांशानितैः पिष्टैराढकंपचेत् ॥ २६९ ॥ वैभीतकस्यतैलस्यधात्रीरसचतुर्गुणम् । कुर्य्यादादित्यपाकंवायावच्छुष्कोभवेद्रसः ॥ २७० ॥

पुष्करमूल अर्जुन खंभारी के फल आमके फल तथा जामुनके फल बीस २ तोले इन सबके कल्कके साथ तथा आमले के चतुर्गुण रसके साथ बहेड़े के २५६ तोले तैलका पाककरै अथवा धूपमें रक्खै और जब सब रस सूखजाय तब छानकर ॥ २६९ । २७० ॥

लोहपात्रेततःपूतंसंशुद्धमुपयोजयेत् । पानेनस्तःक्रियायाञ्चशिरोऽभ्यङ्गेतथैवच ॥ २७१ ॥

लोहेके पात्रमें रखछोड़ै इस तैल को पीने से इसकी नस्य लेने से तथा इसको शिरमें मलने से ॥ २७१ ॥

एतच्चक्षुष्यमायुष्यंशिरसःसर्वरोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नुत् । महानीलमितिख्यातंपलि
तघ्नमनुत्तमम् ॥ २७२ ॥

इति महानीलतैलम् ।

नेत्रों को हित होता है आयु बढ़ती है तथा शिरके सम्पूर्ण रोगोंका नाश होता है यह बालोंकी श्वेतताके नष्ट करने में श्रेष्ठ होता है इसको महानील कहते हैं ॥ २७२ ॥

इति महानीलतैल ॥

प्रपौण्डरीकमधुकपिप्पलीचन्दनो
त्पलैः । कार्षिकैस्तैलकुडवोद्विगु
णामलकीरसः । सिद्धःसप्रतिमर्शः
स्यात्सर्वमूर्द्धगदापहः ॥ २७३ ॥

पुँडरिया मुलेठी पीपरि चन्दन तथा उत्पल यह सब तोले २ भर लेकर पीसकर इन के कल्क तथा आमले के द्विगुण रसके साथ सोलह तोले तैलका पाक करै इस तैल के सेवन से निस्संदेह शिरके सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है ॥ २७३ ॥

क्षीरंपियालयष्ट्याह्वजीवकाद्योगण
स्तिलाः॥कृष्णावक्त्रेप्रलेपःस्याद्धरि
ल्लोमनिवारणः ॥ २७४ ॥

दूध चिरौंजी मुलेठी जीवक आदिगण तथा काले तिल इन सबको पीसकर मुख में लेप लगाने से हरित लोम काले होजाते हैं ॥ २७४ ॥

यष्ट्याह्वतिलकिञ्जल्कक्षौद्रमामलका
नि च॥ बृंहयेद्रञ्जयेच्चैतत्केशान्मूर्द्धप्र
लेपनम् ॥ २७५ ॥

मुलेठी तिल कमल की केसर शहद तथा आमला इन सब को पीसकर शिरमें लेप करने से बाल बढ़ते हैं तथा काले होजाते हैं ॥ २७५ ॥

पचेत्सैन्धवशुक्ताम्लैरयश्चूर्णंसत
ण्डुलम् । तेनालिप्तंशिरःशुद्धमस्नि
ग्धमुषितंनिशि ॥ २७६ ॥

नस्य के द्वारा शिरको शुद्ध करके शिर में कोई तैल आदि स्नेहन लगाकर सायंकालके समय सैंधव लवण सिरका कांजी लोह तथा चावल इन सबको पकाकर शिर में करै ॥ २७६ ॥

तत्प्रातस्त्रिफलाधौतंस्यात्कृष्ण
मूर्द्धजम् । अतश्चूर्णोऽम्लपिष्ट
गःसत्रिफलोवरः ॥ २७७ ॥

इति खालित्यचिकित्सा ।

फिर दूसरे दिन प्रातःकाल त्रिफला से शिर धोवै इस से वाल काले तथा होजाते हैं लोहचूर्ण तथा त्रिफला को में पीस कर लगाने से बाल काले हैं ॥ २७७ ॥

इति खालित्यचिकित्सा ॥

अथ स्वरभेदचिकित्सा ।

सर्पींष्युपरिभक्तानिस्वरभेदेऽनिला
त्मके । तैलैश्चतुष्प्रयोगैश्चबलारा
स्नामृताह्वयैः ॥ २७८ ॥

अथ स्वरभेदचिकित्सा ॥

वातज स्वरभेदमें भोजनके उपरान्त घी पीना चाहिये बलातैल रास्नातैल तथा अमृता तैल वातज स्वरभेद में पान नस्य बस्ति तथा मर्दनके द्वारा प्रयोग करना चाहिये ॥२७८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बर्हितित्तिरिदक्षाणांपञ्चमूलभृतान्रसान् । मायूरंक्षीरसर्पिर्वापिबेत्त्र्यूषणमेववा ॥ २७९ ॥

मोर तीतुर तथा मुर्गेके मांस का पंचमूल के साथ पाक कियागया रस मायूरघृत तथा दूध वातज स्वरभेदमें पीना चाहिये और सोंठि पीपरि मिर्चका सेवन करनाचाहिये२७९॥

पैत्तिकेतुविरेकःस्यात्पयश्चमधुरैःश्रृतम् । सर्पिर्गुडाजीवनीयंवासासिद्धंघृतंतथा ॥ २८० ॥

पित्तज स्वरभेद में विरेचन मधुरगण की औषधियों के साथ पाक क्रियागया दूध पूर्वोक्त घृत के मोदक जीवनीयघृत तथा वासा घृत (रूसेके साथ पाक कियागया घृत) यह सब हित होते हैं ॥ २८० ॥

कफजेस्वरभेदेतुतीक्ष्णंमूर्द्धविरेचनम् । विरेकोवमनंधूमोयवान्नकटुसेवनम् ॥ २८१ ॥

कफज स्वरभेदमें तीक्ष्ण शिरोविरेचन विरेचन वमन धूमपान यवके पदार्थ तथा कडुवी वस्तु यह सब हित हैं ॥ २८१ ॥

चव्यभार्ग्यभयाव्योषक्षारमाक्षिकचित्रकान् । लिह्याद्वापिप्पलीपथ्येतीक्ष्णंमद्यंपिबेच्चसः॥ २८२ ॥

चव्य भारंगी हड़ सोंठि पीपरि मिर्च जवाखार शहद तथा चीता इनको मिलाकर अथवा पीपरि तथा हड़को मिलाकर कफज स्वरभेदमें चाटै और तीक्ष्ण मद्यपीवे॥२८२॥

रक्तजेस्वरभेदेतुसघृताजाङ्गलारसाः । द्राक्षाविदारीक्षुरसाःसघृतक्षौद्रशर्कराः ॥ २८३ ॥

रक्तज स्वरभेद में जांगल जीवों के मांस का रस घृतयुक्त और मुनक्का बिलाईकन्द तथा ईखका रस घी शहद तथा शक्करयुक्त पीना चाहिये ॥ २८३ ॥

यच्चोक्तंक्षयकासघ्नंतच्चसर्वंचिकित्सितम् । पित्तजस्वरभेदघ्नंशिरावेधश्चरक्तजे । सन्निपातेहिताःसर्वाःक्रियानतुशिराविधिः ॥ २८४ ॥

क्षतज खांसी को नष्ट करने के लिये जो चिकित्सा कहीगई है वह चिकित्सा तथा पित्तज स्वरभेद के लिये जो चिकित्सा कहीगई है वह चिकित्सा और फस्त खुलाना रक्तज स्वरभेद में हित है सन्निपातज स्वरभेदमें फस्त खुलाने को छोड़कर सम्पूर्ण स्वरभेदनाशक चिकित्सा हित होती हैं ॥ २८४ ॥

कुर्य्याच्छेषेषुरोगेषुक्रियांस्वांस्वांचिकित्सिताम् । शेषेष्वादौचनिर्दिष्टासिद्धौचान्याप्रवक्ष्यते॥२८५।२८६॥

इति स्वरभेदचिकित्सा ।

तीनों मर्मोंमें होनेवाले अन्य शेष रोगों में अपने २ अधिकार में कहीहुई चिकित्सा करै कुछ रोगों की चिकित्सा पहिले कहीगई है और कुछ रोगों की चिकित्सा सिद्धिस्थान में कही जायगी ॥ २८५ । २८६ ॥

इति स्वरभेदचिकित्सा ।

भवन्तिचात्र ॥

वातपित्तकफानृणांवस्तिहृन्मूर्द्धसं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रयाः । तस्मात्तुस्थानसामीप्या द्धर्त्तव्यावमनादिभिः ॥ २८७ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। वायु पित्त तथा कफ मनुष्यों के वस्ति हृदय तथा मस्तक में स्थित रहते हैं इस से स्थान की समीपता से वमन आदिके द्वारा चिकित्सा करनीचाहिये२८७॥

अध्यात्मलोकेवाताद्यैर्लोकावातेर वीन्दुभिः । पीड्यतेधार्य्यतेचैववि कृताविकृतैस्तथा ॥ २८८ ॥

जैसे वायु सूर्य्य तथा चन्द्रमा विकाररहित होकर संसारका पालनकरते हैं और विकार-युक्त होकर संसारको पीड़ित करते हैं उसी प्रकार वात पित्त तथा कफ विकाररहित हो-कर शरीर को पुष्ट करते हैं और विकारयुक्त होकर शरीरको पीड़ित करते हैं ॥ २८८ ॥

विरुद्धैरपिनत्वेतेगुणैर्घ्नन्तिपरस्पर म् । दोषाःसहजसात्म्यत्वाद्विषंघो रमहीनिव ॥ २८६ ॥

यह वात आदिक दोष स्वाभाविक सात्म्य होने से विरुद्ध गुणों से भी एकदूसरे को नष्ट नहीं करते हैं जैसे कि घोर विष सर्पको नहीं नष्ट करता है ॥ २८९ ॥

त्रिमर्मजानांरोगाणांनिदानाकृति भेषजम् । विस्तरेणपृथग्दिष्टंत्रिम र्मीयेचिकित्सिते ॥ २९० ॥

इति स्वरभेदचिकित्सिते षड्विंशोध्यायः२६॥

इसत्रिमर्मीयचिकित्सित नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने तीनों मर्मोंमें होनेवाले रोगों के निदान लक्षण तथा यत्न विस्तारपूर्वक अलग २ कहे हैं ॥ २९० ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सा-स्थानकात्रिमर्मीयचिकित्सितनामछब्बी-सवाँअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २६ ॥

सत्ताईसवाँ अध्याय ॥

ऊरुस्तम्भचिकित्सितम् ।

श्रियापरमयाब्राह्म्यापरयाचतपः श्रिया । अहीनंचन्द्रसूर्य्याभ्यांस मेरुमिवपर्वतम् ॥ १ ॥

इस के उपरान्त ऊरुस्तम्भचिकित्सित म अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह वान् आत्रेयजी ने कहा ॥

महाब्राह्मतेज तथा महातपकी शोभासे चन्द्रमा तथा सूर्य्य के तुल्य सुमेरु पर्व समान स्थित ॥ १ ॥

धीधृतिस्मृतिविज्ञानज्ञानकीर्ति लयम् । अग्निवेशोगुरुंकालेसं परिपृष्टवान् ॥ २ ॥

और बुद्धि धैर्य्य स्मृति विज्ञान ज्ञान की तथा क्षमाके स्थानरूप भगवान् आत्रेयजीसे अग्निवेशनें उचित समयमें संदेहको पूछा॥२॥

भगवन् ! पञ्चकर्माणिसमस्तानि पृथक्तथा । निर्दिष्टान्यामयाना न्तु सर्वेषामेवभेषजम् ॥ ३ ॥ दोषजोऽस्त्यामयःकश्चिद्यस्यैतानि भिषग्वर । नस्युःशक्तानिशमनेसा ध्यस्यक्रिययाततः ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि हे भगवन् सम्पूर्ण रोगों के वमन विरेचन आदि पंचकर्म्म औषधहैं किन्तु हे भिषग्वर वातादिदोषों से होनेवाला ऐसा कोई रोगहै जो साध्यभी हो और वमनआदि पंचकर्म्मोंके द्वारा अच्छा न होताहो ॥ ३ । ४ ॥

अस्त्यूरुस्तम्भइत्युक्तेगुरुणातस्य कारणम् । सलिङ्गभेषजंभूयःपृष्टस्तेनाब्रवीद्गुरुः ॥ ५ ॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि ऊरुस्तम्भ नाम रोग ऐसाही है यह सुनके अग्निवेश ने ऊरुस्तम्भ के लक्षण तथा यत्न भगवान् आत्रेयजी से पूंछे और भगवान् आत्रेयजीने कहे ॥ ५ ॥

स्निग्धोष्णलघुशीतानिजीर्णाजीर्णेसमश्नतः । द्रवशुष्कदधिक्षीरग्राम्यानूपौदकामिषैः ॥ ६ ॥

बहुत स्निग्ध उष्ण हल्के तथा शीतल पदार्थ खाना भोजनके कुछ परिपाक हुये तथा विना हुयेही फिर भोजन करलेना बहुत पतली तथा सूखी वस्तु खाना दही दूध ग्राम तथा अनूपदेश के जीवों के मांसखाना ॥ ६ ॥

पिष्टव्यापन्नमद्यातिदिवास्वप्नप्रजागरैः । लङ्घनाध्यशनायासभयवेगविधारणैः ॥ ७ ॥

पिट्ठीकी वस्तु खाना सड़ी मद्यपीना दिन में बहुत सोना और रात्रि में बहुत जागना लंघन तैरना भय और मल मूत्र आदि वेगों का रोकना ॥ ७ ॥

स्नेहाच्चामंचितंकोष्ठेवातादीन्मेदसासह । रुध्वाशुगौरवादूरूयात्यधोगैःशिरादिभिः ॥ ८ ॥ पूरयेत्सक्थिजङ्घोरुदोषोमेदोबलोत्कटः । अविधेयंपरिस्पन्दंजनयत्यल्पविक्रमम् ॥ ९ ॥

इनकारणों से कोष्ठ में संचित हुआ आमरस (आँव) वात पित्त कफ तथा मेदा को रोंककर भारी तथा स्निग्ध होनेके कारण अधोगामी स्रोतोंके द्वारा जाँघों में जाकर जाँघ पिंडली तथा घुटनों को पूर्ण करके ऊरुस्तम्भ रोग को उत्पन्न करता है इस रोगमें जंघा अपने वशमें नहीं रहती हैं कुछही चलायमान होती हैं और बल बहुत थोड़ा रहजाता है ॥ ८ । ९ ॥

महासरसिगम्भीरेपूर्णेऽम्बुस्तिमितंयथा । तिष्ठतिस्थिरमक्षोभ्यंतद्वदूरुगतःकफः ॥ १० ॥

जैसे महागम्भीर पूर्ण निश्चल तड़ाग में जल स्थिर तथा क्षोभरहित होता है उसी प्रकार जाँघोंमें मात्र कफ स्थिर तथा क्षोभरहित होकर स्थित रहता है ॥ १० ॥

गौरवायाससङ्कोचदाहरुक्सुप्तिकम्पनैः । भेदस्फुरणतोदैश्चयुक्तोदेहंनिहन्त्यसून् ॥ ११ ॥

भारीपन श्रम सिकुड़ना दाह पीड़ा सुन्न कम्प टूटने कीसी पीड़ा फड़कना तथा सुईचुभने कीसी पीड़ा इन लक्षणों से युक्त ऊरुस्तम्भ मनुष्य को मार डालता है ॥ ११ ॥

ऊरुश्लेष्मासमेदस्कोदोषौद्धावभि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूयतु । स्तम्भयेत्स्थैर्य्यशैत्याभ्या मूरुस्तम्भस्ततस्तुसः ॥ १२ ॥

मेदासहित कफ वायु तथा पित्तको दूषित करके स्थिरता तथा शीतलता से जाँघों को जकड़ता है इसीको ऊरुस्तम्भ कहते हैं॥१२॥

प्राग्रूपंध्याननिद्रातिस्तैमित्यारोचकज्वराः। लोमहर्षश्चछर्दिश्च जङ्घोर्वौसदनं तथा ॥ १३ ॥

चिंता बहुत सोना शरीरका गीला मालूम होना अरुचि ज्वर रोमांच छर्दि और जाँघों तथा पिंडलियों का शिथिल होना यह ऊरुस्तम्भ के पूर्वरूप हैं ॥ १३ ॥

वातशङ्किभिरज्ञानात्तस्यस्यात्स्नेहनात्पुनः । पादयोःसदनंसुप्तिःकृच्छ्रादुद्धरणंतथा ॥ १४ ॥

जो वैद्यलोग ऊरुस्तम्भको न जानकर वातरोग के भ्रमसे उसमें स्नेह का प्रयोग करते हैं तो पैरों में शिथिलता शून्यता तथा बहुत कष्टसे पैर उठाये जाना ॥ १४ ॥

जङ्घोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वच्चादाहवेदना । पदञ्चव्यथतेन्यस्तंशीतस्पर्शनवेत्तिच ॥ १५ ॥

पिंडुरियों में तथा जाँघोंमें अत्यन्त ग्लानि तथा बारम्बार कुछ दाह सहित पीड़ा होना पैर रखने में क्लेशहोना शीतल स्पर्शन मालूम होना ॥ १५ ॥

संस्थानेपीडनेगत्यांचलनेचाप्यनीश्वरः । अन्यनेयोहिसंभग्नावूरुपादौचमन्यते ॥ १६ ॥

पैरोंके रखने में दबानेमें चलने में तथा हिलाने डुलानेमें शक्ति न होना जाँघ तथा पैर टूटहुये से मालूम पड़ना और जाँघ तथा पैरों का दूसरों से उठाने के योग्य होजाना यह लक्षण होते हैं ॥ १६ ॥

यदादाहार्त्तितोदार्त्तिवेपनःपुरुषोभवेत् । ऊरुस्तम्भस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम् ॥ १७ ॥

ऊरुस्तम्भ में जो दाह सुई चुभनेकीसी पीड़ा तथा कम्प होय तो असाध्य जानना चाहिये और जो दाह आदिक उपद्रव न हो तो नवीन ऊरुस्तम्भ की चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १७ ॥

तस्यनस्नेहनंकार्य्यंनवस्तिर्नविरेचनम् । नचैववमनंयस्मात्तन्निबोधकारणम् ॥ १८ ॥

ऊरुस्तम्भमें स्नेहन वस्ति विरेचन तथा वमन जिसकारण से नहीं करना चाहिये वह कारण सुनो ॥ १८ ॥

वृद्धयेश्लेष्मणोनित्यंस्नेहनंवस्तिकर्मच । तत्स्थस्योद्धरणेचैवनसमर्थंविशोधनम् ॥ १९ ॥

स्नेहन तथा वस्ति कर्म्म से कफकी वृद्धि होती है और जाँघोंमें स्थित कफ वमन तथा विरेचन के द्वारा नहीं निकलसक्ता है ॥१९॥

कफंकफस्थानगतंपित्तञ्चवमनात्खम् । हर्त्तुमामाशयस्थौचस्रंसनात्तावुभावपि ॥ २० ॥

कफ स्थान में प्राप्त कफ तथा पित्त वमन

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के द्वारा निकलता है आमाशय में स्थित कफ तथा पित्त विरेचनके द्वारा निकलताहै॥२०॥

पक्काशयस्थाःसर्वेचबस्तिभिर्मूलनिर्जयात् । शक्यानत्वाममेदोभ्यां स्तब्धाजङ्घोरुसंस्थिताः ॥ २१ ॥

और पक्काशय में स्थित वात आदि तीनों दोष बस्तिके द्वारा निर्मूल होजाते हैं परन्तु आम तथा मेदासे जकड़े हुये और जांघ तथा पिंडुलियों में स्थित वात आदि दोष वमन आदिके द्वारा नहीं निकलसक्ते हैं२१॥

वातस्थानेहितेशैत्याद्वयोःस्तम्भाश्चतद्गताः । नशक्याःसुत्रमुद्धर्त्तुं जलंनिम्नादिवस्थलात् ॥ २२ ॥

जैसे नीचेकी ओर जातेहुये जलको निकालना कठिन होताहै उसी प्रकार वातस्थान में स्थित पित्त तथा कफ शीतलता तथा स्तब्धतासे सुखपूर्वक नहीं निकाले जासक्ते हैं२२॥

तस्यसंशमनंनित्यंक्षपणंशोषणंतथा । युक्त्यपेक्षीभिषक्कुर्य्यादधिकत्वात्कफामयोः ॥ २३ ॥

युक्तिके जाननेवाले वैद्य ऊरुस्तम्भ में संशमन (रोगोंको शान्त करने वाली) क्षपण (क्षीण करनेवाली) तथा शोषण (सुखानेवाली) चिकित्सा कफ तथा आमके अधिक होनेपर करै ॥ २३॥

सदारूक्षोपचारायययवश्यामाककोद्रवान् । शाकैरलवणैरद्याज्जलतैलोपसाधितैः ॥ २४ ॥

ऊरुस्तम्भमें रोगी को सब प्रकारसे रूखा रखकर जल तथा तैलके साथ पाक कियेगये लवण रहित शाकों के साथ यव सांवा तथा कोदों के पदार्थ खानेको देवे ॥ २४ ॥

सुनिषरणकनिम्बार्कवेत्राग्रग्वधपल्लवैः। वायसीवास्तुकैरन्यैस्तिक्तैश्चकुलकादिभिः ॥ २५ ॥

मिरियारी नींब मदार बेत तथा अमिलतास की पत्ती कवइया बथुई तथा परवल आदि अन्य तिक्त शाक ॥ २५ ॥

क्षारारिष्टप्रयोगाच्चहरीतक्यास्तथैव च । मधूदकस्यपिप्पल्याऊरुस्तम्भविनाशनाः ॥ २६ ॥

क्षार अरिष्ट हड़ शहद का शरबत तथा पीपरि इनका प्रयोग करने से ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ॥ २६ ॥

समङ्गांशाल्मलींबिल्वंमधुनासहनापिबेत् । तथाश्रीवेष्टकोदीच्यदेवदारुनतान्यपि । चन्दनंधातकींकुष्ठं तालीशंनलदंतथा ॥ २७ ॥

लजालू सेमर तथा बेल इनको शहद के साथ अथवा सरल निर्यास सुगन्धबाला देवदारु तगर चन्दन धवई कूट तालीस तथा खस इनको शहदके साथ पीनेसे ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ॥ २७ ॥

मुस्तंहरीतकींलोध्रंपद्मकंतिक्तरोहिणीम् । देवदारुहरिद्रेद्वेवचांकटुकरोहिणीम् ॥ २८ ॥

नागरमोथा हड़ लोध पद्माख तथा कुटकी देवदारु हल्दी दारुहल्दी वच तथा कुटकी२८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिप्पलींपिप्पलीमूलंसरलंदेवदारु च।चव्यंचित्रकमूलानिदेवदारुहरीतकीम् ॥ २९ ॥

पीपरि पिपरामूल सरलकाष्ठ तथा देवदारु चव्य चीता देवदारु तथा हड़ ॥ २९ ॥

भल्लातकंसमूलाश्चपिप्पलींपञ्चतान्पिबेत् । सक्षौद्रानर्द्धश्लोकोक्तान्कल्कानूरुग्रहापहान् ॥ ३० ॥

भिलावां पीपरि तथा पिपरामूल इन पांचों योगोंमें से जो कि आधे श्लोकमें कहेगये हैं किसी एक का कल्क करके चाटने से ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ॥ ३० ॥

शार्ङ्गेष्टांमदनंदन्तींवत्सकस्यफलंवचाम् ।मूर्व्वामारग्वधंपाठांकरञ्जंकुलकंतथा ॥ ३१ ॥

शार्ङ्गेष्टा मैनफल जमालगोटे की जड़ इन्द्रयव वच मिरोरफली अमिलतास पाढ़र कंजा तथा परवल ॥ ३१ ॥

पिबेन्मधुयुतंतुल्यंचूर्णंवावारिणाप्लुतम् । सक्षौद्रंदधिमण्डंवाप्यूरुस्तम्भविनाशनम् ॥ ३२ ॥

इनका चूर्ण करके शहद में मिलाकर पानी में घोरकर अथवा शहद तथा दहीके तोड़ में मिलाकर पीने से ऊरुस्तम्भ का नाश होता है ॥ ३२ ॥

मूर्व्वामतिविषांकुष्ठंचित्रकंकटुरोहिणीम् । पूर्ववद्वापिबेत्तोयेरात्रिस्थितमथापिवा ॥ ३३ ॥

मिरोरफली अतीस कूट चीता तथा कुटकी इन सबको पूर्वोक्त विधिके [...]में तथा हि[...] से अथवा रात्रिके समय जल[...] तथा पैर प्रातःकाल पीनेसे ऊरुस्तम्भ क[...] तथा पैरों है ॥ ३३ ॥ [...]गना यह

स्वर्णक्षीरीमतिविषांमुस्तंते[...]चाम् ।सुराह्वंचित्रकंकुष्ठंपारुषोभ[...]रोहिणीम् ॥ ३४ ॥ [...]माध

मकोय अतीस नागरमोथा तेजवल[...] देवदारु चीता कूट पाढ़र तथा कुटकी ३४

लेहयेन्मधुनाचूर्णंसक्षौद्रंवाजलान्वितम् । फलिंग्याघ्रनखंहेमपिबेद्वामधुसंयुतम् ॥ ३५ ॥

इनका चूर्ण शहदमें मिलाके चाटै अ[...] शहदयुक्त जलमें मिलाकर पीवे इससे [...] स्तम्भ का नाश होता है प्रियंगु बघ[...] तथा धतूरे इनसब को शहद में मिलाके [...] से ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ॥ ३५ ॥

त्रिफलांपिप्पलींमुस्तंचव्यंकटुक[...]हिणीम् । लिह्याद्वामधुनाचूर्ण[...]स्तम्भार्दितोनरः ॥ ३६ ॥

त्रिफला पीपरि नागरमोथा चव्य त[...] कुटकी इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चा[...]ने से ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ३६ ॥

अपतर्पणजश्चेत्स्याद्दोषःसन्तर्पयेद्धितम् । युक्त्याजाङ्गलजैर्मांसैःपुराणैश्चैवशालिभिः ॥ ३७ ॥

जो अपतर्प्पण (लंघन आदि) से दोष उत्पन्न होय तो युक्तिपूर्वक जांगलजीवों के मांस तथा पुराने शालिधानों के चावलों के भातके द्वारा संतर्प्पण करै ॥ ३७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूक्षणाद्वातकोपश्चेन्निद्रानाशार्त्तिपूर्वकः। स्नेहस्वेदक्रमस्तत्रकार्य्यो वातामयापहः॥ ३८॥

ऊरुस्तम्भ में जो बहुत रूक्ष उपचार करने से वायु के कुपित होने के कारण निद्राका नाश और पीड़ा होय तो वातरोगनाशक स्नेहन स्वेदन का क्रम करना चाहिये॥३८॥

पीलुपर्णीपयस्याचरास्नागोक्षुरकोवचा। सरलागुरुपाठाश्चतैलमेभिर्विपाचयेत्॥ ३९॥

मिरोरफली क्षीरकाकोली रास्ना गोखुरू वच सरलकाष्ठ अगर तथा पाढ़र इनके साथ तैलका पाककरै॥ ३९॥

सक्षौद्रात्प्रसृतंतस्मादञ्जलिंवापिनापिबेत्। कुष्ठंश्रीवेष्टकोदीच्यसरलंदारुकेशरम्। अजगन्धाश्वगन्धाचतैलंतैःसार्षपंपचेत्॥ ४०॥

इस तैलमेंसे आठ तोले अथवा सोलहतोले लेकर शहद मिलाकर पीने से ऊरुस्तम्भ का नाश होता है कूट सरल निर्यास सुगन्धबाला सरल देवदारु नागकेसर अजवाइन तथा असगन्ध इनके साथ कडुवे तैल का पाक करके॥ ४०॥

सक्षौद्रंमात्रयातच्चाप्यूरुस्तम्भार्दितःपिबेत्। रौक्षान्मुक्तऊरुस्तम्भात्ततश्चसविमुच्यते॥ ४१॥

शहद मिलाकर मात्राके अनुसार पीवे इससे रूक्षता से छूटकर ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै॥ ४१॥

द्वेपलेसैन्धवात्पञ्चशुण्ठ्याग्रन्थिकचित्रकात्। द्वेद्वेभल्लातकास्थीनिविंशतिर्द्वेतथाढके॥ ४२॥ आरनालात्पचेत्प्रस्थंतैलस्यैतैरपत्यदम्। गृध्रस्यूरुग्रहार्शोऽर्त्तिसर्ववातविकारनुत्॥ ४३॥

सैंधवलवण आठ तोले सोंठि बीस तोले पिपरामूल आठ तोले चीता आठ तोले भिलावेंके बीज बीस कांजी ५१२ तोले और तैल ६४ तोले इन सबको मिलाकर पाककरे जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इस तैलका पान करने से गृध्रसी ऊरुस्तम्भ बवासीर तथा सम्पूर्ण वातज रोगोंका नाश होताहै और स्त्रियों के संतति होती है॥ ४२।४३॥

पलाभ्यांपिप्पलीमूलनागरादष्टकट्वरः। तैलप्रस्थःसमोदध्नागृध्रस्यूरुग्रहापहः॥ ४४॥

इत्यष्टकट्वरतैलम्।

पीपरि चार तोले सोंठि चार तोले तथा दही ६४ तोले इनके साथ पाक कियागया ६४ तोले तैल गृध्रसी तथा ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै॥ ४४॥

इत्याभ्यन्तरमुद्दिष्टमूरुस्तम्भस्यभेषजम्। श्लेष्मणःक्षपणंत्वन्यद्बाह्यंशृणुचिकित्सितम्॥ ४५॥

इस प्रकार ऊरुस्तम्भ की आभ्यन्तर चिकित्सा कहीगई अब कफनाशक अन्य बाह्य चिकित्सा सुनो॥ ४५॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वल्मीकमृत्तिकामूलंकरञ्जस्यफलं त्वचम् । इष्टकानांततश्चूर्णैः कुर्य्यादुत्सादनंभृशम् ॥ ४६ ॥

बाँबीकी मिट्टीके नीचेकी मिट्टी कञ्जा कञ्जाकी छाल और ईंट इन सबका चूर्ण करके ऊरुस्तम्भमें मलना चाहिये ॥ ४६ ॥

मलैर्वाप्यश्वगन्धायामूलैरर्कस्यवा भिषक् । पिचुमर्दस्यवामूलैरथवा देवदारुणः ॥ ४७ ॥

असगन्ध अथवा मदारका चूर्ण ऊरुस्तम्भ में मलना चाहिये नींव अथवा देवदारु की जड़का चूर्ण ऊरुस्तम्भ में मलना चाहिये ४७

क्षौद्रसर्षपवल्मीकमृत्तिकासंयुतैर्भिषक् । गाढमुत्सादनंकुर्य्यादूरुस्तम्भेप्रलेपनम् ॥ ४८ ॥

शहद सरसों तथा बांबीकी मिट्टी इनको बहुत मलने से अथवा इनका लेप लगाने से ऊरुस्तभ का नाश होताहै ॥ ४८ ॥

दन्तीद्रवन्तीसुरसासर्षपैश्चापिबुद्धिमान् । तर्कारीशिग्रुसुरसविश्ववत्सकनिम्बजैः ॥ ४९ ॥ पत्रमूलफलैस्तोयंश्टतमुष्णञ्चसेचनम् । पिष्ट्वासर्षपंमूत्रेऽध्युषितंस्यात्प्रलेपनम् ॥ ५० ॥

जमालगोटे की जड़ द्रवन्ती (जमालगोटे विशेषकी जड़) तुलसी तथा सरसों इनके चूर्ण की मालिश करनेसे ऊरुस्तम्भका नाश होताहै जाही सोंठि सहिंजन तुलसी कुरैया तथा नींब इनकी पत्ती जड़ तथा फलोंकेसाथ जलका पाककरके कुछ उष्णजल ऊरुस्तम्भ पर सींचै गोमूत्रके साथ सरसों पीस करके एकदिन रखकर ऊरुस्तम्भमें लेपकरै ४९।५०

वत्सकःसुरसंकुष्ठंगन्धास्तुम्बुरुशिग्रुकौ । हिंस्रार्कमूलवल्मीकमृत्तिकाःसकुठेरुकाः ॥ ५१ ॥

कुरैया तुलसी कूट कचूर धनियां सहिंजन जटामांसी मदारकी जड़ बाँबीकी मिट्टी तथा श्याम बबई ॥ ५१ ॥

दधिसैन्धवसंयुक्तंकार्य्यमेतैःप्रलेपनम् । ऊरुस्तम्भविनाशायभिषजाजानताक्रमम् ॥ ५२ ॥

इन सब को दही तथा सैंधवलवण के साथ मिलाकर पीसके क्रमका जाननेवाला वैद्य ऊरुस्तम्भ में लेपकरे ॥ ५२ ॥

श्योणाकंखदिरंबिल्वंबृहत्यौसरलासनौ । शोभाञ्जनकतर्कारीश्वदंष्ट्रासुरसार्ज्जकान् ॥ ५३ ॥

सरिवन कत्था बेल भटकटैया बड़ी भटकटैया तुलसी विजयसार अरनी अरहर सहिंजन गोखुरू सुरस श्वेतबबई ॥ ५३ ॥

अग्निमन्थकरञ्जौचजलेनोत्क्वाथ्यसेचयेत् । प्रलेपोमूत्रपिष्टैर्वाप्यूरुस्तम्भनिवारणः ॥ ५४ ॥

जाही तथा कंजा इनका काढ़ा करके ऊरुस्तम्भ पर सींचै अथवा इनको गोमूत्रमें पीस कर लेपलगावै इससे ऊरुस्तम्भ का नाश होताहै ॥ ५४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफक्षयार्थंसह्येषुव्यायामेष्वनुयोज येत्। स्थलान्याक्रामयेत्कालंशर्क राःसिकतास्तथा॥ ५५॥

ऊरुस्तम्भ में कफ को घटाने के लिये बल के अनुसार व्यायाम कराना चाहिये प्रातः-कालके समय कंकड़ तथा बालूसेयुक्त स्थानों में रोगीको चलाना चाहिये॥ ५५॥

प्रतारयेत्प्रतिस्रोतांनदींशीतजलां शिवाम्। सरश्चविमलंशीतंस्थिर तोयंपुनःपुनः॥ ५६॥

शीतल तथा पवित्र जलवाली नदीमें रोगी को प्रवाह की ओर तैराना चाहिये और निर्मल शीतल तथा स्थिर जलवाले तड़ाग में में बारम्बार तैराना चाहिये॥ ५६॥

तथाविशुष्केऽस्यकफेशान्तिमूरुग्र होव्रजेत्। श्लेष्मणःक्षपणंयत्स्या न्नचमारुतमावहेत्॥ ५७॥

ऐसा करनेसे कफ के शुष्कहोजाने पर ऊरुस्तम्भ नष्ट होजाताहै जिस औषधि से कफ क्षीण हो और वायु न बढ़ै॥ ५७॥

तत्सर्वंसर्वदाकार्य्यमूरुस्तम्भस्यभे षजम्। शरीरंबलमग्निञ्चकार्य्यैषा रक्षताक्रिया॥ ५८॥

वह सम्पूर्ण औषध ऊरुस्तम्भ में सदा करना चाहिये परन्तु शरीरबल तथा अग्निकी रक्षाका ध्यान करके औषध करनी चाहिये॥ ५८॥

तत्र श्लोकः।

हेतुःप्राग्रूपलिङ्गानिकर्मायोग्यत्वमे वच। द्विविधंभेषजञ्चोक्तमूरुस्तम्भ चिकित्सिते॥ ५९॥

इति अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते चिकित्सितस्थानेऊरुस्तम्भाचिकित्सितं नाम सप्तविंशोऽध्यायः॥ २७॥

तिसमें यह श्लोकहै कि इसऊरुस्तम्भ चिकित्सित नाम अध्यायमेंभगवान् आत्रेयजीने ऊरुस्तम्भके निदान पूर्वरूप लक्षण वमन विरेचन आदि पंचकर्म्म के योग्य न होना और दोप्रकारकी चिकित्सा यह सब विषय कहा है॥ ५९॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सा स्थानकाऊरुस्तम्भचिकित्सितनामसत्ताईसवाँअध्यायसमाप्तहुआ॥ २७॥

अट्ठाईसवाँअध्याय॥

वातव्याधिचिकित्सितम्।

वायुरायुर्बलंवायुर्वायुर्धाताशरीरि णाम्। वायुर्विश्वमिदंसर्वंप्रभुर्वा युश्चकीर्त्तितः॥ १॥

इसके उपरान्त वातव्याधि चिकित्सित नामक अध्यायका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा॥ संसारमें वायुही आयुर्दाय तथा बल है वायुही शरीर धारियों के शरीर को पुष्ट करनेवाला है सब संसार वायुमयहै और वायुही प्रभु है॥ १॥

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थःप्रकृतौ स्थितः। वायुःस्यात्सोऽधिकंजीवे द्वीतरोगःसमाःशतम्॥ २॥

जिसकी वायु अव्याहतगति (नहीं रुके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुये मार्गवाला) अपने स्थानमें स्थित और प्रकृतिमें स्थितहोय वह नीरोग होकर सौ वर्षतक जीवेगा यह जानना चाहिये ॥ २ ॥

प्राणोदानसमानाख्यव्यानापानैः सपञ्चधा । देहंतन्त्रयतेसम्यक्स्थानेष्वव्याहतश्चरन् ॥ ३ ॥

वायु प्राण उदान समान व्यान तथा अपान इन भेदों से पाँच प्रकार की होकर अपने २ स्थानों में अव्याहत (वेरोंक) होकर विचरण करके शरीर को पुष्ट करता है ॥ ३ ॥

स्थानंप्राणस्यशीर्षोरःकर्णजिह्वाक्षिनासिकाः । ष्ठीवनक्षवथूद्गारश्वासाहारादिकर्मच ॥ ४ ॥

मस्तक वक्षस्थल कान जिह्वा नेत्र तथा नासिका यह प्राणवायु के स्थान हैं थूंकना छींकना डकार लेना श्वास लेना तथा भोजन करना आदिक कर्म्म प्राणवायु के कार्य्य हैं ॥ ४ ॥

उदानस्यपुनःस्थानंनाभ्युरःकण्ठएवच । वाक्प्रवृत्तिःप्रयत्नौजोबलवर्णादिकर्मच ॥ ५ ॥

नाभि वक्षस्थल तथा कण्ठ यह उदान वायु के स्थान हैं वोलना यत्नकरना ओज (पराक्रम) वल तथा वर्ण आदिक उदान वायुके कर्म्म हैं ॥ ५ ॥

स्वेददोषाम्बुवाहानिस्रोतांसिसमधिष्ठितः । अन्तरग्नेश्चपार्श्वस्थःसमानोऽग्निबलप्रदः ॥ ६ ॥

स्वेद दोष तथा जलके ले चलनेवाले स्रोतोंमें स्थित तथा जठराग्निके पार्श्व (किनारे) में स्थित समान वायु जठराग्निके वल को वढ़ाता है ॥ ६ ॥

देहंव्याप्नोतिसर्वन्तुव्यानःशीघ्रगतिर्नृणाम् । गतिप्रसरणाक्षेपनिमेषादिक्रियासदा ॥ ७ ॥

व्यानवायु मनुष्यों के सम्पूर्ण शरीर को व्याप्त करता है और बहुत शीघ्रगति (जल्दी चलनेवाला) होता है चलना फैलना खींचना तथा निमेष (पलक लगाना) आदिक व्यान वायुके काम हैं ॥ ७ ॥

वृषणौवस्तिमेढ्रञ्चनाभ्यूरूवंक्षणौगुदम् । अपानस्थानयन्त्रस्थःशुक्रमूत्रशकृन्तिसः ॥ ८ ॥ सृजत्यार्तवगर्भौचयुक्ताःस्थानस्थिताश्चते स्वकर्मकुर्वतेदेहोधार्य्यते तैरनामयः ॥ ९ ॥

अण्डकोष मूत्राशय लिङ्ग नाभि जाँघ वंक्षण तथा गुदा यह अपान वायुके स्थान हैं अपने स्थानमें स्थित अपान वायु वीर्य्य मूत्र मल रज तथा गर्भ को निकालता है अपने २ स्थान में स्थित विकार रहित पाँचों वायु अपना अपना कर्म्म करते हैं ॥ ८ । ९ ॥

विमार्गस्थाह्ययुक्तावारोगैःस्वस्थानकर्मजैः । शरीरंपीडयन्त्येतेप्राणानाशुहरन्तिवा ॥ १० ॥

और इन्हीं वायुओंके द्वारा शरीर नीरोगतापूर्वक पुष्ट कियाजाता है अपने २ स्थान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में नहीं स्थित अथवा विकारयुक्त प्राणआदि वायु अपने २ स्थान तथा कर्म्म से होनेवाले रोगों के द्वारा शरीर को पीड़ित करते हैं अथवा शीघ्रही प्राणोंको नष्टकरतेहैं॥१०॥

संख्यामप्यतिवृत्तानांतज्जानांहिप्रधानतः । अशीतिर्नखभेदाद्यारोगाःसूत्रेनिदर्शिताः ॥ ११ ॥ तानुच्यमानान्पर्य्यायैःसहेतूपक्रमान्शृणु । केवलंवायुमुद्दिश्यस्थानभेदात्तथावृतम् ॥ १२ ॥

सूत्रस्थानमें असंख्य वातज रोगों मेंसे नखभेद आदिक ८० मुख्य वातज रोग जो कहे गये हैं उनके पर्य्याय (नामान्तर) कारण तथा उपाय केवल वायुका उद्देश करके तथा स्थानभेद से प्राणआदि वायुओं का अलग २ उद्देश करके कहे जाते हैं तुम सुनो ॥ ११ । १२ ॥

रूक्षशीताल्पलघ्वन्नव्यवायातिप्रजागरैः । विषमादुपचाराच्चदोषासृक्स्रवणादति ॥ १३ ॥

रूक्ष शीतल स्वल्प तथा हल्का अन्नखाना बहुत मैथुनकरना बहुत जागना विषम उपचार दोषतथा रुधिरका बहुत गिरना॥१३॥

लङ्घनप्लवनात्यध्वव्यायामातिविचेष्टितैः । धातूनांसंक्षयाच्चिन्ताशोकरोगातिकर्षणात् ॥ १४ ॥

लंघन तैरना बहुत चलना बहुत व्यायाम करना बहुत कार्य्य करना धातुओंका क्षीण होना चिन्ता शोक तथा रोग से बहुत कृश होना ॥ १४ ॥

दुःखशय्यासनात्क्रोधाद्दिवास्वप्नाद्भयादपि। वेगसन्धारणादामादभिघातादभोजनात्। मर्माघाताद्गजोष्ट्राश्वशीघ्रयानापतंसनात् ॥ १५ ॥

दुःखदायी शय्यापर लेटना दुःखदायी आसनपर बैठना क्रोध दिनमें सोना भय मल मूत्रादि वेगों को रोकना चोट लगना भोजन न करना मर्ममें चोट लगना और हाथी ऊंट तथा घोड़ा आदि शीघ्रगामी सवारीपरजाना भूषण पहनना ॥ १५ ॥

देहेस्रोतांसिरिक्तानिपूरयित्वाऽनिलोबली। करोतिविविधान्व्याधीन्सर्वाङ्गैकाङ्गसंश्रितान् ॥ १६ ॥

इन कारणों से बढ़ी हुई बलवान् वायु शून्य स्रोतों को पूर्ण करके एक अङ्ग तथा सम्पूर्ण अङ्ग में होनेवाले अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है॥ १६ ॥

अव्यक्तंलक्षणंतेषांपूर्वरूपमितिस्मृतम् । आत्मरूपन्तुतद्व्यक्तमपायोलघुतापुनः ॥ १७ ॥

वात रोगों के कुछ प्रकाशित हुये लक्षण पूर्वरूप कहलाते हैं और यही पूर्वरूप जब अच्छी प्रकारसे प्रकाशित होते हैं तब लक्षण कहलाते हैं और इन लक्षणोंके नष्टहोजानेको लघुता कहते हैं॥ १७ ॥

सङ्कोचःपर्वणांस्तम्भोभेदोऽस्थिपर्वणामपि। लोमहर्षःप्रलापश्चपाणिपृष्ठशिरोग्रहः ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पोरुओं का सङ्कोच (सिकुड़ना) तथा स्तम्भ हड्डी तथा पोरुओं का भंग रोमांच प्रलाप (बकना) हाथ पीठ तथा शिरका जकड़ना ॥ १८ ॥

खांज्यपाङ्गुल्यकुब्जत्वंशोषोऽङ्गानामनिद्रता । गर्भशुक्ररजोनाशः स्पन्दनंगात्रसुप्तता ॥ १९ ॥

लँगड़ा होना पँगुला होना कुबड़ा होना अङ्गों का सूखना निद्रा न पड़ना गर्भ वीर्य्य तथा रजका नष्ट होजाना अङ्गोंका फड़कना सुन्न होजाना ॥ १९ ॥

शिरोनासाक्षिजत्रूणांग्रीवायाश्चापि हुण्डनम् । भेदस्तोदार्त्तिराक्षेपोमोहश्चायासएवच ॥ २० ॥

शिर नासिका नेत्र जावड़े तथा ग्रीवा का हुण्डन भेद (टूटनेकीसी पीड़ा) सुईचुभनेकीसी पीड़ा आक्षेप मोह और विना परिश्रम केही श्रम मालूमहोना ॥ २० ॥

एवंविधानिरूपाणिकरोतिकुपितोनिलः । हेतुस्थानविशेषाच्चभवेद्रोगविशेषकृत् ॥ २१ ॥

इसप्रकार के लक्षण कुपित वायु के होते हैं और हेतु तथा स्थानकी विशेषतासे विशेष२ रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१ ॥

तत्रकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्चसोः । ब्रध्नहृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलञ्चमारुते ॥ २२ ॥

कोष्ठमें कुपित वायुके स्थित होनेपर मल तथा मूत्रका न निकलना बद हृद्रोग गुल्म बवासीर और पशुलियों में पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ २२ ॥

सर्वाङ्गकुपितेवातेगात्रस्फुरणभञ्जनम् । वेदनाभिःपरीतश्चस्फुटन्तीवास्यसन्धयः ॥ २३ ॥

कुपित वायु के सम्पूर्ण अंगोंमें स्थित होने पर अंगोंका फड़कना अंगोंमें टूटनेकीसी पीड़ा सम्पूर्ण शरीरमें पीड़ाहोना और सम्पूर्ण संधियां टूटीजाती हैं ऐसा मालूम होना यह लक्षण होते हैं ॥ २३ ॥

ग्रहोविण्मूत्रवातानांशूलाध्मा[illegible]श्मशर्कराः । जङ्घोरुत्रिकपात्पृ[illegible]गशोषागुदेस्थिते ॥ २४ ॥

कुपित वायुके गुदा में स्थितहोनेप[illegible] मूत्र तथा वायुका रुकना शूल अफर[illegible] शर्करा और पिंडुली जांघ रीढ़के [illegible] हड्डी पैर तथा पीठका रोगोंसेयुक्त हो[illegible] सूखना यह लक्षण होते हैं ॥ २४ ॥

हृन्नाभिपार्श्वोदररुक्तृष्णोद्गार[illegible]चिकाः । कासःकण्ठास्यशो[illegible] श्वासश्चामाशयस्थिते ॥ २५ ॥

कुपित वायु के आमाशय में स्थित होने[illegible] हृदय नाभि पशुली तथा उदर में पीड़ा [illegible] डकार विसूचिका खांसी कण्ठ तथा मुख[illegible] सूखना और श्वास यह लक्षणहोते हैं ॥ २[illegible]

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजंशूलाटोपौ[illegible] रोतिच । कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमाना[illegible] त्रिकवेदनाम् । श्रोत्रादिष्विन्[illegible] वधंकुर्य्याद्दुष्टसमीरणः ॥ २६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुपित वायुके पक्काशय में स्थितहोनेपर शूल आंतों में शब्द होना उदर में गड़गड़ाहट मूत्र तथा मलका बहुत कष्ट से निकलना अफरा और रीढ़के नीचे की हड्डी में पीड़ा होना यह लक्षण होतेहैं दूषित वायु कर्णआदि जिस इन्द्रिय में स्थित होता है उस इन्द्रियकी शक्ति नष्ट होजाती है ॥ २६ ॥

त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ताकृशाकृष्णाच तुद्यते।आतन्यतेसरागाचपर्वरुक् त्वक्स्थितेऽनिले ॥ २७ ॥

दूषित वायुके त्वचामें स्थित होनेपर त्वचा रूखी फटीहुई सुन्नयुक्त कृश कृष्णवर्ण सुई चुभनेकीसी पीड़ासेयुक्त तनीहुई तथा कुछ रक्तवर्णयुक्त होती है और संधियों में पीड़ा होती है ॥ २७ ॥

रुजस्तीव्राःससन्तापावैवर्ण्यंकृशताऽरुचिः। गात्रेचारूंषिभुक्तस्य स्तम्भाश्चासृग्गतेऽनिले ॥ २८ ॥

कुपित वायुके रुधिर में स्थित होनेपर तीव्र पीड़ा संताप विवर्णता (वर्णका बिगड़जाना) कृशता अरुचि अंगोंमें व्रण और भोजनकरने पर शरीर का स्तब्ध होना यह लक्षण होते हैं ॥ २८ ॥

गुर्वङ्गंतुद्यतेऽत्यर्थंदण्डमुष्टिहतंयथा। सरुक्श्रमितमत्यर्थंमांसमेदोगतेऽनिले ॥ २९ ॥

मांस तथा मेदामें कुपित वायुके स्थितहोनेपर शरीर का भारी होना दांत तथा घूंसों से मारेगये के समान अत्यन्त पीड़ितहोना सम्पूर्ण शरीर में व्यथा होना और विना श्रम केही थकावट मालूम होना यह लक्षण होते हैं ॥ २९ ॥

भेदोऽस्थिपर्वणांसन्धिशूलंमांसबलक्षयः। अस्वप्नःसन्ततारुक्चमज्जास्थिकुपितेऽनिले ॥ ३० ॥

कुपित वायु के मज्जा तथा हड्डी में स्थित होनेपर हड्डी तथा पोरुओंमें टूटनेकीसी पीड़ा संधियों में शूल मांस तथा बलका क्षीण होजाना निद्रा न पड़ना और सदैव पीड़ाहोना यह लक्षण होते हैं ॥ ३० ॥

क्षिप्रंमुञ्चतिबध्नातिशुक्रंगर्भमथापिवा। विकृतिंजनयेच्चापिशुक्रस्थः कुपितोऽनिलः ॥ ३१ ॥

कुपितवायु के वीर्य में स्थित होनेपर वीर्य तथा गर्भ जल्दी गिरजाताहै अथवा रुकजाता है और विकारयुक्त होजाताहै ॥ ३१ ॥

सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्चकुर्यात्स्नायुगतोऽनिलः। बाह्याभ्यन्तरमायामंखल्लिंकुब्जत्वमेवच ॥ ३२ ॥

शरीरंमन्दरुक्शोफंशुष्यतिस्पन्दतेऽपिवा। सुप्तास्तन्व्योमहत्योवा शिरावातेशिरागते ॥ ३३ ॥

कुपितवायु के स्नायु (जिन नसोंके द्वारा शरीरके मांस हड्डी मेदा और संधियोंका बन्धन होताहै उनको स्नायु कहते हैं) में प्राप्त होनेपर सर्वांग तथा एकांगरोग शरीरमें स्वल्प पीड़ा शोथ सूखना तथा फड़कना यहलक्षण होते हैं कुपितवायु के शिरा (संधियोंको बांधनेवाली और दोष तथा धातुओंको लेचलनेवाली नसोंको शिरा कहते हैं) ओंमें प्राप्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्दित आदिरोगोंमें जब वायुका वेग शांत होजाताहै तब रोगी स्वस्थ होजाताहै और वेगके होनेपर पीड़ित होताहै ऐसेरोगीको वैद्य छोड़देवे ॥ ५० ॥

हत्वैकंमारुतःपक्षंदक्षिणंवाममेववा। कुर्य्याच्चेष्टानिवृत्तिंहिरुजंवाक्स्तम्भमेवच ॥ ५१ ॥

कुपितहुआ वायु शरीर के दक्षिण अथवा वामभाग को विकलकरके उस भागको चेष्टा-रहित करके पीड़ा को उत्पन्न करताहै और बोलने की शक्ति को नष्ट करताहै ॥ ५१ ॥

गृहीत्वावाशरीरार्द्धंशिराःस्नायुंविशोष्यच। पादंसङ्कोचयत्येकंहस्तंवातोदशूलनुत् ॥ ५२ ॥

अथवा वायु आधे शरीर को ग्रहणकरके और शिरा तथा स्नायु को सुखाकर एक पैर अथवा एक हाथ को सिकोड़ता है इसमें तोद (सुईचुभनेकी पीड़ा) तथा शूल नहीं मालूम होताहै ॥ ५२ ॥

एकाङ्गरोगंतंविद्यात्सर्वाङ्गंसर्वदेहजम् ॥ ५३ ॥

इसरोग को एकाङ्ग (पक्षाघात) रोग कहते हैं यदि यह लक्षण सम्पूर्ण शरीरमेंहों तो इस को सर्वाङ्गरोग जानना चाहिये ॥ ५३ ॥

स्फिक्पूर्वाकटिपृष्ठोरुजानुजङ्घापदंक्रमात् ॥ गृध्रसीःस्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पन्दतेमुहुः। वाताद्वातकफात्तन्द्रागौरवारोचकान्विता ॥ ५४ ॥

गृध्रसी रोगमें कुपितहुआ वायु क्रमसे बढ़कर नितम्ब जांघ कमर पीठ घुटने पिंडुली जंघा तथा पैरोंमें स्तब्धता वेदना सुई चुभनेकीसी पीड़ा और नसों का फड़कना इन लक्षणोंको उत्पन्न करता है यह वातजगृध्रसी के लक्षण हैं और वात कफज गृध्रसी में तन्द्रा शरीरका भारी होना तथा अरुचि यह लक्षण होते हैं ॥ ५४ ॥

खल्लीतुपादजङ्घोरुकरमूलावमोटनी। स्थानानामनुरूपैश्चलिङ्गैःशेषान्विनिर्दिशेत् ॥ ५५ ॥

पैर पिंडुली जांघ तथा भुजाओं के मूलोंमें ऐंठन होनेको खल्ली कहते हैं यह जो सम्पूर्ण वातरोग कहेगये हैं इनके सिवाय अन्य अनेकप्रकारके जो वातज रोग हैं उनको स्थान तथा नाम के अनुसार लक्षणोंसे जानना चाहिये ॥ ५५ ॥

सर्वेष्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्षयेत्। वायोर्धातुक्षयात्कोपोमार्गस्यावरणेनच ॥ ५६ ॥

इन सम्पूर्ण वात रोगोंमें पित्त तथा कफका संसर्ग जाननाचाहिये धातुओंके क्षीण होनेसे तथा मार्गोंकेरुकनेसे वायु कुपित होताहै ॥ ५६ ॥

वातपित्तकफादेहेसर्वस्रोतोऽनुसारिणः। वायुरेवहिसूक्ष्मत्वाद्द्वयोस्तत्राप्युदीरणः ॥ ५७ ॥

वात पित्त तथा कफ यह तीनों शरीर के सम्पूर्ण स्रोतों में गमन करते हैं परन्तु इनतीनोंमें से वायुही सूक्ष्म होने के कारण पित्त तथा कफ को उभाड़ता है ॥ ५७ ॥

कुपितस्तौसमुद्धूयतत्रतत्राक्षिपन्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दान् । करोत्यावृतमार्गत्वाद्रसादींश्चोपशोषयन् ॥ ५८ ॥

कुपित वायु कफ तथा पित्तको उभाड़कर इधर उधर फेंकता है और मार्गोंके रुकेहुये होने के कारण रस आदि धातुओं को सुखाकर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है ॥५८॥

लिङ्गंपित्तावृतेदाहस्तृष्णाशूलंभ्रमः क्लमः । कट्वम्ललवणोष्णैश्चविदाहः शीतकामिता ॥ ५९ ॥

पित्तके द्वारा वायु ढकाहुआ होने पर दाह तृषा शूल भ्रम ग्लानि शीतल वस्तुकी इच्छा और कटु अम्ल लवण तथा उष्ण वस्तुओंके सेवन से विदाह होना (जलन पैदाकरके पचना) यह लक्षण होते हैं ॥ ५९ ॥

शीतगौरवशूलानिकट्वाद्युपशयोऽधिकम् । लङ्घनायासरूक्षोष्णकामिताचकफावृते ॥ ६० ॥

कफके द्वारा वायु ढकाहुआ होने पर शीत लगना शरीर का भारीहोना शूल और कटु अम्ल लवण तथा उष्ण वस्तुओं के सेवन से हित होना और लंघन श्रम रूखी वस्तु तथा उष्ण वस्तु इनकी इच्छा होना यह लक्षण होते हैं ॥ ६० ॥

रक्तावृतेसदाहार्त्तिस्त्वङ्मांसान्तरजोभृशम् । भवेत्सरागःश्वयथुर्जायन्तेमण्डलानिच ॥ ६१ ॥

रुधिरके द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर त्वचा तथा मांस के मध्यमें दाहसहित पीड़ा होना रक्तवर्ण शोथ होना और चकत्ते पड़ना यह लक्षण होते हैं ॥ ६१ ॥

कठिनाश्चविवर्णाश्चपिडिकाःश्वयथुस्तथा । हर्षःपिपीलिकानाञ्चसञ्चारइवमांसगे ॥ ६२ ॥

मांसके द्वारा वायु ढकाहुआ होने पर कठोर तथा विवर्ण(बिगड़ेहुये वर्णवाली)अनेक पिड़िका होना शोथ होना रोमांच होना और शरीरमें चींटी चढ़ीहुई सी मालूम पड़ना ये लक्षण होते हैं ॥ ६२ ॥

चलःस्निग्धोमृदुःशीतःशोफोऽङ्गेष्वरुचिस्तथा । आढयवातइतिज्ञेयःसकृच्छ्रोमेदसावृतः ॥ ६३ ॥

मेदा के द्वारा वायु ढकाहुआ होने पर चंचल स्निग्ध कोमल तथा शीतल शोथ होता है और अरुचि होती है इसको आढ्यवात कहते हैं यह कष्टसाध्य होता है ॥ ६३ ॥

स्पर्शमस्थ्यावृतेतूष्णंपीडनञ्चाभिनन्दति । संभज्यतेसीदतिचसूचीभिरिवतुद्यते ॥ ६४ ॥

हड्डीके द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर उष्ण स्पर्श शरीर दबानेकी इच्छा टूटनेकीसी तथा सुईचुभने कीसी पीड़ा होना और शिथिलता यह लक्षण होते हैं ॥ ६४ ॥

मज्जावृतेविनामःस्याज्जृम्भणंपरिवेष्टनम् । शूलन्तुपीड्यमानेचपाणिभ्यांलभतेसुखम् ॥ ६५ ॥

मज्जाके द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर विनाम (वातजरोगविशेष) जँभाई ऐंठन शूल और हाथों से शरीर दबवाने में सुख होना यह लक्षण होते हैं ॥ ६५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रावेगेऽतिवेगोवानिष्फलत्वञ्च शुक्रगे । भुक्तेकुक्षौचरुग्जीर्णेशाम्यत्यन्नावृतेऽनिले ॥ ६६ ॥

वीर्य्य के द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर वीर्य्य का वेग न होना अथवा बहुत वेग होना और वीर्य्यका निष्फल होना अर्थात् संतति न होना भोजन करनेपर कुक्षिमें पीड़ा होना और पचजानेपर शान्त होजाना यह लक्षण होते हैं ॥ ६६ ॥

मूत्राप्रवृत्तिराध्मानंबस्तौमूत्रावृतेनिले । वर्च्चोवृतेविबन्धोऽधःस्वेस्थाने परिकृन्तति ॥ ६७ ॥

वस्तिमें मूत्र के द्वारा वायु ढकाहुआ होने पर मूत्रका रुकना और अफरा यह लक्षण होते हैं विष्ठा के द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर मल मूत्र तथा वायु रुकजाना गुदा में कैंची से काटने कीसी पीड़ा होना ॥ ६७ ॥

व्रजत्याशुजरांस्नेहोभुक्तेचानह्यतेनरः । चिरात्पीडितमन्येनदुःखंशुष्कंशकृत्सृजेत् ॥ ६८ ॥

स्निग्ध वस्तुका शीघ्रही पचना भोजन करने से अफरा होना बहुत कालमें दूसरों के दवाने से बड़े कष्टपूर्वक सूखा मल निकलना ॥ ६८ ॥

श्रोणीवंक्षणपृष्ठेषुरुग्विलोमश्चमारुतः । अस्वस्थंहृदयञ्चैवसचवर्च्चोवृतेऽनिलः ॥ ६९ ॥

नितम्ब वंक्षण (जाँघोंकी संधि) तथा पीठमें पीड़ाहोना वायुका उलटा होना और हृदयका व्याकुल मालूम पड़ना विष्ठा से ढकेहुये वायु में यह लक्षण होते हैं ॥ ६९ ॥

सन्धिच्युतिर्हनुस्तम्भःकुञ्चनंकुब्जतार्दितम् । पक्षाघातोऽङ्गसंशोषः पंगुत्वंखुडवातता ॥ ७० ॥

सन्धिच्युति (संधिका छूटकरगिरना) हनुस्तम्भ (जाबडोंका जकड़ना) कुंचन (अंगोंका सिकुड़ना) कुब्जता अर्दित पक्षाघात अंगशोष पंगुला होना खुडवात ॥ ७० ॥

स्तम्भनञ्चाढ्यवातश्चरोगामज्जास्थिगाश्चये । एतेस्थानस्यगाम्भीर्य्याद्यत्नात्सिध्यन्तिवानवा ७१ ॥

स्तम्भन (जकड़ना) आढ्यवात औ[र म]ज्जा तथा हड्डी के द्वारा वायु ढकाहुआ [होने] पर होनेवाले रोग यह सब रोग स्थान[की गा]म्भीरता के कारण बहुत यत्न करने से [अच्छे] भी होजाते हैं और नहींभी अच्छेहोते [हैं ॥ ७१ ॥]

नवान्बलवतान्त्वेतान्साधयेन्नि[रुप]द्रवान् । क्रियामतःसिद्धतमां[वात]रोगापहांशृणु ॥ ७२ ॥

यह रोग जो बलवान् पुरुषके होयँ न[वीन] होयँ और उपद्रवरहित होयँ तो इनकी चि[कि]त्सा करनी चाहिये इस के उपरान्त वात[रोगों]को नष्ट करनेवाली अत्यन्त सिद्ध (बहु[त] आज़माईहुई) चिकित्सा सुनो ॥ ७२ ॥

केवलंनिरुपस्तम्भमादौस्नेहैरुपाचरेत् । वायुंसर्पिर्वसातैलमज्जापानैर्नरंततः ॥ ७३ ॥

जो वायु कफआदिसे युक्त न होयं तो पहि[ले]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ले स्नेह के द्वारा वायुकी चिकित्सा करनी चाहिये घी चर्वी तैल तथा मज्जा के पान के द्वारा वातरोगवालेकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ७३ ॥

स्नेहक्लान्तंसमाश्वास्यपयोभिःस्नेहयेत्पुनः । यूषैर्ग्राम्याम्बुजानूपैरसैर्वास्नेहसंयुतैः ॥ ७४ ॥

वातरोगों में जो स्नेह के द्वारा रोगी व्याकुल होय या रोगी स्नेहपान न करसक्ता होय तो दूधके द्वारा यूपके द्वारा ग्राम जल तथा अनूपदेश के जीवों के मांसके स्नेहयुक्त रसके द्वारा स्नेहन करे ॥ ७४ ॥

पायसैःकृशरैरम्ललवणैःसानुवासनैः । नावनैस्तर्पणैश्चान्नैःसुस्निग्धंस्वेदयेत्ततः ॥ ७५ ॥

और खीरके द्वारा नमकीन तथा खट्टी खिचरीके द्वारा अनुवासन के द्वारा नस्यके द्वारा तथा तृप्तिकारी अन्नों के द्वारा स्नेहन करके स्वेद करे ॥ ७५ ॥

स्वभ्यक्तस्नेहसंयुक्तैर्नाडीप्रस्तरसङ्करैः । तथान्यैर्विविधैःस्वेदैर्यथायोगमुपाचरेत् ॥ ७६ ॥

और रोगीके शरीरमें अच्छे प्रकार तैल मर्दन कराके स्नेहयुक्त नाड़ी प्रस्तर तथा संकर स्वेद (इनकी विधि सूत्रस्थानके स्वेदाध्यायमें देखो) देना चाहिये और अन्य अनेक स्वेद जो योग्यहों वह देने चाहिये॥७६॥

स्नेहार्द्रंस्विन्नमङ्गन्तुवक्रंस्तब्धमथापिवा । शनैर्नमयितुंशक्यंयथेष्टंशुष्कदारुवत् ॥ ७७ ॥

जैसे सूखेहुये काष्ठ में स्नेह मलकर स्वेदन (पसीजना) करने से काष्ठ इच्छाके अनुसार झुकाया जासक्ता है उसी प्रकार मनुष्य का वायुकेद्वारा टेढ़ा हुआ तथा जकड़ा हुआ शरीर स्नेहन करके स्वेदन करने से इच्छाके अनुसार झुकाया जासक्ता है ॥ ७७ ॥

हर्पतोदरुगायासशोथस्तम्भग्रहादयः । स्विन्नस्याशुप्रशाम्यन्तिमार्दवञ्चोपजायते ॥ ७८ ॥

स्वेदन करने से शीघ्रही रोमाँच सुई चुभने कीसी पीड़ा श्रम शुष्कता तथा शरीरका जकड़ जाना इत्यादिक रोग नष्ट होजाते हैं और शरीर कोमल होजाता है ॥ ७८ ॥

स्नेहश्चधातून्संशुष्कान्पुष्णात्याशुप्रयोजितः । बलमग्निबलंपुष्टिंप्राणांश्चाप्यभिवर्द्धयेत् ॥ ७९ ॥

स्नेहन करने से शीघ्रही सूखीभई धातु पुष्ट होजाती है और बल अग्नि की पुष्टता तथा प्राणों की वृद्धि होती है ॥ ७९ ॥

असकृत्तंपुनःस्नेहैःस्वेदैश्चाप्युपपादयेत् । तथास्नेहमृदौकोष्ठेन तिष्ठन्त्यनिलामयाः ॥ ८० ॥

वात रोगवालेकी वारंवार स्नेह तथा स्वेद से चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि स्नेहन तथा स्वेदन से कोष्ठके कोमल होजानेपर वातज रोग शरीरमें नहीं ठहरते हैं ॥ ८० ॥

यद्यनेनसदोषत्वात्कर्मणानप्रशाम्यति । मृदुभिःस्नेहसंयुक्तैरौषधैस्तंविशोधयेत् ॥ ८१ ॥

जो किसी दोष से युक्त होनेके कारण अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थवा कर्म्मवशसे स्नेहन तथा स्वेदनसे वातज रोग शान्त न होय तो स्नेहयुक्त मृदु (तीक्ष्णता रहित) औषधियोंकेद्वारा वमन आदि संशोधन कराना चाहिये ॥ ८१ ॥

घृतंतिल्वकसिद्धंवासातलासिद्धमेववा । पयसैरण्डतैलंवापिबेद्दोषहरंशिवम् ॥ ८२ ॥

लोधके साथ अथवा सेंहुड़के साथ पाकक्रियागया घी पीनेसे अथवा दूधके साथ रेंडी का तैल पीनेसे वातज रोगमें दोषोंका नाश होता है ॥ ८२ ॥

स्निग्धाम्ललवणोष्णाद्यैराहारैर्हिमलश्चितः । स्रोतोबद्धानिलंरुन्ध्यात्तस्मात्तमनुलोमयेत् ॥ ८३ ॥

स्निग्ध अम्ल लवण तथा उष्ण आदि आहारकेद्वारा संचित हुआ दोष स्रोतों को रोंककर वायु को रोंक देताहै इससे वायु को अनुलोम (नीचे के मार्ग्ग से जानेवाला) करै ॥ ८३ ॥

दुर्बलोयोविरेच्यःस्यात्तंनिरूहैरुपाचरेत् । पाचनैर्दीपनीयैर्वाभोज्यैर्वातयुतंनरम् ॥ ८४ ॥

जो वातरोगमें दुर्व्बल रोगी को विरेचन देना होय तो निरूहवस्तिदेनी चाहिये और पाचन या दीपनभोजन देना चाहिये ॥ ८४ ॥

शुद्धस्यचोत्थितेचाग्नौस्नेहस्वेदौपुनर्हितौ । स्वाद्वम्ललवणस्निग्धैराहारैःसततंपुनः ॥ ८५ ॥

फिर शरीरके शुद्ध होजानेपर और अग्नि के दीप्त होनेपर स्नेहन तथा स्वेदन करना चाहिये मधुर अम्ल लवण तथा स्निग्ध आहार ॥ ८५ ॥

नावनैर्धूमपानैश्चसर्वानेवोपपादयेत् । इतिसामान्यतःप्रोक्तंवातरोगचिकित्सितम् । विशेषतस्तुकोष्ठस्थेवातेक्षारंपिबेन्नरः ॥ ८६ ॥

नस्य और धूमपानकेद्वारा सदैव सब प्रकार के वातरोगों की चिकित्सा करनी चाहिये यह वात रोगकी सामान्य चिकित्सा कहीगई वायुके कोष्ठ में स्थित होनेपर विशेष करके क्षार पीना चाहिये ॥ ८६ ॥

पाचनैर्दीपनीयैस्तैरम्लैर्वापाचयेन्मलान् । गुदपक्काशयस्थेतुकर्मोदावर्तनुद्धितम् ॥ ८७ ॥

अथवा पाचन दीपन तथा अम्ल वस्तु के द्वारा दोषों को पचाना चाहिये गुदा त पक्काशय में वायुके स्थित होनेपर उदावा नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८७ ॥

आमाशयस्थेशुद्धस्ययथादोषह क्रियाः । सर्वांगकुपितेऽभ्यङ्गोव यःसानुवासनाः ॥ ८८ ॥

वायुके आमाशय में स्थित होनेपर व आदि संशोधन कराके दोषके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये वायुके सम्पूर्ण शरीर में कुपित होनेपर तैल आदि मर्दन करना चाहिये और वस्ति तथा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ८८ ॥

स्वेदाभ्यङ्गानिवातानिहृद्यञ्चान्नंत्व गाश्रिते । शीताःप्रदेहारक्तस्थेविरेकोरक्तमोक्षणम् ॥ ८९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुपित वायुके त्वचा में स्थित होनेपर स्वेद तैल आदि मर्दन वायु रहित स्थान और मनोहर अन्न यह सब हित हैं कुपित वायुके रुधिरमें स्थित होनेपर शीतल लेप विरेचन तथा रक्तमोक्षण (फस्त खुलाना) हित होताहै ॥ ८९ ॥

विरेकोमांसमेदःस्थेनिरूहाःशमनानिच । बाह्याभ्यन्तरतःस्नेहैरस्थिमज्जगतंजयेत् ॥ ९० ॥

कुपित वायुके मांस तथा मेदा में स्थित होनेपर विरेचन निरूहवस्ति तथा संशमन औषध हितहैं हड्डी तथा मज्जामें कुपित वायु के स्थित होनेपर घृत आदि स्नेह के मर्दन तथा पानकेद्वारा वायु को जीतना चाहिये९०

हर्षोऽन्नपानंशुक्रस्थेबलशुक्रकरंहितम् । विबद्धमार्गंदृष्ट्वावाशुक्रंदद्याद्विरेचनम् ॥ ९१ ॥

कुपित वायुके वीर्य्य में स्थित होनेपर हर्ष (खुश करना) और बल तथा वीर्य्य को बढ़ानेवाला अन्नपान हित होताहै जो वीर्य्य का मार्ग रुकाहुआ हो तो विरेचन देना चाहिये ॥ ९१ ॥

विरिक्तप्रतिभुक्तस्यपूर्वोक्तांकारयेत्क्रियाम् । गर्भेशुष्केतुवातेनबालानाञ्चापिशुष्यताम् ॥ ९२ ॥

और विरेचनके उपरान्त भोजन कराके पूर्वोक्त चिकित्सा करनी चाहिये वायुकेद्वारा गर्भके सूखजानेपर और बालकोंके कृश होजानेपर ॥ ९२ ॥

सिताकाश्मर्य्यमधुकैर्हितमुत्थापने पयः । हृदिप्रकुपितेसिद्धमंशुमत्या पयोहितम् ॥ ९३ ॥

मिश्री खँभारी के फल तथा मुलेठीकेद्वारा पाक कियागया दूध हित होताहै हृदयमें कुपित वायुके स्थित होनेपर सरिवन के साथ पाक कियागया दूध हित होताहै ॥ ९३ ॥

मत्स्यान्नाभिप्रदेशस्थेसिद्धान्बिल्वशलाटुभिः । वायुनावेष्ट्यमानेतु गात्रेस्यादुपनाहनम् ॥ ९४ ॥

वायुके नाभिमें स्थित होनेपर बेल तथा शलाटुकेद्वारा मछलियोंका पाक करके प्रयोग करना चाहिये वायुकेद्वारा सम्पूर्ण शरीरमें ऐंठन होनेपर उपनाहन कराना चाहिये ९४॥

तैलंसंकुचितेऽभ्यङ्गोमाषसैन्धवसाधितम् । बाहुशीर्षगतेनस्यंपानञ्चोत्तरभक्तिकम् ॥ ९५ ॥

वायुके द्वारा अंगोंके सिकुड़जाने पर उर्द तथा सैंधव लवण के साथ पाक किये गये तैलका मर्दन करना चाहिये भुजा तथा शिर में वायुके कुपित होनेपर नस्यलेनी चाहिये और भोजनके उपरान्त घी पीना चाहिये९५॥

वस्तिकर्मत्वधोनाभेःशस्यतेचावपीडकः । अर्दितेनावनंमूर्ध्नितैलंतर्पणमेवच । नाडीस्वेदोपनाहाश्चाप्यनूपपिशितैर्हिताः ॥ ९६ ॥

नाभि के नीचे वायु के कुपित होनेपर वस्तिकर्म्म हित होता है अर्दितरोग में नस्य शिर में तैल लगाना तर्पण (बलकारी दाख आदि फलोंका रस) नाड़ी स्वेद और अ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नूप देशके जीवों के मांसकी पुल्टिस यह सब हित होते हैं॥ ९६॥

स्वेदनंस्नेहसंयुक्तंपक्षाघातेविरेचनम् । अन्तराकण्डराङ्गुल्योःशिरावस्त्यग्निकर्मच ॥ ९७॥

पक्षाघात में स्नेहन स्वेदन तथा विरेचन हित होता है कण्डरा शिरा तथा टखनों में वायु के कुपित होनेपर वस्ति तथा अग्निका कर्म्म हित होता है॥ ९७॥

गृध्रसीषुप्रयुञ्जीतखल्लयान्तूष्णोपनाहनम् । पायसैःकृशरैश्चैवशस्तंतैलघृतान्वितैः ॥ ९८ ॥

गृध्रसी तथा खल्ली रोगमें तैल तथा घृत युक्त खीर तथा खिचड़ी की उष्ण पुल्टिस हित होती है॥ ९८॥

व्यात्ताननेहनुंस्विन्नामङ्गुष्ठाभ्यांप्रपीड्यच। प्रदेशिनीभ्यांचोन्नाम्यचिबुकोन्नामनंहितम् ॥ ९९ ॥

वायु के द्वारा जो मुख खुलकर रहगया होय तो कनपटी में स्वेदन करके अँगूठा से दबाकर प्रदेशिनी (अँगूठे के पासकी अँगुली) से उठाकर ठुड्डीको ऊपरकरै॥९९॥

स्रस्तांसङ्गमयेत्स्थानंस्तब्धांस्विन्नांविनामयेत्। प्रत्येकंस्थानदूष्यादिक्रियावैशेष्यमाचरेत् १०० ॥

जो अङ्ग अपने स्थान से हट गयाहो उसको उसीके स्थान में यत्नकरके पहुँचावे जो अङ्ग जकड़गयाहो उसको स्वेदन करके झुकावे सब रोगों में स्थान तथा दूष्य (दूषित होनेवाले) आदिकी विशेषता के अनुसार चिकित्साकी विशेषताकरै॥ १००॥

सर्पिस्तैलवसामज्जसेकाभ्यञ्जनवस्तयः । स्निग्धाःस्वेदानिवातश्चस्थानंप्रावरणानिच ॥ १०१ ॥

घी तैल चर्व्वी मज्जा तरारा अभ्यङ्ग (तैल आदि मर्द्दन) वस्ति स्निग्ध स्वेद वायु रहित स्थान ओढ़ना ॥ १०१ ॥

रसाःपयांसिभोज्यानिस्वाद्वम्ललवणानिच । बृंहणंयच्चतत्सर्वंप्रशस्तंवातरोगिणाम् ॥ १०२ ॥

मांसरस दूध अम्ल लवण तथा मधुर जन और सम्पूर्ण धातुवर्द्धक वस्तु यह वात रोगवालों के लिये हित हैं॥ १०२

बलायाःपञ्चमूलस्यदशमूलस्य से । अजशीर्षाम्बुजानूपमदपिशितैःपृथक् ॥ १०३ ॥

साधयित्वारसान्स्निग्धान्दध्य व्योषसंस्कृतान् । भोजयेद्वातरो र्त्तैतैर्व्यक्तलवणैर्नरम् ॥ १०४ ॥

वरियारा पंचमूल अथवा दशमूल के का ढ़ेमें बकरे की मस्तक जलके जीव अनूप दे शके जीव तथा मांसखाने वाले व्याघ्र आदि जीवों के मांसके दही खटाई सोंठि पीपरि मिर्च लवण तथा घृत आदि स्नेहयुक्त रस बनाकर उसरस के साथ वात रोगवालों को भोजन कराना चाहिये॥ १०३। १०४॥

एतैरेवोपनाहांश्चपिशितैःसंप्रकल्प

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

येत्। घृततैलयुतैःसाम्लैःक्षुण्णैरस्थिभिः ॥ १०५ ॥

और इन्हीं मांसों को हड्डी निकाल कर कूट के उबालकर घी तथा तैल मिलाकर पुल्टिस बनाकर वातरोगों में बाँधनी चाहिये ॥ १०५ ॥

पत्रोत्क्वाथःपयस्तैलद्रोण्यःस्युरवगाहने। स्वभ्यक्तानांप्रशस्यन्तेसेकाश्चानिलरोगिणाम् ॥ १०६ ॥

वातरोगवालों के शरीर में तैलमर्दन कराकर कठौती में तेजपातका काढ़ाभरकर स्नान कराना चाहिये और वातरोगवालों के शरीर में तैल मर्दन करके वातघ्न औषधियोंका काढ़ा सींचना चाहिये ॥ १०६ ॥

आनूपौदकमांसानिदशमूलंशतावरीम् । कुलत्थान्बदरान्माषांस्तिलान्रास्नांयवान्बलाम् । वसादध्यारनालाम्लैःसहकुम्भ्यांविपाचयेत् ॥ १०७ ॥ नाडीस्वेदंप्रयुञ्जीत पिष्टैश्चैवोपनाहनम् । तैश्चसिद्धंघृतं तैलमभ्यङ्गःपानमेवच ॥ १०८ ॥

अनूपदेश के तथा जलके जीवोंका मांस दशमूल शतावर कुलथी बेर उर्द तिल रास्ना यव बरियारा चर्बी दही कांजी तथा आरनाल इन सबको एक साथ पाककरके वातजरोग में नाड़ीस्वेद देवै इन्हीं को पीसकर पुल्टिस बनावे और इनके साथ पाक किये गये घृतका मर्दन तथा पान करना चाहिये ॥ १०७ । १०८ ॥

मुस्तंकिण्वंतिलाःकुष्ठंसुराह्वंलवणंनतम् । दधिक्षीरचतुःस्नेहैःसिद्धंस्यादुपनाहनम् ॥ १०९ ॥

नागरमोथा किण्व (जो फलआदि वस्तु बहुत कालतक मद्य बनाने के लिये रक्खी जाती है उसको किण्व कहते हैं) तिल कूट देवदारु सैंधव लवण तगर दही दूध घी तैल चर्बी तथा मज्जा इनसबको पाक करके पुल्टिस बनाकर वातरोगमें बाँधे ॥ १०९ ॥

उत्कारिकावेशवारक्षीरमाषतिलोदनैः । एरण्डबीजगोधूमयवकोलस्थिरादिभिः ॥ ११० ॥ सस्नेहैःसरुजंगात्रमालिप्यबहुलंभिषक् । एरण्डपत्रैःप्रच्छाद्यरात्रौकल्येविमोक्षयेत् ॥ १११ ॥

वातज रोगों में जिस अङ्ग में पीड़ा होती होय उसमें उत्कारिका (भक्ष्यविशेष) वेशवार (एकतरहे का मशाला) दूध उर्द तिल रेंड़ी गेंहूं यव बेर तथा शालपर्णी आदि गण इनको पीसकर घृतआदि स्नेह मिलाकर लेप करके ऊपरसे रेंड़ी के पत्ते बाँधदेवे फिर प्रातःकाल होतेही खोलकर ॥ ११० । १११ ॥

क्षीराम्बुनाततःसिक्तंपुनश्चैवोपनाहितम् । मुञ्चेद्रात्रौदिवाबद्धंचर्मभिश्चसलोमभिः ॥ ११२ ॥

दूध तथा जल छिड़ककर वही लेप लगाके सुन्दर रोमवाला चमड़ा उसके ऊपर बाँध देवे इस प्रकार दिनमें बाँध कर रात्रि में खोलडाले इससे पीड़ाका नाश होताहै ॥ ११२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फलानांतैलयोनीनामम्लपिष्टान्सुशीतलान् । प्रदेहानुपनाहांश्चगन्धैर्वातहरैरपि । पायसैःकृशरैश्चैवकारयेत्स्नेहसंयुतैः ॥ ११३ ॥

जिन फलोंसे तैल निकलता होय उनको खट्टी वस्तुके साथ पीसकर कुछ शीतल वातरोगों में लेप करै अथवा पुल्टिस बाँधै इसी प्रकार वातनाशक सुगंधित वस्तुओं के द्वारा अथवा स्नेहयुक्त खीर तथा खिचड़ी के द्वारा वातरोगों में लेप करै अथवा पुल्टिस बाँधै ॥ ११३ ॥

रूक्षशुष्कानिलार्त्तानामतःस्नेहान्प्रवक्ष्यते । विविधाविविधव्याधिप्रशमायामृतोपमान् ॥११४॥

इसके उपरान्त रूक्ष तथा शुष्क वायुसे पीड़ित मनुष्यों के लिये अमृतके समान गुणकारी अनेक प्रकारके स्नेह अनेक प्रकारके रोगों को शान्त करने के लिये कहे जायँगे ॥ ११४ ॥

द्रोणेऽम्भसःपचेद्भागान्दशमूलाच्चतुष्पलान् । यवकोलकुलत्थानांभागैःप्रस्थोन्मितैःसह ॥ ११५ ॥

दशमूल की दशों औषध चार चार तोले और यव बेर तथा कुल्थी चौंसठ २ तोले इन सबको १०२४ तोले जलमें डालकर पाककरै ॥ ११५ ॥

पादशेषेरसेपिष्टैर्जीवनीयैःसशर्करैः । तथा खर्जूरकाश्मर्य्यद्राक्षाबदरफल्गुभिः ॥ ११६ ॥

जब चौथाई जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे फिर इसमें जीवनीयगणकी औषध शक्कर छुहारा खँभारीके फल मुनक्का बेर तथा कठगूलर इनका कल्क ॥ ११६ ॥

सक्षीरैःसर्पिषःप्रस्थःसिद्धःकेवलवातनुत् । निरत्ययःप्रयोक्तव्यःपानाभ्यञ्जनवस्तिषु ॥ ११७ ॥

चौंसठ तोले दूध और चौंसठ तोले घी डालकर पाककरै जब पानी जलजावे केवल घी बाकीरहे तब उतारकर छानलेवे इस घृत का पान मर्दन तथा वस्तिकेद्वारा सेवन करने से केवल वातज रोगोंका नाश होताहै और किसी प्रकारकी हानि नहीं होती है ॥११७॥

चित्रकंनागरंरास्नांपौष्करंपिप्पलींशटीम् । पिष्ट्वाविपाचयेत्सर्पिर्वातरोगहरम्परम् ११८ ॥

चीता सोंठि रास्ना पुष्करमूल पीपरि कचूर इनके कल्क (चटनी) के साथ सिद्ध कियागया घी वात रोगोंका अत्यन्तनाश होता है ॥ ११८ ॥

बलाबिल्वशृतेक्षीरेघृतमण्डंविपाचयेत् । तस्यशुक्तिःप्रकुञ्चोवानस्यंमूर्द्धगतेऽनिले ॥ ११९ ॥

बरियारा तथा बेलगिरीके साथ पाक कियेगये दूधके साथ घृत मण्डका पाककरै इसमें से दो तोले अथवा चार तोले लेकर नस्य लेवे इससे शिरमें गईहुई वायु शान्त होती हैं ॥ ११९ ॥

ग्राम्यानूपौदकानान्तुभित्त्वास्थीनिपचेज्जले । तंस्नेहंदशमूलस्यकषा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

येणपुनःपचेत् ॥ १२० ॥ जीवकर्ष भकास्फोताविदारीकपिकच्छुभिः । वातघ्नैर्जीवनीयैश्चकल्कैर्द्विक्षीरभागिकम् ॥ १२१ ॥

ग्रामके अनूपदेश के तथा जलके जीवोंकी हड्डियों को तोड़कर जलमें डालके पाककरै फिर उसमें से जो स्नेह (चिकनी वस्तु) निकलै उसको दशमूल के काढ़ेके साथ जीवक ऋषभक जंगली बेला बिलाईकन्द किवाँच वातघ्न औषध तथा जीवनीयगण की औषध इनके कल्कके साथ और द्विगुण दूध के साथ फिर पकावे ॥ १२० । १२१ ॥

तत्सिद्धंनावनाभ्यङ्गात्तथापानानुवासनात् । शिरापर्वास्थिकोष्ठस्थं प्रणुदत्याशुमारुतम् ॥ १२२ ॥

जब पानी जलजाय केवल स्नेह बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे नस्य मर्दन पान तथा अनुवासन के द्वारा इस स्नेह का प्रयोग करने से शिरा संधि हड्डी तथा कोष्ठमें स्थित वायुका शीघ्रही नाश होता है ॥ १२२ ॥

येस्युःप्रक्षीणमज्जानःक्षीणशुक्रौजसश्चये । बलपुष्टिकरंतेषामेतत्स्यादमृतोपमम् ॥ १२३ ॥

और जिन पुरुषों का वीर्य्य मज्जा तथा ओज क्षीण हो उन के लिये यह स्नेह बल तथा पुष्टता का करनेवाला होता है और अमृत के समान गुणकारी होता है ॥ १२३ ॥

तद्वत्सिद्धावसानक्रमत्स्यकूर्मचुलूकजाः । प्रत्यग्राविधिनानेननस्यपानेषुशस्यते ॥ १२४ ॥

इसी विधिसे नक्र (घड़ियाल विशेष) मछली कछुवा तथा शूश की ताजी चर्बीका पाक करै इसका नस्य तथा पानमें प्रयोग करने से पूर्वोक्त गुण होते हैं ॥ १२४ ॥

प्रस्थःस्यात्त्रिफलायास्तुकुलत्थकुडवद्वयम् । कृष्णगन्धात्वगाढक्योःपृथक्पञ्चपलंभवेत् ॥ १२५ ॥

त्रिफला चौंसठ तोले कुल्थी ३२ तोले सहिंजन तज तथा अरहर बीज २ तोले१२५॥

रास्नाचित्रकयोर्द्वेद्वेदशमूलंपलोन्मितम् । जलद्रोणेपचेत्पादशेषेप्रस्थोन्मितंपृथक् ॥ १२६ ॥

रास्ना तथा चीता आठ २ तोले और दशमूल चार २ तोले इन सबको १०२४ तोले जल में डालकर पाककरे जब चौथाई जल बाकी रहै तब उतार कर छान लेवे फिर इस जल में ॥ १२६ ॥

सुरारनालदध्यम्लसौवीरकतुषोदकम् । कोलदाडिमवृक्षाम्लरसंतैलं वसांघृतम् ॥ १२७ ॥

सुरा (मद्यविशेष) आरनाल (काँजी विशेष) दही काँजी सौवीरक(मद्यविशेष) तथा तुषोदक (मद्यविशेष) बेर खट्टे अनार तथा तिंतिड़ीकका रस तैल चर्बी घी१२७॥

मज्जानञ्चपयश्चैवजीवनीयपलानिषट् । कल्कंदत्त्वामहास्नेहंसम्यगेनंविपाचयेत् ॥१२८॥ शिरामज्जा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थिरेवातेसर्वाङ्गैकाङ्गरोगिषु । वेपनाक्षेपशूलेषुतदभ्यङ्गेप्रयोजयेत् १२९॥

मज्जा तथा दूध चौंसठ २ तोले और जीवनीयगणकी औषधियों का कल्क २४ तोले डालकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल तैलआदि स्नेह बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे इस महास्नेह का शरीरमें मर्दन करनेसे शिरा मज्जा तथा हड्डियों में प्राप्त वायु सर्वांग वातरोग एकांग वातरोग कम्प आक्षेप और शूल इन सबका नाश होताहै१२८।१२९

निर्गुण्ड्यामूलपत्राभ्यांगृहीत्वास्वरसंततः । तेनसिद्धंसमंतैलंनाडीकुष्ठानिलार्त्तिषु । हितंपामापचीनाञ्चपानाभ्यञ्जनपूरणम् १३० ॥

निर्गुण्डी (म्योड़ी) की जड़ तथा पत्तियोंके रसके साथ समभाग तैलका पाककरै इस तैलके पान तथा मर्दन से और इसको घावों में भरनेसे नसूर कुष्ठ वातरोग खुजली तथा अपची इन रोगोंका नाश होताहै१३०॥

कार्पासास्थिकुलत्थानांरसेसिद्धञ्चवातनुत् ॥ १३१ ॥

बिनवर तथा कुलथी के रसके साथ पाक कियागया तैल वातरोगों को नष्ट करता है ॥ १३१ ॥

मूलकस्वरसेक्षीरसमेस्थाप्यंत्र्यहंदधि । तस्याम्लस्यत्रिभिःप्रस्थैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ १३२ ॥ यष्ट्याह्वशर्करारास्नालवणार्द्रकनागरैः । सुपिष्टैःपलिकैःपानात्तदभ्यङ्गाच्चवातनुत् ॥ १३३ ॥

समभाग मूलीके रस तथा दूधके साथ तीन दिनतक दही रक्खे फिर तीन दिनके उपरान्त उस खट्टे दहीमें से १९२ तोले लेकर उसमें ६४ तोले तैल और मुलेठी शक्कर रास्ना सैंधवलवण अदरख तथा सोंठि का चारचार तोले कल्क (चटनी) डालकर पाककरै जब पानीजलजाय केवल तैल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै इस तैलको पीनेसे तथा मर्दन करनेसे वात रोगोंका नाश होता है ॥ १३२।१३३ ॥

पञ्चमूलकषायेणपिण्याकंबहुवार्षिकम् । पक्वातस्यरसंपूत्वातैलप्र[स्थं]विपाचयेत् ॥ १३४ ॥ प[यसा]साष्टगुणेनैतत्सर्ववातविकारनुत् । संसृष्टेश्लेष्मणाचैतद्वातेशस्तं[वि]पतः ॥ १३५ ॥

पंचमूल के काढ़े के साथ बहुत वर्षवाले पिण्याक (तिलोंकी खली) को पक[ाकर] छानलेवे फिर उस रस में अष्टगुण दू[धस]हित ६४ तोले तैल डालकर पाककरै जब पानी जलजावै केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवै इस तैलके सेवन से सम्पूर्ण वात रोगों का नाश होताहै और जिन वात रोगों में कफका संसर्ग हो उनमें यह विशेष हितकारी होताहै ॥ १३४।१३५ ॥

यवकोलकुलत्थानांश्रेयस्याःशुष्कमूलकात् । बिल्वाच्चांञ्जलिमेकैकंद्रवैरम्लैर्विपाचयेत् ॥ १३६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यव बेर कुल्थी रास्ना सूखीमूली तथा बेल सोलह२ तोले इन सब औषधियों को कांजी में डालकर काढ़ाकरलेवे ॥ १३६ ॥

तेनतैलंकषायेणफलाम्लैःकटुभिस्तथा। पिष्टैःसिद्धंमहावातैरार्त्तःशीतेप्रयोजयेत् ॥ १३७ ॥

फिर काढ़ेको छानकर इसमें खट्टेफल तथा कडुई वस्तुओंका कल्क और तैल डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैलबाकी रहै तब उतारकर छानलेवे इस तैल का शीतऋतु में सेवन करने से महावात का नाश होता है ॥ १३७ ॥

सर्ववातविकाराणांतैलान्यन्यान्यतःशृणु। चतुष्प्रयोगाण्यायुष्यबलवर्णकराणिच ॥ १३८ ॥ रजःशुक्रप्रदोषघ्नान्यपत्यजननानिच। निरत्ययानिसिद्धानिसर्वदोषहराणिच ॥ १३९ ॥

इसके उपरान्त सम्पूर्ण वातविकारों को नष्ट करनेवाले पान नस्य मर्द्दन तथा वस्तिके द्वारा प्रयोग करने के योग्य आयु बल तथा वर्णको बढ़ानेवाले रज तथा वीर्य्य के दोषों को नष्ट करनेवाले संतान उत्पन्न करने की शक्तिको देनेवाले सम्पूर्ण दोषों को नष्टकरनेवाले और किसी प्रकार की हानि नहीं करनेवाले सिद्ध (अज़माइश कियेहुये) अन्य तैल कहेजाते हैं सुनो ॥ १३८ । १३९ ॥

सहाचरतुलायाश्चरसेतैलाढकंपचेत। मूलकल्काद्दशपलंपक्वाक्षीरेचतुर्गुणम् ॥ १४० ॥

४०० तोले पीलफूल की कटसरैयाके रस में २५६ तोले तैल ४० तोले मूलीका कल्क और १०२४ तोले गौका दूध डालकर पाक करै ॥ १४० ॥

सिद्धेऽस्मिन्शर्कराचूर्णादष्टादशपलंभिपक्। विनीयदारुणेष्वेतद्वातव्याधिषुयोजयेत् ॥ १४१ ॥

जब पानी जलजावे केवल तैल बाकीरह जावे तब उतारकर छानलेवे फिर इसमें ७२ तोले शक्कर मिलाकर भयंकर वातरोगों में इसका सेवन करै ॥ १४१ ॥

श्वदंष्ट्रास्वरसप्रस्थौद्वौसमौपयसासह। षट्पलंशृङ्गवेरस्यगुडस्याष्टपलंतथा ॥ १४२ ॥

गोखरू का रस १२८ तोले दूध १२८ तोले सोंठि २४ तोले गुड़ ३२ तोले॥१४२॥

तैलप्रस्थंविपक्वंतैर्दद्यात्सर्वानिलार्त्तिषु। जीर्णेतैलेचदुग्धेनपेयाकल्पःप्रशस्यते ॥ १४३ ॥

और तैल ६४ तोले इन सबको एक में मिलाकर पाककरै जब पानी जलजावे केवल तैल बाकी रहजावे तब उतारकर छान लेवे सम्पूर्ण वातरोगों में यह तैल पीना चाहिये और इस तैलके पचजानेपर दूधके साथ पाककीगई पेया (१४ गुणे जलमें जो चावलों का पतला माड़सा पकाया जाता है उसे पेया कहते हैं) पीनी चाहिये ॥ १४३ ॥

बलाशतंगुडूच्याश्चपादंरास्नाष्टभागिकम्। जलाढकशतेपक्त्वादशभागस्थितेरसे ॥ १४४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बरियारा ४०० तोले गिलोय १००तोले तथा रास्ना ३२ तोले इन सबको ९॥ऽ सेर जलमें डालकर पाककरै जब दशांशजल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे फिर उस जल में ॥ १४४ ॥

दधिमस्त्विक्षुनिर्य्यासशुक्तैस्तैलाढकंसमैः । पचेत्साजपयोऽर्द्धांशैः कल्कैरेभिःपलोन्मितैः ॥ १४५ ॥

दहीकातोड़ दहीकारस सिरका तथा तैल एक २ आढ़क (२५६ तोले) बकरीका दूध १२८ तोले ॥ १४५ ॥

शटीसरलदार्वेलामञ्जिष्ठागुरुचन्दनैः । पद्मकातिविषामुस्तसूर्प्यपर्णीहरेणुभिः ॥ १४६ ॥

और कचूर सरल काष्ठ देवदारु इलायची मँजीठ अगर चन्दन पद्माख अतीस नागरमोथा माषपर्णी रेणुका ॥ १४६ ॥

यष्ट्याह्वसुरसव्याघ्रनखर्षभकजीवकैः । पलाशरसकस्तूरीनलिकाजातिकोषकैः ॥ १४७ ॥

मुलेठी तुलसी बघनखी ऋषभक जीवक ढाखकागोंद कस्तूरी पवारी जायफल १४७॥

पृक्काकुंकुमशैलेयजातीकटुफलाम्बुभिः । त्वक्कुन्दुरुककर्पूरतुरुष्कश्रीनिवासकैः ॥ १४८ ॥

स्पृक्का (सुगंधित औषधविशेष) केशरि करीला चमेली कायफल सुगंधवाला तज गंधापिरोजा कपूर लोवान शरलद्रव (रापीनका तैल ॥ १४८ ॥

लवङ्गनखकक्कोलकुष्ठमांसीप्रियंगुभिः । स्थौणेयतगरध्यामवचामदनपल्लवैः ॥ १४९ ॥

लवंग नखी कंकोलमिर्च कूट जटामासी प्रियंगु कुकरौंधा तगर रोहिष वच मैनफल ॥ १४९ ॥

सनागकेसरैःसिद्धेक्षिपेच्चात्रावतारिते । पत्रकल्कंततःपूतंविधिना तत्प्रयोजयेत् ॥ १५० ॥

केवटीमोथा तथा नागकेसर इनका [illegible] तोले कल्क डालकर पाककरै जब पानी [illegible] जाय केवल तैल बाकीरहै तब तेजपात[illegible] ल्क मिलाके उतारकर छानलेवे इस [illegible] विधिपूर्वक सेवन करने से ॥ १५० ॥

श्वासंकासंज्वरंहिक्कांछर्दिंगुल्मं[illegible] तंक्षयम् । प्लीहशोषावपस्मा[illegible] क्ष्मीञ्चप्रणाशयेत् ॥ १५१ ॥

श्वास खांसी ज्वर हिचकी छर्दि[illegible] क्षत क्षयी पिलही शोष मिरगी तथ[illegible] क्ष्मी (दुर्भाग्य) का नाशहोता है ॥

बलातैलमिदंश्रेष्ठंवातव्याधिविनाशनम् ॥ अग्निवेशायगुरुणाकृष्णात्रेयेणभाषितम् ॥ १५२ ॥

इति बलातैलम् ।

इसको बलातैल कहते हैं यह वातरोगो को नष्ट करने के लिये बहुत श्रेष्ठ होता है कृष्णात्रेयगुरुजी ने अपने शिष्य अग्निवेश से इसको कहा है ॥ १५२ ॥

इतिबलातैल ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुलाःपञ्चगुडूच्यास्तुद्रोणेष्वष्टस्वपां पचेत्। पादशेषेसमंक्षीरंतैलस्यच्चा ढकंपचेत्॥ १५३॥

॥५ सेर गिलोय को कूटकर २॥५२ सेर बत्तिस तोले जलमें डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकीरहै तब उतारकर छान लेवे फिर इस जलमें ५१२ तोले तैल ५१२ तोले दूध॥१५३॥

एलामांसीनतोशीरशारिवाकुष्ठच न्दनैः। बलातामलकीमेदाशतपु ष्पर्द्धिजीवकैः॥ १५४॥

और छोटी इलायची जटामासी तगर खस सौंई कूट चन्दन बरियारा भूमिआमला मेदा सौंफ ऋद्धि जीवक॥ १५४॥

काकोलीक्षीरकाकोलीश्रावण्यतिब लानखैः। महाश्रावणिजीवन्तीवि दारीकपिकच्छुभिः॥ १५५॥

कालोकी क्षीरकाकोली मुंडली ककैहा नखी बड़ी मुंडली जीवन्ती विलाईकन्द किंवाच॥ १५५॥

शतावरीमहामेदाकर्कटाख्याहरेणु भिः। वचागोक्षुरकैरण्डरास्नाका लासहाचरैः॥ १५६॥

शतावरि महामेदा काकड़ासिंगी रेणुका वच गोखरू अरंड रास्ना नील पीले फूलकी कटसरैया॥ १५६॥

वीराशब्ककिमुस्तत्वक्पत्रर्षभकवाल कैः। महैलाकुंकुमस्पृक्कात्रिदशाह्वै श्चकार्षिकैः॥ १५७॥

केला सलई नागरमोथा तज तेजपात ऋषभक सुगंधवाला बड़ी इलायची केसर स्पृक्का (सुगंधित वस्तुविशेष). तथा देवदारु इनका कल्क एक२ तोले॥ १५७॥

मञ्जिष्ठायास्त्रिकर्षेणमधूकाष्टपलेन च। कल्कैस्तत्क्षीणवीर्य्याग्निबल संमूढचेतसः॥ १५८॥

मँजीठका कल्क तीन तोले और मुलेठीका कल्क ३२ तोले डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे यह तैल क्षीणवीर्य्य मंदाग्नि निर्बल तथा विकलचित्तवालों के लिये हित होता है॥ १५८॥

उन्मादारत्यपस्मारैरात्तांश्चप्रकृतिंन येत्। वातव्याधिहरंश्रेष्ठंतैलाग्र्यम मृताह्वयम्। कृष्णात्रेयेणगुरुणाभा षितंवैद्यपूजितम्॥ १५९॥

इति अमृताद्यंतैलम्।

और उन्माद तथा मिरगी से पीड़ित मनुष्यको स्वस्थ करता है इसे अमृतातैल कहते हैं यह वातरोगोंको नष्ट करने के लिये अत्यन्त श्रेष्ठ है इस वैद्यपूजित तैलको कृष्णात्रेयगुरुजीने अग्निवेश से कहा है॥ १५९॥

इति अमृताद्यतैल॥

रास्नासहस्रनिर्य्यूहेतैलद्रोणंविपाच येत्। गन्धैर्हैमवतैःपिष्टैरेलाद्यैश्चानि लार्त्तिनुत्॥ १६०॥

इतिरास्नातैलम्।

१॥५ मन रास्ना के काढ़े में ५२ सेर ६४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तोले तैल और पहिले कही हुई हिमालय में उत्पन्न हुई बड़ी इलायची पर्य्यन्त औषधियों का कल्क डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छान लेवै यह तैल वात रोगों को नष्ट करता है ॥ १६० ॥

इति रास्नातैल ॥

एषकल्पस्तुबलयोः प्रसारण्यश्वगन्धयोः। कल्पोऽयमष्टगन्धायांप्रसारण्यांबलाद्वये। क्वाथकल्कपयोभिर्वाबलादीनांपचेत्पृथक् ॥ १६१ ॥

इति बलानागबलाप्रसारणी अश्वगन्धातैलानि।

असगंध गंधप्रसारिणी (सुगंधित औषधविशेष) वरियारा तथा ककैहा इनसबके काढ़े तथा कल्क के और दूधके साथ अथवा इन औषधियों के अलग २ काढ़े तथा कल्क के साथ और दूध के साथ पूर्वोक्त विधि से तैलका पाककरै इस तैल से वातरोगोंका नाश होता है ॥ १६१ ॥

इति वला नागवला प्रसारणी अश्वगन्धातैल ॥

मूलकस्वरसंक्षीरंतैलंदध्यम्लकाञ्जिकम्। तुल्यंविपाचयेत्कल्कैर्बलाचित्रकसैन्धवैः ॥ १६२ ॥

मूलीका रस गौकादूध तैल दही तथा खट्टी कांजी इन सब समभाग द्रव पदार्थों में वरियारा चीता सैंधवलवण ॥ १६२ ॥

पिप्पल्यतिविषारास्नाचविकागुरु

शिग्रुकैः। भल्लातकवचाकुष्ठश्वदंष्ट्राविश्वभेषजैः ॥ १६३ ॥

पीपारे अतीस रास्ना चव्य अगर सहिंजन भिलावाँ वच कूट गोखुरू सोंठि ॥ १६३ ॥

पुष्कराह्वशटीबिल्वशताह्वानतदारुभिः। तत्सिद्धंपीतमत्युग्रान्हन्तिवातात्मकान्गदान् ॥ १६४ ॥

इति मूलकाद्यतैलम्।

पुष्करमूल कचूर वेल सौंफ तगर तथा देवदारु इनका कल्क डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहजावे तब उतारकर छानलेवे इस तैल को पीने से बहुत भयंकर वातरोगोंकानाश होताहै ॥ १६४ ॥

इति मूलकाद्यतैल ॥

वृषमूलगुडूच्योश्चद्विशतस्यशतस्य च। अश्वगन्धाचित्रकयोः [illegible] लाढकंपचेत् ॥ १६५ ॥

वायुनाभग्नेदद्याज्जर्जरितेत [illegible] प्राक्तैलाच्चापसिद्धञ्चस्यादेत [illegible] त्तरम् ॥ १६६ ॥

इति वृषमूलादिसकल्कवृषमूलादिचतैलम्।

४०० तोले रूसे की जड़ ४०० तोले गिलोय २०० तोले असगन्ध और २०० तोले चीता इनके काढ़े में २५६ दोसौ छप्पन तोले तैल तथा २५६ तोले दूध डालकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे इस तैल के देने से वायुके द्वारा टूटेहुये तथा जर्जर हु

CC-0. Sangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्ग अच्छे होजाते हैं यह तैल यदि पहिले कहेहुये कल्क डालकर पाक कियाजाय तो बहुत गुणदायक होता है॥ १६५। १६६॥

इति वृषमूलादिसकल्कंवृषमूलादितैल॥

रास्नाशिरीषयष्ट्याह्वशुण्ठीसहचरामृताः। श्योणाकदारुसम्याकाहयगन्धात्रिकण्टकाः॥ १६७॥

रास्ना सिरस मुलेठी सोंठि पीली कटसरैया गिलोय सरिवन देवदारु अमलतास असगंध तथा गोखुरू॥ १६७॥

एषांदशपलान्भागान्कषायमुपकल्पयेत्। ततस्तेनकषायेणसर्वगन्धैश्चकार्षिकैः॥ १६८॥

चालिस २ तोले इनसब औषधियों को जल में डालकर काढ़ाकरै फिर उस काढ़ा को छानकर उसमें सुगंधित वस्तुओंका तोले२ भर कल्क॥ १६८॥

दध्यारनालमाषाम्बुमूलकेक्षुरसैःशुभैः। पृथक्प्रस्थोन्मितैःसार्द्धंतैलप्रस्थंविपाचयेत्॥ १६९॥

दही कांजी उर्दोंका काढ़ा मूलीकारस ईखका रस और तैल चौंसठ२ तोले डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे॥ १६९॥

प्लीहमूत्रग्रहश्वासकासमारुतरोगनुत्। एतन्मूलकतैलाग्र्यंवर्णायुर्बलवर्द्धनम्॥ १७०॥

इतिरास्नातैलम्।

इस तैलके सेवनसे पिलही मूत्रकृच्छ्र श्वास खाँसी तथा वातरोग इन सबका नाश होताहै और वर्ण आयु तथा बलकी वृद्धि होती है इसको मूलकतैल कहते हैं॥ १७०॥

इति रास्नातैल॥

यवकोलकुलत्थानांमत्स्यानांशिग्रुबिल्वयोः। रसेनमूलकानाञ्चतैलंदधिपयोऽन्वितम्॥ १७१॥

यव बेर कुलथी मछली सहिंजन बेल तथा मूली के रस के साथ दूध तथा दहीयुक्त तैलका॥ १७१॥

साधयित्वाभिषग्दद्यात्सर्ववातामयापहम्। लशुनस्वरसेसिद्धंतैलमेभिश्चवातनुत्॥ १७२॥

पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैलबाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इसतैल के सेवनसे सम्पूर्ण वातरोगों का नाश होताहै इन पूर्वोक्त औषधियों के साथ औ लहसुन के रसके साथ पाक कियागया तैल वातरोगोंको नष्ट करता है॥ १७२॥

तैलान्येतान्यृतुस्नातामङ्गनांपाययेत्तच। पीत्वान्यतममेषांहिवन्ध्यापिजनयेत्सुतम्॥ १७३॥

यह जो सम्पूर्ण तैल कहेगयेहैं इनमेंसे कोई तैल ऋतुस्नाता (मासिकस्नान किये हुई) स्त्री को पिलावै इस से बंध्या स्त्री के भी पुत्र होता है॥ १७३॥

यच्चशीतज्वरेतैलमगुर्वाद्यमुदाहृतम्। अनेकशतशस्तच्चसिद्धंस्याद्वातरोगनुत्॥ १७४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतज्वरमें जो अनेकबारका सिद्ध (तजुर्बा किया हुआ) अगुर्वादि तैल कहागयाहै वह भी वातरोगों को नष्टकरताहै ॥ १७४ ॥

वक्ष्यन्तेयानितैलानिवातशोणितकेऽपिच । तानिचानिलशान्त्यर्थं सिद्धिकामःप्रयोजयेत् ॥ १७५ ॥

वातरक्त की चिकित्सा में जो तैल कहे जायँगे वह भी वातरोगों को शान्तकरने के लिये देने चाहिये ॥ १७५ ॥

नास्तितैलात्परंकिञ्चिदौषधंमारुतापहम् । व्यवाय्युष्णगुरुस्नेहात्संस्कारादबलवत्तरम् ॥ १७६ ॥

व्यवायी (सम्पूर्ण शरीरमें गुणोंको व्याप्त करके पचने वाला) उष्ण भारी स्नेह और संस्कार (अन्य द्रव्यों का संयोग) युक्त होने के कारण तैल से अधिक और कोई वायु को नष्ट करने वाली बलवान् वस्तु नहींहै १७६॥

गणैर्वातहरैस्तस्माच्छतशोऽथसहस्रशः। सिद्धंक्षिप्रतरंहन्तिसूक्ष्ममार्गस्थितान्गदान् ॥ १७७ ॥

इस से सैकड़ों तथा हजारों बार सिद्ध (तजुर्बा) किया हुआ तैल वातनाशक गुणों के द्वारा सूक्ष्म स्रोतोंमें स्थित वायुरोगों को शीघ्रही नष्ट करदेता है ॥ १७७ ॥

क्रियासाधारणीसर्वासंसृष्टेचापिशस्यते । वातपित्तादिभिःस्रोतःस्वावृतेषुविशेषतः ॥ १७८ ॥

वातरोगों में पित्त तथा कफ का संसर्ग होने पर त्रिदोषनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और वात तथा पित्तादि के द्वारा स्रोत ढकेहुये होनेपर विशेष करके त्रिदोषनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १७८ ॥

पित्तावृतेविशेषेणशीतामुष्णांतथाक्रियाम् । व्यत्यासात्कारयेत्सर्पिर्जीवनीयञ्चशस्यते ॥ १७९ ॥

पित्तके द्वारा वायु ढका हुआ होनेपर विशेषकरके उष्णतारहित शीतल क्रिया करनी चाहिये और जीवनीयगणके साथ पाककिया हुआ घी देना चाहिये ॥ १७९ ॥

धन्वमांसंयवाःशालिर्यापनाःक्षीरवस्तयः । विरेकःक्षीरपानञ्चपञ्चमूलीबलाश्रितम् ॥ १८० ॥

मरूदेश के जीवों का मांस यव शालि[illegible] दूधकी वस्ति विरेचन पंचमूल तथा ब[illegible] के साथ पाक कियेगये दूधका पीना ॥ [illegible]

मधुयष्टिबलातैलघृतक्षीरैश्चसेच[illegible]म् । पञ्चमूलकषायेणकुर्य्याद्वा[illegible]तवारिणा ॥ १८१ ॥

और मुलेठी तथा बरियारा के साथ[illegible] किये गये तैल घृत तथा दूध का सींचना[illegible] मूल का काढ़ा सींचना अथवा शीतल जल सींचना पित्तसे वायु ढका हुआ होनेपर हित होता है ॥ १८१ ॥

कफावृतेयवान्नानिजाङ्गलामृगपक्षिणः । स्वेदास्तीक्ष्णानिरूहाश्चवमनंसविरेचनम् ॥ १८२ ॥

कफके द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर यव जांगल देश के मृग तथा पक्षियों का मांस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीक्ष्ण स्वेद निरूहवस्ति वमन विरेचन॥१८२॥

जीर्णंसर्पिस्तथातैलंतिलसर्षपजंशुभम् । संसृष्टेकफपित्ताभ्यांपित्तमादौविनिर्जयेत् ॥ १८३ ॥

पुराना घी और तिल तथा सरसों का तैल हित होता है कफ तथा पित्त दोनों का वायु में संसर्ग होनेपर पहिले पित्त को शान्त करना चाहिये ॥ १८३ ॥

आमाशयगतंमत्वाकफंवमनमाचरेत् । पक्वाशयेविरेकन्तुपित्तेसर्वत्रगेतथा ॥ १८४ ॥

जो कफ आमाशय में होय तो वमन कराना चाहिये और पित्त चाहै पक्वाशय में स्थित होय चाहै सम्पूर्ण शरीर में स्थित होय विरेचन कराना चाहिये ॥ १८४ ॥

स्वेदैर्विष्यन्दितःश्लेष्मायदापक्वाशयाच्च्युतः । पित्तंवादर्शयेल्लिङ्गंवस्तिभिस्तौविनिर्हरेत् ॥ १८५ ॥

स्वेदन के द्वारा पिघला हुआ कफ अथवा पक्वाशयसे गिरा हुआ पित्त जब अपने लक्षणों को प्रकट करै तब वस्ति के द्वारा कफ तथा पित्तको निकालना चाहिये ॥ १८५ ॥

श्लेष्मणाऽनुगतंवातमुष्णैर्गोमूत्रसंयुतैः । निरूहैःपित्तसंसृष्टंनिर्हरेत्क्षीरसंयुतैः ॥ १८६ ॥

कफयुक्त वायु को गोमूत्रयुक्त उष्णनिरूहवस्ति के द्वारा और पित्तयुक्त वायु को दूधयुक्त निरूहवस्तिकेद्वारा निकालकर ॥१८६॥

मधुरौषधसिद्धैश्चतैलैस्तमनुवासयेत् । शिरोगतेतुसकफेधूमनस्यादिकारयेत् ॥ १८७ ॥

मधुर औषधियों के साथ पाक किये गये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये कफयुक्त वायुके शिरमें प्राप्त होनेपर धूमपान तथा नस्य आदि हित है ॥ १८७ ॥

हृतेपित्तेकफेयःस्याद्उरःस्रोतोऽनुगोऽनिलः । सशेषःस्यात्क्रियातत्रकार्याकेवलवातिकी ॥ १८८ ॥

पित्त तथा कफ के निकल जानेपर जो बची हुई वायु वक्षःस्थल के स्रोतों में स्थित होय तो केवल वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १८८ ॥

शोणितेनावृतेकुर्य्याद्वातशोणितकींक्रियाम् । प्रमेहवातमेदोघ्नीमामवातेप्रयोजयेत् ॥ १८९ ॥

रुधिर के द्वारा वायु ढका हुआ होने पर वातरक्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये आमवात में प्रमेह वायु तथा मेदा को नष्ट करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये॥१८९॥

स्वेदाभ्यङ्गारसाःक्षीरंस्नेहामांसावृतेमताः । महास्नेहोऽस्थिमज्जस्थेपूर्ववद्रेतसावृते ॥ १९० ॥

मांसके द्वारा वायु ढका हुआ होने पर स्वेद तैलमर्दन मांस रस दूध तथा घृतादि स्नेह हित होते हैं हड्डी तथा मज्जा में वायु स्थित होने पर और वीर्य्य के द्वारा वायु ढका हुआ होने पर पूर्वोक्त महास्नेह हित होताहै ॥ १९० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्नावृतेतुवमनंपाचनंदीपनंलघु। मूत्रलानितुमूत्रस्थेस्वेदाःसोत्तरवस्तयः॥ १९१॥

अन्न के द्वारा वायु ढका हुआ होने पर वमन पाचन दीपन तथा हल्की वस्तु हित है वायु के मूत्र में स्थित होनेपर मूत्रकारक वस्तु स्वेद तथा उत्तरवस्ति (एक प्रकारका अमल) हित है॥ १९१॥

एरण्डतैलंवर्च्चःस्थेस्निग्धोदावर्त्तवत्क्रिया। स्वस्थानस्थोबलीदोषःप्रोक्तंस्वैरौषधैर्जयेत्। वमनैर्वाविरेकैर्वावस्तिभिःशमनेनवा॥ १९२॥

मल में वायु स्थित होने पर रेंड़ी का तैल और उदावर्त्त रोग के समान स्निग्ध चिकित्सा हित हैं अपने स्थान में स्थित बलवान् दोषको पहिले कही हुई अपनी २ औषधियों से जीते अथवा वमन विरेचन वस्ति क्रिया या संशमन (दोषों को शान्तकरने वाली औषधियोंके द्वारा शान्त करै॥१९२॥

इत्युक्तमावृतेवातेपित्तादिभिर्यथायथम्। मारुतानांहिपञ्चानामन्योन्यावरणेशृणु। लिङ्गंव्याससमासाभ्यामुच्यमानंमयाऽनघ॥ १९३॥

इस प्रकार पित्तादि से ढके हुये वायु में यथायोग्य चिकित्सा कही गई अब हे अनघ(अग्निवेश)प्राणआदि पांचों वायु जबआपसमें एक दूसरेकेद्वारा ढकाहुआ होता है तब जो लक्षण होते हैं वह लक्षण मैं विस्तार तथा संक्षेप से कहताहूं तुम सुनो॥ १९३॥

प्राणोवृणोत्यपानादीन्प्राणंवृण्वन्ति तेऽपिच। उदानाद्यास्तथान्योऽन्यं सर्वएवयथाक्रमम्॥ १९४॥

प्राणवायु अपान आदि वायुओं को ढकता है और अपान आदि वायु प्राणवायु को ढकता है इसी प्रकार उदान आदि वायु आपस में एक दूसरे को क्रमसे ढकते हैं॥ १९४॥

विंशतिर्वरणान्येतान्युल्बणानांपरस्परम्। मारुतानांहिपञ्चानांतानि सम्यक्प्रतर्कयेत्॥ १९५॥

इस रीति से बढ़ेहुये पांचों वायुओं का परस्पर ढकना बीस प्रकारका होता है इसको अच्छी प्रकारसे जानना चाहिये॥ १९५॥

सर्वेन्द्रियाणांशून्यत्वंज्ञात्वास्मृतिलक्षयम्। व्यानेप्राणावृतेलिङ्गंतत्रोर्द्ध्वजत्रुकम्॥ १९६॥

प्राणवायुकेद्वारा व्यानवायु ढकाहुआ होनेपर सम्पूर्ण इन्द्रियों का शून्य होना स्मृति तथा बलकी क्षीणता यह लक्षण हैं इसमें हँसुवेके ऊपर होनेवाले रोगकी चिकित्सा करनी चाहिये॥ १९६॥

स्वेदोऽत्यर्थंलोमहर्षस्त्वक्दोषःसुप्तगात्रता। प्राणेव्यानावृतेतत्रस्नेहयुक्तंविरेचनम्॥ १९७॥

व्यानवायु के द्वारा प्राणवायु ढकाहुआ होनेपर बहुत स्वेद निकलना रोमांच त्वचा का दूषित होना और अंगोंका सुन्न होजाना यह लक्षण होते हैं इसमें स्नेहयुक्त विरेचन देना चाहिये॥ १९७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणावृतेसमानेस्युर्जडगद्गदमूकताः। चतुष्प्रयोगाःशस्यन्तेस्नेहास्तत्रसयापनाः ॥ १९८ ॥

प्राणवायुकेद्वारा समान वायु ढकाहुआ होनेपर जड़ता गद्गद वचन होना और मूक होजाना यह लक्षण होते हैं इसमें पान मर्दन नस्य तथा वस्तिकेद्वारा स्नेहका प्रयोग करना चाहिये और निरूहवस्ति देनी चाहिये ॥ १९८ ॥

समानेनावृतेऽपानेग्रहणीपार्श्ववेदना। शूलेचामाशयेतत्रदीपनंसर्पिरिष्यते ॥ १९९ ॥

समानवायुकेद्वारा अपानवायु ढकाहुआ होनेपर ग्रहणीदोष पसुलियों में पीड़ा और आमाशय में शूल यह लक्षण होते हैं इसमें दीपन घी देना चाहिये ॥ १९९ ॥

शिरोग्रहःप्रतिश्यायोनिःश्वासोच्छ्वासंग्रहः। हृद्रोगोमुखशोषश्चाप्युदानेप्राणसंवृते ॥ २०० ॥

प्राणवायुकेद्वारा उदानवायु ढकाहुआ होनेपर शिरमें पीड़ा प्रतिश्याय (जुकाम) श्वासके आने जानेका बन्द होजाना हृद्रोग और मुख का सूखना यह लक्षण होते हैं ॥ २०० ॥

ततोर्द्ध्वभागिकंकर्म्मकार्य्यमाश्वासनंतथा। कर्मौजोबलवर्णानांनाशोमृत्युरथापिवा। उदानेनावृतेप्राणेतंशनैःशीतवारिणा ॥ २०१ ॥

इसमें शरीरके ऊर्ध्वभाग की चिकित्सा और आश्वासन (तसल्ली देना) हितहै उदानवायुकेद्वारा प्राणवायु ढकाहुआ होनेपर कार्य्य ओज बल तथा वर्णका नाश होताहै अथवा मृत्युही होजाती है इसमें रोगीपर शीतल जल ॥ २०१ ॥

सिञ्चेदाश्वासयेच्चैवसुखश्चैवोपपादयेत्। ऊर्द्धगेनावृतेऽपानेच्छर्दिश्वासादयोगदाः। स्युर्वातेतत्रवस्त्यादिभोज्यश्चैवानुलोमनम् ॥२०२ ॥

छिड़कै आश्वासन करै (तसल्ली देवै) और रोगी को जिस तरह होसके प्रसन्नकरै ऊर्ध्वग वायुकेद्वारा प्राणवायु ढकाहुआ होने पर छर्दि तथा श्वास आदिक रोग होते हैं इसमें वस्ति आदि क्रिया करनी चाहिये और वायु को नीचे के मार्ग से निकालनेवाले भोजन देने चाहिये ॥ २०२ ॥

मेहोऽल्पोऽग्निरतीसारऊर्ध्वगेऽपानसंवृते। वातेस्याद्वमनंतत्रदीपनंग्राहिचाशनम् ॥ २०३ ॥

ऊर्ध्वग वायु अपान वायुकेद्वारा ढकाहुआ होनेपर प्रमेह मंदाग्नि अतीसार तथा छर्दि यह लक्षण होते हैं इसमें दीपन तथा ग्राही भोजन देना चाहिये ॥ २०३ ॥

वम्याध्मानमुदावर्त्तगुल्मार्त्तिपरिकर्तिकाः। लिङ्गंव्यानावृतेऽपानेतंस्निग्धैरनुलोमयेत् ॥ २०४ ॥

व्यान वायुकेद्वारा अपान वायु ढकाहुआ होनेपर छर्दि अफरा उदावर्त्त गुल्म पीड़ा तथा गुदामें कैंचीसे काटनेकीसी पीड़ा यह लक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होते हैं इसमें स्निग्ध वस्तुओंकेद्वारा वायु को नीचेके मार्गसे निकालै ॥ २०४ ॥

अपानेनावृतेव्यानेभवेद्विण्मूत्ररेतसाम् । अतिप्रवृत्तिस्तत्रापिसर्वंसंग्रहणंमतम् ॥ २०५ ॥

अपान वायुकेद्वारा व्यान वायु ढकाहुआ होनेपर विष्ठा मूत्र तथा वीर्य्य की अति प्रवृत्ति (बहुत निकलना) होती है इसमें औषध तथा भोजन आदि सब ग्राही देना चाहिये ॥ २०५ ॥

मूर्च्छातन्द्राप्रलापोऽङ्गसादोऽग्न्योजोबलक्षयः । समानेनावृतेव्याने व्यायामोलघुभोजनम् ॥ २०६ ॥

समान वायुकेद्वारा व्यान वायु ढकाहुआ होनेपर मूर्च्छा तन्द्रा प्रलाप (बकना) अंगोंका शिथिल होना और अग्नि ओज तथा बलकी क्षीणता यह लक्षण होते हैं इसमें व्यायाम कराना चाहिये और हलका भोजन देना चाहिये ॥ २०६ ॥

स्तब्धताल्पाग्नितास्वेदश्चेष्टाहानिर्निमीलनम् । उदानेनावृतेव्यानेतत्रपथ्यंमितंलघु ॥ २०७ ॥

उदानवायुकेद्वारा व्यान वायु ढकाहुआ होनेपर स्तब्धता मंदाग्नि स्वेद हाथ पैर न चलासकना और नेत्र बन्द रखना यह लक्षण होते हैं इसमें हलका स्वल्प तथा पथ्य भोजन देना चाहिये ॥ २०७ ॥

पञ्चान्योन्यावृतानेवंवातान्बुध्येतल- क्षणैः । एषांस्वकर्मणांहानिर्वृद्धिर्वावरणेमता ॥ २०८ ॥

इस प्रकार इन लक्षणों के द्वारा परस्पर ढकेहुये पांचों वायु जानना चाहिये इन वायुओंके कार्य्य की हानि अथवा वृद्धिकोही वायुओंका ढकाहुआ जानना चाहिये ॥२०८॥

यथास्थूलंसमुद्दिष्टमेतदावरणंपृथक् । सलिङ्गभेषजंसम्यक्शृणुत्वं बुद्धिवृद्धये ॥ २०९ ॥

यह वायुओंका आठ प्रकार का ढकाहुआ होना स्थूल रीति से कहागया है अब बुद्धि बढ़ाने के लिये सम्पूर्ण लक्षण तथा औषध कहताहूं तुम सुनो ॥ २०९ ॥

स्थानान्यवेक्ष्यवातानांवृद्धिंहानिं च कर्मणाम् । द्वादशावरणान्यन्यान्यभिलक्ष्यभिषग्जितम् ॥ २[१०] ॥ कुर्य्यादभ्यञ्जनस्नेहंपानवस्ति[प्र]वेशः । क्रममुष्णमनुष्णंवा[व्यत्या]सादवचारयेत् ॥ २११ ॥

स्थानों को देखकर और प्राणआदि वायुओंके कार्य्यों की वृद्धि तथा हानिको देखकर वायुओंका अन्य बारह प्रकारका ढकाजाना जानकर तैलमर्दन स्नेहपान तथा वस्तिआदिक सम्पूर्ण चिकित्सा करनी चाहिये और व्यत्यास से उष्ण अथवा शीत चिकित्साका क्रम करना चाहिये अर्थात् उष्णता में शीत और शीत में उष्ण चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २१० । २११ ॥

उदानेयोजयेदूर्द्ध्वमपानञ्चानुलोमये-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त् । समानंशमयेच्चैवत्रिधाव्यान न्तुयोजयेत् ॥ २१२ ॥

बुद्धिमान् वैद्य उदान वायुको ऊपरकी ओर युक्त करै अपान वायु को नीचेकी ओर युक्त करै समान वायु को औषधियों के द्वारा शान्त करै व्यानवायु को ऊपर नीचे तथा मध्यमें तीनों प्रकार से युक्त करै ॥ २१२ ॥

प्राणोरक्ष्यश्चतुर्भ्योऽपिस्थानेह्यस्य स्थितिर्ध्रुवा । स्वंस्थानंगमयेदेवंवृ तानेतान्विमार्गगान् ॥ २१३ ॥

और प्राण वायुका इन चारों प्रकार से रक्षा करै क्योंकि इसका अपने स्थान में रहना बहुत आवश्यक होता है इस प्रकार से अपने २ मार्गों को छोड़कर अन्यमार्गों में गयेहुये और परस्पर ढकेहुये वायुओं को अपने २ स्थान में लेजाना चाहिये ॥ २१३ ॥

मूर्च्छादाहोभ्रमःशूलंविदाहःशीत कामिता । छर्दनञ्चविदग्धस्यप्राणे पित्तसमावृते ॥ २१४ ॥

पित्तके द्वारा प्राण वायु ढकाहुआ होनेपर मूर्च्छा दाह भ्रम शूल विदाह (हृदय में जलन पैदा करके बहुत देर में अन्नका पचना) शीतकी इच्छा और अधपकी वस्तुका वमन होना यह लक्षण होते हैं ॥ २१४ ॥

ष्ठीवनंक्षवथूद्गारनिश्वासोच्छ्वाससं ग्रहः । प्राणेकफावृतेरूपाण्यरुचि श्छर्दिरेवच ॥ २१५ ॥

कफके द्वारा प्राण वायु ढकाहुआ होनेपर बहुत थूकना छींक डकार श्वासका रुकना अरुचि और छर्दि यह लक्षण होतेहैं॥२१५॥

मूर्च्छाद्यानिचरूपाणिदाहोनाभ्युर सोऽक्लमः । ओजोभ्रंशश्चसादश्चा प्युदानेपित्तसंवृते ॥ २१६ ॥

पित्त के द्वारा उदान वायु ढकाहुआ होने पर मूर्च्छाआदिक लक्षण जोकि पित्त से प्राण वायु ढकाहुआ होनेपर होते हैं वह इस में भी होते हैं और नाभि तथा वक्षस्थलमें दाह ग्लानि ओजका नाश और शिथिलता यह लक्षण भी होते हैं ॥ ११६ ॥

आवृतेश्लेष्मणोदानेवैवर्ण्यंवाक्स्व रग्रहः । दौर्बल्यंगुरुगात्रत्वमरुचि श्चोपजायते ॥ २१७ ॥

कफ के द्वारा उदान वायु ढकाहुआ होने पर विवर्णता (वर्णका बिगड़ जाना) वाणी तथा स्वरका रुकना दुर्बलता अंगोंका भारी होना और अरुचि यह लक्षण होतेहैं २१७॥

अतिस्वेदस्तृषादाहोमूर्च्छाचारुचिरे वच । पित्तावृतेसमानेस्यादुपघात स्तथोष्मणः ॥ २१८ ॥

पित्तके द्वारा समान वायु ढकाहुआ होने पर बहुत स्वेद निकलना तृषा दाह मूर्च्छा अरुचि और ऊष्मा का नाश यह लक्षण होते हैं ॥ २१८ ॥

अस्वेदोवह्निमान्द्यञ्चलोमहर्षस्तथैव च । कफावृतेसमानेस्याद्गात्राणाञ्चा तिशीतता ॥ २१९ ॥

कफ के द्वारा समान वायु ढकाहुआ होने पर स्वेदन निकलना मंदाग्नि रोमांच और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंगों का बहुत शीतल होना यह लक्षण होते हैं ॥ २१९ ॥

व्यानेपित्तावृतेतुस्याद्दाहःसर्वाङ्गगः क्लमः। गात्रविक्षेपसङ्गश्चससन्तापः सवेदनः ॥ २२० ॥

पित्तके द्वारा व्यानवायु ढकाहुआ होने पर दाह सम्पूर्ण अंगोंमें ग्लानि मालूम होना हाथ पैर आदि अंगोंका पटकना संताप और पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ २२० ॥

गुरुतासर्वगात्राणांसर्वसन्ध्यस्थिजारुजाः। व्यानेकफावृतेलिङ्गंगतिसङ्गस्तथाधिकः ॥ २२१ ॥

कफ के द्वारा व्यानवायु ढकाहुआ होने पर संपूर्ण अंगोंका भारी होना सम्पूर्ण संधि तथा हड्डियों में पीड़ा होना और चलने की शक्ति न रहना यह लक्षण होतेहैं ॥ २२१ ॥

हारिद्रमूत्रवर्चस्त्वक्तापश्चगुदमेढ्रयोः। लिङ्गंपित्तावृतेऽपानेरजसः संप्रवर्त्तनम् ॥ २२२ ॥

पित्तके द्वारा अपान वायु ढकाहुआ होने पर मलमूत्र तथा त्वचाका पीलाहोना गुदा तथा लिंग में ताप होना और रजबहना यह लक्षण होते हैं ॥ २२२ ॥

भिन्नामश्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चःप्रवर्त्तनम्। श्लेष्मणासंवृतेऽपानेकफमेहस्यचागमः ॥ २२३ ॥

कफ के द्वारा अपान वायु ढकाहुआ होनेपर फटेहुये आम कफ से युक्त भारी मल का निकलना और कफ प्रमेहों का उत्पन्न होना यह लक्षण होते हैं ॥ २२३ ॥

लक्षणानान्तुमिश्रत्वंपित्तस्यचकफस्यच। उपलक्ष्यभिषग्विद्वान्मिश्रमावरणंवदेत् ॥ २२४ ॥

बुद्धिमान् वैद्य पित्त तथा कफ दोनों के लक्षणोंको देखकर कफ तथा पित्त दोनों के द्वारा वायु ढकाहुआ है यह कहै ॥ २२४ ॥

यद्यस्यवायोर्निर्दिष्टंस्थानंतत्रेतरौ स्मृतौ। दोषौबहुविधान्व्याधीन्कुर्य्येतांयथानिजान् ॥ २२५ ॥

जिस वायुका जो स्थान कहागया [illegible] समें कफ और पित्त जाकर दूषित [illegible] अपने २ अनुसार अनेक प्रकारके रोग [illegible] उत्पन्न करते हैं ॥ २२५ ॥

आवृतंश्लेष्मपित्ताभ्यांप्राणमुदानमेवच। गरीयस्त्वेनपश्यन्ति भिषजःशास्त्रचक्षुषः ॥ २२६ ॥

शास्त्र के जाननेवाले वैद्य लोग क[illegible] पित्तके द्वारा ढकाहुआ प्राणवायु त[illegible] दानवायुको बहुत कठिन समझते हैं ॥ २२६ ॥

विशेषाज्जीवितंप्राणेउदानेसंश्रितंबलम्। स्यात्तयोःपीडनाद्धानिरायुषश्चबलस्यच ॥ २२७ ॥

क्योंकि मनुष्यों का जीना विशेष कर के प्राणवायुके आश्रित है और बल उदान वायुके आश्रित है इस से इनवायुओं के पीड़ित होने पर आयु तथा बल की हानि होती है ॥ २२७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्वेऽप्येतेपरिज्ञेयाःपरिसंवत्सरात्त था। उपेक्षणादसाध्याःस्युरथवाडु रुपक्रमाः॥ २२८॥

बीसो प्रकार के ढकेहुये वायु की चिकित्सा जो एक वर्षके भीतर न कीजाय तो वह असाध्य अथवा दुःखसाध्य होजातीहै२२८॥

हृद्रोगोविद्रधिःप्लीहागुल्मातिसारए वच। भवन्त्युपद्रवास्तेषामावृताना मुपेक्षणात्॥ २२९॥

इनकी शीघ्रही चिकित्सा न करनेसे हृद्रोग विद्रधि प्लीहा गुल्म और अतीसार यह उपद्रव होते हैं॥ २२९॥

तस्मादावरणंवैद्यःपवनस्योपलक्ष येत्। पञ्चात्मकस्यवातेनपित्तेन श्लेष्मणापिवा॥ २३०॥ भि षग्जितैरतःसम्यगुपलक्ष्यसमाचरे त्। अनभिष्यन्दिभिःस्निग्धैःस्रो तसांशुद्धिकारिभिः॥ २३१॥

इससे बुद्धिमान् वैद्य पित्त अथवा कफके द्वारा प्राण आदि पांचों वायुओंमें से कोई वायु ढकाहुआ जानकर अभिष्यन्द (चिकने पन से अथवा भारीपन से रसके बहनेवाली नसों को रोककर शरीर को भारी रखना) से रहित स्निग्ध और स्रोतों को शुद्ध करनेवाली औषधियों के द्वारा चिकित्सा करै॥ २३०। २३१॥

कफपित्ताविरुद्धंयद्यच्चवातानुलोम नम्। सर्वस्थानावृतेऽप्याशुतत्का र्यंमारुतेशुभम्॥ २३२॥

जो चिकित्सा कफ तथा पित्तके विरुद्ध न हो और वायु को नीचे के मार्गसे निकालती हो वह चिकित्सा प्राण आदि पांचों वायु ढकेहुये होनेपर भी शीघ्रही करनी चाहिये॥ २३२॥

यापनावस्तयःप्रायोमधुराःसानुवास नाः। प्रसमीक्ष्यबलाधिक्यंमृदुवा स्रंसनंहितम्॥ २३३॥

और निरूहवस्ति मधुर औषधियोंके द्वारा अनुवासनवस्ति तथा मृदु विरेचन बलकी अधिकता को देखकर देना चाहिये॥२३३॥

रसायनानांसर्वेषामुपयोगःप्रशस्य ते। शैलस्यजतुनोऽत्यर्थंपयसागु ग्गुलोस्तथा॥ २३४॥

वायुके ढकेहुये होनेपर सम्पूर्ण रसायनों का प्रयोग हित होता है दूधके साथ शिलाजतु तथा गुग्गुलका सेवन हित होताहै २३४॥

लेहंवाभार्गवप्रोक्तमभ्यस्येत्क्षीरभुङ्‌ रः। अभयामलकीयोक्तानेकाद शमिताशनः॥ २३५॥

अथवा क्षीराशी (अन्न को छोड़कर केवल दूधहीका पान करनेवाला) होकर भार्गवके कहेहुये अवलेह का सेवन करना और अभयामलकीय नाम रसायनपाद में कहीहुई गेरह रसायनों का सेवन करना हित होता है॥ २३५॥

अपानेनावृतेसर्वंदीपनंग्राहिभेषज म्। वातानुलोमनंयच्चपक्वाशयवि शोधनम्॥ २३६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातरक्त में वायु अधिक होनेपर विशेष करके नसोंका तनना शूल फड़कना सुईचुभने कीसी पीड़ा शोथका कृष्णवर्ण रूक्ष तथा श्याव (धुमैला) वर्णहोना शोथका कभी घटना कभी बढ़ना नाड़ी तथा अँगुलियों की संधियों का सिकुड़जाना अंगों का जकड़ना बहुतपीड़ा अंगोंका टेढ़ाहोना स्तम्भ और शीत से द्वेष होना यह लक्षण होते हैं ॥ २२।२३ ॥

श्वयथुर्भृशरुक्तोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते । स्निग्धरूक्षैःशमंनैतिकण्डूक्लेदान्वितोऽसृजि ॥ २४ ॥

वातरक्त में रुधिर अधिक होनेपर शोथ बहुत पीड़ा तथा तोद (सुईचुभने कीसी पीड़ा) युक्त ताम्रवर्ण चिमूचिमाहट युक्त खुजली तथा क्लेदसे युक्त और स्निग्ध तथा रूक्ष वस्तुओं से नहीं शान्त होनेवाला होता है ॥ २४ ॥

विदाहोवेदनामूर्च्छास्वेदस्तृष्णामदोभ्रमः । रागःपाकश्चभेदश्चशोकेचोक्तानिपैत्तिके ॥ २५ ॥

वातरक्त में पित्त अधिक होनेपर विदाह पीड़ा मूर्च्छा स्वेद तृषा मद भ्रम रक्तवर्ण पकना फटनेकीसी पीड़ा तथा शोथ यह लक्षण होते हैं ॥ २५ ॥

स्तैमित्यंगौरवंस्नेहःसुप्तिर्मन्दाऽरुचिःकफे । हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्वन्द्वंत्रिदोषजम् ॥ २६ ॥

वातरक्त में कफ अधिक होनेपर गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना भारीपन स्निग्धता सुप्त तथा स्वल्प पीड़ा यह लक्षण होता है हेतु तथा पूर्वोक्त लक्षणों के संसर्ग से द्वंद्वज तथा सन्निपातज वातरक्त जानना चाहिये ॥ २६ ॥

एकदोषानुगंसाध्यंनवंयाप्यंद्विदोषजम् । त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्युरुपद्रवाः ॥ २७ ॥

एक दोषकी अधिकतावाला तथा नवीन वातरक्त साध्य होताहै दोदोषोंकी अधिकतावाला वातरक्त याप्य होता है और तीनों दोषों की अधिकतावाला तथा उपद्रवयुक्त वातरक्त असाध्य होता है ॥ २७ ॥

अस्वप्नारोचकाश्वासमांसकोथशिरोग्रहाः । मूर्च्छाचमदरुक्तृष्णाज्वरमोहप्रवेपकाः ॥ २८ ॥

निद्रा का नाश अरुचि श्वास मांसका पकना शिरमें पीड़ा मूर्च्छा मद पीड़ा तृषा ज्वर मोहकम्प ॥ २८ ॥

हिक्कापाङ्गुल्यवीसर्पपाकतोदभ्रमक्लमाः । अङ्गुलीवक्रतास्फोटदाहमर्मग्रहार्बुदाः ॥ २९ ॥

हिचकी पंगु होना विसर्प (जहरवात) पकना सुईचुभने कीसी पीड़ा भ्रम ग्लानि अँगुलियोंका टेढ़ा होना छाले पड़जाना दाह मर्मों में पीड़ा होना और अर्बुद ॥ २९ ॥

एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यंमोहेनैकेनवापियत् । संप्रस्राविविवर्णञ्चस्तब्धमर्बुदकृच्चयत् ॥ ३० ॥

इन उपद्रवों से युक्त वातरक्त की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये अथवा केवल मोह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से युक्त वातरक्तकी भी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये जो वातरक्त मस्राव (पीपआदि-बहना) से युक्त विवर्ण (विगड़ेहुये वर्णवाला) स्तब्ध और अर्बुदरोग को उत्पन्न करनेवाला होवै उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ३० ॥

वर्जयेच्चैवसङ्कोचकरमिन्द्रियतापनम्। अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ ३१ ॥

जिस वातरक्त में हाथोंकी अंगुली टेढ़ी होजायँ और इन्द्रियां तापयुक्त होयँ उसकी भी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये जिस वातरक्त में थोड़े उपद्रव हों वह याप्य होताहै और उपद्रवरहित वातरक्त साध्य होताहै ॥ ३१ ॥

रक्तमार्गंनिहत्याशुशाखासन्धिषुमारुतः। निवेश्यान्योन्यमाबाध्यवेदनाभिर्हरेदसून् ॥ ३२ ॥

वायु शीघ्रही हाथ पैर तथा संधियोंमें प्रवेश करके रुधिर के मार्ग्ग को रोंकती है और फिर अन्य धातुओं को रोंककर प्राणों को नष्ट करती है ॥ ३२ ॥

तत्रसुश्वेदसृक्शृङ्गजलौकःसूच्यलाबुभिः। प्रच्छनैर्वाशिराभिर्वायथादोषंयथाबलम् ॥ ३३ ॥

वातरक्तमें दोष तथा बलके अनुसार सींगी जोंक सुई तोंबी पछना अथवा शिराव्यधन (फस्त खुलाना) के द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ ३३ ॥

रुग्दाहशूलतोदार्त्तादसृक्स्राव्यंजलौकसा। शृङ्गैस्तुवैहरेत्सुप्तिकण्डूचिमिचिमायनान् ॥ ३४ ॥

पीड़ा दाह शूल तोद (सुई चुभनेकीसी पीड़ा) से युक्त वातरक्त में जोंकों के द्वारा रक्त निकलवाना चाहिये सुन्न खुजली तथा चिम्चिमाहट युक्त वातरक्त में सिंगीकेद्वारा रक्त निकलवाना चाहिये ॥ ३४ ॥

देशाद्देशंव्रजत्स्राव्यंशिराभिःप्रच्छनेनवा। अङ्गग्लानौनतुस्राव्यंरूक्षेवातोत्तरश्चयत् ॥ ३५ ॥

और जिस वातरक्त में रुधिर एक स्थान से दूसरे स्थान को चलाजाताहो उसमें शिराव्यधन (फस्त खुलाना) तथा पछना के द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये वातरक्त में अंगों के म्लान होनेपर रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये और रूक्ष तथा अधिक वायुवाले वातरक्त में भी रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये ॥ ३५ ॥

गम्भीरंश्वयथुंस्तम्भंकम्पंस्नायुशिरामयान्। ग्लानिश्चापिससङ्कोचांकुर्य्याद्वायुरसृक्क्षयात् ३६ ॥

क्योंकि रुधिर के क्षीण होने से वायु गम्भीर (भीतर की ओर मविष्ट हुआ) शोथ स्तम्भ कम्प स्नायु तथा शिराके रोग ग्लानि तथा संकोच (अंगों का सिकुड़ना) को उत्पन्न करता है ॥ ३६ ॥

खाञ्ज्यादीन्वातरोगांश्चमृत्युंवात्यपसेचनात्। कुर्य्यात्तस्मात्प्रमाणेनस्निग्धाद्रक्तंविनिर्हरेत् ॥ ३७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत रुधिर निकलवाने से खंजता (लंगड़ा होना) आदिक वातरोग अथवा मृत्यु होती है इससे रोगी को स्निग्ध करके प्रमाण के अनुसार रुधिर निकलवाना चाहिये ३७॥

विरेच्यःस्नेहयित्वादौस्नेहयुक्तैर्विरेचनैः। रूक्षैर्वामृदुभिःशस्तंअसकृद्बस्तिकर्मच ॥ ३८ ॥

वातरक्तवाले को पहिले स्निग्ध करके स्नेहयुक्त अथवा रूक्ष मृदु विरेचनकारी औषधियोंकेद्वारा विरेचन देना चाहिये और वारंवार वस्ति देनी चाहिये ॥ ३८ ॥

सेकाभ्यङ्गप्रदेहान्नस्नेहाःप्रायोऽविदाहिनः। वातरक्तेप्रशस्यन्तेविशेषन्तुनिबोधमे ॥ ३९ ॥

वातरक्त में प्रायः जलन को नहीं पैदा करनेवाला सेक (तरारा) तैलादिमर्दन लेप अन्न तथा घृत आदि स्नेह हित होते हैं अब आगे इन चिकित्साओं की विशेषता कही जाती है सो सुनो ॥ ३९ ॥

बाह्यमालेपनाभ्यङ्गपरिषेकोपनाहनैः। विरेकास्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत् ॥ ४० ॥

उत्तान वातरक्त की लेप तैलआदि मर्दन तरारा तथा पुल्टिसकेद्वारा चिकित्साकरै और गम्भीर वातरक्तकी विरेचन आस्थापन वस्ति तथा स्नेहपान के द्वारा चिकित्साकरै ॥४०॥

सर्पिस्तैलवसामज्जापानाभ्यञ्जनवस्तिभिः। सुखोष्णैरुपनाहैश्चवातोत्तरमुपाचरेत् ॥ ४१ ॥

वायुकी अधिकतावाले वातरक्तमें घी तैल चर्वी तथा मज्जाका पान मर्दन तथा वस्तिकेद्वारा चिकित्साकरै और कुछ उष्ण पुल्टिस बांधै ॥ ४१ ॥

विरेचनैर्घृतक्षीरपानैःसेकैःसवस्तिभिः। शीतैर्निर्वापनैश्चापिरक्तपित्तोत्तरंजयेत् ॥ ४२ ॥

रुधिर तथा पित्तकी अधिकतावाले वातरक्तमें विरेचन घी तथा दुग्ध पीना तरारा वस्तिक्रिया और शीतल निर्वापन (दाह को शान्त करनेवाली औषध) इनकेद्वारा चिकित्साकरै ॥ ४२ ॥

वमनंमृदुनाऽत्यर्थंस्नेहसेकादिलङ्घनम्। कोष्णलेपाश्चशस्यन्तेवातरक्तेकफोत्तरे ॥ ४३ ॥

कफ की अधिकतावाले वातरक्त में मृदु (हलकी) वमनकारक औषधियों के द्वारा वमन स्वल्पस्नेह स्वल्पतरारा लंघन और कुछ उष्णलेप आदि के द्वारा चिकित्सा करै ॥ ४३ ॥

कफवातोत्तरेशीतैःप्रलिप्तेवातशोणिते। विदाहःशोथरुक्कण्डूविवृद्धिःस्तम्भनाद्भवेत् ॥ ४४ ॥

कफ तथा वायु की अधिकतावाले वातरक्त में शीतल लेप करने से स्तम्भ होजाने के कारण दाह शोथ पीड़ा तथा खुजली की अधिकता होती है ॥ ४४ ॥

वातपित्तोत्तरेदाहःक्लेदोऽवदारणं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेत् । उष्णैस्तस्माद्भिषग्दोषबलं बुद्ध्वाचरेत्क्रियाम् ॥ ४५ ॥

पित्त तथा रुधिरकी अधिकता वाले वातरक्त में उष्णलेप आदि करने से दाह क्लेद तथा अवदारण (त्वचा का फट जाना) होता है इससे बुद्धिमान् वैद्य दोषों के बल को जानकर चिकित्साकरै ॥ ४५ ॥

दिवास्वप्नंससन्तापंव्यायामंमैथुनंतथा । कटूष्णंगुर्वभिष्यन्दिलवणाम्लञ्चवर्जयेत् ॥ ४६ ॥

दिन में सोना अग्नि तथा धूपका संताप व्यायाम मैथुन और कडुई उष्ण भारी अभिष्यन्दी (रसके बहनेवाली नसोंको रोंककर शरीर को भारी रखनेवाली) नमकीन तथा खट्टी वस्तु यह सब वातरक्त में वर्जित हैं ॥ ४६ ॥

पुराणयवगोधूमनीवाराःशालिषष्टिकाः । भोजनार्थेरसार्थेवाविष्किरप्रतुदाहिताः ॥ ४७ ॥

वातरक्त में भोजन के निमित्त पुराने यव गेहूँ तिन्नी के चावल शालिधान तथा सांठी के चावल हित होते हैं बखेरकर खानेवाले बटेर तथा लवा आदि विष्किरजीवोंके और चोंचमारकर खानेवाले कबूतर आदि पक्षियों के मांसका रस हित होता है ॥ ४७ ॥

आढक्यश्चणकामुद्गामसूराःसमुकुष्ठकाः । यूषार्थेबहुसर्पिष्काःप्रशस्तावातशोणिते ॥ ४८ ॥

और अरहर चने मूंग मसूर तथा मोथका बहुत घृतयुक्त यूष वातरक्त में हित होताहै ॥ ४८ ॥

सुनिषण्णकवेत्राग्रकाकमाचीशतावरीः । वास्तुकोपोदिकाशाकंशाकंसौवर्चलंतथा ॥ ४९ ॥ घृतमांसरसेभृष्टंशाकसात्म्यायदापयेत् । व्यञ्जनार्थंतथागव्यंमाहिषाजंपयोहितम् ॥ ५० ॥

जिस वातरक्त वालेको शाकखाने का अभ्यासहो उसे मिरियारी बेंतका अग्रभाग काकमाची शतावर बथुई पोय तथा हुरहुर इनका शाक घी तथा मांसके रसमें भूनकर व्यंजन के (तरकारी के) निमित्त खाने को देवे और भैंस तथा गौका दूध हित होता है ॥ ४९ । ५० ॥

इतिसंक्षेपतःप्रोक्तंवातरक्तचिकित्सितम् । एतदेवपुनःसर्वंव्यासतःसंप्रवक्ष्यते ॥ ५१ ॥

इस प्रकार से वातरक्त की चिकित्सा संक्षेपपूर्वक कहीगई अब यही सब चिकित्सा विस्तारसे कहीजाती है ॥ ५१ ॥

श्रावणीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकैःसमैः । सिद्धंसमधुकैःसर्पिःसक्षीरंवातरक्तनुत् ॥ ५२ ॥

भुँडली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक तथा मुलेठी इनके कल्क और दूध के साथ पाक कियागया घी वातरक्तको नष्ट करता है ॥ ५२ ॥

बलामतिबलांमेदामात्मगुप्तांशताव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रीम् । काकोलींक्षीरकाकोलींरास्ना मृद्धिञ्चपेषयेत् ॥ ५३ ॥

बरियारा ककैहा मेदा किवाँच शतावर काकोली क्षीरकाकोली रास्ना तथा ऋद्धि इनके कल्क ॥ ५३ ॥

घृतंचतुर्गुणक्षीरंतैःसिद्धंवातरक्तनुत् ।हृत्पाण्डुरोगवीसर्पकामलाज्वरनाशनम् ॥ ५४ ॥

और चौगुने दूध के साथ पाक कियागया घी वातरक्त हृद्रोग पाण्डुरोग जहरवात कामला तथा ज्वरको नष्ट करता है ॥ ५४ ॥

तामलक्याद्धिकाकोल्याःपिप्पलीत्रायमाणयोः । कशेरुकाकषायेण कल्कैरेभिःपचेद्घृतम् ॥ ५५ ॥

भूमिआमला काकोली क्षीरकाकोली पीपरि त्रायमाण तथा कसेरू इनके काढ़े तथा कल्क के साथ पाक कियागया घी वातरक्त को नष्टकरता है ॥ ५५ ॥

दत्त्वापरूषकद्राक्षाकाश्मर्य्येक्षुरसान्समान् ।पृथग्विदार्य्याश्चरसंतथा क्षीरंचतुर्गुणम् ॥ ५६ ॥ एतत्प्रयोगिकंसर्पिःपारूषकमितिस्मृतम् । वातरक्तेक्षतेक्षीणेवीसर्पेपैत्तिकेज्वरे ॥ ५७ ॥

इति पारूषकंघृतम् ।

फालसा मुनक्का खँभारीके फल ईख तथा बिलाईकन्द इनके अलग २ समभाग रस और चौगुन दूधके साथ पाक कियागया घी पारूषक घी कहलाताहै यहघी वातरक्त क्षतक्षीण जहरवात तथा पित्तज्वर में हित होता है ॥ ५६ । ५७ ॥

इतिपारूषकघृत ॥

द्वेपञ्चमूलेत्वर्षाभूमेरण्डंसपुनर्नवम् । मुद्गपर्णीमहामेदांमाषपर्णींशतावरीम् ॥ ५८ ॥

दशमूल श्वेत गदहपूर्णा अरण्ड की जड़ लाल गदहपूर्णा मुद्गपर्णी महामेदा माषपर्णी शतावरि ॥ ५८ ॥

शङ्खपुष्पीमवाक्पुष्पींरास्नामतिबलांबलाम् । पृथग्द्विपलिकंकृत्वाजलद्रोणेविपाचयेत् ॥ ५९ ॥

शंखपुष्पी सौंफ रास्ना ककैहा तथा बरियारा आठ २ तोले यह सब औषधि १०२४ तोले जल में डालकर पाक करै ॥ ५९ ॥

पादशेषेसमंक्षीरंधात्रीक्षुच्छागलान्रसान् । घृताढकेनसंयोज्यशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥ ६० ॥

जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस में दूध २५६ तोले आमले का रस २५६ तोले ईख का रस २५६ तोले बकरे के मांस का रस २५६ तोले घी २५६ तोले मिलाकर मन्द २ अग्नि से पकावै ॥ ६० ॥

कल्कानावाप्यमेदेद्वेकाश्मर्य्यफलमुत्पलम् । त्वक्क्षीरींपिप्पलींद्राक्षांपद्मबीजंपुनर्नवाम् ॥ ६१ ॥

और मेदा महामेदा खंभारी के फल नील

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमल वंशलोचन पीपरि मुनक्का कमलगट्टे गदहपूर्णा ॥ ६१ ॥

नागरंक्षीरकाकोलींसमङ्गांबृहतीद्वयम् । वीरांशृङ्गाटकंभव्यमुरुमालंनिकोचकम् ॥ ६२ ॥

सोंठि क्षीरकाकोली लजालू भटकटैया वड़ी भटकटैया केला सिंघाड़ा भव्य उरुमाल पिस्ता ॥ ६२ ॥

बदराक्षोटवातामसुञ्जाताभिषुकांस्तथा । एतैर्घृताढकेसिद्धेक्षौद्रंशीतेप्रदापयेत् ॥ ६३ ॥ सम्यक्सिद्धश्चविज्ञायसुगुप्तंसन्निधापयेत् । कृतरक्षाविधिंतचप्राशयेदक्षसम्मितम्॥६४॥

बेर अखरोट बदाम शरकी तथा फालसा इनका कल्क डालकर पाककरै जव पानी जल जाय केवल घी बाकीरहै तब उतारकर छान लेवै फिरशीतल होजाने पर इस में शहद डालकर अच्छे प्रकार से रक्षित करके रक्खै औ रक्षाविधि करके इस घी में से तोला २ भर रोज खावे ॥ ६३ । ६४ ॥

पाण्डुरोगंज्वरंहिक्कांस्वरभेदंभगन्दरम् । पार्श्वशूलंक्षयंकासंप्लीहानंवातशोणितम् ॥ ६५ ॥

इस से पाण्डुरोग ज्वर हिचकी स्वरभंग भगन्दर पशुलियों की पीड़ा क्षयी खाँसी पिलही वातरक्त ॥ ६५ ॥

क्षतशोषमपस्मारमश्मरींशर्करास्तथा । सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्चमूत्रसङ्गञ्चनाशयेत् ॥ ६६ ॥

क्षत शोष मिरगी पथरी शर्करा सर्वाङ्ग वात एकाङ्गवात तथा मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है ॥ ६६ ॥

बलवर्णकरंधन्यंबलीपलितनाशनम् । जीवनीयमिदंसर्पिर्वृष्यंबन्ध्यासुतप्रदम् ॥ ६७ ॥

और झुर्री तथा पलित (बालोंका श्वेतहोना) का भी नाश होता है वल तथा वर्ण की वृद्धि होती है और बन्ध्या स्त्रियों के भी पुत्र होता है यह घी धन्य है आयु को बढ़ाता है और कामियों के लिये हित होताहै ॥६७॥

अग्निवेशायगुरुणाकृष्णात्रेयेण भाषितम् ॥ ६८ ॥

इति द्विपञ्चमूलादिघृतम् ।

कृष्णात्रेयगुरुजीने अग्निवेश से इसको कहाहै ॥ ६८ ॥

इतिद्विपंचमूलादिघृत ॥

द्राक्षामधुकतोयाभ्यांसिद्धंवासासितोपलम् ॥

इतिद्राक्षादिघृतम् ।

पिबेद्धृतंतथाक्षीरंगुडूचीस्वरसेशृतम् ॥ ६९ ॥

इतिगुडूच्यादिघृतम् ।

मुनक्का तथा मुलेठी के काढ़े के साथ पाक कियेगयें घी में मिश्री डालकर पीनेसे और गिलोय के रसके साथ पाक कियेगये दूध में मिश्री डालकर पीने से वातरक्त का नाश होता है ॥ ६९ ॥

इतिद्राक्षादि तथा गुडूच्यादिघृत ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवकर्षभकौमेदामृष्यप्रोक्तांशतावरीम् । मधुकंमधुपर्णीञ्चकाकोलीद्वयमेवच ॥ ७० ॥

जीवक ऋषभक मेदा किवांच शतावरि मुलेठी गँभारी काकोली क्षीरकाकोली ७० ॥

मुद्गमाषाख्यपर्णिन्यौदशमूलंपुनर्नवाम् । बलामृताविदार्य्यश्वसाश्वगन्धाश्मभेदकाः ॥ ७१ ॥

मुद्गपर्णी माषपर्णी दशमूल गदहपूर्णा बरियारा गिलोय बिलाईकन्द असगंध तथा पाषाणभेद (हजरतजहूर पत्थर) ॥ ७१ ॥

एषांकषायकल्काभ्यांसर्पिस्तैलञ्च साधयेत् । लाभतश्चवसामज्जधन्वप्रतुदवैष्किरान् ॥ ७२ ॥

इनकेकल्क तथा काढ़े के साथ पाक किये गये घी तथा तैलके सेवनसे वातरक्तका नाश होता है मरुदेश के जीव टोंटमारकर खाने वाले कबूतर आदि पक्षी और बखेरकर खानेवाले बटेर तथा लवाआदि पक्षी जितने मिलसकैं उनकी चर्ब्बी तथा मज्जाको लेकर ॥ ७२ ॥

चतुर्गुणेनपयसातत्सिद्धंवातशोणितम् । सर्वदेहाश्रितंहन्तिव्याधीन्घोरांश्चवातजान् ॥ ७३ ॥

चौगुने दूधके साथ पाककरै जब दूधका पानी जलजाय तब उतारकर छानलेवे इसके सेवनसे सम्पूर्ण शरीर में स्थित वातरक्त और भयानक वातरोगोंकानाश होताहै ॥ ७३ ॥

स्थिराश्वदंष्ट्राबृहतीशारिवासशतावरी । काश्मर्य्याण्यात्मगुप्ताचवृश्चीरंद्वेबलेतथा ॥ ७४ ॥

शालिपर्णी बड़ी भटकटैया साँव शतावर खँभारी के फल किवाच वृश्चीर बरियारा तथा ककैहा ॥ ७४ ॥

एषांक्काथेचतुःक्षीरेपृथक्तैलंपृथग्घृतम् । मेदाशतावरीयष्टिजीवन्तीजीवकर्षभैः ॥ ७५ ॥ पक्कामात्रात तःक्षीरत्रिगुणाह्यर्द्धशर्करा । खजेन मथितापेयावातरक्तेत्रिदोषजे ॥ ७६ ॥

इनके काढ़े के मेदा शतावर मुलेठी जीवन्ती जीवक तथा ऋषभक इनके कल्कके और चतुर्गुण दुग्धके साथ घी तथा तैलको अलग अलग पाककरै फिर इस घी तथा तैल को तिगुने दूध तथा अर्द्धभाग शक्कर में मिलाकर मथके पीवे इससे त्रिदोषजवातरक्त शान्त होता है ॥ ७५ । ७६ ॥

तैलंपयःशर्कराञ्चपाययेद्वासुमूर्च्छिताम् । सर्पिस्तैलसिताक्षौद्रैर्मिश्रंवापिपिबेत्पयः ॥ ७७ ॥

तैल दूध तथा शक्कर को एकमें मिलाकर त्रिदोषज वातरक्त में पीवे अथवा घी तैल शक्कर शहद तथा दूध एकमें मिलाकर पीवे ॥ ७७ ॥

अंशुमत्याभृतःप्रस्थःपयसःससितोपलः । पानेप्रशस्यतेतद्वत्पिप्पलीनागरैःभृतः ॥ ७८ ॥

शालिपर्णी के साथ अथवा पीपरि सोंठि के साथ पाक कियेगये ६४. तोले

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में मिश्री मिलाकर पीनेसे वातरक्तका नाश होता है ॥ ७८ ॥

बलाशतावरीरास्नादशमूलैःसपीलुभिः । श्यामैरण्डस्थिराभिश्चवातात्तिघ्नंशृतंपयः ॥ ७९ ॥

बरियारा शतावर रास्ना दशमूल पीलू कालीसाँव अरण्ड तथा सरिवन इनके साथ पाक कियागया दूध पीनेसे वातज़ पीड़ाओंका नाश होता है ॥ ७९ ॥

धारोष्णंमूत्रयुक्तंवाक्षीरंदोषानुलोमनम् । पिबेद्वासत्रिवृच्चूर्णंपित्तरक्तावृतानिलः ॥ ८० ॥

पित्त तथा रुधिर के द्वारा वायु ढकाहुआ होनेपर धारोष्ण दूध गोमूत्रयुक्त दूध अथवा निशोथके चूर्ण से युक्त दूध दोषोंको नीचे के मार्ग से निकालने के लिये पीना चाहिये ॥ ८० ॥

क्षीरेणैरण्डतैलंवाप्रयोगेणपिबेन्नरः। बहुदोषोविरेकार्थंजीर्णेक्षीरौदनाशनः ॥ ८१ ॥

बहुत दोष वाले मनुष्यको विरेचन के लिये एरण्डका तैल दूध में मिलाकर पीना चाहिये और उसके पचजाने पर दूध भात खाना चाहिये ॥ ८१ ॥

कषायमभयानांवाघृतभृष्टंपिबेन्नरः । क्षीरानुपानंत्रिवृता चूर्णंद्राक्षारसेनवा ॥ ८२ ॥

हड़ों के काढ़ेको घीमें छौंककर पीने से वातरक्त का नाश होता है निशोथके चूर्णको मुनक्के के काढ़ेमें मिलाकर पीके ऊपरसे दूध पीनेसे वातरक्तका नाश होता है ॥ ८२ ॥

काश्मर्य्यंत्रिवृतांद्राक्षांचूर्णंद्राक्षारसेनवा । काश्मर्यत्रिवृतांद्राक्षांत्रिफलांसपरूषकाम् ॥ ८३ ॥

खँभारी के फल निशोथ तथा मुनक्का के चूर्ण को मुनक्का के काढ़ा में मिलाकर पीने से वातरक्त का नाश होता है खँभारी के फल निशोथ मुनक्का त्रिफला तथा फालसा ॥ ८३ ॥

शृतांपिबेद्विरेकायलवणक्षौद्रसंयुताम् । त्रिफलायाःकषायंवापिबेत्क्षौद्रेणसंयुतम् ॥ ८४ ॥

इनके काढ़े में सैंधवलवण तथा शहद मिलाकर वातरक्त में विरेचन के निमित्त पीवे त्रिफला के काढ़े में शहद डालकर पीने से वातरक्तका नाश होता है ॥ ८४ ॥

धात्रीहरिद्रमुस्तानांकषायंवाकफाधिके । योगैश्चकल्पविहितैरसक्तंविरेचयेत् ॥ ८५ ॥ मृदुभिः स्नेहसंयुक्तैर्ज्ञात्वावातंमलावृतम् । निर्हरेद्वामलंतस्यसघृतैःक्षीरवस्तिभिः ॥ ८६ ॥

कफकी अधिकतावाले वातरक्तमें आंवला हल्दी तथा नागरमोथा के काढ़े में शहद मिलाकर पीवै वातरक्त में वायु को मलकेद्वारा ढकाहुआ जानकर कल्पस्थान में कहेहुये स्नेहयुक्त मृदु (हल्के) योगोंकेद्वारा वारंवार वमन तथा विरेचन कराना चाहिये अथवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घृतयुक्त दूधकी वस्तियोंकेद्वारा मल निकाल-ना चाहिये ॥ ८५ । ८६ ॥

नहिवस्तिसमंकिञ्चिद्वातरक्तचिकित्सितम्। वस्तिवंक्षणपार्श्वोरुपर्वास्थिजठरार्त्तिषु ॥ ८७ ॥

क्योंकि वस्ति (अमल) से बढ़कर वातरक्त की कोई चिकित्सा नहीं है वस्ति वंक्षण (जंघों की संधि) पशुली जांघ पोरुवे हड्डी तथा उदर इनकी पीड़ा में ॥ ८७ ॥

उदावर्त्तेचशस्यन्तेनिरूहाःसानुवासनाः। दद्यात्तैलानिचेमानिवस्तिकर्मणिबुद्धिमान्। नस्याभ्यञ्जनसेकेचदाहशूलोपशान्तये ॥ ८८ ॥

और उदावर्त्तरोग में निरूह तथा अनुवासनवस्ति हित होती है बुद्धिमान् वैद्य वातरक्त में दाह तथा शूल को शान्त करने के लिये वस्तिक्रिया नस्यमर्दन तथा तरारा के द्वारा आगे कहेजानेवाले इन तैलों का प्रयोग करै ॥ ८८ ॥

मधुयष्ट्यास्तुलायास्तुकषायेपादशेषिते। तैलाढकंसमक्षीरंपचेत्कल्कैःपलोन्मितैः ॥ ८९ ॥

४०० तोले मुलेठी के चौथाई बाकीरहे काढ़ेमें २५६ तोले तैल २५६ तोले दूध और चार चार तोले ॥ ८९ ॥

शतपुष्पावरीमूर्वापयस्यागुरुचन्दनैः। स्थिराहंसपदीमांसीद्विमेदामधुपर्णिभिः ॥ ९० ॥

सौंफ शतावर बिदारीकन्द दूबी असगन्ध च-न्दन शालपर्णी हँसपदी जटामासी मेदा महामेदा मधुपर्णी ॥ ९० ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीतामलक्यृद्धिपद्मकैः। जीवकर्षभजीवन्तीत्वक्पत्रनखवालकैः ॥ ९१ ॥

काकोली क्षीरकाकोली भूमिआमला ऋद्धि पद्माख जीवन्ती जीवक ऋषभक तज तेजपात नखी सुगन्धवाला ॥ ९१ ॥

प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठासारिवैन्द्रीवितुन्नकैः। चतुःप्रयोगात्तद्धन्तितैलंमारुतशोणितम् ॥ ९२ ॥ सोपद्रवंसाङ्गशूलंसर्वगात्रानुगंतथा। वातासृक्पित्तदाहार्त्तिज्वरघ्नंबलवर्द्धनम् ॥ ९३ ॥

पुँडरिया मँजीठ साँव इन्द्रायण तथा धनियां इनका कल्क मिलाकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे इस तैलका पान मर्दन नस्य तथा वस्तिक्रियाकेद्वारा सेवन करने से उपद्रव तथा शरीरकी पीड़ायुक्त और सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त वातरक्त का नाश होता है पित्तजदाह पीड़ा तथा ज्वरका नाश होताहै और बलकी वृद्धि होती है ॥ ९२ । ९३ ॥

मधुकस्यशतंद्राक्षाखर्जूराणिपरूषकम्। मधुकौदनपाक्यौचप्रस्थंमुञ्जातकस्यच ॥ ९४ ॥

महुवा चारसौ तोले मुनक्का खजूर फालसा मुलेठी ओदन पाकी तथा मूंज चौंसठ चौंसठ तोले ॥ ९४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काश्मर्य्याढकमित्येतच्चतुर्द्रोणेपचेद्पाम् । शेषेऽष्टभागेपूतेचतस्मिँस्तैलाढकंपचेत् ॥ ९५ ॥

और खँभारी के फल २५६ तोले इन सबको १।ऽ१ सेर १६ तोले जलमें डालकर पाककरै जब अष्टमांश (आठवां हिस्सा) जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवे फिर उसमें तैल २५६ तोले ॥ ९५ ॥

तथामलककाश्मर्य्यविदारीक्षुरसैः समैः । चतुर्द्रोणेनपयसाकल्कंद्त्वापलोन्मितम् ॥ ९६ ॥

आमले का रस २५६ तोले खँभारीके फलोंकारस२५६तोले बिलाईकन्दकारस२५६ तोले ईखका रस २५६ तोले दूध १।ऽ१ सेर १६ तोले ॥ ९६ ॥

कदम्बामलकाक्षोटपद्मबीजंकशेरुकम् । शृङ्गाटकंशृङ्गवेरंलवणंपिप्पलींसिताम् ॥ ९७ ॥

और कदम्ब आमला अखरोट कमलगट्टे कसेरू सिंघाड़े सोंठि सैंधवलवण पीपरि शकर ॥ ९७ ॥

जीवनीयैश्चसंसिद्धंक्षौद्रप्रस्थेनसंसृजेत् । नस्याभ्यञ्जनपानेषुवस्तौचापिनियोजयेत् ॥ ९८ ॥

तथा जीवनीयगणकी औषधि इन सब चार २ तोले औषधियों का कल्क डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे फिर शीतल होजाने पर इस तैल में चौंसठि तोले शहद मिलावे नस्यमर्दन पान तथा वस्ति क्रियाके द्वारा इस तैल का सेवनकरे ॥ ९८ ॥

वातव्याधिषुसर्वेषुमन्यास्तम्भेहनुग्रहे । सर्वाङ्गैकाङ्गवातेचक्षतक्षीणेक्षतज्वरे ॥ ९९ ॥

इस से सम्पूर्ण वात रोग गले के पीछे की नसका जकड़ना जावड़ेका जकड़ना सर्वाङ्गवात एकाङ्गवात क्षतक्षीण क्षतज्वर ॥ ९९ ॥

सुकुमारकमित्येतद्वातासृगामयनाशनम् । स्थिरवर्णकरंतैलमारोग्यबलपुष्टिदम् ॥ १०० ॥

इति सुकुमारकतैलम् ।

तथा वात रक्त इन रोगों का नाश होताहै इस तैल को सुकुमारक कहते हैं यह वर्ण को स्थिर करता है और आरोग्य बल तथा पुष्टता को करता है ॥ १०० ॥

इति सुकुमारक तैल ॥

गुडूचींमधुकंह्रस्वंपञ्चमूलंपुनर्नवाम् । रास्नामैरण्डमूलञ्चजीवनीयानिलाभतः ॥ १०१ ॥

गिलोय मुलेठी छोटा पंचमूल गदहपूर्णा रास्ना अरण्ड की जड़ तथा जीवनीयगण की यथालाभ (जितनी मिलसकें) औषधि ॥ १०१ ॥

पलानांशतकैर्भागैर्बलापञ्चशतंतथा । कोलबिल्वंयवान्माषान्कुलुत्थांश्चाढकोन्मितान् ॥ १०२ ॥

चार चारसौ तोले वरियारा ॥ऽ५ सेर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बेर बेल यव उर्द तथा कुलथी एक २ आढक (२५६ तोले)॥ १०२॥

काश्मर्याणांसुशुष्काणांद्रोणंद्रोण शतेऽम्भसि। साधयेज्जर्जरंधौतं चतुर्द्रोणग्वशेषयेत्॥ १०३॥

और खँभारी के सूखे फल ।ऽ२ सेर चौंसठ तोले इन सबको ३२ऽ मन जल में डालकर पाककरै जब १।ऽ१ सेर १६तोले जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे॥ १०३॥

तैलद्रोणंपचेत्तेनदत्त्वापञ्चगुणंप यः। पिष्ट्वात्रिपलिकश्चैवंचन्दनो शीरकेशरान्॥ १०४॥

फिर उस जल में ।ऽ२ सेर ६४ तोले तैल १॥ऽ४ सेर दूध और बारह बारह तोले चन्दन खस नागकेशर॥ १०४॥

पत्रैलागुरुकुष्ठानितगरंमधुयष्टिका म्। मञ्जिष्ठाष्टपलश्चैवतत्सिद्धंसा र्वयौगिकम्॥ १०५॥

तेजपात छोटी इलायची अगर कूट तगर तथा मुलेठी का कल्क और ३२ तोले मँजीठ का कल्क (पानीके साथ पिसीहुई औषधिके लोंदे को कल्क कहते हैं) डालकर पाककरै जब पानी जलजावे तैल बाकी रहै तब उतार कर छानलेवे इस तैल का पान आदि सम्पूर्ण योगोंके द्वारा सेवन करनेसे॥ १०५॥

वातरक्तेक्षतेक्षीणेभारार्त्तेक्षीणरेत सि। वेपनाक्षिप्तभग्नानांसर्वाङ्गे काङ्गरोगिणाम्॥ १०६॥

वात रक्त क्षतक्षीण भार उठाने से हुई पीड़ा वीर्य्य की क्षीणता कम्प आक्षेप अङ्गों का टूटना सर्वाङ्गवात एकाङ्गवात॥ १०६॥

योनिदोषमपस्मारमुन्मादंखञ्जप ङ्गुताम्। हन्यात्पुंसवनंचैतत्तैला ग्र्यममृताह्वयम्॥ १०७॥

इति अमृताद्यंतैलम्।

योनिदोष मिरगी उन्माद लंगड़ा होना तथा पँगुला होना इन रोगों का नाश होता और पुत्र उत्पन्न होताहै यह सम्पूर्ण तैलों में श्रेष्ठ है इसको अमृता तैल कहते हैं॥ १०७॥

इति अमृता तैल॥

पद्मवेतसयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्प लैः। पृथक्पञ्चपलैर्दर्भबलाचन्दन किंशुकैः॥ १०८॥

कमल वेत मुलेठी रीठा पद्माख नीलकमल कुश बरियारा चन्दन तथा टेसू के फूल बीस २ तोले॥ १०८॥

जलेश्रृतैःपचेत्तैलंप्रस्थंसौवीरसम्मि तम्। लोध्रकालीयकोशीरजीवक र्षभकैःसमैः॥ १०९॥

इन औषधियों के काढ़े में तैल ६४ तोले और सौवीरक (काँजीविशेष) ६४ तोले और लोध पीतचन्दन खस जीवक ऋषभक॥ १०९॥

मदयन्तीलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः प्रपौण्डरीककाश्मर्य्यमांसीमेदाभि यङ्गुभिः॥ ११०॥

मल्लिका (बेला) असपरक तेजपात कमल

की पत्ती तथा केशर पुँडरिया खँभारीके फल जटामांसी मेदा प्रियंगु ॥ ११० ॥

कुंकुमस्यपलार्द्धेनमञ्जिष्ठायाःपले नच। महापद्ममिदंतैलंवातासृग्ज्वरनाशनम् ॥ १११ ॥

इति महापद्मंतैलम् ।

तथा केशर दोदोतोले और मँजीठ चारतोले इनका कल्क डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहै तब उतार कर छान लेवे इसके सेवन से वातरक्त तथा ज्वर का नाश होता है इसको महापद्मतैल कहते हैं ॥ १११ ॥

इति महापद्मतैल ॥

पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीक्काथसाधितम् । स्यात्पिष्टैःसर्जमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः ॥ ११२ ॥ खुड्डाकपद्मकमिदंतैलंवातास्रदाहनुत् । आत्रेयेणाग्निवेशायभाषितंहितकाम्यया ॥ ११३ ॥

इति खुड्डाकपद्मतैलम् ।

पद्माख मुलेठी खस तथा हल्दी इनके काढ़े और राल मँजीठ क्षीरकाकोली काकोली तथा चन्दन इनके कल्कके साथ पाक किया-गया तैल वातरक्त तथा दाह को नष्ट करता है इसे खुड्डाक पद्मतैल कहते हैं इसको आत्रेयजीने अग्निवेश से हित के लिये कहा है ॥ ११२। ११३ ॥

इति खुड्डाकपद्मतैल ॥

शतेनयष्टिमधुकात्साध्यंदशगुणंपयः । तस्मिंस्तैलेचतुर्द्रोणेमधुकस्यपलेनतु । सिद्धंमधुककाश्मर्य्यरसैर्वावातरक्तनुत् ॥ ११४ ॥

चारतोले मुलेठी के कल्क और इसी ४ द्रोण तैल में ४ तोला महुआ ४०० तोला मुलेठी दशगुणा दूध डालकर पाककरे अथवा महुआ और खँभारी के रसमें पाककरे इस के सेवनसे भी वातरक्त का नाश होता है ॥ ११४ ॥

मधुपर्ण्याःपलंपिष्ट्वातैलप्रस्थंचतुर्गुणे । क्षीरेसाध्यंशतकृत्वस्तदेवमधुकाच्छृतैः ॥ ११५ ॥

तथा चतुर्गुण दूधके साथ सौवार ६४ तोले तैलका पाककरै और मुलेठीके कल्कके साथ भी सौबार पाककरै ॥ ११५ ॥

सिद्धंदेयंत्रिदोषेस्याद्वातास्रश्वासकासनुत् । हृत्पाण्डुरोगवीसर्पकामलादाहनाशनम् ॥ ११६ ॥

इति शतपाकमधुपर्णीतैलम् ।

इस तैल के सेवन से सन्निपातज वातरक्त श्वास खांसी हृद्रोग पाण्डुरोग जहरवात कामला तथा दाह का नाश होताहै ॥ ११६ ॥

इति शतपाकमधुपर्णी तैलम् ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरसमंतथा । सहस्रशतपाकंवावातासृग्वातरोगनुत् ॥ ११७ ॥ रसायनंश्रेष्ठतममिन्द्रियाणांप्रसादनम् ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवनंबृंहणंस्वर्य्यंशुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥ ११८ ॥

इति सहस्रपाकंवाशतपाकंतैलम् ।

बरियारा के काढ़ा तथा कल्क के साथ समभाग दूध युक्त तैलका सौबार तथा सहस्रबार पाककरै यह तैल वात रक्त वीर्य्य दोष तथा रक्तदोष को नष्ट करता हैं इन्द्रियों को निर्मल करता है जीवनशक्ति तथा धातुओं को बढ़ाता है और स्वरके लिये हित होता है यह अत्यन्त श्रेष्ठ रसायन है ॥ ११७ । ११८ ॥

इति बलातैल ॥

गुडूचीरसदुग्धाभ्यांतैलंद्राक्षारसेनवा । सिद्धंमधुककाश्मर्यरसैर्वावातरक्तनुत् ॥ ११९ ॥

गिलोय के रस तथा दूध के साथ अथवा मुनक्कों के रसके साथ अथवा मुलेठी तथा खंभारी के फलों के काढ़े के साथ पाक किया गया तैल वात रक्त को नष्टकरताहै ॥ ११९ ॥

आरनालाढकेतैलंपादंसर्जरसंघृतम् । प्रभूतेमथितंतोयेज्वरदाहार्त्तिनुत्परम् ॥ २२० ॥

२५६ तोले कांजी तथा शालके चतुर्थांशरस के साथ तैलका पाककरै फिर इस तैलको बहुत से जल में डालकर मथै इसके सेवनसे वात रक्त वाले के ज्वर दाह तथा पीड़ा का नाश होता है ॥ १२० ॥

समधूच्छिष्टमाञ्जिष्ठंससर्जरसशारिवम् । पिण्डतैलंतदभ्यङ्गाद्वातरक्तरुजापहम् ॥ १२१ ॥

इति पिण्डतैलम् ।

मोम मँजीठ शालकारस तथा साँव इनके साथ पाक कियेहुये तैलको शरीर में मलने से वातरक्त की पीड़ा का नाश होता है इस को पिण्डतैल कहते हैं ॥ १२१ ॥

इति पिण्डतैल ।

दशमूलशृतंक्षीरंसद्यःशूलनिवारणम् । परिषेकोऽनिलप्रायेतद्वत्कोष्णेनसर्पिषा ॥ १२२ ॥

दशमूल के साथ पाक कियेगये दूधका तरारा देनेसे और कुछ उष्ण घीका तरारादेने से वायुकी अधिकतावाले वातरक्त के शूल का शीघ्रही नाश होता है ॥ १२२ ॥

स्नेहैर्मधुरसिद्धैर्वाचतुर्भिःपरिषेचयेत् । स्तम्भाक्षेपकशूलार्त्तंकोष्णैर्दाहेतुशीतलैः ॥ १२३ ॥

वातरक्त में स्तम्भ आक्षेप तथा शूल होने पर मधुरगण की औषधियों के साथ पाक कियेगये कुछ उष्ण घृत आदि चारों स्नेहों का तरारा देना चाहिये और वातरक्त दाह होनेपर मधुरगणकी औषधियों के साथ पाक कियेगये शीतल घृत आदि स्नेहों के द्वारा तरारादेना चाहिये ॥ १२३ ॥

तद्वद्गव्याविकच्छागैःक्षीरैस्तैलविमिश्रितैः । निःक्वाथैर्जीवनीयानांपञ्चमूलस्यवाभिषक् ॥ १२४ ॥

गौ भेड़ी तथा बकरी के दूधमें तैल मिला-

CC-0. Digamvani Math Collection. Digitized by eGangotri

कर इस के द्वारा जीवनीयगण के काढ़े के द्वारा अथवा पंचमूल के काढ़े के द्वारा वात रक्त में तरारा देना चाहिये ॥ १२४ ॥

द्राक्षेक्षुरसमद्यादिदधिमस्त्वम्लकाञ्जिकम्। सेकार्थेतण्डुलक्षौद्रशर्कराम्बुचशस्यते ॥ १२५ ॥

मुनक्का ईखका रस मद्य दही दहीका तोड़ खट्टीकांजी चांवलोंका धोवन शहदका शर्वत तथा शक्कर का शर्वत यह वातैरक्त में तरारा के लिये हित हैं ॥ १२५ ॥

कुमुदोत्पलपद्माद्यैर्मणिहारैःसचन्दनैः। शीततोयानुगैर्दाहेप्रोक्षणंस्पर्शनंहितम् ॥ १२६ ॥

वातरक्तवाले के दाह को शान्त करने के लिये कोकावेली नील कमल तथा कमल आदि पुष्प और चन्दनयुक्त मणियोंके हार इनको शीतल जलमें भिगोकर छिड़कना और इनका स्पर्श कराना हित होताहै ॥ १२६ ॥

चन्द्रपादाम्बुसंसिक्तेक्षौमपद्मदलच्छदे। शयनेपुलिनस्पर्शेशीतमारुतवीजिते ॥ १२७ ॥ चन्दनार्द्रस्तनकराःप्रियानार्य्यःप्रियंवदाः। स्पर्शशीताःसुखस्पर्शाघ्नन्तिदाहंरुजंक्लमम् ॥ १२८ ॥

चन्द्रमा की किरणों से शीतल जलसे छिड़कीहुई रेशमीवस्त्रों से बिछीहुई तथा कमल के पत्रोंसे युक्त नदीके तटके समान आनन्ददायिनी शय्यापर सोकर शीतल वायु जिनसे निकलती हो ऐसे पंखे हँकवाकर हाथोंमें तथा स्तनों में चन्दन लगाये भई आर्द्र अंगवाली प्रिय भाषण करनेवाली और स्पर्श में सुख देनेवाली स्त्रियोंका आलिंगन करने से वातरक्तवालों के दाह पीड़ा तथा ग्लानिका नाश होता है ॥ १२७। १२८ ॥

सरागेसरुजेदाहेरक्तंमुक्त्वाप्रलेपयेत्। मधुकाश्वत्थत्वङ्मांसीवीरोदुम्बरशाद्वलैः ॥ १२९ ॥

रक्तवर्ण पीड़ा तथा दाह युक्त वातरक्त में रुधिर निकलवाकर मुलेठी पीपल की छाल जटामांसी काकोली गूलर तथा घास॥ १२९॥

जलजैर्यवचूर्णैर्वासयष्ट्याह्वापयोघृतैः। सर्पिषाजीवनीयैर्वापिष्टैर्लेपोऽर्त्तिदाहनुत् ॥ १३० ॥

अथवा कमल यवोंका चूर्ण मुलेठी दूध तथा घी इनका लेपकरै जीवनीयगणकी औषधियों को पीसकर घीमें मिलाकर लेप करने से वातरक्तवाले के दाह तथा पीड़ाका नाश होता है ॥ १३० ॥

एलाःपियालंमधुकंबिसंमूलञ्चवेतसात्। आजेनपयसापिष्ट्वाप्रलेपोदाहरागनुत् ॥ १३१ ॥

इलायची चिरौंजी मुलेठी कमल की दण्डी तथा बेंतकी जड़ इनको बकरी के दूध में पीसकर लेप करने से वातरक्तवालों के दाह तथा रक्तवर्ण का नाश होताहै ॥ १३१ ॥

प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठादार्वीमधुकचन्दनैः। सितोपलैरकासक्तुमसूरोशीरपद्मकैः ॥ १३२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुँडरिया मँजीठ दारुहल्दी मुलेठी चन्दन मिश्री एरका (गोंदपटेर) मसूर खस तथा पद्माख ॥ १३२ ॥

लेपोरुग्दाहवीसर्परुक्शोफविनिवारणः । पित्तरक्तोत्तरेत्वेतेलेपान्वातोत्तरेशृणु ॥ १३३ ॥

इनका लेप करने से पीड़ा दाह जहरवात रक्तवर्ण तथा शोथका नाश होता है यह सब लेप अधिक पित्तवाले वातरक्त में हित होतेहैं अधिक कफवाले वातरक्त में जो लेप हित होते हैं वह आगे कहेजाते हैं सुनों ॥ १३३ ॥

वातघ्नैःसाधितःस्निग्धःसक्षीरमुद्गपायसैः । तिलसर्षपपिण्डैर्वाप्युपनाहरुजापहाः ॥ १३४ ॥

वातघ्न औषधियों के साथ स्निग्ध तथा क्षीरयुक्त पाक कीगई मूंगकी खीर और तिल तथा सरसों की पीठी इनकी पुल्टिस बाँधने से वातरक्तवाले की पीड़ाका नाश होताहै ॥ १३४ ॥

औदकप्रसहानूपवेशवाराःसुसंस्कृताः जीवनीयौषधस्नेहयुक्ताःस्युरुपनाहने ॥ १३५ ॥

जलके जीवकागआदि छीनकर खाने वाले प्रसह जीव और भैंस तथा सारस आदि आनूपजीव इनका मशालेदार पकाहुआ मांस और जीवनीयगणकी औषधि इनको पीसकर घृतआदि स्नेहमिलाके पुल्टिस बाँधने से ॥ १३५ ॥

स्तम्भतोदरुगायासशोथाङ्गग्रहनाशनाः ॥ जीवनीयौषधैःस्नेहःसपयस्कोरसोऽपिवा ॥ १३६ ॥

स्तम्भ सुईचुभनेकीसी पीड़ा, व्यथा, विना श्रमके भी श्रम मालूम होना शोथ तथा अङ्गों का जकड़ना इन सबका नाश होताहै जीवनीयगण की औषधि तथा दूधके साथ पाक कियेगये रसका लेप करनेसे वातरक्तका नाश होता है ॥ १३६ ॥

घृतंसहचरान्मूलंजीवन्तीच्छागलंपयः । लेपाःपिष्टास्तिलास्तद्वद्भृष्टाःपयसिनिर्वृताः ॥ १३७ ॥

घी, पीली कटसरैयाकी जड़ तथा बकरीका दूध इनका लेप करनेसे अथवा भूनेहुये तिलों का लेप करनेसे वातरक्त शान्तहोताहै १३७॥

क्षीरपिष्टमुमालेपमेरण्डस्यफलानि च । कुर्य्याच्छूलनिवृत्त्यर्थंशताह्वांनिलेऽधिके ॥ १३८ ॥

वातरक्त में वायुकी अधिकता होनेपर शूल को निवृत्त करने के लिये अरण्ड के फल अथवा सौंफको दूधमें पीसकर लेपकरै १३८॥

समूलाग्रच्छदैरण्डक्काथेद्विप्रस्थिकंपृथक् । घृतंतैलंवसामज्जाचानूपमृगपक्षिणाम् ॥ १३९ ॥

अरण्ड की जड़ अग्रभाग तथा पत्तोंके काढ़े में घी, तैल आनूपदेश के मृग तथा पक्षियोंकी चर्ब्बी तथा मज्जा दो २ प्रस्थ (६४) तोले ॥ १३९ ॥

कल्कार्थेजीवनीयानिगन्धंक्षीरमथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जकम् । हरिद्रोत्पलकुष्ठैलाशता
ह्वाश्वहनच्छदान् ॥ १४० ॥

गौकादूध दोमस्थ, बकरी का दूध दोमस्थ जीवनीयगण की औषधि हल्दी, उत्पल, कूट, छोटी इलायची, सौंफ वरुणाकी छाल ॥ १४० ॥

बिल्वमात्रंपृथक्पुष्पंकाकुभश्चापि
साधयेत् । मधूच्छिष्टपलान्यष्टौद
द्याच्छीतेऽवतारिते ॥ १४१ ॥

और अर्जुनके पुष्प इन का चार २ तोले कल्क डालकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल घी आदि स्नेह बाकी रहै तब उतार कर छानके उसमें ३२ तोले मोम मिला देवै ॥ १४१ ॥

शूलेनैवाऽर्दिताङ्गानां लेपःसन्धिग
तेऽनिले । वातरक्तेस्रुतेभग्नेखञ्जे
कुब्जेचशस्यते ॥ १४२ ॥

इसका लेप करने से अङ्गोंका शूल संधियों में प्राप्त वायु वात रक्त पीब बहना भग्न लंगड़ापन तथा लूलापन इन सबका नाश होता है ॥ १४२ ॥

शोफगौरवकण्ड्वाद्यैर्युक्तेत्वस्मिन्क
फोत्तरे । मूत्रक्षारसुरापक्वघृतमभ्य
ञ्जनेहितम् ॥ १४३ ॥

शोथ भारीपन तथा खुजली आदिसे युक्त अधिक कफवाले वातरक्त में गोमूत्र क्षार तथा मद्यके साथ पाक किया हुआ घी मलना चाहिये ॥ १४३ ॥

पद्मकंत्वक्समधुकंशारिवाचेतितै
र्घृतम् । सिद्धंसमधुशुक्तंस्यात्से
काभ्यङ्गः कफोत्तरे ॥ १४४ ॥

पद्माख तज मुलेठी तथा सौंव और शहद का शिरका इनके साथ पाक कियेगये घीका मलना तथा सींचना अधिक कफवाले वातरक्त में हित होता है ॥ १४४ ॥

क्षीरंतैलंगवांमूत्रंजलञ्चकटुकैःशृत
म् । परिषेकाःप्रशस्यन्तेवातरक्तेक
फोत्तरे ॥ १४५ ॥

अधिक कफवाले वातरक्त में दूध तैल गोमूत्र तथा जलका कडुई औषधियोंके साथ पाक करके तरारा देवे ॥ १४५ ॥

लेपःसर्षपनिम्बार्कहिंस्राक्षीरतिलै
र्हितः । श्रेष्ठःसिद्धःकपित्थत्वग्घृ
तक्षीरैःससक्तुभिः ॥ १४६ ॥

सरसों नींब मदार भटकटैया तथा तिल इनको दूधके साथ पीसकर लेप करनेसे अथवा कैथेकी छाल घी दूध तथा सत्तू इनका लेप करनेसे वातरक्त का नाश होताहै १४६

द्वेहरिद्रेवचागौरधूमकुष्ठशताह्वि
काः । प्रलेपःशूलनुद्वातरक्तेवात
कफोत्तरे ॥ १४७ ॥

हल्दी दारुहल्दी वच गृहधूम कूट तथा सौंफ इनका लेप करने से वायु तथा कफकी अधिकता वाले वातरक्त के शूल का नाश होता है ॥ १४७ ॥

तगरंत्वक्शताह्वैलाकुष्ठंमुस्तंहरेणु
का । दारुव्याघ्रनखंचाम्लपिष्टंवा
तकफार्तिनुत् ॥ १४८ ॥

तगर तज सौंफ छोटी इलायची कूट नागर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोथा रेणुका देवदारु तथा बघनखी इन सब को कांजी में पीसकर लेप करने से वायु तथा कफ की अधिकता वाले वातरक्त का नाश होता है॥ १४८॥

मधुशिग्रोर्हितंतद्वद्बीजंधान्याम्ल संयुतम् । मुहूर्त्तलिप्तमम्लैश्चासिञ्चे द्वातकफोत्तरे ॥ १४६॥

वायु तथा कफकी अधिकतावाले वातरक्त में धनियां लाल सहिंजनके बीजों को कांजी में पीसकर लेपकरै फिर मुहूर्तभरके उपरान्त लेप छुटाके कांजी से सींचै॥ १४९॥

त्रिफलाव्योषपत्रैलास्त्वक्क्षीरंचित्र कंवचाम् । विडङ्गंपिप्पलीमूलंलोम शंवृषकत्वचम् ॥ १५०॥

त्रिफला सोंठिपीपरि मिर्च तेजपात छोटी इलायची तज चीता वच बायबिड़ंग पिपरा-मूल जटामासी रूसाकी छाल॥ १५०॥

ऋद्धिंतामलकींचव्यंसमभागानि पेषयेत् । कल्कंलिप्तमयस्पात्रेम ध्याह्नेभक्षयेत्ततः॥ १५१॥

ऋद्धि भूमि आमला तथा चव्य इन सब को समभाग लेकर पानी के साथ पीसकर लोहे के पात्रमें लेपकर देवै फिर मध्याह्न के समय लोहेके पात्रमें से उस औषधको छुड़ा-कर खावे॥ १५१॥

वर्जयेद्दधिशुक्तानिक्षीरंवैरोधकानि च। वातास्रेसर्वदोषेऽपिहितंशूला दितेपरम्॥ १५२॥

और दही सिरका दूध तथा विरोधी वस्तु न खावे त्रिदोषज वातरक्त में भी यह औषध हित है और शूलसे पीड़ित मनुष्यको अत्य-न्त हितकारी है॥ १५२॥

बुद्ध्वास्थानविशेषांश्चदोषाणाञ्चब लाबलम् । चिकित्सितमिदंकुर्य्या दूहापोहविकल्पवित्॥ १५३॥

किस योगमें कौनसी औषध कब मिलाने के योग्य है और कौनसी औषध कब नि कालने के योग्य है इस बातका जानने वा-ला वैद्य स्थानों की विशेषता और दोषों के बलाबल को जानकर वातरक्तमें पूर्वोक्त चि-कित्सा करै॥ १५३॥

कुपितेमार्गसंरोधान्मेदसोवाकफस्य वा। अतिवृद्ध्याऽनिलेनादौशस्तं स्नेहनबृंहणम्॥ १५४॥

वातरक्त में मेदा तथा कफ के बहुत बढ़ने से मार्ग के रुकजाने के कारण वायुके कुपित होने पर पहिले स्नेह तथा धातुवर्द्धक औष-धियों का प्रयोग करना हित नहीं होता है॥ १५४॥

व्यायामशोधनारिष्टमूत्रपानैर्विरेच नैः। तक्राभयाप्रयोगैश्चक्षपयेत्कफ मेदसी॥ १५५॥

इससे व्यायाम वमन आदि शोधन अरिष्ट पीना गोमूत्र पीना विरेचन और मट्ठा तथा हड़का प्रयोग इनके द्वारा कफ तथा मेदा को क्षीण करना चाहिये॥ १५५॥

बोधिवृक्षकषायन्तुपिबेत्तंमधुनास ह। वातरक्तंजयत्याशुत्रिदोषमपि दारुणम्॥ १५६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीपर वृक्षके काढ़े में शहद डालकर पीनेसे वातरक्त और भयङ्कर त्रिदोष का नाश होता है॥ १५६॥

पुराणयवगोधूममध्वरिष्टासवैस्तथा। शिलाजतुप्रयोगैश्चगुग्गुलोर्माक्षिकस्यच॥ १५७॥

पुराने यव गेहूं मधु (मद्यविशेष) अरिष्ट आसव शिलाजीत गुग्गुल तथा सोना मक्खी इनके सेवनसे॥ १५७॥

पश्चाद्वातेक्रियांकुर्य्याद्वातरक्तप्रसादनीम्। गम्भीरेरक्तमाक्रान्तंस्याच्चेद्वातद्विवर्जयेत्॥ १५८॥

कफ तथा मेदाके क्षीण होजाने पर पीछेसे वातरक्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये गम्भीर वात रक्त में जो रुधिर दोषों के द्वारा ढका हुआ होय तो वायुके समान चिकित्सा करनी चाहिये॥ १५८॥

रक्तपित्तातिवृद्ध्यातुपाकमाशुनियच्छति। भिन्नंस्रवतिवारक्तंविदग्धंपूयमेववा॥ १५६॥

रुधिर तथा पित्तके बहुत बढ़ने से वातरक्त शीघ्रही पकजाता है और जो वह फटजाता है तो उसमें से रुधिर बहने लगताहै और जो अधपका होताहै तो उसमेंसे पीब बहने लगताहै॥ १५९॥

तयोःक्रियाविधातव्याव्यधशोधनरोपणैः। कुर्य्यादुपद्रवाणाञ्चक्रियांस्वात्स्वाच्चिकित्सितात्॥ १६०॥

ऐसे वातरक्त की चिकित्सा शिराव्यधन (फस्त खुलाना) वमन आदि शोधन तथा रोपण (घावों का भरना) के द्वारा करनी चाहिये वातरक्त के उपद्रवों की चिकित्सा अपने २ अधिकारों में कही हुई करनी चाहिये॥ १६०॥

तत्र श्लोकाः।

हेतुस्थानानिमूलञ्चयस्मात्प्रायश्चसन्धिषु। कुप्यतिप्राक्चतद्रूपंद्विविधस्यचलक्षणम्॥ १६१॥ पृथग्भिन्नस्यलिङ्गञ्चदोषाधिक्यमुपद्रवाः। साध्यंयाप्यमसाध्यञ्चक्रियासाध्यस्यचाखिला॥ १६२॥ वातरक्तस्यनिर्दिष्टाःसमासव्यासतस्तथा। महर्षिणाग्निवेशायतथैवावस्थिकीक्रिया॥ १६३॥

इति वातरक्तचिकित्सितेएकोनत्रिंशोऽध्यायः॥ २९॥

तिसमें यह श्लोक हैं। इस वातरक्त चिकित्सितनामकअध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने अग्निवेश से वातरक्त के निदान स्थान मूल जिस कारण से प्रायः संधियों में वातरक्त होता है वातरक्त के पूर्वरूप दोनों प्रकार के वातरक्त के लक्षण वातआदिकों की अधिकतावाले वातरक्त के अलग २ लक्षण वातरक्त की साध्यता याप्यता तथा असाध्यता साध्य वातरक्त की चिकित्सा और वातरक्त की अवस्थाके अनुसार चिकित्सा यह सब विषय सं-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षेप तथा विस्तारसे कहे॥१६१।१६२।१६३॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंचिकित्सा स्थानकावातरक्तचिकित्सितनामउन्तीसवाँ अध्याय समाप्तहुआ॥ २९॥

तीसवाँअध्याय॥

योनिव्यापच्चिकित्सितम्।

दिव्यौषधिजलस्वादुधातुचित्रशिलावति। पुण्येहिमवतःपार्श्वेसुरसिद्धनिषेविते॥ १॥

इस के उपरान्त योनिव्यापच्चिकित्सित नामक अध्याय का व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा॥

दिव्य औषध मधुरजल अनेक धातु तथा विचित्र शिलाओं से युक्त और देवता सिद्ध तथा ऋषियों से सेवन कियेगये हिमालय के पवित्र तटपर॥ १॥

विहरन्तंतपोयोगात्तत्त्वज्ञानार्थदर्शिनम्। कृष्णात्रेयंजितात्मानमग्निवेशोऽथपृष्टवान्॥ २॥

विहार करतेहुये तपोवल से तत्त्वज्ञान के द्वारा सांसारिक सम्पूर्ण पदार्थोंके जाननेवाले जितेन्द्रिय भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने पूछा॥ २॥

भगवन्! यदपत्यानांमूलंनार्य्यःपरंनृणाम्। तद्विघातोगदैश्चासांक्रियतेयोनिमाश्रितैः॥ ३॥

कि हे भगवन्! पुरुषोंकी रति तथा संतति की मूल स्त्रियाँ हैं और स्त्रियोंकी योनि में होनेवाले रोगोंके द्वारा रति तथा संतति दोनोंका नाश होता है॥ ३॥

तस्मात्तेषांसमुत्पत्तिमुत्पन्नानाञ्चलक्षणम्। औषधंश्रोतुमिच्छामिप्रजानुग्रहकाम्यया॥ ४॥

इस से स्त्रियों की योनि में होनेवाले रोगों की उत्पत्ति और उत्पन्न हुये रोगों के लक्षण तथा यत्न प्रजाओंपर दयाकरने की इच्छा से मैं सुनना चाहताहूं॥ ४॥

इतिशिष्येणपृष्टस्तुप्रोवाचर्षिवरोऽत्रिजः। विंशतिर्व्यापदोयोनेर्निर्दिष्टारोगसंग्रहे॥ ५॥

अग्निवेश के यह वचन सुनकर महर्षिवर भगवान् आत्रेयजीने कहा कि सूत्रस्थान के अष्टौदरीय नाम अध्याय में योनि के वीस रोग कहेगये हैं॥ ५॥

मिथ्याचारेणताःस्त्रीणांप्रदुष्टेनार्तवेनच। जायन्तेबीजदोषाच्चदैवाच्चशृणुताःपृथक्॥ ६॥

वह सम्पूर्ण रोग स्त्रियों के अनुचित आचार से (अनुचित आहार विहार करनेसे) रजके दूषित होनेसे बीजके दूषित होनेसे और भाग्यवश से उत्पन्न होते हैं अब इन रोगोंका अलग २ वर्णन तुम सुनो॥ ६॥

वातलाहारचेष्टायावातलायाःसमीरणः। विवृद्धोयोनिमाश्रित्ययोनेस्तोदंसवेदनम्॥ ७॥

वातप्रकृतिवाली स्त्री का वादी आहार विहार करने से वायु बढ़कर योनि में स्थित होके तोद (सुई चुभने कीसीपीड़ा) व्यथा॥७॥

स्तम्भंपिपीलिकासृप्तिमिवकर्कश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तांतथा। करोतिसुप्तिमायासंवात जांश्चापरान्गदान्॥ ८॥

स्तम्भ चींटी चलने कीसी नाई मालूम होना कठोरता सुन्न विनाश्रम के भी श्रम मालूम होना और अन्यवातज रोगों को उत्पन्न करता है॥ ८॥

सास्यात्सशब्दरुक् फेनतनुरूक्षा र्त्तवानिलात्। व्यापत्तथाम्ललवण क्षाराद्यैःपित्तजाभवेत्॥ ६॥

इस बातज योनिरोग में योनिशब्द युक्त होती है और योनिसे फेनयुक्त पतला तथा रूखा जलसा बहता है अम्ल लवण तथा क्षारआदि बहुत खाने से पित्तज योनि रोग उत्पन्न होता है॥ ९॥

दाहपाकज्वरोष्णार्त्तानीलपीतसि तार्त्तवा। भृशोष्णकुणपस्रावायो निःस्यात्पित्तदूषिता॥ १०॥

दाह पकना ज्वर उष्णता नील पीत तथा कृष्णवर्ण रज बहना और मुर्देकीसी दुर्गंधि से युक्त बहुत उष्णजलसा बहना यह पित्तज योनि दोष के लक्षण हैं॥ १०॥

कफोऽभिष्यन्दिभिर्वृद्धोयोनिंचेद् दूषयेत्स्त्रियाः। सशीतांपिच्छिलां कुर्यात्कण्डुग्रस्ताल्पवेदनाम्॥ ११॥

अभिष्यन्दी (रसके बहनेवाली नाड़ियों को रोंक कर शरीरको भारी करनेवाले) अन्नके सेवन से बढ़ाहुआ कफयोनि रोग को उत्पन्न करता है शीतलता लसलसापन खुजली कुछ पीड़ा॥ ११॥

पाण्डुवर्णांतथापाण्डुपिच्छिलार्त्त ववाहिनीम्। समश्नत्यारसान्स र्वान्दूषयित्वात्रयोमलाः॥ १२॥

पाण्डुवर्ण और पाण्डुवर्ण तथा लसलसा आर्त्तव (रज) बहना यह कफज योनिरोगके लक्षण हैं सम्पूर्णरसों का अधिक सेवन करनेवाली स्त्री के तीनों दोष कुपित होके॥ १२॥

योनिगर्भाशयस्थाःस्वैर्योनिंयुञ्ज न्तिलक्षणैः। साभवेद्दाहशूलार्त्ता श्वेतपिच्छिलवाहिनी॥ १३॥

योनि तथा गर्भाशय में स्थित होकर अपने २ लक्षणों से योनि को युक्त करते हैं दाह शूल और श्वेत तथा लसलसा जलसा बहना यह त्रिदोषज योनि रोग के लक्षण हैं॥ १३॥

रक्तपित्तकरैर्नार्य्यारक्तंपित्तेनदूषित म्। अतिप्रवर्त्ततेयोन्यांलब्धेबीजे ऽपिसाप्रजा॥ १४॥

रुधिर तथा पित्त को कुपित करने वाली वस्तुओं के सेवनसे स्त्री का रुधिर पित्तसे दूषित होकर योनि से बहुत बहता है ऐसी स्त्री के वीर्य्य का ग्रहण करनेपर भी संतान नहीं होती है॥ १४॥

योनिगर्भाशयस्थंचेत्पित्तंसंदूषयेद सृक्। सारजस्कामताकार्श्यवैव र्ण्यजननीभृशम्॥ १५॥

यदि पित्तयोनि तथा गर्भाशय में स्थित रुधिर को सुखादे तो स्त्री के रज नहीं बहता है ऐसी स्त्रीको अरजस्का कहते हैं ऐसी स्त्रीके साथ मैथुन करने से कृशता तथा विवर्णता (वर्ण का बिगड़जाना) बहुत होती है॥ १५॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योन्यामधावनात्कण्डूं जाताः कुर्वन्तिजन्तवः । सास्यादचरणाकण्डूातयातिनरकांक्षिणी ॥ १६ ॥

योनिको न धोनेसे उत्पन्न हुये कीड़े योनिमें खुजली को पैदा करते हैं इस खुजली के कारण स्त्री को मैथुन कराने की बहुत इच्छा होती है इस योनि को अचरणा कहते हैं ॥ १६ ॥

पावनोऽतिव्यवायेनशोफसुप्तिरुजः स्त्रियाः । करोतिकुपितोयोनौसाचातिचरणामता ॥ १७ ॥

बहुत मैथुन कराने से कुपित हुआ वायु योनिमें शोथ सुन्न तथा पीड़ा को उत्पन्न करता है इसको अतिचरणा कहतेहैं ॥ १७ ॥

मैथुनादतिबालायाः पृष्ठजङ्घोरुवंक्षणम् । रुजयन्दूषयेद्योनिंवायुःप्राक्चरणाहिसा ॥ १८ ॥

बहुत थोड़ी अवस्थावाली स्त्रीका वायु मैथुन कराने से कुपित होकर पीठ जांघ पिंडली तथा बंक्षण में पीड़ा को उत्पन्न करके योनि को दूषित करता है ऐसी योनि को प्राक्चरणा कहते हैं ॥ १८ ॥

गर्भिण्याः श्लेष्मलाभ्यासाच्छर्दिश्वासविनिग्रहात् । वायुःक्रुद्धःकफंयोनिमुपनीयप्रदूषयेत् ॥ १६ ॥

गर्भिणी स्त्री को कफकारी वस्तुओंका बहुत सेवन करने से और छर्दि तथा श्वास को रोंकनेसे कुपित हुआ वायु कफ को योनि में लेजाकर दूषित करता है ॥ १९ ॥

पाण्डुंसतोदमास्रावंश्वेतंस्रवतिवा कफम् । कफवातामयव्याप्तासास्याद्योनिरुपप्लुता ॥ २० ॥

इसमें पाण्डुवर्ण जल सुईचुभनेकीसी पीड़ासहित योनि से बहता है अथवा श्वेत कफ बहता है और कफज तथा वातजरोग योनि में होते हैं ऐसी योनि को उपप्लुता कहते हैं ॥ २० ॥

पित्तलायान्नृसंवासेक्षवथूद्गारधारणात् । पित्तसंमूर्च्छितोवायुर्योनिंदूषयतिस्त्रियाः ॥ २१ ॥

पित्तप्रकृतिवाली स्त्री जो मैथुनके समय छींक तथा डकारके वेग को रोंकती है तो पित्त सहित वायु योनि को दूषित करता है ॥ २१ ॥

शूनास्पर्शाक्षमासार्त्तिर्नीलपीतमसृक्स्रवेत् । श्रोणिवंक्षणपृष्ठार्त्तिज्वरार्त्तायाःपरिप्लुता ॥ २२ ॥

इसमें योनि शोथ स्पर्शका न सहसकना तथा पीड़ासे युक्त होती है योनि से नीला तथा पीला रुधिर बहता है नितम्ब बंक्षण तथा पीठमें पीड़ा होती है और ज्वर आताहै ऐसी योनि को परिप्लुता कहते हैं ॥ २२ ॥

वेगोदावर्त्तनाद्योनिमुदावर्त्तयतेऽनिलः । सारुगार्त्तारजःकृच्छ्रेणोदावृत्तांविमुञ्चति ॥ २३ ॥

वेग को रोंकने से तथा उदावर्त्त से वायु योनि में उदावर्त्त रोग को उत्पन्न करता है इससे योनि बहुत पीड़ित होकर बड़े कष्ट से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रजका त्याग करती है ऐसी योनि को उदा वृत्ता कहते हैं ॥ २३ ॥

आर्त्तवेसाविमुक्तेतुतत्क्षणंलभतेसु खम् । रजसोगमनादूर्द्ध्वंज्ञेयोदाव र्त्तिनीबुधैः ॥ २४ ॥

रजके ऊपर चढ़जाने से योनि को पण्डित लोग उदावर्त्तिनी कहते हैं इसमें रजके निकल जानेपर उसी समय स्त्री को सुख प्राप्त होताहै ॥ २४ ॥

अकालेवाहमानायागर्भेणपिहितो ऽनिलः । कर्णिकांजनयेद्योनौश्ले ष्मरक्तेनमूर्च्छितः । रक्तमार्गावरो धिन्यासातयाकर्णिनीमता २५ ॥

जो गर्भवती स्त्री समयके विनाही गर्भके निकालने के लिये बल करती है उसका गर्भसे ढकाहुआ वायु रुधिर तथा कफके साथ मिलकर योनिमें रुधिरके मार्ग को रोंकनेवाली कर्णिका (कमलके भीतरके झुमके के समान शोथ) को उत्पन्न करती है ऐसी योनि को कर्णिनी कहते हैं ॥ २५ ॥

रौक्ष्याद्वायुर्यदागर्भजातंजातंविना शयेत् । दुष्टशोणितजंनार्य्याःपुत्र घ्नीनामसामता ॥ २६ ॥

जिस योनिमें रूक्षता के कारण दूषित रुधिरसे जब २ गर्भ उत्पन्न होता है तब २ उस को वायु नष्टकरदेता है उस योनि को पुत्रघ्नी कहते हैं ॥ २६ ॥

व्यवायमतितृप्तायाभजन्त्यास्त्वत्र पीडितः ॥ २७ ॥ वायुर्मिथ्यास्थि ताङ्गायायोनिस्रोतसिसंस्थितः । वक्रयत्याननंयोन्याःसास्थिमांसा निलार्त्तिभिः ॥ २८ ॥

जो स्त्री बहुत तृप्तिपूर्व्वक भोजन करके विषमता से लेटकर मैथुन कराती है उसकी योनिके स्रोतों में स्थित वायु पीड़ित होकर योनिके मुख को टेढ़ा करदेता है इससे योनि की हड्डी तथा मांस में वातज पीड़ा होती है ॥ २७ । २८ ॥

भृशार्त्तिमैथुनासक्तायोनिरन्तर्मुखीम ता ॥ २९ ॥

और योनि बहुत पीड़ासे युक्त होकर मैथुन कराने में असमर्थ होजाती है ऐसी योनि को अन्तर्मुखी कहते हैं ॥ २९ ॥

गर्भस्थायाःस्त्रियारौक्ष्याद्वायुर्योनिं प्रदूषयन् । मातृदोषादणुद्वारांकुर्या त्सूचीमुखीतुसा ॥ ३० ॥

रूक्षताके कारण वायु गर्भमें स्थित स्त्रीकी योनि को दूषित करके माताके दोषसे योनि के द्वार को सूक्ष्म करदेता है ऐसी योनि को सूचीमुखी कहते हैं ॥ ३० ॥

व्यवायकालेरुन्धन्त्यावेगान्प्रकुपि तोऽनिलः । कुर्य्याद्विण्मूत्रसङ्गार्त्तिं शोषंयोनिमुखस्यच ॥ ३१ ॥

मैथुनके समय जो स्त्री मल मूत्र आदि वेगों को रोकती है उसका वायु कुपित होकर पीड़ा करके मल मूत्र को रोकता है और योनि के मुख को सुखादेता है ऐसी योनि को शुष्का-स्या कहते हैं ॥ ३१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षड्हात्सप्तरात्राद्वाशुक्रंगर्भाशयंगतम् । सरुजंनीरुजंवापियास्रवेत्साचवामिनी ॥ ३२ ॥

जिस स्त्री की योनि गर्भाशय में प्राप्त हुये बीजको छः दिनमें अथवा सातदिन में पीड़ा सहित अथवा पीड़ाके विनाही त्याग करती है उसकी योनि को वामिनी कहते हैं ॥ ३२ ॥

बीजदोषात्तुगर्भस्थमारुतोपहताशया । नृद्वेषिण्यस्तनीचैवषण्डीस्यादनुपक्रमा ॥ ३३ ॥

बीजके दोषसे गर्भमें स्थित स्त्रीका गर्भाशय वायुकेद्वारा बिगर जाताहै इससे वह स्त्री उत्पन्न होकर युवावस्था के होनेपरभी स्तन रहित तथा मैथुन की इच्छासे रहित होती है ऐसी स्त्री को षण्डी कहते हैं इसकी चिकित्सा नहीं कीजासक्ती है अर्थात् वह असाध्य होती है ॥ ३३ ॥

विषमादुःखशय्यायांमैथुनात्कुपितोऽनिलः । गर्भाशयस्ययोन्याश्चमुखंविष्टम्भयेत्स्त्रियाः ॥ ३४ ॥

टेड़ी तथा दुखदायी शय्यापर लेटकर मैथुन कराने से कुपित हुआ वायु स्त्रीके गर्भाशय तथा योनि के मुख को स्तब्ध करदेता है ॥ ३४ ॥

असंवृतमुखीसार्त्तीरूक्षफेनास्रवाहिनी । मांसोत्सन्नामहायोनिःपर्ववंक्षणशूलिनी ॥ ३५ ॥

इससे योनिका मुख खुलाही रहता है योनिसे रूखा तथा फेनायुक्त रज बहताहै योनि का मांस फूल आता है योनिमें पीड़ा होती है और पोरुवे तथा वंक्षण (जाघोंकी संधि) में शूल होता है ऐसी योनि को महायोनि कहते हैं ॥ ३५ ॥

इत्येतैर्लक्षणैःप्रोक्ताविंशतिर्योनिजागदाः । नशुक्रंधारयन्त्येभिर्दोषैर्योनिरुपद्रुता ॥ ३६ ॥

इस प्रकार योनिके बीसौ रोगके लक्षण कहेगये हैं इन रोगोंसे युक्त योनि बीज को नहीं धारण करती है ॥ ३६ ॥

तस्माद्गर्भनगृह्णातिस्त्रीगच्छत्यामयान्बहून् । गुल्मार्शःप्रदरादींश्चवाताद्यैश्चातिपीडनम् ॥ ३७ ॥

और इसी से गर्भकोभी नहीं धारण करती है और गुल्म बवासीर तथा प्रदर आदिक बहुत रोग होते हैं और वह स्त्री वातादिकों से बहुत पीड़ित होती है ॥ ३७ ॥

आसांषोडशयास्तासामाद्येद्वेपित्तदोषजे । परिप्लुतावामिनीचवातापित्तात्मिकेमते ॥ ३८ ॥

बीस प्रकार के योनिरोगोंमें से जो वातज आदि चाररोगों को छोड़कर सोलह योनि रोगहैं उनमें से पहिले दो रोग पित्तज होते हैं परिलुप्ता तथा वामिनी ये दोनों योनि वात पित्तज होते हैं ॥ ३८ ॥

कर्णिन्युपप्लुतेवातकफाच्छेषास्तुवातजाः । देहंवातादयस्तासांतैर्लिङ्गैःपीडयन्तिहि ॥ ३९ ॥

कर्णिनी तथा उपप्लुता ये दोनों योनिरोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वात कफज होते हैं और अन्य संपूर्ण योनिरोग वातज होते हैं इन रोगों में वातादि दोष अपने अपने लक्षणों से स्त्रियों को पीड़ित करते हैं ॥ ३९ ॥

स्नेहनस्वेदवस्त्यादिवातलास्वनिलापहम् । कारयेद्रक्तपित्तघ्नंशीतंपित्तकृतासुच ॥ ४० ॥

वातज योनिरोगों में स्नेहन स्वेदन तथा वस्ति (अमल) आदिका प्रयोग करने से वायु का नाश होता है पित्तज योनिरोगों में रक्तपित्तनाशक शीतल चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४० ॥

श्लेष्मलासुचरूक्षोष्णंकर्मकुर्य्याद्विचक्षणः । सन्निपातेविमिश्रन्तुसंसृष्टासुचकारयेत् ॥ ४१ ॥

कफज योनिरोगोंमें बुद्धिमान् वैद्य रूक्ष तथा उष्ण चिकित्सा करै सन्निपातज तथा दोदोषों से होनेवाले योनिरोगों में पूर्वोक्त मिलीहुई चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४१ ॥

स्निग्धस्विन्नांतथायोनिंदुःस्थितांस्थापयेत्पुनः । पाणिनानामयेज्जिह्मांसंवृतांवर्द्धयेत्पुनः ४२ ॥

योनिरोगों में पहिले स्नेहन तथा स्वेदन करके जो योनि अपने स्थानसे कुछ हटी होय उसको अच्छी प्रकार से स्थित करै जो योनि टेढ़ी होगई होइ उसको हाथसे सीधीकरै जो योनि बंदहोगई हो उसको हाथ डालकर बढ़ावै ॥ ४२ ॥

प्रवेशयेन्निःसृतांचविवृतांपरिवर्त्तयेत् । योनिःस्थानापवृत्ताहिशल्यभूतास्त्रियामता ॥ ४३ ॥

जो योनि बाहर निकल आईहोय उसको भीतर प्रविष्ट करै जो योनि खुलकर रहिगई होय अर्थात् फैलगई होय उसको संकुचित करै अपने स्थान से हटीहुई योनि स्त्रियों के लिये शल्य (फर) के समानहोतीहै ॥४३॥

सर्वांव्यापन्नयोनिन्तुकर्मभिर्वमनादिभिः । मृदुभिःपञ्चभिर्नारींस्निग्धस्विन्नामुपाचरेत् ॥ ४४ ॥

सब प्रकार के योनिरोगों में स्नेहन तथा स्वेदन करके वमन आदिमृदु (हलके) पंचकर्मों के द्वारा स्त्रीकी चिकित्सा करै ॥४४॥

सर्वतःसुविशुद्धायाःशेषंकर्मविधीयते । वातव्याधिहरंकर्मवातार्त्तानांसदाहितम् ॥ ४५ ॥

और फिर वमन आदिके द्वारा संपूर्ण शरीर के शुद्ध होजाने पर शेषकर्म कहागयाहै वायु से पीड़ित स्त्रियों के लिये वातरोगनाशक चिकित्सा सदैव हित होती है ॥ ४५ ॥

औदकानूपजैर्मांसैःक्षीरैःसतिलतण्डुलैः । सवातघ्नौषधैर्नाडीकुम्भीस्वेदैरुपाचरेत् ॥ ४६ ॥ युक्तांलवणतैलेनसाश्मप्रस्तरसङ्करैः । स्विन्नांकोष्णाम्बुसिक्ताङ्गींवातघ्नैर्भोजयेद्रसैः ॥ ४७ ॥

मछली आदि जल के जीव तथा भैंस आदि आनूप जीवों का मांस दूध तिल तथा चावल इनको वातघ्न औषधियों के साथ पा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ककरके इनके द्वारा नाड़ी तथा कुंभीस्वेद (इनकी विधि सूत्रस्थानके स्वेदाध्यायमें देखो) देवे योनि रोगवाली स्त्री के शरीरमें लवणयुक्त तैल मलवाकर अश्म प्रस्तर तथा संकरस्वेद (इनकी विधि सूत्रस्थान के स्वेदाध्याय में देखो) देकर कुछ उष्ण जल उसके ऊपर छिड़क कर वातघ्न मांसों के रस के साथ भोजन करावै ॥ ४६ । ४७ ॥

बलाद्रोणद्वयक्वाथेघृततैलाढकंपचेत् । स्थिरापयस्याजीवन्तीवीरर्षभकजीवकैः ॥ ४८ ॥

बरियारा के पचीस सेर अड़तालिस तोले काढ़े में घी २५६ तोले तेल २५६ तोले दूध एक हजार चौबिस तोले और शालपर्णी दूधी जीवन्ती काकोली ऋषभक जीवक ४८॥

श्रावणीपिप्पलीमूलपीलुमाषाख्यपर्णिभिः । शर्कराक्षीरकाकोलीकाकनासाभिरेवच ॥ ४९ ॥ पिष्टैश्चतुर्गुणक्षीरसिद्धंपेयंयथाबलम् । वातपित्तकृतान्रोगान्हत्वागर्भंदधातितत् ॥ ५० ॥

मुंडली पीपरि मुद्गपर्णी पीलुपर्णी(चूरणहार) माषपर्णी शक्कर क्षीरकाकोली तथा कौवाठोंढ़ी इनका कल्क डालकर पाककरै जबपानी जल जाय केवल घी तथा तैल बाकीरहै तब उतार कर छ.नलेवै फिर बलके अनुसार इसका पान करै इस से वात पित्तज योनि रोगों का नाश होताहै और स्त्रियां गर्भ को धारण करती हैं ॥ ४९ । ५० ॥

काश्मर्य्यत्रिफलाद्राक्षाकासमर्दपरूषकैः । पुनर्नवाहरिद्राभ्यांकाकनासासहाचरैः ॥ ५१ ॥

खंभारी के फल त्रिफला मुनका कसौंदी फालसा गदहपूर्णा हल्दी कौवाठोढ़ी पीली कटसरैया ॥ ५१ ॥

शतावर्य्यागुडूच्याश्चप्रस्थमक्षसमैर्घृतात् । साधितंयोनिवातघ्नंगर्भदंपरमंपिबेत् ॥ ५२ ॥

शतावरि तथा गिलोय तोले तोले भर इन सब औषधियों के कल्क (लुगदी) के साथ चौंसठि तोले घीका पाककरै इस घीका पान करने से योनि की वायु का नाश होता है और गर्भ स्थित होता है ॥ ५२ ॥

पिप्पल्यःकुञ्चिकाजाजीवृषकंसैन्धवंवचाम् । यवक्षाराजमोदेचशर्करांचित्रकंतथा ॥ ५३ ॥

पीपरि कलौंजी जीरा रूसा सेंधव लवण वच जवाखार अजमोद शक्कर तथा चीता ॥५३॥

पिष्टासर्पिषिभृष्टानिपाययेतप्रसन्नया । योनिपार्श्वार्त्तिहृद्रोगगुल्माशोंविनिवृत्तये ॥ ५४ ॥

इन सबको पीसकर घी में भूनकर प्रसन्ना (मद्यविशेष) के साथ पीवै इस से योनिरोग पसुलियों की पीड़ा हृदय के रोग गुल्म तथा बवासीर इन सबका नाश होताहै ॥५४॥

वृषकंमातुलुङ्गस्यमूलानिमदयन्तिकाम् । पिबेत्सलवणैर्मद्यैःपिप्पलीकुञ्चिकेतथा ॥ ५५ ॥

रूसा बिजौरा नींबू की जड़ तथा बेला इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को लवणयुक्त मद्यके साथ पीने से अथवा पीपरि तथा कलौंजी को सैंधवलवणयुक्त मद्यके साथ पीने से योनिरोगोंका नाश होताहै ॥ ५५ ॥

श्वदंष्ट्रावृषकंरास्नांपिबेच्छूलेपयः शृतम् । गुडूचीत्रिफलादन्तीक्काथैश्चपरिषेचयेत् ॥ ५६ ॥

गोखरू रूसा तथा रासना इनके साथ पाक कियेहुये दूध को पीने से योनि के शूलका नाश होताहै गिलोय त्रिफला तथा जमालगोटे की जड़का काढ़ा योनिमें सींचना चाहिये ॥ ५६ ॥

सैन्धवंतगरंकुष्ठंबृहतीदेवदारुच। समांशैःसाधितंकल्कैस्तैलंधार्य्यंरुजापहम् ॥ ५७ ॥

सेंधव लवण तगर कूट बड़ी भटकटैया तथा देवदारु इनके कल्क के साथ पाक किया गया तैल धारण करने से योनि की पीड़ा का नाश होताहै ॥ ५७ ॥

गुडूचीमालतीरास्नाबलामधुकचित्रकैः । निदिग्धिकादेवदारुयूथिकाभिश्चकार्षिकैः ॥ ५८ ॥

गिलोय चँबेली रासना बरियारा मुलेठी चीता भटकटैया देवदारु तथा जूही इन के तोले तोले भर कल्क (लुगदी) ॥ ५८ ॥

तैलप्रस्थंगवांमूत्रेक्षीरेचद्विगुणेपचेत । वातार्त्तानाञ्चयोनीनांसेकाभ्यङ्गपिचुक्रियाः ॥ ५९ ॥

चौंसठ तोले गोमूत्र और एकसौ अट्ठाइस तोले दूधके साथ चौंसठतोले तैलका पाककरै जबपानी जलजाय केवलतैल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवै इसतैलमें रुईडुबोकर वातज रोगवाली योनि में रक्खै तथा सेक अभ्यंग करै ॥ ५९ ॥

वातार्त्तायाःपिचुंदद्याद्योनौचप्रणयेत्सदा । हिंस्राकल्कन्तुवातार्त्तां कोष्णमभ्यज्यधारयेत् ॥ ६० ॥

और यह तैल वातज रोगवाली योनिमें सदैव टपकावै हिंस्रा के कल्कको कुछ उष्ण करके वातज रोग वाली योनि में रक्खै ॥६०॥

पञ्चवल्कस्यपित्तार्त्ताश्यामादीनां कफातुरा । पित्तलानान्तुयोनीनां सेकाभ्यङ्गपिचुक्रियाः ॥ ६१ ॥
शीताःपित्तहराःकार्य्याःस्नेहनार्थंघृतानिच । पित्तघ्नौषधसिद्धानिकार्य्याणिभिषजातथा ॥ ६२ ॥

पित्तज योनिरोगमें बरगद आदि पंचवृक्षों की छालके कल्क को रक्खै और कफज योनिरोग में काली सांव आदिक औषधियों का कल्क रक्खै पित्तज रोगवाली योनि में शीतल तथा पित्तनाशक तरारा अभ्यंग (तैलमर्दन) तथा पिचुक्रिया (फाहारखना) हितहै पित्तज रोगवाली योनिमें स्नेहनके निमित्त पित्तनाशक औषधों से सिद्ध घी का प्रयोग करना चाहिये ॥ ६१ । ६२ ॥

शतावरीमूलतुलाश्चतस्रःसंप्रपीडयेत् । रसेनक्षीरतुल्येनपचेत्तेनघृताढकम् ॥ ६३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवनीयैःशतावर्य्यामृद्वीकाभिःपरूषकैः । पियालैश्चाक्षकैःपिष्टैर्द्वियष्टिमधुकैःपचेत् ॥ ६४ ॥

सिद्धेशीतेचमधुनःपिपल्याश्चपलाष्टकम् । सितादशपलोन्मिश्राल्लिह्यात्पाणितलंततः । योन्यसृक्शुक्रदोषघ्नंवृष्यंपुंसवनञ्चतत् ॥ ६५ ॥

क्षतंक्षयंरक्तपित्तंकासंश्वासंहलीमकम् । कामलांवातरक्तञ्चवीसर्पंहच्छिरोग्रहम् । उन्मादायाससंन्यासंवातपित्तात्मकंजयेत् ॥ ६६ ॥

इतिबृहच्छतावरीघृतम् ।

शतावरि की बीस सेर जड़को कूटकर रस निकालै फिर उस रस में समभाग दूध दो-सौ छप्पन तोले घी और तोले तोले भर जी-वनीयगण की औषध शतावर मुनक्का चिरौं-जी फालसा मुलेठी तथा जलज मुलेठी इनका कल्क डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल घी बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे फिर शीतल होजाने पर बत्तिस तोले सहत बत्तिस तोले पीपरि का चूर्ण और चालिस तोले शक्कर मिलाकर रखछोड़ै इस में से तोलेतोले भर लेकर नित्य चाटने से योनिरोग रक्तदोष बीजदोष क्षतक्षय रक्तपित्त खांसी श्वास हलीमक कामला वातरक्त जहरबात हृदय के रोग शिरके रोग उन्माद विनाश्रम कियेही थकावट मालूम होना संन्यास और वातपित्तज अन्य रोग इन सब का नाश हो-ताहै यह घी कामियोंके लिये बहुत हित हो-ताहै और इस घीके सेवनसे स्त्रियोंके पुत्र होते हैं ॥ ६३ । ६६ ॥

इति बृहच्छतावरीघृत ॥

एवमेवक्षीरसर्पिर्जीवनीयोपसाधितम् । गर्भदंपित्तलानाञ्चयोनीनांस्याद्भिषग्जितम् ॥ ६७ ॥

इसी प्रकार जीवनीयगणकी औषधियों के साथ पाक कियेगये घी तथा दूध के सेवन से पित्तज योनिरोगों का नाश होताहै और गर्भ स्थित होता है ॥ ६७ ॥

योन्याःश्लेष्मप्रदुष्टायावर्तिःसंशोधनीहिता । वाराहेबहुशःपित्तेभावितैर्नक्तकैःकृता ॥ ६८ ॥

कफज योनिरोग में शूकर के पित्तेके साथ कंजाको घोटकर बत्ती बनाकर योनिमें रक्खे इससे योनि शुद्ध होजाती है ॥ ६८ ॥

भावितंपयसार्कस्यमाषचूर्णंससैन्धवम् । वर्तिःकृताम्मुहुर्धार्य्याततःसेव्यासुखाम्बुना ॥ ६९ ॥

मदारके दूधमें उर्द के आटे को घोटकर सैंधवलवणयुक्त बत्ती बनाकर वारंवार योनिमें रक्खै और बत्ती निकालकर कुछ उष्ण जल छिड़कै ॥ ६९ ॥

पिप्पल्यामरिचैर्माषैःशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः । वर्त्तिस्तुल्याप्रदेशिन्याधार्य्यायोनिविशोधनी ॥ ७० ॥

पीपरि मिर्च उर्द सौंफ कूट तथा सैंधव लवण इन सबको पीसकर प्रदेशिनी (अँगूठे के पास की अँगुली) के समान बत्ती बनाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योनिमें रक्खे इससे योनि शुद्ध होजाती है ॥ ७० ॥

उदुम्बरशलाटूनांद्रोणमब्द्रोणसंयुतम् । सपञ्चवल्ककुलकनिम्बमालतिपल्लवम् ॥ ७१ ॥

कच्चे गूलर १०२४ तोले बरगद आदि पांचों वृक्षोंकी छाल १०२४ तोले बेर १०२४ तोले नींबकी छाल १०२४ तोले और चँवेलीकी पत्ती १०२४ तोले ॥ ७१ ॥

निशांस्थाप्यंजलेतस्मिंस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् । लाक्षाधवपलाशत्वङ्निर्यासैःशाल्मलेनच ॥ ७२ ॥

इन सबको कूटकर सायंकाल के समय जलमें भिगोकर प्रातःकाल के समय छानलेवे तैल ६४ तोले लाख धव ढाखकी छाल तथा गोंद और सेमर इन का कल्क डालकर पाक करै जब पानी जलजाय केवल तैल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे ॥ ७२ ॥

पिष्टैःसिद्धञ्चतत्तैलंपिचुयोनौनिधापयेत् । सशर्करैःकषायैश्चशीतैःकुर्वीतसेचनम् ॥ ७३ ॥

इस तैलमें रुई डुबोकर योनिमें रक्खै और इन्हीं औषधियोंके शीतल काढ़ेमें शक्कर डालकर योनिको सींचै ॥ ७३ ॥

पिच्छिलाविवृताकालदुष्टायोनिश्चदारुणा । सप्ताहाच्छुध्यतिक्षिप्रमपत्यञ्चापिविन्दति ॥ ७४ ॥

इससे पिच्छिला (लसलसी) विवृता कालदुष्टा तथा दारुणायोनि सात दिनके भीतर शीघ्रही शुद्ध होजाती है और गर्भ स्थित होजाता है ॥ ७४ ॥

उदुम्बरस्यदुग्धेनषट्कृत्वोभावितांस्तिलान् । तैलंक्काथेचतस्यैवसिद्धंधार्य्यञ्चपूर्ववत् ॥ ७५ ॥

गूलर के दूधमें छः बार भिगोये हुये तिलों का तैल निकालकर गूलर के काढ़े के साथ पाक करलेवै इस तैलको भी पूर्वोक्त विधिसे योनिमें रक्खे ॥ ७५ ॥

धातक्यामलकीपत्रस्रोतोजमधुकोत्पलैः । जम्ब्वाम्रमध्यकासीसलोध्रकट्फलतिन्दुकैः ॥ ७६ ॥

धवई आमले की पत्ती स्रोतोज मुलेठी उत्पल जामुन तथा आमकी गुठली कसीस लोध कायफल तेंदुवा ॥ ७६ ॥

सौराष्ट्रिकादाडिमत्वगुदुम्बरशलाटुभिः । अक्षमात्रैरजामूत्रेक्षीरेचद्विगुणेपचेत् ॥ ७७ ॥ तैलप्रस्थंपिचुंतस्माद्योनौचप्रणयेत्ततः । कटीपृष्ठत्रिकाभ्यङ्गस्नेहवस्तिञ्चदापयेत् ॥ ७८ ॥

सोरठी मिट्टी अनार की छाल और कच्चे गूलर इनके तोले २ भर कल्क बकरी के मूत्र तथा द्विगुण दूधके साथ ६४ तोले तैल का पाक करै इस तैलमें रुई डुबोकर योनिमें रक्खे इस तैलको योनिमें टपकावे कमर पीठ तथा रीढ़के नीचे की हड्डियों में इस तैल को मलै और इस तैलके द्वारा स्वेदन तथा वस्तिक्रिया करै ॥ ७७ । ७८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिच्छिलास्राविणीयोनिर्विप्लुतोपप्लुतातथा । उत्तानाचोन्नताशूनासिध्येत्सस्फोटशूलिनी ॥ ७९ ॥

इससे पिच्छिला स्राविणी विप्लुता उपप्लुता उत्ताना उन्नता (इनका वर्णन पहिले इसी अध्यायमें कियागया है) शोथयुक्त और छाले तथा शूलयुक्त योनिशुद्ध होजाती है ॥ ७९ ॥

करीरधवनिम्बार्कवेणुकोशाम्रजाम्बवैः । जिङ्गिनीवृषमूलानांक्वाथैर्माद्वीकशीधुभिः ॥ ८० ॥

करील धव नींब मदार बांस छोटा आम्र जामुन मँजीठ और रूसेकी जड़ इनका काढ़ा मुनक्के की मद्य ॥ ८० ॥

सशुक्तैर्धावनंमिश्रैर्योन्यास्रावविनाशनम् । कुर्य्यात्सतक्रगोमूत्रशुक्तैर्वात्रिफलारसैः ॥ ८१ ॥

और सिरका इन सबको एकमें मिलाकर योनि धोवे इससे योनि का बहना बन्द होजाता है मट्ठा गोमूत्र सिरका और त्रिफला का रस इनकेद्वारा धोने से योनिका बहना बन्द होजाता है ॥ ८१ ॥

पिप्पल्ययोरजःपथ्याप्रयोगामधुनाहिताः । श्लेष्मलायांकटुप्रायाःसमूत्राबस्तयोहिताः ॥ ८२ ॥

पीपरि लोहेका चूर्ण तथा हड़ इनको शहदमें मिलाकर सेवन करने से योनिरोगोंका नाश होता है कफज योनिरोगों में कडुवी औषधियों से युक्त गोमूत्र के द्वारा वस्तिक्रिया (पिचकारी देना) करनीचाहिये ॥ ८२ ॥

पित्तेसमधुरक्षीरावातेतैलाम्लसंयुताः । सन्निपातसमुत्थायाःकर्म्मसाधारणंमतम् ॥ ८३ ॥

पित्तजयोनिमें मधुर औषधियों से युक्त दूधकेद्वारा वस्तिक्रिया करनी चाहिये वातज योनिरोग में खट्टी औषधियों से युक्त तैलके द्वारा वस्तिक्रिया करनी चाहिये और सन्निपातज योनिरोगमें वात आदि तीनों दोषोंकी साधारण चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८३ ॥

रक्तयोन्यामसृग्वर्णैरनुबन्धंसमीक्ष्य च । ततःकुर्य्याद्यथादोषंरक्तस्थापनमौषधम् ॥ ८४ ॥

जो योनिसे रुधिर बहता होय तो रुधिरके वर्णों से किस दोषका इसमें सम्बन्ध है यह परीक्षा करके दोषोंके अनुसार रुधिरके बन्द करनेवाली चिकित्सा करे ॥ ८४ ॥

तिलचूर्णंदधिघृतंफाणितंशौकरीवसा । क्षौद्रेणसंयुतंपेयंवातासृग्दरनाशनम् ॥ ८५ ॥

तिलों का चूर्ण दही घी राब शूकर की चर्बी और शहद इनको एकमें मिलाकर पीनेसे वातज प्रदरका नाश होता है ॥ ८५ ॥

वराहस्यरसोमेध्यःसकौलत्थोऽनिलाधिके । शर्करातैलयष्ट्याह्वनागरैर्वायुतंदधि ॥ ८६ ॥

शूकरके मांसका रस और कुल्थीका यूष वातज प्रदर में बहुत हित होता है शक्कर तैल मुलेठी तथा सोंठि इन सबको दहीमें मिलाकर पीने से वातज प्रदरका नाश होताहै ॥ ८६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पयस्योत्पलशालूकबिसकालीयकाम्बुजान्। सपयःशर्करांक्षौद्रं पैत्तिकेऽसृग्दरेपिबेत्॥ ८७॥

क्षीरकाकोली उत्पल कमलकी जड़ कमल की डण्डी के भीतरका सूत्र दारुहल्दी और कमल इन सबको दूध शक्कर तथा शहद के साथ मिलाकर पीने से पित्तज मदरका नाश होताहै॥ ८७॥

पाठाजम्ब्वाम्रयोर्मध्येशिलोद्भेदंरसाञ्जनम्। अम्बष्ठाशाल्मलीवेष्टंस मङ्गावत्सकत्वचम्॥ ८८॥ बाह्लीकातिविषेबिल्वंमुस्तंलोध्रंसगैरिकम्। कट्फलंमरिचंशुण्ठींमृद्वीकांरक्तचन्दनम्॥ ८९॥

पाढ़र जामुन तथा आंबकी गुठली पाषाणभेद रसौंत जूही मोचरस लजालू कमल की केशर केशर अतीस बेल नागरमोथा लोध गेरू कायफल मिर्च सोंठि मुनक्का लालचन्दन॥ ८८। ८९॥

कट्वङ्गवत्सकानन्तांधातकींमधुकार्जुनम्। पुष्येणोद्धृत्यतुल्यानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥ ९०॥

शालपर्णी कुरैया जवासा धवई के फूल मुलेठी तथा अर्जुनकी छाल इन सब औषधियों को पुष्यनक्षत्रमें लाकर महीन पीसै॥९०॥

तानिक्षौद्रेणसंयोज्यपिबेत्तण्डुलाम्बुना। अर्शःसुचातिसारेषुरक्तंयचोपवेश्यते॥ ९१॥

और शहद तथा चावलोंके धोवनमेंमिलाकर पीवे इससे बवासीर अतीसार रुधिर गिरना॥ ९१॥

दोषागन्तुकृतायेचबालानांतांश्च नाशयेत्। योनिदोषंरजोदोषंश्वेतंनीलंसपीतकम्॥ ९२॥ स्त्रीणांश्यावारुणंयच्चप्रसह्यविनिवर्त्तयेत्। चूर्णंपुष्यानुगंनामहितमात्रेयपूजितम्॥ ९३॥

इति पुष्यानुगचूर्णम्।

बालकोंके दोषज तथा आगन्तुजरोग योनिदोष और स्त्रियोंका श्वेत नील पीत कपिश तथा अरुणवर्ण मदर इन सबका नाश होताहै इस चूर्ण को पुष्यानुग कहते हैं यह भगवान् आत्रेयजी को बहुत प्रिय है॥ ९२। ९३॥

इति पुष्यानुगचूर्ण॥

तण्डुलीयकमूलञ्चसक्षौद्रंतण्डुलाम्बुना। रसाञ्जनञ्चलाक्षाञ्चछागेन पयसापिबेत्॥ ९४॥

चौराई की जड़ को पीसकर शहद तथा चावलों के धोवन के साथ पीने से अथवा रसौंत लाख तथा बकरी के दूध के साथ पीने से पित्तमदर का नाश होता है॥ ९४॥

पत्रकल्कौघृतेभृष्टौराजादनकपित्थयोः। पित्तानिलहरौपैत्तेसर्वथैवास्रपित्तजित्॥ ९५॥

खिन्नी तथा कैथे की पत्तियों को घी में भूनकर पीसके सेवन करनेसे वातपित्तज मदर का नाश होताहै पित्तज मदरमें रक्तपित्तना-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शक सम्पूर्ण चिकित्सा हित होती है॥९५॥

मधूकंत्रिफलांलोध्रंमुस्तंसौराष्ट्रिकांमधु । मद्यैर्निम्बगुडूच्यौतुकफजेऽसृग्दरेपिबेत् ॥ ९६ ॥

मुलेठी त्रिफला लोध नागरमोथा सोरठी मिट्टी शहद नींब तथा गिलोय इनको मद्य में मिलाकर पीने से कफजमदर का नाश होता है॥ ९६ ॥

विरेचनंमहातिक्तंपित्तजेऽसृग्दरेपिबेत् । हितंगर्भपरिस्रावेयच्चोक्तंतच्चकारयेत् ॥ ९७ ॥

पित्तजमदर में विरेचन के लिये जो महातिक्त घृत कहागया है वह पीना चाहिये गर्भ के गिरने में जो चिकित्सा कहीगई है वह सम्पूर्ण प्रदरों में करनी चाहिये ॥ ९७ ॥

काश्मर्य्यकुटजक्काथेसिद्धमुत्तरवस्तिना । रक्तयोन्यरजस्कानांपुत्रघ्न्याश्चहितंघृतम् ॥ ९८ ॥

खँभारी के फल तथा कुरैया के काढ़े के साथ पाक किये गये घीके द्वारा उत्तरवस्ति (योनिमें पिचकारीदेना) देना मदर अरजस्का तथा पुत्रघ्नी योनि के लिये हित होता है॥ ९८ ॥

मृगाजाविवराहासृग्दध्यम्लक्षौद्रसर्पिषा । अरजस्कापिबेत्सिद्धंजीवनीयैःपयोऽपिवा ॥ ९९ ॥

मृग बकरा भेड़ा तथा शूकर इनका रुधिर दही और दाड़िम आदि खट्टे फल इनके साथ पाक कियेगये घीको अथवा जीवनीयगण के साथ पाक किये गये दूधको अरजस्का (जिस स्त्री के रज न निकलता हो) स्त्री पीवे ॥ ९९ ॥

कर्णिन्यचरणाशुष्कयोनिप्राक्चरणासुच । कफवातेचदातव्यंतैलमुत्तरवस्तिना ॥ १०० ॥

कर्णिनी अचरणा प्राक्चरणा तथा शुष्कयोनिमें और कफ वातज रोगों में तैल के द्वारा उत्तरवस्ति देनी चाहिये ॥ १०० ॥

गोपित्तमत्स्यपित्तेवाक्षौमंत्रिःसप्तभावितम् । मधुनाकिण्वचूर्णंवादद्यादचरणापहम् ॥ १०१ ॥

गौके पित्तेमें अथवा मछली के पित्ते में रेशमी वस्त्रको २१ बार भिगोकर योनिमें रखने से अथवा किण्व (मद्यबनाने के लिये जो वस्तु बहुत दिनतक सड़ाई जाती है उसे किण्व कहते हैं) के चूर्ण को शहद में मिलाकर योनिमें रखने से अचरणा योनि अच्छी होजाती है॥ १०१ ॥

स्रोतसांशोधनंकण्डूक्लेदशोफहरञ्चतत् । वातघ्नैःशतपाकैस्तुतैलैःप्रागतिचारणी ॥ १०२ ॥ आस्थाप्याचानुवास्याचस्वेद्यैश्चानिलसूदनैः । स्नेहद्रव्यैस्तथाहारैरुपनाहैश्चयुक्तितः ॥ १०३ ॥

स्रोत शुद्ध होजाते हैं और खुजली क्लेद तथा शोथ का नाश होताहै प्राक्चरणा तथा अतिचरणा योनिमें वातनाशक पूर्वोक्त शतपाकी तैलों के द्वारा आस्थापन तथा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये वातनाशक औषधि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यों के द्वारा स्वेदन करना चाहिये और स्नेह द्रव्य तथा आहारके वस्तुओंके द्वारा पुल्टिस बनाकर लगानी चाहिये ॥ १०२ । १०३ ॥

शताह्वयवगोधूमकिएवकुष्ठप्रियंगुभिः । बलाखुपर्णिकाश्वाह्वैःसंयावोधारणःस्मृतः ॥ १०४ ॥

सौंफ यव गेहूं किएव कूट प्रियंगु बरियारा मूषाकर्णी तथा असगन्ध इनके द्वारा कुशली बनाकर खाने से योनिसे रुधिर बहना बन्द होजाता है ॥ १०४ ॥

वामिन्याप्लुतयोन्योश्चकर्त्तव्यःस्वेदनोऽपिवा । क्रमःकार्य्यस्ततःस्नेहः पिचुभिस्तर्पणंभवेत् ॥ १०५ ॥

वामिनी तथा परिप्लुता योनिमें पहिले स्वेदन करके फिर क्रमसे रुईको तैल आदि स्नेहों में डुबोकर रक्खै इससे योनि पुष्ट होजाती है ॥ १०५ ॥

शल्लकीजिङ्गिनीजम्बूधवत्वक्पञ्चवल्कलैः। कषायैःसाधितःस्नेहःपिचुःस्याद्विप्लुतापहः ॥ १०६ ॥

सलई मँजीठ जामुन धवकी छाल और बरगद आदि पांच वृक्षोंकी छाल इनके काढ़े के साथ पाक कियेगये घी आदि स्नेहमें रुई डुबोकर रखने से विप्लुता योनि अच्छी होजाती है ॥ १०६ ॥

कर्णिन्यांवर्त्तिकाकुष्ठपिप्पल्यर्काग्रसैन्धवैः । बस्तमूत्रकृताधार्य्यासर्वञ्चश्लेष्मनुद्धितम् ॥ १०७ ॥

कर्णिनी योनिमें कूट पीपरि मदार का अग्रभाग तथा सैंधव लवण इनको बकरी के मूत्र में पीसकर बत्ती बनाकर रक्खै कर्णिनीयोनि में कफनाशक सम्पूर्ण चिकित्सा हित होती हैं ॥ १०७ ॥

त्रैवृतंस्नेहनंस्वेदोग्राम्यानूपौदकारसाः। दशमूलपयोवस्तिश्चोदावर्त्तानिलार्त्तिषु ॥ १०८ ॥

उदावृत्ता योनिमें वातज पीड़ा होने पर निशोथके साथ पाक कियेगये घृत आदिस्नेह के द्वारा स्नेहन स्वेदन बकरा आदि ग्राम्य और भैंसा आदि आनूप जीवों के मांस का रस और दशमूल के साथ पाक कियेगये दूध के द्वारा वस्ति देना हित होताहै ॥ १०८ ॥

त्रैवृतेनानुवास्याचवस्तिश्चोत्तरसंज्ञितः । तदेवचमहायोन्यांस्रस्तायाञ्चविधीयते ॥ १०९ ॥

और उदावृत्ता योनिमें निशोथ के साथ पाक कियेगये स्नेहके द्वारा अनुवासनवस्ति तथा उत्तरवस्ति (लिङ्ग तथा योनि में जो पिचकारी दीजाती है उसे उत्तरवस्ति कहते हैं) हित होती है महायोनिमें भी यही उपाय करना चाहिये ॥ १०९ ॥

वसात्वृक्षवराहाणांघृतञ्चमधुरैःभृतम् । पूरयित्वामहायोनिंबध्नीयात्क्षौमलक्तकैः ॥ ११० ॥

रीछ तथा शूकर की चर्बी और घी को मधुरगण की औषधियों के साथ पाक करके महायोनि में भरै और ऊपरसे रेशमी वस्त्र बांध देवै इससे महायोनि अच्छी होजाती है ॥ ११० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसुप्तांसर्पिषाभ्यज्यक्षीरस्विन्नांप्रवेश्यच । बध्नीयाद्वेशवारस्यपिण्डेनामूत्रकालतः ॥ १११ ॥

निकली हुई योनिमें घी मलकर दूध के द्वारा स्वेदन करके उसको भीतर प्रविष्ट करै और फिर वेशवार (मसालाविशेष) की पिंड़िया बनाकर रखकर बांध देवे और जब तक मूत्र त्याग करने की इच्छा न होय तब तक बँधी रक्खै ॥ १११ ॥

यच्चवातविकाराणांकर्मोक्तंतच्चकारयेत् । सर्वव्यापत्सुमतिमान्महायोन्यांविशेषतः ॥ ११२ ॥

सम्पूर्ण योनिरोगों में वातजरोगों में कही हुई चिकित्सा करनी चाहिये और महायोनिमें विशेष करके बुद्धिमान् वैद्य वातरोगमें कहीहुई चिकित्सा करे ॥ ११२ ॥

नहिवाताहतेयोनिर्नारीणांसंप्रदुष्यति । शमयित्वातमन्यस्यकुर्य्याद्दोषस्यभेषजम् ॥ ११३ ॥

क्योंकि वायु के विना स्त्रियों की योनि दूषित नहीं होती इससे पहिले वायु को शान्त करके पीछे अन्य दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ११३ ॥

मूलकल्कन्तुरोहीतात्पाण्डुरेप्रदरेपिबेत् । जलेनामलकाद्बीजंकल्कंवाससितामधुम् ॥ ११४ ॥

पाण्डुवर्ण प्रदरमें रोहिष की जड़को पीस कर जलके साथ पीवे अथवा आमले के बीजों को पीसकर शहद तथा शक्कर मिलाकर पीवे ॥ ११४ ॥

मधुनामलकाच्चूर्णंरसंवालेहयेच्चताम् । न्यग्रोधत्वक्कषायेणलोध्रकल्कंतथापिबेत् ॥ ११५ ॥

श्वेत प्रदरमें आमले के चूर्ण अथवा रस को शहद में मिलाकर चाटै योनिसे बहुत स्राव (रुधिर आदि बहना) होने पर बरगद की छाल के काढ़े में लोध को पीसकर पीवे ॥ ११५ ॥

अस्रावेक्षौमपट्टंवाभावितंतेनधारयेत् । प्लक्षत्वक्चूर्णपिण्डंवाधारयेन्मधुनाकृतम् ॥ ११६ ॥

अथवा इस काढ़े में रेशमी वस्त्र भिगोकर योनिमें रक्खै अथवा पकरिया की छाल के चूर्ण को शहदमें मिलाकर पिंड़िया बनाकर योनिमें रक्खै ॥ ११६ ॥

योन्यास्नेहाक्तयालोध्रप्रियङ्गुमधुकस्यच । धार्य्यामधुयुतावर्त्तिःकषायाणाञ्चसर्वशः ॥ ११७ ॥

योनिमें घृत आदि स्नेह मलकर लोध प्रियंगु मुलेठी तथा शहद इनकी बत्ती बनाकर रक्खै अथवा कषैली वस्तुओंकी बत्ती बनाकर रक्खै इससे योनि बहना बन्द होजाता है ॥ ११७ ॥

स्रावच्छेदार्थमभ्यक्तांधूपयेद्वाघृताप्लुतैः । सरलागुग्गुलुयवैःसतैलकटुमत्स्यकैः ॥ ११८ ॥

योनिमें तैल मलकर सरलकाष्ठ गुग्गुल यव तैल तथा कडुई मछली इनको घी में मिलाकर इनकी धूपदेवै इससे योनिका बहना बन्द होजाता है ॥ ११८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कासीसत्रिफलाकाक्षीशाम्रजम्बवस्थिधातकी। पैच्छिल्येक्षौद्रसंयुक्तश्चूर्णोवैशद्यकारकः ॥ ११९ ॥

कसीस त्रिफला किवांच के वीज आम तथा जामुनकी गुठली और धवईके फूल इन का चूर्ण करके शहदमें मिलाकर योनिमें लगाने से योनि का लसलसापन नष्ट होजाता है और योनि साफ होजाती है॥ ११९ ॥

पलाशसर्जजम्बुत्वक्समङ्गामोचधातकीः। सपिच्छिलापरिक्लिन्नास्तम्भनःकल्कइष्यते ॥ १२० ॥

ढाख राल जामुन की छाल लजालू मोचरस तथा धवई के फूल इन सबको पीसकर योनिमें लगाने से योनि का लसलसापन क्लेद तथा वहना वन्द होजाताहै ॥ १२० ॥

स्तब्धानांकर्कशानाञ्चपिण्डोमार्दवकारकः। धारयेद्वेशवारंवापायसंकृसरंतथा ॥ १२१ ॥

स्तब्ध तथा कर्कश योनिमें कोमलताकारक औषधियों की पिंड़िया बनाकर बांधनी चाहिये वेशवार (एक प्रकार का मशाला, खीर तथा खिचड़ी को बांधने से योनि की स्तब्धता (जकड़ जाना) तथा कर्कशताका नाश होताहै ॥ १२१ ॥

दुर्गन्धानांकषायःस्यात्तौवरःकल्कएववा। चूर्णंवासर्वगन्धानांपूतिगन्धापकर्षणम् ॥ १२२ ॥

सुगन्धित औषधियों के काढ़े तैल कल्क अथवा चूर्णयोनिमें डालनेसे योनिकी दुर्गंधिका नाश होताहै ॥ १२२ ॥

एवंयोनिषुशुद्धासुगर्भंविन्दन्तियोषितः। अदुष्टेप्राकृतेबीजेजीवोपक्रमणेसति ॥ १२३ ॥

इस प्रकार चिकित्सा करने से योनिके शुद्ध होजानेपर और प्राकृतबीज (रज और वीर्य) के शुद्ध होनेपर और जीव आत्मा के प्राप्त होनेपर गर्भस्थिति होती है ॥ १२३ ॥

पञ्चकर्मविशुद्धस्यपुरुषस्यापिचेन्द्रियम्। परीक्ष्यवर्णैर्दोषाणांदुष्टंतद्घ्नैरुपाचरेत् ॥ १२४ ॥

भवन्ति चात्र।

वमन आदि पंचकर्मों से शुद्ध शरीरवाले पुरुष के लिङ्ग की दोषोंके वर्णों के अनुसार परीक्षा करके यदि लिङ्ग दूषित मालूम पड़े तो दोषनाशक चिकित्सा करै ॥ १२४ ॥

सलिङ्गाव्यापदोयोनेःसनिदानचिकित्सिताः। उक्ताविस्तरशःसम्यङ्मुनिनातत्त्वदर्शिना ॥ १२५ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। तत्त्वोंके जाननेवाले भगवान् आत्रेयजीने योनिरोगों के लक्षण निदान तथा यत्न विस्तार तथा संक्षेपपूर्वक कहे ॥ १२५ ॥

पुनरेवाग्निवेशस्तुपप्रच्छभिषजांवरम्। आत्रेयमुपसङ्गम्यशुक्रदोषास्त्वयानघ ॥ १२६ ॥ रोगाध्यायेसमुद्दिष्टाह्यष्टौपुंसामशेषतः। तेषांहेतुंभिषक्श्रेष्ठ! दुष्टादुष्टस्यचाकृतिम् ॥ १२७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त वैद्यवर भगवान् आत्रेयजी से अग्निवेशने फिर कहा कि हे अनघ (पापरहित) आपने सूत्राध्याय के अष्टोदरीयनाम अध्यायमें पुरुषों के आठ प्रकारके वीर्यदोष कहे थे अब हे भिषग्वर इन दोषोंके हेतुदूषित तथा दोषरहित वीर्यके लक्षण १२६।१२७।

चिकित्सितञ्चकात्स्न्र्येनक्लैब्यंयच्चचतुर्विधम् । उपद्रवेषुयोनीनांप्रदरोयश्चकीर्त्तितः॥ १२८ ॥ तेषांनिदानंलिङ्गञ्चचिकित्साञ्चैवतत्त्वतः । समासव्यासभेदेनप्रब्रूहिभिषजांवर ! ॥ १२६ ॥

दूषित वीर्यकी चिकित्सा चार प्रकार की नपुंसकता और योनिरोगों के उपद्रवोंमें कहे गये प्रदरके निदान लक्षण तथा यत्न विस्तारपूर्वक और संक्षेपपूर्वक कहिये ॥१२८।१२०॥

तस्मैशुश्रूषमाणायप्रोवाचमुनिपुङ्गवः । बीजंयस्माद्व्यवायेषुहर्षयोनिसमुत्थितम् । शुक्रंपौरुषमित्युक्तंतस्माद्वक्ष्यामितच्छृणु ॥ १३० ॥

यह सुनकर भगवान् आत्रेयजीने सुननेकी इच्छा करतेहुये अग्निवेश से कहा कि मैथुन के समय हर्ष (मैथुन करने की इच्छा) के कारण योनि में गिराहुआ पुरुषका शुक्र (वीर्य्य) ही बीज कहलाता है इससे मैं शुक्रके दोषों का वर्णन करताहूं तुम सुनो १३०।

यथाबीजमकालाम्बुक्रिमिकीटाग्निदूषितम् । नविरोहतिसन्दुष्टंतथाशुक्रंशरीरिणाम् ॥ १३१ ॥

जैसे अकाल जल क्रिमि कीट तथा अग्नि से दूषित बीज नहीं जमता है उसी प्रकार मनुष्यों के दूषित वीर्य्य से गर्भ नहीं स्थित होता है ॥ १३१ ॥

अतिव्यवायाद्व्यायामादसात्म्यानाञ्चसेवनात् । अकालेवाप्ययोनौवामैथुनंनचगच्छतः ॥ १३२ ॥

बहुत मैथुन करना बहुत व्यायाम करना असात्म्य वस्तुओं का सेवन करना असमय में मैथुन करना अयोनि (योनि से अन्य गुदादि स्थानों) में मैथुन करना ॥ १३२ ॥

रूक्षतिक्तकषायातिलवणाम्लोष्णसेवनात् । नारीणामरसज्ञानांसेवणाज्जरयातथा ॥ १३३ ॥

रूखी तीती कषैली बहुत नमकीन खट्टी तथा उष्ण वस्तुओं का बहुत सेवन करना स्त्रियों के रस को न जानना स्त्राव से वृद्धावस्था ॥ १३३ ॥

चिन्ताशोकादविस्रम्भाच्छस्त्रक्षाराग्निविभ्रमात् । भयात्क्रोधादतीसाराद्व्याधिभिःकर्षितस्यच ॥ वेगाघातात्क्षताच्चापिधातूनांसंप्रदूषणात् । दोषाःपृथक्समस्तावाप्राप्यरेतोवहाःशिराः । शुक्रंसंदूषयन्त्याशुतद्वक्ष्यामिविभागशः॥१३४।१३५॥

चिन्ता शोक अविश्वास खटका लगा रहना) शस्त्र क्षार तथा अग्निकर्म्मका बिगड़ जाना भय क्रोध मरणआदि हिंसाकर्म्म रोगोंकेद्वारा कृश होजाना मल मूत्र आदि के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोंका रोकना क्षय और धातुओंका दूषित होना इन कारणों से कुपितहुये वात आदि दोष अलग २ अथवा एक साथही वीर्य्यकी लेचलनेवाली नाड़ियों में जाकर वीर्य्य को शीघ्रही दूषित करते हैं अब विभागपूर्वक इसका वर्णन किया जाताहै ॥ १३४। १३५ ॥

फेनिलंतनुरूक्षञ्चविवर्णंपूतिपिच्छिलम्। अन्यधातूपसंसृष्टमवसादितथाष्टमम् ॥ १३६ ॥

फेनिल तनु रूक्ष विवर्ण पूति पिच्छिल अन्य धातूपसंसृष्ट तथा अवसादि यह दूषित वीर्य्य के आठ भेद हैं ॥ १३६ ॥

फेनिलंतनुरूक्षञ्चकृच्छ्रेणाल्पञ्चमारुतात् । भवत्युपहतंशुक्रंनतद्गर्भायकल्पते ॥ १३७ ॥

वायुसे दूषित वीर्य्य फेनिल (फेनायुक्त) शुष्क (सूखा) कुछही पिच्छिल (लसलसा) तथा तनु (पतला) होताहै ऐसे वीर्य से गर्भ नहीं ठहरता है ॥ १३७ ॥

सनीलमथवापीतमत्युष्णंपूतिगन्धिच। दहल्लिङ्गंविनिर्यातिशुक्रंपित्तेनदूषितम् ॥ १३८ ॥

पित्तसे दूषित वीर्य नील अथवा पीतवर्ण बहुत उष्ण पूतिगंधि (दुर्गन्धित) होता है और जब यह वीर्य्य गिरता है तो लिङ्गमें दाह होने लगता है ॥ १३८ ॥

श्लेष्मणाबद्धमार्गन्तुभवत्यत्यर्थपिच्छिलम् । स्त्रीणामत्यर्थगमनादभिघातात्क्षतादपि ॥ १३९ ॥

शुक्रंप्रवर्त्ततेजन्तोःप्रायेणरक्तकारणोंसे यम् । वेगसन्धारणाच्छुक्रंवायुर्है इस से विहतंपथि ॥ १४० ॥ कृच्छ्रेणयातिग्रथितमवसादितथाष्टमम् । इति दोषाःसमाख्याताःशुक्रस्याष्टौसलक्षणाः ॥ १४१ ॥

कफसे दूषित वीर्य्य बहुत पिच्छिल (लसलसा) होताहै बहुत मैथुन करने से चोट लगने से और क्षीणता से प्रायः मनुष्यों का वीर्य्य रुधिरसहित निकलताहै उसीको अन्य धातूपसंसृष्ट कहते हैं मल मूत्र आदि वेगोंके रोकने से वायुकेद्वारा मार्ग में रुकाहुआ वीर्य गँठीला होकर बड़ेकष्ट से निकलता है इसको अवसादि कहते हैं इस रीतिसे लक्षणसहित आठो प्रकार का दूषित वीर्य्य कहा गया ॥ १३९। १४०। १४१ ॥

स्निग्धंघनंपिच्छिलञ्चमधुरञ्चाविदाहिच । रेतःशुद्धंविजानीयाच्छ्वेतंस्फटिकसन्निभम् ॥ १४२ ॥

स्निग्ध घना पिच्छिल (लसलसा) मधुर अविदाही और स्फटिकमणिके समान श्वेत वीर्य्य को शुद्ध जानना चाहिये ॥ १४२ ॥

वाजीकरणयोगोक्तैरुपयोगैःसुखैर्हितैः। रक्तपित्तहरैर्योगैर्योनिव्यापदिकैस्तथा ॥ १४३ ॥ दुष्टंयथाभवेद्रेतः ततस्तत्समुपाचरेत् । घृतञ्चजीवनीयंयच्च्यवनप्राशएवच ॥१४४॥ गिरिजस्यप्रयोगश्चरेतोदोषानपोह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ति । वातान्वितेहिताःशुक्रेनिरूहाः मनुवासनाः ॥ १४५ ॥

दूषित वीर्यकी वाजीकरण योगोंमें कहेहुये सुखदायी तथा हितकारक योगों से रक्तपित्तनाशक योगोंसे और योनिरोगों को नष्ट करने के लिये कहेगये योगों से दोषके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये जीवनीयगण की औषधियों के साथ पाक कियागया घी च्यवनप्राश (चिकित्सास्थानका पहिला अध्याय देखो) और शिलाजीत का प्रयोग वीर्य्य दोषों को नष्ट करता है वातज वीर्य्यदोषमें निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्ति हित होती है ॥ १४३ । १४४ । १४५ ॥

अभयामलकीयञ्चपैत्तेशस्तंरसायनम् । मागध्यमृतलोहानांत्रिफलायारसायनम् ॥ १४६ ॥ कफोत्थितंशुक्रदोषंहन्याद्भल्लातकस्यच । अन्यधातूपसंसृष्टंशुक्रंवीक्ष्यभिषक्क्रियाः । यथादोषंप्रयोज्यं स्याद्दोषधातुभिषग्जितम् १४७ ॥

पित्तजवीर्य्यदोषमें अभयामलकीय रसायन हित होती हैं कफजवीर्य्यदोष में पीपरि गिलोय लोह त्रिफला और भिलावाँ की रसायन हित होती हैं बुद्धिमान् वैद्य वीर्य्यको अन्यधातूपसंसृष्ट (रुधिर आदि धातुओं से मिलाहुआ) देखकर दोष के अनुसार दोष तथा धातु की चिकित्सा करै॥१४६॥१४७॥

सर्पिःपयोरसाःशालिर्यवगोधूमषष्टिकाः । प्रशस्ताःशुक्रदोषेषुवस्तिकर्म्मविशेषतः । इत्यष्टशुक्रदोषाणांमुनिनोक्तंचिकित्सितम् ॥ १४८ ॥

वीर्य्यदोषों में घी दूध मांस रस शालिधान्य यव गेहूं तथा साँठी के चावल हित होते हैं और वस्तिकर्म्म बहुत हितकारी होता है इस प्रकार आत्रेयजीने वीर्य के आठो दोषों की चिकित्सा कही ॥ १४८ ॥

रेतोदोषोद्भवंक्लैब्यंयस्माच्छुद्धैवसिध्यति । ततोवक्ष्यामितेसम्यगग्निवेश ! यथायथम् ॥ १४९ ॥

वीर्य्य के दोष से हुआ क्लैब्य (नपुंसकता) वीर्य्य के शुद्ध होनेसे ही नष्ट होता है इससे हे अग्निवेश तुम्हारे आगे अब मैं सब क्लैब्यका यथावत् वर्णन करताहूं ॥ १४९ ॥

बीजध्वजोपघाताभ्यांजरयाशुक्रसंक्षयात् । क्लैब्यंसम्पद्यतेतस्यशृणुसामान्यलक्षणम् ॥ १५० ॥

वीर्य्य के दूषित होने से लिंग के दूषित होनेसे वृद्धावस्था से और वीर्य्य की क्षीणता से नपुंसकता उत्पन्न होती है इसका सामान्य लक्षण कहते हैं सुनो ॥ १५० ॥

सङ्कल्पप्रवणोनित्यंप्रियांवश्यामपिस्त्रियम् । नयातिलिङ्गशैथिल्यात्कदाचिद्यातिवायदि ॥ १५१ ॥

मन में बहुत मनोरथ करके भी लिंगकी शिथिलता के कारण प्यारी तथा वशीभूत स्त्री के निकट न जासकना अथवा कभी कभी जासकना ॥ १५१ ॥

श्वासार्त्तःस्विन्नगात्रश्रमोघसंकल्प

CC-0. ... Collection. Digitized by eGangotri

चेष्टितः। म्लानशिश्नश्चनिर्बीजःस्या देतत्क्लैब्यलक्षणम् । सामान्यलक्षणंह्येतद्विस्तरेणप्रवक्ष्यते॥ १५२ ॥

श्वाससे पीड़ित स्विन्नगात्र (जिसके अंगों में पसीना निकलाहो) मोघसंकल्प (जिसके मनोरथ व्यर्थ होगये हों) मोघचेष्ट (जिसकी सब चेष्टा व्यर्थहों) म्लानशिश्न (जिसका लिंग शिथिलहो) तथा निर्बीज होना यह नपुंसकताके सामान्य लक्षण हैं अब आगे विस्तारपूर्वक नपुंसकता का वर्णन किया जाता है ॥ १५२ ॥

शीतरूक्षाल्पसंक्लिष्टविरुद्धाजीर्ण भोजनात्। शोकचिन्ताभयत्रासात्स्त्रीणाञ्चात्यर्थसेवनात् ॥ १५३॥

शीतल रूक्ष स्वल्प मिलाहुआ तथा विरुद्ध भोजन करना अजीर्ण में भोजनकरना शोक चिन्ता भय घबड़ाना बहुत मैथुन करना ॥ १५३ ॥

अभिचारादविस्रम्भाद्रसादीनाञ्चसंक्षयात् । वातादीनाञ्चवैषम्यात्तथैवानशनाच्छ्रमात् ॥ १५४ ॥

हिंसाकर्म्म अविश्वास (खटकालगा रहना) रसआदि धातुओंका क्षीण होना वातआदि दोषों की विषमता (घटबढ़होना) लंघन श्रम ॥ १५४ ॥

नारीणामरसज्ञत्वात्पञ्चकर्म्मापचारतः । बीजोपघाताद्भवतिपाण्डुवर्णःसुदुर्बलः ॥ १५५ ॥

स्त्रियोंके रसको न जानना और वमनआदि पंचकर्म्मों का विगड़जाना इनकारणों से मनुष्यों का वीर्य्य दूषित होजाता है इस से वह मनुष्य पाण्डुवर्ण दुर्बल ॥ १५५ ॥

अल्पप्राणोऽल्पहर्षश्चप्रमदासुभवेन्नरः । हृत्पाण्डुरोगतमककामलाश्रमपीडितः ॥ १५६ ॥

अल्पप्राण और मैथुन करने में स्वल्प रुचिवाले होते हैं ऐसे पुरुषहृद्रोग पाण्डुरोग तमक श्वास कामला विनाश्रम कियेही श्रम मालूम होना ॥ १५६ ॥

छर्द्यतीसारशूलार्त्तःकासज्वरनिपीडितः । बीजोपघातजंक्लैब्यंध्वजभङ्गकृतंशृणु ॥ १५७ ॥

छर्दि अतीसार शूल खांसी तथा ज्वर इन से पीड़ित होते हैं यह वीर्य्य के दूषित होनेसे होनेवाली नपुंसकताके लक्षण कहेगये हैं आगे लिंगके दूषित होने से होनेवाली नपुंसकता के लक्षण कहेजाते हैं तुम सुनो ॥ १५७ ॥

अत्यम्ललवणक्षारविरुद्धाजीर्णभोजनात् । अत्यम्बुपानाद्विषमात्पिष्टान्नगुरुभोजनात् ॥ १५८ ॥

बहुत खट्टी नमकीन क्षार तथा विरुद्ध वस्तुखाना अजीर्ण में भोजन करना बहुत जल पीना विषमता से भोजन करना पिट्ठी भारी वस्तु ॥ १५८ ॥

दधिक्षीरानूपमांससेवनाद्व्याधिकर्षणात् । कन्यानाञ्चैवगमनादयोनिगमनादपि ॥ १५९ ॥

दही दूध तथा भैंस आदि आनूप जीवोंके मांस का बहुत सेवन करना रोगोंसे कृश हो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ना कन्याओंके साथ मैथुन करना योनिसे अन्य गुदाआदि स्थानोंमें मैथुन करना॥१५९॥

दीर्घरोगांचिरोत्सृष्टांतथैवचरजस्वलाम्। दुर्गन्धांदुष्टयोनिश्चतथैवचपरिस्रुताम्॥ १६० ॥ ईदृशींप्रमदांमोहाद्योगच्छेत्कामहर्षितः। चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघाततः॥ १६१ ॥

बड़े रोगवाली चिरोत्सृष्टा (जिसके साथ बहुत दिन से मैथुन न कियागयाहो) रजस्वला दुर्गंधियुक्ता दूषित योनिवाली तथा परिस्रुता (जिसकी योनि सदैव बहा करती हो) स्त्री के साथ कामातुर होकर अज्ञान से मैथुन करना चौपायों के साथ मैथुन करना लिंगमें चोट लगना ॥ १६०।१६१ ॥

अधावनाद्वामेढ्रस्यशस्त्रदन्तनखक्षतात्। काष्ठप्रहारनिष्पेषाच्छूकानाञ्चातिसेवनात्। रेतसश्चप्रतीघाताद्ध्वजभङ्गःप्रवर्त्तते ॥ १६२ ॥

लिंगका न धोना लिङ्ग में शस्त्र दाँत तथा नखोंका घाव लगना काष्ठआदि के द्वारा लिंगका दबजाना शूकों (दुमहे सर्पआदि जल जंतु तथा वात्स्यायन के कहेहुये लिंगवर्द्धक योगको शूक कहते हैं) का बहुत सेवन और वीर्य्य का रुकना इन कारणों से ध्वजभंग (लिंगका दूषित होजाना होताहै॥१६२॥

भवन्तियानिरूपाणितस्यवक्ष्याम्यतःपरम्। श्वयथुर्वेदनामेढ्रेरागश्चैवोपलक्ष्यते। स्फोटाश्चतीव्राजायन्तेलिङ्गपाकोभवत्यपि॥ १६३॥

अब जो लक्षण होते हैं वह कहताहूं लिंगमें शोथ पीड़ा तथा रक्तता होना तीव्रछाले पड़जाना. लिंगका पकना ॥ १६३ ॥

मांसवृद्धिर्भवेच्चास्यव्रणाःक्षिप्रंभवन्त्यपि। पुलाकोदकसङ्काशःस्रावःश्यावारुणप्रभः॥ १६४ ॥

लिंगके मांसका बढ़ना शीघ्रहीघाव पड़जाना पुलाक (तुच्छधान्य) के धोवन के समान कपिश तथा अरुणवर्ण स्रावहोना॥१६४॥

वलयीकुरुतेचापिकठिनश्चपरिग्रहः। ज्वरस्तृष्णाभ्रमोमूर्च्छाच्छर्दिश्चास्योपजायते ॥ १६५ ॥

लिंगमें ऐंठन होना तथा लिंगकी जड़ कठोर होजाना ज्वर तृषा भ्रम मूर्च्छा तथा छर्दिसे रोगीका व्याकुल होना ॥ १६५ ॥

रक्तंकृष्णंस्रवेच्चापिनीलमाविललोहितम्। अग्निनेवचदग्धस्यतीव्रोदाहःसवेदनः॥ १६६ ॥

लिंगमें रक्तकृष्ण नील तथा गँदला स्राव होना अग्निसे जलेहुये के समान पीड़ायुक्त तीव्र दाह होना ॥ १६६ ॥

वस्तौवृषणयोर्वापिसीवन्यांवंक्षणेषु च। कदाचित्पिच्छिलोवापिपाण्डुस्रावश्चजायते ॥ १६७ ॥

वस्ति (मूत्राशय) अण्डकोष अण्डकोष के नीचे की सीवन तथा वंक्षण (जांघों की संधि) में कभी २ लसलसा तथा पाण्डुवर्ण स्राव होना ॥ १६७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वयथुश्च भवेन्मन्दस्तिमितोऽल्पपरिस्रवः। चिराच्च पाकं व्रजति शीघ्रं वाथ प्रमुच्यते॥ १६८॥

शोथ होना उसमें गीला कपड़ा ढका हुआसा मालूमहोना जल्दी अथवा देर में पकना॥ १६८॥

जायन्ते क्रिमयश्चापि क्लिद्यते पूतिगन्धि च। विशीर्य्यते मणिश्चास्य मेढ्रं मुष्कावथापि च॥ १६९॥ ध्वजभङ्गकृतं क्लैब्यमित्येतत्समुदाहृतम्। एवं पञ्चविधं केचिद्ध्वजभङ्गं वदन्त्यपि॥ १७०॥

इति ध्वजभङ्गकृतक्लैब्यम्।

कीड़े पड़ना दुर्गंधि आना और मणि (लिंग का अग्रभाग) लिंग तथा अण्डकोषों का गलना यह ध्वजभंग से हुई नपुंसकता के लक्षण हैं कोई २ आचार्य पांच प्रकार का ध्वजभंग कहते हैं॥ १६९। १७०॥

क्लैब्यं जरासम्भवं हि प्रवक्ष्याम्यथ तच्छृणु। जघन्यमध्यप्रवरं वयस्त्रिविधमुच्यते॥ १७१॥

इसके उपरान्त वृद्धावस्था से होनेवाली नपुंसकता का वर्णन किया जाताहै तुम सुनो जघन्य (बाल्यावस्था) मध्य तथा प्रवर (वृद्धावस्था) यह तीन अवस्थाओं के भेद हैं॥ १७१॥

अथ प्रवयसां शुक्रं प्रायशः क्षीयते नृणाम्। रसादीनां संक्षयाच्च तथैवावृष्यसेवनात्॥ १७२॥

इनमें से प्रायः वृद्धावस्था वालों का वीर्य्य क्षीण होजाता है रस आदि धातुओं के क्षीण होने से अवीर्य्यवर्द्धक औषधियों का सेवन करने से॥ १७२॥

बलवीर्य्येन्द्रियाणाञ्च क्रमेणैव परिक्षयात्। परिक्षयादायुषश्चाप्यनाहाराच्छ्रमात्क्लमात्॥ १७३॥

बल वीर्य्य तथा इन्द्रियों की क्रमपूर्वक क्षीणता होने से आयु के क्षीण होने से लंघन करने से श्रमसे तथा ग्लानि से॥ १७३॥

जरासम्भवजं क्लैब्यमित्येतैर्हेतुभिर्नृणाम्। जायते तेन सोऽत्यर्थं क्षीणधातुः सुदुर्बलः॥ १७४॥

वृद्धावस्था के कारण होने वाली नपुंसकता होतीहै इससे मनुष्य अत्यन्त क्षीण धातु (क्षीणहुई धातुवाला) दुर्बल॥ १७४॥

विवर्णो विह्वलो दीनः क्षिप्रं व्याधिमथाश्नुते। एतज्जरासम्भवं हि चतुर्थं क्षयजं शृणु॥ १७५॥

इति जरासम्भवक्लैब्यम्।

विवर्ण (बिगड़हुये वर्णवाला) विह्वल तथा दीन होजाताहै और शीघ्रही रोगों को प्राप्तहोता है यह वृद्धावस्था के होनेवाली नपुंसकता के लक्षण हैं आगे क्षीणतासे होनेवाली चौथी नपुंसकताके लक्षण सुनो १७५॥

इति जरासम्भवक्लैब्यम्॥

अतिप्रचिन्तनाच्चैव शोकात्क्रोधाद्भयादपि। ईर्ष्योत्कण्ठादथोद्वेगात्सदाविशति यो नरः॥ १७६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत चिंता करना शोक क्रोध भय तथा घबड़ाहट इनसे जो मनुष्य सदैव ईर्षा तथा उत्कण्ठा के वशीभूत रहताहै ॥ १७६ ॥

कृशोवासेवतेरूक्षमन्नपानमथौषध म् । दुर्बलप्रकृतिश्चैवनिराहारोभवे द्यदि ॥ १७७ ॥

जो मनुष्य कृशहोकर रूखे अन्न पान तथा औषधों का सेवन करता है जो मनुष्य स्वभावही से दुर्बल होकर बहुत लंघन करता है ॥ १७७ ॥

असात्म्यभोजनाच्चापिहृदयेयोऽव्य वस्थितः । रसःप्रधानधातुर्हिक्षीये ताशुनरस्ततः ॥ १७८ ॥

और जो पुरुष असात्म्य भोजन करता है उसके हृदय में स्थित प्रधान धातु रस शीघ्रही क्षीण होता है ॥ १७८ ॥

रक्तादयश्चक्षीयन्तेधातवस्तस्यदेहि नः । शुक्रावसानास्तेभ्योहिशुक्रं धामपरंमतम् ॥ १७६ ॥

और फिर रुधिर से लेकर वीर्य्य पर्यन्त सम्पूर्ण धातु क्षीण होजाती हैं और इन सम्पूर्ण धातुओं मेंसे वीर्य्यही पुरुषत्व का मुख्य स्थान है ॥ १७९ ॥

चेतसोवातिहर्षेणव्यवायंसेवतेतु यः । शुक्रन्तुक्षीयतेतस्यततःप्रा प्नोतिसक्षयम् । घोरंव्याधिमवा प्नोतिमरणंवासगच्छति १८० ॥

अथवा जो मनुष्य मैथुनकी बहुत इच्छा होने के कारण बहुत मैथुन करता है उसका वीर्य्य क्षीण होजाताहै इसी से अन्य धातु भी क्षीण होजाती हैं घोर रोग उत्पन्न होते हैं अथवा मृत्यु भी होजाती है ॥ १८० ॥

शुक्रंतस्माद्विशेषेणरक्ष्यमारोग्यमि च्छता ॥ एतन्निदानलिङ्गाभ्यामु क्तंक्लैब्यंचतुर्विधम् ॥ १८१ ॥

इससे आरोग्यकी इच्छा करनेवाला पुरुष वीर्य्य की रक्षा विशेष करके करै इस प्रकार चारों प्रकारकी नपुंसकता के लक्षण तथा निदान कहेगये ॥ १८१ ॥

केचित्क्लैब्येत्वसाध्येद्वेध्वजभङ्गक्ष योद्भवे । वदन्तिशेफसश्छेदाद्वृष णोत्पाटनेनवा ॥ १८२ ॥

कोई २ आचार्य ध्वजभंग तथा धातुओं की क्षीणता से होनेवाली नपुंसकता को अथवा लिंग के कटने से तथा अण्डकोषों को निकालडालने से उत्पन्न हुई नपुंसकता को असाध्य कहते हैं ॥ १८२ ॥

मातापित्रोर्बीजदोषादशुभैश्चाकृता त्मनः । गर्भस्थस्ययदादोषाःप्राप्ये तोवहाःशिराः । शोषयन्त्याशुत न्नाशाद्रेतश्चात्युपहन्यते ॥ १८३ ॥

माता पिता के बीज (रज और वीर्य्य) के दोषसे और पूर्व जन्मके पापोंसे गर्भमें स्थित पापी मनुष्य के वात आदि दोष वीर्य्य के ले चलने वाली नाड़ियों में प्राप्त होकर उनको सुखाते हैं नाड़ियों के सूखने से वीर्य्य भी नष्ट होजाताहै ॥ १८३ ॥

तत्रसम्पूर्णसर्वाङ्गःसभवत्यपुमान्पु मान् । एतेत्वसाध्याव्याख्याताः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्निपातसमुच्छ्रयात् ॥ १८४ ॥

यह पुरुष पुरुषों के सम्पूर्ण चिह्नों से युक्त होकर भी अपुरुष (नपुंसक) होता है यह नपुंसकता सन्निपातज होने के कारण असाध्य होती हैं ॥ १८४ ॥

चिकित्सितमतस्तूर्ध्वंसमासव्यासतःशृणु। शुक्रदोषेषुनिर्दिष्टंभेषजंयन्मयानघ। क्लैब्योपशान्तयेकुर्य्यात्क्षीणक्षतहितञ्चयत् ॥ १८५ ॥

इसके उपरान्त नपुंसकता की चिकित्सा संक्षेप तथा विस्तारपूर्वक सुनो हे अनघ (पाप रहित अग्निवेश) वीर्य्य दोषों में जो चिकित्सा हमने कही है और क्षत तथा क्षीणता की जो चिकित्सा कही गयीहै वह नपुंसकता को शान्तकरने के लिये करनी चाहिये ॥ १८५ ॥

वस्तयःक्षीरसर्पींषिवृष्ययोगाश्चयेमताः। रसायनप्रयोगाश्चसर्व्वानेतान्प्रयोजयेत्। समीक्ष्यदेहदोषाग्नीन्बलभेषजकालवित् ॥ १८६ ॥

देह दोष अग्निबल औषध तथा समयका जानने वाला वैद्य बहुत विचार कर के वस्तिक्रिया दूध घी वृष्ययोग (पुरुषार्थ के बढ़ानेवाले योग) तथा रसायन इन सबका नपुंसकतामें प्रयोगकरै ॥ १८६ ॥

व्यवायहेतुजंक्लैब्यंयत्स्याद्धेतुविपर्य्ययात्। दैवव्यपाश्रयैश्चैवभेषजैश्चाभिचारजम्। समासेनैतदुद्दिष्टंभेषजंक्लैब्यशान्तये॥ विस्तरेणप्रवक्ष्यामिक्लैब्यानांभेषजंपुनः॥१८७॥

व्यवायहेतुज (बहुत मैथुन करनेसे वीर्य्य के क्षीणहोजाने के कारण होनेवाली) नपुंसकता को हेतु विपर्य्यय (हेतु से विपरीत अर्थात् जिससे वीर्य्य की वृद्धि हो ऐसी चिकित्सा) से शान्तकरै और अभिचारज (मारण आदि प्रयोग से होनेवाली) नपुंसकता को बलि मङ्गल आदि दैवी चिकित्सा से शान्तकरै इस प्रकार संक्षेप से नपुंसकता की चिकित्सा कहीगयी आगे विस्तारपूर्वक नपुंसकताकी चिकित्सा कही जातीहैं १८७॥

सुस्विन्नस्निग्धगात्रस्यस्नेहयुक्तंविरेचनम्। अन्नाशनंततःकुर्य्यादथवास्थापनंपुनः ॥ १८८ ॥

बुद्धिमान् वैद्य वीर्य्य के दूषित होनसे होने वाली नपुंसकता में स्वेदन तथा स्नेहन कराके पहिले स्नेहयुक्त विरेचन देवे फिर अन्नपान अथवा अस्थापन करावे ॥ १८८ ॥

प्रदद्यान्मतिमान्वैद्यस्ततस्तमनुवासयेत्। पलाशैरण्डमुस्ताद्यैःपश्चादास्थापयेत्ततः ॥ १८९ ॥

तदनन्तर बुद्धिमान् वैद्य अनुवासनवस्ति देवे और ढाख अरण्डकी जड़ तथा नागरमोथा आदि औषधियों के द्वारा आस्थापन वस्तिदेवे ॥ १८९ ॥

वाजीकरणयोगाश्चपूर्वंयेसमुदाहृताः। भिषजातेप्रयोज्याःस्युःक्लैब्येबीजोपघातजे ॥ १९० ॥

और पहिले जो बाजीकरण (पुरुषार्थको बढ़ानेवाले योग कहेगये हैं उनका वैद्य वीर्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के उपघातवाली नपुंसकता में प्रयोग करै ॥ १९० ॥

ध्वजभङ्गकृतंक्लैब्यंज्ञात्वातस्याचरेत्क्रियाम् । प्रदेहान्परिषेकांश्चकुर्य्याद्वारक्तमोक्षणम् । स्नेहपानञ्चकुर्वीतसस्नेहंवाविरेचनम् ॥ १९१ ॥

ध्वजभंग से होनेवाली नपुंसकता को अच्छी प्रकारसे जानकर लेप तरारा रक्तमोक्षण (जोंकआदि के द्वारा रुधिर निकलवाना) स्नेहपान स्नेहयुक्त विरेचन ॥ १९१ ॥

अनुवासंततःकुर्य्यादथवास्थापनंपुनः । व्रणवच्चक्रियाःसर्वास्तत्रकुर्य्याद्विचक्षणः ॥ १९२ ॥

अनुवासनवस्ति अथवा स्थापनवस्ति का प्रयोग करै और व्रणके समान सम्पूर्ण चिकित्सा करै ॥ १९२ ॥

जरासम्भवजेक्लैब्येक्षयजेचैवकारयेत् । स्नेहस्वेदोपपन्नस्यसस्नेहंशोधनंहितम् ॥ १९३ ॥

वृद्धावस्था से होनेवाली नपुंसकता में तथा वीर्य्य की क्षीणतासे होनेवाली नपुंसकता में स्नेहन तथा स्वेदन करके स्नेहयुक्त वमनआदि संशोधन करना चाहिये ॥ १९३ ॥

क्षीरसर्पिर्वृष्ययोगावस्तयश्चैवयापनाः । रसायनप्रयोगाश्चतयोर्भेषजमुच्यते ॥ १९४ ॥

दूध घी वीर्य्यवर्द्धक योग अनुवासनवस्ति और रसायन का प्रयोग इन दोनों प्रकारकी नपुंसकताओं में हित होता है ॥ १९४ ॥

विस्तरेणैतदुद्दिष्टंक्लैब्यानांभेषजंमया ॥ १९५ ॥

इति क्लैब्यचिकित्सा ।

इस प्रकार नपुंसकता की चिकित्सा विस्तारपूर्वक मैंने कही ॥ १९५ ॥

इति क्लैब्यचिकित्सा ॥

यःपूर्वमुक्तःप्रदरःशृणुहेत्वादिभिस्तुतम् । यात्यर्थंसेवतेनारीलवणाम्लगुरूणिच । कटून्यथविदाहीनिस्निग्धानिपिशितानिच ॥ १९६ ॥ ग्राम्यौदकानिमेध्यानिकृशरंपायसंदधि । शुक्तमस्तुसुरादीनिभजन्त्याःकुपितोऽनिलः ॥ १९७ ॥

पहिले जो प्रदररोग कहागया है उसको अब निदान तथा लक्षणआदि सहित सुनो जो स्त्री सदैव नमकीन खट्टी भारी कडुई विदाही (हृदय में जलन पैदाकरके देरमें पचनेवाली) तथा स्निग्ध वस्तु बकरे आदिग्राम्य जीवोंके तथा मछली आदि जलके जीवों के मांस मेधाको बढ़ानेवाली वस्तु खिचड़ी खीर दही सिरका दहीकातोड़ तथा मद्य आदिक वस्तुओंका बहुत सेवन करती है उसका वायु कुपित होकर ॥ १९६ । १९७ ॥

रक्तंप्रमाणमुत्क्रम्यगर्भाशयगताःशिराः । रजोवहाःसमाश्रित्यरक्तमादायतद्रजः । यस्माद्विवर्द्धयत्याशुरक्तपित्तंसमारुतम् ॥ १९८ ॥

रुधिर के प्रमाण को बढ़ाकर गर्भाशय में ले स्थित रजको लेचलनेवाली नाड़ियों में ले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाकर रजको बढ़ाता है और रक्तपित्त को भी बढ़ाता है ॥ १९८ ॥

तस्मादसृग्दरंप्राहुरेतत्तन्त्रविशारदाः। रजःप्रदीर्य्यतेयस्मात्प्रदरस्तेनसस्मृतः ॥ १९९ ॥

इससे इस रोग को विद्वान् लोग असृग्दर कहते हैं और रज बहुत निकलता है इस से इसको प्रदर कहते हैं ॥ १९९ ॥

सामान्यतःसमुद्दिष्टंकारणंलिङ्गमेव च। चतुर्विधंव्यासतस्तुवाताद्यैःसन्निपाततः। अतःपरंप्रवक्ष्यामिहेत्वाकृतिभिषग्जितम् ॥ २०० ॥

इस प्रकारसे प्रदरके सामान्य निदान तथा लक्षण कहेगये अब विस्तारपूर्व्वक वातज पित्तज कफज तथा सन्निपातज इन भेदों से चार प्रकारके प्रदरके निदान लक्षण तथा यत्न कहेजाते हैं ॥ २०० ॥

रूक्षादिभिर्मारुतस्तुरक्तमादायपूर्ववत्। कुपितःप्रदरंकुर्य्याल्लिङ्गंतस्यचमेशृणु ॥ २०१ ॥

रूखी वस्तु आदि कारणों से कुपित हुआ वायु पूर्ववत् रुधिर को ग्रहण करके प्रदररोग को उत्पन्न करता है इसके लक्षण सुनो २०१

फेनिलंतनुरूक्षञ्चश्यावमारुणमेव च। किंशुकोदकसङ्काशंसरुजंवाथनीरुजम् ॥ २०२ ॥

योनि से फेनायुक्त पतला रूखा कपिश तथा अरुणवर्ण टेसूके फूलके धोवनके समान पीड़ा सहित अथवा पीड़ारहित रज बहता है ॥ २०२ ॥

कटीवंक्षणहृत्पार्श्वपृष्ठश्रोणिषुमारुतः। कुरुतेवेदनांतीव्रामेतद्वातात्मकंविदुः ॥ २०३ ॥

और कटि वंक्षण (जंघों की सन्धि) हृदय पशुली पीठि तथा नितम्बों में वायु तीव्र पीड़ा को उत्पन्न करता है यह वातज प्रदरके लक्षण हैं ॥ २०३ ॥

अम्लोष्णलवणक्षारैःपित्तंप्रकुपितंयदा। पूर्ववत्प्रदरंकुर्य्यात्पैत्तिकंलिङ्गतःशृणु ॥ २०४ ॥

खट्टी उष्ण नमकीन तथा क्षार वस्तुओंके सेवन से कुपित हुआ पित्त पूर्व्ववत् प्रदररोग को उत्पन्न करता है इस के लक्षण सुनो ॥ २०४ ॥

सनीलमथवापीतमत्युष्णमसितंतथा। नितान्तरक्तंस्रवतिमुहुर्मुहुरथार्त्तिमत् ॥ २०५ ॥

योनि से नील पीत कृष्ण अथवा अत्यन्त रक्तवर्ण तथा अत्यन्त उष्ण रज बारंबार पीड़ा सहित निकलता है ॥ २०५ ॥

विदाहरागतृण्मोहज्वरभ्रमसमायुतम्। असृग्दरंपैत्तिकंतुश्लैष्मिकंतुप्रवक्ष्यते ॥ २०६ ॥

और विदाह (हृदय में जलन पैदा करके अन्नका देरमें पचना) रक्तवर्ण तृषा मोह ज्वर तथा भ्रम होताहै यह सब लक्षण पित्तज प्रदर में होते हैं अब कफज प्रदररोग कहते हैं ॥ २०६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुर्वादिभिर्हेतुभिश्चपूर्ववत्कुपितःक फः। प्रदरंकुरुतेतस्यलक्षणंतत्त्वतः शृणु॥ २०७॥

भारी आदि वस्तुओंके सेवनसे कुपितहुआ कफ प्रदर को उत्पन्न करता है इसके लक्षण सुनो॥ २०७॥

पिच्छिलंपाण्डुवर्णञ्चगुरुस्निग्धञ्च शीतलम्। स्रवत्यसृक्श्लेष्मलञ्च तथामन्दरुजाकरम्। छर्द्यरोचकहृ ल्लासश्वासकाससमन्वितम् २०८॥

लसलसा पाण्डुवर्ण भारी स्निग्ध शीतल तथा कफयुक्त रज योनिसे कुछ पीड़ा सहित बहता है और छर्दि अरुचि मतली श्वास तथा खांसी यह रोग होते हैं यह कफ प्रदरके लक्षण हैं॥ २०८॥

वक्ष्यतेक्षीरदोषाणांसामान्यमिहका रणम्। यत्तदेवत्रिदोषस्यकारणंप्र दरस्यतु॥ त्रिलिङ्गसंयुतंविद्यान्नै कावस्थमसृग्दरम्॥ २०९॥

आगे इसी अध्यायमें दुग्धके दोषोंके जो सामान्य कारण कहेजायँगे वही सन्निपातज प्रदरके भी जानने चाहिये सन्निपातज प्रदरमें वात आदि तीनों दोषों के लक्षण होते हैं और एकही दोष की अवस्था सदैव नहीं बनी रहती है॥ २०९॥

नारीत्वतिपरिक्लिष्टायदाप्रक्षीणशो णिता। सर्वहेतुसमाचारादतिवृद्ध स्तदानिलः॥ २१०॥

प्रदररोगवाली स्त्रियां जिस समय बहुत क्लेशित होती हैं और उनका रुधिर क्षीण होजाता है उस समय यदि वह प्रदरके सम्पूर्ण कारणों का सेवन करें तो बहुत बढ़ाहुआ वायु॥ २१०॥

रक्तमार्गेणसृजतिप्रत्यनीककरंकफ म्। दुर्गन्धंपिच्छिलंपीतंविदग्धंपि त्ततेजसा॥ २११॥

रजके मार्ग से अपने विरुद्ध गुणवाले दुर्गंधित पिच्छिल (लसलसा) पीतवर्ण तथा पित्तके तेजसे अधपके हुये कफको निकालता है॥ २११॥

वसांमेदश्चयावद्धिसमुपादायवेगवा न्। सृजत्यपत्यमार्गेणसर्पिर्मज्जात्र सोपमम्॥ २१२॥

और यही वायु चर्बी तथा मेदाको लेकर योनिके द्वारा घी मज्जा तथा चर्बीके समान स्राव करता है॥ २१२॥

शश्वत्स्रवत्यथास्रावंतृष्णादाहज्व रान्विताम्। क्षीणरक्तांदुर्बलाञ्चता मसाध्यांविवर्जयेत्॥ २१३॥

यह स्राव निरन्तर हुआ करता है और स्त्रियां क्षीण हुये रुधिरवाली दुर्बल और तृषा दाह तथा ज्वरसे युक्त होती हैं ऐसी स्त्रियोंको असाध्य जानकर चिकित्सा करनी चाहिये॥ २१३॥

मासान्निष्पिच्छदाहार्त्तिपञ्चरात्रानु बन्धिच। नैवातिबहुलात्यल्पमार्त्त वंशुद्धमादिशेत्॥ २१४॥

जिस स्त्री के महीने भरके उपरान्त पांच

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिनतक दाह पीड़ा तथा पिच्छा (रजमें जो मांसके से टुकड़े निकलतेहैं) रहित न थोड़ा न बहुत रज निकलता है उसके रजको शुद्ध जानना चाहिये ॥ २१४ ॥

गुञ्जाफलसवर्णञ्चपद्मालक्तकसन्निभम् । इन्द्रगोपकसङ्काशमार्त्तवं शुद्धमेवतत् ॥ २१५ ॥

घुँघुची रक्त कमल महावर तथा बीरवहूटी के समान कान्तिवाले रजको शुद्ध जानना चाहिये ॥ २१५ ॥

योनीनांवातलाद्यानांयदुक्तमिहभेषजम् । चतुर्णांप्रदराणाञ्चतत्सर्वं कारयेद्भिषक् ॥ २१६ ॥

वातल आदि योनियों की जो चिकित्सा कही गयी है वह चार प्रकारके प्रदरोंमें करनी चाहिये ॥ २१६ ॥

रक्तातिसारिणांयच्चतथाशोणितपित्तिनाम् । रक्तार्शसाञ्चयत्प्रोक्तंभेषजंतच्चकारयेत् ॥ २१७ ॥

इति प्रदरचिकित्सा ।

और रक्तातीसार रक्त पित्त तथा खूनी बवासीर में जो चिकित्सा कहीगयी है वह प्रदरमें भी करनी चाहिये ॥ २१७ ॥

इति प्रदरचिकित्सा ॥

अथ स्तन्यदोषचिकित्सा ।

धात्रीस्तनस्तन्यसम्पदुक्ताविस्तरतः पुरा । स्तन्यसञ्जननञ्चैवस्तन्यस्य चविशोधनम् ॥ २१८ ॥

पहिले धात्री (धाय) के दुग्ध के गुण विस्तार पूर्वक कहेगये हैं दूधको उत्पन्न करने वाली औषधें कही गयी हैं दूधको शुद्ध करने वाली औषधें कहीगयी हैं ॥ २१८ ॥

वातादिदुष्टेलिङ्गञ्चक्षीणस्यचचिकित्सितम् । तत्सर्वमुक्तंयेत्वष्टौक्षीरदोषाःप्रकीर्त्तिताः ॥ २१९ ॥ वातादिष्वेवतान्विद्याच्छास्त्रचक्षुर्भिषक्तमः । त्रिविधास्तुयतःशिष्यास्ततोवक्ष्यामिविस्तरम् ॥ २२० ॥

और वात आदिके द्वारा दूषित रुधिर के लक्षण तथा क्षीणहुये दूधके बढ़ाने की औषध कहीगई हैं किन्तु दूधके जो आठ दोषकहे गयेहैं शास्त्र के जाननेवाला वैद्य इनको वात आदिके द्वारा उत्पन्न हुयेजानैं परन्तु उत्तम मध्यम तथा अधम भेद से शिष्य तीन प्रकार के होते हैं इससे सबको समझाने के लिये दूध के दोषों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाताहै ॥ २१९ । २२० ॥

अजीर्णासात्म्यविषमविरुद्धात्यर्थभोजनात् । लवणाम्लकटुक्षारप्रक्लिन्नानाञ्चसेवनात् ॥ २२१ ॥

अजीर्ण में भोजनकरना असात्म्य वस्तु खाना विषमाशन (असमयमें अधिक अथवा न्यून भोजन करना) परस्पर विरुद्ध वस्तुओं को मिलाकर खाना बहुत भोजन लवण अम्ल कटुक्षार तथा सड़ीहुई वस्तुखाना २२१॥

मनःशरीरसन्तापादस्वप्नान्निशिचिन्तनात् । प्राप्तवेगप्रतीघातादप्राप्तोदीरणेनच ॥ २२२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मन तथा शरीर का संतप्त होना रात्रिमें न सोना बहुत चिन्ता करना मल मूत्र आदि वेगों को रोकना वेगके विनाही मल मूत्र आदिके निकालनेका यत्न करना ॥ २२२ ॥

परमान्नंगुडकृतंकृशरंदधिमत्स्यकम् । अभिष्यन्दीनिमांसानिग्राम्यानूपौदकानिच ॥ २२३ ॥

खीर गुड़की बनीहुई वस्तु खिचड़ी दही मछली अभिष्यन्दी रसको लेचलनेवाली नाड़ियों को रोंककर शरीर को भारी करनेवाली वस्तु और बकरे आदि ग्राम्यके जीव तथा भैंस आदि आनूप जीवों का मांस खाना ॥ २२३ ॥

भुक्ताभुक्तादिवास्वप्नान्मद्यस्यातिनिषेवणात्। अनायासादभीघातात्क्रोधाच्चातङ्ककर्शनैः ॥ २२४ ॥

दिनमें भोजन करके सोना बहुत मद्यपीना श्रम न करना चोट लगना क्रोध और रोगोंके द्वारा बहुत कृशहोना ॥ २२४ ॥

दोषाःक्षीरवहाःप्राप्यशिराःस्तन्यंप्रदूष्यच। कुर्य्युरष्टविधंभूयोदोषास्तान्मे निबोधत ॥ २२५ ॥

इन कारणों से कुपित हुये वातआदि दोष दूधको लेचलनेवाली नाड़ियों में माप्तहोकर दूधको दूषित करके आठ प्रकार के दोषों को उत्पन्न करते हैं उनको तुम सुनो ॥ २२५ ॥

वैरस्यंफेनसंघातंरौक्ष्यञ्चेत्यनिलात्मके । पित्ताद्वैवर्ण्यदौर्गन्ध्येस्नेहपैच्छिल्यगौरवम् । कफाद्भवतिरूक्षाद्यैरनिलःस्वैःप्रकोपनैः ॥ २२६ ॥

क्रुद्धःक्षीराशयंप्राप्यरसंस्तन्यस्यदूषयेत् । विरसंवातसंसृष्टंकृशीभवतितत्पिबन् । नचास्यस्वदतेक्षीरंकृच्छ्रेणचविवर्द्धते ॥ २२७ ॥

वात से दूषित दूध विरस (बिगड़े हुये रसवाला) फेनायुक्त तथा रूखा होता है पित्त से दूषित दूध विवर्ण (बिगड़े हुये वर्णवाला) तथा दुर्गंधित होताहै कफसे दूषित दूध स्निग्ध लसलसा तथा भारी होताहै रूखी वस्तु आदि अपने को कुपित करने वाले कारणों से कुपित हुआ वायु दुग्धाशय में प्राप्त होकर दूधके रसको दूषित करता है इस से विरस तथा वातयुक्त दूधको पीनेवाला बालक कृश होजाता है उसको वह दूध नहीं अच्छा लगताहै और वह बहुत क्लेश से बढ़ता है ॥ २२६ । २२७ ॥

तथैववायुःकुपितःस्तन्यमन्तर्विलोडयन् । करोतिफेनसंघातंतत्तुकृच्छ्रात्प्रवर्तते ॥ २२८ ॥

कुपित हुआ वायु दूधको भीतर मथकर बहुत से फेने को उत्पन्न करता है इस से दूध बहुत कष्टपूर्वक स्तनों से निकलताहै २२८॥

तेनक्षामस्वरोबालोबद्धविण्मूत्रमारुतः । वातिकंशीर्षरोगंवापीनसंवाधिगच्छति ॥ २२९ ॥

इस दूधको पीनेवाले बालक का स्वरक्षीण होजाता है मूत्र मल तथा वायु रुकजाता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वातज शिरो रोग अथवा पीनस उसको होजाती है ॥ २२९ ॥

पूर्ववत्कुपितःस्तन्येस्नेहंशोषयतेऽनिलः । रूक्षंतत्पिबतोरौद्याद्बलह्रासश्चजायते ॥ २३० ॥

पूर्वोक्त रीति से कुपित हुआ वायु दूधके स्नेह को सुखादेता है इससे उस रूखे दूधको पीनेवाले बालक का बल रूक्षता के कारण क्षीण होजाताहै ॥ २३० ॥

पित्तमुष्णादिभिःक्रुद्धंस्तन्याशयमभिप्लुतम् । करोतिस्तन्यवैवर्ण्यंनीलपीतासितादिकम् ॥ २३१ ॥

उष्ण आदि वस्तुओं से कुपित हुआ पित्त दुग्धाशय को अभिप्लुत करताहै इस से दूध नील पीत तथा कृष्ण आदि दूषित वर्णों से युक्त होताहै ॥ २३१ ॥

विवर्णगात्रःस्विन्नःस्यात्तृष्णालुर्भिन्नविट्शिशुः । नित्यमुष्णशरीरश्चनाभिनन्दतितत्स्तनम् ॥ २३२ ॥

उस दूधको पीने से बालक का वर्ण विगड़जाता है स्वेद बहुत निकलताहै तृषा बहुत लगती है मल फटजाता है बालक का शरीर सदैव उष्ण बना रहताहै और वह उस स्तनको पीना नहीं चाहता है ॥ २३२ ॥

पूर्ववत्कुपितेपित्तेदौर्गन्ध्यंक्षीरमृच्छति । पाण्ड्वामयस्तत्पिबतःकामलाचभवेच्छिशोः ॥ २३३ ॥

पूर्ववत् पित्त के कुपित होने पर दूध में दुर्गंध आने लगती है इस दुर्गंधित दुग्ध को पीनेसे बालक के पाण्डु रोग अथवा कामला होजातीहै ॥ २३३ ॥

क्रुद्धोगुर्वादिभिःश्लेष्माक्षीराशयगतःस्त्रियाः । स्नेहान्वितत्वात्तत्क्षीरमतिस्निग्धंकरोतितु ॥ २३४ ॥

भारी आदि वस्तुओं के सेवन से कुपित हुआ कफ स्त्रियों के दुग्धाशय (दूध रहनेका स्थान) में जाकर स्नेह युक्त होने के कारण दूधको बहुत स्निग्ध करदेता है ॥ २३४ ॥

छर्दनःकुन्थनस्तेनलालालुर्जायतेशिशुः । नित्योपदिग्धैःस्रोतोभिर्निद्राक्लमसमन्वितः । श्वासकासपरीतस्तुप्रसेकतमकान्वितः ॥ २३५ ॥

ऐसे दूधको पीने से छर्दि कांखना बहुत लार बहना स्रोतोंके लिपे हुये होनेके कारण बहुत निद्रा आना आलस्य श्वास खांसी और तमक श्वास इन रोगों से बालक युक्त होते हैं ॥ २३५ ॥

अभिभूयकफःस्तन्यंपिच्छिलंकुरुतेयदा । लालालुःशूनवक्त्राक्षिर्जडःस्यात्तुपिबञ्छिशुः ॥ २३६ ॥

जब कफ दूधको दूषित करके लसलसा करदेता है तब उस दूधको पीने से बालक के बहुत लार बहती हैं उसके नेत्र तथा मुख में शोथ होता है और वह जड़सा हो जाता है ॥ २३६ ॥

कफःक्षीराशयगतोगुरुत्वात्क्षीरगौरवम् । अतिस्नेहान्वितंपीत्वाबालो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृद्रोगमृच्छति । अन्यांश्चविविधान्रोगान्कुर्य्यात्क्षीरसमाश्रितान् ॥ २३७ ॥

दुग्धाशय में प्राप्त हुआ कफ भारी होनेके कारण दूधको भारी तथा बहुत स्निग्ध कर देता है ऐसे दूधको पीने से बालक हृद्रोग तथा और अनेक प्रकारके क्षीरसमाश्रित (दूध के कारण होनेवाले) रोगों को प्राप्त होता है ॥ २३७ ॥

क्षीरेवातादिभिर्दुष्टेसम्भवन्तितदात्मकाः । तत्रादौस्तन्यशुद्ध्यर्थंधात्रीस्नेहोपपादिताम् । संस्वेद्यविधिवद्वैद्योवमनेनोपपादयेत् २३८ ॥

वात आदि के द्वारा दूधके दूषित होनेपर वातज आदि रोग उत्पन्न होते हैं दुग्धके दूषित होनेपर उसको शुद्ध करने के लिये वैद्य पहिले धात्रीकोस्नेहन तथास्वेदन विधिपूर्वक कराके वमन करावे ॥ २३८ ॥

वचाप्रियङ्गुयष्ट्याह्वफलवत्सकसर्षपैः । कल्कैर्निम्बपटोलानांक्वाथैःसलवणैर्वमेत् ॥ २३९ ॥

वच प्रियंगु मुलेठी मैनफल कुरैया सरसों नींब तथा परवर इनके काढ़े अथवा कल्कमें लवण मिलाकर इनके द्वारा वमन करावै ॥ २३९ ॥

सम्यग्वान्तांयथान्यायंकृतसंसर्जनांततः । दोषकालबलापेक्षीस्नेहयित्वाविरेचयेत् ॥ २४० ॥

अच्छे प्रकारसे वमन होजाने के कारण पथ्य का क्रम करके और दोषकाल तथा बल का विचार करके स्नेहनके उपरांत विरेचन करावे ॥ २४० ॥

त्रिवृतामभयांवापित्रिफलारससंयुताम् । पाययेन्मधुसंयुक्तामभयाश्चापिकेवलाम् । पाययेन्मूत्रसंयुक्तांविरेकार्थंश्चशास्त्रवित् ॥ २४१ ॥

निशोथ अथवा हड़के कल्क को त्रिफला के रसमें मिलाकर पिलावे अथवा केवल हड़ के चूर्णको शहदमें मिलाके खिलावे अथवा विरेचनकारी वस्तुओं को गोमूत्रमें मिलाकर पिलावै ॥ २४१ ॥

अथसम्यग्विरिक्ताञ्चकृतसंसर्जनांपुनः । ततोदोषावशेषघ्नैरन्नपानैरुपाचरेत् ॥ २४२ ॥

इस प्रकार अच्छी तरह विरेचन होजानेके उपरान्त पथ्यका क्रम करके बाकी दोष को नष्ट करने वाले अन्नपान का सेवन करावे ॥ २४२ ॥

शालयोयष्टिकाबास्युःश्यामाकाभोजनेहिताः । प्रियङ्गवःकोरदूषायवावेणुयवास्तथा ॥ २४३ ॥

शालिधान सांठी के चावल अथवा सांवा दूषित दूधवाली स्त्री के लिये हित होता है प्रियंगु कोदों यव तथा वेणुयव (बांस का यव) यह भी दूषित दूधमें हितहोतेहैं २४३॥

वंशवेत्रकलायाश्चसस्नेहायूषसंस्कृताः । मुद्गान्मसूरान्यूषार्थेकुलत्थांश्चप्रकल्पयेत् ॥ २४४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वांस बेत तथा कड़ाय इनका स्नेहयुक्त यूष दूषित दूधमें हित होताहै मूंग मसूर तथा कुल्थी का यूष दूषित दूध में हित होता है ॥ २४४ ॥

निम्बवेत्राग्रकुलकवार्त्तकामलकैः भृतान्। सव्योषसैन्धवान्यूषान्दापयेत्स्तन्यशोधनान् ॥ २४५ ॥

नींब बेतका अग्रभाग वेर बनभांटा तथा आमला इनके साथ पाक कियेगये सोंठि पीपरि मिर्च तथा सैंधवलवण युक्त यूषों के सेवन से दूध शुद्ध होजाता है ॥ २४५ ॥

शशान्कपिञ्जलानेणान्संस्कृतांश्चप्रकल्पयेत्। शार्ङ्गेष्टासप्तपर्णत्वगश्वगन्धाशृतंजलम् ॥ २४६ ॥

खरगोश सफेद तीतर तथा एणमृग इनके मांसका रस दुग्धदोष में हित होताहै शार्ङ्गेष्टा छितवन की छाल तथा असगन्ध इनके साथ पाक कियागया जल दुग्धदोष में पीना चाहिये ॥ २४६ ॥

पाययेताथवास्तन्यशुद्धयेकटुरोहिणीम्। अमृतासप्तपर्णत्वक्क्काथञ्चैवसनागरम् ॥ २४७ ॥ किराततिक्तक्काथंश्लोकपादेरितान्पिबेत। त्रीनेतान्स्तन्यशुद्ध्यर्थमितिसामान्यभेषजम्। कीर्त्तितंस्तन्यदोषाणांपृथगन्यंनिबोधत ॥२४८॥

कुटकी का काढ़ा अथवा गिलोय छितवन की छाल तथा सोंठि का काढ़ा अथवा चिरायता का काढ़ा जो कि श्लोक के एक २ पादमें कहागया है दूध को शुद्ध करनेके लिये पीना चाहिये इस प्रकार दुग्धदोषों की सामान्य चिकित्सा कहीगयी आगे अलग अलग इनकी चिकित्सा कहीजाती है उसको सुनो ॥ २४७। २४८ ॥

पाययेद्विरसक्षीरांद्राक्षामधुकशारिवाः। श्लक्ष्णपिष्टांपयस्याञ्चसमालोड्यसुखाम्बुना ॥ २४९ ॥

जिस स्त्रीका दूध विरस होय वह मुनक्का मुलेठी सांव तथा क्षीरकाकोली इनको महीन पीसकर कुछ उष्ण जलमें घोलकर पीवे २४९

पञ्चकोलकुलत्थैश्चपिष्टैरालेपयेत्स्तनौ। शुष्कौप्रक्षाल्यनिर्दुह्यात्तथास्तन्यंविशुध्यति ॥ २५० ॥

और पीपरि पिपरामूल चव्य चीता सोंठि तथा कुल्थी इनको पीसकर स्तनों में लेपकरै और लेपके सूखजानेपर धोकर स्तनों में जो कुछ दूधहो उसे दुहडाले ऐसा करने से दूध शुद्ध होजाता है ॥ २५० ॥

फेनसङ्घातवत्क्षीरंयस्यास्तांपाययेतच। पाठानागरशार्ङ्गेष्टामूर्वापिष्ट्वासुखाम्बुना ॥ २५१ ॥

जिस स्त्री के दूधमें बहुत फेनाहो उसको पाढ़र सोंठि शार्ङ्गेष्टा तथा मिरोरफली इनको पीसकर कुछ उष्णजल में घोलकर पिलावे ॥ २५१ ॥

अञ्जनंतगरंदारुबिल्वमूलंप्रियङ्गवः। स्तनयोःपूर्ववत्कार्यं लेपनंक्षीरशोधनम् ॥ २५२ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सुर्मा तगर देवदारु बेलकी जड़ तथा प्रियंगु इनको पीसकर स्तनों में पूर्ववत् लेप करै इससे दूध शुद्ध होजाता है ॥ २५२ ॥

किराततिक्तकंशुण्ठीसामृताक्काथयेद्भिषक् । तंक्काथंपाययेद्धात्रींस्तन्यदोषनिबर्हणम् । स्तनौचालेपयेत्पिष्टैर्यवगोधूमसर्षपैः ॥ २५३ ॥

चिरायता कुटकी सोंठि गिलोय इनके काढ़ा को वैद्य धात्रीको पिलावे और यव गेहूं सरसों को पीसकर स्तनों में लेप करावे इससे दूध शुद्ध होजाता है ॥ २५३ ॥

षड्विरेकाश्रितीयोक्तैरौषधैःस्तन्यशोधनैः । रूक्षक्षीरापिबेत्क्षीरंतैर्वासिद्धंघृतंपिबेत् ॥ २५४ ॥

जिस स्त्रीका दूध रूखा होय वह षड्विरेचन शताश्रितीयनाम अध्याय में कहीगई दूध को शुद्ध करनेवाली औषधियों के साथ पाक कियागया दूध अथवा घी पीवे ॥ २५४ ॥

पूर्ववज्जीवकाद्यश्चपञ्चमूलंप्रलेपनम् । स्तनयोःसंविधातव्यंसुखोष्णंस्तन्यशोधनम् ॥ २५५ ॥

और जीवक आदि गण तथा पँचमूल को पीसकर कुछ उष्ण करके स्तनोंमें लेपकरै इससे दूध शुद्ध होजाता है ॥ २५५ ॥

यष्टिमधुकमृद्धिकापयस्याःसिन्धुवारिकाः । शीताम्बुनापिबेत्कल्कंक्षीरवैवर्ण्यनाशनम् ॥ २५६ ॥

जिस स्त्रीका दूध विवर्ण होय वह मुलेठी मुनक्का क्षीरकाकोली तथा सिंदुवार इनको पीसकर शीतल जलमें घोलकर पीवे ॥ २५६ ॥

द्राक्षामधुककल्केनस्तनौवास्याःप्रलेपयेत् । प्रक्षाल्यवारिणाचैवनिर्दुह्यात्तौपुनःपुनः ॥ २५७ ॥

और मुनक्का तथा मुलेठीको पीसकर स्तनों को धो धोकर तथा दूधको दुहकर वारंवार लेपकरै इससे दूध शुद्ध होजाताहै ॥ २५७ ॥

विषाणिकाजशृङ्गौचात्रिफलांरजनींवचाम् । पिबेत्क्षीराम्बुनापिष्ट्वाक्षीरदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ २५८ ॥

जिस स्त्रीके दूधमें दुर्गंध आतीहो वह काकड़ासिंगी मेढ़ासिंगी त्रिफला हल्दी तथा बच इनको महीन पीसकर दूध तथा जलमें मिलाकर पीवे ॥ २५८ ॥

लिह्याद्वाप्यभयाचूर्णंसव्योषंमाक्षिकप्लुतम् । क्षीरदौर्गन्ध्यनाशार्थंधात्रीपथ्याशिनीतथा ॥ २५९ ॥

अथवा धात्री पथ करतीहुई दुर्गंध के नाशार्थ हड़ सोंठि पीपरि मिर्च इनके चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटै ॥ २५९ ॥

शाखोशीरमञ्जिष्ठाश्लेष्मातकसचन्दनैः । पत्राम्बुचन्दनोशीरैस्तनौचास्याःप्रलेपयेत् ॥ २६० ॥

और साँव खस मँजीठ लसोड़ा चन्दन तेजपात सुगंधबाला तथा लालचन्दन इनको पीसकर स्तनोंमें लगावे इससे दूध की दुर्गंधि दूर होजाती है ॥ २६० ॥

स्निग्धक्षीरादारुमुस्तपाठाःपिष्ट्वासुखाम्बुना । पीतवाससैन्धवाःक्षिप्रं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षीरशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ २६१ ॥

जिस स्त्री का दूध बहुत चिकनाहोय वह देवदारु नागरमोथा तथा पाढ़र इन को पीसकर कुछ उष्ण जल में मिलाकर कुछ सैंधवलवण मिलाकर पीवे इस से शीघ्रही दूध शुद्ध होता है ॥ २६१ ॥

पाययेत्पिच्छिलक्षीरांशार्ङ्गेष्टामभयांवचाम् । मुस्तनागरपाठाश्चपीताःस्तन्यविशोधनाः ॥ २६२ ॥

जिस स्त्री का दूध लसलसा हो वह शार्ङ्गेष्टा हड़ बच नागरमोथा सोंठि तथा पाढ़र इन को पीसकर पानीमें घोलकर पीवे इससे दूध शुद्ध होता है ॥ २६२ ॥

तक्रारिष्टमपिपिबेदर्शसांयन्निदर्शितम् । विदारीबिल्वमधुकैःस्तनौचास्याःप्रलेपयेत् ॥ २६३ ॥

अथवा बवासीर की चिकित्सा में कहेहुये तक्रारिष्ट पीवे और बिलाईकन्द बेल तथा मुलेठी को पीसकर स्तनोंमें लेप करै इससे दूध शुद्ध होजाता है ॥ २६३ ॥

त्रायमाणामृतानिम्बलपटोलत्रिफलाश्रृतम् । गुरुक्षीरापिबेदेतत्स्तन्यदोषविशुद्धये ॥ २६४ ॥

जिस स्त्री का दूध भारी होय वह त्रायमाण नींब गिलोय परवर तथा त्रिफला इनका काढ़ा दूध के दोषको शुद्ध करने के लिये पीवे ॥ २६४ ॥

पिबेद्वापिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम् । बलानागरशार्ङ्गेष्टामूर्वाभिर्लेपयेत्स्तनौ । पृश्निपर्णीपयस्याभ्यांस्तनौचास्याःप्रलेपयेत् २६५॥

अथवा पिपरामूल चव्य चीता तथा सोंठि का काढ़ा पीवे और वरियारा सोंठि शार्ङ्गेष्टा तथा मिरोरफली को पीसकर अथवा पृश्निपर्णी तथा क्षीरकाकोली को पीसकर स्तनोंमें लेप करै इससे दूध शुद्ध होजाता है॥२६५॥

अष्टावेतेक्षीरदोषाहेतुलक्षणभेषजैः । निर्दिष्टाःक्षीरदोषोत्थास्तथोक्ताःकेचिदामयाः ॥ २६६ ॥

इस प्रकार हेतु लक्षण तथा औषध सहित आठ प्रकार के दुग्ध दोष कहेगये और दूध के दोषोंसे होनेवाले कुछरोग कहेगये॥२६६॥

दोषदूष्यमलाश्चैवमहतांव्याधयश्चये। तएवसर्वेबालानांमात्रात्वल्पतरामता ॥ २६७ ॥

दोष (दूषित करनेवाले) दूष्य (दूषित होनेवाले) मल और ज्वर आदि बड़े बड़े रोग यह सब पुरुषों के समान ही बालकों के भी होते हैं परन्तु बालकों की मात्रा बहुत स्वल्प हैं ॥ २६७ ॥

निवृत्तिर्वमनादीनांमृदुत्वंपरतन्त्रता । वाक्चेष्टयोरसामर्थ्यंवीक्ष्य बालेषुशास्त्रवित् । भेषजञ्चाल्पमात्रन्तुयथाव्याधिप्रयोजयेत्२६८

वमनआदि का निषेध कोमलता पराधीनता और बोलने में तथा चेष्टा करने में असमर्थता इन सब बातों को जानकर शास्त्र का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाननेवाला वैद्य बालकों को रोगके अनुसार बहुत स्वल्प औषध देवै ॥ २६८ ॥

मधुराणिकषायाणिक्षीरवन्तिमृदूनिच । प्रयोजयेद्भिषग्बालेमतिमानप्रमादतः ॥ २६९ ॥

बालकों को मधुर कषाय दूधयुक्त तथा मृदु (जो बहुत तीक्ष्ण न हो) औषध प्रमाद रहित होके वैद्य को देनी चाहिये ॥ २६९ ॥

अत्यर्थस्निग्धरूक्षोष्णमम्लंकटुविपाकिच । गुरुचौषधपानान्नमेतद्बालेषुगर्हितम् ॥ २७० ॥

बहुत स्निग्ध रूक्ष उष्ण अम्ल पाकमें कटु तथा भारी औषध पान (पीनेकी वस्तु) तथा अन्न बालकों के लिये वर्ज्जित है ॥ २७० ॥

समासात्सर्वरोगाणामेतद्बालेषुभेषजम् । निर्दिष्टंशास्त्रविद्वैद्यःप्रविविच्यप्रयोजयेत् ॥ २७१ ॥

इति स्तन्यदोषबालरोगौ ।

बालकोंके सम्पूर्ण रोगोंकी यह चिकित्सा संक्षेप से कहीगई बुद्धिमान् वैद्य शास्त्रके द्वारा विभाग करके इसका प्रयोग करै ॥ २७१ ॥

इति स्तन्यदोषबालरोगौ ।

सलिङ्गव्यापदोयोनेःसनिदानचिकित्सिताः । उक्ताविस्तरशःसम्यकूमुनिनातत्त्वदर्शिना ॥ २७२ ॥

तत्त्व के जाननेवाले भगवान् आत्रेयजीने लिंग तथा योनि के रोगों के निदान लक्षण तथा यत्न विस्तारपूर्वक कहे ॥ २७२ ॥

इतिसर्वविकाराणामुक्तमेतच्चिकित्सितम् । स्थानमेतद्धितन्त्रस्य रहस्यंसारमुत्तमम् ॥ २७३ ॥

इस प्रकार सम्पूर्ण रोगों की चिकित्सा कहीगई यह चिकित्सितस्थान इस ग्रन्थ का अत्यन्त रहस्य तथा उत्तम सारांशहै ॥ २७३ ॥

अस्मिन्सप्तदशाध्यायाःकल्पाःसिद्धयएवच । नासाद्यन्तेऽग्निवेशस्यतन्त्रेचरकसंस्कृते २७४ ॥

सत्रह अध्याय कल्पस्थान और सिद्धिस्थान यह सब अग्निवेश के बनायेहुये तथा चरकमुनिके शुद्ध कियेहुये तंत्रमें नहीं पाये जाते हैं ॥ २७४ ॥

तानेतान्कापिलबलःशेषान्दृढबलोऽकरोत् । तन्त्रस्यास्यमहार्थस्यपूरणार्थंयथातथम् ॥ २७५ ॥

इससे इस महातंत्रको यथावत् पूर्ण करने के लिये कापिलवर महर्षि दृढ़बल ने इनका निर्माण किया ॥ २७५ ॥

रोगायेऽप्यत्रनोद्दिष्टाबहुत्वान्नामरूपतः । तेषामप्येतदेवस्याद्दोषादीन्वीक्ष्यभेषजम् ॥ २७६ ॥

नाम तथा लक्षणों के द्वारा जो रोग बहुत होने के कारण इस तंत्रमें नहीं कहेगये हैं उन रोगों की चिकित्सा दोष आदिकों को देखकर इसी तंत्र के अनुसार करनी चाहिये ॥ २७६ ॥

दोषदूष्यनिदानानांविपरीतंहितंधु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वम्। उक्तानुक्तान्गदान्सर्वान्सम्य क्युक्तंनियच्छति ॥ २७७ ॥

जो रोग इस तंत्रमें कहेगये हैं और जो रोग इस तंत्रमें नहीं कहेगये हैं उन सब रोगों को दोष दूष्य तथा निदान के विपरीत हितकारी अच्छी प्रकार से दीगई औषध नष्ट करदेती है ॥ २७७ ॥

देशकालप्रमाणानांसात्म्यासात्म्य स्यचैवहि । सम्यक्प्रयोगोऽन्यथा न्येषांपथ्यमप्यन्यथाभवेत् २७८॥

देश काल प्रमाण सात्म्य तथा असात्म्य इनके अच्छे प्रकारसे योगको पथ्य जानना चाहिये और इनके अनुचित योगको अपथ्य जानना चाहिये अर्थात् अनुचित रीतिसे व्यवहार कियागया पथ्य भी अपथ्य होता है ॥ २७८ ॥

आस्यादामाशयस्थान्हिरोगान्नस्तः शिरोगतान् । गुदात्पक्वाशयस्थां श्चहन्त्याशुद्रव्यमौषधम् ॥ २७९ ॥

आमाशय में स्थित रोगों को मुखके द्वारा प्रयोग कीगई औषध शिरमें स्थित रोगों को नासिका के द्वारा प्रयोग कीगई औषध और पक्वाशय में स्थित रोगों को गुदा के द्वारा प्रयोग कीगई औषध शीघ्रही नष्ट करती है ॥ २७९ ॥

शरीरावयवोत्थेषुवीसर्पपिडकादि षु । यथादेशंप्रदेहादिशमनंस्या द्विशेषतः ॥ २८० ॥

शरीर के अंगोंमें होनेवाले जहरवात तथा पिड़िका आदि रोग जिसअंगमें होयँ उसी अंगमें लेपआदि लगानेसे शीघ्रही उन रोगों का नाश होता है ॥ २८० ॥

दिनातुरौषधव्याधिजीर्णलिङ्गर्त्ववे क्षणम् । कालंविद्याद्दिनापेक्षःपूर्वा ह्णेवमनंयथा ॥ २८१ ॥

दिन आतुर औषध रोग तथा जीर्ण लक्षण इनकी अपेक्षा विचार करके औषध करना चाहिये इनमें से दिनके आश्रित कालहै जैसे पूर्वाह्ण (दिन के प्रथमभाग) में वमन कराना चाहिये ॥ २८१ ॥

रोग्यवेक्ष्ययथाप्रातर्निरन्नोबलवान्पि बेत् । भेषजंलघुपथ्यान्नैर्युक्तमद्यात्तु दुर्बलः ॥ २८२ ॥

रोगका विचार जैसे बलवान् रोगी अन्न न खाकर प्रातःकाल औषध पीवे और दुर्बल रोगी हल्के तथा पथ्य अन्नोंके साथ औषध खावै ॥ २८२ ॥

भैषज्यकालोभक्तादौमध्येपश्चान्मुहु र्मुहुः । सामुद्गंभक्तसंयुक्तंग्रासग्रासा न्तरेदश ॥ २८३ ॥

औषध खाने के दश समय हैं जैसे भोजन के पहिले (१) भोजनके मध्यमें (२) भोजनके पश्चात् (३) बारम्बार (४) भोजन के आदि अन्त दोनों समय में औषध खाना (५) भोजन के साथ औषध खाना (६) हर एक ग्रास के साथ औषध खाना (७) हर एक ग्रास के उपरान्त औषध खाना (८) और पूर्वोक्त दो समय अर्थात् प्रातः काल विना अन्नखाये औषध खाना (९) और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हल्के तथा हितकारी अन्नमें मिलाकर औषध खाना (१०)॥ २८३॥

अपानेविगुणेपूर्वंसमानेमध्यभोजनम्। व्यानेतुप्रातरशितमुदानेभोजनोत्तरम्॥ २८४॥

अपानवायु के दूषित होने पर भोजन के पहिले औषध खाना चाहिये समानवायु के दूषित होने पर भोजन के मध्यमें औषध खाना चाहिये व्यानवायुके दूषित होने पर प्रातःकाल औषध खाना चाहिये उदानवायु के दूषित होने पर भोजन के उपरान्त औषध खाना चाहिये॥ २८४॥

वायौप्राणेप्रदुष्टेतुग्रासेग्रासान्तरिष्यते। श्वासकासपिपासासुत्ववचार्य्यंमुहुर्मुहुः॥ २८५॥

प्राणवायु के दूषित होने पर प्रतिग्रास में तथा प्रति ग्रासके उपरान्त औषध खानी चाहिये श्वास खाँसी तथा तृषा रोग में बारम्बार औषध खानी चाहिये॥ २८५॥

सामुद्गंहिक्किनेदेयंलघुनान्नेनसंयुतम्। सम्भोज्यन्त्वौषधंभोज्यैर्विचित्रैररुचौहितम्॥ २८६॥

हिचकी में हल्के अन्न के साथ मूंगमिलाकर भोजनके आदि अन्त में औषध खानी चाहिये और अरुचि रोगमें भोजनके साथ औषध खानी चाहिये॥ २८६॥

ज्वरेपेयाःकषायाश्चक्षीरसर्पिर्विरेचनम्। षडहेषडहेदेयंकालंवीक्ष्यामयस्यतु॥ २८७॥

ज्वरके समय को देखकर ज्वर में छः २ दिनमें क्रम से काढ़े दूध घी तथा विरेचन का प्रयोग करना चाहिये॥ २८७॥

क्षुद्वेगमोक्षौलघुताविशुद्धिर्जीर्णलक्षणम्। तदाभेषजमादेयंस्याद्धिदोषवदन्यथा॥ २८८॥

क्षुधा लगना मल मूत्रका त्याग शरीर का हल्का होना और शुद्ध डकार आना यह जीर्ण लक्षण हैं अर्थात् भोजन के अच्छी प्रकार से पचजाने के लक्षण हैं ऐसेही समय में औषध देनी चाहिये और इस से विपरीत समय में औषध देने से दोष होताहै २८८॥

चयादयश्चदोषाणांवर्ज्यंसेव्यञ्चयत्र यत्। ऋतावपेक्ष्यंयत्कर्मपूर्वंसर्वमुदाहृतम्॥ २८९॥

वात आदि दोषों का संचित होना जिन वस्तुओं का त्याग करना चाहिये जिन वस्तुओं का सेवन करना चाहिये और जिस ऋतु में जौनसा कार्य्य करना चाहिये यह सब विषय पहिले कहे गये हैं॥ २८९॥

उपक्रमाणांकरणंप्रतिषेधेचकारणम्। व्याख्यातमबलानांसविकल्पानामवेक्षणे॥ २९०॥

उपक्रम का करना प्रतिषेध में कारण अबलों को विकल्प से देखना यह व्याख्यान किया गया॥ २९०॥

मुहुर्मुहुश्चरोगाणामवस्थाआतुरस्य च। अवेक्षमाणस्तुभिषक्चिकित्सांनमुह्यति॥ २९१॥

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोग और रोगी की अवस्थाको वारंवार देखने से वैद्य चिकित्सा करनेमें मोहित नहीं होताहै ॥ २९१ ॥

इत्येवंषड्विधंकालमनपेक्ष्यभिषग्जितम् । प्रयुक्तमहितायस्याच्छस्यस्याकालवर्षवत् ॥ २९२ ॥

जैसे अकाल में हुई वृष्टिके द्वारा अन्न की उत्पत्ति नहीं होती है उसी प्रकार छः प्रकार के समय की अपेक्षा न करके प्रयोग कीगई औषध हितकारी नहीं होतीहै ॥ २९२ ॥

व्याधीनामृत्वहोरात्रवयसांभोजनस्यतु । विशेषोभिद्यतेयस्तुकालापेक्षःसउच्यते ॥ २९३ ॥

रोगोंमें ऋतु दिन रात्रि तथा भोजनके जो विशेष भेद होते हैं उनको कालापेक्ष कहते हैं ॥ २९३ ॥

वसन्तेश्लेष्मजारोगाःशरत्कालेतुपित्तजाः । वर्षासुवातजाश्चैवप्रायःप्रादुर्भवन्तिहि । निशान्तेदिवसान्तेचवर्षान्तेवातजागदाः २९४ ॥

वसन्त में कफज शरद् ऋतु में पित्तज और वर्षाकाल में वातजरोग प्रायः उत्पन्न होते हैं रात्रि के अन्त में दिनके अन्त में तथा वर्षा के अन्त में वातजरोग ॥ २९४ ॥

प्रातःक्षपादौकफजास्तयोर्मध्येतुपित्तजाः । जीर्णान्तेवातजारोगाजीर्णमाणेतुपित्तजाः । श्लेष्मजाभुक्तमात्रेतुलभन्तेप्रायशोबलम् २९५॥

रात्रि के आदि में प्रातःकाल कफजरोग और रात्रि तथा दिनके मध्यमें पित्तजरोग प्रायः बलवान् होते हैं भोजन के पचजाने पर वातजरोग भोजन के पचने के समय पित्तज रोग और भोजन करतेही कफजरोग प्रायः बलवान् होते हैं ॥ २९५ ॥

नाल्पंहन्त्योषधंव्याधिंयथापोऽल्पामहानलम् । दोषवच्चातिमात्रंस्याच्छस्यस्यात्युदकंयथा ॥ २९६ ॥

जैसे थोड़ा सा जल बहुत प्रचण्ड अग्नि को नहीं शान्त करसक्ता है इसी प्रकार थोड़ी औषध रोगको नहीं नष्ट करसक्ती है और जैसे बहुत जल अन्न को नष्ट करदेता है इसी प्रकार बहुत औषध दोषकारी होती है ॥ २९६ ॥

सम्प्रधार्य्यबलंतस्मादामयस्यौषधस्यच । नैवातिबहुलात्यल्पंभैषज्यमवचारयेत् ॥ २९७ ॥

इस से रोग तथा औषध के बलको अच्छे प्रकार से जानकर न बहुत थोड़ी तथा न बहुत ज्यादह औषध देनी चाहिये ॥ २९७ ॥

औचित्याद्यस्ययत्सात्म्यंदेशस्यपुरुषस्यच । अपथ्यमपिनैकान्तात्तत्त्यजंलभतेसुखम् ॥ २९८ ॥

अभ्यास से जिस देशमें अथवा जिस पुरुषको जो वस्तु सात्म्य होवे वहचाहै अपथ्य भी हो परन्तु उसका एकाएकी त्याग करने से सुख नहीं होताहै ॥ २९८ ॥

वाह्लीकाःपल्लवाश्चीनाःशूलीकायवनाःशकाः । मांसगोधूममाध्वीक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्रवैश्वानरोचिताः ॥ २९९ ॥

वाह्लीक पल्लव चीन शूलीक यवन तथा शक देशके निवासी लोगों को मांस गेहूं मुनक्का शस्त्रकर्म तथा अग्निकर्म यह सब सात्म्य होतेहैं ॥ २९९ ॥

क्षीरसात्म्यास्तथाप्राच्यामत्स्यसात्म्याश्चसैन्धवाः । अश्मकावन्तिकानान्तुतैलाज्यंसात्म्यमुच्यते ३००॥

पूर्वदिशा के निवासियों को दूध सात्म्य होता है सिंधुदेशके निवासियों को मछली सात्म्य होती हैं अश्मक तथा आवंतिक देश के निवासियों को तैल तथा घी सात्म्य होता है ॥ ३०० ॥

कन्दमूलफलंसात्म्यंविद्यान्मलयवासिनाम् । सात्म्यंदक्षिणतःपेयामन्थश्चोत्तरपश्चिमे ॥ ३०१ ॥

मलय पर्वत के निवासियों को कन्द मूल फल सात्म्य होते हैं दक्षिण दिशाके निवासियों को पेया सात्म्य होती है उत्तर दिशा तथा पश्चिम दिशाके निवासियों को मंथ (ठंढे जलमें घोले हुये न बहुत गाढ़े न बहुत पतले सत्तुओं को मंथ कहते हैं) सात्म्य होताहै ॥ ३०१ ॥

मध्यदेशेभवेत्सात्म्यंयवगोधूमगोरसाः । तेषांतत्सात्म्ययुक्तानिभेषजान्यवचारयेत् ॥ ३०२ ॥

और मध्यदेश के निवासियों को यव गेहूं तथा गोरस सात्म्य होता है इस से जिनको जो वस्तु सात्म्य है उनको उसीके साथ औषध देनी चाहिये ॥ ३०२ ॥

सात्म्यंह्याशुबलंधत्तेनातिदोषञ्चबह्वपि । योगैरेवंचिकित्सन्हिदेशाद्यज्ञोऽपराध्यति ॥ ३०३ ॥

क्योंकि सात्म्य वस्तु शीघ्रही बल को उत्पन्न करती है और अधिक होजानेपर भी अधिक दोषकारी नहीं होती हैं देश आदि का न जाननेवाला वैद्य पूर्वोक्त योगोंकेद्वारा चिकित्सा करनेसे अपराधी होताहै ॥३०३॥

वयोबलशरीरादिभेदाहिबहवोमताः । तथान्तःसंधिमार्गाणांदोषाणांगूढचारिणाम् ॥ ३०४ ॥

अवस्था बल तथा शरीर आदिके भेद बहुत हैं और शरीरके भीतर सन्धि मार्गों के तथा गूढ़चारी (छिपकर चलनेवाले) दोषों के बहुत से भेद हैं ॥ ३०४ ॥

भवेत्कदाचित्कार्य्यापिविरुद्धाभिमताक्रिया । अन्तर्गतंगूढपित्तंस्वेदसेकोपनाहनैः । नीयन्तेबहिरुष्णैर्हितथोष्मंशमयन्तितम् ॥ ३०५ ॥

कभी २ विरुद्ध चिकित्सा भी करनी उचित होती है जैसे शरीरके भीतर स्थित पित्त को उष्ण स्वेद तरारा तथा लेपकेद्वारा बाहर लाकर ऊष्माको शान्त करते हैं ॥ ३०५ ॥

बाह्यैश्चशीतैःसेकाद्यैरुष्मान्तर्याति पीडितः । सोऽन्तर्गूढंकफंहान्तिशीतंशीतैस्तथाजयेत ॥ ३०६ ॥

बाहर शीतल तरारा आदिका प्रयोग करनेसे पीड़ित (दबी) हुई ऊष्मा भीतर जाके छिपेहुये कफ को नष्ट करती है इस प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतसे शीत को जीतना चाहिये ॥ ३०६ ॥

श्लक्ष्णपिष्टोघनोलेपश्चन्दनस्यापिदाहकृत्।त्वग्गतस्योष्मणोरोधाच्छीतकृच्चान्यथागुरोः ॥ ३०७ ॥

यद्यपि चन्दन शीतल होताहै तथापि बहुत महीन पिसेहुये चन्दनका गाढ़ा लेप दाह को उत्पन्न करताहै क्योंकि उससे त्वचामें स्थित ऊष्मा रुकती है और अगरका पतला लेप शीतकारी होताहै ॥ ३०७ ॥

छर्दिघ्नामक्षिकाविष्ठामक्षिकैवतुवामयेत्।द्रव्येषुस्विन्नदग्धेषुचैवतेष्वेवविक्रिया ॥ ३०८ ॥

मक्खी वमन को उत्पन्न करती है और मक्खी की बीट वमन को नष्ट करती है औषधियों को प्रायः उबालने से तथा जलाने से इनके गुणों में अन्तर पड़जाता है ॥ ३०८ ॥

तस्माद्दोषौषधादीनिपरीक्ष्यदशतत्त्वतः । कुर्य्याच्चिकित्सितंप्राज्ञोनयोगैरेवकेवलैः ॥ ३०९ ॥

इससे बुद्धिमान् वैद्य औषध आदिकों की तत्त्वसे परीक्षा करके चिकित्सा करै किन्तु केवल योगोंकेहीद्वारा चिकित्सा न करै ३०९॥

निवृत्तोऽपिपुनर्व्याधिःस्वल्पेनायातिहेतुना । क्षीणेमार्गीकृतेदेहेशेषःसूक्ष्मइवानलः ॥ ३१० ॥

रोगकेद्वारा शरीरके क्षीण होजानेपर और शरीर में रोगका मार्ग होजानेपर बाकी बची हुई सूक्ष्म अग्निके समान निवृत्त हुआ भी रोग थोड़ेही कारणों से फिर आजाता है ॥ ३१० ॥

तस्मात्तमनुबध्नीयात्प्रयोगेणानपायिना । सिद्ध्यर्थंप्राक्प्रयुक्तस्यसिद्धस्याप्यौषधस्यतु ॥ ३११ ॥

काठिन्यादूनभावाद्वादोषोऽन्तःकुपितोमहान् । पथ्यैर्मृद्धल्पतांनीतोमृदुदोषकरोभवेत् ॥ ३१२ ॥

इससे जिसमें किसी प्रकार का विघ्न न परै ऐसे प्रयोगकेद्वारा चिकित्सा करनी चाहिये पहिले रोग को दूर करनेके लिये प्रयोग कीगई और सफलता को प्राप्तहुई औषध का प्रयोग करनेपर भी अधिकता अथवा न्यूनता के कारण कुपितहुये महादोष को पथ्यों के द्वारा मृदु तथा स्वल्पकरै इससे वह दोष बहुत कठिन विकार को नहीं उत्पन्न करता है ॥ ३११ । ३१२ ॥

पथ्यमप्यश्नतस्तस्माद्योव्याधिरुपजायते । ज्ञात्वैवंवृद्धिमभ्यासमथवान्यस्यकारयेत् ॥ ३१३ ॥

पथ्यका भोजन करतेहुयेके भी जो रोग उत्पन्नहो उसकी चिकित्सा वृद्धि तथा अभ्यास को जानकर करनी चाहिये ॥ ३१३ ॥

सातत्यात्स्वाद्वभावाद्वापथ्यंद्वेष्यत्वमागतम् । कल्पनाविधिभिस्तैस्तैःप्रियत्वंगमयेत्पुनः ॥ ३१४ ॥

निरन्तर सेवन करने से अथवा स्वाद के न होने से जो पथ्यसे द्वेष होजाय तो उस प-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्रवैश्वानरोचिताः ॥ २९९ ॥

वाह्लीक पल्लव चीन शूलीक यवन तथा शक देशके निवासी लोगों को मांस गेहूँ मुनक्का शस्त्रकर्म तथा अग्निकर्म यह सब सात्म्य होतेहैं ॥ २९९ ॥

क्षीरसात्म्यास्तथाप्राच्यामत्स्यसात्म्याश्चसैन्धवाः । अश्मकावन्तिकानान्तुतैलाज्यंसात्म्यमुच्यते ३००॥

पूर्वदिशा के निवासियों को दूध सात्म्य होता है सिंधुदेशके निवासियों को मछली सात्म्य होती हैं अश्मक तथा आवंतिक देश के निवासियों को तैल तथा घी सात्म्य होता है ॥ ३०० ॥

कन्दमूलफलंसात्म्यंविद्यान्मलयवासिनाम् । सात्म्यंदक्षिणतःपेयामन्थश्चोत्तरपश्चिमे ॥ ३०१ ॥

मलय पर्वत के निवासियों को कन्द मूल फल सात्म्य होते हैं दक्षिण दिशाके निवासियों को पेया सात्म्य होती है उत्तर दिशा तथा पश्चिम दिशाके निवासियों को मंथ(ठंढे जलमें घोले हुये न बहुत गाढ़े न बहुत पतले सत्तुओं को मंथ कहते हैं) सात्म्य होताहै ॥ ३०१ ॥

मध्यदेशेभवेत्सात्म्यंयवगोधूमगोरसाः । तेषांतत्सात्म्ययुक्तानिभेषजान्यवचारयेत् ॥ ३०२ ॥

और मध्यदेश के निवासियों को यव गेहूँ तथा गोरस सात्म्य होता है इस से जिनको जो वस्तु सात्म्य है उनको उसीके साथ औषध देनी चाहिये ॥ ३०२ ॥

सात्म्यंह्याशुबलंधत्तेनातिदोषञ्चबह्वपि । योगैरेवंचिकित्सन्हिदेशाद्यज्ञोऽपराध्यति ॥ ३०३ ॥

क्योंकि सात्म्य वस्तु शीघ्रही बल को उत्पन्न करती है और अधिक होजानेपर भी अधिक दोषकारी नहीं होती हैं देश आदि का न जाननेवाला वैद्य पूर्वोक्त योगोंकेद्वारा चिकित्सा करनेसे अपराधी होताहै ॥ ३०३ ॥

वयोबलशरीरादिभेदाहिबहवोमताः । तथान्तःसंधिमार्गाणांदोषाणांगूढचारिणाम् ॥ ३०४ ॥

अवस्था बल तथा शरीर आदिके भेद बहुत हैं और शरीरके भीतर सन्धि मार्गों के तथा गूढ़चारी (छिपकर चलनेवाले) दोषों के बहुत से भेद हैं ॥ ३०४ ॥

भवेत्कदाचित्कार्य्यापिविरुद्धाभिमताक्रिया । अन्तर्गतंगूढपित्तंस्वेदसेकोपनाहनैःनीयन्तेबहिरुष्णैर्हि तथोष्मंशमयन्तितम् ॥ ३०५ ॥

कभी २ विरुद्ध चिकित्सा भी करनी उचित होती है जैसे शरीरके भीतर स्थित पित्त को उष्ण स्वेद तरारा तथा लेपकेद्वारा बाहर लाकर ऊष्माको शान्त करते हैं ॥ ३०५ ॥

बाह्यैश्चशीतैःसेकाद्यैरुष्मान्तर्यातिपीडितः । सोऽन्तर्गूढंकफंहान्तिशीतंशीतैस्तथाजयेत ॥ ३०६ ॥

बाहर शीतल तरारा आदिका प्रयोग करनेसे पीड़ित (दबी) हुई ऊष्मा भीतर जाके छिपेहुये कफ को नष्ट करती है इस प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतसे शीत को जीतना चाहिये ॥ ३०६ ॥

श्लक्ष्णपिष्टोघनोलेपश्चन्दनस्यापिदाहकृत्त्वग्गतस्योष्मणोरोधाच्छीतकृच्चान्यथागुरोः ॥ ३०७ ॥

यद्यपि चन्दन शीतल होताहै तथापि बहुत महीन पिसेहुये चन्दनका गाढ़ा लेप दाह को उत्पन्न करताहै क्योंकि उससे त्वचामें स्थित ऊष्मा रुकती है और अगरका पतला लेप शीतकारी होताहै ॥ ३०७ ॥

छर्दिघ्नामक्षिकाविष्ठामक्षिकैवतुवामयेत् ।द्रव्येषुस्विन्नदग्धेषुचैवतेष्वेव विक्रिया ॥ ३०८ ॥

मक्खी वमन को उत्पन्न करती है और मक्खी की बीट वमन को नष्ट करती है औषधियों को प्रायः उबालने से तथा जलाने से इनके गुणों में अन्तर पड़जाता है ॥ ३०८ ॥

तस्माद्दोषौषधादीनिपरीक्ष्यदशतत्त्वतः । कुर्य्याच्चिकित्सितंप्राज्ञोनयोगैरेवकेवलैः ॥ ३०९ ॥

इससे बुद्धिमान् वैद्य औषध आदिकों की तत्त्वसे परीक्षा करके चिकित्सा करै किन्तु केवल योगोंकेहीद्वारा चिकित्सा न करै ३०९॥

निवृत्तोऽपिपुनर्व्याधिःस्वल्पेनायातिहेतुना । क्षीणेमार्गीकृतेदेहेशेषः सूक्ष्मइवानलः ॥ ३१० ॥

रोगकेद्वारा शरीरके क्षीण होजानेपर और शरीर में रोगका मार्ग होजानेपर बाकी बची हुई सूक्ष्म अग्निके समान निवृत्त हुआ भी रोग थोड़ेही कारणों से फिर आजाता है ॥ ३१० ॥

तस्मात्तमनुबध्नीयात्प्रयोगेणानपायिना । सिद्ध्यर्थंप्राक्प्रयुक्तस्यसिद्धस्याप्यौषधस्यतु ॥ ३११ ॥

काठिन्यादूनभावाद्वादोषोऽन्तःकुपितोमहान् । पथ्यैर्मृद्वल्पतांनीतोमृदुदोषकरोभवेत् ॥ ३१२ ॥

इससे जिसमें किसी प्रकार का विघ्न न परै ऐसे प्रयोगकेद्वारा चिकित्सा करनी चाहिये पहिले रोग को दूर करनेके लिये प्रयोग कीगई और सफलता को प्राप्तहुई औषध का प्रयोग करनेपर भी अधिकता अथवा न्यूनता के कारण कुपितहुये महादोष को पथ्यों के द्वारा मृदु तथा स्वल्पकरै इससे वह दोष बहुत कठिन विकार को नहीं उत्पन्न करता है ॥ ३११ । ३१२ ॥

पथ्यमप्यश्नतस्तस्माद्योव्याधिरुपजायते । ज्ञात्वैवंवृद्धिमभ्यासमथवान्यस्यकारयेत् ॥ ३१३ ॥

पथ्यका भोजन करतेहुयेके भी जो रोग उत्पन्नहो उसकी चिकित्सा वृद्धि तथा अभ्यास को जानकर करनी चाहिये ॥ ३१३ ॥

सातत्यात्स्वाद्वभावाद्वापथ्यंद्वेष्यत्वमागतम् । कल्पनाविधिभिस्तैस्तैःप्रियत्वंगमयेत्पुनः ॥ ३१४ ॥

निरन्तर सेवन करने से अथवा स्वाद के न होने से जो पथ्यसे द्वेष होजाय तो उस प-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थ्य के अनेक प्रकार बनाकर उसमें फिर रुचि करवावे ॥ ३१४ ॥

मनसोऽर्थानुकूल्याद्धितुष्टिरूर्जारुचिर्बलम् । सुखोपभोगताचस्याद्व्याधेश्चातोवलक्षयः ॥ ३१५ ॥

क्योंकि मनके अनुकूल विषय होनेसे तुष्टता ऊर्ज्ज रुचि वल तथा सुखोपभोगिता (सेवनकरनेमें सुख होना) होतीहै और इसीसे रोग का वल क्षीण होजाताहै ॥३१५॥

लौल्याद्दोपक्षयाद्व्याधेर्वैधर्म्याच्चापियारुचिः । तासुपथ्योपचारःस्याद्योगेनाद्यंविकल्पयेत् ॥ ३१६ ॥

लौल्य (चंचलता अथवा तृष्णा) दोषकी क्षीणता और रोगकी विधर्मता (प्रतिकूल होना) से जो अरुचि उत्पन्न होती है उसमें पथ्य वस्तुका सेवन करै और पहिले योगमें कुछ विकल्प (फर्क) न करै ॥ ३१६ ॥

विंशतिर्व्यापदोयोनेर्निदानंलिङ्गमेवच । चिकित्साचापिनिर्दिष्टाशिष्याणांहितकाम्यया ॥ ३१७ ॥

इस योनिव्यापचिकित्सित नाम अध्याय में शिष्यों के हितकी कामना से बीस प्रकार के योनिदोष उनके निदान लक्षण तथा चिकित्सा कहा ॥ ३१७ ॥

शुक्रदोषास्तथाचाष्टौनिदानाकृतिभेषजैः । क्लैब्यान्युक्तानिचत्वारिचत्वारःप्रदरास्तथा ॥ ३१८ ॥

आठ प्रकार के वीर्यदोष उनके निदान लक्षण तथा यत्न चारप्रकारकी नपुंसकता चार प्रकार के प्रदर ॥ ३१८ ॥

तेषांनिदानलिङ्गञ्चभैषज्यञ्चैवकीर्त्तितम् । क्षीरदोषास्तथाचाष्टौहेतुलिङ्गभिषग्जितैः ॥ ३१९ ॥

उनके निदान लक्षण तथा यत्न आठप्रकार के दुग्धदोष उनके निदान लक्षण तथा यत्न ॥ ३१९ ॥

तेषांचिकित्सानिर्दिष्टासमासव्यासतोमया । रेतसोरजसश्चैवकीर्त्तितंशुद्धिलक्षणम् ॥ ३२० ॥

दुग्ध दोषोंकी संक्षेप तथा विस्तारपूर्वक चिकित्सा शुद्ध वीर्य्य तथा रजकेलक्षण ३२०॥

उक्तानुक्तचिकित्साचसम्यग्योगस्तथैवच । देशादिगुणशंसाचकालःषड्विधएवच ॥ ३२१ ॥

कहे हुये तथा नहीं कहेहुये रोगों की चिकित्सा देश आदि का अच्छे प्रकारसे योग देश आदि के गुणों की प्रशंसा छः प्रकार का काल ॥ ३२१ ॥

देशेदेशेचयत्सात्म्यंयथावैद्योऽपराध्यति । चिकित्साचापिनिर्दिष्टादोषाणांगूढचारिणाम् ॥ ३२२ ॥

जिस २ देशमें जो जो सात्म्यहै जिस प्रकार से वैद्य अपराधी होता है और गूढ़चारी दोषों की चिकित्सा यह सब विषय कहा है ॥ ३२२ ॥

योहिसम्यङ्नजानातिशास्त्रंशास्त्रा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्थमेवच । नकुर्य्यात्सक्रियांचित्रम चक्षुरिवचित्रकृत् ॥ ३२३ ॥

इति योनिव्यापच्चिकित्सितं समाप्तम् ॥

जैसे अन्धा चित्रकार (मुसव्वर) चित्र नहीं बना सकता है उसी प्रकार जो वैद्य दोष तथा दोषार्थ को नहीं जानता है वह अच्छे प्रकार चिकित्सा नहीं करसकताहै ॥३२३ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंयह छठा।चिकित्सास्थानकायोनिव्यापच्चिकित्सितनामतीसवांअध्याय समाप्त हुआ ॥

चिकित्सास्थानसमाप्त ॥

अग्निवेशकृतेतन्त्रेचरकप्रतिसंस्कृते । चिकित्सितमिदंस्थानंषष्ठंप रिसमापितम् ॥

कल्पस्थान ॥

पहिलाअध्याय ॥

मदनकल्पः ।

अथातोमदनकल्पं व्याख्यास्यामः इति हस्माह भगवानात्रेयः ।

इसके उपरान्त मदनकल्प का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

अथखलुवमनविरेचनार्थंमदनफलादित्रिवृतादीनांवमनविरेचनद्रव्याणांसुखोपभोग्यतमैःसहान्यैर्द्रव्यैर्विविधैस्तद्योगानाञ्चक्रियाविधेःसुखोपायस्यसम्यगुपकल्पनार्थंकल्पस्थानमुपदेक्ष्यामोऽग्निवेश ! ॥ १ ॥

हेअग्निवेश वमन तथा विरेचनके निमित्त मदनफल (मैनफल) आदि तथा त्रिवृत आदि (निशोथआदि) वमनकारक तथा विरेचनकारक द्रव्यों की सुखपूर्वक खाने के योग्य मद्य तथा कांजीआदिक अन्यद्रव्य और कचनार आदिक अनेक प्रकारोंके साथ कल्पना करने के लिये और उन योगों की क्रिया विधिकी सुखपूर्वक अच्छी प्रकार से कल्पना के लिये कल्पस्थान का उपदेश करतेहैं ॥ १ ॥

तत्रदोषहरणमूर्द्धभागंवमनसंज्ञकमधोभागंविरेचनसंज्ञकमुभयंवा , शरीरमलविरेचनाद्विरेचनशब्दंलभते ॥ २ ॥

तहां शरीरके ऊर्ध्वभाग (ऊपरीहिस्सा)के दोष निकालने को वमन और अधोभाग(नीचेका हिस्सा) के दोष निकालने को विरेचन कहते हैं अथवा शरीर के मलका विरेचन (निकलना) होने से दोनों को ही विरेचन कहते हैं ॥ २ ॥

तत्रोष्णतीक्ष्णसूक्ष्मव्यवायिविकाशीनिऔषधानिस्ववीर्य्येणहृदयमुपेत्यधमनीरनुसृत्यसम्यग्युक्त्या स्थूलानुस्रोतोभ्यःकेवलंशरीरगतंदोषसङ्घातमाग्नेयत्वाद्विष्यन्दयन्तितैक्ष्ण्याद्विच्छिन्दन्ति ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म व्यवायी (सम्पूर्ण शरीर में अपने गुणों को व्याप्त करके परिपाक को प्राप्त होनेवाली) तथा विकाशी (बलको सुखाकर संधियोंके बंधनों को शिथिल करके कफको फाड़नेवाली) औषध अपने वीर्य्य के द्वारा हृदय में प्राप्त होकर नाड़ियों में जाके अग्निसम्बंधी गुणों से युक्त होने के कारण शरीर में स्थित दोषों के समूह को चलायमान करती हैं और तीक्ष्णता से फाड़ती हैं (स्थानसे हटाती हैं) ॥ ३ ॥

सविच्छिन्नःपरिप्लवः स्नेहभाविते कायेस्नेहाक्तभाजनस्थमिवक्षौद्रम सज्जन्प्रवणभावादामाशयमाग त्यउदानप्रणुन्नोऽग्निवाय्वात्मक त्वादूर्द्धभागप्रभावादौषधस्यऊर्द्ध मुद्रिच्यते । सलिलपृथिव्यात्मक त्वादधोभागप्रभावाच्चऔषधस्यअ धःप्रवर्त्तते, उभयतश्चउभयगुण त्वादितिलक्षणोद्देशः ॥ ४ ॥

फिर वह अपने स्थान से छुटाहुआ दोषों का समूह जैसे चिकनेपात्रमें शहद नहीं लगता है उसी प्रकार स्नेहन करने से चिकनेहुये शरीरमें न लगकर अधोगामी होनेके कारण आमाशय में आकर औषध के अग्नि तथा वायुसम्बन्धी होनेके कारण ऊर्ध्वभाग प्रभावसे ऊपर की ओरसे निकलताहै और औषध के जल तथा पृथ्वीसम्बन्धी होने के कारण अधोभाग प्रभावसे नीचेकी ओरसे निकलता है और औषध में दोनों प्रकारके गुण होने के कारण दोनों ओर से निकलता है इसप्रकार वमन तथा विरेचन के लक्षणों का तत्त्व कहा गया ॥ ४ ॥

तत्रफलजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवकु टजकृतवेधनानां, श्यामात्रिवृच्चतु रंगुलतिल्वक-महावृक्षसप्तलाशंखि नीदन्तीद्रवन्तीनाञ्च, नानाविध-देशकाल–सम्भव–स्वादुरसवीर्य्य विपाकप्रभावग्रहणानां, देहदोषप्र कृतिवयोबलाग्निभुक्तिसात्म्यरोगा वस्थादीनांनानात्मकत्वाच्च, विचि त्रगन्धवर्णरसस्पर्शानामुपयोगसु खार्थमसंख्येसंयोगानामपिचसतां द्रव्याणाम्, विकल्पमार्गोपदर्श नार्थंषड्विरेचनयोगशतानिव्या ख्यास्यामः ॥ ५ ॥

मैनफल बंदाल कड़ुवी लौकी श्वेत फूल की तरोई कुरैया तथा झींगी काला निशोथ अमलतास लोध सेंहुड़ सप्तला (सेंहुड़भेद) शंख कौड़ी दन्ती (दत्यून अर्थात् जमाल गोटेका वृक्ष) तथा द्रवन्ती (दत्यूनविशेष) यह औषध अनेक प्रकारके देशों में तथा स- मयोंमें उत्पन्न होने से स्वाद रस वीर्य विपाक प्रभाव तथा ग्रहणोपाय (औषध लानेका उपाय) अनेक प्रकारके होनेके कारण और देह दोष प्रकृति अवस्था बल अग्नि हाँ- सात्म्य तथा रोगावस्था अनेक प्रकारकी होनेके कारण विचित्र गन्ध वर्ण रस तथा स्पर्श में सुखदायी होनेके लिये यद्यपि असंख्य सं- योगवाली हैं तथापि इन औषधियोंके संयो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोंके विकल्पोंका मार्गमात्र दिखाने के लिये छ: सौ योगोंका व्याख्यान करताहूं ॥ ५ ॥

तानितुद्रव्याणिदेशकालगुणभाजनसम्पद्वीर्य्यबलाधानात्क्रियासमर्थतमानिभवन्ति ॥ ६ ॥

यह सम्पूर्ण औषध देश काल तथा पात्र के गुणों से वीर्य तथा बलयुक्त होनेके कारण वमनआदि क्रिया में अत्यन्त समर्थ होती हैं ॥ ६ ॥

त्रिविधःखलुदेशोजाङ्गलोऽनूपः साधारणश्चेति । तत्रजाङ्गलःपर्य्याकाशभूयिष्ठः। तरुभिरपिकदरखदिराशनाश्वकर्णधवतिनिशशल्लकीसालसोमवल्क–बदरीतिन्दुकाश्वत्थवटामलकीवनगहनः, अनेकशमीककुभशिंशपाप्रायः स्थिरशुष्कपवनबलविधूयमानप्रनृत्यत्तरुणविटपः, प्रततमृगतृष्णाकूपोपगूढस्तनुखरपरुषसिकताशर्कराबहुलः, लावतित्तिरिचकोरानुप्रचितभूमिभागोवातपित्तबहुलस्थिरकठिनमनुष्यप्रायोजाङ्गलोज्ञेयः ॥ ७ ॥

जांगल अनूप और साधारणभेदसे तीन प्रकार का देश होताहै तिसमें जांगल उसे कहते हैं जिसमें चारों ओर आकाश घिरा हो और खैर अशन अश्वकर्ण धव पसाढ़ी शल्लकी साल सोमवल्क बेर तेंदुआ पीपर बरगद आंवला आदि वृक्षों से सघन हो तथा अनेक भांति के शमी ककुभ शीशम आदि वृक्ष स्थिर तथा शुष्क बलवान् वायुसे कम्पायमान नाचने से तरुणवृक्ष होवैं और मृग तृष्णारूपी कूपसे उपगूढ़ हो तथा पतली खुरखुरी कठोर गिटकी व छोटे २ कङ्कड़ों से व्याप्त हो और बटेर तीतर चकोर जिस भूमिमें बैठे हों और प्राय: वात पित्त प्रकृति वाले मनुष्य जिसमें होते हैं ऐसे देशको जांगल कहतेहैं॥७॥

अथानूपोहिन्तालतमालनारिकेलकदलीवनगहनः, सरित्समुद्रपर्य्यन्तप्रायः शिशिरपवनबहुलोवञ्जुलवानीरोपशोभिततीराभिःसरिद्भिरुपगतभूमिभागः, अक्षितिधरनिकुञ्जोपशोभितोमन्दपवनानुबीजितःक्षितिरुहगहनोऽनेकवनराजीपुष्पितवनगहनोभूमिभागःस्निग्धतरुप्रतानोपगूढहंसचक्रवाकबलाकानन्दीमुखपुण्डरीककादम्बमद्गुभृङ्गराज-शतपत्रमत्तकोकिलसमुदिततरुणविटपः, सुकुमारपुरुषःपवनकफप्रायोज्ञेयः ॥ ८ ॥

अनूप देश उसे कहते हैं जिसमें ताल तमाल नारियल केला आदि वृक्ष बहुधा
नदी तथा समुद्रके किनारेहो
धिक चलती हो और किनारे
तथा बेंतके वृक्ष लगेहों और जि
नदियों से घिराहो और पहा

तानि
ताश्वयुग्
यान्मैत्रेमुहू
निहरितानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से युक्त हो तथा मन्द २ वायु आतीहो और सघन वृक्ष तथा विविध भांति के पुष्पितवनों से जिसका भूमिभाग व्याप्तहो और सचिक्कण वृक्षोंसे छिपा हुआ होवे तथा हंस चकई चकवा बक नन्दीमुख पुंडरीक कादम्ब मद्गु भृङ्गराज तथा कमलोंमें मतवाले कोकिला आदि पक्षी आनन्दपूर्वक जिन तरुणवृक्षों में रहते हों और प्रायः वात कफ प्रकृति वाले सुकुमार मनुष्य जिसमें हों ऐसे देशको अनूप कहते हैं ॥ ८ ॥

अनयोरेवद्वयोर्देशयोर्वीरुद्वनस्पतिवानस्पत्यशकुनिमृगगणयुतःस्थिरसुकुमारवर्णसंहननोपपन्नसाधारणगुणयुक्तपुरुषःसाधारणोज्ञेयः ॥ ९ ॥

और इन्हीं दोनों देशों के बीच में बौंडी घास फूस वृक्ष इत्यादि से युक्त शकुनि तथा मृगगणों से व्याप्त स्थित सुकुमार वर्णसंहनन योग्य साधारण गुणयुक्त पुरुष जिस में रहते हों उसे साधारण देश कहते हैं ॥ ९ ॥

तत्रदेशेजाङ्गलेसाधारणेवायथाकालंशिशिरातपपवनसलिलसेवितेसमेशुचौप्रदक्षिणेश्मशानचैत्यदेवयजनागारश्वभ्रारामवल्मीकोषरविरहितेकुशरोहिषास्तीर्णेस्निग्धकृष्णसुवर्णवर्णमधुरमृत्तिकेमृदावफा[illegible]नुपहतेऽन्यैर्बलवत्तरैर्द्रुमैरौष[illegible]धाःप्रशस्यन्ते ॥ १० ॥

[illegible] ऊपर [illegible] के जल [illegible] अधोभाग [illegible] है और औ[illegible] कारण दोन[illegible]वा साधारण देश में समय के [illegible] वायु धूप तथा जल से सेवित सम पवित्र अनुकूल जलवाले और श्मशान चैत्य (वह वृक्ष जिससे ग्राम आदिकी पहिंचानहो अथवा जिसमें प्रेत आदिका रहनेका संदेहहो) देवालय सभा गड्ढा बगीचा बांबी तथा ऊषर से रहित और कुश तथा रोहिषसे व्याप्त स्निग्ध काली सुवर्णवर्ण तथा मधुर मृत्तिका से युक्त कोमल हलसे नहीं जुते हुये और अन्य बड़े वृक्षों के द्वारा नहीं उपहत (नहीं बिगड़ेहुये अर्थात् जिसमें कोई बड़ा वृक्ष न निकलाहो) स्थानमें उत्पन्न हुई औषधियां श्रेष्ठ होती हैं ॥ १० ॥

तत्रयानिकालजातानिउपगतसम्पूर्णप्रमाणरसवीर्य्यगन्धानिकालातपाग्नि—सलिलपवनजन्तुभिरनुपहतगन्धवर्णरसस्पर्शप्रभावाणिप्रत्यग्राणिउदीच्यांदिशिस्थितानितेषांशाखापलाशमचिरप्ररूढंवर्षावसन्तयोर्ग्राह्यंग्रीष्मेमूलानिशिशिरेवाशीर्णप्ररूढपर्णानांशरदित्वक्कन्दक्षीराणिहेमन्तेसाराणिपुष्पफलमितिमङ्गलाचारःकल्याणवृत्तःशुचिःशुक्लवासाःसंपूज्यदेवतामश्विनौगोब्राह्मणांश्चकृतोपवासःप्राङ्मुखउदङ्मुखोवागृह्णीयात् ॥ ११ ॥

उचित समयमें उत्पन्न हुई सम्पूर्ण प्रमाण रस वीर्य्य तथा गन्ध आदि से युक्त और समय धूप अग्नि जल वायु तथा कीड़ों के द्वारा नहीं नष्ट हुये वर्ण गन्ध रस स्पर्श तथा प्रभाववाली नवीन और उत्तर दिशा में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्पन्नहुई औषधियों की नवीन शाखा तथा पत्तियों को वर्षाऋतु तथा वसन्तऋतु में जड़ को पुराने पत्तोंके गिरजाने पर ग्रीष्म अथवा शिशिर ऋतु में छाल कन्द तथा दूधको शरद्ऋतुमें और गोंद पुष्प तथा फलोंको हेमंत ऋतुमें लेवै मंगलाचार करके कल्याणयुक्त होकर पवित्र होकर श्वेतवस्त्र पहिरकर देवता अश्विनीकुमार गौ तथा ब्राह्मणों का पूजनकरके उपवास करके और पूर्वमुख तथा उत्तरमुख होकर औषधियोंका ग्रहणकरै॥११॥

गृहीत्वा चानुरूपगुणवद्भाजनेसंस्थाप्यागारेषुप्रागुदग्द्वारेषुनिवातप्रवातैकदेशेषु नित्यपुष्पोपहारबलिकर्मवत्सु अग्निसलिलोपस्वेदधूमरजोमूषिकचतुष्पादामनभिगमनीयानि स्ववच्छन्नानि शिक्ये चासज्यस्थापयेत्। तत्तानिचयथा दोषंप्रयुञ्जीत॥१२॥

और लेकर उचित गुणयुक्त पात्रमें रखकर पूर्वमुख अथवा उत्तरमुख जिस गृहका द्वार हो जिस गृहमें वायु बहुत न आतीहो जिस गृहमें वायु के आने जाने का एक स्थान नियतहो जिस गृहमें नित्य बलि तथा भेंटें होती होयँ जिस गृहमें अग्नि जल धूम धूलि मूषक तथा चतुष्पद (चौपाये) जीवोंका प्रवेश न होय उस गृहमें अच्छे प्रकारसे ढककर छींके पर टाँग देवे और दोषों के अनुसार उनका प्रयोग करै॥ १२॥

सुरासौवीरकतुषोदकमैरेयमेदकधान्याम्बुफलाम्बुदध्यम्लादिभिर्वाते॥१३॥

वातज रोगमें सुरा सौवीरक (काँजीविशेष) तुषोदक (काँजीविशेष) मैरेय (मद्यविशेष) मेदक धान्याम्बु (काँजीविशेष) फलाम्बु (काँजीविशेष) तथा खट्टेदही के साथ पूर्वोक्त औषधियों का प्रयोग करै॥ १३॥

मृद्वीकामलकमधुकपरूषकफलफाणितक्षीरादिभिश्चपित्ते॥१४॥

पित्तजरोगों में मुनक्का आमला मुलेठी फालसा राव तथा दूधआदि के साथ पूर्वोक्त औषधियों का प्रयोग करै॥ १४॥

श्लेष्मणितुमधुमूत्रकषायादिभिर्भावितानिआलोडितानिचइति उद्देशः॥ १५॥

और कफजरोग में शहद गोमूत्र तथा काढ़ेआदि के साथ पूर्वोक्त औषधियों का प्रयोग करै यह संक्षेप से औषधियों का सेवन करना कहा गया॥ १५॥

तंविस्तरेणद्रव्यदेहदोषसात्म्यादीनिप्रविभज्यव्याख्यास्यामः॥१६॥

अब आगे औषध देह दोष तथा सात्म्य आदिका विभाग करके विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है॥ १६॥

वमनद्रव्याणांमदनफलानिश्रेष्ठतमानिआचक्षतेअनपायित्वात्तानि वसन्तग्रीष्मयोरन्तरेपुष्याश्वयुग्भ्यांमृगशिरसावागृह्णीयान्मैत्रेमुहूर्तेकरणेच। यानिपक्वानिहरितानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाण्डूनिअक्रिमीणिअकृशानिअ
ह्रस्वानिअजग्धानितानिप्रमृज्यकु
शपुटेबद्ध्वागोमयेनालिप्ययवतुषमा
षशालिकुलत्थमुद्गपर्णीनामन्यतमे
निदध्यादष्टरात्रमतऊर्द्ध्वंमृदुभूतानि
तानिमधिष्टगन्धानिउध्धृत्यशोषये
त्। सुशुष्काणांफलानांपिप्पलीरु
द्धरेत्तासांघृतदधिमधुपललविमृदि
तानांपुनः शुष्काणांतासांनवकल
शंसुप्रमृष्टबालुकमरजस्कमाकण्ठंपू
रयित्वास्ववच्छन्नंस्वनुगुप्तंशिक्ये
आसज्यस्थापयेत् ॥ १७ ॥

वमनकारक संपूर्ण औषधियोंमें से आनिष्टकारी न होनेके कारण मैनफल श्रेष्ठहै वसन्त तथा ग्रीष्मऋतु के मध्यमें पुष्य अश्विनी अथवा मृगशिरा नक्षत्र में मैत्र मुहूर्त्त तथा करणमें पके हरे पाण्डुवर्ण कीटादिकों से रहित छिद्रवर्ज्जित अह्रस्व (नहींछोटे) तथा किसी कीटआदि से नहीं खायेगये मैनफलों को तोड़कर कुशोंके दोनेमें बाँधकर ऊपर से गोबरका लेप करके यव भूसी उर्द शालिधान कुलथी तथा मुद्गपर्णी के ढेरमें आठ दिन तक रक्खे फिर कोमल तथा सुगंधयुक्त होजानेपर ढेरमेंसे निकालकर उनको सुखालेवे फिर सूख जानेपर उनके दाने निकालकर दही शहद तथा मांसमें मलकर फिर सुखाके अच्छे प्रकार साफ कियेहुये धूलिरहित नवीन कलश में कण्ठ पर्य्यन्त भरकर अच्छे प्रकार से ढककर छींकेपर टाँगदेवै ॥ १७ ॥

अथछर्दनीयमातुरंद्व्यहंत्र्यहंवास्ने
हस्वेदोपपन्नंछर्दयेदिति ॥१८॥

तदनन्तर जिस रोगीको वमन कराना होय उसको दोदिन अथवा तीनदिन स्नेहन तथा स्वेदन कराके वमन करावे ॥ १८ ॥

ग्राम्यानूपौदकमांसरसक्षीरदधिमा
षतिलशाकादिभिः समुत्क्लेशित
श्लेष्माणंव्युषितंजीर्णाहारंपूर्वाह्णे
कृतबलिहोममङ्गलप्रायश्चित्तंनिरन्न
मनतिस्निग्धंयवाग्वाघृतमात्रां च
पीतवन्तं,तासांफलपिप्पलीनामन्त
र्नखमुष्टिंयावद्वासाधुमन्येतजर्जरीकृ
त्ययष्टिमधुकषायेणकोविदारकर्बुदा
रनीपविदुलबिम्बीशणपुष्पीसदापु
ष्पीप्रत्यक्पुष्पीकषायाणामन्यतमे
नवारात्रिमुषितंविमृद्यपूतंमधुसैन्ध
वयुक्तंसुखोष्णंकृत्वापूर्णंशरावंमन्त्रे
णानेनाभिमन्त्रयेत् ॥ १९ ॥
ॐ ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्का
निलानलाः । ऋषयःसौषधिग्रामा
भूतसंघाश्चपान्तुते ॥ २० ॥ रसा
यनमिवर्षीणांदेवानाममृतंयथा ।
सुधेवोत्तमनागानांभैषज्यमिदमस्तु
ते ॥ २१ ॥ इत्येवमभिमन्त्र्योदङ्मु
खमातुरंपाययेत् । श्लेष्मज्वरगुल्म
प्रतिश्यायवन्तंविशेषेणपुनरापित्ता

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गमनात्तेनसाधुवमति ॥ २२ ॥

बकरेआदि ग्राम्यजीव भैंसाआदि आनूप जीव तथा मछली आदि जलके जीवोंके मांसकारस घी दूध दही उर्द तिल तथा शाक आदि के सेवन से कफ उभड़ताहै इससे जिसको वमन कराना हो उसे यह वस्तु खिलाकर दूसरे दिन प्रातःकाल भोजन पचाहुआ जानकर बलि होम मंगल तथा प्रायश्चित्त कराके कुछ अन्न न खिलाकर जो बहुत स्नेहन न हुआ होय तो यवागू के साथ मात्रा के के अनुसार घी पिलाकर मैनफल के चार तोले अथवा जितने उचित मालूम पड़ें उतने दाने फूटकर मुलेठी कचनार कर्बुदार कदम्ब बेत कुँदुरू सन मधुपुष्पी तथा लटजीरा इन में से किसीके काढ़ेमें रात्रिभर भिगोकर मल कर छानकर कुछ उष्ण करके सकोरे में भर के "(ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाः ॥ ऋषयःसौषधिग्रामा भूतसंघाश्चपान्तु ते ॥ १ ॥ रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतंयथा ॥ सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तुते २)" इन मंत्रोसे अभिमंत्रितकरके रोगीको उत्तराभिमुख बैठालकर पिलावै कफज्वर गुल्म तथा प्रतिश्याय (जुकाम) वाले रोगी को विशेष करके यह औषध पिलानी चाहिये जबतक पित्त न निकलै तबतक वमन करावे पित्तकेनिकलने पर जाननाचाहिये कि अच्छी प्रकारसे वमन होगया ॥ १९।२०।२१।२२॥

हीनवेगन्तुपिपल्यामलकसर्षपकल्कलवणोष्णोदकैःपुनःपुनःप्रवर्त्तयेदापित्तदर्शनादित्ययंसर्वछर्दनयोगविधिः ॥ २३ ॥

जो इस प्रकार वमन करानेपर अच्छेप्रकार से वमन न होय तो पीपरि आमला तथा सरसों को पीसकर नमकीन तथा उष्णजल में मिलाके रोगी को वारंवार पिलाके वमन करावे यह सब प्रकार के वमनकारक योगों की विधि है ॥ २३ ॥

सर्वेषुतुमधुसैन्धवंकफविलायनच्छेदार्थंवमनेषुविदध्यात् । नचोष्णविरोधोमधुनश्छर्दनयोगयुक्तस्याविपक्वप्रत्यागमनाद्दोषहरणाच्च २४ ॥

सब प्रकारके वमनकारक योगों में कफके गलाने के तथा फाड़ने के लिये सैंधवलवण तथा शहद मिलाना चाहिये और यहांपर यह संदेह न होना चाहिये कि वमनकारक औषधियां उष्ण होती हैं उनके साथ शहद उष्ण होनेके कारण हानिकारक होगा क्योंकि वमनकारक औषधियोंके साथ सेवन कियागया शहद विना पकेही निकलजाता है और दोषोंको भी निकालता है ॥ २४ ॥

फलपिप्पलीनांद्वौद्वौभागौकोविदारादिकषायेणत्रिःसप्तकृत्वःभावयेच्चैनरसेनतृतीयंभागंपिष्ट्वाहरीतकीभिर्बिभीतकैरामलकैर्वातुल्यंवर्त्तयेत् । तासामेकाद्वेवापूर्वोक्तानांकषायाणामन्यतमस्याञ्जलिमात्रेणविमृद्य बलवच्छ्लेष्मप्रसेकग्रन्थिज्वरोदरारुचिषुपाययेदितिसमानंपूर्वेण २५॥

मैनफल के दानों के दो भागों को पूर्वोक्त कचनार आदि के काढ़ेमें इक्कीसबार भिगोकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छानलेवे फिर उसी काढ़ेमें मैनफल के दानों का तीसरा भाग पीसकर हड़ बहेड़ा अथवा आमलाके समान मात्राके अनुसार गोली वनालेवै इन गोलियोंमें से एक अथवा दो गोली पूर्वोक्त मुलेठी आदि औषधियों में से किसी एकके सोलह तोले काढ़ेमें मिलाकर मुखसे वहुत कफ गिरना ग्रन्थि ज्वर उदर तथा अरुचि इन रोगोंमें पिलावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ २५ ॥

फलपिप्पलीक्षीरंतेनवाक्षीरयवागूम धोभागेरक्तपित्तेहृदाहेचतृषितस्यवा दध्नउत्तरकंकफच्छर्दिस्तमकप्रसेके पुतस्यैवपयसःशीतस्यसन्तानिका अलिंपित्तेप्रकुपितेउरः कण्ठहृदये च तनुकफोपदिग्धेइतिसमानंपूर्वे ण॥ २६ ॥

अधोगत रक्तपित्त तथा हृदयके दाह तथा तृषामें मैनफल के दानों के साथ पाक किये- गये दूध को पिलाकर अथवा इसी दूध के साथ पाक कीगयी यवागू खिलाकर वमन कराना चाहिये कफजर्छर्दि तमक श्वास तथा मुखसे कफ गिरना इन रोगोंमे इसी दूध का दही जमाकर उसके ऊपर की मलाई खिलाकर वमन कराना चाहिये और पित्तका बहुत कुपित होना कण्ठ तथा हृदयमें सूक्ष्म कफका लिपटना इन रोगों में इसी दूध की सोलह तोले ठण्ढी मलाई खिलाकर वमन कराना चाहिये इसकी और सब विधि पूर्वो- क्त जाननी चाहिये ॥ २६ ॥

फलपिप्पलीशृतक्षीराम्नवनीतमुत्प

न्नफलादिकल्ककषायसिद्धं कफा भिभूताग्निंविशुष्कदेहञ्च मात्रया पाययेदितिसमानंपूर्वेण ॥२७॥

मैनफल के दानों के साथ पाक कियेगये दूधका मक्खन निकालकर मैनफल के काढ़े तथा कल्कके साथ उसका पाक करलेवे वह मक्खन कफकेद्वारा हुई मन्दाग्नि तथा शरीर का सूखना इन रोगोंमें मात्राके अनुसार पि- लाकर वमन करावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ २७ ॥

फलपिप्पलीनां फलादिकषायेण त्रिःसप्तकृत्वःपरिभावितेन पुष्पर जःप्रकाशेनचूर्णेनसरसिबृहत्सरो रुहं सायाह्नेऽवचूर्णयेत्। तद्रात्रिगु पितंप्रभातेपुनरवचूर्णितमुद्धृत्यह रिद्राकृशरक्षीरयवागूनामन्यतमंसै न्धवगुडफाणितयुक्तमाकण्ठंपीत वन्तमाघ्रापयेत्सुकुमारमुत्क्लिष्टपि त्तकफमौषधद्वेषिणमितिसमानंपू र्वेण ॥ २८ ॥

मैनफल के दानों के चूर्ण को मैनफल के काढ़ेमें इक्कीसबार घोटकर वहुत महीन करके सायंकाल के समय तड़ाग में जाकर किसी वड़े कमलके ऊपर चूर्ण बुर्कायः आवै फिर प्रातःकाल जाकर कमलमें से वह चूर्ण लेवै फिर जिसको वमनकरानाहो उसे हल्दी खि- चड़ी तथा दूधकी यवागू इनमें से किसी एक को सैंधवलवण गुड़ तथा राबके साथ मिला कर गले तक पिलाकर पहिले कहाहुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण सुँघावै इससे वमन होताहै यह सुकुमार पुरुष उमड़ेहुये कफ पित्तवाले पुरुष तथा औषधद्वेषी पुरुष (जो औषध नहीं खाना चाहते हैं) उन सबको वहुत हित है इसकी और सब विधिपूर्वोक्त जाननी चाहिये २८॥

फलपिप्पलीनांभल्लातकविधिपरिस्रुतंस्वरसंपक्त्वाफाणितेनातन्तुलीभावाल्लेहयेत् ॥ २६ ॥ तापशुष्कं वाचूर्णीकृतंजीमूतादिकषायेणपित्ते कफस्थानगतेपाययेदिति समानंपूर्वेण ॥ ३० ॥

कफके पित्तस्थान में प्राप्त होनेपर मैनफल के दानोंका भिलाँवे की विधि से रस निकालकर पाक करके राबके समान गाढ़ा करलेवे इसको चटाकर अथवा इस रसको सुखाकर महीन पीसकर बँदाल आदि के काढ़ेके साथ पिलाकर वमन करावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ २९ । ३० ॥

फलपिप्पलीचूर्णानिपूर्ववत्कोविदारादीनांषएणामन्यतमकषायसुतानिवर्त्तिक्रियाःकोविदारादिकषायोपसर्जनाःपेया इति समानंपूर्वेण ॥ ३१ ॥

मैनफल के दानों के चूर्ण को पूर्वोक्त कोविदार आदि छः औषधियों में से किसी के काढ़ेमें भिगोकर बत्ती बनावे इन बत्तियों को कोबिदार के काढ़ेके साथ पिलाकर वमन करावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ ३१ ॥

फलपिप्पलीष्वारग्वधकुटजस्वादुकण्टकपाठापाटलिशार्ङ्गष्टामूर्वासप्तपर्ण—नक्तमालपिचुमर्दपटोल—सुषवी—गुडूचीसोमवल्कदीपिकानांपिप्पलीपिप्पलीमूलहस्तिपिप्पलीचित्रकश्रृङ्गवेराणांचअन्यतमकषायेणसिद्धोलेहइति समानं पूर्वेण ॥ ३२ ॥

अमिलतास कुरैया गोखुरू पाढ़र पाटला मिरोरफली शार्ङ्गष्टा छितवन कंजा नींव परवल करेला गिलोय श्वेतकत्था शतावर पीपरिं पिपरामूल गजपीपरि चीता तथा सोंठि इनमें से किसीके काढ़ेमें मैनफलके दानोंका चूर्ण डाल करके अवलेह वनालेवे इसको चटाकर वमन करावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ ३२ ॥

फलपिप्पलीषुएलाहरेणुकाशतपुष्पाकुस्तुम्बुरुतगरकुष्ठत्वक्चोरकमरुबकगुग्गुलु—वालुकश्रीवेष्टकपरिपेलक—मांसीशैलेयकस्थौणेयकसरलपारावतपद्मशोकरोहिणीनां विंशतेरन्यतमस्यकषायेणसाधितोत्कारिकाकल्पेनयथामोदकोवामोदककल्पेनयथादोषरोगविभक्तिप्रयोज्याइतिसमानंपूर्वेण ॥ ३३ ॥

इलायची रेणुका सौंफ धनियां तगर कूठ तज चोरक मरुवा अगरु गुग्गुल सुगन्धबाला सरलद्रव केवटी मोथा जटामासी छरीला स-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रलकाष्ठ मालकांगनी थुनेर तथा कुटकी इन बीस औषधियोंमें से किसीके काढ़में मैनफल के दानों का चूर्ण मिलाकर विधिपूर्वक उत्कारिका (भक्ष्यविशेष) तथा मोदक बनाकर दोष रोग तथा रुचिके अनुसार खिलाकर वमन करावे इसकी और सब विधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ ३३ ॥

फलपिप्पलीस्वरसकषायपरिभावितानितिलशालितण्डुलपिष्टानितत्कषायोपसर्जनानिशष्कुलीकल्पेनवापूपाइतिसमानंपूर्वेण ॥ ३४ ॥

मैनफल के दानोंके रस तथा काढ़में तिल तथा शालिधानों के चावलोंकी पिट्ठी मिलाकर विधिपूर्वक शष्कुली (भक्ष्यविशेष) तथा पूप बनाकर खिलाके वमन करावे इसकी और सबविधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ ३४ ॥

एतेनैवचकल्पेनसुमुखसुरसकुठेरकगण्डीरकालमालकपर्णासकक्षवकफणिज्जकभूस्तृणकभृङ्गवेरगृञ्जनभूस्तृणककासमर्दभृङ्गराजानामिक्षुवालिकेक्षुकाण्डेक्षूणाञ्चान्यतमस्यकषायेणकारयेत् ॥ ३५ ॥

सुमुख सुरस कुठेरक (श्यामबवई) गंडीर कालमालक नकछिकनी मरुवा सोंठि गाजर लहशुन भूस्तृण (तृणविशेष) कसौंदी भङ्गरा कालंकत ईख तालमखाना तथा दण्डेरक इनके काढ़े के साथ मैनफल के चूर्ण के पूप तथा शष्कुली पूर्वरीति से बनाके खिलाके वमन करावे इसकी और सबविधि पूर्वोक्त जाननी चाहिये ॥ ३५ ॥

यथाबदरषाडवरागलेहमोदकोत्कारिकातर्पणपानकमांसरसयूषमद्यानिमदनफलपाचितानितेनोपसंसृज्ययथादोषरोगविभक्तिद्यात्तैःसाधुवमतीति ॥ ३६ ॥

गोली षाड़व (गुड़म्बा) अवलेह मोदक उत्कारिका (भक्ष्यविशेष) तर्पण (तृप्तिकारक रस) पानक मांसरस यूष तथा मद्य इन में से किसीके साथ मैनफलको मिलाके दोष रोग तथा रुचिके अनुसार खिलावे इससे अच्छी प्रकार वमन होजाताहै ॥ ३६ ॥

तत्र श्लोकाः ।

मदनःकरहाटश्चराटःपिण्डीतकःफलम् । श्वसनश्चेतिपर्य्यायैरुच्यतेतस्य कल्पना ॥ ३७ ॥

तिसमें यह श्लोकहैं मदन करहाट राट पिण्डीतक फल और श्वसन यह मैनफल के नाम हैं ॥ ३७ ॥

नवयोगाःकषायेषुवर्त्तिष्वष्टौपयोमुखे। पञ्चफाणितचूर्णेद्वौश्रेयेवार्त्तिक्रियासुषट् ॥ ३८ ॥

काढ़ों में नव गोली की मात्रामें आठ दूध तथा घीमें पांच फाणित तथा चूर्णमें दो वर्तिक्रिया में छः ॥ ३८ ॥

विंशतिर्विंशतिर्लेहमोदकोत्कारिकासुच । शष्कुलीपूपयोश्चोक्ता योगाःषोडशषोडश ॥ ३९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवलेह मोदक तथा उत्कारिकाओंमें बीस २ शष्कुली तथा पूपमें सोलह सोलह ३९ ॥

दशान्येषाडवाद्येषुत्रयस्त्रिंशदिदं शतम् । योगानांविधिवद्दृष्टंफल कल्पेमहर्षिणा ॥ ४० ॥

इति कल्पस्थानेमदनफलकल्पोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गोली आदि में दश योग जो कहेगये वह सब मिलाकर एक सौ तेंतीस हुये भगवान् आत्रेयजी ने इस मदन कल्पनाम अध्याय में यह सब योग कहे हैं ॥ ४० ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंक ल्पस्थानकामदनफलकल्पनामपहिला अध्याय समाप्तहुआ ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

जीमूतकल्पः ।

कल्पंजीमूतकस्येमंफलपुष्पाश्रयंशृ णु । खरागरी च वेणी च तथास्यादेव ताडकः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त जीमूत कल्पका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

हे अग्निवेश ! जीमूत (बँदाल) की फल पुष्पाश्रित कल्पना (बँदाल) के फल तथा पुष्पों के काढ़े आदि बनाने की विधि) सुनो जीमूत खरागरी वेणी और देवताड़क यह बँदालके नाम हैं ॥ १ ॥

जीमूतकंत्रिदोषघ्नं यथास्वौषधक ल्पितम् । प्रयोक्तव्यंज्वरश्वासहि काकोठामयेषु च ॥ २ ॥

पहिले कहेहुये मैनफल के समान गुणों से युक्त और श्रेष्ठ देशमें उत्पन्न हुआ बँदाल यथायोग्य कल्पना करने से त्रिदोपनाशक होताहै ज्वर श्वास हिचकी तथा कोठ आदि रोगों में इसका प्रयोग करना चाहिये ॥ २ ॥

यथोक्तगुणयुक्तानां देशजानांयथा विधि । पयःपुष्पेषुनिर्वृत्तंफलेपेया शृतंपयः ॥ ३ ॥

पूर्वोक्तगुण युक्त अच्छे देशमें उत्पन्न हुआ विधि से बँदाल वृक्षमें पुष्प निकलने पर इसका दूध लेकर पिलाके वमनकरावे बँदाल वृक्षमें फल निकलनेपर उसके दूधकेद्वारा पेया बना कर पिलाके वमन करावे ॥ ३ ॥

लोमनेक्षीरसन्तानंदध्युत्तरमलोम ने । शृतेपयसिदध्यम्लंजातंहरित पाण्डुके ॥ ४ ॥

बँदालके फलके कोमल होने पर इस का दूध लेकर किसी पात्रमें रक्खै जो उस पर मलाई जमै वह मलाई खिलाकर वमन करा वे बँदाल के फलके कठोर होने पर इस का चूर्ण करके दहीके साथ खिलाकर वमन करा वे बँदाल का फल गदर होनेपर उसको दुग्ध में डालकर पाक करै फिर उस दूध का दही जमाकर जब खट्टाहोजाय तब वही दही खि- लाकर वमन करावे ॥ ४ ॥

जीर्णानाञ्चसुशुष्काणांन्यस्तानां. भाजनेशुचौ । चूर्णस्यपयसाशुक्तिं वातपित्तार्दितःपिबेत् ॥ ५ ॥

पक्के बँदालके फलों को सुखाकर चूर्णकर के श्रेष्ठपात्र में रखछोड़ै जिसको वात तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तकी पीड़ा हो वह दो तोले इस चूर्णको दूधके साथ पीकर वमन करै ॥ ५ ॥

आसुत्यचसुरामण्डेमृदित्वाप्रस्रुतंपिबेत् । कफजेऽरोचकेकासेपाण्डुरोगेसयक्ष्मणि ॥ ६ ॥

कफज अरुचि खांसी पाण्डुरोग तथा यक्ष्मा इन रोगोंमें बँदालके फलको मदिरा के ऊपर के थिरायेहुये जल (सुरामण्ड) में भिगोकर मलकर छान के पीकर वमन करै ॥ ६ ॥

द्वेवापोथ्याथवात्रीणिगुडूच्यामलकस्यवा । कोविदारादिकानांवानिम्बस्यकुटजस्यवा । कषायेष्वासुतंपूत्वातेनैवविधिनापिबेत् ॥ ७ ॥ अथवारग्वधादीनांसप्तानांपूर्ववत्पिबेत् । एकैकशःकषायेण पित्तश्लेष्मज्वरार्दितः ॥ ८ ॥

पित्त कफज्वर से पीड़ित मनुष्य दो अथवा तीन बँदालके फलों को कूटकर गिलोय आमला कचनार आदि पूर्वोक्त आठ औषध नींब कुरैया अथवा अमिलतास आदि पूर्वोक्त सात औषध इनमें से किसीके काढ़ेमें भिगोकर छानकर पीवे इससे अच्छी प्रकार वमन होजाता है ॥ ७ । ८ ॥

वर्त्तयःफलवत्योऽष्टौकोलमात्रास्तुतामताः । जीमूतकस्यवाकल्कंचूर्णंवाशिशिराम्बुना । ज्वरेपित्तभवेवातदुष्टेश्लेष्मणिचानुगे ॥ ९ ॥

पित्त वात तथा कफज्वरमें मैनफल आदि पूर्वोक्त आठ औषध और नींब तथा कुरैया इनमें से किसीके शीतल काढ़े में बँदाल का कल्क तथा चूर्ण डालकर बत्ती बनाके पूर्वोक्त रीतिसे सेवन करै इससे वमन होताहै॥९॥

जीवकर्षभकेक्षूणांशतावर्य्यारसेनवा । पित्तश्लेष्मज्वरेदद्याद्वातपित्तज्वरेऽथवा ॥ १० ॥

जीवक ऋषभक ईख अथवा शतावर के रस के साथ बँदालके चूर्ण को पीकर वमन करनेसे पित्त कफज्वर तथा वात कफज्वरका नाश होताहै ॥ १० ॥

तथाजीमूतकक्षीरात्समुत्पन्नंपचेद्घृतम् । फलादीनांकषायेणश्रेष्ठंतद्वमनंमतम् ॥ ११ ॥

बँदाल के दूध से निकाले गये घीका मैनफल आदि औषधियों के काढ़े के साथ पाक करै इस घीको पीकर वमन करना बहुत श्रेष्ठ होता है ॥ ११ ॥

तत्रश्लोकौ ।

षट्क्षीरेमदिरामण्डेएकोद्वादशचापरे । सप्तचारग्वधादीनांकषायेऽष्टौचवर्त्तिषु ॥ १२ ॥ जीवकादिषुचत्वारोघृतश्चैकंप्रकीर्त्तितम् । कल्पेजीमूतकानाञ्चयोगास्त्रिंशन्नवाधिकाः ॥ १३ ॥

इतिकल्पस्थानेजीमूतकल्पोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिसमें यह दो श्लोक हैं इस जीमूतकल्प नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने दूधमें छः सुरामण्ड में एक अमलतास आदि औषधियों के काढ़े में सात अन्य औषधियों के काढ़े में बारह वर्त्तिक्रियामें आठ जीवक आदि औषधियोंके रसमें चार और घी में एक योग इस प्रकार उन्तालीस योग कहे ॥१२।१३॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंकल्पस्थान काजीमूतकल्पनामदूसराअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

तीसराअध्याय ॥

इक्ष्वाकुकल्पः ।

सिद्धंवक्ष्याम्यथेक्ष्वाकुकल्पंयेषांप्रशस्यते । पञ्चचत्वारिंशदुक्तायोगाअस्मिन्महर्षिणा ॥ १ ॥

इसके उपरान्त इक्ष्वाकुकल्पनाम तृतीय अध्याय का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेय जीने कहा ॥

जिनके लिये इक्ष्वाकुकल्प हित है उनके लिये यह सिद्ध इक्ष्वाकु पैंतालीस कल्प से युक्त कहाजाताहै ॥ १ ॥

लम्बाथकटुकालाबुतुम्बीबिम्बफला तथा । इक्ष्वाकुफलिनीचैवप्रोच्यते तस्यकल्पना ॥ २ ॥

लम्बा कटुकालाबु तुंबी बिम्बफला तथा फलिनी यह इक्ष्वाकु (कडुवीलौकी) के नाम हैं इसकी कल्पना आगे कही जाती है ॥ २ ॥

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्त्तेकफक्शिते । प्रताम्यतिनरेचैववमनार्थंतदिष्यते ॥ ३ ॥

खांसी श्वास विष छर्दि ज्वर कफ से हुई कृशता और मूर्च्छा इन रोगों से युक्त पुरुष के लिये कडुवी लौकी के द्वारा वमन करना हित होता है ॥ ३ ॥

अपुष्पस्यप्रवालानांमुष्टिंप्रादेशसंमिताम् । क्षीरप्रस्थेशृतंदद्यात्पित्तोद्रिक्तेकफज्वरे ॥ ४ ॥

पुष्परहित कडुवी लौकी के मुट्ठी भर पत्तों को ३४ तोले दूधमें पकाकर अधिक पित्तवाले कफज्वर में पिलाकर वमन करावे ॥ ४ ॥

पुष्पादिषुचचत्वारःक्षीरेजीमूतकेयथा । योगाहरितपाण्डूनांसुरामण्डेनपञ्चमः ॥ ५ ॥

वँदालफल के दूधवाले योगों के समान कडुवी लौकीके चार योग जानने चाहिये हरी तथा पाण्डु वर्ण कडुवी लौकी को मद्य के ऊपर थिराये हुये जलके साथ खाकर वमन करै यह पांचवां योग है ॥ ५ ॥

फलस्वरसभागञ्चत्रिगुणक्षीरसाधितम् । उरःस्थितेकफेदद्यात्स्वरभेदेसपीनसे ॥ ६ ॥

कडुवी लौकी के रसको तिगुने दूधके साथ पाककरके पीकर वमन करै इससे हृदय में स्थित कफ स्वरभंग और पीनस का नाश होता है ॥ ६ ॥

हृतमध्येफलेजीर्णेस्थितंक्षीरंयदाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धि। जातंस्यात्कफजेकासेश्वासेव म्याश्चतांपिबेत्॥ ७॥

कडुवी लौकी के बीच का सब गूदा निकालकर उसमें दूध भरके दही जमावे और कफज खाँसी श्वास तथा छर्दि में यह दही पिलाकर वमन करावै॥ ७॥

मस्तुनावाफलान्मध्यंपाण्डुकुष्ठविषार्दितः। तेनतक्रंविपक्वंवासक्षौद्र लवणंपिबेत्॥ ८॥

पाण्डुरोग कुष्ठ तथा विषसे पीड़ित मनुष्य कडुवी लौकी का गूदा निकालकर दही के तोड़में मिलाकर पीके वमनकरै अथवा कडुवी लौकी के गूदे के साथ पाक किये हुये मट्ठे में शहद तथा सैंधव लवण मिलाकर पीके वमन करै॥ ८॥

अजाक्षीरेणबीजानिभावयेत्पाययेतच। विषगुल्मोदरग्रन्थिगण्डेषु श्लीपदेषुच॥ ९॥

विषगुल्म उदररोग ग्रंथि गण्डमाला तथा श्लीपद (फीलपाव) इन रोगोंसे युक्त मनुष्य कडुवी लौकी के बीजों को बकरी के दूधमें घोटकर पीके वमनकरै॥ ९॥

तुम्ब्याःफलरसैःशुष्कैःसपुष्पैरवचूर्णितम्। छादयेन्माल्यमाघ्रायगन्धसम्पत्सुखोचितः॥ १०॥

अच्छी सुगंध को सूंघनेवाला सम्पन्न तथा सदैव सुखी रहनेवाला मनुष्य कडुवी लौकी के रसयुक्त पुष्पों को सुखाकर चूर्ण करके किसी माला पर चूर्ण को बुरकाकर सूंघै इस से उसको वमन होजाताहै॥ १०॥

भक्षयेत्फलमध्यंवागुडेनपललेनच। इक्ष्वाकुफलतैलंवासिद्धंवापूर्ववद्घृतम्॥ ११॥

कडुवी लौकी के गूदेको गुड़ अथवा मांसके साथ खाकर वमनकरै अथवा कडुवी लौकी का तैल या पूर्वोक्त रीति से कडुवी लौकी के साथ पाक कियागया घी पीकर वमनकरै॥ ११॥

पञ्चाशद्दशवृद्धानिफलादीनांयथोत्तरम्। पिबेद्विमृद्यबीजानिकषाये ष्वासुतंपृथक्॥ १२॥

कडुवी लौकी के बीजों को मैनफल आदि छः औषधियों मेंसे किसी के काढ़े में भिगोकर मल के पीकर वमन करै पहिले दिन दश बीज पीवे और पचास तक क्रमसे दश२ प्रति दिन बढ़ाता जाय॥ १२॥

यष्ट्याह्वकोविदाराद्यैर्मुष्टिमन्तर्नखंपिबेत्। कषायैःकोविदाराद्यैर्मात्राश्चफलवत्स्मृताः॥ १३॥

पूर्वोक्त मुलेठी तथा कचनार आदि नव औषधियों मेंसे किसी के काढ़े के साथ मुट्ठी भर अथवा जितने योग्य होयँ उतने कडुवी लौकी के बीजों को पीसकर छानके पीकर वमन करै॥ १३॥

बिल्वमूलकषायेणतुम्बीबीजाञ्जलिं पिबेत्। पूतस्यास्यत्रयोभागाश्चतुर्थःफाणितस्यतु॥१४॥ सघृतंवीजभागञ्चपिष्टमर्द्धांशिकांस्तथा। महाजालिनिजीमूतकृतवेधनवत्सकान्॥ १५॥ तंलेहंसाधयेदर्व्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घट्टयेन्मृदुनाग्निना। यावत्स्यात्तन्तुमत्तोयेपतितश्चनशीर्य्यते। तं लिह्यान्मात्रयालेहंमन्थश्चापिपिबेदनु॥ १६॥

बेलकी जड़के काढ़ेमें कडुवी लौकी के सोलह तोले बीज डालकर पाककरै फिर छानकर तीन भाग उस काढ़े में एक भाग राव एक भाग घी एक भाग लौकी के बीजों का कल्क और पीले फूल की तरोई बँदाल झींजी तर्कारी तथा कुरैया यह सब पिसी हुई औषध आधे २ भाग डालकर मंदाग्नि में पाककरै और कल्छी से चलाता जाय जब उस पाक में तार निकलने लगै और पानी में डालने से वह न गलै तब उतार लेवै फिर मात्रा के अनुसार इस अवलेह को चाटकर ऊपर से पतले सत्तू पीवे॥ १४।१५।१६॥

कल्पएषोऽग्निमन्थादौचतुष्केपृथगुच्यते। सक्तुभिर्वापिबेन्मन्थंतुम्बीस्वरसभावितैः। कफजेऽथज्वरे कासेकण्ठरोगेष्वरोचके॥ १७॥

अरणीआदि चार औषधियों के काढ़ेमें से जिसके साथ चाहै उसी के साथ कडुवी लौकी के बीजोंका पाककरके यह अवलेह बनाना चाहिये कडुवी लौकी के रस में सत्तुओं को भिगोकर कफज्वर खांसी कण्ठरोग तथा अरुचि में पतले घोलकर पीवे॥ १७॥

गुल्ममेहेप्रसेकेचकल्पंमांसरसैःपिबेत्। नरःसाधुवमत्येवंनचदौर्बल्यमश्नुते॥ १८॥

गुल्म प्रमेह तथा मुखसे कफ गिरना इन रोगों में कडुवी लौकी के कल्क को मांसके रसमें मिलाकर पीवै इस से अच्छे प्रकार वमन होजाताहै और दुर्बलता नहीं होतीहै॥१८॥

तत्रश्लोकाः।

पयस्यष्टौसुरामण्डमस्तुतक्रेषुचत्रयः। प्रेयंसपललंतैलंवर्द्धमानाः सर्वेषुषट्॥ १६॥ घृतमेकंकषाये षुनवान्येमधुकादिषु। अष्टौवर्त्तिक्रियालेहाःपञ्चमन्थोरसस्तथा२०॥ योगाइक्ष्वाकुकल्पेतेचत्वारिंशिच्चपञ्च। उक्तामहर्षिणासम्यक्प्रजानां हितकाम्यया॥ २१॥

इतिकल्पस्थानेइक्ष्वाकुकल्पोनामतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

तिसमें यह श्लोक हैं। इस इक्ष्वाकुकल्प में भगवान् आत्रेयजीने दूधमें ८मद्यके ऊपरथिरायेहुये जल में १ दहीकेतोड़ में १ मट्ठेमें १ सूंघनेमें १ मांसमें १ तैलमें १ क्रम से बढ़ाने के योग्य ६ घी में १ मुलेठी आदि काढ़ों में ९ वर्त्तिक्रियामें ८ अवलेहों में ५ पतले सत्तुओंमें १ और मांसरसमें एक योग इस प्रकार सब जोड़कर ४५योगकहे१९।२०।२१॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंकल्पस्थानकाइक्ष्वाकुकल्पनामतीसरा अध्यायसमाप्तहुआ॥ ३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौथाअध्याय ॥

धामार्गवकल्पः ।

कर्कोटकीकटुफलामहाजालिनिरेवच । धामार्गवस्यपर्य्यायाराजकोशातकीतथा ॥ १ ॥

इसके उपरान्त धामार्गवकल्प का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

कर्कोटकी कटुफला महाजालिनी और राजकोशातकी यह धामार्गव (तोरई) के नाम हैं ॥ १ ॥

गरेगुल्मोदरेकासेवातश्लेष्मामये स्थिते । कफेचकण्ठवक्त्रस्थेकफसञ्चयनेपुच । रोगेष्वेषुप्रयोज्याःस्युः स्थिराश्चगुरवश्चये ॥ २ ॥

कण्ठरोग गुल्म उदर खाँसी वातकफजरोग कफका कण्ठ तथा रुधिर में स्थितहोना और कफके संचित होने से हुये रोग यह सब रोग चाहै स्थिरहोयँ चाहै भारी होयँ इनमें तरोई का प्रयोग करना चाहिये ॥ २ ॥

फलंपुष्पंप्रवालञ्चविधिनातस्यसंहरेत् । प्रवालस्वरसंशुष्कंकृताश्च गुलिकाःपृथक् । कोविदारादिभिः पेयाःकषायैर्मधुकस्यच ॥ ३ ॥

तरोई के फल पुष्प तथा पत्तोंको विधिपूर्वक लावै और तरोई के पत्तोंका रस निकाल कर सुखाके गोली बनालेवै इन गोलियों को मुलेठी तथा कचनार आदि औषधियोंमें से किसी के काढ़ेके साथ पीकर वमन करै ॥ ३ ॥

पुष्पादिषुपयोयोगाश्चत्वारःपञ्चमी सुरा । पूर्ववज्जीर्णशुष्काणामतः कल्पःप्रवक्ष्यते ॥ ४ ॥

तरोई के दूधके साथके चार योग वँदालके समान जानने चाहिये और सुरामण्ड के साथ एक योग कड़ुवी लौकी के समान जानना चाहिये आगे सुखाईहुई तरोई की कल्पना कहीजाती है ॥ ४ ॥

मधुकस्यकषायेणबीजंकरण्टोद्धृतंफलम् । सगुडंव्युषितंरात्रिंकोविदारादिभिस्तथा ॥ ५ ॥

तरोईके मुख को काटकर बीज निकालके मुलेठी तथा कचनार आदि औषधियोंमें से किसीका गुड़सहित काढ़ा उसमें भरकर रात्रिभर रक्खै ॥ ५ ॥

दद्याद्गुल्मोदरार्त्तेभ्योयेचाप्यन्येकफामयाः । दद्यादन्नेनवायुक्तंछर्दिहृद्रोगशान्तये ॥ ६ ॥

फिर प्रातःकाल गुल्म उदर तथा अन्य कफजरोगों से व्याकुल मनुष्यों को वह काढ़ा पिलाकर वमन करावे अथवा छर्दि तथा हृदयके रोगों को शान्त करने के लिये अन्नके साथ इस काढ़े को पिलाकर वमन करावे ६॥

चूर्णैर्वाप्युत्पलादीनिभावितानिप्रभूतशः । रसक्षीरयवाग्वादिष्टसो घ्रात्वावमेत्सुखम् ॥ ७ ॥

कमल आदि सुगन्धित पुष्पों में तरोईका बहुतसा चूर्ण लगाकर मांसरस दूध तथा य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वायु आदिसे तृप्त रोगी को सुँघावै इससे सुखपूर्वक वमन होजाता है ॥ ७ ॥

चूर्णीकृतस्यवर्त्तिंवाकृत्वाबदरसम्मिताम् । विनीयाञ्जलिमात्रेतुपिबेद्गोशकृतोरसे ॥ ८ ॥

तरोई के चूर्ण की वेरके समान बत्ती बनाकर गोवरके १६ तोले रसमें मिलाकर पिलाके वमन करावे ॥ ८ ॥

पृषतर्क्षकुरङ्गाश्वगजोष्ट्राश्वतरस्य च । श्वदंष्ट्रखरखड्गानाञ्चैवपेयांशकृद्रसे ॥ ९ ॥

पृषत ऋक्ष कुरंग घोड़ा हाथी ऊंट छोटा घोड़ा भेड़िया गधा खड्ग इनके विष्ठाके रस में पेया बनाकर पीना चाहिये ॥ ९ ॥

जीवकर्षभकौवीरामात्मगुप्तांशतावरीम् । काकोलींश्रावणींमेदांमहामेदां मधूलिकाम् ॥ १० ॥

जीवक ऋषभक काकोली किंवाच शतावर क्षीरकाकोली मुँडली मेदा महामेदा मिरोरफली ॥ १० ॥

एकैकशोऽभिसंचूर्ण्यसहधामार्गवेणतु। शर्करामधुसंयुक्तालेहाहृद्दाहकासिनाम् ॥ ११ ॥

इनमेंसे किसीके चूर्णकेसाथ तरोईका चूर्ण मिलाकर हृदयके दाह तथा खांसीवाले को शक्कर तथा शहदके साथ चटावे ॥ ११ ॥

सुखोदकानुपानाःस्युःपित्तोष्मसहितेकफे। धान्यतुम्बुरुयूषेणकल्कस्तस्यविषापहः ॥ १२ ॥

और जो कफ पित्त की ऊष्मासहित होय तो इन चूर्णों को चटाकर ऊपर से कुछ उष्ण जल पिलावै धनियां तथा तुम्बुरु (धनियां-विशेष) के काढ़ेके साथ तरोईका कल्क पीकर वमन करने से विषका नाश होताहै ॥ १२ ॥

जात्याःसौमनसायिन्यारजन्याश्चोरकस्यवा। वृश्चिकस्यमहाक्षुद्रसहाहैमवतस्यच। बिम्ब्याःपुनर्नवायावाकासमर्दस्यवापृथक् ॥ १३ ॥

चमेली सौमनसायिनी हल्दी चोरक वृश्चिक महाक्षुद्रसहा हैमवत कुँदुरू गदहपूर्णा अथवा कसौंदी इनमें से किसी एक के काढ़े में ॥ १३ ॥

एकंधामार्गवंद्वेवाकषायेपरिमृद्यतु। तच्छृतंक्षीरजंसर्पिःसाधितंवाफलादिभिः। घृतंमनोविकारेषुपिबेद्वमनमुत्तमम् ॥ १४ ॥

एक अथवा दो तरोई डालकर मलके छानलेवै मनके विकारों में इसको पीनेसे अच्छे प्रकार वमन होजाता है तरोई के साथ पाक कियेगये दूधका घी अथवा मैनफल आदिके साथ पाक कियागया घी मनके विकारमें पीकर वमन करना चाहिये ॥ १४ ॥

तत्रश्लोकौ ।

पल्लवेनचचत्वारःक्षीरएकःसुरासवे। कषायैर्विंशतिःकल्कैर्दशद्वौचशकृद्रसे ॥ १५ ॥ अन्नएकस्तथाप्रेयेदशलेहास्तथाघृते । क

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ल्पेधामार्गवस्योक्ताःषष्टिर्योगामह र्षिणा ॥ १६ ॥

इतिकल्पस्थानेधामार्गवकल्पोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। इस धामार्गवकल्प में भगवान् आत्रेयजी ने पत्तोंके द्वारा ४ दूध के द्वारा १ सुरामण्ड के द्वारा १ काढ़ोंके द्वारा २० कल्कों के द्वारा १० गोबरके रस के द्वारा २ अन्नके द्वारा १ नस्यके द्वारा १ अवलेहके द्वारा १० और घृतके द्वारा १० योग इस प्रकार सब मिलाकर ६० योग कहे हैं ॥ १५। १६ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंकल्पस्थानकाधामार्गवकल्पनामचौथा अध्याय समाप्तहुआ ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

वत्सककल्पः।

अथवत्सकनामानिभेदंस्त्रीपुंसयोस्तथा। कल्पञ्चास्यप्रवक्ष्यामिविस्तरेणयथातथम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त वत्सककल्प का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ वत्सक (कुरैया) के नाम स्त्री पुरुष का भेद और कल्पना इनका विस्तारपूर्वक यथावत् वर्णन कियाजाता है ॥ १ ॥

वत्सकःकुटजःशक्रोवृक्षकोगिरिमल्लिका। बीजानीन्द्रयवास्तस्यतथोच्यन्तेकलिङ्गकाः ॥ २ ॥

वत्सक कुटज शक्र वृक्षक तथा गिरिमल्लिका यह कुरैया के नामहैं कुरैया के बीजों को इन्द्रयव तथा कालिंगक कहते हैं ॥ २ ॥

बृहत्फलःश्वेतपुष्पःस्निग्धपत्रःपुमान्भवेत्। श्यामाचारुणपुष्पीस्त्रीफलवृन्तैस्तथाणुभिः ॥ ३ ॥

जिस कुरैयाके वृक्षमें बड़े फलहों श्वेत पुष्प हों तथा चिकने पत्तेहों उसे पुरुष जानना चाहिये और जिस कुरैयाके वृक्षमें काले तथा अरुणवर्ण पुष्पहों और फल तथा डंठी सूक्ष्म हों उसे स्त्री जानना चाहिये ॥ ३ ॥

रक्तपित्तकफघ्नस्तुसुकुमारेष्वनत्ययः। हृद्रोगज्वरवातासृग्वीसर्पादिषुशस्यते ॥ ४ ॥

कुरैया रक्तपित्त तथा कफको नष्ट करती है सुकुमार पुरुषोंको हानिकारक नहीं होती है और हृद्रोग ज्वर वातरक्त तथा जहरबाद आदिरोगोंमें हितकारी होती है ॥ ४ ॥

कालेफलानिसंगृह्यतयोःशुष्काणिसंक्षिपेत्। तेषामन्तर्नखंमुष्टिंजर्जरीकृत्यतापयेत्। मधुकस्यकषायेणकोविदारादिभिस्तथा ॥ ५ ॥ निशिस्थितंविमृद्यैतल्लवणक्षौद्रसंयुतम्। पित्तेतद्वमनंश्रेष्ठंपित्तश्लेष्मनिवर्हणम् ॥ ६ ॥

उचितसमयमें कुरैयाके फलोंको तोड़लाकर सुखाकर रख छोड़े फिर उनमें से चार तोले फल लेकर कूटकर मुलेठी तथा कचनार आदि औषधियोंमें से किसी के काढ़े में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रात्रिभर भिगोवै फिर मलकर छानके शहद तथा लवण मिलाकर पीके वमनकरै पित्तकी अधिकता में यह वमन श्रेष्ठ होता है इस से पित्त तथा कफका नाश होता है ॥ ५ । ६ ॥

अष्टाहंपयसार्केणतेषांचूर्णंनिभावयेत्। जीवकस्यकषायेणततःपाणितलंपिबेत् ॥ ७ ॥

आठ दिन तक मदार के दूध में कुरैया के फलों के चूर्ण को घोटै फिर जीवक के काढ़े के साथ तोले भर यह चूर्ण पीकर वमन करै ॥ ७ ॥

फलजीमूतकेक्ष्वाकुजीवन्तीनांपृथकृतथा। सर्षपाणांमधूकानांलवणस्याथवाम्बुना। कृसरेणाथवायुक्तं विदध्याद्वमनंभिषक् ॥ ८ ॥

अथवा मैनफल बँदाल तरोई लौकी तथा जीवन्ती इनमें से किसी के काढ़े के साथ यह चूर्ण पीकर वमन करै सरसों अथवा महुआ के जल (जिसमें सरसों अथवा महुआ भिगोये गये होयँ) के साथ सैंधव लवण के जल के साथ अथवा खिचड़ी के साथ कुरैयाके फलों का चूर्ण खिलाकर बुद्धिमान् वैद्य वमन करावै ॥ ८ ॥

तत्रश्लोकः।

कषायैर्नवचूर्णैश्चपञ्चोक्ताःसलिलैस्त्रयः। एकश्चकृसरायांस्याद्योगास्तेऽष्टादशस्मृताः ॥ ९ ॥

इति कल्पस्थानेवत्सककल्पोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

जिसमें यह श्लोक है इस वत्सककल्प में भगवान् आत्रेयजीने काढ़ों के द्वारा ९ चूर्णों के द्वारा ५ जल के द्वारा ३ और खिचड़ी के द्वारा १ योग यह सब मिलाकर १८ योग कहे हैं ॥ ९ ॥

इति अग्निवेशकृततचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंकल्पस्थान कावत्सककल्पनामपांचवांअध्यायसमाप्तहुआ ५ ॥

छठाअध्याय ॥

कृतवेधनकल्पः।

कृतवेधननामानिकल्पञ्चास्यनिबोधत। क्ष्वेडःकोशातकीचोक्तंमृदङ्गफलमेवच ॥ १ ॥

इस के उपरान्त कृतवेधन कल्पका व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजीनेकहा॥ कृतवेधन (कडुवीतरोई) के नाम तथा कल्पना सुनो मैं कहताहूं क्ष्वेड कोशातकी और मृदङ्गफल यह कृतवेधनके नाम हैं ॥१॥

अत्यन्तकटुतीक्ष्णोष्णंगाढेष्विष्टंगदेषुच। कुष्ठपाण्डामयप्लीहशोफगुल्मगरादिषु ॥ २ ॥

कृतवेधन अत्यन्त कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण होती है इस से कुष्ठ पाण्डुरोग प्लीहा शोथ गुल्म तथा गरदोष आदिक बहुत बड़े रोगों मेंही इसका प्रयोग करना चाहिये ॥ २ ॥

क्षीरादिकुसुमादीनिसुराचैतेषुपूर्ववत्। सुशुष्काणान्तुबीजानामेकंद्वौवायथाबलम्। कषायैर्मधुकादीनां नवभिःफलवत्पिबेत् ॥ ३ ॥

कृतवेधन के चार योग दूधके साथ और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक योग मद्य के साथ पूर्वोक्त जानना चाहिये सूखी हुई कृतवेधन के दो अथवा एक बीज बलके अनुसार लेकर मुलेठी आदि नव औषधियों मेंसे किसीके काढ़े के साथ मैनफल की विधिसे पीकर वमनकरै ॥ ३ ॥

क्वाथयित्वाफलंतस्यपूत्वालेहंनिधापयेत् । कृतवेधनकल्कांशंफलाद्यर्द्धांशसंयुतम् । पृथक्चारग्वधादीनांत्रयोदशभिरासुतम् ॥ ४ ॥

कृतवेधन (कडुवी तरोई) का काढ़ाकर के छानकर पकाके अवलेहसा बनालेवे फिर तोले भर वह अवलेह और छः मासे मैनफलका चूर्ण अमलतास आदि तेरह औषधियों मेंसे किसी के काढ़े में डालकर खटाई आजाने पर पीकर वमन करै ॥ ४ ॥

शाल्मलीमूलवृन्तानांपिच्छाभिर्दशभिस्तथा । वर्त्तयःफलवत्षट्सुफलादीनांघृतंतथा ॥ ५ ॥

सेमरकी जड़ तथा ढेंपीके गोंदसहित कृतवेधन को अमलतास आदि दश औषधियों मेंसे किसी के काढ़े में डालकर पीके वमन करै कृतवेधन की छः प्रकार की बत्ती मैनफल के समान जाननी चाहिये और इस का घी भी मैनफल के घीके समान बनाना चाहिये ॥ ५ ॥

कोशातकानिपञ्चाशत्कोविदाररसैःपचेत् । तंकषायंफलादीनांकल्कैर्लेहंपुनःपचेत् ॥ ६ ॥

५० कृत वेधन (कडुवी तरोई) कचनार के रसमें डालकर पाककरै और फिर उसको छानकर मैनफल आदि औषधियों मेंसे किसीका कल्क डालकर फिर पाककरके अवलेह सा बनालेवै ॥ ६ ॥

क्ष्वेडस्यतत्रभागःस्याच्छेषाण्यर्द्धांशिकानिच । कषायैःकोविदाराद्यैरेवंपक्त्वापचेत्पृथक् ॥ ७ ॥

इसमें कृतवेधन का एकभाग और मैनफल आदिका आधा २ भाग कचनारआदि आठ औषधियों में से किसीके काढ़े में डाल कर पाक करलेवै इस के द्वारा अच्छेप्रकार वमन होता है ॥ ७ ॥

कषायेषुफलादीनामानूपंपिशितंपृथक् । कोशातकीफलंपक्त्वातद्रसंलवणैःपिबेत् ॥ ८ ॥

मैनफल आदि छः औषधियोंमें से किसी के काढ़ेमें भैंसा आदि आनूप जीवोंका मांस तथा कृतवेधनसमभाग डालकर पाककरै और छानकर लवण मिलाकर पीकर वमनकरै ॥

फलादिपिप्पलीतुल्यंतद्वत्क्ष्वेडरसंपिबेत् । क्ष्वेडंक्वाथेपिबेत्सिद्धंमिश्रमिक्षुरसेनच ॥ ९ ॥

कृतवेधनके साथ पाक कियेगये मांसरसमें मैनफल के बीजों का चूर्ण डालकर पीकर के वमन करै ईखके रसमें कृतवेधन डालकर पाक करके जिसको खांसी आतीहो वह पीकरवमनकरै ॥ ९ ॥

तत्रश्लोकौ

क्षीरेद्वौद्वौसुराचैकाक्वाथाद्वाविंशतिस्तथा । दशपिच्छाघृतञ्चैकं षट्वर्त्तिक्रियाःशुभाः ॥ १० ॥

Shri Jammu... Collection. Digitized by eGangotri

लेहेऽष्टौसप्तमांसेचयोगइक्षुरसेऽपरः। कृतवेधनकल्पेऽस्मिन्षष्टियोगाःप्रकीर्त्तिताः ॥ ११ ॥

इति कल्पस्थानेकृतवेधनकल्पोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। इस कृतवेधन कल्पमें भगवान् आत्रेयजीने दूधकेद्वारा ४ मद्यकेद्वारा १ काथोंकेद्वारा २२ गोंदकेद्वारा १० घीकेद्वारा १ वर्तिक क्रियाकेद्वारा ६ अवलेहोंकेद्वारा ८ मांसरसकेद्वारा ७ और ईखके रसके द्वारा १ योग इस प्रकार ६० योग कहे हैं ॥ १० । ११ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमें कल्पस्थानका कृतवेधनकल्पनाम छठाअध्याय समाप्तहुआ ॥ ६ ॥

सातवांअध्याय ॥

श्यामात्रिवृत्कल्पः।

विरेचनेत्रिवृन्मूलंश्रेष्ठमाहुर्मनीषिणः। तस्याःसंज्ञागुणाःकर्म्मभेदःकल्पश्चवक्ष्यते ॥ १ ॥

इसके उपरान्त श्यामात्रिवृत्कल्पका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी कहा ॥

विद्वान् लोग विरेचनकारक औषधियों में से निशोथ की जड़ को सबसे श्रेष्ठ समझते हैं उसके नाम गुण कर्म्म भेद तथा कल्पना हम कहते हैं ॥ १ ॥

त्रिभण्डीत्रिवृताचैवश्यामाकूटरणा तथा। सर्वानुभूतिःसुवहाशब्दैःपर्य्यायवाचकैः ॥ २ ॥

त्रिभण्डी त्रिवृता श्यामा कूटरसा सर्वानुभूति तथा सुवहा यह निशोथके नाम हैं ॥२॥

कषायामधुरारूक्षाविपाकेकटुकाचसा। कफपित्तप्रशमनीरौक्ष्याच्चानिलकोपनी ॥ ३ ॥

निशोथ कषैला मधुर रूखा पाक में कटु कफ पित्तनाशक और रूक्षता से वात को कुपित करनेवाला होताहै ॥ ३ ॥

सेदानीमौषधैर्युक्तावातपित्तकफापहैः। कल्पवैशिष्यमासाद्यसर्वरोगहराभवेत् ॥ ४ ॥

यह निशोथ वातपित्त तथा कफनाशक औषधियों का योग पाकर कल्पनाओं की विशेषता से सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

मूलन्तुद्विविधंतस्याःश्यामञ्चारुणमेवच। तयोर्मुख्यतरंविद्धिमूलंयदरुणप्रभम्। सुकुमारेशिशौवृद्धेमृदुकोष्ठेचतच्छुभम् ॥ ५ ॥

निशोथ की जड़ दो प्रकार की होती है एक श्यामवर्ण और दूसरी अरुणवर्ण इन दोनोंमें से अरुणवर्ण जड़ बहुत श्रेष्ठ होती है क्योंकि सुकुमार बालक वृद्ध तथा कोमल कोष्ठवाले पुरुषोंके लिये यही हित होतीहै ५॥

मोहयेदाशुकारित्वाच्छ्यामाकण्ठंक्षिणोत्यपि। तैक्ष्ण्यात्कर्षतिहृत्कण्ठमाशुदोषंहरत्यपि। शस्यतेबहु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोषाढ्यांक्रूरकोष्ठाश्चयेनराः ॥ ६ ॥

और निशोथ की श्यामवर्ण जड़ आशुकारी (शीघ्रता करनेवाली) होनेके कारण मोह को उत्पन्न करती है कण्ठ को क्षीणता करती है तीक्ष्णतासे हृदय को कण्ठकी ओर खींचती है और शीघ्रही दोष को निकालती है इससे बहुत बढ़ेहुये दोषवाले तथा क्रूर कोष्ठवाले (जिनको बहुत मुश्किलसे दस्तआते हों) पुरुषों कोही यह हित होती हैं ॥ ६ ॥

गुणवत्यांतयोर्भूमौजातंमूलंसमुद्धरेत् । उपोष्यप्रयतःशुक्लेशुक्लवासाः समाहितः ॥ ७ ॥

पूर्वोक्त गुणयुक्त पृथ्वी में उत्पन्नहुये निशोथकी जड़ को शुक्लपक्ष में उपवास करके श्वेतवस्त्र पहिनकर पवित्र होके लावै ॥ ७ ॥

गम्भीरानुगतंश्लक्ष्णंनतिर्य्यग्विसृतञ्चयत् । गृहीत्वाविसृजेत्काष्ठंत्वचंशुष्कांनिधापयेत् ॥ ८ ॥

गहिरी पृथ्वी में सीधी गयीहुई तथा श्लक्ष्ण (कठोर होकरभी चिकनी) जड़ लानी चाहिये टेढ़ी न होवै और इसके भीतरका काष्ठ निकालकर केवल छाल सुखाकर रख छोड़नी चाहिये ॥ ८ ॥

स्निग्धस्विन्नोविरेच्यस्तुपेयामात्राशितःसुखम् । अक्षमात्रंतयोःपिण्डंविनीयाम्लेननापिबेत् ॥ ६ ॥

जिसको विरेचन देनाहो उसको स्नेहन तथा स्वेदन कराके पहिले दिन मात्राके अनुसार पेया पिलाकर दूसरे दिन निशोथ की तोले भर जड़ को पीसकर कांजी में मिलाकर पिलावे ॥ ९ ॥

गोऽव्यजामहिषीमूत्रसौवीरकतुषोदकैः । प्रसन्नयात्रिफलयाशृतया चपृथक्पिबेत् ॥ १० ॥

गौ भेंड़ी बकरी तथा भैंसके मूत्र सौवीरक (कांजीविशेष) तुषोदक (कांजीविशेष) प्रसन्ना (मद्यविशेष) और त्रिफला का काढ़ा इनमें से किसी में निशोथकी पिसीहुई जड़ मिलाकर पीवे ॥ १० ॥

एकैकंसैन्धवादीनांद्वादशानांसनागरम् । त्रिवृत्त्रिगुणसंयुक्तंचूर्णमूष्णाम्बुनापिबेत् ॥ ११ ॥

सैंधव आदि बारह लवणोंमें से कोई एक लवण सोंठि और दोनोंकी द्विगुणी निशोथ की जड़ इनका चूर्ण करके उष्ण जलके साथ पीवे ॥ ११ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली । सरलःकिलिमंहिङ्गुभार्ङ्गीतेजोवतीतथा ॥ १२ ॥

पीपरि पिपरामूल मिर्च गजपीपरि सरल काष्ठ देवदारु हींग भारंगी तेजबल ॥ १२ ॥

मुस्तंहैमवतीपथ्याचित्रकोरजनीवचा । स्वर्णक्षीर्य्यजमोदाचशृङ्गवेरञ्चतैःपृथक् । एकैकार्द्धांशसंयुक्तं पिबेद्गोमूत्रसंयुतम् ॥ १३ ॥

नागरमोथा तज हड़ चीता हल्दी बच चोक अजमोद तथा सोंठि इनमें से किसी के अर्धांश चूर्ण के साथ निशोथ की जड़का चूर्ण

मिलाकर गोमूत्र के साथ पीवे ॥ १३ ॥

मधूकार्द्धांशसंयुक्तंशर्कराम्बुयुतंपिबेत् । जीवकर्षभकौमेदांश्रावणींकर्कटाह्वयम् ॥ १४ ॥

मुलेठीके अर्धांश चूर्ण से युक्त निशोथ के चूर्ण को शक्करके शर्वत के साथ पीवे जीवक ऋषभक मेदा मुंडी काकड़ासिंगी ॥ १४ ॥

मुद्गमाषाख्यपर्ण्यौचमहतींश्रावणींतथा । काकोलींक्षीरकाकोलींक्षुद्रांछिन्नरुहांतथा ॥ १५ ॥

मुद्गपर्णी माषपर्णी बड़ी मुँडली काकोली क्षीरकाकोली भटकटैया गिलोय ॥ १५ ॥

क्षीरशुक्लांपयस्याञ्चयष्ट्याह्वंविधिनापिबेत् । वातपित्तहितान्येतान्यन्यानितुकफानिले ॥ १६ ॥

क्षीरशुक्ला पयस्या बिलाईकन्द तथा मुलेठी इनमें से किसीके साथ निशोथका चूर्ण विधिपूर्वक पीना चाहिये यह सम्पूर्ण योग वात पित्तज रोगोंमें हित हैं और इनमें पहिले योग वात कफज रोगोंमें हित होते हैं ॥१६॥

क्षीरमांसेक्षुकाश्मर्य्यद्राक्षापीलुरसैः पृथक् । सर्पिषावातयोश्चूर्णमभयार्द्धांशिकंपिबेत् ॥ १७ ॥

दूध मांसरस और ईख खँभारी के फल मुनक्का तथा पीलूका रस इनमें से किसी के साथ अथवा घीके साथ हड़के अर्धांश चूर्ण से युक्त निशोथ की जड़के चूर्ण को पीवे १७

लिह्याद्वामधुसर्पिर्भ्यांसंयुक्तंससितोपलम् । अजगन्धातुगाक्षीरीविदारीशर्करात्रिवृत् ॥ १८ ॥

मिश्री शहद तथा घी के साथ निशोथ के चूर्ण को चाटै बवई वंशलोचन बिलाईकन्द शक्कर तथा निशोथ ॥ १८ ॥

चूर्णितंक्षौद्रसर्पिर्भ्यांलीढ्वासातुविरिच्यते । सन्निपातज्वरस्तम्भदाहतृष्णार्दितोनरः ॥ १९ ॥

इनके चूर्ण को शहद तथा घीके साथ चाटने से सन्निपातज्वर स्तम्भ दाह तथा तृषा से पीड़ित मनुष्य को अच्छे प्रकार विरेचन होता है ॥ १९ ॥

श्यामात्रिवृत्कषायेणकल्केनचसशर्करम् । साधयेद्विधिवल्लेहंलिह्यात्पाणितलंततः ॥ २० ॥

निशोथके काढ़े कल्क (पिसीहुई लुगदी) तथा शक्करकेद्वारा विधिपूर्वक अवलेह बना करके उसमें से तोलेभर लेकर चाटै॥ २० ॥

सक्षौद्रांशर्करांपक्त्वाकुर्य्यान्मृद्भाजनेनवे । क्षिपेच्छीतेत्रिवृच्चूर्णंत्वक्पत्रमरिचैःसह । मात्रयालेहयेदेतदीश्वराणांविरेचनम् ॥ २१ ॥

शहद तथा शक्कर का पाक करके मृत्तिका के नवीन पात्रमें रक्खे और शीतल होजानेपर उसमें निशोथ तज तेजपात तथा मिर्चका चूर्ण मिलाकर मात्राके अनुसार चटावे यह विरेचन बड़े ऐश्वर्य्यवान् लोगों के योग्य है ॥ २१ ॥

कुडवांशान्रसानिक्षुद्राक्षापीलुपरूष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कान्। सितोपलात्पलंक्षौद्रात्कु डवार्द्धञ्चसाधयेत् २२॥

ईख मुनक्का पीलू तथा फालसा इनका रस सोलह २ तोले मिश्री चार तोले और शहद आठ तोले इन सबको एकसाथ पाक करके॥ २२॥

तंलेहंयोजयेच्छीतंत्रिवृच्चूर्णेनशा स्त्रवित्। एतदुत्सन्नपित्तानामीश्व राणांविरेचनम्॥ २३॥

अवलेह बनावे और शीतल होजानेपर इसमें निशोथ का चूर्ण मिलावे यह अवलेह अधिक पित्तवाले ऐश्वर्य्यवान् पुरुषों को विरेचनके लिये श्रेष्ठ है॥ २३॥

शर्करामोदकान्वर्त्तिर्गुलिकामांस पूपकान्। अनेनविधिनाकुर्य्यात् पैत्तिकानांविरेचनम्॥ २४॥

इसी विधिसे निशोथके चूर्णकेद्वारा शर्करा मोदक वर्त्ति गुटिका मांसरस तथा पूपक (भक्ष्यविशेष) बनाकर अधिक पित्तवालों को खिलाकर विरेचन करावे॥ २४॥

पिप्पलींनागरंक्षारंश्यामात्रिवृतया सह। लेहयेन्मधुनासार्द्धंश्लेष्मला नांविरेचनम्॥ २५॥

पीपरि सोंठि यवाखार तथा निशोथ इन सबको शहद में मिलाकर अधिक कफवालों को चटावे इससे अच्छे प्रकार विरेचन होता है॥ २५॥

मातुलुङ्गाभयाधात्रीश्रीपर्णीकोल दाडिमात्। सुमृष्टान्स्वरसांस्तैलेसा धयेत्तत्रचावपेत्॥ २६॥ सहका रात्कपित्थाच्चसाध्यमम्लञ्चयत्फल म्। पूर्ववद्धलीभूतेत्रिवृच्चूर्णञ्च साधयेत्॥२७॥ त्वक्पत्रकेशरैला नांचूर्णञ्चमधुमात्रया। लेहोऽयंकफ पूर्णानामीश्वराणांविरेचनम्॥२८॥

बिजौरा निंबू हड़ आमला खँभारी बेल तथा अनार इनका रस निकालकर उसमें आँब तथा कैथा आदि खट्टे फलोंका गूदा डालकर तैलके साथ पाककरै पाक करते २ जब अवलेहके योग्य गाढ़ा होजाय तब उतार लेवै फिर शीतल होजानेपर उसमें निशोथ का चूर्ण तज तेजपात नागकेशर तथा छोटी इलायची का चूर्ण और शहद मात्राके अनुसार मिलावै यह अवलेह अधिक कफवाले ऐश्वर्य्यवान् पुरुषों को विरेचन के लिये हित होताहै॥ २६। २७। २८॥

पानकानिरसान्यूषान्मोदकान्रागषा डवान्। अनेनविधिनाकुर्य्याद्विरे कार्थेकफाधिके॥ २९॥

अधिक कफवालों को विरेचन देनेके लिये इसी विधिसे पन्ना मांसरस यूष मोदक तथा गुड़म्बा बनाना चाहिये॥ २९॥

त्वगेलाभ्यांसमंनीलंतैस्त्रिवृत्तैश्चश र्करा। चूर्णफलरसक्षौद्रसक्तुभिस्त र्पणंपिबेत्॥ ३०॥

तज तथा इलायची समभाग इन दोनों के समान नील इनतीनोंके समान निशोथ और

इन चारों के समान शक्कर इन सबका चूर्ण करके अनार आदि फलों के वृसकारी रस शहद तथा सत्तुओं के साथ घोलकर पीवे॥ ३०॥

वातपित्तकफोत्थेषुरोगेष्वल्पानलेषुच । नरेषुसुकुमारेषुनिरपायंविरेचनम् ॥ ३१ ॥

वात पित्त तथा कफसे हुये रोगवाले मंदाग्नि और सुकुमार पुरुषोके लिये यह विरेचन बहुत श्रेष्ठ है इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती है॥ ३१॥

शर्करात्रिफलाश्यामात्रिवृन्मागधिकामधु । मोदकःसन्निपातोर्द्ध्वरक्तपित्तज्वरापहः ॥ ३२ ॥

शक्कर त्रिफला निशोथ पीपरि तथा शहद इन सब को एक में मिलाकर लड्डू बनाके खावे इससे सन्निपात ऊर्ध्वग (मुखआदि से निकलने वाला) रक्त पित्त तथा ज्वर का नाश होता है॥ ३२॥

त्रिवृच्चूर्णामृतास्तिस्रस्तिस्रश्चत्रिफलात्वचः । विडङ्गपिप्पलीक्षारंसमास्तिस्रश्चचूर्णिताः॥ ३३॥

निशोथ सवादो तोले गिलोय सवादोतोले त्रिफला की छाल सवादोतोले बायविड़ंग पीपरि तथा यवाखार सवादोतोले इन सबका चूर्ण करके॥ ३३॥

लिह्यात्सर्पिर्मधुभ्याञ्चमोदकंवागुडेनच । भक्षयेन्निष्परीहारमेतच्छोधनमुत्तमम् ॥ ३४ ॥

घी तथा शहद में मिलाकर चाटै अथवा इस चूर्ण को गुड़में मिलाकर मोदक बनावे इन लड्डूओं के खाने में किसी वस्तुका परिहार (परहेज) नहीं है यह विरेचन के लिये बहुत श्रेष्ठ हैं॥ ३४॥

गुल्मंप्लीहोदरंश्वासंहलीमकमरोचकम् । कफवातकृतांश्चान्यान्व्याधीनेतद्व्यपोहति ॥ ३५ ॥

यह गुल्म प्लीहा उदर श्वास हलीमक अरुचि और कफवातज अन्यरोगों को नष्ट करते हैं॥ ३५॥

विडङ्गपिप्पलीमूलत्रिफलाधान्यचित्रकान् । मरिचेन्द्रयवाजाजीपिप्पलीहस्तिपिप्पलीः ॥ ३६ ॥

वायविड़ंग पिपरामूल त्रिफला धनियाँ चीता मिर्च इन्द्रयव जीरा पीपरि गजपीपरि॥ ३६॥

लवणान्यजमोदाचचूर्णितंकार्षिकंपृथक् । तिलतैलत्रिवृच्चूर्णभागौचाष्टपलोन्मितौ ॥ ३७॥

पाँचों लवण तथा अजमोद इन सब का चूर्ण तोले २ भर तिलोंका तैल बत्तिस तोले निशोथ का चूर्ण बत्तिसतोले॥ ३७॥

धात्रीफलरसप्रस्थांस्त्रीन्गुडार्द्धतुलांतथा । पक्त्वामृद्वग्निनाखादेद्भद्रदरोदुम्बरोपमान् ॥ ३८ ॥

आमले का रस १९२ तोले और गुड़ २०० तोले इन सबको एक में मिलाकर मंदाग्नि में पकावे और पाक होजानेपर बेर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथवा गूलर के समान मोदक बनाके खावे॥ ३८॥

गुडान्कृत्वानचास्यस्याद्विहाराहारयन्त्रणा। कुष्ठार्शःकामलामेहगुल्मोदरभगन्दरम् ॥ ३९ ॥

इन मोदकों के खाने में कोई आहार विहार वर्जित नहीं है यह कुष्ठ बवासीर कामला प्रमेह गुल्म उदर भगन्दर ॥ ३९ ॥

ग्रहणीपाण्डुरोगांश्चहन्युःपुंसवनाश्चते। कल्याणकाइतिख्याताःसर्वेष्वृतुषुयौगिकाः ॥ ४० ॥

इति कल्याणकगुडः।

ग्रहणीदोष तथा पाण्डुरोग इन सबको नष्ट करते हैं इनके सेवन से पुत्र उत्पन्न होता है इनको कल्याण गुड़ कहते हैं सम्पूर्ण ऋतुओं में इनका सेवन करना योग्य है ॥ ४० ॥

इति कल्याणगुड़ ॥

व्योषत्वक्पत्रमुस्तैलाविडङ्गामलकाभयाः। समभागाभिषग्दद्याद्विगुणञ्चमुकूलकम् ॥ ४१ ॥

सोंठि पीपरि मिर्च तज तेजपात नागरमोथा इलायची वायविड़ंग आमला तथा हड़ यह सब एक २ भाग जमालगोटा दो भाग॥ ४१ ॥

त्रिवृतोऽष्टगुणंभागंशर्करायाश्चषड्गुणम्। चूर्णितंगुडिकान्कृत्वाक्षौद्रेणपलसम्मितान् ॥ ४२ ॥

निशोथ आठभाग और शक्कर छःभाग इन सबका चूर्ण करके शहद में मिलाकर तोले२ भरके मोदक बनावे ॥ ४२ ॥

भक्षयेत्कल्यमुत्थाप्यशीतञ्चानुपिबेज्जलम्। मूत्रकृच्छ्रेज्वरेवम्यांकासेश्वासेभ्रमेक्षये ॥ ४३ ॥

प्रातःकाल उठकर एक मोदक खाकर शीतल जल पीवे इस से मूत्रकृच्छ्र ज्वर छर्दि खांसी श्वास भ्रम क्षयी ॥ ४३ ॥

तापेपाण्ड्वामयेऽल्पेऽग्नौशस्तानियन्त्रिताशिनः। योगःसर्वविषाणाञ्चमतःश्रेष्ठोविरेचने ॥ ४४ ॥

ताप पाण्डुरोग तथा मंदाग्नि इनका नाश होताहै और सब प्रकारके विष शान्त होजाते हैं विरेचनके लिये यह बहुत श्रेष्ठ योगहै इसमें किसी वस्तुका परिहार(परहेज)नहींहै॥४४॥

त्रिवृत्पलंद्विप्रसृतंपथ्याधान्योरुबूकयोः। दशैतान्मोदकान्कुर्य्यादीश्वराणांविरेचनम् ॥ ४५ ॥

निशोथ चारतोले हड़ दोप्रसृत धनियां एरण्ड दशपल इनके लड्डू बनाके ऐश्वर्यवान् पुरुषों को विरेचन के लिये देवे ॥ ४५ ॥

त्रिवृद्धैमवतीश्यामानीलिनीहस्तिपिप्पली। समूलापिप्पलीमुस्तमजमोदाद्दुरालभा ॥ ४६ ॥ कार्षिकंनागरपलंगुडस्यपलविंशतिम्। चूर्णितंमोदकान्कुर्य्यादुदुम्बरफलोपमान् ॥ ४७ ॥

निशोथ हड़ पीपरि नील गजपीपरि पिप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पन से लघुता (हल्कापन) को और उष्णता से वायुकी शीतलता को नष्ट करके २७॥

तैलंदधत्याशुमनःप्रसादंवीर्य्यंबलं वर्णमथाग्निपुष्टिम् । मूलेनिषिक्के हियथाद्रुमःस्यान्नीलच्छदःकोमल पल्लवाग्रः॥ २८॥

शीघ्रही मनकी प्रसन्नता वीर्य्य बल वर्ण अग्नि तथा पुष्टता को उत्पन्न करता है जैसे वृक्षकी जड़को सींचने से पत्ते नीले होजाते हैं पल्लव (पत्र आदि से युक्त शाखा के पर्व) के अग्रभाग कोमल होजाते हैं॥ २८॥

कालेमहान्पुष्पफलप्रदश्चतथानरः स्यादनुवासनेन । अपत्यसन्तान विवृद्धकारीकालेयशस्वीबहुकीर्त्ति मांश्च॥ २९॥

और उचित समयमें पुष्प तथा फल बहुत होते हैं इसी प्रकार अनुवासनवस्ति देने से मनुष्य का शरीर उत्तम होजाता है और समय पाकर सन्तानकी वृद्धि यश तथा कीर्ति युक्त होता है॥ २९॥

स्तब्धाश्चयेसंकुचिताश्चयेऽपियेपङ्ग वोयेऽपिचरुग्णभग्नाः । येषाञ्च शाखासुचरन्तिवाताःशस्तोविशेषे णहितेषुवस्तिः॥ ३०॥

जो पुरुष स्तब्ध (जकड़े हुये शरीरवाले) सँकुचित (सिकुड़े हुये शरीर वाले) पंगु (लँगड़े) तथा टूटे हुये अङ्गवाले होयँ और जिनके हाथ पैरोंमें वायु घूमा करती होय उन के लिये वस्ति बहुत हित होतीहै॥ ३०॥

आध्मापनेविग्रथितेपुरीषेशूलेचभ क्तानभिनन्दनेच । एवंप्रकाराश्चभ वन्तिकुक्षौयेचामयास्तेषुचवस्तिरि ष्टः॥ ३१॥

अफरा विष्ठामें गुट्टे पड़जाना शूल तथा भोजनमें द्वेष (नफरत) होजाना यह रोग तथा इस प्रकारके और अन्य जो रोग कुक्षिमें होजाते हैं उनमें वस्ति हित होती है॥ ३१॥

याश्चस्त्रियोवातकृतोपसर्गाद्गर्भंनगृ ह्णन्तिनृभिःसमेताः । क्षीणेन्द्रिया येचनराःकृशाश्चतेषाञ्चवस्तिःपरमः प्रदिष्टः॥ ३२॥

जो स्त्री उचित समयमें पुरुषके साथ समागम करके भी वायु के दोषसे गर्भ को नहीं धारण करती हैं जिन पुरुषों की इन्द्रियां बहुत क्षीण होती हैं और जो पुरुष बहुत कृश होते हैं उनके लिये वस्ति बहुत हितकारी होती है॥ ३२॥

उष्णाभिभूतेषुवदन्तिशीतान्शीता भिभूतेषुतथासुखोष्णान् । तत्प्रत्य नीकौषधसंप्रयुक्तान्सर्व्वत्रवस्तीन्प्र विभज्ययुञ्ज्यात्॥ ३३॥

उष्णसे व्याकुल पुरुषोंके लिये शीत और शीतसे व्याकुल पुरुषोंके लिये कुछ उष्ण वस्ति दोष के विरुद्ध औषधियोंसे युक्त करके विचारपूर्वक सबरोगोंमें देवै॥ ३३॥

नबृंहणीतान्विदधीतवस्तीन्विशो धनीयेषुगदेषुवैद्यः।कुष्ठप्रमेहादिषु मेदुरेषुनरेषुयेचापिविशोधनीयाः ३४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमान् वैद्य वमन आदि संशोधन के योग्य रोगोंमें बृंहण (धातुओं को बढ़ानेवाली) वस्ति न देवै कुष्ठ तथा प्रमेह आदिक रोगवाले और बहुत मेदावाले संशोधन के योग्य पुरुषों को बृंहणवस्ति नहीं देनी चाहिये ॥ ३४ ॥

क्षीणक्षतानांनविशोधनीयान्नशोषिणांनोभृशदुर्बलानाम् । नमूर्च्छिताnाश्चनशोधितानांयेषाञ्चदोषेषुनिबद्धवायुः ॥ ३५ ॥

क्षीण क्षत तथा शोषरोग वाले बहुत दुर्बल मूर्च्छा रोगवाले और जिनके दोषों में वायु का सम्बन्ध होय उनको वमन आदि संशोधन नहीं देना चाहिये ॥ ३५ ॥

शाखागताःकोष्ठगताश्चरोगाममोर्द्ध्वसर्वावयवाङ्गजाश्च । येसन्तितेषांनतुकश्चिदन्योवायोःपरंजन्मनिहेतुरस्ति ॥ ३६ ॥

हाथ पैरोंमें होनेवाले रोग कोष्ठमें होनेवाले रोग मर्मोंमें होनेवाले रोग ऊर्ध्वभागमें होने वाले रोग और सम्पूर्ण शरीरमें होने वाले रोग जो हैं उनकी उत्पत्तिमें वायु के सिवाय अन्य कोई बड़ा कारण नहीं है ॥ ३६ ॥

विण्मूत्रपित्तादिमलाशयानांविक्षेपसंहारकरःसयस्मात् । तस्यातिवृद्धस्यशमायनान्यद्वस्तेर्विनाभेषजमस्तिकिञ्चित् ॥ ३७ ॥

क्योंकि विष्ठा मूत्र तथा पित्त आदिक मलों के आशयों (स्थानों) का विक्षेप (चलायमान) तथा संघात (कठिनता) करने वाला वायुही है इस बहुत बढ़ा हुआ वायुको शान्त करने के लिये वस्ति के विना अन्य कोई औषध नहीं है ॥ ३७ ॥

तस्माच्चिकित्सार्द्धमितिब्रुवन्तिसर्वांचिकित्सामपिवस्तिमेके । नाभिप्रदेशञ्चकटीञ्चगत्वाकुक्षिंसमालोड्यपुनश्चपार्श्वम् ॥ ३८ ॥ संस्नेह्यकायंशिथिलांश्चकृत्वादोषान्पुरीषंग्रथितंविमथ्य । संसक्तवेगःसपुरीषदोषःप्रत्यागतोवस्तिरितिप्रशस्तः ३९॥

इससे कोई २ आचार्य वस्तिको चिकित्सा मात्र का अर्द्धभाग कहते हैं और कोई २ आचार्य्य वस्तिको चिकित्सा का सर्वांग कहते हैं वस्तिके द्वारा शरीरके भीतर गई हुई औषध नाभिस्थान तथा कटिमें जाकर कुक्षि तथा पीठिको मथकर दोषोंकोशिथिल करके मलकी गांठोंको फोड़कर और शरीरको स्निग्धकरके वेगपूर्वक मल तथा दोषों के साथ बाहर निकल आती है यह श्रेष्ठ वस्तिहै ३८।३९ ॥

प्रसृष्टविण्मूत्रसमीरणत्वंरुच्यग्निवृद्ध्याशयलाघवानि।रोगोपशान्तिःप्रकृतिस्थताचबलञ्चतत्स्यात्सुनिरूढलिङ्गम् ॥ ४० ॥

मल मूत्र तथा वायु का अच्छे प्रकार से त्याग होना रुचि अग्नि की वृद्धि कोष्ठका हलकापन रोग का शान्त होना स्वस्थता और बलहोना यह अच्छेप्रकार से निरूहवस्ति होने के लक्षण हैं॥ ४० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्याद्रुक्शिरोहृद्गुदकुक्षिलिङ्गेशोफःप्रतिश्यायविकर्तिकेच । हृल्लासिकामारुतमूत्रसङ्गःश्वासोनसम्यक्चनिरूहितेस्यात् ॥ ४१ ॥

शिर हृदय गुदा कुक्षि तथा लिङ्ग में पीड़ा होना शोथ प्रतिश्याय (जुकाम) गुदामें कैंचीसे काटने कीसी पीड़ाहोना मतली वायु तथा मूत्रका रुकना और श्वास यह अच्छेमकार निरुहवस्ति न होने के लक्षण हैं ॥ ४१ ॥

लिङ्गंयदेवातिविरेचितस्यभवेत्तदेवातिनिरूहितस्य । प्रत्येत्यसक्कंसशकृचतैलं वक्त्रादिबुद्धीन्द्रियसंप्रसादः ॥ ४२ ॥

विरेचन के अधिक होनेपर जो लक्षण होतेहैं वही लक्षण निरुहवस्ति की अधिकता में भीहोतेहैं तैलका किसी प्रकार न रुककर वारम्वार निकलना मुखआदि और बुद्धि तथा इन्द्रियों का निर्मल होना ॥ ४२ ॥

स्वप्नानुवृत्तिर्लघुताबलञ्चसृष्टाश्चवेगाःस्वनुवासितेस्युः । अधःशरीरोदरबाहुपृष्ठपार्श्वेषुरुग्रूक्षखरञ्चगात्रम् ॥ ४३ ॥

अच्छे प्रकारसे निद्राआना शरीरकाहलका होना वलबढ़ना और मल मूत्र तथा वायुका अच्छे प्रकार से निकलना यह अच्छे प्रकार अनुवासनवस्ति होनेके लक्षण हैं शरीर के अधोभाग (नीचे का हिस्सा) भुजा उदर पीठि तथा पशुलियों में पीड़ा होना सम्पूर्ण शरीर रूखा तथा खरखरा होना ॥ ४३ ॥

ग्रहश्चविण्मूत्रसमीरणानामसम्यगेतान्यनुवासितेस्युः । हृल्लासमोहक्लमसादमूर्च्छाविकर्त्तिकाचाप्यनुवासितेस्युः ॥ ४४ ॥

और मल मूत्र तथा वायुका रुकना यह अच्छेप्रकार अनुवासनवस्ति न होने के लक्षण हैं मतली मोह ग्लानि शिथिलता मूर्च्छा और गुदा में कैंची से काटनेकीसी पीड़ा होना यह अधिक अनुवासन होने के लक्षण हैं ॥ ४४ ॥

यस्येहयामाननुवर्त्ततेत्रीन्स्नेहान्नरःस्यात्सविशुद्धदेहः । आश्वागतेऽन्यस्तुपुनर्विधेयःस्नेहोनसंस्नेहयतिह्यतिष्ठन् ॥ ४५ ॥

वस्ति देने से जिस पुरुषके शरीर में वस्ति के द्वारागया हुआ तैलआदि स्नेह तीन पहर ठहरता है उसका शरीर वस्ति के द्वारा शुद्ध होजाता है और जिस के शरीर में वस्ति के द्वारा गयाहुआ स्नेह शीघ्रही लौट आवे उस को फिर वस्ति देनी चाहिये क्योंकि स्नेह पदार्थ कुछ कालतक विना ठहरे शरीर को स्निग्ध नहीं करसक्ता है ॥ ४५ ॥

त्रिंशत्स्मृताःकर्मसुवस्तयोहिकालस्ततोऽर्द्धेनततश्चयोगः । सान्वासनाद्वादशवैनिरूहाःप्राक्स्नेहएकःपरतश्चपञ्च ॥ ४६ ॥

कर्मवस्ति (वमनआदि पँचकर्मों में जो वस्ति दीजाती है उन को कर्मवस्ति कहतेहैं) तीस होती हैं कालवस्ति (ऋतु के अनुसार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वोषों को शान्तकरने के लिये जोवस्ति दीजाती हैं उनको कालवस्ति कहते हैं) १५ होतीहैं और योगवस्ति (रसायन आदि के लिये जो वस्ति दीजाती हैं उनको योगवस्ति कहते हैं) ८ होतीहैं कर्मवस्ति तीस होती हैं वह यहहैं जैसे पहिले एक स्नेहवस्ति फिर बीचमें बारह बारह अनुवासन तथा निरूहवस्ति (यह वस्ति इस क्रमसे होनी चाहिये कि पहिले एक निरूहवस्ति उसके उपरान्त एक अनुवासनवस्ति फिर एक निरूहवस्ति फिर एक अनुवासन वस्तिइत्यादि) फिर अन्त में पांच स्नेहवस्ति इस प्रकार तीस-कर्मवस्ति भई ॥ ४६ ॥

कालेत्रयोऽन्तःपुरतस्तथैकःस्नेहा निरूहान्तरिताश्चषट्सु । योगेनिरूहास्त्रयएवदेयाःस्नेहाश्चपञ्चैवपरादिमध्याः ॥ ४७ ॥

कालवस्ति पंद्रह होती हैं वह यह हैं जैसे पहिले एक स्नेहवस्ति फिर एक निरूहवस्ति इसक्रम से बारहवस्ति होजाने पर अन्त में तीन स्नेहवस्ति इस प्रकार पंद्रह कालवस्ति भई योगवस्ति आठ होती हैं वह यह हैं जैसे पहिले एक स्नेहवस्ति फिर तीन निरूहवस्ति फिर चार स्नेहवस्ति इसप्रकार आठ योग वस्ति भई ॥ ४७ ॥

त्रीन्पञ्चबाहुश्चतुरोऽथषड्वावाताधिकेभ्यस्त्वनुवासनीयान् । स्नेहान्प्रदायाशुभिषग्विदध्यात्स्रोतोविशुद्ध्यर्थमतोनिरूहान् ॥ ४८ ॥

अधिक वातवाले पुरुषों को तीनबार चार बार पाँचबार अथवा छःबार अनुवासनवस्ति देकर शीघ्रही स्रोतों को शुद्धकरने के लिये निरूहवस्ति देवै ॥ ४८ ॥

विशुद्धकायस्यततःक्रमेणस्निग्धन्तुतैःस्वेदितमुत्तमाङ्गम् । विरेचयेत्रिर्द्विरथैकशोवाबलंसमीक्ष्यत्रिविधंमलानाम् ॥ ४९ ॥

फिर क्रमसे शरीरके शुद्ध होजानेपर शिर में तैल आदि स्नेह लगाकर और हाथकी कुछ उष्ण हथेली से शिरमें स्वेदन करके वातादि दोषोंका तीनों प्रकारका बल देखकर तीन बार दोबार अथवा एकबार शिरोविरेचन (तीक्ष्ण औषधियों की नस्य लेकर जो नासिकाकेद्वारा शिरका मल निकाला जाता है उसको शिरोविरेचन कहते हैं) करावे ॥ ४९ ॥

उरःशिरोलाघवमिन्द्रियाणांस्रोतोविशुद्धिश्चभवेद्विशुद्धे । गलोपलेपःशिरसोगुरुत्वंनिष्ठीवनञ्चाप्यथदुर्विरिक्ते ॥ ५० ॥

वक्षःस्थल शिर तथा इन्द्रियों का हलका होना और स्रोतों का शुद्ध होना यह अच्छे प्रकारसे शिरोविरेचन होने के लक्षण हैं गले का कफसे लिपाहुआसा मालूम होना शिर का भारी होना और बहुत थूकना यह अच्छे प्रकार से शिरोविरेचन न होने के लक्षण हैं ॥ ५० ॥

शिरोऽक्षिशङ्खश्रवणार्त्तितोदश्चात्यर्थशुद्धेस्तिमिरञ्चपश्येत् । स्यात्तर्पणंतत्रमृदुद्रवञ्चस्निग्धस्यतीक्ष्णन्तु पुनर्नयोगे ॥ ५१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिर नेत्र कनपटी तथा कानोंमें पीड़ा तथा सुई चुभतीहुईसी मालूम होना और अन्धकार दिखाई देना यह अधिक शिरोविरेचन होने के लक्षण हैं शिरोविरेचन के अधिक होजानेपर तर्पणकारी कोमल द्रव पदार्थोंकी नस्य लेनी चाहिये और स्नेहन करके फिर तीक्ष्ण औषध का प्रयोग नहीं करना चाहिये ॥ ५१ ॥

इत्यातुरस्वस्थविधिःप्रयोगेबलायुषोर्वृद्धिकृदामयघ्नः। कालस्तुवस्त्यादिषुयातियावांस्तावान्भवेद्द्विःपरिहारकालः ॥ ५२ ॥

इस प्रकार विधिपूर्वक पंचकर्मों का प्रयोग करने से रोगी तथा स्वस्थ पुरुषके बल और आयुकी वृद्धि होती है और रोगों का नाश होताहै वस्ति आदिके प्रयोग में जितना समय व्यतीत होताहै उसके द्विगुण समय तक वस्ति आदिके उपरान्त परिहार (परहेज) करना चाहिये ॥ ५२ ॥

अत्याशनस्थानवचांसियानंस्वप्नंदिवामैथुनवेगरोधान्। शीतोपचारातपशोकरोषांस्त्यजेदकालाहितभोजनञ्च ॥ ५३ ॥

वस्तिआदिके उपरान्त बहुत भोजन बहुत देर खड़ा रहना बहुत बोलना घोड़े आदि सवारीपर चढ़ना दिनमें सोना मैथुन करना मल मूत्रादि वेगोंका रोकना शीतका बहुत सेवन धूपका सेवन शोक क्रोध असमयमें भोजन करना और अहित वस्तु खाना यह सब वर्जित हैं ॥ ५३ ॥

बद्धेप्रणीतेविषमेचनेत्रेमार्गेतथार्शःकफविड्विबन्धे। नयातिवस्तिंतनसुखंनिरेतिदोषावृतोऽल्पोयदिवाल्पवीर्यः ॥ ५४ ॥

पिचकारी की नली बँधीहुई तथा टेढ़ी होनेपर गुदाका मार्ग बवासीर कफ तथा मलसे रुकाहुआ होनेपर वस्ति न सुखपूर्वक जाती है न सुखपूर्वक निकलती है और वस्तिकी औषध दोषयुक्त स्वल्प अथवा स्वल्प वीर्य्य होय तो सुखपूर्वक नहीं निकलता है ॥ ५४ ॥

प्राप्तेतुवर्च्चोऽनिलमूत्रवेगेवातेविवृद्धेऽल्पबलेगुदेवा। अत्युष्णतीक्ष्णश्चमृदौप्रकोष्ठेप्रणीतमात्रःपुनरेतिवस्तिः ॥ ५५ ॥

मल वायु तथा मूत्रका वेग होनेपर वायुके बढ़नेपर गुदाके निर्बल होनेपर और कोष्ठके कोमल होनेपर दीगई वस्ति शीघ्रही निकल आती है और बहुत उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्ति भी शीघ्रही निकलजाती है ॥ ५५ ॥

मेदःकफाभ्यामनिलोनिरुद्धःशूलाङ्गसुप्तिश्वयथून्करोति। स्नेहन्तुयुञ्जन्नबुधस्तुतस्मैसंवर्द्धयत्येवहितान्विकारान् ॥ ५६ ॥

मेदा तथा कफके द्वारा रुकाहुआ वायु शूल सुन्न तथा शोथ को उत्पन्न करता है ऐसे अवसर में मूर्ख वैद्य स्नेहका प्रयोग करके इन रोगों को और भी बढ़ाते हैं ॥ ५६ ॥

रोगास्तथान्येऽप्यवितर्क्यमाणाःपरस्परेणावगृहीतमार्गाः। सन्दूषि

CC-0: Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताधातुभिरेवचान्यैःस्वैर्भेषजैर्नोप शमंव्रजन्ति ॥ ५७ ॥

इसी प्रकार अन्य रोग भी जोकि लक्षित नहीं होते हैं और एक दूसरे के द्वारा मार्गको प्राप्त होते हैं वह अन्य धातुओं से दूषित होकर अपनी औषधों से शान्त नहीं होते हैं॥ ५७॥

सर्वश्चरोगप्रशमायकर्म्महीनातिमात्रंविपरीतकालम् । मिथ्योपचाराच्चनतंविकारंशान्तिंनयेत्पथ्यमपि प्रयुक्तम् ॥ ५८ ॥

रोगों को शान्त करने के लिये प्रयोग की गई सम्पूर्ण हितकारी चिकित्साभी जो मात्रा से न्यून तथा अधिक होती है और अनुचित समय में प्रयोग की जातीहै तो अनुचित व्यवहार होने के कारण वह रोग को शान्त नहीं करसक्ती है ॥ ५८ ॥

तत्र श्लोकः ।

प्रश्नानिमान्द्वादशपञ्चकर्म्माण्युद्दिश्यसिद्धाविहकल्पनायाम् । प्रजाहितार्थभगवान्महार्थान्सम्यग्जगादर्षिवरोऽत्रिपुत्रः ॥ ५९ ॥

इतिं सिद्धिस्थानेकल्पनासिद्धिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इसमें यह श्लोक है । इस कल्पनासिद्धि नाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने प्रजाओंके हित के निमित्त पंचकर्मसम्बन्धी महामयोजनवाले बारह प्रश्नों का उत्तर अच्छे प्रकारसे कहा है ॥ ५९ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंसिद्धिस्थानकाकल्पनासिद्धिनामपहिला अध्यायसमाप्तहुआ ॥ १ ॥

दूसराअध्याय ॥

पञ्चकर्मीयसिद्धिः ।

येषांयस्माच्चकर्माण्यग्निवेश ! न कारयेत् । येषाञ्चकारयेद्यानितत्सर्वंसंप्रवक्ष्यते ॥ १ ॥

इसके उपरान्त पंचकर्मीयसिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

हेअग्निवेश जिस कारण से जिनको पंचकर्म नहीं कराने चाहिये और जिनको जौन पंचकर्म कराने चाहिये वह सब मैं कहताहूं१॥

चण्डःसाहसिकोभीरुःकृतघ्नोव्यग्रएवच । सद्वैद्यनृपतिद्वेष्टातद्विष्टःशोकपीडितः ॥ २ ॥

क्रोधी साहसी भीरु (डरपोक) कृतघ्न व्यग्र सद्वैद्य तथा राजा से द्वेष करनेवाला सद्वैद्य तथा राजा जिससे द्वेषकरता होय शोक से पीड़ित ॥ २ ॥

याद्दच्छिकोमुमूर्षुश्चविहीनःकरणैश्रयः । वैरीवैद्याभिमानीचश्रद्धाहीनःसशङ्कितः ॥ ३ ॥

अपनी इच्छाकेअनुसार कार्य्य करनेवाला मुमूर्षु (मरणासन्न अर्थात् मरने के लायक)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेत्र कर्ण आदि इन्द्रियों से रहित वैरी अपने को वैद्यमाननेवाला श्रद्धारहित संदेहयुक्त ३॥

भिषजामविधेयश्चनोपक्रम्योभिष ग्विदा। एतानुपचरन्वैद्योबहून्दो षानवाप्नुयात्॥ ४॥

और वैद्य की आज्ञाको नहीं माननेवाला इनसब की चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्य न करै क्योंकि ऐसे की चिकित्सा करने से बहुत दोषहोते हैं॥ ४॥

एभ्योऽन्येससुपक्रम्यानराःसर्वैरुप क्रमैः। अवस्थांप्रविभज्यैषांवर्ज्यं कार्य्यंचवक्ष्यते॥ ५॥

इनकेसिवाय और सबकी चिकित्सा विधि-पूर्वक करनी चाहिये चिकित्साके योग्य पुरुषों की अवस्था के अनुसार जो कर्म त्यागकरने के योग्य है और जो करने के योग्यहै वह कहाजाता है॥ ५॥

अच्छर्दनीयास्तावत्क्षतक्षीणातिस्थू लकृशबालवृद्धदुर्बलश्रान्तपिपासि तक्षुधितकर्मभाराध्वहतोपवासमैथु नाध्ययनव्यायामचिन्ताप्रसक्तक्षा मगर्भिणीसुकुमारसंवृतकोष्ठदुश्छ र्दनोर्ध्वरक्तपित्तप्रसक्तच्छर्द्यूर्ध्ववाता स्थापितानुवासितहृद्रोगोदावर्त्तमू त्राघातप्लीहगुल्मोदराष्ठीलास्वरोप घाततिमिरशिरःशंखकर्णाक्षिपार्श्व शूलार्त्ताः॥ ६॥

क्षत क्षीण बहुत स्थूल बहुत कृश बालक वृद्ध दुर्बल श्रान्त (थकेहुए) प्यासे भूखे कार्य्य करनेसे बोझाढोनेसे तथा बहुत चलनेसे पीड़ित लंघन मैथुन अध्ययन(पढ़ना)व्यायाम तथा चिंता से सदैव युक्त होनेके कारण क्षीण गर्भिणी सुकुमार बन्दकोष्ठवाले दुश्छर्दन(जिसको बहुतकष्टसे वमन होता हो)ऊर्ध्व-ग रक्तपित्तवाले (जिनके मुखसे रुधिर गिरताहो) प्रसक्तछर्दि(जिनको बहुतछर्दि होती हो) ऊर्ध्व वातवाले आस्थापित (जिनको आस्थापनवस्ति दीगईहो) अनुवासित (जिनको अनुवासनवस्ति दीगईहो) और हृद्रोग उदावर्त्त मूत्राघात प्लीहा गुल्म उदर अष्ठीला स्वरभंग तिमिर(नेत्ररोगविशेष)कनपटियों की पीड़ा कानों की पीड़ा नेत्रोंकी पीड़ा तथा पशुलियों का शूल इनरोगोंसे व्याकुल इनसब को वमन न कराना चाहिये॥ ६॥

तत्रक्षतस्यचभूयःक्षणनाद्रक्तातिप्रवृत्तिःस्यात्। क्षीणातिस्थूलकृशबालवृद्धदुर्बलानामौषधबलासहत्वात्प्राणोपरोधः। श्रान्तपिपासितक्षुधितानाञ्चतद्वत्। कर्मभाराध्वहतोपवासमैथुनाध्ययनव्यायामचिन्ताप्रसक्तक्षामाणांरौक्ष्याद्वातरक्तच्छेदक्षतभयंस्यात्। गर्भिण्यागर्भव्यापादामगर्भभ्रंशाच्चदारुणरोगप्राप्तिः। सुकुमारस्यहृदयस्यविकर्षणादूर्ध्वमधोवारुधिरातिप्रवृत्तिः। संवृतकोष्ठदुश्छर्दनयोरतिमात्रप्रवाहनाद्दोषाःसमुत्क्लिष्टाह्यन्तःकोष्ठेज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नयन्त्यन्तर्वीसर्पस्तम्भजाड्यंवैचि त्त्यंमरणंवा । ऊर्द्ध्वरक्तपित्तस्यउदा नमुत्क्षिप्यप्राणान्हरेद्रक्तञ्चातिप्रवर्त्त येत् । प्रसक्तच्छर्देस्तुतद्वदूर्द्ध्ववाता स्थापितानुवासितानामूर्द्ध्ववातातिप्रवृत्तिः । हृद्रोगिणोहृदयोपरोधः । उदावर्त्तिनोघोरतरउदावर्त्तः स्याच्छीघ्रतंरहन्ता । मूत्राघातादिभिरार्त्तानांतीव्रतरःशूलप्रादुर्भावः । तिमिराणांतिमिरातिवृद्धिःशिरःशूलादिषुशूलातिवृद्धिः । तस्मादेते नवाम्याः ॥ ७ ॥

क्योंकि क्षत पुरुष (घावयुक्त) को वमन कराने से घाव बढ़जाताहै इससे बहुत रुधिर निकलता है क्षीण बहुत स्थूल बहुत कृश बालक वृद्ध तथा दुर्बल पुरुषोंको औषध के बल को सहने की शक्ति नहीं होती है इससे उनको वमन कराने से प्राणकष्ट होता है थके हुये प्यासे तथा भूखे पुरुषों को भी इसी कारण वमन नहीं कराना चाहिये कार्य्य करने से बोझा ढोने से तथा बहुत चलनेसे पीड़ित पुरुषों को और लंघन मैथुन अध्ययन व्यायाम तथा चिन्ता से सदैव युक्त रहनेके कारण क्षीण हुये पुरुषोंको वमन करानेसे रूक्षता के कारण वातरक्त तथा क्षत होनेका भय रहता है गर्भिणीको वमन कराने से गर्भ गिर जाता है और कच्चे गर्भके गिरने से भयङ्कर रोग होते हैं सुकुमार पुरुषको वमन कराने से उसका हृदय खिंचता है इससे ऊपरके मार्गों से अथवा नीचे के मार्गोंसे बहुत रुधिर गिरता है बन्द कोष्ठवाले तथा दुश्छर्दन पुरुषको वमन कराने से उसको वमन करने में बहुत ज़ोर करना पड़ताहै इससे उभड़ेहुये क्षोपकोष्ठ के भीतर अन्तर्विसर्प (भीतरी जहरवात) स्तम्भ जड़ता विचित्रता अथवा मृत्यु को उत्पन्न करते हैं ऊर्ध्वग रक्तपित्तवालेको वमन कराने से कुपित हुआ उदान वायु प्राणोंको हरताहै और बहुत रुधिर निकालताहै प्रसक्तछर्दि ऊर्ध्ववात आस्थापित तथा अनुवासित पुरुषों को वमन कराने से ऊर्ध्ववायु बहुत बढ़ताहै हृदयरोग वाले को वमन करानेसे उस का हृदय रुकजाता है उदावर्त्त रोग वाले को वमन कराने से उदावर्त्त बहुत बढ़जाता है और वह शीघ्रही रोगीको मारडालताहै मूत्राघात आदि रोगवालों को वमन कराने से बहुत तीव्रशूल होताहै तिमिर रोगवालों को वमन कराने से तिमिर बढ़ता है और शिर आदि की पीड़ावालोंको वमन करानेसे पीड़ा बहुत बढ़जाती है इससे इनको वमन नहीं कराना चाहिये ॥ ७ ॥

सर्वेष्वपिखलुएतेष्वपिविषगरविरुद्धाभ्यवहारामक्तेषु अप्रतिसिद्धं शीघ्रकारित्वाद्दोषाणामिति ॥८॥

परन्तु यदि इनको विषदोष गरदोष विरुद्ध भोजन से हुआ दोष तथा आमसे हुआ दोष प्राप्त होय तो इन सब दोषों में किसी अन्य उपायके न होनेके कारण और शीघ्रही प्राणों के नष्ट होजाने के भय से वमन कराना चाहिये ॥ ८ ॥

शेषास्तुवाम्याः । पीनसकुष्ठनव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्वरराजयक्ष्मकासश्वासगलग्रहग लगण्ड–श्लीपद–मेह–मन्दाग्नि विरुद्धाजीर्णान्नविषूचिकालसकवि षगरपीतदष्टदिग्धविद्धाधःशोणित पित्तकफप्रसेकदुर्नामहृल्लासारोच काविपाकापच्यपस्मारोन्मादाति सारशोषपाण्डुरोगमुखपाकदुष्टस्त न्यादयःश्लेष्मव्याधयोविशेषेणरो गाध्यायोक्ताश्चतेषुहिवमनंप्रधानत ममित्युक्तंकेदारसेतुभेदेशाल्यादि शोषदोषविनाशवत् ॥ ६ ॥

पूर्वोक्त पुरुषोंके सिवाय और सबको वमन कराना चाहिये पीनस कुष्ठ नवीन ज्वर राजयक्ष्मा खांसी श्वास गलग्रह गलगण्ड श्लीपद (पीलपाँव) प्रमेह मन्दाग्नि विरुद्धभोजन अजीर्ण विसूचिका अलसक (अजीर्णविशेष) विषपीना गरदोष विषवाले जीवों का काटना विषका शरीर में लगजाना विष से वुभेहुये बाणआदिका लगना नीचेके मार्गोंसे निकलने वाला रक्तपित्त मुख में कफ तथा लार आना बवासीर मतली अरुचि परिपाकका न होना अपची मिरगी उन्माद अतीसार शोथ पाण्डुरोग मुखका पकना तथा दूधका दूषित होना इन सब रोगों में और विशेषकर कफजरोग तथा रोगाध्यायमें कहे हुये रोगों में वमन कराना मुख्य औषध है जैसे खेतकी मेड़ को तोड़ देनेसे सम्पूर्ण दोष निकल जातेहैं इसी प्रकार वमनकेद्वारा इन रोगवालों के शरीर के सम्पूर्ण दोष निकल जाते हैं ॥ ९ ॥

अविरेच्यास्तुसुभगक्षतगुदमुक्तना लाधोभागरक्तपित्तविलङ्घितदुर्बले न्द्रियाल्पाग्निनिरूढकामादिव्यग्रा जीर्णनवज्वरमदात्ययिताध्मातश ल्यार्दिताभिहतातिस्निग्धरूक्षदा रुणकोष्ठाःक्षतादयश्चगर्भिण्य न्ताः ॥ १० ॥

सुभगक्षतगुद (जिसकी गुदामें घावहो) मुक्तनाल अधोगत रक्तपित्तवाले (जिनके दस्त आदिमें रुधिर गिरता होय) लंघन कियेहुये दुर्बल इन्द्रियवाले मन्दाग्नि निरूढ़ (जिनको निरूहवस्ति दीगईहो) काम आदिसे व्याकुल अजीर्णवाले नवीन ज्वर तथा मदात्ययवाले शल्य से पीड़ित अभिहत (जिनके चोट लगीहो) बहुत स्निग्ध रूक्ष दारुणकोष्ठ (जिनका कोष्ठ बहुत कठिन होय) और पहिले कहेहुये क्षतसे लेकर गर्भिणी पर्य्यन्त इनसबको विरेचन नहीं कराना चाहिये ॥ १० ॥

तत्रसुभगस्यसुकुमारोक्तोवमनदोषः स्यात् । क्षतगुदस्यक्षतेगुदेवायुः प्राणोपरोधकरींतीव्रांरुजंजनयेत् । मुक्तनालमतिप्रवृत्त्याहन्यात् । अ धोभागरक्तपित्तिनाञ्चतद्वदेववि लङ्घितदुर्बलेन्द्रियाल्पाग्निनिरू ढाऔषधवेगंनतेसहेरन् । कामादि व्यग्रमनसोनप्रवर्त्ततेकृच्छ्रेणवाप्रव र्त्तमानमधोगदोषान्कुर्य्यादजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्णेनआमदोषःस्यात्। नवज्वरस्यअविपक्कान्दोषान्ननिर्हरेद्वातमेवचकोपयेत्। मदात्ययितस्यमद्यक्षीणेदेहेवायुःप्राणोपरोधंकुर्य्यात्। आध्मातस्यआध्मायमानस्यवापुरीषकोष्ठनिचितोवायुर्विसर्पन्सहसाआनाहंतीव्रतरंमरणंवाजनयेत्। शल्यार्दिताभिहतयोःक्षतेवायुराश्रितोजीवितंहिंस्यादतिस्निग्धस्यअतियोगभयंभवेत्। रूक्षस्यवायुरङ्गग्रहंकुर्यात्। दारुणकोष्ठस्यविरेचनोद्धतादोषाहृच्छूलपर्वभेदानाहाङ्गमर्दच्छर्दिमूर्च्छाक्लमाञ्जनयित्वाप्राणान्हन्युः। क्षतादीनांगर्भिण्यन्तानांछर्दनोक्तदोषःस्यात्। तस्मादेतेनविरेच्याः॥ ११॥

क्योंकि सुभग पुरुषको विरेचनकरानेसे वह दोष होतेहैं जो सुकुमारको वमनकरानेसे होते हैं क्षतगुद पुरुषको विरेचन करानेसे वायुगुदा के घावमें प्राणों को पीड़ित करने वाली पीड़ा को उत्पन्न करता है मुक्तनाल पुरुष को विरेचन देने से बहुत बिरेचन होनेके कारण मरणही होजाता है अधोगत रक्तपित्त वाले को विरेचन कराने से बहुतरुधिर गिरने के कारण उसका शरीरनष्टहो जाता है लंघन किये हुये दुर्बल इन्द्रिय वाले मन्दाग्नि तथा निरूढ़ पुरुषों को यदि वमनकारक औषध दीजावै तो वह औषध के बल को सह नहीं सक्ते हैं काम आदिसे व्याकुल पुरुषों को विरेचनकारक औषध पिलाने से विरेचन नहीं होता है और यदि बहुत कष्ट से होता भी है तो अधोगत दोषों को उत्पन्न करता है अजीर्णवाले को विरेचन कराने से आमदोष होता है नवीन ज्वरवाले को विरेचन देनेसे कच्चे दोष तो नहीं निकलते हैं किन्तु वायु कुपित होता है मदात्ययवाले को विरेचन देने से मद्य से क्षीण शरीर में कुपित हुआ वायु प्राणकष्ट को उत्पन्न करता है अफरे वाले को विरेचन देने से मलाशय में इकट्ठा हुआ वायु फैलकर एकाएकी तीव्रआनाह(कब्ज)को उत्पन्नकरता है अथवा मृत्यु करदेता है शल्य से पीड़ित तथा अभिहत पुरुष को विरेचन देने से वायु घाव में जाकर प्राणों को नष्ट करदेता है बहुत स्निग्ध पुरुष को विरेचन देने से अधिक विरेचन होता है रूक्ष पुरुषको विरेचन देने से वायु उसके अङ्गोंको जकड़ देता है दारुणकोष्ठ वाले को विरेचन देने से उभड़े हुये दोष हृच्छूल (हृदयका शूल) पोरुओं में टूटने की सी पीड़ा आनाह (कब्ज) अङ्गमर्द छर्दि मूर्च्छा तथा ग्लानि इन रोगों को उत्पन्न करके प्राणों को नष्ट करते हैं और क्षत से लेकर गर्भिणीपर्य्यन्तको विरेचन देने से वही दोष होते हैं जोकि इनको वमन देने से होते हैं इससे इन सबको विरेचन नहीं देना चाहिये॥ ११॥

शेषास्तुविरेच्याः। कुष्ठज्वरमेहोर्द्ध्वरक्तपित्तभगन्दरोदरार्शोब्रध्नप्लीहगुल्मार्बुदगलगण्डग्रन्थिविषूचिकालसकमूत्राघातक्रिमिकोष्ठवीसर्पपा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रडुरोगशिरःपार्श्वशूलोदावर्त्तनेत्रास्यदाहहृद्रोगव्यङ्गनीलीकनेत्रनासिकास्यश्रवणरोगहलीमकश्वासकासकामलापस्मारोन्मादवातरक्तयोनिरेतोदोषतैमिर्य्यारोचकाविपाकच्छर्दिश्वयथूदरविस्फोटकादयःपित्तव्याधयोविशेषेणरोगाध्यायोक्ताश्च एतेषुहिविरेचनंप्रधानतममित्युक्तमग्न्युपशमेऽग्निगृहवत्॥१२॥

इन के सिवाय और सब को विरेचनदेना चाहिये कुष्ठज्वर प्रमेह ऊर्ध्वग रक्तपित्त भगन्दर उदररोग बवासीर बद प्लीहा गुल्म अर्बुद गलगण्ड ग्रंथि विसूचिका अलसक(अजीर्णविशेष)मूत्राघात क्रिमिकोष्ठ जहरवात पाण्डुरोग शिर तथा पशुलियों का शूल उदावर्त्त नेत्र तथा मुख में दाह हृद्रोग व्यंग(झाई) नीलिका(क्षुद्ररोगविशेष) नेत्र तथा नासिकारोग मुखरोग कर्णरोग हलीमक (पाण्डुरोगविशेष) खांसी श्वास कामला(कांवर)मिरगी उन्माद वातरक्त योनिदोष वीर्य्यदोष तिमिर (धुँधला दिखाई देना) अरुचि अविपाक छर्दि शोथ उदर तथा विस्फोटक आदि रोगों में और विशेष करके रोगाध्यायमें कहेहुये पित्तज रोगोंमें विरेचन मुख्य औषध है जैसे अग्निके शान्त होने से अग्निगृह शान्त होजाता है उसी प्रकार विरेचनके द्वारा पित्तके निकलजाने से यह सब रोग शान्त होजाते हैं॥ १२॥

अनास्थाप्यास्तुअजीर्ण्यतिस्निग्धपीतस्नेहोत्क्लिष्टदोषाल्पाग्नियानक्लान्तातिदुर्बलक्षुत्तृष्णाश्रमार्त्तातिकृशभुक्तभक्तपीतोदकवमितविरिक्तक्षतकृतनस्तःकर्म्मक्रुद्धभीतमत्तमूर्च्छितप्रसक्तच्छर्दिनिष्ठीविकाश्वासकासहिक्काबद्धच्छिद्रोदकोदराध्मातालसकविषूचिकामप्रजातिसारमधुमेहकुष्ठार्त्ताः॥ १३॥

अजीर्ण वाले बहुत स्निग्ध स्नेह पानकिये हुये उभड़ेहुये दोषवाले मन्दाग्नि सवारीपा चढ़ने से थकेहुये बहुत दुर्बल क्षुधा तृषा तथा श्रमसे पीड़ित बहुत कृश भोजन किये हुये जल पिये हुये वमन कियेहुये विरेचन किये हुये क्षत नस्यकर्म किये हुये क्रुद्ध डरेहुये मतवाले मूर्च्छित बहुत छर्दि वाले और बहुत थूकना श्वास खांसी हिचकी बद्धोदर (उदररोगविशेष) छिद्रोदर (उदररोगविशेष) उदकोदर (जलन्धर) अफरा अलसक (अजीर्णविशेष) विसूचिका गर्भ गिरना अतीसार मधुप्रमेह तथा कुष्ठ इन रोगों से व्याकुल इन सबको आस्थापनवस्ति नहीं देनी चाहिये॥ १३॥

तत्रअजीर्ण्यतिस्निग्धपीतस्नेहानांदूष्योदरंमूर्च्छाश्वयथुर्वास्यात उत्क्लिष्टदोषमन्दाग्न्योररोचकस्तीव्रः। यानक्लान्तस्यक्षोभव्यापन्नोवस्तिराशुदेहंशोषयेत्। अतिदुर्बलक्षुत्तृष्णाश्रमार्त्तानांपूर्वोक्तोदोषः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्यात्। अतिकृशस्यकार्श्यंपुनर्जनयेत्। पीतोदकभुक्तभक्तयोरुत्क्लिश्योर्द्धमधोवावायुर्वस्तिमुत्क्षिप्यक्षिप्रंवस्तौघोरान्विकाराञ्जनयेत्। वमितविरिक्तयोस्तुरूक्षशरीरंनिरूहःक्षतंक्षारइवदहेत्। कृतनस्तःकर्म्मणो विभ्रंशंभृशसंरुद्धस्रोतसःकुर्य्यात्। क्रुद्धभीतयोर्वस्तिरूर्द्धमुपप्लवेत्। मत्तमूर्च्छितयोर्भृशंविचलितायांसंज्ञायांचित्तोपघातव्यापत्स्यात्। प्रसक्तच्छर्दिनिष्ठीविकाश्वासकासहिक्कार्त्तानामूर्द्धीभूतोवायुरूर्द्धंवस्तिंनयेत्। बद्धच्छिद्रोदकोदराध्मातानांभृशतरमाध्माप्यवस्तिःप्राणान्हिंस्यात्। अलसकविषूचिकामप्रजातामातिसारिणामकृततोषःस्यात्। मधुमेहकुष्ठिनो व्याधेःपुनर्वृद्धिस्तस्मादेतेनास्थाप्याः॥ १४॥

क्योंकि अजीर्ण वाले बहुत स्निग्ध तथा स्नेह पान कियेहुये पुरुषोंको आस्थापनवस्ति देने से दूष्योदर (उदररोगविशेष) मूर्च्छा अथवा शोथ होता है उभड़े हुये दोषवाले तथा मंदाग्निपुरुष को आस्थापनवस्ति देने से बहुत अरुचि होती है घोड़े आदि सवारी पर चढ़ने से थके हुये पुरुषको आस्थापनवस्ति देने से वस्ति बिगड़कर उसके शरीरको शुष्क करदेतीहै बहुत दुर्बल भूखे प्यासे तथा श्रमसे पीड़ित पुरुषको आस्थापनवस्ति देने से पूर्वोक्त दोष होता है बहुत कृश पुरुषको आस्थापनवस्ति देनेसे कृशता बढ़ती है जल पिये हुये तथा भोजन कियेहुये पुरुषको आस्थापनवस्ति देनेसे वायु उभड़कर ऊपर की ओर अथवा मध्यमें वस्तिको लेजाकर घोर रोगोंको उत्पन्न करताहै वमन कियेहुये तथा विरेचन कियेहुये पुरुषको आस्थापनवस्ति देने से जैसे घावको क्षार जलादेताहै उसी प्रकार उस पुरुषके रूक्षशरीरको वस्ति भस्मकरदेतीहै नस्यकर्म कियेहुये को आस्थापनवस्ति देने से उस पुरुषके विभ्रंश होकर सम्पूर्ण स्रोत रुकजाते हैं क्रुद्ध तथा डरेहुये पुरुषको आस्थापनवस्ति देने से वस्ति ऊपरको चली जाती है मतवाले तथा मूर्च्छित पुरुषको आस्थापनवस्तिदेने से संज्ञाके दूर होजाने पर चित्तके बिगड़जाने से बड़ी हानि होती है बहुत छर्दिवाले बहुत थूकनेवाले श्वास खांसी तथा हिचकी से पीड़ित पुरुषको आस्थापनवस्ति देनेसे वायु वस्तिको लेकर ऊपर को चला जाता है बद्धोदर छिद्रोदर जलोदर तथा अफरा इन रोगों से युक्त पुरुषको आस्थापनवस्ति देनेसे बहुत अफरा उत्पन्न होता है और प्राण नष्ट होजाते हैं अलसक विसूचिका गर्भ गिरना तथा अतीसार इन रोगों में आस्थापनवस्ति देनेसे आमदोष होते हैं मधुप्रमेह तथा कुष्ठ वालों को आस्थापनवस्ति देने से यह रोग बहुत बढ़जाते हैं इससे इन सबको आस्थापनवस्ति नहीं देनी चाहिये॥ १४॥

शेषास्त्वास्थाप्याः। सर्वाङ्गैकाङ्गकुक्षिरोगवातवर्चोमूत्रशुक्रसङ्गबलव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एमांसरेतःक्षयदोषाध्मानाङ्गसुप्ति क्रिमिकोष्ठोदावर्त्तातिसारपर्वाभितापप्लीहगुल्महृद्रोगभगन्दरोन्माद ज्वरब्रध्नशिरःकर्णशूलहृदयपार्श्व पृष्ठकटीग्रहवेपनाक्षेपकगौरवाति लाघवरजःक्षयार्त्ताविषमाग्निस्फिग्जानुजङ्घोरुगुल्फपार्ष्णिप्रपदयोनिबाह्वंगुलिस्तनाङ्गदन्तनखपर्वास्थिशूलशोषस्तम्भान्त्रकूजनपरिकर्तिकादयःवातव्याधयोविशेषेण रोगाध्यायोक्ताश्चएतेषुआस्थापनं प्रधानतमामित्युक्तंवनस्पतिमूलच्छेदवत् ॥ १५ ॥

इनके सिवाय अन्य पुरुषों को आस्थापन-वस्ति देनी चाहिये सर्वाङ्गवात एकाङ्गवात कुक्षिरोग वात मल मूत्र तथा वीर्य्यका रुकना बल वर्ण मांस तथा वीर्य्यका क्षीण होना अफरा अङ्गोंका सुन्न होजाना कोष्ठमें क्रिमि उत्पन्न होजाना उदावर्त्त अतीसार पोरुओं में जलन होना प्लीहा गुल्म हृद्रोग भगन्दर उन्माद ज्वर बद शिरका शूल कानोंका शूल हृदय पशुली पीठ तथा कमर का जकड़ना कांपना आक्षेपक (वातरोगविशेष) शरीर का भारी होना शरीरका बहुत हलका होना रजका क्षीण होना रजोधर्म न होना विषमाग्नि कूले घुटनी पिंडुली जांघ टखने एँड़ी प्रपद (पैरोंका अग्रभाग) योनि बाहु अँगुली स्तनोंकी घुंडी दांत नख तथा पोरुओंकी हड्डी इन अङ्गोंमें पीड़ा होना शोष स्तम्भ पेटमें गड़गड़ाहट होना गुदामें कैंची से काटनेकीसी पीड़ा होना और थोड़ी २ पीड़ा होकर शब्दपूर्वक दुर्गंधित मल निकलना इत्यादिक रोगों में और विशेष करके रोगाध्याय में कहेहुये वातज रोगोंमें आस्थापनवस्ति प्रधान औषध है जैसे जड़के काटने से वृक्ष फिर नहीं उत्पन्न होताहै इसी प्रकार आस्थापनवस्तिकेद्वारा दोषों के निर्मूल होजानेसे यह रोग फिर नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ १५ ॥

येएवानास्थाप्याःतेएवअननुवास्याःस्युः। विशेषतस्त्वभुक्तभक्तनवज्वरपाण्डुरोगकामलाप्रमेहार्शःप्रतिश्यायारोचकमन्दाग्निदुर्बलप्लीहकफोदरोरुस्तम्भवर्चोभेदविषगरपीतकफाभिष्यन्दगुरुकोष्ठश्लीपदगलगण्डापचीक्रिमिकोष्ठिनः ॥ १६ ॥

जिन पुरुषोंको आस्थापनवस्ति नहीं देनी चाहिये उनको अनुवासनवस्ति भी नहीं देनी चाहिये और विशेष करके भोजन नहीं किये हुये नवीन ज्वर पाण्डुरोग कामला प्रमेह ववासीर प्रतिश्याय (जुकाम) अरुचि मन्दाग्नि दुर्बलता प्लीहा कफोदर उरुस्तम्भ मलभेद विषदोष गरदोष कफजअभिष्यन्द कोष्ठ का भारी होना श्लीपद (फीलपांव) गलगण्ड अपची तथा कोष्ठमें क्रिमि उत्पन्न होना इन रोगोंसे पीड़ित पुरुष को अनुवासनवस्ति नहीं देनी चाहिये ॥ १६ ॥

तत्राभुक्तभक्तस्यानावृतमार्गत्वादूर्द्ध्वमतिवर्त्ततेस्नेहः। नवज्वरपाण्डुरोगकामलाप्रमेहिणांदोषानुत्क्ले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्योदरंजनयेदर्शसस्यअर्शांस्यभिष्यन्द्याध्मानंकुर्य्यात्। अरोचकार्त्तस्यअन्नगृद्धिंपुनःहन्यात्। मन्दाग्निदुर्बलयोर्मन्दतरमग्निंकुर्य्यात्। प्रतिश्यायप्लीहादिमतांभृशञ्चोत्क्लिष्टदोषाणांभूयएवदोषंवर्द्धयेत्तस्मादेतेनानुवास्याः॥ १७॥

क्योंकि भोजन नहीं कियेहुये पुरुष को अनुवासनवस्ति देने से स्रोतों के न रुकेहुये होनेके कारण स्नेह ऊपर को चढ़जाता है नवीन ज्वर पाण्डुरोग कामला तथा प्रमेहवालों को दीगई अनुवासनवस्ति दोषों को उभाड़कर उदररोग को उत्पन्न करती है बवासीर वाले को दीगई अनुवासनवस्ति बवासीर को बढ़ाकर अफरे को उत्पन्न करती है अरुचिवाले को दीगई स्नेहवस्ति आंतके बढ़ने को नष्ट करदेती है मन्दाग्नि तथा दुर्बल पुरुष को दीगई अनुवासनवस्ति मन्दाग्नि को करती है प्रतिश्याय (जुकाम) तथा प्लीहा आदिक रोगवाले और उभड़ेहुये दोषवाले पुरुषों को दीगई अनुवासनवस्ति दोषों को बढ़ाती है इससे इनको अनुवासनवस्ति नहीं देनी चाहिये॥ १७॥

यएवास्थाप्यास्तएवानुवास्याः। विशेषतस्तुरूक्षतीक्ष्णाग्नयःकेवलवातरोगार्त्ताश्च। एतेषुह्यनुवासनंप्रधानतममित्युक्तंवनस्पतिमूलच्छेदनवन्मूलेद्रुमसेकवच्च॥ १८॥

जिनको आस्थापनवस्ति देनी उचित है उनको अनुवासनवस्ति भी देनी उचित है और विशेष करके रूक्षपुरुष तीक्ष्ण अग्निवाले पुरुष और केवल वातवाले पुरुष इन सबके लिये अनुवासनवस्ति मुख्य औषध है जैसे जड़के काटने से वृक्ष फिर नहीं उत्पन्न होताहै और जैसे जड़ को सींचने से वृक्ष पुष्ट होजाता है इसी प्रकार अनुवासनवस्तिके द्वारा दोषके नष्ट होने से यह रोग फिर नहीं उत्पन्न होते हैं और मनुष्य हृष्ट पुष्ट होजाता है॥ १८॥

अशिरोविरेचनार्हाअजीर्णिभुक्तभक्तपीतस्नेहमद्यतोयपातुकामाःस्नातशिराःस्नातुकामःक्षुत्तृष्णाश्रमार्त्तमत्तमूर्च्छितशस्त्रदण्डाहतव्यवायव्यायामपानक्लान्तनवज्वरशोकाभितप्तविरिक्तानुवासितगर्भिणीनवप्रतिश्यायार्त्ताअनृतुदुर्दिनेचेति॥ १९॥

अजीर्णवाले भोजन कियेहुये स्नेहपान कियेहुये मद्य तथा जल पीने की इच्छा करते हुयेशिरसे स्नानकियेहुये स्नानकरनेकीइच्छा करतेहुये क्षुधा तृषा तथा श्रमसे पीड़ित उन्मत्त मूर्च्छित शस्त्र तथा दण्डकेद्वारा चोटखाये हुये मैथुन तथा व्यायाम से म्लान नवज्वरवाले शोक से व्याकुल विरेचन कियेहुये अनुवास कियेहुये गर्भिणी और नवीन प्रतिश्याय (जुकाम) वाले पुरुषों को शिरोविरेचन नहीं कराना चाहिये और वर्षाऋतु के सिवाय अन्य ऋतुओं के दुर्दिन (मेघों से छायेहुये दिन) में शिरोविरेचन नहीं कराना चाहिये॥ १९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्राजीर्णिभुक्तभक्तयोर्दोषऊर्द्धवहा निस्रोतांस्यावृत्यकासश्वासछर्दिप्रतिश्यायाञ्जनयेत् । पीतस्नेहमद्यतोयपातुकामानांकृतेचपिबतांमुखनासास्रावाक्ष्युपदेहतिमिरशिरोरोगाञ्जनयेत्। स्नातशिरसःकृतेचस्नानेशिरसःप्रतिश्यायंक्षुधार्त्तस्यवातप्रकोपंतृष्णार्त्तस्यपुनस्तृष्णाभिवृद्धिंमुखशोषञ्च। श्रमार्त्तमत्तमूर्च्छितानामास्थापनोक्तोदोषःस्यात्। शस्त्रदण्डहतयोस्तीव्रतरांरुजंजनयेत् । व्यवायव्यायामक्लान्तानांशिरःस्कन्धनेत्रोरःपीडनम् । नवज्वरशोकाभितप्तयोरूष्मानेत्रनाडीभिरनुसृत्यतिमिरंज्वरवृद्धिञ्चकुर्य्यात्। विरिक्तस्यवायुरिन्द्रियोपघातंकुर्य्यात् । अनुवासितस्यकफःशिरोगुरुत्वञ्चकण्डूक्रिमिदोषाञ्जनयेत् । अन्तर्वत्नागर्भंस्तम्भयेत्सकाणःकुणिःपक्षहतःपीठसर्पीवास्यात् । नवप्रतिश्यायार्त्तस्यस्रोतांसिव्यापादयेत्। अनृतुदुर्दिनेशीतंपूतिनासिकाशिरोरोगश्चस्यात्। तस्मादेतेनशिरोविरेचनार्हाः ॥२०॥

क्योंकि अजीर्णवाले तथा भोजन कियेहुये पुरुषों को शिरोविरेचन करानेसे वात आदि दोष ऊपरके स्रोतों को रोंककर खांसी श्वास छर्दि तथा प्रतिश्याय (जुकाम) को उत्पन्न करते हैं स्नेहपान कियेहुये और मद्य तथा जल पीनेकी इच्छा करतेहुये पुरुष को शिरोविरेचन कराने से और शिरोविरेचन करके मद्य तथा जल पीने से मुख तथा नासिका से जल वहना नेत्रों में बहुत कीचड़ आना तिमिर (धुँधला दिखाई देना) और शिर के रोग यह सब उत्पन्न होते हैं शिरसे स्नान करके शिरोविरेचन कराने से और शिरोविरेचन करके शिरसे स्नान करने से प्रतिश्याय (जुकाम) होताहै भूखेको शिरोविरेचन कराने से वायु कुपित होता है प्यासे को शिरोविरेचन कराने से तृषा बढ़ती है और मुख सूखताहै श्रमसे पीड़ित उन्मत्त तथा मूर्च्छित पुरुषों को शिरोविरेचन कराने से वह दोष होते हैं जोकि इनको आस्थापनवस्ति देने से होते हैं शस्त्र तथा दण्डसे चोट खायेहुयेको शिरोविरेचन करानेसे बहुत पीड़ा होती है मैथुन तथा व्यायाम से म्लानहुये पुरुषको शिरोविरेचन कराने से शिर कंधे नेत्र तथा वक्षःस्थल में पीड़ा होती है नवीन ज्वर तथा शोक से संतप्त पुरुषको शिरोविरेचन कराने से ऊष्मा नाड़ियों के द्वारा नेत्रमें आकर तिमिर रोगको उत्पन्न करती है और ज्वरको बढ़ाती है विरेचन कियेहुये को शिरोविरेचन कराने से वायु इन्द्रियों को नष्ट करता है अनुवासन कियेहुये को शिरोविरेचन करानेसे कफ शिरके भारीपन खुजली तथा क्रिमियों को उत्पन्न करता है गर्भिणी स्त्री को शिरोविरेचन करानेसे गर्भस्तब्ध होजाता है और गर्भमें स्थित पुरुष काना बुरेनखवाला शरीर के एक पक्ष में रोगयुक्त अथवा पँगुला होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है नवीन प्रतिश्याय (जुकाम) वालेको शिरोविरेचन करांने से स्रोत विगड़ जाते हैं और वर्षा ऋतुके विना दुर्दिनमें शिरोविरेचन कराने से शीतदोष तथा शिरोरोग उत्पन्न होते हैं और नासिका से दुर्गंध आने लगती है इस से इनको ऐसे समयमें शिरोविरेचन नहीं कराना चाहिये ॥ २० ॥

शेषाअर्हाः । शिरोदन्तमन्याहनुग्रहपीनसंगलशुण्डिकाशालूकशुक्रतिमिरवर्त्मरोगव्यङ्गोपजिह्विकार्द्धावभेदकग्रीवास्कन्धास्यनासिकाकर्णाक्षिमूर्द्धकपालशिरोरोगार्दितापतन्त्रकापतानकगलगण्डदन्तशूलहर्षचालाक्षिरोगार्बुदस्वरपरिपकाश्चैतेषुशिरोविरेचनंप्रधानतममित्युक्तम् । तद्ध्युत्तमाङ्गमनुप्रविश्यमज्जपेशीकासक्तंदोषंविकारमपकर्षति ॥ २१ ॥

और इनके सिवाय अन्य पुरुषों को शिरोविरेचन कराना चाहिये शिरोरोग दन्तरोग गलेके पीछे की नसका जकड़ना जावड़ोंका जकड़ना पीनस गलशुण्डिका शालूक (रोगविशेष) शुक्र (नेत्ररोगविशेष) धुँधलादिखाई देना विन्नियों के रोग झाँई जिह्वाकेरोग आधाशीशी ग्रीवा कन्धे मुख नासिका कर्ण नेत्र मस्तक तथा मत्थेके रोग अपतन्त्रक (रोगविशेष) अपतानक गलगण्ड दाँतोंका शूल दाँतोंका खट्टा होना दाँतोंका हिलना नेत्ररोग अर्बुद स्वरभंग वाणीका रुकजाना और वचनका गद्गदहोना आदिक हँसुवेके ऊपर होनेवाले पकेहुये वातजआदि रोगों में शिरोविरेचन मुख्य औषध है क्योंकि शिरोविरेचन के द्वारा औषध शिरमें जाकर मूंजमेंसे सींक के समान सम्पूर्ण चिपटेहुये दोषों को निकालती है ॥ २१ ॥

प्रावृट्शरद्वसन्तेष्वितरेषुआत्ययिकेषुरोगेषुनावनंकुर्य्याद्ग्रीष्मेपूर्वाह्णेशीतेमध्याह्नेवर्षास्वदुर्दिनेचेति ॥ २२ ॥

वर्षा शरद तथा वसन्तऋतुमें शिरोविरेचन कराना चाहिये और जो कोई बहुत कठिन रोगहोय तो अन्य ऋतुओंमें भी शिरोविरेचन कराना चाहिये ग्रीष्मऋतु में पूर्वाह्ण के समय और शीतऋतुमें मध्याह्न के समय और वर्षा ऋतुमें मेघोंसे आकाश के आच्छादित (ढके हुये) होने के समय शिरोविरेचन कराना चाहिये ॥ २२ ॥

तत्रश्लोकाः।

इतिपञ्चविधंकर्मविस्तरेणनिदर्शितम् । येभ्योयत्त्वहितंयस्मात्कर्मयेभ्यश्चयद्धितम् ॥ २३ ॥

तिसमें यह श्लोक हैं। इस प्रकार वमन आदि पंचकर्म विस्तारपूर्वक कहेगये और जिस कारणसे जिनको जौनसा कर्म अहित है तथा जिस कारण से जिनको जौनसा कर्म हित है यह भी कहागया ॥ २३ ॥

नचैकान्तेननिर्दिष्टेतत्राभिविनिशेद्बुधः । स्वयमप्यत्रवैद्येनतर्क्यंबुद्धिमताभवेत् २४ ॥

विद्वान् पुरुष जो कुछ लिखागया है केवल उसीपर निर्भर न रहै अर्थात् सब कहीं जैसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिखा है वैसाही न करै किन्तु बुद्धिमान् वैद्य अपनी बुद्धिके द्वारा भी विचार करलेवै २४॥

उत्पद्येतहिसावस्थादेशकालबलंप्रति। यस्यांकार्य्यमकार्य्यंस्यात्कर्मकार्य्यञ्चवर्जयेत्॥ २५॥

क्योंकि देशकाल तथा बलके अनुसार ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है जिसमें योग्यकर्म अयोग्य होजाता है और अयोग्यकर्म योग्य होजाता है॥ २५॥

छर्दिहृद्रोगगुल्मार्त्तेवमनंस्वेचिकित्सिते। अवस्थांप्राप्यनिर्दिष्टंकुष्ठिनांवस्तिकर्मच॥ २६॥

छर्दि हृद्रोग तथा गुल्मरोग में वमन और कुष्ठरोग में वस्तिकर्म यद्यपि वर्जित है तथापि अवस्थाके अनुसार करना पड़ताहै॥२६॥

तस्मात्सत्यपिनिर्दिष्टेकुर्य्यादूह्यस्वयंधिया। विनातर्केणयासिद्धिर्यदृच्छासिद्धिरेवसा॥ २७॥

इतिसिद्धिस्थानेपञ्चकर्मीयसिद्धिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

इससे यद्यपि चिकित्साके नियम कहेहुये हैं तथापि अपनी बुद्धिसे अवश्य विचार करलेना चाहिये क्योंकि अपनी बुद्धिके द्वारा विना विचार किये जो कार्य्य चिकित्सा के द्वारा सिद्ध होजाता है उसे यदृच्छा (इत्तिफ़ाक़) से सिद्ध हुआ जानना चाहिये॥२७॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धिस्थानकापंचकर्मीयसिद्धिनामदूसराअध्याय समाप्तहुआ॥ २॥

तीसराअध्याय॥

वस्तिसूत्रीयसिद्धिः।

कृतक्षणंशैलवरस्यरम्येस्थितंधनेशायतनस्यपार्श्वे। महर्षिसंघैर्वृतमग्निवेशःपुनर्वसुंप्राञ्जलिरन्वपृच्छत्॥ १॥

इसके उपरान्त वस्तिसूत्रीय सिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा॥

सम्पूर्ण पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ हिमालयमें कुबेरके मंदिरके निकट स्थित और महर्षियोंके समूहों से घिरेहुये भगवान् आत्रेयजीसे अग्निवेश ने हाथ जोड़कर पूंछा॥ १॥

वस्तिर्नरेभ्यःकिमपेक्ष्यदत्तःस्यात्सिद्धिमान्किम्मयमस्यनेत्रम्। कीदृक्प्रमाणाकृतिकिंगुणश्चकेषाञ्चवीर्य्यैर्निगुणश्चवस्तिः॥ २॥

कि हे भगवन् किसबात का विचार करके मनुष्यों को दीगई वस्तिसफल होती है वस्ति की नली काहेकी होती है वस्ति की नली का प्रमाण आकृति तथा गुण क्याहै किनको किन औषधियों की वस्ति देनेसे क्या गुण होते हैं॥ २॥

निरूहकल्पःप्रणिधानमात्राःस्नेहस्यवाकाःशमनेविधिःकः। केवस्तयःकेषुमताइतीदंश्रुत्वोत्तरंप्राहवचोमहर्षिः॥ ३॥

निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्तिके रखने का क्या प्रमाण है शमनवस्तिकी क्या विधि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है और किनको कौन वस्ति देना चाहिये अग्निवेश के यह प्रश्न सुनकर भगवान् आत्रेय जीने यथावत् उत्तर दिये ॥ ३ ॥

समीक्ष्यदोषौषधदेशकालसात्म्याग्निसत्त्वादिवयोबलानि । वस्तिः प्रयुक्तोनियतंगुणायस्युःसर्वकर्माणिचसिद्धिमन्ति ॥ ४ ॥

दोष औषध देश समय सात्म्य अग्नि सत्त्व आश्रय अवस्था तथा बल इन सब का विचारकरके दीगई वस्ति गुणकारी होती है और उसके द्वारा सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

सुवर्णरूप्यत्रपुताम्ररीतिकांस्यास्थिशस्त्रद्रुमवेणुदन्तैः । नलैर्विषाणैर्मणिभिश्चतैस्तैःकार्य्याणिनेत्राणित्रिकर्णिकानि ॥ ५ ॥

सोना चांदी सीसा तांबा पीतल कांसा हड्डी लोहा काष्ठ बांस दांत नल सींग तथा मणि इनमें से किसीके द्वारा वस्तिकी नली वनानी चाहिये और उस नली में तीन कर्णिका (कर्णफूल के समान चक्र) बहुत उत्तम बनीहुई होनी चाहिये ॥ ५ ॥

षड्द्वादशाष्टाङ्गुलसम्मितानिषड्विंशतिर्द्वादशवर्षजानाम् । स्युर्मुद्गकर्कन्धुसतीनवाहिच्छिद्राणिवर्त्यापिहितानिचापि ॥ ६ ॥

छः वर्ष बारह वर्ष तथा बीस वर्षकी अवस्थावालों को क्रमसे छः अंगुल आठ अंगुल तथा बारह अंगुल की नली होना चाहिये नलियों की छिद्र क्रम से मूंग मटर तथा बेर के समान होनाचाहिये और उस छिद्र में कोई वस्तु न जासकै इस लिये एक बत्ती उस में रक्खी हुई होनीचाहिये ॥ ६ ॥

यथावयोऽङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यांमूलाग्रयोःस्युःपरिणाहवन्ति । ऋजूनिगोपुच्छसमाकृतीनिश्लक्ष्णानिचस्युर्गुलिकामुखानि ॥ ७ ॥

और अवस्था के अनुसार नलियों की मुटाई मूल में तथा अग्रभागमें छँगुनियां तथा अँगूठेके मूल तथा अग्रभाग के समान होने चाहिये और नलियां सीधी तथा गौकी पूंछ के समान आकारवाली तथा चिकनी होनी चाहिये और नलियों के मुख गोलहोने चाहिये ॥ ७ ॥

स्यात्कर्णिकैकाग्रचतुर्थभागेमूलाश्रितेवस्तिनिबन्धनेद्वे । जरद्गवोमाहिषहारिणोवास्याच्छौकरोवस्तिरजस्यवापि ॥ ८ ॥ दृढस्तनुर्नष्टशिरोविगन्धःकषायरक्तःसुमृदुःसुशुद्धः । नृणांवयोवीक्ष्ययथानुरूपंनेत्रेषुयोज्यस्तुसुबद्धसूत्रः ॥ ९ ॥

नलीके चतुर्थभाग में एक कर्णिका और वस्तिके बांधनेके स्थानमें दो कर्णिका होनी चाहिये बुड्ढे बैल भैंसे हिरन शूकर अथवा बकरे की पुष्ट तथा पतली वस्ति (मूत्राशय अर्थात् चमड़े की थैली जिसमें मूत्र रहताहै) लेकर उसमें से नसैं निकालकर दुर्गंधि दूरकरके अच्छेप्रकार शुद्धकरके त्रिफला आदि के काढ़े में रँगलेवै और रोगी की अवस्था

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को देखकर उसके अनुसार नलीकेमूलमें उस वस्तिको सूत्रसे कसकर बांधदेवै ॥ ८।९ ॥

वस्तेरभावेप्लवजोगलेवास्यादङ्गपादःसुघनःपटोवा । नेत्रस्यचालाभतएवनाडीहितास्थिजावंशभवानलोवा ॥ १० ॥

यदि बुड्ढे बैल आदि की वस्ति न मिलै तौ प्लव (हारिल) जो गला अंगपाद अथवा गाढ़ा कपड़ा लेकर वस्ति बनालेवै नेत्रके न मिलनेपर हड्डी तथा बांसकी बनाई हुई नली हितहै ॥ १० ॥

आस्थापनार्हंपुरुषंविधिज्ञःसमीक्ष्यपुण्येऽहनिशुक्लपक्षे । प्रशस्तनक्षत्रमुहूर्त्तयोगेजीर्णान्नमेकाग्रमुपक्रमेत ॥ ११ ॥

वस्ति की विधि का जाननेवाला वैद्य पुरुष को आस्थापनवस्ति देनेकेयोग्य जानकर शुक्लपक्ष पवित्र दिन श्रेष्ठ नक्षत्र तथा शुभमुहूर्त्त के योग में अन्न के पचजाने पर उस पुरुष के सावधान होजाने पर उस को आस्थापनवस्ति देवै ॥ ११ ॥

बलांगुडूचींत्रिफलांसरास्नांद्विपञ्चमूलेचपलोन्मितानि । अष्टौपलान्यर्द्धतुलाञ्चमांसाच्छागात्पचेदप्सुचतुर्थशेषम् ॥ १२ ॥

वरियारा गिलोय त्रिफला रासना तथा दशमूल यह सब चार२ तोले और बकड़े का मांस २३२ तोले इन सब को पानी में डाल कर पाककरै जब चौथाई जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै ॥ १२ ॥

पूतंयवानीफलबिल्वकुष्ठवचाशताह्वाघनपिप्पलीनाम् । कल्कैर्गुडक्षौद्रघृतैःसतैलैर्युतंसुखोष्णैस्तुपिचुप्रमाणैः ॥ १३ ॥

फिर उस काढ़ेमें अजवाइन मैनफल बेलगिरी कूट वच सौंफ नागरमोथा तथा पीपरि तोले२ भर गुड़ शहद तथा तैलयुक्त कल्क पिचु के प्रमाण मिलाकर कुछ उष्ण करलेवै ॥ १३ ॥

गुडात्पलंद्विप्रसृतान्तुमात्रांस्नेहस्ययुक्त्यामधुसैन्धवादि । स्नेहंसुनिर्मथ्यततोऽनुकल्पंप्रक्षिप्यवस्तौमथितंखजेन ॥ १४ ॥

फिर उस में चार तोले गुड़ १६तोले तैल और शहद तथा सैंधवलवण आदि युक्तिपूर्वक डालकर कलछी से मथै तदनन्तर पहिले कहीहुई वस्ति के मुखको खोलकर उसमें सम्पूर्ण औषध भरदेवै ॥ १४ ॥

वस्तिंततःसव्यकरेनिधायसुबद्धमुच्छ्वास्यचनिर्व्यलीकम् । अङ्गुष्ठमध्येनमुखंपिधायनेत्राग्रसंस्थामपनीयवर्त्तिम् ॥ १५ ॥

और अच्छे प्रकार से बँधीहुई तथा फूली हुई वस्तिके मुख को अँगूठे से दबाकर उसके मुखमें रक्खीहुई बत्ती को निकाल डालै१५॥

तैलाक्तगात्रंकृतमूत्रविट्कंनातिक्षुधार्त्तंशयनेमनुष्यम् । समेऽथवेषत्तशीर्षसेवानात्युच्छ्रितेस्वास्तरणोपपन्ने ॥ १६ ॥

CC0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तदनन्तर शरीर में तैल का मर्दन कियेहुये मल तथा मूत्रका त्याग कियेहुये बहुत क्षुधा से नहीं व्याकुल रोगी को समतल (बराबर) शय्यापर अथवा कुछ नीचे शिरहानेवाली शय्यापर अच्छा बिछौना बिछवाकर १६॥

सव्येनपार्श्वेनसुखंशयानंकृत्वर्जुदेहंस्वभुजोपधानम्। निकुञ्च्यसव्येतरदस्यसक्थिवामंप्रसार्य्यप्रणयेत्त तस्तम् ॥ १७॥

बाई करवट सुखपूर्वक सीधा लिटावै और भुजाओंही की तकिया रखावे फिर दहिनी जांघ सिकुड़वाकर तथा बाईं टांग फैलवाकर वस्तिलगावे॥ १७॥

स्निग्धेगुदेनेत्रचतुर्थभागंस्निग्धंशनैर्ऋदृजुपृष्ठवंशम्। अकम्पनावेपनलाघवादीन्पाण्योर्गुणांश्चापिहिदर्शयंस्तम् ॥ १८॥

स्निग्ध गुदामें नली का स्निग्ध चौथाभाग धीरे २ सीधा रीढ़की ओर डालै फिर न कंपना तथा हल्कापन आदि हाथों के गुणों को प्रकटकरता हुआ॥ १८॥

प्रपीड्यचैकग्रहणेनदत्तंनेत्रंशनैरेव ततोऽपकर्षयेत्। तिर्य्यक्प्रणीतेतु नयातिधारागुदेव्रणःस्याच्चलितेच नेत्रे ॥ १६॥

वैद्य न बहुत धीरे २ तथा न बहुत शीघ्रता से वस्ति को दबावे फिर औषध के चलेजाने पर धीरेसे नली को निकाललेवै जो गुदा में तिरछी नली डालकर वस्ति दीजाती है तो उसकी धार ठीक स्थानतक नहीं पहुंचती है जो हाथों के कांपने से नली हिलती डुलतीहै तो गुदा में घाव होजाताहै॥ १९॥

दत्तःशनैर्नाशयमेतिवस्तिःकण्ठंप्रधावत्यतिपीडितश्च। शीतस्त्वतिस्तम्भकरोविदाहंमूर्च्छाञ्चकुर्य्याद तिमात्रमुष्णः ॥ २०॥

जो वस्ति बहुत धीरे २ दबाई जाती है तो औषध की धार पक्वाशय में नहीं पहुँचती है और जो वस्ति बहुत ज़ोरसे दबाई जाती है तो औषध की धार गलेतक पहुँचती है जो बहुत शीतल वस्ति दीजाती है तो स्तब्धता होती है जो बहुत उष्ण वस्ति दीजाती है तो दाह तथा मूर्च्छा उत्पन्न होती है॥ २०॥

स्निग्धोऽतिजाड्यंपवनञ्चरूक्षस्तन्वल्पमात्रालवणस्त्वयोगम्। करोतिमात्राभ्यधिकोऽतियोगंक्षामन्तुसान्द्रःसुचिरेणचैति ॥ २१॥

जो बहुत स्निग्धवस्ति दीजाती है तो जड़ता होती है जो बहुत रूखी वस्ति दीजाती है तो वायु बढ़ता है बहुत पतली तथा स्वल्प लवणयुक्त वस्ति देनेसे वस्तिकी न्यूनता में जो दोष कहेगयेहैं वह होतेहैं मात्रासे अधिक वस्ति देनेमें वही दोष होते हैं जो कि वस्तिकी अधिकता में कहेगये हैं स्वल्पवस्ति तथा गाढ़ी वस्ति देनेसे वस्ति बहुत देरमें निकलती है॥ २१॥

दाहातिसारौलवणोऽतिकुर्य्यात्तस्मात्प्रयुक्तंसममेवदद्यात्। पूर्वंहियोज्यं मधुसैन्धवाभ्यांस्नेहंविनिर्मथ्यततोऽनुकल्कम् ॥ २२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और बहुत लवणयुक्त वस्ति देनेसे दाह तथा अतीसार होताहै इससे इसप्रकार वस्ति देनी चाहिये जिसमें किसी प्रकार की अधिकता तथा न्यूनता न हो जब वस्ति देनी होय तब पहिले स्नेह में शहद तथा सैंधवलवण मिलाकर मथलेवै फिर उसमें औषधियों का कल्क मिलाकर मथै ॥ २२ ॥

विमथ्यसंयोज्यपुनर्द्रवैस्तद्वस्तौनिदध्यान्मथितंखजेन। आमाश्रयोऽग्निर्ग्रहणीगुदञ्चतत्पार्श्वसंस्थस्यसुखोपलब्धिः ॥ २३ ॥

तदनन्तर उसमें काढ़ाआदि द्रव पदार्थ मिलाकर कल्छीसे मथके वस्ति में भरदेवै आमाशय अग्नि ग्रहणी तथा गुदा इन में बाईं करवट सोने से सुख होता है ॥ २३ ॥

लीयन्तएवंवलयश्चतस्मात्सव्यंशयानोऽर्हतिवस्तिदानम्। विड्वातवेगोयदिचार्द्धदत्तेनिष्कृष्यमुक्तेप्रणयेदशेषम् ॥ २४ ॥

और गुदाकी वलियाँ (चक्र) ठीक रहती हैं इससे बाईं करवट लिटाकर वस्ति देनी चाहिये जो वस्ति देनेके समय वस्तिकी औषध गुदा में जाचुकने पर विष्ठा तथा वायुका वेगहो तो वस्तिकी नली निकाललेवै और फिर विष्ठा तथा मूत्रका त्याग होचुकने पर बाकी वस्ति देवै ॥ २४ ॥

उत्तानदेहश्चकृतोपधानःस्याद्वीर्य्यमाप्नोतितथास्यदेहम्। एकोऽपकर्षत्यनिलंस्वमार्गात्पित्तंद्वितीयस्तुकफंतृतीयः ॥ २५ ॥

वस्ति देने के उपरान्त रोगी को तकिया रखकर उतानालिटावै इससे औषधका वीर्य्य शरीर में फैल जाताहै पहिली वस्ति वायुको दूसरी पित्तको और तीसरी वस्ति कफको अपने स्थानसे निकालती है ॥ २५ ॥

प्रत्यागतेकोष्णजलावसिक्तःशाल्यन्नमद्यात्तनुनारसेन। जीर्णेतुसायंलघुचाल्पमात्रंभुक्तेऽनुवास्यःपरिबृंहणार्थम् ॥ २६ ॥

वस्तिके निकल जानेपर रोगी के शरीरपर कुछ उष्ण जल छिड़ककर मांसके पतलेरस के साथ शालिधानों के चावलों का भात खिलावै उसके पचजानेपर सायँकाल के समय थोड़ासा हल्का अन्न खिलाके धातुओंके बढ़ाने के लिये अनुवासनवस्ति देवै ॥ २६ ॥

निरूहपादांशसमेनतैलेनाम्ललघुनिलघ्वौषधसाधितेन। दत्त्वास्फिचौपाणितलेनहन्यात्स्नेहस्यशीघ्रागमरक्षणार्थम् ॥ २७ ॥

निरूहवस्ति की मात्राका चौथाई तैल खट्टी तथा हल्की औषधियों के साथ पाक करके उसके द्वारा वस्ति देकर तैल जल्दीसे न निकल आवै इस लिये रोगीके कूलोंमें थप्पड़ मारै ॥ २७ ॥

ईषत्पदांगुष्ठयुगञ्चकर्षेदुत्तानदेहस्यतनौप्रमृज्यात्। स्नेहेनपार्ष्ण्यंगुलिपिण्डिकाश्चयेचास्यगात्रावयवारुगार्त्ताः ॥ २८ ॥ तांश्चावमृज्यात्ससुखंततश्चनिद्रामुपासीतकृतोपधा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नः । भागाःकषायस्यतुपञ्चपित्ते स्नेहस्यषष्ठःप्रकृतौस्थितेच । वाते विवृद्धेतुचतुर्थभागोमात्रानिरूहेषुक फेऽष्टभागः ॥ २६ ॥

पैरोंके दोनों अँगूठे कुछ खींचै रोगीको उताना सुलाकर हथेली तथा पैरोंके तलुवेमलै और एँड़ी अँगुली पिंडुली तथा अन्य जिन अंगोंमें पीड़ा होती हो उन में तैल लगाकर मलै तदनन्तर तकिया लगाकर सुखपूर्वक सोने देवै निरूहवस्तिमें वायुके स्वाभाविक होनेपर पित्तके बढ़ने में काढ़े के पाँच भाग तथा स्नेहका छठा भाग वायु के बढ़नेमें काढ़े के तीन भाग तथा स्नेहका एक भाग और कफके बढ़ने में काढ़ेके सातभाग तथा स्नेहका एक भाग होना चाहिये ॥ २८ । २९ ॥

निरूहमात्राप्रसृतार्द्धमाद्येवर्षेततो ऽर्द्धप्रसृताभिवृद्धिः ॥ ३० ॥ आद्वादशात्स्यात्प्रसृताभिवृद्धिरष्टा दशाद्वादशतःपरंस्युः । आसप्तते रक्तमिदंप्रमाणमतःपरंषोडशवद्धिधे यम् ॥ ३१ ॥

निरूहवस्ति की मात्रा एकवर्ष के बालक के लिये चार तोले की होती है फिर बारह वर्षके बालक तक प्रतिवर्ष चार २ तोले बढ़ानी चाहिये और बारह वर्ष से लेकर अठारह वर्ष तक आठ २ तोले बढ़ानी चाहिये फिर सत्तर वर्षतक वही मात्रा रखनी चाहिये और सत्तरवर्षसे अधिक अवस्थामें सोलहवर्षवाले कीसी मात्रा देनी चाहिये ॥ ३० । ३१ ॥

निरूहमात्राप्रसृतप्रमाणबालेचवृ द्धेचमृद्वविशेषः । नात्युच्छ्रितंना प्यतिनीचपादंसपादपीठंशयनंप्र शस्तम् ॥ ३२ ॥

निरूहवस्तिकी मात्रा का प्रमाण एक प्रसृतहै और बालक तथा वृद्धोंके लिये विशेष करके मृदु देना चाहिये जिसको वस्ति दीगई हो उसकी शय्या न बहुत ऊँचे पायोंकी हो न बहुत नीचे पायोंकी हो पैर रखनेकी चौकीसे युक्त हो ॥ ३२ ॥

प्रधानमृद्वास्तरणोपपन्नंप्राक्शीर्ष कंशुक्लपटोत्तरीयम् । भोज्यंपुन र्व्याधिमवेक्ष्यसम्यक्प्रकल्पयेद्यूष पयोरसाद्यैः ॥ ३३ ॥

उसका शिरहाना पूर्वकी ओरहो उसपर कोमल बिछौने बिछेहों और सफेद चद्दर बिछीहो जिसको वस्ति दीगई हो उसको रोग देखकर यूष दूध तथा मांसरस आदिके साथ भोजन करावै ॥ ३३ ॥

सर्वेषुविद्याद्विधिमेतदाद्यंवक्ष्यामिव स्तीनतउत्तरीयान् । सम्यक्प्रणी ताःखलुवस्तयोयेवातामयघ्नाश्चबल प्रदाश्च ॥ ३४ ॥

सब प्रकारकी वस्तियोंमें यही विधि जाननी चाहिये इसके उपरान्त जिन औषधियों की वस्ति देनी चाहिये तथा जो वातरोगनाशक और बलके बढ़ानेवाली हैं उनका वर्णन कियाजाता है ॥ ३४ ॥

द्विपञ्चमूलस्यरसोम्लयुक्तःसच्छाग मांसस्यसपूर्वशेषः । त्रिस्नेहयुक्तः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रवरोनिरूहःसर्वानिलव्याधिहरःप्र दिष्टः ॥ ३५ ॥

दशमूल का काढ़ा कांजी बकरे के मांस का रस पहिले कहीहुई औषधियों का कल्क घी तैल तथा चर्बी इन सबको एकमें मिलाकर निरूहवस्ति देनेसे सम्पूर्ण वातरोगों का नाश होताहै ॥ ३५ ॥

स्थिरादिवर्गस्यबलापटोलत्रायन्ति कैरण्डयवैर्युतस्य । प्रस्थोरसश्छाग रसार्द्धयुक्तःसाध्यःपरःप्रस्थरसश्रया वत् ॥ ३६ ॥

शालिपर्णी आदिगण बरियारा परवल त्रायमाण अरण्डकी जड़ तथा यव इनका काढ़ा ६४ तोले बकरे के मांस का रस ३२ तोले इन दोनोंको एकमें मिलाकर पाक करै जब ६४ तोले बाकी रहै तब उतारकर छान लेवै ॥ ३६ ॥

प्रियंगुकृष्णाघनकल्कयुक्तःसतैलस र्पिर्मधुसैन्धवश्च । स्याद्दीपनोमांस बलप्रदश्चचक्षुर्बलञ्चापिददातिस द्यः ॥ ३७ ॥

फिर उसमें प्रियंगु पीपरि तथा नागरमोथा का कल्क तैल घी शहद और सैंधवलवण मिलाकर निरूहवस्ति देवै इससे अग्नि दीप्त होती है मांस तथा बलकी बृद्धि होती है और नेत्रोंका बल शीघ्रही बढ़ताहै ३७॥

एरण्डमूलात्त्रिपलंपलानिह्रस्वानि मूलानित्रयानिपञ्च । रास्नाश्वग न्धातिबलागुडूचीपुनर्नवारग्वधदेव दारु ॥ ३८ ॥

अरण्डकी जड़ बारह तोले छोटा पंचमूल रास्ना असगन्ध ककैया गिलोय गदहपूर्णा अमिलतास तथा देवदारु चार २ तोले ३८॥

भागापलांशामदनाष्टयुक्ताजलाढ़ि कंसेक्कथितेऽष्टशेषे । पेष्याशताह्वा ह्वुषाप्रियंगुसपिप्पलीकंमधुकंवचा च ॥ ३६ ॥

और मैनफल ३२ तोले इन सबको ५१२ तोले जलमें डालकर पाककरै जब अष्टमांश जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवै फिर इस काढ़ेमें सौंफ प्रियंगु पीपरि मुलेठी बच३९॥

रसाञ्जनंवत्सकबीजमुस्तंभागाक्षमा त्रंलवणांशयुक्तम् । समाक्षिकस्तै लयुतः समूत्रोवस्तिर्नृणांदीपनले खनीयः ॥ ४० ॥

रसौत इन्द्रयव तथा नागरमोथा तोले२ भर इन औषधियोंका कल्क सैंधवलवण शहद तैल तथा गोमूत्र डालकर निरूहवस्ति देवै यह वस्ति अग्निको दीप्त करनेवाली तथा लेखन (जो शरीर के धातु और मलों को सुखाकर दुर्बलकरै उसको लेखन कहते हैं) होती है ॥ ४० ॥

जङ्घोरुपादत्रिकपृष्ठशूलंकफावृतं मारुतनिग्रहश्च । विण्मूत्रवातग्रह णंसशूलमाध्मानतामश्मरिशर्कर श्च ॥ ४१ ॥ आनाहमर्शोग्रहणी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रदोषानेरण्डवस्तिःशमयेत्प्रयुक्तः । वैद्येनसम्यक्कुशलेनचैषपुनर्वसूक्तः कृपयानराणाम् ॥ ४२ ॥

सब प्रकारसे चतुर वैद्यकेद्वारा अरण्ड के तैल की वस्ति देनेसे जांघ पिंडुली पैर रीढ़के नीचेकी हड्डी तथा पीठका शूल कफकेद्वारा कोष्ठका ढकना वायुका रुकना शूल सहित मल मूत्र तथा वायुका रुकना अफरा पथरी शर्करा (टूटीहुई पथरीका मूत्रकेद्वारा शक्कर के समान होकर निकलना) आनाह (कब्ज) बवासीर तथा ग्रहणीदोष इन सब रोगोंका नाश होताहै इसको आत्रेयजीने मनुष्योंपर कृपा करके कहा है ॥ ४१ । ४२ ॥

चतुष्पलेतैलघृतस्यभृष्टश्छागाच्छ तार्द्धाद्दधिदाडिमाम्लः । रसः सपेष्योबलवर्णमांसरेतोऽग्निदश्चा न्ध्यशिरोरुजाघ्नः ॥ ४३ ॥

८ तोले तैल तथा घी में भुनेहुये बकरे के मांसके दही तथा खट्टे अनारसे युक्त २०० तोले रसमें पूर्वोक्त औषधियों का कल्क डालकर वस्ति देवै इससे बल वर्ण मांस वीर्य्य तथा अग्निकी वृद्धि होती है और तिमिर (धुँधला दिखाई देना) तथा शिरकी पीड़ा का नाश होताहै ॥ ४३ ॥

जलद्विकंसेऽष्टपलंपलाशात्पक्कार सोर्द्धोदकमात्रशेषः । कल्कैर्व चामागधिकापलाभ्यांयुक्तःशता ह्वाद्विपलेनचापि ॥ ४४ ॥

१०२४ तोले जलमें ३२ तोले ढाख की छाल डालकर पाककरै जब १२८ तोले जल बाकीरहै तब उतारकर छानलेवै फिर उसमें बच तथा पीपरि का चार चार तोले कल्क सौंफ का ८ तोले कल्क ॥ ४४ ॥

ससैन्धवःक्षौद्रयुतःसतैलोदेयोनि रूहोबलवर्णकारी । आनाहपा र्श्वामययोनिदोषान्गुल्मानुदाव र्त्तरुजञ्चहन्यात् ॥ ४५ ॥

सैंधवलवण शहद और तैल मिलाकर निरूहवस्ति देवै इससे बल तथा वर्णकी वृद्धि होती है और अफरा पशुलियों की पीड़ा योनिदोष गुल्म तथा उदावर्त्तरोग का नाश होता है ॥ ४५ ॥

यष्टयाह्वमूलाष्टपलेनसिद्धंपयःशता ह्वाफलपिप्पलीभिः । युक्तंससर्पि र्मधुवातरक्तवैस्वर्य्यवीसर्पहितोनिरू हः ॥ ४६ ॥

३२ तोले मुलेठी के कल्कके साथ पाक कियेगये दूधमें सौंफ मैनफल तथा पीपरि का कल्क और घी तथा शहद डालकर निरूहवस्ति देवै इससे वातरक्त स्वरभङ्ग तथा विसर्प (जहरवात) का नाश होताहै ॥ ४६ ॥

यष्टयाह्वलोध्राभयचन्दनैश्चभृतंप योऽग्र्यंकमलोत्पलैश्च । सशर्करं क्षौद्रयुतंसुशीतंपित्तामयान्हन्ति सजीवनीयाम् ॥ ४७ ॥

मुलेठी लोध हड़ चन्दन कमल तथा उत्पल इनके साथ पाक कियेगये दूधको शीतल करके उसमें शक्कर शहद और जीवनीयगण की औषधियों का कल्क डालकर वस्ति देवै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इससे सम्पूर्ण पित्तजरोगों का नाश होता- है ॥ ४७ ॥

द्विकार्षिकांश्चन्दनपद्मकर्द्धियष्ट्या ह्वरास्नावृषशारिवाश्च । सलोध्रम ञ्जिष्ठसथाप्यनन्ताबलास्थिराद्यंतृ णपञ्चमूलम् ॥ ४८ ॥

चन्दन पद्माख ऋद्धि मुलेठी रास्ना रूसा साँव लोध मँजीठ जवासा बरियारा शाल- पर्णी आदि पंचमूल तृण पंचमूल दो २ तोले ॥ ४८ ॥

निःक्वाथ्यतोयेनरसेनतेनशृतंपयो ऽर्द्धाढकमम्बुहीनम् । जीवन्तिमे दर्द्धिशतावरीभिर्वीराद्विकाकोलि कशेरुकाभिः ॥ ४९ ॥

इनका काढ़ा करके उसी रसमें दूधको प- कावै जब आधे आढकसे कम कम पानी वा- की रहजाय तब उतारकर छानलेवे फिर उस में जीवन्ती मेदा ऋद्धि शतावरि केला का- कोली क्षीरकाकोली कसेरू ॥ ४९ ॥

सितोपलाजीवकपद्मरेणुप्रपौण्ड रीकैःकमलोत्पलैश्च । लोध्रात्म गुप्तामधुकैर्विदारीमुञ्जातकैःकेश रचन्दनैश्च ॥ ५० ॥

मिश्री जीवक कमल की रज पुँडरिया क- मल उत्पल लोध किवांच मुलेठी बिलाई- कन्द मूँज नागकेशर तथा लालचन्दन दो २ तोले ॥ ५० ॥

पिष्टैर्घृतक्षौद्रयुतैर्निरूहंससैन्धवंशी तलमेवदद्यात् । प्रत्यागतेधन्वरसे नशालीन्क्षीरेणवाद्यात्परिषिक्तगा त्रः ॥ ५१ ॥

इन सब औषधियों को जलके साथ पीस- कर और इसमें घी शहद तथा सैंधवलवण मिलाकर शीतल निरूहवस्तिदेवै और वस्ति के निकलजाने पर रोगीके शरीरपर जल छि- ड़ककर मरुदेशके जीवोंके मांसकेरसके साथ अथवा दूधके साथ शालिधानों के चावलोंका भात खिलावै ॥ ५१ ॥

दाहातिसारौप्रदरास्रपित्तहृत्पाण्डु रोगान्विषमज्वरांश्च । सगुल्ममूत्रग्र हकामलादीन्सर्वामयान्पित्तकृता न्निहन्ति ॥ ५२ ॥

इससे दाह अतीसार प्रदर रक्तपित्त हृद्रोग पाण्डुरोग विषमज्वर गुल्म मूत्रकृच्छ्र तथा कामला आदिक सम्पूर्ण पित्तज रोगों का ना- श होता है ॥ ५२ ॥

द्राक्षादिकाश्मर्य्यमधूकसेव्यैःसशा रिवाचन्दनशीतपाक्यैः । पयःशृतं श्रावणिमुद्गपर्णीतुगात्मगुप्तामधुय ष्टिकल्कैः ॥ ५३ ॥

मुनका आदि खँभारी के फल मुलेठी खव सांव चन्दन तथा शीत पाक्य इनके साथ पाक कियागया दूध भुँडली मुद्गपर्णी वंशलोचन किवाँच तथा मुलेठी इनका तोले २ भर कल्क ॥ ५३ ॥

गोधूमचूर्णैश्चतथाक्षमात्रैःसक्षौद्रस र्पिर्मधुयष्टितैलैः । पथ्याविदारीष्ठ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रसैर्गुडेनवस्तिंयुतंपित्तहरंविदध्यात् ॥ ५४ ॥

तोले भर गेहूंका आटा शहद घी मुलेठी का तैल हड़ विलाईकन्द तथा ईखका रस और गुड़ इन सबको एकमें मिलाकर वस्ति देने से पित्तका नाश होताहै ॥ ५४ ॥

हृन्नाभिपार्श्वोदरदेहदाहेदाहेऽन्तरस्थेचसकृच्छ्रमूत्रे । क्षीणेक्षतेरेतसिचापिनष्टेपैत्तेऽतिसारेचनृणांप्रशस्तः ॥ ५५ ॥

हृदय नाभि पशुली तथा उदरमें दाह होना शरीरके भीतर दाह होना मूत्रकृच्छ्र क्षीण क्षत वीर्य्यका नष्ट होना और पित्तज अतीसार इन सब रोगों में यह वस्ति मनुष्यों को हित होती है ॥ ५५ ॥

कोशातकारग्वधदेवदारुमूर्वाश्वदंष्ट्राकुटजार्कपाठाः । पक्त्वाकुलत्थान्बृहतीञ्चतोयेरसस्यतस्यप्रसृतादशस्युः ॥ ५६ ॥

तरोई अमिलतास देवदारु मिरोरफली गुखरू कुरैया मदार पाढ़र कुल्थी तथा भटकटैया इन सबको पानी में डालकर पाककरै जब ८० तोले जल बाकीरहे तब उतारकर छानलेवै ॥ ५६ ॥

तांसर्षपैलामदनैःसकुष्ठैरक्षप्रमाणैःप्रसृतैश्चयुक्तान् । फलाह्वतैलस्यसमाक्षिकस्यक्षारस्यतैलस्यचसार्षपस्य ॥ ५७ ॥

फिर इस जलमें सरसों इलायची मैनफल तथा कूटका तोले २ भर कल्क आठ तोले मैनफल का तैल ८ तोले शहद ८ तोले जवाखार और ८ तोले सरसों का तैल मिलाकर ॥ ५७ ॥

दद्यान्निरूहंकफरोगिणेऽग्नोमन्दाग्नयेचाप्यशनद्विषेच । पटोलपथ्यामरदारुमिर्वासपिप्पलीकैःक्कथितैर्जलाख्यैः ॥ ५८ ॥

कफजरोगवाले को मंदाग्नि रोगवाले को तथा अरुचिवाले को निरूहवस्ति देवै परवर हड़ देवदारु तथा पीपरि इनके काढ़ेमें ५८ ॥

द्विपञ्चमूलेत्रिफलांसबिल्वांफलानिगोमूत्रयुतःकषायः । कलिङ्गपाठाफलमुस्तकल्कःससैन्धवःक्षारयुतःसतैलः ॥ ५९ ॥

अथवा दशमूल त्रिफला बेल मैनफल तथा गोमूत्र इनके काढ़ेमें इन्द्रयव पाढ़र मैनफल तथा नागरमोथा इनका कल्क सैंधवलवण जवाखार तथा तैल मिलाकर निरूहवस्ति देवै ॥ ५९ ॥

निरूहमुख्यःकफजान्विकारान्सपाण्डुरोगालसकामदोषान् । हन्यात्तथामारुतमूत्रसङ्गंवस्तेस्तथाटोपमथापिघोरम् ॥ ६० ॥

इससे कफजरोग पाण्डुरोग अलसक तथा खांसी इन रोगोंका नाश होता है और वायु का रुकना मूत्रकृच्छ्र तथा वस्ति स्थानमें घोर आटोप महाश्रेष्ठ निरूहवस्ति देने से नाश होताहै ॥ ६० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रास्नामृतैरण्डविडङ्गदारुसप्तच्छदो शीरसुराह्वनिम्बैः । श्यामाकभूनिम्बपटोलपाठातिक्ताखुपर्णीदशमूलमुस्तैः ॥ ६१ ॥

रासना गिलोय अरण्ड वायविड़ंग दारुहल्दी छितवन खस देवदारु नींब सांवां चिरायता परवल पाढ़र कुटकी मूषापर्णी दशमूल नागरमोथा ॥ ६१ ॥

त्रायन्तिकाशिग्रुफलत्रिकैश्चकाथः सपिण्डीतकतोयमूत्रः । यष्ट्याह्वकृष्णाफलिनीशताह्वरसाञ्जनश्वेतवचाविडङ्गैः ॥ ६२ ॥

त्रायमाण सहिंजन तथा त्रिफला इनके काढ़ेमें मैनफल का रस गोमूत्र मुलेठी पीपरि प्रियंगु सौंफ रसौंत श्वेत वच वायविड़ंग ६२॥

कलिङ्गपाठाम्बुदसैन्धवैश्चकल्कैःस सर्पिर्मधुतैलमिश्रः ॥ अयंनिरूहः क्रिमिकुष्ठमेहब्रध्नोदराजीर्णकफातुरेभ्यः ॥ ६३ ॥ रूक्षौषधैरत्यपतर्पितेभ्यएतेषुरोगेष्वपिसत्सुदत्तः । निहत्यवातंज्वलनंप्रदीप्यविजित्यरोगांश्चबलंकरोति ॥ ६४ ॥

इन्द्रयव पाढ़र नागरमोथा तथा सैंधवलवण इनका कल्क घी शहद तथा तैल मिलाकर क्रिमि कुष्ठ प्रमेह बद उदर अजीर्ण तथा कफज रोगवालों को और रूखी औषधियों के द्वारा कृशहुये पुरुषों को वस्ति देवै इन रोगों में दीगई यह वस्ति वायु को नष्ट करके अग्नि को दीप्त करके और रोगों को जीत करके बल को उत्पन्न करती है ॥ ६३ । ६४ ॥

पुनर्नवैरण्डवृषाश्मभेदवृश्चीरभूतीकबलापलाशाः । द्विपञ्चमूलानिपलांशिकानिक्षुण्णानिधौतानिपलानिचाष्टौ ॥ ६५ ॥

गदहपूर्णा अरण्डकी जड़ रूसा पाषाणभेद (हजरतजहूर) वृश्चीर चिरायता ढाखकी छाल बरियारा तथा दशमूल अच्छे प्रकारसे धोईहुई तथा कूटीहुई यह सब औषध चार चार तोले ॥ ६५ ॥

बिल्वंयवान्कोलकुलत्थधान्यफलानिचैकप्रसृतोन्मितानि । पयोजलाद्वाढकयोःश्रृतंतत्क्षीरावशेषंसितवस्त्रपूतम् ॥ ६६ ॥

और बेल यव बेर कुल्थी धनियां तथा मैनफल आठ २ तोले इन सब औषधियों को १२८ तोले जल तथा १२८ तोले दूधमें डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल दूध बाकीरहै तब उतारकर उज्ज्वल वस्त्र से छानलेवै ॥ ६६ ॥

वचाशताह्वामरदारुकुष्ठयष्ट्याह्वसिद्धार्थकपिप्पलीनाम् । कल्कैर्यवान्यामदनैश्चयुक्तंनात्युष्णशीतंगुडसैन्धवाक्तम् ॥ ६७ ॥ क्षौद्रस्यतैलस्यचसर्पिषश्चतथैवयुक्तंप्रसृतत्रयेण । दद्यान्निरूहंविधिनाविधिज्ञस्तंसर्वसंसर्गकृतामयघ्नम् ॥ ६८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर उस दूधमें बच सौंफ देवदारु कूट मुलेठी सरसों पीपरि अजवाइनि तथा मैनफल इनका कल्क गुड़ सैंधवलवण शहद तैल तथा घी आठ २ तोले डालकर न बहुत उष्ण तथा न बहुत शीतल वस्ति विधिपूर्वक देवै इससे सम्पूर्ण द्वंद्वज तथा सन्निपातज रोगोंका नाश होता है ॥ ६७। ६८ ॥

स्निग्धोष्णएकःपवनेनिरूहोद्वौस्वादुशीतौपयसाचपित्ते । त्रयःसमूत्राःकटुकोष्णतीक्ष्णाःकफेनिरूहानपरंविधेयाः ॥ ६९ ॥

वातज रोगोंमें स्निग्ध तथा उष्ण एकनिरूहवस्ति देनी चाहिये पित्तज रोगोंमें दूधकेद्वारा मधुर तथा शीतल दो निरूहवस्ति देनी चाहिये और कफज रोगोंमें गोमूत्रयुक्त कटु उष्ण तथा तीक्ष्ण तीन निरूहवस्ति देनी चाहिये और इससे अधिक वस्ति नहीं देनी चाहिये ॥ ६९ ॥

रसेनवातेप्रतिभोजनंस्यात्क्षीरेणपित्तेतुकफेचयूषैः । तथानुवास्येषुच बिल्वतैलंस्याज्जीवनीयंफलसाधितञ्च ॥ ७० ॥

निरूहवस्तिके उपरान्त वातजरोगों में मांसके रसके साथ पित्तज रोगों में दूधके साथ और कफज रोगोंमें यूषों के साथ भोजन कराना चाहिये अनुवासनवस्तिके लिये बेलके साथ पाक कियागया जीवनीयगण के साथ पाक कियागया तथा मैनफल के साथ पाक कियागया तैल हित होताहै ॥ ७० ॥

इतीदमुक्तंनिखिलंयथावद्वस्तिप्रदानस्यविधानमग्र्यम् । योऽधीत्यविद्वानिहवस्तिकर्मकरोतिलोकेलभतेससिद्धिम् ॥ ७१ ॥

इतिसिद्धिस्थानेवस्तिसूत्रीयासिद्धिर्नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इस अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने इस प्रकार से वस्ति देनेकी सम्पूर्ण श्रेष्ठ विधि यथावत् कही है जो विद्वान् वैद्य इसको पढ़कर वस्तिकर्म करताहै संसारमें उसकी चिकित्सा सफल होती है ॥ ७१ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धिस्थानकावस्तिसूत्रीयसिद्धिनामतीसरा अध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

स्नेहव्यापादिकासिद्धिः ।

स्नेहवस्तीन्निबोधेमान्वातपित्तकफापहान् । मिथ्याप्रणिहितानाञ्चव्यापदःसचिकित्सिताः ॥१॥

इस के उपरान्त स्नेहव्यापादिका नाम सिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

वात पित्त तथा कफको नष्ट करनेवाली स्नेहवस्ति और स्नेहवस्तियों के बिगड़जाने से होनेवाले रोग तथा उनकी चिकित्सा सुनो ॥ १ ॥

दशमूलंबलांरास्नामश्वगन्धांपुनर्नवाम् । गुडूच्येरण्डभूतीकभार्गीवृषकरोहिषाम् ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दशमूल बरियारा रास्ना असगन्ध गदहपूर्णा गिलोय अरण्ड चिरायता भारङ्गी रूसा रोहिष (सुगन्धिततृणविशेष) ॥ २ ॥

शतावरींसहचरंकाकनासांपलांशिकाम् । यवमाषातसीकोलकुलत्थान्प्रसृतोन्मितान् ॥ ३ ॥

शतावर सुनहरी तथा कौवाठोंठी चार २ तोले यव उर्द अलसी बेर तथा कुल्थी आठ२ तोले ॥ ३ ॥

चतुर्द्रोणेऽम्भसःपक्त्वाद्रोणशेषेणतेनच । तैलाढकंसमक्षीरंजीवनीयैःपलोन्मितैः ॥ ४ ॥

इन सब औषधियोंको १।८१सेर १८तोले जल में डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर इसमें २५६ तोले दूध २५६ तोले तैल और जीवनीयगणकी चार २ तोले भर औषधियोंका कल्क डालकर पाककरै जब पानी जल जाय केवल तैल बाकी रहै तब उतार कर छानलेवै ॥ ४ ॥

अनुवासनमेतद्धिसर्ववातविकारनुत् । आनूपानांवसातद्वज्जीवनीयोपसाधिता ॥ ५ ॥

इस तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देने से सम्पूर्ण वातरोगों का नाश होताहै आनूप जीवों की चर्बी को जीवनीयगण की औषधियों के साथ पाककरके इसके द्वारा अनुवासनवस्ति देने से वातरोगों का नाश होता है ॥ ५ ॥

शताह्वायवबिल्वाम्लैःसिद्धंतैलंसमीरणे । सैन्धवेनाग्निवर्णेनतप्तञ्चानिलनुद्घृतम् ॥ ६ ॥

सौंफ यव बेल तथा कांजी के साथ पाक कियेगये तैल के द्वारा वातजरोगों में अनुवासनवस्ति देनीचाहिये सैंधवलवण को अग्नि में तपाकर लालकरके घीमें बुझावै इस घीके द्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे वातजरोगों का नाश होताहै ॥ ६ ॥

जीवन्तींमदनंमेदांश्रावणींमधुकंबलाम् । शताह्वर्षभकौकृष्णांकाकनासांशतावरीम् ॥ ७ ॥

जीवन्ती मैनफल मेदा मुँडली मुलेठी बरियारा सौंफ ऋषभक पीपरि कौवाठोंठी शतावर ॥ ७ ॥

स्वगुप्तांक्षीरकाकोलींकर्कटाख्यांशटींवचाम् । पिष्ट्वातैलंघृतंक्षीरेसाधयेत्तच्चतुर्गुणे ॥ ८ ॥

किवांच क्षीरकाकोली काकड़ासिंगी कचूर तथा वच इन के कल्क और चतुर्गुण दूधके साथ घी तथा तैल का पाककरै ॥ ८ ॥

बृंहणंवातपित्तघ्नंबलशुक्राग्निवर्द्धनम् । मूत्ररेतोरजोदोषान्हरेत्तदनुवासनात् ॥ ९ ॥

इसके द्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे वात तथा पित्त का नाशहोताहै धातु बल वीर्य्य तथा अग्नि की वृद्धि होती है और मूत्र मल तथा वीर्य्य के दोषोंका नाश होताहै ॥ ९ ॥

लाभतश्चन्दनाद्यैश्चपिष्टैःक्षीरचतुर्गु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

णम् । तैलपादंघृतंसिद्धंपित्तघ्नम नुवासनम् ॥ १० ॥

चन्दनादिगण की औषधियों में से जोकुछ मिलसकैं उनके कल्क और चतुर्गुण दूध के साथ तैल तथा घीका पाककरै इसके द्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे पित्तज रोगों का नाश होताहै ॥ १० ॥

सैन्धवंमदनंकुष्ठंशताह्वांनिचुलंब लाम् । ह्रीवेरंमधुकंभार्गींदेवदारु सकटुफलम् ॥ ११ ॥

सैंधवलवण मैनफल कूट सौंफ समुद्रफल बरियारा सुगन्धबाला मुलेठी भारंगी देवदारु कायफल ॥ ११ ॥

नागरंपुष्करंमेदांचविकांचित्रकंश टीम् । विडङ्गातिविषेश्यामांहरेणुं नीलिनींस्थिराम् ॥ १२ ॥

सोंठि पुष्करमूल मेदा चव्य चीता कचूर वायविड़ंग अतीस निसोथ रेणुका नील शालपर्णी ॥ १२ ॥

बिल्वाजमोदेकृष्णाञ्चदन्तींरास्नाञ्च पेषयेत् । साध्यमेरण्डतैलंवातैलंवा कफरोगनुत् ॥ १३ ॥

बेल अजमोद पीपरि जमालगोटेकी जड़ तथा रासना इन के कल्क के साथ रेंड़ी के कल्क का अथवा तिलों के तैल का पाककरै इस के द्वारा अनुवासनवस्तिदेनेसे कफजरोग का नाश होताहै ॥ १३ ॥

ब्रध्नोदावर्त्तगुल्मार्शःप्लीहमेहाढ्य मारुतान् । आनाहमश्मरीञ्चैवह न्यात्तदनुवासनात् ॥ १४ ॥

और वद उदावर्त्त गुल्म बवासीर प्लीहा प्रमेह आढ्यवात आनाह (कब्ज़) तथा पथरी इन रोगोंका इस अनुवासनवस्ति से नाशहोताहै ॥ १४ ॥

मदनैर्वाम्लसंयुक्तैर्बिल्वाद्येनगणेन वा । तैलंकफहरैर्वापिकफघ्नंकल्पये द्भिषक् ॥ १५ ॥

मैनफल तथा कांजीके साथ अथवा बिल्व आदिगण की औषधियों के कल्क के साथ अथवा कफनाशक औषधियों के कल्क के साथ पाककिये हुये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे कफ का नाश होताहै ॥ १५ ॥

विडङ्गैरण्डरजनीपटोलत्रिफलामृ ताः । जातिप्रवालनिर्गुण्डीदश मूलाखुपर्णिकाः ॥ १६ ॥

वायविड़ंग अरण्ड हल्दी परवल त्रिफला गिलोय चमेलीकी पत्ती म्यौड़ी दशमूल मूषापर्णी ॥ १६ ॥

निम्बपाठासहचरशम्पाककरवीरक म् । एषांक्वाथेनविपचेत्तैलमेभिश्च कल्कितैः ॥ १७ ॥

नींब पाढ़र सुनहरी अमलतास तथाकनैर इन के काढ़े तथा कल्कके साथ तैल का पाक करै और इस तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देवै ॥ १७ ॥

फलबिल्वत्रिवृत्कृष्णारास्नाभूनिम्ब दारुभिः । सप्तपर्णवचोशीरदार्वीकु ष्ठकलिङ्गकैः ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैनफल बेल निशोथ पीपरि रासना चिरायता दारुहल्दी छिरवन बच खस दारुहल्दी कूट इन्द्रयव ॥ १८ ॥

लतायष्टिशताह्वाग्निशटीचोरकपौष्करैः । तत्कुष्ठानिक्रिमीन्मेहानर्शांसिग्रहणीगदम् ॥ १९ ॥ क्लीवत्वंविषमाग्नित्वंमलंदोषत्रयंतथा । प्रयुक्तंप्रणुदत्याशुपानाभ्यङ्गानुवासनैः ॥ २० ॥

प्रियंगु मुलेठी सौंफ चीता कचूर चोरक तथा पुष्करमूल इन के कल्क के साथ पाक कियेहुये तैलका पान मर्दन तथा अनुवासनवस्तिके द्वारा प्रयोग करने से कुष्ठ क्रिमि प्रमेह ववासीर ग्रहणीदोषन पुंसकता विषमाग्नि तथा त्रिदोषका शीघ्रही नाश होता है ॥ १९।२० ॥

व्याधिव्यायामकर्माध्वक्षीणाबलनिरौजसाम् । क्षीणशुक्रस्यचातीवस्नेहवस्तिबलप्रदः ॥ २१ ॥

रोग व्यायाम कार्य तथा मार्ग चलने के द्वारा क्षीण हुये निर्बल ओजरहित और वीर्य्य की क्षीणतावाले पुरुषों के लिये अनुवासनवस्ति बहुत बलकारी होती है ॥ २१ ॥

पादजंघोरुपृष्ठस्यकट्याश्चस्थिरतांपराम् । जनयेदप्रजानाञ्चप्रजांस्त्रीणांतथानृणाम् ॥ २२ ॥

अनुवासनवस्ति से पैर जांघ पिंडुली पीठ तथा कमर में अत्यन्त पुष्टता होती है और जिन स्त्रीपुरुषोंके सन्तान नहीं होती है उनको इस वस्तिके सेवनसे सन्तान प्राप्तहोतीहै॥२२॥

वातपित्तकफान्यन्नपुरीषैरावृतस्य च । अभुक्तेचप्रणीतस्यस्नेहवस्तेः षडापदः ॥ २३ ॥

वात पित्त कफ अन्न तथा विष्ठा के द्वारा स्नेह का ढकजाना और विना भोजन कराये अनुवासनवस्ति देना यह छः अनुवासनवस्ति की आपद (बिगाड़) हैं ॥ २३ ॥

शीतोऽल्पोवाधिकेवातेपित्तेऽत्युष्णःकफेमृदुः । अतिभुक्तेगुरुर्वर्चःसञ्चयेऽल्पबलस्तथा ॥ २४ ॥

वायु की अधिकता में शीतल तथा स्वल्प स्नेह के द्वारा पित्तकी अधिकता में अत्यन्त उष्ण स्नेह के द्वारा कफ की अधिकता में मृदु स्नेहके द्वारा बहुत भोजन करचुकनेपर भारी स्नेहके द्वारा और मलके संचित होनेपर स्वल्प बलयुक्त स्नेह के द्वारा ॥ २४ ॥

दत्तस्तैरावृतःस्नेहोनयात्यभिभवाद्धः । अभुक्तेनावृतत्वाच्चयात्यूर्ध्वं तस्यलक्षणम् ॥ २५ ॥

अनुवासनवस्ति देनेसे वायु आदि के द्वारा स्नेह ढकलियाजाताहै और दूषित करदिया जाता है इस से ठीक स्थानपर नहीं जासक्ता और विना भोजन कराये अनुवासनवस्तिदेने से स्नेह ऊपर को चलाजाता है इनके लक्षण आगे कहेजाते हैं ॥ २५ ॥

अङ्गमर्दज्वराध्मानशीतस्तम्भोरुपीडनैः । पार्श्वरुग्वेष्टनैर्विद्यात्स्नेहंवाताद्वृतंभिषक् ॥ २६ ॥

अङ्गमर्द ज्वर अफरा शीतस्तम्भ जांघों में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ा पशुलियों में पीड़ा और ऐंठन यह लक्षण वायु के द्वारा स्नेह के ढकजाने पर होते हैं॥ २६॥

स्निग्धाम्ललवणोष्णैस्तंरास्नापीतद्रुतिल्वकैः। सौवीरकसुराकोलकुलत्थरससाधितैः॥ २७॥ निरूहैर्निर्हरेत्सम्यक् समूत्रैःपञ्चमूलिकैः। ताभ्यामेवचतैलाभ्यांसायंभुक्तेऽनुवासयेत्॥ २८॥

ऐसी अवस्थामें स्निग्ध अम्ल लवण उष्ण औषध रासना सरल तथा लोध सौवीरक(कांजीविशेष) सुरा बेर कुल्थी तथा यव इनके गोमूत्रयुक्त काढ़ेके द्वारा तथा पंचमूल के काढ़ेके द्वारा निरूहवस्ति देकर उस स्नेह को निकालै और सायंकाल के समय भोजन के उपरांत पहिले कही हुई औषधियों के साथ पाक किये हुये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति दे॥ २७। २८॥

दाहरागतृषामोहतमकज्वरदूषणैः। विद्यात्पित्तावृतंस्वादुतिक्तैस्तंवस्तिभिर्हरेत्॥ २९॥

दाह रक्तवर्ण तृषा मोह तमकश्वास तथा ज्वर इन लक्षणों से स्नेह को पित्तकेद्वारा ढकाहुआ जानना चाहिये ऐसी अवस्थामें मधुर तथा तिक्त वस्तियोंकेद्वारा स्नेह को निकालना चाहिये॥ २९॥

तन्द्राशीतज्वरालस्यप्रसेकारुचिगौरवैः। संमूर्च्छाग्लानिभिर्विद्याच्छ्लेष्मणास्नेहमावृतम्॥ ३०॥

तन्द्रा शीतज्वर आलस्य मुखमें बहुत लार आना अरुचि शरीरका भारी होना मूर्च्छा और ग्लानि इन लक्षणों से स्नेह को कफके द्वारा ढकाहुआ जानना चाहिये॥ ३०॥

कषायकटुतीक्ष्णोष्णैः सुरामूत्रोपसाधितैः। फलतैलयुतैःसाम्लैर्वस्तिभिस्तंविनिर्हरेत्॥ ३१॥

ऐसी अवस्थामें कषैली कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण औषध और सुरा तथा गोमूत्रकेद्वारा मैनफल के तैल तथा कांजी से युक्त निरूहवस्ति देकर स्नेहको निकालना चाहिये ३१॥

छर्दिमूर्च्छारुचिग्लानिज्वरशूलाङ्गमर्दनैः। आमलिङ्गैःसदाहैस्तंविद्यादत्यशनावृतम्॥ ३२॥

छर्दि मूर्च्छा अरुचि ग्लानि ज्वर शूल अङ्गमर्द आमके लक्षण और दाह इन लक्षणों से स्नेह को बहुत भोजनकेद्वारा ढकाहुआ जानना चाहिये॥ ३२॥

कटूनांलवणानाञ्चक्वाथैश्चूर्णैश्चपाचनम्। विरेकोमृदुरत्रामविहिताचक्रियाहिता॥ ३३॥

ऐसी अवस्थामें कडुवी औषध तथा लवण के काढ़े तथा चूर्णकेद्वारा पाचन करावे हलका विरेचन करावे और आमदोष में कहीहुई चिकित्साकरै॥ ३३॥

विण्मूत्रानिलसङ्गार्त्तिगुरुत्वाध्मानहृद्ग्रहैः। स्नेहंविडावृतंज्ञात्वास्नेहस्वेदैःसवर्त्तिभिः॥ ३४॥

मल मूत्र तथा वायुका रुकना पीड़ा शरीर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का भारी होना अफरा तथा हृदयका जकड़ जाना इन लक्षणों से स्नेह को मलकेद्वारा ढकाहुआ जानकर स्नेहन स्वेदन वर्त्तिक्रिया(औषधियों की बत्ती बनाकर गुदामें रखना)॥ ३४॥

श्यामाबिल्वादिसिद्धैश्चनिरूहैःसानुवासनैः । निर्हरेद्विधिनासम्यगुदावर्त्तहरेणच॥ ३५॥

निशोथ तथा बेल आदि औषधियोंके काढ़ेकी निरूहवस्ति और अनुवासनवस्तिकेद्वारा और उदावर्त्तनाशक चिकित्साके द्वारा स्नेह को अच्छे प्रकारसे निकालै॥ ३५॥

अभुक्तेशून्यपायौवावेगात्स्नेहोऽतिपीडितः । धावत्यूर्ध्वंततःकण्ठादूर्ध्वेभ्यःखेभ्यएत्यपि॥ ३६॥

भोजन विना किये अथवा गुदा के शून्य होनेपर बहुत वेगसे दबाकर अनुवासनवस्ति देनेसे स्नेह ऊपरकी ओर चलाजाता है और कण्ठ तथा नासिका आदि ऊपरके छिद्रों से निकलता है॥ ३६॥

मूत्रश्यामात्रिवृत्सिद्धोयवकोलकुलत्थकान् । तत्सिद्धतैलइष्टोऽत्रनिरूहःसानुवासनः॥ ३७॥

ऐसी अवस्थामें गोमूत्र निशोथ यव बेर तथा कुल्थी के साथ पाक कियेहुये तैलकेद्वारा निरूह तथा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये॥३७॥

कण्ठादागच्छतःस्तम्भकण्ठग्रहविरेचनैः । छर्दिघ्नीभिःक्रियाभिश्चतस्यकार्य्यंनिवर्त्तनम्॥ ३८॥

गलेकेद्वारा निकलतेहुये स्नेहको स्तम्भ कण्ठग्रह विरेचन और छर्दिनाशक चिकित्साओंकेद्वारा रोकै॥ ३८॥

यस्यनोपद्रवंकुर्य्यात्स्नेहवस्तिरनिःसृतः । सर्वोऽल्पोवावृतोरौक्ष्याद्उपेक्ष्यःसविजानता॥ ३९॥

जो सम्पूर्ण अथवा स्वल्प स्नेह वायु आदि के द्वारा ढके होनेके कारण अथवा रूक्षताके कारण न निकलै और कोई उपद्रव न उपजै तो बुद्धिमान् वैद्य उसके निकालने का यत्न न करै॥ ३९॥

मुक्तस्नेहंद्रवोष्णञ्चलघुपथ्योपसेवनम् । भुक्तवान्मात्रयायोज्यमनुवास्यत्र्यहात्त्र्यहात्॥ ४०॥

अनुवासनवस्ति देने के उपरान्त तीसरे दिन स्नेहयुक्त कुछ उष्ण हल्के और हितकारी अन्नका भोजन करनेवाले पुरुष को मात्राके अनुसार भोजन कराके फिर अनुवासनवस्ति देवै इस प्रकार तीसरे तीसरे दिन अनुवासनवस्ति देनी चाहिये॥ ४०॥

धान्यनागरसिद्धंहितोयंदद्याद्विचक्षणः । व्युषितायनिशाःकल्यमुष्णंवाकेवलंजलम्॥ ४१॥

बुद्धिमान् वैद्य जिसको अनुवासनवस्ति दीगईहो उसको दूसरे दिन प्रातःकाल धनियां तथा सोंठिके साथ पाक कियाहुआ जल अथवा केवल उष्णजल पीने को देवै॥४१॥

स्नेहाजीर्णंजरयतिश्लेष्माणंतद्भिनत्तिच । मारुतस्यानुलोम्यञ्चकुर्य्याद्दुष्णोदकंनृणाम्॥ ४२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वमनेचाविरेकेचनिरूहेसानुवासने तस्मादुष्णोदकंदेयंवातश्लेष्मप्रशान्तये ॥ ४३ ॥

क्योंकि उष्ण जल नहीं पचेहुये स्नेह को पचाता है कफ को फाड़ता है और वायु को नीचे के मार्ग्ग से निकालता है इससे वमन विरेचन निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्तिमें वायु तथा कफ को शान्त करनेके लिये उष्ण जल पिलाना चाहिये ॥ ४२ । ४३ ॥

रूक्षनित्यस्तुदीप्ताग्निर्व्यायामीमारुताशयी । वंक्षणश्रोण्युदावर्त्तवार्त्ताश्चदिनेदिने ॥ ४४ ॥

सदैव रूखी वस्तु खानेवाले दीप्ताग्नि नित्य व्यायाम करनेवाले कोष्ठमें अधिक वायु वाले वंक्षणों में अधिक वायुवाले नितम्बों में अधिक वायुवाले और उदावर्त्त रोगवाले पुरुषों को प्रतिदिन अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ४४ ॥

एषाञ्चाशुजरांस्नेहोयात्यम्बुसिकतास्विव । अतोऽन्येषांत्र्यहात्प्रायः स्नेहंपचातिपात्रकः ॥ ४५ ॥

क्योंकि जैसे बालूमें पानी डालने से शीघ्रही सोक जाता है उसी प्रकार इन पुरुषों को अनुवासनवस्ति देनेसे स्नेह शीघ्रही पचजाताहै और इनपुरुषोंके सिवाय अन्यपुरुषों को तीन दिन में स्नेह पचता है ॥ ४५ ॥

नत्वामंप्रणयेत्स्नेहंसद्यभिष्यन्दयेद्गुदम् । सावशेषञ्चकुर्वीतवायुःशेषेहितिष्ठति ॥ ४६ ॥

कच्चे स्नेहकेद्वारा अनुवासनवस्ति नहीं देनी चाहिये क्योंकि ऐसा करने से गुदा में अभिष्यन्द (बहना) उत्पन्न होता है निरूह अथवा अनुवासनवस्ति देनेके समय वस्तिमें से सम्पूर्ण औषध दबाकर न निकालदे किंतु कुछ बचारक्खे क्योंकि सब औषधके निकल जानेपर उसमें वायु स्थित होती है और सब औषधके निकल जानेपर वह वायु भी उदर में चलीजाती है इससे बहुत हानि होती है४६

नचैवगुदकण्ठाभ्यांदद्यात्स्नेहमनन्तरम् । उभयस्मात्समंगच्छन्वाय्वग्नीन्दूषयेत्समम् ॥ ४७ ॥

एकही साथ गुदा तथा कण्ठकेद्वारा स्नेह का प्रयोग नहीं करना चाहिये अर्थात् स्नेह का पान और अनुवासनवस्ति दोनों कार्य्य एकसाथही नहीं करने चाहिये क्योंकि दोनों ओर से एक साथही गयाहुआ स्नेह वायु तथा अग्नि को एक साथही दूषित करता है ॥ ४७ ॥

स्नेहवस्तिंनिरूहंवानैकमेवातिशीलयेत् । उत्क्लेशाग्निवधौस्नेहान्निरूहात्पवनाद्भयम् ॥ ४८ ॥

निरूहवस्ति अथवा अनुवासनवस्ति इन दोनोंमें से एकही का निरन्तर सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि निरन्तर अनुवासनवस्ति का सेवन करनेसे दोष उभड़ते हैं तथा मंदाग्नि होती है और निरन्तर निरूहवस्ति का सेवनकरनेसे वायु के कुपित होने का भय रहता है ॥ ४८ ॥

तस्मान्निरूढःस्नेह्यःस्यान्निरूढश्चा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नुवासितः। स्नेहशोधनयुक्त्यैवव स्तिकर्मत्रिदोषनुत्॥ ४९॥

इससे पहिले निरूहवस्ति देकर अनुवासन वस्ति देनी चाहिये और अनुवासनवस्ति देकर निरूहवस्ति देनी चाहिये स्नेहन तथा शोधन (दोषों का निकालना) की युक्तिसे वस्तिकर्म त्रिदोषनाशक होताहै॥४९॥

कर्मव्यायामभाराध्वयानस्त्रीकर्षिते षुच। दुर्बलेवातभग्नेचमात्रावस्तिः सदामतः॥ ५०॥

कर्म व्यायाम बोझा ढोना बहुत चलना घोड़े आदि सवारी पर चढ़ना तथा मैथुन इन कारणों से कृश हुये दुर्बल और वायु के द्वारा भग्न हुये पुरुषों के लिये मात्रावस्ति (स्वल्पस्नेहयुक्तवस्ति) सदैव हित होती है॥ ५०॥

ह्रस्वायाःस्नेहमात्रायामात्रावस्तिः समोभवेत्। यथेष्टाहारचेष्टस्यसर्व कालंनिरत्ययः॥ ५१॥

स्नेहकी स्वल्पमात्रा वाली वस्ति को मात्रावस्ति कहते हैं इस वस्ति का सेवन करके यथेष्ट आहार विहार करने से सब काल में कोई हानि नहीं होती है॥ ५१॥

बल्यंसुखोपचर्य्यञ्चसुखंसृष्टपुरीषकृ त्। स्नेहमात्राविधानंहिबृंहणं वातरोगनुत्॥ ५२॥

स्नेहमात्राके विधान से बल बढ़ताहै किसी प्रकार का क्लेश नहीं होता है और सुखपूर्वक मल का त्याग होताहै धातुओं की वृद्धि होती है और वातरोगों का नाश होता है॥ ५२॥

तत्रश्लोकौ।

वातादीनांशमायोक्ताःप्रवराःस्नेह वस्तयः। तेषाञ्चाज्ञप्रयुक्तानांव्या पदःसचिकित्सिताः॥ ५३॥

तिसमें यह दो श्लोक हैं। इस स्नेहव्यापादिकासिद्धि नाम अध्यायमें भगवान् आत्रेयजी ने वातआदि दोषोंको शान्त करने के लिये श्रेष्ठ अनुवासनवस्ति मूर्खों के द्वारा प्रयोग कीगई अनुवासनवस्तिके बिगड़जाने से होने वाले रोग उनकी चिकित्सा॥ ५३॥

प्राग्भोज्यंस्नेहवस्तेर्यद्द्व्यहंयेऽह्नां स्त्र्यहाश्रये। स्नेहवस्तिविधिश्चो क्तोमात्रावस्तिविधिस्तथा॥५४॥

इतिसिद्धिस्थानेस्नेहव्यापादिकासिद्धिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

स्नेहवस्तिके पहिले जो भोजन करनाचाहिये जिनको नित्यस्नेहवस्ति देनी चाहिये जिनको तीसरे दिन अनुवासनवस्ति देनी चाहिये अनुवासनवस्तिकी विधि और मात्रावस्तिकी विधि यह सब विषय कहेहैं॥५४॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृत तन्त्रमें सिद्धिस्थानकास्नेहव्यापादिकासिद्धि नामचौथाअध्यायसमाप्तहुआ ४॥

पांचवां अध्याय॥

नेत्रवस्तिव्यापादिकासिद्धिः।

अथनेत्राणिवस्तींश्चशृणुवर्ज्यानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्मसु । नेत्रस्याज्ञप्रणीतस्यव्याप दःसचिकित्सिताः ॥ १ ॥

इसके उपरान्त नेत्रवस्तिव्यापादिका सिद्धि का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

वस्तिकर्म में जो नेत्र (नली) तथा वस्ति वर्ज्जित हैं और मूर्ख वैद्यके द्वारा डालीगई नली से जो रोग होते हैं वह तुम सुनो और उनकी चिकित्सा सुनो ॥ १ ॥

ह्रस्वंदीर्घंतनुस्थूलंजीर्णंशिथिलबन्धनम् । पार्श्वच्छिद्रंतथावक्रमष्टौ नेत्राणिवर्जयेत् ॥ २ ॥

ह्रस्व (छोटे) दीर्घ (लम्बे) पतले मोटे पुराने ढीले बन्धन वाले किनारों पर छेदवाले तथा टेढ़े यह आठ प्रकारके नेत्र वस्तिकर्म में वर्ज्जित हैं ॥ २ ॥

अप्राप्त्यतिगतिक्षोभकर्षणक्षणनस्रवाः । गुदपीडागतिर्जिह्मातेषांदोषायथाक्रमम् ॥ ३ ॥

क्योंकि नली छोटी होने से ठीक स्थान पर नहीं पहुंचती है बड़ी होने से स्थान के आगे बढ़जाती है पतली होने से चलायमान होती है मोटी होने से गुदामें रगड़ लगती है पुरानी होने से गुदा विदीर्ण होजाती है शिथिल बन्धन वाली होने से औषध बहती है किनारों पर छेदवाली होने से गुदामें पीड़ा होती है और टेढ़ी होने से गुदामें टेढ़ी होकर जाती है यह आठों प्रकारकी वर्ज्जित नलियों के आठ दोष हैं ॥ ३ ॥

मांसलच्छिद्रविषमस्थूलजालकवातलाः । छिन्नःक्लिन्नश्चतानष्टौवस्तीन्कर्मसुवर्जयेत् ॥ ४ ॥

वस्तिकर्म में मांसयुक्त छिद्रयुक्त विषम (जो सम न होय) मोटी बहुतसे छोटे २ छिद्रों से युक्त वायु से भरीहुई कटीहुई और क्लेदयुक्त यह आठ प्रकारकी वस्ति वर्ज्जित हैं ॥ ४ ॥

गतिवैषम्यविस्रत्वस्रावदौर्गन्ध्यविद्रवाः। फेनिलच्युतधार्य्यत्वंवस्तेः स्याद्वस्तिदोषतः ॥ ५ ॥

क्योंकि वस्ति विषम होने से औषध अपने स्थान में ठीक २ नहीं जाती है मांसयुक्त होने से दुर्गंध आती है छिद्रयुक्त होने से औषध बहती है मोटी होने से पकड़ने के योग्य नहीं होती है बहुत छिद्र युक्त होने से औषध बहती है वायुसे भरीहुई होनेसे औषध फेनायुक्त होजाती है कटीहुई होने से औषध गिर जाती है और क्लेदयुक्त होने से औषध रुकजाती है यह आठ प्रकारकी वर्ज्जित वस्तियों के आठ दोष हैं ॥ ५ ॥

सवातातिद्रुतोत्क्षिप्ततिर्य्यगुत्क्षिप्तकम्पिताः । अतिबाह्यगमन्दातिवेग दोषाःप्रणेतृतः ॥ ६ ॥

वस्ति देनेवाला यदि मूर्ख हो तो वायुसहित वस्तिदेना बहुत जल्दी वस्ति देना तथा निकाल लेना वस्तिका ऊपर उठादेना वस्ति का तिरछी होकर रुकजाना बीचहीमें वस्ति देना वस्तिका काँपजाना बहुत धीरे धीरे वस्तिदेना और बहुत वेगसे वस्तिदेना यह दोष होते हैं ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुच्छ्वास्यानुबन्धेवाद्त्तेनिःशेष एववा। प्रविश्यकुपितोवायुःशूलतोदकरोभवेत्॥ ७॥

जो वस्तिदेनेके समय वस्ति (बैलआदि के मूत्राशयका चमड़ा जिसमें की औषध भरी रहती है) की वायु न निकालकर अथवा वस्तिको अच्छे प्रकारसे न बाँधकर वस्ति दीजाती है अथवा वस्तिमें कुछ भी औषध न बचाकर सब औषध दबाकर निकाल दीजाती है तो वस्तिके साथ वायु भी कोष्ठ में जाकर कुपित होकर शूल तथा सुई चुभने कीसी पीड़ा को उत्पन्न करती है॥ ७॥

तत्राभ्यङ्गोगुदेस्वेदोवातघ्नान्यशनानिच। द्रुतंप्रणीतेनिष्कृष्टेसहसोत्क्षिप्तएववा॥ ८॥

ऐसी अवस्था में शरीरमें तैल मलना गुदामें स्वेदन करना और वातघ्न भोजन कराना हित होताहै बहुत जल्दीसे वस्तिकी नली को गुदा में डालने से तथा निकाल लेनेसे अथवा नली को एकाएकी ऊपर उठा देने से॥ ८॥

स्यात्कटीगुदजङ्घार्त्तिर्वस्तिस्तम्भोरुभेदनम्। भोजनंतत्रवातघ्नंस्नेहाःस्वेदाःसवस्तयः॥ ९॥

कमर गुदा तथा पिंडलियों में पीड़ा होती है स्तम्भ होताहै और जाँघों में फटने कीसी पीड़ा होती है ऐसी अवस्था में वातनाशक भोजन तथा स्नेह व स्वेदसहित वस्ति हित होती है॥ ९॥

तिर्य्यग्बन्धावृतद्वारेबद्धेवापिनगच्छति। नेत्रंतदूर्द्ध्वंनिष्कृष्यसंशोध्यचपुनर्नयेत्॥ १०॥

तिरछी होने के कारण बलियों (गुदाके चक्रों) के द्वारा द्वारबन्द होजाने से वस्तिकी नली अच्छे प्रकारसे गुदामें नहीं जातीहै इससे नलीको सीधी निकाल कर साफ करके फिर डाले॥ १०॥

पीड्यमानेऽन्तरामुक्तेगुदेप्रतिहतोऽनिलः। उरःशिरोरुजंसादमूर्वोश्चजनयेद्बली॥ ११॥

नलीके द्वारा गुदा के पीड़ित होनेपर जो बीचही में वस्ति दैदीजावै तो इससे रुकाहुआ तथा बलवान् वायु वक्षस्थल तथा शिरमें पीड़ा को उत्पन्न करताहै और जाँघोंको शिथिल करता है॥ ११॥

वस्तिःस्यात्तत्रबिल्वादिफलश्यामानिमूत्रवान्। स्याद्दाहोदवथुःशोफःकम्पनाभिहतेगुदे॥ १२॥

ऐसी अवस्था में बेल आदिफल साँवाँआदि नाज तथा गोमूत्र के द्वारा वस्ति देनीचाचाहिये नलीके काँपजाने के कारण गुदा में चोट लगजानेसे गुदामें दाह पीड़ा तथा शोथ होता है॥ १२॥

कषायमधुराःशीताःसेकास्तत्रसवस्तयः। अतिमात्रप्रणीतेननेत्रेणक्षणनाद्बलेः॥ १३॥

ऐसी अवस्था में कषैली मधुर तथा शीतल औषधियों के काढ़े का तरारा और वस्तिदेना हित होता है गुदामें वस्तिकी नली बहुत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादह डालदेने से गुदाकी वलियों में घाव होजाने के कारण ॥ १३ ॥

स्याच्छर्दिदाहनिस्तोदगुदवर्चःप्रवर्त्तनम् । तत्रसर्पिःपिचुःक्षीरंपिच्छावस्तिश्चशस्यते ॥ १४ ॥

छर्दि दाह सुई चुभतीहुई सी मालूम होना और गुदासे आपही आप मल निकलना यह लक्षण होते हैं ऐसी अवस्था में घीका फाहा और दूधकी पिच्छावस्ति हित होतीहै ॥ १४॥

नवावहतिमन्दस्तुवाह्यस्त्वाशुनिवर्त्तते । स्नेहस्तत्रपुनःसम्यक्प्रणेयः सिद्धिमिच्छता ॥ १५ ॥

बहुत धीरे २ वस्ति देने से औषध ठीक स्थानमें न जाकर शीघ्रही निकल आती है इससे उसका कुछ गुण नहीं होताहै ऐसी अवस्था में वस्ति के गुणोंकी इच्छा करनेवाला वैद्य फिर अनुवासनवस्ति देवै ॥ १५ ॥

अतिप्रपीडितःकोष्ठेतिष्ठत्यायातिवागलम् । तत्रवस्तिर्विरेकश्चजलपीडादिकर्मच ॥ १६ ॥

बहुत दबाकर वस्ति देनेसे वस्तिकी औषध कोष्ठ में ठहरती है अथवा गलेमें चलीजातीहै ऐसी अवस्था में वस्ति विरेचन तथा गलेको दबाना आदिकर्म हित होतेहैं ॥१६॥

तत्रश्लोकः ।

नेत्रवस्तिप्रणेतॄणांदोषानेतान्सभेषजान् । विद्वांस्तत्त्वेनमतिमान्वस्तिकर्माणिकारयेत् ॥ १७ ॥

इति सिद्धिस्थानेनेत्रवस्तिव्यापत्सिद्धिर्नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

तिसमें यह श्लोक है। इस नेत्र वस्ति व्यापादिका सिद्धिनाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने नली वस्ति तथा वस्ति देनेवालों के चिकित्सासहित दोष कहे हैं जो वैद्य इन सबको जानता हो बुद्धिमान् पुरुष उसी के द्वारा वस्तिकर्म करावै ॥ १७ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धिस्थानकानेत्रवस्तिव्यापादिकासिद्धिनाम पाँचवाँअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ५ ॥

छठा अध्याय ॥

वमनविरेचनव्यापत्सिद्धिः ।

अथशोधनयोःसम्यग्विधिमूर्द्धानुलोमयोः । असम्यक्कृतयोश्चैवदोषान्वक्ष्यामिसौषधान् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त वमन विरेचन व्यापत् सिद्धिका व्यख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

इस के उपरान्त वमन तथा विरेचन की अच्छी प्रकार से विधि और वमन विरेचन के बिगड़जाने से होनेवाले दोष तथा उनकी चिकित्सा का वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

अत्युष्णवर्षशीताहिग्रीष्मवर्षाहिमागमाः । तदन्तरेप्रावृडाद्यास्तेषांसाधारणास्त्रयः ॥ २ ॥

ग्रीष्म वर्षा तथा हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में क्रमसे बहुत गर्म्मी बहुत वृष्टि तथा बहुत शीत होता है और इनके मध्यमें प्राविट् शरद् तथा वसन्त ऋतु में क्रम से वृष्टि शीत तथा उष्ण ता साधारण होती है ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रावृट्शुचिनभौज्ञेयौशरदूर्जसहौपुनः । तपस्यश्चमधुश्चैववसन्तःशोधनंप्रति ॥ ३ ॥

आषाढ़ तथा श्रावण इन महीनों को प्राविट् ऋतु कहते हैं कार्तिक तथा अगहन को शरद् ऋतु कहते हैं और फाल्गुन तथा चैत को वसन्त ऋतु कहते हैं यही प्राविट् आदि तीनों ऋतु वमन तथा विरेचन के लिये हितहैं ॥ ३ ॥

एतानृतून्विचिन्त्यैवदद्यात्संशोधनंनृणाम् । स्वस्थवृत्तिमभिप्रेत्य व्याधौव्याधिवशेनतु । कर्मणांवमनादीनामन्तरेष्वन्तरेषुच ॥ ४ ॥ स्नेहस्वेदौप्रयुञ्जीतस्नेहाद्यन्तेप्रयोजयेत् । विसर्पपीडकाशोफकामलापाण्डुरोगिणः । अभिघातविषांर्त्तांश्चनातिस्निग्धान्विरेचयेत् ॥ ५ ॥

जिसको वमन तथा विरेचन देना उचित होवै उसको विचारपूर्वक इन्हीं ऋतुओं में वमन विरेचन करावै स्वस्थता को स्थित रखने के लिये और रोगी के रोगों को दूर करने के लिये वमन तथा विरेचन कराने में बीच २ स्नेहन तथा स्वेदन कराना चाहिये और वमन विरेचन के अन्तमें स्नेहका प्रयोग करना चाहिये जहरवात पिड़िका शोथ कामला पाण्डुरोग चोट लगना और विषदोष इन सबमें रोगीको बहुत स्नेहन न कराके विरेचन कराना चाहिये ॥ ४ । ५ ॥

नातिस्निग्धशरीरायदद्यात्स्नेहविरेचनम् । स्नेहोत्क्लिष्टशरीरायरूक्षंदद्याद्विरेचनम् ॥ ६ ॥

जिसका शरीर बहुत स्निग्ध न हो उसको स्नेहयुक्त विरेचन देना चाहिये और बहुत स्निग्ध शरीरवाले को रूखा विरेचन देना चाहिये ॥ ६ ॥

स्नेहस्वेदोपपन्नेनजीर्णेमात्रावदौषधम् । एकाग्रमनसापीतंसम्यग्योगायकल्पते ॥ ७ ॥

स्नेहन तथा स्वेदन के होजानेपर और भोजनके पचजाने पर सावधान होकर मात्रा के अनुसार वमन तथा विरेचन की औषध पीवै इससे अच्छे प्रकार वमन तथा विरेचन होताहै ॥ ७ ॥

स्निग्धात्पात्राद्यथातोयमयत्नेनप्रणुद्यते । कफादयःप्रणुद्यन्तेस्निग्धाद्देहात्तथौषधैः ॥ ८ ॥

जैसे चिकने पात्र से विना यत्नकेही जल निकल पड़ता है उसी प्रकार स्निग्ध शरीर से औषधियों के द्वारा कफआदिक दोष विना यत्नके ही निकल जाते हैं ॥ ८ ॥

आर्द्रंकाष्ठंयथावह्निर्विष्यन्दयतिसर्वतः । तथास्निग्धस्यवैदोषान्स्वेदोविष्यन्दयेत्स्थिरान् ॥ ९ ॥

जैसे गीले काष्ठ को अग्निमें तपाने से उसका जल सम्पूर्ण टपक आता है इसी प्रकार स्निग्ध पुरुष के स्थिर कफ आदि दोष स्वेदन करने से पिघलते हैं ॥ ९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्लिष्टंवासोयथोत्क्लेश्यमलैःसंशोध्य तेऽम्भसा । स्नेहस्वेदैस्तथोत्क्लेश्य शोध्यतेशोधनैर्मलः ॥ १० ॥

जैसे मैले वस्त्र में रेहूआदि मलिन वस्तु लगाकर मैलको फुलाके जलके द्वारा उस वस्त्रको धोते हैं इसी प्रकार स्नेहन तथा स्वेदन के द्वारा दोषों को उभाड़के वमनआदि संशोधन के द्वारा दोषोंको शुद्ध करते हैं॥१०॥

अजीर्णेवर्द्धतेग्लानिर्विबन्धश्चैवजायते । पीतंसंशोधनञ्चैवविपरीतं प्रवर्त्तते ॥ ११ ॥

अजीर्णमें वमनआदि संशोधनकारक औषध पीनेसे ग्लानि तथा विबन्ध (मलमूत्र का रुकना) होता है और संशोधन की औषध विपरीत मार्गसे प्रवृत्त होती है अर्थात् वमनकारक औषध पीहोतो दस्तआने लगते हैं और विरेचन कारक औषध पीहोतो वमन होने लगता है ॥ ११ ॥

अल्पमात्रंमहावेगंबहुदोषहरंसुखम् । लघुपाकंसुखास्वादंप्रीणनं व्याधिनाशनम् ॥ १२ ॥

जो औषध देखने में थोड़ी होय तथा बहुत वेगयुक्त होय बहुत दोष निकालतीहोय सुखदायक हो परिपाक में हलकी होय दुस्स्वाद न होय मनको प्रसन्न करनेवाली होय रोग नाशक होय ॥ १२ ॥

अविकाराविपन्नञ्चनातिग्लानिकरञ्चतत् । गन्धवर्णरसोपेतंविद्यान्मात्रावदौषधम् ॥ १३ ॥

विकार को नहीं उत्पन्न करनेवाली होय बहुत ग्लानिको नहीं उत्पन्न करनेवाली होय और गंध वर्ण तथा रस से युक्त होय उस औषध को मात्रा के अनुसार जानना चाहिये ॥ १३ ॥

विधूयमानसान्दोषान्कामक्रोधभयादिकान् । एकाग्रमनसापीतंसम्यग्योगायकल्पते ॥ १४ ॥

मनके काम क्रोध तथा भय आदिक दोषोंको दूर करके सावधान होकर पीगई औषध से भलीभांति वमन विरेचन होताहै ॥ १४ ॥

नरःश्वोवमनंपाताभुञ्जीतकफवर्द्धनम् । सुजरंद्रवभूयिष्ठंलघुशीतं विरेचनम् ॥ १५ ॥

जिस मनुष्य को वमनकारक औषध पीनी हो वह एक दिन पहिले कफवर्द्धक वस्तुखावै और जिसको विरेचनकारक औषध पीनी हो वह पहिले दिन सुखपूर्वक पचनेवाली बहुत पतली हलकी तथा शीतल वस्तु खावै ॥ १५ ॥

उत्क्लिष्टाल्पकफत्वेनक्षिप्रंदोषास्त्रवन्तिहि । पीतौषधस्यतुभिषक्शुद्धिलिङ्गानिलक्षयेत् । ऊर्द्ध्वंकफानुगे पित्तेविट्पित्तेऽनुकफेत्वधः ॥ १६ ॥

क्योंकि ऐसे भोजन के द्वारा कफ के उभड़नेसे तथा कफ के क्षीण होजाने से वमन तथा विरेचन के द्वारा शीघ्रही दोष निकलजाते हैं वमनकारक तथा विरेचनकारक औषध पीने के उपरान्त वैद्य शुद्धताके लक्षणों को देखै वमन करते करते जब कफके निकलने के उपरान्त पित्त निकलनेलगै तब जाननाचाहिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि वमन के द्वारा अच्छे प्रकारसे शुद्धता होगई और विरेचन होते होते (दस्तआतेआते) जब मल तथा पित्त निकलनेके उपरान्त कफ निकलने लगै तब जानना चाहिये कि विरेचन के द्वारा अच्छे प्रकार से शुद्धता होगई ॥ १६ ॥

हृतदोषंवदेत्कार्श्यंदौर्बल्यंचेत्सलाघवम् । वामयेत्तुततःशेषमौषधंनत्वलाघवे ॥ १७ ॥

यदि वमनकारक औषध पीकर वमन करते करते कृशता दुर्बलता तथा शरीर का हल्कापन होजाय तो दोष निकलगया जानकर उदर में स्थित बाकी औषध को वमन के द्वारा निकालडालै और यदि शरीर हल्का न होय ॥ १७ ॥

स्तैमित्येऽनिलसङ्गेचनिरुद्गारेऽपिवामयेत् । आलाघवादणुत्वाच्चकफस्याग्निकरंभवेत् ॥ १८ ॥

गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूमहोय वायु रुकीहुई होय तथा डकार न आतीहोय तो जबतक शरीर हल्का न होवै तबतक वमन होने देवै क्योंकि यदि वमन न कराया जाय तो कफके सूक्ष्म होनेके कारण अग्निके बढ़ने का भय रहता है ॥ १८ ॥

वमितेवर्द्धतेवह्निःशमंदोषाव्रजन्ति हि। वमितंलङ्घयेत्सम्यग्जीर्णलिङ्गान्यलक्षयन् । तानिदृष्ट्वातुपेयादिक्रमंकुर्य्यान्नलङ्घनम् ॥ १६ ॥

वमनके उपरान्त अग्नि बढ़तीहै और दोष शान्त होजाते हैं वमनके उपरान्त जो औषध के पचनेके लक्षण न मालूम पड़ैं तो लंघन करावै और जो औषधके पचनेके लक्षण मालूम पड़ैं तो पेया आदि पथ्य का क्रम करावै किन्तु लंघन न करावै ॥ १९ ॥

संशोधनाभ्यांशुद्धस्यहृतदोषस्यदेहिनः । यात्यग्निर्मन्दतांतस्मात्क्रमंपेयादिमाचरेत् ॥ २० ॥

वमन तथा विरेचनके द्वारा दोषोंके निकल जानेसे शुद्ध शरीरवाले पुरुषका अग्नि मन्द होजाताहै इस से पेया आदि पथ्यका क्रमकरनाचाहिये ॥ २० ॥

कफपित्तेऽविशुद्धेऽल्पंमद्यपेवातपैत्तिके ॥ तर्पणादिक्रमंकुर्य्यात्पेयाभिष्यन्दयेद्धितान् ॥ २१ ॥

कफ तथा पित्तके कुछ शुद्ध होजानेपर मद्य पीनेवाले तथा वात पित्तजरोगवाले पुरुषोंके लिये तर्पण (मुनक्का आदि फलोंका तृप्तकारी रस) आदिका क्रम करना चाहिये क्योंकि इन पुरुषों को पेया देने से अभिष्यन्द होता है ॥ २१ ॥

अनुलोमोऽनिलःस्वास्थ्यंक्षुत्तृष्णेऊर्जोमनस्विता । लघुत्वमिन्द्रियोद्गारशुद्धिर्जीर्णौषधाकृतिः ॥ २२ ॥

वायुका नीचेके मार्गसे निकलना स्वस्थता क्षुधा तृषा बल मनस्विता (दिलेरी) शरीर का हल्का होना इन्द्रियोंका निर्म्मल होना और शुद्ध डकार आना यह औषधके पचजाने के लक्षण हैं ॥ २२ ॥

क्लमोदाहोऽङ्गमर्दश्चभ्रममूर्च्छाशिरो

CC-0. Gangamahal ... Collection. Digitized by eGangotri

रुजा । अरतिर्बलहानिश्चसावशेषौषधाकृतिः ॥ २३ ॥

ग्लानि दाह अङ्गमर्द भ्रम मूर्च्छा शिरमें पीड़ा बेचैनी और बलकी हानि यह औषध पीकर वमन विरेचन होजाने के उपरान्त भी उदर में कुछ औषध बाकी रहने के लक्षण हैं ॥ २३ ॥

अकालेऽल्पातिमात्रञ्चपुराणंनचभावितम् । असम्यक्संस्कृतञ्चैवव्यापद्येतौषधंध्रुवम् ॥ २४ ॥

असमय में मात्रासे न्यून तथा अधिक पुरानी अच्छे प्रकारसे नहीं घोटीगई और अच्छेप्रकार से नहीं बनाईगई औषध अवश्य हानिकारक होती है ॥ २४ ॥

आध्मानंपरिकर्त्तिश्चस्रावोहृद्गात्रयोर्ग्रहः । जीवादानंसविभ्रंशःस्तम्भःसोपद्रवःक्लमः ॥ २५ ॥

अफरा गुदा में कैंचीसे काटनेकीसी पीड़ा होना गुदासे मैल बहना हृदय तथा अङ्गों में पीड़ा होना प्राणोंका व्याकुल होना विभ्रंश स्तम्भ उपद्रव और ग्लानि ॥ २५ ॥

अयोगादतियोगाच्चदशैताव्यापदोमताः । प्रेष्यभैषज्यवैद्यानांवैगुण्यादातुरस्यच । शुद्धोत्क्लिष्टेनदुर्गन्धमहृद्यमतिबाध्यते ॥ २६ ॥

यह दश दोष अयोग तथा अतियोग से होते हैं सेवक औषध वैद्य तथा रोगीकी विगुणता (पूर्वोक्त गुणों से युक्त न होना) से यह अयोग तथा अतियोग होता है शुद्ध उत्क्लिष्ट औषधकेद्वारा वमन विरेचन करानेसे दुर्गन्ध तथा हृदय को अहित और बाधा होती है ॥ २६ ॥

योगःसम्यक्प्रवृत्तिःस्यादमितोगोऽतिवर्त्तनम् । अयोगःप्रातिलोम्येननचाल्पंवाप्रवर्त्तनम् ॥ २७ ॥

वमन तथा विरेचनके अच्छे प्रकारसे होने को योग कहते हैं अधिक होने को अतियोग कहते हैं और वमन तथा विरेचन के उलटे मार्ग्ग से निकलने को न निकलने को तथा स्वल्प निकलने को अयोग कहते हैं ॥ २७ ॥

श्लेष्मोत्क्लिष्टेनदुर्गन्धमहृद्यंनातिवाबहु । विरेचनमजीर्णेचपीतमूर्द्ध्वंप्रवर्त्तते ॥ २८ ॥

कफके उभड़ने पर दुर्गंधित हृदय को अप्रिय अथवा बहुत विरेचन कारक औषध पीने से अथवा कफके उभड़ने पर तथा अजीर्ण में विरेचनकारक औषध पीने से वह औषध ऊपर को प्रवृत्त होती है अर्थात् वमन होजाता है ॥ २८ ॥

क्षुधार्त्तमृदुकोष्ठाभ्यांस्वल्पोक्लिष्टकफेनवा । तीक्ष्णंपीतंस्थितंक्षुब्धंवमनंस्याद्विरेचनम् । अयोगेतत्रकर्त्तव्यंसमासेनाभिधीयते ॥ २९ ॥

भूखे कोमल कोष्ठवाले अथवा अच्छे प्रकार से नहीं उभड़ेहुये कफवाले पुरुषों को पिलाई गई तीक्ष्ण वमनकारक औषध उदर में क्षुभित होकर विरेचन को उत्पन्न करती है ऐसे अयोगमें जो करना चाहिये वह संक्षेपसे कहाजाता है ॥ २९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रातिलोम्येनदोषाणांहरणात्स्वकृच्छ्रतः। अयोगसंज्ञंकृच्छ्रेणनचागच्छतिचाल्पशः ॥ ३० ॥

वातादि दोषोंको प्रतिलोमता (उल्टापन) से निकालने के कारण दोष अच्छे प्रकार से नहीं निकलते इसको अयोग कहते हैं और कष्ट से थोड़े २ दोषों के निकलने को अयोग कहते हैं ३० ॥

तीतौषधोनशुद्धश्चेज्जीर्णेतस्मिन्पुनःपिबेत्। औषधंनत्वजीर्णेऽन्यद्भयंस्यादतियोगतः ॥ ३१ ॥

वमन तथा विरेचनंकारक औषध पीकर यदि अच्छे प्रकार से शुद्ध न होय तो उस औषधके पचजाने पर फिर औषध पीनी चाहिये परन्तु औषधके विना पचे दूसरी बार औषध न पीवै क्योंकि ऐसा करने से अतियोग होने का भय रहताहै ॥ ३१ ॥

कोष्ठस्यगुरुतांज्ञात्वालघुत्वंबलमेव च। अयोगेमृदुवादद्यादौषधंतीक्ष्णमेववा ॥ ३२ ॥

कोष्ठके भारीपन हल्केपन तथा बल को जानकर अयोगमें मृदु अथवा तीक्ष्ण औषध फिर पीवै ॥ ३२ ॥

वमनंनतुदुश्छर्द्यांमृदुकोष्ठेविरेचनम्। पाययेतौषधंभूयोहन्यात्पीतंपुनर्हितौ ॥ ३३ ॥

जिस पुरुषको बहुत कष्टसे छर्दि होतीहोय उसको वमनकारक औषध और जिसपुरुषको बहुत कष्ट से विरेचन होताहो उसको विरेचनकारक औषध फिर न पिलावै क्योंकि ऐसे पुरुषों को फिर वमन विरेचनकारक औषध पिलाने से उनकी मृत्यु होजाती है ॥ ३३ ॥

अस्निग्धास्विन्नदेहस्यरूक्षस्यानवमौषधम्। दोषानुत्क्लिश्यनिर्हर्त्तुमशक्तंजनयेद्गदान् ॥ ३४ ॥

स्नेहन तथा स्वेदन रहित रूखे शरीरवाले पुरुषको पिलाईगई पुरानी औषध दोषों को उभाड़ती है और उनको निकालने में समर्थ न होकर इन रोगोंको उत्पन्न करतीहै ३४ ॥

विभ्रंशंश्वयथुंहिक्कांतमसोदर्शनंभृशम्। पिण्डिकोद्वेष्टनंकण्डूमूर्वोःसादंविवर्णताम् ॥ ३५ ॥

अर्थात् विभ्रंश शोथ हिचकी अन्धकार दिखाई देना पिंडलियों का ऐंठना खुजली और जांघोंकी शिथिलता वर्ण का बिगड़ना इन रोगों को उत्पन्न करती है ॥ ३५ ॥

स्निग्धस्विन्नस्यचात्यल्पंदीप्ताग्नेर्जीर्णमौषधम्। शीतैर्वास्तम्भयेत्सामेदोषानुत्क्लिश्यनाहरेत् ॥ ३६ ॥

स्नेहन तथा स्वेदन किये हुये और दीप्त अग्निवाले पुरुषको पिलाईगई पुरानी थोड़ी औषध अथवा शीतल क्रिया व आमदोष के द्वारा रुकेहुये गुणवाली औषध दोषों को उभाड़ती तो है ॥ ३६ ॥

तानेवजनयेद्रोगानयोगः सर्वएवसः। विज्ञायमतिमांस्तत्रयथोक्तांकारयेत्क्रियाम् ॥ ३७ ॥

परन्तु उनके निकालने में समर्थ न होकर पहिले कहेहुये विभ्रंश आदि रोगोंको उत्पन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करती है इस को भी वमन तथा विरेचन का अयोग कहते हैं बुद्धिमान् वैद्य ऐसी अवस्थाओं में विचार करके यथोक्त चिकित्सा करे ॥ ३७ ॥

तंतैललवणाभ्यक्तंशिवन्नंप्रस्तरसङ्करैः। पाययेतपुनर्जीर्णेसमूत्रैर्वानिरूहयेत् ॥ ३८ ॥

जिस पुरुष को वमन तथा विरेचन का अयोग हुआहो उसके शरीर में सैंधवलवणयुक्त तैल मलवाकर प्रस्तर तथा संकरस्वेद (इसकी विधि सूत्रस्थान के स्वेदाध्यायमें कहीगईहै) देकर भोजन के पचजानेपर फिर औषध पिलावै अथवा औषधियों के गोमूत्रयुक्त काढ़ेकेद्वारा निरूहवस्ति देवै ॥ ३८ ॥

निरूढश्चरसैर्धन्वैर्भोजयित्वाऽनुवासयेत्। फलमागधिकादारुसिद्धतैलेनमात्रया ॥ ३९ ॥

फिर निरूहवस्ति के अच्छे प्रकार होजाने पर मरुदेश के जीवोंके मांसके रसके साथ भोजन कराके मैनफल पीपरि तथा देवदारु के साथ पाक कियेगये तैलकेद्वारा मात्राके अनुसार अनुवासनवस्ति देवै ॥ ३९ ॥

स्निग्धंवातहरैःस्नेहैःपुनस्तीक्ष्णेनशोधयेत्। नचातितीक्ष्णेनततोह्यतियोगस्तुजायते। अतितीक्ष्णंक्षुधार्त्तस्यमृदुकोष्ठस्यभेषजम् ॥ ४० ॥

तदनन्तर वायुनाशक घृतआदि स्नेहों के द्वारा स्नेहन करके दूसरी बार तीक्ष्ण औषध पिलाकर वमन तथा विरेचन करावै परन्तु बहुत तीक्ष्ण औषधकेद्वारा वमन विरेचन न करावे क्योंकि उसमें अयोग होताहै भूँखे तथा कोमल कोष्ठवाले पुरुष को पिलाईगई बहुत तीक्ष्ण औषध ॥ ४० ॥

हृत्वाशुविट्पित्तकफान्धातूनिस्रावयेद्द्रवान्। बलस्वरक्षयंदाहंकण्ठशोषंक्लमंतृषाम्। कुर्य्याच्चमधुरैस्तत्रशेषमौषधमुल्लिखेत् ॥ ४१ ॥

विष्ठा पित्त तथा कफ को शीघ्रही निकाल कर शरीर की अन्य द्रव धातुओं को निकालती है इससे बल तथा स्वरका क्षीण होना दाह कण्ठका सूखना ग्लानि तथा तृषा यह रोग उत्पन्न होते हैं ऐसी अवस्था में मधुर औषधियोंकेद्वारा बाकी औषध को वमन कराके निकाल डालै ॥ ४१ ॥

वमनेतुविरेकःस्याद्विरेकेवमनंमृदु। परिषेकावगाहाद्यैःसुशीतैःस्तम्भयेच्चतम् ॥ ४२ ॥

जो अधिक वमन होय तो हल्की विरेचनकारक औषध पिलावै और जो अधिक विरेचन होय तो हल्की वमनकारक औषध पिलावै और तरारा तथा स्नान आदि शीतल क्रियाओं के द्वारा वमन तथा विरेचन को रोकै ॥ ४२ ॥

कषायमधुरैःशीतैरन्नपानौषधैस्तथा। रक्तपित्तातिसारघ्नैर्दाहज्वरहरैरपि ॥ ४३ ॥

और कषैले मधुर तथा शीतल अन्न पान तथा औषधोंकेद्वारा वमन तथा विरेचन को रोकै और रक्तपित्त अतीसार दाह तथा ज्वर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाशक औषधियोंकेद्वारा वमन तथा विरेचन को रोंकै ॥ ४३ ॥

अञ्जनंचन्दनोशीरमज्जासृक्शर्करोदकम् । लाजचूर्णैःपिबेन्मन्थमतियोगहरंपरम् ॥ ४४ ॥

रसौंत चन्दन खस बकरेका रुधिर और शक्करका शरवत इनके साथ खीलोंका चूर्ण मिलाकर पीने से विरेचन के अतियोग का नाश होताहै ॥ ४४ ॥

शुङ्गाभिर्वावटादीनांसिद्धांपेयांसमाक्षिकाम् । वर्चःसंग्राहिकैःसिद्धंक्षीरंभोज्यञ्चदापयेत् ॥४५॥ जाङ्गलैर्वारसैर्भोज्यंपिच्छावस्तिंचदापयेत् । मधुरैरनुवास्यश्चसिद्धेनक्षीरसर्पिषा ॥ ४६ ॥

बर्गद आदि वृक्षोंके टिंभुओं के साथ पाक कियीगई पेयामें शहद मिलाकर पीनेसे विरेचनके अतियोग का नाश होता है मल को रोंकनेवाली औषधियों के साथ पाक किये गये दूधके साथ भोजनके पदार्थों को खानेसे विरेचन के अतियोगका नाश होताहै हिरन आदि जांगल जीवोंके मांसके रसके साथ भोजन करनेसे पिच्छावस्ति देने से और मधुर औषधियोंके साथ पाक कियेहुये दूध तथा घीकेद्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे विरेचन के अतियोगका नाश होताहै ॥ ४५ । ४६ ॥

वमनस्यातियोगेतुशीताम्बुपरिषेचितम् । पिबेत्फलरसैर्मन्थंसघृतक्षौद्रशर्करम् ॥ ४७ ॥

वमन के अतियोगमें रोगी पर शीतलजल छिड़कना चाहिये और मुनक्का आदि फलों के रसमें मंथ घी शक्कर तथा शहद मिलाकर पिलाना चाहिये ॥ ४७ ॥

सोद्गारायाभृशंवम्यांमूर्च्छायांधान्यमुस्तयोः । समधूकाञ्जनंचूर्णंलेहयेन्मधुसंयुतम् ॥ ४८ ॥

डकारसहित वहुत वमनसे मूर्च्छा आनेपर धनियां नागरमोथा मुलेठी तथा रसौंत के चूर्ण को शहद में मिलाकर चटावै ॥ ४८ ॥

वमतोऽन्तःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहाः । स्निग्धाम्ललवणैर्हृद्यैर्यूषक्षीररसैर्हिताः ॥ ४९ ॥

वमन करते २ जिह्वा के भीतर प्रविष्ट होजाने पर स्निग्ध खट्टे नमकीन तथा हृदय को हित यूष दूध तथा मांसरसयुक्त कवलग्रह मुख में रखावै ॥ ४९ ॥

फलान्यम्लानिखादेयुस्तस्यचान्येऽग्रतोनराः । निःसृतान्तुतिलद्राक्षाकल्कलिप्तांप्रवेशयेत् ॥ ५० ॥

और उसपुरुष के आगे अन्य पुरुष अनार आदि खट्टेफल खावैं यदि वमन होते२ जिह्वा बाहर निकलपरै तो तिल तथा मुनक्के का कल्क जिह्वा में मलकर उसको भीतर प्रविष्ट करै ॥ ५० ॥

वाग्ग्रहानिलरोगेषुघृतमांसोपसाधिताम् । यवागूंतनुकांदद्यात्स्नेहस्वेदौचबुद्धिमान् ॥ ५१ ॥

वमन करते २ जो वाणी रुकजाय तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोई वातजरोग होय तो बुद्धिमान् वैद्य घी तथा मांस के साथ पाक कीगई पतली यवागू पिलावै और स्नेहन तथा स्वेदन करावै॥५१॥

वमितश्चविरिक्तश्चमन्दाग्निश्चविलङ्घितः। अग्निप्राणविवृद्ध्यर्थंक्रमंपेयादिकंभजेत् ॥ ५२ ॥

वमित (वमन कियेहुये) विरिक्त (विरेचन कियेहुये) मंदाग्नि तथा विलंघित (लंघन कियेहुये) पुरुष अग्नि तथा बलकी वृद्धि के लिये पेया आदि का क्रमसे सेवनकरैं ॥५२॥

बहुदोषस्यरूक्षस्यहीनाग्नेरल्पमौषधम्। सोदावर्त्तस्यचोत्क्लिश्यदोषान्मार्गान्निरुध्यच ॥ ५३ ॥

बहुत दोषवाले रूखे मंदाग्नि तथा उदावर्त्तरोगवाले पुरुषों को खिलाई गई स्वल्पऔषध दोषोंको उभाड़कर मार्गोंको रोंककर५३॥

भृशमाध्मापयेन्नाभिंपृष्ठपार्श्वशिरोरुजाम्। श्वासविण्मूत्रवातानांसङ्गंकुर्य्याच्चदारुणम् ॥ ५४ ॥

नाभि में बहुत अफरा उत्पन्न करती है पीठ पशुली तथा शिर में पीड़ा उत्पन्न करती है और श्वास विष्ठा मूत्र तथा वायु को रोंकती है ॥ ५४ ॥

अभ्यङ्गस्वेदवर्त्त्यादिसनिरूहानुवासनम्। उदावर्त्तहरंसर्वंकर्माध्मातस्यशस्यते ॥ ५५ ॥

ऐसी अवस्था में अफरा रोगवाले पुरुषको अभ्यङ्ग स्वेदन वर्त्तिक्रिया (औषधियों की बत्ती बनाकर गुदा में रखना) निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्ति और उदावर्त्तनाशक सम्पूर्ण चिकित्साहित होती है ॥ ५५ ॥

स्निग्धेनगुरुकोष्ठेनसामेबलवदौषधम्। क्षामेणमृदुकोष्ठेनश्रान्तेनाल्पबलेनवा ॥ ५६ ॥ पीतंगत्वाशुदंसाममाशुदोषंनिरस्यच। तीव्रशूलांसपिच्छास्रांकरोतिपरिकर्तिकाम् ॥ ५७ ॥

स्निग्ध भारी कोष्ठवाले आमयुक्त कृश कोमल कोष्ठवाले थकेहुये तथा निर्बल पुरुषों को पिलाई गई बलवान् औषध शीघ्रहीआमसहित दोषको निकालकर गुदा में अत्यन्त शूल तथा लबलसे रुधिर के स्राव (बहना) से युक्त परिकर्त्तिका (कैंची से काटनेकीसी पीड़ा को उत्पन्न करती है ॥ ५६। ५७ ॥

लंघनंपाचनंसामेरूक्षोष्णंलघुभोजनम्। बृंहणीयोविधिःसर्वःक्षामस्यमधुरस्तथा ॥ ५८ ॥

ऐसी अवस्थामें आमयुक्त पुरुषको लंघन पाचन (औषधियों के द्वारा दोष को पचना) और रुक्ष उष्ण तथा हल्का अन्न हित होताहै और कृश पुरुष को सम्पूर्ण धातुवर्द्धक विधि तथा मधुरवस्तु हित होतीहै ५८॥

आमेजीर्णेतुबन्धश्चेत्क्षाराम्लंलघुशस्यते। पुष्पकासीससमिश्रंवाक्षारेणलवणेनच ॥ ५९ ॥

आमके पचजानेपर यदि आमका कुछ सम्बन्ध बनारहै तो क्षार तथा खट्टी हल्की वस्तु खानी चाहिये अथवा हीरा कसीस तथा दूध लवण मिलाकर पीना चाहिये ॥ ५९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सदाडिमरसंसर्पिःपिबेद्वातेऽधिकेस ति। दध्यम्लंभोजनेपानेसंयुक्तंदा डिमत्वचा ॥ ६० ॥

अनारके रसयुक्त घी वायुकी अधिकता में पीवै अथवा अनार की छालसे युक्त खट्टा दही खावे तथा पीवै ॥ ६० ॥

देवदारुतिलानांवाकल्कमुष्णाम्बु नापिबेत्। अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षकद म्बैर्वाशृतंपयः ॥ ६१ ॥

अथवा देवदारु तथा तिलों को पीसकर गर्मजलके साथ पीवै अथवा पीपर गूलर पकरिया तथा कदम्ब के साथ पाक कियागया दूध पीवै ॥ ६१ ॥

कषायमधुरंवास्तिंपिच्छावस्तिमथा पिवा। यष्टीमधुकसिद्धंवास्नेहव स्तिंप्रदापयेत् ॥ ६२ ॥

अथवा कषैली तथा मधुर औषधियोंकेद्वारा वस्ति पिच्छावस्ति या मुलेठी के साथ पाक कियेगये स्नेहकेद्वारा अनुवासनवस्तिदेवै६२॥

अल्पन्तुबहुदोषस्यदोषमुत्क्लिश्यभे षजम्। अल्पाल्पंस्रावयेत्कण्डूंशो फकुष्ठानिगौरवम् ॥ ६३ ॥

बहुत दोषवाले को पिलाईगई स्वल्प औषध दोष को उभाड़कर थोड़ा २ निकालती है और खुजली शोथ कुष्ठ गौरव (शरीरका भारी मालूम होना) ॥ ६३ ॥

कुर्य्याच्चाग्निवधोत्क्लेशस्तैमित्यारु चिपाण्डुताम्। परिस्रावगतंदोषंश मयेद्वामयेदपि ॥ ६४ ॥

मन्दाग्नि मतली शरीरका गीले कपड़े से ढकाहुआसा मालूम होना अरुचि पाण्डुवर्ण होना तथा स्राव इन रोगों को उत्पन्न करती है ऐसी अवस्थामें दोष को औषध पिलाकर शान्त करै अथवा वमन कराके दोष को निकालै ॥ ६४ ॥

स्नेहितंवाणुनस्तीदणंपाययेच्चविरेच नम्। शुद्धेचूर्णासवारिष्टान्संस्कृतां श्चप्रदापयेत् ॥ ६५ ॥

अथवा स्नेहन कराके फिर विरेचनकारक तीक्ष्ण औषध पिलावै और शरीरके शुद्धहो जाने पर संस्कार किया हुआ चूर्ण आसव तथा अरिष्टों का सेवन करावै ॥ ६५ ॥

पीतौषधस्यवेगानांनिग्रहान्मारुताद यः। कुपिताहृदयंगत्वाघोरंकुर्वन्ति हृद्गदम् ॥ ६६ ॥

वमनकारक अथवा विरेचनकारक औषध पीकर वमन तथा विरेचनके वेगको रोकने से कुपित हुये वातआदिदोष हृदयमें जाकर घोर हृद्रोग को उत्पन्न करते हैं ॥ ६६ ॥

सहिक्काश्वासपार्श्वार्त्तिदैन्यलाला क्षिविभ्रमैः। जिह्वांखादतिनिःसंज्ञो दन्तान्किटिकिटापयन् ॥ ६७ ॥

इससे रोगी हिचकी खांसी पशुलियों की पीड़ा दीनता लार बहना और नेत्रोंकी पीड़ा इन रोगोंसे व्याकुल होकर अपनी जिह्वा को चबाता है और संज्ञारहित होकर दांतों को कटकटाता है ॥ ६७ ॥

नगच्छेद्विभ्रमंतत्रवामयेदाशुतंभि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक्कं । मधुरैः पित्तमूर्च्छार्त्तं कटुभिः कफमूर्च्छितम् ॥ ६८ ॥

ऐसी अवस्था में बुद्धिमान् वैद्य घबड़ावै नहीं किन्तु शीघ्रही यदि पित्तके द्वारा मूर्च्छा आई होय तो मधुर औषधियों के द्वारा और जो कफके द्वारा मूर्च्छा आई होय तो कडुवी औषधियोंके द्वारा वमन करावै ॥ ६८ ॥

पाचनीयैस्ततश्चास्य दोषशेषं विपाचयेत् । कायाग्निञ्च बलञ्चास्य क्रमेणाभिविवर्द्धयेत् ॥ ६९ ॥

तदनन्तर पाचन औषधियों के द्वारा बाकी दोषको पचावै और जठराग्नि तथा बलको क्रमसे बढ़ावै ॥ ६९ ॥

पवनेनातिवमतो हृदयं यस्य पीड्यते। तस्मै स्निग्धाम्ललवणं दद्यात्पित्तकफेऽन्यथा ॥ ७० ॥

वायुकेद्वारा बहुत वमन करते२ जिसके हृदय में पीड़ा होने लगै उसको स्निग्ध खट्टी तथा नमकीन वस्तु खिलावै और पित्त तथा कफ के द्वारा वमन करते करते हृदयमें पीड़ा होने पर इससे विपरीत उपाय करना चाहिये ७०॥

पीतौषधस्य वेगानां निग्रहेण कफेन वा । रुद्धोऽतिच विशुद्धस्य गृह्णात्यङ्गानि मारुतः ॥ ७१ ॥ स्तम्भवेपथुनिस्तोदसादोद्वेष्टार्त्तिमूर्च्छितैः । तत्र वातहरं सर्वं स्नेहस्वेदादि कारयेत् ॥ ७२ ॥

वमन तथा विरेचनकारक औषध पीकर उसके वेगोंको रोकने से तथा कफसे रुकाहुआ वायु अथवा वमन तथा विरेचन के द्वारा बहुत शुद्ध हुये शरीरवाले पुरुष का वायु स्तम्भ कम्प सुई चुभने कीसी पीड़ा शिथिलता ऐंठन तथा मूर्च्छा को उत्पन्न करता है ऐसी अवस्थामें स्नेहन तथा स्वेदन आदि सम्पूर्ण वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ७१ । ७२ ॥

अतितीक्ष्णं मृदौ कोष्ठे लघुदोषस्य भेषजम् । दोषान्हृत्वा विनिर्मथ्य जीवं हरति शोणितम् ॥ ७३ ॥

कोमल कोष्ठवाले को स्वल्प दोष होने पर दीगई तीक्ष्ण औषध दोषों को निकालकर मथकर जीवशोणित (जीवनशक्ति को रखने वाला रुधिर) को निकालतीहै ७३ ॥

तेनान्नं मिश्रितं दद्याद्वायसाय शुनेऽपि वा । भुंक्ते तच्चेद्वदेज्जीवं न भुंक्तेपित्तमादिशेत् ॥ ७४ ॥

उस रुधिरमें अन्न मिलाकर कौवेको अथवा कुत्तेको देवै यदि कौवा अथवा कुत्ता उसे खाडालै तो जानना चाहिये यह जीवशोणित है और जो न खाय तो उसको पित्त जानना चाहिये ॥ ७४ ॥

शुक्लं वा भावितं वस्त्रमाधानं कोष्णवारिणा । प्रक्षालितं विवर्णं चेत्पित्तं शुद्धन्तु शोणितम् ॥ ७५ ॥

अथवा उस रुधिरमें श्वेत वस्त्र भिगोकर उष्ण जलमें धोवै यदि धोने से वस्त्रका वर्ण बिगड़जाय तो उसको पित्त जानना चाहिये और यदि वस्त्रसाफ होजाय तो उसको जीवशोणित जानना चाहिये ॥ ७५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तृषामूर्च्छामदार्त्तस्यकुर्य्यादामरणात्क्रियाम्। तस्यपित्तहरींसर्वामतियोगेचयाहिता ॥ ७६ ॥

जीवशोणित गिरा हुआ जानकर तृष्णा मूर्च्छा तथा मदसे पीड़ित उस रोगीकी मृत्युपर्य्यन्त पित्तनाशक और अतियोगमें कहीहुई सम्पूर्ण चिकित्सा करै ॥ ७६ ॥

मृगगोमहिषाजानांसद्यस्कंजीवतामसृक्। पिबेज्जीवाभिसन्धानंजीवंतद्ध्याशुगच्छति ॥ ७७ ॥

और जीते हुये मृग बैल भैंसे तथा बकरों का ताजा रुधिर शीघ्रही पिलावै इस जीवशोणित को पीनेसे उस पुरुषका जीवशोणित पूर्ण होजाताहै ॥ ७७ ॥

तदेवदर्भमृदितंरक्तंवस्तिंप्रदापयेत्। श्यामाकाश्मर्य्यबदरीदूर्वावीरैः शृतंजलम् ॥ ७८ ॥

अथवा इन्हीं जीवों के रुधिरमें कुश मलकर उसके द्वारा वस्ति देवै निशोथ खँभारी के फल बेर दूब तथा काकोली इनके साथ पाक कियेहुये जलमें ॥ ७८ ॥

घृतमण्डाञ्जनयुतंवस्तिंशीतंप्रदापयेत्। पिच्छावस्तिंसुपीतंवाघृतमण्डानुवासनम् ॥ ७९ ॥

घी तथा रसौत मिलाकर शीतल करके वस्ति देवै पिच्छावस्ति देवै अथवा घृतयुक्त माड़के द्वारा अनुवासनवस्ति देवै ॥ ७९ ॥

गुदभ्रंशंकषायैश्चस्तम्भयित्वाप्रवेशयेत्। सामगन्धर्वशब्दांश्चसंज्ञानाशेऽस्यकारयेत् ॥ ८० ॥

और जो उस पुरुषकी कांच निकल आई हो तो कषैली औषधियों के द्वारा मलकर उसको प्रविष्ट करै और यदि उस पुरुषकी संज्ञा नष्ट होगई हो तो साम (तसल्ली देना) के शब्द तथा गीत उसको सुनावै ॥ ८० ॥

यदाविरेचनंपीतंविडन्तरवातिष्ठते। वमनंभेषजान्तंवादोषानुत्क्लेश्यना वहेत् ॥ ८१ ॥

जब विरेचनकारक औषध पीकर केवल मलही गिरता है और वमनकारक औषध पीकर केवल पीहुई औषधही गिरती है किन्तु दोष उभड़कर नहीं गिरते हैं ॥ ८१ ॥

तदाकुर्वंतिकण्ड्वादीन्दोषाःप्रकुपितागदान्। सविभ्रंशोमतस्तत्रस्याद्यथाव्याधिभेषजम् ॥ ८२ ॥

तब कुपित हुये वातआदिदोष खुजली आदि रोगों को उत्पन्न करते हैं इसी को वमन तथा विरेचन का विभ्रंश कहते हैं इसमें रोग के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८२ ॥

पीतंस्निग्धेनसस्नेहंतद्दोषैर्मार्दवाद्घृतम्। नवाहयतिदोषांस्तुस्वस्थानात्स्तम्भयेच्चतान् ॥ ८३ ॥

स्निग्ध पुरुष को पिलाईगई स्नेहयुक्त वमनकारक तथा विरेचनकारक औषध कोमलता के कारण दोषोंको नहीं निकालतीहै किन्तु अपने स्थानसे च्युतहुये (गिरेहुये) दोषोंको जकड़ देती है ॥ ८३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातसङ्गगुदस्तम्भशूलैःक्षरतिचा
ल्पशः । तीक्ष्णंवस्तिंविरेकंवाद
द्यात्लङ्घनपाचनम् ॥ ८४ ॥

इस से वायुका रुकना, गुदाका जकड़ना तथा शूल और कुछ कुछ दोषोंका बहना यह रोग होते हैं ऐसी अवस्था में तीक्ष्णवस्ति तथा विरेचन देना चाहिये और लंघन तथा पाचन कराना चाहिये ॥ ८४ ॥

रूक्षंविरेचनंपीतंरूक्षेणाल्पबलेन
वा । मारुतंकोपयित्वाशुकुर्या
द्घोरानुपद्रवान् ॥ ८५ ॥

रूक्ष अथवा स्वल्प बलवान् पुरुषको पिलाईगई वमनकारक तथा विरेचनकारक रूखी औषध शीघ्रही वायुको कुपित करके घोर उपद्रवों को उत्पन्न करती है ॥ ८५ ॥

स्तम्भशूलानिघोराणिसर्वगात्रे
षुमारुतः । स्नेहस्वेदादिकस्तत्र
कार्य्योवातहरोविधिः ॥ ८६ ॥

और वायु उस पुरुष के सम्पूर्ण शरीर में भयानक स्तम्भ तथा शूलको उत्पन्न करता है ऐसी अवस्था में स्नेहन तथा स्वेदन आदि सम्पूर्ण वातनाशक विधि करनी चाहिये ८६॥

स्निग्धस्यगुरुकोष्ठस्यमृदूत्क्लेश्यौ
षधंकफम् । पित्तंवातञ्चसंरुध्यसत
न्द्रागौरवंक्लमम् ॥ ८७ ॥

स्निग्ध तथा भारी कोष्ठवाले पुरुष को पिलाईगई वमनकारक तथा विरेचनकारक मृदु औषध कफ को उभाड़कर और पित्त तथा वायुको रोंककर तन्द्रा शरीर का भारीपन ग्लानि ॥ ८७ ॥

दौर्बल्यञ्चाङ्गसादञ्चकुर्य्यादाशुत
दुल्लिखेत् । लङ्घनंपाचनञ्चात्र
स्निग्धेतीक्ष्णञ्चशोधनम् ॥ ८८ ॥

दुर्बलता तथा अङ्गोंकी शिथिलता इन रोगोंको उत्पन्न करती है ऐसी अवस्था में वमन कराकर उस को शीघ्रही निकाल डालना चाहिये लंघन तथा पाचन कराना चाहिये और स्निग्ध पुरुषको तीक्ष्ण वमनआदि संशोधन देना चाहिये ॥ ८८ ॥

तत्रश्लोकौ ।

इत्येताव्यापदःप्रोक्ताःसर्वाहिसचि
कित्सिताः । वमनस्यविरेकस्यकृ
तस्याकुशलैर्नृणाम् ॥ ८९ ॥

इसमें यह दो श्लोक हैं। इस प्रकार मूर्ख वैद्योंसे दियेगये वमन तथा विरेचन से होने वाले सम्पूर्ण रोग चिकित्सा सहित कहेगये ८९

एतान्विज्ञायमतिमानवस्थाश्चैवत
त्त्वतः । कुर्य्यात्संशोधनंसम्यगा
रोग्यार्थीनृणांसदा ॥ ९० ॥

इतिसिद्धिस्थानेवमनविरेचनव्यापत्सिद्धि
र्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

इनको जानकर और अवस्थाओं को जानकर मनुष्यों के आरोग्य का सदैव चाहने वाला बुद्धिमान् वैद्य वमन आदि संशोधन अच्छे प्रकार से करावै ॥ ९० ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धि-
स्थानकावमनविरेचनव्यापत्सिद्धिनाम
छठाअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सातवाँअध्याय ॥

वस्तिव्यापत्सिद्धिः।

धीधैर्य्यौदार्य्यगाम्भीर्य्यक्षमादमतपोनिधिम्। पुनर्वसुंशिष्यगणःपप्रच्छविनयान्वितः॥ १॥

इसके उपरान्त वस्तिव्यापत्सिद्धि का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा॥

बुद्धि धैर्य्य उदारता गंभीरता क्षमा इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियों का रोकना) तथा तपके निधि भगवान् आत्रेयजी से सम्पूर्ण शिष्यों ने नम्रतापूर्वक पूछा॥ १॥

काःकतिव्यापदोवस्तेःकिंसमुत्थानलक्षणाः। काश्चिकित्साइतिपृष्टाञ्छ्रुत्वातानब्रवीद्गुरुः॥ २॥

कि हेभगवन् वस्तिके बिगड़ने से कितने तथा कौन रोग होते हैं और उन के निदान लक्षण तथा यत्न क्या हैं शिष्यों के यह प्रश्न सुनकर भगवान् आत्रेयजीने कहा॥ २॥

नातियोगौक्लमाध्मानौहिक्काहृत्प्राप्तिरूर्द्ध्वता। प्रवाहिकाशिरोऽङ्गार्त्तिःपरिकर्त्तःपरिश्रवः॥ ३॥

कि अयोग अतियोग क्लम आध्मान हिचकी हृत्प्राप्ति ऊर्ध्वगति प्रवाहिका शिरोर्त्ति अंगार्त्ति परिकर्त्तिका तथा परिस्रव॥ ३॥

द्वादशव्यापदोवस्तेरसम्यग्योगसम्भवाः। आसामेकैकशोरूपंचिकित्साञ्चनिबोधत॥ ४॥

यह बारहरोग वस्तिका अच्छे प्रकार प्रयोग न होनेसे होते हैं इनमें से एक २ के लक्षण तथा चिकित्सा हम कहते हैं तुम सुनो॥ ४॥

गुरुकोष्ठेऽनिलप्रायेरूक्षेवातोल्वणेऽपिवा। शीतोऽल्पलवणस्नेहद्रवमात्रोघनोऽपिवा॥ ५॥

भारी कोष्ठवाले अधिक वातवाले रूखे अथवा बिगड़ेहुये वायुवाले पुरुषको दीगई शीतल स्वल्प लवणयुक्त स्वल्प स्नेहयुक्त बहुत पतली अथवा बहुत गाढ़ी॥ ५॥

वस्तिःसंक्षोभ्यतंदोषंदुर्बलत्वादनिर्हरन्। करोतिगुरुकोष्ठत्वंवातमूत्रशकृद्ग्रहम्॥ ६॥

वस्ति निर्बल होने के कारण दोषों को उभाड़कर निकाल नहीं सक्ती है और कोष्ठ का भारी होना वायु मूत्र तथा विष्ठा का रुकना॥ ६॥

नाभिवस्तिरुजंदाहंहृल्लेपंश्वयथुंगुदे। कण्डूगण्डानिवैवर्ण्यमरुचिंवह्निमार्दवम्॥ ७॥

नाभि तथा वस्ति में पीड़ाहोना दाह हृदय लिपाहुआसा मालूम होना गुदा में शोथ खुजली गण्ड वर्ण का बिगड़ना अरुचि और मंदाग्नि इन रोगों को उत्पन्न करती है इसको वस्तिका अयोग कहते हैं॥ ७॥

तत्रोष्णाम्याःप्रमथ्यायाःपानंस्वेदाःपृथग्विधाः। फलवर्त्त्योऽथवाकालंज्ञात्वाशस्तंविरेचनम्॥ ८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस में उष्णमण्ड्या का पीना अनेक प्रकार के स्वेद फलवर्त्ती अथवा समय का विचार करके विरेचन देना हित होताहै ॥ ८ ॥

बिल्वमूलत्रिवृद्दारुयवकोलकुलत्थवान्। सुरादिमूत्रवान्वस्तिःसप्रक्प्रेषितमानयेत् ॥ ९ ॥

इति अयोगव्यापच्चिकित्सा।

अथवा बेल की जड़ निशोथ देवदारु यव बेर तथा कुल्थी इन सबको गोमूत्र तथा सुरा आदि के साथ पीसकर वस्ति देना हित होताहै ॥ ९ ॥

स्निग्धस्विन्नेऽतितीक्ष्णोष्णोमृदुकोष्ठेऽतियुज्यते। तस्यलिङ्गंचिकित्साञ्चशोधनाभ्यांसमाचरेत् ॥ १० ॥

स्नेहन तथा स्वेदन किये हुये कोमल कोष्ठ वाले पुरुष को बहुततीक्ष्ण तथा उष्णवस्ति देनेसे वस्तिका अतियोग होताहै इसके लक्षण तथा चिकित्सा वमन विरेचन के अतियोग के समान हैं ॥ १० ॥

पृश्निपर्णींस्थिरांपद्मंकारमर्य्यंमधुकंबलाम्। पिष्टाद्राक्षांमधूकञ्चक्षीरेतण्डुलधावने ॥ ११ ॥

पृष्णिपर्णी शालपर्णी पद्माख खँभारी के फल मुलेठी बरियारा मुनक्का तथा महुआ इन सबको दूध तथा चावलों के धोवन में पीसकर वस्ति के अतियोगवालेको देवै ॥ ११ ॥

द्राक्षायाःपक्वलोष्टस्यप्रसादोमधुकस्यच। विनीयसघृतंवस्तिंदद्याद्दाहेऽतियोगजे ॥ १२ ॥

इति अतियोगव्यापच्चिकित्सा।

मुनक्का पंचलोष्ठ तथा मुलेठी को पीसकर घी में मिलाकर इस के द्वारा वस्ति के अतियोग में बहुत दाह होने पर वस्ति देवै ॥ १२ ॥

आमदोषेनिरूहेणमृदुनादोषईरितः। रुणद्धिमार्गंवातस्यहन्त्यग्निंमूर्च्छयत्यपि ॥ १३ ॥

आमदोष में हल्की निरूहवस्ति देने से चलायमान हुआ दोष वायु के मार्ग को रोककर अग्नि को नष्ट करता है और मूर्च्छा को उत्पन्न करता है ॥ १३ ॥

क्लमंविदाहंहृच्छूलंमोहवेष्टनगौरवम्। कुर्य्यात्स्वेदैर्विरूक्षैस्तंपाचनैश्चाप्युपाचरेत् ॥ १४ ॥

क्लम (ग्लानि) विदाह हृदय में शूल मोह ऐंठन तथा शरीर का भारी होना इन रोगों को उत्पन्न करता है ऐसी अवस्था में रूखे स्वेदन तथा पाचन औषधियों के द्वारा चिकित्सा करै ॥ १४ ॥

पिप्पलीकतृणोशीरदारुमूर्वाशृतंजलम्। पिबेत्सौवर्चलोन्मिश्रंदीपनंहृद्विशोधनम् ॥ १५ ॥

पीपरि सुगंध तृण खस देवदारु तथा मिरोरफली इन के साथ पाक कियेहुये जल में सोंचरलवण डालकर पिलावै इस से अग्नि दीप्त होती है और हृदय शुद्ध होताहै ॥ १५ ॥

वचानागरसञ्जैलादधिमण्डेनमूर्च्छिताः। पेयाःप्रसन्नयावासुरश्टेनासवेनवा ॥ १६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बच सोंठि सर्ज इलायची इन के चूर्णको दही के तोड़ में प्रसन्ना (मद्यविशेष) अरिष्ट (मद्यविशेष) अथवा आसव में मिला कर पिलावै ॥ १६ ॥

दारुत्रिकटुकंपथ्यांपलाशंचित्रकं शटीम् । पिष्ट्वाकुष्ठञ्चमूत्रेणपिबे त्क्षारांश्चदीपनान् ॥ १७ ॥

देवदारू सोंठि पीपरि मिर्च हड़ ढाख की छाल चीता कचूर तथा कूट इन सबको पीस कर गोमूत्र में मिलाकर पिलावै और अग्नि को दीप्त करनेवाले क्षार गोमूत्र में मिलाकर पिलावै ॥ १७ ॥

वस्तिमस्यविदध्याच्चसमूत्रंदाशमू लिकम् । समूत्रमथवाऽव्यक्तलवणं मधुतैलिकम् ॥ १८ ॥

इति क्लमव्यापच्चिकित्सा ।

दशमूल के काढ़ेमें गोमूत्र मिलाकर वस्ति देवै अथवा शहद तैल तथा गोमूत्र में कुछ लवण मिलाकर पिलावै ॥ १८ ॥

अल्पवीर्य्योमहादोषेरूक्षेक्रूराशये कृतः । वस्तिर्दोषावृतोरुद्धमार्गो रुन्ध्यात्समीरणम् ॥ १६ ॥

बहुत दोषवाले रूखे तथा क्रूर कोष्ठवाले पुरुष को दीगई स्वल्पवीर्य्यवाली वस्ति दोषों के द्वारा ढकी हुई होकर तथा रुकेहुये मार्गवाली होकर वायु को रोंकती है ॥ १९ ॥

सविमार्गोऽनिलःकुर्य्यादाध्मानंम र्मपीडनम् । विदाहंगुरुकोष्ठस्यमु ष्कवङ्क्षणवेदनाम् ॥ २० ॥

इससे अपने मार्ग को छोड़कर जाताहुआ वायु मर्मों को पीड़ित करनेवाले आध्मान (अफरा) को उत्पन्न करता है भारी कोष्ठ वाले के विदाह (हृदयमें जलन पैदाकर के अन्नका देरमें पचना) उत्पन्न करता है अण्ड-कोष तथा जांघों की संधि में पीड़ाको उत्पन्न करता है ॥ २० ॥

रुणद्धिहृदयंशूलैरितश्चेतश्चधाव ति । फलश्यामादिभिःकुष्ठकृष्णा लवणसर्षपैः । धूममाषवचाकि ण्वक्षारचूर्णैर्गुडैःकृताम् ॥ २१ ॥

और हृदय में ऐसा शूल उत्पन्न करता है जिससे व्याकुल होकर मनुष्य इधर उधर दौड़ताहै ऐसी अवस्थामें अच्छे प्रकार से अभ्यङ्ग तथा स्वेदन करके मैनफल तथा निशोथ आदि औषध कूट पीपरि सैंधवलवण सरसों गृहधूम उर्द बच किण्व (जिन वस्तुओं को बहुतदिन सड़ाकर मद्य बनाई जाती है उनको किण्व कहते हैं) तथा जवाखार इन के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर ॥ २१ ॥

करांगुष्ठनिभांवर्त्तियवमध्यांनिधा पयेत् । स्वभ्यक्तस्विन्नगात्रस्यतै लाक्तांस्नेहितेगुदे ॥ २२ ॥

हाथ के अँगूठे के समान मोटी यवाकार बत्ती सी बनालेवै और गुदा में तैल लगाकर वह बत्ती रक्खै ॥ २२ ॥

अथवालवणागारधूमसिद्धार्थकैःकृ ताम् ॥ २३ ॥

अथवा सैंधवलवण गृहधूम तथा सरसों की बत्ती बनाकर गुदा में रक्खै ॥ २३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिल्वादिनानिरूहःस्यात्पीलुसर्षप मूत्रवान् । सरलामरदारुभ्यांसिद्ध श्चैवानुवासनम् ॥ २४ ॥

इति आध्मानव्यापच्चिकित्सा ।

बेल आदि औषध पीलू सरसों तथा गोमूत्र के द्वारा निरूहवस्ति देवै और सरलकाष्ठ तथा देवदारु के साथ पाक किये गये स्नेह के द्वारा अनुवासनवस्ति देवै ॥ २४ ॥

मृदुकोष्ठेऽबलेवस्तिरतितीक्ष्णोऽति निर्हरन् । कुर्य्याद्धिक्कादिकंतत्रहि क्काघ्नंबृंहणञ्चयत् ॥ २५ ॥

कोमलकोष्ठवाले तथा निर्बल पुरुष को दीगई बहुत तीक्ष्णवस्ति दोषों को निश्शेष करके हिचकी को उत्पन्न करती है ऐसी अवस्था में हिचकीनाशक तथा धातुवर्द्धक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २५ ॥

बलास्थिरादिकाश्मर्य्यत्रिफलागुड सैन्धवैः । सप्रसन्नारनालाम्लैस्तैलं पक्वानुवासयेत् ॥ २६ ॥

बरियारा शालपर्णी आदिगण खँभारी के फल तथा त्रिफला इनका काढ़ा गुड़ सैंधवलवण मसन्ना (मद्यविशेष) तथा आरनाल (कांजीविशेष) और अनार आदि खट्टी वस्तु इन के साथ पाक कियेहुये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ २६ ॥

कृष्णालवणयोरक्षंपिबेदुष्णाम्बुना युतम् । धूमलेहरसक्षीरस्वेदाश्चान्न ञ्चवातनुत् ॥ २७ ॥

इति हिक्काव्यापच्चिकित्सा ।

पीपरि तथा सैंधवलवण का चूर्ण गर्म जल में मिलाकर पिलानाचाहिये धूमपान कराना चाहिये अवलेह मांस रस दूध तथा वातनाशक अन्न देना चाहिये और स्वेदन कराना चाहिये ॥ २७ ॥

अतितीक्ष्णःसवातोवानवासम्यक् प्रपीडितः । घट्टयेद्धृदयंवस्तिस्तत्र कासक्षणोत्कटैः ॥ २८ ॥ स्यात्सा म्ललवणस्कन्धकरीरबदरीफलैः । शृतैर्वस्तिर्हितःसिद्धंवातघ्नैश्चानुवा सनम् ॥ २९ ॥

इति हृद्गतव्यापच्चिकित्सा ।

अत्यन्त तीक्ष्ण वायुयुक्त अथवा अच्छेप्रकार से नहीं दबाई गई वस्ति हृदयमें जाकर लगती है इसी को वस्तिकी हृतप्राप्ति कहते हैं ऐसी अवस्था में कुश काश तज अम्लवर्ग लवणवर्ग करील तथा वेर इनके काढ़ेके द्वारा वस्ति देवै और वातघ्न औषधियों के साथ पाक कियेहुये तैलके द्वारा अनुवासनवस्ति देवै ॥ २८।२९ ॥

वातमूत्रपुरीषाणांदत्तवेगान्निगृह्ण तः । अतिवापीडितोवस्तिर्मुखेना यातिवेगवान् ॥ ३० ॥

वस्ति देनेपर वायु मूत्र तथा मलके वेगको रोकने से अथवा वस्ति को बहुत दबाने से बहुत वेगयुक्त वस्ति मुख से निकलने लगती है इस को वस्ति की ऊर्ध्वता कहतेहैं ॥ ३० ॥

मूर्च्छाविकारंतस्यादौहष्ट्वाशीताम्बु नामुखम् । सिञ्चेत्पार्श्वोदरञ्चाधः

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रमृज्यार्द्धीजयेन्नतम् ॥ ३१ ॥

ऐसी अवस्थामें जो रोगीको पहिले मूर्च्छा आवै तो उसके मुखपर शीतल जल छिड़कै पशुली तथा उदर को मलै पङ्खा हांकै ॥३१॥

केशेष्वालम्ब्यचाकाशेधनुषात्रास येच्चतम् । गोखराश्वगजैःसिंहै राजप्रेष्यैस्तथोरगैः ॥ ३२ ॥ उल्काभिरेवमन्यैश्चवस्तिमस्यन्यसे द्धः । वस्त्रपाणिग्रहैःकण्ठोरुन्ध्या न्नम्रियतेयथा ॥ ३३ ॥

हाथ से उस के बाल पकड़कर खींचै और धनुष गौ गधा घोड़ा हाथी सिंह राजा के सिपाही सर्प और उल्का (तेजकासमूह) तथा अन्यभयङ्कर वस्तुवों के द्वारा उसको डरवावै ऐसा करने से वस्ति नीचे को चली जाती है अथवा वस्त्र तथा हाथों के द्वारा उसपुरुष के कण्ठ को इस प्रकार से दबावै जिसमें उसके प्राण न निकलैं ॥ ३२।३३ ॥

प्राणोदाननिरोधाद्धिप्रसिद्धतरमा र्गगः । अपानःपवनोवस्तिंतमा श्ववापकर्षति ॥ ३४ ॥

ऐसा करनेसे प्राण तथा उदान वायु के रुकने के कारण गुदा के मार्ग से जानेवाली अपान वायु शीघ्रही वस्ति को नीचे की ओर खैंच लेजाती है ॥ ३४ ॥

त्वतःक्रमुककल्ककाक्षंपाययेताम्लसं युतम् । औष्ण्यात्तैक्ष्ण्यात्सरत्वा च्चवस्तिस्तस्यानुलोमयेत् ॥ ३५ ॥

तदनन्तर तोलेभर सुपारी पीस के कांजी में मिलाकर पिलावै क्योंकि सुपारी उष्णता तीक्ष्णता तथा सरत्व (दस्तावरहोना) गुण से वस्ति को शीघ्रही गुदा के द्वारा निकालती है ॥ ३५ ॥

पक्वाशयस्थितेस्विन्नेनिरूहोदशमू लिकः । यवकोलकुलत्थैश्चविधेयो मूत्रसाधितः ॥ ३६ ॥

पक्वाशय में वस्ति के स्थित होनेपर पहिले स्वेदन करावे फिर दशमूल यव बेर तथा कुल्थी इनको गोमूत्र में भिगोकर गाढ़ा करके निरूहवस्ति देवै ॥ ३६ ॥

बिल्वादिपञ्चमूलेनसिद्धोवस्तिरुरः स्थिते । शिरःस्थेनावनंधूमःप्रच्छा र्द्यंसर्षपैःशिरः ॥ ३७ ॥

इतिऊर्द्ध्वव्यापच्चिकित्सा ।

वक्षःस्थल में वस्ति के स्थित होनेपर बेल आदि पंचमूल के काढ़े के द्वारा निरूहवस्ति देवै शिरमें वस्ति के स्थित होनेपर शिरमें सरसों का लेप करके नस्य ग्रहण तथा धूम पान करावै ॥ ३७ ॥

स्निग्धस्विन्नेमहादोषेवस्तिर्मृद्वल्प भेषजः । उत्क्लेश्याल्पंहरेद्दोषंजनये च्चप्रवाहिकाम् ॥ ३८ ॥

स्नेहन तथा स्वेदन किये हुये बहुत दोष वाले पुरुष को कोमल तथा स्वल्पवस्तिदेने से वह वस्ति थोड़े से दोष को उभाड़कर निकालती है और प्रवाहिका (बहुतपतलेदस्त आना) को उत्पन्न करती है ॥ ३८ ॥

सवस्तिःपायुशोफायजङ्घोरुसदना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यच । निरुद्धमारुतोजन्तूरभीक्ष्णं संप्रवाहते ॥ ३९ ॥

बस्ति तथा गुदामें शोथ उत्पन्न करती है जँघा तथा पिंडुलियों में शिथिलता करती है और वायु के रुकने से मनुष्य बारम्बार कांखता है ॥ ३९ ॥

स्वेदाभ्यङ्गानिरूहांश्चशोधनीयानुलोमिकान् । विदध्याल्लङ्घयित्वा तुवृत्तिंकुर्य्याद्विरिक्तवत् ॥ ४० ॥

इतिप्रवाहिकाव्यापच्चिकित्सा ।

ऐसी अवस्था में स्वेदन अभ्यङ्ग (तैल आदि मलना) और मलको शुद्ध करने वाली तथा वायुको नीचे के मार्ग से निकालने वाली निरूहवस्तिका प्रयोग करना चाहिये और लंघन कराके विरिक्त (जिसको विरेचन कराया गयाहो उस) पुरुषके समान आचरण कराना चाहिये ॥ ४० ॥

दुर्बलेतीव्रदोषेचदुष्कोष्ठेचतनुर्मृदुः । शीतोऽल्पश्चावृतोदोषैर्वस्तिस्तद्विहतोऽनिलः ॥ ४१ ॥

दुर्बल तीव्र दोषवाले तथा क्रूरकोष्ठवाले पुरुषको दीगई पतली मृदु (जिसमें तीक्ष्ण औषध न हो) शीतल तथा स्वल्पवस्ति दोषों के द्वारा ढकलीजाती है इससे रुका हुआ वायु ॥ ४१ ॥

मार्गैर्गात्राणिसन्धावन्नूर्द्ध्वंमूर्द्धन्युपाहितम् । ग्रीवांमन्येचगृह्णातिशिरःकण्ठंभिनत्तिच । बाधिर्य्यंकर्णनादञ्चपीनसंनेत्रविभ्रमम् ॥ ४२ ॥

स्रोतों के द्वारा अङ्गोंमें दौड़कर ऊपर की ओर जाके मस्तक में स्थित होताहै फिर ग्रीवा तथा गले के पीछेकी नसोंमें पीड़ा उत्पन्न करताहै शिर तथा कण्ठ में फटनेकीसी पीड़ा उत्पन्न करताहै और बधिरता कर्णनाद (कानों में अकस्मात् शब्द सुनाई देना) पीनस तथा नेत्र विभ्रम इन रोगों को उत्पन्न करता है ॥ ४२ ॥

कुर्य्यादभ्यञ्जनंतैललवणेनयथाविधि । युञ्ज्यात्प्रधमनैर्नस्यैर्धूमैरास्यंविरेचयेत् । तीक्ष्णानुलोमिकेनाथस्विन्नंभुक्तेऽनुवासयेत् ॥ ४३ ॥

ऐसी अवस्थामें उस पुरुषके शरीरमें तैल तथा सैंधवलवण एकमें मिलाकर मलै नस्य लेकर उसकी नासिका में फूंकै शिर के दोषों को निकालनेवाला धूमपान करावै विरेचन करावै और स्वेद कराके भोजन के उपरान्त तीक्ष्ण तथा वायु को नीचे के मार्ग से निकालनेवाली निरूहवस्ति देवै ॥ ४३ ॥

स्नेहस्वेदैरनाप्याद्यगुरुतीक्ष्णातिमात्रया । यस्यवस्तिःप्रयुज्येतनातिमात्रंप्रयुज्यते ॥ ४४ ॥

जिस पुरुषको विना स्नेहन स्वेदन कराये भारी तीक्ष्ण उष्ण मात्रासे अधिक अथवा मात्रा से कम वस्ति दीजाती है ॥ ४४ ॥

स्तब्धोदावृत्तकोष्ठस्यरुद्धःस्रोतःसुमारुतः । प्रपन्नोऽङ्गरुजंकुर्य्यात्तंतैललवणान्वितम् । उष्णाम्बुप्रस्तरकाथैःस्वेदैस्तमुपपादयेत् ॥ ४५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसका वायु स्रोतोंमें रुकके कोष्ठकी स्तब्धता तथा उदावर्त रोग को उत्पन्न करता है और सम्पूर्ण अङ्गोंमें पीड़ा होती है ऐसी अवस्थामें तैल लवण से युक्त उष्ण काढ़ा के द्वारा प्रस्तरस्वेद कराना चाहिये ॥ ४५ ॥

सबिल्वतैललवणानिरूहस्तस्यशस्यते । तैलावगाहस्विन्नस्यकारयेदनुवासनम् ॥ ४६ ॥

वेल का तेल पांचो लवण युक्त निरूहवस्ति देनी चाहिये स्वेद कराके तथा तैल में अवगाह कराके अनुवासन वस्ति देनी चाहिये ॥ ४६ ॥

अभुज्यविधिनासम्यक्स्निग्धंकायंततःपरम् । विरेचनैर्निरूहैश्चवस्तिभिश्चानुलोमिकैः ॥ ४७ ॥
इतिशिरःशूलव्यापचिकित्सा ।

फिर विना भोजन कराये पुरुषकी देह में स्नेह मलवाके सम्पूर्ण विधिपूर्वक अनुलोमन करने वाला विरेचन तथा निरूहवस्तिके द्वारा चिकित्सा करे ॥ ४७ ॥

सुस्विन्नस्निग्धदेहस्ययस्यवस्तिर्विधीयते । अतितीक्ष्णोगुरुश्चैवसोऽतिमात्रंप्रवर्त्तयेत् ॥ ४८ ॥

अच्छे प्रकार से स्नेहन तथा स्वेदन किये हुये जिस पुरुषको अत्यन्त तीक्ष्ण तथा भारी वस्ति दीजाती है उसके बहुत दोष निकते हैं ॥ ४८ ॥

सुतेषुतस्यदोषेषुनिरूढस्यातिमात्रशः । स्तब्धोदावृत्तकोष्ठस्यवायुःसंप्रतिहन्यते ॥ ४९ ॥

और बहुत दोषों के निकलने के कारण स्रोतों के रूक्ष होजाने पर उस पुरुष के कोष्ठ में स्तम्भ तथा उदावर्त होता है इस से रुका हुआ वायु ॥ ४९ ॥

विलोमनसमुद्भूतोरुजत्यङ्गानिदेहिनः । गात्रवेष्टननिस्तोदभेदस्फुरणजृम्भणैः ॥ ५० ॥

उल्टा तथा तिरछा होकर सम्पूर्ण अङ्गों में पीड़ा अङ्गोंका ऐंठना सुई चुभनेकी सी पीड़ा फटने की सी पीड़ा अङ्गों का फड़कना और ऐंड़ाई इन रोगों को उत्पन्न करता है ॥ ५० ॥

तंतैललवणाभ्यक्तंसेचयेदुष्णवारिणा । एरण्डपत्रनिष्क्वाथैःप्रस्तरैश्चोपपादयेत् ॥ ५१ ॥

ऐसी अवस्था में रोगी के शरीर में लवण सहित तैल मलकर गर्म जल छिड़कै और रेंडी के पत्तों के काढ़े तथा प्रस्तरस्वेद (सूत्रस्थान का स्वेदाध्याय देखो) के द्वारा चिकित्सा करै ॥ ५१ ॥

यवान्कुलत्थान्कोलानिपञ्चमूलेतथोभये । जलाढकद्वयेपक्त्वापादशेषेणतेनच । कुर्य्यात्सबिल्वतैलोष्णलवणेननिरूहणम् ॥ ५२ ॥

यव कुल्थी बेर तथा दशमूल इन सबको ५१२ तोले जल में डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़े में बेल का तैल तथा सैं-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धवलवख मिलाकर निरूहणवस्ति देवे ५२॥

निरूहणेसमाश्वस्तंद्रोण्यांसमवगा हयेत् । ततोभुक्तवतस्तस्यकारये दनुवासनम् । यष्टीमधुकतैलेनबि ल्वतैलेनवाभिषक् ।। ५३ ॥

इति अङ्गशूलव्यापच्चिकित्सा ।

तदनन्तर निरूहवस्ति देकर रोगीको सावधान करके कठौती में जल भरकर उस में स्नान करावै तदनन्तर भोजन कराके मुलेठी के तैल अथवा वेलके तैलके द्वारा अनुवासन वस्ति देवै ॥ ५३ ॥

मृदुकोष्ठाल्पदोषस्यरूक्षतीक्ष्णोऽति मात्रवान् । वस्तिर्दोषान्निरस्याशु जनयेत्परिकर्त्तिकाम् ॥ ५४ ॥ त्रिकवंक्षणवस्तीनांतोदंनाभेरधोरु जम् । विबन्धाल्पाल्पमुत्थानंगुद निर्लेखनंभवेत् ॥ ५५ ॥

कोमल कोष्ठवाले स्वल्प दोषवाले तथा रूक्षपुरुष को दीगई तीक्ष्ण तथा अधिकमात्रा वाली वस्ति शीघ्रही दोषों को निकालकर परिकर्त्तिका (गुदा में कैंची से काटने की सी पीड़ा) रीड़के नीचे की हड्डी जांघों की संधि तथा वस्ति (मूत्राशय) में सुई चुभने की सी पीड़ा नाभिके नीचे पीड़ा विबन्ध (कब्ज) और थोड़ा थोड़ा मल निकलना इनरोगोंको उत्पन्न करती है ॥ ५४ । ५५ ॥

स्वादुशीतौषधैस्तत्रपयइक्ष्वादिभिः शृतम् । यष्ट्याह्वतिलकल्काभ्यांव स्तिःस्यात्क्षीरभोजिनः ॥ ५६ ॥

ऐसी अवस्था में रोगी को दूध पिलाकर ईख आदि मधुर तथा शीतल औषधियों के साथ पाक कियेहुये दूध में मुलेठी तथा तिलोंका कल्क मिलाकर वस्तिदेवै ॥ ५६ ॥

ससर्जरसयष्ट्याह्वजिङ्गिनीकर्दमा ञ्जनम् । विनीयदुग्धेवस्तिःस्यात्ति क्ताम्लमृदुभोजिनः ॥ ५७ ॥

इति परिकर्त्तव्यापच्चिकित्सा ।

सज्जी मुलेठी मंजीठ कर्दम रसौंत इनको दूध में मिलाकर तिक्त अम्ल तथा कोमल भोजन कियेहुये पुरुष को वस्ति देवे ॥५७॥

पित्तरक्तेऽम्लउष्णोवातीक्ष्णोवालव णोऽथवा । वस्तिर्लिखतिपायुन्तुती क्ष्णोऽतिविदहत्यपि ॥ ५८ ॥

पित्तरक्त रोगमें वहुत खट्टी उष्ण तीक्ष्ण अथवा वहुत लवणयुक्त वस्तिदेने से गुदा छिलजातीहै और वस्तिकी तीक्ष्णता के कारण दाह होने लगता है ॥ ५८ ॥

सविदग्धःस्रवत्यस्रंपित्तञ्चानेकवर्ण वत् । सार्य्यतेबहुवेगेनमोहंगच्छ तिचासकृत् ॥ ५९ ॥

फिर उस विदग्ध पुरुषके रुधिर तथा अनेक वर्णका पित्त गिरता है बहुत वेग से दस्त आता है और रोगी को वारंबार मूर्च्छा आती है ॥ ५९ ॥

आर्द्रशाल्मलिवृन्तैस्तुक्षुण्णैराजंप यःशृतम् । सर्पिषायोजितंशीतंव स्तिमस्मैप्रदापयेत् ॥ ६० ॥

ऐसी अवस्थामें सेमरकी ताजीढेंपी कूट-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर बकरी के दूध में डालकर पाक करलेवै फिर उस दूधको शीतल करके उसमें घी मिलाकर वस्ति देवै ॥ ६० ॥

वटादिपल्लवेष्वेषकल्पोयवतिलेषुच। सुवर्च्चलोपोदिकयोःकर्बुदारेचशस्यते ॥ ६१ ॥

इसी प्रकार बर्गद आदि वृक्षों के कोमल पत्तोंके साथ अथवा यव तथा तिलके साथ अथवा हुर्हुर तथा पोय के साथ अथवा कचनार के साथ पाक कियेहुये शीतल दूधमें घी मिलाकर वस्ति देवै ॥ ६१ ॥

गुदेसेकाःप्रदेहाश्चशीताःस्युर्मधुराश्चये। रक्तपित्तातिसारघ्नीक्रियाचात्रप्रशस्यते ॥ ६२ ॥

इति परिस्रवव्यापच्चिकित्सा।

गुदामें शीतल तथा मधुर तरारा देवै तथा लेप करै और रक्तपित्तनाशक चिकित्सा करै ॥ ६२ ॥

तत्रश्लोकाः।

इत्येताव्यापदःप्रोक्तावस्तेःसाकृतिभेषजाः। बुद्ध्वाकात्स्न्येंनतान्वस्तीन्नियुञ्जन्नापराध्यति ॥ ६३ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। इस प्रकार वस्ति के बिगड़ने से होनेवाले रोग लक्षण तथा औषध सहित कहेगये जो बुद्धिमान् वैद्य इन सब को अच्छे प्रकार जानकर चिकित्सा करताहै वह दोषका भागी नहीं होता है ॥ ६३ ॥

तीक्ष्णत्वंमूत्रबिल्वादिलवणक्षारसर्षपैः। प्राप्तकालंविधातव्यंक्षीराद्यैर्मार्दवंतथा ॥ ६४ ॥

समयके अनुसार गोमूत्र बेल आदि पंचमूल सैंधवलवण यवाखार तथा सरसों इन के द्वारा वस्तिकी तीक्ष्णता और दूध आदि के द्वारा वस्ति की कोमलता करनी चाहिये ॥ ६४ ॥

आपादतलमूर्द्धस्थान्दोषान्पक्वाशयेस्थितः। वीर्य्येणवस्तिरादत्तेखस्थोऽर्कोभूरसानिव ॥ ६५ ॥

जैसे आकाशमें स्थित सूर्य्य अपने किरणों के द्वारा पृथ्वी के रसको खींचलेते हैं इसी प्रकार पक्वाशय में स्थित वस्ति अपने बलसे पैरों से लेकर शिरतक के सम्पूर्ण दोषों को निकालती है ॥ ६५ ॥

यद्वत्कुसुम्भसंमिश्रात्तोयाद्रागंहरेत्पटः। तद्वद्द्रवीकृतात्कायान्निरूहोनिर्हरेन्मलान् ॥ ६६ ॥

इति सिद्धिस्थानेवस्तिव्यापत्सिद्धिर्नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

जैसे कुसुम मिलेहुये जलमें से वस्त्र रंगको खींचलेता है इसी प्रकार निरूहवस्ति शरीर से मलों को पतले करके निकालती है ६६ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंसिद्धिस्थानकावस्तिव्यापत्सिद्धिनामसातवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

प्रसृतयोगिका सिद्धिः।

अथेमान्सुकुमाराणांनिरूहान्स्नेह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नान्मृदून् । कर्मणाविप्लुतानाञ्च क्षामाभिप्रसृतैःपृथक् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त प्रसृतयोगिकासिद्धि का व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

इसके उपरान्त सुकुमार तथा बहुत कार्य्य करने से म्लान पुरुषोंके लिये कोमल निरूह तथा अनुवासन बस्ति प्रसृत (इसका प्रमाण कल्प स्थानके पिछले अध्यायमें देख लेना चाहिये) के प्रमाण से अलग २ कहीजाती हैं ॥ १ ॥

क्षीराद्वौप्रसृतौकार्य्यौमधुतैलघृतात्त्रयः । खजेनमथितोबस्तिर्वातघ्नो बलवर्णकृत् ॥ २ ॥

गऊका दूध दोप्रसृत लेकर उस में शहद तैल तथा घी एक २ प्रसृत भर मिलाकर करछीसे मथकर वस्तिदेवै इससे वायु का नाश होता है और बल तथा वर्णकी वृद्धि होती है ॥ २ ॥

एकैकःप्रसृतस्तैलप्रसन्नाक्षौद्रसर्पिषः । बिल्वादिमूलक्वाथाद्वौकौलत्थाद्वौसवातनुत् ॥ ३ ॥

तैल प्रसन्ना शहद तथा घी एक २ प्रसृत बेल आदि पँचमूल का काढ़ा दो प्रसृत और कुल्थीका काढ़ा दो प्रसृत इन सबको एक में मिलाकर वस्ति देनेसे वायुका नाश होताहै ३॥

पञ्चमूलरसात्पञ्चद्वौतैलात्क्षौद्रसर्पिषोः । एकैकःप्रसृतोबस्तिःस्नेहनीयोऽनिलापहः ॥ ४ ॥

पँचमूल का रस पाँच प्रसृत तैल दो प्रसृत और शहद तथा घी एक २ प्रसृत इन सबको एकमें मिलाकर वस्ति देनेसे शरीर स्निग्ध होजाताहै और वायुका नाश होताहै ॥ ४ ॥

सैन्धवार्द्धाक्षएकैकःक्षौद्रतैलपयोघृतात् । प्रसृतौहपुषाख्याचनिरूहःशुक्रकृत्परः ॥ ५ ॥

सैंधवलवण छःमाशे और शहद तैल दूध घी तथा दोनों हाऊबेर एक २ प्रसृत इन सब को एकमें मिलाकर निरूहवस्ति देनेसे वीर्य्यकी बहुत वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

पटोलनिम्बभूनिम्बरास्नासप्तच्छदाम्भसः । चत्वारःप्रसृताएकोघृतात्सर्षपकाल्कतः ॥ ६ ॥

परवल नींब चिरायता रास्ना तथा छितवन इनका काढ़ा चार प्रसृत घी एक प्रसृत और सरसों का कल्क ॥ ६ ॥

निरूहःपञ्चतिक्तोऽयंमोहाभिष्यन्दकुष्ठनुत् । विडङ्गत्रिफलासिग्रुफलमुस्ताखुपर्णिकात् ॥ ७ ॥

इन सबको एकमें मिलाकर निरूहवस्ति देनेसे मोह अभिष्यन्द तथा कुष्ठ इन रोगों का नाश होता है इसको पँचतिक्त निरूह कहते हैं बायबिडंग त्रिफला सहिंजन जायफल नागरमोथा तथा मूषापर्णी ॥ ७ ॥

कषायात्प्रसृताःपञ्चतैलादेकोविमथ्यतान् । विडङ्गपिप्पलीकल्कान्निरूहःक्रिमिनाशनः ॥ ८ ॥

इन का काढ़ा पाँच प्रसृत और तैल एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसृत इनको मथकर बायबिड़ंग तथा पीपरि का कल्क मिलाकर निरूहवस्ति देनेसे क्रिमियोंका नाश होता है ॥ ८ ॥

पयस्येक्षुस्थिरारास्नाविदारीक्षौद्रसर्पिषः । एकैकःप्रसृतोवस्तिःकृष्णाकल्कोवृषत्वकृत् ॥ ६ ॥

काकोली ईख शालपर्णी रास्ना बिलाईकन्द शहद तथा घी एक २ प्रसृत और पीपरि का कल्क इन सब को एकमें मिलाकर वस्ति देनेसे पुरुषार्थ की वृद्धि होती है ॥ ९ ॥

चत्वारस्तैलगोमूत्रदधिमण्डाम्लकाञ्जिकात् । प्रसृताःसर्षपैःपिष्टैर्विट्सङ्गानाहभेदनः ॥ १० ॥

तैल गोमूत्र दहीकातोड़ और खट्टी काँजी एक २ प्रसृत और सरसोंकी पीठी इन सबको एकमें मिलाकर वस्ति देनेसे कब्ज तथा अफरेका नाश होता है ॥ १० ॥

श्वदंष्ट्राश्मभिदेरण्डरसात्तैलात्सुरासवात् । प्रसृताःपञ्चयष्ट्याह्वात्कौन्तीमागधिकासिता ॥ ११ ॥

गोखुरू पाषाणभेद (हजरतजहूर) तथा अरण्डका काढ़ा तीन प्रसृत तैल एक प्रसृत और सुरा एकप्रसृत इन सबको एक में मिलाकर मुलेठी रेणुका पीपरि तथा मिसरी ॥ ११ ॥

कल्कोवस्तिस्तुसानाहेमूत्रकृच्छ्रेपरोमतः । एतेसलवणाःकोष्णानिरूहाःप्रसृतानव ॥ १२ ॥

इन सबका कल्क डालकर वस्ति देनेसे अफरा तथा मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै यह लवण सहित कुछ उष्ण नव निरूहवस्ति प्रसृत के प्रमाणों से कही गई ॥ १२ ॥

मृदुवस्तौजडीभूतेतीक्ष्णोऽन्योवस्तिरिष्यते । तीक्ष्णैर्विकर्षितैःस्वाद्वप्रत्यास्थापनमिष्यते ॥ १३ ॥

यदि कोमल वस्ति देनेसे वह वस्ति न निकल सकै तो अन्य तीक्ष्ण वस्ति देनी चाहिये और तीक्ष्ण वस्तियों के निकल जानेपर मधुर औषधियों के द्वारा आस्थापनवस्ति देनी चाहिये ॥ १३ ॥

वातोपसृष्टस्योष्णैःस्युर्गुददाहादयोयदि । द्राक्षाम्बुनात्रिवृत्कल्कंदद्याद्दोषानुलोमनम् ॥ १४ ॥

वायुसे पीड़ित पुरुषके उष्ण वस्तिके द्वारा गुदा में दाह आदि होने लगै तो मुनक्केके काढ़ेमें दोषोंको नींचे के मार्गसे निकालनेवाला निशोथ का कल्क डालकर पीनेकोदेवै १४॥

तद्धिपित्तशकृद्वातान्हृत्वादाहादिकाञ्जयेत् । शुद्धश्चापिपिबेच्छीतांयवागूंशर्करायुताम् ॥ १५ ॥

क्योंकि यह पित्त मल तथा वायुको निकालकर दाह आदि रोगों को शान्त करता है फिर शरीर के शुद्ध होजाने के उपरान्त शक्कर युक्त शीतल यवागू पीनी चाहिये॥१५॥

अथवातिविरिक्तःस्यात्क्षीणविट्कःसभक्षयेत् । माषयूषेणकुल्माषान्पिवेदध्यथवासुराम् ॥ १६ ॥

और जो बहुत विरेचन होने से मल क्षीण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होगया होतो उर्दके यूष के साथ कुल्माष पीवै अथवा दही या सुरा को पीवै ॥ १६ ॥

सामंचेदतिसार्य्येतशूलारोचकवान्नरः। सतदाहपुषाकुष्ठनतदारुवचाः पिबेत् ॥ १७ ॥

यदि अरुचि रोगवाले को मल तथा मांस से मिलेहुये दस्तआतेहों तो हाऊवेर कूट तगर देवदारु तथा वच इन सबका काढ़ा करके पीवै ॥ १७ ॥

शकृद्वातमसृक्पित्तंकफंवायोऽतिसार्य्यते। पक्वस्तत्रस्ववर्गीयैर्वस्तिः श्रेष्ठंभिषग्जितम् ॥ १८ ॥

विष्ठा वायु रुधिर पित्त अथवा कफके दस्त जिसको आतेहों उसको वातनाशक आदि वर्गों में कहीहुई औषधियों के द्वारा वस्ति देनी श्रेष्ठ होती है ॥ १८ ॥

षरणामेषांद्विसंसर्गात्त्रिंशद्भेदाभवन्तिते। केवलैःसहचेत्त्रिंशद्विद्यात्सोपद्रवानपि ॥ १९ ॥

इन विष्ठाआदि छहों के संसर्ग से तीसभेद होते हैं और संसर्गज तीस भेद तथा केवल यह छः इस प्रकार उपद्रव सहित यह सब छत्तिस होते हैं ॥ १९ ॥

शूलप्रवाहिकाध्मानपरिकर्त्तारुचिज्वरान्। सतृष्णादाहमूर्च्छान्तांश्चैषांविद्यादुपद्रवान् ॥ २० ॥

शूल प्रवाहिका अफरा परकर्त्तिका (गुदामें कैंची से काटने कीसी पीड़ा होना) अरुचि ज्वर तृषा दाह तथा मूर्च्छा आदिक इन छहों के उपद्रव हैं ॥ २० ॥

तत्रामेवमनंकार्य्यंव्योषाम्ललवणैर्युतम्। पाचनंशस्यतेवस्तिरामेहिप्रतिषिध्यते ॥ २१ ॥

आमके दस्तोंमें सोंठि पीपरि मिर्च काँजी तथा लवण इन के द्वारा वमन करना चाहिये तदनन्तर आममें पाचन औषध हित होती हैं और वस्तिका आम में निषेध है ॥ २१ ॥

वातघ्नग्राहिवर्गीयैर्वस्तिःशकृतिशस्यते। स्वाद्वम्ललवणैःशस्तःस्नेहवस्तिःसमीरणे ॥ २२ ॥

केवल मलके दस्तआने पर वातघ्न तथा ग्राही वर्गमें कहीहुई औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये दस्तमें बहुत वायु निकलने पर मधुर खट्टी तथा नमकीन औषधियों के साथ पाक कियेहुये स्नेहके द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २२ ॥

रक्तेरक्तेनपित्तन्तुकषायस्वादुतिक्तकैः। सार्य्यमाणेकफेवस्तिःकषायकटुतिक्तकैः ॥ २३ ॥

केवल रुधिर के दस्त आनेपर रुधिर की वस्ति देनी चाहिये पित्तके दस्त आनेपर कसैली मधुर तथा तीती औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये दस्त में केवल कफ गिरने पर कसैली तीती तथा कडुई औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २३ ॥

शकृतावायुनाचामेतेनवर्चस्यथानिले। संसृष्टेऽन्तरपानंस्याद्व्योषाम्ललवणैर्युतम् ॥ २४ ॥

विष्ठा तथा वायु के साथ आमका संसर्ग होनेपर अथवा आमके साथ विष्ठा तथा वायु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च कांजी तथा लवण युक्त वमनकारक औषधियों के द्वारा वमन कराना चाहिये ॥ २४ ॥

पित्तेनामेऽसृजावापितयोरामेनवा पुनः । संसृष्टयोर्भवेत्पानंसव्योष कटुतिक्तकम् ॥ २५ ॥

पित्त तथा रुधिर के साथ आमका संसर्ग होनेपर अथवा आमके साथ पित्त तथा रुधिरका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च कटु औषध तथा तिक्त औषध इन सबको मिलाकर पीना चाहिये ॥ २५ ॥

तथामेकफसंसृष्टेकषायव्योषतिक्तकम् । आमेतनुकफेव्योषकषायलवणैर्युतम् ॥ २६ ॥

आमके साथ कफका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च कषैली औषध तथा तिक्त औषध इन सब को मिलाकर पीना चाहिये कफ के साथ आमका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च और कषैली तथा नमकीन औषधियों को मिलाकर पीवै ॥ २६ ॥

वातेनविषिपित्तेवाविट्पित्तेचतथानिले। मधुराम्लकषायःस्यात्संसृष्टेवस्तिरुत्तमः ॥ २७ ॥

वायुके साथ विष्ठा तथा पित्तका संसर्ग होनेपर अथवा विष्ठा तथा पित्तके साथ वायुका संसर्ग होने पर मधुर खट्टी तथा कषैली औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २७ ॥

शकृच्छोणितयोःपित्तशकृतोरक्तपित्तयोः ॥ वस्तिरन्योन्यसंसर्गेकषायस्वादुतिक्तकः ॥ २८ ॥

विष्ठा तथा रुधिरका पित्त तथा विष्ठा का और रुधिर तथा पित्तका परस्पर संसर्ग होने पर कषैली मधुर तथा तीती औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २८ ॥

कफेनविषिपित्तेवाकफेविट्पित्तशोणितैः ॥ व्योषतिक्तकषायःस्यात्संसृष्टेवस्तिरुत्तमः ॥ २९ ॥

विष्ठा तथा पित्त में कफका संसर्ग होनेपर अथवा कफ में विष्ठा पित्त तथा रुधिरका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च तिक्त औषध तथा कषैली औषध इन के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २९ ॥

स्याद्वस्तिर्व्योषतिक्ताम्लःसंसृष्टेवायुनाकफे । मधुरव्योषतिक्तस्तुरक्तेकफविमिश्रिते ॥ ३० ॥

कफमें वायुका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च तीती औषध तथा खट्टी औषध इनके द्वारा वस्तिदेनी चाहिये रुधिर में कफका संसर्गहोनेपर मधुर औषध तिक्त औषध और सोंठि पीपरि तथा मिर्च इनके द्वारा वस्तिदेनी चाहिये ॥ ३० ॥

मारुतेकफसंसृष्टेव्योषाम्ललवणोभवेत् । वस्तिर्वातेनरक्तेतुकार्य्यस्स्वाद्वम्लतिक्तकः ॥ ३१ ॥

वायु में कफका संसर्ग होनेपर सोंठि पीपरि मिर्च खट्टी औषध तथा लवण इनके द्वारा वस्ति देनी चाहिये रक्तमें वायुका संसर्ग हो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेपर मधुर खट्टी तथा तिक्त औषधियोंके द्वारा बस्ति देनी चाहिये ॥ ३१ ॥

त्रिचतुःपञ्चषड्योगानेवमेवविकल्पयेत् । युक्तिश्चैषातिसारोक्तासर्वरोगेष्वपिस्मृता ॥ ३२ ॥

इस प्रकार ३, ४, ५, तथा ६ योगों का विकल्प करै और यह अतीसारकी युक्ति सम्पूर्ण रोगों में भी करनी चाहिये ॥ ३२ ॥

युगपत्षड्रसंषरणांसंसर्गेपाचनंभवेत् । निरामाणाञ्चपञ्चानांवस्तिःषाड्रसिकोमतः ॥ ३३ ॥

एक साथही वात आदि छहोंका संसर्ग होनेपर छहोंरसकी औषधियों के द्वारा पाचन करना चाहिये और आम के सिवाय अन्य पाँचोंका संसर्ग होनेपर छहोंरसों की औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ ३३ ॥

उदुम्बरशलाटूनिजम्ब्वाम्रोदुम्बरत्वचः । शङ्खंसर्जरसंप्लाक्षींकर्दमञ्चपलांशिकम् ॥ ३४ ॥

कच्चे गूलर जामुन आम तथा गूलरकी छाल शंख राल लाख तथा कीचर चार चार तोलेभर इन सब औषधियोंको लेकर ॥ ३४ ॥

पिष्ट्वातैःसर्पिषःप्रस्थंक्षीरद्विगुणितंपचेत् । अतीसारेषुसर्वेषुपेयमेतद्यथाबलम् ॥ ३५ ॥

पीस के इनके साथ द्विगुण दूध सहित ६४ तोले घीका पाककरै सम्पूर्ण अतीसारों में यह घी बलके अनुसार पीना चाहिये ॥ ३५ ॥

कच्छूराधातकीबिल्वसमङ्गारक्तशालिभिः । मसूराश्वत्थशुङ्गैश्चयवागूःस्याज्जलेश्रितैः ॥ ३६ ॥

किवाँच धवई के फूल बेलगिरी लजालू लाल शालिधान मसूर तथा पीपल के टिंभुने इनसब औषधियों के काढ़े के साथ पाक की हुई यवागू अतीसार में हित होतीहै ॥ ३६ ॥

बालोदुम्बरकट्वङ्गसमङ्गाप्लक्षपल्लवैः । मसूरधातकीपुष्पबलाभिश्चतथाभवेत् ॥ ३७ ॥

सुगंधवाला गूलर सरिवन लजालू पकरियाकी पत्ती मसूर धवईके फूल तथा बरियारा इनके काढ़े के साथ पाककीगई यवागू अतीसार में हित होती है ॥ ३७ ॥

स्थिरादीनांबलादीनामिक्ष्वादीनामथापिवा । क्वाथेषुसमसूराणांनवारिष्टाःपृथक्पृथक् ॥ ३८ ॥

शालपर्णी आदिगण बरियारा आदिगण तथा ईख आदिगण की मसूर युक्त नव अरिष्ट औषधियों मेंसे किसीके काढ़ेमें यवागूका पाक करके पीवै इससे अतीसार का नाश होता है ॥ ३८ ॥

कच्छूरामूलशाल्यादितण्डुलैर्वापिसाधिताः । दधितक्रारनालाम्लक्षीरेष्विक्षुरसेऽपिवा ॥ ३९ ॥

दही मट्ठा आरनाल काँजी दूध अथवा ईख के रसमें किवाँच के बीज तथा शालिधान आदिके चावलों की यवागू बनाकर ॥ ३९ ॥

शीताःसशर्कराःक्षौद्राःसर्वातीसारनाशनाः । ससर्पिर्मरिचाजाजीम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धुरालवणाःशिवाः ॥ ४० ॥

उसमें शक्कर शहद घी मिर्च तथा जीरा डालकर अथवा लवणडालकर शीतल करके पीवै इससे सम्पूर्ण अतीसारों का नाश होताहै ॥ ४० ॥

भवन्ति चात्र ।

स्निग्धाम्ललवणमधुरंपानंवस्ति श्चमारुतेकोष्णः । शीतंतिक्तक षायंमधुरंपित्तेचरक्तेच ॥ ४१ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। वायु में स्निग्ध अम्ल लवण तथा मधुर औषधियों के द्वारा कुछ उष्ण वस्ति देनी चाहिये पित्त तथा रुधिर में शीतल तिक्त कषाय तथा मधुर औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ ४१ ॥

तिक्तोष्णकषायकटु श्लेष्मणिसंग्रा हिवातनुच्छकृति । पाचनमामेपा नंपिच्छासृग्वस्तयोरक्ते ॥ ४२ ॥

कफ में तिक्त उष्ण कषाय तथा कटु औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये मल में ग्राही तथा वातघ्न औषधियों के द्वारा वस्ति देनी चाहिये आम में पाचन औषध पिलानी चाहिये रुधिर में पिच्छावस्ति तथा रुधिर के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ ४२ ॥

अतिसारंप्रत्युक्तंमिश्रंद्वन्द्वामयोग जेष्वपिच । तत्रोद्रेकविशेषादोषे षूपक्रमःकार्य्यः ॥ ४३ ॥

इसप्रकार द्वन्द्वादियोगज (दो आदि के योगसे होनेवाले) अतीसारों के लिये चिकित्साकही गई है परन्तु जिस दोष की अधिकताहो उसके अनुसार चिकित्साकरनी चाहिये ॥ ४३ ॥

प्रासृतिकासव्यापत्क्रियानिरूहा स्तथातिसारहिताः । रसकल्कघृ तयवाग्वश्चोक्ताशुरुणाप्रसृतसि द्धौ ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिस्थानेप्रसृतयोगिकासिद्धिर्नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इस प्रासृतयोगिका सिद्धिनाम अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने प्रसृत के प्रमाण से दीजानेवाली रोगसहित निरूहवस्ति और अतीसार के लिये हितरस कल्क घृत तथा यवागू कही हैं ॥ ४४ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धिस्थानकाप्रासृतयोगिकासिद्धिनामआठवां अध्यायसमाप्तहुआ ॥ ८ ॥

नवां अध्याय ॥

त्रिमर्मीयासिद्धिः ।

सप्तोत्तरंमर्मशतमस्मिन्शरीरेस्कन्ध शाखाश्रितमग्निवेश । तेषामन्यत मपीडायांसमधिकापीडाभवतिचेत नानिबद्धवैशेष्यात् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त त्रिमर्मीयासिद्धिका व्याख्यान करतेहैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥ भगवान् आत्रेयजीने कहा कि हे अग्निवेश! इस शरीरमें स्कन्ध तथा शाखा (हाथ पैर) के आश्रित एकसौ सात मर्म होते हैं इनमें से किसी में भी पीड़ा होनेसे बहुत क्लेश हो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताहै क्योंकि इनमें चेतना धातुका विशेष सम्बन्ध रहता है ॥ १ ॥

तत्रशाखाश्रितेभ्योमर्मभ्यःस्कन्धाश्रितानिगरीयांसिशाखानांतदाश्रितत्वात् । स्कन्धाश्रितेभ्योऽपिहृद्वस्तिशिरोसितन्मूलत्वाच्छरीरस्य ॥ २ ॥

शाखाके आश्रित मर्मोंकी अपेक्षा स्कन्ध के आश्रित मर्म अधिक गुरु होते हैं अर्थात् उनमें पीड़ा होने से अधिक क्लेश होता है क्योंकि शाखा स्कन्ध के आश्रित हैं और स्कन्ध के आश्रित मर्मोंकी अपेक्षा भी हृदय वस्ति तथा शिर यह तीन मर्म स्थान अधिक गुरु होते हैं क्योंकि यही तीनों शरीर के मूल हैं ॥ २ ॥

तत्रहृदिदशचधमन्यःप्राणोदानमनोबुद्धिचेतनामहाभूतानिचनाभ्यामराइवप्रतिष्ठितानि ॥ ३ ॥

जैसे पहिये की नाह में आरा लगे होते हैं उसी प्रकार हृदय में प्राणवायु उदानवायु मन बुद्धि चेतना पृथ्वी जल तेज वायु तथा आकाश इनकी दश नाड़ी स्थित हैं ॥ ३ ॥

शिरसिइन्द्रियाणिइन्द्रियप्राणवहानिचस्रोतांसिसूर्य्यमिवगभस्तयःसंश्रितानि ॥ ४ ॥

और जैसे सूर्य में किरणें स्थित हैं इसी प्रकार शिर में इन्द्रिय और इन्द्रिय तथा प्राणके स्रोत स्थित हैं ॥ ४ ॥

वस्तिस्तुस्थूलगुदमुष्कसेवनीशुक्रमूत्रवाहिनीनांनाडीनांमध्येमूत्राधारोऽम्बुवहानांसर्वस्रोतसामुदधिरिवापगानांप्रतिष्ठितोभवति । बहुभिश्चतन्मूलैर्मर्मसंज्ञकैःस्रोतोभिर्गगनमिवदिनकरकरैर्व्याप्तमिदंशरीरम् ॥ ५ ॥

जैसे सम्पूर्ण नदियों का आश्रय समुद्र है उसी प्रकार गुदा अण्डकोष सीवन वीर्य्य तथा मूत्रकी नलियों के मध्यमें मूत्रकी आधार स्थूलवस्ति जल के सम्पूर्ण स्रोतों की आश्रय है और जैसे सूर्य्य की किरणों से सम्पूर्ण आकाश व्याप्त है इसीप्रकार पूर्वोक्त मर्मोंके आश्रित मर्मनामक बहुत से स्रोतों के द्वारा शरीर व्याप्त है ॥ ५ ॥

तेषांत्रयाणामन्यतमस्यापिभेदादाश्वेवशरीरभेदःस्यादाश्रयनाशादाश्रितस्यनाशः । तदुपघातात्तुघोरव्याधिप्रादुर्भावःतस्मादेतानिविशेषेणरक्ष्याणि । बाह्याभिघाताद्वातादिदोषेभ्यश्च ॥ ६ ॥

हृदय शिर तथा वस्ति इन तीनों मर्मोंमेंसे किसी के भी विदीर्ण होनेसे सम्पूर्ण शरीर शीघ्रही नष्ट होजाता है क्योंकि आश्रय के नाशसे आश्रितका नाश होना उचितही है और हृदय आदि मर्मों में चोट लगने से भयङ्कर रोग उत्पन्न होते हैं इससे बाहर के अभिघात तथा वात आदिसे इनकी विशेष करके रक्षा करनी चाहिये ॥ ६ ॥

तत्रहृदयेअभिहतेकासश्वासबलक्ष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यकण्ठशोषक्लोमापकर्षणजिह्वानिर्गमुखतालुशोषापस्मारोन्मादप्रलापचित्तनाशादयःस्युः ॥ ७॥

हृदय में चोट लगनेपर खाँसी श्वास बलकी क्षीणता कण्ठ तालु तथा मुखका सूखना तृषा के स्थानका खिचना जिह्वाका निकल पड़ना मिरगी उन्माद प्रलाप (बकना) तथा चित्तका नष्ट होना यह रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

शिरसिअभिहतेमन्यास्तम्भार्दितचक्षुर्विभ्रममोहवेष्टनचेष्टानाशकासश्वासहनुग्रहमूकगद्गदत्वाक्षिनिमीलनगण्डस्पन्दनजृम्भणलालास्रावस्वरहानिवदनजिह्मत्वादीनि॥८॥

शिरमें चोट लगनेपर गलेके पीछे की नसका जकड़ना अर्दित (वातज रोगविशेष) नेत्ररोग मोह ऐंठन चेष्टाका नष्ट होना खाँसी श्वास जावड़ों का जकड़ना गूंगापन गद्गद वचन होना नेत्र बन्द रहना कपोलों का फड़कना जँभाई लार बहना स्वरभंग और मुखका टेढ़ा होना आदिक रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥

वस्तौतुवातमूत्रवर्चोनिग्रहवंक्षणमेहनवस्तिशूलकुण्डलोदावर्त्तगुल्मब्रध्नानिलाष्ठीलोपस्तम्भनाभिकुक्षिगुदश्रोणिग्रहादयः ॥ ९ ॥

वस्ति में चोट लगने से वायु मूत्र तथा मलका रुकना लिङ्ग जांघोंकी सन्धि तथा वस्तिमें शूल होना शरीर में चकत्ते पड़ना उदावर्त्त गुल्म बद अष्ठीला ऊरुस्तम्भ औरनाभि कुक्षि गुदा तथा नितम्बों में पीड़ा होना आदिक रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ९ ॥

वाताद्युपसृष्टानांतुएषांलिङ्गानिचिकित्सितेसक्रियादिविधीनिउक्तानि। किन्तुएतानिविशेषतोऽनिलाद्रक्ष्याणिअनिलोहिपित्तकफसमुदीरणेहेतुः। प्राणमूलश्चमर्भतच्चवस्तिकर्मसाध्यतमम्। तस्मान्नवस्तिसमंकिञ्चित्कर्ममर्मपरिपालनमस्ति ॥ १० ॥

वात आदि दोषों से युक्त इन मर्मोंके लक्षण तथा चिकित्सा आदिक विधि चिकित्सास्थान में कहीगई किन्तु वायु से इन मर्मों की रक्षा विशेषकरके करनी चाहिये क्योंकि वायुही पित्त तथा कफको उभाड़ती है और वायुही प्राणों की मूल है और वायु की सर्वोत्तम औषध वस्ति क्रियाही है इससे वस्ति के समान और कोई चिकित्सा मर्मों के लिये हित नहीं है ॥ १० ॥

तत्रषडास्थापनस्कन्धान्विमानेद्वौचानुवासनस्कन्धौइहचविहितान्वस्तीन्बुद्ध्याविचार्य्यमहामर्मपरिपालनार्थंप्रयोजयेद्वातव्याधिचिकित्साञ्च ॥ ११ ॥

छःआस्थापन स्कन्ध विमान स्थान में और दो अनुवासनस्कन्ध सिद्धिस्थान में जो कहेगये हैं उनको बुद्धिमान् वैद्य अपनी बुद्धिसे विचारकर हृदय आदि महामर्मोंकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्षाके लिये वस्तिका प्रयोग करै और वातव्याधियों में कहीहुई भी चिकित्साकरै ११॥

भूयश्चहृदिउपसृष्टेवातेनहिंगुचूर्ण लवणानामन्यतमचूर्णसंयुक्तांपेयां मातुलुङ्गस्यरसेनवान्येनवाम्लेनहृद्येनवापाययेत् । स्थिरादिपञ्चमूलीरसःसशर्करःपानार्थंबिल्वादिपञ्चमूलरससिद्धाचयवागूहृद्रोगविहितञ्चकर्म ॥ १२ ॥

वायु से हृदयके बहुत पीड़ित होने पर पाँचोंलवणोंमें से किसी लवण ा चूर्ण तथा हींग का चूर्ण बिजौरानिम्बू के रसमें अथवा किसी अन्य हृद्य (हृदयको हित) खटाईके रसमें डालकर पिलावै शालपर्णीआदि पंचमूल के काढ़ेमें शक्कर डालकर पिलावै बेल आदि पंचमूल के काढ़े में पाक कीगई यवागू खिलावै और हृद्रोग में कहीहुई चिकित्सा करै ॥ १२ ॥

मूर्द्धितुवातोपसृष्टेअभ्यङ्गस्वेदनोपनाहनस्नेहपाननस्तःकर्मावपीडनधूमादीनि ॥ १३ ॥

शिरके वायुसे पीड़ित होनेपर अभ्यङ्ग(तैल आदि मलना स्वेदन पुल्टिस स्नेहपान नस्य अवपीड़ तथा धूमपान आदि चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १३ ॥

वस्तौतुकुम्भीस्वेदोवर्त्तयश्चश्यामादिभिर्गोमूत्रसिद्धोनिरूहःबिल्वादिस्वरससिद्धःशरकाशेक्षुदर्भगोक्षुरकमूलशृतक्षीरैश्च। त्रपुषैर्वारुखराश्वबीजयवऋषभककल्कितोनिरूहः। क्षारयवतिल्वकभृष्टकल्कितोवानिरूहः। पीतदारुकासिद्धतैलानुवासनम्। तैल्वकञ्चसर्पिर्विरेकार्थम् १४॥

वायुसे वस्तिके पीड़ित होनेपर कुम्भी स्वेद (इसकी विधि स्वेदाध्यायमें कहीगई है) वर्त्ति क्रिया (औषधियों की बत्ती बनाकर गुदा में रखना) निशोथ आदि औषधियों को गोमूत्र में पाककरके निरूहवस्ति देना बेल आदि पंचमूल के रसमें औषधियों का पाक करके निरूहवस्ति देना सरकण्डा काश ईख कुश तथा गोखरू की जड़के साथ पाक किये गये दूध में खीरा ककड़ी के बीज अजमोद यव तथा ऋषभकका कल्क डालकर निरूहवस्ति देना अथवा जवाखार यव लोध भूनकर कल्क करके निरूहवस्ति देना देवदारुके साथ पाक कियेगये तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देना और लोध के साथ पाक कियेगये घी के द्वारा विरेचन कराना हित होताहै ॥ १४ ॥

शतावरीगोक्षुरकबृहतीकण्टकारिकागुडूचीपुनर्नवोशीरमधुकद्विशारिवालोध्रश्रेयसीकुशकाशमूलकषायक्षीरचतुर्गुणंबलावृषर्षभकखराह्वोपकुञ्चिकावत्सकत्रपुषैर्वारुबीजशितिमारकमधुकवचाशतपुष्पाश्मभेदवर्षाभूमदनफलकल्कसिद्धंतैलंउत्तरवस्तिनिरूहःशुद्धस्निग्धस्विन्नस्यवस्तिशूलमूत्रविकारहरइति ॥ १५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शतावर गोखुरू भटकटैया बड़ीभटकटैया गिलोय गदहपूर्णा खस मुलेहठी दोनों साँवें लोध गजपीपरि कुश और काशकी जड़ इन औषधियों का काढ़ा काढ़े का चौगुना दूध और बरियारा रूसा अजमोद कालाजीरा इन्द्रयव खीरा ककड़ी के बीज शितिमारक (तेंदुवा) मुलेठी बच सौंफ पाषाणभेद (हजरतजहूर) गदहपूर्णा तथा मैनफल का कल्क इन सब के साथ पाक कियेगये तैल के द्वारा उत्तरवस्ति (लिङ्गमें पिचकारी) देने से वस्ति के शूल और मूत्रके विकारोंका नाश होता है किन्तु निरूहवस्तिके द्वारा शरीर के शुद्ध होजानेपर स्नेहन तथा स्वेदन करके यह उत्तरवस्ति देनी चाहिये ॥ १५ ॥

भवन्तिचात्र।

हृदिमूर्ध्निचवस्तौचनृणांप्राणाःप्रतिष्ठिताः । तस्मात्तेषांसदायत्नात्कुर्वीतपरिपालनम् ॥ १६ ॥

इसमें यह श्लोक हैं। हृदय मस्तक तथा वस्तिस्थान में मनुष्यों के प्राण स्थित रहते हैं इस से सदैव यत्नपूर्वक हृदय आदि स्थानों की रक्षा करनी चाहिये ॥ १६ ॥

आघातवर्जनंनित्यंस्वस्थवृत्तानुवर्तनम् । उत्पन्नार्त्तिविघातश्चमर्मणांपरिपालनम् ॥ १७ ॥

इन की रक्षा यही है कि इनमें किसी प्रकार की चोट न लगने पावे यदि इन में कोई विकार न होतो ऐसी रीति से कार्य्य करना चाहिये जिसमें कोई विकार न उत्पन्न हो और यदिकोई रोग होय तो उसको शान्त करना यही मर्मोंकी रक्षा है ॥ १७ ॥

अतऊर्द्ध्वंविकारायेत्रिमर्मीयेचिकित्सिते । नप्रोक्तामर्मजास्तेषांकांश्चिद्वक्ष्यामिसौषधान् ॥ १८ ॥

इस के उपरान्त त्रिमर्मीयचिकित्सित नाम अध्याय में मर्मोंके जो रोग नहीं कहेगये हैं उनमें से कुछ रोग औषधसहित कहे जाते हैं ॥ १८ ॥

क्रुद्धःस्वैःकोपनैर्वायुःस्थानादूर्द्ध्वंप्रपद्यते । पीडयन्हृदयंगत्वाशिरःशङ्खौचपीडयन् ॥ १९ ॥

जिस रोग में अपने कारणों से कुपित वायु पक्वाशयसे शिरकी ओर जाकर मस्तक हृदय तथा कपाल की हड्डियों को पीड़ित करता हुआ ॥ १९ ॥

धनुर्वन्नमयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा । कृच्छ्रेणचाप्युच्छ्वसितिस्तब्धाक्षोऽथनिमीलकः ॥ २० ॥

शरीर को धनुष के समान झुकावै कम्प तथा मोह उत्पन्न होवै दोनों नेत्र स्तब्ध होयँ अथवा बन्द होजावैं बहुत कष्ट के साथ श्वास निकलै ॥ २० ॥

कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोऽपतन्त्रकः ॥ २१ ॥

और रोगी संज्ञारहित होकर कबूतर के समान अव्यक्त शब्दकरै उसको अपतंत्रक कहते हैं ॥ २१ ॥

दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकण्ठेनकूजति । हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहंवृतेपुनः । वायुनादारुणंप्रा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदेकेतदपतानकम् ॥ २२ ॥

जिस रोग में देखनेकी शक्ति तथा ज्ञान का नाश होकर गले से अव्यक्त शब्द निकलै और वायुके द्वारा हृदय के ढकेहुये होने पर मोह होय और हृदय से वायु के हटजाने पर स्वस्थता होय उसको अत्यन्त भयङ्कर अपतानक रोग कहते हैं ॥ २२ ॥

श्वसनंकफवाताभ्यांरुद्धंतस्यविमोचयेत् । तीक्ष्णैःप्रधमनैःसंज्ञांतासुमुक्तासुविन्दति ॥ २३ ॥

इन रोगों में कफ तथा वायुके द्वारा रुकी हुई श्वास प्रतिश्वास के लेचलनेवाली नाड़ियोंको नाशिका में तीक्ष्ण चूर्ण देकर खोलै क्योंकि इनके खुल जानेपर चैतन्यता आजाती है ॥ २३ ॥

मरिचंशिग्रुबीजानि विडङ्गञ्चफणिज्भकम् । एतानिसूक्ष्मचूर्णानिदद्याच्छीर्षविरेचनम् ॥ २४ ॥

मिर्च सहिंजन के बीज बायविड़ंग और मरुवा इन सबको महीन पीसकर नास लेने से अपतन्त्रक रोग का नाश होता है ॥ २४ ॥

हिंगुतुम्बुरुपथ्याचपौष्करंलवणत्रयम् । यवकाथाम्बुनापेयंहृत्पार्श्वार्त्तेऽपतन्त्रके ॥ २५ ॥

धनियां हड़ हींग पुष्करमूल सैंधवलवण विड़लवण तथा पाँगालवण इन सबका चूर्ण करके यवों के काढ़ेमें मिलाकर पीनेसे हृदय तथा पशुली आदिस्थानों में हुये अपतन्त्रक रोगका नाश होता है ॥ २५ ॥

हिंग्वम्लवेतसंशुण्ठीससौवर्च्चलदाडिमाम् । पिबेद्वातकफघ्नञ्चकर्महृद्रोगनुद्धितम् ॥ २६ ॥

हींग अमलवेत सोंठि सोंचरलवण तथा अनारदाना इनका काढ़ा पीनेसे वायु तथा कफका नाश होता है अपतन्त्रक तथा अपतानक रोगमें हृद्रोगनाशक चिकित्सा हित होती है ॥ २६ ॥

शोधनावस्तयस्तीक्ष्णाहितास्तस्यचकृत्स्नशः । सौवर्च्चलाभयाव्योषैःसिद्धन्तुस्याद्घृतंहितम् ॥ २७ ॥

और कोष्ठको शुद्ध करनेवाली तीक्ष्णवस्ति सवप्रकार से हित होती हैं और सोंचर लवण हड़ सोंठि पीपरि तथा मिर्च इनके साथ पाक कियागया घी हित होताहै ॥ २७ ॥

मधुरस्निग्धगुर्वम्लसेवनाचिन्तनाद्भयात् । शोकाद्व्याध्यनुषङ्गाच्चवायुनोदीरितःकफः ॥ २८ ॥

मधुर स्निग्ध भारी तथा खट्टी वस्तुओंका सेवन करना चिन्ता भय शोक तथा बहुत रोगी रहना इनकारणों से वायु के द्वारा उभड़ाहुआ कफ ॥ २८ ॥

यदासौसमवस्कन्द्यहृदयंहृदयाश्रयान् । समावृणोतिज्ञानादींस्तदातन्द्रोपजायते ॥ २९ ॥

जब हृदयमें जाकर हृदय के आश्रितज्ञान आदिकों को ढकलेता है तब तन्द्रा उत्पन्न होती है ॥ २९ ॥

हृदयेऽव्याकुलीभावोवाक्चेष्टेन्द्रिय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गौरवम्। मनोबुद्ध्यप्रसादश्चतंद्रा यालक्षणंमतम् ॥ ३० ॥

हृदयका व्याकुल होना वाणी चेष्टा तथा इन्द्रियों में गौरव होना और मन तथा बुद्धि का प्रसन्न न होना यह तन्द्रा के लक्षण हैं ॥ ३० ॥

कफघ्नंतत्रकर्त्तव्यंशोधनंशमनानि च । व्यायामोरक्तमोक्षश्चभोज्यञ्च कटुतिक्तकम् ॥ ३१ ॥

इस रोग में कफघ्न औषधियों के द्वारा वमन आदि शोधनकरावै वातघ्न औषधियों के द्वारा दोष को शान्तकरै व्यायामकरावै फस्त खुलावै और कडुवी तथा तिक्तवस्तु भोजन के लिये देवै ॥ ३१ ॥

मूत्रौकसादंजठरंकृच्छ्रंस्रोत्सङ्गसङ्क्षयौ। मूत्रातीतोऽनिलाष्ठीलावातवस्त्युष्णमारुतौ ॥ ३२ ॥

मूत्रौकसाद मूत्रजठर मूत्रकृच्छ्र मूत्रोत्संग मूत्रसंक्षय मूत्रातीत वाताष्ठीला वातवस्ति उष्णवात ॥ ३२ ॥

वातकुण्डलिकाग्रन्थिविड्घातोवस्तिकुण्डलम्। त्रयोदशैतेमूत्रस्य दोषास्तांल्लिङ्गतःशृणु ॥ ३३ ॥

वातकुण्डलिका मूत्रग्रन्थि विड्विघात और वस्तिकुण्डल यह तेरह दोष मूत्र के हैं इनके लक्षण सुनो ॥ ३३ ॥

पित्तंकफोद्वयंवापिवस्तौसंहन्यतेयदा । मारुतेनतदामूत्रंरक्तपीतंघनं सृजेत् ॥ ३४ ॥

जब पित्त व कफ अथवा पित्त कफ दोनों वायुके द्वारा वस्तिमें रुकते हैं तब रक्तवर्ण पीतवर्ण तथा गाढ़ामूत्र निकलता है ॥ ३४ ॥

सदाहंश्वेतसान्द्रंवासर्वैर्वालक्षणैर्युतम्। मूत्रौकसादंतंविद्यात्पित्तश्लेष्महरैर्जयेत् ॥ ३५ ॥

अथवा श्वेत गाढ़ा तथा दाहयुक्त मूत्र निकलताहै अथवा इनसब लक्षणों से युक्त मूत्र निकलता है इस रोगको मूत्रौकसाद कहते हैं इस की चिकित्सा पित्तनाशक तथा कफनाशक औषधियों के द्वारा करनी चाहिये ॥ ३५ ॥

विधारणात्प्रतिहतंवातोदावर्त्तितंयदा। पूरयत्युदरंमूत्रंतदातदनिमित्तरुक् ॥ ३६ ॥

मूत्रके रोकने से जब वायुके द्वारा रुका हुआ मूत्र उदरको पूर्ण करता है तब विना कारण केही उदर में पीड़ा उत्पन्न होती है ॥ ३६ ॥

अपक्तिमूत्रविट्सङ्गैस्तन्मूत्रजठरंवदेत् । मूत्रवैरेचनींतत्रचिकित्सां संप्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥

अन्नका परिपाक नहीं होता है और मूत्र तथा मल रुकजाता है इस रोग को मूत्रजठर कहते हैं इस रोग में मूत्रके निकालने वाली चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३७ ॥

हिंगुद्विरुत्तरंचूर्णंत्रिमर्मीयेप्रकीर्त्तितम्। हन्यान्मूत्रादिसंघातंव्याधिमगुल्मेरितोः ॥ ३८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और त्रिमर्मीयचिकित्सित नाम अध्याय में जो द्विरुत्तरहिंगु चूर्ण कहा गया है वह मूत्र के रुकने को और गुदा तथा लिङ्ग के रोगों को नष्ट करताहै इससे उस चूर्णका भी प्रयोग करना चाहिये ॥ ३८॥

मूत्रितस्यऽयवायाच्चरेतोवातोद्धतं च्युतम् । पूर्वंमूत्रस्यपश्चाद्वास्रवे त्तत्कृच्छ्रमुच्यते ॥ ३९॥

मूत्रका वेग होनेपर मैथुनकरनेसे स्खलित हुआ वीर्य्य वायुके द्वारा रुककर मूत्रके पहिले अथवा पीछे निकलता है इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ ३९॥

स्ववैगुण्यानिलाक्षेपैःकिञ्चिन्मूत्रञ्च तिष्ठति । मणिसन्धौस्रवेत्पश्चात्तद रुग्वाथवातिरुक् । मूत्रोत्सङ्गःसवि च्छिन्नस्तच्छेषोगुरुशेफसः॥४०॥

अपने दूषित होनेसे तथा वायुके आक्षेप से यदि लघुशंका करने के समय मूत्रका कुछभाग लिङ्गके शिरकी संधिमें रुकरहै और पीछेसे बहुत पीड़ासहित अथवा पीड़ा के विनाही निकलै और लिङ्गभारी मालूम होय तथा उत्थितरहै तो उस रोगको मूत्रोत्संग कहते हैं ॥ ४० ॥

वाताकृतिर्भवेद्धातान्मूत्रेशुष्यतिसं क्षयः । चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्र वर्त्तते । मेहमानस्यमन्दंवामूत्राती तःसउच्यते ॥ ४१ ॥

वायुके द्वारा मूत्रके सूखजाने को मूत्रसंक्षय कहते हैं इसमें वायु के लक्षण होते हैं बहुत कालतक मूत्रको रोंक कर मूत्रका त्यागकरने से शीघ्रही मूत्र नहीं निकलता है अथवा बहुत वेग करनेसे धीरे धीरे निकलता है इस रोगको मूत्रातीत कहते हैं॥ ४१ ॥

आध्मापयन्वस्तिगुदंरुद्धावायुश्च लोन्नताम् । कुर्य्यात्तीव्रार्त्तिमष्ठीलां मूत्रविण्मार्गरोधिनीम् ॥ ४२ ॥

कुपित हुआ वायु वस्ति तथा गुदा में अफरा उत्पन्न करके चंचल तथा उन्नत वटिया को उत्पन्न करता है इसमें बहुत पीड़ा होतीहै और इस वटिया के द्वारा मूत्र तथा मलका मार्ग रुकजाता है इसको वाताष्ठीला कहते हैं ॥ ४२ ॥

मूत्रंधारयतोवस्तौवायुःक्रुद्धोविधा रयेत् । मूत्ररोधार्तिकण्डूभिर्वातव स्तिःसउच्यते ॥ ४३ ॥

जो पुरुष मूत्रको रोंकता है उसका वायु वस्तिस्थानमें कुपित होकर मूत्रको रोंकता है और पीड़ा तथा खुजली को उत्पन्न करता है इस रोग को वातवस्ति कहते हैं ॥ ४३ ॥

ऊष्मणासोष्मकंमूत्रंशोषयन्रक्तपी तकम् । उष्णवातःसृजेत्कृच्छ्राद्व स्त्युपस्थार्तिदाहवान् । गतिसङ्गा दुदावृत्तःसमूत्रस्थानमार्गयोः४४॥

जिस पुरुष की ऊष्माके द्वारा मूत्र सूख जाता है उसके रक्तवर्ण तथा पीतवर्ण मूत्र बहुत कष्टसे उतरता है वस्ति तथा लिङ्ग में पीड़ा तथा दाह होता है और मूत्रके मार्गके रुकनेसे उदावर्त उत्पन्न होता है इसरोग को उष्णवात कहते हैं ॥ ४४ ॥

मूत्रस्यविगुणोवायुर्भग्नऽयाविद्ध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुण्डलीमूत्रंविहन्तिसंस्तम्भभग्नगौरववेष्टनैः । तीव्ररुङ्मूत्रविट्सङ्गैर्वातकुण्डलिकेतिसा ॥ ४५ ॥

मूत्राशयमें कुपित हुआ वायु टूटा फूटा तथा कुण्डलाकार होकर मूत्रको रोंकता है और स्तम्भ भारीपन ऐंठन तीव्र पीड़ा और मूत्र तथा मलका रुकना इन लक्षणों को उत्पन्न करता है इस रोगको वातकुण्डलिका कहते हैं ॥ ४५ ॥

रक्तंवातकफाद्दुष्टंवस्तिद्वारेसुदारुणम् । ग्रन्थिंकुर्य्यात्सकृच्छ्रेणसृजेन्मूत्रंतदावृतम् । अश्मरीसमशूलंतंमूत्रग्रन्थिंप्रचक्षते ॥ ४६ ॥

वायु तथा कफके द्वारा दूषित हुआ रक्त वस्तिके द्वारपर भयङ्कर ग्रन्थिको उत्पन्न करता है इससे बड़े कष्टपूर्वक मूत्र उतरता है और पथरी के समान पीड़ा होती है इसरोग को मूत्रग्रन्थि कहते हैं ॥ ४६ ॥

रूक्षदुर्बलयोर्वातेनोदावृत्तंशकृद्यदा । मूत्रस्रोतःप्रपद्येतविट्संसृष्टंतदानरः । विड्गन्धंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्विड्विघातंविनिर्दिशेत् ॥ ४७ ॥

रूक्ष तथा दुर्वल पुरुष का मल वायुके द्वारा रुककर जब मूत्र के स्रोतों में प्राप्त होता है तब मनुष्यके विष्ठा तथा विष्ठा कीसी दुर्गन्ध से युक्त मूत्र बहुत कष्टपूर्वक उतरता है इस रोग को विड्विघात कहते हैं ॥ ४७ ॥

द्रुताध्वलङ्घनायासादभिघातात्प्रपीडनात् । स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तःस्थूलस्तिष्ठतिगर्भवत् ॥ ४८ ॥

बहुत शीघ्रतापूर्वक चलना लंघन करना बहुत श्रम करना और चोट लगना तथा दबना इन कारणों से वस्ति अपने स्थानसे ऊपर की ओर जाकर गर्भ के समान स्थूल होकर स्थित होती है ॥ ४८ ॥

शूलस्पन्दनदाहार्त्तोबिन्दुंबिन्दुंस्रवत्यपि । पीडितस्तुस्रवेद्धारांस्तम्भनोद्वेष्टनार्त्तिमान् ॥ ४९ ॥

इससे रोगी शूल फड़कना तथा दाह इन रोगों से पीड़ित होता है बिन्दु २ करके मूत्र उतरता है दबाने से मूत्र की धारा निकलती है और स्तंभ पीड़ा तथा ऐंठन होती है ॥४९॥

वस्तिकुण्डलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् । पवनप्रबलंप्रायोदुर्निवारमबुद्धिभिः ॥ ५० ॥

इस भयंकर रोग को वस्तिकुण्डल कहते हैं यह शस्त्र तथा विषके समान भयंकर होता है इस में प्रायः वायुका बल होताहै मूर्ख वैद्य लोग इसकी चिकित्सा नहीं करसक्तेहैं॥५०॥

तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलमूत्रविवर्णता । श्लेष्मणागौरवंशोफः स्निग्धंमूत्रंघनंसितम् ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्त यह सब रोग यदि पित्तयुक्त होय तो दाह शूल तथा मूत्रका विवर्ण (बिगड़ेहुये वर्णवाले) होना यह लक्षण होते हैं और यह रोग यदि कफयुक्त होय तो शरीर का भारी होना शोथ और स्निग्ध गाढ़ा तथा

Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत मूत्र उतरना यह लक्षण होते हैं ॥ ५१ ॥

श्लेष्मरुद्धविलोवस्तिःपित्तोदीर्णो नसिध्यति । अविभ्रान्तविलःसाध्योनतुयःकुण्डलीकृतः । स्याद्वस्तौकुण्डलीभूतेतृण्मोहोच्छ्वासएव च ॥ ५२ ॥

पूर्वोक्त रोगों में यदि वस्तिका छिद्र कफ से रुकाहुआ होय तो वह वस्ति असाध्य होती है और जिस वस्ति में पित्तकी अधिकता होती है वह भी असाध्य होती है जिस वस्तिका मुख रुकाहुआ न होय और जो वस्ति कुण्डलाकार न होय वह साध्य होतीहै वस्तिके कुंडलाकार होनेपर तृषा मोह तथा श्वास यह लक्षण होते हैं ॥ ५२ ॥

दोषाधिक्यमवेक्ष्यैतान्मूत्रकृच्छ्रहरैर्जयेत् । वस्तिमुत्तरवस्तिञ्चसर्वेषामेवयोजयेत् ॥ ५३ ॥

पूर्वोक्त सम्पूर्ण वस्ति के रोगों में दोषकी अधिकता को देखकर मूत्रकृच्छ्रनाशक चिकित्सा करै और इन सम्पूर्ण रोगों में वस्ति तथा उत्तरवस्ति (लिङ्गमें पिचकारीदेना)का प्रयोग करना चाहिये ॥ ५३ ॥

पुष्पनेत्रञ्चहैमंस्यात्सूक्ष्ममौत्तरवस्तिकम् । जातीपुष्पस्यवृन्तेनसमंगोपुच्छसंस्थितम् । रौप्यंवासर्षपच्छिद्रंद्विकर्णंद्वादशांगुलम् ५४ ॥

उत्तर वस्तिकी नली सुवर्ण अथवा चाँदी की होनी चाहिये चमेली के फूल की दण्डी के समान पतली होनी चाहिये गऊकी पूँछ के समान आकृतियुक्त अर्थात् गावदुम होनी चाहिये बारह अंगुलकी लम्बी होनी चाहिये उसका छिद्र सरसों के जाने के योग्य सूक्ष्म होना चाहिये और उसके मध्यमें गौ के कानोंके समान दो कान होने चाहिये ॥ ५४ ॥

तेनाजवस्तियुक्तेनस्नेहस्यार्द्धपलंनयेत् । यथावयोविशेषेणस्नेहमात्रांविकल्पयेद्वा ॥ ५५ ॥

ऐसी नली में बकरे के मूत्राशय के चमड़े को बाँधकर उसमें दो तोले अथवा अवस्था के अनुसार मात्रायुक्त स्नेह भरकर ॥ ५५ ॥

स्नातस्यभुक्तभक्तस्यरसेनपयसापिवा । सृष्टविण्मूत्रवेगेनपीठेजानुसमेमृदौ ॥ ५६ ॥

स्नान कियेहुये और मांसरस अथवा दूध के साथ भोजन कियेहुये रोगी को उत्तरवस्तिदेवै उसकी रीति यहहै कि मल तथा मूत्र को त्याग करके घुटनों के समान ऊँची तथा कोमल ॥ ५६ ॥

ऋजोःसुखोपविष्टस्यहृष्टेमेढ्रेघृतान्विते । शलाकयान्विष्यगतिंयद्यप्रतिहताव्रजेत् ॥ ५७ ॥ ततःशेफःप्रमाणेनपुष्पनेत्रंप्रवेशयेत् । गुदवन्मूलमार्गेणप्रणयेदनुसेवनीम् ॥ ५८ ॥

बिछौनों से युक्त चौकी पर सुखपूर्वक सीधे बैठेहुये पुरुष के लिङ्ग को उत्थित करके उसमें घी लगाकर सलाई से उसके मुंहको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खोलकर जैसेअंगुलका लिङ्गहो तैसेअंगुल व-स्ति की नली उसमें डालै और गुदा के स-मान लिङ्गमें भी सीवनकी ओर नलीको झु-कायेरक्खै ॥ ५७ । ५८ ॥

हिंस्याद्वस्तिगतंवस्तिंमूलेस्नेहोन गच्छति । सुखंप्रपीड्यनिष्कंपंनि ष्कर्षेन्नेत्रमेवच ॥ ५९ ॥

नलीके अधिक जानेसे बहुत पीड़ा होती है और नलीके कमजानेसे स्नेह ठीक स्थान तक नहीं पहुंचता है इससे लिङ्गके अनुसा-रही नली डालनी चाहिये फिर वस्ति को दबाकर जिस रीतिसे हाथ न कँपै उसरीति से नलीको निकाललेना चाहिये ॥ ५९ ॥

गत्यागतेद्वितीयन्तुतृतीयञ्चप्रदाप येत् । अनागच्छन्नुपेक्ष्यस्तुरजनी व्युषितस्यच ॥ ६० ॥

तदनन्तर स्नेहके निकलजानेपर दूसरी वारतथा तीसरी बार फिर वस्ति देवै और स्नेह न निकलै तो रात्रिभरतक उसकी अ-पेक्षा न करै ॥ ६० ॥

पिप्पलीलवणागारधूमापामार्गस र्षपैः । वार्त्ताकुरसनिर्गुण्डीशम्या कैःससहाचरैः ॥ ६१ ॥

दूसरे दिन पीपरि सैंधव लवण गृहधूम लटजीरा सरसों बैंगनका रस मेवड़ी अमल-तास तथा पीले फूल की कटसरैया इनसब औषधियों को ॥ ६१ ॥

मूत्राम्लपिष्टैःसगुडैर्वर्त्तिंकृत्वाप्रवेश येत् । अग्रेतुसर्षपाकारंपश्चाद्धौमाष सम्मिताम् ॥ ६२ ॥ नेत्रदीर्घां घृताभ्यक्तांसुकुमारामभंगुराम् । नेत्रवन्मूत्रनाड्यान्तुगायौवांगुष्ठस म्मिताम् ॥ ६३ ॥

गोमूत्र तथा काँजी के साथ पीसकर गुड़ मिलाके अग्रभाग में सरसों के समान पत-ली अन्त में उर्द के समान मोटी नली के समान लम्बी कोमल तथा अभंगुर (नहीं टूटने वाली) बत्ती बनाकर घी लगाके लि-ङ्गमें डालै और यह बत्ती जब गुदामें डालने को होय तब अँगूठे के समान मोटी ब-नावै ॥ ६२ । ६३ ॥

स्नेहेप्रत्यागतेताभ्यांसानुवासनि कोविधिः । परिहारस्यसव्यापत्स म्यग्दत्तस्यलक्षणम् ॥ ६४ ॥

बत्ती डालने से स्नेहके लौट आने पर अ-नुवासनवस्तिमें जो विधि कही है वही करै और इसमें परिहार (परहेज़) भी अनुवा-सनवस्ति के समान करना चाहिये ॥ ६४ ॥

स्त्रीणाञ्चार्त्तवकालेतुप्रतिकर्मतदा चरेत् । गर्भासनासुखंस्नेहंतदा दत्तेह्यपावृता ॥ ६५ ॥

स्त्रियों को ऋतुसमय में उत्तरवस्ति देनी चाहिये क्योंकि उससमय योनि गर्भका ग्र-हण करने के लिये खुली रहती है इस से सुखपूर्वक स्नेह का ग्रहण करतीहै ॥ ६५ ॥

गर्भंयोनिस्तदाशीघ्रंजितेगृह्णाति मारुते । वस्तिजेषुविकारेषुयोनि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभ्रंशजेषुच । योनिशूलेषुतीव्रेषु योनिव्यापत्स्वसृग्दरे ॥ ६६ ॥

और उससमय वस्ति देने से वायु के शान्त होजाने पर योनि शीघ्रही गर्भ को ग्रहण करलेती है वस्ति से हुये रोगों में योनिके विध्वंस से हुये रोगों में योनिके तीव्र शूल में चिकित्सास्थान में कहे हुये योनि रोगों में प्रदर में ॥ ६६ ॥

अप्रस्रवतिमूत्रेचबिंन्दुंबिन्दुंस्रवत्यपि । विदध्यादुत्तरंवस्तिंयथास्वौषधसंस्कृतम् ॥ ६७ ॥

मूत्रके रुकजानेमें तथा बूँद बूँद मूत्र निकलने में दोषके अनुसार औषधियों के द्वारा उत्तरवस्ति देनी चाहिये ॥ ६७ ॥

पुष्पनेत्रप्रमाणन्तुप्रमदानांदशांगुलम् । मूत्रस्रोतःपरीणाहंमूत्रस्रोतोनुवाहिच ॥ ६८ ॥

स्त्रियों को जो उत्तरवस्ति दीजाती है उसकी नली दश अंगुलकी लम्बी होनी चाहिये योनिके छिद्र के अनुसार मोटी होनी चाहिये और उसका छिद्र इतना होना चाहिये जिसमें मूंगा जासकै ॥ ६८ ॥

गर्भमार्गेतुनारीणांविधेयंचतुरंगुलम् । द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेतुबालायास्त्वेकमंगुलम् ॥ ६९ ॥

स्त्रियों के गर्भाशय में जो वस्ति दी जाती है उसकी नली चारअंगुल की लम्बी होनी चाहिये मूत्राशय में दो अंगुल की लम्बी वस्ति की नली होनी चाहिये और कन्याओंको जो वस्ति देनीहोय तो वस्ति की नली एक अंगुल की होनीचाहिये ॥ ६९ ॥

उत्तानायाःशयानायाःसम्यक्सङ्कोच्यसक्थिनी । अथास्याःप्रणयेन्नेत्रमनुवंशगतंसुखम् ॥ ७० ॥

स्त्री को चित्त लिटाकर जांघैं सिकुड़वाकर योनिमें वस्तिकी नली डालै और नली का मुख रीढ़ की ओर कुछ झुकायेरक्खै ७०॥

द्वित्रिश्चतुर्वातांस्नेहानहोरात्रेणयोजयेत् । वस्तिंवस्तौप्रणीतेचवस्तिश्चानन्तरोभवेत् ॥ ७१ ॥

एक रात्रि दिन में दोबार तीनबार तथा चारबारवस्ति देवै फिर वस्ति देनेके अनन्तर पूर्वोक्त रीतिसे बत्ती बनाकरयोनिमें रक्खै ७१॥

त्रिरात्रंकर्मकुर्वीतस्नेहमात्रांविवर्द्धयन् । अनेनैवविधानेनकर्मकुर्य्यात्पुनस्त्र्यहात् ॥ ७२ ॥

इसप्रकार से तीनदिन तक वस्ति देवै फिर स्नेह की मात्रा को बढ़ाकर तीनदिनके उपरान्त फिर इसीप्रकार वस्ति देवै ॥ ७२ ॥

अतःशिरोविकाराणांकश्चिद्भेदःप्रवक्ष्यते । रक्तपित्तानिलादुष्टाःशंखदेशेविमूर्च्छिताः । तीव्ररुग्दाहरागंहिशोफंकुर्वन्तिदारुणम् ॥ ७३ ॥

इस के उपरान्त शिर के रोगों के कुछ भेद कहे जाते हैं दूषित रुधिर पित्त तथा वायु मस्तेकी हड्डियों में जाकर बढ़कर तीव्र पीड़ा तथा दाहयुक्त रक्तवर्ण भयङ्कर शोथ को उत्पन्न करते हैं ॥ ७३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सशिरोविषवद्वेगीनिरुध्याशुगलंतथा। त्रिरात्राज्जीवितंहन्तिशंखकोनामनामतः ॥ ७४ ॥

वह शोथ विष के समान वेगयुक्त होकर शीघ्रही गले को रोकता है और तीनरात्रि में रोगी को मारडालता है इस रोग को शंखक कहते हैं ॥ ७४ ॥

जीवेत्त्र्यहंचेद्भैषज्यंप्रत्याख्यायास्य कारयेत्। शिरोविरेकसेकादिसर्ववीसर्पनुच्चयत् ॥ ७५ ॥

यदि इसरोग में रोगी तीनदिन में न मरजाय तो यह रोगी असाध्य है यह कहकर बुद्धिमान् वैद्य चिकित्सा करै शिरोविरेचन तरारा देना और विसर्पनाशक सम्पूर्ण चिकित्सा इस रोग में करनी चाहिये ॥ ७५ ॥

रूक्षात्यध्यशनात्पूर्ववातावश्यायमैथुनैः। वेगसन्धारणायासव्यायामैःकुपितोऽनिलः ॥ ७६ ॥

रूखी वस्तु खानेसे भोजनपर भोजनकरने से जुकाम से पूर्वी हवा से मैथुन से मल मूत्र आदिके वेगों के रोकने से भार उठानाआदि श्रम से तथा मल्लयुद्ध आदि व्यायाम से कुपितहुआ वायु ॥ ७६ ॥

केवलःसकफोवार्द्धंगृहीत्वाशिरसोऽनिलः। मन्याभ्रुशंखकर्णाक्षिललाटार्द्धेचवेदनाम्। शस्त्राशनिनिभांकुर्य्यात्तीव्रांसोऽर्द्धावभेदकः ७७॥

अकेला अथवा कफ सहित होकर शिरके अर्द्धभाग को ग्रहण करके गले के पीछे की नस भृकुटी मत्थे की हड्डी कान नेत्र तथा ललाट के आधे भाग में शस्त्र अथवा वज्र लगने की सी तीव्र पीड़ाको उत्पन्न करता है इस रोग को अर्द्धावभेदक (आधाशीशी) कहते हैं ॥ ७७ ॥

नयनंवाथवाश्रोत्रमतिवृद्धोविनाशयेत्। चतुःस्नेहोत्तमांमात्रांशिरःकायविरेचनम्। नाडीस्वेदोघृतंजीर्णंवस्तिकर्मानुवासनम् ॥ ७८ ॥

इस के बहुत वढ़ने में जिस ओर पीड़ा होतीहै उस ओर के नेत्र अथवा कर्ण इन्द्रियका नाश होजाता है इस रोग में घृत आदि चारों स्नेहों का उत्तममात्रा के अनुसार प्रयोग करना शिरोविरेचन नाड़ीस्वेद (इस की विधि सूत्रस्थानके स्वेदाध्याय में कहीगईहै) पुराने घी का सेवन करना निरूहवस्ति अनुवासनवस्ति ॥ ७८ ॥

उपनाहःशिरोवस्तिर्दहनंवात्रशस्यते। प्रतिश्यायेशिरोरोगेयच्चोद्दिष्टंचिकित्सितम् ॥ ७९ ॥

पुल्टिस बाँधना शिरोवस्ति और दागना यह सब उपाय हित होते हैं और जुकाम तथा शिरोरोग में कहीहुई चिकित्सा भी इसमें हित होती है ॥ ७९ ॥

सन्धारणादजीर्णाद्यैर्मस्तिष्कंरक्तमारुतौ। दुष्टौदूषयतस्तच्चदुष्टंताभ्यांविमूर्च्छितम् ॥ ८० ॥

सूर्य्योदयांशुसन्तापाद्दुःखंविष्यन्दतेशनैः। ततोदिनेशिरःशूलंदिनवृद्ध्याचवर्द्धते ॥ ८१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल मूत्र आदि वेगोंका रोकना तथा अजीर्ण आदि कारणों से दूषित रुधिर तथा वायु मस्तिष्क (मत्थेका गूदा) को दूषित करते हैं फिर दूषित हुआ मस्तिष्क रुधिर तथा वायुके द्वारा बढ़कर सूर्य्योदय होने पर सूर्य्यकी किरणों के सन्ताप से धीरे धीरे बहुत कष्टपूर्वक पिघलता है इस से दिन होनेपर शिर में शूल का प्रारम्भ होता है जैसे जैसे दिन बढ़ता है तैसे तैसे शूल बढ़ता जाता है॥ ८०। ८१॥

दिनक्षयेततःस्त्यानेमस्तिष्केसंप्रशाम्यति । सूर्य्यावर्त्तःसएवस्यात्सर्पिरौत्तरभक्तिकम् ॥ ८२॥

और जैसे जैसे दिन घटता है तैसे तैसे शूल घटताहै और सूर्य्यके अस्त होजाने से मस्तिष्कके जमजाने पर वह शूल शान्त होजाता है इस रोग को सूर्य्यावर्त्त कहते हैं इस रोगमें भोजनके उपरान्त घी पीना॥ ८२॥

शिरःकायविरेकौचमूर्द्धांचस्नेहधारणम् । जाङ्गलैरुपनाहश्चघृतक्षीरैश्चसेचनम् ॥ ८३॥

शिरोविरेचन विरेचन मस्तक में घी तैल तथा चर्बी रखना जाँगल जीवों के मांस की पुल्टिस बाँधना घी तथा दूध से सींचना८३॥

बर्हितित्तिरिलावादिशृतंक्षीरोत्थितंघृतम् । नावनं जीवनीयाष्टगुणक्षीरोपसाधितम् ॥ ८४॥

और मोर तीतर तथा लवाआदि पक्षियों के माँस के साथ पाक कियेगये दूध से निकलेहुये घी को जीवनीयगणकी औषधियों के कल्क तथा अठगुणे दूध के साथ पाक करके उसकी नस्य लेना हित होताहै॥ ८४॥

उपवासातिशोकातिरूक्षशीताल्पभोजनैः । दुष्टादोषास्त्रयोमन्यांपश्चाद्घाटेतुवेदनाम् ॥ ८५॥ तीव्रांकुर्वन्तिनामाक्षिभ्रूशंखेष्ववतिष्ठते । स्पन्दनंगण्डपार्श्वस्यनेत्ररोगंहनुग्रहम् ॥ ८६॥

लंघन अत्यन्त शोक और अत्यन्त रूक्ष शीतल तथा स्वल्प भोजन करना इन कारणों से दूषित हुये वातआदि तीनों दोष मन्या (गलेके पीछे की नस) में स्थितहोकर घांटी के पीछे तीव्र पीड़ा को उत्पन्न करते हैं और वह पीड़ा नेत्र भ्रकुटी तथा कपाल की हड्डियों में स्थित होती है कपोलों के किनारे फड़कने लगते हैं नेत्ररोग उत्पन्नहोते हैं और जावड़ा जकड़ जाता है॥ ८५। ८६॥

सोऽनन्तवातस्तंहन्याच्छिरोऽर्कावर्त्तनाशनैः । वातोरूक्षादिभिःक्रुद्धःशिरःकम्पमुदीरयेत् ॥ ८७॥

इस रोग को अनन्तवात कहते हैं शिरोरोग तथा सूर्य्यावर्त्त रोग में कहीहुई चिकित्सा के द्वारा इस को शान्त करना चाहिये रूक्षआदि कारणों से कुपित हुआ वायु शिरःकम्प (शिरकाकांपना) उत्पन्न करताहै ८७।

तत्रामृताबलारास्नामहाश्वेताश्वगन्धकैः । स्नेहस्वेदादिवातघ्नंशस्तंनस्यश्चतर्पणम् ॥ ८८॥

इस रोगमें गिलोय बरियारा रास्ना श्वेत बिलाईकन्द तथा असगंध इन औषधियों के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा वातघ्न स्नेहन तथा स्वेदन नस्य और तर्प्पण हित होता है ॥ ८८ ॥

नस्तःकर्मचकुर्वीतशिरोरोगेषुसूक्ष्मवित् । द्वारंहिशिरसोनासातेनतद्व्याप्यहन्तिताम् ॥ ८९ ॥

बुद्धिमान् वैद्य सम्पूर्ण शिरके रोगोंमें नस्य कर्म्मकरै क्योंकि शिरका द्वार नासिका है इससे नासिका के द्वारा गईहुई औषध शिरमें व्याप्त होकर रोगों को नष्ट करती है ॥ ८९ ॥

नावनश्चावपीडश्चध्मापनंधूमएवच । प्रतिमर्षश्चविज्ञेयोनस्तःकर्मतुपञ्चधा ॥ ९० ॥

नावन अवपीड़ ध्मापन धूम और प्रतिमर्ष यह पाँच प्रकारका नस्य कर्म होताहै ९०॥

स्नेहनःशोधनश्चैवद्विविधंनावनंस्मृतम् । शोधनःस्तम्भनश्चस्यादवपीडोद्विधामतः ॥ ९१ ॥

इनमें से स्नेहन तथा शोधन भेदसे नावन दो प्रकार का होता है शोधन तथा स्तम्भन भेद से अवपीड़ (औषधियोंका रस निकाल कर नासिका में डालना) दो प्रकार का होता है ॥ ९१ ॥

चूर्णंस्याद्ध्मापनंनामदेहस्रोतोविशोधनम् । विज्ञेयस्त्रिविधोधूमःप्रागुक्तःशमनादिकः ॥ ९२ ॥

शरीर के स्रोतों को शुद्ध करनेवाले चूर्ण के नासिकामें डालनेको आध्मापन कहते हैं पहिले कहेहुये शमनआदि भेदोंसे धूम तीन प्रकार का होता है ॥ ९२ ॥

प्रतिमर्षोभवेत्स्नेहोनिर्दोषउभयार्थकृत् । एवंतद्रेचनंकर्मतर्पणंशमनंत्रिधा ॥ ९३ ॥

जिस निर्दोष स्नेह को नासिका में डालने से शोधन भी होय और स्नेहन भी होय उस को प्रतिमर्ष कहते हैं रेचन तर्पण तथा शमन भेद से प्रतिमर्ष तीन प्रकारका होताहै॥९३॥

स्तम्भसुप्तिगुरुत्वाद्याःश्लैष्मिकायेशिरोगदाः । शिरसोरेचनंतेषुनस्तःकर्मप्रशस्यते ॥ ९४ ॥

स्तम्भ सुन्न तथा भारी मालूम होना आदिक कफज शिरोरोगमें शिरोविरेचन अर्थात् शिरसे दोषों को निकालनेवाला नस्य कर्म्म (नासलेना) हित होता है ॥ ९४ ॥

येचवातात्मकारोगाःशिरःकम्पार्दितादयः । शिरसस्तर्पणंतेषुनस्तःकर्मप्रवक्ष्यते ॥ ९५ ॥

शिरःकम्प तथा अर्दित आदि वातज शिरोरोगमें शिरस्तर्प्पण अर्थात् स्नेहके द्वारा शिर को पुष्ट करनेवाला नस्यकर्म्म हित होता है ॥ ९५ ॥

रक्तपित्तादिरोगेषुशमनंनस्यमिष्यते । ध्मापनंधूमपानञ्चयथायोग्येषुशस्यते । दोषादिकंसमीक्ष्यैवभिषक्सम्यक्चकारयेत् ॥ ९६ ॥

रुधिर तथा पित्तज आदि शिरोरोगों में शमन (दोषोंको शान्तकरनेवाला) नस्यकर्म्म हित होता है और ध्मापन तथा धूमपान रोगों के अनुसार करना चाहिये सम्पूर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोषोंको देखकर इसप्रकार वैद्य चिकित्सा करै ॥ ९६ ॥

फलादिभेषजंप्रोक्तंशिरसोयद्विरेचनम् । तच्चूर्णंकल्पयेत्तेनपचेत्स्नेहंविरेचनम् ॥ ९७ ॥

पहिले जो शिरोविरेचक फलादि औषध कहीगई हैं उनका चूर्ण करके उसके साथ घृत आदि स्नेहका पाक करके शिरोविरेचन (शिरसे दोषोंको निकालना) के निमित्त प्रयोग करै ॥ ९७ ॥

यदुक्तंमधुरस्कन्धेभेषजंतेनतर्पणम् । साधयित्वाभिषक्स्नेहंनस्तःकुर्य्याद्विधानवित् ॥ ९८ ॥

पहिले मधुरस्कन्ध में जो औषधैं कही गई हैं उनकें साथ स्नेहका पाक करके उसके द्वारा शिरकी पुष्टताके लिये विधानका जानने वाला वैद्य नस्य देवै ॥ ९८ ॥

प्राक्सूर्य्येमध्यसूर्य्येवाकुर्य्यात्तर्पणमेवच । उत्तानस्यशयानस्यशयनेस्वास्तृतेसुखम् ॥ ९९ ॥

प्रातःकाल अथवा मध्याह्नके समय तर्पण नस्यका प्रयोग करना चाहिये अच्छे बिछौनों से युक्त शय्यापर सुखपूर्वक चित्त लेटे हुये ॥ ९९ ॥

प्रलम्बशिरसःकिञ्चित्किञ्चित्पादोन्नतस्यच । दद्यान्नासापुटेस्नेहंतर्पणंबुद्धिमान्भिषक् ॥ १०० ॥

कुछ ऊँचे पैतानेवाले कुछ नीचे शिरवाले पुरुष की नासिका में बुद्धिमान् वैद्य तर्पण स्नेह देवे ॥ १०० ॥

अनवाक्शिरसोनस्यंनाशिरःप्रतिपद्यते । अत्यवाक्शिरसोनस्यंमस्तुलुङ्गेचतिष्ठते ॥ १०१ ॥

क्योंकि जिसका शिर नीचा न कियाजाय उस पुरुषके शिरमें नस्य नहीं पहुँचताहै और ऊंचे शिरवाले पुरुषके मस्तुलुङ्ग में नस्य रुकजाता है ॥ १०१ ॥

अतएवशयानस्यशुद्ध्यर्थंस्वेदयेच्छिरः । संस्वेद्यनासामुन्नाम्यवामेनाङ्गुष्ठपर्वणा ॥ २०२ ॥

इसलिये पूर्वोक्तरीति से लेटेहुये पुरुष के शिरमें स्वेदनकरके उसकी नासिकाको बाँये हाथके अँगूठेसे उठाकर ॥ १०२ ॥

हस्तेनदक्षिणेनाथदद्यादुभयतःसमम् । प्रणाड्यापिचुनावापिनस्तःस्नेहंयथाविधि ॥ १०३ ॥

दहिने हाथसे नली अथवा रुईके द्वारा नासिकाके दोनों छिद्रों में विधिपूर्वक घृतआदि स्नेह विधिसे डालै ॥ १०३ ॥

कृतेचस्वेदयेद्भूयआकर्षेच्चपुनःपुनः । तत्स्नेहंश्लेष्मणासार्द्धंतथास्नेहोनतिष्ठति ॥ १०४ ॥

इसप्रकार स्नेह डालकर फिर स्वेदनकरै और कफ सहित स्नेहको वारम्बार निकालै ऐसा करनेसे स्नेह ठहरता नहीं है ॥ १०४ ॥

स्वेदेनोत्क्लेशितःश्लेष्मानस्तःकर्मण्युपस्थितः । भूयःस्नेहस्यशैत्येनशिरसिस्त्यायतेततः ॥ १०५ ॥

स्वेदन के द्वारा उभड़ाहुआ कफ नस्यके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा गयेहुये स्नेहकी शीतलता से फिर शिर में जमजाता है ॥ १०५ ॥

श्रोत्रमन्यागलाद्येषुविकारायस कल्पते। ततोनस्तःकृतेधूमंपिबे त्कफविनाशनम्। हितान्नभु ङ्निवातोष्णसेवीस्यान्नियतेन्द्रि यः॥ १०६॥

और कान गलेके पीछे की नस तथा कण्ठ आदि स्थानों में रोगोंको उत्पन्न करता है इससे नस्य कर्म्म के उपरान्त कफनाशक धूमपानकरै हित अन्नखाय वायुरहित तथा उष्णस्थानमें बैठै और जितेन्द्रिय होय॥१०६॥

विधिरेषोऽवपीडस्यकार्य्यःप्रध्मापन स्यच। षडङ्गुल्याथवानाड्याधमे च्चूर्णंमुखेनवा॥ १०७॥

यह अवपीड़ की विधि कही गई और ध्मापन की विधि कही जाती है छःअंगुल की नलीमें औषधियों का चूर्ण भरकर रोगी की नासिका में लगाकर मुखसे फूँकै॥१०७॥

विरिक्तशिरसन्तूर्णंपाययित्वाम्बुभो जयेत्। लघुत्रिष्वविरुद्धञ्चानिवात स्थमतन्द्रितः॥ १०८॥

और उस चूर्णकी तीक्ष्णतासे शिरकामल निकल जानेपर उष्णजल पिलाकर और हलकी तथा त्रिदोषनाशक वस्तु खिलाकर वायु रहित स्थानमें बैठावै॥ १०८॥

विरेकशुद्धौदोषस्यकोपनंयस्यसेव ते। सदोषोविचरंस्तत्रकरोतिस्वा न्गदान्बहून्। यथास्वंविहितंतेषु क्रियां कुर्य्याद्विचक्षणः॥ १०९॥ अकालकृतजातानांरोगाणामनुरू पतः। अजीर्णेभोजनेभुक्तेतोयपी तेऽथदुर्दिने॥ ११०॥

विरेचनके द्वारा शुद्ध हुये पुरुषको जिस दोषको कुपित करनेवाली वस्तु खिलाई जाती है वह दोष शरीरमें विचरण करके अपने रोगों को उत्पन्न करता है बुद्धिमान् वैद्य अकालमें विरेचन देने से होनेवाले रोगों के समान इन रोगोंकी चिकित्सा दोषके अनुसार करै अजीर्ण में भोजनकरचुकनेपर जल पीचुकनेपर दुर्दिन (मेघोंसे घिरेहुये दिन) में॥ १०९। ११०॥

प्रतिश्यायेनवेस्नानेस्नेहपानेऽनुवा सने। नावनंस्नेहनंरोगान्करोति श्लेष्मिकान्बहून्॥ १११॥

नवीन प्रतिश्याय (जुकाम) में स्नानकर चुकने पर स्नेहपानकरचुकने पर और अनुवासन वस्ति देचुकनेपर स्नेहन नावन नाम शिरोविरेचन देनेसे बहुत से कफजरोग उत्पन्न होते हैं॥ १११॥

तत्रश्लेष्महरःसर्वस्तीक्ष्णोष्णादि विधिर्हितः। क्षामेविरेचनेगर्भिण्या यामाभिहतेष्वपि॥ ११२॥

इन रोगों में कफनाशक उष्ण तथा तीक्ष्ण आदि सम्पूर्ण विधि करनी चाहिये क्षीण पुरुष विरेचित (विरेचन कियेहुये) पुरुष गर्भिणी स्त्री और व्यायाम करने से पीड़ित पुरुष को॥ ११२॥

बालोऽल्पदोषणस्येनक्रुद्धस्ताअनये

CC-0. Gangotri Vaidya Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रुदाम् । तत्रवातहरःसर्वोविधिः स्नेहनबृंहणः ॥ ११३ ॥ स्वेदादिः स्याद्घृतंक्षीरंगर्भिण्यास्तुविशेषतः। ज्वरशोकाभितप्तानांतिमिरंमद्यप स्यच ॥ ११४ ॥

रूखी नस्य देने से कुपित हुआ वायु अपने रोगों को उत्पन्न करता है उन रोगोंमें स्नेहन धातुवर्द्धक तथा स्वेदन आदि वातनाशक विधि करनी चाहिये और गर्भिणी स्त्री को विशेष करके घी तथा दूध देना चाहिये ज्वर तथा शोकसे संतप्त पुरुष और मद्य पीनेवाले पुरुषके तिमिररोग (धुमला दिखाई देना) होनेपर ॥ ११३ । ११४ ॥

रूक्षैःसेकाञ्जनैर्लेपैःपुटपाकैश्चशोध येत् । तेनज्वराद्यस्तत्रप्रशमंया न्तितस्यतु ॥११५ ॥

रूक्ष सेक (तरारा देना) अञ्जन लेप तथा पुटपाक (पुरुषको लिटाकर उसके नेत्रमें मेड बांधकर औषध भरना) के द्वारा शुद्ध करना चाहिये इस से ज्वरादिक का नाश होता है ॥ ११५ ॥

स्नेहनंशोधनञ्चैवद्विविधंनस्यमुच्य ते । प्रतिमर्षश्चनस्यार्थंकरोतिनच दोषवान् ॥ ११६ ॥

स्नेहन (मस्तक को स्निग्धकरनेवाली) तथा शोधन (मस्तक के दोषोंको निकालने वाली) भेदसे नस्य दो प्रकार की होती है प्रतिमर्ष नाम नस्यसे यह दोनों काम होते हैं और कोई दोष नहीं होताहै ॥ ११६ ॥

नस्तःस्नेहांगुलिंदद्यात्प्रातर्निशिच सर्वदा । नचोत्सिंहेदरोगाणांप्रति मर्शःसदार्ढ्यकृत् ॥ ११७ ॥

सदैव घृत आदि स्नेहमें अँगुली बोरकर प्रातःकाल तथा सायँकालके समय नासिका में डालै इससे नीरोग पुरुषोंके शिरमें बहुत दृढ़ता होती है ॥ ११७ ॥

तत्रश्लोकौ ।

त्रीणियस्मात्प्रधानानिमर्माण्यभि हतेषुच । तेषुलिङ्गंचिकित्साश्चरोग भेदाश्चसौषधाः ॥ ११८ ॥ विधिरुत्तरबस्तेश्चनस्तःकर्मविधि स्तथा । षड्व्यापद्भेषजंसिद्धौम र्ध्यायेप्रकीर्त्तितम् ॥ ११९ ॥

इति सिद्धिस्थानेत्रिमर्मीयासिद्धिर्नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

इस में यह दो श्लोक हैं । इस त्रिमर्मीया सिद्धि नामक अध्याय में भगवान् आत्रेयजीने जिस कारण से सम्पूर्ण मर्मों में तीन मर्म प्रधान हैं उनमें चोट लगने के लक्षण तथा चिकित्सा उनके रोगों के औषधसहित भेद उत्तरबस्तिकी विधि नस्यकर्मकी विधि और छः रोगों की औषध यह सब विषय कहा है ॥ ११८ । ११९ ॥

इति अग्निवेशकृतचरकमतिसंस्कृततन्त्रमें सिद्धिस्थानकात्रिमर्मीयासिद्धिनामेनव वांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दशवां अध्याय ॥

वस्तिसिद्धिः।

सिद्धानांवस्तिनांतेषुतेषुरोगेषुसर्वदा। शृणवग्निवेशगदतःसिद्धिंसिद्धिप्रदांभिषजाम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त वस्तिसिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजीने कहा ॥

भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि हे अग्निवेश ! जिस जिस रोगमें जो २ वस्ति सिद्ध तथा श्रेष्ठ हैं और श्रेष्ठवैद्यों को सिद्धिदेनेवाली हैं उनको हम कहते हैं तुम सुनो १ ॥

बलदोषकालरोगप्रकृतीःप्रविभज्य योजितः। सम्यक्स्वैस्वैरौषधवर्गैः स्वान्स्वान्रोगान्नियच्छति ॥ २ ॥

बल दोष काल रोग तथा प्रकृतिका विभाग करके अपने अपने वर्गमें कहीहुई औषधियोंके द्वारा दीगई वस्ति अपने अपने रोगों को नष्ट करती है ॥ २ ॥

कर्मान्यद्वस्तिसमंनविद्यतेशीघ्रसुखविशोधित्वात्। आश्वपतर्पणयोगाच्चनिरत्ययत्वाच्च ॥ ३ ॥

वस्ति क्रिया के समान और कोई चिकित्सा नहीं है क्योंकि वस्तिके द्वारा शीघ्रही सुखपूर्वक शरीर शुद्ध होजाता है तथा हलका होजाता है और किसी प्रकार की हानि नहीं होती है ॥ ३ ॥

सत्यपिदोषहरत्वेकटुतीक्ष्णोष्णादिभेषजम्। सदुःखोद्गारहृद्यत्वकोष्ठाबाधाविरेकेस्युः ॥ ४ ॥

यद्यपि कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण आदि औषधियोंके योगसे विरेचनके द्वारा दोष निकलते हैं तथापि बहुत दुःखदायी डकार आना हृदय को अप्रिय होना और कोष्ठमें पीड़ा होना यह दोष विरेचनमें होते हैं ॥ ४ ॥

अविरेच्यौशिशुवृद्धौतावप्राप्तहीनधातुबलौ। आस्थापनमेवतयोः सर्वार्थकृदुत्तमंकर्म ॥ ५ ॥

और बालक तथा वृद्धको विरेचन देना उचित नहीं होता है क्योंकि बालक की रस आदि धातु पुष्ट नहीं होती हैं और वृद्ध की रस आदि धातु क्षीण होती हैं इससे बालक तथा वृद्धके लिये आस्थापनवस्तिही सम्पूर्ण प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाली तथा श्रेष्ठ होती है ॥ ५ ॥

बलवर्णहर्षमार्दवगात्रस्नेहान्नृणां ददत्याशु। अनुवासनंनिरूहश्चोत्तरवस्तिश्चसत्रिविधः ॥ ६ ॥

और मनुष्यों के बल वर्ण हर्ष कोमलता तथा अङ्गों की स्निग्धता को शीघ्रही उत्पन्न करती है अनुवासन निरूह तथा उत्तरवस्ति इन भेदोंसे वस्ति तीन प्रकारकी होतीहै ६ ॥

शाखावातार्त्तानांसंकुचितस्तब्धभग्नसन्धीनाम्। विट्सङ्गाध्मानारुचिपरिकर्त्तिरुगादिषुचशस्तः ७

हाथ पैरों में वातज पीड़ा होना अङ्गों का सिकुड़जाना अङ्गों का जकड़जाना वायु के द्वारा अङ्गों का टूटसा जाना अङ्गों में वातज पीड़ा होना मलका रुकना अफरा अरुचि और गुदामें कैंची से काटनेकीसी पीड़ा हो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ना इत्यादि रोगों में वस्तिक्रिया हित होती है ॥ ७ ॥

उष्णार्त्तानांशीताञ्शीतार्त्तानांतथा सुखोष्णांश्च । तद्योगौषधयुक्तान्व स्तीन्सर्वत्रविनियुञ्ज्यात् ॥ ८ ॥

उष्णता से पीड़ित पुरुषों को योग्य औषधियों से युक्त शीतलवस्ति देनी चाहिये और शीत से पीड़ित पुरुषों को योग्य औषधियों से युक्त कुछ उष्ण वस्ति देनी चाहिये ॥ ८ ॥

वस्तीन्नबृंहणीयान्दद्याद्व्याधिषुवि शोधनीयेषु । मेदस्विनोविशोध्या येचनराःकुष्ठमेहार्त्ताः ॥ ९ ॥

शोधन करने के योग्य रोगों में धातुवर्द्धक वस्ति नहीं देनी चाहिये बहुत मेदावाले पुरुष और कुष्ठ तथा प्रमेहसे पीड़ित पुरुष शोधनके योग्य होते हैं इस से इनको धातुवर्द्धक वस्ति नहीं देनी चाहिये ॥ ९ ॥

नक्षीणक्षतदुर्बलमूर्च्छितकृशशुष्क देहानाम् । युञ्ज्याद्विशोधनीया न्दोषनिबद्धायुषोयेच ॥ १० ॥

क्षीणक्षत दुर्बल मूर्च्छित कृश शुष्क शरीर वाले और जिन का जीवन दोषों के आधीन है इन सबको शोधनवस्ति नहीं देनी चाहिये ॥ १० ॥

वाजीकरणेऽसृक्पित्तयोश्चमधुघृ तपयोयुताःसर्वे । शस्ताःसतैलमू त्रारनाललवणाश्चकफवाते ॥ ११ ॥

वाजीकरण में और रक्तपित्तज रोगों में शहद घी तथा दुग्धयुक्त वस्ति देनी चाहिये और कफज तथा वातज रोगों में तैल गोमूत्र कांजी तथा सैंधवलवणयुक्त वस्ति देना श्रेष्ठ होता है ॥ ११ ॥

युञ्ज्याद्द्रव्याणिवस्तिष्वम्लंमूत्रंप यःसुराक्काथान् । अविरोधाद्धातू नांरसयोनित्वाच्चजलमुष्णम् ॥ १२ ॥

वस्तियों में कांजी गोमूत्र दूध मदिरा तथा क्काथ इन द्रव (पतलीवस्तु) वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिये और किसी धातुका विरोधी न होने के कारण तथा सम्पूर्ण रसों की योनि (उत्पत्तिस्थान) होने के कारण उष्णजलका प्रयोग करना चाहिये ॥ १२ ॥

सुरदारुशताह्वैलाकुष्ठमधुकपिप्प लीमधुस्नेहाः । ऊर्द्ध्वानुलोमभागाः सर्षपाःशर्करालवणम् ॥ १३ ॥

देवदारु सौंफ छोटी इलायची कूट मुलेठी पीपरि शहद घृत आदि स्नेह सरसों शकर वमनकारक औषधियों के भाग और लवण यह सब वस्तु मात्रा के अनुसार वस्ति में छोड़नी चाहिये ॥ १३ ॥

आवापोवस्तीनामतःप्रयोज्यानि येषुयानिस्युः । युक्तानिसहकषा यैस्तदुत्तरतःप्रवक्ष्यामि ॥ १४ ॥

इस के उपरान्त जिन जिन वस्तियों में काढ़ों के साथ जौन २ औषध छोड़नी चाहिये वह आगे कहता हूं ॥ १४ ॥

चिरजातकठिनबलिषुव्याधिषुती क्ष्णाविपर्ययेचमृदवः । सम्प्रतिवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पकषायैर्योज्यास्त्वनुवासननिरू
हाः ॥ १५ ॥

बहुत दिनों के पुराने कठिन तथा बलवान् रोगों में प्रतिवाप (जो औषध वस्ति देनेके द्रव पदार्थों में छोड़ी जाती हैं उनको प्रतिवाप कहते हैं) तथा काढ़ों से युक्त तीक्ष्ण अनुवासन तथा निरूहवस्ति देनी चाहिये और थोड़े दिनों से उत्पन्नहुए कोमल तथा निर्बल रोगोंमें कोमलवस्ति देनी चाहिये ॥ १५ ॥

अर्द्धश्लोकैरतःसिद्धान्नानाव्याधि
षुवर्गशः । वस्तीन्वीर्य्यसमैर्भागैर्य
थार्हानिहतान्शृणु ॥ १६ ॥

इस के उपरान्त आधे श्लोकों में कहेहुये सिद्ध अनेकप्रकारके रोगों में वर्ग के अनुसार बराबर वीर्यवाले यथायोग्य वस्ति के योगों को कहता हूं सुनो ॥ १६ ॥

बिल्वाग्निमन्थश्योणाकाःकाश्म
र्य्यः पाटलिस्तथा । शालपर्णीपृ
श्निपर्णीबृहत्यौवर्द्धमानकः १७ ॥

बेल की छाल अरनी सरिवन खंभारी के फल तथा पाढरि शालपर्णी पृश्निपर्णी दोनों भटकटैया तथा अरण्ड ॥ १७ ॥

यवाःकुलत्थाःकोलास्थिस्थिराचेति
त्रयोऽनिले । शस्यन्तेसचतुःस्नेहा
पिशितस्यरसान्विताः ॥ १८ ॥

यव कुल्थी बेरकी गुठली तथा शालपर्णी घृत आदि चारो स्नेहों से तथा मांसरससे युक्त यह तीनों वस्तिके योग वातज रोगों में हित होते हैं ॥ १८ ॥

नलवञ्जुलवानीरशतपत्राणिशैव
लम् । मञ्जिष्ठाशारिवानन्तापय
स्यामधुयष्टिका ॥ १९ ॥

अशोक बेत कमल तथा शिवार मंजीठ साई जवासा क्षीरकाकोली तथा मुलेठी १९॥

चन्दनंपद्मकोशीरं तुङ्गश्चपैत्तिकेत्र
यः । सशर्कराघृतक्षौद्राःसक्षीराव
स्तयोहिताः ॥ २० ॥

रक्तचन्दन पद्माख खस तथा पुन्नाग शकर शहद दूध तथा घृत युक्त यह तीनों वस्तिके योग पित्तज रोगों में हित होते हैं ॥ २० ॥

अर्कस्तथैवचालर्कएकाष्ठीलापुन
र्नवा । हरिद्रात्रिफलामुस्तंपीतदारु
कुटन्नटम् ॥ २१ ॥

मदार आलाक पाठर तथा गदहपूर्णा हल्दी त्रिफला नागरमोथा देवदारु तथा केवटी मोथा ॥ २१ ॥

पिप्पल्यश्चित्रकश्चेतित्रयस्तेश्लेष्म
रोगिणाम् । सक्षारक्षौद्रगोमूत्राना
तिस्नेहान्विताहिताः ॥ २२ ॥

पीपरि तथा चीता जवाखार गोमूत्र शहद तथा स्वल्प स्नेहयुक्त यह तीनों वस्तिके योग कफज रोग वालों को हित होते हैं ॥ २२ ॥

फलजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवकवत्स
काः । श्यामाचत्रिफलाचैवस्थिराद
न्तीद्रवन्त्यपि ॥ २३ ॥

मैनफल बन्दाल कडुईलौकी श्वेत फूलकी तुरई कडुई तुरई तथा इन्द्रयव निसोथ त्रिफला शालपर्णी दन्ती (जमालगोटे) की जड़ तथा द्रवन्ती (जमालगोटाविशेष) की जड़ ॥ २३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकीर्य्याचोदकीर्य्याचनीलिनीक्षीरिणीतथा। ससलाशंखिनीलोध्रं फलंकाम्पिल्लकस्यच ॥ २४ ॥

काँटेदार कंजा अरार नील तथा क्षीरकाकोली ससला (एक प्रकारका सेंहुड़) शंख कौड़ी लोध तथा कवीला का फल ॥ २४ ॥

चत्वारोमूत्रसिद्धास्तेपक्वाशयविशोधनाः। व्यस्तैरपिसमस्तैश्च चतुर्योगाउदाहृताः ॥ २५ ॥

गोमूत्रके साथ इन चारों योगोंका अलग२ तथा सम्पूर्ण एक साथ काँढ़ा करके वस्तिदेनेसे पक्वाशय शुद्ध होजाता है ॥ २५ ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीमुद्गपर्णीशतावरी। विदारीमधुयष्ट्याह्वाशृङ्गाटककशेरुके ॥ २६ ॥

काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी तथा शतावर बिलाईकन्द मुलेठी सिंघाड़ा तथा कसेरू ॥ २६ ॥

आत्मगुप्ताफलंमाषाःसगोधूमायवास्तथा। जाङ्गलानूपजंमांसमित्येते शुक्रवर्द्धनाः ॥ २७ ॥

किंवाच के वीज उर्द गेहूं तथा यव और हिरनआदि जांगल तथा भैंसा आदि अनूप जीवों का मांस यह चारों वस्ति के योग वीर्य्यवर्द्धक होते हैं ॥ २७ ॥

जीवन्तीचाग्निमन्थश्चधातकीपुष्पवत्सकौ। प्रग्रहःखदिरःकुष्ठंशमीपिण्डीतकोयवाः ॥ २८ ॥

जीवन्ती अरनी धवई के पुष्प तथा कुरैया प्रग्रह कत्था कूट छोंकर मैनफल तथा यव ॥ २८ ॥

प्रियंगुरक्तमूलीचतरुणीस्वर्णयूथिका। वटाद्याःकिंशुकंलोध्रमिति सांग्राहिकामताः ॥ २९ ॥

प्रियंगु लज्जालू घिकुवार तथा स्वर्णयूथिका वर्गद आदि वृक्ष टेसू तथा लोध यह चारोवस्ति के योग ग्राही होते हैं ॥ २९ ॥

परिस्रवेशृतंक्षीरंसवृश्चीरपुनर्नवम्। आखुपर्णिकयावापितण्डुलीयकयुक्तया ॥ ३० ॥

वृश्चीर तथा गदहपूर्णा अथवा मूसापर्णी तथा चौराई के साथ पाक कियेहुये दूध के द्वारा स्राव वालोंको वस्ति देनी चाहिये ३० ॥

कोलकतककाण्डेक्षुदर्भकाशेक्षुशालिभिः। दाहघ्नःसघृतक्षीरोद्भितीयश्चोत्पलादिभिः ॥ ३१ ॥

कोलकत तालमखाना कुश काश ईख तथा शालिधान इन के काढ़ेमें घी तथा दूध मिलाकर अथवा उत्पल आदि गणकी औषधियों के काढ़े में घी तथा दूध मिलाकर वस्तिदेने से दाह का नाशहोता है ॥ ३१ ॥

कर्वुदाराढकीनीपविदुलैःक्षीरसाधितैः। वस्तिःप्रदेयोभिषजाशीतःसमधुशर्करः ॥ ३२ ॥ परिकर्त्तेस्तथावृन्तैःश्रीपर्णीकोविदारजैः। देयोवस्तिः सुवैद्यैस्तुयथावद्विदितक्रियैः ॥ ३३ ॥

कचनार अरहर कदम्ब तथा वेतके साथ पाक कियेहुये दूधमें शहद तथा शक्कर मिला-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर शीतलवस्ति देने से परिकर्तिका का नाश होता है खँभारी तथा कचनार के टिंभुनों के साथ पाक किये हुये दूधके द्वारा वस्ति देनेसे परकर्तिका (गुदामें कैंचीसे काटने कीसी पीड़ा होना) का नाश होता है॥ ३२। ३३॥

मुष्टिःशाल्मलिवृन्तानांक्षीरसिद्धो घृतान्वितः। हितःप्रवाहणेतद्वद्वृन्तैःशाल्मलिकस्यच ॥ ३४ ॥

दूध में डालकर पाक किये गये चारतोल्ने सेमरके टिंभुनों को घीमें मिलाकर वस्ति देने से अथवा सेमर के टिंभुनों के साथ पाक किये हुये दूध के द्वारा वस्ति देनेसे बहुत काँखने का नाश होताहै॥ ३४॥

अश्वावरोहिकाःकाकनासाराजकशेरुकैः। सिद्धाःक्षीरेऽतियोगेस्युः क्षौद्राञ्जनघृतैर्युताः ॥ ३५ ॥

असगंध कौवाठोंठी तथा नागरमोथा इनके साथ पाक कियेहुये दूधमें शहद रसौंत तथा घी डालकर वस्ति देने से वमन आदिकी अधिकता से हुये रोगों का नाश होताहै॥ ३५॥

न्यग्रोधाद्यैश्चतुर्भिश्चतेनैवविधिनापरः। वस्तिःप्रवाहणेदेयोभिषजाकल्पितोधिया ॥ ३६ ॥

बर्गद आदि चारवृक्षों की छालके साथ पाक कियेगये दूधमें शहद रसौंत तथा घी डालकर वस्ति देनेसे पूर्वोक्त गुण होता है काँखनेमें बुद्धिमान् वैद्य अपनी बुद्धिसे कल्पित करके यह वस्ति देवे॥ ३६॥

बृहतीक्षीरकाकोलीपृश्निपर्णीशतावरी। काश्मरीबदरीदूर्वातथोशीरप्रियङ्गवः॥ ३७॥जीवनीयैःशृतौ क्षीरौद्वौघृताञ्जनसंयुतौ। वस्तीप्रदेयौभिषजाशीतौसमधुशर्करौ३८॥

भटकटैया क्षीरकाकोली पृश्निपर्णी शतावरि खँभारीके फल बिलाईकन्द दूब खस तथा प्रियंगु इनके साथ पाक कियेहुये तथा जीवनीयगणके साथ पाक कियेहुये दूधको शीतल करके उसमें घी रसौंत शहद तथा शक्कर डालकर वस्ति देनी चाहिये इससे जीवनकी रक्षा होती है॥ ३७। ३८॥

गोऽव्यजामहिषीक्षीरैर्जीवनीययुतैस्तथा। तेनैवविधिनावस्तिर्देयःसक्षौद्रशर्करः॥ ३९॥

गऊ भेंड़ी बकरी तथा भैंस के दूधमें जीवनीयगणकी औषध तथा शहद व शक्करडालकर उसी विधिसे वस्ति देना जीवनके लिये हित होता है॥ ३९॥

शशैणदक्षमार्जारमहिषाव्यजशोणितैः। सद्यस्कैर्मृदुभिर्वस्तिर्जीवादानेप्रशस्यते॥ ४०॥

खरगोश एणमृग मुर्गे बिल्ली भैंसे भेंड़े तथा बकरे के ताजे रुधिर के द्वारा कोमलवस्ति देना जीवन के लिये हित होता है॥ ४०॥

मधूकमधुकद्राक्षादूर्वाकाश्मर्यचन्दनैः। शर्कराचन्दनद्राक्षामधुधात्रीफलोत्पलैः॥ ४१॥

महुवा मुलैठी मुनक्का दूब खँभारी के फल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा लालचन्दनके द्वारा अथवा शक्कर चन्दन मुनक्का मुलेठी आँवला तथा उत्पल के द्वारा वस्ति देने से ॥ ४१ ॥

रक्तपित्तप्रमेहेतुकषायःसोमवल्कजः। वस्तिर्देयोविधिज्ञेनभिषजा युक्तिकल्पितः ॥ ४२ ॥

रक्तपित्तका नाश होता है और विधिका जानने वाला वैद्य युक्तिपूर्वक श्वेत कत्थे के काढ़े के द्वारा वस्ति देवे तो प्रमेहका नाश होता है ॥ ४२ ॥

त्रिकास्त्रयोऽनिलादीनांचतुष्काश्चापरेत्रयः। पक्काशयविशुद्ध्यर्थंवृष्याःसांग्राहिकास्तथा ॥ ४३ ॥

इस वस्तिसिद्धिनामक अध्याय में भगवान् आत्रेयजी ने कफ पित्त तथा वातजरोगों में तीन तीन वस्ति के योग पक्काशय को शुद्ध करने के लिये वीर्य्यको बढ़ाने के लिये तथा मल को रोकने के लिये वस्ति के चार चार योग ॥ ४३ ॥

परिस्रावेतथादाहेपरिकर्त्तेप्रवाहणे। अतियोगेमताःपंचजीवादानेतथात्रयः ॥ ४४ ॥

परिस्राव दाह परिकर्त्तिका कांखना तथा वमन आदिकी अधिकता से होने वाले रोगों को नष्ट करने के लिये वस्ति के पांच योग प्राणों की रक्षा के लिये वस्ति के तीन योग ॥ ४४ ॥

रक्तपित्तेद्वयंमेहएकत्रिंशच्चपञ्चच। सुलभाश्चौषधक्लेशावस्तयोगुणवत्तमाः ॥ ४५ ॥

रक्तपित्त को नष्टकरने के लिये वस्ति के दो योग और प्रमेह को नष्टकरने के लिये वस्तिका एक योग इसप्रकार वस्तिके सुलभ स्वल्प औषधयुक्त स्वल्प क्लेशदायक और अत्यन्त गुणकारी छत्तीस योग कहे हैं ॥ ४५ ॥

गुल्मातिसारोदावर्त्तस्तम्भसंकुचितादिषु। सर्वाङ्गैकाङ्गरोगेषुरोगेष्वेवंविधेषुच ॥ ४६ ॥ यथास्वमौषधैःसिद्धान्वस्तीन्दद्याद्विचक्षणः। पूर्वोक्तेनविधानेन कुर्य्याद्योगान्पृथग्विधान् ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिस्थानेवस्तिसिद्धिर्नामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

गुल्म अतीसार उदावर्त्त स्तम्भ अङ्गोंका सिकुड़जाना सर्वाङ्गवात तथा एकाङ्गवात इन रोगों को तथा इसी प्रकारके अन्यरोगों को नष्ट करने के लिये बुद्धिमान् वैद्य दोषके अनुसार औषधियों के द्वारा वस्ति देवै और वस्तिदेने के लिये पूर्वोक्त रीतिसे अलग अलग औषधियों के द्वारा योगों की कल्पना करै ॥ ४६ । ४७ ॥

इतिअग्निवेशकृतचरकप्रतिसंस्कृततंत्रमेंसिद्धिस्थानकावस्तिसिद्धिनामदशवाँअध्याय समाप्तहुआ ॥ १० ॥

ग्यारहवाँअध्याय॥

फलमात्रासिद्धिः।

भगवन्तमुदारसत्त्वधीश्रुतिविज्ञान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सममृद्धमत्रिजम् । फलवस्तिवर त्वनिश्चयेसविवादामुनयोप्युपाग मन् ॥ १ ॥ भृगुकौशिककाप्यशौ नकाःसपुलस्त्यासितगौतमादयः । कतमत्प्रवरफलादिषुस्मृतमास्थाप नयोजनास्विति ॥ २ ॥

इस उपरान्त फलमात्रासिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

भृगु कौशिक काप्य शौनक पुलस्त्य असित तथा गौतम आदि महर्षिलोग फलवस्तियोंमें से श्रेष्ठता का निश्चय करने के लिये विवादयुक्त होकर महावीर्य्यवान् महाबुद्धिमान् और श्रुति तथा ज्ञान से युक्त भगवान् आत्रेयजी के निकट गये और यह पूँछते भये कि आस्थापनवस्तिके प्रयोगमें मैनफल आदिक फलोंमें से कौनसा फल सबसे श्रेष्ठ है ॥ १ । २ ॥

कफपित्तहरंपरंफलेष्वथजीमूतकमा हशौनकः । मृदुवीर्य्यतयाभिनत्ति तदितिचोवाचनृपोऽथवामकः ॥ ३ ॥

भृगुआदिक सम्पूर्ण महर्षियोंमें से शौनक ने कहा कि सम्पूर्ण फलोंमें से बन्दाल कफ पित्तको नाश करने के लिये बहुत श्रेष्ठ होता है यह सुनकर वामक नाम राजाने कहा कि मृदुवीर्य्य होने के कारण बन्दाल मल को भिन्न करता है इस से वह ठीक नहीं होता है किंतु ॥ ३ ॥

कटुतुम्बीफलमुत्तमंमतंवमनेदोषस मीरणक्षतत् । तदयोग्यमशैत्यती क्ष्णताकटुरौक्ष्यादितिगौतमोऽब्र वीत् ॥ ४ ॥

वमन के निमित्त कडुवी लौकी बहुत श्रेष्ठ होती है क्योंकि यह दोषों को उभाड़देती है यह सुनकर गौतम ने कहा कि कडुवी लौकी में तो उष्णता तीक्ष्णता कटुता तथा रूक्षता यह दोष होते हैं ॥ ४ ॥

कफपित्तनिबर्हणंपरंसचधामार्गव मित्यमन्यत । तदमन्यतवातलंपु नर्वडिशोग्लानिकरंबलापहम् ॥ ५ ॥

वमन के लिये तरोई श्रेष्ठ होती है क्योंकि वह कफ तथा पित्तको अत्यन्त नष्ट करती है यह सुनकर वड़िश ऋषि ने कहा कि तरोई बादी ग्लानिकारक तथा बलनाशक होती है ॥ ५ ॥

कुटजंप्रशशंसचोत्तमंनबलघ्नंकफ पित्तहारिच । अतिविज्जलमूर्द्ध भागिकंपवनक्षोभिचकाप्यआहत त् ॥ ६ ॥

इससे हमारे मतसे वमन के लिये इन्द्रयव बहुत श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि वह बलको नहीं नष्ट करते हैं और कफ तथा पित्तको दूर करते हैं यह सुनकर काप्य ऋषि ने कहा कि इन्द्रयव ऊपरकी ओर जानेवाले तथा वायुको बिगाड़नेवाले होते हैं ॥ ६ ॥

कृतवेधनमाहवातलंकफपित्तंप्रबलं हरेदिति । तदसाध्वितिभद्रशौन कःकटुकश्चापिबलघ्नमित्यपि ॥ ७ ॥

इससे हमारे मतमें कृतवेधन (एक प्रकार की तरोई) वमनके लिये उत्तम होताहै क्यों-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि वह वायु को नहीं उत्पन्न करता है और प्रबल कफ पित्तको नष्ट करता है यह सुनकर भद्रशौनक ऋषिने कहा कि यह बात ठीक नहीं है क्योंकि कृतवेधन कडुवा तथा बलनाशक होता है॥ ७॥

इतितद्वचनानिहेतुभिःसुविचित्राणिनिशम्यबुद्धिमान् । प्रशशंसफलेषुनिश्चयंपरमंचात्रिसुतोऽब्रवीदिदम् ॥ ८॥

इस प्रकार महर्षियों के कारणसहित विचित्र वचन सुनकर बुद्धिमान् भगवान् आत्रेयजी ने उन लोगोंकी प्रशंसा करके मैनफल आदि फलों की श्रेष्ठताका निश्चय करने के लिये यह कहा कि॥ ८॥

फलदोषगुणान्सरस्वतीप्रतिसर्वैरपिसम्यगीरिता । नतुकिञ्चिददोषनिर्गुणंगुणभूयस्त्वमतोविचिन्त्यते॥ ६॥

आपलोगों ने फलों के दोष तथा गुणों के विषयमें बहुत अच्छा वर्णन किया है किन्तु कोई फल निपट निर्दोष तथा निर्गुण नहीं होताहै इससे गुणोंकी अधिकताका विचारकरना चाहिये॥ ९॥

इहकुष्ठहितागरागरीहितमिक्ष्वाकुतुमेहिनेमतम् । कुटजस्यफलंहृद्दामयेप्रवरंकोठफलञ्चपाण्डुषु॥१०॥

कुष्ठरोग में बन्दाल प्रमेह में कडुवी लौकी हृद्रोग में इन्द्रयव पाण्डुरोगमें कोठफल १०॥

उदरेकृतवेधनंहितंमदनंसर्वगदाविरोधितु । मधुकंसकषायतिक्तकंतदरूक्षंकटुकञ्चविज्जलम् ॥ ११॥

उदररोगमें कृतवेधन (तरोईविशेष) और सम्पूर्ण रोगोंमें मैनफल हित होताहै मैनफल मधुर कषैला तथा तिक्तरस युक्त होता है रूखा नहीं होता है कडुवा तथा विज्जल होता है॥ ११॥

कफपित्तहृदाशुकारिचाप्यनपायंपवनानुलोमिच । फलनामविशेषतस्त्वतोलभतेऽन्येषुफलेषुसत्स्वपि॥ १२॥

कफ पित्तको नष्ट करता है शीघ्रही अपने गुणों को प्रकाशित करता है किसी प्रकारकी हानि नहीं करता है और वायु को नीचे के मार्ग से निकालता है इससे अनेक फलों के होनेपर भी मैनफल काही नाम विशेष करके फल है॥ १२॥

गुरुणाचवचस्युदाहृतेमुनिसङ्घैरितिपूजितेततः । प्रणिपत्यमुदासमन्वितःसहितःशिष्यगणोऽनुपृष्टवान्॥ १३॥

भगवान् आत्रेयजी के यह वचन सुनकर सम्पूर्ण महर्षियों ने बड़े आदरपूर्वक स्वीकार किये तदनन्तर सम्पूर्ण शिष्योंने प्रणाम कर के तथा बहुत प्रसन्न होके भगवान् आत्रेयजी से पूछा कि॥ १३॥

सर्वकर्म्मगुरुकृद्गुरुणोक्तोवस्तिरूर्द्धमतमर्थवेदिना। नाभ्यधोगुदग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तश्चशरीरात्सर्वतःकथमपोहतिदोषान् ॥ १४ ॥

हे भगवन् आपने पहले कहा था कि बुद्धिमान् वैद्यके द्वारा दीगई वस्ति शरीरके संपूर्ण भागोंमें स्थित रोगोंको शान्त करती है इसमें यह संदेह होता है कि नाभिके नीचे गुदा के मार्गसे गईहुई वस्ति सम्पूर्ण शरीरमें से दोषों को किस प्रकारसे निकालती है ॥ १४ ॥

तद्गुरुरब्रवीदिदंशरीरंतन्त्रयतेऽनिलःसङ्गविघातात् । केवलएव दोषसहितःसहिवायुःप्रकोपमुपयाति ॥ १५ ॥

शिष्यों के यह वचन सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि वायु शरीर का पालनकरता है परन्तु संगके बिगड़ने से केवल अथवा अन्य दोषों से मिला हुआ वायु कुपित होता है ॥ १५ ॥

तंपवनंसपित्तकफविट्कंशुद्धिकरोनुलोमयतिवस्तिः । सर्वशरीरगश्च गदसङ्घातप्रकाशनात्प्रशान्तिमुपयाति ॥ १६ ॥

पित्त कफ तथा मलसहित उस कुपितवायु को शोधनकारक वस्ति नीचे के मार्ग से निकालती है इससे सम्पूर्ण शरीरमें हुये रोग भी शान्त होजाते हैं ॥ १६ ॥

अथाभिगम्यार्थमखण्डितंधियागजोष्ट्रगोश्वाव्यजवस्तिकर्म्म । अपृच्छदेनंसचवस्तिमब्रवीद्विधिश्चतस्याहपुनःप्रचोदितः ॥ १७ ॥

इसके उपरान्त तत्त्वके जाननेवाले परमबुद्धिमान् भगवान् आत्रेयजी से शिष्योंने हाथी ऊंट गौ घोड़े भेड़े तथा बकरों का वस्तिकर्म्म पूँछा उनके प्रश्नको सुनकर भगवान् आत्रेय जी ने विधिपूर्वक इन सब का वस्तिकर्म्म कहा ॥ १७ ॥

अजाविकेसौम्यगजोष्ट्रयोर्वागवाश्वयोर्वस्तिमुशन्तिमाहिषम् । अजाविकादन्तसुवस्तिमुत्तरंवदन्ति वस्तिंविपरीतरूपम् ॥ १८ ॥

हाथी ऊंट गौ तथा घोड़ा इनको यदिवस्ति देनी होय तो भैंसे के मूत्राशय के चमड़े में औषध भरकर वस्ति देनी चाहिये और बकरे तथा भेंड़को वस्ति देनी होय तो बकरेके मूत्राशय में औषध भरकर वस्ति देनी चाहिये ॥ १८ ॥

सुवस्तिमष्टादशषोडशांगुलंतथैवनेत्रंचदशांगुलंक्रमात् । गजोष्ट्रगोऽश्वाव्यजवस्तिसन्धौचतुर्थभागेचसकर्णिकंवदेत् ॥ १९ ॥

हाथी आदि जीवों को यदिवस्ति देनी होय तो अठारह सोलह तथा दश अंगुल वस्ति की नली क्रमसे होनी चाहिये हाथी ऊंट बैल घोड़ा भेंड़ा तथा बकरा इनकी वस्ति के संधिमें चौथाई नली डालना हित होताहै १९

प्रस्थस्त्वजाव्योर्हिनिरूहमात्रागवादिषुद्वित्रिगुणोयथाबलम् । निरूहउष्ट्रस्यतथाढकद्वयंगजस्यवृद्धिस्त्वतवासनेऽष्टमः ॥ २० ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बकरे तथा भेड़े के लिये निरूहवस्ति की मात्रा ६४ तोले की होनी चाहिये गौ तथा घोड़े के लिये निरूहवस्तिकी मात्रा इस की द्विगुणी अथवा त्रिगुणी होनी चाहिये ऊंटके लिये निरूहवस्ति की मात्रा ५१२ तोले होनी चाहिये और हाथी के लिये निरूहवस्ति की मात्रा आठ आढ़क (२५६ तोले का एक आढ़क होता है) की होनी चाहिये ॥ २० ॥

कलिङ्गकुष्ठेमधुकंसपिप्पलीवचाशताह्वामदनंरसाञ्जनम् । हितानि सर्वेषुगुडःससैन्धवोद्विपञ्चमूलंसविकल्पनात्त्रियम् ॥ २१ ॥

इन्द्रयव कूट मुलेठी पीपरि वच सौंफ मैनफल रसौंत तथा दशमूल विचारपूर्वक इन औषधियों के काढ़े में सैंधवलवण तथा गुड़ मिलाकर पूर्वोक्त जीवोंको वस्ति देवै॥२१॥

गजेऽधिकोऽश्वत्थवटाश्वकर्णजाः सखादिराःप्रग्रहशालतालजाः । तथाचउष्ट्रेधवशिग्रुपाटलीमधूकसाराःसनिकुम्भचित्रकाः ॥ २२ ॥

जो हाथी के लिये वस्ति देनी होय तो पीपर सांखू कत्था शाल तथा ताल इन के काढ़ेके द्वारा वस्ति देनी चाहिये और ऊंट को अमिलतास सहिंजन पाढ़र महुवाके फूल जमालगोटे की जड़ तथा चीता इनके काढ़े के द्वारा वस्ति देनी चाहिये ॥ २२ ॥

पलाशभूतीकसुराह्वरोहिणीकषाय उक्तस्त्वधिकोगवांहितः । पलाशदन्तीसुरदारुकत्तृणद्रवन्त्यउक्तास्तुरगस्यचाधिकाः ॥ २३ ॥

ढाख चिरायता देवदारु तथा कुटकी इन के काढ़े के द्वारा गौवों के लिये वस्ति देना हित होता है ढाख जमालगोटे की जड़ देवदारु गन्धतृण और द्रवन्ती (जमालगोटे विशेष का वृक्ष) की जड़ इनके काढ़े के द्वारा वस्ति देना घोड़ों के लिये बहुत हित होता है ॥ २३ ॥

खरोष्ट्रयोःपीलुकरीरखादिराःशम्पाकबिल्वादिगणस्यचच्छदाःअजाविकानांत्रिफलापरूषकंकपित्थकर्कन्धुसबिल्वकोलजम् ॥ २४ ॥

पीलू करील कत्था अमिलतास तथा बेल आदि गणके पत्ते इन औषधियों के द्वारा वस्ति देना खच्चर तथा ऊंट के लिये बहुत हित होता है त्रिफला फालसा कैथा कर्कन्धू (बेर विशेष) बेल तथा बेर इनके काढ़े के द्वारा वस्ति देना भेंड़े तथा बकरोंके लिये हित होता है ॥ २४ ॥

अथाग्निवेशःसततोऽन्तरान्तराहितञ्चपप्रच्छगुरुस्तदाहच । सदातुराःश्रोत्रियराजसेवकास्तथैववेश्याः सहपण्यजीविभिः ॥ २५ ॥

अग्निवेश ने भगवान् आत्रेयजी से जो मनुष्य सदैव रोगी रहतेहैं उनका हित किस प्रकार से होवै यह पूछा अग्निवेश का यह प्रश्न सुनकर भगवान् आत्रेयजी ने कहा कि श्रोत्रिय (वैदिक ब्राह्मण) राजसेवक वेश्या और पण्यजीवी दुकान पर बैठकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(क्रय विक्रय के द्वारा जीविका करने वाला) यह सब सदैव रोगी होते हैं ॥ २५ ॥

द्विजोहिशिष्याध्ययनव्रताह्निकक्रियादिभिर्देहहितं न चेष्टते । नृपोपसेवीनृपचित्तरक्षणात्परानुरोधाद्बहुचिन्तनाद्भयात् ॥ २६ ॥

क्योंकि श्रोत्रिय ब्राह्मण शिष्यों को पढ़ाना व्रत तथा आह्निक कर्म (जो कर्म प्रतिदिन अवश्य करने चाहिये उन को आह्निक कर्म कहते हैं) आदि में तत्परहोकर शरीर के हितका कोई उपाय नहीं करते हैं राजा के सेवक राजाके चित्त को प्रसन्न करने के लिये दूसरों के दवावसे वहुत चिन्ता करने से तथा भय से शरीर के हित का कोई उपाय नहीं करते हैं ॥ २६ ॥

नृचित्तवर्त्तिन्युपचारतत्परामृजाभिभूषानिरतापराङ्गना । सदासनादत्यनुबद्धविक्रयक्रयादिलोभादपि पण्यजीविनः ॥ २७ ॥

वेश्या दूसरों के चित्त को प्रसन्न करने के लिये उन्हीं के चित्त के अनुसार सदैव शरीर को साफ रखनेमें तथा शृंगार करने में तत्पर रहती हैं इससे शरीर के हित का कोई उपाय नहीं करती हैं और पण्यजीवी लोग खरीदने वाले तथा वेचनेवालों के साथ खरीदने बेचनेके लोभसे सदैव दुकान पर बैठे रहते हैं इस से शरीर के हित का कोई यत्न नहीं करते हैं ॥ २७ ॥

सदैवतेह्यागतवेगनिग्रहंसमाचरन्ते नचकालभोजनम् । अकालनिर्हारविहारसेविनोभवन्तियेऽन्येपिस दातुराश्चते ॥ २८ ॥

यह लोग मल मूत्र आदिके उपस्थित वेग को रोंकते हैं और समय के अनुसार भोजन नहीं करते हैं इसीसे सदैव रोगी रहते हैं इसी प्रकार और जो कोई लोग समय के अनुसार मल मूत्रका त्याग तथा भोजन नहीं करते हैं वह सदैव रोगी रहते हैं ॥ २८ ॥

समीरणंवेगविधारणोद्धतंविबद्धसर्वाङ्गरुजाकरंभिषक् । समीक्ष्यतेषांफलवर्त्तिमादितःसुकल्पितांस्नेहवर्तींप्रयोजयेत् ॥ २९ ॥

मल मूत्रआदि के वेग को रोंकने से कुपित हुआ वायु विबन्ध (कब्ज) तथा सम्पूर्ण अङ्गोंमें पीड़ा को यदि उत्पन्न करै तो पहिले अच्छे प्रकार से बनीहुई स्नेहयुक्त फलवर्त्ति (गुदामें घी लगाकर रोगी के अँगुठे के बराबर आकारवाली चिक्कनी और मलको निकालनेवाली जो बत्ती रक्खी जाती है उसे फलवर्त्ति कहते हैं) का प्रयोग करै ॥ २९ ॥

निरूहितंधन्वरसेनभोजितंनिकुम्भतैलेनततोऽनुवासयेत् । बलाश्वगन्धासहबिल्वचित्रकान्द्विपञ्चमूले कृतमालकोत्पले ॥ ३० ॥

और निरूहवस्ति देकर मरुदेश के जीवों के मांसके रसके साथ भोजन कराके रेंडीके तैल के द्वारा अनुवासनवस्ति देवे वरियारा असगन्ध रास्ना बेल चीता दशमूल अमिलतास उत्पल ॥ ३० ॥

यवान्कुलत्थांश्चपचेज्जलाढकेरसः

CC-0. Jangamwadi Math Collection

सर्पेष्यस्तुकलिङ्गकादिभिः । स तैलसर्पिर्गुडसैन्धवोहितःसदानराणांबलवर्द्धनःपरः ॥ ३१ ॥

यव तथा कुल्थी इन सबका एक आठक जलमें काढ़ा करके उसमें तैल घी गुड़ सैंधव लवण तथा इन्द्रयव आदि औषधियों का कल्क डालकर वस्तिदेने से वल तथा वर्णकी वृद्धि सदा होती है ॥ ३१ ॥

पुनर्नवैरण्डनिकुम्भचित्रकान्सदेवदारुत्रिवृतानिदिग्धिकाम् । महान्तिमूलानिचपञ्चतद्भवान्विपाच्यमूत्रेदधिमस्तुसंयुते ॥ ३२ ॥

गदहपूर्णा एरंड जमालगोटेकी जड़ चीता देवदारु निशोथ भटकटैया बड़ा पंचमूल इन सबको गोमूत्र में दहीकातोड़ डालकर पाक करे ॥ ३२ ॥

सतैलसर्पिर्लवणैश्चपञ्चभिर्विमूर्च्छितंवस्तिमथप्रयोजयेत् । तथैवशस्तंमधुकेनसाधितंफलेनबिल्वेनशताह्वयाथवा ॥ ३३ ॥

फिर उसमें तैल घी पांचो लवण डालकर वस्ति देवै तथा मुलेठी बेल अथवा सौंफ के साथ पाक कीहुई इन औषधियों के द्वारा वस्ति देना सदैव रोगी रहनेवालों के लिये हित होता है ॥ ३३ ॥

सजीवनीयस्तुरसेऽनुवासनेनिरूहणेचालवणेशिशोर्हितः । नचान्यदाश्वङ्गबलाभिवर्द्धनंनिरूहवस्तेः शिशुवृद्धयोःपरम् ॥ ३४ ॥

बालकों को अनुवासनवस्ति देने में जीवनीयगण की औषधियों का कल्क मिलाना चाहिये और निरूहवस्ति में लवण नहीं मिलाना चाहिये हे अग्निवेश! बालक तथा वृद्धोंके बलको शीघ्रही बढ़ाने के लिये निरूहवस्ति से बढ़कर और कोई चिकित्सा नहीं है ॥ ३४ ॥

तत्र श्लोकः ।

फलकर्मवस्तिवरतत्त्वनिश्चयोवाज्यादीनाम् । सततातुराश्चदृष्टाः फलमात्रायांहितञ्चैषाम् ॥ ३५ ॥

इति सिद्धिस्थानेफलमात्रासिद्धिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तिसमें यह श्लोक है। इस फलमात्रासिद्धिनामकअध्यायमें भगवान् आत्रेयजीने फल वस्तियोंमें से श्रेष्ठता का निश्चय हाथी आदि जीवों को वस्ति देनेकी विधि और सदैव रोगी रहनेवालों के लिये जो हित है यह सब विषय कहे हैं ॥ ३५ ॥

इति अग्निवेशकृततचरकप्रतिसंस्कृततन्त्रमेंसिद्धिस्थानकाफलमात्रासिद्धिनामग्यारहवाँअध्याय समाप्तहुआ ॥ ११ ॥

बारहवाँअध्याय ॥

उत्तरवस्तिसिद्धिः ।

अथखल्वातुरंवैद्यःसंशुद्धंवमनादिभिः । दुर्बलंकृशमल्पाग्निंमुक्तसन्धानबन्धनम् ॥ १ ॥ निर्हृतानिलविण्मूत्रकफपित्तंकृशाशयम् । शू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्यदेहंप्रतीकारासहिष्णुंपरिपालये
त् ॥ २ ॥

इस के उपरान्त उत्तरवस्तिसिद्धिका व्याख्यान करते हैं यह भगवान् आत्रेयजी ने कहा ॥

वैद्य वमनआदि के द्वारा शुद्ध शरीरवाले दुर्बल कृश मन्दाग्नि शिथिल शरीरके बन्धनवाले अच्छे प्रकार से निकलेहुये वात मल मूत्र कफ तथा पित्तवाले निर्बल कोष्ठवाले शून्य शरीरवाले और औषधके वेगके सहने में असमर्थ रोगी की आगे कहीहुई रीति से पालना करै ॥ १ । २ ॥

यथैवतरुणंपूर्णंतैलपात्रंतथैवच ।
गोपालइवदण्डीगाःसर्वस्मादप
चारतः ॥ ३ ॥

जैसे तैलसे ऊपरतक भरेहुये तैलकेपात्र की रक्षा रक्षक लोग बड़े यत्नपूर्वक करते हैं और जैसे गोपाल लाठी लेकर यत्नपूर्वक गौवोंकी रक्षा करता है इसीप्रकार वैद्य सब प्रकार के अपचारों (वदपरहेजियों) से उस रोगी की रक्षाकरै ॥ ३ ॥

अग्निसन्धुक्षणार्थन्तुपूर्वंपेयादिभि
भिषक् । रसोत्तरेणैवचरेत्क्रमेणक्र
मकोविदः ॥ ४ ॥

क्रमका जाननेवाला वैद्य पहिले अग्निकी वृद्धिके लिये पेयाका पान करावै फिर क्रमसे मांसका रस देवै ॥ ४ ॥

स्निग्धाम्लस्वादुहृद्यानिततोऽम्ल
लवणौरसौ । स्वादुतिक्तौततोभूयः
कषायकटुकौततः ॥ ५ ॥

और पहिले उस रोगी को स्निग्ध अम्ल मधुर रस देवै फिर अम्ल तथा लवण रस देवै तदनन्तर मधुर तथा तिक्त रस देवै और तदनन्तर कषाय तथा कटुरस देवै ॥ ५ ॥

अन्योऽन्यप्रत्यनीकानांरसानांस्नि
ग्धरूक्षयोः । व्यत्यासादुपयोगेनप्र
कृतिंगमयेद्भिषक् ॥ ६ ॥

परस्पर विरुद्ध रसोंमें से स्निग्ध तथा रूक्षरसों का उलट पलटकर प्रयोग करके पुरुषको प्रकृतिमें प्राप्तकरै ॥ ६ ॥

सर्वक्षमोनिरासङ्गोरतियुक्तःस्थिरेन्द्रि
यः । बलवान्सत्त्वसम्पन्नोविज्ञेयःप्र
कृतिंगतः ॥ ७ ॥

सबको सहसकनेवाले रोगरहित रति से युक्त स्थिर इन्द्रिय वाले बलवान् और सत्त्व युक्त पुरुषको प्रकृतिमें प्राप्त हुआ जानना चाहिये ॥ ७ ॥

एतांप्रकृतिमप्राप्तःसर्ववर्ज्यानिवर्ज
येत् । महादोषकराण्यष्टाविमानि
तुविशेषतः ॥ ८ ॥

जबतक पुरुष प्रकृतिमें न प्राप्तहोय तबतक त्याग करने के योग्य सम्पूर्ण वस्तुओं का त्यागकरै और आगे कहे जानेवाली आठ बातोंका अवश्य त्यागकरै क्योंकि यह आठो महारोग के करनेवाली हैं ॥ ८ ॥

उच्चैर्भाष्यंरथक्षोभमतिचंक्रमणास
ने । अजीर्णाहितभोज्येचादिवा
स्वप्नंसमैथुनम् ॥ ९ ॥

वह आठ यह हैं जैसे जोरसे बोलना रथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैचढ़ना बहुत घूमना बहुत खाना अजीर्ण में भोजन करना अहित वस्तु खाना दिनमें सोना और मैथुन करना ॥ ९ ॥

तज्जादेहोर्द्ध्वसर्वाधोमध्यपीडामदोषजाः। श्लेष्मजाःक्षयजाश्चैवव्याधयःस्युर्यथाक्रमम् ॥ १० ॥

इन आठों के द्वारा क्रमसे आठ दोष होते हैं जैसे शरीर के ऊर्ध्वभाग में पीड़ा होना सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना शरीर के अधोभाग में पीड़ा होना कोष्ठमें पीड़ा होना आमदोष कफज रोग और क्षयजरोग॥१०॥

तेषांविरस्ततोलिङ्गमेकैकस्यसभेषजम्। यथावत्संप्रवक्ष्यामिसिद्धान्वस्तींश्चयापनान् ॥ ११ ॥

इनमें से एक एकके औषध सहित लक्षण आगे कहे जाते हैं और यथायोग्य सिद्धयापनवस्ति आगे कही जाती हैं ॥ ११ ॥

तत्रोच्चैर्भाष्यातिभाषाभ्यांशिरस्तापकर्णशंखनिस्तोदस्रोतोऽवरोधमुखतालुकण्ठशोषतैमिर्य्यपिपासाज्वरतमकहनुमन्याग्रहनिष्ठीवनोरःपार्श्वशूलस्वरभेदहिक्काश्वासादयःस्युः ॥ १२ ॥

बहुत जोर बोलने से तथा बहुत बोलने से शिरमें संताप कान तथा कनपटियों में सुई चुभने कीसी पीड़ा होना स्रोतोंका रुकना मुख तालु तथा कण्ठका सूखना अंधकार सा दिखाई देना तृषा ज्वर तमकश्वास जाबड़े तथा गलेके पीछे की नसका जकड़ना बहुत थूकना वक्षस्थल तथा पशुलियों में पीड़ा होना स्वरभेद हिचकी और श्वास आदिक रोग होते हैं ॥ १२ ॥

रथक्षोभात्सन्धिपर्वशैथिल्यहनुनासाकर्णशिरःशूलतोदवह्निविक्षोभाटोपान्त्रकूजनाध्मापनहृदयेन्द्रियोपरोधस्फिक्पार्श्ववंक्षणवृषणकटीपृष्ठवेदनासन्धिस्कन्धग्रीवादौर्बल्याङ्गाभितापपादशोफप्रस्वापहर्षणादयः ॥ १३ ॥

रथपर चढ़ने से संधि तथा पोरुओं का शिथिल होना जाबड़े नासिका कान तथा शिरमें शूल तथा सुईचुभने कीसी पीड़ा होना मन्दाग्नि पेटमें गड़गड़ाहट होना आँतों में गूंगूंशब्द होना अफरा हृदय तथा इन्द्रियों का रुकना कूले पशुली वंक्षण (जांघों की संधि) अण्डकोष कटि तथा पीठमें पीड़ा होना संधि कन्धे तथा ग्रीवाका दुर्बल होना शरीर में ताप होना और पैरोंका शोफ तथा सुन्न होजाना तथा झुनझुनाना आदिक रोग होते हैं ॥ १३ ॥

अतिचंक्रमणात्पादजङ्घोरुजानुवंक्षणश्रोणीपृष्ठशूलसक्थिसादनिस्तोदपिण्डीकोद्वेष्टनाङ्गमर्दांसाभितापशिराधमनीहर्षश्वासकासादयःस्युः ॥ १४ ॥

बहुत चलने से पैर जाँघ पिंडुली घुटना जाँघोंकी संधि नितम्ब तथा पीठमें शूल होना जाँघों का शिथिल होना सुईचुभनेकीसी पीड़ा होना पिंडुलियों में ऐंठन होना अङ्ग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मई कन्धों में जलन होना नाड़ियों में झनझनाहट होना श्वास और खाँसी आदिक रोग होते हैं ॥ १४ ॥

अत्यासनाद्रथक्षोभजाःस्फिक्कूपाशर्ववंक्षणवृषणकटीपृष्ठवेदनादयःस्युः ॥ १५ ॥

बहुत खानेसे वह सम्पूर्ण रोग होते हैं जो रथपर चढ़नेसे होते हैं और नितम्ब पशुली बाहों की संधि अण्डकोष कमर तथा पीठ में पीड़ा होना आदि रोग होते हैं ॥१५॥

अजीर्णाध्यशनाभ्यान्तुमुखशोषाध्मानशूलनिस्तोदपिपासागात्रसादच्छर्द्यतीसारमूर्च्छाज्वरप्रवाहणामविषादयःस्युः ॥ १६ ॥

अजीर्ण में भोजन करने से तथा भोजन पर भोजन करने से मुखका सूखना अफरा शूल सुई चुभनेकीसी पीड़ा तृषा अंगोंका शिथिल होना छर्दि अतीसार मूर्च्छा ज्वर काँखना और आमदोष आदिक रोग होते हैं ॥ १६ ॥

विषमाहिताशनाभ्यामनन्नाभिलाषदौर्बल्यवैवर्ण्यकण्डूपामागात्रावसादवातादिप्रकोपजाश्चग्रहण्यर्शोविकारादयः ॥ १७ ॥

विषम तथा अहित भोजन करने से अन्न में अनिच्छा होना दुर्बलता वर्णका बिगड़ना खुजली पामा (वह खुजली जिसमें दाने पड़जाते हैं) अंगों का शिथिल होना और वात आदि दोषों के कोप से ग्रहणीदोष तथा बवासीर आदि रोग होते हैं ॥ १७ ॥

दिवास्वप्नादरोचकाविपाकाग्निनाशस्तैमित्यपाण्डुकण्डूपामादाहच्छर्द्यङ्गमर्दहृत्स्तम्भजाड्यतन्द्रानिद्राप्रसङ्गग्रन्थिजन्मदौर्बल्यरक्तमूत्राक्षितातालुलेपाःपिपासा च ॥१८ ॥

दिनमें सोनेसे अरुचि अन्नका न पचना मन्दाग्नि शरीर गीले कपड़े से ढका हुआसा मालूम होना त्वचा का पाण्डुवर्ण होना खुजली पामा (खुजली जिस में दाने पड़जाते हैं) दाह छर्दि अङ्गमर्द हृदय का जकड़ना जड़ता तन्द्रा निद्राका रुकना उदर में गांठैंसी पड़जाना दुर्बलता मूत्र तथा नेत्रों का रक्तवर्ण होना तालूमें कफ लिपाहुआसा होना और तृषा यह रोगहोते हैं ॥ १८ ॥

व्यवायादाशुबलसादोरुसादवस्तिशिरोगुदमेदवंक्षणोरुजानुजङ्घापादशूलहृदयस्पन्दननेत्रपीडाङ्गशैथिल्यशुक्रमार्गशोणितागमनकासश्वासशोणितष्ठीवितस्वरावसादकटीदौर्बल्यैकाङ्गसर्वाङ्गरोगमुष्कश्वयथुवातवर्चोमूत्रसङ्गशुक्रविसर्गजाड्यवेपथुबाधिर्य्यविषादादयःस्युः उत्पाट्यतइवगुदस्ताड्यतइवमेढ्रमवसीदतीवमनोवेपतेहृदयंपीड्यन्तेसन्धयःतमःप्रविशतिइव च॥ १९ ॥

मैथुन करने से शीघ्रही निर्बलता जांघों में शिथिलता वस्ति शिर गुदा लिङ्ग जांघों की संधि जांघ घुटनी पिंडुली तथा पैरों में शूल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होना हृदय धड़कना नेत्रों में पीड़ा अङ्गों में शिथिलता वीर्य्यके मार्ग से रुधिर निकलना खांसी श्वास रुधिर थूंकना स्वरभंग कमर का दुर्बल होना एकाङ्गवात सर्वाङ्गवात अण्डकोषों में शोथ मल मूत्र तथा वायु का रुकना वीर्य्य गिरना जड़ता कम्प बधिरता तथा खिन्नता आदिकरोग होते हैं और यह मालूम होता है कि कोई गुदाको उखाड़े लिये जाता है लिङ्ग को पीटता है मन डूबता सा है हृदय कांपता है संधियां पीड़ित होती हैं और सब ओर से अंधकार सा दिखाई देता है ॥ १९ ॥

इत्येवमेभिरभिचारै रेतेप्रादुर्भवन्ति उपद्रवाः ॥ २० ॥

इसप्रकार जोर से बोलना आदि आठों अपचारों (बदपरहेजियों) से यह उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥

तेषांसिद्धिरुच्चैर्भाष्यातिभाष्यजानामभ्यङ्गस्वेदोपनाहधूमनस्योपरिभक्तस्नेहपानरसक्षीरादिभिर्वातहरसर्वोविधिर्मौनञ्च ॥ २१ ॥

इन आठों अपचारों में से बहुत बोलने से तथा बहुत ज़ोर से बोलने से जो रोग उत्पन्न होते हैं उनके लिये, तैलआदि मलना स्वेद पुल्टिस धूमपान नस्य भोजन के उपरान्त स्नेह पानकरना मांसरस तथा दूध आदि के साथ भोजन करना आदि वातनाशक सम्पूर्ण विधि और मौन रहना हित होता है ॥ २१ ॥

रथक्षोभातिचंक्रमणात्यासनजानां स्नेहस्वेदादिवातहरंकर्मसर्वंनिदानवर्जम् ॥ २२ ॥

रथपर चढ़ने से बहुत चलने से तथा बहुत भोजन से होनेवाले रोगों के लिये वायुनाशक स्नेहन तथा स्वेदन आदि सम्पूर्ण कर्म्म और निदान का त्याग करना हित होता है ॥ २२ ॥

अजीर्णाध्यशनजानांनिरवशेषतश्छर्दनंरूक्षस्वेदधूमपानलङ्घनीयपाचनीयदीपनीयौषधावचारणञ्च ॥ २३ ॥

अजीर्ण में भोजन करने से तथा भोजन पर भोजन करने से होनेवाले रोगों में पहिले अच्छी प्रकार से वमन करावै फिर रूक्षस्वेद धूमपान लंघन और पाचन तथा दीपन औषधियों का प्रयोग करै ॥ २३ ॥

विषमाहिताशनजानांयथास्वंदोषक्रियाः ॥ २४ ॥

विषमाशन तथा अहित भोजन से होने वाले रोगों में दोषके अनुसार चिकित्सा करै ॥ २४ ॥

दिवास्वप्नजानांधूमपानलङ्घनवमनशिरोविरेचनव्यायामरूक्षाशनादिदीपनीयौषधोपयोगः । प्रकर्षणोन्मर्दनपरिषेचनादिश्चश्लेष्महरःसर्वोविधिः ॥ २५ ॥

दिन में सोने से हुये रोगों में धूमपान लंघन वमन शिरोविरेचन व्यायाम तथा रूक्ष भोजन आदि में दीपन औषधियों का प्रयोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना शरीर मलवाना और तरारा देना आदिक सम्पूर्ण कफनाशक विधि हितहै २५॥

मैथुनजानांजीवनीयसिद्धयोःक्षीरसर्पिषोरुपयोगः। तथावातहराः स्वेदाभ्यङ्गोपनाहावृष्याश्चाहाराः स्नेहास्नेहविधयोयापनावस्तयोऽनुवासनञ्च। मूत्रवैकृतवस्तिशूलेषुचउत्तरवस्तिः। विदारीगन्धादिगणजीवनीयगणक्षीरसंसिद्धंतैलंस्याद्यापनाश्चवस्तयःसर्वकालंदेयास्तानुपदेक्ष्यामः॥ २६॥

मैथुन से होनेवाले रोगों में जीवनीयगण के साथ पाक कियेगये दूध तथा घीका मयोग करै वातनाशक स्वेदन अभ्यङ्ग तैल आदि मलना लेप वीर्य्यवर्द्धक भोजन स्नेहन यापनवस्ति और अनुवासनवस्ति का मयोगकरै मूत्र का विकार तथा वस्ति के शूल में उत्तरवस्ति देवै बिलाईकन्द आदिगण जीवनीयगण तथा दूधके साथ पाककिये हुये तैल का मयोग करै यापनवस्ति का सदैव मयोगकरना चाहिये अब आगे यापन वस्तिका उपदेश किया जाता है॥ २६॥

मुस्तोशीरबलारग्वधरास्नामञ्जिष्ठाकटुरोहिणीत्रायमाणापुनर्नवाबिभीतकगुडूचीस्थिरादिपञ्चमूलानिपलिकानिखण्डशःकृतानिअष्टौचमदनफलानिप्रक्षाल्यजलाढकेपरिक्वाथ्यपादशेषेरसःक्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तःपुनःपुनःभृतःक्षीरावशेषस्तुल्योजाङ्गलरसमधुघृतःशतकुसुममधुककुटजफलरसाञ्जनप्रियंगुकल्कीकृतःससैन्धवःसुखोष्णवस्तिःशुक्रमांसबलजननःक्षतक्षीणकासगुल्मशूलविषमज्वरब्रध्नकुण्डलोदावर्त्तकुक्षिशूलमूत्रकृच्छ्रासृग्रजोविसर्पप्रवाहिकाशिरोरुजाजानूरुजङ्घावस्तिग्रहाश्मर्य्युन्मादार्शःप्रमेहाध्मानरक्तपित्तश्लेष्मव्याधिहरःसद्योबलजननोरसायनश्चेति २७॥

नागरमोथा खस बरियारा अमिलतास रास्ना मजीठ कुटकी त्रायमाण गदहपूर्णा बहेड़ा गिलोय तथा शालपर्णी आदि पंचमूल चार चार तोले और मैनफल आठ इन सब औषधियों को टुकड़े २ करके धोकर २५६ तोले जल में डालकर पाककरै जब चौथाई जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर उस काढ़े में १२८ तोले दूध डालकर पाक करै जब काढ़ा जलजावे केवल दूध बाकीरहै तब उतारकर छान लेवै फिर उस दूध में हिरनआदि जांगल जीवों के मांसका चतुर्थांश रस घी तथा शहद और सौंफ मुलेठी इन्द्रयव रसौत तथा प्रियंगु का कल्क और सैंधवलवण मिलाकर कुछ उष्णवस्ति देवै इस से वीर्य्य मांस तथा बलकी वृद्धि होती है और क्षतक्षीण खांसी गुल्म शूल विषमज्वर बद कुण्डल उदावर्त्त कुक्षिशूल मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष विसर्प (जहरबात) प्रवाहिका शिरकी पीड़ा घुटने जांघ तथा वस्तिकी पीड़ा पथरी उन्माद बवासीर प्रमेह अफरा रक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्त और कफजरोग इन सब का नाश होता है और शीघ्रही बल उत्पन्न होताहै यहवस्ति रसायन है ॥ २७ ॥

एरण्डमूलपलाशात्षट्पलंशालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकागोक्षुरकारास्नाश्वगन्धागुडूचीवर्षाभूआरग्वधदेवदार्वितिपलिकानिखण्डशःकृतानिफलानिचाष्टौप्रक्षाल्यजलाढकेक्षीरपादेपचेत् पादशेषंकषायंपूतंशतकुसुमादिकुष्ठमुस्तपिप्पलीहपुषाबिल्ववचावत्सकफलरसाञ्जनप्रियंगुयमानिसंक्षेपकल्कितंमधुघृततैलसैन्धवयुक्तंसुखोष्णंनिरूहमेकंद्वौत्रीन्वादद्यात्। सर्वेषांप्रशस्तोविशेषतोललितसुकुमारक्षतक्षीणस्थविरचिरार्शसामपत्यकामानाञ्च ॥ २८ ॥

अरण्डकी जड़ तथा पत्ते २४ तोले और शालपर्णी पृश्निपर्णी भटकटैया बड़ी भटकटैया गोखुरू रास्ना असगन्ध गिलोय गदहपूर्णा अमलतास तथा देवदारु और मैनफल आठ इन सब औषधियों को टुकड़े टुकड़े करके धोकर २५६ तोले जल तथा ६४तोले दूध में डालकर पाक करै जब चौथाई दूध तथा जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवे फिर इस काढ़ेमें सौंफ कूट नागरमोथा पीपारि हाऊबेर बेल बच इन्द्रयव रसौत प्रियंगु तथा अजवाइन का कल्क शहद घी तैल और सैंधवलवण मिलाकर एकबार दोबार अथवा तीनवार कुछ उष्ण निरूहवस्तिदेवै यह वस्ति सब के लिये हित होतीहै और सुकुमार उरःक्षत रोगवाले वृद्ध पुरानी बवासीर रोगवाले और सन्तान की इच्छा करनेवाले पुरुषों के लिये विशेष करके हित होती है ॥ २८ ॥

सहचरबलामूर्वामूलशारिवासिद्धेनपयसातथाबृहतीकण्टकारीशतावरीच्छिन्नरुहाशृतेनपयसामधुकमदनपिप्पलीकल्ककृतेनपूर्ववद्वस्तिः ॥ २६ ॥

सुनहरी वरियाराकी जड़ तथा सांई इनके साथ पाक कियेहुये दूध में अथवा भटकटैया बड़ी भटकटैया शतावरि तथा गिलोय के साथ पाक कियेहुये दूध में मुलेठी मैनफल तथा पीपरि का कल्क मिलाकर पूर्वोक्तरीति से वस्ति देनी चाहिये ॥ २९ ॥

तथाबलातिबलाविदारीशालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकादर्भमूलयवकाश्मर्य्यबिल्वफलयवसिद्धेनपयसामधूकमदनकल्कीकृतेनमधुघृतसौवर्चलयुक्तेनक्षासज्वरगुल्मप्लीहार्दितस्त्रीमद्यक्लिशानांसद्योबलजननोरसायनश्च ॥ ३० ॥

तैसेही वरियारा ककैहा विलाईकन्द शालपर्णी पृश्निपर्णी भटकटैया बड़ी भटकटैया कुशकी जड़ यव खँभारी के फल बेल तथा यव के साथ पाक कियेहुये दूध में मुलेठी तथा मैनफल का कल्क शहद घी और सोंचरलवण डालकर वस्ति देवै यह वस्ति खां-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सी ज्वर गुल्म प्लीहा आदि मैथुन करने से हुये रोग और मद्य पीने से हुये रोगवालों के लिये शीघ्रही बलकारी है और रसायन है॥ ३० ॥

तथाबलातिबलारास्नारग्वधमदन बिल्वगुडूचीपुनर्नवैरण्डाश्वगन्धा सहचरपलाशदेवदारुद्विपञ्चमूला निपलिकानियवकोलकुलत्थद्वि प्रसृतंशुष्कमूलकानाञ्चजलद्रोण सिद्धंनिरूहप्रमाणंशेषंकषायंपूतं मधुकमदनशतपुष्पाकुष्ठपिप्पली वचावत्सकफलरसाञ्जनप्रियंगुयमा नीकल्कीकृतंगुडघृततैलक्षौद्रक्षीर मांसरसाम्लकाञ्जिकसैन्धवयुक्तं सुखोष्णंवस्तिंदद्यात्। शुक्रमूत्र वर्चःसङ्गेऽनिलजेगुल्महृद्रोगाध्मा नब्रध्नपार्श्वपृष्ठकटीग्रहसंज्ञाना शबलक्षयेपुंच॥ ३१॥

तैसेही ककैहा बरियारा रास्ना अमलतास मैनफल बेल गिलोय गदहपूर्णा अरण्ड असगन्ध सुनहरी ढाख की छाल देवदारु तथा दशमूल यह सब चार २ तोले और यव बेर कुल्थी तथा सूखी मूली आठ२ तोले इनसब औषधियों को १०२४ तोले जलमें डालकर पाक करै जब निरूहवस्ति देने के योग्य जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर उस काढ़ेमें मुलेठी मैनफल सौंफ कूट पीपरि बच इन्द्रयव रसौत प्रियंगु तथा अजवाइन इनका कल्क गुड़ घी तैल शहद दूध मांस रस खट्टी काँजी तथा सैंधवलवण मिलाकर कुछ उष्ण वस्ति देवै इस से वायुके द्वारा वीर्य मूत्र तथा मलका रुकना गुल्म हृद्रोग अफरा बद पशुली पीठ तथा कमर की पीड़ा संज्ञा का नष्ट होना और बल की क्षीणता इन सब रोगोंका नाश होताहै॥ ३१॥

हपुषार्द्धकुडवद्विगुणार्द्धक्षुराणयवः क्षीरोदकसिद्धःक्षीरशेषोमधुघृततैल लवणयुक्तःसर्वाङ्गविसृतवातरक्तसङ्ग विरामूत्रस्त्रीखेदिताहितोवातहरोबुद्धि मेधाग्निबलजननश्च॥ ३२॥

आठ तोले हाऊबेर तथा १६ तोले अधकुटेहुये यवों को जल तथा दूध में डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल दूधबाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर उस दूध में शहद घी तैल तथा सैंधवलवण डालकरवस्ति देवै इस से सर्वांगवात वातरक्त मल मूत्रका रुकना बहुत मैथुन करने से हुये खेद तथा वातरोग इन सब का नाश होताहै और बुद्धि मेधा अग्नि तथा बलकी वृद्धि होतीहै॥३२॥

ह्रस्वपञ्चमूलकषायःक्षीरोदकसिद्धः पिप्पलीमधूकमदनकल्कीकृतःसगु डघृततैललवणःक्षीणविषमज्वरकर्षि तस्यवस्तिः॥ ३३॥

जल तथा दूध में छोटे पंचमूलकी औषधियों को डालकर काढ़ा करलेवै और उसकाढ़े में पीपरि मुलेठी तथा मैनफल का कल्क गुड़ घी तैल और सैंधवलवण डालकर वस्तिदेवै इस से क्षीणता तथा विषमज्वर का नाश होताहै॥ ३३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलातिबलापामार्गात्मगुप्ताष्टपलाद्धक्षुण्णयवाञ्जलिकषायःपूर्ववद्वस्तिःस्थविरदुर्बलक्षीणशुक्राणांपथ्यतमः ॥ ३४ ॥

बरियारा ककैहा लटजीरा तथा किंवाच के बीज यह सब ३२ तोले और अधकुटे हुये यव १६ तोले इनसबका काढ़ा करके पूर्वोक्त रीति से वस्ति देवै यह वस्ति वृद्ध दुर्बल तथा क्षीणवीर्य्यवालों के लिये बहुत हित होती है ॥ ३४ ॥

बलामधूकविदारीदर्भमूलमृद्वीकायवैःकषायमाजेनपयसापक्कामधुकल्कितं समधुघृतसैन्धवंज्वरार्त्तेभ्योवस्तिंदद्यात् ॥ ३५ ॥

बरियारा मुलेठी बिलाईकन्द कुशकी जड़ मुनक्का तथा यव इनको बकरी के दूधमें डाल कर काढ़ा करलेवै और उस काढ़े में मुलेठी का कल्क दूध घी तथा सैंधवलवण डालकर वस्ति देवै ज्वर से पीड़ित पुरुषोंके लिये यह वस्ति बहुत हित होती है ॥ ३५ ॥

शालपर्णीपृश्निपर्णीगोक्षुरकमूलकाश्मर्य्यपरूषकखर्जूरफलमधूकपुष्पैरजाक्षीरजलप्रस्थाभ्यांसिद्धःकषायःपिप्पलीमधुकोत्पलकल्कितःसघृतसैन्धवःक्षीणेन्द्रियविषमज्वरकर्षितस्यवस्तिःशस्तः ॥ ३६ ॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी गोखुरू दशमूल खँभारीके फल फालसा छुहारा तथा महुवा इन सब औषधियों को चौंसठ २ तोले जल तथा बकरीके दूध में डालकर काढ़ा करलेवै फिर उस काढ़े में पीपरि मुलेठी तथा नीलकमल का कल्क घी और सैंधवलवण का कल्क डालकर वस्तिदेवै यह वस्ति क्षीण इन्द्रियवाले तथा विषमज्वरसे पीड़ित पुरुषोंके लिये हित होती है ॥ ३६ ॥

स्थिरादिपञ्चमूलीपञ्चपलेनशालिषष्टिकयवगोधूममाषकषायपञ्चप्रसृतेनछागपयःशृतंपादशेषंकुक्कुटाण्डरससममधुघृतशर्करासैन्धवसौवर्चलयुक्तोवस्तिर्वृष्यतमोबलवर्णजननश्च । यापनावस्तयोद्वादश॥३७॥

शालपर्णी आदि पंचमूल पांचपल शालिधान सांठी के चावल यव गेहूं तथा उर्द इन सबके काढ़े को पांचप्रसृत बकरी के दूध में मिलाकर पाककरै जब चौथाई काढ़ा बाकी रहै तब उस में मुर्गे के अण्डों का रस शहद घी शक्कर सैंधवलवण तथा सोंचरलवण बराबर २ मिलाकर वस्ति देवै यह वस्ति अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक बलकारी तथा वर्णकारी होती है इसप्रकार १२ यापनवस्ति कही गई ॥ ३७ ॥

कल्पश्चैषांशिखिगोनर्दहंसाण्डरसेस्यात् ॥ ३८ ॥

मोर सारस तथा हंस इनपक्षियों के अण्डों के रस में इनवस्तियों का कल्प करना चाहिये ॥ ३८ ॥

सतित्तिरिःसमयूरोराजहंसपञ्चमूलीपयःसिद्धंशतकुसुममधुकरास्नाकुटजफलपिप्पलीकल्कःघृततैलगुड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैन्धवयुक्तोबस्तिर्बलवर्णशुक्रजननोरसायनश्च ॥ ३९ ॥

तीतर मोर तथा हंस इन पक्षियों के मांस और पंचमूल इनके साथ पाक कियेहुये दूध में सौंफ मुलेठी रास्ना इन्द्रयव तथा पीपरि का कल्क घी तैल गुड़ और सैंधवलवण डालकर वस्तिदेवै यह वस्ति बल वर्ण तथा वीर्य्य को बढ़ाती है और रसायनहै ॥ ३९ ॥

द्विपञ्चमूलीकुक्कुटरससिद्धंपयःपादशेषं पिप्पलीमधूकरास्नामदनमधुकल्कंशर्करामधुघृतयुक्तं स्त्रीष्वतिकामानांबलजननोवस्तिः ॥ ४० ॥

दशमूल तथा मुर्गे के मांस के रसके साथ दूधका पाककरै जब चतुर्थांश बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर उसमें पीपरि मुलेठी रास्ना मैनफल तथा महुवा का कल्क शकर शहद और घी डालकर वस्तिदेवै यह वस्ति बहुत मैथुन करने वालोंको बल उत्पन्नकरने के लिये श्रेष्ठ होती है ॥ ४० ॥

मयूरमद्गुपित्तपक्षपादास्यान्त्रंत्यक्तास्थिरादिभिः पलिकैःसहजलेपयसिपक्वाक्षीरशेषंमदनविदारीशतकुसुममधूककल्कीकृतंमधुघृतसैन्धवयुक्तंवस्तिंदद्यात्स्त्रीष्वतिप्रसक्तक्षीणेन्द्रियेभ्योहितोबलवर्णकरः ॥ ४१ ॥

पित्ता पक्ष चोंच पैर तथा आंतरहित मोर के मांस और शालपर्णी आदि पंचमूल एक २ पल इनको दूध तथा जलमें डालकर पाककरै जब पानी जलजाय केवल दूधबाकी रहै तब उताकर छानलेवै फिर उसमें मैनफल बिलाईकन्द सौंफ तथा मुलेठीका कल्क शहद घी और सैंधवलवण डालकर वस्ति देवै यह वस्ति बहुत मैथुन करनेवाले तथा क्षीणइन्द्रिय वाले पुरुषोंके लिये हित होतीहै और बल तथा वर्णको उत्पन्न करतीहै ॥ ४१ ॥

कल्पश्चैषविष्किरप्रतुदप्रसहाम्बुचरेषुस्यादक्षीरोरोहितादिषुचमत्स्येषु च ॥ ४२ ॥

बटेरआदि विष्किर कबूतर आदि प्रतुद और काक आदि प्रसह और हंस आदि जलचर पक्षियों के और रोहू आदि मछलियों के दुग्धसहित मांसरसके द्वारा पूर्वोक्त रीति से वस्ति देनी चाहिये ॥ ४२ ॥

गोधानकुलमार्जारमूषिकशल्लकमांसानांदशपलान्भागान्सपञ्चमूलान्पयसिपक्त्वा तत्पयःपिप्पलीफलकल्कसैन्धवसौवर्चलशर्करामधुघृततैलयुक्तोवस्तिर्बल्यो, रसायनः क्षीणक्षतस्य सन्धानकरोमथितोरस्करथगजहयभग्नवातबलासकफवृत्त्युदावर्त्तवातसक्तमूत्रवर्चःशुक्राणांहिततमश्च ॥ ४३ ॥

गोह नेवला बिलाव मूस तथा स्याही इन जीवों के ४० तोले मांस तथा पंचमूल के साथ पाक कियेगये दूध में पीपरि तथा मैनफल का कल्क सैंधवलवण सोंचर लवण शकर शहद घी और तैल मिलाकर वस्ति देवे यह वस्ति बलकारी रसायन क्षीण क्षत के घावको पूरनेवाली और रगड़ेहुये वक्षःस्थल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाले रथ हाथी तथा घोड़े पर चढ़ने से टूटेहुये अङ्गवाले वातबलासकवाले उदावर्त्तरोगवाले और वायु के द्वारा रुकेहुये मूत्र मल तथा वीर्य्यवाले पुरुषों के लिये बहुत हित होती है ॥ ४३ ॥

कूर्मादीनामन्यतमपिशितसिद्धंपयोगोवृषनागहयनक्रहंसकुक्कुटाण्डरसमधुघृतशर्करासैन्धवेक्षुरकात्मगुप्तफलकल्कसंसृष्टोवस्तिर्वृद्धानामपिबलजननः ॥ ४४ ॥

कछुवे आदि जीवोंमें से किसी के मांस के साथ पाक कियेहुये दूध में बैल हाथी घोड़े तथा नक्र (घड़ियालविशेष) के मांस का रस तथा मुर्गेके अण्डेका रस शहद घी शक्कर सैंधव लवण और तालमखाना तथा किंवाच के बीजों का कल्क मिलाकर वस्ति देवै यह वस्ति वृद्धोंके भी बलको बढ़ाती है ॥ ४४ ॥

गोवृषवस्तवराहवृषणकर्कटचटकसिद्धंक्षीरमुच्चटकेक्षुरकात्मगुप्तामधुघृतयुतंकिञ्चिल्लवणितंवस्तिः ॥ ४५ ॥

बैल बकरे तथा शूकर के अण्डकोष और केंकड़े तथा गौरैया पक्षीके मांसके साथ पाक कियेगये दूधमें उच्चटक (सफेदकरजनी) तालमखाना तथा किंवाच के बीजों का कल्क शहद घी और स्वल्प सैंधवलवण मिलाकर वस्ति देनी चाहिये ॥ ४५ ॥

कर्कटकरसश्चटकाण्डरसयुक्तःसमधुघृतशर्करोवस्तिरित्येतेवस्तयःपरमवृष्याः ॥ ४६ ॥

केंकड़े के मांस के रसमें गौरैया पक्षी के अण्डों का रस शहद घी और शक्कर मिलाकर वस्ति देवै यह सम्पूर्ण वस्ति अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक हैं ॥ ४६ ॥

उच्चटकेक्षुरकात्मगुप्ताशृतक्षीरप्रतिभोजनानुपानात्स्त्रीशतगामिनंनरं कुर्य्युः ॥ ४७ ॥

सफेद करजनी तालमखाना तथा किंवाच के बीज इनके साथ पाक कियेहुये दूध को हरबार भोजनके उपरान्त पीने से मनुष्य को सौ स्त्रियों के साथ गमन करने की शक्ति होती है ॥ ४७ ॥

दशमूलमयूरहंसकुक्कुटकाथात्पञ्चप्रसृतंतैलघृतवसामज्जचतुष्प्रसृतयुक्तंशतपुष्पामुस्तहपुषाकल्कीकृतः सलवणोवस्तिः पादगुल्फोरुजानुजङ्घात्रिकवंक्षणवस्तिवृषणानिलहरः ॥ ४८ ॥

मोर हंस तथा मुर्गेके मांस और दशमूल के पांचप्रसृत काढ़े में तैल घी चर्वी तथा मज्जा चारप्रसृत और सौंफ हाऊबेर नागरमोथा तथा सैंधवलवण मिलाकर वस्ति देवै यह वस्ति पैर टखने जाँघ घुटने पिंडुली रीढ़ के नीचे की हड्डी जाँघों की संधि मूत्राशय तथा अण्डकोषोंकी वायुको नष्ट करतीहै ४८॥

मृगविष्किरानूपबिलेशयानामेतेनैवकल्पेनवस्तयोदेयाः ॥ ४९ ॥

मृग बटेरआदि विष्किरपक्षी भैंसाआदिआनूप जीव और स्याही आदि बिलेशय जीव इनके मांसके द्वारा पूर्वोक्त रीति से वस्ति देनी चाहिये ॥ ४९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुघृताद्विप्रसृतंतुल्योष्णोदकंशत पुष्पार्द्धपलंसैन्धवार्द्धाक्षयुक्तोवस्ति र्दीपनोबृंहणोबलवर्णकरोनिरुपद्रवो वृष्यतमोरसायनः । क्रिमिकुष्ठोदा वर्त्तगुल्मार्शोब्रध्नप्लीहमेहहरः ॥५०॥

दो २ प्रसृत भर शहद तथा घी और इन दोनों के बराबर उष्ण जल में दो तोले सौंफ और छःमासे सैंधवलवण मिलाकर वस्ति देवै यह वस्ति दीपन धातुवर्द्धक बलकारी वर्णकारी उपद्रवरहित अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा रसायन होती है और क्रिमि कुष्ठ उदावर्त्त गुल्म बवासीर वद प्लीहा तथा प्रमेहको नष्ट करती है ॥ ५० ॥

तद्वत्समधुघृताभ्यां पयस्तुल्योव स्तिःपूर्वकल्केनबलवर्णकरोवृष्य तमोनिरुपद्रवोवस्तिमेढ्रपाकपरि कर्त्तिकामूत्रकृच्छ्रपित्तव्याधिहरो रसायनश्च ॥ ५१ ॥

समभाग दुग्धयुक्त शहद तथा घीके द्वारा पूर्वोक्त रीति से वस्ति देनी चाहिये यह वस्ति बलकारी वर्णकारी अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा उपद्रवरहित होती है वस्ति तथा लिङ्गका पकना गुदामें कैंची से काटने कीसी पीड़ा होना मूत्रकृच्छ्र तथा पित्तजरोग इन सब को नष्ट करती है और रसायन होती है ॥ ५१ ॥

मधुघृताभ्यांमांसरसतुल्योमुस्ताक्ष युक्तःपूर्ववद्वस्तिर्वलासपादहर्षगुल्म जानूरुनिकुञ्चनवस्तिवृषणमेढ्रपृष्ठ शूलहरः ॥ ५२ ॥

समभाग मांसरससे युक्त शहद तथा घीमें तोलेभर नागरमोथा मिलाकर पूर्वोक्त रीतिसे वस्ति देवै यह वस्ति कफ पैरों की झंझनाहट घुँटनी तथा जाँघों का सिकुड़ जाना और मूत्राशय अण्डकोष लिङ्ग तथा पीठका शूल इनसब रोगों को नष्ट करती है ॥ ५२ ॥

सुरासौवीरककुलत्थमांसरसमधुघृत तैलसप्तप्रसृतंमुस्तशताह्वाकल्कितं सलवणोवस्तिःसर्ववातरोगहरः५३

सुरा (मद्यविशेष) सौवीरक (काँजीविशेष) कुलथीका काढ़ा मांसकारस शहद घी तथा तैल सात प्रसृत इनसब वस्तुओंको मिलाकर इनमें नागरमोथा तथा सौंफ का कल्क और सैंधवलवण मिलाकर वस्ति देवै इससे सम्पूर्ण वातरोगों का नाश होता है ॥ ५३ ॥

तथाद्विपञ्चमूलत्रिफलाबिल्वमदन फलकषायोगोमूत्रसिद्धः कुटजम दनफलमुस्तपाठाकल्कितःसैन्धव यावशूकक्षौद्रतैलयुक्तोवस्तिः श्ले ष्मव्याधिवस्त्याटोपवातशुक्रसङ्ग पाण्डुरोगाजीर्णविषूचिकालसके पुदेयइति ॥ ५४ ॥

दशमूल त्रिफला बेल तथा मैनफल इन सब औषधियों को गोमूत्र में डालकर काढ़ा करै फिर इस काढ़ेमें कुरैया मैनफल नाग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमोथा तथा पाढ़रका कल्क सैंधवलवण जवाखार शहद तथा तैल मिलाकर वस्ति देवै यह वस्ति कफजरोग वस्ति में गड़गड़ाहट होना वात वीर्य्य का रुकना पाण्डुरोग अजीर्ण विसूचिका तथा अलसक (अजीर्णविशेष) इन रोगोंमें देनी चाहिये॥५४॥

अतऊर्द्ध्वंवृष्यतमान्स्नेहान्वक्ष्यामः शतावरीगुडूचीक्षुविदार्य्यामलकद्राक्षाखर्जूराणांयन्त्रपीडितानाम्॥५५॥ रसप्रस्थमेकैकंतद्वद्घृततैलगोमहिष्यजाक्षीराणांद्वौद्वौदद्यात् । जीवकर्षभकमेदामहामेदात्वक्क्षीराशृङ्गाटकमधूलिकामधुकोचटकपिप्पलीपुष्करबीजनीलोत्पलकदम्बपुष्पपुण्डरीककेशरकल्कान्पृषततरक्षुमांसकुक्कुटचटकचकोरमत्ताक्षबर्हिजीवञ्जीवककुलिङ्गहंसानांरसंवसामज्जादेश्चप्रस्थंदत्त्वासाधयेत्। ब्रह्मघोषशङ्खपटहभेरीनिनादैःसिद्धंसितच्छत्रकृतच्छायंगजस्कन्धमारोपयेद्भगवन्तंवृषध्वजमभिपूज्य तंस्नेहंत्रिभागमाक्षिकमङ्गलाशीःस्तुतिदेवतार्चनैर्वस्तिंगमयेत्। नृणांस्त्रीविहारिणांनष्टरेतसांक्षतक्षीणविषमज्वरार्त्तानांव्यापन्नयोनीनांबन्ध्यानांरक्तगुल्मिनीनांमृतापत्यानामनार्त्तवानाञ्चस्त्रीणांक्षीणमांसरुधिराणांपथ्यतमरसायनं ... पलितनाशनंविद्यात् ॥ ५६ ॥

इस के उपरान्त अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक स्नेहों का व्याख्यान करते हैं शतावर गिलोय ईख विलाईकन्द आंवला मुनक्का तथा छुहारा इनका यन्त्र के द्वारा निकालाहुआ रस चौंसठ २ तोले घी १२८ तोले तैल १२८ तोले गौ भैंस तथा बकरीका दूध एकसौ अट्ठाइस२तोले जीवक ऋषभक मेदा महामेदा वंशलोचन सिंघाड़ा महुवा मुलेठी सफेदकरजनी पीपरि कमलगट्टे नीलोत्पल कदम्ब के पुष्प श्वेत कमल तथा नागकेशर इनका कल्क मृग चीता मुर्गा गौरैया चकोर मत्ताक्ष (पक्षीविशेष) मोर मोरञ्जीवक (मोरविशेष) गौरैया तथा हंस इन जीवों के मांस का रस चर्बी और मज्जा आदिक स्नेह चौंसठ २ तोले इनसबको एक में मिलाकर पाककरै और उस समय वेदका पाठकरावै शंख भेरी (नगाड़ा) तथा पटह (बड़ानगाड़ा) बजवावै और उस स्थान में श्वेतछत्र लगवावै तदनन्तर सिद्ध (तय्यार) हुई उस औषध को हाथी के कंधेपर रक्खै फिर श्रीमहादेवजी का पूजनकरके उस औषधमें तिहाई शहद मिलाकर मंगलाचार करके आशीर्वाद पढ़कर देवताओं की स्तुति तथा पूजन करके वस्तिदेवै यह वस्ति बहुत मैथुन करनेवाले क्षीण वीर्य्यवाले विषमज्वर से पीड़ित क्षीणक्षत और मांस तथा रुधिर की क्षीणतावाले पुरुषों के लिये योनिरोग वाली बन्ध्या रक्तगुल्मवाली मृतापत्या (जिनके लड़के मरजाते हैं उन स्त्रियोंको मृतापत्या कहते हैं) तथा रजोधर्मरहित स्त्रियों के लिये बहुत हितहै रसायनहै और भुरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२२ श्वेतताको नष्ट करनेवाली है ॥ ५५।५६ ॥

बलागोक्षुरकरास्नाश्वगन्धाशतावरीसहचराणांशतंशतमायोज्यजलद्रोणशतेप्रसाध्यंतस्मिञ्जलद्रोणावशेषेरसेवस्त्रपूतेविदार्य्यामलकस्वरसयोर्वस्तमहिषवराहवृषकुक्कुटबर्हिहंसकारण्डवसारसानांघृततैलयोश्चैकंपृथक्प्रस्थमष्टौप्रस्थान्क्षीरस्यदत्त्वाचन्दनमधुकमधूलिकात्वक्क्षीरीविसमृणालोत्पलपटोलफलात्मगुप्ताम्रपाकितालमज्जकखर्जूरमृद्धीकाताम्रजकीकण्टकारीजीवकर्षभक्षुद्रसहामहासहाशतावरीमेदापिप्पलीह्रीवेरत्वक्पत्रकल्कांश्चदत्त्वा साधयेत् । ब्रह्मघोषादिनाविधिनातत्सिद्धंवस्तिमादद्यात् । तेनस्त्रीशतंगच्छेन्नचात्रास्तेविहारयन्त्रणाकचित् । एषवृष्योवर्ण्योबृंहणआयुष्योवलीपलितनुत् । क्षतक्षीणनष्टशुक्रविषमज्वरार्त्तानांव्यापन्नयोनीनाञ्चपथ्यतमः ॥ ५७ ॥

बरियारा गोखुरू रास्ना असगन्ध शतावर तथा सुनहरी चार २ सौ तोले भर इन सब औषधियोंको ३२७मन जलमें डालकर पाक करै जब ।८२॥ सेर २४ तोले जल बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै फिर उसमें बिलाईकन्द तथा आमलेका रस और बकरा भैंसा शूकर बैल मुर्गा मोर हंस बत्तक तथा सारस इनके मांस का रस घी तथा तैल चौंसठ २ तोले दूध ५१२ तोले और चन्दन मुलेठी महुवा वंशलोचन कमलकी डण्डीके भीतर के डोरे कमल की डण्डी उत्पल मैनफल किंवाचके बीज तालके फल छुहारा मुनक्का भूमिआमला भटकटैया जीवक ऋषभक चांगेरी बनउर्दी शतावर मेदा पीपरि सुगन्धबाला दालचीनी तथा तेजपात इनका कल्क मिलाकर पूर्वोक्त रीति से वेद का पाठ आदि करके पाक करै और पूर्वोक्त रीति से वस्ति देवै इस वस्तिके प्रभाव से मनुष्य सौ स्त्रियों के साथ रमण करसक्ता है इस में आहार विहार का कुछ विचार नहीं है यह वस्तिकी वीर्य्य तथा धातुओं को बढ़ाने वाली है वर्णकारक आयुको हित झुर्री तथा बालों की श्वेतता को नष्ट करनेवाली और क्षतक्षीण नष्ट वीर्य्यवाले तथा विषमज्वर से पीड़ित मनुष्योंके लिये और योनिरोग वाली स्त्रियों के लिये अत्यन्त हित होती है ॥ ५७ ॥

सहचरपलशतमुदकद्रोणचतुष्टये पक्त्वाद्रोणशेषेरसेसुपूतेविदारीक्षुरसप्रस्थाभ्यामष्टगुणक्षीरंघृततैलप्रस्थंबलामधुकमधूकचन्दनमधूलिकाशारिवामेदामहामेदाकाकोलीक्षीरकाकोलीपयस्यागुरुमञ्जिष्ठाव्याघ्रनखशटीसहचरसहस्रवीर्य्यावराङ्गलोध्राणामक्षमात्रैर्द्विगुणशर्करैःकल्कैःसाधयेद्ब्रह्मघोषादिनाविधिना ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्सिद्धंवस्तिंदद्यादेषसर्वरोगहरो रसायनोललितानांश्रेष्ठोऽन्तःपुरचारिणीनांक्षतक्षयवातपित्तवेदनाश्वासकासहरस्त्रिभागमाक्षिकोत्र लीपलितनुद्वर्णरूपबलमांसशुक्रवर्द्धनः॥ ५८॥

सुनहरी ४३० तोले लेकर ४०९६ तोले जलमें डालकर पाक करै जब १०२४ तोले जल बाकी रहे तब उतारकर छानलेवै फिर उसमें बिलाईकन्द तथा ईखका रस ६४ तोले दूध ५१२ तोले घी तथा तैल चौंसठ २ तोले और बरियारा मुलेठी चन्दन महुवाचुरनहार सांई मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली दूधी अगर मँजीठ बघनखी कचूर सुनहरी सहस्रवीर्य्या (देशी शतावर) तज तथा लोध यह सब तोले तोले भर तथा शक्कर ४२ तोले इन सब का कल्क मिलाकर वेदपाठआदि पूर्वोक्त रीति से पाक करके वस्ति देवै यह वस्ति रसायन सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करने वाली तथा बहुत मैथुन करने वालों के लिये हित है क्षतक्षय वातजपीड़ा पित्तजपीड़ा श्वास खांसी झुर्री तथा बालों की श्वेतता इन रोगों को नष्ट करने वाली है और वर्ण रूप बल मांस तथा वीर्य्यको बढ़ाने वाली है इस वस्तिमें तिहाई शहद मिलाना चाहिये॥ ५८॥

इत्येतेरसायनाःस्नेहवस्तयःसति विभवेशतपाकासहस्रपाकावाकार्य्यावीर्य्यबलाधानार्थमिति॥५९॥

इस प्रकार यह रसायनरूप स्नेहवस्ति कहीगई यदि ऐश्वर्य्य होय तो सौवार अथवा सहस्रवार इन का पाक करै इससे वस्तियोंके वीर्य्य तथा बलकी वृद्धि होतीहै॥५९॥

भवन्तिचात्र।

इत्येतेवस्तयःस्नेहाश्चोक्ताप्राणिषुसद्धिताः । सुस्थानामातुराणाञ्चवृद्धानाञ्चाविरोधिनः॥ ६०॥

इसमें यह श्लोक हैं। यह स्नेहयुक्त वस्ति जो कहीगई हैं वह प्राणियों के लिये बहुत हित हैं इस प्रकार स्वस्थ रोगी तथा वृद्ध पुरुषोंमेंसे किसीको नहींहानि करनेवाली६०॥

अतिव्यवायशीलानांशुक्रमांसबलप्रदाः । सर्वरोगप्रशमनाःसर्वेष्वृतुषुयौगिकाः॥ ६१॥

बहुत मैथुन करनेवाले पुरुषों के वीर्य्य मांस तथा बलको बढ़ानेवाली सम्पूर्ण रोगों को शान्त करनेवाली सम्पूर्ण ऋतुओं में प्रयोग करनेके योग्य॥ ६१॥

नारीणामप्रजातानांनराणाञ्चाप्यपत्यदाः । उभयार्थकराह्यष्टाःस्नेहवस्तिनिरूहयोः॥ ६२॥

जिन स्त्री तथा पुरुषोंके सन्तान नहीं होती है उनको सन्तान देनेवाली और स्नेहवस्ति तथा निरूहवस्ति दोनोंके प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाली॥ ६२॥

तत्रश्लोकाः।

व्यायामोमैथुनंमद्यंमधूनिशिशिराम्बुच । सम्भोजनंरथक्षोभेत्रस्तिष्वेतेषुगर्हितम्॥ ६३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिसमें यह श्लोक हैं। व्यायाम मैथुन मद्यपान मार्गका चलना शीतल जल पीना बहुत भोजन करना और रथपर चढ़कर घूमना यह सब बातैं इन बस्तियों में वर्जित हैं॥ ६३॥

शिखिगोनर्दहंसाख्यैर्दक्षवद्वस्तयस्त्रयः। विंशतिर्विष्किरैस्त्रिंशत्प्रतुदैः प्रसहैर्नव॥ ६४॥

मुर्गे के अण्डों की वस्ति की विधिके अनुसार मोर सारस तथा हंस के अण्डों के द्वारा तीन वस्ति बटेर आदि विष्किर जीवोंके मांसके द्वारा बीस वस्ति कबूतर आदि प्रतुद जीवोंके मांसके द्वारा ३० वस्ति काक आदि प्रसह जीवों के मांस के द्वारा नव वस्ति॥ ६४॥

विंशतिश्चतथासप्तविंशतिश्चाम्बुचारिभिः। नवमत्स्यादिभिश्चैवशिखिकल्पेनवस्तयः॥ ६५॥

बगला आदि जलचर जीवोंके मांसके द्वारा २७ वस्ति मोरकी वस्तिकी विधिके अनुसार मछली आदि जीवोंके मांस के द्वारा ९ वस्ति॥ ६५॥

दशकर्कटकाद्यैश्चकूर्मकल्पेनवस्तयः। मृगैःसप्तदशैकोनविंशतिर्विष्किरैर्दश॥ ६६॥

कछुये की कल्पना के अनुसार कर्कटक आदि जीवों के मांसद्वारा दश मृगों के मांस के द्वारा १७ वस्ति विष्किरों के मांसके द्वारा १९ वस्ति॥ ६६॥

आनूपैर्दक्षशिखिवच्छूरायैश्चचतुर्दश। एकोनविंशदित्येतेसहस्नेहैः समासतः॥ ६७॥

जैसे आदि आनूप जीवोंके मांसकेद्वारा १४ वस्ति और मुर्गे तथा मोर की विधिके अनुसार सूशय जीवों के मांस के द्वारा १९ वस्ति स्नेह के साथ देनी चाहिये यह संक्षेपसे मोर आदि के मांस के द्वारा वस्ति कही गई॥ ६७॥

प्रोक्ताविस्तरशोभिन्नाद्धेशतेषोडशोत्तरे। एतेमाक्षिकसंयुक्ताःकुर्वन्त्यतिवृषंनरम्। नातियोगंनवायोगस्तम्भितास्तेचकुर्वते॥ ६८॥

इस प्रकार अलग २ विस्तारपूर्वक २१६ वस्तियों का वर्णन कियागया शहद के साथ इनका प्रयोग करने से मनुष्य बहुत कामातुर होता है इन वस्तियों के प्रयोगमें अधिकता तथा न्यूनता से होनेवाले दोष नहीं होते॥ ६८॥

मृदुत्वान्ननिवर्त्तेरन्वस्तयश्चेन्निरूहणे। समूत्रैर्वस्तिभिस्त्वेकैरास्थाप्यःक्षिप्रमेवच॥ ६९॥

कोमलताके कारण जिस पुरुषको दी गई वस्ति निकल न आवै उसको शीघ्रही गोमूत्रयुक्त आस्थापनवस्ति देवै॥ ६९॥

शोफाग्निनाशपाण्डुत्वशूलार्शःपरिकर्त्तिकाः। स्युर्ज्वरश्चातिसारश्च यापनात्यर्थसेवया॥ ७०॥

शोथ मन्दाग्नि पाण्डुरोग शूल बवासीर गुदामें कैंचीसे काटने कीसी पीड़ा ज्वर तथा

अतीसार यह सम्पूर्ण रोग यापनवस्तियोंका अधिक सेवन करने से होते हैं ॥ ७० ॥

अरिष्टक्षीरशीध्वाद्यातत्रेष्टादीपनी क्रिया । युक्त्यातस्मान्निषेवेतयाप नान्नप्रसङ्गतः ॥ ७१ ॥

ऐसी अवस्था में अरिष्ट (मद्यविशेष) दूध तथा शीधु (मद्यविशेष) आदिक देने चाहिये और दीपनक्रिया करनीचाहिये यापनवस्ति की अधिकता में शोथआदिक रोगहोते हैं इससे युक्तिपूर्वक यापनवस्तियों का सेवन करै किन्तु बहुत सेवन न करै ७१॥

इत्युच्चैर्भाष्यपूर्वाणांव्यापदःसचिकित्सिताः । विस्तरेणपृथक्प्रोक्तास्तेभ्योरक्षेन्नरंसदा ॥ ७२ ॥

इसप्रकार जोरसे बोलना आदि वर्ज्जित बातों से होने वाले रोग चिकित्सासहित विस्तारपूर्वक अलग अलग कहे गये इनसे सदैव मनुष्य की रक्षा करनी चाहिये ॥७२॥

कर्मणांवमनादीनामसम्यक्करणापदाम् । यत्रोक्तंसाधनंस्थानेसिद्धिस्थानंतदुच्यते ॥ ७३ ॥

वमन आदि पंचकर्मों के बिगड़ जाने से होने वाले रोगों की चिकित्सा जिस स्थान में कही गई है उसको सिद्धिस्थान कहते हैं ॥ ७३ ॥

इत्यध्यायशतंविंशमात्रेयमुनिवाङ्मयम् । हितार्थंप्राणिनांप्रोक्तमग्निवेशेनधीमता ॥ ७४ ॥

इसप्रकार बुद्धिमान् अग्निवेश ने भगवान् आत्रेयजी के १२० अध्याय प्राणियों के हितके लिये वर्णन किये ॥ ७४ ॥

दीर्घमायुर्यशःप्रज्ञामारोग्यञ्चापिपुष्कलम् । सिद्धिञ्चानुत्तमांलोकेप्राप्नोतिविधिनापठन् ॥ ७५ ॥

दीर्घायु यश बुद्धि आरोग्य और चिकित्सा की श्रेष्ठ सिद्धि यह सब बातैं इस ग्रन्थ के विधिपूर्वक पढ़ने से प्राप्त होती हैं ॥ ७५ ॥

विस्तारयतिलेशोक्तंसंक्षिपत्यतिविस्तरम् । संस्कर्त्ताकुरुतेतन्त्रंपुराणञ्चपुनर्नवम् ॥ ७६ ॥

ग्रन्थका संस्कार करने[illegible] क्षेप से कही हुई बात का [illegible] करके और विस्तार से [illegible] संक्षेप से वर्णन करके ग्र[illegible] करता है ॥ ७६ ॥

अतस्तन्त्रोत्तममि[illegible] द्धिना । संस्कृतंत[illegible] नोपलक्ष्यते ॥ ७[illegible]

इस से अत्यन्त बु[illegible] इस तन्त्र का संस्कार [illegible] हुये तन्त्र में स्थान [illegible] विभाग लक्षित होता है[illegible]

इदमन्यूनशब्दार्थ[illegible] तम् । अखण्डार्थ[illegible] ञ्चनदेपुरे ॥ ७८ [illegible] स्तन्त्रेभ्योविशेष[illegible] सप्तदशौषधाध्याय[illegible] रयत् ॥ ७९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri